ओ३म्

बनवारीलाल

ता: २३ ३/४७

PADMACHANDRAKOSHA.

AN ETYMOLOGICAL

SANSCRIT-HINDI

DICTIONARY.

FOR THE USE OF SCHOOLS AND COLLEGES

BY

PANDIT GANESH DUTT SHASTRI,

UNIVERSITY SANSCRIT PROFESSOR

ORIENTAL COLLEGE, LAHORE.

Third Edition, Revised & Improved.

पद्मचन्द्रकोष

अर्थात्

व्युत्पत्तिविषयसहित संस्कृत-भाषाकोष.

जिस्में ३० हजार शब्द हैं,

जिसको

श्रीमान् पण्डित गणेशदत्त शास्त्री

संस्कृत प्रोफेसर ओरियंटल कालिज लाहौर ने निर्माण किया.

Highly approved by well-known European and Native Sanscrit Scholars and by the Educational Department of India and supplied to all the principal Libraries.

प्रकाशक

मेहरचन्द लक्ष्मणदास

संस्कृत पुस्तकालय, सैदमिट्ठा बाज़ार लाहौर.

1925.

Price Seven Rupees.

Published by Lala Meharchand Lachmandass, Sanscrit Pustakalaya, Lahore,

Printed by Ramchandra Yesu Shedge, at the Nirnaya-Sagar Press, 26-28, Kolbhat Lane, Bombay.

निवेदन.

यद्यपि इस पद्मचन्द्रकोषमें साम्प्रतिक शिक्षाके अनुकूल आवश्यक शब्द प्रथमही पर्याप्त थे तौ भी प्रत्येक आवृत्तिमें अधिकाधिक शब्दविन्यास कोषको अलंकृत करता है। इसी आशयको पूर्ण करनेके लिये इस आवृत्तिमें पञ्चसहस्रसे भी अधिक नये २ शब्द सन्निवेशित किये गये हैं और प्रथम और द्वितीयावृत्तिके अनुसार उन शब्दोंका प्रकृति प्रत्ययालोचनपूर्वक यथावत् अर्थका प्रकाश भी किया गया है। यह कोष सारभूत शब्दोंसे पूर्ण होनेके कारण प्रथमही शिक्षित जनता द्वारा अत्यन्त प्रशंसित हुआ। इसी हेतुसे प्रथम दो आवृत्तिओंमें हाथों हाथ विक गया और जहां तहांसे इसकी तृतीयावृत्तिके लिये इच्छा प्रकट कीगई। इस कोषकी बहुतही उपयोगिता समझ कर हमने निर्माताको सविशेष प्रार्थना करके भिन्न २ विषयगर्भित शब्दावली सन्निविष्ट करा दी है। आशा है कि सर्व साधारण विद्वानों और छात्र आदिके लिये यह पञ्चसहस्रसे भी अधिक शब्द पूर्ण सन्तोषप्रद होंगे जिस्से अनेक दूसरे कोषोंके देखनेका कष्ट निवृत्त होजायगा।

इस वार हमने इस कोषके आदिमें निर्माताका भी मनोहर फोटो लगा दिया है जिस्से कोश की शोभा और भी अधिक बढ गई है।

यद्यपि इस समय कागज और मुद्रणका व्यय उत्तरोत्तर बढता जाता है तौ भी हमने पहिले की तरह उसी बम्बईमें सुप्रसिद्ध निर्णयसागरयन्त्रालयद्वारा सर्वोत्तम कागज पर मुद्रित कराया है। जिसके देखनेही से चित्त आकर्षित होता है। यथा–शक्ति प्रत्येक शब्दके संशोधन करनेमें पूर्ण प्रयत्न किया गया है। इस वार नवीन उपयोगी शब्दोंका प्रवेश इस कोशके लिये सुवर्णमें सुगन्धिके समान होगया है। तीस हजारके लगभग आवश्यक शब्दोंवाला कोश प्रत्येक पाठशाला, महाविद्यालय और पुस्तकालयमें संस्थापन किया जाना चाहिये। स्वयं संस्कृतभाषाकी उन्नति करनेके लिये सर्व साधारणका मित्र होजाना चाहिये। इस वार हमने अत्यन्त परिश्रम करके इसे प्रस्तुत कराया है। यदि यह शिक्षितमण्डलका मनोहारी हुआ तो हम अपना परिश्रम सफल समझके तुरन्त ही चतुर्थावृत्तिमें प्रकाश करनेके लिये उद्यत होंगे। संस्कृतभाषाकी निरन्तर उन्नति ही से भारतसन्तानकी उत्तरोत्तर उन्नतिकी सम्भावना है, इस लिये संस्कृतभण्डार कोशरूपही है, भगवान् पदपदार्थनिर्वचनस्वरूप कोशकी रमणीयता भारतसन्तानके हृदयमें प्रकाशित करें जिस्सेकि दिन २ संस्कृतोन्नति होकर भारतके कुलदीपक प्रकट हों और हमारा उत्साह भी सफल हो। शम्।

संस्कृतपुस्तकालय,
लाहोर.
१८–१०–२५.

मेहरचन्द्र लक्ष्मणदास.

भूमिका

सर्वरत्नास्पदं कोशः प्रमाणं शास्त्रशालिनाम् । विश्वोपकारपर्य्याप्तिर्यत्कोशे सुप्रतिष्ठिता ॥

यह बात सब जानते और मानते हैं कि किसीभी भाषामें पूरी २ व्युत्पत्ति लाभ करनेके लिये व्याकरण और कोशसे परिचित होना अत्यन्त आवश्यक है. विशेषतः कोशसे किसी शब्दका परिज्ञान तो मानों राजाकी आज्ञाके समान दृढ़ और अटल है. यदि हम किसीभी शब्दके अर्थका निश्चय करनेके लिये प्रवृत्त होकर प्रामाणिक कोशका लाभ करें, जिसके द्वारा हमें इसबातका पूरा २ विश्वास होजाय कि अमुक शब्दके अर्थोंकी अवधि यहांहीतक है. चाहे प्रकृति प्रत्ययके बलसे औरभी अनेक अर्थ होसकें, परन्तु प्रचलित अर्थोंकी शेषसीमा हो, तो निस्सन्देह उक्तकोश सकल जनोपकार करनेमें तनिकभी त्रुटि न करेगा । यही कारण है कि, हमारे पूर्व्वतन ऋषिमहर्षिओं और अमरसिंह आदि विद्वानोंनेभी अपनी मातृभाषात्मक संस्कृत भाषाके स्पष्ट लिखने, और यथार्थ पठनके लिये असीम परिश्रम और विद्वत्ताके साथ अनेक, सर्वथा परिपूर्ण, सुघटित, सुललित और महोपकारक व्याकरण और कोशोंकी रचना की, जिन्हें देख बड़े २ दक्ष विद्वान् विस्मित हो अद्यावधि प्रशंसा करते चले आते हैं । परन्तु मुझको १६ वर्ष पर्य्यन्त अध्यापक होकर छोटी और बड़ी शिक्षा प्रणालीसे भलीभांति अनुभव होगया है कि, ऐसे समय जब कि आंग्ल पाठशालाओंमें विद्यार्थिओंको अनेक विषयों (अंग्रेजी-संस्कृत-गणित-इतिहास-पदार्थविद्या-भूगोल-हिन्दी-उर्दू-अरबी-फारसी-आदि)का अभ्यास करना पडता-है, यहांतक कि, दो ही वर्षमें बहुतसे विषयोंमें परीक्षा देकर उत्तीर्ण होना है, तो उक्त ऋष्यादि प्रणीत बडे बडे ग्रन्थोंका अभ्यास उनके लिये सर्वथा उपकारी नहिं हो सक्ता-क्योंकि अंग्रेजी-आदि इतर भाषाके कोशोंकी नाईं उक्त प्राचीन कोशोंकी परिपाटी देशकालानुसार सरल नहीं-प्रत्युत इनका रचनाक्रम इस प्रकारका दुरूह है कि, गुरुके निकट चिरकालतक पढने और कण्ठस्थ करनेके बिना किञ्चित्भी सहायक नहीं होते ।

इस आवश्यकताको पूर्ण करनेके लिये यद्यपि कई एक श्रीमान् मान्यवर मौनिअर विलियम-आदि अंग्रेजी जातीय विद्वानोंनेभी व्याकरण और कोशोंकी पुस्तकें प्रकाशित की हैं, और उनसे विशेषतः संस्कृत जान्नेकी इच्छा करनेहारे यूरोपीय महापुरुषोंको अत्यन्त सहायताभी मिली है, परन्तु वह सहायता भारतवासिओंके लिये उपयुक्त नहीं. क्योंकी प्रथम तो वे सब अंग्रेजीमें लिखे गये हैं, दूसरे उनका अधिक मूल्य होनेसे लाभ करना बहुत कठिन है । और जो "शब्दार्थ-भानु" नामक कोश हिंदुस्तानी अर्थसहित है उस्सेभी यथार्थ उपकार नहीं हो सक्ता, क्योंकि उसमें प्रकृति प्रत्यय विन शब्द मात्र हैं; जिसमें बहुत यत्न करनेपरभी बुद्धिमान् शिष्यके मनमें सन्तोष नहिं होता । मैंने प्रायः महाविद्यालयादिमें विद्यार्थिओंको परस्पर आलाप करते सुना है; कि भलाजी अमुक शब्दका अर्थ जो कोशमें है, वह क्योंकर हुआ-उस अर्थको बोधन करनेहारा कौनसा धातु है ? और है उसके आगे कौनसा प्रत्यय लगा कि उसका विशेष अर्थ होगया. यथा कोशमें "नृशंस" इस शब्दका अर्थ लिखा है. घातक-क्रूर-परद्रोही-शरीर । बेहरम । ईजारसां । अब कहिये इस प्रकार शब्दके अर्थका ज्ञान क्योंकर कार्य्यसाधक होसक्ता है. जब कि विद्यार्थीके मनमें इसबातके जान्नेकी इच्छा निरन्तर लगी है कि, उक्त शब्दका अर्थ क्योंकर "घातक" हुआ । इसी शब्दका अर्थ यदि इस कोशमें देखो तो तनिकभी सन्देह न रहेगा । हां ऐसे कोशसे छोटे २ विद्यार्थिओंका तो कुछ उपकार होसक्ता है. जिनके लिये इतनाही परिज्ञान पर्याप्त है कि "न" "र" नर (पु०) अर्थ "मनुष्य" ठीक अंग्रेजी आदिके सामान्य कोशोंकी नाईं जैसे ऐम्म ए ऐन्न=मैन- "मैन" मैंने "आदमी" निश्चय जानियें. इस प्रकारका शब्दपरिचय सर्वथा भ्रान्तिके साथ मिला रहता है, कदापि छात्रका हृदय कतिपय शब्दपरिज्ञानसे विशद नहीं होसक्ता । इस बडी भारी न्यूनताको पूर्ण करनेके उद्देशसे लाला मेहरचन्द्र, लक्ष्मणदास प्रोप्राईटर संस्कृत पुस्तकालय, सैदमिट्ठा बाजारके विशेष अनुरोधसे यह पद्मचन्द्रकोश, जो यद्यपि अंग्रेजी कोशोंकी अपेक्षा बहुत छोटा है, परन्तु कालि-

दास, माघ, भारवी, दण्डी, भट्टी, शूद्रक, बाण, भवभूतिआदि बडे बडे प्राचीन महाकविओंके लिखनेमें आये हुए सम्पूर्ण उपयोगी शब्दोंसे भूषित होनेके कारण मोटा है इस बातकी प्रतिज्ञा है कि इस कोशमें प्रायः बोल चालमें आनेवाले सम्पूर्ण शब्द भरे हैं, यह कोश व्याकरणसहित संस्कृतमें पूर्ण व्युत्पत्ति लाभ करनेहारे जिस किसीकी पिपासाको शान्त करेगा, क्योंकि इसमें पहिले शब्द-शब्दका लिङ्ग आदि-प्रकृति प्रत्ययसे निकला हुआ अर्थ विशेष अर्थ (जहांतक हो सके हैं और प्रचलित है)-अनन्तर यदि योग्य समझा तो किसी प्रामाणिक ग्रन्थका निदर्शन। यथा—"हरीतकी" (स्त्री०) हरिं (पीतवर्ण फलद्वारा इता (प्राप्ता)। इण्+क्त। संज्ञायां कन्-ङीप्। जो फलसे पीले रंगको प्राप्त होगई-जिसका वर्ण पीला होता है। इस नामका एक वृक्ष। "उसका फल". अण् प्रत्ययका लोप होता है। हरीतकीफल (हरीड)। "कदाचित् कुपिता माता नोदरस्था हरीतकी" इति वैद्यकम्। "हरिसंकीर्तन" (न०) हरेः (हरिनाम्नः) संकीर्त्तनं (कथनं)। हरिके नामका कहना। श्रीविष्णुके नामका उच्चारण करना (बोलना)। "सकलं निष्फलं राजन्! हरिसंकीर्त्तनं विना" इति पुराणम्।

१-इस कोशमें अर्थको स्पष्ट करनेके कारण कहीं कहीं हिन्दुस्तानी शब्दोंकाभी सन्निवेश किया गया है. क्योंकि जो शब्द बोल चालमें आगये हैं और जिनका प्रचार अधिक दीखता है, यदि विशेष अर्थ समझानेके लिये काममें लाये जाँय तो कुछ दोष नहिं प्रतीत होता-कारण कि सब भारतवर्षीय भाषाओंका मूल साक्षात् वा परम्परासे संस्कृतही है हिन्दी भाषाका साक्षात् सम्बन्ध प्राकृतभाषा (जिसमेंसे बंगाली, हिन्दी, मरहटी, गुजराती, और हिन्दुस्तानी भाषा निकली हैं) और परम्परा सम्बन्ध संस्कृतसे है।

२-क्रियावाची शब्द (धातु), उनके गण, सकर्म्मक वा अकर्म्मक, परस्मैपद-वा आत्मनेपद सेट्-वा अनिट् किम्वा वेट्, और भाषामें अर्थ वहीं मिलेंगे जहां कि अकारादि क्रमसे उनका स्थान होगा, इसमेंभी एक विशेषता होगी कि आवश्यक कार्य्यवाहीमें आनेवाले सब धातुओंका लट् (Present) और लुङ् (Aoris) साथही मिलेंगे कि जिस्से विद्यार्थिको उसी धातुसे बनेहुए शब्दको जाननेमें तनिकभी विलम्ब न हो—व्याकरणमें इस लुङ्का अनूठाही ढंग है-यही कारण है कि परीक्षक प्रायः धातुका लुङ् पूछते हैं-यही कोश है कि चिरकालकी होरही विद्यार्थिओंकी लुङ् लकार जाननेकी अभिलाषाको पूर्ण करेगा।

३-यह कोश बीए किम्वा एम्. ए परीक्षाकेभी विद्यार्थिओंका पूरा कार्य्यसाधक होगा, क्योंकि शब्दसन्निवेशसमय इसमें उन शब्दोंकी ओर विशेष ध्यान दिया गया है कि जो प्रायः महाकविओंके पुस्तकोंमें मिलेंगे. सच पूछो तो यह कोश सबके लिये उपकारी है, क्योंकि इसमें मूलसहित (जडसमेत) शब्दका ज्ञान होता है जिसका सद्यःफल यह है कि एक शब्दके जाननेसे आपही अनेक शब्दोंकी रचना कर सक्ता है हां ऐसे जनको व्याकरणसे अवश्य परिचित होना चाहिये चाहे वह परिचय सामान्यही हो।

४-इस कोशका लेख करनेके समय विशेषतः श्रीवामन शिवराम ऐपटी एम्. ए. और श्रीतारानाथ तर्कवाचस्पति भट्टाचार्य्यजीके कोशोंसे सहायता लीगई है-इसके लिये मैं उन महाशयोंका अत्यन्तही कृतज्ञ हूं।

५-यह कोश सब प्रकारके स्वत्वसहित श्रीयुत लाला मेहरचन्द्-लक्ष्मणदास-संस्कृतपुस्तकालय-सैद-मिठ्ठा बाजार लाहौर-महाशयको समर्पण कर दिया है। जिन्होंने अत्यन्त सावधानीसे जगद्विख्यात "निर्णयसागर प्रेस" वम्बईमें छापकर प्रसिद्ध किया।

६-पाठक महाशयोंसे सविनय प्रार्थना है कि, यद्यपि इस कोशके प्रकाश करनेके समय प्रूफ देखनेमें बहुतही सावधानीसे कार्य्य किया है, तथापि "भूल जाना मनुष्यके आगे कुछ बडी बात नहिं" इस विचारको चित्तमें स्थान देकर जहां कहीं भूलचूक होगई हो, विद्वज्जन अपने उदार स्वभावसे क्षमाकरके उसकी सूचना दें कि उचित जानकर द्वितीयावृत्तिमें शुद्ध करदी जाय। निश्चय जानों संसारमें निर्दोष और निर्गुण तो कोईभी पदार्थ नहिं, ऐसी दशामें महात्माओंका यह स्वाभाविक गुण है कि वे दोषोंको दूरकरके गुणोंका अंगीकार कर्त्ते हैं-"परगुणपरमाणून् पर्वतीकृत्य नित्यं निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः" दोहा—अपनी ओर निहारके क्षमा करो अपराध। जिहिं तिहिं कोश प्रकाशमें यत्न करेंगे साध॥

॥ इति ॥

सण्डज्ञातीय—
गणेशदत्तशर्म्मा शास्त्री.

DIRECTIONS TO BE STUDIED BEFORE USING THIS DICTIONARY.

प्रार्थना.

ये निर्मलमेधातरिप्रभावाच्छन्दसागरपारमायन्, न तानुद्दिश्येयं क्रिया, ते खल्वजस्रं मादृशैर्नमस्करणीयाः । ये च शास्त्रेऽव्युत्पन्नबुद्धयो निजमनीषयैव शास्त्रज्ञानाभिलाषिणो विविधकोषदर्शनश्रमभीताः सन्ति तेभ्य एव मदीयेयं नूतनकोषनिर्मितिः ।

इस कोशको पढनेके पहिले नीचे लिखे हुए संकेत और संकेतसे जान्ने योग्य पदार्थोंको भली भांति समझ लेना उचित है ।

संकेत—संकेतसे जान्ने लायक ।

पु० (पुँलिङ्ग) (जिसका केवल पुंलिंग होता है) ।

स्त्री० (स्त्रीलिङ्ग) (केवल स्त्रीलिङ्ग) ।

न० (नपुंसक लिङ्ग) (केवल नपुंसकमें होता है) ।

पु० स्त्री० (अनपुंसक लिङ्ग) (जिसका नपुंसकलिङ्ग नहीं होता) ।

न० स्त्री० (अपुंलिङ्ग) (जिसका पुंलिङ्ग नहीं होता) ।

त्रि० (त्रिलिङ्ग) (जो तीनों लिङ्गोंमें होता है) ।

अव्य० (अव्यय) ।

स० (समास) ।

त० (तत्पुरुष) ।

२ त० (द्वितीयातत्पुरुष) ।

३ त० (तृतीयातत्पुरुष) ।

५ त० (पञ्चमीतत्पुरुष) ।

६ त० (षष्ठीतत्पुरुष) ।

७ त० (सप्तमीतत्पुरुष) ।

ग० (गतिसमास) ।

शाक० (शाकपार्थिवादितत्पुरुष) ।

उप० (उपपदसमास) ।

मयू० (मयूरव्यंसकादि) ।

प्रा० (प्रादिसमास) ।

उपमि० (उपमितसमास)

न० त० (नञ्तत्पुरुष) ।

कर्म्म० (कर्म्मधारय) ।

द्वि० (द्विगुसमास) ।

अव्ययी० (अव्ययीभावसमास) ।

ब० (बहुव्रीहिसमास)

३ ब० (तृतीयान्तान्यपदार्थबहुव्रीहि) जिसमें तृतीयाविभक्तिका पद और लगाना पडता है ।

५ ब० (पञ्चम्यन्तान्यपदार्थबहुव्रीहि) ।

६ ब० (षष्ठ्यन्तान्यपदार्थबहुव्रीहि) ।

७ ब० (सप्तम्यन्तान्यपदार्थबहुव्रीहि) ।

न०ब० (नञ्बहुव्रीहि) ।

प्रा०ब० (प्रादिबहुव्रीहि) ।

द्वं० (द्वन्द्वसमास) ।

समा० (समासान्त) ।

शक० (शकन्ध्वादिसे पररूप) ।

नि० (निपातन) ऋषिओंने ऐसाही मानलियाहै ।

पृ० ("पृषोदर"आदि ऋषिओंके उपदेशानुसार हैं) ।

भ्वा० (भ्वादिगणीय) ।

अदा० (अदादिगणीय) ।

जुहो० (जुहोत्यादिगणीय) ।

दिवा० (दिवादिगणीय) ।

स्वादि० (स्वादिगणीय) ।

तुदा० (तुदादिगणीय) ।

रुधा० (रुधादिगणीय) ।

तना० (तनादिगणीय) ।

क्र्या० (क्र्यादिगणीय) ।

चुरा० (चुरादिगणीय) ।

पर०वा प० (परस्मैपद) ।

आत्म०वा आ० (आत्मनेपद) ।

उभ०वा उ० (उभयपद) ।

सक०वा स० (सकर्मक) ।

अक०वा अ० (अकर्मक) ।
द्विक० (द्विकर्मक) ।
द्विव० (द्विवचनान्त) ।
टाप् (आ) ।
ङीप् (ई) ।
ऊङ् (ऊ) ।
अण् (अ) ।
फ (आयन्) ।
ढ (एय्) ।
ख (ईन्) ।
छ (ईय्) ।
घ (इय) ।
ष्यञ्—(य) ।
कन्—(क) ।
ठन्—(इक) ।
यक्, यत्, यञ्, ण्य } (य) ।
क्त (त) ।
क्तवतु (तवत्) ।
क्त्वा (त्वा) ।
क्तिन्, क्ति } (ति) ।
ण्यत्, यत्, क्यप् } (य) ।
णमुल् (अम्) ।
क्वन्, ण्वुल्, ष्वुन्, वुञ्, वुन् } (अक) ।

ल्युट्, ल्यु } —(अन) ।
अच्, अण्, अप्, क, कञ्, खच्, खश्, खल्, घ, घञ्, ट, टक्, ड-ण-श } (अ) ।
षाकन् (आक) ।
इनि, घिनुण्, गिनि } (इन्) ।
इष्णुच्, खिष्णुच् } (इष्णु) ।
उण्, डु } (उ) ।
उकञ् (उक) ।
नङ, नन् } (न) ।
क्विप्, क्विन्, ण्वि } (यह साराही उड़ जाता है और धातु:प्राय हलन्तही रहता है) ।
क्वनिप् (वन्) ।
क्वरप् (वर) ।

List of Dictionaries available for sale.

		Rs. A. P.
वाचस्पत्यम्—(श्रीतारानाथ तर्कवाचस्पतिकृत वृहदभिधानम्) अस्मिन् कोषे वेद, ब्राह्मण, छन्दो, व्याकरण, साहित्य, काव्य, नाटक, चिकित्सा, ज्योतिषादिसकलशास्त्रशब्दानामकारादिक्रमेणार्थव्युत्पत्तयश्च सरलसंस्कृतभाषया व्याख्याता विद्यन्ते. ... ... सजिल्द.	कलकत्ता	280-0-0
शब्दार्थचिन्तामणि—यह कोषग्रन्थ बहुतही उत्तम और वृहत् है, इसमें अकारादिक्रमसे शब्द लिखे हैं व पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग नपुंसकलिङ्ग लिखनेके उत्तर शब्दोंकी व्युत्पत्ति व सिद्धिके लिये पाणिनिव्याकरणके सूत्र तथा शब्दोंके अर्थ व उनकेलिये अनेक कोषोंके प्रमाण तथा विशिष्ट शब्दोंमें अनेक ग्रन्थोंसे उदाहरण भी दिये गये हैं, यह ग्रंथ ४ जिल्द व ३१९३ पृष्ठोंमें है.	उदयपूर	25-0-0
उपनिषद्वाक्यकोष—(और भगवद्गीताकोष) A concordance to the Principal Upanishads and Bhagwat Gita.	मुम्बई	6-0-0
अमरकोष—अमरसिंहविरचितः श्रीभट्टोजिदिक्षितात्मजश्रीभानुजीदीक्षितकृतया व्याख्यासुधया रामाश्रमीटीकया सहितः) पंडित शिवदत्तजीकृत टिप्पणीसहित अतिसुंदरविलायती जिल्द मुम्बई Amara-kos'a with the commentary (Vyâkhyâsudhâ or Râmâs'ramî) of Bhânuji Dîkshita, son of Bhattoji Dîkshita.	Bombay.	In Press.
शब्दसागर—[संस्कृत इंग्रेजी अभिधान] (अकारादिक्रमेण संस्कृतशब्दानां अर्थाः व्युत्पत्तयश्च इंग्लण्डीयभाषया व्याख्याताः विद्यन्ते) Shabda Sagar—a comprehensive Sanscrit English Lexicon chiefly based on Professors Horance Hayman Wilson's Sanscrit English Dictionary & compiled from various recent authorities for the use of Schools & Colleges by Pandit Jiba Nanda Vidya Sagar B. A.	Calcutta	10-0-0
अमरकोश नामलिङ्गानुशासनम्—भट्टक्षीरस्वाम्युत्प्रेक्षितेनामरकोशोद्घाटनेन सहितः Amarakosha—(Namalinganushasana with the Commentary) Amarakoshodghatana of Kshirasvamin.	Poona	3-8-0
अमरसार—संस्कृतसे अंग्रेजी वा अंग्रेजीसे संस्कृत कोष जेवी गुटका.	मुम्बई	0-12-0
सरस्वतीकोश—इसमें कठिन भाषाके शब्दोंका सुगम भाषामें अर्थ किये हैं पं० जीवारामप्रणीत टाईप.	मुरादाबाद	1-0-0
शब्दार्थभानुकोश—(पं. भानुदत्तजीसङ्कलित) संस्कृत शब्द उर्दूभाषामें अर्थ. ...	मुम्बई	2-0-0
मङ्गलकोश—मङ्गलीप्रसादकृत इस्में संस्कृत वा भाषाके अकारादि शब्दोंके अर्थ भाषामें दिये हैं.	लखनऊ	2-0-0
शब्दस्तोममहानिधिः—(संस्कृताभिधानम्) [अकारादिक्रमेण संस्कृतशब्दानामर्था व्युत्पत्तयश्च सरलसंस्कृतभाषया व्याख्याता विद्यन्ते] पं. तारानाथसङ्कलितः टाईप.	कलकत्ता	11-4-0
अंग्रेजी और संस्कृत डिक्शनरी—(अंग्रेजी शब्द संस्कृतमें अर्थ) श्री वामन शिवरामकृत The Practical English Sanscrit Dictionary by Vaman Shivaram Apte M. A.	पूना	6-0-0

रामगुलाम शब्दकोष—जिसमें अकारादि क्रमसे संस्कृत, भाषा तथा सदाके व्यवहारमें आनेवाले अंग्रेजी फारसी आदि शब्दोंका आशय धातु, धात्वर्थ अनेकार्थ आदि उत्तम रूपसे दर्शाया गया है विलायती जिल्द सहित टाईप. ... ... मुम्बई 3–0–0

श्रीधरभाषाकोष—जिसमें संस्कृत और भाषाके शब्द शब्दार्थ अनेक धातु धात्वर्थ शब्द लक्षण और उनके प्रमाणिक उदाहरण व्याकरण संयुक्त पाठकजनोंकी विद्योन्नति और सहायार्थ लिखे गये हैं विलायती जिल्द टाईप. ... ... लखनऊ 3–0–0

अंग्रेजी हिन्दीकोष—English and Hindi Dictionary compiled by Ganesh Kashinath Kale. ... ... Bombay 2–8–0

The Students' Practical Dictionary containing Hindi words with Hindi and English meanings. ... ... Allahabad 3–0–0

Amarakosha: A metrical Dictionary of the Sanskrit language with Tibetan Version in two Fasciculas. ... ... Calcutta 4–8–0

रामकोश—(हिंदी संस्कृत डिक्शनरी) टाइप. ऐसा कोष आजतक दूसरा नहीं छपा. लाहोर 2–4–0

A Sanskrit-English Dictionary with references to the best editions of Sanskrit authors and etymologies and comparisons of cognate words chiefly in Greek, Latin, Gothic and Anglo-sexon compiled by Theodore Benfey. Out of Print. The last copy left in stock. Nicely bound. ... ... Europe 50–0–0

Anekartha Saṃgraha of Hemachandra together with extracts from the original sanskrit commentary of Mahendra. Edited with various readings by Theodore Zachariae. Text and commentary both in devanagari characters. अनेकार्थसंग्रहः हेमचन्द्रसूरिप्रणीतः श्री महेन्द्र-सूरिविरचित-टीकासारसहितः. ... ... Europe 12–0–0

A Practical Sanskrit Dictionary by A. A. Macdonell. 1924. Bound. Very Nice Volume. Very few copies left. ... Europe 30–0–0

The Mankha Kosha edited with extracts from the commentary and three indexes by Theodore Zachariae. Text in original Sanskrit. श्रीमङ्खकोषः टीकासारसहितः स्थूलाक्षर. ... ... Europe 10–0–0

A Sanskrit-English Dictionary, Etymologically and Philologically arranged, with special reference to cognate Indo-European languages, by Sir Monier Williams, M. A., New edition. Greatly enlarged and improved by E. Leuman and C. Cappeller and other scholars. 1899. ... ... Europe 67–0–0

A Sanskrit-English Dictionary based upon the St. Petersburg lexicons by Carl Cappeller. Improved Edition. Bound. ... Europe 20–0–0

Catalogus Catalogorum. An alphabetical register of sanskrit works and authors by Theodore Aufrecht. Complete in three very big volumes. ... ... Europe 68–0–0

The Paiyalachchhi Nama Mala being a dictionary of the Prakrit language by Dhanpâla. Edited with critical notes, an introduction and a glossary by George Buhler. Out of Print. ... Europe 10-0-0

पाइयलच्छी नाममाला प्राकृतकोष धनपालविरचित स्थूलाक्षर. ... यूरुप 10-0-0

Abhidhanappadipika; or dictionary of the Pali language by Moggalana Thero, with English and Singhalese interpretations, notes and appendices by Waskaduwe Subhuti, Bound. ... Europe 15-0-0

The Modern Concise Dictionary (English words with English & Hindi meanings.) ... ... Allahabad 5-0-0

The Students Practical Dictionary (English words with English & Hindi Meanings.) ... ... Allahabad 3-0-0

The Students Practical Dictionary (containing English words with Sanskrit & Hindi Meanings.) ... ... Allahabad 1-4-0

The Anglo-Hindi School Dictionary with 350 Illustrations. ... ... Allahabad 1-0-0

The Imperial Hindi & English Dictionary (with Pronounciations) by M. B. Trailokya B. A. ... ... Bombay 2-0-0

मदनकोष अर्थात् जीवनचरित्रस्तोम—इसमें संसारके १००० महानुभावोंके चरित्र संगृहीत हैं टाईप. मुम्बई 2-0-0

Hindi-English Dictionary by Mr. Bett. It contains 50000 words Good printing. Bound. ... ... Allahabad 6-0-0

मेदनीकोश—मेदनीकरप्रणीत. ... ... कलकत्ता 1-4-0

अमरकोश—महेश्वरकृत संस्कृत टीकासहित. मोटे पुष्ट कागजपर. ... मुम्बई 1-0-0

विश्वप्रकाशकोश—श्रीमहेश्वरसूरिप्रणीत. ... ... काशी 3-0-0

नामलिंगानुशासनकोश—(अमरसिंह विरचित) सर्वानन्दकृत सर्वस्वव्याख्यासमेत ४ भागमें सम्पूर्ण. ... ... मदरास 10-0-0

आख्यातचन्द्रिका—(क्रियाकोश) श्री भट्टमल्लविरचित. ... ... काशी 1-8-0

नानार्थार्णवसंक्षेपकोष—केशवस्वामी विरचित सटीक ३ भागमें. ... ... मदरास 6-4-0

शाश्वतकोश—अनेकार्थसमुच्चय edited by K. G. Oka. 1-8-0

वैद्यकशब्दसिन्धुकोष—(आयुर्वेदीय-शब्दौषध-नाम-निर्णायको बृहत्कोषग्रन्थः) कविराज उमेशचन्द्र गुप्त कविरत्नसंकलित टाईप. ... ... कलकत्ता 7-0-0

विनयकोश—जिसमें गोस्वामी तुलसीदासकृत विनय पत्रिकाके सम्पूर्ण शब्दोंको अकारादि क्रमसे संग्रह करके उनके विविध अर्थ दिये गये हैं सजिल्द. ... ... प्रयाग 2-0-0

अमरकोश—(अमरसिंहविरचित) पं. शक्तीधर शास्त्रीविरचित विस्तृत भाषाटीका समेत लखनऊ 3-0-0

अमरकोष—(अमरसिंहविरचित) पं. शक्तिधर शास्त्रीविरचित संस्कृतटीका समेत टाईप. लखनऊ 3-0-0

अमरकोश—भाषाटीकासमेत ग्लेज कागज जिल्ददार. ... ... मुम्बई 3-0-0

" " रफ कागज " " 2-8-0

युगलकोष—(The Standard Sanskrit-Hindi Dictionary) containing appendices on—(1) The Important Sanskrit writers
(2) The sanskrit Prosody
(3) The Kavya or Court Poetry and
(4) The Drama

For the use of Sanskrit Scholars of Sanskrit Literature by Pandit G. D. Vyas-Bound. ... ... Allahabad 4-0-0

शब्दार्थसंग्रहकोष—इसमें अमरकोश व वैद्यककोश आदिकोषोंसे शब्दोंका संग्रह अकारादि क्रमसे किया गया है. ... ... टाईप लखनऊ 1-10-0

भारतीय-चरितास्बुधि—अर्थात् वैदिक, पौराणिक, ऋषि, मुनि, राजा, राणी स्थान तथा ऐतिहासिक पुरुषों कवियों आदिका हिन्दी भाषामें संक्षिप्त विवर्ण। चतुर्वेदी द्वारका प्रशाद संग्रहीत. ... ... लखनऊ 5-8-0

हिन्दीशब्दार्थपारिजात—हिन्दीके क्लिष्ट अप्रचलित तथा संस्कृतके हिंन्दी भाषामें प्रचलित शब्दोंका तात्पर्यबोधक कोश चतुर्वेदी द्वारका प्रसाद शर्म्मा सम्पादित. अति उपयोगी. इलाहाबाद 3-0-0

वैजयन्तीकोष यादवप्रकाश कृत. मूल संस्कृत तथा अंग्रेजी नोट सहित. ... मदरास 10-0-0

त्रिकांडशेष—नामसंस्कृतप्राचीनकोष-श्रीपुरुषोत्तमदेवनृपतिवरेण विरचितः. ... मुम्बई 3-0-0

सचित्रभाषाकोष— ... ... टाईप मुम्बई 0-14-0

चतुर्वेदीसंस्कृत-हिन्दी-कोष—(संस्कृत शब्दोंका हिन्दी भाषामें अर्थ) चतुर्वेदी द्वारका प्रशाद कृत जिल्दसहित टाईप. ... ... लखनऊ 3-0-0

अभिधानराजेंद्रकोष—मागधी (प्राकृत) संस्कृतकोषः श्रीद्विजनयराजेन्द्रसूरीश्वरकृत सम्पूर्ण ७ भागमें. 300-0-0

The Student's Sanskrit-English Dictionary by Vaman Shivram Apte. Second Edition. Cloth. ... ... Bombay 10-0-0

The Practical Sanskrit-English Dictionary (For the use of Schools & Colleges) by Vaman Shivram Apte. Third Edition. Cloth. Bombay 15-0-0

The Standard Sanskrit-English Dictionary by L. R. Vaidya B. A. ... ... Bombay 5-0-0

Sanskrit-English Pocket Dictionary by Hari Raghunath Bhagvat B. A. ... ... Bombay 1-12-0

The Handy Sanskrit-English Dictionary by Vasudev Govind Apte B. A. ... ... Bombay 2-8-0

Sanskrit-English Dictionary by P. Ram Jasan. ... Benares 5-0-0

Students Practical Dictionary containing Sanskrit words with English & Hindi meanings. ... ... Allahabad 1-4-0

Rs. A. P.

The Students Practical Dictionary containing
(1) English words with English & Hindi meanings
(2) Hindi words with Hindi & English meanings
... ... Allahabad 6–0–0

अंग्रेजी-हिन्दी शब्दकोष—अर्थात् अंग्रेजी शब्दोंका हिन्दी भाषामें उच्चारण और अर्थ—सजिल्द. ... ... मुम्बई 1–8–0

गुटका हिन्दीकोष—कठिन हिन्दी शब्दोंका अर्थ सरल हिन्दी भाषामें. ... इलाहाबाद 1–8–0

हिन्दीविश्वकोष—बङ्गला विश्वकोषके सम्पादक—श्रीनगेन्द्रनाथ वसु प्राच्यविद्या महार्णवसिद्धान्तवारिधि शब्दरत्नाकर M. R. A. S. तथा हिन्दीके विद्वानों द्वारा संकलित। यह कोष हिन्दीके महान् ग्रन्थोंकाभी अभ्यास करनेवाले लोगोंके लिये अत्यन्तही उपयोगी है। इसके ६ भाग छप चुके हैं. बाकी छप रहा है. ... ... कलकत्ता 90–0–0

हिन्दीशब्दसागर—हिन्दीभाषाका एक बृहत् कोश यह एक ऐसा अलौकिक हिन्दीकोश है जिसकी महिमा लेखनीसे बाहर है टाईप बनारस २८ भाग छपकर तय्यार हैं. बाकी छप रहा है. दाम प्रत्येक भाग. 1–0–0

सचित्र अर्ध-मागधीकोष—सम्पादक-पूज्यपाद श्रीगुलाबचन्द्रजी स्वामीके शिष्य शतावधानी जैनमुनि श्रीरत्नचन्द्रजी महाराज (लीम्बडी सम्प्रदाय) भाग १ छपचुका है शेष छपरहा है। दाम प्रथम भाग सजिल्दका. 18–0–0

विश्वलोचनकोष—आचार्यधरसेनकृत मूल और पं० नन्दलालजी शर्म्मांकृत भाषाटीका। अनेकार्थ कोष है, कविता करनेवालोंके बड़े कामका है। छपाई सफाई सुन्दर है। पृष्ठसंख्या ४३२, कपड़ेकी जिल्द बँधी है। मूल्य सिर्फ. 1–12–0

धनंजय-नाममाला—द्विसन्धान-महाकाव्यके रचयिता महाकवि धनंजयकृत मूल, और पं० घनश्याम दासजीकृत भा० टी०। पुस्तकान्तमें अनेकार्थ नाममाला भी है। मूल्य. 0–10–0

सब प्रकारकी पुस्तकें मिलनेका पता.

मेहरचंद लक्ष्मण दास.

संस्कृत-पुस्तकालय, लाहौर.

Apply to—

MEHR CHAND LACHMAN DASS.
Sanskrit Book Depot, Said Mitha Bazar.
LAHORE.

नोट उपरोक्त कोषोंपर नियमानुसार कमीशनभी दिया जाता है. आर्डर देते समय कृपया कुछ पेशगी अवश्य भेजें और अपना पता स्पष्ट लिखें। पत्रोत्तरके लिये जवाबी कार्ड भेजना चाहिए अन्यथा उत्तरके लिए प्रतीक्षा नहीं करिएगा।

हिंदीभाषाके उत्तमोत्तम ग्रंथ.

स्वाधीनता। जॉन स्टुअर्ट मिलके 'लिबर्टी' नामक ग्रन्थका सुबोध और सरल अनुवाद। स्वाधीनताका इतना सुन्दर, प्रामाणिक और युक्तियुक्त विचार शायद ही किसी ग्रन्थमें किया गया हो। मू० २)

जान स्टुअर्ट मिल। स्वाधीनताके मूल लेखकका शिक्षाप्रद और आलोचनात्मक जीवनचरित। विद्यार्थियों और लेखकोंके लिए अतिशय उपयोगी। मूल्य ॥=)

प्रतिभा। अतिशय सुरुचिसम्पन्न, भावपूर्ण, मनोरंजक और शिक्षाप्रद उपन्यास। बालक, युवा स्त्री और पुरुष सबके हाथमें देने योग्य। भाषा इसकी बहुत शुद्ध और परिमार्जित है। मू० १।)

फूलोंका गुच्छा। अनेक भाषाओंसे अनुवादित बहुत ही उत्कृष्ट गल्पोंका संग्रह। सब मिलाकर ११ गल्पें हैं और वे प्रायः सभी ऐतिहासिक हैं। भाषा बड़ी ही शुद्ध और सुन्दर है। पढ़ते समय गद्यकाव्यका आनन्द आता है। मू० ॥-)

आँखकी किरकिरी। महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुरके सुप्रसिद्ध उपन्यासका अनुवाद। इसकी जोड़के उपन्यास संसारमें अभीतक बहुत ही कम प्रकाशित हुए हैं। मनुष्यके आन्तरिक भावचित्रोंका, उनके उत्थान पतन और घातप्रतिघातोंका इसमें बड़ा ही सुन्दर चित्रण है। रसिकतासे भी लबालब भरा हुआ है। मूल्य १॥=)

चौबेका चिट्ठा। स्वर्गीय बाबू बंकिमचन्द्रके सुप्रसिद्ध ग्रन्थका अनुवाद। इसमें हँसी मजाक, चुटकीली बातें, इतिहास, राजनीति, समाजनीति, देशप्रेम आदि सभी कुछ है। मूल्य ॥=)

मितव्ययता। सेमुएल स्माइल्सके 'थ्रिफ्ट'का छायानुवाद। किफायतशारी और सदाचार सिखानेवाली सुन्दर पुस्तक। मूल्य ॥≡)

स्वदेश। रवीन्द्रबाबूके स्वदेशसम्बन्धी आठ निबन्धोंका अनुवाद। एकसे एक बढ़कर अपूर्व और अश्रुतपूर्व विचारोंका समावेश। मूल्य ॥-)

चरित्रगठन और मनोबल। आध्यात्मिक लेखक राल्फ वाल्डोट्राइनकी पुस्तकका अनुवाद। चरित्रसंगठनमें सहायता करनेवाली अपूर्व पुस्तक। मू० ≡)

सफलता और उसकी साधनाके उपाय। इसमें सफलता और उसके सिद्धान्तोंका सरल और सजीव भाषामें विचार किया गया है। अनेकानेक ग्रन्थोंके आधारसे इसकी रचना हुई है। मू० ॥।)

अन्नपूर्णाका मन्दिर। बहुत ही पवित्र, पुण्यमय और करुणरसपूर्ण उपन्यास। सती सावित्रीके पौराणिक चरित्रसे भी इसकी नायिकाका चरित्र उंचा चित्रित किया गया है। कुटुम्बवात्सल्य, मातृपितृभक्ति, स्वार्थत्याग और निःस्वार्थप्रेमके इसमें एकसे एक बढकर सजीव चित्र हैं। मूल्य सजिल्दका १।=)

स्वावलम्बन। डा० सेमुएल स्माइलसके सुप्रसिद्ध ग्रन्थ 'सेल्फ हेल्प' का छायानुवाद। विदेशी उदाहरणोंके साथ सैकड़ों देशी महापुरुषोंके उदाहरण भी इसमें शामिल कर दिये हैं। अपने पैरों खड़े होनेकी शिक्षादेनेवाला अपूर्व ग्रन्थ। मू० १॥)

उपवास-चिकित्सा। उपवास या लंघन नीरोग होनेके लिए सबसे अच्छी दवा है। भयंकरसे भयंकर और दुःसाध्यसे दुःसाध्य बीमारियाँ उपवासचिकित्सासे आराम हो सकती हैं। इसी बातको इसमें विस्तारके साथ समझाया है। मू० ॥।)

सूमके घर धूम। सुप्रसिद्ध नाटककार द्विजेन्द्र बाबूके एक प्रहसनका अनुवाद। थके हुए मस्तकको घड़ी भर आराम पहुँचानेकी मनोरंजक ओषधि। चौथी आवृत्ति। मू० ।)

दुर्गादास। बंगालमें स्वर्गीय बाबू द्विजेन्द्रलाल राय बहुत बड़े नाटकलेखक हो गये हैं। उनकी जोड़का नाटक-लेखक शायद ही कोई दूसरा हो। उनके नाटकोंके अनुवाद मराठी, गुजराती, उर्दू, तामिल आदि अनेक भाषाओंमें हो चुके हैं। देशभक्ति और विश्वप्रेमके भावोंसे उनके नाटक लबालब भरे हुए हैं। उनके नाटकोंके देखनेमें जैसा आनन्द आता है वैसा ही पढनेमें भी आता है। उनके पात्रोंका एक एक वाक्य कण्ठ करने योग्य होता है। उनके १५ नाटक प्रकाशित हो चुके हैं और हिन्दी-संसारमें उनकी धूम है। पाठकोंने उन्हें बहुत ही पसन्द किया है। यह दुर्गादास भी उन्हीके एक नाटकका अनुवाद है। इसमें जोधपुरनरेश जसवन्तसिंहके सुप्रसिद्ध सेनापति राठोर दुर्गादासका चरित्र अंकित किया गया है। बहुत ही महान् चरित्र है। मू० १)

प्रायश्चित्त। बेल्जियमके नोबल प्राइज पानेवाले सुप्रसिद्ध लेखक मेटरलिंककी एक भावपूर्ण और हृदयद्रावक नाटिकाका सुन्दर अनुवाद। पश्चात्तापकी अग्निमें पापोंके जलजानेकी सुन्दर कल्पना। मू० ।)

अब्राहम लिंकन। संयुक्त राज्य अमेरिकाके सुप्रसिद्ध प्रेसीडेंटका—जिन्होंने वहाँके हबशी गुलामोंको आजाद किया था और एक गरीबके घरमें जन्म लेकर इतना ऊँचा पद प्राप्त किया था—शिक्षाप्रद और उत्साहवर्धक जीवनचरित। मू० ॥=)

मेवाड़-पतन। स्वर्गीय द्विजेन्द्रबाबूके नाटकका अनुवाद। मेवाड़के राणा अमरसिंह और बादशाह जहाँगीरके इतिहासके आधारपर इसकी रचना हुई है। इसके पात्र दाम्पत्य प्रेम, जातीय प्रेम और विश्वप्रेमके सजीव चित्र हैं। देशका अधःपतन क्यों हुआ, इसकी भी इसमें बड़ी मार्मिक आलोचना की गई है। चार सुन्दर चित्रोंसे सुशोभित। मू० ॥।≈)

शाहजहाँ। यह भी द्विजेन्द्रबाबूका प्रसिद्ध नाटक है। मुगल बादशाह शाहजहाँ इसके प्रधान नायक हैं। मू० १)

उस पार। द्विजेन्द्रबाबूके सामाजिक नाटकका अनुवाद। इसमें एक ओर स्नेह, कृतज्ञता, भक्ति, क्षमा और त्याग और दूसरी ओर कृतघ्नता, अत्याचार, कपटता, निष्ठुरता और हत्याके भाव दिखलाये गये हैं। स्वर्गके साथ नरकका ऐसा तुमुल संग्राम शायद ही किसी नाटकमें दिखलाया गया हो, बहुत ही शिक्षाप्रद है। मू० १≈)

नवनिधि। सुप्रसिद्ध उपन्यासलेखक 'प्रेमचन्दजी'की एकसे एक बढ़कर चुनी हुई नौ गल्पोंका संग्रह। उनका यह संग्रह सबसे अच्छा है। इसे बालक स्त्री, पुरुष सब ही पढ़ सकते हैं और मनोरंजनके साथ साथ शिक्षा भी ग्रहण कर सकते हैं। मू० ॥।)

नूरजहाँ। द्विजेन्द्रबाबूका ऐतिहासिक नाटक। सुप्रसिद्ध मुगल बादशाह जहाँगीर और उनकी बेगम नूरजहाँके चरित्रोंके आधारसे यह लिखा गया है। हिन्दीके एक सुप्रसिद्ध लेखक लिखते हैं—"नूरजहाँ अद्भुत वस्तु है। पंक्ति पंक्तिमें सुन्दरता तथा जोरकी नदिया बह रही हैं। निस्सन्देह द्विजेन्द्रबाबू भारतके अद्वितीय नाटककार हैं। पढ़ते पढ़ते दिल नाच उठता है। जहाँ कहाँ समुचित स्थान आता है कि द्विजेन्द्रबाबू रंग बाँध देते हैं।" भावोंका उठना और बैठना इसमें बारीकीसे दिखलाया गया है। मू० १≈)

आयर्लेण्डका इतिहास। यों तो आयर्लैण्डका इतिहास सभी पराधीन जातियोंके लिए शिक्षाप्रद है, परन्तु भारतवासियोंके लिए तो यह बहुत ही उपकारक और सच्चा मार्गदर्शक है। प्रत्येक स्वराज्यवादी देशभक्तको इसका स्वाध्याय करना चाहिए। मू० १॥।≈)

शिक्षा। साहित्यसम्राट रवीन्द्रबाबूके शिक्षासम्बन्धी पाँच निबन्धोंका अनुवाद। सभी निबन्ध बड़े ही महत्त्वके हैं और शिक्षाविज्ञानकी गहरीसे गहरी आलोचनाओंसे युक्त हैं। मू० ।।)

भीष्म। द्विजेन्द्रबाबूका पौराणिक नाटक। महाभारतके परमपूज्य वीर भीष्मपितामह इसके प्रधान पात्र हैं। ब्रह्मचर्य, पितृभक्ति और स्वार्थत्यागका जीता जागता चित्र। मू० १)

कावूर। इटलीके महान् देशभक्त और राजनीतिज्ञका जीवनचरित। इटलीको आस्ट्रियाके चुंगलसे मुक्त करनेमें इस महावीरका सबसे प्रधान हाथ था। कहते हैं कि यदि यह न होता तो मेजिनी और गेरीबाल्डीके होते हुए भी इटली स्वाधीन न हो सकता। मू० १)

चन्द्रगुप्त। मू० १) } ये दोनों नाटक भी द्विजेन्द्र-
सीता। मू० ॥-) } बाबूके नाटकोंके अनुवाद हैं।

पहला हिन्दू-राज्य-कालका ऐतिहासिक नाटक है और उसमें मौर्यवंशी सम्राट् चन्द्रगुप्तके चरित्रकी प्रधानता है और दूसरा पौराणिक नाटक है जिसमें महासती सीतादेवीका पवित्र चरित्र चित्रित किया गया है।

छाया-दर्शन। मरनेके बाद जीव कहाँ जाता है, उसकी क्या अवस्था होती है, वह लोगोंको किस प्रकार छायारूप धारण करके दर्शन देता है, बातचीत करता है, सुखदुःख पहुंचाता है, आदि अनेक कुतूहलवर्धक बातोंका इसमें विस्तारके साथ वर्णन किया है। मू० १।)

राजा और प्रजा। जगत्प्रसिद्ध विद्वान् रवीन्द्रबाबूके राजनीतिसम्बन्धी ११ निबन्धोंका अनुवाद। अध्ययन और मनन करने योग्य गंभीर विचारोंका अपूर्व संग्रह। मू० १)

गोबर-गणेश-संहिता। व्यंग और वक्रोक्तियोंसे भरी हुई बहुत ही दिलचस्प चीज। इसके लेखक गोबर गणेशजीने—जिन्हें चिदानन्द चौबेका भाई ही समझना चाहिए—इसमें बड़ी ही मार्मिक और चुभजानेवाली बातें कहीं हैं। मू० ॥)

साम्यवाद। हिन्दीमें इस विषयका सबसे पहला और उत्कृष्ट ग्रन्थ। इसमें भगवान बुद्धदेवके समयसे लेकर अबतकके तमाम साम्यवादों—लोकमतवाद, व्यापारसंघवाद, अराजकतावाद, बोल्शेविज्म आदिका स्वरूप, उनके सिद्धान्त, इतिहास, और प्रचार आदि सभी बातोंका खूब विस्तारके साथ वर्णन किया है। साथ ही रूस, जर्मनी, इटली आदि देशोंकी राजक्रान्तियोंका इतिहास लिख दिया गया है। मू० २॥)

महादजी सिन्धिया। अंगरेजोंके प्रबल प्रतिद्वन्द्वी, असमसाहसी, वीरकेसरी महादजी सिन्धियाका बड़ी खोजके साथ लिखा हुआ जीवनचरित। महादजी बड़े भारी राजनीतिज्ञ थे। मुगल बादशाहत उनकी मुट्ठीमें थी। यदि उनके बाद उन ही जैसा कोई योग्य पुरुष गद्दी पर आता तो आज इस देशके बादशाह मराठे होते, अंगरेज नहीं। मू० ॥।≈)

आनन्दकी पगडंडियाँ। अमेरिकाके ज्ञानी और अंतर्दृष्टा लेखक जेम्स एलेनके 'बाइ वेज आफ ब्लेसडनैस' नामक ग्रन्थका अनुवाद। इसके अध्ययन और मननसे बड़ी शान्ति मिलती है और मनुष्यके चरित्रपर गहरा प्रभाव पड़ता है। मूल्य सजिल्दका १।)

ज्ञान और कर्म। बंगालके सुप्रसिद्ध विद्वान्, स्व० गुरुदास बनर्जी के अमूल्य ग्रन्थका अनुवाद। इसमें लेखकके जीवन भरके अध्ययन और मननका सार भरा हुआ है। मनुष्यके अन्तर्जगत् और बहिर्जगत्से सम्बन्ध रखनेवाली जितनी भी बातें हैं, उसके आत्मिक, मानसिक और शारीरिक सुखोंको बढ़ानेवाले जितने भी साधन हैं और सन्तान, परिवार, जाति, सम्प्रदाय, देश, राज्य आदिके प्रति उसके जितने भी कर्तव्य हैं, इस ग्रन्थमें उन सभी पर प्रकाश

डाला गया है। यह धर्म ग्रंथके समान पढ़ने लायक ग्रन्थ है। मू० ३)

सरल मनोविज्ञान। इसमें मनोविज्ञान जैसे कठिन विषयको बहुत ही सरलतासे सुगम भाषामें अच्छी तरह उदाहरण आदि देकर समझाया है और प्रत्येक अध्यायके अन्तमें एक रोचक प्रश्नावली दी है। मू० १॥)

कालिदास और भवभूति। संस्कृतके दो सुप्रसिद्ध कवियोंके अभिज्ञान शाकुन्तल और उत्तररामचरित इन दो नाटकोंकी गुणदोषविवेचिनी, मर्मस्पर्शिनी और तुलनात्मक समालोचना। यह समालोचना कितनी बढ़ियाँ होगी, यह बतलानेके लिए इतना ही बतला देना काफी होगा कि इसके लेखक सुप्रसिद्ध नाटककार स्व० द्विजेन्द्रलाल राय हैं। मू०१॥)

साहित्य-मीमांसा। यह भी एक समालोचना-ग्रन्थ है। इसमें पूर्वके और पश्चिमके साहित्यकी—यूरोपियन और आर्यसाहित्यकी—तुलनात्मक समालोचना की गई है और इस देशके साहित्यको सब तरहसे आदरणीय, उत्कृष्ट और महान् सिद्ध किया है। मू० १।=)

राणा प्रतापसिंह। स्वर्गीय द्विजेन्द्रबाबूके दुर्लभ नाटकका अनुवाद। इसमें महाराणा प्रताप, उनके भाई शक्तसिंह, राजकवि पृथ्वीराज, उनकी स्त्री जोशीबाई, अकबरकी कन्या मेहरुन्निसा और भानजी दौलतुन्निसा आदि पात्रोंके चरित्र एक अपूर्व और अकल्पनीय ढंगसे चित्रित किये गये हैं। मू० १॥)

अन्तस्तल। इस छोटीसी पुस्तकमें सुख, दुःख, स्मृति, भय, क्रोध, लोभ, निराशा, आशा, घृणा, प्यार, लज्जा, अतृप्ति आदि मानसिक भावोंको बिल्कुल ही अनोखे ढंगसे चित्रित किया है। मू० ॥=)

जातियोंको सन्देश। मूल-लेखक श्रीयुत पाल रिचर्ड और भूमिकालेखक साहित्यसम्राट् श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर। इसमें साम्राज्यमदसे मतवाली हुई पाश्चात्य जातियोंको बड़ा ही मार्मिक और चुभनेवाला उपदेश दिया है। मू० ॥)

वर्तमान एशिया। पाश्चात्य जातियोंने एशियाके अनेक देशों, प्रान्तों और अगणित द्वीपोंपर जिन धूर्तताओं, छलकपटों, अत्याचारों और झूठे प्रलोभनोंसे जो अधिकार विस्तार किया है और अनेक बड़ी बड़ी जातियोंको अपना गुलाम बनाया है उनका सारा कच्चा चिट्ठा युद्धकालके बाद तकका इसमें दिया है। मू० ३)

नीति-विज्ञान। लेखक, बाबू गोवर्द्धनलाल एम० ए०, बी० एल०। आचारशास्त्र या नीतिविज्ञान पर अभीतक हिन्दीमें कोई ग्रन्थ नहीं है। यह सबसे पहला ग्रन्थ है। देशी और विदेशी उदाहरणोंसे भरपूर है। मू० २।)

प्राचीन साहित्य। अनु०—पं० रामदहिन मिश्र काव्यतीर्थ। जगत्प्रसिद्ध कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुरके प्राचीन साहित्य सम्बन्धी निबन्धोंका अनुवाद। इसमें १ रामायण, २ धम्मपद, ३ कुमारसंभव और शकुंतला, ४ शकुंतला, ५ मेघदूत ६ कादम्बरी चित्र, ७ काव्यकी उपेक्षिता ये सात निबन्ध हैं और इनमें उक्त प्राचीन ग्रन्थोंकी अपूर्व और मार्मिक समालोचना की गई है। थोड़ेमें बहुत कह डालना रवि बाबूका खास गुण है। मू० ॥)

समाज। अनु० बाबू बदरीनाथ वर्मा एम० ए०, काव्यतीर्थ। यह भी रवीन्द्रबाबूकी एक निबन्धावलीका अनुवाद है। इसमें आठ निबन्ध हैं—१ आचारका अत्याचार, २ समुद्रयात्रा, ३ विलासकी फाँसी, ४ नकलका निकम्मापन, ५ प्राच्य और प्रतीच्य, ६ अयोग्य भक्ति, ७ पूर्व और पश्चिम, ८ चिट्ठीपत्री। 'प्रभा'के सम्पादक लिखते हैं—"रवीन्द्रनाथ बाबूकी लेखनीसे जो कुछ निकलता है वह विचारोंका उत्तेजक, चित्ताकर्षक और अद्भुत होता है। .....इस पुस्तकका हर पन्ना विचार पूर्ण उपदेशोंसे भरा है मूल्य ॥=)

अञ्जना। लेखक—श्रीयुत सुदर्शन। एक पौराणिक कथाके आधारसे लिखा हुआ मौलिक नाटक। सुदर्शनजी सिद्धहस्त कहानी लेखक हैं। उनका यह पहला ही नाटक है और इसमें भी वे अपनी स्वाभाविक प्रतिभाके बलसे यशस्वी हुए हैं मूल्य १=)

मुक्तधारा। महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुरके एक नये नाटकका अनुवाद। इसमें व्यक्तिगत, सामाजिक, राष्ट्रीय और और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओंपर एक नये ही ढंगसे प्रकाश डाला गया है। प्रारंभमें प्रो० धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री एम० ए०, तर्कशिरोमणिकी एक विस्तृत भूमिका है जिससे नाटकका अभिप्राय बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है। नाटकपात्रोंका चरित्र विश्लेषण भी किया गया है। मू० ॥=)

सुहराव रुस्तम। स्वर्गीय द्विजेन्द्रलाल रायके बंगाली नाटकका अनुवाद। अनुवादक—श्रीमान् मुंशी अजमेरीजी। लगभग तीन चतुर्थांश भाग पद्यका है। करुणरसप्रधान खेलनेयोग्य नाटिका है। मू० ॥=)

चन्द्रनाथ। बंगालके इस समयके सर्वश्रेष्ठ लेखक शरचन्द्र चट्टोपाध्यायके सामाजिक उपन्यासका अनुवाद। बहुत ही मार्मिक और हृदयद्रावक है। मू० बारह आने।

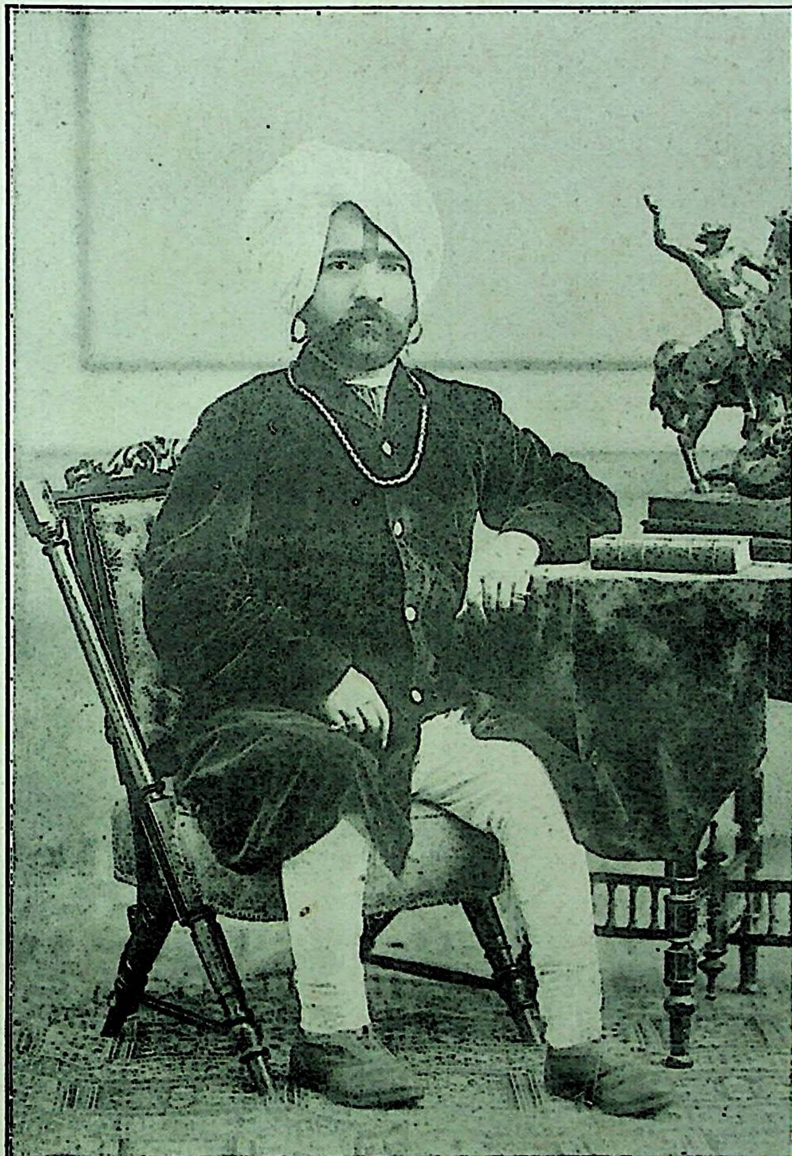
अस्तोदय और स्वावलम्बन। मू० १=)

युवाओंको उपदेश। अंग्रेजीके सुप्रसिद्ध ग्रंथ 'एड्वाइस टू यंगमेन'का हिन्दीअनुवाद मू० ॥-)

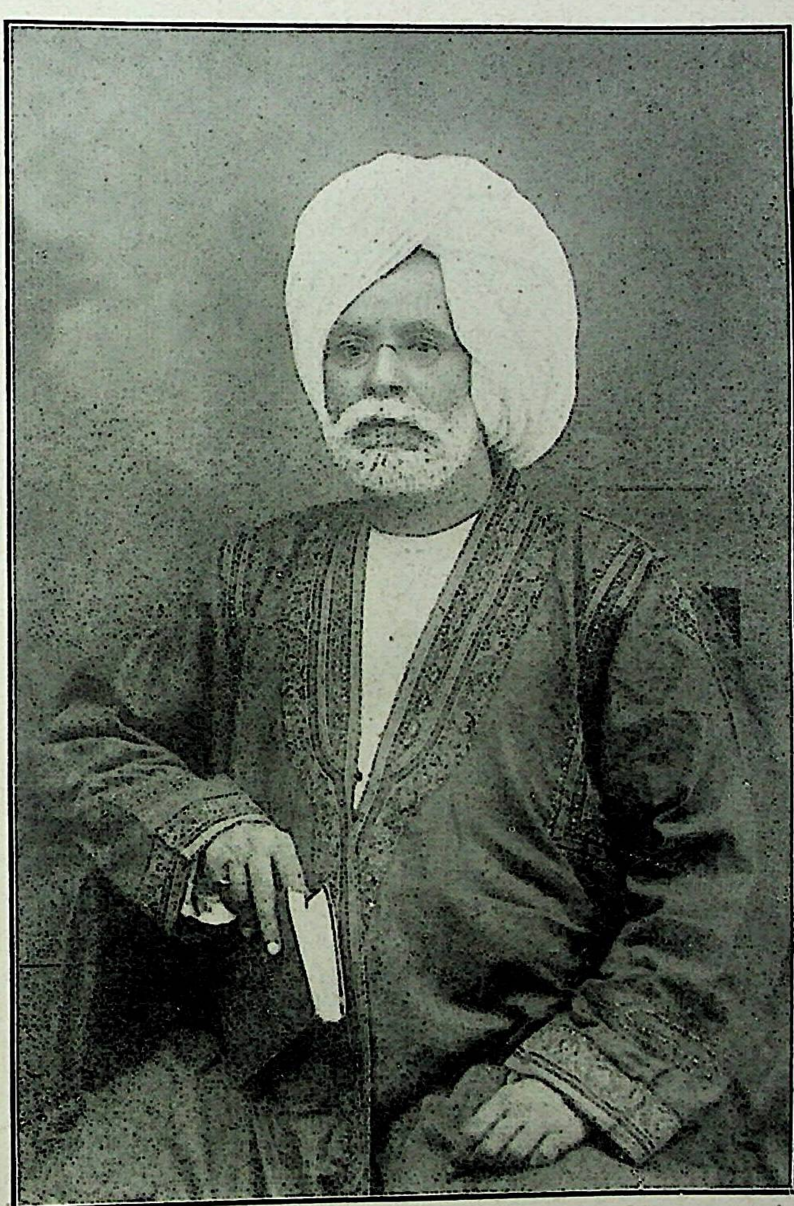
भारत-रमणी। द्विजेन्द्र बाबूका सामाजिकनाटक मू०॥=)

कोलम्बस। अमेरिकाका पत्ता लगानेवाले साहसीवीरका जीवनचरित मू० ॥)

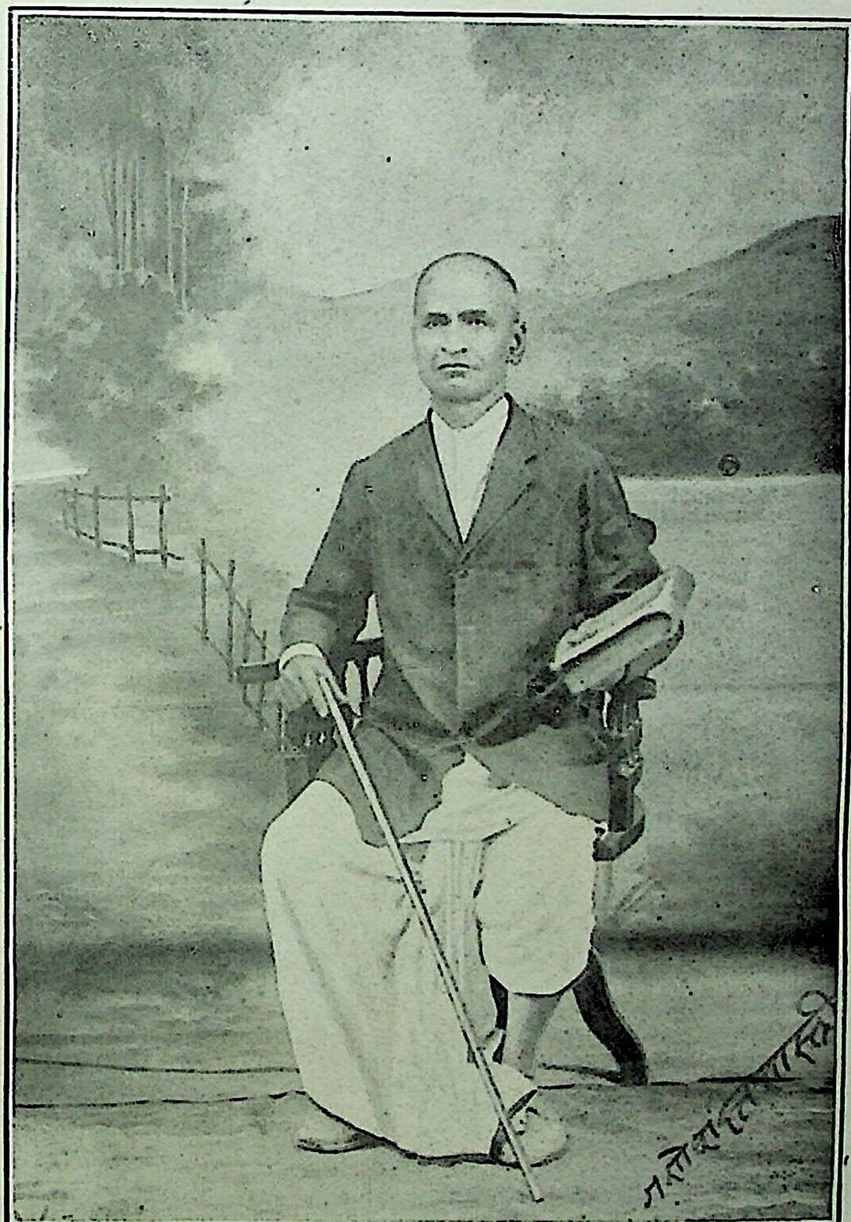
सन्तान-कल्पद्रुम। इस पुस्तकमें देशी विदेशी वैद्यों और डाक्टरोंकी सम्मतियाँ देकर मनचाही खबसूरत, बलवान् और नीरोग सन्तान उत्पन्न करनेकी विधि लिखी गई है। मू० १)



स्वर्गीय श्री मन्महाराणा पद्म चन्द्र जीसाहिब बहादुर वालिए रयासत जुब्बल (शिमला) जिनकी स्मृतिमें यह कोष निर्मित हुआ ।



भारतवर्ष में संस्कृत साहित्य के आदि पुस्तक विक्रेता स्वर्गीय श्रीयुत् लाला मेहरचन्द्र जी, अध्यक्ष संस्कृत पुस्तकालय, लाहौर, जिन्होंने इस कोष को संस्कृत विद्यार्थियों के हितार्थ निर्माण करवाया ।



पद्मचन्द्रकोषके रचयिता

श्रीमान् पं० गणेशदत्तजी शास्त्री,

भूतपूर्व प्रोफैसर औरियंटल कालेज, वर्त्तमान प्रोफैसर सनातनधर्मकालेज, लाहौर.

पद्मचन्द्रकोश।

ओम् चिदात्मने नमः।

अ

अ, (पु॰) अव्-ड। विष्णु। न होना। संस्कृत वर्णमालाका पहिला अक्षर, अभाव.

अ, (अव्य॰) अव्-प्रसन्न करना आदि+ड-स्वरोंके आदिमें पाठ होनेसे अव्यय है। अभाव (न होता)। प्रतिषेध (रोकना)। स्वल्प (थोड़ासा)। सम्बोधन। अधिक्षेप (तिरस्कार करना)। निषेधार्थक "नञ्" का प्रतिनिधि है। स्वरोंके पहिले अन् और व्यञ्जनोंके पहिले "अ" ही रहता है। "न" के छ अर्थ होते हैं-सादृश्य (मिलता-जुलता) जैसे "अब्राह्मण" ब्राह्मण (यज्ञोपवीत आदि होनेसे) के समान-क्षत्रियादि। अभाव (न होना) जैसे "अज्ञानम्" ज्ञानका न होना। मूलभेद (फरक)-"अपटः" कपडा नहीं, कोई और वस्तु। अल्पता (थोडासा)-छोटापन जैसे-"अनुदरा" पतली वा छोटी कमरवाली। विरोध (विरुद्ध वा बखिलाफ) जैसे "अनीति" (नीति वा न्यायके विरुद्ध)। लङ् लुङ् और लृङ् लकारोंके पहिले भी लगाया जाता है.

अऋणिन्, (त्रि॰) नास्ति ऋणं यस्य। ऋणरहितः। जिसने किसीका ऋण-कर्जा नहिं देना। बेकर्ज। "ऋ" को व्यञ्जन मान लेनेसे ऋणके पहिले "अन्" नहीं हुवा। इसी अर्थमें "अनृणी" भी होता है.

अंश, (पु॰) अंश्+भावेऽच्। विभाग। राशीका तीसवां हिस्सा.

अंशक, (त्रि॰) अंश्+ण्वुल् (अक)। विभाजक (बांटनेहारा)। स्त्रियाम्-अंशिका। दायाद (शरीक-हिस्सेदार) (पु॰) अंश+स्वार्थे कन्। अंश, हिस्सा, टुकडा। मेष आदि राशिका तीसवां भाग। "द्विभर्तृका मेषनवांशके स्यात्".

अंशयितृ, (पु॰) अंश्+तृच्। अंशयति। बांटनेहारा-भागी.

अंशल, (त्रि॰) अंश्+लच्। बलवान्.

अंशहर, (त्रि॰) अंशं हरति-हृ+अच्। अंशहारक। हिस्सा लेनेहारा। "अंशहरोऽर्धहरो वा पुत्रवित्तार्जनात् पिते"ति स्मृतिः.

अंशावतरण, (न॰) ६ त॰। अंशस्य अवतरणम्। देवताओंके अपने २ भागसे मिलकर वासुदेव आदि रूपसे पृथिवीपर प्रकट हुआ नरदेह भगवान्का अवतार.

अंशिन्, (त्रि॰) अंश्+णिन्। भाग करनेहारा। शरीक.

अंशु, (पु॰) अंश्+कु। प्रभा। किरण। वेग.

अंशुक, (न॰) अंशु+क। वस्त्र-महीन कपडा.

अंशुधर, (पु॰) अंशु+धृ+अच् ६ त॰। सूर्य। वेगवान्.

अंशुपति, (पु॰) अंशु-पति ६ त॰। सूर्य.

अंशुमत्फला, (स्त्री॰) अंशुमत्-फलं यस्याः ६ त॰। केलेका वृक्ष.

अंशुमाला, (स्त्री॰) अंशु+माला ६ त॰। किरणोंका समूह.

अंशुमालिन्, (पु॰) अंशु+माला+इनि। सूर्य.

अंस, (पु॰) अम्+स। कंधा। हिस्सा.

अंसकूट, (पु॰) अंस+कूट ६ त॰। बैलका अंग-हुड्ड.

अंहस्, (न॰) अंह्+असि। पाप.

अंह्रि, (पु॰) अंह्+क्रि। पाओं। वृक्षका मूल.

अंह्रिप, (पु॰) अंह्रिणा (मूलेन) पिबति सिक्ततोयम्। अंह्रि+पा+क। सींचे गये जलको जड़से पीताहै। वृक्ष.

अक्, भ्वा॰ प॰ गतौ (अकति)। जाना। सांपकी भांति सरकना.

अक, (त्रि॰) सरकनेहारा.

अकम्, (न॰) न कं-सुखम्। सुखका न होना। दुःख। (जैसा कि "नाक" न अकं-दुःखं यत्र) जहां दुःख न हो.

अकच, (त्रि॰) न॰ ब॰। गञ्जा।-चः। केतु ग्रहका नाम है। जो धडके स्वरूपमें है.

अकथित, (त्रि॰) न॰ ब॰। न कहा गया। गौण कर्म.

अकनिष्ठ, (त्रि॰) न॰ ब॰। न छोटा अर्थात् बडा वा मध्यम-ष्ठः-(पु॰) बहुवचन (अके-वेदनिन्दारूपे पापे निष्ठा यस्य सः)। बुद्धगौतमका एक नाम है.

अकनिष्ठप, (पु॰) (अकनिष्ठान् बुद्धान् पाति-पा-क) बुद्धका नाम। बुद्धदेव.

अकन्या, (स्त्री॰) न॰ त॰। जो कुमारी नहीं। जवान औरत.

अकम्पन, (त्रि॰) न॰ त॰। न कांपना। -नः। एक राक्षसका नाम.

अकम्पित, (त्रि॰) न॰ त॰। जो कांपता नहीं। स्थिर। द्धः (पु॰) जैनका नाम। बुद्धसन्त। अन्तिम तीर्थंकरका एक शिष्य.

अकम्पित, (त्रि॰) न॰ ब॰। न कहा गया। गौण कर्म.

अकरणि, (स्त्री०) । न-कृ-अनि । शाप । समाप्त न होना । किसी कामसे हार हो जाना । निरुत्साह होना.

अकरा, (स्त्री०) न+कृ+अच् । आवलेका वृक्ष, बिनहाथ.

अकरुण, (त्रि०) नास्ति करुणा यस्य यत्र वा । जिसे वा जहां दया नहीं । दयारहित । निर्दय.

अकर्कश, (त्रि०) न कर्कशः न० त० । कोमल.

अकर्ण, (त्रि०) न-कर्णः । बहु० बिनकान । बहिरा । डोरा.

अकर्तन, (त्रि०) (कृत+युच्) न० त० । उच्चस्थं फलं न कर्तितुं शीलं अस्य । जो उंचे फलको ले नहीं सक्ता । खर्व । ठेंगना । वौना । वामन । कृत् भावे ल्युट् । न० ब० । काटनेहारा.

अकर्तृ, (पु०) न० त० । जो करनेहारा (कर्ता) नहीं । "पुरुषोऽकर्ता भोक्ता" सांख्य.

अकर्मक, (त्रि०) (नास्ति कर्म यस्य-ब० कप्) । फलव्यापारयोरेकनिष्ठताम् । जिस (क्रिया) का फल (नतीजा) और व्यापार (हरकत-क्रिया) एकही (व्यक्ति)में रहे उसे अकर्मक क्रिया (Intransitive) कहतेहैं.

अकर्मण्य, (त्रि०) कर्मन्+य+न०त० । काम न करसकनेहारा.

अकर्मन्, (त्रि०) न+कर्मन् बहु० । जो काम न करसके.

अकल, (पु०) नास्ति कला (अवयवः) अस्य । अंशरहित परमात्मा । (त्रि०) अवयव(अंश)रहित.

अकल्कन, (त्रि०) कल्कनं दम्भः न० ब० । दम्भरहित. जो पाखण्डी नहीं । जिसका पाक नहीं हुआ । जो भली भांति कढा नहीं.

अकल्का, (स्त्री०) न+कल्का बहु० चाँदनी । पाखण्डरहित.

अकल्प, (त्रि०) न० ब० । अवश । जो वश (काबू)में नहीं रहता । असंयत । निर्बल (कमजोर).

अकल्पित, (त्रि०) न० त० । जो कल्पित (बनावटी) नहीं । प्राकृतिक (कुदरती) । स्वाभाविक.

अकल्य, (त्रि०) कलासु साधुः कला+यत् न० त० । रोगी.

अकल्याण, (त्रि०) न० त० । मङ्गलरहित । दुर्भग । जिसका भाग्य अच्छा नहीं ।-णम्-भला न होना । बुरा । विपदा । मुसीबत । दुःख.

अकच-वा, (त्रि०) (न कव्यते-वर्ण्यते-) कव्-आ. न० त० । जिसका वर्णन नहीं किया जासक्ता.

अकवारि, (पु०) कुत्सिता अरयो यस्य । न० त० जिसके बुरे शत्रु हों.

अकवि, (पु०) न० त० । कव्+इ । मूर्ख । जो दाता नहीं । जो दूरतक विचारनेकी शक्ति नहीं रखता.

अकस्मात्, (अव्यय) एकवारगी । अचानक.

अकाण्ड, (पु०) न+काण्ड न० त० । अवसरबिना । बाणबिना.

अकाम, (पु०) कम्+घञ् न० त० । इच्छाबिन.

अकाय, (पु०) न+काय ब० । देहबिना-राहु.

अकार, (त्रि०) (करोतीति कारः-कृ+घञ्-अण्वा न० त० । जो कुछभी काम नहीं करता । क्रियारहित । -रः (पु०) "अ" अक्षर (वर्णमालाका पहिला) । "अक्षराणामकारोऽस्मि" (भ० गी० १०-३३).

अकारण, (न०) न+कारण न० त० । हेतुविना । विनमतलब । प्रयोजनबिन.

अकार्पण्य, (त्रि०) न० ब० । नास्ति कार्पण्यं (दैन्यं) यस्मिन् । जो दीनता (आजिजी)के विना मिलाहो । "अकार्पण्यमदैन्यम्."

अकार्य, (न०) कृ+ण्यत् न० त० । जूआ चोरी आदि बुरा काम । ब० बिनकाम.

अकाल, (पु०) न+काल न० त० । बुरा समय । व्रतादि न करनेका समय.

अकालजलदोदय, (पु०) अकाले जलदानां उदयः । तत्पु० । समयविन बादलोंका होना.

अकिञ्चन, (त्रि०) न+किञ्चन त० । निर्धन-गरीब.

अकिञ्चिज्ज्ञ, (त्रि०) न+किञ्चित्+ज्ञा+क । थोडा भी न जाननेहारा-मूर्ख.

अकिञ्चित्कर, (त्रि०) न+किञ्चित्+कृ+अच् । काम न करनेहारा.

अकीर्ति, (स्त्री०) न० ब० अप्रशस्ता कीर्तिः । अकीर्तिका न होना । अयश । बुरी विख्याति.

अकुण्ठ, (त्रि०) न+कुण्ठा ब० । न रुकनेहारा । काममें चतुर.

अकुतोभय, (त्रि०) न+कुतः+भयं. न० त० । न डरनेहारा.

अकुप्य, (न०) गुप्+यत् कस्य गः न० त० । सोना-चांदी.

अकुल, (त्रि०) (अप्रशस्तं कुलं अस्य । जिसका कुल (वंश) अच्छा नहीं । नारवांदा । दुष्कुलीन.

अकुशल, (त्रि०) न० ब० । न कुशलः । जो कुशल नहीं । दुर्भग । जो चतुर नहीं । अभद्रा । बुरा । बदकिस्मत.

अकुह, (त्रि०) न० ब० । जो ठग नहीं । सरलहृदय । दियानतदार आदमी.

अकूर्च, (त्रि०) नास्ति कूर्च-श्मश्रु यस्य । जिसकी दाढी न हो । छलिया.

अकूपार, (पु०)न+कूप्+ऋ+अण् । कछुआ-दूरपार-सूर्य.

अकृच्छ्र, (त्रि०) न० ब० । दुःखरहित । सुखी ।–च्छ्रम्, (न०) दुःखका न होना । आराम । सुख.

अकृत, (त्रि०) (कृ+क्त-कर्मणि) न० ब० । न कियागया । न सिद्ध हुआ । न बनायागया.

अकृतिन्, (त्रि०) न० ब० । जो निपुण (चतुर) नहो । जो कुछमी कर नहीं सक्ता । नाकामयाव.

अकृत्त, (त्रि०) (अ+कृत्+त) । न० ब० । न काटा गया । जिसका कुछमी नुकसान नहीं हुआ.

अकृत्य, (न०) कृ+क्यप् न० त० । चोरी आदि बुरा काम । विनकाम.

अकृष्टपच्य, (त्रि०) (पच्+क्यप्-य-)स० त० । अकृष्टे क्षेत्रे स्वयं पच्यते । न हल चलाये हुए खेतमें पकता है । खेती-आदिके विना अपनेआप पकेहुए धान (चावल) आदि.

अकृष्णकर्मन्, (त्रि०) अकृष्णं-शुद्धं कर्म यस्य । जिसका काम शुद्ध हो । सदाचारी । पुण्यात्मा.

अकौशल, (न०) कुशलस्य भावः कुशल+अण् न० त० । बिनचतुराई.

अक्का, (स्त्री०) अक्+कन् । माता.

अक्त, (त्रि०) अन्ज+क्त । जुडाहुआ । घिराहुआ । फैलाहुआ.

अक्रम, (त्रि०) न+क्रमः ब० । जिसका नियम न हो । पाद-शून्य.

अक्रूर, (पु०) न+क्रूरः न० त० । यदुकुलका राजा-दयालु (त्रि०).

अक्रोध, (पु०) क्रुध्+घञ् न० त० । क्रोधका न होना । कोपशून्य (त्रि०).

अक्ष, (न०) अक्ष्+अच् । इन्द्रिय । सोलह मासे तोल । पासा । पहिया । रावणका एक पुत्र । व्यवहार.

अक्षत, (त्रि०) क्षण्+क्त न० त० । न टूटाहुआ (न०) नपुंसक । चावल-जौं-(स्त्री०) ककडसिंगीवृक्ष.

अक्षदर्शक, (पु०) अक्ष+दृश्+ण्वुल् । मुन्सिफ । जुआरिआ.

अक्षदेविन्, (त्रि०) अक्ष+दिव्+णिनि । जुआरिआ.

अक्षधुरा, (स्त्री०) अक्ष+ (चक्र) धुर+(अग्र) ६ त० । पहियेके आगेका भाग.

अक्षपाद, (पु०) अक्ष+(चक्षुः) पाद ब० । गौतममुनि । ६ त० । चक्राङ्ग.

अक्षम, (त्रि०) क्षम्+अच् न० त० । सामर्थ्यहीन । क्षमारहित.

अक्षमा, (स्त्री०) क्षम्+अङ् न० त० । न सहारना । ईर्षाकरना.

अक्षमाला, (स्त्री०) अक्ष+माला ६ त० । जपमाला.

अक्षय, (पु० न०) क्षि+अच् । न० त० जिसका नाश न हो.

अक्षया, (स्त्री०) (नास्ति क्षयः दानादेः यस्यां तिथौ) बहु० । जिस तिथिमें दानका क्षय नहीं होता । बहुत पुण्य बढाने-हारी तिथि । सोमवती अमावास्या । रविवारकी सप्तमी । बुधवारकी चतुर्थी । वैशाखके शुक्लपक्षकी तृतीया.

अक्षय्य, (न०) न क्षेतुं शक्यम् । क्षि+यत्-नि० न० त० । जो क्षय नहीं होसक्ता । श्राद्धकी समाप्तिमें देने योग्य घृत (घी) मधु (शहत) युक्त जल । अक्षयधर्म.

अक्षर, (पु०) क्षर+अच् न० त० । अकारादिवर्ण । नाश-शून्य-ब्रह्म.

अक्षरचण, (न०) अक्षर+चण । लेखक, लिखनेहारा.

अक्षरशः, (क्रि०वि०) अक्षरं अक्षरं इति वीप्सायां शस् । एक एक अक्षर । अक्षरोंके अनुसार.

अक्षरजीवक, (त्रि०) अक्षरेण जीवति । अक्षर+जीव+ण्वुल् । अक्षर लिखकर जीनेहारा लेखक.

अक्षरजीविन्, (त्रि०) अक्षरेण तल्लिप्यादिकर्मणा जीवतीति । अक्षर+जीव+णिनि-(इन्) । अक्षरोंको लिख-कर जीविका करनेहारा.

अक्षरसंस्थान, (न०) अक्षराणां संस्थानम् ६ त० । अक्ष-रोंका टिकाना । अक्षरोंकी रचना करना । बहु० लिपि । अक्षरावली.

अक्षरी, (स्त्री०) अश्नुते गगनाभोगं मेघैः । अश+सरन्+ङीष् बादलोंद्वारा आकाशमें व्याप्त होतीहै । वर्षाऋतु । मौसिम । बरसात.

अक्षवती, (स्त्री०) अक्षाः-पाशका विद्यन्ते अत्र । जहां खेलनेके पास्से पडे हों । अक्ष+मतुप् (मत्) वत्वम् । अक्षक्रीडा । पास्सोंकी खेल.

अक्षवित्, (त्रि०) अक्षं-पाशक्रीडां वेत्ति । पास्सोंकी खेल-को जान्नेहारा । अक्ष+विद्+क्विप् । जूयेको जान्नेवाला । जु-आरिआ.

अक्षशौण्ड, (पु०) अक्ष+शौण्ड ७ त० । पक्का जुआरिआ.

अक्षसूत्र, (न०) अक्षस्य-जपमालायाः सूत्रम् । ६ त० जप-मालाका सूत्र । जनेऊ.

अक्षान्ति, (स्त्री०) न० त० । न सहारना । क्षमा न करना । ईर्षा करना । क्रोध करना । बेसबर होना.

अक्षार, (त्रि०) नास्ति क्षारं यत्र । जहां खार न हो । जो कृत्रिम (बनावटी) लून नहीं.

अक्षि, (न०) अक्ष+क्सि । नेत्र । आंख.

अक्षिगत, (त्रि०) अक्षिविषयं गतः त० । विरोधी । शत्रु.

अक्षित, (त्रि०) न० त० । क्षि+त । न क्षय होनेवाला । अविनाशी । नित्य रहनेहारा । एकरस रहनेहारा.

अक्षितरम्, अक्षीव तरति– न० त० । तृ+अच् । आंखके समान तैरताहै । जल निर्मल होनेसे नेत्रके समान जान पडताहै.

अक्षिव, (पु०) अक्षि वाति-प्रीणाति अञ्जनेन । (वा+क) । अंजनद्वारा जो आंखको निर्मल करता है । सुहांजनेका वृक्ष । –वम्-समुद्रका लोन.

अक्षीव, (पु०) क्षीव+क, न० त० । जो मत्त न हो.

अक्षुण्ण, (त्रि०) न० त० । क्षुद्+त । न टूटा हुआ । न जीता गया । न हराया गया । विचित्र.

अक्षुद्र, (त्रि०) न० त० । जो छोटा (कमीना) नहीं ।–द्रः । शिवका नाम.

अक्षेत्र, (त्रि०) न० त० । खेतोंका न होना । न हल चलाया हुआ खेत.

अक्षोट, (पु०) अक्ष+ओट । आखरोटवृक्ष.

अक्षोभ, (पु०) क्षुभ्+घञ् न० त० । हाथीके बांधनेका थंभा.

अक्षौहिणी, (स्त्री०) अक्ष+ऊहि+णिनि । विशेष संख्या-वाली सेना–२१८७ हाथी, २१८७ रथ, ६५६१० घोडे, १०९३५० पैदल.

अखण्ड, (त्रि०) खडि+घञ् । न० त० । सम्पूर्ण । जिसका खण्ड न हो.

अखण्डन, (पु०) न खण्ड्यते निरवयवत्वात् । खडि+ल्युट् (अन) न० त० । जो तोड़ा नहीं जासक्ता । काल । समय.

अखण्डित, (त्रि०) न खडि+क्त । न० त० । सम्पूर्ण । पूरा । न टूटा हुआ । न तोड़ा गया.

अखात, (न०) न खन्यते । न खन+क्त न० त० । जो मनुष्यादिसे नहीं खोदा गया । देवताओंसे खोदा हुआ.

अखाद्य, (त्रि०) खाद+ण्यत् न० त० । जो खानेके योग्य न हो.

अखिल, (त्रि०) न खिल्यते-न कणश आदीयते इति । खिल+क । न० त० । एक एक कण करके जो नहीं लिया गया । समग्र । सारा.

अग, (पु०) न गच्छतीति, गम्+ड न० त० वृक्ष । पर्वत । सूर्य.

अग गतौ, (जाना) (वा०) पर-इदित् । अङ्गति-आङ्गीत्.

अगच्छ, (पु०) न गन्तुं शक्नोति यः । गम्+शः । न० त० । जो चल नहीं सक्ता । वृक्ष । द्रख्त.

अगण्य, (त्रि०) न गणयितुं योग्यः । न-गण-यत् । जो गिना नहीं जा सक्ता.

अगति, (स्त्री०) गम्+क्तिन् । न० त० । उपायका न होना, उपायसे रहित (त्रि०).

अगद, (पु०) नास्ति गदो (रोगो) यस्मात् ५ ब० । औषध । दवाई.

अगदङ्कार, (पु०) अगद+कृ+अण् मुम्च । वैद्य । हकीम.

अगम, (पु०) गम्+अच् । न० त० । वृक्ष-जहां पहुंच न सकें.

अगम्य, (त्रि०) न गन्तुं अर्हति । न-गम- यत् (न० त०) जहां नहीं जासका । न पहुंचनेलायक.

अगम्या, (स्त्री०) न गन्तुं अर्हा । न जानेलायक । न भोगने योग्य स्त्री (औरत) । चाण्डाली आदि.

अगरी, (स्त्री०)-नास्ति गरः (विषं) यस्याः । प० ब० ङीष् । जिस्से विष (जहर) नहीं होता । मूसे (चूहे) के विषको दूर करनेहारा देवताड़का वृक्ष । विषको डड़ा देनेहारा कोईभी द्रव्य (पदार्थ).

अगस्ति, (पु०) अग+अस्+ति । अगस्त्य नाम मुनि.

अगस्ती, (स्त्री०) दक्षिणदिशा.

अगस्त्य, (पु०) अग+स्त्यै+क । अगस्त्य नाम मुनि.

अगाध, (त्रि०)गाध्+घञ् न० ब० । बहुत गहिरा-गढा (न०).

अगार, (न०) अगं-न गच्छन्तं ऋच्छति-प्राप्नोति-अग+ऋ-अण् । न जाते हुयेको मिलताहै । गृह । घर.

अगिरः, (पु०) न गीर्यते दुःखेन । गृ+वा+क न० त० । जो दुःखसे नहीं निगला जाता । स्वर्ग । बहिश्त.

अगिरौकस्, (त्रि०) अगिरः (स्वर्गः) ओकः (वासस्थानं) यस्य । जिसके निवासका स्थान स्वर्ग है । स्वर्गमें रहनेहारी देवता.

अगु, (त्रि०) नास्ति गौः यस्य । Ved गौ वा किरणरहित । निर्धन । गरीब । अगुः (पु०) राहुका नाम । अंधकार । अन्धेरा.

अगुण, (त्रि०) नास्ति गुणः यस्य । गुणरहित । परमात्मा । जिसके अच्छे गुण नहीं । निकम्मा.

अगुरु, (न०) अगुरुचन्दन । टाली । उपदेशकशून्य (त्रि०).

अगूढ, (त्रि० न०) गुह+क्त । न छिपाहुआ.

अगृभीत, (त्रि०) न गृभीतः (गृहीतः) । न० त० Ved । न पकड़ा गया । न जीता गया.

अगृह, (पु०) न० ब० । नास्ति गृहं यस्य । जिसका कोई घर नहीं । घरके विना घूमनेहारा । यति । वानप्रस्थ.

अगोचर, (त्रि०) न० ब० । इन्द्रियातीत । जो इन्द्रियोंसे जाना नहीं जासक्ता । अतींद्रिय ।–रम्- त० । कोई भी पदार्थ जो इन्द्रियोंसे ग्रहण न हो सके । छिपे-हुए-पीछे.

अग्नायी, (स्त्री०) अग्नि+ऐङ्+ङीष् । स्वाहा नाम अग्निकी स्त्री । दक्षप्रजापतिकी कन्या स्वाहा.

अग्नि, (पु०) अगि+नि नलोपः । आग नामी तेज.

अग्निक, (पु०) अग्नि+कै+क । इन्द्रगोपकीट-एक कीडा.

अग्निकार्य, (न०) अग्नि+कृ+ण्यत् ६ त० । आगका काम । होमसाधन.

अग्निकोण,(न०) ६ त० । पूर्व और दक्षिणके बीचकी दिशा.

अग्निगर्भ, (पु०) ब० । सूर्यकान्तमणि । आतसीशीशा.

अग्निचित्, (पु०) अग्नि+चि+क्विप् । अग्निहोत्री.

अग्निज, (पु०) अग्नि+जन्+ड । सोना । आगसे निकला द्रव्य.

अग्निजात, (पु०) अग्नेः जातः । जन्+क्त । अग्निजारवृक्ष । सुवर्ण-(न०).

अग्निजिह्वा, (स्त्री०) अग्नेः जिह्वा इव शिखा यस्याः । बहु० । अग्निकी जीभकी भांति जिसकी शिखा हो । ६त० आगकी जीभ । आगकी शिखा (लाट) । अग्निः जिह्वा येषाम् (ब०) जिनकी जीभ अग्नि है । देवता.

अग्निदेवता, (स्त्री०) अग्निः देवता यस्याः । जिसकी देवता अग्नि है । कृत्तिका नाम नक्षत्र (तारा) । इसकी देवता अग्नि है.

अग्निनिर्यास, (पु०) अग्निवत् उद्दीपकः निर्यासः (निष्यन्दः) यस्य । बहु० । जिसकी गोंद अग्निके समान उद्दीपक (भूखको चमकानेहारी) है । उपचारसे (उस्से उपजा) अग्निजारवृक्ष । स्वर्ण । (न०).

अग्निप्रस्तर, (पु०) अग्नि+स्तृ+अच् । आगको उठानेवाला पत्थर । चकमकी.

अग्निबाहु, (पु०) धूम.

अग्निभ, (न०) भा+क । स्वर्ण-आगकी तरह चमकनेहारा.

अग्निभू, (पु०) अग्नेः भवति-भू-क्विप् । अग्निसे होताहै । (कार्तिकेय) देवताओंका सेनानी । स्वर्ण (सोना) (न०) कोईभी अग्निसे उपजाहो (त्रि०).

अग्निमणि, (पु०) अग्नेः उत्थापकः मणिः । अग्निको निकालनेहारा मणि । अग्निका साधन आतसी शीशा (कांच) । सूर्यकान्तमणि.

अग्निमथ्य, (पु०) अग्नये मथ्यते असौ । मन्थ+अच् । अग्निके लिये मंथन किया जाताहै । गणिकारी वा गणियारी नामसे प्रसिद्ध वृक्ष । इसकी लकडिओंको रगड़नेपर झट आग भडक उठती है.

अग्निमारुती, (पु०) अग्निमारुत+इञ् । अगस्त्यमुनि.

अग्निमुख, (पु०) देवता । ब्राह्मण.

अग्निमुखी, (स्त्री०) अग्निः इव मुखं (अग्रं) अस्याः । ङीष् । जिसका मुख अग्निके समान है । भेला । भल्लातक वृक्ष । बहेड़ा । पाकशाला । रसोईखाना । गायत्रीमन्त्र.

अग्निरक्षण, (न०) अग्निः रक्ष्यते अनेन । रक्ष+ल्युट् (अन) । राक्षस आदिसे अग्निकी रक्षा करनेका एक मन्त्र । अग्निहोत्र.

अग्निष्टोम, (पु०) स्तु+ मन् षत्वम् । यज्ञविशेष.

अग्निष्वात्त, (पु०) ब० व० । अग्नितः-श्राद्धीयविप्रकररूप्यमलात् सुष्ठु आत्तं (ग्रहणं) येषां ते । श्राद्धके उपयोगी ब्राह्मणके हाथरूपी अग्निसे पकड़े जाते हैं । पितृगण । मरीचिके वंशमें हुए पितर । मनुष्यजन्ममें अग्निष्टोम आदि यज्ञ न करके स्मार्तकर्मनिष्ठ होकर मरकर पितर होते हैं । देवता और ब्राह्मणोंके पितर । पितरोंकी एकजमात.

अग्निसात्, (अव्य०) अग्नि+सातिच् । अग्निके आधीन होजाना । खाक होजाना । जलजाना.

अग्निहित, (पु०) विन्दु+क्विप् । अग्निहोत्री.

अग्निहोत्रम्, (न०) अग्नये हूयते अत्र । हु+त्र । च० त० । मन्त्रके साथ अग्नि स्थापन करके किया गया होम । अग्निहोत्रका सम्बन्धी होनेसे अग्नि.

अग्निहोत्रिन्, (त्रि०) अग्निहोत्रं अस्ति अस्य । अग्निहोत्र+इनि । अग्निको स्थापन करके सायंप्रतः होम करनेहारा साग्निक.

अग्नीध्र, (पु०) अग्नि+इन्ध्+रक् । पुरोहितविशेष ब्रह्मा अग्नि+धृ+क । आगका काम होमादि.

अग्नीषोमीय, (त्रि०) अग्नीषोमौ देवते यस्य+ छ (ईय) । अग्नि और सोम देवताओंके निमित्त याग.

अग्न्याहित, (पु०) अग्नि+आ+धा+क्त वा परनिपातः । अग्निहोत्री.

अग्न्युत्पात, (पु०) उत्+पत्+घञ् ३ त० । धूमकेतु । आकाशसे आग आदिका नीचे गिरना.

अग्न्युपस्थान, (त्रि०) अग्निः उपस्थीयतेऽनेन, अग्नि+उप+स्था+ल्युट् (अन) ६ त० । अग्निको निकटलानेका मन्त्र.

अग्र, (न०) अङ्ग+रक् नलोपः । उपरका भाग । शेषभाग । सहारा । पूर्वभाग । समूह । १६ माषका माप । प्रधान । अधिक । प्रथम (त्रि०).

अग्रकाय, (अस्त्री०) अग्रः कायः । देहका पूर्वभाग.

अग्रग, (त्रि०) अग्रे गच्छतीति, अग्र+गम्+ ड ७ त० । आगे जानेहारा.

अग्रगण्य, (त्रि०) अग्रे गण्यते, अग्र+गण्+यत् ७ त० । आगे गिनागया, प्रधान.

अग्रगामिन्, (त्रि०) अग्रे गच्छतीति, अग्र+गम्+णिनि ७ त० । आगे जानेहारा.

अग्रजङ्घा, (स्त्री०) अग्रा जङ्घा । जांघका अगला भाग.

अग्रजन्मन्, (पु०) अग्रे जन्म यस्य, अग्र+जन्+मनिन् व्यधि०बहु० । बडाभाई । ब्राह्मण । पहिले उत्पन्न हुवा (त्रि०).

अग्रजाति, (पु०) अग्रा श्रेष्ठा जातिर्यस्य, अग्र+जन्+क्तिन् (ती) ब्राह्मण.

अग्रजिह्वा, (स्त्री०) अग्रा जिह्वा । जीभकी नोक.

अग्रणी, (त्रि०) अग्रे नीयतेऽसौ, अग्र+नी+क्विप् णत्वं । स्वामी, श्रेष्ठ.

अग्रतस्, (अव्य०) अग्र+तसिल् । पूर्वभाग । आगे । आगेतक.

अग्रतःसर, (त्रि०) अग्रतः सरति, अग्रतः+सृ+ट ७ त० । अगुआ, आगे जानेहारा.

अग्रदानिन्, (पु०) अग्रे दानं यस्य, अग्र+दान+इनि । प्रेतके निमित्त दान लेनेहारा ब्राह्मण.

अग्रनख, (अस्त्री०) अग्रं नखं । नख (नौं) की नोक.

अग्रनासिका, (स्त्री०) अग्रा नासिका । नाककी नोक.

अग्रपर्णी, (स्त्री०) अग्रे पर्णं यस्याः । आलकुशी नामी वृक्ष.

अग्रपाद, (पु०) अग्रः पादः चरणः । अगला पाव वा चरण । पावका अगला भाग (हिस्सा).

अग्रभाग, (पु०) अग्रः भागः । श्राद्धादिमें पहिले निकाल कर दियागया द्रव्य । अवयवका अग्रदेश.

अग्रभुक्, (त्रि०) अग्रे भुङ्क्ते, अग्र+भुज्+क्विप् ७ त० । देवपित्रादिको दियेबिन खानेहारा । पेटपालनेवाला.

अग्रमांस, (न०) अग्रं प्रधानं भक्ष्यत्वेन मन्यते, मन्+स दीर्घः । हृदयमें कमलाकार (फुलका) अथवा (बुक्काग्र) नाम मांस । एकप्रकारका रोग.

अग्रमुख, (न०) अग्रं मुखं । मुखका अगला भाग.

अग्रयान, (न०) अग्रे यानं यस्य, या+ल्युट् । आगे जानेहारी सेना । जो कोई आगे चले (त्रि०).

अग्रलोहिता, (स्त्री०) अग्रं लोहितं यस्याः ब० । चिल्ली नाम एक प्रकारका साग (शाक).

अग्रसन्धानी, (स्त्री०) अग्रे सन्धानं यस्याः । यमपञ्जिका कर्मविपाक जहां प्राणिओंके पूर्वजन्मके कर्मानुसार शुभाशुभ सूचन किया जाय । कईओंने इसीको यमपट्टिकामी लिखा है । आगेही जानलेनेहारा (त्रि०).

अग्रसन्ध्या, (स्त्री०) अग्रं सन्ध्यायाः अग्रं त० । सन्ध्याका पूर्व समय । पहिली संध्या । प्रातःसन्ध्या.

अग्रसर, (त्रि०) अग्र+सृ+ट ७ त० । आगे जानेहारा.

अग्रसर, (त्रि०) अग्रं-अग्रेण-अग्रे वा सरति । सृ+ट लुक् । आगे चलनेहारा । मोहरी रहनेवाला.

अग्रह, (पु०) ग्रहः (परिग्रहः) न० त० । स्त्रीका न होना । बहु० । स्त्रीरहित संन्यासी प्रभृति । (त्रि०).

अग्रहर, (पु०) अग्रे ह्रियते दीयतेऽसौ, अग्र+हृ+अच् । आगे देने योग्य वस्तु (त्रि०) । आगेलेनेहारा–पात्र ब्राह्मण.

अग्रहायण, (अस्त्री०) अग्रः पूर्वः हायनः । मार्गशिर मास.

अग्रहायणी, (स्त्री०) अग्राः श्रेष्ठा हायनाः शाल्यो यस्याम् । मृगशिरतारा इस नक्षत्रकी रात्रीमें उदयकालके समय अच्छे धान्य उत्पन्न होते हैं यह लोकप्रसिद्ध है ।

अग्रहार, (पु०) हृ+घञ् अग्रहर ब्रह्मचारीको देनेयोग्य क्षेत्रादि.

अग्राम्य, (त्रि०) न ग्राम्यः ग्रामे भवः । जो गाँवमें नहीं रहता । शहरिया । नागरिक.

अग्रासन, (न०) अग्रं आसनम् । आगेका आसन । मुख्य आसन । प्रतिष्ठाका आसन.

अग्राह्य, (त्रि०) न ग्रह+ण्यत् । न० त० । न लेनेलायक । ग्रहणके अयोग्य शिवनिर्माल्य आदि.

अग्राह्य, (त्रि०) न+ग्रह+ण्यत् न०त० । न लेनेयोग्य देवताका चढावा आदि । न लेनेयोग्य तिल, घोडा, सोना आदि.

अग्राह्या, (स्त्री०) । न ग्रहीतुं अर्हति । न-ग्रह+यत्+टाप् । एक प्रकारकी मृत्तिका (यही) जो शुभ कर्ममें आ नहीं सक्ती.

अग्रिम, (पु०) अग्रे भवः, अग्र+डिमच् (बडा भाई) । श्रेष्ठ, उत्तम (त्रि०).

अग्रिय, (पु०) अग्र+घ । बडा भाई । श्रेष्ठ । उत्तम (त्रि०).

अग्रीय, (पु०) अग्र+छ बडा भाई । श्रेष्ठ उत्तम (त्रि०).

अग्रेगू, (त्रि०) अग्रे गच्छति । अग्रे+गम्+डु+अलुक् स० । आगे जानेहारा सेवक.

अग्रेदिधिषु, (पु०) अग्रे+दिधि+सो+कु षत्वं, अलुक्स० । विधवाके साथ विवाह करनेहारा । बडी कन्याके विवाहके प्रथम यदि छोटी विवाह दीजाय तो उसे " अग्रेदिधीषू कहेंगे".

अग्रेपाः, (पु०), अग्रे स्थित्वा पाति–अलुक् । आगे रहकर बचाता है । पहिले बचानेहारा.

अग्रेपू, (त्रि०) अग्रे पूयते (पू+क्विप्) जिसे पहिले पिलाया जाता है.

अग्र्य, (पु०) अग्रे भवः, अग्र+यत् । बडा भाई । प्रधान । श्रेष्ठ (त्रि०).

अघ=अंघ, (न०) बुरा अशुद्धि (गलती) करना । पाप करना.

अघ, (त्रि०) अघ्–कर्तरि अच् । बुरा । पाप करनेहारा । गुनाहगार । दुष्ट । बदमाश.

अघ, (न०) अघ+अच् । पाप । व्यसन । दुःख.

अघभोजिन्, (त्रि०) अघं पापफलं भुङ्क्ते । पाप खानेवाला । जो अपनेही लिये पकाता है । देवता, पितर, अतिथि आदिके लिये नहीं.

अघमर्षण, (त्रि०) अघं (पापं) मृष्यतेऽनेन, अघ+मृष्+ल्युट् ६ त० । सम्पूर्ण पापोंके दूर करनेके लिये जपनेयोग्य मन्त्र.

अघायुः, (त्रि०) दुश्चरित्र । बुरी तरह जीवन बतानेवाला.

अघाहः, (पु०) । अघं-पापयुक्तं अहः (दिनम्) । अशौचदिन । अपवित्रताका दिन.

अघोर, (पु०) घूर्ण+डोर । न घोरः (शान्तः) न० त० । महादेव घोरभिन्न (त्रि०) भादोंकी कृष्णा चतुर्दशी (स्त्री०).

अघोष, (पु०) घुष्+घञ् न० त० । (नास्ति घोषो यस्य यत्र वा) घोषका न होना । शब्दरहित व्याकरणोक्त वर्ण । संज्ञा-वर्गोंके १ म, २ य अक्षर और श, ष, स.

अघोस, (अव्य०) जो शब्द दूरसे पुकारनेके समय नामके पहिले लगाया जाता है.

अघ्न्य, (पु०) न हन्ति सृष्टिकर्तृत्वात् । न+हन्+यक् निपातः । जो मारनेके योग्य न हो । ब्रह्मा । गौ (स्त्री०).

अघ्रेय, (त्रि०) जो सुगन्धिके योग्य न हो । मद्य । शराब.

अङ्क, (पु०) अङ्क+घञ्। नाटकका एक भाग। पर्वत। चिन्ह। रेखा। युद्धका भूषण। समीप। गोद (अस्त्री०).

अङ्कन, (त्रि०) अङ्क+ल्युट्। चिन्ह-चिन्हकरनेका साधन मोहर.

अङ्कपालि-ली, (स्त्री०) अङ्क+पा आलि ६ त० वा ङीप्। गोदका सिरा, अङ्केन पालयति, अङ्क+पालि+इ। उपमाता-(दाया) अङ्कस्य पालिरिव त०। आलिङ्गन-गले मिलना.

अङ्कपालिका, (स्त्री०) अङ्कपालि+क-दाई। वेदी। गोदके पास गले मिलना.

अङ्कलोप, (पु०) अङ्कानां लोपः। संख्याका व्यवकलन (घटाना).

अङ्कविद्या, (स्त्री०) अङ्कानां विद्या। अकोंकी विद्या। गणित-शास्त्र.

अङ्कस, (न०) अन्ज+असुन् कुत्वम्। चिन्ह। शरीर.

अङ्कित, (त्रि०) अङ्क+क्त। चिह्नकियागया। चित्रकियाग-या। गिनागया.

अङ्कुर, (अस्त्री०) अङ्क्+उरच्। बीजसे जो नया उत्पन्न हो। मट्टीको जो फाड कर निकले-तिनका। वृक्ष। जल। शीघ्र उत्पन्न होनेकी समानतासे लोह्न-लोम.

अङ्कुरक, (पु०) अन्च्+घुरच् ततः कः। जिसको वडे यत्नसे इकट्ठा कियाजाय। पक्षी आदिका वासस्थान। घुरा.

अङ्कुरित, (त्रि०) अङ्कुरा अस्य सञ्जाताः। तारका० इतच्। जिसके अङ्कुर (कूमली) निकल आयेहों.

अङ्कुश, (अस्त्री०) अङ्क+उशच्। हाथीको चलानेके लिये आगेसे टेढा लोहेका एक प्रकारका अस्त्र-अंकस.

अङ्कुशग्रह, (पु०) अङ्कुशं गृह्णाति। अङ्कुश (अंकस) को पकड़ता है। हाथीको चलानेहारा महावत.

अङ्कुशदुर्धर, (पु०) दुर्+धारि+खल् ह्रस्व ३ त०। दुर्दा-न्तहस्ती-जिस हाथीको वशमें लाना कठिन हो। मतवारा हाथी.

अङ्कुशधारिन्, (पु०) अङ्कुशं धारयति। हाथी रखनेवाला.

अङ्कुशमुद्रा, (स्त्री०) अङ्कुशाकारा मुद्रा। अङ्कुशके स्वरू-पवाली मोहर.

अङ्कुशित, (त्रि०)। अङ्कुश+इतच्। अङ्कुसवाली.

अङ्कोल, ट, ठ, (पु०) अङ्कते लक्ष्यते कीलाकारकण्टैः, अङ्क्+ ओट, ठ, (ल) आकोडनामी वृक्ष (जिसके फूल पीले औ सुगन्धियुक्त, लम्बे लम्बे कांटोंवाला। एवं फल जिसके लालरंगके होतेहैं).

अङ्कोलसार, (पु०) अङ्कोलस्य सारः ६ त०। अङ्कोट-वृक्षकी विष.

अङ्कोलिका, (स्त्री०) अक्+वल्+अच् सम्प्रसारणे, अङ्को-ला+क (यह शब्द अङ्कपालिकाका अपभ्रंश प्रतीत हो-ताहै.) आलिङ्गन करना। गलेमिलना.

अङ्क्य, (पु०) अङ्क+यत्। गोदमें रखकर वजानेका वाजा मृदङ्ग (तबले) आदि.

अङ्ग, चुरा० प०। चिमटना। साथ लग जाना.

अङ्ग, (न०) अङ्ग्+अच्। देहावयव। जोड। एकदेश। मित्र। उपाय। मन.

अङ्ग, भ्वा० प० (अङ्गति। आङ्गीत्)। जाना। सैर करना.

अङ्ग, (अव्य०) अच्छा। महाभाग। ठीक ठीक सत्यस्वीकार.

अङ्गकर्मन्, (न०) अङ्गस्य (देहस्य) कर्म (संस्कार) सुगन्धिवाले द्रव्योंसे शरीरपर लेप करना। खुशदार पदा-र्थोंसे शरीरको रगड़ना.

अङ्गग्रह, (पु०) अङ्ग+ग्रह ६ त०। देहकी पीडा.

अङ्गज, (न०) अङ्गात् जायते, अङ्ग+अन्+ड। रुधिर। पुत्र। केश-जो कुछ देहसे निकले (त्रि०).

अङ्गण, (न०) अगि-गतौ-अङ्ग्+ल्युट् वा णत्वम्। आङ्गन-वेडा.

अङ्गति, (पु०) अनक्ति यात्यनेन करणेन, अङ्ग+अति कु-त्वम्। सवारी। अज्यते पूज्यते कर्मणि+अति। व्रह्म। अग्नि। अग्निहोत्री.

अङ्गद, (न०) अङ्गं दायति शोधयति दै+क। वाजू-बुहट्टा, वाहुभूषण, वालीका पुत्र वानर (पु०) अङ्गदान करने-हारा (त्रि०)। दक्षिण दिशाके हाथीकी हथिनी (स्त्री०).

अङ्गना, (स्त्री०) प्रशस्तं अङ्गं अस्ति यस्याः, अङ्ग+न। अच्छे अङ्गोंवाली स्त्री। स्त्रीमात्र। उत्तर दिशाके हाथीकी हथिनी.

अङ्गनाप्रिय, (पु०) प्री+क, अङ्गना+प्रिय ६ त०। अशो-कवृक्ष (उसके फूलसे स्त्रीलोग अपने अङ्गोंको भूषित कर्ता हैं) जो कुछ स्त्रियोंको प्रिय हो (त्रि०).

अङ्गनाप्रिय, (पु०) अङ्गनायाः प्रियः। स्त्रीका प्यारा वृक्ष.

अङ्गपालिका, (स्त्री०) अङ्गं देहं पालयति, अङ्गपालि+ ण्वुल्। दाई नामसे प्रसिद्ध उपमाता। अङ्गपालन करनेहारी.

अङ्गप्रशमनम्, (न०) अङ्गानां प्रशमनम्। शरीरकी व्याधि-का शान्त होना.

अङ्गप्रायश्चित्त, (न०) अङ्गस्य शुद्ध्यर्थं प्रायश्चित्तम्। शारी-रिक शुद्धिके लिये प्रायश्चित्त। (जैसे किसी सबन्धीकी मृत्युपर शान्तिक).

अङ्गभूः, (त्रि०) अङ्गात् मनसो वा भवति। भू+क्विप्। शरीर वा मनसे उपजता है। पुत्र। बेटा। कामदेव.

अङ्गमन्त्र, (पु०) (अङ्गानां मन्त्रः। एक मन्त्र। अङ्गन्यास-का मन्त्र.

अङ्गमर्द, (पु०) अङ्गं मर्दयति, अङ्ग+मर्द+णिच्+अच् ६ त०। शरीर दबानेहारा सेवक। मुट्ठीचापी करनेहारा। अङ्गोंको मलनेहारा (त्रि०).

अङ्गमर्दिन्, (पु०) अङ्गं मर्दयति, अङ्ग+मर्द+णिच्+णिनि ६ त० । मुट्ठीभरनेहारा सेवक । अङ्गोंको मर्दन करनेहारा.

अङ्गयज्ञः, यागः (पु०) अङ्गीभूतः यज्ञः । आग्नेय आदि यज्ञोंका उपकारी पांच प्रकारके सहायक यज्ञोंमेंसे एक.

अङ्गरक्तः, (पु० न०) । अङ्गे अवयवे रक्तः । गुडारोचनी नाम एक बौदा जो काम्पिल्य देशमें पाया जाता है । इसका लाल चूर्ण होता है.

अङ्गरक्षणी, (स्त्री०) अङ्गं रक्ष्यतेऽनया, अङ्ग+रक्ष्+ल्युट्+ङीप् । अङ्गरखानामी वस्त्र । अङ्गोंको बचानेहारा (त्रि०).

अङ्गराग, (पु०) अङ्गं रज्यतेऽनेन, अङ्ग+रञ्ज+करणे घञ् । अङ्गलेप-केसर चन्दन आदि.

अङ्गराज, (पु०) अङ्गेषु तन्नामकदेशेषु राजते, राज्+क्विप् ७ त० । अङ्गदेशका राजा कर्ण.

अङ्गलेप, (पु०) अङ्गं लिप्यते अनेन । लिप् करणे घञ् । जिस्से शरीरपर लेप किया जाता है । सुगन्धित चन्दनादि भावे घञ् । अंगोंपर लेप करना.

अङ्गव, (न०) अङ्गे स्वावयवे वाति अन्तर्भवति अतिशोषणात् संकुचिताङ्गमिव भवति, अङ्ग+वा+ड । जो अपने अङ्गोंमेंही सिकुड़ जाय । सूका फल.

अङ्गविकल, (पु०) तृ० त० अङ्गेन विकलः । किसी अंगसे रहित+अङ्गहीन । मूर्च्छित । बेहोश । बेसुध.

अङ्गविकृति, (पु०) वि+कृ+क्तिन्, अङ्गस्य विकृतिश्चालनादि यस्मात् ५ ब० । मृगीनाडानामी मिरगी रोग । अङ्गोंका विकार.

अङ्गविक्षेप, (पु०) वि+क्षिप्+घञ्, अङ्गस्य विक्षेपः चालनं यत्र ब० ६ । अङ्गुलीआदि विन्यासके भेदसे तीस प्रकारका नृत्य ६ त० । अंगोंका हिलाना मात्र.

अङ्गवैकृत, (न०) विकृतस्य भावः, विकृत+अण्, अङ्गेन अङ्गचेष्टया वैकृतं हृदयभावो ज्ञायते यत्र बहु० । हृदयके भावको कथन करनेहारी अंगोंकी चेष्टा-बतावा ६ त० । अङ्गका विकार.

अङ्गवैगुण्य, (न०) अङ्गानां वैगुण्यम् अन्यथा भावत्वत् । श्राद्धआदि पद्धतिमें कर्मकर चुकनेपर जो कुछ उलटा सुलटा होगया हो उस दोषके दूर करनेके लिये मैं श्रीविष्णुका स्मरण करूंगा इस प्रकारका स्पष्ट वचन.

अङ्गसंस्कार, (पु०) अङ्गं संस्क्रियतेऽनेन, अङ्ग+सम्+कृ करणे घञ् । देहको संशोधन करनेहारा स्नान-ओट आदि चूर्णसे अंगोंको मलना-बटना । अङ्गं संस्करोति, अङ्ग+सम्+कृ कर्तरि अण् ६ त० । केसर आदि.

अङ्गहार, (पु०) अङ्गं ह्रियते चाल्यतेऽत्र, अङ्ग+हृ+आधारे घञ् । अंगुली आदि विन्यासके भेदसे ३० प्रकारका नाच । भावे घञ् ६ त० । अंगका हरण.

अङ्गहीन, (त्रि०) । अङ्गेन हीनः तृ० त० । शरीरके किसी अङ्गका न होना । गर्भिणी स्त्रीकी जिस इन्द्रियकी अभिलाषाको दूर किया जाता है उसी अङ्गसे रहित सन्तान उत्पन्न होती है.

अङ्गाङ्गिभाव, (पु०) अङ्गस्य अङ्गिनश्च भावः । गौण और मुख्य भाव-बडे छोटेका होना.

अङ्गाधिप, (पु०) अधि+पा+क, अङ्ग+अधिप ६ त० । अंगदेशका राजा कर्ण । अंगोंका स्वामी.

अङ्गार, (अस्त्री०) अङ्ग+आरन् । आधा जलाहुवा अग्नियुक्त किंवा अग्निशून्य "आङ्गार" इस नामसे प्रसिद्ध लकडीका खण्ड । मङ्गलग्रह (पु०) । लालरंग (त्रि०).

अङ्गारक, (पु०) अङ्गार+स्वार्थे कः । मङ्गलग्रह । कुरण्टकवृक्ष "भीमराज" नामसे प्रसिद्ध । भृङ्गराज वृक्ष । अल्पार्थे कः । अंगारका बहुत छोटा भाग-चिनगारी.

अङ्गारक, (न०) 'तैलमङ्गारकं नाम सर्वज्वरविनाशनम्' । सब प्रकारके ज्वर (ताप) को दूर करनेहारा तेल (जो चिकित्साशास्त्रमें प्रसिद्ध है).

अङ्गारकमणि, (अस्त्री०) अङ्गारकस्य मणिः ६ त० । प्रवाल-मूंगा.

अङ्गारकारिन्, (त्रि०) अङ्गारं करोति । कृ-णिनि । जो वेचनेके लिये कोइले बनाताहै.

अङ्गारधानिका, (स्त्री०) अङ्गाराणि धीयन्तेऽस्याम्, अङ्गार+धा+आधारे ल्युट् टित्वात् ङीप् ततः स्वार्थे कप् टाप् । जिसमें कोइले रक्खे जाते हैं । (हसन्ती-अंगीठी).

अङ्गारपर्ण, (पु०) अस्त्यर्थे अच् । चित्ररथका नाम । गन्धर्वोंका राजा । पाण्डवोंका मित्र.

अङ्गारपरिपाचित, (न०) अङ्गारे परिपाच्यते, परि+पच्+स्वार्थे णिच्+क्त । कवाव-पक्वमांस.

अङ्गारपुष्प, (पु०) अङ्गारमिव लोहितवर्णं पुष्पं यस्य ब० । जियापुतिनामी वृक्ष । इङ्गुदीवृक्ष.

अङ्गारमञ्जरी, (स्त्री०) अङ्गारइव रक्तवर्णा मञ्जरी यस्याः ब० । करौंजानामी वृक्ष-करञ्जवृक्ष.

अङ्गारवल्ली, (स्त्री०) अङ्गारमिव रक्तफलत्वात् रक्ता वल्ली कुचनामी गुञ्जालता । करञ्जवृक्ष.

अङ्गारशकटी, (स्त्री०) अङ्गारस्य शकटी ६ त० । अङ्गाराधारपात्र-अंगीठी.

अङ्गारावक्षेपण, (न०) अङ्गारा अवक्षिप्यन्ते अनेन-करणे ल्युट् । अग्निके कोइले फेंके जाते हैं जिस्से । कोइले फेंकने वा बुझानेका पात्र.

अङ्गारि, (स्त्री०) अङ्गार मत्वर्थे ठन् पृषोदरादित्वात् कलोपः । अंगीठी-अङ्गाराधारपात्रविशेष.

अङ्गारिका, (स्त्री०) अङ्गारो विद्यतेऽस्याः, अङ्गार+मत्वर्थे ठन् टाप् (अङ्गारपात्र-अंगीठी).

अङ्गारिणी, (स्त्री०) अङ्गार+इनि । अंगीठी.

अङ्गारित, (पु०) अङ्गारमिवाचरति, अङ्गार+क्विप्+ततः कर्तरि क्तः । पत्तेकी कलीका निकलना । अङ्गारं करोतीत्यर्थे णिच्+क्तः । जलाहुआ (त्रि०).

अङ्गारीय, (त्रि०) अङ्गारेभ्यः एतानि छ (ईय) । कोइलोंके लिये है । कोइले तयार करनेके लिये है.

अङ्गिका, (स्त्री०) अङ्गं आच्छादयति, अङ्ग+इनि+क, स्त्रियां टाप् (आङ्रखा) अंगरक्खा नामी कञ्चुकवस्त्र-आङ्गी.

अङ्गिन्, (त्रि०) अङ्ग+इनि । प्रधान अङ्गोंवाला-देहवाला.

अङ्गिरः, (पु०) एक ऋषि जिसने अथर्वासे विद्या लेकर सत्यवाहको पढाई.

अङ्गिरस्, (पु०) अङ्ग+असि डिरागमः । एक ऋषि-ब्रह्माके मुखसे उत्पन्न हुआ पुत्र । इसे यज्ञका पति और देवताओंका पुरोहितभी कहा है.

अङ्गिरसायनम्, अलुक् समास । सत्रयाग, जहां सदा अन्न मिला सक्ता है.

अङ्गिरस्तम, (त्रि०) अतिशयेन अङ्गिरः वेगवान् (तमप्) । बहुतही जल्दी जानेहारा । भोजनको खानेवाले विशेषतः अग्निके समान.

अङ्गिरस्वत्, (त्रि०) अङ्गिराः (अग्निः) सहायत्वेन विद्यते अस्य । मतुप् मको व होजाता है । जिसका अग्नि सहाय होता है (वायु) हवा.

अङ्गीकार, (पु०) अनङ्गं अस्वकीयं अङ्गं क्रियते, अङ्ग+च्वि+कृ+घञ् मानलेना । कबूल करना । अभ्युपगम करना.

अङ्गीकृ, तना० उभ० । अङ्गके साथ संयुक्त है.

अङ्गीकृत, (त्रि०) अङ्ग+च्वि कर्मणि क्तः । स्वीकार किया गया । मानागया.

अङ्गु, (पु०) अङ्ग+उन् । हाथ । जैसा अङ्गुष्ठशब्दमें आता है.

अङ्गुरि-री, (स्त्री०) अङ्ग+उलि, रलयोरेकत्वस्मरणात् रत्वं । अङ्गुली-हाथपाओंकी शाखा । "अङ्गुरीवोरगक्षता".

अङ्गुरीय, (न०) अङ्गुरौ भवं, अङ्गुरि+छ (अङ्गुलीका भूषण) अङ्गूठी । मुन्दरी.

अङ्गुरीयक, (न०) अङ्गुलौ भवं, अङ्गुलि+छ+स्वार्थे क । अङ्गुलीका भूषण-अङ्गूठी । मुन्दरी.

अङ्गुल, (पु०) अङ्ग+उल । अङ्गुल । वात्स्यायनमुनि । अङ्गुठा-आठजौंका माप (न०).

अङ्गुलितोरण, (न०) अङ्गुल्याः तोरणं इव कृतम् । चन्दनादिद्वारा माथेपर आधे चन्द्रमाके आकारका तिलक.

अङ्गुलित्र, (न०) अङ्गुलिं त्रायते, अङ्गुलि+त्रै+क । अङ्गुलीकी रक्षा करनेहारा दस्ताना.

अङ्गुलिपञ्चकम्, (न०) अङ्गुलीनां पञ्चकम् पञ्चसङ्ख्यात्मकः समूहः । ष० त० । इकट्ठी पांच अङ्गुलीयें.

अङ्गुलिमुद्रा, (स्त्री०) अङ्गुल्या मुदं राति, अङ्गुलि+मुद्+रा+क ६ त० । वह अङ्गूठी जिसमें धारण करनेहारेके नामाक्षर खुदे हो.

अङ्गुलिमोटनं-स्फोटनम्, (न०) अङ्गुल्योर्मोटनं स्फोटनं मर्दनं ताडनं वा यत्र । दो अंगुलियोंका परस्पर मोडना-मलना-फटकाना वा टकराना है । चुटकी मारना.

अङ्गुलिसन्देश, (पु०) अङ्गुल्या अङ्गुलिध्वनिना सन्दिश्यते, सं+दिश्+घञ् । अङ्गुलीके शब्दसे सङ्केत करना । अङ्गुलिओंका बजाना.

अङ्गुलिसम्भूत, (पु०) अङ्गुलौ सम्भवः, सम्+भू+क्त ७ त० । नख (नौं).

अङ्गुली(री)यं-यकम्, (न०) अङ्गुलौ (रौ) भवं, स्वार्थे कन् । अङ्गुली (री) यें होवे । अङ्गुठी । मुन्दरी.

अङ्गुष्ठ, (पु०) अङ्गौ पाणौ प्राधान्येन तिष्ठति, अङ्गु+स्था+क । जो हाथमें मुख्य होकर रहे । अङ्गुठा । बढीहुई अङ्गुल.

अङ्गुष्ठमात्र, (त्रि०) अङ्गुष्ठ+परिमाणार्थे मात्रच् । अङ्गुठाभर.

अङ्गुष्ठाना, (स्त्री०) सुईसे हाथ बचानेके लिये बनीहुई टोपी-अङ्गुलित्रभी इस अर्थमें आजाताहै.

अङ्गूष, (पु०) अङ्ग+ऊष । नेवला-बाण.

अङ्घ्, आत्म० अङ्घते । आनङ्घे । जाना । प्रारंभ करना । झिडकना । शीघ्रता करना । उलहमां देना (उपालंभ लगाना).

अङ्घस्, (न०) अङ्घ्+असि । अङ्घते गच्छति नरकं अनेन । पाप, गुनाह.

अङ्घारि, (त्रि०) अङ्घ+ऋ+इण् पृषो० । दीप्तिशील । चमकनेहारा.

अङ्घ्रि, (पु०) अङ्घ्+क्रिन् निपातोऽयम् । चरण । वृक्षकी जड.

अङ्घ्रिप, (पु०) अङ्घ्रिणा मूलेन पिबति सिक्तजलादिकं पा+क ३ त० । वृक्षमात्र.

अङ्घ्रिपर्णिका-र्णी, (स्त्री०) अङ्घ्रौ मूले, अङ्घ्रेरारभ्य वा पर्णं अस्याः ब० । "चाकुलिया" नामी वृक्ष, जिसके फूल सिंहकी पूछ जैसे होतेहैं.

अङ्घ्रिपान, (न०) अङ्घ्रिः पानं यस्य, अथवा अङ्घ्रिं पिबति । अङ्गुठा चूसनेवाला नन्हा बच्चा । वृक्ष.

अङ्घ्रिस्कन्ध, (पु०) अङ्घ्रेः स्कन्ध इव । एडी-अड्डी.

अच्, भ्वा० उभ० (अचति-अञ्चति, आनञ्च, अचिष्ट, अक्त) । जाना । हिलना । प्रतिष्ठा करना.

अचक्र, (त्रि०) पहिये बिना व्यापाररहित.

अचक्षुस्, (त्रि०) चक्ष्+उसि ब०। मन्दनेत्र-अन्धा.

अचण्डी, (स्त्री०) चडि कोपने+अच्+ङीष् न० त०। वह गौ जिसका स्वभाव शान्त हो। विनक्रोध (त्रि०).

अचतुर, (त्रि०) (अविद्यमानानि चत्वारि यस्य) जिसके चार न हों। न० त०। न चतुर। जो चतुर (चालाक) नहीं.

अचर, (न०) न चरति चलति-चर्+अच् न० त०। ठहरा-हुआ-पृथिवी-पर्वत आदि। "चराणामन्नमचरं".

अचरम, (त्रि०) न चरमः (अन्तिमः)। जो अन्तिम (आखिरी) न हो। मध्यम आदि.

अचल, (पु०) न चलति-चल्+अच् न० त०। पर्वत वृक्ष-गोजनामी कीलक; जो कांपे नहीं। पृथिवी.

अचलम्, (न०) ब्रह्म.

अचलकन्यका, (स्त्री०)-सुता-दुहिता-तनया इत्यादि पार्वतीका नाम। हिमालयपर्वतकी कन्या.

अचलज-जात, (त्रि०) अचलात् जातः ५ त०। पर्वतसे उत्पन्न हुवा.

अचलत्विष्, (पु०) अचला शतधा प्रक्षालनेनापि मालिन्यानपगमात् स्थिरा त्विट् कान्तिर्यस्य ब०। कोइल-जिसकी शोभा कमी न विगडे (त्रि०).

अचलद्विष्, (पु०) अचलान् द्वेष्टि, द्विष्+क्विप्। पर्वतोंका शत्रु-इन्द्रका नाम (जिसने पर्वतोंके पर काटे).

अचलधृतिः, (स्त्री०) चारपादका छन्द जिसके प्रत्येक पादमें सोलह अक्षर होतेहैं (गीत्यार्या).

अचलपति-राट्, (पु०) पर्वतोंका राजा-हिमालय.

अचला, (स्त्री०) न चलति। पृथिवी। अस्त्यर्थेऽच्। पर्वत.

अचलासप्तमी, (स्त्री०) आश्विनशुक्लसप्तमी.

अचापल-ल्य, (त्रि०) नास्ति चापलं-ल्यं यस्य बहु०। जो चञ्चल नहीं। निश्चल। स्थिर।-लं-ल्यं न० त०। निश्चल होना। न हिलना.

अचित्, (त्रि०) न चेतयति। (Ved) न समझनेहारा। अधार्मिक.

अचित, (त्रि०) Ved न चितः। चलगया। (न० त०) न खयाल (चिन्तन) किया गया। न इकट्ठा किया गया.

अचित्त, (त्रि०) (नास्ति चित्तं यस्य)। जो विचारमें नहीं आ सक्ता। वेहोश। मूर्ख। उड़े हुए मनवाला.

अचित्ति, (स्त्री०) (न चित् क्तिन्)। वेसुध होना। मोह। अज्ञान। भूल.

अचिन्तित, (त्रि०) (न० चिन्त्+क्त)। न चिन्ता किया गया। न सोचा गया। अचानक.

अचिन्त्य, (न०) चिन्ति-कर्मणि यत्-न० त०। चिन्तयितुं इयत्तया परिच्छेत्तुं चाशक्यं परब्रह्म। वह वस्तु कि जिसका विचार न होसके (त्रि०)। "अचिन्त्याः खलु ये भावाः" इति स्मृतौ.

अचिर, (न०) चि+रक् न० त०। थोडा समय। कुछ काल रहनेहारा द्रव्यमात्र (त्रि०).

अचिरद्युतिः, (स्त्री०) अचिरा द्युतिर्यस्याः ब०। विजली जिसकी चमक थोडाकाल रहे (त्रि०).

अचिरप्रभा, (स्त्री०) प्र+भा+अङ्, अचिरा प्रभा यस्याः ब०। विजली। थोडाकाल रहनेहारी प्रभावाला (त्रि०).

अचिरप्रसूता, (स्त्री०) अचिरं प्र-सू-क्त आ.। थोड़ी देरसे (अभी) जो जनी हो। गौ आदि.

अचिररोचिस्, (स्त्री०) अचिरं रोचिर्यस्याः ब०। विजुरी। थोडी देर रहनेहारी प्रभावाला (त्रि०).

अचिरात्, (अव्य०) अचिरं अततीति क्विप्। शीघ्र (जल्दी).

अचिराभा, (स्त्री०) (अचिरप्रभाकीं नाईं)। आ+भा+अङ्। विजुरी.

अचिरांशु, (स्त्री०) अचिरा अंशवोऽस्याः ब०। विजुरी। जिसकी किरणें थोडी देर रहें (त्रि०).

अचिष्णु-ष्टु, (त्रि०) Ved (अच्-जाना इष्णु न ष्टुच्)। सब स्थानपर जानेवाला। सर्वव्यापी.

अचेतन, (त्रि०) चित्+णिच्+युच्-चेतना ज्ञानं ब०। चेतनाहीन चित्+ल्यु न० त०। बेसमझ। ज्ञानहीन.

अचेतस्, (त्रि०) चित्+ असुन् न० त०। विचारहीन। दुष्ट-चित्त.

अचेतान, (त्रि०) चित् शानच् न० त०। Ved बेहोश। चेतनताके विना। अज्ञानी। मूर्ख। मुग्ध। मोहका मारा हुआ.

अचेष्ट, (त्रि०) (नास्ति चेष्टा यस्य) जिसकी चेष्टा (हरकत) न हो। जड। बेहोश.

अचैतन्य, (त्रि०) चेतनस्य भावः, चेतन+यक् ब०। चैतन्यरहित। ज्ञानशून्य न० त०। ज्ञानभिन्न (न०).

अच्छ, (अव्य०) छो+क, न० त०। संम्मुख-सामनेसे.

अच्छ, (त्रि०) न छ्यति दृष्टिं, न+छो क.। स्वच्छ-साफ.

अच्छत्र, (पु०) जिस देशमें राजा नहीं। अराजक देश.

अच्छन्दस्, (त्रि०) वेद न पढनेहारा। जिसको वेद पढानेकी आज्ञा नहीं। शूद्र। छन्दबिना.

अच्छभल्ल, (पु०) रीछ-भालू.

अच्छावाक, (पु०) अच्छं निर्मलं आभिमुख्येन वा वक्ति शंसति; वच् कर्तरि संज्ञायां घञ् निपातस्य चेति दीर्घः। सोमयज्ञ करानेहारा पुरोहित.

अच्छिद्र, (त्रि०) छिद्+रक् ब० । छिद्रशून्य-दोषरहित । वह वैदिककर्म जिसमें अङ्गहानि न होवे । किसी प्रकारकी चूकका न होना.

अच्छिद्रावधारण, (न०) अच्छिद्रतया साङ्गतयावधारणं अव+धारि+ल्युट् । कियेगये वैदिककर्मके विषयमें यह कहना कि यह कर्म अङ्गहीन न होवे.

अच्छिन्न, (त्रि०) (न छिद् क) । न कटाहुआ । निरन्तर । लगातार । नित्य । बेरोक.

अच्छिन्नपर्ण-पत्र, (पु०) (अच्छिन्नानि सततानि पर्णानि पत्राणि यस्य) । एक वृक्षका नाम जिसके पत्ते कभी नहीं झडते । शाखोटक वृक्ष । एक पक्षी.

अच्छेदिक-अच्छैदिक, (त्रि०) (छेदनं नार्हति ठन्) । जो काटा नहीं जासक्ता.

अच्छोटन, (न०) मृगया । अहेर । शिकार.

अच्छोद, (त्रि०) अच्छं उदकं यस्य, उदकस्योदभावः । निर्मल जलवाला छोटा तालाव । अपने नामसे प्रसिद्ध सरोवर (न०) कादम्बरीमें प्रसिद्ध है.

अच्युत, (पु०) न० त० । स्वरूपसामर्थ्यात् न च्युतः, च्यवते वा । कालसामान्ये कर्तरि क्तः । न गिराहुआ-पक्का-विष्णु । नियमसे जो स्थिर रहे । पीपल.

अच्युतजः (पु०) अच्युतात् जायते । पं० त० जैन देवताओंकी एक श्रेणी (जमात) जो विष्णुसे उत्पन्न हुई मानते हैं.

अच्युतस्थल, (न०) अच्युतस्य स्थलम् । विष्णुका स्थानविशेष । पञ्जाबमें एक स्थान.

अच्युताग्रज, (पु०) अच्युतस्य कृष्णस्य अग्रे जायते, अग्र+जन्+ड ६ त० । बलभद्र । इन्द्र.

अच्युताङ्गज, (पु०) अच्युतस्य अङ्गात् जायते, अङ्ग+जन्+ड ६ त० । कामदेव-कृष्ण और रुक्मिणीका पुत्र.

अच्युतात्मज, (पु०) आत्मनोऽङ्गात् जायते जन्+ड ६ त० । कामदेव.

अच्युतावास, (पु०) आ-उष्यते सेव्यतेऽत्र, आ+वस्+घञ् ६ त० । वटवृक्ष-बोडका वृक्ष (इसमें ईश्वरका विशेष वास है । "अश्वत्थः सर्ववृक्षाणां" भ० गी०) मथुरा । वृन्दावन । क्षीरसमुद्र.

अज्, विकल्पसे भ्वा० प० (सार्वधातुकलकारोंमें "वी" आदेश होजाता है) (अजति-आजीत्-अजितुम्) । जाना । चलाना । लेजाना । फेकना (वैदिक साहित्यमें उपसर्गोंके साथ प्रयोग किया जाता है).

अज, (पु०) न जायते, जन्+ड न० त० । ब्रह्म-विष्णु-हर-जीवात्मा-ईश्वर-बकरा-मेषराशि-सूर्यवंशीय राजादशरथका पिता । (आत्) विष्णुसे उत्पन्न हुआ कामदेव । जिसका जन्म न हो (त्रि०) जगत्का कारण. सत्वरजस्तमोगुणस्वरूप प्रधान.

अजकर्ण, (पु०) अजस्य कर्ण इव कर्णौ यस्य ब० । "मियासाल" नामी वृक्ष जिसके पत्ते बकरेके कानके समान लम्बे होतेहैं । मरिचपत्र.

अजकव-गव, (अस्त्री०) अजो विष्णुः को ब्रह्मा च वाति शरत्वेनात्र, वा+अधिकरणे कः ६ त० । शिवजीका धनुष.

अजकाव, (अस्त्री०) अजकौ विष्णुब्रह्माणौ अवतीति अण् । जो विष्णु और ब्रह्माकी रक्षाकर्ता है (शिवधनुः).

अजक्षीर, (न०) अजायाः क्षीरं पुंवद्भावः । बकरीका दूध.

अजग, (पु०) अजं छागं यज्ञाङ्गत्वेन गच्छति गम्+ड ६ त० । विष्णु । अग्नि.

अजगन्धा, (स्त्री०) अजस्य गन्ध इव गन्धोऽस्याः । वनजवैनका पौदह-वनयामानी.

अजगन्धिका, (स्त्री०) अजस्य गन्ध इव गन्धोऽस्याः ब० ततः स्वार्थे के टाप् । वावुईनामी वर्बररी साग.

अजगन्धिनी, (स्त्री०) अजस्य मेषस्य गन्धो लेश एकदेशः शृङ्गमितियावत् तदस्याः फलाकारेणास्तीति अजगन्ध+इनि+ङीप् । गाडरशिङ्ग (अजशृङ्गीवृक्ष).

अजगर, (पु०) अजं छागं गिरति गिलति, गृ+अच् (बडा सांप).

अजगल्लिका, (स्त्री०) अजस्य गल्ल इव । बकरेके गल्लकी भांति एक व्याधि (बीमारी).

अजघन्य, (त्रि०) न जघन्य (अधम) न० त० । जो नीच न हो । अच्छा.

अजजटा, (स्त्री०) नास्ति जटा शिफा यस्याः ब० । भुंईआमला नामी कन्दरहित एक वृक्ष.

अजजीविक, (त्रि०) अजैस्तच्चारणेन जीवति, अजा एव जीविका यस्य वा । जिसका जीवन बकरोंपर हो.

अजथ्या, (स्त्री०) अजानां समूहः । अज+थ्यन् स्त्रीत्वात् टाप् । बकरोंका समूह । पीला फूल । स्वर्णपुष्पिका.

अजदण्डी, (स्त्री०) अजस्य ब्रह्मणो दण्डोऽस्याः ब० ङीष् । ब्रह्मदण्डी वृक्ष.

अजननि, (स्त्री०) न+जन्+आक्रोशे अनि । जन्मरहित । जिसकी माता न हो (अव्य०).

अजनम्, (न०) भावे ल्युट् । हिलना । चलना । -नः= ब्रह्मा । अयोनिजः । ब्रह्मासे उपजा दक्ष.

अजनामक, (पु०) अजः नाम यस्य कप् । अज नामवाला धातु द्रव्य.

अजनि, (पु०) अज् अनि । मार्ग । रास्ता-सडक.

अजन्त, (पु०) अच् अन्ते यस्य ब०। जिस शब्दके अन्तमें स्वर हो। स्वरान्त.

अजन्य, (न०) लौकिकहेतुभिर्न जन्यते; न+जन्+णिच्-यत्। शुभाशुभको सूचन करनेहारा दैवकृत भूचाल आदि उपद्रव.

अजप, (पु०) अस्पष्टं जपति निन्दार्थे नञ्, जप्+अच्। जो भलीभान्ति न पढ सकें। खराव किताबके पढनेहारा। अजं पाति रक्षति, अज+पा+क। बकरीपालनेहारा (त्रि०).

अजपा, (स्त्री०) प्रयत्नेन जपितुं अशक्या अयत्नोच्चारिता जप्+अच्। हंसनामी मन्त्रका नाम। जो आपही श्वास-प्रश्वासके आनेजानेसे निकलतारहता है। (हंसनामी प्राण आत्मस्वरूपसे स्थित होरहा है).

अजपात्–द्, (पु०) अजस्य पाद इव पादोऽस्य। (ग्यारह-रुद्रोंमेंसे एकका नाम। पूर्वाभाद्रपदनामी नक्षत्र तारा).

अजप्रिया, (स्त्री०) अजानां प्रिया। कुल इस नामसे प्रसिद्ध बेरका वृक्ष.

अजबन्धुः, (पु०) अजस्य वन्धुः इव मूर्खत्वात्। बकरेके संबंधीकी भांति मूर्खपन होनेसे मूर्ख। बेअकल.

अजमक्ष, (पु०) अजैर्भक्ष्यतेऽसौ, भक्ष्+घञ् ६ त०। (वावुई) वर्वरीवृक्ष। (इसके पत्र बकरे प्रसन्न होकर खाते हैं).

अजमार, (पु०) अजं मारयति विक्रयार्थं मृ-णिच्-अण्। वेचनेके लिये बकरे आदिको मारता है। बूचर। कसाई.

अजमीढ, (पु०) अजो मीढः यज्ञे सिक्तः यत्र व०। अज-मेरनामी देश। उस देशका राजा, अण्। अजमीढ-युधिष्ठर.

अजमुख, (त्रि०) अजस्य मुखमिव मुखं यस्य (बहु०)। जिसका मुख बकरेके समान है।–खः (पु०) दक्षप्रजा-पतिका नाम.

अजमोदा, (स्त्री०) अजस्य मोद इव मोदो गन्धो यस्याः, अजं मोदयति वा, मुद्+घञ् ६ त० (मोदि+अण् वा। बडी गन्धवाली अजवैन).

अजम्भ, (पु०) नास्ति जम्भो दन्तोऽस्य व०। मेंडक (इसके दांत नहीं होते) दांतरहित (त्रि०).

अजय, (पु०) जि+अच् न०त०। वीरभूमि नगरके पास। एक नदविशेष। अजेन छागेन याति, या+क ३ त०। बकरेपर चढनेहारा अग्नि (पु०) जीत विन। नास्ति जयो. मादकत्वेनास्यां, भांग (सिद्धि) विजया (स्त्री०) दुर्गाके एक सित्रका नाम। माया.

अजय्य, (त्रि०) जि+शक्यार्थे यत्। वह शत्रु जो जीता नहीं जा सका, अथवा जिसका जीतना कठिन हो.

अजरा, (स्त्री०) जॄ+अङ्, न०त०। घृतकुमारी नामी वृक्ष। जराशून्य। बुढापेका न होना। अजरसम् (अव्य०).

अजर्य, (न०) न जीर्यति, जॄ+यत्, न० त०। मित्रता.

अजलोमन्, (पु०) अजस्य लोमेव लोम (मञ्जरी) यस्य उपमान (ब०) शूकशिम्बीनामी वृक्ष (जिसकी मञ्जरी बकरीके रोमकी नांई होती है).

अजवस्तिः, (पु०) अजस्य वस्तिः इव वस्तिः यस्य। बकरेकी वस्तिके समान वस्तिवाला। एक ऋषिका नाम, वा उससे उत्पन्न हुआ एक समूह.

अजवीथी, (स्त्री०) अजेन ब्रह्मणा निर्मिता वीथी पदं ३ त०। आकाशमें पुलकी नांई यमनालानामसे प्रसिद्ध। छा-यापथ (जहांसे लेकर अगस्त्यके स्थानतक पितरोंका मार्ग है).

अजशृङ्गी, (स्त्री०) अजस्य मेषस्य शृङ्गमिव फलं अस्याः व० गाडलशृङ्गानामी वृक्ष, जिसके फल मेढेके सींगकी भांति होते हैं.

अजस्र, (न०) न+जस्+र। निरंतर टूटनेके विना। सदा रहनेहारी वस्तुमात्र.

अजहत्स्वार्था, (स्त्री०) न जहत् स्वार्थो यां, न+हा+शतृ-२ ब०। अपने अर्थको न छोडकर दूसरे अर्थको जतानेहारी लक्षणा नामशक्ति। जैसे "श्वेतो धावति" यहां श्वेत गुणको छोडेबिना श्वेतगुणवालेमें लक्षणा है.

अजहल्लिङ्ग, (पु०) न जहत् लिङ्गं यं, हा+शतृ २ व०। जिसका लिङ्ग नियत हो। विशेष्यका चाहे और लिङ्ग भी रहे परंतु अपने लिङ्गको न छोडनेहारा। यह विशेषण शब्द होता है। यद्यपि और स्थानमें यह नियम है कि विशेषण विशेष्यका लिङ्गग्रहण करे परंतु यहां नहीं जैसे "वेदः श्रुतिर्वा प्रमाणम्".

अजागर, (पु०) जागृ+णिच्+अच्, न जागरो यस्मात् ५ व०। भीमराजनामी भृङ्गराज (इसके सेवन करनेसे नींद नहीं आती) (जागनेके लिये यह अद्वितीय वस्तु है, इसीका नाम "सुजागर" भी लिखा है).

अजाजी, (स्त्री०) अजेन छागेन आजो विक्षेपो गन्धोत्कट-त्वात् त्यागो यस्याः अज+घञ् वीभावाभावः ब०। जीरा नामसे प्रसिद्ध जीरकवृक्ष.

अजातककुद्, (पु०) न जातं ककुदं अंसकूटं यस्य, जन्+क्त ब०। जिसका ड्डु अभी भलीभांति नहीं भरगया ऐसा थोडी उमरवाला, गौ आदिका बछडा (बच्चा).

अजातदन्त, (त्रि०) न जाता दन्ता यस्य, यस्मिन् वयसि वा। जिसके दांत नहीं उत्पन्न हुए वह अवस्था (उमर) जिसमें दांत नहीं हुए। बिना दांतोंवाला। बिना दांत उपजनेवाली अवस्था.

अजातव्यञ्जन, (त्रि०) न जातं व्यञ्जनं (पुरुषचिह्नं) यस्य। जिसकी डाढी नहीं.

अजातशत्रु, (पु०) जातस्य जन्तुमात्रस्य न शत्रुः, असमर्थ-समासः। राजा युधिष्ठिर। जिसका कोई शत्रु उत्पन्न नहीं हुआ। जातिशून्य। जन्मशून्य (त्रि०).

अजाति, (स्त्री०) जन० क्तिन्, न० त०। उत्पन्न न होना.

अजादनी, (स्त्री०) अजैरेवाद्यते, अद्+कर्मणि ल्युट्। छूटनेसेभी दुःख देनेहारा विचटीनामी वृक्ष.

अजानि, (पु०) नास्ति जाया यस्य व०। जायाया निङादेशः। स्त्रीरहित.

अजानेय, (पु०) अजेपि विक्षेपेपि आनेयो यथास्थानं प्रापणीय आरोहो येन, अज्+अप्+आ+नी+कर्मणि यत् ततः व०। वहुतसे शस्त्रोंकी चोटें खाकरभी जो न डरता हुआ अपने स्वामीको पहुंचनेयोग्य स्थानपर पहुंचावै ऐसा घोडा। उत्तम घोडा.

अजापक्रम्, (न०) अजादुग्धादिभ्यः जातम्। वकरीके दूध आदिसे उत्पन्न। एक प्रकारका घी जो औषधिसे बनाया जाता और खांसी अथवा दमा आदिमें प्रयोग किया जाता है.

अजापालक, (त्रि०) अजान् आपालयति। आ पा णिच्+ण्वुल्। (उप० स०)। वकरियोंको पालने वा उनपर जीविका करनेहारा.

अजामि, (त्रि०) न० त०। Ved जो संबन्धी नहीं। जो ठीक नहीं.

अजाविकम्, (न०) (अजाश्च अवयश्च तेषां समाहारः द्वन्द्व)। वकरियें और भेडें.

अजाश्वम्, (न०) अजाश्च अश्वाश्च। सं. द्वंद्व। वकरे और घोडे.

अजि, (पु०) अज्+ इन्। तेज-चलनेहारा (त्रि०).

अजित, (त्रि०) न जितः (न० त०)। न जीता गया शत्रु.

अजिन, (न०) अजति क्षिपति रजआदि, अज्+इनति। चमडा.

अजिनपत्रा-त्रिका, (स्त्री०) अजिनं चर्मेव सुश्लिष्टं पत्रं पक्षो यस्याः व०। चामचिका वा चामिचिट्ठ नामसे प्रसिद्ध पक्षिभेद.

अजिनफला, (स्त्री०) अजिनं (चर्मविकारत्वात् भस्त्रा) इव फलं यस्याः। टेपारी. नामसे प्रसिद्ध फूकनीके आकारका वृक्ष.

अजिनयोनि, (स्त्री०) अजिनस्य चर्मणः योनिः कारणं ६ त०। हरिणमात्र। हरएक किसमका हिरण.

अजिर, (न०) अज्+किरन्। उठान नामसे प्रसिद्ध। चौतडा वेडा.

अजिरशोचिस्, (त्रि०) अजिरं शोचिः (तेजः) यस्य। चमकदार तेज (रोशनी) वाला.

अजिराधिराज, (पु०) Ved वेगवान् राजा। यमराज.

अजिरीय, (त्रि०) (अजिरं छ ईय)। आंगनके साथका। चौंतडेके साथ मिला हुआ.

अजिह्म, (त्रि०) ह्वा+मन् न० त०। सरल सीधा, जो कुटिल न हो.

अजिह्मग, (पु०) अजिह्मं सरलं गच्छति गम्+ड। वाण। सीधा जानेवाला (त्रि०).

अजिह्व, (पु०) जि+वन्+ह्रकूच। जिह्वा रसना सा नास्ति यस्य व०। मेंडक। जीभसे विना (त्रि०).

अजीकवम्, (न०) अज्या शरक्षेपेण कं ब्रह्माणं वाति प्रीणाति, वा-क। तीर फेंककर ब्रह्माको वचाता है। श्रीशंकरका धनुष.

अजीगर्त, (पु०) अज्यै गमनाय गर्तः अस्य। जिसके जानेके लिये छिद्र (सुराख) है। सर्प (सांप)। भृगुवंशमें एक ब्राह्मणका नाम। जो शुनःशेफका पिता है.

अजीतिः, (स्त्री०) न जीयते। न जीतना। सम्पदा। न क्षय होना.

अजीर्ण, (न०) जॄ+भावे क्त, न० त०। पेटकी आगके धीमा होजानेसे खाये गये अन्न आदिका न पकना। एक प्रकारका रोग। कर्तरि क्तः न० त०। जो पुराना न हो (त्रि०) वदहजमी.

अजीव, (त्रि०) जीव+भावे घञ् व०। जीवनविन। मराहुआ। मुरदा.

अजीवन, (त्रि०) न० व०। न जीवनं यस्य। जीविकारहित। जिसकी कोई रोजी नहो। नम् (न०)। न होना। मृत्यु। मौत.

अजीवनि, (स्त्री०) न जीव्यात्, न+जीव आक्रोशे+अनि। मृत्यु-मौत वह न जीए इस प्रकार शापवचन.

अजुर्य, (त्रि०) अज् कुरच् Ved। अविनाशी। नाश न होनेहारा। वडा वेगवान्.

अजेय, (त्रि०) न+जि+कर्मणि यत्। जिसे जीता न जाय.

अजैकपाद्-द, (पु०) अजस्य छागस्य एकः पाद इव पादो यस्य उपमा व० वा पादस्यांत्याकारलोपः। रुद्रविशेष। पूर्वाभाद्रपदनामी एक तारा। (जिसका देवता रुद्रविशेष है).

अजैडकम्, (न०) (अजाश्च एडकाश्च)। द्वंद्व स०। वकरे और मेढे.

अजोष, (त्रि०) न० त० । न जोषः (प्रीतिः) । जो प्रसन्न वा संतुष्ट नहीं हुआ.

अज्जुका, (स्त्री०) अर्जयति या सा, अर्जि+अक रकारस्य जत्वं । वेश्या कंचनी (इसका नाटकहीमें प्रयोग होता है).

अज्ञ, (त्रि०) न जानाति, न+ज्ञा+क । ज्ञानशून्य–मूर्ख । थोडा जाननेहारा.

अज्ञका, (स्वार्थे कन्) (स्त्री०) अज्ञ एव । मूर्ख स्त्री । बेवकूफ औरत.

अज्ञात, (त्रि०) न० त० । न ज्ञातः । न जाना गया । न आशा किया गया.

अज्ञातकुलशील, (त्रि०) न० ब० । न ज्ञातं कुलशीलं यस्य । जिसका कुल वा स्वभाव न जाना गया हो.

अज्ञातचर्या–वासः, (त्रि०) अज्ञातः वासः यस्य । जिसका निवास नहीं जाना गया । (जैसा की पाण्डवोंका ऐसा वास हुआ था).

अज्ञाति, (स्त्री०) न ज्ञातिः न० त० । सम्बन्धी (रिश्तेदार) न होना.

अज्ञान, (न०) ज्ञा+भावे ल्युट् न० त० । ज्ञानका विरोधी ज्ञानसे नाश हो जानेहारा अविद्या नामी वेदांतमें प्रसिद्ध जगत्का कारण ज्ञान विरोधी पदार्थ । ज्ञानशून्य (त्रि०).

अज्ञानिन्, (पु०) न ज्ञात णिनि । जो ज्ञानी (समझदार) न हो । अज्ञ.

अज्मन्, (स्त्री०) अजति गच्छति दानेन अनया, अज् करणे मनिन् न वीभावः । जिसके दान करनेसे स्वर्गको जाता है । गौ । न० । मार्ग । युद्ध । घर.

अज्येष्ठ, (त्रि०) न ज्येष्ठः । न० त० । जो बहुत बडा वा बहुत अच्छा न हो । बडे भाईके विना.

अज्येष्ठवृत्तिः, (पु०) नास्ति ज्येष्ठवत् वृत्तिः व्यवहारः यस्य । जिसका वर्ताव बडे भाईकी भांति नहीं.

अज्र, (त्रि०) अज् जाना-र । Ved तुरंत जानेहारा । –ज्रः (पु०) क्षेत्र । मैदान.

अञ्च्, (पु०) भ्वा० उभ० । अञ्चति-ते, आनञ्च-ञ्चे, अञ्चितुं, अच्यात् न अञ्च्यात्, अक्त अञ्चित । झुकना । इरादा करना । वश करना । जाना.

अञ्चति, (पु०) अञ्च+अति । वायु-हवा.

अञ्चल, (पु०) अञ्चति अन्तं अञ्च+अलच् । कोनका भाग । कपडेका कोना । पल्ला.

अञ्चित, (त्रि०) अञ्च+क्त । पूजा कियागया । आदर कियागया । सिकोड लियागया "अञ्चितसव्यपादं" इति भट्टिः.

अञ्चितपत्र, (न०) अञ्चितानि वक्रीभूतानि पत्राणि यस्य । (ब०) । टेढे पत्तोंवाला कमल.

अञ्चितभ्रू, (स्त्री०) अञ्चिता पूजिता वक्रीकृता वा भ्रूर्यया । सुंदर स्त्री । वह स्त्री जिसका भौं टेढा किया गयाहो.

अञ्ज्, (नुज्) मिलाना-जाना-प्रकाश करना रुधादि पर० सक् वेट् अनक्ति । आञ्जीत् । अञ्जिता-अङ्क्ता । "व्यनक्ति कालत्रितयेपि योग्यताम्" इति माघः.

अञ्जन, (न०) अज्यतेऽनेन करणे ल्युट् । कज्जल । सुरमा । भावे ल्युट् । मिलाना । जाना । मैलाकरना । प्रकाश करना । कर्तरि ल्युट् । उत्तर दिशाकी हथिनी ।–नी । हनुमानकी माता (स्त्री०) णिचि युच् । शक्ति और लक्षणासे भिन्न शक्य लक्ष्यसे इतर अर्थको जतानेहारा शब्दव्यापार, (स्त्री०) "अन्यार्थधीकृतव्याकृतिरञ्जनेति" काव्यप्रकाश.

अञ्जनकेशी, (स्त्री०) अञ्जनं इव केशा यस्याः । केशोंका संस्कार करनेहारा हट्टविलासिनी नाम गंधद्रव्य । जिसके लगानेसे केश काले हो जाँय.

अञ्जनशलाका, (स्त्री०) अञ्जनाय शलाका । च० त० । कज्जलके लिये सिलाई । सुरमच्.

अञ्जना, (स्त्री०) अज्यते अनया । अञ्ज्-ल्युट्-आ । उत्तर दिशाकी हथिनीका नाम । हनुमान्‌की माताका नाम । मारुतीकी माता.

अञ्जनाद्रि-गिरि, (पु०) अञ्जनं इव कृष्णः गिरिः । कज्जलके समान काला पर्वत । नीलगिरि.

अञ्जनाधिका, (स्त्री०) अञ्जनादधिका कृष्णत्वात् । आजनाई नामसे प्रसिद्ध कीटभेद.

अञ्जनाम्भः, (न०) अञ्जनस्य अम्भः । ष० त० । कज्जलका पानी । नेत्रजल । आंखका पानी.

अञ्जनावती, (स्त्री०) अञ्जनं विद्यतेऽस्याः, अधिककृष्णवर्णत्वात् । अञ्जन+मतुप् वत्वं दीर्घश्च । ईशानकोनकी हथिनी.

अञ्जनी, (स्त्री०) अज्यते चन्दनकुङ्कुमादिभिरसौ, अञ्ज+कर्मणि ल्युट् ङीप् । केसर आदि सुगंध द्रव्योंसे लिपटी हुई स्त्री । करणे ल्युट् । कडवा वृक्ष । कालाञ्जननामी दरख्त.

अञ्जलि, (पु०) अञ्ज+अलि । हाथ जोडना । जुडेहुए दोनो हाथ । बुक्क । पावभरका माप.

अञ्जलिकर्मन्, (न०) अञ्जलेः कर्म । ष० त० । दोनों हाथ जोडना । सादर प्रणाम.

अञ्जलिका, (स्त्री०) अञ्जलिरिव कायति प्रकाशते । अञ्जलि+कै+टाप् । छोटी चूही । क्षुद्र मूषिका । अर्जुनके एक वाणका नाम.

अञ्जलिकारिका, (स्त्री०) अञ्जलेः कारिका करणं, कृ-धात्वर्थनिर्देशे ण्वुल् । हाथोंका जोडना । कृ+ ण्वुल् ६ त० । लज्जालु वा लज्जावती नामसे प्रसिद्ध लज्जा करनेहारी लता । इस लताका स्वभाव है कि छूनेमात्रसे अपने पत्तोंको सिकोडती जाती है मानों हाथ जोड रही है.

अञ्जलिपुटं-टम्, (अस्त्री०) पोले हाथोंका जोड़ना। हथेलीका पोला रखना.

अञ्जस्, (न०) अञ्ज्+असच्। वेग। शक्ति। सरल। सीधा.

अञ्जसा, (अव्य०) अञ्ज+भावे अच्। अञ्जं गतिं विलम्बं वा स्यति सो+क्विप्। शीघ्र। जल्दी। ठीकठीक.

अञ्जसाकृत, (त्रि०) तृ० अलुक्। ठीक किया गया। न्यायपूर्वक किया हुआ.

अञ्जसीन, (त्रि०) अञ्जस् ख। Ved सीधा आगे चला जाना.

अञ्जिः, (त्रि०) अञ्ज् इन्। Ved चमकदार। रोशन। –जिः पु० चन्दन आदिका चिह्न तिलक अट्टालिका.

अञ्जिष्ठः-ष्णुः, (पु०) अनक्ति स्वकिरणैः विश्वम्। अञ्ज इष्ठच्–इष्णुच्। अपनी किरणोंसे जगत्को प्रकाशित कर्ता है। सूर्य। सूरज.

अट्, जाना भ्वादि सक पर० सेट्। अटति। आटीत्.

अटनि–नी, (स्त्री०) अटति मौर्वी, अट्+अनि वा ङीष्। धनुषके आगे चिल्ला चढानेका स्थान। कमानपर चिल्ला बांधनेकी जगह। धनुष्कोटि.

अटरूष, (पु०) अटति भ्रमति, अट्+अच्, तं रोषति हिनस्ति रुष्+क, अटद्भिर्वा न रुष्यते न+रुष्+क। वासकवृक्ष.

अटल, (त्रि०) न० त०। स्थिर (पक्का)। निश्चल। न टलनेहारा। कठिन। सख्त.

अटवि–वी, (स्त्री०) अटन्ति चरमे वयसि यत्र, अट्+अवि, वा ङीषि दीर्घता। पिछली अवस्थामें जहां घूमते हैं। वन। जङ्गल। शिकारके लिये जहां घूमे.

अटविकः, (त्रि०) अटव्यां चरति। जंगलमें फिरने (घूमने) वाला.

अटा, (स्त्री०) अट् वा अङ्। इधर उधर फिरनेका स्वभाव (जैसा संन्यासी)। "अव्या" "अटाट्या" इसी अर्थमें होते हैं.

अटाट्या, (स्त्री०) अट्+यङ्+भावे अ. स्त्रीत्वात् टाप्। घूमना। वृथा गमन। (इसी अर्थमें अटा और अव्या भी है).

अट्ट, लांघना मारना। भ्वादि आत्म. सक-सेट्। अट्टते। आट्टिष्ट.

अट्ट, अनादर करना चुरादि-उभ-सक-सेट। अट्टयति-ते आट्टिटत्-त.

अट्ट, (पु०) अट्टयति अनाद्रियतेऽन्यद् यत्र। अट्ट+घञ्। महलके ऊपरका घर (अटारी) हट्ट (दुकान) सूका अनाज अतिशय (ज्यादती) तुच्छ (नाचीज) मारना अनादर फसीलके ऊपर सेनाका घर (वहां स्थित होकर नर औरोंकी नीचे होनेसे कुछ पर्वाह नहीं करते).

अट्टबन्धः, (पु०) ष० त०। राजगिरीके काममें किसी मकानकी नींह धरनेवाला.

अट्टशूल, (पु०) अट्टं अन्नं शूलं विक्रेयं यस्य। बहु०। अन्न वेचनेहारा.

अट्टस्थली, (स्त्री०) अट्टप्रधाना स्थली। शाक० त०। वहुत प्रासाद(महल)वाला नगर–अट्ट.

अट्टहास, (पु०) अट्टेन अतिशयेन हासः। हस्+घञ् ३ त०। वडी हंसी। जोरसे हसना.

अट्टहासक, (पु०) अट्टहास इव कायते, कै+क। जोरसे हसनेके समय दांत बाहिर निकलनेसे वडे सफेद (श्वेत) होते हैं। दांतोंके समान श्वेत कुंदवृक्ष.

अट्टालक, (पु०) अट्ट इव प्रासादोपरि गृहमिव अलति पर्याप्तो भवति अल्+ण्वुल्। महलके ऊपर ईटोंआदिसे वना घर। वरसाती। बुवात.

अट्टालिका, (स्त्री०) अट्टाल+स्वार्थे क। ईंट चूने आदिसे वना राजाका घर। महल। ऊंचा मंदिर। एक नगरका नाम.

अट्टालिकाकार, (पु०) अट्टालिकां करोति। उप० त०। अटारी वा महल बनाता है। राज ईंटें रखता है.

अठ, जाना। भ्वादि, पर० सक० सेट्। अठति। आठीत्.

अठ, जाना। आत्म० भ्वा० सक० सेट्। अण्ठते.

अड्, उद्यम करना। भ्वा०पर०सक०सेट्। अडति। आडीत्.

अड्, व्याप्ति फैलाना। स्वादि० पर० सक० सेट् (इसका प्रयोग वेदहीमें होता है) अड्णोति। आडीत्.

अड्ड, अभियोग (हमला करना) समाधान (सावित करना) अनुमान करना। भ्वादि० पर० सक० सेट्। अड्डति। आड्डीत्.

अड्डचलः, (पु०) तृ० त०। हलका एक भाग.

अण्, शब्द करना। सांसलेना। भ्वा० प० अ० सेट्। अणति। आणीत्.

अण, जीना। दिवादि-आत्म० अक० सेट्। अण्यते। आणिष्ट.

अण, (न) क (त्रि०) अणति यथेच्छं नदति। अण+अच्, ततः कुत्सायां क। नीच। निंदित। बहुत छोटा (कः) पक्षिविशेष.

अणव्य, (त्रि०) अण्, उन्। अणोः सूक्ष्मशस्यस्य भवनं क्षेत्रं। छोटी खेतीका खेत (जिस खेतमें छोटा २ अनाज पैदा हो)। अणु+यत्। सर्षप (सरसों) आदिकी उत्पत्तिवाला खेत.

अणि, (पु० स्त्री०) अणति शब्दायते। अण्+इन्। आरानामी रथके चक्रमें आगे रहनेहारा कीलक (रथके पहियेका कील)। सूईकी नोक। शस्त्राग्र (हथियारकी नोक)। सीमा (हद).

अणिमन्, (पु०) अणोर्भावः। अणु+इमनिच्। छोटापन। छोटामाप। आठ सिद्धियोंमेंसे एक सिद्धि। जिससे जीव छोटीसी मूर्ति बन सब स्थानमें जासके। "अणिमा लघिमा प्राप्तिः प्राकाम्यं महिमा तथा। ईशित्वं च वशित्वं च तथा कामावसायिता".

अणीयस्, (त्रि०) अणु+ईयस्। बहुत छोटा। बहुत थोडा। "अणोरणीयान् महतो महीयान्" इति श्रुतिः.

अणु, (त्रि०) अण+उन्। छोटा। थोडे मापवाला द्रव्य। (स्त्रियां) अण्वी। छोटे २ धान, चीना, कङ्गनी, श्यामा आदि.

अणुक, (त्रि०) (स्वार्थे कन्) बहुत छोटा। बहुत थोडा.

अणुभा, (स्त्री०) अण्वी सूक्ष्मा भा दीप्तिर्यस्याः ब०। विजली-बिजुरी.

अणुमात्रिक, (त्रि०) अणु परिमाणं यस्य ब०। अतिक्षुद्र। बहुत छोटा.

अणुरेणु, (पु०) धूलिकना। त्रसरेणु। जर्रह.

अणुरेवती, (स्त्री०) अणुः सूक्ष्मा रेवती तारेव। रेवती नक्षत्रकी भांति सूक्ष्म (महीन)। एक वृक्ष (दन्ती) का नाम.

अणुवादः, (पु०) ष० त०। परमाणुवाद। (संपूर्ण द्रव्य परमाणुओंसे बनता है और परमाणु नित्य हैं).

अणुवीक्षणम्, (न०) ष० त०। बहुत दूरतक देखना वा विचरना। अणुः सूक्ष्मः वीक्ष्यते अनेन करणे ल्युट्। जिसे सूक्ष्म वस्तु देख पडती है। दुरबीन.

अण्ड, (न०) अणन्ति सम्प्रयोगं यान्ति अनेन। अम्+ड। पताल्लु (पेशी)। कस्तूरी। पक्षीका अण्डा। वीर्य.

अण्डकम्, (न०) अल्पार्थे कन्। छोटा अण्डा.

अण्डकटाहः-हम्, (अस्त्री०) अण्डं ब्रह्माण्डं कटाह इव। ब्रह्माण्ड (जगत्) मानो कटाह (कडाहे) की भांति.

अण्डकोटरपुष्पी, (स्त्री०) अण्डं इव कोटरे मध्ये पुष्पं यस्याः। बहु०। जिसके कोटर (खोड-ल) में अण्डेके समान फूल हो। एक प्रकारका वृक्ष। अजांत्री.

अण्डकोश-षः-षकः, (पु०) ष० त०। अण्डस्य कोशः। अण्डेका मध्य। कृष्ण। पताल्लु.

अण्डज, (पु०) अण्डात् डिम्बात् जायते। जन्+ड। अण्डेसे निकला पक्षी, सांप। मच्छी। कांकलास नामसे प्रसिद्ध। कृकलास (किरला)। जो कोई अण्डेसे निकला हो (त्रि०)। कस्तूरी (स्त्री०).

अण्डवर्धनम्, (न०) ष० त०। अण्डेका बढना। पताल्लुका फूलजाना.

अण्डाकार आकृति, (त्रि०)। अण्डस्य आकार इव। अण्डेकी आकृति (शकल) वाला। बहु०.

अण्डालु, (पु०) अण्ड+आलु। मत्स्य-मछली.

अण्डीर, (पु०) अण्डः पुमवयवभेदः अस्य अस्तीति। अण्ड+ईरन्। पुरुष। समर्थ। शक्ति। ताकत.

अण्वन्तः, (पु०)। अणुः अन्तः यस्य। अत्यन्तसूक्ष्म प्रश्न। किसी सूक्ष्म वस्तुको निर्णय करनेके लिये सवाल.

अत, बांधना। इदित्। भ्वादि० पर० सक० सेट्। अन्तति आन्तीत्.

अत, बांधना। भ्वादि० पर० सक० सेट्। अतति। आतीत्.

अत, पहुंचाना, निरन्तर चलना। भ्वादि० पर० सक० सेट्। अतति। आतीत्। कर्मे अतितः.

अतएव, (अव्य०) अतः कारणात्। इसलिये.

अतकः, (पु०) अतति सततं गच्छति। अत् कन्। निरंतर चलता है। निरंतर (लगातार) फिरनेवाला पथिक। मुसाफिर.

अतज्ज्ञ, (त्रि०) न तत् जानाति। नहीं उस (ब्रह्म) को जानता है। परमात्माको न जाननेहारा.

अतट, (पु०) तट्यते आहन्यतेऽम्भसा इति तटं जलाघातस्थानं तन्नास्ति यस्य ब०। जिसका किनारा न हो। आडरी नामसे प्रसिद्ध आश्रयस्थानसे शून्य। पर्वतआदि ऊंचा स्थान। पृथिवीका नीचला भाग.

अतथा, (अव्य०) वैसा नहीं.

अतथ्य, (त्रि०) न तथा भवति। मिथ्या। झूठ.

अतदर्ह, (अव्य०) जो यथार्थ रीतिसे न हो। अन्यायसे। अयोग्य रीतिसे.

अतद्गुण, (पु०) अ+तद्+गुण० न० त०। जो दूसरेसे न उठाया जाय। एक प्रकारका वचन जिंसमें दूसरेका गुणग्रहण न कियाजाय.

अतद्गुणसंविज्ञान, (पु०) जिसमें किसीका गुण न समझा जाय। जैसे "दृष्टसमुद्रं आनय" "जिसने समुद्र देखा हो उसे ला" इस वाक्यमें गुणीभूत समुद्रका लानेमें अन्वय नहीं (एक प्रकारका समास)। "लम्बे कानवालेको ला" इस वाक्यमें गुणीभूत कानका लानेमें अन्वय है, इस लिये इसे "तद्गुणसंविज्ञान" समास कहते हैं.

अतनम्, (न०) अत्-ल्युट्। जाना फिरना।-नः (पु०)। सदा फिरता रहता है.

अतन्त्र, (त्रि०) न० ब०। वह बाजा की जिसकी तांतें न हों। जो आधीन न हो। जो नियमके आधीन न हो "ह्रस्वग्रहणमतन्त्रम्".

अतन्द्र, (त्रि०) न तन्द्रा यस्य। कामकरनेवाला चालाक.

अतन्द्रित, (त्रि०) न तन्द्रा जाता अस्य। निरलस। उद्यमी। हिम्मती.

अतप, (त्रि०) न तापयति। न० ब०। जो तपा हुआ न हो। शीतल। ठण्डा। सरद।-पाः (बहुव०)। बौद्धमतके कई एक देवताओंका नाम.

अतपस्-स्क, (पु०) न० ब०। धर्मसम्बन्धी कर्तव्य विसरण (भूल) करनेहारा। "इदं ते नातपस्काय" (भ० गी०).

अतप्ततनु, (त्रि०) जिसके शरीरपर लाल मुद्राका चिह्न न हो। तपसे रहित शरीरवाला.

अतमस्, (त्रि०) न तमः यत्र ब० । दीप्तिविशिष्ट । चमकदार.

अतरुण, (त्रि०) न तरुणः न० त० । पुरातन । पुराना । बूढा.

अतर्क, (त्रि०) न० ब० । नास्ति तर्कः यस्मिन् । तर्क- (दलील)के विना । जिसमें कोई युक्ति नहीं दी जासक्ती ।-र्कः (पु०) तर्कका न होना । बुरा न्याय.

अतर्कित, (त्रि०) न० त० । न सोचा गया । अकस्मात् होगया । अचानक हुआ.

अतर्कितम्, क्रि० वि० । न विचारे गयेकी भांति । जैसा कि न सोचा हो.

अतर्कोपगत-उपनत, (त्रि०) अचानक आपडा न होगया । सर्वथा अकस्मात् हुआ.

अतर्क्य, (त्रि०) न तर्कितुं योग्यः । न तर्कयत् । जो विचार (खयाल) दलीलमें नहीं आसक्ता.

अतल, (न०) अस्य भूखण्डस्य तलम् । सात पातालोंमें पहिला पाताल । तलशून्य (त्रि०).

अतलस्पर्श, (त्रि०) न तलस्य अधोभागस्य स्पर्शो यत्र ब० । जिसका नीचला भाग छुआ न जाय । अथाह । गंभीर.

अतस्, (अव्य०) इसीलिये । इस्से परे । यहांसे । इस कारणसे । अवश्य । जरूर.

अतस, (पु०) अत् गतौ+असच् । पवन । आत्मा । शस्त्र । अतसीवृक्ष । अलसीका बना कपडा (न०).

अतसिः, (पु०) Ved (अत्-असिच्) । घूमनेवाला संन्यासी.

अतसी-सि, (स्त्री०) वृक्षविशेष । सन.

अति, (अव्य०) बहुत प्रशंसा । लांघना । ऊपर.

अतिकथ, (त्रि०) अतिक्रान्तः कथाम् । न कहनेयोग्य । न विश्वास करनेलायक । नष्टधर्म.

अतिकथा, (स्त्री०) अतिक्रान्तः कथाम् । बहुत बढाकर कही गई कथा (कहानी) । निष्प्रयोजन (बेमतलब)कथा.

अतिकन्दक, (पु०) अतिरिक्तः कन्दः यस्य ब० । हस्तिकंदक वृक्ष.

अतिकर्षण, (न०) द्वि० त० । अत्यंत यत्न (कोशिश).

अतिकश, (त्रि०) अतिक्रान्तः कशाम् । चाबुकको कुछ न माननेहारा (घोडा आदि).

अतिकाय, (त्रि०) अत्युत्कटः कायः यस्य । बडेभारी विशेष शरीर(कद)वाला.

अतिकृच्छ्र, (त्रि०) प्रा० स० । बहुत कठिन । -च्छ्रं-च्छ्रः (अतिक्रान्तः कृच्छ्रं प्राजापत्यम्) । बहुत कठिनता (सख्ती) । बारह दिनमें समाप्त होनेवाली बहुत कठिन तपस्या.

अतिकृतम्, (अव्य०) हदसे बाहिर किया गया.

अतिकृश, (पु०) बहुत कमजोर । निर्बल.

अतिकेशर, (पु०) अतिरिक्तानि केशराण्यस्य ब० । कुब्जकवृक्ष.

अतिक्रम, (पु०) अति+क्रम्+घञ् ह्रस्वः । लांघजाना । अतिक्रान्तः क्रमं प्रादि स० । नियमको लांघजाना । अपने कर्तव्यको भूलजाना (त्रि०).

अतिक्रान्त, (त्रि०) अति+क्रम्+क्त । लांघगया । अपने कामको भूल गया.

अतिक्रुद्ध, (त्रि०) अति+क्रुध्+क्त । बडा क्रोधी । बड़े क्रोधमें आगया । तन्त्रशास्त्रमें एक मन्त्रका नाम है.

अतिक्रूर, (त्रि०) बहुत निर्दय (बेरहम) । -रः (प्र०) एक (तन्त्रमें) मन्त्र जो तीस वा तेत्तीस अक्षरोंका होनेसे बहुत क्रूर है.

अतिक्षिप्त, (त्रि०) परे फेंका गया.

अतिखट्व, (त्रि०) अतिक्रान्तः खट्वाम् । खाटके विना । जिसकेपास खाट नहीं.

अतिग, (त्रि०) अति+गम्+ड । लांघगया । बाहिरहोगया (यह समासमें प्रायः पीछे रहता है).

अतिगम्, भ्वा० प० । व्यतीत होना । गुजरना.

अतिगण्ड, (पु०) अति+गडि+अच् । ज्योतिषशास्त्रमें एक योगका नाम । बडी गल्ल । बडी बडी गल्लोंवाला । कपोलवाला.

अतिगन्ध, (पु०) अतिशयितो गन्धो यस्य ब० । चम्पकवृक्ष । बडी सुगन्धिवाला (त्रि०).

अतिगन्धालु, (पु०) पुत्रदात्री नाम वृक्ष.

अतिगव, (त्रि०) अतिक्रान्तः गां वाचम् । वचनसे बाहिर होगया । बडा मूर्ख । पूरा बेवकूफ । अवर्णनीय । जो कहनेमें नहीं आसक्ता.

अतिगहन-गव्हर, (त्रि०) बडा गहरा.

अतिगुण, (त्रि०) उत्कृष्ट (उंदा) गुणोंवाला । नाचीज । निर्गुण । (गुणं अतिक्रान्तः) प्रा० स० । अच्छेगुण.

अतिगुरु, (त्रि०) बहुतभारी ।-रुः (पु०) अत्यन्त आदरणीय व्यक्ति, जैसा कि "पिता" "माता" "आचार्य".

अतिगो, (स्त्री) प्रशस्ता गौः । अच्छी गौ.

अतिग्रह, (त्रि०) अतिक्रान्तः ग्रहम् । जो ग्रहण (समझ)-में नहीं आसक्ता । दूरतक पकडनेवाला । -हः-ग्राहः । ज्ञानके विषय स्पर्श, रस आदि.

अतिग्राह्य, (त्रि०) वश (कांबू) करने योग्य ।-ह्यः (पु०) ज्योतिष्टोम यज्ञमें किये जाने योग्य एक प्रकारका उदकदान (तर्पण).

अतिघ, (पु०) अतिशयेन हन्ति, हन् । बहुत मारता है । एक शस्त्र वा अस्त्र.

अतिघ्न, (त्रि०) अतिशयेन हन्ति दुःखं, हन् ठक् । निश्चिन्त अवस्थावाला.

अतिचमू, (त्रि०) चमूं अतिक्रान्तः । सेनाको लांघ गया । सेनाओंपर विजयी.

अतिचर, भ्वा० प० । अतिक्रम करना । जुल्म करना । अपराध करना.

अतिचरा, (स्त्री०) अतिक्रम्य चरति अति+चर्+अच् । पद्मचारी वृक्ष (यह उत्तरदेशमें होता है) । इसीका दूसरा नाम पद्माभ भी है । कईयोंने इसीको स्थलपद्मिनी, पद्मिनी और पद्मचारिणीलता नामसे निर्दिष्ट किया है । बहुत बदलनेवाली.

अतिचार, (पु०) अतिशयेन चारः, अतिक्रम्य वा चारः । अति+चर्+घञ् । बहुत चलनेहारा । बहुत चलना । ज्योतिषशास्त्रमें प्रसिद्ध मङ्गल आदि पांच ग्रहोंका सूर्यके विशेष संबन्धसे तेजको न सहन करनेके कारण टेढी और शीघ्र आदि गतिसे अपने भोगने योग्य समयको लांघकर और और राशिओंमें जाना.

अतिचारिन्, (पु०) अति+चर्+णिन् । अपने समयको भोगेविन दूसरी राशीमें जानेहारे मंगलादि पांच ग्रह लांघकर जानेहारा । बहुत जानेहारा (त्रि०).

अतिचिरम्, (क्रि० वि०) बहुत देर (विलम्ब).

अतिच्छत्र, (पु०) अतिक्रान्तः छत्रं प्रादि स० । छातिया नामसे प्रसिद्ध एक तृणविशेष (जो थलपर होता है) । तालमखाना नामसे प्रसिद्ध एक तृणभेद जो जलमें रहता है । सुल्फा नामी एक प्रकारका शाक जिसके पत्र और फूल छातेकी शकलके होते हैं । क्षीरस्वामीके मतमें "छत्रा" इतनाही नाम है । छातेको लांघनेहारा (त्रि०).

अतिच्छन्दः–दस्, (त्रि०) अतिक्रान्तं छन्दः छन्दं वा । सांसारिक इच्छाओंसे रहित । वैदिक आचारको तोडनेहारा.

अतिजगती–ति, (स्त्री०) अतिक्रान्ता जगतीं त्रयोदशाक्षरपादावृत्तिं प्रा० स० । एक छन्द जिसके प्रत्येक पादमें १३ अक्षर होते हैं । जगतको लांघनेहारा (त्रि०).

अतिजन, (त्रि०) अतिक्रान्तो जनम् । वह देश कि जहां कोई मनुष्य नहीं । निर्जन.

अतिजव, (त्रि०) अतिशयितो जवो यस्य ब० । बडे वेगवाला । जल्दी चलनेहारा.

अतिजागर, (पु०) अतिशयितो जागरो निद्राराहित्यं यस्य ब० । नीलबकपक्षी । (यह सदा जागताही रहता है) जिसको नींद नहीं (त्रि०).

अतिजात, (त्रि०) अतिक्रान्तो जातं जातिं जनकं वा । जो अपनी जाति वा पितासे भी अत्यन्त श्रेष्ठ हों.

अतिडीन, (न०) अतिक्रान्त डीनं पक्षिगतिभेदं प्रा० स० । पक्षियोंका बहुत लंबा जाना.

अतितराम्, (अव्य०) अति+तर+ततः आमु । बहुतही बहुतः

अतितीक्ष्ण, (त्रि०) अतिशयेन तीक्ष्णः कटुः रसो यस्य ब० । मरिच आदि । मिरचां । सजना नामसे प्रसिद्ध शोभाञ्जन (पु०).

अतितीव्रा, (स्त्री०) अतिशयेन तीव्रा पाकादौ दुर्जरत्वात् प्रा० स० । गांठवाली (गांठदूर्वा) दूर्वा (कुशा) बडे तेजगुणवाला (त्रि०).

अतितृ, भ्वा० प० लांघना । गुजरना । चढजाना.

अतितृष्णा, (स्त्री०) बहुत तृष्णा (लालच) । अतितॄ । भ्वा० प० लांघना । गुजरना । चढजाना.

अतिथि, (पु०) अतति गच्छति न तिष्ठति, अत्+इथिन् । मार्गमें चलता २ घरमें आगया मुसाफिर । "एकरात्रं तु निवसन्नतिथिर्ब्राह्मणः स्मृतः । अनित्यं हि स्थितो यस्मात्तस्मादतिथिरुच्यते" मनुः । कुश और कुमुद्वतीके पुत्रका नाम । रामचन्द्रजीका पोता.

अतिथिदेव, (त्रि०) अतिथिः देव इव पूज्यो यस्य । अतिथिको ईश्वरबुद्धिसे पूजनेहारा ।–वः (पु०) सबसे बडा देवता शिवजी.

अतिथिसपर्या, (स्त्री०) अतिथीनां सपर्या पूजनम् । सपरधातुः कण्ड्वादिः यक् ततो अङ् । गृहस्थके प्रतिदिन करनेयोग्य पांच यज्ञोंमें मनुष्ययज्ञविषयक अतिथिपूजन आदि । (इसी अर्थमें अतिथिपूजा भी).

अतिदग्ध, (त्रि०) बुरी तरहसे जल गया.

अतिदानम्, (न०) बहुत देना । उदारता । फिआजी.

अतिदिश्, तु० प० । जतलाना । बदलना.

अतिदिष्ट, (त्रि०) अति+दिश्+क्त । और धर्मका औरमें आरोप करना । जैसे "प्रकृतिके समान विकृति करनी चाहिये" इस वाक्यसे प्रकृतिस्वरूप अमावस्यायागादिके अङ्गकार्य प्रयाज आदि विकृतिस्वरूप पश्वादियागमें अतिदिष्ट (आरोपित) कियेगये हैं । "इतरधर्मस्य इतरस्मिन् प्रयोगाय आदेशः आदेशो नाम" इति मीमांसा । यह अतिदेश ५ प्रकारका है, शास्त्र, कार्य, निमित्त, व्यपदेश, और रूप । करणव्युत्पत्त्या मीमांसाशास्त्रका उपदेशवाक्य । अतिदेश इव वत् आदिशब्दोंसे पहिचाना जाता है.

अतिदीप्य, (पु०) अतिशयेन दीप्यते अति+दीप कर्तरि यत् । रक्तचित्रक । लालचित्ता नामी वृक्ष.

अतिदूर, (त्रि०) बहुत दूर ।–रे,–रात्,–रेण । (प्रायः इसके पहिले "न" रहता है) । षष्ठीके साथ । यहांसे दूर नहीं । "तपोवनस्य नातिदूरेण".

अतिदेश, (पु०) अति+दिश्+घञ् । व्याख्यातरूपार्थ । अन्यधर्मको दूसरेमें लगाकर दिखादेना.

अतिद्वय, (त्रि०) द्वयं अतिक्रान्तः, नास्ति द्वयं यस्य वा । दोनोंको लांघ गया अथवा जिसके पास दोनों नहीं । उपमारहित । अनुपम.

अतिधन्वन्, (पु०) अतिरिक्तं धनुर्यस्य ब० । धनुषोऽनङ् । अच्छे धनुषवाला योधा । मरुभूमिको लांघनेहारा (त्रि०).

अतिधृति, (स्त्री०) अतिक्रान्ता धृतिं अष्टादशाक्षरपादिकां वृत्तिं प्रा० स० । उन्नीस अक्षरोंके प्रत्येकपादवाला एक छन्द । जिसका धैर्य वा संतोष जाता रहा हो (त्रि०).

अतिनिद्रा, (स्त्री०) बहुत नींद ।–द्रः (पु०) बहुत सोनेवाला । नींदरहित ।–द्रम् (अव्य०) । नींदका समय बीत जाना.

अतिनु–नौ, (त्रि०) अतिक्रान्तो नावं प्रा० स० । क्लीवे ह्रस्वः । वेडीसे उतरा हुआ । पुंसि स्त्रियां च अतिनौः.

अतिपञ्चा, (स्त्री०) पञ्चवर्षं अतिक्रान्ता । पांच वर्षको लांघ गई । पांच वर्षकी कन्या.

अतिपत्, भ्वा० प० । लांघजाना । भूलजाना.

अतिपतन, (न०) अति+पत्+ल्युट् । अत्यय-नाश-वरवादी.

अतिपत्ति, (स्त्री०) अति+पद्+क्तिन् । न सिद्ध होना । फौजमेंसे गुजरा हुआ.

अतिपत्र, (त्रि०) अति+पद्+त्र अत्या० स० । अतिरिक्तं बृहत् पत्रं यस्य वा ब० । पत्तेसे लांघगया । बडे २ पत्तोंवाला हास्तिकंद वृक्ष.

अतिपथिन्, (पु०) अतिशयितः सुन्दरः पन्थाः प्रा० स० । अतेः पूजार्थत्वात् न समासान्तः । अच्छा रास्ता । सत्पथ.

अतिपर, (त्रि०) अतिक्रान्तः परान् । शत्रुओंपर विजय प्राप्त करनेहारा ।–रः (पु०) । दाना दुश्मन.

अतिपरिचय, (पु०) बहुत परिचय (वा कफीयत).

अतिपरोक्ष, (त्रि०) अतिक्रान्तः परोक्षं (अव्य०) । नेत्रोंसे बहुत दूर । बहुत छिपा हुआ.

अतिपातक, (न०) अतिक्रान्तोऽत्यन्तदुष्टत्वेनान्यत् पातकं प्रा० स० । बडा पातक (बडा पाप) जैसे पुरुषोंका माता-नूं (वहु) और कन्याके साथ गमन करनेसे उपजा एवं स्त्रियोंका पुत्र, पिता, और श्वशुर (सौरा) के साथ संभोग करनेसे उत्पन्न हुआ पातक विशेष कहलाता है । पापको लांघनेहारा पुण्यशील पुरुषादि (त्रि०).

अतिपातिन्, (त्रि०) अति–पत्–णिच्–णिनि । शीघ्र भागनेहारा । लांघ जानेवाला.

अतिप्रगे, (अव्य०) अति प्रगीयतेऽस्मिन् काले, गै कै । बहुतही सबेरका समय.

अतिप्रबन्ध, (पु०) अतिशयितः प्रबन्धः । लगातार.

अतिप्रवृद्ध, (त्रि०) अतिशयेन प्रवृद्धः । प्रा० स० । जीता हुआ । बहुत बढ गया । बहुत बढा हुआ.

अतिप्रश्न, (पु०) अति+प्रच्छ+नङ् । अतिक्रम्य मर्यादां प्रश्नः । इस प्रकारका प्रश्न कियेजाना कि जिसका उत्तर मिलचुका हो । दूसरेंको चिडानें (खिझाने) के लिये प्रश्न करना । जैसा बृहदारण्यकोपनिषदमें बालाकी ब्राह्मणने योगिराट् याज्ञवल्क्यजीको किया है । उत्तर न होनेवाला प्रश्न.

अतिप्रसक्ति, (स्त्री०) अति+प्र+सज+क्तिन् । अत्यन्त आसक्ति । किसी काममें बहुत लगजाना । प्रसंगको छोड जिसका सम्बन्ध दूसरेके साथ रहे । लक्ष्यमें जो लक्षणका सम्बन्ध होताहै उसे प्रसंग कहतेहैं जो इसके विपरीत हो वह अतिप्रसंग है । प्रसंगको छोड देनेहारा (त्रि०)

अतिप्रौढा, (स्त्री०) विवाहके योग्य अवस्थावाली कन्या । उमरमें बढी हुई लडकी.

अतिबल, (त्रि०) अतिशयितं बलं यस्य ब० । बडे बलवाला । अतिशयितं बलं यस्याः ५ ब० । बडे बलको उत्पन्न करनेहारी पीले रंगकी वेडियाला नामी बेल (लता) । वह अस्त्रविद्या जो विश्वामित्रने कृशाश्व मुनिसे सीखी और रामचन्द्रजीको समर्पण की (स्त्री०) बडा बल । बडी सेना । बडी शक्ति.

अतिबालक, (त्रि०) अतिशयितः बालकः । प्रा० स० । बहुत बालक । बचवनवाला । –कः (पु०) बच्चा.

अतिबाला, (स्त्री०) अतिक्रान्ता बाल्यावस्थाम् । बाल्यावस्थाको लांघ गई । दोवर्षकी गौ.

अतिब्रह्मचर्य, (न०) अतिशयितं ब्रह्मचर्यम् । बहुत देरतक ब्रह्मचारी रहना ।–र्यः । (अतिक्रान्तः ब्रह्मचर्यम्) । जिसने स्त्रीसंग करके ब्रह्मचर्य तोड डाला हो.

अतिभ(भा)रः, (पु०) अतिशयितः भरः वा भारः । प्रा० स० । बडा भार (बडा बोझा).

अतिभवः, (पु०) अतिशयेन भवति प्रा० स० । लांघनेवाला । जीतनेहारा.

अतिभीः, (स्त्री०) अति बिभेति अस्या दर्शनात् । भी क्विप् । जिसके देखनेसे बहुत डरता है । बिजली.

अतिभूमि, (स्त्री०) अतिशयिता भूमिर्मर्यादा प्रा० स० । बडी मर्यादा अधिकाई । अतिक्रमेऽव्ययीभावः । मर्यादाका तोडना । मर्यादाको तोडनेवाला । पृथिवीलांघनेहारा (त्रि०).

अतिमङ्गल्य, (पु०) अतिमङ्गलाय हितं, अतिमङ्गल+यत् । विल्ववृक्ष । बहुत मंगलसे पूर्ण । बहुत शुभको उत्पन्न करनेहारा (त्रि०).

अतिमतिः, (स्त्री०) मानः अतिशयिता मतिः (मानम्) । बडा अहंकार । औद्धत्य.

अतिमर्त्य–मानुष, (त्रि०) अतिक्रान्तो मर्त्यं मानुषं । मनुष्यको लांघ गया । दैवीशक्तिवाला.

अतिमर्याद, (त्रि०) अतिक्रान्तो मर्यादाम् । उचित नियमको लांघनेहारा । रीति तोडनेवाला.

अतिमात्र, (त्रि०) अतिक्रान्तो मात्रां अल्पं । अत्या-स० । बहुत थोडेको लांघनेहारा (अतिक्रमं करनेहारा).

अतिमान, (त्रि०) मानं अतिक्रान्तः । परिमाणसे बाहिर होगया । जो माया नहीं जासक्ता.

अतिमानुषकर्म, (न०) अतिक्रान्तं मानुषान् तादृशं कर्म । द्वि० त० । मनुष्यकी शक्तिसे बाहिर काम । विचित्रकार्य । अजीबकाम.

अतिमाय, (त्रि०) मायां अतिक्रान्तः । मायासे पार होगया । संसारजालसे पार हुआ । पूर्णमुक्त.

अतिमारुत, (त्रि०) मारुतं अतिक्रान्त । बहुत वायु (हवा) वाला-तः, वातः । बडा तुफान.

अतिमुक्त, (त्रि०) अतिशयेन मुक्तः विदेहकैवल्यं गतः, अति+मुच्+कर्त्तरि क्त । निर्वाणमुक्तिवाला । वह दशा कि जिसमें द्रष्टा, दर्शन, दृश्यरूप त्रिपुटीका अभाव होजाय । ऐसी श्वेत कि जो मोतीकोभी लांघ जाय । माधवीलता "अतिशयेन मुक्तं विस्तारोऽस्य " मुच्+भावे क्त । बहुत फैलाहुआ तिन्दुकका दरख्त.

अतिमृत्यु, (त्रि०) अतिक्रान्तो मृत्युम् । मृत्युसे पार हुआ । मौतको जीतनेवाला ।-त्युः । मौतसे अन्तिम छुटकारा । मोक्ष.

अतिमोदा, (स्त्री०) अतिशयितो मोदो यस्याः व० । नवमल्लिकालता । बड़े हर्षवाला । बड़ी सुगन्धिवाला (त्रि०).

अतिरक्त, (त्रि०) अतिशयेन रक्तः प्रा० स० । बहुत लाल ।-क्ता (स्त्री०) अग्निकी एक जिह्वा.

अतिरथ, (पु०) अतिक्रान्तो रथं रथिनं अत्या० स० । " जो बहुतोंके साथ युद्ध करे" । विशेष योधा.

अतिरभसः, (पु०) रभसं अतिक्रान्तः । अ० स । वेग (तेजी) को लांघा हुआ (त्रि०) बडा वेग.

अतिरसा, (स्त्री०) अतिशयितो रसो यस्याः व० । बहुत रसवाली लता । राम्रानामी मूर्वालता । बड़े रसवाला (त्रि०).

अतिरंहस्, (त्रि०) अतिशयितं रंहः यस्य बहु० । बडे वेगवाला । बडा तेज चलनेहारा.

अतिराजन्, (पु०) अतिक्रान्तः राजानम् अ० स० । एक बडा या उत्कृष्ट राजा राजाको लांघ गया.

अतिरात्र, (पु०) अतिक्रान्तो रात्रिं अत्या० स० । अच् समासान्तः । यज्ञविशेष । रातको लांघगया.

अतिरिक्त, (त्रि०) अति+रिच्+क्त । अधिक । अच्छा । भिन्न । शून्य । "भावे क्त" अतिशय आधिक्य.

अतिरुच्, (पु०) रोचते इति रुक् (स्त्रीणां ऊरुदेशः), अतिक्रान्तः रुचम् प्रा० स० । घुटना (गोडा) ।-क् (स्त्री०) बहुतही सुन्दर स्त्री.

अतिरुचिर, (त्रि०) अतिशयेन रुचिरः (मनोहरः) प्रा० स० । बहुत मनोहर । प्यारा ।-रा (स्त्री०) दो छन्दोंका नाम.

अतिरूक्ष, (त्रि०) अतिशयितः रूक्षः अत्या० स० । बहुत रूखा । स्नेहशून्य कंगनी, बाजरा आदि धान्य. (पु०).

अतिरूप, (त्रि०) अतिक्रान्तः रूपम् । शकल (रूप)से बाहिर हुआ । वायु (हवा) रूपरहित । बहुत सुन्दर । -पम् । बडी सुन्दरता.

अतिरेक, (पु०) अति+रिच्+घञ् । अतिशय । भेद । बड़ा आधिक्य.

अतिरै, (त्रि०) अतिक्रान्तः रायम् अत्या० स० । धनको लांघ गया । आय (आमदन) से अधिक व्यय (खर्च) करनेहारा । फजूल खर्चनेवाला.

अतिरोग, (पु०) अतिशयितो रोगः । रुज्+घञ् । क्षयरोग, बड़ा रोग.

अतिरोमश, (पु०) अतिशयितं रोम, अतिरोमन्+ श । बनका बकरा बहुतरोमवाला (त्रि०).

अतिवक्रः, (त्रि०) अतिशयितो वक्रः । बहुत टेढा ।-क्रः । मंगल आदि पांच ग्रहोंका नाम.

अतिवक्तृ, (त्रि०) अति+वच्+तृच् । बड़ा बोलनेवाला । वचनरचनामें चतुर.

अतिवयस्, (त्रि०) अतिशयितं वयः अस्य । बहुत उमर (आयु) वाला । बहुत बूढा.

अतिवर्णाश्रमिन्, (पु०) अतिक्रान्तो वर्णानाश्रमिणश्च अत्या०स० । ब्राह्मण आदि चारोंवर्ण और ब्रह्मचर्य आदि चारों आश्रमोंसे जो भिन्न हो । "यो वेदान्तमहावाक्यश्रवणेनैव केवलम् । आत्मानमीश्वरं वेद सोऽतिवर्णाश्रमी भवेत्" इस प्रकारके लक्षणवाला पञ्चमाश्रमी.

अतिवर्तन, (न०) अति-वृत्-ल्युट्) । क्षमा करनेयोग्य अपराध । दण्डसे रहित होना.

अतिवर्तिन्, (त्रि०) अति+वृत्+णिनि । अतिक्रम करनेहारा । नियमको तोड़कर चलनेहारा.

अतिवर्तिन्, (त्रि०) अति-वृत्-णिनि । लांघने निकलने अथवा पार होजानेवाला । नियमको तोडनेहारा । सबसे पहिला (सिरेका).

अतिवर्तुल, (पु०) अतिशयितः वर्तुलः प्रा० स० । वाटुला कलाई नामी बहुत गोलस्वरूपका धान्य । बहुत गोल (त्रि०).

अतिवर्धनम्, (न०) अति+वृध्+ल्युट् । बहुत बढना । वृद्धि । तरक्की.

अतिवह, भ्वा० प० । ऊपर लेजाना । लांघना । (णिचि) बिताना । गुजारना.

अतिवाद, (पु०) अति+वद्+घञ् । अत्युक्ति । (किसी बातको बढ़ाकर कहना) । कठोरवचन । अप्रियवचन.

अतिवाद, (पु०) अतिक्रान्तः वादम् अत्या० स० । वादको लांघ गया । बडा कठोर और अपूलील (गन्दा) भाषाका व्यवहार करना । किसी बातको बहुत बढाकर बोलना । अत्युक्ति करना.

अतिवादिन्, (त्रि०) सर्वानतीत्य वदतीति, अति+वद् णिनि । सबको तोड़कर बोलनेहारा । सबका मत खण्डन करके जो स्वमतको संस्थापन करे.

अतिवाह, (अतीत्य देहं अन्यदेहे वाहः प्रापणम्) स० त० । दूसरे देहमें पहुंचानेहारा । सूक्ष्म जीवनतत्त्व (सूक्ष्मशरीर) । स्वर्गादिमें शुभ कर्मकी समाप्ति होनेपर पार्थिव भोग देनेहारा । लेजानेवाला.

अतिवाहक, (अतीत्य श्रितं देहं वाहयति देहान्तरं प्रापयति) वह ण्वुल् । इस (स्थूलके नष्ट होजानेसे जीवको दूसरे देहमें पहुंचा देता है । "क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति" । ईश्वरविरचित एक देव (Ved) जो जीवको दूसरे शरीरमें ले जाता है.

अतिवाहनम्, (अति वहः णिच् ल्युट्) । व्यतीत होना । गुजरना । बहुत परिश्रम करना । सहारना । बहुत भारी बोझा उठाना । भारी बोझा । भेजदेना । किसीभी बातसे निर्मुक्त होना.

अतिवाहिक, (त्रि०) अतिवाहः अस्ति अस्य० ठन् । अतिवाह (सूक्ष्म शरीरवाला) । दूसरे शरीरमें जासकनेहारा.

अतिवाहित, (त्रि०) अति+वह+णिच्+क्त । चलागया । बीतगया पातालनिवासी जीव ।-तं । सूक्ष्मशरीर.

अतिविकट, (पु०) अतिशयेन विकटः, प्रा० स० । दुष्ट हाथी । बड़ा भयदेनेहारा (त्रि०).

अतिविषा, (स्त्री०) अतिक्रान्ता विषं अत्या० स० । आतइचनामी बेल भृङ्गी । विषको दूर करनेहारी.

अतिवृत्, भ्वा० आ० । महाभारत रामायणमें व० भी । ऊपर वा नीचेसे निकल जाना । पारहोजाना । लांघजाना.

अतिवृत्ति, (स्त्री०) अति+वृत्+क्तिन् । बहुत वर्षा होनेपर खेतीको नाश करनेहारा उपद्रवरूप ईतिभेद.

अतिवृद्ध, (त्रि०) अति+वृध्+क्त । बहुत पुरातन (पुराना) । बहुतही उमरवाला ।-द्धः (पु०)तन्त्रशास्त्रमें एक मन्त्र जिसके अक्षर चारसौसे एक सहस्रपर्यन्त अक्षर हों । -द्धा (स्त्री०) एक बड़ी बूढ़ी गौ जो घाससी चाव नहीं सक्ती.

अतिवृष्टि, (स्त्री०) बहुत वर्षा । ६ उपद्रवोंमेंसे एक.

अतिवेगित, (त्रि०) बहुत तीक्ष्ण (तेज) गतिवाला.

अतिवेध, (पु०) अत्यन्त मेल । दशमी और एकादशीका परस्परसंयोग.

अतिवेल, (त्रि०) अतिक्रान्तो वेलां मर्यादां कूलं वा, अत्या० स० । बहुत जियादा । मर्यादारहित । बेलिहाज । समुद्रके तटको अतिक्रम करनेहारा । लांघना (अव्ययी०) समयका लांघना (अव्य०).

अतिव्यथनं-व्यथा, (न० स्त्री०) अति+व्यथ्+ल्युट् । अत्यन्त पीडाका अनुभव करना.

अतिव्याप्ति, (स्त्री०) अति+वि+आप्+क्तिन् । अतिशयेन लक्ष्यमलक्ष्यं चाविशिष्य व्याप्तिर्व्यापनम् । न्यायमतमें अलक्ष्य (जिसका लक्षण नहीं कियागया) में लक्षणका जाना (जिसको जहां रहना चाहिये उस्से भिन्नमें भी यदि रहजाय तो वह लक्षण अतिव्याप्तिदोषसे दूषित ठहरता है । जैसे शृङ्गित्व गौका लक्षण नहिं है, क्योंकी महिषआदिभी सींगवाले हैं । जैसे पृथिवीका लक्षण गन्धवत्त्व है, तो गन्धकी स्थिति केवल पृथिवीहीमें उचित है । यदि वायुआदिमें उसका प्रसंग हो तो अतिव्याप्ति समझनी । और जैसे धूममें वह्निकी व्यापकता है जलमें तो नहीं, उसका जलमें प्रसंग होनेपर अतिव्याप्ति समझनी । अधिक विस्तृत होयगा । ज्यादह फैलगया.

अतिशक्ति, (स्त्री) अति+शक्+क्तिन् । अतिशयिता शक्तिः कर्मसाधनसामर्थ्यं देहजं बलं वा । प्रा० स० । बहुत सामर्थ्य, बड़ा वीर्य । अतिक्रान्तः शक्तिं अत्या० स० अपारसामर्थ्यवाला (त्रि०) अतिशयिता शक्तिर्यस्य प्रा० स० । बड़े बलवाला (त्रि०)अतिक्रमेऽव्ययी० । जिसके समान किसीकी सामर्थ्य न हो.

अतिशक्करी, (स्त्री०) अतिक्रान्ता शक्करीं चतुर्दशाक्षरपादिकां वृत्तिं अत्या० स० । एक छन्द जिसके प्रतिपादमें १५ अक्षर हों.

अतिशय, (पु०) अति+शीङ्+अच् । अधिकाई । बड़ा । अतिक्रान्तः शयं हस्तं अत्या० स० । हाथको लांघनेहारा (त्रि०).

अतिशयित, (पु०) अति+शीङ्+क्त । अधिक जिमादा) अतिक्रान्त.

अतिशयित, (त्रि०) अति+शी+क्त) लांघ गया.

अतिशयिन्, (त्रि०) अति+शी+इनि । उत्कृष्ट । बढ़िया । बहुत उंदा । मुख्य.

अतिशयोक्ति, (स्त्री०) अतिशयेन उक्तिः निर्देशः, वच्+क्तिन् । अलंकारशास्त्रमें प्रसिद्ध अर्थालंकारका भेद । सा. द. १० परि.

अतिशस्त्र, (त्रि०) अतिक्रान्तः शस्त्रम् । शस्त्रको लांघ गया । नखूनोंका घाव.

अतिशायनं, (न०) अति+शीङ्+ल्युट् । अतिशायने "इष्टन्" पा० सूत्रनिर्देशात् नि० दीर्घः । आधिक्य (जिआदती) प्रकर्ष.

अतिशायिन्, (त्रि०) शी-णिनि । लांघनेवाला.

अतिशी, अ० आ० । लांघना । पार होजाना । (णिचि शाययति) लांघजाना.

अतिशीत, (न०) अतिशयितं शीतं प्रा० स० । बहुत ठंडा स्पर्श । जो छूनेसे बहुत ठण्डा लगे (त्रि०).

अतिशोभन, (त्रि०) अति+शुभ्+ल्यु । जिसकी शोभा बहुत हो, श्रेष्ठ.

अतिश्रेयसिः, (पु०) श्रेयसीं अतिक्रान्तः । बहुत उत्कृष्ट (उंदा) स्त्रीसे भी अच्छा (सुन्दर).

अतिश्व, (त्रि०) अतिक्रान्तः श्वानम् । कुत्तेसे भी बढकर शक्तिवाला (शूकर आदि).

अतिश्वन्, (पु०) बहुत उत्कृष्ट कुत्ता.

अतिष्ठ, भ्वा० प० । लांघजाना पार होना ।–ष्ठा (स्था-क्विप्–षत्वम्) उत्कृष्टता । उत्तमता । वत्–वन् । सबके सिरपर ठहरना.

अतिसक्ति, (स्त्री०) अति–सञ्ज्–क्तिन् । निकट सम्बन्ध । निकटता । बहुत आसक्ति.

अतिसन्धा, जुहो० उभ० । ठगना । वञ्चना करना । "कथं मया ब्रह्मबन्धुरतिसन्धेयः" विक्रम.

अतिसन्धानम्, (न०) अति+सम्+धा+ल्युट्) वञ्चना करना । ठगना.

अतिसन्ध्या, (त्रि०) अत्यासन्ना सन्ध्या प्रा० स० । एक घडीरातसे लेसूर्य निकलनेतक, एवं सूर्य छिपनेसे ले एक घडी रातके गयेतक संध्याका समय (दोनो समयका मिलना) है उसके समीपका समय.

अतिसर, (त्रि०) अति+सृ+अप् । जो आगे निकल जाता है । मुखिया । अग्रगामी.

अतिसर्ग, (पु०) अति+सृज्+घञ् । देना "जो चाहो सो करो" इस प्रकार अपनी इच्छाके अनुसार प्रेरणा करना । सृष्टिको लांघ गया (त्रि०).

अतिसर्जन, (न०) अति+सृज्+ल्युट् । देना-माना-ठगना.

अतिसर्पणम्, (न०) अति+सृप्+ल्युट् । भयानक गति । गर्भमें बालकका सर्पण (सरकना).

अतिसर्व, (त्रि०) अतिक्रान्तः सर्वम् अत्या० स० । सबको लांघ जानेहारा । सबके ऊपर ।–र्वः (पु०) परमेश्वर । "अतिसर्वाय शर्वाय" मुग्ध.

अतिसान्तपनम्, (न०) एक प्रकारकी कठिन तपस्या.

अतिसाम्या, (स्त्री०) अत्यन्तं साम्यं मधुना अस्याः । जो शहतके बहुत समान हो । मधुयष्टि (मुलट्ठी) नाम एक पोदा । वृक्ष.

अतिसायम्, (अव्य०) अत्यासन्नं सायं प्रा० स० । सूर्यके अस्त होनेका समय सायं है उसके निकटका काल.

अति(ती)सार, (पु०) अतिशयेन सारयति रेचयति अति+सृ+णिच्+अच् । बहुत पिघलेहुए मलको निकालनेहारा पेटका रोग (संग्रहनी).

अति(ती)सारकिन्, (त्रि०) अतिसारो रोगोऽस्यास्तीति । अतिसार+इनि+कुक्च । अतिसाररोगवाला.

अतिसांवत्सर, (त्रि०) एक वर्षसे बढा हुआ.

अतिसृ, स्वा० प० । Ved बढजाना । निकलना.

अतिसृज्, तुदा० प० । देना । भेटा करना.

अतिसृष्ट, (त्रि०) अति+सृज्+क्त । दियागया, भेजागया.

अतिसौरभ, (पु०) सुरभेर्भावः, अतिशयितं तदस्य ब० । बहुत सुगन्धिवाला आँम । सुगन्धिवाली कोई चीज.

अतिसौहित्यम्, (न०) बहुत भोजन कर लेना.

अतिस्नेहः, (पु०) बहुत प्यार.

अतिस्पर्श, (त्रि०) जो उदार न हो । कृपण । सूम ।–र्शः । उच्चारणकालमें जिह्वा और तालुका बहुत थोडा स्पर्श होना.

अतिहस्तयति, नामधा० प० । अतिहस्त णि । हाथोंका फैलाना । हस्तिना अतिक्रामति । हाथीपर चढके पार होजाना.

अती, (अति–इ) अदा० प० । पार होना । निकल जाना । (समय वा देश) लांघ जाना.

अतीत, (त्रि०) अति+इण्+क्त । अतिक्रम्य गतः । बीत-गया, भूतकाल, भूतकालका पदार्थ.

अतीन्द्रिय, (त्रि०) अतिक्रान्तं इन्द्रियं तद्विषयत्वात् अत्या० स० । इन्द्रियोंके अयोग्य-अप्रत्यक्ष । आँख, कान, नासिका, रसना, त्वक् और चित्त इन्द्रियें हैं इन सबसे जिस विषयको जाना न जाय.

अतीव, (अव्य०) बहु । अत्यन्त । अतिशय.

अतुल, (त्रि०) तुल्+णिच्–अ तुला साम्यं नास्ति यस्य ब० । उपमाशून्य । बहुत शोभासे भराहुआ । तिलवृक्ष (पु०).

अतुल्य, (त्रि०) तुलां सादृश्यं अर्हति । तुला+यत्–न० त० । जिसकी उपमा न होसके । बहुत सुन्दरतावाला.

अतुषार, (त्रि०) जो शीत (ठण्डा) न हो.

अतूतुजि, (त्रि०) न तुज् कि द्विलदीर्घे । अदाता । न देनेवाला । जो उदार न हो.

अतूर्त, (त्रि०) न तूर्यते, तुर्–हिंसायाम् । Ved न रोका गया । न ठहराया गया । न मारा गया ।–र्तं (न०) असीम देश । आकाश.

अतृणादः, (पु०) न तृणं अत्ति, अद्–अण् । घास नहीं खाता है । नया जन्मा वत्स (वछेरा).

अतृण्या, (स्त्री०) न० त० । तृण (घास) की अल्प राशि.

अतृदिल, (त्रि०) न तृद्यते वध्यते, तृद्–Ved किलच् । स्थिर (पक्का) । कठिन (पर्वतके समान).

अतृप्ति, (स्त्री०) तृप्+क्तिन् अत्यन्ताभावार्थे न० त० । तृप्तिका न होना ब० । तृप्तिरहित । असन्तोषी । लोभी (त्रि०).

अतोऽर्थं, निमित्तम् (अव्य०) इस हेतुसे । इस लिये । इस कारण.

अत्कः, (पु०) अतति गच्छति सततं विकृतिं, पन्थानं प्रभृति । अत्+कन्+कित्त्वं । पथिक । मुसाफिर । शरीरका अङ्ग । Ved जल । विद्युत (बिजली) परिच्छद (पौ-शाक) कवच.

अतट, मारना । भ्वा० आत्म० सक० सेट् । अट्टते । आट्टिष्ट । णिचि अट्टयति-ते । आट्टित्-त.

अत्ता, (स्त्री०) अतति संवध्नाति अत्-तक् इडभावः । माता-सास । (इसका व्यवहार नाट्यमें होता है) स्वार्थे के कापि अतइत्वे । अत्तिका (इसी अर्थमें).

अत्तिः-अत्तिका, (स्त्री०) अत्यते सर्वदा संवध्यते, कर्मणि क्तिन् । ज्येष्ठ भगिनी । बडी बहिन.

अत्रम्, (न०) अतति जयपराजयौ अत्र, अत् न उणा० । जीत वा हारको पाता है यहां । युद्ध । लडाई.

अत्यग्निष्टोम, (पु०) अतिक्रान्तः अग्निष्टोमं अधिक फल-दलात् । ज्योतिष्टोम यज्ञका ऐच्छिक दूसरा भाग.

अत्यङ्कुश, (त्रि०) अङ्कुशं अतिक्रान्तः । अङ्कुशसे वश न होनेहारा । काबूमें न रहनेहारा । स्वतन्त्र.

अत्यध्वन्, (पु०) अतिक्रान्तः अध्वानम् । लंबी और विश्रान्त कर देनेहारी यात्रा (सफर).

अत्यन्त, (न०) अतिक्रान्तोऽन्तं सीमां अत्या० स० । अतिशय-बहुत, कोई वस्तु जो बहुत है । प्रत्येक परिमा-णसे बाहिर (त्रि०) अतिक्रमेऽव्ययी० । मापसे बा-हिर, नाशसे बाहिर.

अत्यन्तकोपन, (त्रि०) अत्यन्तं कुप्यति, अत्यन्त+कुप्+ ल्यु, २ त० स० । जिसका स्वभाव बड़ा ही क्रोधी हो। अत्यन्तकोपशाली.

अत्यन्तगामिन्, (त्रि०) अत्यन्तं अन्तात्ययं गच्छति, अति+अन्त-अत्यये अव्ययीभावः ततः गम्+णिनि । बहु-तही समयतक रहनेहारा । जिसका स्वभाव बहुतही चलनेका हो । बहुत जानेहारा । स्त्रियां ङीप् । अत्यन्त-गामिनी । बहुत जानेहारी.

अत्यन्तसम्पर्क, (पु०) बहुतही विषयप्रीति.

अत्यन्तसंयोग, (पु०) अत्यन्तेन साकल्येन संयोगः स-म्बन्धः व्याप्तिरिति यावत् । अन्तं अवसानं अतिक्रान्तः संयोगो वा, अत्यन्तं+सम्+युज्+घञ् । पूर्ण प्रकारसे स-म्बन्ध । पूरे तौरपर आपसमें मिलना जैसे व्याप्तिस-म्बन्ध है । धूमका सम्बन्ध सकल प्रकारसे अग्निके साथ है, क्योंकि जहां धूम है वहां वह्निका स्वीकार करना होगा ऐसे दृढ सम्बन्धको अत्यन्तसंयोग कहेंगे.

अत्यन्ताभाव, (पु०) अत्यन्तः नित्यः अभावः कर्म० सदा न होना "नहींहै" ऐसा कहेजानेपर नाशप्रागभा-व (पहिले था, वा आगे होगा,) से भिन्न किसी भूतलवि-शेषपर किसी वस्तुका न होना । बिल्कुल न होना, जैसे वन्ध्याके पुत्रका अत्यन्ताभाव है, पृथिवीपर घट नहीं ऐसा कहनेपर न्यायमतमें पृथिवीपर घटका अभाव (न होना) प्रतीत होताहै, वह अभाव नाश किंवा प्रागभाव नहीं होसक्ता । क्योंकी नाश और प्रागभावको अत्यन्तता नहीं, कारणकी विरोधी कालमें वे नहीं रहते.

अत्यन्तिक, (त्रि०) अत्यन्तं गच्छति । अत्यन्त+ठन् ठस्येकः अतिशयितगतिकारी । बहुतहीं चलनेहारा । बहु-तकालतक रहनेहारा.

अत्यन्तीन, (त्रि०) अन्तस्य अत्ययः अत्यन्तं, अत्यये अव्य० । अत्यन्तं गामी, अत्यन्त+ख । अतिशयितगतिशी-ल । देरतक रहनेहारा.

अत्यम्ल, (पु०) अतिशयितोऽम्लो रसः फलपत्रादौ यस्य ब० । तेतुल नामी तिन्तिडीका वृक्ष । कोई वस्तु (खट्टी-चीज) जो खट्टे रसवाली हो (त्रि०) । बनवीजपुर (टालालेवु) नामी वृक्ष (स्त्री०).

अत्यम्लपर्णी, (स्त्री०) अत्यम्लं पर्णं यस्याः । जातित्वात् ङीष् । बडे खट्टे पत्तोंवाला बनवीजपुर नामी वृक्ष जिसकी प्रसिद्धि टालालेवु नामसे है.

अत्यय, (पु०) इ-अच् । व्यतीत होजाना । गुजरना । नाश होना । मृत्यु । हानि । भय.

अत्यय, (पु०) अति+इण्+अच् । आज्ञाका न मानना । न होना । होकर न रहना (नष्ट होजाना) दोष । कठिन । बलसे व्यवहार करना । मृत्यु । होनेहारे कामका न होना (विगडजाना).

अत्यर्थ, (न०) अतिक्रान्तमर्थमनुरूपं स्वरूपं अत्या० स० । अतिशय । बहुत । अर्थका न होना (अव्य०) । जो कुछ बहुत हो (त्रि०).

अत्यल्प, (स्त्री०) अतिशयितोल्पः प्रा० स० । बहुत थोड़ा । बहुत छोटा (महीन).

अत्यष्टि, (स्त्री०) अतिक्रान्ता अष्टिं षोडशाक्षरपादिकां वृत्तिं अत्या० स० । वह छन्द जिसका प्रत्येक पाद सोलह अक्षरोंसे अधिक अर्थात् सत्रहका हो । छन्दोभेद.

अत्यह, (त्रि०) अतिक्रान्तं अहः । दिनके आगे जानेहारा । दिनसे अधिक व्यतीत हुआ.

अत्याकार, (पु०) अतिशयेन आकारः तिरस्कारः । प्रा० स० । अति+आक्र+घञ् । तिरस्कार । निरादर । अति-शयित आकारो मूर्तिः यस्य प्रा० स० । जिसका शरीर बडा हो (त्रि०).

अत्यागिन्, (त्रि०) त्यज्+घिनुण्, नञ् त० । कर्मफल-की इच्छा वाला कामका अनुष्ठान करनेहारा । जो त्यागीसे भिन्न हो अर्थात् ग्राहक.

अत्याचार, (पु०) अत्युत्कट आचारः, आ+चर्+घञ् प्रा० स० । वह काम करना जो उचित नहीं । अतिक्रमे अव्य० । आज्ञाका न मानना । शास्त्रीय नियमोंको तोड जाना.

अत्यादित्य, (त्रि॰) आदित्यं अतिक्रान्तः (प्रा॰ स॰)। सूर्यकी ज्योतिको लांघनेहारा.

अत्याधान, (न॰) अति+आ+धा+ल्युट्। नियमको तोडना। प्रत्येक प्रकारका सम्बन्ध। ऊपर धरना। नियमविरुद्ध अभिस्थापन.

अत्यानन्द, (पु॰) अतिक्रान्तः आनन्दम्। द्वि॰ ल॰। बहुतही खुशी (आनन्द).

अत्याय, (त्रि॰) इ or अय्-घञ्। लांघनेहारा।-यः (पु॰) लांघना। उपद्रव (जुल्म) करना। अधिक। बहुत लाभ.

अत्यायु, (न॰) अति आ या कु। एक प्रकारका यज्ञसम्बन्धी पात्र.

अत्यारूढ, (त्रि॰) अति-आ-रुह्-क्त। बहुत बढा हुआ.

अत्याल, (पु॰) अतिशयेन समन्तात् अलति पर्याप्नोति, अति+आ+अल्+अच्। (लाल चिता इति ख्यात रक्तचित्रक वृक्ष) यह वृक्ष थोड़ेही कालमें चारों ओर फैल जाताहै.

अत्याश्रम, (त्रि॰) अतिक्रान्त आश्रमान् तद्विहितधर्मान् अत्या॰ स॰। सब आश्रमोंको छोडनेहारा पांचवें आश्रमका संन्यासी। ("अत्याश्रमी भी इस अर्थमें होताहै")। अतिशयित आश्रमः प्रा॰ स॰। सबसे अच्छा आश्रम संन्यास (पु॰).

अत्यास, (पु॰) अति+अस्+घञ्। व्यतीत होने देना। सं (द्वितीयैकवचने णमुल्) दो दिनके अवकाशके अनन्तर.

अत्याहित, (न॰) अत्यन्तं आधीयते तन्निवारणार्थं मनो दीयते यस्मिन् आ+ धा+क्त। बडा भय। ऐसी विपत्ति कि जिसमें प्राण जानेकी शंका हो.

अत्युक्ति, (स्त्री॰) अतिशयेन अनौचित्येन वा उक्तिः अति+वच्+क्तिन्। बढकर कहना। अन्यायका वचन। गुणहीन जनको गुणवान् मानकर स्तुति करना। किसी जीवकी झूठी तारीफ करना.

अत्युक्था, (स्त्री॰) उक्थ एकाक्षरपादिका वृत्तिः तां अतिक्रान्ता अत्या॰ स॰। एक प्रकारका छन्द जिसके प्रत्येक पादमें दो २ अक्षर हों। उक्थनामक सामभेदको बिगाडकर गानेहारा (त्रि॰).

अत्युपध, (त्रि॰) उपधां अतिक्रान्तः। अपराधके आगे। विश्वासी। परीक्षित.

अत्यूह, (पु॰) अतिशयेन ऊहते शब्दायते अति+ऊह्+अच्। गरुड (नीलकण्ठ)। डेओ इस नामसे प्रसिद्ध दात्यूह पक्षी। अतिशयेन ऊहस्तर्कः प्रा॰ स॰। बडी बहिस (अतिशयतर्क) "नील" नामी औषध। अतिक्रमेऽव्ययीभावः। तर्कसे बाहिर.

अत्र, (अव्य॰) वा इदम्+एतद् वा सप्तम्यास्त्रल् प्रकृतेरन्भावश्च। इसमें। यहां.

अत्रत्य, (त्रि॰) अत्र भवः जातः एतत्स्थानसंबद्धो वा। अत्र-त्यप्। यहांके रहनेहारा। यहांका.

अत्रप, (त्रि॰) नास्ति त्रपा लज्जा अस्य न॰ ब॰। निर्लज्ज (बेशरम)। अविनीत.

अत्रभवत्, (त्रि॰) इदम्+एतद् वा प्रथमायास्त्रल्। पूजनेयोग्य अर्थ। सराहनेलायक। प्रशंसाके योग्य (यह शब्द प्रत्यक्ष व्यक्तिके लिये निर्दिष्ट होताहै)। स्त्रियां ङीप्। अत्रभवती। प्रशंसाके योग्य स्त्री.

अत्रस्त-अत्रास-स्नु (त्रि॰) न॰ त॰। न डरा हुआ। निर्भय.

अत्रि, (पु॰) अद्+त्रिन्। सात ऋषियोंमें एक मुनिविशेष। (अत्र पक्षे वा तलोपे अत्रिरित्यपि) तीनोंसे भिन्न (त्रि॰) बहुवचनान्तः.

अत्रिजात, (पु॰) अत्रेर्नेत्रात् जातः। जन्+क्त ५ त॰। चांद। सन्तानके लिये तपस्या करतेहुए अत्रिके नेत्रसे निकलाथा.

अत्तृ, (त्रि॰) अद्+तृच्। खानेवाला। भक्षक.

अथ, (अव्य॰) थु॰ अर्थ+ड पृषो॰ रलोपः। निरन्तर। मङ्गल। प्रश्न। संशय। आरम्भ। विकल्प। पक्षान्तर। इसका अर्थ मंगल तो नहिं किन्तु और २ अर्थोमें प्रयोग कियागया भी श्रुतिद्वारा मंगलका साधन होताहै.

अथकिम्, (अव्य॰) अथ+कायतेः कवतेर्वा डिमु। स्वीकार। मंजूर-हां.

अथर्वन्, (पु॰) अथ+ऋ+वनिप्। अथर्व नामक मुनिविशेष। उस मुनिद्वारा देखाजानेके कारण चौथा वेद.

अथर्वविद्, (पु॰) अथर्ववेदं तदुक्तं कर्म वा वेत्ति। विद् क्विप् "शं नो देवीरभिष्टये" इत्यादि अथर्ववेदको, अथवा उसमें विधान किये गये अभिचार (शत्रूका मारना उच्चाटना) आदि कर्मको जानेहारा वशिष्ठादि मुनि.

अथवा, (अव्य॰) अथ+वा क्विप्। पक्षान्तर। वा। या.

अथो, (अव्य॰) अर्थ+डो पृषो॰ रलोपः। अथशब्दका अर्थ आरम्भ आदि.

अद्, बांधना-भ्वा॰पर॰इदित् सक॰ सेट्। अन्दति। आन्दीत्.

अद्, खाना, बचाना। अदा॰ पर॰ सक॰ अनिट्। अत्ति। अघसत्। जघास। अत्ता। अत्स्यति। सनि जिघत्सति.

अद्, (अव्य॰) अद्+क्विप्। आश्चर्य.

अदंष्ट्र, (त्रि॰) न॰ ब॰। दन्तरहित। जिसके दांत न हों।-ष्ट्रः। वह सांप जिसके दांत न हों वा निकाले गये हों.

अदक्षिण, (त्रि॰) न॰ त॰। न दहिना। वाम। बाँआ। न॰ ब॰। दक्षिणारहित (यज्ञादि)। सीधासाधा। प्रतिकूल। जिसका मन निर्बल हो.

अदण्ड्य, (त्रि॰) न॰ ब॰। जो दण्ड देने योग्य नहीं.

अदत्तपूर्वा, (स्त्री॰) पूर्वं न दत्ता न॰ त॰। जो पहिले न दी गई हो। जिसकी मंगनी पहिले न हुई हो.

अदत्ता, (स्त्री०) न दा+क्त । न विवाही गई स्त्री० । अदत्तमात्र (त्रि०) न दी हुई चीज । नाममात्रसे दियागया, देकर भी फिर लेने योग्य (त्रि०).

अदत्तादायिन्, (त्रि०) अदत्तं आदत्ते । आ+दा+णिनि । चोर.

अदत्र, (त्रि०) अद् अत्रन् । Ved भक्षणीय । खानेलायक.

अदभ्र, (त्रि०) दम्भ्+रक्, दभ्रं अल्पं न० त० । बहुत "अदभ्रदर्भामधिशय्य स स्थलीं" इति भारविः.

अदर्शन, (त्रि०) दृश्+भावे ल्युट् न० ब० । दर्शनायोग्य । देखनेमें नहीं आसक्ता । इन्द्रियोंसे बाहिर । नाश । व्याकरणशास्त्रमें परिभाषा किया गया लोप । अव्ययी० । दर्शनका न होना.

अदल, (पु०) दल्यते भिद्यत इति दलं पत्रम् । दल्+कर्मणि घञ् न० ब० । पत्तेके बिना । हिजल नामी वृक्ष । ऐसा वृक्ष जिसमें पत्ते न लगें (त्रि०) । घृतकुमारी (स्त्री०).

अदस्, (त्रि०) न दस्यते उत्क्षिप्यतेऽङ्गुलिर्यत्र । न दस्+क्विप् । जो वस्तु सामने नहीं । परोक्ष जानीगई चीज । अपुरोवर्ती.

अदान, (त्रि०) नास्ति दानं यस्य न० ब० । अदाता । न देनेवाला । कृपण । जिसकी मस्ती नहीं निकलती.

अदाय, (त्रि०) नास्ति दायः यस्य । जिसका दाय (विरसा) न हो.

अदायिक, (त्रि०)-की (स्त्री०) दायं अर्हति । दाय-ठक् न० ब० । जिसको दाय (विरसा) देना योग्य नहीं.

अदारः, (पु०) न० ब० । स्त्रीरहित । रएज । कुआरा न० त० । न फाडना । न हानि पहुंचाना.

अदाह्य, (पु०) दग्धुमशक्यं दह्+ण्यत् न० त० । आकार-(स्वरूप) रहित होनेसे दाहके अयोग्य (जो जल नहीं सक्ता०) । परमात्मा । दाहके अयोग्य कोई महारोगी आदि (त्रि०).

अदिति-ती, (स्त्री०) न+दा+डिति वा ङीष् । दातुं छेत्तुं अयोग्यायां भुवि । काटी न जानेहारी पृथिवी । दैत्योंकी माताका नाम "दिति" (ती) है । यहां न० त० । होनेसे देवताओंकी माता । दक्षप्रजापतिकी कन्या । कश्यपकी स्त्री । पुनर्वसु नक्षत्र (तारा) जिसकी देवता अदिति (ती) मानी गई है । दो+क्तिन् । दितिः खण्डस्तद्रहितः । विभागके बिना (त्रि०).

अदितिज, (पु०) अदितेर्जायते जन्+ड ५ त० । देवता.

अदीन, (त्रि०) दी+क्त न० त० । जो कायर न हो । उदार खुलादिल.

अदीर्घ, (त्रि०) न दीर्घः न० त० । न लम्बा ।-सूत्र,-सूत्रिन् (त्रि०) न दीर्घं सूत्रं सूत्रवत् विस्तारो यस्य । सूतकी भांति फैलाव न करनेवाला शीघ्रकारी । काममें फुर्तीला.

अदृश्य, (त्रि०) न० त० । अव्यक्त । न देखने योग्य.

अदृष्ट, (न०) दृश्+क्त न० त० । न देखागया । पुण्य और पापरूप भाग्य (इन्द्रियोंसे तो यह प्रत्यक्ष नहिं होता इसलिये अदृष्ट संज्ञा है) । भयआदि (अदृष्टहेतुक).

अदृष्टकर्मा, (त्रि०) न दृष्टं कर्म येन न० ब० । जिसनें काम देखा नहीं । किसी काममें अनजान.

अदृष्टपूर्व, (त्रि०) न पूर्वं दृष्टः । सह सुपेति समासे परनिपातः । जिसे पहिले नहीं देखा । नया देखागया.

अदृष्टहन्, (त्रि०) अदृष्टं हन्ति । विषमय (जहरीले) कीडोंको नाश करनेवाला.

अदृष्टि, (स्त्री०) विरुद्धा दृष्टिः । विरोधार्थे न० त० । दयारहित देखना । क्रोधके साथ टेढा देखना । न देखना ब० । जिसकी नजर न हो (त्रि०).

अदेय, (त्रि०) न दातुं योग्यम् । न-दा-यत् । जो दिया नहीं जा सक्ता वा देना न चाहिये.

अदेवत्र, (त्रि०) न देवाः त्रायन्ते प्रीयन्ते अनेन, त्रै-करणे क । जिस (अनादि) से देवता प्रसन्न नहीं किये गयेहों.

अदेवयत्-यु, (त्रि०) न देवं याति प्राप्नोति । जो देवताको नहीं मिलता (प्रार्थना करनेसे).

अदेश, न० त० । अनुचित स्थान । बुरा देश.

अदेश्य, (त्रि०) न० त० । न देष्टुं योग्यः । आज्ञा देनेके अयोग्य । न सूचना करने लायक । न सताने लायक.

अदैन्य, (त्रि०) नास्ति दैन्यं दीनभावः यस्य । जो दीन (आजिज) नहीं होता । स्वाभिमानी.

अदैव, (त्रि०) देवता वा भाग्यसे पहिले निश्चय न किया गया । वैश्वदेवभोजनरहित । जो स्वर्गीय न हो.

अदोष, (त्रि०) नास्ति दोषः यस्य । न० ब० । दोषरहित । निष्पाप । बेगुनाह.

अद्मः, (पु०) अद्यते देवैः, अद्-कर्मणि गन् । जो देवताओंसे खाया जाता है । यज्ञकी बलि । पुरोडाश.

अद्धा, (अव्य०) अत्यते अत् तां, सन्ततगमनं, ज्ञानं वा ज्ञानं दधाति क्विप् । सचाई । सत्यता । सामने । साफ । निश्चय । बहुत । अचानक.

अद्भुत, (न०) अततीत्यत् अव्ययं आकस्मिकार्थे । तथा भाति भा+डुतच् । उल्कापात आदि जो अचानकही होजाताहै । अलङ्कारशास्त्रमें प्रसिद्ध नव रसोंके बीचमें एक रस, जिसका स्थायिभाव विस्मय है.

अद्भुतस्वन, (पु०) अद्भुतः स्वनो यस्य, स्वन्+अच् ब० । महादेव । आश्चर्यशब्द । आश्चर्यशब्दवाला (त्रि०).

अद्मनिः, (पु०) अत्ति-सर्वान् अद्-मनिन्-उणा० (अदेर्मुट्च्) । सबको खालेता है । अग्नि । आग.

अद्मर, (त्रि०) अत्तुं शीलं अस्य अद्-कर्तरि क्मर। खानेके स्वभाववाला। खाऊ.

अद्य, (अव्य०) अस्मिन्नहनि इदम्शब्दस्य निपातः सप्तम्यर्थे। आजका दिन। आजसे लेकर.

अद्यतन, (त्रि०) अद्यभवः, अद्य+ट्युटुडागमश्च। आजकी वस्तु। स्त्रियां ङीप्। अद्यतनी। आजवाली चीज.

अद्यत्वे, (अव्य०) इदम्शब्दस्य इदानीमित्यर्थे निपातः। अव.

अद्यश्वीना, (स्त्री०) अद्य श्वः परदिने वा प्रसोष्यते। अद्य+श्वस्+खटिलोपः। आज वा कल जानेगी। वह गर्भवती स्त्री कि जिसका प्रसव निकट आरहाहो.

अद्रव्यं, (न०) न० त०। न द्रव्यम्। निमूल्यवस्तु। नाचीज। निष्प्रयोजन पदार्थ। निकम्मी चीज.

अद्रि, (पु०) अद्+क्रिन्। पर्वत। वृक्ष। सूर्य। एक प्रकारका माप.

अद्रिकर्णी, (स्त्री०) अद्रिः अद्रिनामका गिरिवालमूषिका तस्याः कर्णः कर्णतुल्यं पत्रं यस्याः। गौरादित्वात् ङीष्। वालमूषिकाके समान पत्तोंवाली अपराजिता नाम एक बेल.

अद्रिकीला, (स्त्री०) अद्रयः कुलाचलाः कीलाः शङ्कव इव यस्याः ब०। बडे २ पर्वत जिसके मानों कील हैं। पृथिवी.

अद्रिज, (न०) अद्रौ जायते जन्+ड ७ त०। शिलाजतु इस नामसे प्रसिद्ध गन्धद्रव्य। गेरी नामसे प्रसिद्ध द्रव्य। जो कुछ पहाडपर उत्पन्न हो.

अद्रितनया, (स्त्री०) अद्रेर्हिमाचलस्य तनया। पार्वती.

अद्रिभित्-द्, (पु०) अद्रिं भिनत्ति भिद्+क्विप् ६ त०। इन्द्र। पर्वतोंको काटनेहारा.

अद्रिभू, (स्त्री०) अद्रावपि भवति भू+क्विप् ७ त०। अपराजितानामी वेल (यह पर्वतपर उत्पन्न होती है).

अद्रिराज्, (पु०) अद्रीणां राजा टच् समा०। हिमालय पर्वत.

अद्रिसार, (पु०) अद्रेः सार इव लोहा। जो पत्थरके समान दृढ हो.

अद्रीश, (पु०) अद्रीणां अद्रेर्वा ईशः ६ त०। हिमालय, शिव, पर्वतका स्वामी.

अद्वय, (न०) द्ववयवं नचा ब०। सजातीय (अपने समान) विजातीय (अपनेसे विरुद्ध) स्वगत (अपनेमें भेद जैसे वृक्षका पत्र फूल फलके साथ) भेदशून्य परब्रह्म। अपने समान दूसरेके विना। कोई वस्तु जो दोनोंसे शून्य हो (त्रि०) जिसके मतमें दो न हो। बुद्धभेद (पु०).

अद्वयवादिन्, (पु०) अद्वयं वदति। वद्+णिनि। सर्वही चैतन्यस्वरूप है, इस्से भिन्न कुछ नहीं ऐसा बोलनेवाला अद्वैतवादी (एकविन दूसरी वस्तु न माननेवाला) वेदान्तशास्त्रको माननेहारा। वाहिर अर्थके अभावसे सम्पूर्ण वस्तुज्ञान स्वरूपस्वीकार करनेहारा बौद्ध। स्त्रियां ङीप्।-वादिनी.

अद्वयाविन्, (त्रि०) अद्वयं अस्त्यर्थे विनिः छन्दसि दीर्घः। दो (देव और पितृयान) मार्गोंसे रहित.

अद्वयु, (त्रि०) द्वयं द्विप्रकारः अस्ति अस्य वा-उ। न० ब०। द्वैत (दो प्रकार) से रहित। भीतर और बाहिरसे समरूप (एकरूप).

अद्वितीय, (त्रि०) न द्वितीयः सदृशो यस्य न० ब०। अपने समान दूसरेके बिना। केवल। एक परमात्मा। ब०.

अद्विषेण्य, (त्रि०) न० त०। न द्विष् एण्य। न विरोध करने लायक.

अद्वेषस्, (त्रि०) द्विष् असुन्। न० त०। द्वेष (वैर) रहित। ष० पु०। वैर न करना.

अद्वैत, (त्रि०) द्विधा इतं भेदं गतं द्वीतं तस्य भावः द्वैतं तन्नास्ति यस्य ब०। सजातीयादि भेदशून्य केवल परमात्मा.

अद्वैतवादिन्, (त्रि०) अद्वैतं सर्वं एव चिदात्मकं वदतीति, वद्+णिनि। जो कुछ है सबी चैतन्यस्वरूप है ऐसा बोलनेहारा। सीपीमें चांदी, और रस्सीमें जैसे साँपकी प्रतीति होती है और उनके यथार्थ ज्ञान होनेपर जैसे चांदी और साँपकी बुद्धि निवृत्त होजातीहै, वैसेही यह चराचर प्रपञ्च चैतन्य आत्मामें प्रतीत हो रहाहै, और चैतन्य आत्माके यथार्थ ज्ञान होनेपर सम्पूर्ण बाह्य आडम्बर निवृत्त होजाताहै, इस प्रकार कथन कहनेहारा वेदान्ती। बुद्धविशेष (जो संपूर्ण बाहिरकी वस्तुओंको ज्ञानस्वरूप स्वीकार करता है).

अधःक्षिप्त, (त्रि०) अधोमुखेन क्षिप्तम्, क्षिप्+क्त शाक० त०। नीचे मुखके भार रक्खा गया। झुकाया गया। औंधे मुँ किया गया। नीचे रक्खा गया.

अधन, (त्रि०) नास्ति धनं स्वाधीनतया यथेष्टं उपयोक्तुं यस्य ब०। भार्या, पुत्र, दास आदिके पास धन होनेपर भी वे उस धनको अपनी इच्छापूर्वक अपने स्वामीकी आज्ञाविन भोग नहीं सक्ते, क्योंकि वे जो कुछ लाभ करते हैं वह उनके स्वामीका है इसलिये वे तीनों निर्धन हैं। धनरहित। जिसके पास थोडा धन हो। "भार्या पुत्रश्च दासश्च त्रय एवाधनाः स्मृताः। यत्ते समधिगच्छन्ति यस्यैते तस्य तद्धनम्" इति स्मृतिवचनम्.

अधन्य, (त्रि०) न धन्यः न० त०। दुःखी। दैवहतक। नाखुश। क्लेशमें पडा हुआ.

अधःपुष्पी, (स्त्री०) अधोमुखानि पुष्पाणि अस्याः, जातित्वात् ङीष्। झुल्का नामसे प्रसिद्ध अवाक्पुष्पी वृक्ष.

अधम, (त्रि०) अव+अम धादेशः अधोभवः अधस्+मः, अन्त्यलोपो वा। कुत्सित। निन्दाके योग्य। नीच। बुरेकाम करनेहारा.

अधमर्ण, (त्रि०) अवश्य देयं ऋणं तत् अधमं शोध्यं यस्य ब० । ऋण लेनेहारा । कर्जा उठानेहारा । कर्जाई.

अधमाङ्ग, (न०) अधमं अङ्गं कर्म० । चरण । पाँव । पाद.

अधर, (पु०) न ध्रियते, धृङ्+अच् न० त० । ऊपर वा नीचेका ओठ (होठ) । पृथिवीके साथ न मिला हुआ । नीचे । तल (त्रि०).

अधरात्, (अव्य०) अधस्+प्रथमायाः पञ्चम्याः सप्तम्या वा आति अन्त्यलोपः । नीचेका भाग । नीचेसे.

अधरेण, (अव्य०) अधरस्मिन् देशे, काले, दिशि वा अधर+एनप् नीचे । पश्चिम दिशा.

अधरेद्युस्, (अव्य०) अधरस्मिन्नह्नि, अधर+एद्युस् । परदिन । परसों जो आवेगा.

अधरोत्तर, (त्रि०) अधरः-उत्तरश्च । स० द्वं० । उत्कृष्ट और निकृष्ट । नीचे और ऊपर । छोटा बडा । बुरा और अच्छा । अधरं च तत् उत्तरम् । कर्म० । दुष्ट (बुरा) उत्तर.

अधरोष्ठ, (पु०) अधर ओष्ठः । कर्म० । नीचेका होठ.

अधर्म, (पु०) ध्रियतेऽनेन, धृ+मनिन्, विरोधे न० न० । धर्मका विरोधी वेदद्वारा निषेध किये गये कामसे उत्पन्न हुआ पाप । जीवोंको मारना । पुण्यरूप धर्मसे शून्य (त्रि०) गुण किंवा धर्मसे रहित परब्रह्म (न०).

अधःशय्या, (स्त्री०) शीङ्+क्यप् शय्या ७ त० । पृथिवीपर लोटना, भूमिशयन.

अधश्चरः, (पु०) अधःकर्मणि स्तेयादौ चरतीति चर्+ट । चोर । नीचस्थानमें जानेहारा (त्रि०) स्त्रियां ङीप्.

अधस्, (अव्य०) अधर+असि, अधरशब्दस्थाने अधादेशश्च । पाताल । कोई स्थान जो नीचे हो । अर्थवशसे प्रथमा पञ्चमी और सप्तमी विभक्तिके अर्थसी अनुमान किये जाते हैं.

अधस्तात्, (अव्य०) अधर+अस्ताति । अधःशब्दकी भांति नीचेका अर्थ.

अधि, (अव्य०) न+धा+कि । अधिकार । ऐश्वर्य । हक । ज्यादती । आधीयते दुःखमनेनेति आ+धा+किंवा ह्रस्व । मनकी पीडा (पु०).

अधिक, (त्रि०) अधि+क । ज्यादा । अनेक । अर्थालंकारभेद.

अधिकरण, (न०) अधि+कृ+ल्युट् । आश्रय (जैसे न्यायाधिकरण) व्याकरणशास्त्रमें प्रसिद्धकर्ता और कर्मद्वारा क्रियाका आश्रय अधिकरण नाम कारक (अर्थात् सप्तमी विभक्ति) जैसे "गेहे स्थाल्यामन्नं पचति" इत्यादि उदाहरणमें घर कर्ताद्वारा, और थाली कर्मद्वारा, परम्परासे पकानारूप क्रियाका आश्रय है । "अधिक्रियते निर्णयार्थं विचारोऽस्मिन्" । पूर्वोत्तरमीमांसाशास्त्रमें प्रसिद्ध एक अर्थको प्रतिपादन करनेहारा न्यायसमूह विषय, संशय, पूर्वपक्ष, सिद्धांत, निर्णयस्वरूप पांच अंगोंको बोधन करनेहारा वाक्यसमुदाय । तत्र विचारनेके योग्य वाक्यको विषय, क्या यह है वा नहीं इस प्रकार विषयीभूत वाक्यार्थमें संशय करना विकल्प, संशयास्पद दोनों पक्षोंके बीच असत् (झूठे) पक्षमें युक्तिदर्शन वाक्य पूर्वपक्ष, पूर्वपक्षोक्त युक्तिको खण्डन कर सत् (सच्चे) पक्षमें युक्तिको दिखानेहारा वाक्य सिद्धान्त, अनन्तर सिद्धान्तमें सिद्ध हुए अर्थका उपसंहार (समाप्त) करनेहारा वाक्य निर्णायकवाक्य कहाजाता है । (इसका विस्तार वाचसत्यभिधानमें वहुत पाया जाता है).

अधिकरणविचाल, (पु०) अधिकरणस्य विचालः अन्यथाकरणं, वि+चल्+घञ् ६ त० । द्रव्यकी दशाके भेदसे संख्याका भेद करना । एकको अनेक बनाना वा अनेकको एक करना इति भाष्यम् । एक राशिके पांच भाग करने किंवा पञ्चस्वरूपको इकट्ठा करलेना (पांचोंका एक करना) । यह अधिकरणकी संख्याका विचाल समझना.

अधिकरणिकः, (पु०) (अधिकरणं आश्रयतया अस्ति अस्य ठन्) जिसका आश्रय अधिकरण (कचहरीका स्थान) है । न्याय करनेहारा । मजिस्ट्रेट । राजपुरुष.

अधिकर्द्धि, (त्रि०) अधिका ऋद्धिः यस्य । जिसकी वहुत सम्पदा हो.

अधिकर्मन्, (न०) (अधिकं कर्म) उत्कृष्ट वा मुख्य काम । सरबराही । सिरपर निरीक्षण.

अधिकर्मिक, (पु०) (न०) अधिकृत्य हट्टं कर्मणेऽलं अधि+कर्मण्+ठ । दुकानका मालिक । हट्टका स्वामी । दुकानदारोंसे किराया लेनेहारा.

अधिकवाक्योक्ति, (स्त्री०) अधिकवाक्यस्य उक्तिः । वहुत वाक्यका कहना । किसी बातको बहुत बढाकर कहना.

अधिकषाष्टिक-साप्ततिक, (त्रि०) साठ वा सत्तरसे अधिक मोलवाला.

अधिकाङ्ग, (पु०) अधिकोऽङ्गात् । कवचको धारण करनेहारे योधाओंसे कवचकी दृढताकेलिये बांधीगई पट्टिका आदि ब० । जिसका अङ्ग अधिक हो । बढे हुए वा जियादा अङ्गवाला (त्रि०).

अधिकाधिक, (त्रि०) अधिकात् अधिकः । अधिक (बहुत) से अधिक.

अधिकाम, (त्रि०) अधिकः कामः यस्य । बहुत इच्छावाला । बडा कामी.

अधिकार, (पु०) अधि+कृ+घञ् । अरम्भ । स्वामित्व (इच्छापूर्वक क्रयविक्रयको सम्पादन करनेहारा) पैतृकाधिकार । स्वत्व (हक) । विनियोज्यपुरुषका सम्बन्धी

जैसे विहित कर्ममें ब्राह्मणादिका अधिकार है। राजाओंका छत्रचिह्नादिधारणमें अधिकार है। जैसे इस व्यक्तिको छाता पकडनेका अधिकार है। प्रकरण। व्याकरणशास्त्रमें प्रथमसूत्रमें ग्रहण कियेगये पदादिकी उत्तरसूत्रमें अनुवृत्ति करनी (अधिकारसूत्र).

अधिकारविधि, (पु०) अधिकारे फलस्वाम्ये विधिर्विधानं, वि+धा+कि ७ त० कर्मसे उपजा फल भोगनेवालेको जतानेहारी विधि (नियम) जैसे "यजेत" इससे यज्ञसे उपजे फलको भोगनेवाला स्वर्गका अभिलाषी बोधन किया है.

अधिकारिन्, अधिकारवत् (त्रि०) (अस्त्यर्थे–इनि–मतुप् वा) अधिकारवाला। प्रामाणिक। शक्तिवाला। हक्कदार.

अधिकार्थवचन, (न०) अधिकार्थस्य स्तुतिनिन्दाभ्यां आरोपितस्य वस्तुधर्माद् अतिरिक्तस्य वचनम्, वच्+ल्युट् ६ त० स्तुति वा निन्दासे आरोप कियेगये वस्तुके धर्मसे भिन्नका कथन करा। स्तुत्यर्थवाद। निन्दार्थवाद.

अधिकृ, (तना० उभ०) किसी काम करनेमें लायक होना। अधिकार होना। किसी कामके लिये मुखिया नियत करना.

अधिकृत, (पु०) अधि+कृ+क्त। आमदनी औ खर्चको देनेहारा। मालिक। कर्मजन्य फलका सम्बन्धी। जिसको किसी कामका अधिकार दिया गया हो (त्रि०).

अधिकृत्य, (अव्य०) उसकी बाबत। विषय.

अधिक्षिप्, तु० प० गाली देना। निन्दा करना.

अधिक्षिप्त, (त्रि०) अधि+क्षिप्+क्त। रक्खागया। निन्दाकिया गया। तिरस्कार कियागया.

अधिक्षेप, (पु०) अधि+क्षिप्+घञ्। तिरस्कार.

अधिगत, (पु०) अधि+गम्+क्त। जानागया। पायागया। स्वीकार कियागया.

अधिगन्तृ, (त्रि०) गम्–तृच्। लाभ करनेवाला। पानेवाला.

अधिगम, (पु०) अधि+गम्+घञ्। जात्रा। पाना। मात्रा.

अधीनः, (त्रि०) अधिगतः इनं। स्वामीके वश (काबू)में आया हुआ.

अधिगव, (त्रि०) न क्रि० वि० गवि इति अधिगवम् (अव्य० स०)। गौमें पाया वा लिया गया। गौका.

अधिगुण, (त्रि०) अधिका गुणा यस्य। अच्छे वा अधिक गुणोंवाला। योग्य। लायक.

अधिजिह्वः, (पु०) अधिका जिह्वा यस्य। अधिक वा चिरी हुई जीभवाला सर्प (सांप).

अधिज्य, (त्रि०) अध्यारूढा ज्या यत्र, अधिगतं ज्यां वा। जिसपर चिल्ला चढा हो। चिल्ला चढाये हुए.

अधित्यका, (स्त्री०) अधि+त्यकन्। पर्वतके ऊपरकी भूमि.

अधिदन्तः, (पु०) अध्यारूढः (दन्तस्य उपरिजातः दन्तः)। दांतके ऊपर चढा हुआ दांत.

अधिदेवता, (स्त्री०) देव एव देवता, अधिका देवता। देवताया अपि ईश्वरत्वात्। सूर्य आदि ग्रहस्वरूप देवोंके ईश्वर रुद्र आदि (जिसका आश्रय ले सूर्य आदि अपना २ काम कर रहेहैं).

अधिदेवनं, (न०) अधि–उपरि दीव्यते यत्र। जिसके ऊपर द्यूत (जूआ) खेला जाता है। जूआ खेलनेवाली मेज वा पटडा.

अधिदैवत, (न०) देवतैव स्वार्थे अण्। हिरण्यगर्भ। अन्तर्यामी पुरुष (पु०) वह चक्षुरादि इन्द्रियोंके अधिष्ठाता (आश्रय)। सूर्यादि देवताओंको अपने २ काममें लगाकर चक्षुरादि इन्द्रियोंपर अनुग्रह कर्ता है इसीसे उसे सम्पूर्ण देवताओंका ईश्वर कहते हैं.

अधिनाथ, (पु०) (अधिकः नाथः) परमेश्वर.

अधिनाय, (पु०) (नी–घञ् अधि नीयते वायुना) वायुसे ऊपर लाया जाता है। सुगन्ध.

अधिप, (त्रि०) अधि+पा+क। राजा। प्रभु। स्वामी.

अधिपति, (पु०) अधि+पा+डति। प्रभु। स्वामी.

अधिपाः, (पु०) अधिपाति–पा–क्विप्। Ved बहुत रक्षा करता है। राजा। ईश्वर। स्वामी.

अधिपु(पू)रुषः, (पु०) अधिकः पु (पू)रुषः। बडा पुरुष। परमेश्वर.

अधिप्रज, (त्रि०) अधिका प्रजा यस्य। बडी प्रजावाला। बहुत सन्तानवाला (पुरुष).

अधिभू, (पु०) अधिभवति स्वामीभवति। स्वाम्यर्थेऽत्राधिः, भू+क्विप्। प्रभु। नायक। मालिक.

अधिभूत, (न०) भूतं प्राणिमात्रं अधिकृत्य वर्तमानम्। सब प्राणिओंमें रहनेवाला। परमात्मा परब्रह्म। सर्वव्यापी पुरुष.

अधिभोजनम्, (न०) अधिकं भोजनम्। अधिक (जियादा) भोजन (खाना) अधिकं भोजनं (मूल्यं वा) यस्य। (त्रि०)। बहुत मोलवाला (कीमती).

अधिमन्थनं, (न०) मन्थ भावे करणे वा ल्युट्। अग्नि निकालनेके लिये बहुत रगडना.

अधिमात्र, (त्रि०) अधिका मात्रा यस्य। बहुत मापवाला। असीम। बेहद्द.

अधिमास, (पु०) अधिको रविमासात् अतिरिक्तः शुक्लप्रतिपदादिदर्शान्तश्चान्द्रो मासः प्रा० स०। मलमास। अधिमास। सूर्यकी संक्रान्तिसे भिन्न मास। जिसमहीनेमें दो अमावस हों। लोंदका महीना.

अधिमांसक, (पु०) अधिको मांसो यत्र ब० कप्। एकप्रकारका दांतोंका रोग। "हनुस्थे पश्चिमे दन्ते महाशोथो महारुजः। कालास्रायी कफकृतो विज्ञेयः सोधिमांसकः" वैद्यक.

अधियज्ञ, (पु०) अधिकृतः स्वामितया यज्ञो यस्य ब० । विष्णु.

अधियोग, (पु०) अधि+युज्+घञ् । अधिको योगः प्रा० स० । ज्योतिषशास्त्रमें प्रसिद्ध यात्राके लिये शुभ योग । वह यह है कि गमनसमयके लग्नमें, किंवा लग्नसे चौथे, पांचवें, सातवें, नववें वा दसवें स्थानमें बुध बृहस्पति शुक्रके मध्यमें दोनोंका एकस्थानपर होना । ऐसे योगमें यात्रा करनेवालेका कल्याण और शत्रुहानि यह फल है.

अधियोध, (पु०) आधिक्येन युध्यते, युध्+अच् । युद्धमें सबसे बडा योद्धा (बहादुर).

अधिरथ, (त्रि०) (अध्यारूढो रथं रथिनं वा) रथपर चढा हुआ ।–थः (पु०) रथवाही । गाडी चलानेवाला । अंगदेशका राजा.

अधिराज्-जः, (पु०) अधिराजते राज+क्विप् । राजन् टच् वा । महाराजा चक्रवर्ती.

अधिराज, (पु०) अधिको राजा प्र० स० टच् । सार्वभौम चक्रवर्ती । राजाओंका राजा । बारह मण्डलका राजा.

अधिराज्यं-ष्ट्रं, (न०) (अधिकृतं राज्यं वा राष्ट्रं अत्र) । पूरा राज्य । पूरी पातशाहत.

अधिरुक्म, (त्रि०) अधिगतं रुक्मं आभरणं येन । भूषणं (सोनेके) गहने वा जेवर वाला.

अधिरुह्, (न०) ऊपर उगना । चढना.

अधिरूढ, (त्रि०) अधिरुह्–क्त । चढगया । बढगया.

अधिरोहणी, (न०) (अधि+रुह्+अन–चढना ।–णी (स्त्री०) अधिरोहः साधनत्वेन अस्ति अस्याः । पौडी । सिढी । पौड । सांग.

अधिरोहिणी, (स्त्री०) अधिरुह्यतेऽनया । अधि+ रुह्+ करणे ल्युट् "सीडी" इस नामसे प्रसिद्ध लकडी आदिसे बना ऊंचे स्थानपर चढनेका साधन । पौडिआं.

अधिवचनं, (न०) (अधिकं वचनं पक्षपातेन कथनं वचनं) किसी बातपर भलीभांति बातचीत करना । किसीके पक्षमें बोलना.

अधिवस्, भ्वा० प० । निवास करना । अपना स्थान बनाना । रहना.

अधिवस्त्र, (त्रि०) अध्याकृतं वस्त्रं येन । जिसने कपडे पहिन लिये हों । पडदा किये.

अधिवास, (पु०) अधि+वस्+घञ् । निवास । चन्दन माला आदिसे संस्कार । अधिवासयति देवता अनेन । अधि+वस्+णिच्+करणे घञ् । यज्ञके आरम्भ होनेसे प्रथम दिवस जिसमें देवतास्थापन आदि कर्म किया जाता है.

अधिवास, चुरा० प० । सुगन्धित (खुशबूदार) करना.

अधिवासन, (न०) अधि+वस्+णिच् अधिकरणे ल्युट् । यज्ञारम्भ होनेसे पहिला दिन, जिसमें देवताका स्थानादि कर्म किया जाता है । भावे ल्युट् । गन्धमाल्यादिसे पूजादिका संस्कार करना.

अधिविद्, तुदा० उभ० । पहिली स्त्रीके जीवित रहनेपरभी विशेष आपत्तिमें दूसरा विवाह करना.

अधिविन्ना, (स्त्री०) विद्+भावे क्त । अधि उपरि विन्नं विवाहोऽस्याः । प्रथम विवाहिता स्त्री । जिसपर सौति न आई हो । "आधिविन्नस्त्रियै देयम्" इति स्मृतिः ।

अधिवेत्तृ, (पु०) (विद्+कर्तरि तृच्) दूसरा विवाह करनेवाला पति (पहिलीके जीनेपर भी).

अधिशी, अदा० आत्म० । लेटना । सोजाना । विश्राम करना । निंचि । सुलाना.

अधिश्रयः, (पु०) श्रि भावे–अच् । आश्रय । आधार । (श्री+अच्) । उबालना । गरम करना.

अधिश्रयण, (न०) अधि उपरि श्रयणं पाकार्थं स्थापनं, श्रीञ् भावे+ल्युट् । चुल्लीके ऊपर टिकाना । चुल्लीके ऊपर रखकर पकाना । अधिकरणे ल्युट् । पाक करनेका स्थान । करणे ल्युट्, टित्वात् ङीप् । चुल्ली चूला (प्रसिद्ध).

अधिश्रि, भ्वा० उभ० । सोजाना । चढना । आश्रयलेना । ("अधिश्री" भी होता है) अग्निपर चढाना । गरम करना.

अधिश्री, (त्रि०) अधिका श्रीर्यस्य । बडे पद (दरजेवाला । बडी शोभावाला) बडा धनी । चक्रवर्ती राजा.

अधिषवण, (न०) (अधिषूयते सोमः अत्र अधि सु आधारे ल्युट्) सोमरस निकालनेका पत्थर (पात्र) । (भावे ल्युट्) सोमरस निकालना.

अधिष्ठा, भ्वा० पर० । किसीके ऊपर बैठना । अधिकार (कबजा) करना । आश्रय लेना.

अधिष्ठातृ, (त्रि०) अधि+स्था+तृच् षत्वं । अध्यक्ष । मालिक । जो हरएक कामके होने न होनेको देखता है । प्रबंध करनेहारा । मुन्तज़िम.

अधिष्ठान, (न०) अधि+स्था+ल्युट । वेदान्तशास्त्रमें प्रसिद्ध आरोपका अधिकरण "अधिष्ठानावशेषो हि नाशः कल्पितवस्तुनः" अधिकरणे ल्युटि । नगर । करणे पढना (न०) ल्युटि । पहिया । प्रभाव.

अधिस्त्रि, (स्त्रियं अधिकृत्य वर्तते) । स्त्री वा किसी औरतकी बाबत (बारेमें) । (स्त्री) अधिका स्त्री । विशेष स्त्री.

अधिस्पन्दं, (अव्य०) अधिकः स्पन्दो वेगो यथा स्यात्तथा । अतिशीघ्र । बहुत जल्दीसे.

अधिहरि, (अव्य०) हरौ इति (विभक्त्यर्थे) हरिमें.

अधी, अधि–इ । अदा० आत्म० । अध्ययन करना । पढना । सीखना । कण्ठ करना.

अधीत, (त्रि०) अधि+इङ्+क्त । पढाहुवा । भावे क्त । पढना (न०)

अधीतविद्य, (पु०) अधीता विद्या येन । बहुव्री० । जिसने विद्या समाप्त करली हो । वेदोंको पढ चुका.

अधीति, (स्त्री०) अधि+इ+क्तिन् । पढना.

अधीतिन्, (त्रि०) अधीतं अनेक । अधी+इनि । जो पढ्चुका हो.

अधीन, (त्रि०) अधिगतं इनं प्रभुं, गति० स० । आय-(त्त । काबूमें आगया । अधि+ख).

अधीर, (त्रि०) धीरः धैर्यान्वितः न० त० । चञ्चल । जो अपनेको काबूमें नहिं रख सक्ता.

अधीश, (त्रि०) अधिक ईशः प्रा० स० । अधिकप्रभु । सार्वभौम । चक्रवर्ती । शाहाँनशाह.

अधीश्वर, (त्रि०) अधिक ईश्वरः प्रा० स० । चक्रवर्ती । स्त्रियां ङीष् । अधीश्वरी.

अधीष्ट, (न०) अधि+इष्+भावे क्त । आदरके साथ किसी वातके लिये आज्ञा देना । कर्मणि क्त । आदरसे नियोग किया गया.

अधुना, (अव्य०) अस्मिन् काले । इदंशब्दस्य नि० । इस समय । अब.

अधुनातन, (त्रि०) भवार्थे अधुना+ट्युल् । अब होनेवाला । अबका.

अधृष्ट, (त्रि०) धृष् निर्लज्जत्वे+क्त न० त० । लज्जाशील.

अधृष्य, (त्रि०) धृष्-अर्हार्थे+यत् न० त० । जिसे निरादर करना वा दवाना उचित नहीं.

अधोक्षज, (पु०) अक्षात् इन्द्रियात् जायते अक्षजं प्रत्यक्षज्ञानं, जन्+ड ५ त० । अधरं अग्राहकत्वात् हीनं तद्यस्य ब० । जिसका स्वरूप इन्द्रियोंसे प्रत्यक्ष नहिं होता । विष्णु । "अधो न क्षीयते यस्माद्वीशस्तस्मादधोऽक्षजः" इति.

अधोजिह्विका, (स्त्री०) अल्पा जिह्वा जिह्विका अल्पार्थे क । अधोऽधरा जिह्विका कर्म० । आलजिभ इस नामसे प्रसिद्ध तालुमें रहनेहारी जीभ । तालुस्थजिह्विका.

अधोभुवन, (न०) अधोऽधरं भुवनं लोकः कर्म० । भूमीके नीचेका भाग । पाताललोक.

अधोमुख, (त्रि०) अधो मुखं यस्य ब० । जिसका मुख नीचेकी ओर हो । ज्योतिषशास्त्रमें प्रसिद्ध नक्षत्र (कईएक तारे) । यथा 'मूलाश्लेषा कृत्तिका च विशाखा भरणी तथा । मघा पूर्वात्रयं चैव अधोमुखगणः स्मृतः" । गोजिह्वानामी वृक्ष (स्त्री०) टाप्.

अधोलोक, (पु०) अधोऽधरो लोकः कर्म० । भूमीके नीचे । पाताल.

अधोंशुक, (न०) अधर+प्रमार्थे असिः अधरस्य अधादेशश्च । पहिरनेका कपडा । नीचेका कपडा.

अध्यक्ष, (त्रि०) अधिगतोऽक्षं व्यवहारं अत्या० स० । राजाके छाते पकडने आदिका काम जिसे दियागया हो । आमदनी और खर्चका हिसाव रखनेहारा । अध्यक्ष्णोति व्याप्नोति अधि+अक्ष+अच् । व्यापक । चारोंओर फैलाहुआ । अधिगतं मूलतया अक्षं इन्द्रियं गति० स० । प्रत्यक्षज्ञान । अर्शआदित्वात् अचि । प्रत्यक्षज्ञानका विषय । जो सामने दीखसके.

अध्यग्नि, (अव्य०) अग्नौ अग्निसमीपे वा । विभक्त्यर्थे सामीप्येर्थे वा अव्ययी० । आगमें वा आगके पास । अग्निकी साक्षीमें विवाहके समय स्त्रियोंके तईं दियागया धन आदि (न०) । धर्मशास्त्रमें इसी अर्थका नियम कियागया है । यथा–"विवाहकाले यत् स्त्रीभ्यो दीयते ह्यग्निसन्निधौ । तदध्यग्निकृतं सद्भिः स्त्रीधनं परिकीर्तितम्" इति.

अध्यधीन, (त्रि०) अधिकोऽधीनः प्रा० स० । जो बहुत आधीन हो । दास.

अध्ययन, (न०) अधि+इङ्+ल्युट् । पढना । गुरुके मुखसे वोलेगयेके अनुसार वोलना । केवल अक्षरोंका पाठ करना "अध्ययन" है, यह वैदिकमत है । अर्थसहित अक्षरोंका ग्रहण करना "अध्ययन" है यह मीमांसकोंका मत समझना चाहिये.

अध्यर्ध, (त्रि०) अधिकं अर्ध यस्य ब० । कोई चीज जो अपने आधेके साथ हो.

अध्यवसाय, (पु०) अधि+अव+सो+घञ् । "यह ऐसेहीहै" इस प्रकार किसी विषयके विचारमें निश्चय करना । "आत्मका वह धर्म है" यह नैयायिक कहते हैं । "बुद्धिका धर्म है" यह सांख्यादिका मत समझना । सांख्यतत्त्वकौमुदीमें इसका लक्षण यूं लिखाहै कि जिस समय इन्द्रियें विषयोंको ग्रहण कर्ती हैं तो प्रत्येक विषयकी भिन्न वृत्तियें उपजतीहैं ऐसे समयमें रजस्तमोगुणको तिरस्कार कर बुद्धिवृत्तिका जो सत्वगुणको प्रवल करना उसीका नाम अध्यवसाय किंवा भला काम करनेकी इच्छा कहतेहैं । अथवा चित् सान्निध्यसे प्राप्तचैतन्या बुद्धिका "करना चाहिये" यह निश्चयरूप परिणाम अध्यवसाय है । उत्साह । दिलेरी । शौक.

अध्यात्म, (अव्य०) आत्मनि देहे मनसि वा । विभक्त्यर्थे अव्ययी० । आत्मा, देह, किंवा चित्तका अधिकरण (आश्रय) । वह विद्या जिस्में आत्मतत्त्वका विचार हो । "स्वभावोऽध्यात्ममुच्यते" इति गीतावचनात् । स्वभाव । भावका स्वरूप । व्यापक चैतन्य परब्रह्म । इसी अध्यात्मविद्या आदि शब्दोंका वेदान्तादिमें यही अर्थ प्रसिद्ध है.

अध्यापक, (त्रि०) अधि+इङ्+णिच्+ण्वुल् । ऊपर कहे गये अध्ययनको करानेहारा । पढानेहारा । उपाध्याय.

अध्यापन, (न०) अधि+इङ्+णिच्+भावे ल्युट् । पढाना । युचि तु स्त्रीत्वात् टापि । अध्यापना इसी अर्थमें.

अध्याय, (पु०) अधि+इङ्+घञ् । पढना । वेदादिशास्त्रका अंशविशेष जो किसी एक अर्थके विषयकी समाप्तिको प्रकाश कर्ताहै । इसे कई नामोंसे निर्देश कर्ते हैं जैसे सर्ग, वर्ग, परिच्छेद, उद्घात, अध्याय, अङ्क, संग्रह, उच्छ्वास, परिवर्त, पटल, काण्ड, स्थान, प्रकरण, पर्व, उल्लास, आह्निक, और परिच्छेदप्रभृति.

अध्यारूढ, (त्रि०) अधि+आ+रुह्+क्त (कर्तरि) चढनेहारा । अधिक.

अध्यारोप, (पु०) अधि+आ+रुह्+णिच्-पुक्च घञ् । औरमें दूसरेकी बुद्धि करना । मिथ्याज्ञान । कुछ आश्रय ले औरही मान बैठना जो वहां नहीं है जैसे असर्पभूता रज्जु (रस्सी) में सांपको मान्ना, वैसेही जगतसे भिन्नरूप ब्रह्ममें जगतरूप चढादेना (मानलेना) ऐसा झूठा ज्ञान.

अध्यावाहनिक, (न०) अध्यावाहनं पितृगृहात् भर्तृगृहागमस्तत्काले लब्धम् । अधि+आ+वह्+ल्युट् ततः लब्धार्थे ठन् ठस्येकः । वह धन जो स्त्रीको पिताके घरसे भर्ताके घरमें जानेके समय मिलता है । जैसे " यत् पुनर्लभते नारी नीयमाना हि पैतृकात् । अध्यावाहनिकं नाम स्त्रीधनं परिकीर्तितं" इति स्मृतिः । (एकप्रकारका) स्त्रीधन.

अध्याशन, (न०) अधि+आ+अश्+ल्युट् । भोजनपर भोजन । एकवार भोजन करके फिर भोजन करलेना.

अध्यास, (पु०) अधि+अस्+घञ् । औरमें औरकी बुद्धि करना । अध्यारोप (मिथ्याज्ञान) । अधि+आस्+घञ् । बैठनेका स्थान । आसन.

अध्यासित, (त्रि०) अधि+आस्+क्त । अधिष्ठित । आश्रित । आसरा दिया गया । णिचि । निवेशित । स्थापन कियागया । रक्खागया । कायम कियागया.

अध्याहार, (पु०) अधि+आ+हृ+घञ् । अस्पष्टार्थवाक्यस्य शब्दान्तरकल्पनाद्वारा स्पष्टकरणम् । वह वाक्य जो साफ समझमें नहीं आसक्ता, उसे किसी दूसरे शब्दकी कल्पना कर साफ कर देना । वाक्यको पूरा करनेके लिये शब्दका जोडना । आकाङ्क्षित पदका अनुसन्धान करना । ऊह । तर्क । दलील । अपूर्वोत्प्रेक्षण.

अध्युषित, (त्रि०) अधि-वस्-क्त । निवास किये हुए.

अध्यूढा, (पु०) अधि+वह्+क्त । प्रभु धनी । चढनेहारा (त्रि०) अधि उपरि ऊढं उद्वाहो यस्याः ब० । एक स्त्रीके होतेहुए दूसरा विवाह करनेवालेकी पहिली स्त्री (स्त्री०) । कृतसापत्निका स्त्री.

अध्येषण, (न०) अधि+इष्-प्रेरणे ल्युट् । प्रार्थना । दूसरेसे कोई वस्तु लेनेके लिये सत्कारपूर्वक प्रार्थना करना.

अध्रुव, (त्रि०) ध्रु+क न० त० (चञ्चल) । विकारवाला । अनित्य । अस्थिर (जो कायम न रहे).

अध्वग, (पु०) अध्वन्+गम्+ड । पथिक । रास्तेमें चलनेहारा । सूर्य । उंट । जो कोई रास्तेमें चले (त्रि०) । गङ्गा (स्त्री०).

अध्वगभोग्य, (पु०) अध्वगेन अतिसौलभ्यात् अयत्नलभ्यफलत्वाच्च भोग्यं ३ त० । पथिकको सहजसे मिलसकताहै इसीलिये भोगनेके योग्य है । आमडानामसे प्रसिद्ध आम्रातकका दरख्त.

अध्वजा, (स्त्री०) अध्वनि जायते, जन्+ड० त० । सोना नामसे प्रसिद्ध स्वर्णपुष्पीका दरख्त.

अध्वनीन, (पथिक) (त्रि०) अध्वानं अलं गच्छति, अध्वन्+ख । पथिक.

अध्वन्य, (त्रि०) अध्वानं अलं गच्छति, अध्वन्+यत् । पथिक.

अध्वर, (पु०) अध्वानं सत्पथं राति, रा+क । यज्ञ । न ध्वरति कुटिलो न भवति, ध्व+अच्, न० त० । सावधान । आठ वसुओंमें दूसरा वसु.

अध्वरथ, (पु०) अध्वैव रथो यस्य ब० । मार्गको भलीभांति जान्नेहारा दूत । अध्वने हितः पर्याप्तो रथो यस्य, ब० । मार्गमें जाने योग्य रथ.

अध्वर्यु, (पु०) अध्वरं इच्छति, अध्वर,+क्यच्+युच्, ततोऽन्त्याकारलोपः । यजुर्वेदको जान्नेहारा होमकारी ऋत्विज (पुरोहित).

अध्वस, (पु०) अधि (बलं) अद्+क्वनिप् (धादेशः) पथ । मार्ग । बहुत कठिनाईसे चढना । (सबको खाजानेसे) काल । मारनेहारा जीव । अद्यते खण्डशो भक्ष्यतेऽनेन करणे घञ् । अवयव । भाग.

अन्, (पु०) अन् क्विप् । आत्मा.

अनः, (अन् अच्) श्वास । सांस.

अन्-जीना, अदा० पर० अक० सेट् । अनिति । आनीद्.

अन्-जीना, दिवा० आत्म० अक० सेट् । अन्यते । आनिष्टा

अनक्ष, (त्रि०) नास्ति अक्षं चक्रं, नेत्रादिकमिन्द्रियं व. यस्य ब० । चक्रके बिना । नेत्र आदि इन्द्रियोंसे रहित.

अनक्षर, (न०) अप्रशस्तानि अक्षराणि यत्र ब० । जहां अच्छे अक्षर न हो । अच्छे गुणोंको छिपाकर दोषोंको प्रकाश करनेहारा वचन । न कहनेयोग्य । निन्दाका वचन । गालि नामसे प्रसिद्ध दुष्ट वचन.

अनक्षि, (पु०) अप्रशस्तं मन्दं अक्षि न० त० । मन्दनेत्र ब० । तद्वति तत्र अनक्ष इत्येव टच् समासान्तः । जिसकी आंख मन्द हो.

अनगार, (त्रि०) न० ब० । गृहविहीन । बेघर.

अनग्नि, (पु०) नास्ति अग्निः श्रौतः स्मार्तो वा अस्य । श्रौत वा स्मार्त विधिसे अग्निको स्थापन न करनेहारा गृहस्थ आदि । सर्वथा अग्निसे शून्य संन्यासी.

अनग्निदग्ध, (त्रि०) न अग्निना दग्धः । न० त० । जो आगसे नहीं जलाया गया.

अनघ, (त्रि०) नास्ति अघं पापं दुःखं व्यसनं कालुष्यं वा यस्य । पापशून्य । दुःखहीन । व्यसन (बुरी आदत) शून्य । स्वच्छ.

अनङ्कुश, (त्रि०) अङ्कुशेन त वश्यः । जो अंकुशसे वश नहीं किया जासक्ता । न वशमें रहनेवाला । स्वतन्त्र (जैसा कवि).

अनङ्ग, (नि०) नास्ति अङ्गं आकारो यस्य । आकाश । चित्त । कामदेव (पु०) जिसके अङ्ग न हों ऐसा कोई । (त्रि०).

अनङ्गक्रीडा, (स्त्री०) अनङ्गेन क्रीडा तृ० त० । कामदेव-सम्बन्धिनी क्रीडा (खेलन) । एक छन्द.

अनङ्गशेखर, (पु०) दण्डकभेद छन्दोविशेष । जहां क्रमसे गुरु लघु अक्षरोंकी रचना होती है.

अनच्छ, (त्रि०) न अच्छः निर्मलः न० त० । कलुष । अप्रसन्न । मैला.

अनञ्जन, (न०) न अज्यते लिप्यते, अञ्ज् कर्मणि ल्युट् न० त० । आकाश जिसका किसीसे सम्बन्ध नहीं । परब्रह्म । अञ्जनं दोषस्तद्रहिते नारायणे । दोषरहित नारायण । (पु०) कोई वस्तु जो दोषरहित हो (त्रि०).

अनडुह्, (पु०) अनः शकटं वहति, नि० । एडा नामसे प्रसिद्ध गौ । बैल । स्त्रियां गवि ङीपि । अनडुही और अनड्वाही.

अनणु, (त्रि०) न० त० । न छोडा.

अनति, (अव्य०) न अति । न बहुत.

अनद्धा, (अव्य०) न० त० । न अद्धा । Ved न सत्य । न साफ । न निश्चित । -पुरुषः । न सच्चा पुरुष । जो देवता, पितर, मनुष्योंका कुछभी प्रयोजन सिद्ध नहीं करता.

अनद्यतन, (त्रि०)-नी स्त्री० न त० । जो आजका नहीं (इसी अर्थमें लङ् आता है).

अनधिक, (त्रि०) न० त० । न बहुत.

अनधिगत, (त्रि०) न० त० । न लाभ किया । न पाया । न पढा । मनोरथ (त्रि०) जिसका संकल्प पूरा नहीं हुआ शास्त्र (त्रि०) । जिसने शास्त्र नहीं सीखा.

अनधीन, (त्रि०) न अधीनः न० त० । स्वतंत्र । खुद-मुख्तिआर । नः नकः (संज्ञायां कन्) एक स्वतन्त्र तरखान जो अपने लिये काम करता है.

अनध्यक्ष, (त्रि०) । न अध्यक्षः न० त० । जो प्रत्यक्ष न हो । जो प्रकट न हो । जो खयालमें न आसके.

अनध्याय, (पु०) अध्यायोऽध्ययनं अभावार्थे न० त० । न पढना । न अधीयतेऽस्मिन् काले इति अधिकरणे घञ् । वह समय जब पढना न चाहिये । जैसे "चातुर्मास्यद्वितीयायां मन्वादिषु युगादिषु । अष्टकासु च संक्रान्तौ शयने बोधने हरेः । अनध्यायं प्रकुर्वीत ।" और भी जब बिजली गिरे । पृथिवी काँपे इत्यादि अनध्यायके काल हैं.

अननुभावुक, (त्रि०) (न अनुभवितुं शक्तः) जो खयाल (अनुभव) नहीं किया जा सक्ता ।-ता । अनुभवमें न आसकना.

अनन्त, (पु०) नास्ति अन्तः गुणानां यस्य ब० । जिसके गुणोंका अन्त न हो । "गन्धर्व, अप्सरा, सिद्ध, किन्नर, उरग, और चारण जिसके गुणोंका पार नहिं पासक्ते इसीसे वह अनन्त कहा जाता है" ऐसे लक्षणवाला विष्णु । बादल । शेषनाग जिसका बहुत सिर होनेसे अन्त नहिं आसक्ता । शेषनागका अवतार बलभद्र (बलराम) । अन्तः परिच्छेदः देशतः कालतः वस्तुतश्च यस्य नास्ति । देश, काल और वस्तुसे जिसका परिमाण नहिं हो सक्ता अर्थात् परब्रह्म । आकाश । (न०) बडा फैलाहुआ सिन्धुवार नाम वृक्ष । (पु०) अवधि (हद्) शून्य । इयत्ता (वह इतना है) शून्य ऐसी कोई वस्तु जिसकी अवधि वा इयत्ता नहिं (त्रि०).

अनन्तगुण, (त्रि०) अनन्ता गुणा यस्य बहु० । अनन्त (असंख्यात) गुणवाला.

अनन्तजित्, (पु०) (अनन्तानि भूतानि जितवान्) सबको जीतनेवाला । वासुदेव । आर्हत देवताका नाम.

अनन्तदृष्टिः, (पु०) अनन्ता दृष्टयः नेत्राणि यस्य बहु० । अनन्त नेत्रोंवाला । शिव । इन्द्र.

अनन्तर, (त्रि०) नास्ति अन्तरं व्यवधानं यस्य । जिसके नीच करक (फासिला) नहो । अवकाशरहित.

अनन्तरजः, or-जा (पु० स्त्री०) (अनन्तरस्याः अनन्तरवर्णाया मातुः जायते) मातासे ऊपरकी जातिवाले पितासे उपजा । वैश्यवर्णकी मातासे क्षत्रियवर्णका पुत्र वा पुत्री.

अनन्तरजा, (स्त्री०) (अनन्तरं जायते) छोटी वा बडी स्वसा (बहिन).

अनन्तर्गर्भिन्, (पु०) न अन्तः गर्भः यस्य, अस्त्यर्थे इनि न० त०) जिसके भीतर गर्भ न हो । कुशा नामी तृण जिसका पवित्रा बनाया जाता है.

अनन्तविजयः, (पु०) अनन्तान् विजयते ध्वनिद्वारा अनेन । जिसके शब्दसे अनन्तोंको विजय करता है । युधिष्ठिरका शङ्ख.

अनन्तव्रत, (न०) अनन्तस्य व्रतं उपासनार्थत्वात् ६ त० । भादोंके शुक्लपक्षकी चतुर्दशीके दिन करने योग्य अपने नामसे प्रसिद्ध एक व्रत.

अनन्ता, (स्त्री०) नास्ति अन्तोऽस्याः ६ व० । जिसका अन्त न हो । विशल्यानामी औषध । एक प्रकारकी जड जिसका नाम अनन्तमूल है । पार्वती । पृथिवी । कुशा । हरीतकी (हरीड)। आमलकी (आवला) । गुडूची । अग्निमन्थ वृक्ष । अग्निशिखा वृक्ष । श्यामलता । पिप्पली.

अनन्तात्मन्, (पु०) अनन्तः आत्मा । परमात्मा.

अनन्द, (त्रि०) (न नन्दयति नन्द्+णिच्+अच्) आनन्द-रहित । नाखुश । अप्रसन्न.

अनन्यगतिक, (त्रि०) नास्ति अन्या गतिः यस्य न० व० । जिसके लिये और कोई उपाय नहीं.

अनन्यज, (पु०) नास्ति अन्यत् यस्मात् तस्मात् जायते जन्+ड ५ त० । जिससे भिन्न और कुछ नहीं अर्थात् सम्पूर्ण वस्तुओंका भेद उसीका स्वरूप है, तात्पर्य, विष्णु कि उससे उपजा अर्थात् कामदेव.

अनन्यता, (स्त्री०) अनन्यस्य भावः । वही अभेद । वही-पन । अभिन्नता.

अनन्यपूर्व, (पु०) नास्ति अन्या पूर्वा यस्य । जिसकी दूसरी और कोई स्त्री नहीं ।–र्वा (स्त्री०) न अन्यः पूर्वो यस्याः । जो किसी दूसरेकी पहिले नहीं । वह स्त्री जिसका कोई दूसरा पति नहीं.

अनन्यभाज्, (त्रि०) न अन्यं अन्यां वा भजते किसी दूसरी व्यक्तिके साथ प्रीति न करनेवाला.

अनन्यवृत्ति, (त्रि०) न अन्यस्मिन् ध्येयभिन्ने वृत्तिर्यस्य व० । जिसकी ध्येयके विना दूसरेमें वृत्ति न हो । एकान्तचित्त.

अनन्यशासन, (त्रि०) नास्ति अन्यस्य शासनं यस्मिन् । जिसपर दूसरेकी आज्ञा नहीं चलती । स्वतन्त्र.

अनन्यसदृश, (त्रि०) नास्ति अन्यः सदृशः यस्य ६ व० । असाधारण । जिसके समान दूसरा न हो । निरुपम.

अनन्यसामान्य, साधारण (त्रि०) न अन्यस्यां सामान्यः । जो दूसरी स्त्रीमें एक जैसा नहीं । एकहीमें अधिक प्रीति करनेवाला.

अनन्यादृश, (त्रि०) न अन्य इव दृश्यते । जो दूसरे-के समान न हो । एकही.

अनन्वय, (त्रि०) नास्ति अन्वयो यत्र व० । अन्वयशून्य सम्बन्धरहित । अर्थालङ्कारका एक भेद.

अनप, (त्रि०) न सन्ति आधिक्येन आपः यत्र । जहां अधिक जल न हो (छप्पड).

अनपकरणम्, कर्मन् क्रिया (न० स्त्री०) न अपक्रियते । न हानि (नुक्सान) पहुंचाना । (धर्मशास्त्रमें) लिये हुये धनको न चुकाना.

अनपत्य, (त्रि०) नास्ति अपत्यं यस्य । सन्तानरहित । पुत्रहीन । वारिस बगैर.

अनपत्रप, (त्रि०) नास्ति अपत्रपा लज्जा यस्य ६ व० । जिसे लज्जा (शरम) नहीं । निर्लज्ज (बेशरम).

अनपर, (त्रि०) नास्ति अपरः यस्य व० । जिसके पास दूसरा कोई नहीं । अकेला.

अनपाय, (त्रि०) नास्ति अपायः नाशः यस्य ६ व० । जिसका नाश न हो । अक्षय । अविनाशी.

अनपावृत, (त्रि०) न० व० । न लौटनेवाला.

अनपेक्ष–क्षिन्, (त्रि०) न० त० । बेखयाल । बेपर-वाह । उदासीन । असंबद्ध । स्वतन्त्र.

अनपेत, (त्रि०) न अपेतः गतः न० त० । जो चला नहीं गया । जो व्यतीत नहीं हुआ.

अनप्नस्, (त्रि०) नास्ति अप्नः रूपं यस्य । Ved. रूपरहित । बेशकल । कर्महीन.

अनप्सरस्–रा, (स्त्री०) न अप्सरा न० त० । जो अप्सरा (स्वर्गकी वेश्या) नहीं । अप्सराके अयोग्य.

अनभिज्ञ, (त्रि०) न अभिज्ञः न० त० । न जाननेवाला । अज्ञ । अज्ञानी । बेखबर.

अनभिम्लान, (त्रि०) न अभिम्लानः न० त० । न कुम्हलाया हुआ.

अनभिशस्त, (त्रि०) Ved. निर्दोष । बे ऐन । निरपराध.

अनभिसन्धान, (न) बिनसंकल्प । बिनइरादा.

अनभ्यावृत्ति, (स्त्री०) पुनरुक्ति न करना। दुबारा न कहना.

अनभ्यास–श, (त्रि०) नास्ति अभ्यासः नैकट्यं यस्य । जो निकट न हो । जो दूर हो.

अनभ्र, (त्रि०) न अभ्रः मेघः न० त० । मेघ (बादल)-रहित । कुछ अकस्मात् होगया.

अनम, (पु०) न नमति अन्यान् । ब्राह्मण । (जो दूसरोंके झुकनेपर नहीं झुकता वरन आशीर्वाद देता है).

अनमित्र, (त्रि०) नास्ति अमित्रं यस्य ६ व० । जिसका कोई शत्रु नहीं । दुश्मन बगैर.

अनमीव, (त्रि०) Ved. नास्ति अमीवः रोगः यस्य न० व० । रोगरहित । तंदुरुस्त । चंगा भला । प्रसन्न । आराममें रहा हुआ.

अनम्र, (त्रि०) न नम्रः न० त० । न नम्र (झुकनेवाला) हलीम नहीं.

अनय, (पु०) अयः शुभावहो विधिः तदन्यः न० त० । अशुभदैव । दौर्भाग्य (बुरी किसमत) । जूआ खेलनेवा-लोंके दहिनी ओर जाना । नयो नीतिः नी+अच् न० त० । नीतिका न होना ब० । वह जो नीतिसे शून्य व्यवहार करे (त्रि०).

अनरण्य, (पु०) सूर्यवंशका एक राजा.

अनर्गल, (त्रि०) अर्गलं द्वाररोधकस्तम्भः ब० । दर्वाजेको रोकनेवाले थम्मेके बिना (होडेके बिना) । प्रतिवन्ध-कशून्य । बिन रोक.

अनर्घ, (त्रि०) अर्घो मूल्यं न० ब० । अमूल्य । जिसका मोल न हो.

अनर्थ, (पु०) अर्थः प्रयोजनं विरोधे न० त० । प्रयोजन-विरुद्ध० । अनिष्ट (न चाहागया) ब० । अभीष्टरहित विष्णु (पु०) आप्तकाम होनेसे । अर्थोऽभिधेयः प्रयोजनं वा नास्ति यस्य ब० । जिसका अर्थ न हो । जिसका प्रयोजन न हो । अर्थरहित मात्र (त्रि०).

अनर्थक, (न०) अर्थोऽभिधेयोऽप्राशस्त्ये नञा ब० । उरः-प्रभृति० कप्समासान्तः । समुदायार्थशून्य प्रलाप । अर्थसे बिना बचन । सम्बन्धरहित वाक्य । अर्थं (त्रि०).

अनर्थान्तरम्, (न०) अन्योऽर्थः अर्थान्तरं मयूर० त० । ततः न० त० । दूसरे अर्थके बिना । अभेद । जिसका एकही अर्थ हो.

अनर्व, (त्रि०) Ved. जो शिथिल न हो.

अनर्वन्, (त्रि०) अर्व् हिंसायां कनिन्, अर्वा सपत्नः, न० त० । शत्रुरहित । जो द्वेष करनेके योग्य नहीं.

अनल, (पु०) नास्ति अलः पर्याप्तिर्यस्य बहुदाह्यदहनेऽपि तृप्तेरभावात् ब० । बहुत वस्तुओंको जलानेपरभी जिसे तृप्ति नहीं होती । अग्नि । आठ वसुओंमेंसे पांचवा वसु । कृत्तिकानामी नक्षत्र जिसकी देवता अग्नि है । चिता नामसे विख्यात चित्रक वृक्ष (पु०) । मेला नामसे प्रसिद्ध भल्लातकवृक्ष । देहमें स्थित, आयुको धारण करनेहारा पित्तनामी धातु । अव्ययी० । नलभिन्न । तृण आदिसे भिन्न । अन्+कलच् । साठ वर्षोंमें पचासवां वर्ष.

अनलप्रभा, (स्त्री०) अनलस्य प्रभेव प्रभा यस्य ब० । ज्योतिष्मतीनामी वेल.

अनलि, (पु०) अनितीत्यन्, अन्+क्विप् अन् अलिर्यत्र ब० । बकनामी वृक्ष (इस वृक्षके मधु अर्थात् पुष्परसोंसे भौंरे जीवन धारण करते हैं).

अनवच्छिन्न, (त्रि०) न० अव+छिद्+क्त । निरन्तर । न कटा हुआ । लगातार.

अनवधानता, (स्त्री०) अवधीयते, मनः संयुज्यते कर्त-व्यकर्मणि यथास्थितं प्रवर्त्यतेऽनेन, अव+धा+करणे ल्युट् । अवधानं चित्तवृत्तिभेदः तन्नास्ति यस्य तस्य भावः । जिससे कर्तव्यकर्ममें मन ठीक न लग सके । प्रमाद । भूल । कर्तव्यको अकर्तव्य जान न करना । अकर्तव्यको कर्तव्य जान करना.

अनवनामित, (त्रि०) अव+नम्+णिच् क्त । न झुकाया गया । न नीचे किया गया.

अनवब्रव, (त्रि०) अनवब्रू अच् अवचादेशः । अपवाद-वर्जित । निन्दारहित । कलंकरहित.

अनवभ्र, (त्रि०) न अवभ्रंशति । अवभ्रंशशून्य । न घटने-वाला । न नाश होनेवाला.

अनवम, (त्रि०) न अवमः । न छोडा । ऊंचा.

अनवरत, (त्रि०) अव+रम्+भावे क्त । अवरतम् तन्नास्ति यस्य ब० । लगातार । निरन्तर । उत्कृष्ट । अच्छा.

अनवरार्ध्य, (त्रि०) अवरस्मिन् अर्धे भवः यत् न० त० । उत्कृष्ट । वडा । उत्तम । उम्दा.

अनवलम्ब—वन, (त्रि०) न० ब० । निराश्रय । जिसका आधार कोई नहीं । पराधीन.

अनवलोभन, (न०) पुंसवनके अनन्तर चौथे मासमें कर्तव्य गर्भका संस्कारविशेष इस नामसे प्रसिद्ध.

अनवसर, (त्रि०) अवसरति अत्र, अव+सृ+अच्, अव-सरः उचितः कालः स नास्ति यस्य ब० । जिसका ठीक समय नहिं न० त० । ठीक समयका न होना । बेमौका.

अनवसान, (त्रि०) नास्ति अवसानं यस्य न० ब० । जिसका अन्त नहीं । अमर । स्थितिरहित.

अनवसित, (त्रि०) न० त० । न समाप्त हुआ । न पूरा हुआ । अनिश्चित.

अनवस्कर, (त्रि०) अवस्क्रियते शोध्यते, अव+कृ+अच् सुडागमः । अवस्करो मलः स नास्ति यस्य ब० । मलसे रहित । साफ । निर्मल । विमल.

अनवस्था, (स्त्री०) अव+स्था+अङ् अवस्थितिः न० त० । अवस्थाका अभाव । दरिद्रता । तर्कका दोषविशेष । उप-पाद्यको सिद्ध करनेके लिये उपपादकका अनुसरण करना तर्क है । जिस तर्कमें उपपाद्य और उपपादककी विश्रान्ति नहीं वह तर्क अनवस्था दोषसे दूषित है.

अनवस्थान, (न०) अव+स्था+ल्युट् न० त० । अवस्थाना-भाव न ठहरना । ब० । वायु (पु०) चञ्चलमात्र (त्रि०).

अनवान, (अव्य०) अवानः श्वासोच्छ्वासः स यथा न स्यात्तथा । बीचमें श्वास लिये बिन । एकही सांसके साथ । बिन ठहराव (यति).

अनवाय, (त्रि०) अव इ घञ् अवायः=अवयवः न० ब० । निरवयव । अवयव (भाग) के जो बिना हो.

अनवेक्षण, (न०) अव+ईक्ष्+ल्युट् । न० त० । न पर्वाह करना । न खयाल करना.

अनंश, (त्रि०) न० ब० । न पैत्रिक (वडोंका) अंश । हिस्साविरसा न लेनेका अधिकारी.

अनशन, (न०) अश्+ल्युट् न० त० । अशनाभाव । न खाना । उपवास । भोजनशून्य (त्रि०).

अनश्व, (त्रि०) नास्ति अश्वः यस्य न० ब० । अश्वरहित । जिसके पास घोडा न हो.

अनश्वर, (त्रि०)-री (स्त्री०) अविनाशी । नित्य.

अनस्, (न०) अनिति शब्दायते, अन्+असुन् । शकट । गड्डा । छकडा । करणे ल्युट् । ओदन । भात । चावल । माता (स्त्री०).

अनसूया, (स्त्री०) असू+कण्ड्वादित्वात् यक्+अङ् न० त० । गुणोंमें दोष आरोप करना असूया है उसका न होना । गुणोंको गुण कहना । अत्रिमुनिकी स्त्री.

अनस्थ-स्थिक, (पु०) (न० ब०) अस्थि (हड्डी)-रहित ।-(स्थः ।) अस्थिरहित अङ्ग.

अनहन्, (न०) अहः=अप्रशस्तं अहः । बुरा दिन । अभागी दिन.

अनह्वर, (त्रि०) अह्वृ कौटिल्ये, अच् न० त० । न टेढा । सीधा.

अनाकाल, न० त० । कुसमय । बेमौका । न० त० । आ सम्यक् अन्नादिसम्पन्नः कालः=आकालः । अन्नका अकाल । कहतसाली.

अनाकुल, (त्रि०) न आकुलः न० त० । न घवडाया हुआ । अव्यग्र । एकाग्र । स्थिर । असंकीर्ण वाक्य । न मिलाहुआ वचन । साफ वचन.

अनाक्रान्ता, (स्त्री०) आक्रमितुं अयोग्या सर्वतः कण्टकावृतत्वात् आ+क्रम्+क्त न० त० । चारोंओर कांटोंसे घिराहुआ होनेके कारण जो दवाया नहिं जा सक्ता । कण्टकारिवृक्ष । जो आक्रमण नहिं किया गया (त्रि०).

अनागत, (त्रि०) आ+गम्+क्त, आगतः, न० त० । भावी । आगे होनेवाला । न जानागया । जो वर्तमान नहिं । आनेवालेसे भिन्न.

अनागतार्तवा, (स्त्री०) ऋतोः स्त्रीपुष्पस्येदं विकासनं आर्तवं+ऋतु+अण् न आगतं आर्तवं यस्याः ब० । स्त्रीधर्मसे (जो स्त्रियोंको प्रतिमास रज आता है) शून्य । लग्निका कन्या.

अनागन्धित, (त्रि०) गन्ध+इतच् न सूंघा गया । न छूआ गया । जिसका असर दूसरेपर नहीं पडा.

अनागमिन्, (त्रि०) नास्ति आगमः अस्य गम्+णित् । न आनेवाला । न पहुंचनेवाला.

अनागस्, (त्रि०) नास्ति आगः यस्य न० ब० । निरपराधी । बेगुनाह.

अनाचार, (पु०) आ+चर्+घञ् । अप्राशस्त्येऽभावे वा नञा त० । बुरा आचार । आचारका न होना ब० । आचारहीन (त्रि०).

अनातप, (पु०) आ+तप्+अच् न० त० । धूपका न होना । छाया न० । आतपशून्य (त्रि०).

अनातुर, (त्रि०) न आतुरः । न० त० । न उत्कण्ठित । न वहुत इच्छावाला । उदासीन.

अनात्मक, (त्रि०) नास्ति आत्मा स्थिरो यत्र । जहां आत्मा स्थिर न हो । मिथ्या । अनित्य.

अनात्मज्ञ-वेदिन्, (त्रि०) न आत्मानं जानाति or न वेत्ति आत्मन्+ज्ञा+क । न० त० । आत्मज्ञानशून्य । अपने स्वरूपको न जाननेवाला । मूढ.

अनात्मन्, (पु०) अतति सातत्येन तिष्ठति, अत्+मनिन् अप्राशस्त्ये भेदार्थे च न० त० । आत्मासे भिन्न अपकृष्ट आत्मा देहादि । "अप्राप्तः प्राप्यते योऽयमत्यन्तं त्यज्यतेऽथवा । जानीयात्तमनात्मानं बुध्यन्तं वपुरादिकम्".

अनात्मनीन, (त्रि०) न आत्मने हितं आत्मन्+ख । न० त० । जो अपने लिये हितकर नहीं.

अनात्मवत्, (त्रि०) आत्मा वश्यत्वेन नास्ति अस्य । जिसका आत्मा अपने वशमें नहीं । जो इन्द्रियोंपर आज्ञा नहीं चला सक्ता.

अनात्म्य, (त्रि०) आत्मनः इदं आत्म्यं=शरीरं न० ब० । जिसका शरीर नहीं । अशरीर.

अनात्यन्तिक, (त्रि०) न आत्यन्तिकः=नित्यः न० त० । जो सदा नहीं । अनित्य । आखिरी नहीं.

अनाथ, (त्रि०) नास्ति नाथः यस्य न० त० । जिसका स्वामी नहीं । मातृ-पितृ-विहीन । अरक्षित.

अनाथसभा, (स्त्री०) अनाथानां सभा ष० त० । अनाथों (वेजारों) की सभा । गरीवखाना.

अनादर, (पु०) आ+दृ+अच् । आदरः गौरवहेतुका सम्माननना । विरोधे नञ् त० । परिभव । तिरस्कार (वह आदरका विरोधि होता है) ब० । आदरशून्य (त्रि०).

अनादि, (पु०) आदिः कारणं पूर्वकालो वा स नास्ति यस्य । जिसका सबसे पहिला समय नहिं जाना जाता । परमेश्वर । नास्ति आदिः प्राथमिको यस्मात् ५ब० । हिरण्यगर्भ (पु०) वही सृष्टिसे पहिले उपजा था । आदिशून्य (त्रि०).

अनादृत, (त्रि०) न आदृतः न० त० । निरादर किया गया । तिरस्कार किया हुआ.

अनादेय, (त्रि०) न आदातुं योग्यः । न ग्रहण (लेने)-करने योग्य । स्वीकार करनेलायक नहीं.

अनानुद, (त्रि०) अनु ददाति दा+क न० त० पृ० दीर्घः । जिसके समान दूसरा दाता न हो Ved.

अनापि, (त्रि०) न आप्यते आप् कर्मणि इन् आपि आप्तः बन्धुश्च न० ब० । मित्र वा बन्धुरहित.

अनाभयिन्, (त्रि०) आबिभेति आ भी उणा० इनि आभयिन् न० त० । सर्वथा न डराहुआ । निर्भय Ved.

अनाभू, (त्रि०) आभिमुख्येन भवति इति आभूः=स्तोता न० त० । न स्तुति करनेवाला । न सम्मुख होनेवाला । Ved.

अनामन्, (न०) अननं अनः अन्+अच्, अनं जीवनं, अमयति, रुजति, अम्+अनि । जीवनको बिगाडनेहारा । बवासीरका रोग । जिसका नाम न हो ऐसा मलमास (पु०) इस मासमें वैदिककर्म नहीं होते इसलिये नाम-रहित है । नामशून्य (त्रि०).

अनामय, (पु०) अम्+घञ्, आमं तापं याति अनेन, या+क । आमयो रोगः न० त० । रोगका न होना । आरोग्य आराम न० ब० । रोगशून्य (त्रि०).

अनामा, (स्त्री०) ब्रह्मणः शिरश्छेदनसाधनतया ग्रहणायोग्यत्वात् नास्ति नाम ग्रहणयोग्यं यस्याः ब० । मन्नन्तत्वात् डाप् । इस नामसे प्रसिद्ध मध्यमा और कनिष्ठा अङ्गुलीके बीचकी अङ्गुली । स्वार्थे कः । इसे अनामिकासी कहते हैं, इसी अङ्गुलीसे महादेवने ब्रह्माके सिरको काटा था, यह पुराणमें प्रसिद्ध है । इसीलिये इस अङ्गुलीको पवित्र करनेके आशयसे इसमें पवित्रनामक कुश धारण किया जाता है.

अनायत्त, (त्रि०) न आयत्तः । स्वाधीन । दूसरेके आधीन नहीं । खुदमुख्त्यार.

अनायन, (त्रि०) न आयनं चालनं यत्र । न हिलनेवाला । एकान्त । निश्चित । पक्का.

अनायास, (पु०) आ+यस्+घञ् । अल्पार्थे न० त० । प्रयत्नका न होना । अल्प यत्न । थोडी मिहनत । बिना क्लेश । ब० । जो प्रयत्न नहीं करता (त्रि०).

अनायासकृत, (न०) अनायासेन अल्पप्रयत्नेन कृतं न० त० । थोडेही परिश्रमसे सिद्ध होने योग्य क्वाथ आदि । थोडी मिहनतसे किया गया.

अनायुष्य, (त्रि०) आयुसे न हितं न० त० । जो आयुके लिये हितकर नहीं । दीर्घ जीवनको नाश करनेवाला (अधिक भोजन आदि).

अनारत, (त्रि०) न आरतः न० त० । न ठहरनेवाला । न रुकनेवाला । निरन्तर । लगातार.

अनारत, (न०) आ+रम्+क्त, आरतं विरतिः, अत्यन्ताभावे न० त० । कभी न ठहरना । सन्तत । अविरत । अविच्छेद । लगातार ब० । कभी न ठहरनेहारा (त्रि०).

अनारभ्य, (त्रि०) न० आरब्धुं योग्यः । न प्रारम्भ करने लायक.

अनारम्भण, (त्रि०) न आरम्भणं आश्रयः । आश्रय-रहित । निराधार.

अनारोग्य, (त्रि०) नास्ति आरोग्यं यस्मात् न० ब० । स्वास्थ्य (तन्दुरुस्ती) को बिगाडनेवाला.

अनार्जव, (पु०) ऋजोर्भाव आर्जवं सरलता स्वाच्छन्द्यं नञा ७ ब० । कुटिलता । रोग । सरलताका न होना । कुटिल (त्रि०).

अनार्तव, (त्रि०) वि० स्त्री० । न ऋतौ भवः । समयपर न हुआ । बे मौसमी (फूल आदि).

अनार्य, (त्रि०) न आर्यः । न० त० । जो आर्य (भद्र-पुरुष) नहीं । जो आदरका पात्र नहीं । दुष्ट.

अनार्यक, (ज०) न० अनार्यदेशे आर्यावर्तादिभिन्ने द्वीपान्तरादौ भवः । अनार्य+क । अगुरुकाष्ठ । ज इति पक्षे तस्मिन् जायते जन्+ड । अनार्यदेशमें उत्पन्न हुआ (त्रि०).

अनार्यतिक्त, (पु०) अनार्यप्रियस्तिक्तः शाकः पा० त० । चिराता नामसे प्रसिद्ध भूनिम्ब वृक्ष.

अनालोचित, (त्रि०) न आलोचितः । न देखा गया । न विचारा गया । न परीक्षा किया गया.

अनावर्तिन्, (त्रि०) वृत्+णिनि न० त० । न लौटनेवाला.

अनाविद्ध, (त्रि०) आ+व्यध्+क्त न० त० । न वेधा गया । न हानि पहुंचाया गया.

अनाविल, (त्रि०) न आविलः मलिनः न० त० । न मैला । न कीचडवाला । शुद्ध । साफ.

अनावृत्ति, (स्त्री०) आ+वृत्+क्तिन् न० त० । अभ्यासका न होना । आगमनका न होना । बहु० । तद्वति (त्रि०) न अभ्यास करनेवाला । न दुहरानेहारा.

अनावृष्टि, (स्त्री०) आ+ईषत्—वृष्+क्तिन् न० त० । थोडीसी वर्षाका न होना । खेतीको नाश करनेहारा उपद्रव । ईतिओंमेंसे एक.

अनाश, (त्रि०) नास्ति आशा यस्य न० ब० । जिसको आशा नहीं । निराश । बेउम्मीद.

अनाशक, (पु०) आ सम्यक् यथेच्छं आशः अशनं, आ+अश्+घञ् न० त० । यथेच्छ भोगाभाव । अपनी इच्छाके अनुसार भोगका न होना । "तमेतं वेदानुवचनेन ब्राह्मणा विविदिषन्ति यज्ञेन दानेन तपसाऽनाशकेनेति" श्रुतिः.

अनाशकायन, (न०) न नश्यति अनाशकः आत्मा तस्य अयनं प्राप्त्युपायः । आत्माके पानेका उपाय । ब्रह्मचर्य । न विवाह हुआ । ध्यानपर.

अनाशिन्, (पु०) न नश्यति, नश्+णिनि, न० त०, न अश्नाति कर्मफलं अश्+णिनि न० त० । वा नाशशून्य । कर्मफलके न भोगनेहारा । परमेश्वर.

अनाश्रमिन्, (पु०) नास्ति आश्रमः अस्य । गृहस्थ आदि आश्रमरहित । किसी आश्रममें नहीं.

अनाश्रव, (त्रि०) न+आ+श्रु+अ । न आशृणोति । न सुननेवाला । कानसे बधिर (बहिरा).

अनाश्वन्, (त्रि०) न+अश्+क्वसु नि०। जिसने भोजन नहीं किया.

अनास्, (त्रि०) आस्यते=निरास्यते ष्ठीवन अनेन इति आः=मुखं तन्नास्ति साधनत्वेन अस्य। मुखरहित। बोलनेकी शक्तिसे रहित। न बोलसकनेवाला.

अनासादित, (त्रि०) न+आ+सद्+णिच्+क्त। न प्राप्त किया। न पाया। न मिला.

अनास्था, (स्त्री०) आ+स्था+अङ्। आस्था आदरः न०त०। अनादर। आदरका न होना ब०। जिसका आदर न हो.

अनास्राव, (त्रि०) न आस्रावः न० त०। क्लेशरहित.

अनाहत, (न०) आ+हन् भावे क्त। आहतं छेदो भोगो वा न० ब०। नया कपडा जो न फटा और न दूसरेसे भोगा गया हो। तन्त्रशास्त्रमें प्रसिद्ध हृदयमें स्थित द्वादशदल (१२ पत्तोंवाला) कमल। "शब्दो ब्रह्ममयः शब्दोऽनाहतो यत्र दृश्यते। अनाहताख्यं तत् पद्मं मुनिभिः परिकीर्तितम्" इस लक्षणवाला। परा, पश्यन्ती, मध्यमा, और वैखरी इस प्रकार प्रसिद्ध वृत्तिओंमें मध्यमावाक् अनाहत शब्दसे कही जाती है, क्योंकि वह हृदयपद्ममें उपजती है ब०। कोई वस्तु जो आघात (चोट) से रहित है (त्रि०).

अनाहार, (त्रि०) न+आहारः न० त०। भोजनका त्याग व्रत (रोजा).

अनाहूत, (त्रि०) न आ+ह्वे+क्त। न बुलाया गया। न निमन्त्रित किया गया। न पुकारा गया.

अनिकेत, (त्रि०) नास्ति निकेतः नियमेन वासो यस्य ब०। नियतनिवासशून्य। जो नियमसे एक स्थानपर नहीं रहता। संन्यासी.

अनिगीर्ण, (त्रि०) न नि+गॄ+क्त न० त०। निगल लिया गया। साहित्यमें न छिपा हुआ.

अनित, (त्रि०) अन+इत। न गया। न पहुंचा.

अनित्य, (त्रि०) न नित्यः न० त०। जो सदा न हो.

अनिद्र, (त्रि०) नास्ति निद्रा यस्य न० ब०। नींदरहित। जिसको नींद नहीं आई। जागरूक.

अनिन्द्र, (त्रि०) न० ब०। इन्द्रकी उपासना न करनेवाला.

अनिभृत, (त्रि०) न+निभृतः न० त०। न गुप्त छिपा– हुआ। साधारण आम। चञ्चल। अस्थिर.

अनिमित्त, (त्रि०) नास्ति निमित्तं यस्य न० ब०। बिनकारण। जिसका कोई प्रमाण सबूत नहीं.

अनिमिष–मेष, (पु०) नास्ति निमिषः चक्षुःस्पन्दनं यस्य, मिष्–घञ्–कुटादि० न गुणः, मिष् भ्वादि० घञ्–वा ६ ब०। चक्षुःस्पन्दनशून्य। जिसकी आंख नहीं झुमकती। देवता। मच्छली। निमेषो दृष्टिप्रतिबन्धकस्तच्छून्ये विष्णौ च। जिसकी आंख कहीं नहीं रुकती। विष्णु। न निमिषति चलतीति, नि+मिष्+क न० त०। काल। कोई वस्तु जो क्रियासे शून्य हो (त्रि०).

अनियन्त्रित, (त्रि०) नि+यन्त्र+युं+क्त न० त०। नियमसे बाहिर। संकलसे निकल गया। काबूमें न आनेहारा (ब०).

अनियम, (पु०) न+नियमः न० त०। नियम कायदाका न होना। अनियमित(त्रि०) बेकायदेवाला.

अनिर, (त्रि०) न ईरयितुं शक्यते ईर्+क+पृ–ह्रस्व। न चलाया जासकनेवाला। प्रेरणा करनेको अशक्य.

अनिरुक्त, (त्रि०) न निरुक्तः न० त०। न स्पष्ट कहा गया। जिसका ठीक लक्षण नहीं हो सक्ता.

अनिरुद्ध, (पु०) न केनापि युद्धेन निरुद्धः, नि+रुध्+क्त न० त०। कामदेवका पुत्र। उषाका पति। स्वतन्त्र (त्रि०) घोडा बांधनेकी रस्सी। वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न, और अनिरुद्धनामी चतुर्व्यूहपरमेश्वरका न निषेध किया जानेहारा अत्यन्त चञ्चलचित्तका आश्रय अनिरुद्धनामी अंश (त्रि०).

अनिरुद्धपथ, (ब०) न निरुद्धः पन्था यत्र न० ब०। आकाश। वहां किसीको रोका नहीं जा सक्ता। जो मार्ग रुका न हो (त्रि०).

अनिर्देश्य, (त्रि०) निर्देश्यं जातिगुणक्रियासंज्ञाभिर्निर्देष्टुमशक्यम्। निर्+दिश्+शक्यार्थे ण्यत् न० त०। जाति, गुण, क्रिया और संज्ञासे जिसे कह नहीं सक्ते। निर्विशेष। निर्धर्मिक परमात्मा (उसको जाति गुण आदि न होनेसे "वह यह है" इस रीति निर्देश नहीं किया जा सक्ता).

अनिर्धारित, (त्रि०) न+निर्+धृ+णिच्+क्त। अनिश्चित। न निश्चय किया हुआ.

अनिर्वचनीय, (पु०) निर्वचनं निरुक्तिः लक्षणादिना ज्ञापनं तद्गोचरतया निर्वक्तुमशक्ये वियदादौ। जिसे लक्षणादिसे जता नहीं सक्ते। आकाश काल आदि। परमात्मा.

अनिर्वाण, (त्रि०) नास्ति निर्वाणं स्नानं अस्य ब०। न प्रक्षालन किया गया। न नहाया हुआ.

अनिर्विण्ण, (त्रि०) न+निर्+विद्+क्त। अविश्रान्त। न थका हुआ। न उत्साहरहित हुआ.

अनिर्वृति–त्ति, (स्त्री) न+निर्+वृत्+क्तिन्। असुख बेआरामी। चिन्ता। निर्धनता.

अनिर्वेद, (पु०) न+निर्+विद्+अ। उत्साहरहित न होना। धैर्यका न त्यागना.

अनिर्वेश, (त्रि०) न निर्वेशः न० त०। भृत्यताका न होना ब०। धूर्त। दुःखी.

अनिल, (पु०) अनिति अनेन अन्+इलच् । वायु (इसीसे सब जीव प्राण धारण कर्ते हैं) । स्वाती नक्षत्र जिसकी देवता वायु है । "वातः पञ्चाशदूनका" इसमें कहे हुएके अनुसार गणदेवताका भेद । आठ वसुओंमेंसे पांचवाँ वसु.

अनिलघ्नक, (पु०) अनिलं वातरोगं हन्ति, हन्+क । ततः प्राशस्त्ये क । (बयडा) इस नामसे प्रसिद्ध वृक्ष । इसका फल वातरोगको नाश करता है.

अनिलव्याधि, (पु०) अनिलस्य+व्याधिः ष० त० । वायुका रोग । शरीरके भीतर प्राणादि वायुका विकृत होना.

अनिलसख, (पु०) अनिलस्य वायोः सखा टच् । वायुका मित्र । अग्नि.

अनिलान्तक, (पु०) अनिलो वातरोगस्तस्यान्तकः, अन्तं करोतीति, अन्त+णिच्+ण्वुल् । जीयापुति नामसे प्रसिद्ध वृक्ष.

अनिलान्तक, (पु०) अनिलस्य अन्तकः । वायुनाशक । इङ्गुदीका वृक्ष । अङ्गारपुष्प.

अनिलामय, (पु०) अनिलकृत आमयः शाक० त० । वातरोग.

अनिलायन, (न०) अनिलस्य+अयनं मार्गः ष० त० । वायुका मार्ग । हवाईरास्ता । वायुकी गति.

अनिलाशन-आशिन्, (त्रि०) अनिलं अश्नाति । वायुको खाता है । व्रती । सर्प (सांप.)

अनिर्लोडित, (त्रि०) न+निर्+लुड्+क्त । न सुविचारित । भली भांति न सोचागया.

अनिवर्तन, (त्रि०) न निवर्तते न+नि+वृत्+अन । न लौटनेवाला । स्थिर । सत्य । न त्यागने योग्य.

अनिवार, (त्रि०) नास्ति निवारो निवारणं यस्य । जिसका निवारण न हो । अविच्छेद । सतत । निरन्तर अनिवार्य । न हटाने लायक । न निवारण करनेके योग्य.

अनिविशमान, (त्रि०) न निविशन्ते तिष्ठन्ति न+नि+विश्+शानच् मान । कभी न ठहरनेवाला । आराम न लेनेवाला । सदा चलनेवाला । विश्रामरहित.

अनिश, (त्रि०) निशा चेष्टाव्याघातः सा नास्ति यस्य व० । जो सदाही कोई न कोई व्यापार कर्ता रहे । अविरत । निरन्तर । सदा होनहारी वस्तु रात्रिके विना.

अनिष्कृत, (त्रि०) न निष्कृतः न निर+कृ+क्त त । न समाप्तः । खतम नहीं किया गया सिद्धान्त । फैंसला नहीं हुआ.

अनिष्ट, (त्रि०) इष्+क्त विरोधे नञ् त० । इष्टस्य सुखादेर्विरोधिनि प्रतिकूलवेदनीये दुःखे । सुखका विरोधी । जो अपनेको प्रतिकूल जान पड़े । दुःख । दुःखका साधन । पाप । विषाद । अपकार । न चाहा हुआ.

अनिष्टदुष्टधी, (त्रि०) अनिष्टा दुष्टा च धीः यस्य व० । बुरी और बिगडी हुई बुद्धिवाला । महानीच.

अनिष्टप्रसङ्ग, (पु०) अनिष्टः प्रसङ्गः कर्म० । न चाही हुई बातका हो जाना । मिथ्या नियम । युक्ति और पदार्थका सम्बन्ध.

अनिष्टानुबन्धिन्, (त्रि०) अनिष्टं अनुबध्नाति । उप० त० । अप्रिय विपत्तिको अनुसरण करता है । दुःख देनेवाला.

अनिष्टाशंसिन्, (त्रि०) अनिष्टं आशंसते उप० त० । दुःखका वृत्तान्त सुनाने वा सूचन करनेवाला.

अनिष्पत्ति, (स्त्री०) न निष्पद्यते न+निर्+पद्+क्तिन् । असमाप्ति । न पुरा होना । अपूर्णता । न सिद्ध होना.

अनिष्पत्रम्, (अव्य०) निःसृतं पत्रं पक्षो यत्र तादृशं न भवति । वह बाकी जिसका परोंवाला भाग अतिवेगसे न चलनेके कारण दूसरी ओर निकल नहीं सक्ता.

अनिस्तीर्ण, (त्रि०) न+निर्+तॄ+क्त । न लांघा गया । न निकला गया । एक ओर न किया गया । लगाया गया दोष दूर न किया गया । उत्तर न दिया गया.

अनिस्तीर्णाभियोग, (पु०) न निस्तीर्णः अभियोगः येन व० । अपनेपर लगाये गये दोषका उत्तर न देसकनेवाला प्रतिवादी (Defendent).

अनीक, (न०) अनित्यनेन, अन्+ईकन् । सेना (क्योंकि वह जीवनको बचाती है) । न नीयते अपसार्यतेऽस्मात् । नी+क्विप् ब० कप् ह्रस्वाभावः । युद्ध (यहां कोई किसीको मरनेसे नहि हटाता).

अनीकस्थ, (पु०) अनीके युद्धे तिष्ठति स्था+क । युद्धमें सेना.

अनीकिनी, (स्त्री०) अनीकं युद्धं प्रयोजनतया अस्त्यस्याः अनीक+इनि । जिसका प्रयोजन लडाई करना है । सेना । हाथी आदिकी विशेषसंख्यावाली सेना । वह संख्या यह है कि हाथी २१८७ । रथ २१८७ । घोडे ६५६१ । पैदल १०९३५ सम्पूर्णयोग २१८७०.

अनीड, (त्रि०) नास्ति नीडं यस्य व० । निराश्रय । शरीररहित । अग्नि । बिनघोंसले.

अनील, (त्रि०) न नीलः=नीलवर्णः । न नीला । चिट्टा (श्वेत) आदि । अनीलवाजिन् पु० । चिट्टे घोडेवाला. अर्जुनका नाम.

अनीश, (पु०) नास्ति ईशो नियन्ता यस्य व० । जिसपर आज्ञा चलानेहारा कोई नहिं । सबको नियमपर चलानेहारा विष्णु । न० त० । ईश्वरभिन्न । स्वामीसे भिन्न.

अनीश्वर, (त्रि०) न ईश्वरः+ईष्टे न० त० । नास्ति ईश्वरः यस्य न० व० । उत्कृष्टं अपनेसे अच्छा पुरुष हीन । जिसके सिरपर दूसरेकी आज्ञा नहीं । अवश । न काबू किया गया । असमर्थ । नाकाबिल.

अनीश्वरवाद, (पु०) नास्ति ईश्वर इति वादः वदनं । परमेश्वरको न स्वीकार करनेवाला । नास्तिक.

अनीह, (त्रि०) ईह्+अङ् न० ब० । जिसकी कोई इच्छा न हो । जिसे कोई चेष्टा (व्यापार) न हो.

अनु, (अव्य०) अन्+उ । उपसर्गविशेष । सह । पीछे । निकृष्ट । सादृश्य । लक्षण । वीप्सा । इत्थम्भाव । भाग । हीन । आयाम । समीप आदि अर्थोंमें आता है.

अनुक, (त्रि०) अनुकामयते अनु+कम्+ड । कामनावाला । कामी । जिसको विषयकी इच्छा बहुत हो.

अनुकथ, चुरा० पर० अनुकथनं+अन्वादेश=एकबातके पीछे दूसरी बातका वर्णन करना । अगली बातका प्रगट करना.

अनुकम्, (अव्य०) अनुकामयते अनु+कम्+क्विप् । वितर्क दलील.

अनुकम्प्, भ्वा० आ० । दया करना (रहम करना) । तरस करना । सहानुभूति दिखाना.

अनुकम्पा, (स्त्री०) अनु+कम्प+अ । दया । थोडासा हिलना.

अनुकरण, (न०) सादृश्ये अनु+कृ+ल्युट् । अनुकरण । नकल (वह देश, भाषा, अङ्गादिसे समान कर दिखाना) । अनुक्रियतेऽनेनेति करणे ल्युट् । नकल करनेका साधन.

अनुकर्ष–ण, (पु०) अनुकृष्यते स्वसंबद्धेन चक्रेण, अनु+कृष्+घञ् । रथके नीचे रहनेहारी पहियेके ऊपर बंधीहुई लकडी । प्रथम सूत्रमें ग्रहण किये गये पद आदिको अगले सूत्रमें अन्वयके लिये खेंचना.

अनुकल्प, (पु०) कल्प्यते विधीयते इति कृप्+णिच्+अच् । कल्पो विहितः अनु हीनः कल्पो मुख्यकल्पादधमः, प्रा० स० । गौणकल्प । प्रतिनिधि । एकके स्थानमें दूसरी वस्तुकी कल्पना करना । जैसे "यदि शहत न हो तो गुडसे काम चलाना" यह अनुकल्प है.

अनुकाम, (त्रि०) कामस्य सदृशः अनुरूपो वा । इच्छानुसार चाहके मुआफिक । मरजीमुताबिक । अनुकामयते कम्+अच् । इच्छासे पूर्ण । कामी । शहवती.

अनुकामीन, (त्रि०) कामस्य अभिलाषस्य सदृशं अनुकामं । सादृश्येऽव्ययी० । ततः गच्छतीत्यर्थे ख । अपनी इच्छापूर्वक गमन करनेहारा.

अनुकार, (पु०) अनु+कृ+घञ् । देश, भाषा, आदिसे सदृश करना.

अनुकाल, (त्रि०) कालस्य योग्यः । समयपर । समयानुसार । ठीक वक्तपर हुआ.

अनुकूल, (त्रि०) कूलं आवरणं स्नेहेनानुबन्धमिति यावत् । अनुगतस्तं अत्या० स० । सहचर । साथ चलनेहारा । सहाय । अपना पक्षपाती । अलङ्कारशास्त्रमें प्रसिद्ध एक प्रकारका नायक । सा० ३ परि०.

अनुकृ, तना० उभ० । पीछे करना । पीछे होजाना । अनुकरण । नकल करना.

अनुक्रन्द, भ्वा० पर० । पीछे चिलाना । शब्दका उत्तर देना.

अनुक्रम्, भ्वा० उभ०, दिवा० प० । पीछे जाना । अनुसरण करना । इच्छा करना । गिनना । नियमानुसार बीचमेंसे निकलजाना । समझना.

अनुक्रम; (पु०) अनु+क्रम्+घञ् न वृद्धिः । परिपाटी । क्रम । आनुपूर्व्येऽव्ययी० । नियमानुसार.

अनुक्रमणिका, (स्त्री०) अनुक्रम्यते यथोत्तरं परिपाट्या आरभ्यतेऽनया अनु+क्रम् करणे ल्युट् स्त्रीत्वात् ङीप् स्वार्थे के ह्रस्वः । परिपाटीको जतानेहारी । भूमिका (दीबाचह) स्वार्थे क भावे । अनुक्रमणी । (यहभी) जिसमें किसी ग्रन्थका विषय संक्षेपसे दिखाया जाय.

अनुक्रोश, (पु०) अनुक्रोशति अनेन । क्रुश् बुलाना और रोना+घञ् । दया । अनुगतः क्रोशं गति स० । जो एक कोसपर पहुंचा हो (त्रि०).

अनुख्या, अदा० प० Ved (दूरात् अवलोकनं) दूरसे देखना । कालसे देखना । खबर देना.

अनुग, (त्रि०) अनु+गम्+ड । पीछे जानेहारा । सहचर । स्वामी । नौकर.

अनुगत, (त्रि०) अनु+गम्+क्त । शरणापन्न । आधीन । पीछे जानेहारा । साथ जानेहारा । सामान्य धर्मके ग्रहणसे जो सम्पूर्ण विशेषधर्मका ग्रहण कियाजाय.

अनुगतार्थ, (त्रि०) अनुगतः=संगतः अर्थः अस्य ब० । यथावत् संघटित जानेलायक अर्थको जाननेवाला.

अनुगम्, भ्वा० प० । किसीके पीछे जाना । पहुंचना । किसीका साथ करना.

अनुगम, (पु०) अनु+गम्+घञ्, वृद्ध्यभावः । पीछे जाना । सहायी होना । आधीन होना । सामान्यधर्मसे सम्पूर्णविशेषरूपोंका संग्रह करना.

अनुगवीन, (पु०) अनुगु+गोः पश्चात्पर्याप्तं यथा गच्छति सोऽनुगवीनः अनुगु+ख+ईन । गौओंके पीछे २ बहुत जाता है । गोपाल गुज्जर.

अनुगिरम्, (अव्य०) गिरमनुगतम् । पर्वतके पास.

अनुगुण, (त्रि०) अनुकूलो गुणो यस्य । अनुकूल । अनुगत । आज्ञापर चलनेहारा । किसी बातमें विरोध न दिखानेहारा.

अनुगै, भ्वा० प० । किसी गाते हुएके पीछे गाना.

अनुग्रह, (पु०) अनु+ग्रह+अप् । अभीष्ट सम्पादनेच्छारूपे प्रसादे । इस प्रकारकी प्रसन्नता दिखानी कि जिसमें दूसरेका मनोरथ पूर्ण हो । अनुकूलता । ऐसी कृपा कि जिसमें किसीका वा अपना अनिष्ट निवारण कर इष्टसाधन किया जाय । "विरूप, उन्मत्त, निर्धन इनको निन्दारहित दान और मानसे पूरण करनेका नाम अनुग्रह कहा है" । दरिद्र आदिका पोषण करना । ग्रहो ग्रहणं सूर्यादिः ग्रहो वा अनुगतस्तं गतिस० । ग्रहके पास । सूर्य आदि ग्रहके पास.

अनुग्राह्य,(त्रि०)अनु+ग्रह+यत् Palulial Partecipel अनुग्रह । मिहर्वानी करने योग्य.

अनुघटन, (न०) एक दूसरेके साथ मिलाना.

अनुचर, (त्रि०) अनु+चर्+ट । सहचर । साथ जानेहारा । पीछे जानेहारा । दास आदि । स्त्रियां ङीप् । अनुगतश्चरं दूतं गतिस० । दूतानुग । दूतके पीछे जानेहारा (त्रि०).

अनुचिन्त्, चुरा० प० । विचारना । खल करना । मनमें समझना.

अनुज, (त्रि०) अनु पश्चात् जायते जन्+ड । पीछे उत्पन्न हुआ सहोदर भ्राता, वैसीही भगिनी (बहिन) (स्त्री०).

अनुजन्मन्, (पु०) अनु जन्म यस्य ब० । जिसका पीछे जन्म हुआ है । छोटा भाई.

अनुजीविन्, (पु०) अनुजीवितुं आश्रयितुं शीलमस्य । अनु+जीव+णिनि । सेवक । आश्रित.

अनुज्ञा, (स्त्री०) अनु+ज्ञा+अङ् । आदेश । हुकम.

अनुज्येष्ठ, (त्रि०) अनुगतो ज्येष्ठम् । सबसे बडेके पीछे चलनेवाला । बडेछोटेके लिहाजसे । क्रि० वि०.

अनुतर्ष, (न०) अनु तृष्यतेऽनेन । करणे घञ् । सुरापानपात्र । मद्यपीनेका कटोरा वा पियाला । मद्य । मद्यपान । भावे घञ् । अभिलाष । पीनेकी इच्छा.

अनुताप, (पु०) अनु+तप्+घञ् । इदमनुचितं कृतमिति स्वकृतवस्तुनो दुःखजनकतया ज्ञानेन पश्चात्तापे । यह अयोग्य किया है इस प्रकार अपनी कीहुई बातके जाननेसे दुःखजनकताके कारण पश्चात्ताप करना । पश्चात्ताप । पछताना.

अनुत्तम, (त्रि०) न उत्तमो यस्मात् ब० । सर्वोत्तम । जिस्से और अच्छा नहीं । सर्वोत्कृष्ट.

अनुत्तर, (त्रि०) उत्तर उत्तमः नञा ५ ब० । अत्यन्त श्रेष्ठ । बहुत अच्छा ६ ब० । उत्तरके वचनसे रहित । जिसका उत्तर नहीं दिया गया । न० त० । उत्तरकी दिशासे भिन्न ओर (स्त्री०)

अनुत्तरङ्ग, (त्रि०) न उद्गताः तरङ्गा यस्मिन् ब० । जिसमें तरंगे लहराती नहीं । निश्चल । ठहराहुआ.

अनुत्सेक, (पु०) उत्सेकस्य अभावः । औद्धत्यका न होना ब० । निरभिमान । नामगरूर.

अनुद, (त्रि०) न नुदति अनुददाति तुल्यं ददाति दा+क) Ved प्रेरणा नहीं करता एक जैसा देनेवाला । बराबर बांटनेवाला.

अनुदक, (त्रि०) नास्ति उदकं यस्मिन् । निर्जलप्रदेश । जलविन श्राद्ध.

अनुदर, (त्रि०) न+अल्पं उदरं यस्य अल्पार्थे नञ् । सीधा पेटवाला । पतले पेटवाला.

अनुदा, जुहो० उभ० । लौटादेना । चुकादेना.

अनुदात्त, (पु०) उच्चैरात्तः उच्चारितः उदात्तः न० त० । अक्षर बोलनेके स्थान कण्ठ आदिमें किसी स्वरको नीचे बोलनेका यत्नविशेष । स्वरोंका नीचा स्वर.

अनुदार, (त्रि०) न उदारः न० त० । जो उदार खुला दिल नहीं । सूम । अनार्य । नास्ति उदारः यस्मात् ब० । जिस्से और उदार नहीं । खुलादिल (अनुगतो दारान्) स्त्रीसे अनुसरण किया गया.

अनुदित, (पु०) उत्+इण्+क्त । ईषदर्थे न० त० । वह समय कि जिसमें थोडासा सूर्य उदय हो और कहीं २ तारेभी दृष्टिगोचर हों । "उदितेऽनुदिते चैव" इति मनुः.

अनुदिश्, तुदा० प० । सूचन । ताकना । जतलाना । इशारा करना.

अनुदेश, (पु०) देशं अनुगतः । पीछेकी ओर इशारा करना । एक नियम जो पहिले नियमकी सूचना देताहै । क्रमसंख्या.

अनुदैर्घ्य, (त्रि०) दैर्घ्यं अनुगतः लम्बाई । लंबापन.

अनुद्धत, (त्रि०) न उद्धतः न उठा हुआ । दीन । विनीत । अहंकाररहित । आर्य.

अनुद्योग, (त्रि०) नास्ति उद्योगः यस्य ६ ब० । जो हिम्मती नहीं । परिश्रमी नहीं । आलसी.

अनुद्रु, भ्वा० प० । पीछे भागना । अनुसरण करना.

अनुद्रुत (त्रि०) अनु+द्रु+क्त । पश्चाद्गत । पीछे गया । "आधी मात्राको द्रुत और द्रुतके आधेको अनुद्रुत कहते हैं" ऐसे लक्षणवाला बजानेके लिये समयविशेष.

अनुद्वाह, (पु०) न उद्वाहः । विवाहका न होना.

अनुद्विग्न, (त्रि०) न उद्विग्नः । न व्याकुल । मनमें सुखी । न घबराया हुआ.

अनुधावन, (न०) अनु+धाव्+ल्युट् । पीछे जाना । तत्त्वनिश्चयके लिये पीछे जाना । अनुसन्धान । तालश करना । पीछे भागना.

अनुध्या, (स्त्री०) अनु+ध्यै+अङ् । अनुचिन्तन । अनुग्रह । आसक्ति । वारवार सोचना । कृपा करना । एक बातमें लगजाना । किसी विषयमें विशेष संग करना.

अनुध्यै, भ्वा० प० । किसीका चिन्तन करना । सावधानीसे विचार करना । किसीका भला चाहना । आशीषृदेना.

अनुनय, (पु०) अनु+नी+अच् । विनय । प्रार्थना । प्रणिपात । झुकना । सान्त्वन (ठंडा करना).

अनुनासिक, (पु०) अनुगता नासां अत्या० स० तत्रोच्चार्यमाणार्थे ठः । वर्गोंके अन्त्याक्षर ङ,ञ,ण,न,म, जिनका नासासहित मुखसे उच्चारण किया जाता है.

अनुन्नत, (त्रि०) न उन्नतः । न उठा हुआ । न ऊंचा हुआ.

अनुपकारिन्, (त्रि०) नास्ति उपकारः यस्मात् न० ब० । उपकार करनेवाला । कियेको न जाननेवाला । अकृतज्ञ । भलाईका बदला न देनेवाला.

अनुपथ, (त्रि०) पन्थानं अनुगतः । मार्गका अनुसरण करनेवाला । रास्तेके साथ २ हुआ ।–(थः) । मार्ग । अनुकूलमार्ग ।–थम्–क्रि० वि० । सडकके साथ २.

अनुपद्, दिवा० आ० । रामायणादिमें पहले भी पीछे जाना । अनुसरण करना । सेवा करना । उत्कण्ठित होना । किसीके लिये आसक्त होना जैसी स्त्री.

अनुपद्, (त्रि०) पद्+क्विप् Ved. किसीबातका होना । प्रतिदिन मिल सकनेवाला अन्न.

अनुपद, (अव्य०) पदस्य पश्चात् अव्ययी० । पीछे जाना । अव्यवधान । बिना फरक । अनुगतं पदम् । अत्या० स० । पीछे जानेहारा (त्रि०).

अनुपदिन्, (त्रि०) अनुपदं अन्वेष्टा, अनुपद+ अन्वेष्टरीत्यर्थे इनि । अन्वेषणाकर्ता । खोजनेहारा । गौओंकी तालाश करनेहारा.। कई ऐसा कहते हैं (स्त्रियां ङीप्).

अनुपदीना, (स्त्री०) अनुपदस्य आयामतुल्यायामः आयामेऽव्ययी० अनुपदं बद्धा इत्यर्थे ख । पांव बराबर लम्बी पांवमें बांधी गई खडाओं । मौजा इसनामसे प्रसिद्ध.

अनुपधि, (त्रि०) नास्ति उपधिः=छलं यस्य न० ब । निष्कपट । छलरहित.

अनुपनेत, (त्रि०) न युक्त मिला हुआ जिसका यज्ञोपवीतसंस्कार नहीं हुआ । अनुपनीत (उप+इ+क्त+न).

अनुपपत्ति, (त्रि०) उप+पद्+क्तिन् । उपपत्तिर्युक्तिः न० त० । युक्ति (दलील) का न होना । असङ्गत जिसका सम्बन्ध न बने.

अनुपम, (त्रि०) उप+मा+अच् न० त० । उपमाशून्य । सादृश्यरहित । उत्तम । जिसके बराबर और कोई न हो । कुमुद नाम दिशाके हाथीकी (स्त्री०).

अनुपयोग, (त्रि०) न उपयोगः यस्य न०ब० । वृथा ।–गः (पु०) निरर्थकता । न काममें लाया गया अभादि.

अनुपरत, (त्रि०) उप+रम्+क्त न० त० । न हटाहुआ । जिसकी इच्छा निवृत्त न हो.

अनुपलब्धि, (स्त्री०) उपलभ्+क्तिन् न० त० । लाभका न होना । न मिलना । प्रत्यक्षका अभाव । आंखसे न दीखना । अनुपलब्धिमें कई एक कारण हैं " अतिदूरात् सामीप्यात् इन्द्रियघातात् मनोऽनवस्थानात् । सौक्ष्म्यात् व्यवधानात् अभिभवात् समानाभिहारात् च " इस प्रकार सांख्यकारिकामें कहे हैं.

अनुपवीतिन्, (पु०) न उपवीतं यस्य न० ब० । जो अपनी जातिके अनुसार यज्ञोपवीत धारण नहीं करता.

अनुपसंहारिन्, (पु०) उप+सम्+हृ+णिच्+णिनि । न्यायमतमें कहागया एक प्रकारका हेत्वाभास (दुष्ट हेतु) । ऐसा हेतु कि जिसमें अन्वय एवं व्यतिरेकका कोई दृष्टान्त न बन सके । जैसे " सर्वं अनित्यं प्रमेयत्वात् " इस अनुमानमें " सर्वं " को " पक्षत्व " होनेसे अन्वयमें दृष्टान्त नहिं हो सक्ता और व्यतिरेकमें दृष्टान्त बनता है, क्योंकि " सर्वं " को प्रमेयता होनेसे उसका अभाव (अप्रमेयत्व) कहींभी सिद्ध नहिं हो सक्ता.

अनुपसेचन, (त्रि०) नास्ति उपसेचनं यस्य ब० । उपसेचनके विना आहारवाला । जिसके पास कोई चटनी, दही, आचार आदि नहीं.

अनुपस्कृत, (त्रि०) न उपस्कृतः न० त० । न साफ (पालिश) किया जैसा–चांदी । उपालंभ (उरहना) विना । न पका हुआ.

अनुपहत, (त्रि०) न उपहतः । न विगड़ा हुआ । शुद्ध । न काममें लाया । नया वस्त्र.

अनुपा, अदा० प० । पीछे पीना । साथ २ पीना.

अनुपाकृत, (त्रि०) उप+आ+कृ+क्त न० त० । मन्त्रोंसे यज्ञमें पशुका पूजन आदि संस्कार उपाकरण कहलाता है उसे रहित.

अनुपात, (पु०) अनु+पत् करणे घञ् । अङ्कशास्त्रमें प्रसिद्ध त्रैराशिक । पहिले अङ्क आनेके अनुसार दूसरे अङ्कका आना । भावे घञ् । पीछे गिरना.

अनुपाल, चुरा०. प० । रक्षा करना । निरीक्षण करना.

अनुपातक, (न०) अनुपातयति स्वानुरूपं नरकं गमयति अनु+पत्+णिच्+ण्वुल् । ब्रह्महत्या आदि महापातकके समान वेदनिन्दा आदिसे उत्पन्न हुआ एक प्रकारका पाप । ये सम्पूर्ण पाप पैंतीस कारणोंसे उत्पन्न होनेके कारण संख्यामें ३५ हैं.

अनुपान, (न०) अनु भेषजेन सह पश्चात् वा पीयते कर्मणि ल्युट् । औषध (दवाई) का अङ्ग । उसके साथ वा पीछे पीने योग्य मधु गुड़ आदि । जलके पास जल (अव्य०) सामीप्ये अव्य०.

पद्म० ६

अनुपुरुष, (पु०) अनुगतः अन्यं पुरुषम् । किसी पुरुषके पीछे २ चलनेवाला । अनुसारी.

अनुपूर्व, (पु०) अनुगतं पूर्व परिपाटीं । गतिस० । यथाक्रम । सिलसिलेवार.

अनुप्त, (त्रि०) वप्+क्त न० । न वपन किया, न बोआ गया बीज.

अनुप्त्रिम, (त्रि०)वप्+त्रिमक् (न०) बीजारोपण (बो०) बिना ही बढ गया.

अनुप्राप्, स्वा० प० । पाना । लाभ करना । पहुंचना । पकडलेना.

अनुप्रास, (पु०) अनु+प्र+अस्+घञ् । स्वरवैषम्य (स्वरभेद) होने परभी तुल्यवर्णोंकी रचनावाला अलङ्कार । काव्यालङ्कारविशेष । तुल्यवर्णोंकी रचना.

अनुप्लव, (पु०) अनु+प्लु+अच् । सहाय करनेहारा । अनुचर । दास.

अनुप्लु, भ्वा० आ० । पीछे भागना.

अनुबन्ध, (पु०) अनु+बन्ध्+यथायथं भावादौ घञ् । बांधना । इच्छापूर्वक दोष करना । वातपित्तादि दोषोंमेंसे अप्रधान, धातु, प्रत्यय, आगम, और आदेशमें गुण, वृद्धि आदि कार्यविशेषके लिये लगाया गया कोई वर्ण, जो कि पदकी सिद्धिकालमें इत् होकर लोप हो जाता है । मुख्यको अनुसरण करनेहारा अप्रधान । कथन किये गयेको अनुसरण करनेहारा संबन्ध । पीछे होनेवाला शुभ परिणाम । शास्त्रके प्रारम्भमें कथन करनेके उचित अधिकारी, विषय, प्रयोजन और सम्बन्धकी रचना । फलका साधन । पुत्र वा शिष्य जो अपने माता पिता वा आचार्यका अनुसरण कर्ता है । निरन्तर वंशका होना.

अनुबन्धिन्, (त्रि०) अनुबध्नाति, अनु+बन्ध्+णिनि । सहचर । अनुचर । व्यापक । दास । फैलाहुआ । स्त्रियां ङीप्.

अनुबन्धी, (स्त्री०) अनुबध्यतेऽतिश्वासेन म्यप्रियतेऽनया अनु+बन्ध्+घञ् गौरा० ङीष् । हिक्का रोग । हिचकी । तृष्णा.

अनुबन्ध्य, (त्रि०) वधार्थ बन्धोऽनुबन्धः ण्यत् । यज्ञमें मारनेके लिये बांधीगई गौ आदि.

अनुबलं, (न०) अनु–पश्चात् स्थितं बलम् । पीछे ठहरी हुई सेना । सहायक सेना.

अनुबोध, (पु०) अनु+बुध्+णिच् घञ् । पहिले लेप किये-गये चन्दन आदिके गन्धको उद्दीपन करनेके लिये फिर मर्दन करना । पीछे जानना.

अनुब्राह्मणं, (न०) ब्राह्मणसदृशो ग्रन्थः । ब्राह्मणके सदृश ग्रन्थ.

अनुभव, (पु०) अनु+भू+अप् । वह ज्ञान जो स्मरणसे भिन्न हो । सबसे पहिला ज्ञान (जो किसी संस्कारके विना हो).

अनुभाव, (पु०) अनुभावयति उद्बोधयत्यनेन, अनु+भू+णिच् करणे घञ् । राजाओंका विशेष तेज जो कोष दण्ड आदिसे उत्पन्न होता है । सामर्थ्य । कर्तरि अच् । अलङ्कारशास्त्रमें प्रसिद्ध रसको प्रकट करनेहारा । “ जो मनोगत भावको साक्षात् प्रकट करें वे अनुभाव कहे जाते हैं” इस प्रकारके लक्षणवाला भौंका चढना आदि.

अनुभूति, (स्त्री०) अनुभूयते अनु+भू+क्तिन् । ज्ञान । पहिचान । समग्र न्यायमें प्रत्यक्षादि लब्ध ज्ञान.

अनुभ्रातृ, (पु०) अनुगतो भ्रातरम् । भाईके पीछे हुआ । कनिष्ठ भ्राता । छोटा भाई.

अनुमत, (त्रि०) अनु+मन्+क्त । आपही किसी काममें लगनेपर “ हां यह कीजिये ” ऐसे प्रोत्साहनके लिये मानागया । सम्मत । मंजूर.

अनुमति, (स्त्री०) अनु+मन्+क्तिन् । मान लेना । अनुज्ञा करना । सलाह । अनुमन्यते कलाहीनत्वेऽपि पूर्णिमाविहितयागादिकरणायानुज्ञायतेऽस्यां, अधिकरणे क्तिन् । कलासे हीन चन्द्रमावाली शुक्ल चतुर्दशीयुक्त पूर्णिमा तिथि.

अनुमत्त, (त्रि०) अनु+मद्+क्त । हर्षसे मतवारा हुआ.

अनुमन्, दिवा० आ० । मान लेना । स्वीकार करना.

अनुमन्तृ, (त्रि०) अनु+मन्+तृच् । आप उदासीन रहकर कार्यमें प्रवृत्तहुए दूसरेका उत्साह वढानेके लिये अनुज्ञा करनेहारा । माननेहारा.

अनुमन्त्र, चुरा० आ० । पवित्र मन्त्रोंसे शुद्ध करना.

अनुमरण, (न०) अनु+मृङ्+ल्युट् । भर्ता मरगया तिसका देह न मिला तो उसकी खडाओं आदि ले पृथक् चितापर चढ स्त्रियोंका शरीर छोडना । पीछे मरना.

अनुमान, (न०) अनु+मि+मा वा+भावादौ ल्युट् । व्याप्त (थोडे देशमें रहनेहारे) का निश्चय करना । जैसे अग्नि धूमका व्यापक है तो धूम उसका व्याप्त हुआ इस प्रकार दोनोंका कईवार पाकस्थान आदिमें सहचार (इकठा रहना) देख पीछे कभी पर्वत आदिमें उठरही शिखावाले धूमका दर्शन कर वहां (पर्वत आदिमें) “आग है” यह निश्चय होता है । करणे ल्युट् । अनुमानका साधन धूम आदि । श्रुतिहीको स्वतःप्रमाण्य है, जहां साक्षात् श्रुति नहिं सुनीजाती वहां स्मृतिवाक्यसे श्रुतिवाक्यका अनुमान करना । इसप्रकार श्रुतिका अनुमान करानेहारा स्मृतिवाक्यभी अनुमानपदसे कहाजाता है ऐसा मीमांसक कहते हैं.

अनुमिति, (स्त्री०) अनु+मि–मा वा क्तिन् । हेतु वा तर्कसे किसी चीजको जानना.

अनुमित्सा, (स्त्री०) अनुमातुं इच्छा+अनु+मा+सन् अङ् । अनुमान करनेकी इच्छा.

अनुमासः, (पु०) अनुगतो मासः । अगला महीना ।–सम् (अव्य०) प्रत्येक मास महीनेवाद महीना.

अनुमोद, (पु०) अनु+मुद्+घञ् । तूने जो किया वह मुझको अच्छा लगा । इस प्रकार बोलना । औरके सुखसे सुखी । आनंद । खुशी.

अनुमृ, तुदा० आ० । म्रियते । मत्रे । पीछे मरना.

अनुया, अदा० प० । अनुसरण करना । पीछे जाना.

अनुयाज, (पु०) अनु+यज्+घञ् कुत्वाभावः । अमावास्या और पौर्णमासीके अंग प्रयाज आदि पांच याग.

अनुयात्रिक, (पु०) अनुयात्रा=अनुगमनं अस्ति अस्य–ठन् । अनुसारी । अनुचर । नौकर.

अनुयायिन्, (त्रि०) अनु+या+णिनि । सदृश । अनुचर । पीछे जानेहारा । दास आदि । स्त्रियां ङीप्.

अनुयुज्, रुधा० आ० । पूछना । प्रश्न करना.

अनुयोग, (पु०) अनुयुज्यते कथनाय नियुज्यते अनु+युज्+घञ् । प्रश्न । प्रश्न होनेपर पूछागया कहनेको प्रवृत्त होता है.

अनुरथ्या, (स्त्री०) रथ्यां अन्वायतं स्थिता । पदमार्ग । पावका रास्ता । पगडण्डी.

अनुराग, (पु०) अनु+रञ्ज+घञ् । अत्यन्तप्रीति । प्रेम । अनुरूपो रागः प्रा० स० । वहुत प्रीति करनेहारा (त्रि०).

अनुरात्र, (त्रि०) रात्रिं अनुगतः प्रा० स० । रातोरात । –त्रं-अव्य० । रात्रमें । प्रत्येक रात्रि । रात पीछे रात.

अनुराधा, (स्त्री०) २७ नक्षत्रोंमें १७ वां नक्षत्र । अनुगता राधां विशाखां । अत्या० स०.

अनुरुध, रुधा० उभ० । निरोध करना । रोकना । वन्द करना.

अनुरूप, (अव्य०) रूपस्य सादृश्ये योग्यत्वे वा अव्ययी० । समानता । एक जैसा । मानिन्द । योग्यता । "अर्श-आद्यचि" सदृश । योग्य (त्रि०).

अनुरोध, (पु०) अनु+रुध्+घञ् । रुकावट । अनुसरण । पीछा करना । सेवा करने योग्य स्वामी आदिकी अभिलाषाको पूरा करनेकी इच्छा.

अनुलाप, (पु०) अनु वारं वारं लप्यते लप्+घञ् । वार-वार कहना.

अनुलेप, (पु०) अनु+लिप्+भावे घञ् । चन्दन आदिका मलना । " कर्मणि घञ्" । मलागया चन्दनादि.

अनुलोम, (पु०) अनु+लोमन् यथाक्रमे अव्ययी० अच् । यथाक्रम । क्रमानुसार सिलसिलेवार.

अनुलोमज, (पु०) अनुलोमेन यथाक्रमेण जातः, जन्+ड । विवाहगई क्षत्रिया आदि स्त्रियोंमें ब्राह्मण आदि उत्कृष्टवर्णोंसे उत्पन्न हुआ मूर्धाभिषिक्त आदि संकीर्ण (मिलाहुआ) वर्ण.

अनुवर्तन, (पु०) अनुगतो वर्तनमाराध्यादेरिष्टसम्पादनं अत्या० स० । अनु+वृत्+ल्युट् । स्वामी आदिकी इच्छाको पूरा करना । अनुरोध । लिहाज । रुकावट । पीछा करना.

अनुवंश, (पु०) वंशं अनुगतो वृत्तान्तः । परम्परागत वृत्तान्त । खान्दानसे मिलता जुलता हाल.

अनुवाक, (पु०) अनु+उच्यते+वच्+घञ् । कुत्वं गानशून्य ऋग्विशेष । ऋग् और यजुःसमूह । वेदका अंश । वेदका भाग । शास्त्रनामसे प्रसिद्ध.

अनुवाक्या, (स्त्री०) अनु+वच्+ण्यत् कुत्वं । प्रशास्ता नामी ऋत्विग्भेदसे पढाने योग्य देवताके बुलानेका मन्त्र । वैदिकस्तोत्र । वैदिकविधि.

अनुवाद, (पु०) अनु+वद्+घञ् । जानेगये अर्थको वर्णन करना । सिद्ध (बनाहुआ) की रचना । दूसरे प्रमाणसे जानेहुए अर्थको शब्दसे कहना । कहेहुएको दूसरी भाषामें कहना । तर्जुमा.

अनुवासन, (न०) अनु+वस्+ल्युट् । धूप आदिसे सुगन्धियुक्त करना । स्नेहयुक्त करना.

अनुविधा, जु० उभ० । नियम वताना । आज्ञा मानना । कहेहुएके पीछे चलना.

अनुविधायिन्, (त्रि०) अनु+वि+धा+इन् । आज्ञाकारी । फर्मांवर्दार । हुकम माननेवाला.

अनुवृत्त, (त्रि०) अनु+वृत्+क्त । फैलाहुआ । पालागया । पीछे गया । प्रीतिवाला । पीछा करनेहारा.

अनुवृत्ति, (स्त्री०) अनु+वृत्+क्तिन् । प्रवाहरूपसे पीछा करना । अनुरोध । सेवा । दूसरेकी इच्छापर चलना । आनुकूल्य । व्याकरणशास्त्रमें प्रसिद्ध पहिले सूत्रोंमें न ग्रहण कियेगये पद आदिको अगले सूत्रोंमें खेंचनारूप अध्याहार.

अनुवेलम्, (अव्य०) वेलां वेलां । हरवक्त । नित्य.

अनुव्यध्, दि० प० । मारना । टकराना । वेधना.

अनुव्रज्या, (स्त्री०) अनु+व्रज्+क्यप् । अनुसरण आदिरूप सेवन । सेवा । पीछा करना.

अनुव्रत, (त्रि०) अनुकूलं व्रतं=कर्म यस्य ब० । आज्ञाकारी । धर्मात्मा । भक्त.

अनुशतिक, (त्रि०) शतेन क्रीतः शत+ठन् । एकसौपर खरीदा गया.

अनुशय, (पु०)अनु+शीङ्+अच् । अत्यन्त द्वेष । वहुत वैर । पश्चात्ताप, पहिला वैर । खोजने योग्य वस्तु.

अनुशयिन्, अनु+शीङ्+इनि । कर्मके नाश होनेतक चन्द्रमाके लोकमें रहकर पश्चात्तापयुक्त भूमिलोकमें जन्म लेनेके लिये आनेको प्रवृत्त हुआ जीव । पश्चात्तापवाला (त्रि०).

अनुशासन, (न०) अनु+शास्+ल्युट् । शासन । आज्ञा । हुक्म । उपदेश । हुक्म करना । "शिष्यते आख्यायते लक्षणादिना" इति करणे ल्युट् । अतथाभूत (जो उपदेश करनेके योग्य नहिं) शब्दोंमेंसे पृथक् कर उपदेश करने योग्य शब्दोंका समझाना । जैसे व्याकरणमें असाधुशब्दोंमेंसे साधुशब्दोंकी विवेचना कर बोधन किया जाता है.

अनुशी, अदा० आ० । लेटना । किसीके साथ सो जाना । पछताना.

अनुशीलन, (न०) अनु+चु० शील्+ल्युट् । वार वार विचारना । वार वार अभ्यास करना.

अनुशोचन, (न०) अनु+शुच्+ल्युट् । शोक । "स्वार्थे णिचि युचि" शोक करना (उसी अर्थमें) "अनुशोचना" (स्त्री०).

अनुश्रव, (पु०) अनुश्रूयते गुरुपरम्परया उच्चारणात् अनु अभ्यस्यते, श्रूयते एव न तु केनापि क्रियते वा अनु+श्रु+अप् । गुरुपरम्परासे उच्चारणके अनन्तर जिसका अभ्यास किया जाता है, अथवा सुनाही जाता है किसीसे किया नहिं जाता । वेद । (इसका सुना जानाही सबने माना है) बुद्धिमान्. Vad.

अनुषङ्ग, (पु०) अनु+सञ्ज+घञ् कुत्वं । दया । आसक्ति (किसी वस्तुमें लग जाना) । एक स्थानमें सुने गये पदको दूसरे स्थानमें अन्वयके लिये खेंचना । सम्बन्ध । प्रणाम.

अनुष्टुप्, (स्त्री०) अनु+स्तुम्भ्+क्विप् षत्वं । सरस्वती । आठ आठ अक्षरके पादका छन्द (अष्टाक्षरछंन्द).

अनुष्ठान, (न०) अनु+स्था+भावे ल्युट् षत्वं । वेदशास्त्रमें विधान किये गये कर्मका करना.

अनुष्ण, (त्रि०) उष्णः दक्षः न० त० । आलसी । उष्णसे भिन्न (शीत) । कमल (न०) । आलसी जीव शीतकी पीडाके न होनेपरमी शीतपीडाका अभिनय (अवस्थानुकरण=नकल) करताहुआ करने योग्य काममें जड (मूर्ख)की नाईं होता है परन्तु चतुर, शीत होनेपरमी उसे कुछ न मानकर कर्तव्य करनेको (अजड बुद्धिमान्) हुआ लग जाता है, इस प्रकार उन (मूर्खबुद्धिमान्) को उष्ण और अनुष्ण कहा जाता है । (एक काम करनेके लिये गरम और दूसरा अर्थात् मूर्ख शीतकी नाईं होता है) । (यहां करनेवालेके अर्थमें कन् प्रत्यय लाकर) "अनुष्णक" शब्दमी सिद्ध होता है.

अनुष्णवल्लिका, (स्त्री०) अनुष्णा शीतला वल्लीव, इवार्थे क, टापि, अत । जो बेलकी नाईं शीतल हो । "स्वार्थे क" शीतल बेल.

अनुष्वध, (त्रि०) स्वधां अनु, स्वधया सहितः । अन्नसमेत ।–धम् क्रि० वि० । भोजनके पीछे । अन्नानुसार प्रत्येक यज्ञके पीछे । किसीकी इच्छानुसार.

अनुसन्तन्, तना० उभ० । सब ओर फैलजाना.

अनुसन्धा, जु० उभ० । अन्वेषण । तालाश करना । पूछपाछ करना । खबर्दारी रखना । परीक्षा करना.

अनुसन्धान, (न०) अनु+सम्+धाञ्+ल्युट् । अन्वेषण (तलाश करना=ढूंडना) । चिन्ता करना (सोचना).

अनुसरण, (न०) अनु+सृ+ल्युट् । पीछे जाना । पीछा करना । एक जैसा बनाना । "भावे घञ्" । अनुसार (इसी) अर्थमें.

अनुसृप्, भ्वा० प० । पीछा करना.

अनुसैन्यं, (अव्य०) सैन्यं अनुगतम् । सेनाकी पीठ.

अनुस्तरणं, अनु+स्तृ+ल्युट् । बिछादेना । णि करणे ल्युट् । आच्छादन । पड़दा चमडेआदिका । गो जो मृत्युके समय दान कीगई परलोकमें वैतरणी नदीके क्लेशसे बचा देती है.

अनुस्यूत, (त्रि०) अनु+सिव्+क्त ऊठ् । ग्रथित । (गुथाहुआ) निरन्तर मिलाहुआ (जैसे आकाश कालप्रभृति).

अनुस्वार, (पु०) अनु+स्वृ+घञ् । उदात्तादि स्वरवत्त्वात् स्वरवर्णा एव स्वाराः अनुगतः स्वारान् अत्या० स० । उदात्तादि स्वरवाले होनेसे स्वरवर्णही स्वार हैं उनका पीछा करनेहारा (स्वरके आश्रयसे उच्चारण कियेगये बिन्दुमात्रसे प्रकाश कियागया) मुखसहित नासिकासे बोलागया (अनुनासिक) वर्णोंका एक भेद "अनुस्वार और विसर्ग" इस प्रकार प्रारम्भ कर "वे आश्रयस्थानके भागी होते हैं" ऐसा कहनेसे अनुस्वारको तथात्व (ऊपर कहा गया लक्षण)हो सक्ता है । बिन्दु(ं).

अनुहरण, (पु०) अनु+हृ+ल्युट् । देश, भाषा, चेष्टा आदिसे एक जैसा करना वा दिखाना । समान धर्मका आविष्कार करना.

अनुहृ, भ्वा० प० । अनुकरण । नकल करना.

अनूक, (पु०) अनु+उच्-समवाये-क-कुत्वं नि० । पिछला जन्म । कुल । स्वभाव (न०).

अनूचान, (पु०) अनु+वच्+कान नि० । शिक्षा आदि छ अङ्गोंसहित वेदको पढनेहारा । वेदोंके अर्थको अनुवचन (वर्णन) करनेमें समर्थ.

अनून, (त्रि०) ऊन+क न० त० । न थोडा । परिपूर्ण (भराहुआ) । सारा । अहीन (नकम) । नूनं (निश्चितं) न० त० । अनिश्चित । जिसका निश्चय न हो.

अनूप, (त्रि०) अनुगता आपो यत्र ७ व० । अच् स० । आत उत्वम् । जलप्राय देश (ऐसा स्थान कि जहां जलही जल हो) । उस स्थानमें सदा वास करनेहारा महिष (भैंसा) । "वह देश कि जहां वहुत जल, वृक्ष, वात, श्लेष्म, रोग हों उसे अनूप कहते हैं" । एक देशविशेष (पु०) । अनूपसर नामसे प्रसिद्ध एक देश.

अनूपज, (न०)अनूपे (जलप्रायदेशे)जायते जन्+ड ७ त०। आदा वा अदरक इस नामसे प्रसिद्ध । आर्द्रक । वह प्रायः जलमें उत्पन्न होता है । जो कुछ सजल देशमें उत्पन्न हो (त्रि०).

अनूरु,(पु०) न स्त ऊरू यस्य व० । सूर्यका सारथि अरुण । विनताका सवसे वडा पुत्र । अभी गर्भ पूर्ण नहिं हुआ और माताने अण्डेको फोड डाला इस्से ऊरु आदि अंगोंमें विकलता होगई ऐसा पुराणमें प्रसिद्ध है.

अनूरुसारथि, (पु०) अनूरुः सारथिः (रथनियन्ता) यस्य व० । जिसके रथको अनूरु हांकता है । सूर्य.

अनृच, (पु०) नास्ति अभ्यस्ततया ऋक् यस्य अच् स० । जिसने ऋक् अर्थात् ऋगादि वेदोंका अभ्यास नहिं किया । ऋक्शून्य अनुपनीत (जिसका यज्ञोपवीत नहिं हुआ) वालक.

अनृत, (न०) ऋतं (सत्यं) न० त० । सत्यसे भिन्न, अयथार्थ (झूठ) । लोकमें प्रायः झूठा व्यवहार कथनमें ही देखाजाता है, कहीं वस्तुमेंभी जैसे रङ्ग (राङ्-धातु-भेद) में चांदी आदि । वहां चांदी ऐसा ज्ञानभी होता है (वह मिथ्याज्ञान है) । तद्वति (त्रि०) ७ व० । वाणिज्य (व्यापार) (न०) इसमें झूठ बहुत होता है.

अनृतु, (पु०) न ऋतुः न० त० । बेमोसिम । बेवहार । अयथार्थ समय.

अनेक, (त्रि०) इक न० त० । एकसे भिन्न बहुत । "पतन्त्यनेके जलधेरिवोर्मयः" इति माघः.

अनेकधा, (अव्य०) अनेक+धा । कई प्रकारसे.

अनेकप, (पु०) अनेकाभ्यां (मुखशुण्डाभ्यां) द्वाभ्यां पिवति पा+क । जो मुख और सूंडसे पीता है । हाथी.

अनेकरूप, (त्रि०) अनेकानि बहूनि रूपाणि अस्य व० । जिसके बहुत रूप हों । चित्ररूप (जिसके रूप नानाप्रकारके हों).

अनेकशः, (अव्य०) वीप्सार्थे कारके शस् । वहुत वार वार कवार । अकसर.

अनेकान्त, (त्रि०) न एक एव अन्तः परिच्छेदो यस्य ब० । जो एक रूपसे नहिं मापा वा विचार किया जाता । जिसके रूपका कुछ नियम न हो । जिस्से अधिक और कोई न हो.

अनेकान्तवादिन्, (पु०) अस्ति नास्ति वा इति एकान्तं न वदति । वद्+णिनि २ त० । है, वा नहिं है, इस प्रकार नियमसे जो नहिं बोलता । बौद्धभेद.

अनेजत्, (त्रि०) न एजत् । न कांपनेवाला । सदा एक प्रकारका । सर्वदैकरूप ब्रह्म.

अनेडः, (पु०) न एडः न० त० । मूर्ख । बदमाश । बेवकूफ.

अनेडमूक, (त्रि०) एडो बधिरो मूको वचनशक्तिरहितः नास्ति यस्मात् ५ व० । (काला, बोवा) इस प्रकार प्रसिद्ध सुन्ने और बोलनेकी शक्तिसे रहित । (डोरा, गुङ्गा) । शठ । धूर्त.

अनेहस्, (पु०) न हन्यते, हन्+असि (धातुको "एह" आदेश हो जाता है) । जिसे मारा नहिं जाता । काल.

अनैकान्तिक, (पु०) एकान्तं नियतं प्राप्नोति, एकान्त+ठक् न० त० । व्यतीचारी (हेतु और साध्यका साहचर्याभाव अर्थात् इकट्ठा न रहना) दुष्ट हेतु । जैसे धूमको सिद्ध करनेके लिये अग्निको हेतु कहना । जिसकी व्याप्ति (साहचर्यनियम) नियत नहिं । "अनेकान्त" भी इस अर्थमें हो सक्ता है.

अनैक्यं, (न०) (न ऐक्यं एकस्य भावः यत्) बहुतोंका होना । एक न होना । बहुतायत.

अनो, (अव्य०) न नो । नहीं.

अनोकशायिन्, (पु०) अनोके=अगृहे शेते शी+णिनि । घरमें न सोनेवाला । भक्षुक.

अनोकह, (पु०) अनसः शकटस्य अकं गतिं हन्ति-हन्+ड । जो गड्डेकी गतिको रोकता है । वृक्ष.

अनोंकृत, (त्रि०) ॐकृतः–न० त० । ॐ इस पवित्र अक्षरसे न सेवा किया.

अनौद्धत्य, (न०) न औद्धत्यं न० त० । अहंकारका न होना । विनय । दीनता.

अनौरस, (त्रि०) उरस्+अण् न० त० । एकही छातीसे न उत्पन्न हुआ । जो सगा नहीं । जो किसीका अपना नहीं । बनावटी । दत्तक (जैसे पुत्र).

अन्त, (न०) अम्+तन् । स्वरूप स्वभाव । शेषे पु० । न० नाश । कोना । सीमा (हद) । निश्चय । अवयव(अंग) । (पु०) निकट । मनोहर.

अन्तःकरण, (न०) कृ+करणे ल्युट् । अन्तरमभ्यन्तरं तद्वृत्तिपदार्थानां ज्ञानादीनां वा करणं कर्म० ६ त० । भीतरका साधन । अथवा भीतर रहनेहारे ज्ञान आदिका साधन । अथवा ज्ञान, सुख आदिका साधन भीतरका इन्द्रिय जो मन, बुद्धि, चित्त आदि पदोंसे बोला जाता है.

अन्तःकुटिल, (पु०) अन्तर्मध्ये कुटिलः । जो बीचमें कुटिल (टेढा) हो । बीचमें टेढे आकारके अवयवोंवाला शंख । जिसका मन (अन्तःकरण) टेढा हो.

अन्तःपथ, (त्रि०) अन्तः समागतः पन्थाः । भीतर आपड़ा मार्ग । रास्ता.

अन्तःपदवी, (स्त्री०) सुषुम्णामध्यगतः पन्थाः । सुषुम्णानाड़ीके बीचका मार्ग.

अन्तःपुरम्, (न०) अन्तः=अभ्यन्तरं पुरं=गृहं । पुरस्य अन्तः स्थितम् । भीतरका घर । अथवा शहरके भीतर । जनानखाना.

अन्तःपुर, (न०) अन्तरभ्यन्तरं पुरं गृहं, कर्म० । (अन्दर) इस प्रकार प्रसिद्ध राजाओंकी स्त्रियोंके निवासयोग्य घर । वहां रहनेसे "राजाकी स्त्री" यह भी अर्थ बनता है । इसी अर्थमें "अन्तःपुरी" यह भी होता है.

अन्तःपुरिक, (पु०) अन्तःपुरे नियुक्तः ठन् । अन्तःपुरमें नियत किया गया । अन्तःपुरका.

अन्तःप्रज्ञ, (त्रि०) अन्तः प्रज्ञा यस्य ब० । भीतरके ज्ञानवाला । आत्माके जाननेवाला । चमका हुआ अपना आप.

अन्तःसंज्ञ, (त्रि०) अन्तः संज्ञा यस्य ब० । अन्तः भीतरकी संज्ञा चेतना । होशवाला.

अन्तःसत्वा, (स्त्री०) अन्तरभ्यन्तरे गर्भे सत्वं प्राणी यस्याः ब० । जिसके गर्भमें प्राणी रहे । गर्भिणी स्त्री.

अन्तःसत्वा, (स्त्री०) अन्तः सत्वं जीवः यस्याः ब० । जिसके भीतर जीव प्राणी हो गर्भवती स्त्री । गाभन औरत.

अन्तःसलिल, (त्रि०) अन्तः सलिलं यस्य ब० । पृथिवीके नीचे जलवाला । भीतर सरल वृक्षवाला.

अन्तःसार, (त्रि०) अन्तः सारः यस्य ब० । भीतरकी ताकत बलवाला । भीतरके कोषवाला.

अन्तःस्थ, (त्रि०) अन्तः तिष्ठति । मध्य । दर्मियानमें होना । बीचमें होना । "य-र-ल-व" के लिये व्याकरणकी संज्ञा । येभी स्वर और व्यञ्जनों मध्यमें ठरहते हैं और तालु आदिके थोडासा छूकर बोले जातेहैं.

अन्तःस्वेद, (पु०) अन्तः स्वेदो मदस्यन्दनं घर्मजलं यस्य ब० । जिसके भीतर मद बहे अथवा पसीनेका जल बहे । मद बहानेहारा हाथी । मस्त हाथी.

अन्तक, (पु०) अन्तं करोति, अन्त+तत् करोतीत्यर्थे णि+ण्वुल् । अन्त करनेहारा । यम । नाश करनेहारा (त्रि०).

अन्तकर, (त्रि०) अन्तं नाशं करोति कृ+ट, उप० स० । नाश करनेहारा.

अन्तग, (त्रि०) अन्तं अवसानं गच्छति, गम्+ड । पार जानेहारा । किसी कामके अवसानतक पहुंच गया । क्त अन्त गत यह इसी अर्थमें.

अन्तज, (त्रि०) अन्ते जायते जन्+ड । सबसे पीछे उत्पन्न हुआ.

अन्तपाल, (पु०) अन्तं पालयति । सीमा हद्दकी रक्षा करनेहारा । सामन्त.

अतर्, (अव्य०) अन् तुडागमश्च । मध्य । बीच । प्राप्त । स्वीकार । चित्त.

अन्तर, (न०) अन्तं राति ददाति, रा+क । अवकाश । अवधि । हद्द । पहिरनेका कपडा । छिपना । भेद । जो आपसमें विलक्षण हो । विशेष । उसका अर्थ । छिद्र । अपना । बिना । बाहिर । फरक । बीच=सदृश । (वाचस्पतिमें प्रत्येकका उदाहरण है).

अन्तरग्नि, (पु०) अन्तः=मध्यस्थः अग्निः । भीतरकी अग्नि । अन्नको पचानेवाला जठराग्नि.

अन्तरङ्ग, (त्रि०) अन्तर्मध्येऽङ्गानि यस्य । अपना । व्याकरणशास्त्रमें प्रकृति (धातु) और प्रत्ययके कार्यमध्ये प्रकृतिके आश्रित कार्य.

अन्तरतम, (त्रि०) अतिशयेन अन्तरः । बहुत भीतर । बहुतही निकट । बहुतही अंदर.

अन्तरा, (अव्य०) अन्तरेति इण्+डा । निकट । मध्य । विना.

अतरात्मा, (पु०) अन्तर्वर्ती आत्मा । भीतर वर्तमान आत्मा । अन्तःकरण (मन) । सर्वान्तर्यामी परमेश्वर । अन्तःकरणका अभिमानी जीव.

अतराय, (पु०) अन्तरं=व्यवधानं अयते, अय्+अच् । विघ्न । रुकावट । फरक डालनेहारा (त्रि०).

अन्तराल, (न०) अन्तरं मध्यसीमां आराति गृह्णाति आ+रा+क, रस्य लत्वम् । मध्य । बीच । स्वार्थे अण् "आन्तराल" भी होता है.

अन्तरि, अदा० प० । अन्तर्+इ । दोनोंके बीचमें जाना । किसीके रास्तेमें खडे होजाना.

अन्तरिक्ष, (न०) अन्तः स्वर्गपृथिव्योर्मध्ये ईक्ष्यते, ईक्ष् कर्मणि घञ् । अन्तः ऋक्षाणि वा यस्य पृषो० । पक्षे ह्रस्वः ऋकारस्य रित्वं वा । जो स्वर्ग और पृथिवीके बीच देखा जाता है । अथवा जहां नक्षत्र हों । पक्षी और मेघोंके सञ्चारयोग्य । पृथिवी और सूर्यके मध्यमें रहनेहारा आकाशका स्थान । यहां "अन्तरीक्ष" ऐसा शब्दभी होता है.

अन्तरित, (त्रि०) अन्तर्+इण् कर्तरि क्त २ त० अन्तरं व्यवधानं करोतीति णिचि कर्मणि क्त वा । बीचमें आगया तिरस्कार किया गया.

अन्तरीप, (पु०) अन्तर्मध्ये गता आपोऽस्य ब० अच् स० आत ईत्वं । जिसके मध्यमें जल हों । द्वीप । जजीरा.

अन्तरीय, (न०) अन्तरे भवं+छ । पहिरनेका वस्त्र । नाभीपर धारण किया गया और दोनों ओरसे बिन कटा जो कपडा जानुओं (घुटनों) को आच्छादन करसके "उसे अन्तरीय कहते हैं" धोती.

अन्तराय, अन्ते+भवं छ । भीतरका । अन्दरकी पौशाक । "अतिश्लिष्टचीनांशुकान्तरीयम्".

अन्तरे, (अव्य०) अन्तरेति इण्+विच् । मध्य । बीच.

अन्तरेण, (अव्य०) अन्तरेति, इण्+ण । विना । मध्य.

अन्तर्गडु, (त्रि०) अन्तर्मध्ये गडुरिव निरर्थकः । ग्रीवा (गर्दन) प्रदेशमें उत्पन्न हुए गलेके मांसपिण्डको जैसे निष्प्रयोजनता है उसी प्रकार निरर्थक । काव्यके मध्यमें जो गडुके समान है वह अलङ्कार तो नहिं परन्तु उसे प्रहेलिका अथवा बुझारत कहते हैं.

अन्तर्गृह, (न०) अन्तर्गृहस्य । घरके मध्यमें । काशीमें सप्तावरणवाला (सात पडदोंका) स्थानविशेष.

अन्तर्जठर, (न०) अन्तर्जठरस्य । जठर(पेट)के बीच । कुक्षिके बीच एक कोठा.

अन्तर्जम्भ, (पु०) खादनस्थानं जम्भः, दन्तपंक्त्योरन्तरालम् । मूंके भीतर जबडोंका स्थान.

अन्तर्जल, (न०) अन्तर्जलस्य (अव्य०) । जलके बीच । जलके मध्यमें करने योग्य अघमर्षण मन्त्रका जप । (ऋतं च सत्यं चाभीद्धा० यह मन्त्र है).

अन्तर्जात, (त्रि०) अन्तः जातः । भीतर उत्पन्न हुआ.

अन्तर्ज्योतिः, (न०) अन्तः ज्योतिरिव प्रकाशकं । भीतर ज्योतिकी तरह प्रकाश करनेहारा । अन्तरात्मा.

अन्तर्दाह, (पु०) अन्तर्मध्ये दाहः दह्+घञ् । देहके भीतर सन्ताप । कोठे(पेट)का सन्ताप.

अन्तर्दृष्टिः, (स्त्री०) भीतरकी नजर । आत्माकी परीक्षा करनेवाली दृष्टि । अपने आपमें देखना.

अन्तर्द्वार,(पु०)अन्तर्मध्ये द्वारं । घरके बीचका गुप्त दर्वाजा.

अन्तर्द्धान, (न०) अन्तर्+धा+ल्युट् । छिपना । देखने योग्य पदार्थके न देख सकनेवाले स्थानमें ठहरना । मुनि आदिकोंका शरीर छोडना.

अन्तर्द्धि, (पु०) अन्तर्+धा+कि । आच्छादन (ढकना) । व्यवधान । (बीचमें आना) छिपना.

अन्तर्निहित, (त्रि०) अन्तः+नि+धा+क्त । भीतर रक्खा गया.

अन्तर्भूत, (त्रि०) अन्तर्मध्ये भूतः, भू+क्त । बीचमें रहा । बीचमें गया.

अन्तर्भेद, (पु०) अन्तः भेदः यस्मिन् ब० । भीतर । घरका भेद फूट । "अन्तर्भेदाकुलं गेहं नचिराद्विनशिष्यति".

अन्तर्मदावस्थ, (त्रि०) अन्तः मदस्य अवस्था यस्य । जिस हाथीका मद भीतर छिपा हो । भीतरके मदवाला.

अन्तर्मनस्, (त्रि०) अन्तर्गतं बाह्यव्यापाराक्षमतया अन्तरेवस्थितं मनो यस्य । बाहिरके व्यापारको न सहन करनेके कारण जिसका मन भीतरही स्थित हो रहा है । जिसका मन एकाग्र हो । व्याकुलचित्त.

अन्तर्मातृका, (स्त्री०) अन्तःस्था षट्चक्रस्था मातृका अकारादिवर्णाः । भीतर शरीरके छ चक्रोंकी अक्षरावली । भीतरकी मां.

अन्तर्मुख, (त्रि०)-खी । अन्तः मुखं यस्य-यस्या वा-ब०) भीतर मूंवाला-वाली । मुखमें जानेहारा । भीतरको दिखानेहारा । भीतरका रास्ता खुलजाना । वह चित्त जो बाहिरकी वस्तुका परित्याग करके परमात्मामें परमात्माहीकी झुकताहै.

अन्तर्मुद्र, (त्रि०) अन्तः मुद्रा यस्य । जिसके भीतर मोहर लग चुकी है । भीतरके निशानवाला न० । एक प्रकारकी भक्ति.

अन्तर्यामिन्, (पु०) अन्तर्मध्येऽनुप्रविश्य यमयति स्वस्वकर्मणि इन्द्रियादीनि जीवं वा व्यापारयति, यम्+णिच्+णिनि । जो भीतर प्रवेश करके इन्द्रियादि किंवा जीवको अपने अपने काममें लगाता है । वायु । "जो भीतर आवेशकर आत्मकेतु (निजव्यापार अर्थात् प्राणादिवृत्ति)-ओंसे जीवोंको धारण किंवा पोषण कर्ता है" ऐसे लक्षणवाला ईश्वर । "अन्तरेष यमयती"त्यादि बृहदारण्यकान्तर्यामिब्राह्मणोक्तेः । भीतरकी बातको जानेहारा (त्रि०).

अन्तर्वणिः-मिः, (पु०) अन्तः स्थित एव उद्गारशब्दं कारयति वण्+इन् । भीतर रह करही उद्गार=डकारके शब्दको लाता है । अजीर्ण । अनपच.

अन्तर्वंशिक, (त्रि०) अन्तर्वंशे राज्ञामाभ्यन्तरगृहे नियुक्तः नियुक्तार्थे ठ । राजाओंके घरोंमें रक्षाके लिये लगायागया कुबडा वामन आदि.

अन्तर्वंशिक-वासिकः, (पु०) अन्तर्वंशे-वासे नियुक्तः ठक् । अन्तःपुरका अध्यक्ष । जनानखानेका हाकिम पूरी रखवाली करनेवाला.

अन्तर्वस्त्र-वासस्, (न०) अन्तः स्थितं वस्त्रम् । भीतरकी पौशाक.

अन्तर्वत्नी, (स्त्री०) अन्तरस्य अस्ति गर्भः । अन्तर्+मतुप् नि० । गर्भवती स्त्री.

अन्तर्वा, (त्रि०) अन्तः अन्तरङ्गभावं अन्तःकरणं वाति=गच्छति स्निग्धत्वेन, वा+विच् । स्नेह प्यार होनेसे मनके पीछे चलनेवाला । अपने बच्चों वा पशुओंके समान दिखानेवाला.

अन्तर्वाणि, (त्रि०) अन्तर्गता अन्तःकरणे स्थिता शास्त्रवाक्यात्मिका वाणी यस्य ब० । न कप् ह्रस्वश्च । बहुतसे शास्त्रोंके वाक्योंको जाननेहारा पण्डित.

अन्तर्वेदी, (स्त्री०) पृथिव्या मध्यस्थितत्वात् अन्तर्वेदीव । हरिद्वारसे ले प्रयाग (अलाहाबाद) तक शशस्थली और ब्रह्मावर्त नामसे प्रसिद्ध देश.

अन्तर्हस्तिन्, (त्रि०) हस्तस्य अन्तः+भवः+हस्त+ख । हाथमें लिया हुआ । जहां हाथ पहुंच सके.

अन्तर्हास, (पु०) अन्तः हासः यस्य ब० । भीतर हसना ओठ न फुरे । गुप्तहास.

अन्तर्हित, (त्रि०) अन्तर्+धा+क्त । गुप्त । छिपाहुआ.

अन्तर्हृदयं, (न०) हृदयस्य अन्तः । हृदयका मध्य.

अ(न्तन्ते)वासिन्, (पु०) अन्ते समीपे वस्तुं शीलं अस्य वस्+णिनि । सप्तम्या वा लुक् । जिसका पासही रहनेका स्वभाव हो । शिष्य । चेला । स्त्रियां ङीप् । पास रहनेहारा (त्रि०).

अन्तशय्या, (स्त्री०) शयनं शय्या शीङ्+क्यप् । अन्तस्य नाशार्थं शय्या, चतुर्थ्यर्थे ६ त० । मरनेके लिये पृथिवीपर लेटना । मसान (क्योंकि यहां भूमिशयन कराया जाता है) मरना.

अन्तसद, (पु०) अन्ते=गुरुसमीपे सीदति=गच्छति । गुरुके पास जाताहै । शिष्य.

अन्तावसायिन्, (पु०) नखकेशानां अन्तं अवसातुं छेत्तुं शीलं अस्य, अव+सो+णिनि+युक् च । नख केश काटनेहारा । नाई । "अन्ते वृद्धे वयसि अवस्यति निश्चिनोति तत्त्वं" । जो बुढापेमें तत्त्वका निश्चय करे । एक मुनि । "अन्ताय स्वतोषकृते जन्तुनाशाय अवस्यति" । जो अपनी प्रसन्नताके लिये जीवोंको नाश कर्ता है । जीवोंकी हिंसा करनेहारा चाण्डाल आदि.

अन्तिक, (त्रि०) अन्त्यते संबध्यते सामीप्येन-अन्त+घञ् सोऽस्यास्तीति मत्वर्थीयः ठन् । जो पास रहे । स्वार्थे ठनि । पास । (पु०) चुल्ली (न०) एक प्रकारकी औषध (दवाई).

अन्ति(का), (स्त्री०) अन्त्यते संबध्यते अन्त+इ । नाटकमें बडी बहिनको बोला जाताहै । स्वार्थेक,टाप्-"अन्तिका"भी.

अन्तिकाश्रय, (पु०) अन्तिके समीपे आश्रीयते आ+श्री+अच् । पास रहनेहारा । आश्रयका स्थान.

अन्तिम, (त्रि०) अन्ते भवः, अन्त+डिमच् । अन्तमें होनेहारा । आखिरी.

अन्तेवासिन्, अन्ते वसति । सीमाके पास रहनेवाला । पास रहनेवाला (पु०) । अन्ते=गुरुसमीपे वस्तुं शीलं यस्य अन्त+वस्+णिनि । गुरुके पास रहनेवाला । शिष्य । शिक्षाके लिये पास रहता है.

अन्त्य, (पु०) अन्ते पर्यन्ते वसतीति । अन्त+यत् । जो सबसे पीछे रहे । चाण्डाल । मोथा (स्त्री०) । अन्तकी वस्तु (त्रि०) जैसें नक्षत्रोंमें रेवती, राशिओंमें मीन अक्षरोंमें हकार इत्यादि । एक प्रकारकी संख्या । १०००००००००००००००.

अन्त्यज, (पु०) अन्तोऽधमः सन् जायते जन्+ड । शूद्र । क्योंकि वह ब्राह्मणादि चारोंवर्णोंमें नीच उत्पन्न हुआ । "रजक (कपडारंगनेहारा) चर्मकार (मोची) नट, वरुड (नीचभेद) कैवर्त (मच्छीपकडनेहारा) मेद (नीचभेद) भिल्ल" ये सात अन्त्यज कहे गये हैं । इस प्रकार स्मृतिमें कहेगये रजक आदि जो कोई नीच उत्पन्न हुआ हो (त्रि०).

अन्त्यजन्मन्, (पु०) अन्त्यं जन्म यस्य । शूद्र । वह ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्यके उत्पन्न होनेके अनन्तर ब्रह्माके पाओंसे उपजा.

अन्त्यधनं, (न०) अन्त्यं धनम् । व्याजकी आखीरी किश्त । आखीरी धन.

अन्त्यलोपः, (पु०) अन्त्यः लोपः । आखीरी अक्षरका उडाना । आखीरी नाश.

अन्त्यावसायिन्, (पु०) "निषादकी स्त्री चाण्डालसे अन्त्यावसायी पुत्रको उत्पन्न कर्ती है वह मसानमें रहता है" इस प्रकार मनुसे कहा गया मुरदाफरास नामसे प्रसिद्ध संकीर्णवर्ण । "चण्डाल, श्वपच, क्षत्ता, सूत, वैदेहक, मागध, अयोगव" ये सात अन्त्यावसायी हैं । इस प्रकार अङ्गिरासे स्मरण किये चाण्डालादि.

अन्त्येष्टि, (स्त्री०) इष्टिर्यागः यज्+क्तिन् । अन्त्या इष्टिः । मृतकका दाहादिरूप अन्तिम संस्कार । मुर्दा जलानेसे लेकर पातकान्त दिवसतक उसके निमित्त जो पिण्डदानादि होता है.

अन्त्र, (न०) अन्त्यते देहो बध्यतेऽनेन अति बन्धने+ष्ट्रन् । देहका बंधन । आंतडी पुरीतती नाडी.

अन्दुक, (पु०)अन्द्यते बध्यतेऽनेन-अदि बन्धने-क् स्वार्थे के ह्रस्वः । हाथीके पादका बंधन (जंजीर) । पाओंकी कील.

अन्दू, (स्त्री०) अन्द्यते बध्यतेऽनेन अदि+क् । निगड (जंजीर) । स्त्रिओंके पाओंका भूषण । पायजेब.

अन्ध्, न दीखना-चु० उभ० अक० सेट्-अन्धयति, ते । आन्दिधत्-त.

अन्ध, (त्रि०) अन्धयति चक्षुषा न पश्यति+अच् । दोनों आंखोंसे बिना । अन्ध्यतेऽनेन इति करणे घञ् । अंधकार (अंधेरा) । पानी (न०).

अन्धम्, (न०) अन्धयति । अन्धेरा । रूहकी भूल । आत्माकी अविद्या ।-धः (पु०) । अन्धयति-निर्वाणं गच्छति । इन्द्रियोंपर पूरी आज्ञा चलानेवाला संन्यासी । नष्ट द्रव्यके मिलने न मिलनेका उपयोगी राशीभेद । मे० वृ० सिं० रातके समय, और मि० क० क० दिनके समय अन्धे होतेहैं.

अन्धक, (त्रि०) अन्ध+कन् । अन्धा ।-कः (पु०) एक दैत्यका नाम जो कश्यप और दितिका पुत्र है । श्रीशङ्करने इसे माराथा । इसकी एक सहस्र भुजा और दो सहस्र नेत्र थे । अच्छी चमकदार आंखें रखकरभी अन्धेके समान फिरता था.

अन्धक, (पु०) अन्धयति-अन्ध्+ण्वुल् । देशभेद । मुनिभेद । यदुवंशीयोंमेंसे एक राजा । हिरण्याक्षका पुत्र । दैत्यभेद । अंधेरा (न०).

अन्धकरिपु, (पु०) अन्धकासुरस्य रिपुः । अंधकदैत्यके शत्रु । शिव ।"अन्धकस्य तमसो रिपौ"। अंधेरेका शत्रु । सूर्य । चन्द्र । अग्नि.

अन्धकार, (पु० न०) अन्धं करोति-कृ+अण् उप० स० । तेजोभावे तमसि । प्रकाशका न होना। अंधेरा.

अन्धकूप, (पु०) अन्धयतीत्यन्धः स चासौ कूपः। अंधेरा खूआ । 'अन्धः कूपो यत्र' ७ व० । जहां अंधेरा खूआ हो ऐसा नरकभेद । "अन्धस्य दृष्ट्यभावस्य कूप इव" । दृष्टिके नाश होनेका मानो खूआ है अर्थात् मोह (वह सम्पूर्ण दृष्टिके नाशकी कान है).

अन्धतमस, (न०)अन्धयति, अन्ध+अच्, ताम्यति अनेनेति, तम्+करणे असि कर्म० । बडा अंधेरा । "अन्धं अंधकारकं तामिस्रं यत्र" ७ व० । नरकविशेष । सांख्यशास्त्रमें प्रसिद्ध भयविशेषका विषयअभिनिवेश.

अन्धतामिस्रः-स्रं, (पु० न०) पूरा नाश । गाढ अंधेरा । विशेषतः आत्माका । देहके नष्ट होनेपर "मैं ही नष्ट हुआ" इस प्रकारका अज्ञान । भारी अंधकारके पड़देवाला । २१ नरकोंमेंसे दूसरा जो परस्त्रीगामिओं वा हत्यारोंको मिलता है.

अन्धमूषिका, (स्त्री०) अन्धं दृष्ट्यभावं मुष्णाति । मुष्+ण्वुल् दीर्घः । देवताडका वृक्ष (इसका सेवन करनेसे अंधोंकीभी आंखें खुल जाती हैं, यह वैद्यशास्त्रमें प्रसिद्ध है).

अन्धमूषिका, (स्त्री०) अन्धं-दृष्ट्यभावं मुष्णाति, मुष-ण्वुल् । एक प्रकारका वृक्ष वा तृण घास जिसका नाम " देवताड " है इसके सेवनसे अंधेकी आंखें खुलजाती हैं.

अन्धवर्त्मन्, (पु०) अन्धं-सूर्यप्रकाशराहित्यात् वर्त्म यत्र । वायुका सातवां पड़दा वा लोक जहां सूर्यका प्रकाश नहीं होता.

अन्धस्, (न०) अद्यते, अद्+असुन् नुम् धश्च । अन्न । भात । चावल.

अन्धाहिः-अहिकः, (पु०) अन्धः अहिः । अंधा सांप । विषरहित.

अन्धिका,(स्त्री०) अन्धयति, अन्ध्+ण्वुल् । रात । जूएका भेद । सिद्धा नाम औषधी । आन्दुली नामी नेत्रका रोगभेद.

अन्धु, (पु०) अन्ध्+कु । कूप । खूआ.

अन्धुल, (पु०) अन्ध्+उलच् । शिरीषका वृक्ष.

अन्ध्र, (पु०) अन्ध्+र । देशभेद । वहांके लोग । जातिभेद.

अन्न, (न०) अनिति अनेन-अन्+तन्-अद्यते इति वा-अद्+क्त । जिसके द्वारा जीता है वा जो खाया जाता है । भात । गीला अन्न । कच्चा अन्न । चावल जौ आदि कच्चा अन्न । पृथिवी (क्योंकि वहां अन्न उपजता है इसलिये उसे अन्न कहते हैं).

अन्नकोष्ठक, (पु०) अन्नस्य व्रीह्यादेः स्वल्पं कोष्ठमिव, अल्पार्थे कन् । चावल आदिका छोटा कोठा । अन्नका कोठा (कुटी).

अन्नगन्धि, (पु०) अन्नस्य गन्ध इव गन्धो यस्य व० । इत्समासान्तः । अन्नके गन्धके समान जिसका गन्ध हो । अतिसार । पेटका रोग । "अन्नस्य गन्धो लेशो यत्र" ७ व० । थोडे अन्नके भोजनवाला (त्रि०).

अन्नजलं, (न०) अन्नं जलं च । स० द्वं० । अन्न और जल । खान पान.

अन्नदासः, (पु०) अन्नेन पालितो दासः । शाक० त० । अन्नमात्रपर काम करनेवाला नौकर.

अन्नप्राशन, (न०) प्रकृष्टं विधानेन प्रथममाशनं प्राशनं ६ त० । छठे वा आठवें महीनेके आदिमें शास्त्ररीतिसे बालक आदिको पहिले अन्न खिलाना.

अन्नमय, (पु०) अन्नस्य विकारः, अन्न+विकारार्थे मयट् । स्थूल शरीर (यह अन्नहीका विकार है) । अन्नका विकार (त्रि०) । "अन्नमयं हि सौम्य ! मनः" इति श्रुतिः.

अन्नविकार, (पु०) वि+कृ+घञ् ६ त० । अन्नका विकार । लोहू और मांस आदिके पकनेसे उपजा अन्तिम धातु । शुक्र.

अन्नाद, (त्रि०) अन्नं अत्ति । अन्न खानेवाला । दीप्ताग्नि । भटकीली जठराग्निवाला.

अन्नाशन, (न०) अन्नस्य विधानेनाशनम् । विधिसे अन्नका खिलाना अन्नप्राशनके अर्थमें.

अन्य, (त्रि०) अन्-अघ्न्या० यः । भिन्न । समान । यह सर्वनाम है.

अन्यतम, (त्रि॰) बहूनां मध्ये निर्धारिते एकस्मिन् । बहुतोंमेंसे एक.

अन्यतर, (त्रि॰) द्वयोर्मध्ये निर्धारिते एकस्मिन् । दोनोंमेंसे एक.

अन्यतस्त्यः, (पु॰) अन्यतो भवः+त्यप् । कुछ और ही होगया । शत्रु विरुद्ध.

अन्यत्र, (अव्य॰) अन्य+त्रल् । विना । व्यतिरेक.

अन्यथा, (अव्य॰) अन्य प्रकारार्थे थाच् । बिना । दूसरी तरह । झूठ । दुष्ट.

अन्यथावादिन्, (त्रि॰) अन्यथा+वद्+इन् । औरहीं प्रकारसे बोलताहै । झूठा.

अन्यथावृत्ति, (त्रि॰) अन्यथा वृत्तिः यस्य । बदलेहुए विचारवाला । बिगडेहुए खयालवाला.

अन्यथासिद्धि, (स्त्री॰) यस्य कारणतां विनापि सिद्धिः । जिसके कारण न होनेपरभी कार्यकी सिद्धि हो सके । जैसे " घट " की उत्पत्तिके समय गधेके रहनेपरभी उसे कारण स्वीकार किये विनाभी घटादिकी सिद्धि हो सक्ती है अर्थात् कुह्मार आपसी मट्टी लाकर घडा बना सक्ता है इसलिये घटकी सिद्धिमें गधा अन्यथासिद्ध समझना चाहिये । कार्यसे पहिले हो पर कार्यका उत्पादक न हो.

अन्यदा, (अव्य॰) अन्यस्मिन् काले दा । कालान्तर और समय । फिर कभी.

अन्यपूर्वा, (स्त्री॰) अन्यः पूर्वो यस्याः । द्विरूढा । एक पतिके मरजानेपर दूसरी वेर व्याहीगई स्त्री । "अर्शआदित्वात् अच्" । "अन्या पूर्वा यस्य" । एक स्त्रीके मरजानेके पीछे दूसरी वेर व्याहागया पुरुष (पु॰).

अन्यभृत्, (पु॰) अन्येन भ्रियते, भृ+कर्मणि क्विप् । कौवा । कोइल । दूसरेसे पुष्ट किया गया.

अन्यर्हि, (अव्य॰) दूसरे समय । अन्यदा.

अन्यादृश, (त्रि॰) अन्यस्य इव दर्शनं अस्य अन्य+दृश्+क्विन्-आत्वं । दूसरेके सदृश । और प्रकार । दूसरी तरह । इसी अर्थमें " अन्यादृक्ष " भी होता है.

अन्याय, (पु॰) न्यायो विचारः । सङ्गति, औचित्य, प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय और निगमनको प्रतिपादन करनेहारा वाक्य । अभावार्थे न॰ त॰ । विचारका न होना । सङ्गतिका न होना । औचित्यका न होना । भेदार्थे न॰ त॰ । पञ्चाङ्ग न्यायसे भिन्न । ब॰ । विचारशून्य । औचित्यशून्य । असङ्गत । प्रतिज्ञादि पञ्चकवाक्यशून्य । (त्रि॰) न्यायबहिर्भूत । जुलम (पु॰).

अन्येद्युः, (अव्य॰) अन्य-एद्युस् । दूसरा वा आनेवाला दिन । कल्य.

अन्योदर्य, (पु॰) अन्यस्मिन् स्वमातृभिन्ने उदरे गर्भे भवः, उदर+यत् । जो अपनी मातासे भिन्न उदरमें उत्पन्न हुआ हो । पिता एक और माता भिन्न हो ऐसा सौतेला भाई । " अन्योदर्यस्तु संसृष्टिः " इति स्मृतिः । वैसी (सौतेली) बहिन (स्त्री॰) जो कोई दूसरेके पेटसे जात हो (त्रि॰) । इसी लिये दायभागटीकामें इस वचनके व्याख्यानपर भाईके पुत्र आदिकोभी " अन्योदर्य " पदका अर्थ होनेसे ग्रहण किया है.

अन्योन्य, (त्रि॰) अन्य+कर्मव्यतिहारे (एकजातीयक्रियाकरणे) द्वित्वं पूर्वपदे सुश्च । परस्पर । आपसमें । " द्वित्व किये जानेपरभी सर्वनामता होती है" इसीसे अन्योन्यस्मै इत्यादि समझना । "अलङ्कारशास्त्रमें प्रसिद्ध एक अलङ्कार (न॰)" वह साहित्यदर्पणके १० म परिच्छेदमें देखना चाहिये.

अन्योन्याभाव, (पु॰) अन्योन्यस्मिन् अन्योन्यस्य अभावः । आपसमें एक दूसरेका न होना । " जैसे घटमें पटका वैसेही पटमें घटका सदा अभाव है " संसर्गाभाव ऐसा नहीं होता क्योंकि घटमें भूतलका अभाव होनेपरभी भूतलपर घटका होना किसी समय सम्भव है, इसीसे यह अन्योन्याभावसे भिन्न है.

अन्योन्याश्रय, (त्रि॰) परस्परं अन्योन्यं आश्रयतीति-आ+श्री+अच् । जो एक दूसरेका आश्रय कर्ता है । परस्परसापेक्ष । न्यायमतमें तर्कविशेष । (पु॰) वह ऐसे है कि " जैसे एकके ज्ञानके लिये दूसरे ज्ञानकी अपेक्षा है वैसे और ज्ञानादिकी उत्पत्तिके लिये पहिले ज्ञानकी अपेक्षा है " अर्थात् दोनों परस्पर सापेक्ष हैं । जब दोनों आपसमें आश्रय हो गये तो स्वापेक्षापेक्षित्वनिमित्तक अनिष्टका प्रसङ्ग हुआ (यह दोष है).

अन्वक्ष, (त्रि॰) अनुगतं अक्षं-इन्द्रियं-अत्या॰ स॰ । प्रत्यक्ष । अनुपद । पीछा करना । " अक्ष्णः समीपेऽव्ययी॰ टचि॰ " । आंखके निकट (अव्य॰).

अन्वच्, (त्रि॰) अनु+अञ्च्+क्विन् । पीछा करनेहारा । अनुपद.

अन्वय, (पु॰) अनु+इण्+अच् । वंश । पदोंकी परस्पर आकाङ्क्षा । सम्बन्ध । पदोंका योग्यता सम्बन्ध । कार्यमें कारणका अनुसरण करना.

अन्वयबोध, (पु॰) अन्वयस्य पदोपस्थाप्यपदार्थानां सम्बन्धस्य बोधः ६ त॰ । पदोंसे उपस्थित हुए (निकले) पदार्थोंका ज्ञान । न्यायमतमें शब्दसे उत्पन्न हुआ शाब्दनामक प्रत्यक्षानुमानादिसे भिन्न ज्ञान । वैशेषिकमतमें शब्दसे उत्पन्न हुआ अनुमिति स्वरूपज्ञान.

अन्वयव्यतिरेकिन्, (त्रि०) अन्वयव्यतिरेकौ स्तोऽस्य । साध्यको सिद्ध करनेहारा हेतुविशेष । (जिसमें अन्वय और व्यतिरेक दोनों वन सकें) " जैसे वह्निको सिद्ध करनेमें धूम हेतु है, वह वह्निवाले महानस (पाकशाला) आदिमें, और वह्निके अभाववाले जल आदिमें भावाभावरूपसे वह्निके साथ अन्वयव्याप्त और व्यतिरेकव्याप्त है" इस प्रकार न्यायमतमें प्रसिद्ध है.

अन्वयव्याप्ति, (स्त्री०) अन्वयेन व्याप्तिर्व्यापनं नियततया स्थितिः ३ त० । अन्वयके साथ नियमसे रहना । जहां धूम होगा वहां वह्नि होगा इस प्रकारकी व्याप्ति.

अन्वर्थः, (त्रि०) अनुगतः अर्थ–प्रा० स० । जिसका अर्थ स्पष्ट हो । यथार्थ । अर्थानुसारी.

अन्ववसर्ग, (पु०) अनु+अव+सृज्+घञ् । " जैसा चाहते हो करो " इस प्रकारकी आज्ञा.

अन्ववाय, (पु०) अन्ववाय्यते उत्पत्त्यानुसंवध्यते-अनु+अव+अय्+घञ् । इण्+कर्तरि अच् वा । वंश । सन्तान.

अन्वष्टका, (स्त्री०) अनुगता अष्टकां-अत्या० स० । पौष-माघ-फाल्गुन-और आश्विनके कृष्णपक्षकी नवमीको साग्निक लोकोंका श्राद्ध.

अन्वह, (अव्य०) अह्नि अह्नि । वीप्सार्थेऽव्ययीभावः अच् । प्रतिदिन.

अन्वाख्यानं, (न०) आख्यानं अनुगतम् । पहिले कहेहुएका सविस्तर वर्णन.

अन्वाचय, (पु०) एकस्य प्राधान्यात् अन्य आचीयते बोध्यते यत्र-अनु+आ+चि+आधारे अच् । एककी प्रधानतासे जहां दूसरा जतलाया जाता है । उद्देश्यकी सिद्धिसे जहां अनुद्देश्यकी सिद्धिभी समझी जाय । जैसे भिक्षाके लिये जा यदि गौको देखो तो उसे ले आना, यहां भिक्षाहीमें उद्देश (तात्पर्य) है गमनमें नहिं, उसकी सिद्धिके अनन्तर गौका लाना अनुद्दिष्टभी साध्यस्वरूपसे निर्दिष्ट हुआ है । संयुक्त । मिलाहुआ । जहां मुख्यके साथ गौणभी मिला रहे.

अन्वाजे, (अव्य०) अन्वाजयति अनेन । अनु+आ+जि+डे । दुर्बलकी सहायता करनी.

अन्वादेश, (पु०) अनु+आ+दिश्+घञ् । पूर्वोपात्तस्य किञ्चित् कार्यान्तरं विधातुं पुनरुपदेशे । पहिले एक काम करनेपर कुछ दूसरा काम करनेका फिर उपदेश करना । जैसा इसने व्याकरण तो पढलिया अब इसे न्याय पढाइये इस प्रकार न्यायपाठके लिये फिर उपदेश है । कहेगयेको फिर कहना । अनुवाद.

अन्वाधिः, (पु०) अनु–पश्चात् आधीयते+धा+कि । जमानत । "मेरे कहनेपर तू फलानेको फलानी वस्तु देदे" इस प्रकार जमानत देनेवाला.

अन्वाधेय, (न०) अनु+आ+धाञ्+यत् । स्त्रीधनविशेष । विवाहके पीछे मातापितासे तथा भर्तृकुलसे एवं बंधुकुलसे स्त्रीको जो कुछ मिलताहै । पीछे दीगई वस्तु (त्रि०).

अन्वारब्ध, (त्रि०) अनु+आ+रभ्+क्त । पीछे पृष्ठकी ओर स्पर्श किया गया.

अन्वारम्भ, भ्वा०आ० प्रारम्भ करना । शुरू करना । छूना.

अन्वारुह्, भ्वा० प० साथ चढना । विशेषतः चितापर.

अन्वारोहणं, (न०) अनु+आ+रुह+अन । स्त्रीका पतिके शरीरके साथ चितापर चढना.

अन्वास्, अदा० आ० । पास वा पीछे बैठना.

अन्वासन, (न०) अनु+आस्+ल्युट् । पीछे बैठकर सेवा करना । दुःख । पीछे सोचना । "आधारे ल्युट्" शिल्पगृह (कारखाना).

अन्वाहार्य, (न०) अनु व्याप्तौ, मासि मासि आह्रियते अनु+आ+हृ+कर्मणि ण्यत् । प्रतिमास करनेयोग्य अमावास्याके दिन विधान कियागया श्राद्ध । 'पितॄणां मासिकं श्राद्धं अन्वाहार्यं विदुर्बुधाः" इति स्मृतिः । मासिक श्राद्ध । यज्ञकी दक्षिणा.

अन्वाहार्यपचन, (पु०) अन्वाहार्यं श्राद्धान्नं पच्यतेऽनेन-पच्+करणे ल्युट् । जिसके द्वारा श्राद्धका अन्न पकाया जाता है । दक्षिणाग्नि । ऋग्वेदकी विधिसे स्थापित अग्नि.

अनु–इ=अन्वि, अदा० प० । अनुसरण करना । पीछे जाना । आना । प्राप्त करना.

अन्विष्, तुदा० प० । चाहना । तालाश करना.

अन्वीक्षा, (स्त्री०) अनु श्रवणात् अनु ईक्षा श्रुतार्थस्य युक्तायुक्तपर्यालोचना-अनु+ईक्ष् भावे अ । सुनेगये अर्थका युक्तायुक्त विचार करना । वेदवाक्य सुननेके अनन्तर उसके अर्थका विचार करना । इसीलिये इस कामको पूरा करनेहारी विद्याका नाम आन्वीक्षिकी कहा जाता है.

अन्वीप, (त्रि०) अनुगता+आपो यत्र । पानीके पास । जलके पास ठहराहुआ.

अन्वृचम्, (अव्य०) ऋचं अनुगतम् । एक मन्त्र वा श्लोकके अनन्तर दूसरा.

अन्वेषण, (न०) अनु+इष्+भावे ल्युट् । अनुसन्धान । गवेषण । तहकीकात । ढूंडना । यहां अनुसन्धान शब्दसे यह समझना कि कोई वस्तु व्यवधान आदिसे न दिखती हो उसके जाननेका यत्न करना । वाञ्छा । चाह । अन्वेषणा (स्त्री०) इसी अर्थमें.

अप्, (स्त्री०) बहु० आप्+क्विप् ह्रस्वः । जल । पानी । (सदा बहुवचन होता है).

अप, (अव्य०) न पाति–पा+ड । वियोग । विकार । उलटा । निदर्शन । आनन्द । वर्जन । चोरी करना.

अपकर्मन्, (न०) अपकृष्टकर्म प्रा० । दुष्ट आचरण । बुरा अमल करना ब० । दुष्ट आचरण करनेहारा (त्रि०).

अपकर्ष, (पु०) अप+कृष्+भावे घञ् । बिगाडना । अपने कर्तव्यकालसे पहिलेही करना.

अपकरणम्, (न०) अप+कृ+अन । बुरा व्यवहार हाल करना । हानि नुकसान पहुंचाना.

अपकामः, (पु०) अपगतः कामः—कामस्य अभावो वा । जुगुप्सा । विद्वेष । घृणा । वैर । किसी प्यारी वस्तुका न होना । निरिच्छ.

अपकार, (पु०) अप+कृ+घञ् । अनिष्टोत्पादन । बुराई करना । वैर । दुश्मनी.

अपकारगिर्, (स्त्री०) अपकारेण द्वेषेण गीर्यते—गृ+क्विप् । भर्त्सनवाक्य । तिरस्कारका वचन । झिडकना.

अपकृ, तना० अ० । बुराई करना । खेंचना । उठा ले जाना । घसीटना.

अपकॄ, तु० प० खिलरना । पानीको उछलना.

अपकृष्ट, (त्रि०) अप+कृष्+क्त । अधम । नीच । हीन । अपने समयसे प्रथम किया गया.

अपक्रम, (पु०) अपसृत्य क्रमो गतिः—क्रम्+घञ्-अवृद्धिः । पलायन । भागना.

अपक्रिया, (स्त्री०) अप+कृ+भावे श । द्रोह । वैर । अपकार.

अपक्रोश, (पु०) अप+क्रुश्+घञ् । निन्दा करना । " उपक्रोश " इसी अर्थमें.

अपक्ष, (त्रि०) नास्ति पक्षो यस्य ब० । पक्षहीन । बिन-पर । जो उड नहीं सक्ता.

अपक्षेपण, (न०) अप+क्षिप्+ल्युट् । नीचे फेंकना । नीचे स्थानके साथ संयोग होनेका कारण क्रियाविशेष । "अवक्षेपण" इसी अर्थमें.

अपगत, (त्रि०) अप+गम्+क्त । मरगया । भागगया । गया वह गया.

अपगम्, भ्वा० प० । चले जाना । भाग जाना.

अपगरः, (पु०) अप—निन्दार्थे गॄ— भावे अप् । निन्दा.

अपघन, (पु०) अप+हन्+अप् घनादेशः । देह । शरीरका मल.

अपघात, (पु०) अप+हन्+घञ् । बुरीतरहसे मारना । दुःखसे मरना.

अपचः, (पु०) पक्तुं अशक्तः । न पका सकनेवाला । जो अपने लिये नहीं पकाता । बुरा रसोइया । निन्दाअर्थमें.

अपचय, (पु०) अप+चि+अच् । हानि । नुकसान । चुराना । खर्च.

अपचर्, भ्वा० प० । प्रस्थान करना । रुकसत होना । विरुद्ध जाना । अपराध करना । चरति । चचार । अचारीत्.

अपचायित, (त्रि०) अप+चाय+चि+स्वार्थे णिच्+ वा क्त । पूजागया.

अपचार, (पु०) अप+चर्+घञ् । अहित आचरण । बुराई करना प्रा० ब० । बुरा आचार । बुरा काम । जो दूतके बिना न हो (त्रि०).

अपचित, (त्रि०) अप+चाय्+क्त । चायः चिभावः । पूजागया । चि+क्त । हीन.

अपचिति, (स्त्री०) अप+चाय्+क्तिन्—प्रकृतेश्चिभावः । पूजा । चि+क्तिन् । हानि । नुकसान । अपक्षय.

अपची, (पु०) अपकृष्टं पच्यते असौ, पच्—कर्मकर्तरि अच्—गौरा० ङीष् । एक व्याधि जिसमें गलेका मांसपिण्ड फूल जाता है.

अपच्यु, भ्वा० आ० । गिर जाना । चले जाना । खेंचना । नाश होना । मरना.

अपच्छाय, (त्रि०) अपगता छाया यस्मात् । छायाहीन । विनसायेवाला । बुरीछायावाला.

अपजातः, (पु०) अपकृष्टः जातः । गुणोंमें मातापितासे निकृष्ट पुत्र.

अपजि, भ्वा० प० । हराना । जीतना.

अपज्ञा, क्र्या० आ० । मुकर जाना । निषेध करना । छिपाना.

अपञ्चीकृतम्, (न०) अपञ्च पञ्च कृतम् न० त० । साधारण भौतिक पदार्थ जो पांच २ स्थूल पदार्थ नहीं बनाया गया अर्थात् जो पांचसे पच्चीस नही किया गया । पांच सूक्ष्मभूत । पंचतन्मात्रा शब्दादि.

अपटान्तर, (त्रि०) पटेन तिरस्करिण्या अन्तरं अत्र । न० त० । जहां पडदेका फासला नहीं । अव्यवहित । बीचरहित । खुलाहुआ । आसक्त । संसक्त । फसाहुआ । लगाहुआ । "अपदान्तर" इसी अर्थमें होताहै.

अपटी, (स्त्री०) अल्पः पटः पटी । न० त० । कनातनामसे प्रसिद्ध कपडेका पडदा.

अपटु, (त्रि०) पटुर्दक्षः । न० त० । रोगी । चतुराईरहित । काम न करसकनेहारा.

अपण्य, (त्रि०) न पणनीयः अविक्रेय । न वेचने लायक.

अपतर्पण, (न०) अप+तृप्+ल्युट् । रोग होतेही कुछ न खाना । तृप्त न होना.

अपत्य (न०) न पतन्ति पितरोऽनेन पत्+करणे यत् । न० त० । पुत्र वा कन्यारूप सन्तान.

अपत्यदा, (स्त्री०) अपत्यं तद्धेतुं गर्भं ददाति । गर्भ करने-हारी औषध । इसके सेवन करनेसे गर्भ हो जाता है । गर्भ देनेहारी विद्या आदि.

अपत्यशत्रु, (पु०) अपत्यस्य शत्रुः ६ त० । कुलीर । कर्कट.

अपत्र, (पु०) न विद्यते पत्रमस्य । अङ्कुर (इसका पत्र नहीं होता).

अपत्रप, (त्रि०) अपगता त्रपा लज्जा यस्मात् ५ ब० । लज्जाहीन । बेशरम.

अपत्रपू, भ्वा० आ० । लज्जित होना । लज्जासे शिर नीचे करना हूयाके साथ.

अपत्रपिष्णु, (त्रि०) अप+त्रप्+इष्णुच् । स्वभावसे लज्जावाला.

अपथ, (न०) न पन्थाः न०त० । वा अच् । कुपथ । बुरा-रास्ता । "अत्र वा अचोऽभावे अपथिन् इत्यपि" व० । पथशून्य (त्रि०) "पथोऽभावः" । मार्गका न होना (अव्य०)

अपथ्य, (त्रि०) पथि (रोगिभोजने) हितं, पथिन्+यत् न०त०।रोगीको भोजन न करने योग्य। बीमार करनेहारी.

अपद्–पाद, (त्रि०)–पदी–स्त्री० न पद्यते–ज्ञायते–पद्+क्विप्–न० त०.

अपदान, (न०) अप+दैप्+ल्युट् । शोधन । साफ करना । "करणे ल्युट्"अच्छाकाम । "अवदान"इसी अर्थमें होताहै.

अपदिश्, तुदा० प० । निर्देश करना । सूचन करना । जतलाना । बहाना करना । दिशति । दिदेश । अदिक्षत्.

अपदिश, (न०) दिशयोर्मध्ये–अप+दिशा । अव्ययीभाव । दिशाओंका बीच । कोणनामसे प्रसिद्ध.

अपदिशम्, (अव्य०) दिशयोः मध्ये–अव्यय । दो दिशा-ओंके बीचमें । मध्य लोक.

अपदेश, (पु०) अप+दिश्+घञ् । लक्ष्य । निशान । रू-पको आच्छादन करना । छल । बहाना । निमित्त । स्थान.

अपदेशिन्, (त्रि०) अपदिशति–वञ्चति । वञ्चक ठग । अपनेको बाजारमें छिपा कर चलनेवाला.

अपध्यै, भ्वा० प० । ध्यायति । दध्यौ । किसी बुरा खयाल करना । किसीको मनसे शाप देना.

अपध्वंसज, (पु०) अपध्वस्यतेऽनेन अपध्वंसः वर्णानां भिन्नरूपतासम्पादकः यः संकरस्तस्मात् जायते-जन्+ड ५ त० । भिन्नवर्णोंके संगमसे उत्पन्न हुआ संकीर्ण वर्ण । बिगडे हुए अक्षरोंसे बना एक अक्षर बिगड कर निकला.

अपध्वस्त, (त्रि०) अप+ध्वंस्+क्त । निन्दित । छोड दि-यागया । नाश कियागया.

अपनयन, (न०) अप+नी+भावे ल्युट् । दूर करना । खण्डन करना.

अपनस, (त्रि०) अपगता-दूरीभूता नासिका यस्य । नसादेश जिसका नाक उड गया । नाक बिना.

अपनोदन, (न०) अप+नुद्+भावे ल्युट् । दूर लेजाना । तोडडालना.

अपभाष्, भ्वा० आ० । भाषते । अभाषिष्ट । बभाषे । गाली निकालना । बुरा कहना.

अपभ्रंश, (न०) अपभ्रन्श्+घञ् । गिरना ।"अपभ्रश्य-ते अधर्महेतुतया पत्यतेऽनेन" करणे घञ् । जिसके द्वारा गिरजाताहै । साधुशब्दसे भिन्न अपशब्द । यज्ञादिमें उसके कहनेसे पाप उत्पन्न होताहै.

अपम, (त्रि०) अपकृष्टं मीयते मा–बाहुलकात्–क । अपकर्ष छुटाईपनसे मापा जाता है । Ved. बहुत दूरका वा बहुत पुराना.

अपमान, (न०) अप+मि-मा+वा भावे ल्युट् । अवज्ञा । निरादर । बेइज्जती.

अपमित्यक, (न०) अपमितिरपमानः तेन अकं दुःखं यत्र । जहां अपमानसे दुःख होताहै । अपमानका कारण दुःखदेनेहारा ऋण (उधार) (कर्जा) । उसके लेनेमें निश्चय उत्तमर्ण (जिस्से उधार लियाजाताहै) के समीप निरादरसे दुःख होताहै.

अपमृत्यु, (पु०) अपकृष्टो मृत्युः प्रा० स० । मरनेके कारण रोग आदिके विनाही आपही शस्त्र चलाकर वा दुसरेके द्वारा मरना.

अपयान, (न०) अप+या+भावे ल्युट् । निकलजाना । भागना.

अपर, (न०) न पूर्यते यतः, पृ-अपादाने+अप् न० त० । हाथीका पिछला भाग । "न पृणाति सन्तोषयति-पृ+अच् न०त०" । शत्रु । भिन्न (त्रि०) पश्चिम दिशा । ऋग्वे-दादि विद्या (स्त्री०).

अपरक्त, (त्रि०) अप+रञ्ज्+कर्तरि क्त । विरक्त । जो अनुकूल न हो.

अपरति, (स्त्री०)अप+रम्+भावे क्तिन् । विराग । हटजाना.

अपरत्र, (अव्य०) अपर+त्रल् । परलोकमें । पीछे । दूसरे समय.

अपरत्व, (न०) अपरस्य भावे+त्व । अपरनामी न्याय-मतमें सामान्यका भेद (जो थोडे देशमें रहे) । वह दो प्रकारका है कालिक, और दैशिक, जैसे "माघसे पौष अपरा है" यह कालिक, और "पटनासे कांशी अपरा है" यह दैशिक अपरत्व है । शेष.

अपरपक्ष, (पु०) अपरः शेषः पक्षः कर्म० । कृष्णपक्ष । कालीरातें.

अपररात्र, (पु०) अपरं रात्रेः एक० त० टच् । रात्रि-शेष । रातका बाकी हिस्सा । रातका पिछला पहर.

अपरस्पर, (न०) अपरं च परं च–द्वं० पूर्वपदे सुट् । क्रियासातत्य । क्रियानैरन्तर्य । कामका जारी रहना । लगातार काम करना । वह और वह । आपसमें.

अपराजित, (पु०) परा+जि+क्त-न० त० । शिव । विष्णु । एक ऋषि । न जीताहुआ (त्रि०) दूर्वा । एक लताका नाम । दुर्गा । शेफालिका (सुहाँजना) । जयन्ती-वृक्ष । असनवृक्ष । शङ्खिनीवृक्ष (स्त्री०).

अपराद्धपृषत्क, (पु०) अपराद्धो (लक्ष्यात् च्युतः) पृषत्को (बाणो) यस्य अप+राध्+क्त ब० । जिसका बाण लक्ष्य (निशाने) से गिरगया हो। निशाना न करनेहारा धनुषधारी.

अपराध, (पु०) अप+राध्+भावे घञ् । अकार्यादि करणरूपदोष । पातक । पाप । गुनाह । चूक । भूल.

अपरान्त, (पु०) अपरस्या अन्तः । पाश्चात्यदेशभेद । पश्चिमदेशी । पश्चिमदेशका वासी (त्रि०).

अपराह्ण, (पु०) अपरं अह्नः । एक० त० टच् । अह्नादेशः णत्वं च । त्रिधाविभक्तदिनस्य तृतीये भागे । दिनका तीसरा भाग । दिनका शेषभाग.

अपरिग्रह, (पु०) परि+ग्रह+अप-अभावार्थे न० त० । असंग्रह । पास कुछ न रखना । स्वीकार न करना । "नास्ति कन्थाकौपीनाद्यतिरिक्तः परिग्रहो यस्य" । ब० गोदडी और लंगोटी आदिके बिना जिसके पास और कुछ नहीं । संन्यासी । जो कुछ भी स्वीकार नहीं करता (त्रि०).

अपरिच्छिन्न, (त्रि०) परि+छिद्+क्त न० त० । इयत्ता-रहित । असीम । जो मापा न जाय । बेहद्.

अपरिहार्य, (त्रि०) परि+हृ+ण्यत् न० त० । अत्यजनीय.

अपरेद्युस्, (अव्य०) अपरस्मिन्नहनि । अप+एद्युस् । दूसरा दिन । परसों.

अपरोक्ष, (न०) परतः (अतीतः) अक्ष्णां (इन्द्रियाणां) न भवति पर+अक्षि+अ+समर्थस०टच्-नि०सुट् । विषयी-न्द्रियसन्निकर्षजन्ये प्रत्यक्षरूपे ज्ञाने । विषय और इन्द्रियके व्यापारसे उपजा प्रत्यक्षरूप ज्ञान । सामने । "अर्शआद्यचि तद्विषये" (त्रि०) जो सामनेहो.

अपर्णा, (स्त्री०) न पर्णान्यपि भोजनं यस्याः । पत्तेखा-नामी जिसने छोडदिया । हिमालयकी कन्या । (" जब यह तपस्यामें निरत थी तो इसने पत्तोंतक खानेका परि-त्याग किया, इसीसे यह नाम प्रसिद्ध हुआ") । पार्वती । पत्तोंसे शून्य (त्रि०).

अपर्याप्त, (त्रि०) परि+आप्+क्त न० त० । असमर्थ । असम्पूर्ण । शक्तिरहित । जो पूरा न हो.

अपर्वन्, (त्रि०) नास्ति पर्व यस्मिन् दिने । जिस दिन सूर्य और चन्द्रमाका मेल न हो । बिनमेल । पर्वके बिना दिन अर्थात् जो यथार्थ समय नहीं । बुरा वक्त वा बुरी बहार.

अपलप्, भ्वा० प० । लपति । ललाप । अलापीत् । निषेध करना । नामंजूर करना.

अपलाप, (पु०) अप+लप्+घञ् । सतोप्यसत्वेन कथन-रूपे अपह्नवे । सत्यकोभी झूठ बनाकर कहना । सत्यको छिपाना । प्रेम । स्वीकार न करना.

अपवद्, भ्वा० प० उभ । गाली देना । निन्दा करना । विरोध करना । धिक्कारना । अप पदवि+ते+अप+ड वाद-अप-ऊदे.

अपवह्, भ्वा० प० । लेजाना । उठालेजाना । वहति । उवाह । अवाक्षीत्.

अपवरक, (न०) अप+वृ+क्वुञः संज्ञायां वुन् । वास-गृह । कमरा । रहनेका घर.

अपवर्ग, (पु०) अप+वृज्+भावे घञ् । दान । मुक्ति । दूरापन.

अपवर्जन, (न०) अप+वृज्+भावे ल्युट् । दान । त्याग । मोक्ष । निर्जन । अपने सिवा दूसरेका न होना.

अपवर्तन, (न०) अप+वृत्+णिच्+भावे ल्युट् । लौटना । टेढा करना । अङ्कशास्त्र (हिसाव)में प्रसिद्ध भाज्य भाजक दोनोंको किसी एक तुल्यरूप अङ्कसे बांटना । संक्षिप्त करना । अल्प करना.

अपवाद, अप+वद्+भावे घञ् । निन्दा । आज्ञा । प्रेम । विश्वास । विशेषविधिरूप बाधक । विशेष नियम । वेदान्तशास्त्रमें प्रसिद्ध सीपीमें प्रतीतहुई चांदीका सी-पीहीके स्वरूपमें लाभ करना । (भ्रान्तिज्ञानके दूर होजानेपर जैसीकी तैसी वस्तुका ज्ञान) । भेद । भिन्नता । विरोध । खास कायदह.

अपवारण, (न०) अप+वृ+णिच्-ल्युट् । अन्तर्धान । छिपना । व्यवधान । पडदा.

अपविघ्न, (त्रि०) अपगता विघ्ना यस्मिन् यथा तथा । निर्विघ्न । बिनरुकावट । न छेड़ा गया.

अपविद्ध, (त्रि०) अप+व्यध्+क्त । त्यक्त । छोडदियागया । प्रत्याख्यात । तिरस्कार कियागया । प्रतिक्षिप्त-(फेंका-हुआ) । "माता पिता दोनोंने किम्वा दोनोंमेंसे किसी एकने जिसे छोड दिया, और कोई दूसरा उसे अपना बनाले ऐसा पुत्र अपविद्ध कहा जाता है" । बारह प्रकारके पुत्रोंमेंसे एक । मुतबन्नह.

अपविषा, (स्त्री०) अपगतं विषं यस्याः ब० । जिस्से विष दूर हो जाय । विषहारिणी (विषनिकालनेहारी).

अपवृ, स्वा० उभ० । वृणोति । ते । ववार । वव्रे । खोलना.

अपवृज्, रुधा० आ० । अपवृङ्क्ते हटाना । नाश करना । रोक देना । फाड देना । खेंचना । लेजाना । खतम करना.

अपवृत्, भ्वा० आ० । पीछे लौटना । लेजाना । प्रस्थान करना । चल देना । जुदा होना । अपवर्तते । ववृते । अव-र्तिष्ट.

अपवृत्त, (पु०) अप+वृत+क्त। पराङ्मुखीभूत.। किसीको न माननेहारा। जिसका आचरण विगड गया हो.

अपव्यध्, दिवा० प०। बुरी तरहसे किसीके चित्तको दुखाना। वींधना। अप विध्यति। विव्याध.

अपव्यय, (पु०) अपकृष्टः-मर्यादां उल्लङ्घ्य कृतः व्ययः। मर्यादा कायदाको लांघ कर किया गया व्यय। खर्च। वाफिर खर्च। हदसे जियादा खर्च.

अपशब्द, (पु०) अपकृष्टः शब्दः प्रा० स०। संस्कृत-भिन्न शब्द। जो शब्द साफ न हो। विगडाहुआ शब्द। "संस्कृत शब्दही शक्तिकी विकलता, भूल, आलस्य आदिसे औरही प्रकारसे वोलेगये अपशब्द कहलाते हैं" यह हरिकारिकाका तात्पर्य है। (संस्कृतशब्दही अन्यथा उच्चारण करनेसे असाधु हो गया)। भाषाशब्द.

अपशोक, (पु०) अपगतः शोको यस्मात् ब०। जिस्से शोक दूर हुआ। अशोकका वृक्ष। शोकरहित। (त्रि०).

अपष्ठु, (त्रि०) अप+स्था+कु-उणा० विरुद्ध। वरिर्खिलाफ.

अपस्, (न०) आप्-असुन्-ह्रस्वश्च। आपः कर्माख्यायां ह्रस्वो नुट् च वा स्यात् उणा०४।२०७अप्नः-अपः। कार्य। काम। क्रिया। पवित्रकर्म वा रीति। यज्ञका काम.

अपसद, (त्रि०) अपकृष्ट एव सीदति-सद+अच्। नीचजातिविशेष। ब्राह्मणके वीर्यसे क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र-कन्याके गर्भमें उत्पन्न सन्तान। अधम। नीच.

अपसर्जन, (न०) अप+सृज्+भावे ल्युट्। देना। छोडना। मोक्ष। निर्जन.

अपसर्प, (पु०) अप+सृप्+अप्। गुप्तचर। छिपाहुआ दूत। "भावे घञ्" हटना.

अपसव्य, (पु०) अपगतं सव्यं यत्र। दक्षिणका भाग। दहिनीओर। पितृतीर्थं। पितरोंका तीर्थ (न०).

अपसिद्धान्तः, (पु०) अपगतः सिद्धान्तः। बुरा सिद्धान्त। सिद्धान्तको स्वीकार करकेभी नियमका परित्याग करके वातचीत (कथाप्रसंग) करना.

अपसृ, भ्वा० प०। सरति। ससार। चले जाना। जुदा होना। हट जाना.

अपसृप, भ्वा० प०। आरामसे साथ २ चलेजाना। पीछे हठा-लेना। वदलजाना। चले जाना। सर्पति। ससर्प। असृपत्.

अपस्कर, (पु०) अपकीर्यते (स्वस्थाने क्षिप्यते) अप+कॄ+अप् सुडागमः। चक्रभिन्न रथाङ्ग। पहियेके बिना रथका अङ्ग (हिस्सा)। रथ (गाडी) को आर-म्भ करनेहारा काष्ठ.

अपस्नात, (त्रि०) अपकृष्टं स्नातः। बुरा नहाया। मृतक-के उद्देशमें नहाया। मुरदेके कारण स्नान किया.

अपस्मार, (पु०) अपगतं स्मारः (स्मरणं) यस्मात् ५ ब०। जिस्से स्मरण (यादगिरी) जातारहै। मिरगी-नामसे प्रसिद्ध रोगका भेद। (उसके होनेपर उस रोगीकी उसी समय संपूर्ण विषयोंमें स्मरणशक्ति विनष्ट होजातीहै).

अपहन्, अदा० प०। हन्ति। जघान। अवधीत्। हटा देना। ताडन करना। नाश करना। मारना। लेजाना.

अपहस्, भ्वा० प०। हसति। जहास। अहसीत्। ठट्ठा (मखौल) करना.

अपहस्त, (त्रि०) अपसारणार्थो हस्तो यस्मिन्। जिसमें हटानेके लिये हाथ चले। गलहस्त (गलेमें हाथ) देकर निकालागया.

अपहार, (पु०) अप+हृ+घञ्। हानि (नुकसान) चोरी। छिपाना। लूटना। धनस्वामीके काममें न आनेहारा खर्च.

अपहा, जु० प०। जहाति-जहौ अहासीत् त्यागना। छोडना.

अपहृ, भ्वा० प०। हरति। जहार। अहार्षीत्। दूर लेजाना। उडा लेजाना। उठा लेजाना। लौटाना। मोडना.

अपह्नव, (पु०) अप+न्हु+भावे अप्। एकवस्तुके होने-पर भी छिपाना (अपलाप)। प्रेम। (पियार)। इन्कार.

अपह्नु,-अदा० आ०। छिपाना। छिपना स्वरूप (भेस or वेश) बदलना। ह्नुते। जुह्नुवे। अह्नोष्ट.

अपह्नुति, (स्त्री०) अप+ह्नु+भावे क्तिन्। छिपाना। अर्थालङ्कारविशेष। प्रकृत वस्तुको छिपाकर उसमें और वस्तुका आरोप करना.

अपांनाथ, (पु०) ६ त० अलुक्स०। जलका स्वामी। समुद्र.

अपांनिधि, (पु०) नि+धा+कि ६ त० अलुक्स०। पानीका समूह। समुद्र.

अपांपति, (पु०) पा+डति ६ त० अलुक्स०। समुद्र। वरुण.

अपांपित्त, (न०) ६ त० अलुक्स० वा। अग्नि। (वह जलका कारण होनेसे पित्त है) "वाळुकी" "अप्पित्त" भी इसी अर्थमें.

अपाक, (पु०) पच्+घञ् अभावार्थे न० त०। न पकाहुआ। खायेगये अन्नका अग्निके मन्द होने आदिसे न पचना। ७ ब०। न पचनेसे उत्पन्नहुआ अजीर्णतारोग (वदहज़मी) ६ ब०। पाकरहित (कच्चा) (त्रि०).

अपाकरण, (न०) अप+आ+कृ+ल्युट्। निराकरण। निकालना। तिरस्कार। न मानना.

अपाकशाक, (पु०) न पच्यते शाको यस्य। अदरक (इसका मूलही भोजनके लिये पकाया जाताहै शाक नहीं).

अपाकृ, तना० उभ०। हटाना। दूर करना। नाश करना। बचाना। रखना। लेजाना.

अपाङ्क्तेय, (त्रि०) सद्भिः सह भोजने पङ्क्तिमर्हति-अर्हार्थे ढक् न० त० । जो सज्जनोंके साथ एक पंक्तिमें बैठकर भोजनके योग्य नहीं (चोर पतित आदि) । "अत्र ष्यञि" अपाङ्क्त्य इसी अर्थमें.

अपाङ्ग, (पु०) अपाङ्गति तिर्यक् चलति नेत्रं यत्र-अप+अङ्ग+आधारे घञ् । आंखका सिरा वा अन्तका भाग । तिलक । अङ्गहीन । "निरा०स०" (त्रि०).

अपाङ्गक, (पु०) अपकृष्टं अङ्गं यस्य ब० कप् । अपाङ् नामसे प्रसिद्ध अपामार्ग । "स्वार्थे क" । आंखकी नोक (पु०) अङ्गहीन (त्रि०).

अपाङ्गदर्शन, (न०) अपाङ्गेन (नेत्रान्तेन) दर्शनं ३ त० । आंखकी नोकसे देखना (कटाक्ष).

अपाचीन, (त्रि०) अपाच्यां भवः-ख-ईन । पीछेकी ओर होनेवाला । पीछेका । पीछे लौटाहुआ.

अपाटव, (न०) नास्ति पाटवं (पटुता) यत्र-पटु+भावे अण् । रोग । न० त० । चतुराईके बिना । ७ ब० । चतुराईसे जो शून्य हो (त्रि०) मूर्ख.

अपाणिनीय, (त्रि०) पाणिनीयं-अष्टाध्यायीरूपं ग्रन्थं यो नाधीते । जो पाणिनीके व्याकरणको भलीभांति नहीं पढता । दिखलावटी शिक्षक वा टीचर.

अपात्र, (न०) न पात्रं (श्राद्धभोजनदानादियोग्यं) न० त० । विद्याआदिसे हीन । आचाररहित । दानादिकी योग्यतासे जो हीन हो । नटआदि.

अपात्रीकरण, (न०) अपात्रं श्राद्धभोजनाद्ययोग्यं क्रियतेऽनेन । कृ+करणे ल्युट् । निन्दितदानादिसे उत्पन्न-हुआ पापका भेद । "निन्दितोंसे धन लेना, व्यापार करना, शूद्रकी सेवा, और झूठ बोलना ये सब दानके अयोग्य कर देतेहैं" इस मनुके वचनसे तद्धेतुभूत निन्दित धनका लेना आदि.

अपादा, जु० आ० । लेजाना हटा देना । दत्ते । ददे । अदित.

अपादान, (न०) छह कारकोंमेंसे ५ वा कारक, जिसका अर्थ विभाग है.

अपान्, अदा० प० । अप-अन् । श्वास । सांस लेना । अनितिआन-आनीत्.

अपान, (पु०) अपानयति (अधोनयति) मूत्रादि-अप+आ+नी+वा ड । अपानिति (अधो गच्छति) अप+अन् गतौ+अच् । वा निरन्तर नीचे जाना जिसका स्वभाव है । गुह्यका पवन । "अपान जीवोंके आहारको नीचे लेजाताहै" "मूत्र और वीर्यको उठानेहारा वायु अपान है" ऐसे लक्षणवाला । गुह्य (गांड) (न०).

अपामार्ग, (पु०) अपमृज्यते व्याधिरनेन । मृज्+करणे घञ् कुत्वदीर्घौ । अपाङ्नामी वृक्ष.

अपाय, (पु०) अप+इण्+भावे अच् । वियोग । नाश । हटना । दुःख । आपत्ति.

अपार, (त्रि०) उत्तरोऽवधिः पारः न० ब० । दुस्तर (त्रि०) नदीआदिका दूसरा तीर । जिसका तीर न हो (न०).

अपार्थ, (त्रि०) अपगतोऽर्थोऽभिधेयः (प्रयोजनं) वा यस्मात् ५ ब० । अर्थशून्य । प्रयोजनके बिना । "अपार्थक" भी इसी अर्थमें होताहै । सम्बन्धरहित अर्थ-वाला वचन.

अपावृ, स्वा० उभ० । वृणोति । वृणुते । ववार । वव्रे । अवारीत् । अवरीष्ट or अवरीष्ट । अवृत । खोलना । जाहिर करना । आविष्कार करना.

अपावृत्, भ्वा० आ० । वर्तते । ववृते । अवर्तिष्ट । लोटना । मुडना । त्यागना.

अपावृत, (त्रि०) अप+वृ+क्त । न ढकाहुआ । खुला । स्वतन्त्र.

अपाश्रय, (पु०) अप+आ+श्रि+अच् । आश्रयसे रहित । "कर्तरि अचि" अधीन । "करणेऽचि" चन्द्रातप । (चन्दोआ) सायबान.

अप-आ-श्रि, भ्वा० आ० । आश्रय लेना । विश्राम करना । किसीपर लोटना । श्रयति-ते । शिश्राय-शिश्रिये । अशिश्रियत् त.

अप-अस्, दिव० प० । फेंकना । छोडना । एक ओर करना । नामंजूर करना । अस्यति । आस । आस्थत्.

अपासन, (न०) अप+अस्+णिच्+ल्युट् । मारना.

अपास्त, (त्रि०) अप+अस् क्षेपे+क्त । दूरीकृत । एक स्थानसे दूसरेमें निकालागया । तिरस्कार कियागया.

अपि, (अव्य०) सम्भावना । सन्देह । निन्दा । उपसर्ग-विशेष । आहरण । यथेच्छाचार । अनुज्ञा । अल्पत्व । समुच्चय । प्रश्न । शङ्का । एव । वा । सत्य । च । एवं । अपरं च । निश्चय । फिर । भी.

अपिगीर्ण, (त्रि०) अपि+गॄ+क्त । स्तुति कियागया । वर्णित । वमन कियागया.

अपितु, (अव्य०) अपि+तन्+डु । किन्तु । यदि । यद्यपि.

अपिधा, अपि-धा-जु० उभ० । बंद करना । छिपाना । पडदा डालना.

अपिधान, (न०) अपि+धाञ्+ल्युट् । ढकना (आच्छादन) "पिधान" इसी अर्थमें होताहै.

अपिनद्ध, (त्रि०) अपि+नह्+क्त । पहिराहुआ कपडा आदि । "पिनद्ध" भी इसी अर्थमें होता.

अपिहित, पिहित अपि+पि+धा(हि)त । बंद किया गया । छिपाया गया.

अपीच्य, (त्रि०) अपि—च्यवते (सौन्दर्याद्धीयते) च्यु+ड—अल्लोपः । उपसर्गदीर्घः न० त० । अतिसुन्दर । (बहुत खूबसूरत).

अपुच्छा, (स्त्री०) नास्ति पुच्छं (अग्रं) यस्याः । शिख-रहीन । शिंशपा (टाली) का वृक्ष । पूछके विना (त्रि०).

अपुनरावृत्ति, (स्त्री०) न पुनरावृत्तिरागमनं यत्र ७ व० । निर्वाण मुक्ति (जहां द्रष्टा, दर्शन, दृश्य तिनोंका अभाव होकर सम्पूर्ण ब्रह्ममय होजाताहै अर्थात् "न स पुनरावर्तते" इस श्रुतिके अनुसार जन्ममरणका भय छूठ जाताहै) ६ त० । पुनर्गमनसे जो शून्य हो (त्रि०) न० त० । फिर आगमनका न होना (स्त्री०).

अपुनर्भव, (पु०) न पुनर्भवो जन्म यत्र ७ व० । निर्वाण मोक्ष । ६ व० । बिलकुल छूट गया । न० त० । फिर जन्मका न होना.

अपुष्पफलद, (पु०) पुष्पं विनापि फलं ददाति । दा+क उप० स० । जो फूलके विना भी फल देवे । फूलविन फलवाला पनस और उदुम्बर आदि वृक्ष.

अपुंस्का, (स्त्री०) नास्ति पुमान् । पतिः यस्याः । पतिर-हित स्त्री.

अपूप, (पु०) न पूयते विशीर्यति । पू+य+प । पिष्टक । आटेका पूडा.

अपूरणी, (स्त्री०) न पूर्यते सर्वतः कण्टकावृततया दुरारोहत्वात् । कर्मणि ल्युट् । शाल्मलीवृक्ष । सिम्बलका पेड । संख्याको पूरा करनेहारे साधनसे भिन्न.

अपूर्व, (त्रि०) न पूर्वं दृष्टं । जो पहिले नहिं देखा गया । न जाना गया । आश्चर्य । ६ व० । कारणसे रहित परमा-त्मा । (पु०) विहित वा निषिद्ध कर्मसे उत्पन्नहुए दूसरे किसी समयमें होनेहारे पुण्यपापके फल सुख और दुःख (न०) । पहिले काल आदिसे जो भिन्न हो (त्रि०).

अपूर्वविधि, (पु०) अपूर्वे प्रमाणान्तरेण अप्राप्ते विधि-र्विधानम् । वि+धा+कि । किसी और प्रमाणसे जो प्राप्त नहिं उसके होनेकी आज्ञा देना । अप्राप्तको प्राप्त करने-हारा लिङ् आदि पदसे जाने योग्य एक प्रकारका शब्द । जैसे "स्वर्गके चाहनेहारा यज्ञ करे" यह लिङ्युक्त वाक्य किसी दूसरे प्रमाणसे न सिद्ध हो सकनेहारे स्वर्गके साधनभूत यज्ञको बोधन कर्ता है इसलिये अपूर्वविधि है.

अपेक्ष, भ्वा० आ० । अच्छी तरह देखना । तालाशी करना । आशा करना । किसी वस्तुकी प्रतीक्षा करना । अप—ईक्षते । ईक्षांचक्रे । ऐक्षिष्ट.

अपेक्षा, (स्त्री०) अप+ईक्ष्+भावे आकाङ्क्षा (थोडीसी इच्छाका विषय । पर्वाह । जरूरत) । कार्यकारणका आवश्यक सम्बन्ध । "अपेक्षते प्रत्ययमुत्तमं त्वाम्" । इति कुमारः.

अपेक्षाबुद्धि, (स्त्री०) यह एक है यह एक है इस प्रकार-की जो अनेकोंमें बुद्धि हो । "अनेकैकत्वबुद्धिर्या सापेक्षा बुद्धिरुच्यते" इति भाषापरिच्छेदः.

अपेक्षाबुद्धिज, (त्रि०) न्यायमतमें प्रसिद्ध द्वित्व (दो) से लेकर परार्धसंख्याका भेद । द्वित्वआदि प्रथम कहीगई अपेक्षाबुद्धिसे उत्पन्न होता है.

अपेय, (त्रि०) न पातुं योग्यः पा+यत् । न पीनेलायक.

अपोगण्ड, (त्रि०) पुनाति, पवते वा—पू+विच् । न पोगण्डः एकदेशोऽस्य । विकृताङ्ग (वदशकल) । बच्चा । बडा डरनेहारा (अतिभीरु).

अपोढ, (त्रि०) अप+वह+क्त । निरस्त । निकालागया । बाधित । हूटगया.

अपोदका, (स्त्री०) अपगतं उदकं यस्याः । ५ व० । पूति-नामी शाक (साग).

अपोह, (पु०) अपगत ऊहो वादिसमुद्भावितः तर्को यस्मात् ५ व० । वादीसे प्रकाशित कियेगये तर्कको निरास करनेहारा प्रतिवादीसे प्रकाशित कियागया उस्से (वादीसे) विरुद्ध तर्क । तर्क (मुबाहिसा) । त्याग (छोडना).

अपोह, भ्वा० उभ० । अप—उह० or (ऊह हटना) । चला देना । धकलना । लेजाना नाश करना । ऊहति—ते । ऊहां-चकार—चक्रे । औहीत्—औहिष्ट.

अप्स्य, (त्रि०) अप्सुनि=दहे भवः—यत् वेदे टिलोपः । किसी काममें लगा हुआ । शरीरके काममें स्थित.

अप्पतिः अप्—पतिः, (पु०) (अपांपतिः) जलका राजा । वरुणदेव.

अप्पति, (पु०) अपांपतिः ६ त० । वरुण । समुद्र.

अप्रकाण्ड, (पु०) न प्रकाण्डः स्कन्धो यस्य । शाखा-रहितवृक्ष । झिण्टिका आदि.

अप्रकाश, (त्रि०) प्र+काश्+घञ् । न० त० । नाटकमें रङ्गभूमीके सामाजिकोंके निकटही प्रकट करने योग्य । जनान्तिकपदसे समझनेलायक और रङ्गभूमीके पात्रोंका न जताने योग्य । परब्रह्म । (न०) । न०त० । प्रकाशका न होना । छिपाना (पु०).

अप्रकृष्टगुण, (त्रि०) (न०) न प्रकृष्टः गुणो यस्य न० व० । जिसका गुण उत्तम नहिं । व्याकुल । घबराया हुआ.

अप्रतिकर, (त्रि०) न प्रति वैपरित्ये, कृ+अच् न०त० । विरुद्ध न करनेहारा । प्रति+कृ+भावे अप् न०त० । विक्षेपाभाव । व्याकुलताका न होना । घबराहटका न होना (पु०).

अप्रतिरथ, (न०) न प्रतिकूलो रथो यत्र । युद्धकेलिये यात्रा । युद्धके समय यात्राकेलिये कियागया मङ्गल । सामवेदका एक भाग । "न प्रतिपक्षो रथो रथान्तरं अस्य" ६ ब० । जिसके समान और योद्धा नहिं । विष्णु । (पु०) मङ्गल (शादी वा खुसी).

अप्रतिरूपकथा, (स्त्री०) नास्ति प्रतिरूपा प्रत्युत्तरीभूता कथा यस्याः । अतुल्य (असमानी) कथा । ऐसा वचन कि जिसके विरुद्ध और न हो । ऐसा वचन कि जिसका उत्तरही न वने । उत्तरवाक्यरहित कथा.

अप्रतिष्ठ, (त्रि०) नास्ति प्रतिष्ठा यस्य न+प्रति–स्था+क+अ न स्थिर हुआ । न जमा हुआ । न पक्का नियत हुआ । सदाके लिये कायम नहीं.

अप्रतिहत, (त्रि०) न+प्रति+हन्+त । अनिरुद्ध । न रुका हुआ.

अप्रत्यक्ष, (त्रि०) ज्ञानभेदः प्रत्यक्षं न० ७ व० । जो प्रत्यक्ष (इन्द्रिय) का विषय न हो । जो देखने सुने आदिमें नहीं आसक्ता । अतीन्द्रिय । न० त । प्रत्यक्षका न होना । न० ६ व० । प्रत्यक्ष ज्ञानसे रहित (त्रि०).

अप्रधान, (न०) न० त० । प्रधानसे भिन्न । गौण । जो वडा न हो.

अप्रस्तुतप्रशंसा, (स्त्री०) अप्रस्तुतस्य अप्राकरणिकार्थस्य आक्षेपादिना प्रशंसा स्तुतिः । प्रस्तुत (वर्तमानविषय)-का वर्णन जहां अप्रस्तुतकरके हो । प्रकरणभिन्न अर्थको फेंककर जहां प्रकरणीभूत अर्थकी स्तुति हो । किसी दूसरे विषयके वर्णनसे जहां वर्तमानविषयकी प्रशंसा की जाय । अलङ्कारशास्त्रमें प्रसिद्ध अर्थालङ्कार.

अप्रहत, (त्रि०) न प्रहन्यते स । प्र+हन्+क्त न० त० । वह भूमी कि जिसको खेंचा नहीं गया । अकृष्टभूमी । विन वाही जमीन । "खिल"भी इसी अर्थमें होता है.

अप्राग्र्य, (त्रि०) प्राग्र्यं प्रधानं न० त० । अप्रधान । जो मुख्य नहीं.

अप्सरस्, (स्त्री०) बहु० । अद्भ्यः सरन्ति । सृ+असुन् । पानीसे निकली (समुद्रसे उत्पन्न होनेके कारण) । उर्वशी आदि स्वर्गकी वेश्या (कंजरी) । "पचाद्यच्" "अप्सरा" भी इसी अर्थमें है.

अफल, (पु०) नास्ति फलं यस्य । फलरहित "रांडा" नामी वृक्ष । फलरहित वृक्ष । प्रयोजनरहित वस्तु (त्रि०) बिनफल घृतकुमारी (जीवीकंद) । भूम्यामलकी.

अफेन, (न०) अप्रशस्तं फेनं यस्य । जिसकी झाग अच्छी न हो । वृक्षकी एक प्रकारकी गोंद (निर्यास) अफीम-नामसे प्रसिद्ध अहिफेन । अफीम.

अब्, शब्द करना-इदित् भ्वादि-आत्म०सक० सेट् । अम्बते । आम्बिष्ट.

अबद्ध, (न०) न संबध्यते स-बन्ध्+क्त । समुदायके अर्थसे शून्य वचन । अर्थशून्य वचन । निरर्थक वचन । "स्वार्थे-क" "अबद्धक" भी इसी अर्थमें होता है । सम्बन्धसे हीन (त्रि०) स्वतन्त्र (आजाद).

अबद्धमुख, (त्रि०) न बद्धं (नियन्त्रितं) मुखं अस्य । जिसका मुख बंधाहुआ नहीं । दुष्ट वचन बोलनेहारा । दुर्मुख.

अबध्य, (त्रि०) बध्+अर्हार्थे यत् न० त० । जो मारनेके योग्य न हो । अर्थशून्य वचन.

अबन्ध्य, (त्रि०) बन्धे (फलप्रतिबन्धे) साधुः । बन्ध्+यत् न० त० । सफल । जो फलको न रोके.

अबल, (पु०) नास्ति बलं यस्मात् । ५ ब० । वरुणनामी वृक्ष (इसका सेवन करनेसे बलका क्षय हो जाता है) । ६ ब० । बलरहित । दुर्बल । (त्रि०) स्त्री (औरत) "अबला".

अबाध, (त्रि०) नास्ति बाधा यस्य । बाधारहित । (बे-रोक) । पीडाशून्य (तन्दरुस्त).

अबिन्धन, (पु०) आप इन्धनं (दाह्याः) अस्य । जिसकी लकडियें जल हों । वाडवाग्नि (समुद्रकी आग) । वज्राग्नि (बिजलीकी आग).

अब्ज, (न०) अद्भ्यो जायते । जन्+ड ५ त० । कमल । चन्द्र (चांद) । धन्वन्तरि (देवताओंका हकीम) (पु०) शङ्ख । (पु० न०) । १००००००००० संख्या (सौकरोड).

अब्जज, (पु०) अब्जात् (विष्णुनाभिपद्मात्) जायते । जन्+ड । ब्रह्मा (जो विष्णुकी नाभीके कमलसे निकला) । ज्योतिषशास्त्रमें प्रसिद्ध यात्राके समय एक प्रकारका योग.

अब्जभोग, (पु०) अब्जस्य (शङ्खस्य) भोगः (आकार इव आकारो) यस्य । जिसका स्वरूप शंखके समान हो । कौडी । जिसका स्वरूप कमलके समान हो । पद्मकन्द.

अब्जयोनि, (पु०) अब्जं योनिः (उत्पत्तिस्थानं) यस्य । जो कमलसे निकला । विधाता । ब्रह्मा.

अब्जवाहन, (पु०) अब्जं इव शुभ्रत्वात् वृषभो वाहनं अस्य । कमलकी नांई जिसका वाहन श्वेत है । महादेव.

अब्जहस्त, (पु०) अब्जः (चन्द्रः) हस्तात्–किरणात् यस्य । जिसकी किरणोंसे चन्द्रमा हो । सूर्य । सूर्यकी किरणोंके सम्पर्कहीसे चन्द्रमाकी किरणों बढती हैं, यह ज्योतिषका सिद्धान्त है.

अब्जिनी, (स्त्री०) अब्जानि सन्ति अस्मिन् देशे । अब्जानां समूह इति वा । पद्मवाली बेल । पद्मोंका समूह.

अब्जिनीपति, (पु०) अब्जिन्याः पद्मसमूहस्य पतिः । प्रकाश देनेके कारण अनुकूल सूर्य.

अब्द, (पु०) अपो ददाति-दा+क मेघ । बादल । मोथा । एक पर्वत । " यदि मध्यमें अन्तस्थवर्ण हो तो वर्षके अर्थमें होता है " जैसा " अब्द ".

अब्धि, (पु०) आपो धीयन्तेऽत्र-धा+आधारे कि । समुद्र.

अब्धिकफ, (पु०) अब्धेः (समुद्रस्य) कफ इव । समुद्रकी झाग.

अब्धिद्वीपा, (स्त्री०) अब्धिसंवेष्टिताः लवणोदकादिभिः सप्तभिर्वेष्टिता. सप्तद्वीपा अस्याम् । क्षार (खारा) समुद्र आदिसे घिरेहुए जम्बु (जामन) आदि सात द्वीपवाली पृथिवी.

अब्धिनवनीतक, (पु०) " अब्धेः (समुद्रस्य) नवनीतमिव स्वार्थे क " । मानों समुद्रका माखन है । चन्द्रमा.

अब्धिशयन, (पु०) " अब्धौ शयनं यस्य " । जिसका समुद्रमें शयन है । विष्णु । (वह प्रलयके समय समुद्रमें सोता है).

अभ्र, (न०) " अपो बिभर्ति भृ+क । जलको उठाता है । मेघ (बादल) " " न बिभर्ति किञ्चित् भृ+क द्वित्वं " । आकाश.

अभ्रक, (न०) " अभ्रं इव कायति राजते कै+क " । अवरक (धातुभेद).

अभ्रंकष, (न०) अभ्रं कषति । व्याप्नोति शोषयति वा " कष्+खच्मुमूच " । जो बादलमें फैलजाता किंवा उसे सुकादेता है । वायु । बहुत ऊंचा (त्रि०).

अभ्रपुष्प, (न०) " अभ्रस्य पुष्पमिव शुभ्रत्वात् " जल । " अभ्र इव पुष्पं अस्य " । बैतका वृक्ष । वेतस.

अभ्रमातङ्ग, (पु०) " अभ्रात्मको मातङ्गः शा० त० " । ऐरावतनामा इन्द्रका हाथी.

अभ्रमु, (स्त्री०) " अभ्रे (अभ्रात्मके ऐरावते) माति" मा+डु । ऐरावत हाथीकी स्त्री.

अभ्रमुवल्लभ, (पु०) " अभ्रमोर्वल्लभः ६ त० " । ऐरावत हाथी.

अभ्ररोहस्, (पु०) अभ्रात् (तच्छब्दात्) रोहति"रुह्+असुन्" । वैदूर्यनामा मणि । (वह बादलके गर्जनेसे प्रगट होती है यह प्रसिद्ध है).

अभ्रंलिह, (पु०) " अभ्रं (मेघं) लेढि अत्युच्चतया स्पृशति " " लिह+खश् मुमूच " । बहुत ऊंचा होनेसे बादलको छूता है । हवा । मेघको छूनेहारा बहुत ऊंच (त्रि०).

अभ्रोत्थ, (न०) " अभ्रात् (तन्निर्घर्षणात्) उत्तिष्ठति" स्था+क । बादलके अधिक घसडनेसे उठता है । वज्र (बिजली).

अब्रह्मण्य, (न०) " ब्र (ब्र) ह्मणि (वेदे) साधु ब्रह्मन्+यत् न० ब०" । "जिसकी वेदमें निन्दा की है । नाट्योक्तिमें" " इसे न मारना चाहिये " । ऐसा वचन । वेदमें चतुर न होना । वेदज्ञानशून्य.

अब्राह्मण, (पु०) "अप्राशस्त्ये नञा त० " । नीच ब्राह्मण.

अभ्र्, शब्द करना-भ्वा० आत्म० इदित् अक० सेट् । अम्भते । अम्भिष्ट.

अभय, (न०) " भी+अच् न० त० " । भयका न होना । ६ ब० । भयसे रहित (त्रि०) " न भयं अस्मात् " ५ ब० । परमात्मा । परमात्माका ज्ञान । " अभयं वै जनक प्राप्तोऽसि " इति श्रुतिः । हरीड (स्त्री०).

अभाव, (पु०) " भू+घञ् न० त० " । मरना । न होना । न्यायमतमें द्रव्यादि ६ को भाव कहते हैं । भावभिन्न.

अभि, (अव्य०) " भाति " " भा+कि " । किसी बातको प्रकाश करना । सामने । इच्छा । वीप्सा । लक्षण । चारों ओर.

अभिक, (त्रि०) "अभिकामयते-अभि+कम्-नि०" । चाहनेहारा । कामुक.

अभिकम्, चु० आ० । प्यारकरना । चाहना । कामयते । कामयाञ्चक्रे । अचीकमत् । अचकमत्.

अभिकम्पू, भ्वा० आ० । कांपना । थर २ कांपना । कम्पते । चकम्पे । अकम्पिष्ट.

अभिकाङ्क्ष, भ्वा० उभ० । चाहना । पूछना । प्रार्थना-करना । काङ्क्षति–ते । चकाङ्क्ष–क्षे.

अभिकाम, (त्रि०) कम्+अच् । अभिवृद्धः कामो यस्य । जिसकी इच्छा बहुत बढ गई है । प्रीतिमान् । अनुरागी । प्यार करनेवाला । अत्यन्त कामी.

अभिक्रतु, (त्रि०) आभिमुख्येन क्रतुः युद्धकर्म यस्य । समाने होकर युद्ध करनेवाला । उद्धत । बडाबली.

अभिक्रन्द्, भ्वा० प० । चिलाना । पुकारना । क्रन्दति । चक्रन्द । अक्रन्दीत्.

अभिक्रम, (पु०) अभि+क्रम्+भावे घञ् अवृद्धिः । आरम्भ । चढना । लडाई । शत्रुके सामने जाना । " कर्मणि घञ् " । आरंभ किया गया.

अभिक्रुश्, भ्वा० प० । चिल्लाना । भिडकते हुए किसीको पुकारना । क्रोशति । चुक्रोश । अक्रुक्षत्.

अभिक्षिपू, तु० प० । फेंकना । निंदाकरना । क्षिपति । चिक्षेप । अक्षैप्सीत्.

अभिख्या, (स्त्री०) अभि+ख्या+अङ् । नाम । शोभा । यशः

अभिगम्, (पु०) जाना । निकट जाना । पहुंचना.

अभिग्रस्त, (त्रि०) अभि+ग्रस्+क्त । शत्रुओंसे दबाया गया.

अभिग्रह, (पु०) अभि+ग्रह्+अण् । लूट । देखते २ चुराना । धावा करना । सामने आनेका उद्यम करना.

अभिघात, (पु०) अभि+हन्+घञ् । चोट । क्रियाभेदसे एक वस्तुको दूसरीके साथ मिलाना । अक्षरोंके उच्चारण करनेके समय कण्ठ, तालु आदि स्थानोंमें वायुका संयोग । किसी प्रकारका सम्बन्ध.

अभिघातिन्, (पु०) अभि+हन्+णिनि । शत्रु । प्रहार करनेहारा.

अभिघार, (पु०) अभि+घृ (वगना)+णिच्+भावे अच् । होम । अग्निमें घी आदिका सींचना । " कर्मणि घञ् " । सींचागया घी.

अभिचर्, भ्वा० प० । किसीके साथ बुरी तरहसे व्यवहार करना । नियम तोड कर निकलना । अपराध करना । चरति । चचार । अचारीत्.

अभिचार, (पु०) अभि+चर्+घञ् । अथर्ववेद और तन्त्र आदिमें प्रसिद्ध मारण, उच्चाटन, स्तम्भन, प्रभृति कर्म । जिनसे दूसरेकी हिंसा हो । (इस प्रकारका होम करना कि जिस्से शत्रु मरजाय, अथवा उखड जाय, किम्वा एक स्थानमें ऐसा रुके कि हिलसी न सके).

अभिजन, (पु०) अभिजन्यतेऽस्मिन् । जन्+घञ् अवृद्धि । कुल । प्रसिद्धि । जन्मभूमी । (कुलमें अच्छा).

अभिजय, (त्रि०) अभि+जि+अ । पूरी जय । जीत.

अभिजात, (त्रि०) अभि (प्रशस्तं) जातं (जन्म) यस्य । कुलीन । पण्डित । श्रेष्ठ.

अभिजातिः, (स्त्री०) अभि+जन्+क्तिन्+ति । श्रेष्ठ जन्म । अच्छी वैदाइश.

अभिजि, भ्वा० प० । जय करना । पूरे तौरपर जीतलेना । जयति । अजैषीत्.

अभिजित्, (न०) ज्योतिषशास्त्रमें नियत की गई उत्तराषाढा नक्षत्रके शेष चौथे भागसहित श्रवण नक्षत्रकी पहिली चारों कला । राशिचक्रकी उन्नीसवी कलाका अंश । जिसके द्वारा सामने होकर शत्रुओंको जीते । " अभि+जि करणे क्विप् " । शत्रुओंको जीतनेहारा । यात्राके लिये अनुकूल एक लग्न । १५ भागोंमें विभक्त दिवसका आठवां भाग.

अभिजुष्, तु० आ० । पुकारना । किसीके पास जाना । सेवा करना । जुषते । जुजुषे । अजेषिष्ट.

अभिज्ञ, (त्रि०) " अभिजानाति-अभि+ज्ञा+क " । चारों ओरसे जाननेहारा । चतुर । पण्डित.

अभिज्ञा, (स्त्री०) " अभि+ज्ञा+अङ् । पहिले उपजा ज्ञान.

अभिज्ञान, (न०) " अभिज्ञायतेऽनेन-अभि+ज्ञा+करणे-ल्युट् " । यह वही है इस प्रकारके ज्ञानका साधन चिन्ह.

अभितस्, (अव्य०) अभि+तसिल् । समीप । सामने । दोनों ओर । शीघ्रता.

अभिद्रवण, (न०) अभि+द्रु+ल्युट् । वेगसे जाना । भागना.

अभिद्रु, भ्वा० प० । दूर निकलजाना । वहजाना । आक्रमणा करना । दुःखीहोना । द्रवति । दुद्राव । अद्रावीत्.

अभिद्रुत, (त्रि०) अभि+द्रु+क्त+त । आक्रमण । हमला किया गया । पूरा पिघलगया.

अभिद्रुह्, दि० प० । द्रोह (वैर) करना । हानि पहुंचाना । द्रुह्यति । दुद्रोह । अद्रुहत्.

अभिद्रोह, (पु०) अभि+द्रुह्+घञ् । निन्दा करना । किसीका अनिष्ट (बुराई) चिन्तन करना । अपकार (बुराई).

अभिधा, (स्त्री०) " अभि+धाञ्+भावे अङ् " । नाम । शब्दमें रहनेहारे अर्थको वतानेहारी शक्ति । " अभिधीयतेऽनेनेति करणे अङ् " । वाचक शब्द । भट्टजीके मतमें फलके उपजनेका कारण शब्द और अर्थमें रहनेहारी भावना.

अभिधान, (न०) " अभि+धा+भावे ल्युट् " । कहना । " करणे ल्युट् " नाम । शब्दके अर्थको प्रतिपादन करनेहारा निघण्टु, कोष आदि ग्रन्थ.

अभिधेय, (त्रि०) "अभि+धा+कर्मणि यत् " । वाक्यका अर्थ । नामवाला.

अभिध्या, (स्त्री०) "अभि+ध्यै+अङ्" । दूसरेके धनको हरण करनेकी इच्छा । लेनेकी इच्छा । सोचना । विषयोंकी प्रार्थना.

अभिनन्द, (पु०)"अभि+नन्द्+घञ् " । सन्तोष । प्रशंसा । " ल्युटि " इसी अर्थमें " अभिनन्दन " भी होता है.

अभिनन्द्, भ्वा० प० । प्रसन्न होना । किसी वात पर सन्तुष्ट होना । नन्दति । ननन्द । अनन्दीत्.

अभिनम, (पु०) अभि+नु+अप् । स्तुति । प्रा० स० । नया (त्रि०).

अभिनय, (पु०) " अभि+नी+करणे अच् " । हृदयके भावको प्रगट करनेहारी क्रिया । दशाकी नकल । " भावे अचि " । शरीरकी चेष्टा और भाषण आदिसे अभिनेय (नकल करनेलायक) का अनुकरण (नकल) करना । " अभिनयति (वोधयति) अर्थं अत्र आधारे अच् " । शरीरकी चेष्टादिसे दृश्य पदार्थको जतानेहारा रूपक आदि दृश्यकाव्य.

अभिनय, (पु०) अभि+नी+अ । अवस्थानुकरण । किसी अवस्था (हालत) की नकल । नाट्य । नाटककी खेल.

अभिनवोद्भिद्–द, । (पु०) अभिनवं उद्भिद्य जायते । उद्+भिद्+क्विप् वा । फटकर नया निकलता है । अङ्कुर । आँकुरी.

अभिनह्, दि० प० । बांध देना । जैसा कि नेत्रोंका गांठ लगाना । नह्यति । ननाह । अनात्सीत्.

अभिनहन, (न०) "अभि+नह्+ल्युट्" । दोनों ओरसे बांधना । पक्का बाँधना.

अभिनिधन, (त्रि०) अभिगतो निधनं–मरणाम् । नाशके निकट । फूटी हुई किसमत भाग्यवाला.

अभिनिर्मुक्त, (पु०) अभितः (सर्वतः) " सायन्तनकर्मणा निर्मुक्तः " । सूर्य छिपनेके समय नींदके कारण छूट गया उस समयके करनेयोग्य काम.

अभिनिर्याण, (न०) " अभि+निर्+या+ल्युट् " । जीतनेकी इच्छासे जाना । धावा करना.

अभिनिविश्, तु० आ० । किसीमें प्रवेश करना । सिद्धान्त करना । अधिकार कब्जा करना । आश्रय लेना । आक्रमण करना । विशते । विविशे । अविक्षत.

अभिनिवेश, (पु०) " अभितो निवेशः घञ् " । अवश्य यह करना चाहिये इस प्रकार हठवाले मनका होना । योगशास्त्रमें प्रसिद्ध मरनेके भयका कारण अज्ञानविशेष । अनित्यभी देहादि वियोग न हो इस प्रकार मृत्युसे वचनेका हठ.

अभि-नी, भ्वा० प० । निकट लाना । लेजाना । नयति । निनाय । अनैषीत्.

अभिनीत, (त्रि०) " अभि+नी+क्त " । सीखाहुआ । क्रोधरहित । क्षमावाला । सजाहुआ । भूषित.

अभिपत्, भ्वा० प० । निकट उडना । जाना । जा पडना । पहुंचना । आक्रमण करना । पतति । पपात । अपातीत्.

अभिपद्, दि० आ० । जाना । पहुंचना । पद्यते । पेदे । अपादि.

अभिपन्न, (त्रि०) " अभि+पद्+क्त " । अपराधवाला । आपदामें पडा । स्वीकार किया गया । सामने होकर गया.

अभिप्लु, भ्वा० आ० । ऊपरजाना । दवायाजाना । किसीपर कूदना । मरना । प्लवते । पुप्लुवे । अप्लोष्ट.

अभिप्राय, (पु०) " अभि+प्र+इण्+अच् " । आशय । राय । सम्मति.

अभिभव, (पु०) " अभि+भू+अप् " । पराजय (हार) । तिरस्कार । अनादर । वेइज्जती.

अभिभाष्, तु० आ० । किसीको वोलना । सम्बोधन करना । वातचीत करना । भाषते । वभाषे । अभाषिष्ट.

अभिभाषिन्, (त्रि०) अभिभाष्+इन् । किसीको वोलनेवाला । वातचीत करनेवाला.

अभिभू, भ्वा० प० । दवाना । वशकरना । जीतना । अतिक्रमण करना । लांघन । भवति । वभूव । अभूत्.

अभिभूत, (त्रि०) " अभि+भू+क्त " । क्या करना चाहिये इस प्रकारके ज्ञानसे शून्य । दवायाहुआ । घवरायाहुआ.

अभिमत, (त्रि) " अभि+मन्+क्त " । सम्मत । आहत । मनोरथ.

अभिमन्, दि० आ० । इच्छा करना । चाहना । खाहशमंद होना । लालच करना । स्वीकार करना । पसंद करना । अनुमति देना । खयाल करना । मन्यते । मेने । अमंस्त.

अभिमन्त्र, चु० आ० । मन्त्रभी होता है । मन्त्रोंसे पवित्र करना । मन्त्रयते । मन्त्रयाञ्चक्रे । अममन्त्रत.

अभिमन्त्रण, (न०) " अभि+मन्त्रि+ल्युट् " । मन्त्र पढकर शुद्ध करना । निमन्त्रण (बुलाना).

अभिमन्थ-न्य, (पु०) " अभि+मन्थ+अच्-मन्य इति पक्षे मन्+श " । एक प्रकारका नेत्रका रोग । चारों ओर रिडका गया.

अभिमर, (पु०) " अभिम्रियतेऽत्र-मृ+आधारे अच् वा० " । लडाई । शराव । " भावे घञ् " । पीडा पहुंचाना.

अभिमर्द, (पु०) अभि+मृद्+आधारे घञ् । लडाई । मद्य । " भावे घञ् " पीडा पहुंचाना.

अभिमान, (पु०) अभि+मन्+भावे घञ् । धनादिद्वारा दर्प । अहंकार । प्रार्थना । हिंसा । " अभिमानं सुरापानम् ".

अभिमाय, (त्रि०) अभिगतः मायां अविद्याम् । इतिकर्तव्यताविमूढ । किसी कामका निर्णय न कर सकनेवाला.

अभिमुख, (त्रि०) अभिगतो मुखं अस्या० स० । सामने " स्त्रियां ङीष् ".

अभिमृद्, क्र्या० प० । मलडालना । चूरा करना । पावमें मल डालना । दवाना । किसीके विरुद्ध वोलना । मृद्नाति । ममर्द । अमर्दीत्.

अभिमृष्ट, (त्रि०)अभि+मृष्+क्त । साफ मिलाहुआ । संवद्ध.

अभियुक्त, (त्रि०) अभि+युज्+क्त । दूसरोंसे रुकाहुआ । आचार्य । प्रतिवादी । जिसपर नालिश होती है.

अभियुज्, रुधा० अ० । अभियोग । नालिश करना । किसी कामके लिये प्रस्तुत तयार होना । युङ्क्ते । युयुजे । अयुक्त.

अभियोक्तृ, (त्रि०) अभि+युज्+तृच् । अभियोगकर्ता । फरायदी.

अभियोग, (पु०) अभि+युज्+भावे घञ् । दूसरेसे कियेगये अपमानके विषयमें राजाके यहां प्रार्थना करना । नालिश करना । युद्धके लिये बुलाना । अपकारकी इच्छासे दवाना । आग्रह । शपथ । उद्योग.

अभिरक्ष्, भ्वा० प० । रक्षा करना । वचाना । सहायता करना । रखवाली करना । रक्षति । ररक्ष । अरक्षीत्.

अभिरक्षितृ, (त्रि०) अभि+रक्ष्+तृच् । रक्षा करनेवाला । रखवाली करनेवाला.

अभिरम्, भ्वा० आ० । प्रसन्न होना । सप्तमीके साथ आता है । रमते । रेमे । अरंस्त.

अभिराम, (त्रि०) अभिरम्यतेऽस्मिन्-रम्+आधारे घञ् । सुन्दर । प्रिय । मनोहर.

अभिरुच्, भ्वा० आ० । चमकना । पसंद करना । रोचते । रुरुचे । अरोचिष्ट.

अभिरूप, (पु०) " अभि रूपयति सर्वं स्वात्मकं करोति णु० रूप्+अच् " । शिव । विष्णु । " अभिरूपयति । निरूपयति " पण्डित । " उत्कृष्टं रूपं यस्य " । कामदेव । चन्द्रमा । मनोहर (त्रि०).

अभिलष्, भ्वा० दि० प० । चाहना । लोभकरना । किसी वातके पीछे पडना । लषति । लष्यति । ललाष । अलषीत् । अलाषीत्.

अभिलाप, (पु०) " अभिलप्यते संकल्प्यतेऽनेन-लप्+करणे घञ् " । देशकालादिका कीर्तन कर यह शास्त्रोक्त कर्म मैं करूंगा इस प्रकारका वाक्य । " कर्मणि घञ् " शब्द.

अभिलाव, (पु०) अभि+लू+घञ् । काटना.

अभिलाष–स, (पु०) " अभि+लष् (स्)+घञ् " । इच्छा । लोभ.

अभिवाद,(पु०) "अभि+वद्+घञ् ।" अप्रियवचन । "अभि+वद्+अच् " प्रणाम.

अभिवादन, (न०) अभि+वद्+ल्युट् । सामने करनेको वाचिक प्रणाम । " अभि+वद्+णिच्+ल्युट " । अपना नाम लेकर झुकना.

अभिविधि, (पु०) "अभि+वि+धा+कि" । व्याप्ति । मर्यादा । वहांसे, वा तक.

अभिविनीत, (त्रि०) अभि+वि+नी+क्त । शिक्षित । भलीभांति सीखा हुआ । पक्के संकल्पवाला.

अभिवीक्ष्, भ्वा० आ० । देखना । निरीक्षण करना । पहिचानना । खयाल करना । ईक्षते । ईक्षांचक्रे । ऐक्षिष्ट.

अभिव्यक्त, (पु०) अभि+वि+अञ्ज्+क्त । प्रत्यक्ष । प्रकाशित । रौशन.

अभिव्यञ्ज–अभि-वि-अञ्ज्, रुधा० प० । प्रकाश करना । स्पष्ट करना । अनक्ति । आनञ्ज । आञ्जीत्.

अभिव्यादानं, (न०) अभि+वि+आ+दा+अन । आवृत्त-शब्द । एक शब्दका वार वार बोलना.

अभिव्याप्, स्वा० प० । फैलाना । शामिल करना । मापना । आप्नोति । आप । आपत्.

अभिव्याप्ति, (स्त्री०) "अभितो व्याप्तिः-वि+आप्+क्तिन् " । पूरी तरहसे मिलना । सम्पूर्ण अंगोंसे संबंध । सब ओर फैलना.

अभिव्याहृ–अभि-वि-आ-हृ, आ० प० । उच्चारण करना । वर्णन करना । अच्छीतरह बयान करना । हरति । जहार । अहार्षीत्.

अभिशप्, भ्वा० प० उभ० । शाप देना. शपति–ते, शशाप–शेपे । अशाप्सीत् । अशप्त.

अभिशप्त, (त्रि०) " अभि+शप्+क्त " । यह तेरा अनिष्ट हो ऐसे शाप दिया गया.

अभिशंस्, भ्वा० प० । उपालंभ देना । दोष लगाना । स्तुति करना । वर्णन करना । शंसति । शशंस.

अभिशस्, भ्वा० प० । दुःख पहुंचाना । हमला करना । शसति । शशास । अशसीत् । अशासीत्.

अभिशस्त, (त्रि०) अभि+शन्स्+क्त । यह पराई स्त्रीके पास जाता है इत्यादि मिथ्या वचनसे मैथुनविषयक दोष जिसपर लगाया जाय । लम्पट । दोषदूषित.

अभिशस्ति, (स्त्री०) अभि+शन्स्+क्तिन् । सुवर्ण (सोने)-की चोरी आदि इसने की है इस प्रकार झूठा दोष । प्रार्थना.

अभिशाप, (पु०) अभि+शप्+घञ् । मिथ्या अपवाद । अनिष्टाभिशंसन । तुमारा बुरा हो ऐसा शाप देना.

अभिषङ्ग, (पु०) अभि+सञ्ज्+घञ् । तिरस्कार । निन्दा । शपथ (सों) । व्यसन (क्लेश) । गलेमिलना । शोक । हार.

अभिषञ्ज्–सञ्ज, सकोप होता है । भ्वा० प० । गले मिलना । साथ लगना । स्पर्शकरना । संजति । ससञ्ज । असाङ्क्षीत्.

अभिषव, (पु) अभि+सु+अप् । यज्ञके पहिले स्नान । यज्ञ । स्नान । पीडन । सोमलताका पीना । मद्यनिकालना । बलि देना.

अभिषवण, (न०) अभि+सु+ल्युट । नहाना । यज्ञमें नहाना । बलि । सोमलताका कूटना.

अभिषु–सु, स्वा० प० । सोमरस निकालना । किसीकामी रस अर्क निकालना । सुनोति । सुषाव । असावीत्.

अभिषेक, (पु०) अभि+सिच्+घञ् । मन्त्रपूर्वक स्नान । पदपर नियत करना । अधिकारकी प्राप्तिके लिये स्नान.

अभिषेणन, (न०) " सेनया शत्रोरभिमुखं यानं " " अभि+सेना+णि+ल्युट " । सेना लेकर शत्रुके सामने लडनेको जाना । दुशमनको शिकस्त देनेके लिये उसके सामने जाना.

अभिष्टुत, (त्रि०) " अभि+स्तु+क्त " । वर्णन किया गया । स्तुति किया गया.

अभिष्यन्द, (पु०) " अभि+स्यन्द्+भावे घञ् " । बहुत बढनेपर वह उठना । जल आदिका बहना " कर्मणि घञ् " अधिक " करणे घञ् " । नेत्रोंका एकप्रकारका रोग.

अभिसन्ताप, (पु०) " अभि+सम्+तप्+आधारे घञ् " । युद्ध । " भावे घञ् " शाप देना । तपना.

अभिसन्धान, (न०) " अभि+सम्+धा+ल्युट् " । वञ्चन । प्रतारण । ठगना । उद्देश । अनुराग.

अभिसन्धिः, (पु०) अभि+सम्+धा+कि । प्रतिज्ञा । इकरार.

अभिसम्पात, (पु०) अभि+सम्+पत्+आधारे घञ् । युद्ध (जंग) । " भावे घञ् " गिरना.

अभिसर, (त्रि०) अभितः सरति सृ+त । अनुचर । सहाय । मित्र । " स्त्रियां ङीप् ."

अभिसर्जन, (न) अभि+सृज्+भावे ल्युट् । देना । वध (खून).

अभिसार, (पु०) अभि+सृ+घञ् । बल । युद्ध । सहाय । साधन । स्त्री वा पुरुषका सम्भोगके लिये निर्जन संकेतस्थानपर जाना.

अभिसारिका, (स्त्री०) अभि+सृ+सारेर्वा+ण्वुल् । नायकको मिलनेके लिये संकेतस्थानमें आय पहुंचनेवाली स्त्री.

अभिसारिणी, (स्त्री०) अभि+सृ+णिनि । अभिसारिका.

अभिसृज्, तु० प० । बहा देना । खुला छोडना । बनाना । तयार करना । सृजति । ससर्ज । अस्राक्षीत्.

अभिसृष्ट, (पु०) अभि+सृज्+क्त । दिया गया । छोडा गया.

अभिहन्, अ० प० । ताडन करना । चपेड लगाना । कष्ट देना । मारना । बजाना । बाजाआदि हमला करना । हन्ति । जघान । अवधीत्.

अभिहव, (पु०) अभिह्वे+अप् । पुकारना । बुलाना । पूरी कुर्बानी करना.

अभिहार, (पु०) अभि+हृ+घञ् । अपकारकी इच्छासे सामने जाकर दबाना । सामने चोरी करना । नालिश करना । कवच (संजोआ) आदि पहिरना.

अभिहित, (त्रि०) अभि+धा हिं+क्त+त । कहागया । बोलागया । वर्णन कियागया.

अभीक, (त्रि०) अभिकामयते । अभि+कम्+नि–दीर्घः । कामुक (चाहनेहारा) । स्वामी । दयारहित । भयरहित.

अभीक्ष्णम्, (अव्य०) अभिक्ष्णौति-अभि+क्ष्णु+अमु-दीर्घः । वारम्वार । नित्य.

अभीप्सित, (त्रि०) अभि+आप्+सन्+त । इष्ट चाहागया । –तम् । चाह इच्छा.

अभीरु, (पु०) भी+रुक्-न० त० । निर्भय । शतमूली । भयरहित मनुष्य (त्रि०).

अभीषङ्ग, (पु०) अभि+सञ्ज्+घञ् वा दीर्घः । निन्दा । शाप.

अभीषु, (पु०) अभि+इष्+कु । किरण । लगाम नामसे प्रसिद्ध । प्रग्रह । इच्छा । अनुराग.

अभीष्ट, (त्रि०) अभि+इष्+क्त । वाञ्छित । प्रिय । मनोहर.

अभुग्न, (त्रि०) अ+भुज्+क्त । अवक्र । न झुका हुआ । न टेढा हुआ.

अभूत, (त्रि०) न भूत । न हुआ । सत्तारहित । जो सत्य नहीं । ना सच्चा । झूठा.

अभूमिः, (स्त्री०) न पृथिवी । कोई द्रव्य पृथिवीके विना । अयोग्य स्थान । निर्विषय । जहां किसीकी पहुंच न हो.

अभेद, (पु०) भिद्+घञ् न० त० । भेदका न होना । एकरूप । फरकके बिना । ब० भेदशून्य (त्रि०).

अभेद्य, (न०) भिद्+कर्मणि ण्यत्-न० त० । हीरा । जिसे भेद करना योग्य नहीं (त्रि०).

अभ्यङ्ग, (पु०) अभि+अञ्ज्+भावे घञ्-कुत्वम् । तेल आदिका मलना.

अभ्यञ्ज–अभि–अञ्ज, रुधा० प० । लेप करना । तेल आदिका मलना । अनक्ति । आनञ्ज । आञ्जीत्.

अभ्यञ्जन, (न०) अभ्यज्यतेऽनेन-अञ्ज्+करणे ल्युट् । तेल आदि " भावे ल्युटि " । तेल लगाना.

अभ्यतीत, (त्रि०) अभि+अति+इ+त व्यतीत । बीत गया । मरगया.

अभ्यधिक, (त्रि०) अभितोऽधिकः । चारों ओरसे अधिक (जियादा) । सब प्रकारसे अच्छा (उत्तम).

अभ्यनुज्ञा, क्र्या० उभ० । अभि+अनु+ज्ञा । अनुमति देना । मान लेना । पसन्द करना । कबूल करना । जानाति–जानीते । जज्ञौ–जज्ञे । अज्ञासीत्–अज्ञासिष्ट.

अभ्यन्तर, (न०) अभिगतं अन्तरं । अत्या० स० । बीच । बीचका स्थान.

अभ्यमित, (त्रि०) अभि+अम् । रोगी होना+क्त । रोगवाला । रोगी.

अभ्यमित्रीण, (त्रि०) अभ्यमित्रं अलंगामी+ख (इन्) । शत्रुके सामने । सामर्थ्यसे जानेहारा । " अभ्यमित्रीय " इसी अर्थमें । " अभ्यमित्र " इसी अर्थमें । वीरविशेष.

अभ्यर्ण, (त्रि०) अभि+अर्म+कर्णणि+क्त-दस्य नत्वम् । समीप । पास । नजदीक.

अभ्यर्थ–अभि–अर्थ, चु० आ० । प्रार्थना करना । अरज करना । "अवकाशं किलोदन्वान् रामायाभ्यार्थितो ददौ" अर्थयते । अर्थयाञ्चक्रे । आर्तिथत.

अभ्यर्ह्, अभि+अर्ह्, भ्वा० चु० प० । नमस्कार वा प्रणाम करना । सलाम करना । आदर करना । पूजा करना । किसीका । उचित आदर करना । अर्हति । अर्हयति । आनर्ह । आर्हत् । अर्हयांचकार । अर्जिहत्.

अभ्यर्हित, (त्रि०) अभि+अर्ह+क्त । उचित । श्रेष्ठ । पूजागया.

अभ्यवस्कन्द्, अभि+अव+स्कन्द् भ्वा० प० । किसीपर-कूद पडना । दबाना । आक्रमण करना । अवस्कन्दति । चस्कन्द । अस्कन्दत् । अस्कान्त्सीत्.

अभ्यवकर्षण, (न०) अभि+अव+कृष्+ल्युट् । बाण आदिक निकालना.

अभ्यवहृ, अभि+अव+हृ, भ्वा० प० । फेंकना । इकट्ठा करना । खाना । लाभ करना । हरति । जहार । अहार्षीत्.

अभ्यवस्कन्द, (पु०) अभि+अव+स्कन्द्+घञ् । अभ्यासादन । दुश्मनपर वार करना । शत्रुओंसे कीगई चोट । हमला करना । पकडना । " अभ्यवस्कन्दन " भी इसी अर्थमें होता है.

अभ्यवहार, (पु०) अभि+अव+हृ+घञ् । भोजन । खाना.

अभ्यस्, दि० प० । अभ्यास करना । आदत डालना । कसरत करना । अस्यति । आस । आस्थत्.

अभ्यसन, (न०) अभि+अस्+ल्युट् । अभ्यास । वार वार एक काम करना.

अभ्यसूयति, नामधातु० प० । किसीके ऊपर क्रोध करना । विरोध करना ईर्षा करना.

अभ्यसूया, अभि+असु-उपतापे कण्ड्वादि यक् प्रत्ययान्तत्वात् अ, स्त्रीत्वात् टाप् । गुणोंमें दोष आरोपण (लगाना) करना । निन्दाविशेष.

अभ्याकाङ्क्षित, (न०) अभि+आ+काङ्क्ष+क्त । झूठा सवाल । झूठा दावा । ऐसे प्रगट करना । " अभ्याख्यान " भी इसी अर्थमें होता है.

अभ्यागत, (पु०) अभि+आ+गम्+क्त । घरमें आयाहुआ अतिथि । जो पहिले नहीं देखागया । सामने आया कोई हो (त्रि०).

अभ्यागम, (पु०) अभि+आ+गम्+भावे घञ् अवृद्धिः । विरोध । पास । सामने जाना । भोग । स्वीकार । फलका संबंध । " आधारे घञ् " लडाई । समर.

अभ्यागारिक, (पु०) अभ्यागारे तद्गतकर्मणि व्यापृतः ठन् । घरके व्यापार पुत्रादिके पालन करनेमें व्याकुल (घबरायाहुवा).

अभ्यादा–आभि–आ–दा, जु० आ० । लेना । पकडना । पहिरना+माला आदि । एकके बोल चुकनेपर बोलना.

अभ्यादान, (न०) अभि+आ+दा भावे ल्युट् । सामने होकर लेना । आरम्भ (शुरू) करना.

अभ्यामर्द, (पु०)अभि+आ+मृद्+आधारे घञ् । सङ्ग्राम । जंग " भावे घञ् " निचोडना.

अभ्याश, (पु०) अभि+अश्-व्याप्तौ+करणे घञ् । अवश्यही । समीप.

अभ्यास, (पु०) अभि+असु-क्षेपे+कर्मणि घञ् । वार वार स्वभाव डालना । गुरुसे सुना । गुरुके कहेहुए अर्थमें योग्यायोग्य विचार करना । वार वार कहना । निकट (पास) । विजातीय ज्ञानसे जो अन्तरित (छिपा) नहीं, केवल सजातीय ज्ञान । प्रवाहरूप ध्यानादिका वार वार करना । एकही बातमें वार वार लगना । दूसरी ओर मनको न जाने देना.

अभ्यासादन, (न०) अभि+आ+सद्+णिच्+ल्युट् । शस्त्र आदिसे शत्रुको वीर्यरहित करदेना । शत्रुके सामने जाना.

अभ्याहार, (पु०) अभि+आ+हृ+घञ् । आहार । भोजन । देखते देखते चुरालेना.

अभ्युच्चय, (पु०) अभि+उद्+चि+अच् । अभ्युदय । सम्पदा । लक्ष्मी । समूह । । तरक्की.

अभ्युत्थान, (न०) अभि+उद्+स्था+ल्युट् । आदर दिखानेके लिये आसन आदिसे उठना । आदरसे उठकर आगे लेने जाना । (अगुवाई) । उठना । उद्यम.

अभ्युत्था, अभि+उद्+स्था, भ्वा० प० । दूसरेके लिये उठना । किसीको सम्मान देनेके लिये उठना । तिष्ठति । तस्थौ । अस्थात्.

अभ्युत्पत्–अभि+उत+पत्, भ्वा० प० । किसीपर धावा करना । किसीपर कूदना.

अभ्युदय, अभि+उद्+इण्+अच् । मनसे चाहेगये कामोंका प्रगट होना । वृद्धि । चूडा आदि संस्कार । चूडा आदि संस्कारके निमित्त कियागया श्राद्ध आभ्युदयिक कहा जाता है । वृद्धिके लिये श्राद्ध.

अभ्युदित, (पु०) अभितः–सर्वतः उदितं–उत्क्रान्तं प्रातर्विहितं कर्म यस्मात् । जिस्से प्रातःकालका कर्तव्य न हुआ हो । सूर्योदयकालमें निद्राके कारण जिसने उस समयके उचित कार्य नहीं किया ऐसा ब्रह्मचारी । निकला । चमका.

अभ्युद्गम्, अभि+उत्+गम् भ्वा० प० । पहुंचना । मिलना । पैलना । गच्छति । जगाम । अगमत्.

अभ्युद्यत, (त्रि०) अभि+उद्+यत्+क्त । माँगे विन आपहुंचा फल आदि । उद्यत । समुद्यत । तैयार.

अभ्युपगम, (पु०) अभि+उप+गम्+घञ् अवृद्धि । मानलेना । पास आगया । समीप आगया । निकट आगया । युक्ति । दलील.

अभ्युपपत्ति, (स्त्री०) अभि+उप+पद्+क्तिन् । अनिष्टको निवारण कर अभीष्टको पूरा करनेहारा अनुग्रह । मेहरवानी । देवरसे सन्तानका उत्पन्न करवाना । सान्त्वन.

अभ्युपाय, (पु०) अभि+उप+इन्+अच् । स्वीकार । मंजूर । अच्छा । उपाय.

अभ्यूढ, (त्रि०) अभि+वह्+क्त । निकट लाया गया.

अभ्यूह, (पु०) अभि+उह्+अच् । तर्क । दलील.

अभ्यूहू, भ्वा० उ० । ऊपरसे वन्द करना । पडदा करना । अनुमान करना । ऊहति–ते । ऊहांचकार–ऊहांचक्रे । औहीत् । औहिष्ट.

अभ्र, जाना । भ्वादि०पर०सक०सेट् । अभ्रति । आभ्रीत् । आनभ्र.

अभ्रंकष, (त्रि०) अभ्रं कषति पीडयति+तुङ्गत्वात्+खच्+मुमागमश्च । वादलको छूनेवाला । वहुत ऊंचा.

अभ्रंलिह्, (त्रि०) अभ्रं लेढि–स्पृशति, खश्+मुमागमश्च । मेघको चाटनेवाला । वादलको छूनेवाला । वहुत ऊंचा.

अभ्रि, (स्त्री०) अभ्रति मलं यस्मात् । " अभ्र+अपादाने इन् " । वेडीके मलको साफ करनेके लिये लकडीका वनाहुआ कुद्दाल । (अभ्री इसी अर्थमें).

अभ्रेष, (पु०) भ्रेष-चलना+घञ् न० त० । औचित्य । न्याय्य । मुनासिव । चलनसे शून्य (त्रि०).

अम्, रोगी होना (चुरा० उभय० अक० सेट्) । पीडा देना सक० । आमयति–आमयते । आमिमत्–त.

अम, (पु०) अम्+घञ् अवृद्धिः । रोग । विनापका फल आदि (त्रि०).

अमङ्गल, (पु०) नास्ति मङ्गलं प्रयोजनं यतः । एरण्डका वृक्ष । ६ व० । कुशलसे रहित (त्रि०) न० त० । मङ्गलभिन्न.

अमत, (त्रि०) न+मत्+क्त । न अनुभव किया गया । न खयाल किया गया । न जाना गया.

अमत्र, (न०) अमति अन्नं अत्र-" अम् भोजने । आधारे अत्रन् " भोजनका पात्र । वर्तन । हथियार.

अमनस्क, (त्रि०) नास्ति मनः यस्य+मनस्+कप् । न मनवाला । विन खयाल । बुद्धिहीन । बेपर्वाह.

अमर, (पु०) मृ+पचाद्यच् । न० त० । देवता । अमरसिंहनामी कोषका बनानेहारा । स्नुहीवृक्ष । जो जल्दी नहीं मरता । पारद (पारा) । हड्डिओंका समूह । जो मरता नहीं (त्रि०).

अमरद्विज, (पु०) अमरपूजकः द्विजः शाक० त० । " देवल " । पूजारी नामसे प्रसिद्ध ब्राह्मण.

अमरा, (स्त्री०) मृ+पचाद्यच् न० त० । दूर्वा । गुडूची । इन्द्रकी पुरी । गर्भकी नाडी । जरायु । घृतकुमारी (जीवीकंद).

अमराद्रि, (पु०) अमराणां अद्रिः ष० त० । सुमेरु पर्वत.

अमरालय, (पु०) अमराणां आलयः । त० ष० । स्वर्ग.

अमरावती, (स्त्री०) अमर+वत्+"र" "रा" में बदल जाता है । ईप् । देवताओंका निवासस्थान । इन्द्रकी नगरी.

अमर्त्य, (पु०) मृतिं अर्हति+यत्=मर्त्यः न० त० । जो मरे नहीं । देवता.

अमर्ष, (पु०) मृष-क्षमा करना+घञ् । विरोध । न० त० । क्षमाके विरुद्ध । कोप । गुस्सा । क्रोध.

अमर्षण, (त्रि०) मृष्+ल्यु+अन न० त० । क्रोधी । गुस्सेवाला । किसीको न सहारनेहारा.

अमल, (न०) अम्+कलच् । अभ्रकधातु । निर्मल । सफा । दोषरहित.

अमला, (स्त्री०) लक्ष्मी । भूम्यामलकी । नाभीकी नाल.

अमा, (अव्य०) साथ । पास । (स्त्री०) अमावास्या तिथि । अमावस । साथ । नजदीक.

अमात्य, (पु०) अमा सह वसति+त्यक् । मन्त्री । वन्धु.

अमात्र, (त्रि०) नास्ति मात्रा—इयत्ता यस्य । जिसका परिमाण नहीं । विनमाप । वेहद्द । अपरिमेय.

अमाय, (त्रि०) नास्ति माया यस्य । अवंचक । जो छलिया नहीं । सरलहृदय । दियानतदार.

अमाव(वा)स्या, (स्त्री०) अमा सह वसतः चन्द्राकौं यत्र वस्+यत्-ण्यद्वा । कृष्णपक्षकी शेष तिथि । इस दिन चन्द्रमा और सूर्य एक राशिमें स्थित होते हैं । अमावस.

अमांस, (त्रि०) नास्ति मांसं यस्य । दुर्वल । कमजोर.

अमित, (त्रि०) न+मा+क्त । न मापागया । बेहद्द । अपरिच्छिन्न । अनन्त । बडा.

अमित्र, (पु०) अम्-रोगी होना+इत्र । शत्रु । दुश्मन.

अमुत्र, (अव्य०) अदस्+त्रल् । परलोक । दूसरा जन्म.

अमूर्त, (त्रि०) मूर्ति+अच् । न० त० । मूर्तिशून्य । वायु आदि निराकार । आकाश । काल । दिशा । आत्मा.

अमृत, (न०) मृ+क्त । न० त० । मोक्ष । होमसे बचाहुआ द्रव्य । पीयूष । जल । घी । अयाचितवस्तु । दूध । विष । पारद । अन्न । धन । स्वादुद्रव्य । (त्रि०) सुन्दर । मरण । (स्त्री०) दूर्वा । तुलसी । (न०) परब्रह्म.

अमृतजटा, (पु०) अमृता जटा यस्याः । जटामांसीवृक्ष.

अमृतदीधिति, (पु०) अमृतं इव आप्यायनकरी दीधितिः किरणो यस्य । अमृतके समान जिसकी किरण हो । चन्द्रमा । महताव.

अमृतफला, (स्त्री०) अमृतं इव स्वादु फलं यस्याः । जिसका फल अमृतके समान मीठा हो । दाख । आमलकी । आमला.

अमृतवल्ली, (स्त्री०) अमृताय जीवनसाधनाय वल्ली । गुडूची.

अमृतसोदर, (पु०) अमृतस्य सोदरः एकत उत्पन्नत्वात् । उच्चैःश्रवा नाम घोडा (इसकी उत्पत्ति समुद्रसे हुई) । घोटकमात्र । कोई घोडा.

अमृतान्धस्, (पु०) अमृतं अन्धो भक्ष्यं यस्य । जिसका भोजन अमृत है । देवता.

अमेधस्, (त्रि०) नास्ति मेधा यस्य । ६ व० असिच् । मूर्ख । थोडीबुद्धिवाला.

अमेध्य, (न) मेध्यं पवित्रं न० त० । अपवित्र । नापाक । विष्ठा । पुरीष । गूँह.

अमेय, (त्रि०) न मातुं योग्य-न+मा+य । अपरिमेय । न मापनेलायक.

अमोघ, (त्रि०) मोघो निष्फलः न० त० । सफल । जो व्यर्थ न हो.

अम्ब्, जाना, भ्वा० पर० सक० सेट् । अम्बति । आम्बीत.

अम्बक, (न०) अम्वति शीघ्रं नक्षत्रस्थानपर्यन्तं गच्छति । अम्ब-ण्वुल्+अक । नेत्र । आंख । " अम्ब्यते स्नेहेन उपगम्यते+घञ् स्वार्थे क " । पिता । बाप.

अम्बर, (न०) अबि-शब्दकरना+घञ् । अम्बशब्दः तं राति धत्ते । अम्ब्+रा+क । शब्दका आश्रय । आकाश । मर्मर शब्दवाला कपडा । अबरक.

अम्बरीष, (न०) अम्ब्+अरिष् । नि० वा दीर्घः । विष्णु । शिव । सूर्य । बालक । आम्रातकवृक्ष । एकनरक । पछताना । (पु०) सूर्यवंशी राजा.

अम्बष्ठ, (पु०) अम्बाय चिकित्सकशब्दाय तत्प्रख्यापनार्थं तिष्ठतेऽभिप्रैति । स्था+क-षत्वं । चिकित्सक । हकीम । ब्राह्मणसे वैश्यकन्यामें उत्पन्न हुआ पुत्र । एक देश । हाथीवान.

अम्बा, (स्त्री०) अम्ब्यते स्नेहेनोपगम्यते-अम्ब्+कर्मणि घञ् । माता । अम्बानामी लता । काशीराजकी लडकी.

अम्बालिका, (स्त्री०) माता । विचित्रवीर्यकी स्त्री । पाण्डुराजकी माता.

अम्बिका, (स्त्री०) माता । काशीराजकी कन्या । विचित्रवीर्यकी स्त्री । धृतराष्ट्रराजाकी माता । दुर्गा (जगत्को उत्पन्न करनेसे) । अम्बष्ठावेल । कटकी वेल.

अम्बु, (न०) अबि-शब्दकरना+उण् । जल । पानी । रास्नाबेल.

अम्बुकणा, (स्त्री०) जलबिन्दु । पानीकी बूंद.

अम्बुचामर, (न०) अम्बुनि चामरं इव ७ त० । शैवल । सेवाल.

अम्बुज, (न०) अम्बुनि जायते । जन्+ड । कमल । चन्द्र । चांद । (पु० न०) शंख.

अम्बुद, (पु०) अम्बु ददाति । दा+क । मेघ । बादल.

अम्बुधि, (पु०) अम्बूनि धीयन्तेऽत्र । धा–आधारे कि । ६ त० । समुद्र । समुंदर.

अम्बुपत्रा, (स्त्री०) अम्बूनि पत्रे यस्याः । उच्चटावृक्ष । खुशबूदार पौधा.

अम्बुभृत्, (पु०) अम्बूनि बिभर्ति । भृञ्+क्विप् । मेघ । समुद्र.

अम्बुरुह, (न०) अम्बुनि रोहति जायते । रुह+क । पद्म.

अम्बुसर्पिणी, (स्त्री०) अम्बुनि सर्पति । सृप्+णिनि ७ त० । जलौका । जोंक.

अम्बूकृत, (त्रि०) अनम्बु अम्बुकृतं, अम्बु श्लेष्मातकाम्बु उपचारात्तद् युक्तं, ततः च्विः कृ+क्त । निष्ठीवनयुक्त वचन । ऐसा वचन जिसमें थूक निकलें.

अम्भस्, (न०) अभि-शब्द करना+असुन् । जल । पानी । बालकोंकी औषधी । लग्नसे चतुर्थराशि.

अम्भःसार, (न०) अम्भसः सारः । "वा शरीति" वा विसर्गः । मुक्ता । मोती । जीव । "अम्भस्सार" इसी अर्थमें.

अम्भोज, (न०) अम्भसि जायते । जन्+ड७ त० । पद्म । कमल । सारसपक्षी । (पु०) चन्द्र । पानीमें जो कुछ हो (त्रि०).

अम्भोजिनी, (स्त्री०) अम्भोज-समूहार्थे तद्वति देशे वा इति । पद्मसमूह । पद्मयुक्तदेश । पद्मलता । पद्मवेल.

अम्भोद, (पु०) अम्भो ददाति । दा+क । मेघ । बादल.

अम्भोधर, (पु०) अम्भो धरति । धृञ्-धारणकरना+अच् । मेघ । बादल । समुद्र । समुंदर.

अम्भोधि, (पु०)अम्भांसि धीयन्ते यत्र । धा+आधारे कि । समुद्र । जहां पानी टिकायेजायँ.

अम्मय, (त्रि०) अपां विकारः । अप्+मयट् । जलका विकार । झागआदि.

अम्र, (पु०) अमति सौरभेण दूरं गच्छति । अम्+रन् । आमका वृक्ष । जिसकी सुगन्धि दूर जाती है.

अम्ल, (न०) अम्+क्ल । तक्र । छाछ । खट्टा । खटीचीज (त्रि०).

अम्लक, (पु०) अल्पोऽम्लः अल्पार्थे कन् । थोडा खट्टा । लकुचवृक्ष.

अम्लकेशर, (पु०) अम्लः केशरोऽस्य । बीजपूर । गलगल । चकोद्रा.

अम्लफल, (न०) तिंतिडीवृक्ष । निंबूकी किसम.

अय, जाना । भ्वा० आत्म० सक० सेट् । अयते । आयिष्ट । अयाञ्चक्रे.

अय, (पु०) एति सुखं अनेन । इण्+करणे अच् । पूर्वजन्मका शुभ कर्म । शुभावह विधि । सौभाग्य.

अयःपान, (न०) अयः–द्रवीभूतं तप्तलौहं पीयतेऽत्र+ल्युट् । जहां तपेहुए लोहेका रस पीना पडताहै ऐंसा एक नरक । "अयस्पान" भी इसीअर्थमें होताहै.

अयज्ञिय, (त्रि०) यज्ञाय साधुर्न भवति । यज्ञ+यत् । न० त० । जो यज्ञके लिये ठीक नहीं । माष । माँस (पु०).

अयन, (न०) अय्+भावे ल्युट् । जाना । दक्षिणसे उत्तर और उत्तरसे दक्षिणमें सूर्यका जाना । "आधारे ल्युटि" मार्ग । घर । आश्रय । स्थान.

अयस्, (न०) इण्+असुन् । लोहा । धातुविशेष । (यद्यपि यह जड है तौभी चमक पत्थरके निकट रक्खा हुआ चलता है).

अयस्कान्त, (पु०) अयसां मध्ये कान्तः रमणीयः । "कस्कादिलात् सत्वं" । कान्तलौहनामी एक प्रकारका लोहा । ६ त० । पास रहनेहीसे लोहेको खेंचनेहारा चुम्बक नामसे प्रसिद्ध एक प्रकारका पत्थर । लोहेका पियारा होनेसे ऐसा नाम है.

अयस्कार, (पु०) अयस्+कृ+अण्-उप० स० । लौहकार । लुहार.

अयाचित, (न०) याच्+क्त न० त० । अमृतनामी आहार । "अमृतं स्यादयाचितम्" इति मनुः । विन माँगे मिली चीज । न मांगागया (त्रि०).

अयाचितव्रत, (त्रि०) प्रार्थनाविना आपही उपस्थित हुये पदार्थसे जीविका करनेहारा.

अयाज्य, (त्रि०) न याजयितुं योग्यः–न+यज्+य । वह मनुष्य जिसके लिये यज्ञ न करना चाहिये । जो यज्ञ करनेके योग्य नहीं । शूद्र.

अयानयम्, (न०) अयश्च अनयश्च तयोः समाहारः । अच्छा और बुरा भाग्य.

अयि, (अव्य०) इण्+इन् । प्रश्न । सवाल । प्रार्थना । नम्रता । संबोधन । अनुराग । प्रीति । पियारसे बुलाना.

अयुत, (त्रि०) यु-मिलाना और न मिलाना+क्त। न० त०। न मिलाहुआ। मिलाहुआ (न०)दशसहस्रसंख्या १००००.

अये, (अव्य०) इण्+एच्। कोप। गुस्सा। विषाद। सम्भ्रम। आश्चर्यमें दूसरेको बुलानेके लिये शब्दके प्रथम जोडजाता है। संबोधन.

अयोगव, (पु०) अय इव कठिना गौर्वाणी यस्य। नि०अच्। जातिविशेष। शूद्रके वीर्यसे वैश्यकन्यामें उत्पन्न सन्तान। वर्णसंकर.

अयोगवाह, (पु०) अनुस्वार और विसर्ग। अक्षरसमाम्नायमें इनका पाठ न होनेपर भी षत्वणत्वादि कार्य सिद्ध करतेहैं। "वाह्+अच् कर्मे०".

अयोघन, (पु०) अयांसि हन्यन्तेऽनेन। हन्+अप्-घनादेशश्च-नि०। हथौडी नामसे प्रसिद्ध लोहेका मुद्गर.

अयोध्या, (स्त्री०) युध+ण्यत्-न० त०। सरयूके तीरपर एक नगरी। उत्तरकोशला। श्रीरामजीकी पुरी। जिससे लडाई न कीजाय (त्रि०).

अयोनि, (त्रि०) नास्ति योनिः-कारणं यस्य। निष्कारण। विना कारण। जिसका उत्पादक और कोई नहीं। नित्य.

अयोनिज, (पु०) योनौ उपचारात् मातरि न जायते। परमेश्वर। श्रीरामजीकी स्त्री सीता (स्त्री०)। जो योनिसे नहिं उपजा (त्रि०).

अर, (न) ऋ+अच्। चक्रस्य नाभिनेम्योर्मध्यस्थे काष्ठे। पहिय्येकी नाभि और नेमिके बीचका काठ। शीघ्र। जल्दी। जो जल्दी चलताहै (त्रि०)। जैनमतमें कालचक्रका अंश "स्वार्थे-क" सेवाल। पापड़ (पु०).

अरं, अल+अम्-वा लस्य रत्वम्। बस। पर्याप्त। जल्दी.

अरघट्ट-क, (पु०) अरं शीघ्रं घट्यते चाल्यतेऽसौ। घट्ट+कर्मणि अच्। महाकूप। पानीके उठानेकी कला। टिण्डावाला खूआ.

अरजस्, (त्रि०) रञ्ज्+असुन्-नलोपः। न०त०। रजोगुणके कार्य। कामक्रोधादिसे रहित। (स्त्री०)कुमारी कन्या (त्रि०) बिनधूर.

अरणि, (पु०) ऋ+अणि। सूर्य। गणियारीनामी वृक्ष। "ऋच्छति प्रापयत्यग्निं"। आग निकालनेकी लकड़ी (यज्ञमें इसीसे आग निकालतेथे)। स्त्रियां ङीप्.

अरण्य, (पु०)ऋ+आधारे अन्य। अर्यते शेषे वयस्यत्र। जहां पिछली उमरमें जाय करतेहैं। वन। जंगल.

अरण्यानी, (स्त्री०) महदरण्यं। नि० ङीष्-आनुक्च। बड़ा बन.

अरति, ऋ+अति। क्रोध। रम्+क्तिन्-न०त०। चित्तका स्थिर न होना। प्रीति न होना। घबराहट। इष्टके वियोगसे मनका व्याकुल होना (स्त्री०).

अरत्नि, (पु०) ऋ+अत्नि=रत्निः बद्धमुष्टिकरः स नास्ति यत्र। चीची अङ्गुलिको फैलाकर मुट्ठी बांधाहुआ हाथ.

अरथिन्, (त्रि०) नास्ति रथः यस्य। जिसके पास रथगाडी नहीं। जो रथमें स्थित होकर युद्ध नहीं करता.

अरद, (त्रि०) न रदः यस्य। जिसका दांत नहीं। विनदांत जैसा कि बच्चा। जिसके दांत टूट गयेहों.

अरर, (त्रि०) ऋ+अरन्। किवाड़। कवाट। द्वार। दर्वाजा। ढकना.

अरविन्द, (न०) अरान् चक्राङ्गानीव पत्राग्राणि विन्दते। विद्+श। पद्म। कमल। सारस पक्षी। बगला। नीला कमल। लालकमल। नीलोफर। ताम्र। तामां। ताँबा.

अराजक, (त्रि०) नास्ति राजा यत्र-न+राज्+कनिन्-क। जहां कोई राजा नहीं। राजहीन देश.

अराति, (पु०) न राति-ददाति सुखं। रा+क्तिन्। न० त०। शत्रु। दुश्मन.

अराल, (पु०) ऋ+विच्-अर। अरं आलाति। आ+ला+क। सर्जेका रस। मतवारा हाथी। राल (त्रि०)। टेढा। टेढा हाथ। (स्त्री०) वेश्या। कंजरी.

अरि, (पु०) ऋ+इन्। शत्रु। रथाङ्ग। पहिया। खदिरपत्रिका। छकी संख्या। ज्योतिःशास्त्रमें लग्नसे छठा स्थान.

अरित्र, (न०) ऋच्छत्यनेन। ऋ+इत्र। हालिनामसे प्रसिद्ध बेड़ीके चलानेका काठ। नौकाचालनकाष्ठ। चप्पा.

अरिन्दम, (त्रि०) अरीन् दाम्यति-दमयति वा+ खच् मुम्च। शत्रुजेता। दुश्मनोंपर जोरावर। शत्रुओंको दबानेहारा.

अरिमर्द, (पु०) अरिं रोगरूपं शत्रुं मृद्गाति। मृद्+अण्-उ० स०। खांसीको दूर करनेहारा वृक्ष (त्रि०)। शत्रुओंको तपानेहारा.

अरिमेद, (पु०) अरेर्विट्खदिरस्येव मेदः सारोऽस्य। जिसका सार विट्खदिरकी नाई हो। एकवृक्ष। विट्खदिर.

अरिषड्ष्टक, (न०) षट् च अष्टौ च ततः परिमाणार्थे कन्। षड्ष्टकं अरिस्वामिकं षड्ष्टकं-शाक० त०। विवाहमें वर्जनीय योगविशेष। वरकन्याकी अपनी २ राशिसे छठा और आठवां घर यदि शत्रु हो तो अशुभ है.

अरिषड्वर्ग, (पु०) षण्णां वर्गः समुदायः षड्वर्गः। अरीणां कामक्रोधादीनां षड्वर्गः (काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्यरूप अन्तःकरणके छ शत्रुओंका समूह)। कामादि भीतरके छ शत्रु.

अरिष्ट, (पु०) रिष्-मारना+कर्तरि क्त न० त०। लशुन। लस्सन। नीम। सूतिकागृह। जिस घरमें स्त्री, पुत्र वा कन्या जनती है। छाछ। (न०) मद्यविशेष। कौआ। रीठा नामी झागवाला वृक्ष। अशुभ। नेत्रका पानी.

अरिष्टताति, (पु०) अरिष्ट+तातिल्। शुभाशंसन। अच्छा कहना (त्रि०)। शुभंकर। अच्छा करनेहारा.

अरिष्टसूदन, (पु०) अरिष्टं असुरं सूदयति । सूद्+ल्यु । विष्णु (त्रि०) अशुभको दूर करनेहारा.

अरुचि, (पु०) न रुचिर्यत्र । रोगविशेष । बदहजमीके सबब खाना न चाहना । "रुचिः सन्तोषः" न० त० । सन्तोषाभाव (प्रसन्न न होना).

अरुज, (पु०) न रुजति । रुज्+क । वृक्षविशेष (त्रि०) । नीरोग । रोगरहित.

अरुण, (पु०) ऋ+उनन् । सूर्य । सूर्यका सारथी । गुड़ । संध्याकी लाली । शब्दरहित । एक दैत्य । कोढका भेद । (न०) केसर । सिंदूर । मजीठ (स्त्री०).

अरुणलोचन, (पु०) अरुणे रक्ते लोचने यस्य । लालनेत्र । कबूतर । कोईल.

अरुणोदय, (पु०) अरुणस्य अर्कस्य तत्किरणस्योदयो यत्र । सूर्योदयसे पहिली चार घड़ियें.

अरुन्तुद, (त्रि०) अरूंषि मर्माणि तुदति । तुद्+खश्-मुमच । मर्मपीडक । हृदयकी गांठके स्थालोंमें छूनेहारा.

अरुन्धती, (स्त्री०) अव्युत्पन्नः । वशिष्ठकी स्त्री । कर्दममुनिकी कन्या । बहुत छोटा तारा.

अरुस्, (पु०) ऋ+उसि । सूर्य । रक्तखदिर । मर्म (न०).

अरे, (अव्य०) ऋ+ए । नीचसम्बोधन । क्रोधसे बुलाना.

अरेपस्, (त्रि०) नास्ति रेपः=पापं यस्य । पापरहित । बेगुनाह । बेदाग । शुद्ध । चमकदार.

अरेपस्, (त्रि०) नास्ति राधः—धनं यस्य—न० ब० । जिसके पास धन नहीं । निर्धन । गरीब.

अर्क, तपना और स्तुति करना । चुरा० उभ० सक० सेट् । अर्कयति-अर्कयते । आर्चिकत्-त.

अर्क, (पु०) अर्च+कर्मणि घञ्-कुत्वं । सूर्य । इन्द्र । तामा । बिल्लौर । विष्णु । पण्डित । आकन्दवृक्ष । अरक.

अर्कचन्दन, (पु०) अर्कस्य प्रियः चन्दनः । शाक० त० । लाल चंदन.

अर्कतनय, (पु०) अर्कस्य सूर्यस्य तनयः । सुग्रीव । कर्ण । यम । शनि । वैवस्वतमनु । (स्त्री०) यमुना.

अर्कव्रत, (पु०) अर्कस्य आराधनार्थं व्रतम् । माघशुक्ल सप्तमी आदि सूर्यके व्रत । सूर्यके जल खींचनेकी नांई प्रजासे करग्रहणरूप नियम.

अर्काश्मन्, (पु०) अर्कस्य अनुगतः अश्मा । सूर्यकान्तमणि । आतशी शीशा । अरुणोपल.

अर्गल, (स्त्री०) अर्ज्+कलच् । (देवीपाठप्रारंभमें पढनेयोग्य स्तोत्र) किवाड बन्द करनेकी कल.

अर्घ, मोललेना-भ्वा०पर०सक०सेट् । अर्घति । आर्घीत् । आनर्घ.

अर्घ, (पु०) अर्घ+घञ् । पूजाविधि । मूल्य । कीमत.

अर्घ्य, (न०) अर्घ्+देयार्थे यत् । अर्घके लिये जल । पूजनेके योग्य (त्रि०).

अर्च, पूजा करना । उभ० भ्वा० सक० सेट् । अर्चति-ते । आर्चीत् । आर्चिष्ट.

अर्चा, (स्त्री०) अर्च्+आधारे अ । प्रतिमा । तसबीर । "भावे अ" । पूजा.

आर्चि, (स्त्री०) अर्च्+इन् । आगकी लाट । किरण । चमक.

अर्चित, (त्रि०) अर्चि+क्त । पूजागया । आराधित । विष्णु (पु०).

अर्चिष्मत्, (पु०) अर्चिर्विद्यतेऽस्य मतुप् । सूर्य । अग्नि । चमकदार (त्रि०).

अर्ज, अर्जनकरना-कमाना । भ्वा०पर०सक०सेट् । अर्जति । आर्जीत्.

अर्जक, (पु०) अर्जयति रज्जुं अर्ज्+ण्वुल् । बाबुइ नाम वृक्ष । (इसकी शाखाओंकी ताँतोंसे रस्सी बनती है) । उपार्जनकर्ता । इकट्ठा करनेहारा (त्रि०).

अर्जन, (न०) अर्ज्+ल्युट् । प्राप्ति । उपार्जन । जमा करना.

अर्जुन, (पु०) अर्ज्+उनन् । एक वृक्षका नाम । राजा पाण्डुका मध्यम अर्थात् तीसरा पुत्र । कार्तवीर्य । तृण । नेत्ररोग । मोर । चिट्टा रंग । नेत्रका रोग.

अर्णव, (पु०) अर्णांसि सन्त्यस्मिन् । अर्णस्+व-सलोपः । समुद्र । एक प्रकारका छन्द.

अर्णस्, (न०) ऋच्छति । ऋ+असुन् । "उदके नुट् चेति" उणा० नुट् । जल । पानी.

अर्तन, (न०) ऋत्+ल्युट् । निन्दा । तिरस्कार । जुगुप्सा.

आर्ति, (स्त्री०) अर्द्+क्तिन् । पीडा । कमानका सिरा.

अर्थ, मांगना । चु०आ० द्विक०सेट् । अर्थयते । आर्तिथत.

अर्थ, अर्थ्+भावकर्मादौ यथायथं अच् । विषय । नाम । धन । वस्तु । निवृत्ति । हटना । प्रकार । प्रयोजन । हेतु । अभिलाष । उद्देश्य.

अर्थदूषण, (न०) अर्थस्य अपहरणादिना दूषणं ६ त० । धनका चुराना । व्यसनोंके स्थान, जूआ, वेश्यागमन आदिमें धनका व्यय करना.

अर्थना, (स्त्री०) अर्थ्+युच् । भिक्षा मांगना । प्रार्थना, अर्ज.

अर्थपति, (पु०) अर्थानां पतिः ६ त० । राजा । कुबेर.

अर्थप्रयोग, (पु०) अर्थानां प्रयोगः ६ त० । वृद्धिके लिये धन देना । सूदपर रुपया देना.

अर्थवाद, (पु०) वद्+करणे घञ् । प्रशंसनीय गुणका कहना । निन्दनीय दोषका प्रशंसावाद । तारीफ.

अर्थव्ययज्ञ, (त्रि०) अर्थस्य धनस्य व्ययं तत्प्रकारं जानाति ज्ञा+क । कौन, कैसे, कहां कितना धन किसके लिये खर्चना उचित है इसविशेषको जाननेहारा.

अर्थशास्त्र, (न०) अर्थस्य भूमिधनादेः प्रापकं शास्त्रं । शाक०त० । नीतिशास्त्र । अभिचार (मारण) आदि कर्मको प्रतिपादन करनेहारा शास्त्र । चाणक्यादिकृत पुस्तकें । दण्डनीति । आन्वीक्षिकी । खेतीकी विद्या.

अर्थागम, (पु०) अर्थस्य आगमः । आ+गम्+घञ् अवृद्धिः । धनका आना । धनागम । आमदनी.

अर्थान्तरन्यास, (पु०) प्रकृतार्थसिद्धये अन्यार्थस्य न्यासः । प्रकृत (वर्तमान) अर्थकी सिद्धिके लिये दूसरे अर्थको ले-आना । अर्थालङ्कारका भेद.

अर्थापत्ति, (स्त्री०) अर्थस्य अनुक्तार्थस्य आपत्तिः-सिद्धिः आ+पद्+क्तिन् । न कहे गए अर्थका समझना । जैसे देवदत्त जीताहै परन्तु घरमें नहीं तो समझसकतेहैं कि बाहिर अवश्य होगा । मीमांसक अनुमानसे भिन्न कहतेहैं । नैयायिक व्यतिरेक व्याप्तिज्ञानसे उपजा अनुमानही समझतेहैं.

आर्थिक, (पु०) अर्थयते इत्यर्थी याचकः+कुत्सितार्थे कन् । सोयेहुये राजा वाबुको जगानेके लिये स्तुति करनेहारा । वैतालिक । भिक्षु । भाट । भिखारी.

अर्थिन्, (त्रि०) अर्थ+अस्त्यर्थे इनि । याचक । भिक्षुक । सेवक । सहाय । धनी । वादी । धनरहित.

अर्थ्य, (त्रि०) अर्थात् प्रयोजनादनपेतः । अर्थ+यत् । न्याय्य । उचित । न्यायसे कमाया "कर्मणि यत्" । प्रार्थनीय । पण्डित । धनवान् । (न०) शिलाजतु.

अर्द्, मारना-भ्वा०उभ०सक०सेट् । अर्दति-ते । आर्दित्-ष्ट.

अर्दन, (न०) अर्द+ल्युट् । पीडा पहुंचाना । मारना । मांगना । जाना.

अर्दित, (त्रि०) अर्द+क्त । दुःखी हुआ । लाचार किया गया । प्रार्थना करनेवाला.

अर्ध, (पु०) ऋध्+बढना-भावादौ घञ् । खण्ड । टुकडा (न०) समानांश । एक जैसा भाग । (त्रि०) दोहिस्से कियागया.

अर्धगङ्गा, (स्त्री०) अर्धं गङ्गायाः । एकदे०स० । गंगास्नानादिसे आधा देनेहारी कावेरी नदी.

अर्धचन्द्र, (पु०) अर्धं चन्द्रस्य । एक० त० । चन्द्रार्ध । अष्टमीका चांद । चांदकी शकलवाला नखूनका जखम । गलहस्त । गलहत्था । सानुनासिक ँ चिन्ह.

अर्धनारीश्वर, (पु०) अर्धाङ्गे या नारी तस्या ईश्वरः । महादेव । शिवपार्वतीकी मूर्तिविशेष । हरगौरीरूप शिव.

अर्धपारावत, (पु०) अर्धेन अङ्गेन पारावत इव । जिसका आधा अंग कबूतरकी नाई हो । चित्रकण्ठ । कपोत । तित्तिरपक्षी.

अर्धपारावतः, (पु०) अर्धः पारावत इव, अर्धेन अंगेन पारावत इव । आधे शरीरसे कबूतरकी भांति एक प्रकारका कबूतर.

अर्धरथः, (पु०) अर्धः असम्पूर्णः रथः रथी । पूरा रथी नहीं । रथमें बैठ कर दूसरेके साथ युद्ध करनेवाला जो रथीके समान चतुर नहीं.

अर्धरात्रः, (पु०) अर्धं रात्रेः । रातका आधा । मध्यरात्रि । आधीरात.

अर्धरात्र, (पु०) अर्धं रात्रेः एक०त० । अच् । आधीरात.

अर्धर्चः-चम्, (न०) अर्धा ऋक् । आधा मन्त्र वा श्लोक.

अर्धवीक्षण, (न०) अर्धं असम्पूर्णं वीक्षणं । वि+ईक्ष्+ल्युट् । पूरा न देखना । कटाक्षसे देखना.

अर्धशतम्, (न०) अर्धेन सहितं शतम् । आधेसहित एकसौ अर्थात् एकसौ पचास १५०.

अर्धावभेदक, (पु०) अर्धं अव भिनत्ति-अर्ध+अव+भिद् । एक आधेको फाडनेवाला । आधेसिरकी पीडा.

अर्धाशनम्, (न०) अर्धं अशनस्य । भोजनका आधा । आधा भोजन.

अर्धासन, (न०) अर्धं आसनस्य । एक० त० । आसनका आधा भाग । स्नेहको प्रकाश करनेहारा सम्मान.

अर्धिक, (त्रि०)-की-(स्त्री०) । अर्धं अर्हति ठन् । आधा भाग लेनेवाला.

अर्धिन्, (त्रि०) अर्ध अस्त्यर्थे इनि । आधा भाग लेनेवाला । आधेका हिस्सेदार.

अर्धोदय, (पु०) अर्धस्य समृद्धस्य पुण्यस्य उदयो यत्र । माघका महीना, अमावास्या तिथि, श्रवणनक्षत्र और व्यतीपात होनेसे एक योग होताहै.

अर्धोरुक, (न०) अर्धं ऊरोः अर्धोरु तत्र काशते काश्+ड । पट्टोंके नीचेतक अङ्गोंको ढांकनेहारा कपडा । उत्तमस्त्रियोंके पहिरनेका वस्त्र जो चोलीके स्वरूपका होताहै । साडी । घागरा.

अर्पण, (न०) ऋ+णिच्+ल्युट् पुक्च । सम्प्रदान । देना । नजर करना । सौंपना.

अर्पित, (त्रि०) ऋ+णिच्+पुकच् । क्त । दियागयाआदि.

अर्पिस, (पु०) ऋ+णिच्+पुक् च इसन् । हृदय । दिल । छाती.

अर्पिसः, (पु०) ऋ+णिच्+इसन्+हृदय । हृदयका मांस.

अर्ब-र्व, मारना । भ्वा० पर० सक० सेट् । अर्वति । आर्वीत्.

अर्बुद, (न०) अर्व्+विच्+उद्+इण्+ड । आबू नामी रोग । दशकरोडकी संख्या १००००००००। (पु०) पर्वतविशेष.

अर्भक, (पु०) अर्भ एव स्वार्थे क । बालक । मूर्ख । कृश । कमजोर । थोडा.

अर्मः-र्मं, (पु० न०) ऋ० उणा० नेत्रव्याधि । आंखकी बीमारी । पहुंचने योग्य देश । गन्तव्य देश । श्मशान.

अर्य, (त्रि०) ऋ+यत् । स्वामी । वैश्य (पु०) "स्त्रियां टाप्" अर्या । अर्यी.

अर्यमन्, (पु०) अर्यं श्रेष्ठं मिमीते मा+कनिन् । सूर्य । पितरोंका राजा.

अर्वन्, (पु०) ऋ+वनिप् । घोडा । इन्द्र । स्त्रियां अर्वती.

अर्वाच्, (अव्य०) पूर्व । पर । निकट । पहिले । पीछे । नजदीक.

अर्वाचीन, (त्रि०) अर्वाक् काले पश्चात् काले भवः+ख । प्रतिकूल । खिलाफ । पीछेकी पैदाइश । नूतन । नया.

अर्बुक, (पु०) अर्व्+उकन् । एकजातिका लोग जो दक्षिण में रहते और सहदेवसे जीते गये थे.

अर्शस्, (न०) ऋ+असुन्-शुक्च । रोगविशेष । बवासीर । "अर्श".

अर्शस, (त्रि०) अर्शस् अस्त्यर्थे अच् । बवासीरकी व्याधिसे दुःखित.

अर्शसान, (त्रि०) दश् असानुच् शुट् च । किसीको व्यथा पहुंचानेका यत्न करनेवाला.

अर्षण, (त्रि०) ऋष गतौ ल्युट् । वहनेवाला । चलनेवाला.

अर्ह, पूजा करना-सक-योग्यत्वे अक० भ्वादि-पर० सेट् । अर्हति । आर्हीत् । आनर्ह.

अर्ह, (पु०) अर्ह+कर्मणि अच् । योग्य । पूज्य । इन्द्र । ईश्वर.

अर्हण, (पु०) अर्ह+कर्तरि ल्यु । पूजाका साधन । पूजा.

अर्हत्, (त्रि०) अर्ह् शतृ । योग्य । लायक । आदरके योग्य । स्तुतिके योग्य । बुद्ध.

अर्हन्त, (त्रि०) अर्ह् वा क । योग्य । लायक ।–न्तः (पु०) बुद्धभेद । बुद्धसंन्यासी.

अर्ह्य, (त्रि०) अर्ह् एण्य । योग्य । आदरणीय । स्तुतिके योग्य । पूजनीय.

अल्, भूषित करना सजाना । हटाना । सक० भ्वा० उभ० । पूराहोना-अक० सेट् । अलति-ते । आलीत् । आलिष्ट.

अलम्, (अव्य०) भूषण । पर्याप्ति । काफी । वारण । निषेध । शक्ति.

अलङ्कर्मीण, (त्रि०) अलं समर्थः कर्मणे ख । काम करनेमें चतुर । पूरा । चालाक.

अलङ्कृत, तना० उभ० । सज्जीकरण । तयार करना । Ved भूषित करना.

अलङ्गामिन्, (त्रि०) अलं पर्याप्तं गच्छति+णिनि । ठीक नियमसे पीछे चलनेवाला.

अलन्धन, (त्रि०) अलं प्रभूतं धनं अस्ति अस्य । जिसके पास बहुत धन हो । धनी । दौलतमन्द.

अलञ्जीविक, (त्रि०) अलं जीविकायै । अपनी जीविकाके लिये समर्थ । पूरा.

अलम्पशुः, (पु०) अलं यज्ञे निरर्थः पशुः । यज्ञके अयोग्य पशु । (त्रि०) गौ आदि पशु रखनेमें समर्थ.

अलम्पुरुषीण, (त्रि०) अलं समर्थ पुरुषाय स्वार्थे ख । पुरुष होनेलायक । योग्य पुरुष । लायक आदमी.

अलम्भूष्णु, (त्रि०) अलं सामर्थ्ये भू ग्स्नु । योग्य । लायक । चालाक.

अलक, (पु०) अलति-भूषयति मुखं । कुन्तल । भङ्गीयुत केश । पागलकुत्ता । जुलफ । (स्त्री०) कुबेरकी नगरी.

अलक्त-क, (पु०) न रक्तो यस्मात् ५ त० रस्य लत्वम् । लाक्षारस । लाखका रंग । वृक्षनिर्यासविशेष.

अलक्षण, (त्रि०) नास्ति लक्षणं अनुमापकं वा चिह्नं यस्य ६ ब० । जिसका अनुमान न होसके । अच्छे चिन्हसे शून्य । न० त० । दुर्भाग्य (बदनसीब).

अलङ्कार, (पु०) अलं+कृ+घञ् । भूषण । साहित्यशास्त्र । काव्यके गुण और दोषको जनानेहारा शास्त्र । जेवर । गहना.

अलस-क, (त्रि०) न लसति व्याप्रियते-लस+अच् । निरुद्योग, सुस्त (पांवका रोग) (पु०) हंसपदी लता (स्त्री०).

अलात, (पु० न०) ला+क्त-न० त० । अर्धदग्धकाष्ठ । अंगार । कोइला.

अलाबु-बू, (स्त्री०) न लम्बते । न+लबि+ड-णित् नलोपश्च वृद्धिः । लाउ । तुम्बी । कद्दू । लताविशेष.

अलि, (पु०) अलति दंशे, कूजिते, शब्दिते वा समर्थो भवति । अल्+इन् । भ्रमर । कौआ । कोइल । शराव । बिच्छु.

अलिक, (न०) अल्यते भूष्यते । अल्+कर्मणि इकन् । मस्तक । ललाट । मत्था । झूठ । मिथ्या । "अलीक."

अलिन्द, (पु०) अल्यते भूष्यते अल्-कर्मणि किन्दच् । दर्वाजेके कमरेसे बाहिरका चौतडा । दर्वाजेके वाहिरका भाग । चौतडा.

अलिप्सा, (स्त्री०) न लभ् सन् अ । लाभ करनेकी इच्छाका न होना । इच्छाराहित्य.

अलीक, (त्रि०) अल्+वीकन् उणा० न चाहा गया । अप्रिय । असत्य । क्रूर.

अलोहित, (त्रि०) न लोहितः । रुधिररहित । जो लाल नहीं ।–तं । लालकमल.

अलौकिक, (त्रि०) लोके विदितः ठक् न० त० । जिसे लोग नहि देखसक्ते । लोकसे बाहिर । चमत्कारी । आश्चर्य.

अल्प, (त्रि०) अल्+द । किञ्चित् । जरासा । थोडा "अल्पक."

अल्पज्ञ, (त्रि०) अल्पं जानाति ज्ञा+क । थोडा जाननेवाला.

अल्पविद्य, (त्रि०) अल्पा विद्या यस्य ब० । थोडी विद्यावाला । अज्ञानी । अशिक्षित.

अल्ला, (स्त्री०) अल्यते इयल्+क्विप् । अले भूषार्थे लाति गृह्णाति । ला+क ४ त० । माता । मां । "अलतीति अल् । पर्याप्तः सन् लाति सर्वान् अत्ति गृह्णाति-जानाति वा ला+क" । सर्वज्ञा-सर्वभक्षिका परमात्मदेवता.

अव्, बचाना-जाना-चाहना-तृप्तहोना-सुन्ना-फैलना-मिलना-मांगना-प्रवेश करना-हीना-बढना-लेना-मारना-करना "यथायथं" सक०अक०भ्वा० पर० सेट् । अवति । आवीत् । आव.

अवकर, (पु०) अवकीर्यते सम्मार्जन्यादिभिः । अव्+कॄ+कर्मणि अप् । सम्मार्जनीनिक्षिप्त धूल्यादि । झाड़ूसे उडती हुई धूली आदि.

अवकाश, (पु०) अव+काश्+घञ् । अभ्यन्तरस्थान । अवसर.

अवकीर्ण, (त्रि०) अव्+कॄ+कर्मणि क्त । विक्षिप्त । फैलायाहुआ । चूर्णित । पिसाहुआ.

अवकीर्णिन्, (त्रि०) अवकीर्णं ध्वस्तं व्रतं अस्त्यस्य इनि । धर्मभ्रष्ट । जिसने अपना धर्म छोड दियाहै.

अवक्षेप, (पु०) अव+क्षिप्+घञ् । निन्दा । "अवक्षेपण."

अवखातम्, (न०) निम्नः खातः । गहरी खाई.

अवखादः, (पु०) अवज्ञातः निन्दितः खादः खाद्यम् । निन्द्य भोजन । बुरा खाना.

अवगणित, (त्रि०) अव+गण्+कर्मणि क्त । तिरस्कृत । अवज्ञात । बेइज्जत किया गया । परवाह न किया गया.

अवगत, (त्रि०) अव+गम्–क्त । ज्ञात । जानाहुआ । नीचेगया.

अवगाढ, (त्रि०) अव+गाह्+क्त । नहाया हुआ । गाढा.

अवगाह, (पु०) अव+गाह्+घञ् । स्नान । स्नानगृह । नहाना । नहानेका घर.

अवगीत, (त्रि०) अव+गै+क्त । कलङ्कित । दुष्ट । निन्दित । "भावे क" । जनापवाद । निन्दा । इलजाम.

अवगुण, (पु०) अव+गुण+क । दोष । ऐब.

अवगुण्ठन, (न०) अव+गुण्ठ+ल्युट् । स्त्रियोंका सिर ढांकना । घूंगट निकालना । "करणे ल्युट्" मुख छिपानेका कपडा । बुरका । घुंगट । घुण्ड.

अवग्रा(ग्र)ह, (पु०) अव+ग्रह+घ-घञ्वा । वृष्टिरोध । वर्षाका रुकना । बाधा । रोक । स्वभाव । आदत.

अवघात, (पु०) अव+हन्+घञ् । अपमृत्यु । तण्डुलादि कुट्टन । धानोंका छडना वा छड़ना । चावलोंका तोहसे जुदा करना.

अवघात, (पु०) अव्+हन्+घञ् । ताडन करना । मारन । चोट पहुंचना.

अवचय, (पु०) अव+चि+अच् । सञ्चय । फलफूलका तोडना.

अवचि, स्वा० उभ० । पूजा करना । आदरकरना । इकट्ठा करना । चुनना । तोडना । चिनोति । चिनुते । चिचा । (का) य । अचैषीत् । अचेष्ट.

अवचूड, (ल०) अवनता चूडा अग्रं यस्य । ध्वजाधोवद्धवस्त्र । झंडेके नीचे बंधा हुआ कपडा.

अवचूर्ण, चु० प० । चूर २ करना । टांकना । चूर्णयति । अवुचूर्णत्.

अवचूर्णित, (त्रि०) अव–चूर्ण+क्त । महीन पीसा गया । चूरा किया हुआ.

अवचूलक, (न०) अवनता चूडा यस्य डस्य लत्वं संज्ञायां कन् । मयूरचामर । चौरी । मोरछल.

अवच्छद्, चु० प० । ऊपरसे ढांकना । छिपाना । छादयति । अचिच्छिदत्.

अवच्छिद्, रुधा० उभ० । काट डालना । जुदा करना । फाडना । तोडना । विचारना । छिनत्ति–छिन्ते । अच्छैत्सीत् । अच्छित्त.

अवच्छिन्न, (त्रि०) अव+छिद्+क्त । संकुचित । सिकुडा हुआ । विशिष्ट । मिलाहुआ । न्यायमतमें "अवच्छेदकतानिरूपक" अर्थात् किसी वस्तुमें उसके विशेष गुणोंके कारण, दूसरी सम्पूर्ण वस्तुओंसे भेदको प्रकाश करनेहारा । कटाहुआ । जुदा किया गया.

अवच्छेदक, (त्रि०) अव+छिद्+ण्वुल् । काटनेवाला । व्यावर्तक विशेषण । औरोंसे भेदको प्रकाश करनेहारा विशेषण । गुणरूप शब्द.

अवज्ञा, (स्त्री०) अव+ज्ञा+अङ् । अनादर । बेअदबी । नफरत.

अवट–टी, (पु०) अव+अटन् । गर्त (टोआ) । खूआ । कुहकजीवी । इन्द्रजालसे जीविका करनेहारा । मदारी.

अवटीट, (त्रि०) अवनता नासिका । प्रा० स० । "नतायें नासायाः टीटादेशः" । अर्शआदित्वात् अच् । नतनासिक । चपटी नाकवाला.

अवतमस, (न०) अवततं व्याप्तं तमः । प्रा० स० अच् । वडा अंधेरा.

अवतंस, (पु०) (न०) अव+तंस्+घञ् । कर्णभूषण । कानका फूल । शिरोभूषण । मुकुट । ताज.

अवतार, (पु०) अव+तॄ–करणे घञ् । पारहोना । गङ्गादितीर्थ । "भावे घञ्" । देवताओंका अंशावेशसे प्रकट होना । विष्णु नारायणका भिन्न २ देह धारण करना.

अवतीर्ण, (त्रि०) अव+तॄ+क्त । उतरा हुआ । नीचे आया हुआ.

अवदात, (पु०) अव+दै+क्त । श्वेत । पीला । चिट्टारंग । सुन्दर.

अवदान, (न०) अव+दो+ल्युट् । देवताको बलि देना । प्रशस्तकर्म । नेककाम । खण्डन । तोडना.

अवदारण, (न०) अव+दृ+णिच्–करणे ल्युट् । खनित्र । कुदाल.

अवद्य, (त्रि०) वद्+यत् न० त० । अधम । नीच । पापी । निन्दाके योग्य (पु०) । पाप । निन्दा । गुनाह.

अवधा, जु० आ० । नीचे रखना । अमानत टिकाना । धत्ते । अधित.

अवधान, (न०) अव+धा+ल्युट् । मनोयोग । जिसके होनेपर और विषयोंसे मन हटजाताहै । गौर । खबर्दारी । लिहाज । शुगल.

अवधारण, (न०) अव+धृ+णिच्+ल्युट् । निश्चयकरण । तहकीक करना । पक्का निश्चय.

अवधि, (पु०) अव+धा+कि । सीमा । हद्द । काल । गर्त । गढा । अवसान । अन्त "आधारेकी" बिल.

अवधीर, न मान्ना । अवज्ञा करना । चुरा० उभ०सक०सेट् । अवधीरयति, ते । आवधीरत्-त.

अवधूत, (त्रि०) अव+धू+क्त । त्यक्त । तजाहुआ । तिरस्कृत । रोकाहुआ । कांपाहुआ । (पु०) वर्णाश्रमधर्मको छोडनेहारा संन्यासी । केवल आत्माराम.

अवध्य, (त्रि०) न+वध्+यत् । न मारनेयोग्य । पवित्र.

अवन, (न०) अव+ल्युट् । प्रीणन । तसल्ली । रक्षण । हिफाजत करना । प्रीति.

अवनम्, भ्वा० प० । झुकना । प्रणाम करना । नीचे लटकाना । नमति । अनंसीत्.

अवनत, (त्रि०) अव+नम्+क्त । नम्र । झुकाहुआ.

अवनद्ध, (त्रि०) अव+नह्+कर्मणि क्त । बंधाहुआ । मृदङ्गादि बाजा (न०) वस्त्र और भूषणका पहिरना.

अवनह्, दि० उ० । बांधना । गांठ लगाना । नह्यति-ते । अनात्सीत् । अनद्ध । अवनद्ध.

अवनाट, (त्रि०) नतं नासिकायाः अव+नाटच् । चपटी नाकवाला.

अवनि-नी, (स्त्री०) अव्+अनि । भूमि । जमीन.

अवनिज्, जु० उ० । प्रक्षालन करना । धोना । साफ करना । पोछना । नेनेक्ति-क्ते । निनेज-निनिजे । अनिजत्-अनैक्षीत् । अनिक्त.

अवनेजन, (त्रि०) अव+निज्+अन । प्रक्षालन करना । धोना । श्राद्धमें कुशापर पानी छिडकना.

अवन्तिका, (स्त्री०) अवन्तिषु कायति प्रकाशते । मालवदेशकी राजधानी उज्जयिनी.

अवपत्, भ्वा० प० । नीचे गिरना । नीचे कूदना । उतरना । पतति । अपतीत्.

अवपात, (पु०) अव+पत्-आधारे घञ् । बिल । "भावे घञ्" । नीचे गिरना । निपात । गिरना.

अवपात्र, अवरं भोजनायोग्यं पात्रं यस्य । जिसका पात्र भोजनयोग्य न हो । म्लेच्छका पात्र, जिसमें दूसरे नहीं खासक्ते.

अवपात्रित, (त्रि०) अवपात्र । कृत्यर्थे णिच् । जो अपनी जाति खो बैठा है । जिसके सम्बन्धी उसे एकही पात्रमें भोजन करनेकी आज्ञा न दे । जातिसे छेक दियागया.

अवपाशित, (त्रि०) अवपाशः समन्तात् पाशः जातः अस्य तार० इतच् । चारों ओर पाश (फाई)से फंसा हुआ । जालमें फंसा हुआ.

अवपीड, चु० प० । दवाया जाना । पीडयति । अपिपीडत्,

अवप्लुत, (त्रि०) अव+प्लु+क्त । चारों ओर सींचागय । उतराहुआ । गीलाहुआ.

अवबुध, दि० आ० । जागना । पहिंचान्ना । जान्ना । समझना । बुध्यते । अबोधि.

अवब्रवः, (पु०) कुत्सितः ब्रवः । बुरी खबर.

अवभञ्ज्, रुधा० प० । तोडडालना । टुकडे २ करना । भनक्ति । अभाङ्क्षीत्.

अवभास, (पु०) अव+भास्-भावे घञ् । प्रकाश । माया । रौशनी । साक्षात्कार । छल.

अवभृथ, (पु०) अव+भृ+क्थन् । प्रधान यज्ञकी न्यूनाधिकशान्तिके अर्थ कर्तव्यहोम । यज्ञके अन्तमें स्नान.

अवम, (त्रि०) अव+अमच् । पापी । गुनाहगार । बदमाश । दुष्ट । कमीना.

अवमत, (त्रि०)अव+मन्+क्त । अनाहृत । बेइज्जत कियागया.

अवमन्, दि० आ० । तिरस्कार करना । मन्यते । मेने । अमंस्त.

अवमन्तृ, (त्रि०) अव+मन्+तृच् । तिरस्कार करनेवाला । अभिमानी.

अवमर्द, (पु०) अव+मृद्+घञ् । पीडन । तक्लीफ । शत्रुके नगरको विनाश करना । मारना । लताडना.

अवमर्श, (पु०) अव+मृश्+घञ् । आलोचना । विचारना.

अवमानना, (स्त्री०) अव-चुरा०-मन्+भावे युच् । अपमान करना.

अवमानित, (त्रि०) अव+चुरा०-मन्+कर्मणि क्त । अपमान कियागया.

अवमार्जनम्, (न०) अव मृज् अन । प्रक्षालन करना । धोना । पोछना । साफ करना । मार्ष्टि । ममार्ज । अमार्जीत्.

अवमुच्, तु० प० । खुला छोड देना । खोल देना जैसे घोडा आदि उतार देना-जैसे पौशाक.

अवमूर्धन्, (त्रि०) अवनतः मूर्धा अस्य । झुके हुए मस्तकवाला.

अवमृज्, अदा० प० । घिसना । रगडना.

अवमृद्, क्र्या० प० । पीसना । मलडालना । मृद्नाति । अमर्दीत्.

अवयव, (पु०) अव+यु+अच् । अङ्ग । शरीरके भाग । उपकरण । साधन । न्यायमतमें प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय और निगमन पांच वाक्य.

अवर, (त्रि०) अव+रा+क । चरम । आखरी । छोटा । नीच (न०) हाथीकी जांघका पिछला भाग । पिछेका देशकाल (पु०) पीछेके देशकालमें होनेवाला (त्रि०).

अवरज, (पु०) अवरस्मिन् काले जातः । छोटा भाई । शूद्र.

अवरति, (स्त्री०) अव+रम्-भावे क्तिन् । विराम । ठहरना । अन्त । हटना.

अवरवर्ण, (पु०) अवरगिना हुआ शूद्र । पिछला वर्ण.

अवरुध्, रुधा० प० । निरोध करना । रोकना । ठहराना । रुणद्धि । रुरोध । अरौत्सीत्.

अवरुद्ध, (त्रि०) अव+रुध्+कर्मणि क्त । आच्छादित । ढँकाहुआ । बांधाहुआ । अन्तःपुरकी भोगनेयोग्य दासी । राजाकी स्त्री (स्त्री०).

अवरुह्, भ्वा० प० । नीचे उतरना । रोहति । रुरोह । अरुक्षत्.

अवरूढ, (त्रि०) अव+रुह्+कर्तरि क्त । अवतीर्ण । उतराहुआ । अपने स्थानसे उठा.

अवरोध, (पु०) अव+रुध्+भावे घञ् । निरोध । रोक । "आधारे घञ्" । राजस्त्रीगृह । रनवास । राजाकी स्त्री.

अवरोपित, (त्रि०) अव+रुह्+णिच्-पुक् च+कर्मणि क्त । उत्पाटित । उखाडा गया.

अवरोह, (पु०) अव+रुह्+भावे घञ् । अवतरण । उतरना । आरोह । चढना "अपादाने घञ्" । स्वर्ग । (वहांसे भोग-होचुकनेपर सब नीचे उतरते हैं).

अवलक्ष, (त्रि०) अव+लक्ष्+घञ् । श्वेतवर्ण । चिट्टारंग । चिट्टेरंगवाला । मूर्ख । "वलक्ष" इसी अर्थमें.

अवलग्न, (पु०) अव+लग्+क्त इडभावः । देहका मध्यभाग । कमर । लगाहुआ (त्रि०).

अवलम्ब, (पु०) अव+लबि+आधारे घञ् । आश्रय । शरण "करणे घञ्" । पकडनेका साधन दण्ड आदि । "अवलम्बन."

अवलम्ब्, भ्वा० आ० । लटकना । लम्बते । ललम्बे । अम्बिष्ट.

अवलिप्त, (त्रि०) अव+लिप्+कर्तरि कर्मणि वा क्त । अहंकारी । मगरूर । लेपित । लिवडाहुआ.

अवलिह्, अदा० उभ० । चाटना । लेढि-लीढे । लिलेह-लिलिहे । अलिक्षत्-अलिक्षत.

अवलीढ, (त्रि०) अव+लिह्+कर्मणि क्त । भक्षित । खायाहुआ । आस्वादित । कृतावलेह । चाटाहुआ.

अवलीला, (स्त्री०) अवरा लीला । अनायास । अनादर । क्रीडा । खेल । आसानी.

अवलुप्, तु० उ० । किसी परजा पडना । जैसे आरण्यपशु (जंगलीपशु) अपने शिकारपर पडता है । खाना । लूटना । लुम्पति-लुम्पते । लुलोप-लुलुपे । अलुपत्-अलुप्त.

अवलुम्पन, (न०) अव+लुप्+अन । अचानक किसीपर कूद पडना.

अवलेप, (पु०) अव+लिप्+भावे घञ् । गर्व । अहंकार । लेपन । दूषण । संबंध.

अवलेपन, (पु०) अव+लिप्+भावे ल्युट् । मलना । संकल्प । "करणे ल्युट्" । चन्दन आदि.

अवलेह, (पु०) अव+लिह्+भावे घञ् । जीभसे चाटना । चटनी.

अवलोकन, (न०) अव+लुक्+भावे ल्युट् । दर्शन । देखना । अनुसंधान । तालाश करना । "करणे ल्युट्" । आलोक । नेत्र.

अवलोप, (पु०) अव+लुप्+अ । काटडालना । नाश । डसना । चूसना.

अवलोम, (त्रि०) अवनद्धं लोम आनुकूल्यं । जो किसीके अनुकूल हो.

अवश (त्रि०) नास्ति वशं आयत्तं यस्य । अस्वाधीन । पराधीन । वेवस.

अवशय, (त्रि०) अवमूर्धा सन् शेते-शी+अच् । नीचे मस्तक (माथा) करके सोनेवाला.

अवशिष्ट, (त्रि०) अव+शिष्+क्त । अतिरिक्त । भिन्न । जुदा । परिशिष्ट । बाकी । अधिक । जियादा.

अवश्य, (अव्य०) सर्वथा जरूर । (त्रि०) वेइखतयार.

अवश्याय, (पु०) अव+श्यै+अ । शिशिर । पाला । धुंद । अभिमान.

अवश्रयण, (न०) अव+श्री+अन । अग्निपरसे किसी वस्तुको उतारना । "अधिश्रयण" अग्निपर चढाना.

अवष्टब्ध, (त्रि०) अव+स्तम्भ+कर्मणि क्त-षत्वम् । आसन्न । निकट । घिराहुआ । बंधाहुआ । रुकाहुआ.

अवष्टम्भ, (पु०) अव+स्तम्भ्+भावादौ घञ्-षत्वम् । स्वर्ण । सोना । स्तम्भा । खम्भा । जताना । प्रारम्भ । फजीलत.

अवसक्थिका, (स्त्री०) अवबुद्धे सक्थिनी यस्याम्+कप् । जिसमें पद बांधे हुए हों । बैठनेका जांघिआ.

अवसः, (पु०) अव्+असच् । राजा । सूर्य । अर्कका वृक्ष । संभोजन । रास्तेका भोजन.

अवसथ, (पु०) वस्+अथन्-न० ५ व० । निलय । घर । कुटिआ । गाम.

अवसर, (पु०) अव+सृ+अच् । प्रस्ताव । प्रसंग । जिज्ञासाकी निवृत्तिके लिये अवश्य वक्तव्य । मौका.

अवसर्प, (पु०) अव+सृप्+अच् । चर । दूत । कासिद.

अवसाद, अव+सद्+भावे घञ् । नाश । विषाद । थकावट.

अवसान, (न०) अव+सो+भावे ल्युट् । विराम । समाप्ति । आखीर । सीमा । हद्द । मृत्यु । मौत.

अवसाय, (पु०) अव+सो+घञ् । परिणाम । नतीजा । समाप्ति । अन्त । नाश.

अवसित, (त्रि०) अव+सो+कर्तरि-कर्मणि वा क्त । समाप्त । आखीर हुआ । ज्ञात । जानागया.

अवस्कन्द, (पु०) अव+स्कन्द+आधारे घञ् । शिविर । छावनी । "भावे घञ्" । आक्रमण । हमला.

अवस्कन्दन, (न०) अव+स्कन्द्+भावे ल्युट् । तोडना । छीनना । गुजरना । उतरना.

अवस्कर, (पु०) अव+कृ+कर्मणि अप्-सुट् । झाडूसे उडे हुए कंकर मट्टी आदि । विष्ठा । गूँह । गुह्य । लिङ्ग.

अवस्तात्, (अव्य०) अवरस्मिन् अवरस्मात् अवरं इत्यर्थे अस्ताति+अव् आदेशः । नीचे । नीचेसे.

अवस्तार, (पु०) अव+स्तृ+करणे घञ् । जवनिका । कनात । दरी । पडदा.

अवस्तु, (त्रि०) कुत्सितार्थे नञ् । एक निकम्मी चीज.

अवस्था, (स्त्री०) अव+स्था+अङ् । दशा । आयु । हालत । उमर.

अवस्थान, (न०) अव+स्था+भावे ल्युट् । स्थिति । रिहायश । जगह.

अवस्यन्दन, (न०) अव+स्यन्द+भावे ल्युट् । हिंसन । मारना.

अवस्यु, (त्रि०) अवः रक्षणं तदिच्छति क्यच् डन् Ved- अनुग्रहकी इच्छावाला । रक्षा चाहनेवाला.

अवस्रंसन, (न०) अव+स्रन्स+भावे ल्युट् । अधःपतन । नीचे गीरना.

अवहार, (पु०) अव+हृ+कर्तरि ण । चोर । पानीका हाथी । तन्दुआ । निमन्त्रित ब्राह्मणोंका धन चुराना.

अवहित, (त्रि०) अव+धा+क्त । स्थापन किया गया । सावधान । हुशिआर.

अवहेल, (न० स्त्री०) अव+हेल्+अ । घञर्थे त वा । अनादर । बेअदबी.

अवाक्शिरस्, (त्रि०) अवाक् शिरोऽस्य व० । नीचे मुख । अधोमुख.

अवाक्ष, (त्रि०) अवनतानि अक्षाणि इन्द्रियाणि यस्य । जिसकी इन्द्रियें झुक गई हैं । संरक्षक । रखवारा.

अवाङ्मुख, (त्रि०) अवाक् मुखं अस्य । अधोमुख । नीचे मुख.

अवाग्र, (त्रि०) अवनतं अग्रं अस्य । जिसका आगा झुकाहो । सिर झुकाये हुए । प्रणाम करनेवाला.

अवाच्, (त्रि०) अवाञ्चति । अव+अञ्च्+क्विन् । नीचेकी ओर छोटा देश । (स्त्री०) दक्षिणदिशा । ६ ब० । जो बोल नहिं सक्ता । गुंगा । पिछला समय (अव्य०).

अवाच्य, (न०) अच्+ण्यत्-न कुत्वं-न०त० । अनिन्दित । जो निन्दाके योग्य नहिं । वचनानर्ह । जो कहनेके योग्य नहीं.

अवान, (त्रि०) अव+अन्+अच् । सूका हुआ । सूका.

अवान्तर, (त्रि०) अवगतं अन्तरं मध्यं आत्या० स० । प्रधानान्तःपाति अङ्गादि । भीतरी दरमियानी । बीचका.

अवाप्, स्वा० उ० । पाना । लाभ करना । आप्नोति–आप्नुते । आप–आपे । आपत्–आपिपत्.

अवारपार, (पु०) अवारं पारं च स्तो यस्य । अर्शआद्यच् । दोनों किनारेवाला समुद्र । समुद्रबन्दर.

अवारपारीण, (त्रि०) अवारपारे गच्छति-ख । दूसरे पार जानेहारा.

अवासस्, (त्रि०) न वासोऽस्य । वस्त्ररहित । कपडे विना । नंगा । रजस्वला.

अवि, (पु०) अव+इन् । सूर्य । भेड । बकरा । पर्वत । स्वामी.

अवितथ, (न०) न वितथं मिथ्या । न० त० । सत्य । सच्च.

अविद्या, (स्त्री) विद्+क्यप्-न० त० । विद्याभाव । विद्याका न होना । अहङ्कारका कारण अज्ञान । विद्याकी विरोधिनी अयथार्थबुद्धि । वेदान्तमतमें भाव किंवा अभावसे न कहीं जानेहारी अचेतन (जड) माया (परमात्माकी शक्ति).

अविनाभाव, (पु०) विना (व्यापकं ऋते) नभावः (स्थितिः) व्यापकस्थित्यनुरोधि सत्तारूपा व्याप्ति । जो व्यापक (कारण) के विना न रहसके । जैसे अग्निके विना धूम नहिं रह सक्ता अर्थात् जहां धूम होगा वहां अग्नि अवश्य होनी चाहिये । व्याप्ति.

अविनीत, अव+नी+कर्तरि क्त । उद्धत । अशिक्षित । न सीखाहुआ । नाफरमावरदार । (स्त्री०) कुलटा । वदकार औरत.

अविभक्त, (त्रि०) अपृथक् । नाजुदा (पु०) वि+भज+क्त-न० त० । संसृष्ट । विभागरहित द्रव्य । स्वामी.

अविमुक्त, (न०) वि+मुच्+क्त-न० त० । जिसे पार्वती और महादेव नहिं छोडते । काशीक्षेत्र । मुक्तभिन्न । जो मुक्त नहिं (त्रि०).

अविरत, (त्रि०) वि+रम्+भावे क्त । न० व० । विरामशून्य । लगातार.

अविरल, (त्रि०) न विरलः न० त० । घन । निबिड । मिलाहुआ । संघना.

अविवेक, (पु०) वि+विच्+घञ्-न०त० । सदसद्विवेकाभाव । भले बुरेका न विचारना । वेवकूफी । अज्ञानता.

अविश्रान्त, (त्रि०) वि+श्रम्+क्त-न०त० । बिरामरहित द्रव्य । लगातार.

अविस्पष्ट, (न०) वि+स्पश्+क्त-न० त० । अस्पष्ट वाक्य । जो साफ न हो.

अवीचि, (पु०) नास्ति वीचिः (सुखं) अत्र । नरकविशेष । विनतरंग (न०).

अवीर, (त्रि०) वीरः (पुत्रादि) नास्ति यस्य । पतिपुत्ररहित । बलहीन.

अवे, अवइ+अदा० प०। जानना। समझना। सीखना। पहिचानना। एति। इयाय। अगात्.

अवेक्षण, (न०) अव+ईक्ष्+भावे ल्युट्। दर्शन। देखना। मनका लगाना। सोचना। "अवेक्षा" इसी अर्थमें.

अवोक्षण, (न०) अव+उक्ष्+भावे ल्युट्। Ved. थोडेसे झुके हुए हाथसे सींचना.

अवोद, (त्रि०) अव+उन्द् भावे घञ् निपातः नलोपः। आर्द्र। गीला.

अव्य, (त्रि०) अवि+भवार्थे यत्। मेडसे आया वा मेडका सम्बन्धी.

अव्यक्त, (पु०) वि+अञ्ज+क्त-न०त०। विष्णु। कामदेव। शिव। मूर्ख। प्रधान। आत्मा। परमात्मा। सूक्ष्मशरीर.

अव्यक्तराग, (पु०) न व्यक्तो रागोऽरुणिमा यस्य। थोडा लाल। अरुणवर्ण.

अव्यञ्जन, (पु०) नास्ति व्यञ्जनं (शुभलक्षणं शृङ्गं) यस्य। सींगके विना पशु। अच्छे लक्षणसे शून्य। चिह्नशून्य (त्रि०).

अव्यथ, (पु०) न व्यथते (पद्भ्यां न चलति)। व्यथ्। डरना और चलना-अच्। सर्प। सांप पीडाके विना (त्रि०).

अव्यथिन्, (पु०) बहुचलनेऽपि नं व्यथते। व्यथ्-इनि। अश्व। घोडा.

अव्यभिचारिन्, (त्रि०) वि+अभि+चर्+णिनि-न० त०। किसीभी प्रतिकूल कारणसे न हटायाजानेहारा। न रुकनेवाला। न्यायमतमें शुद्ध हेतु (पु०).

अव्यय, (न०) वि+इन्+अच्-न० त०। सब विभक्तिओं और वचनोंमें एकरूप शब्दमें रहनेहारा धर्मविशेष। जैसे सर्वत्र एकरूप होनेसे स्वरादि अव्यय है। शिव। विष्णु (पु०) आद्यन्तरहित। विकारशून्य (त्रि०).

अव्ययीभाव, (पु०) अनव्ययं अव्ययं भवति अनेन। अव्यय+च्वि+भू+करणे घञ्। व्याकरणमें प्रसिद्ध एक समास। जैसे "उपकुम्भं" यहां अनव्यय भी कुम्भादिपद अव्यय बन गया है.

अव्यवस्था, (स्त्री०) वि+अव+स्था अङ्-न० त०। असिद्धान्त। अविधि। शास्त्रके विरुद्ध उपदेश। नियमका न होना.

अव्यवहार्य, (त्रि०) वि+अव+हृ+ण्यत्-न० त०। जिसके साथ शयन वा भोजन उचित नहिं। जो व्यवहारके योग्य नहिं। जो अपने धर्मसे गिरगया हो। पतित.

अव्यवहित, (त्रि०) वि+अव+धा+कर्मणि क्त-न० त०। व्यवधानशून्य। साथ। लगाहुआ। बिना फरक.

अव्याकृत, (त्रि०) वि+आ+कृ+कर्मणि-क्त न० त०। वेदान्तमें बीजरूप जगत्का कारण अज्ञान। सांख्यमें प्रधान.

अव्याप्यवृत्ति, (त्रि०) व्याप्य (स्वाधिकरणं देशादिकं साकल्येन संबध्य) न वृत्तिः (स्थितिर्यस्य)। जो अपने आश्रयके सम्पूर्ण देशमें न रहे। जैसे घट पृथिवीके एकदेशमें ही रहताहै इसलिये अव्याप्यवृत्ति है। व्याप्यवृत्ति तो जातिआदि है जो घट आदिमें सम्पूर्ण रूपसे संबद्ध हुआ ही स्थित है यह न्यायमतमें प्रसिद्ध है.

अव्युत्पन्न, (त्रि०) वि+उत्+पद्+क्त-न०त०। सम्पूर्ण शब्दसंबंधी प्रत्येक अङ्गको जाननेकी शक्तिका नाम व्युत्पत्ति है उससे अर्थात् अवयवार्थसे शून्य शब्द "वह शब्दकी जो धातु प्रत्ययसे सिद्ध नहिं होसक्ता"। शब्दके अर्थको न जाननेहारा मूर्ख आदि.

अश्, फैलना-स्वा०आ०सक०वेद्। अश्नुते। आशिष्ट-आष्ट। आनशे.

अश्, खाना-क्र्या०पर०सक०सेट्। अश्नाति। आशीत्। आश.

अशन, (पु०) अश्नुते (व्याप्नोति) अश्+ल्यु। पीतसालवृक्ष। पौधा। भावे ल्युट्। व्याप्ति। फैलना। भोजन (न०)। अन्न.

अशनाया, (स्त्री०) अतिलोमेन अशनं इच्छति। अशन+क्यच् स्त्रियां भावे अ। बहुत लोभसे खाना चाहताहै। भूख.

अशनायित, (त्रि०) अशन+क्यच्+कर्तरि क्त। क्षुधित। भूखा.

अशनि, (पु०) अश्नुते (संहन्ति) अश्+अनि। वज्र। विजुली। वर्क.

अशब्द, (त्रि०) नास्ति शब्दो, वेदादौ वाचकशब्दो वा यस्य। शब्दहीन। वाचकशब्दरहित। प्रधान "ईक्षतेर्नाशब्दं" इति सूत्रं.

अशरीर, (त्रि०) नास्ति शरीरं तदभिमानो वा यस्य। सकल निषेधरूप देहशून्य परमात्मा। शरीरके अभिमानसे रहित जीवन्मुक्त। "अशरीरं वाव सन्तं प्रियाप्रिये न स्पृशतः".

अशास्त्र, (न०) शास्+करणे ष्ट्रन् न०त०। वेदादि विरुद्ध नास्तिकका शास्त्र.

अशित, (त्रि०) अश्+कर्मणि क्त। भक्षित। खायाहुआ। रजाहुआ.

अशितङ्गवीन, (त्रि०) अशितास्तृप्ता गावोऽत्र। जहां गौएं रजती हैं। वह स्थान कि जहां गौएं चरती हैं.

अशितम्भव, (त्रि०) अशितस्तृप्तो भवत्यनेन। ख-मुम्-च। तृप्तिका साधन अन्नादि। खाद्यद्रव्य। खानेकी चीज.

अशिश्वी, (स्त्री०) नास्ति शिशुर्यस्याः ङीष्। शिशुहीना स्त्री। बेऔलाद औरत "स्वार्थे के ह्रस्वे" "अशिश्विका" इसी अर्थमें होताहै.

अशीति, (स्त्री०) दशानां अवयवं दशतिः, दशकं अष्टगुणिता दशतिः नि०। अशीत्यादेशः। संख्याविशेष। ८० अस्सी.

अशुभ, (न०) नास्ति शुभं यस्मात् ५ व० । पाप । अमङ्गल । पापी (त्रि०)

अशेष, (त्रि०) नास्ति शेषो यस्य । शेषहीन । तमाम । लाइन्तिहा.

अशोक, (पु०) नास्ति शोको यस्मात् ५ व० । अशोकवृक्ष । बकुलवृक्ष । पारा । कङ्कवृक्ष (स्त्री०) । शोकरहित (त्रि०).

अशोच्य, (न०) शुच्+कर्मणि ण्यत् न० त० । अशोचनीय । जो शोक करनेके लायक नहिं.

अशौच, (न०) शुचेर्भावः शौचं न० त० । शुचिलाभाव । नापाकी । विहित कर्मके अनधिकारको सम्पादन करनेहारा अधर्म । "स्वार्थे ष्यञ्" "आशौच्य" इसी अर्थमें है.

अश्न, (त्रि०) अश्नुते व्याप्नोति अश्नाति वा अश्+नन् । व्याप्त । सब स्थानपर फैला हुआ । खानेवाला.

अश्नीतपिबता, (स्त्री०) अश्नीत पिबत इत्युच्यते यस्यां निदेशक्रियायां मयू० व्यं० स० । खाने पीनेके लिये निमन्त्रण.

अश्मक, (पु०) अश्म इव स्थिरः, इवार्थे कन् । पत्थरकी भांति स्थिर । एक ऋषिका नाम । दक्षिण दिशामें एक नगर.

अश्मगर्भ, (पु०) अश्मेव गर्भोऽस्य । मरकतमणि । पन्ना । मणिविशेष.

अश्मघ्न, (पु०) अश्मानं हन्ति (भिनत्ति) हन्+ड । पाषाणभेदक वृक्ष.

अश्मन्, (पु०) अश्नुते व्याप्नोति संहन्त्यनेन वा । कर्तरि करणे वा मनिन् । पर्वत । मेघ । पत्थर (न०) लोहा.

अश्मन्तक, (पु० न०) अश्मानं अन्तयति । चुल्हा । तृणविशेष । अम्लोट वृक्ष.

अश्मभाल, (न०) अश्मेव भाजयति चूर्णितं करोति । भज्+णिच्+अण् पृषो० जस्य लत्वम् । द्रव्यको चूर्ण करनेहारा हमामदस्ता (चट्टू) नामसे प्रसिद्ध लोहेका पात्र.

अश्मरी, (स्त्री०) अश्मानं राति-रा+क गौरा० ङीष् । मूत्रकृच्छ्र रोग । यह मूत्रद्वारमें पत्थरकी नाँई कठिन मांस रचता है । रोगविशेष । पथरीकी बीमारी.

अश्मरीघ्न, (पु०) अश्मरीं (मूत्रकृच्छ्रं) हन्ति-हन्+ट । जो पथरीकी बीमारीको दूर कर्ता है । वरुणवृक्ष.

अश्मसार, (पु० न०) अश्मनः सार इव । लोहा । ६ व० । जो लोहेके समान कठिन हो.

अश्र-स्र, (न०) अश्नुते नेत्रं कण्ठं वा । अश्+रक् । जो आंख वा गलेपर फैलजाता है । नेत्रजल । आंखका पानी । लोहू । आंसू.

अश्रान्त, (त्रि०) श्रम्+भावे क्त-न० त० । सन्तत । निरन्तर । लगातार । "कर्तरि क्तः" न थका हुआ (त्रि०).

अश्रि-श्री, (स्त्री०) अश्+क्रि । अस्त्रादिका अग्रभाग । घरआदिका कोण । कोण । धार । श्रीहीन । शोभारहित (स्त्री०).

अश्रु-स्रु, (पु०) अश्नुते व्याप्नोति नेत्रमदर्शनाय । अश् (अस्) क्रुन् । जो आंखमें भरजाताहै और इसीसे दीखता नहिं । चक्षुर्जल । आंखका पानी । आंसू.

अश्रुत, (त्रि०) श्रु+क्त-न० त० । अनाकर्णित । अनसुना । जो सुना नहिं गया.

अश्लील, (न०) श्रियं लाति गृह्णाति-ला+क रस्य लत्वम् । लज्जासम्पादिका ग्राम्यभाषा । लज्जा देनेहारी गाँवकी बोली । घृणा । देहाती जवान । गाली । गलौज.

अश्लेषा, (स्त्री०) श्लि+घञ्-न० त० । नक्षत्रविशेष । ९ मी तारा । इसके ५ तारे होतेहैं न० व० । न मिलाहुआ.

अश्व, (पु०) अश्+क्वन् । घोटक । घोडा.

अश्वकर्ण, (पु०) अश्वस्य कर्ण इव पत्रं अस्य । जिसका पत्ता घोडेके कानकी तरह हो । सालवृक्ष । घोडेका कान । जिसका कान घोडेके कानकी तरह हो.

अश्वखरज, (पु०) अश्वश्च खरी च, अश्वी च खरश्च वा ताभ्यां जायते पुंवद्भावः । खचरा । घोडेका भेद । "खराश्वज".

अश्वखुर, (पु०) अश्वस्य खुरमिव खुरं मूलं अस्य । जिसका पत्ता घोडेके खुरके समान है । अपराजिता लता.

अश्वघ्न, (पु०) अश्वं हन्ति-हन्+ठक्-उप-स० । करवीरका द्रख्त । इसके खानेसे घोडेका नाश होजाता है.

अश्वतर, (पु०) तनुरश्वः । अश्व+ तनुत्वे ष्टरच् । छोटा घोडा । जो गधेसे घोडीमें उत्पन्न हो । खचरा । सांपका भेद.

अश्वत्थ, न श्वश्चिरं शाल्मलिवृक्षादिवत् तिष्ठति स्था+क-पु० नि० । शाल्मली वृक्षादिके समान देरतक नहिं ठहरता । वृक्षविशेष । पीपल । गर्दभाण्डका वृक्ष । (देरतक न रहनेसे) देरतक न रहनेके कारण संसाररूप वृक्ष । "ऊर्ध्वमूलमधःशाखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम्" इति गीता.

अश्वत्थामन्, (पु०) अश्वस्य इव स्थाम वलं अस्य पृषो० स० । घोडेके समान बलवाला । कौरवोंका सेनानी द्रोण और कृपीका पुत्र.

अश्वपाल, (पु०) अश्वान् पालयति । पा+णिच्-लन् अण् घोटकरक्षक । घोडोंको पालनेहारा । ण्वुल् "अश्वमारक."

अश्ववाल, (पु०) अश्वस्य बालः, ६ त० अश्वकेश । घोडेका बाल.

अश्वमुख, (पु०) अश्वस्य मुखमिव मुखमस्य । जिसका मुमुख घोडेके समान हो । किन्नर देवताविशेष.

अश्वमेध, (पु०) अश्वो मेध्यते (हिंस्यते) अत्र । मेध्+घञ् । जिसमें घोडा मारा जाताहै । एक यज्ञ । (इसमें एक प्रकारके अच्छे घोडेको मन्त्रोंसे स्नान करना पत्र बांध, एक वर्षके लिये घूमनेको छोड देते हैं; जब वर्षावसानमें वह घोडा घरकोही लौट आताहै उसे कोई नहिं पकडता, तब उसे मारकर तिसकी वपाको होममें डालते हैं, उसीका नाम अश्वमेध होताहै).

अश्वमेधीय, (पु०) अश्वमेधाय हितः । छप्रत्ययः । अश्वमेधका घोडा.

अश्वयुज्, (स्त्री०) अश्वेन (हयमुखाकारेण) युज्यते । युज्+क्विप् । जिसका रूप घोडेकी नाँई हो । अस्सुकी पूर्णिमा । "मलर्थीयेऽपि अश्वयुज" इसी अर्थमें.

अश्वरोधक, (पु०) अश्वं रुणद्धि । रुध्+ण्वुल् । करवीरवृक्ष । घोडेको रोकनेहारा.

अश्ववार ह (पु०) अश्वं वारयति-चुरा० वृ+अण्-उप० स० । घोडेको रोकनेहारा वा कवूल करनेहारा । अश्वारोही । घोडेपर चढनेहारा । घुडचढा.

अश्वस्तन, (त्रि०) न श्वोभवः । श्वस्+घु -तुट्च । दूसरे दिनके लिये न रहनेहारा । एक दिनके निर्वाहके योग्य अन्नादि.

अश्वाभिधानी, (स्त्री०) अश्वोऽभिधीयतेऽभिधार्यतेऽनया । अभिधा+ल्युट् । जिस्से घोडा पकडा जाता है । घोडेके बांधनेकी रस्सी । "अश्वाभिधानीमादत्ते" श्रुतिः.

अश्वारि, (पु०) अश्वस्यारिः ६ त० । महिष । भैंसा.

अश्वारोह, (पु०) अश्वं आरोहति । रुह्+अण् । घोडेपर चढनेहारा । घुडचढेसे लडाई करनेहारा । "अश्वगंधा".

अश्विन्, (पु०) द्विव० अश्वाः सन्ति ययोः । इनि । जिनके घोडे हों । स्वर्गके वैद्य (हकीम) अश्विनीकुमार । सूर्यके वीर्यसे अश्विनीमें उत्पन्न हुए जौडे पुत्र.

अश्विनी, (स्त्री०) अश्व इवोत्तमाङ्गाकारोऽस्त्यस्य । जिसका सिर घोडेकी नाँई हो । "ङीप्" २७ तारोंमें १ म किन्नरी । संज्ञानाम सूर्यकी स्त्री.

अश्विनीकुमार, (पु०) द्विव० । अश्वीभूता संज्ञानाम्नी सूर्यपत्नी तस्यां अश्वरूपेण सूर्येण जातौ कुमारौ । घोडीरूप सूर्यकी स्त्रीमें (जिसका नाम संज्ञादेवी था) घोडेरूप सूर्यसे उत्पन्न हुए दो कुमार । स्वर्गके वैद्य (हकीम).

अश्वीय, (न०) अश्वानां समूहोऽश्वेभ्यो हितं वा छ (ईय) अश्वसमूह । अश्वहित (त्रि०) घोडेका हितकारी.

अश्वोरस्, (न०) अश्वानां उर इव (मुख्यं) अच् स० । मुख्य अश्व । अच्छा घोडा.

अष्, चमकना-अक० जाना, लेना भ्वा० उभ० सक० सेट् । अषति-ते । आषीत्.

अषडक्षीण, (त्रि०) न सन्ति षट् अक्षीणि (श्रोत्रेन्द्रियाणि) यत्र । ख (ईन) तीसरे जनके कानसे न सुनागया । दोनोंहीसे किया गया मन्त्रादि (सलाह वगैरह) दोनोंका मशवरह.

आषाढ-ड, (पु०) वैशाखसे तीसरा मास । हाड.

अषाढा-डा, (स्त्री०) उत्तराषाढा और पूर्वाषाढा दोनों नक्षत्र (तारे).

अष्टक, (न०) अष्टौ अध्यायाः परिमाणं अस्य । अष्टन्+कन् । पाणिनीका अष्टाध्यायी ग्रन्थ । ८ अध्यायोंका ऋग्वेदका प्रत्येक अंश (भाग) (इस नियमसे ऋग्वेदके ८ भाग हैं).

अष्टका, (स्त्री०) अश्नन्ति पितरोऽस्यां तिथौ-अश्+तकन् । सप्तमी आदि तीन दिन । पौष, माघ, फाल्गुनकी कृष्णाष्टमी।"अष्टका पितृदैवत्ये" इस नियमसे यहां इत्व नहिं होता.

अष्टन्, (त्रि०) वहु० । संख्याविशेष । आठ.

अष्टधा, (अव्य०) अष्ट प्रकार । आठ तरहसे.

अष्टधातु, (न०) अष्टौ धातवः । आठधातें । सोना । चांदी । तांबा । पीतल । कांसी । जिस्त । कली । लोहा.

अष्टपाद्-द, (पु०) अष्टौ पादा अस्य ब० वा अन्त्यलोपः । ङीपि पद्भावे-संज्ञायां कन्-ह्रस्वः । जिसके आठ पैर हों । मृगविशेष । एक किसमका हिरन । मकडीका जाल । शरभ.

अष्टमङ्गल, (पु०) अष्टसु स्थानेषु मङ्गलं अस्य । जिसके आठों स्थानों (छाती, चारों खुर, पूछ, मुख, और पीठके वाल) पर श्वेतरूपस्वरूप (चिट्टापन) मङ्गल हो ऐसे लक्षणोंवाला घोडा । आठ मंगलद्रव्योंका समाहार (योग) जैसाकि इस संसारमें आठ मंगलद्रव्य हैं, ब्राह्मण, गौ, अग्नि, सोना, घी, सूर्य, जल और राजा । (कइओंके मतमें) शेर, वैल, हाथी, कलसा, पंखा, माला, भेरी और दीपक.

अष्टमान, (न०) अष्टौ मुष्टयः मानं (परिमाणं) अस्य । जिसका माप आठ मुट्ठीभर हो । कुडवरूप (३२ तोलेभर) आठ मुट्ठीभर.

अष्टमी, (स्त्री०) अष्टानां पूरणी । आठोंको पूरण करनेहारी । १५ कलावाले चन्द्रमाकी नवीं कलाकी क्रिया । अपने नामकी तिथि.

अष्टमूर्ति, (पु०) अष्टौ भूम्यादयो मूर्तयोऽस्य । पृथिवी आदि जिसकी आठ मूर्ति हैं । पृथिवी, जल, तेज, वायु, आकाश, यष्टा (यज्ञ करनेहारा यजमान) सूर्य और चन्द्रमा, इसप्रकार आठ मूर्तिवाले पिनाकी (शिव).

अष्टलौहक, (न०) अष्टानां लौहानां (धातूनां) समाहारः । आठ धातुओंका समूह । सोना, चांदी, तामा, सीसक, वङ्ग, लोहा, और तेज लोहा, पीतल, यह आठ धातु हैं.

अष्टाकपाल, (पु०) अष्टसु कपालेषु (मृत्पात्रेषु) संस्कृतः पुरोडाशः । आठ मट्टीके पात्रोंमें शुद्ध किया गया चरु (घी आदि) । जिसके द्वारा यज्ञ किया जाता है । यज्ञ.

अष्टाङ्ग, (पु०) अष्टौ अङ्गानि यस्य । जिसके आठ अंग हों । योगविशेष । यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा और समाधि ये आठ योगके अंग है । इनका स्वरूप अपने २ शब्दके अर्थमें कहेंगे) । जानु (घुटने वा गोडे) पैर, हाथ, छाती, बुद्धि, सिर, वचन और दृष्टि (नजर) से किया गया प्रणाम है, जल, दूध, कुशाग्र, दही, घी, चावल, जौं और सिद्धार्थक (गोरीसरिओं) इस प्रकार आठ द्रव्योंसे बनाया गया पूजाका साधन अर्घ है.

अष्टादशन्, (त्रि०) वहु० अष्टाधिका दश, अष्टौ च दश चेति वा । आठसे जियादा दस वा आठ और दस १८ रह "पूरणे डट्" १८ संख्याको पूर्ण करनेहारा । अठारहवां.

अष्टादशाङ्ग, (पु०) अष्टादश अङ्गानि यत्र । जहां १८ अङ्ग हैं । (न०) वैद्यक शास्त्रमें प्रसिद्ध एक पाचन है.

अष्टावक्रः, (पु०) अष्टकृत्वः अष्टसु भागेषु वा वक्रः । आठ अंगोंमें टेढा । कहोडका पुत्र एक प्रसिद्ध ब्राह्मण.

अष्टिः, (स्त्री०) असते भूमौ क्षिप्यते, अस्+क्तिन् पृषो० षत्वम् । एक खेलनेका पास्सा । ६४ अक्षरोंका छन्द.

अष्ट्रा, (स्त्री०) अक्ष्यते चाल्यतेऽनया, अक्ष् करणे ष्ट्रन् । पशुओंके चलानेकी छडी वा चाबुक वा अङ्कुश.

अष्ठीला, (स्त्री०) अष्ठिस्तत्तुल्यकठिनाश्मानं-रा+क-रस्य लः दीर्घः । गोल पत्थर । बीमारी । चोट लगनेसे जो नील पडजाता है । वातसे उपजा रोग.

अस्, चमकना अक० । लेना और जाना सक० भ्वा० उभ० सेट् । असति-ते । आसीत्-ष्ट । "लावण्यमुत्पाद्य इवास" कुमारः.

अस्, होना-अदा०अक०पर०सेट् । अस्ति । अभूत् । बभूव.

अस्, फेंकना-दिवा०पर०सक०सेट् । अस्यति । आस्थत्.

असंस्कृत, (त्रि०) सम्+कृ+ख+सुट् न० त० । गर्भाधानादि संस्कारोंसे रहित । व्याकरणके संस्कारसे शून्य । अपशब्द । विगडाहुआ शब्द.

असकृत्, (अव्य०) न सकृत्-न०त० । वारवार.

असक्त, (त्रि०) सञ्ज्+क्त-न०त० । आसक्तिसे शून्य । फलकी अभिलाषासे रहित । "असक्तः सुखमन्वभूत्" इति रघुः । "कुर्याद्विद्वाँस्तथाऽसक्तः" गीता.

असङ्कुल, (त्रि०) न सङ्कुलः । परस्पराविरुद्ध । जो आपसमें विरुद्ध न हो । गांव आदिका विस्तीर्ण पथ । चौडी सडक.

असङ्क्रान्तमास, (पु०) न संक्रान्तः (राश्यन्तरं प्राप्तो रविर्यत्र चान्द्रमासे) जिस चान्द्रमासमें सूर्य दूसरी राशिमें नहिं जाता । संक्रमणशून्य । मलमास.

असङ्ख्य, (त्रि०) नास्ति संख्या इयत्ता यस्य । जिसकी संख्या न हो । परार्धसे लांघगया । बडी संख्यावाला.

असङ्ग, (पु०) सन्ज्+घञ् न० त० । सङ्गरहित । परमात्मा । महादेव । पुत्र, धन, और लोभवासनाको छोडनेहारा वैराग्य । न० ब० । विषयकी प्रीतिसे रहित (त्रि०).

असङ्गत, (त्रि०) सम्+गम्+क्त-न० त० । सङ्गतिरौचिती तच्छून्य । जो औचितीसे शून्य हो । अयुक्त । खिलाफ.

असङ्गति, (स्त्री०) सम्+गम्+क्तिन्-न० त० । संगतिविरह । संगति (मेल) का न होना । अर्थालङ्कारभेद.

असत्, (त्रि०) अस्+शतृ-न०त० । सत्से भिन्न । न होना । विश्वासबिन कियागया होम आदि । असाधु । "स्त्रियां ङीप्" । कुलटा । व्यभिचारिणी स्त्री.

असद्ग्रह, (पु०) असति (अविद्यमाने) वस्तुनि ग्रहः (आग्रहः) । न होनेवाली चीजमें हठ करना । बालकोंका हठ.

असपत्न, (त्रि०) नास्ति समानः पतिः यस्य । विरोधी सौतिन स्त्रीरहित । जो शत्रु न हो । मित्र.

असपिण्ड, (त्रि०) नास्ति समानः पिण्डः यस्य । जिसका पिण्ड (पितरोंके लिये एक चावलोंका गोला) के साथ संबंध नहीं । जिसका रुधिरसंबन्ध न हो.

असभ्य, (त्रि०) सभायां अर्हति-यत्-न० त० । जो सभाके लायक नहिं । स्त्रीवर्णन आदि । खल । नीच.

असमञ्जस, (न०) समञ्जसं (युक्तियुतं) न० त० । जो युक्तियुक्त नहिं । जो ठीक नहिं । असङ्गत । सगर राजाका बडा पुत्र (पु०).

असमद, (त्रि०) सह मदेन—गर्वेण समदः—कलहः स नास्ति यत्र । निर्विवाद । जिसमें कोई विवाद न हो.

असमय, (पु०) अवकृष्टार्थे-न० त० । दुष्ट काल । अयोग्य काल । बेमौका.

असमर्थ, (त्रि०) समर्थः शक्तः । न० त० । दुर्बल । अशक्त । कमजोर । नाताकत । असङ्गत । असमर्थ । समास.

असमवायिकारण, (न०) समवैति-सम+अव+इण्+णिनि । न० त० । न्यायमतमें समवायिकारण द्रव्य होता है, उस्से भिन्न द्रव्यमें रहनेहारा गुणादि कारण । जैसे घटका कपालद्वयसंयोगरूप गुण असमवायिकारण है । संयोगविभागादिका असमवायिकारण द्रव्यके आश्रित किया है.

असमीक्ष्यकारिन्, (त्रि०) समीक्ष्य विविच्य न करोतीति कृ+णिनि । विचार कियेविना काम करनेहारा । बे सोचे काम करनेहारा । मूर्ख.

असम्पत्ति, (त्रि०) न—सम्+पद्+क्तिन् । दुर्भाग्य । बदकिस्मत । गरीब । दुःखी.

असंप्रज्ञात, (त्रि०) न–सम्+प्र+ज्ञा+क्त । भली भांति न जाना गया वा पहिचाना गया । एक प्रकारकी समाधि (निर्विकल्प).

असम्बद्ध, (न०) सम्बद्धं परस्परमन्वितं न भवति । सम्+बन्ध+क्त-न० त० । अर्थको न जतानेहारा । सम्बन्धरहित वाक्य । जो आपसमें मिले नहिं.

असम्बद्धप्रलाप, (पु०) कर्म० । असंबद्धस्य असङ्गतस्य कथने । असङ्गत वचनका कहना । वेफायदा वोलना.

असम्बाध, (त्रि०) नास्ति संबाधा अन्योन्यं पीडा यत्र । पीडारहित । आपसमें घसडनेकी पीडासे रहित । विरला.

असंभव, (त्रि०) न+सम्+भू+अ । न होसकनेवाला । नामुमकिन । अभाव.

असम्मत, (त्रि०) सम्+मन्+क्त । नास्ति सम्मतो यस्मात् ५ ब० । अनभिमत । वरक्स.

असम्मुग्ध, (त्रि०) सम्+मुह+क्त-न० त० । जिसको सन्देह नहिं होता । पण्डितके अभिमानसे रहित.

असलं, (न०) अस्यते–क्षिप्यतेऽनेन अस्+कलच् । जिस्से फेंका जाता है । लोहा । अस्त्रको दूर करनेका मन्त्र.

असवर्ण, (त्रि०) न समानः वर्णः । भिन्नवर्ण(जाति)-वाला.

असहन, (पु०) न सहति । सह्+ल्यु-न० त० । शत्रु । क्षमाशून्य । न सहारनेहारा (त्रि०).

असाक्षात्, (अव्य०) जो नेत्रोंके सामने न हो । अप्रत्यक्ष । अव्यक्त.

असाक्षिन्, (त्रि०) न साक्षात् पश्यति । नेत्रोंसे न देखनेवाला । जो गवाह नहीं होसक्ता.

असाधनीय–असाध्य, (त्रि०) (न साधयितुं योग्यः साध्=अनीय०) न सिद्ध (पूरा) होनेयोग्य.

असाधारण, (त्रि०) न० त० । साधारणं सामान्यधर्मयुक्तं तद्भिन्नं । एकमेंही रहनेवाले धर्मवाला, विशेष । अधिक । न्यायमतमें सपक्ष और विपक्ष दोनोंमें न रहनेहारा दुष्ट हेतु (पु०) । जैसे वह्निको सिद्ध करनेहारा आकाशादि हेतु पक्ष पर्वत और उस्से भिन्न जलादिमें नहिं रहता, क्यों कि आकाशादि कहीं भी विद्यमान नहीं.

असाधु, (त्रि०) न० त० । साधुभिन्न । अधार्मिक । जिसका चरित्र अच्छा नहो । संस्कृतशब्दभिन्न अपभ्रंश.

असाध्य, (त्रि०) सिध्+णिच्-साधादेशः । यत्-न० त० । प्रतीकारानर्ह रोगभेद । वह रोग कि जिसका उपाय नहिं हो सक्ता । सिद्ध न होने योग्य । दुर्दम । शत्रु.

असिद्धि, (स्त्री०) सिध्+क्तिन्-न० त० । अनिष्पत्ति । ना वन पडना । अपाक । नतीजेके विना । न्यायमतमें आश्रयासिद्धि प्रभृति हेतुके तीन दोष.

असिधेनुका, (स्त्री०) असिर्धेनुरिव यस्याः वा कप् । छुरिका । छुरी.

असिपत्र–क, (पु०) असिरिव तीक्ष्णं पत्रं अस्य । इक्षु । गन्ना । तरवार । तरवारकी मियाँन । नरकविशेष.

असिहेति, (पु०) असिर्हेतिः साधनं अस्य । तरवारसे लडाई करनेहारा.

असु, (पु०) अस्यते क्षिप्यते-अस्+उन् । चित्त । दिल । "कर्तरि उन्" ताप । बीमारी । "करणे डन्" । प्राणादि पांच वायु.

असुख, (न०) विरोधे-न० त० । सुखका विरोधी दुःख । न० ब० । दुक्खी.

असुत, (त्रि०) नास्ति सुतः यस्य । पुत्रहीन । ved. न रस निकाला गया । न साफ किया गया (जैसा सोमरस).

असुतृप्, (त्रि०) न सुष्ठु तृप्नोति तृप्+क्विप् । जो अच्छी तरह तृप्त नहीं होता । न तृप्त होनेवाला । बडा लोभी । –पः । असुभिः–प्राणैः तृप्यति । प्राण लेकर तृप्त होता है । यमका भृत्य । मृत्युका दूत.

असुधारण, (न०) असूनां प्राणादिपञ्चवायुवृत्तीनां धारणं । जीवन.

असुर, (पु०) अस्-चमकना+उर । सूर्य । सूरज । "अस्यति क्षिपति देवान्+उर । देवोंका विरोधी दैत्य । रात्रि । रात (स्त्री०).

असुररिपु, (पु०) असुराणां रिपुः । दैत्योंके शत्रु विष्णु.

असूयक, (त्रि०) असु (असुन्) कण्ड्वादि+यकि+ण्वुल् । गुणोंमें दोष लगानेहारा.

असूया, (स्त्री०) असु असूल्-कण्ड्वादि-यक्+ण्वुल्) गुणोंमें दोष लगाना । निन्दा करना । द्वेष । हसद.

असूर्यम्पश्या, (स्त्री०) सूर्यं अपि न पश्यति । दृश्+खश्-मुम्च । अन्तःपुरकी स्त्री । रणवासकी स्त्रियें जिन्हें सूरजतकभी देखना नहिं मिलता.

असृज्, (न०) सृज्+क्विन् । अस्यते क्षिप्यत इतस्ततो नाडीभिः । जिसे नाडियें इधरउधर फेंकती हैं । रक्त । लोहू । कुङ्कुम । केसर । सोलहवां योग.

असृपाटः–टी, (पु० स्त्री०) असृजः पाटी परिपाटी पृ० । रुधिरकी नदी । लोहूका प्रवाह.

असृष्ट, (त्रि०) न+सृज्+क्त । न उत्पन्न किया गया । निरन्तर होनेवाला । न बिगडा हुआ.

असृष्टान्न, (त्रि०) न सृष्टं अन्नं येन । जो अन्नका विभाग नहीं करता.

असाम्प्रतम्, (अव्य०) न साम्प्रतं युक्तं न० त० । अयुक्त । नामुनासिब । कालान्तर । बेमौकह.

असार, (पु०) नास्ति सारो यस्य । सारहीन । एरण्डका वृक्ष न० त० । सारभिन्न न० ब० । निःसार "असारः खलु संसारः".

असि, (पु०) अस्-चमकना-फेंकना+इन् । खड्ग । तरवार.

असिक्नी, (स्त्री०) सी+क्त । सिता केशादौ शुभ्रा जरती तद्भिन्ना अवद्धा । क्नादेशः ङीप् च । अन्तःपुरचारिणी दासी । जनानेंमें जानेआनेवाली गोली । नदीविशेष.

असिगण्ड, (पु०) अस्यते क्षिप्यते । अस्+इन् । असिः क्षिप्तो गण्डो यत्र । जहां गाल रक्खी जाय । गालका सिहाना.

असित, (पु०) सितः शुभ्रः । विरोधे न० त० । शुभ्रवर्णभिन्न । काला रंग । शनिग्रह । कृष्णपक्ष (त्रि०) मुनिविशेष.

असेचनक, (त्रि०) न सिच्यते तृप्यते मनोऽत्र । सिच्+ल्युट्+कन् । बहुतही पियारा दर्शन जिसे देखनेसे मन नहिं रजता.

असेवन, (त्रि०) न+सेव+अन । सेवा न करनेवाला । बेपर्वाह. ।

असेवित, (त्रि.) न+सेव+क्त । न सेवा किया गया । छोड दियागया.

असेवितेश्वर–वा द्वार, (त्रि०) न सेवितः ईश्वरः न सेवितं ईश्वरस्य द्वारं येन । जो धनिओं अथवा बडे लोगोंके द्वारकी सेवा नही कर्ता.

असौष्ठव, (त्रि०) न सुष्ठु इत्यस्यभावः न+सुष्ठु+अण् जो सुन्दर वा रमणीय नहीं । जिसकी अच्छी हालत नहीं.

अस्त, (पु०) अस्यन्ते सूर्यकिरणाः यत्र । आधारे क्त । पश्चिमाचल । सूर्यास्त होनेका पर्वत । "कर्मणि क्त" फेंकागया । समाप्तहुआ । (त्रि०) मृत्यु । मौत । लग्नका ७ वां स्थान (न०).

अस्तम्, (अव्य०) अन्तर्धान । छिपजाना । नाश । तवाह होना.

अस्तमन, (न०) अन् वा भावेऽप् । सूर्य आदिका न दीखना (अस्त होना).

अस्ताचल, (पु०) अस्यन्ते किरणा यत्र । पश्चिमाचल । अस्तपर्वत.

अस्ति, (अव्य०) स्थिति । रहना । विद्यमानता । मौजूद.

अस्तु, (अव्य०) अनुज्ञा । ऐसाहो । पीडा । दर्द । असूया । वदनामी.

अस्त्यान, (न०) स्त्यै+क्त-न० त० । निन्दा । मलामत । भर्त्सन । निरादर । वेइजती । न इकट्ठाहुआ (त्रि०).

अस्त्र, (न०) अस्यते क्षिप्यते । अस्+ष्ट्रन् । फेंकनेयोग्य वाणआदि । "करणे ष्ट्रन्" धनुष् । तरवार आदि.

अस्त्रचिकित्सक, (पु०) अस्त्रस्य अस्त्रजन्यव्रणस्य चिकित्सकः । कित्+ण्वुल् । ६ त० । अस्त्रके घावकी चिकित्सा करनेहारा.

अस्त्रिन्, (त्रि०) अस्त्रं धनुरस्यास्ति–इन् । धनुष उठानेहारा । किसी किसमका अस्त्र धारण करनेहारा.

अस्थान, (न०) अप्राशस्त्ये न० त० । नामुनासिवजगह.

अस्थि, (न०) अस्यते-अस्+क्थिन् । मांसके वीच हाड नामसे प्रसिद्ध धातुभेद.

अस्थिधन्वन्, (पु०) अस्थि अस्थिमयं धनुरस्य । व० अनङ् समा० शिव । महादेव.

अस्थिपञ्जर, (पु०) अस्थि पञ्जर इव । हड्डिओंका पिञ्जरा.

अस्थिमालिन्, (पु०) अस्थिमयी मालाऽस्त्यस्य-इन् । शिवजी.

अस्नाविर, (त्रि०) नास्ति स्नावा शिरा यस्य-इरच् । शिरारहित । स्थूलशरीररहित । नाडीरहित.

अस्मद्, (त्रि०) अस्+मदिक् । आत्मवाची सर्वनाम । मैं । हम । देहाभिमानी जीव.

अस्मि, (अव्य०) मैं "त्वामस्मि वच्मि विदुषाम्" सा० दर्प०.

अस्मिता, (स्त्री०) अस्मि इत्यस्य भावः तल् । सांख्यशास्त्रमें प्रसिद्ध प्रधान और पुरुषको एक मान्नेका मोह, द्रष्टा और दर्शनको एकरूप समझना.

अस्रज, (न०) अस्रात् रुधिरात् रसपाकेन जायते । रसके पकनेपर जो लोहूसे उत्पन्न होताहै । मांस । गोश्त । दूसरेके आधीन.

अस्वतन्त्र, (त्रि०) न स्वस्य तन्त्रः अधीनः । पराधीन.

अस्वप्न, (पु०) नास्ति स्वप्नो निद्रा यस्य । जिसे नींद नहिं । देवता.

अस्वर्ग्य, (त्रि०)स्वर्गाय हितं-स्वर्ग+यत्-न० त० । स्वर्गके हेतु धर्मका विरोधी । निषिद्धाचरण । वुरा काम.

अस्वस्थ, (त्रि०) न स्वस्मिन् तिष्ठति, न+स्व+स्था+क । जो अपनेमें नहीं रहता । वेहाराम । व्याधित । बीमार.

अस्वाध्याय, (त्रि०) न स्वाध्यायो वेदाध्ययनं अस्य । वेदाध्ययनहीन (जो वेद नहिं पढता) । " न स्वाध्यायो यस्मिन्" जिस दिन पढना उहित नहिं । अष्टमीआदि.

अस्वामिक, (त्रि०) न स्वामी यस्य । स्वामिरहित । विनमालिक.

अस्वैरिन्, (पु०) स्वैरी स्वाधीनः-न० त० । परतन्त्र, पराधीन.

अह्, जाना-आत्म० भ्वा० सक० इदित्-सेट् । अंहते । आंहिष्ट.

अह्, चमकना । चुरा० इदित्-उभ० अक० सेट् । अंहयति-ते । आञ्जिहत्-त.

अह, (अव्य०) प्रशंसा । तारीफ । क्षेपण । फेंकना । रोकना.

अहं, (अव्य०) मैं । अहंकार । आत्मसम्बन्धी अभिमान.

अहंयु, (त्रि०) अहं, अहंकारोस्त्यस्य । अहं+यु । अहंकारी.

अहंकार, (पु०) अहं इति क्रियतेऽनेन । कृ+घञ् । अभिमान । गरूर.

अहत, (न०) हन+क्त-न०त० । नवाम्बर । नया कपडा । बेजर्ब । अनाहत । वगैर चोटके.

अहन्, (न०) न जहाति न त्यजति सर्वथा परिवर्तमानत्वात् न+हा+कनिन् । सदा घूमता रहताहै । दिन.

अहमहमिका, (स्त्री०) अहं अहं शब्दोऽस्त्यत्र । वीप्सायां द्वित्वं ठन्-न टिलोपः । अन्योन्यात्मस्तुति । अपनी प्रशंसा करनी । मैंही सबमें बडा हूं ऐसा कहना.

अहम्पूर्विका, (स्त्री०) अहं पूर्वोऽहं पूर्वं इत्यभिधानं यत्र । लडाईमें युद्ध करनेहारे उत्साहपूर्वक कहतेहैं कि मैं पहिले जाऊंगा मैंही पहिले जाऊंगा । बढ बढ कर लडना.

अहम्मति, (स्त्री०) अहमित्याकारा मतिः ज्ञानं । मन्+क्तिन् । अविद्या । औरमें औरके धर्मको दिखानेहारा अज्ञान.

अहर्गण, (पु०) अह्नां गणः समूहः । दिनोंका समूह । ३० दिनका मास.

अहर्दिव, (न०) अहश्च दिवा च । समा०द्वं० । प्रतिदिन । रोजमर्रा.

अहर्मुख, (पु०) अह्नो मुखं आदिभागः । दिनका पहला भाग । प्रत्यूष । प्रातःकाल । सवेर.

अहल्लिकः, अहनि लीयते, ली+ड+निपातः । संज्ञायां कन् । शव । मुर्दा । मृतक शरीर । Ved. बहुत बोलनेवाला.

अहल्य, (त्रि०) न हलाय भवति । हलमें न जोता गया । -ल्यः (पु०) । एकनगरका नाम ।-ल्या (स्त्री) । गौतमऋषिकी स्त्रीका नाम.

अहस्कर-अहस्पति, (पु०) अहः करोति । कृ+ट । कस्कादित्वात् सत्वम् । दिवाकर । सूर्य । सूरज । आकका वृक्ष.

अहह, (अव्य०) सम्बोधन । आश्चर्य । खेद । क्लेशकर्ष.

अहार्य, (पु०) हृ+ण्यत् । न० त० । पर्वत । जो चुराया न जाय । जो तोडा न जाय (त्रि०).

अहि, (पु०) आहन्ति । आ+हन्+डिन्-टिलोपः आङो ह्रस्वश्च । सांप । वृत्रनामदैत्य । सूर्य । सीसक । राहु । मुसाफिर । नीच । फसील । अश्लेषा नक्षत्र.

अहिंसा, (त्रि०) न हिनस्ति । हिन्+शीलार्थे चानश् न० त० । मन, बाणी और शरीरसे दूसरेको पीडा न पहुंचाना । शास्त्रविरुद्ध जीवोंको पीडा न देना.

अहिजित्, (पु०) अहिं सर्पं वृत्रासुरं वा जितवान् । जि+क्विप् तुक्च । सांप वा वृत्रासुरको जीतनेहारा । विष्णु । इन्द्र.

अहित, (पु०) न० त० । शत्रु । जो हितकारी न हो (त्रि०) । बीमारीमें रोकी गई खुराक । अमङ्गल.

अहितुण्डिक, (पु०) अहेस्तुण्डं मुखं तेन दीव्यति । ठन् । सांप पकडनेहारा । सांपसे खेलनेहारा.

अहिफेन, (न०) (पु०) अहेः फेनः गरलं इव तीक्ष्णगुणत्वात् । जो सांपकी झागके समान हो । अफीम.

अहिबुध्न, (पु०) अहेरिव बुध्नो ग्रीवा यस्य । शिव । चन्द्रमा । रुद्रविशेष । उत्तराभाद्रपद नक्षत्र.

अहिभुज्, (पु०) अहिं भुङ्क्ते-क्विप् । गरुड । मोर । नेउला.

अहिलता, (स्त्री०) अहिलोकस्य पातालस्य लता । शाक० त० । ताम्बूली । पानकी बेल.

अहिविद्विष्, (पु०) अहिं सर्पं वृत्रासुरं वा द्विष्टवान् । द्विष् भूते क्विप् । गरुड । इन्द्र । मोर । नेवला । विष्णु.

अहीरणि, (पु०) अहीन् ईरयति दूरीकरोति । ईर्+अनि । द्विमुखसर्प । दों मुहवाला सांप । (इसके देखनेसे दूसरे सांप भाग जातेहैं).

अहुत, (पु०) नास्ति हुतं हवनं यत्र । जहां हवन नहीं कियागया । धर्मका साधन होनेपरभी होमरहित वेदपाठ । ध्यानयोग । (न०) ब्रह्मयज्ञ । (त्रि०) न बुलाया गया.

अहैतुक, (त्रि०) हेतुत आगतं-ठञ् न० त० । फलाभिसन्धानरहित । फलकी इच्छाके बिना । बिनामतलब । कापट्यरहित । कपटके बिना । छलबिना.

अहो, (अव्य०) शोक । करुणा । धिक्कार । विषाद । रंज । संबोधन । दया । निन्दा । विस्मय । हैरानहोना । प्रशंसा । तारीफ करना । असूया । इल्जाम । वितर्क । हिकारत.

अहोवत, (अव्य०) दया । श्रम । मेहर्बानी । थकाव । शोकको बोधन करनेहारा संबोधन.

अहोरात्र, (पु०) अहश्च रात्रिश्च । टच्स० । दिनरात.

अह्नाय, (अव्य०) शीघ्र । जल्दी.

अह्रस्व, (त्रि०) न०ह्रस्वः । न० त० । दीर्घ । लम्बा । न छोटा.

आ

आ, (अव्यय) वर्णमालाका दूसरा स्वर । अनुकम्पा । दया । वाक्य । समुच्चय । मेल । अङ्गीकार । थोडा । सीमा । हद्द । व्याप्ति । अवधिसे और तक । वाक्य और स्मरणसे भिन्न यह ङित् होता है । (वाक्य) आ एवं मन्यसे । (स्मरण) आ एवं किल तत् । क्रिया वा संज्ञावाचक शब्दोंके पहिले आनेसे यह निकट, सामने चारों ओरसे, चारों ओर इत्यादि अर्थको प्रकाश कर्ताहै । वेदमें सप्तम्यन्त शब्दके पहिले आ हुआ यह में, और, इत्यादि अर्थका बोधक है । हां । (पु०) महादेव.

आकम्पित, (त्रि०) आ+कम्प्-चलना-कर्तरि क्त । कम्पयुक्त । कांपताहुआ । थोडासा कांपगया । चलाहुआ । लोभको प्राप्त हुआ.

आकर, (पु०) आकुर्वन्ति संघीभूय कुर्वन्ति व्यवहारमत्र । आ+कृ+घ । समूह । श्रेष्ठ । अच्छा । आकिर्यन्ते धातवोऽत्र कॄ+अप् । रत्नआदिके निकलनेका स्थान । कान.

आकष, (पु०) आकृष्यते विषयान्तरतोऽनेन । आ+कृष्+घञ् । पास्सा । जूआ । इन्द्रिय । "भावे घञ्" खेंचना । " आधारे घञ् " निकषोपल । चमकपत्थर । कसौटी.

आकर्षणी, (स्त्री०) आकृष्यतेऽनया । आ+कृष्+ल्युट्+ङीप् । ऊंचे स्थित फूल आदिके झाडनेकी एक लाठी । सिद्धि.

आकर्षिक, (पु०) आकर्षति सन्निकृष्टस्थं लौहं । आ+कृष्+ण्वुल् । चुम्बक नामसे प्रसिद्ध अयस्कान्त । खेंचनेहारा (त्रि०).

आकलन, (न०) आ+कल्+ल्युट् । इच्छा । गिनती । तालाशकरना । बांधना । सोचना । चाहना.

आकल्प, (पु०) आ+कृप्+णिच्+घञ् । वेश । रचना । भूषण । कल्पपर्यन्त । (अव्य०) "आकल्पं नरकं भुङ्क्ते" इति स्मृतिः.

आकल्पक, (पु०) आकल्पयति अन्यस्यान्यथात्वं कल्पयति । आ+कृप्+णिच्+ण्वुल् । अज्ञान । चाव । खुशी । हर्ष.

आकस्मिक, (त्रि०) अकस्मात् (अव्य०) कारणं विना भवः विनयादिगणः+ठक् टिलोपः । अचानक हो गया । न खयाल कियागया । न पहिले देखा गया.

आकाङ्क्षा, (स्त्री०) आ+काङ्क्ष+अङ् । अभिलाष । चाह । न्यायमतमें वाक्यार्थज्ञानका कारण । "जिस पदके विना जिस पदका सम्बन्ध न हो"वह पद । सम्बन्ध । खाहिश.

आकाय, (पु०) आचीयते यस्मिन् । आ+चि+कर्मणि घञ् चितौ कुत्वं । निवास । घर । मसानकी आग.

आकार, (पु०) आ+कृ+घञ् । मूर्ति । मनका अभिप्राय । स्वरूप.

आकारगुप्ती, (स्त्री०) गुप्+क्तिन् । आकारस्य हृद्गतभावस्य गुप्तिर्गोपनं । अपने भावको छिपाना । स्वरूपका छिपाना.

आकारण, (न० स्त्री०) आ+कृ+णिच्+ल्युट्, युच् वा । बुलाना.

आकालिक, (त्रि०) अकाले भवं ठञ् । विना समय उत्पन्न हुई वस्तु । शीघ्र नाश होनेहारा । बिजुरी (स्त्री०).

आकाश, (पु०) (न०) आकाशन्ते सूर्यादयोऽत्र । जहां सूर्य आदि चमकते हैं । आस्मान । गगन । ५ वां भूत.

आकाशदीप, (पु०) आकाशे दीयमानो दीपः । शा० क० । कार्तिक मासमें विष्णुकी प्रीतिके लिये आकाशमें चमकायागया दीवा.

आकाशवल्ली, (स्त्री०) आकाशस्य वल्ली शाखेव-अत्युच्चशिखत्वात् । बहुत ऊंचीहोनेसे मानों आकाशकी डाली है । अमरवेल.

आकाशवाणी, (स्त्री०) आकाशे भवा वणी । आकाशकी वाणी । देवताकी आवाज । शरीरके विना आवाज । अदृश्यपुरुषकी आवाज.

आकीर्ण, (त्रि०) आ+कृ+क्त । व्याप्त । फैलाहुआ । विक्षिप्त । फेंकागया.

आकुञ्चन, (न०) आ+कुच्+ल्युट् । संकोच । सिकोडना । फैलेहुएको इकट्ठा करलेना.

आकुल, (त्रि०) आ+कुल्+क । व्याकुल । घबरायाहुआ.

आकूत, (न०) आ+कू+भावे क्त । आशय । अभिप्राय । मतलब.

आकृति, (स्त्री०) आक्रियते व्यज्यते जातिरनया । करणे क्तिन् । आकार । शकल । जाति । रूप.

आकृतिच्छत्रा, (स्त्री०) घोषा नामसे प्रसिद्ध घोषातकीलता.

आकेकरा, (स्त्री०) आके अन्तिके कीर्यते-कृ+कर्मणि अप् । एकप्रकारकी दृष्टि जो थोडीसी आंखके कोनकी ओर फैलायी जाय और आधी बंद हो.

आक्रन्द, (पु०) आ+क्रन्द्+घञ् । बडी ऊंचे रोना । चिल्लाना.

आक्रम, (पु०) आ+क्रम्+घञ्-अवृद्धिः । चढाई करना । जोरसे दबाना । "आक्रमण" इसी अर्थमें.

आक्रीड, (पु०) आक्रीडत्यत्र । आ+क्रीड्+घञ् । क्रीडास्थान । खेल वा विलास करनेकी जगह । बाग आदि.

आक्रोश, (पु०) आ+क्रुश्+घञ् । विरुद्ध चिन्तन । निन्दा करना । शाप । पुकारना । चिल्लाना । कसम । गाली.

आक्षद्यूतिक, (न०) अक्षद्यूतेन-पाशक्रीडया निर्वृत्तं ठक् । पासा खेलनेसे उत्पन्न हुआ विरोध.

आक्षपाटिक, (पु०) अक्षपटे क्रीडास्थाने व्यवहारस्थाने वा नियुक्तः ठक् । अक्षदर्शक । पास्सेकी खेल देखनेहारा । जूएघरका हाकिम । व्यवहारका मालिक । न्यायविचारक.

आक्षार, (पु०) आ+क्षर्+णिच्-घञ् । अगम्यागमन वा अगम्यगमनसंबंधी पुरुष वा स्त्रीका दोष । परपुरुष वा स्त्रीके साथ सम्भोग करनेका दोष.

आक्षिक, (त्रि०)-की (स्त्री) अक्षेण दीव्यति जयति जितं वा-अक्ष+ठक् । पास्सोंसे खेलनेवाला । चौपट खेलनेवाला । द्यूत (जूए) के साथ संबंध रखनेवाला.

आक्षिप्, तु० ड० । फेंकना । टुकडे २ करडालना । बीचमें रोक लेना । क्षिपति । चिक्षेप । अक्षेप्सीत्.

आक्षीव, (पु०) आ+क्षीव्+णिच् अच् । सोहाञ्जनेका वृक्ष । आ+क्षीव्+क्त-नि० । मत्त । मतवारा । मस्त.

आक्षेप, (पु०) आ+क्षिप्+घञ् । झिडकना । कलंक लगाना । खेंचना । धनादिकी इमानत रखना । अर्थालङ्कारभेद । फेंकदेना । उठालेना । निन्दा । दोष । गाली । तानालगाना.

आक्षोड, आ+अक्ष्+ओड-स्वार्थेऽण् । अखरोटका वृक्ष.

आख, (पु०) आखनत्यनेन । आ+खन्+ड । खनित्र । कुल्हाडी.

आखण्डल, (पु०) आखण्डयति भेदयति पर्वतान् । आ+खडि+डलच्-डस्य नेलम् । पर्वतोंको फाडनेहारा । इन्द्रदेव । देवराज.

आखनिक, (पु०) आ+खन्+कर्तरि इकन् । चोर । सूअर । मूषिक । मूसा । चूआ । खोदनेवाला (त्रि०).

आखु, (पु०) आ+खन्+डु । मूसा । चोर । सूअर । सूम.

आखुकर्णी, (स्त्री०) आखोः मूषिकस्य कर्ण इव पर्णमस्याः । जिस्के पत्ते मूसेके कानकी तरह हों । उन्दरकाणी नामसे प्रसिद्ध एक वेल.

आखुग, (पु०) आखुना मूषिकेण गच्छति । गम्+ड । मूषिकवाहन गणेश । गणेशजी । जिनकी सवारी मूसेपर है.

आखुभुज्, (पु०) आखुं भुङ्क्ते । भुज्+क्विन् । मूसेको खानेहारा बिडाल (बिल्ला).

आखुविषहा, (स्त्री०) आखुविषं–मूषिकविषं हन्ति । हन्+ड । मूसेके विषको दूर करनेहारा देवताड वृक्ष । देवतालीलता । घासविशेष.

आखेट, (पु०) आखिद्यन्ते त्रास्यन्ते प्राणिनोऽत्र । आ+खिट्+घञ् । प्राणिओंको भय देनेहारी मृगया । शिकार । "आखेटक".

आखेटिक, (पु०) आखेटे कुशलः ठक् । शिकारी । शिकार खेलनेमें चतुर । भयानक । डरानेहारा.

आखोट, (पु०) आखः खनित्रं इव उटानि पर्णानि अस्य । जिसके पत्ते रंबेकी तरह हों । आखरोटका दरख्त.

आख्या, (स्त्री०) आख्यायतेऽनया । आ+ख्या+अङ् । जिस्से प्रसिद्ध हो । संज्ञा । नाम । इसम । "भावे अङ्" कहना.

आख्यात, (त्रि०) आ+ख्या+कर्मणि क्त । कथित । कहा गया । वर्णन किया गया । व्याकरणमें प्रसिद्ध तिङन्तपद । व्याकरणमें धातुओंके आगे तिङ् प्रत्यय लगानेसे जो पद प्रकाशित होते हैं । "क्रियाप्रधानमाख्यातं" इति यास्कः.

आख्यातृ, (त्रि०) आ+ख्या-तृच् । कहनेहारा । पढानेहारा । सिखानेहारा । उपदेश करनेहारा । "आख्यातोपयोगे" पाणिनि.

आख्यान, (न०) आ+ख्या+भावे ल्युट् । प्रसिद्ध इतिहास (तारीख) का कहना (जैसे अमृत मथनेका उपाख्यान) । बोलना । समझाना । कथा । कहानी.

आख्यायिका, (स्त्री०) आ+ख्या+ण्वुल् । कापि अत इत्वम् । प्रसिद्ध कहानी । कथा । गद्यपद्यसे मिली हुई रचना । कहनेहारी (त्रि०) कथा । जैसे कादम्बरी है । आख्यायिका । हर्षचरित.

आगत, (त्रि०) आ+गम्+क्त । आयाहुआ । उपस्थित । हाजिर । पहुंचाहुआ । "भावे क्त" आगमन आना (न०).

आगन्तु, (त्रि०) आ+गम्+तुन् । नियमसे न रहनेहारा अतिथि । आगमनशील । आयाहुआ "स्वार्थे कन्" आगन्तुक । नया आयाहुआ । मिहमान । परौना.

आगम, (न० पु०) आ+गम्+घञ् । आना । शास्त्र । तन्त्रशास्त्र । वेदादिशास्त्र । पत्रलेख्य । सन्दिग्ध अर्थको सिद्ध करनेहारा व्यवहार । शिवजीके मुखसे आया, पार्वतीके कानमें गया, विष्णुजीने मान लिया इसी लिये आगम हुआ । 'आगतं शिववक्त्रेभ्यो गतं च गिरिजाश्रुतौ । मतं च वासुदेवस्य तस्मादागममुच्यते".

आगम्, भ्वा० प० । आना । पहुंचना । लाभ करना । गच्छति । जगाम । अगमत्.

आगवीन, (त्रि०) गोः प्रत्यर्पणपर्यन्तं यः कर्म करोति स आगवीनः आ+गो+ख । गौओंके लौटानेतक काम करनेवाला.

आगस्, (न०) इण् (आग-अपराध करना) उणा० इण्+असुन् । आगादेशः । अपराध । गुनाह । पाप । चूक । भूल । सजा । दण्ड.

आगस्ती, (स्त्री०) अगस्त्यस्य इयं अण् यलोपः । अगस्त्यवाली दक्षिण दिशा.

आगस्त्य, (त्रि०) अगस्त्यस्य इदं, यञ्–यलोपः । दक्षिण दिशाका भाग.

आगाध, (त्रि०) अगाध एव । स्वार्थे अण् । बडा गहरा । अतल । कठिनतासे पाया जानेवाला.

आगामिन्, (त्रि०) आ+गम्+णिन् वा ह्रस्वः । अतिथि । परदेसी । भविष्यत्काल । आनेवाला समय । आनेवाले समयका अगला । पढालिखा.

आगार, (न०) अग्-तिरछे होकर चलना+घञ् । आगं ऋच्छति । ऋ+अण्-उपा० स० । गृह । घर । छिपा हुआ स्थान.

आगू, (स्त्री०) आ+गम्+क्विप् । मलोपे ऊकारादेशः । यह अवश्य करना है इस प्रकार अङ्गीकार । प्रतिज्ञा । इकरार करना.

आग्नापौष्ण, (त्रि०) अग्नापूषणौ देवते अस्य+अण् । अग्नि और पूषा देवताकी भेट चरु (odlaliau).

आग्नावैष्णव, (त्रि०) अग्नाविष्णू देवते अस्य । अग्नि और विष्णु देवताकी भेट वा चरु । इसी नामका एक वैदिक अध्याय वा अनुवाक.

आग्निक, (त्रि०)–की (स्त्री०) अग्निपदे दीयते–कार्यं वा+अण् । अग्निके स्थानपर किया गया कार्य वा वहीं दिया गया कुछभी.

आग्निमारुत, (त्रि०) अग्नामरुतौ देवते अस्य+अण् । अग्नि और मरुत देवताकी भेट वा चरु.

आग्नीध्र, (न०) अग्निं इन्धे अग्नीत् तस्य शरणम् । होम करनेहारेका घर । मनुवंशमें प्रियव्रतका ज्येष्ठ पुत्र.

आग्नेय, (न०) अग्निर्देवतास्यस्य अण् । जिसकी देवता अग्नि हो । सुवर्ण । सोना । घी । लालरंग । वह्निपुराण (महापुराण) । आगवाला । एक नगर । अगस्त्यमुनि । (पु०) । "आग्नेयी" (स्त्री०) पूर्व और दक्षिणाके मध्यकी दिशा । अग्निकी स्त्री स्वाहा । प्रतिपदा । अग्निदेवताका मन्त्र.

आग्न्याधानिकी, (स्त्री०) अग्न्याधानस्य यज्ञस्य दक्षिणा+ठञ् । ब्राह्मणोंको देने योग्य धन । यज्ञकी दक्षिणा.

आग्रभोजनिक, (पु०) अग्रभोजनं नियतं दीयते अस्मै+ठञ् । वह ब्राह्मण जिसे सबसे पहिले भोजन दिया जाताहै । सबसे आगे बैठनेवाला ब्राह्मण.

आग्रयण, (न०) अग्रे अयनं भोजनं शस्यादेर्येन कर्मणा पृ० ह्रस्वदीर्घव्यत्ययः । नये फलादिका भोजन करनेसे पहिले एक प्रकारका यज्ञ । एक अग्निका स्वरूप । नया अन्न.

आग्रहायणिक, (पु०) आग्रहायणी पौर्णमासी यस्मिन् मासे-ठक् । मार्गशिर (मग्गसिर) का महिना । पूर्णिमावाला मास । "आग्रहायण" इसी अर्थमें होताहै.

आग्रहायणी, (स्त्री०) आग्रहायण्या मृगशिरसा नक्षत्रेण युक्ता पौर्णमासी-अण्-ङीप् । मृगशिर नक्षत्रवाली पूर्णिमा । मार्गशीर्ष (मग्गसिर) मासकी पौर्णमासी.

आग्रहारिक, (पु०) अग्रहारोऽग्रभागो नियतं दीयतेऽस्मै ठक् । नियमसे जिसे पहिला भाग दिया जाय । पहिले भाग देने योग्य ब्राह्मण । श्रेष्ठ ब्राह्मण । उत्तमब्राह्मण.

आघट्ट, (पु०) आघट्टयति रोगान्-ण्वुल् । लालरंग । अपामार्गवृक्ष.

आघात, (पु०) आ+हन्+घञ् । आहनन । चोट । "आधारे घञ्" वधस्थान । मारनेकी जगह । कतलघर । कसाईखाना.

आघात, (पु०) आ+हन्+घञ् । चोट । परस्पर चोट करना.

आघार, (पु०) आ+घृ+कर्मणि घञ् । घी । "भावे घञ्" होम आदि । मन्त्रविशेषसे देवताविशेषको घी देना.

आघूर्णित, (त्रि०) आ+घूर्ण+क्त । चालित । हिलायागया । भ्रामित । घुमायागया.

आघृणि, (त्रि०) आगतो घृणिर्दीप्तिरस्य । तेजसे चमकनेहारा । प्रकाशमान । बहुतसे धनवाला । सूर्य (पु०).

आघ्राण, (न०) आ+घ्रा+क्त । गन्धग्रहण । गन्धका लेना । संघूना । रजमा.

आघ्रात-ण, (त्रि०) आ+घ्रा+क्त-वा तस्य नत्वम् । गन्ध लियागया । सूंघागया । छूआगया । आक्रान्त । दबायागया । लांघगया.

आङ्गारम्, (न०) अङ्गाराणां समूहः अण् । अङ्गारोंका समूह । बहुतसे जलतेहुए कोइले.

आङ्गिक, (त्रि०) अङ्गेन अङ्गचालनेन निर्वृत्तं-ठक् । भावको प्रकाशकरनेहारे अङ्गोंसे सिद्ध हुए भौंका चढाना आदि । अंगोंसे उपजा । मृदङ्ग । बाजा । शरीरका अभिनय । "आङ्गिकोऽभिनयः".

आङ्गिरस, (पु०) अङ्गिरसो मुनेरपत्यं अण् । अङ्गिराका पुत्र । बृहस्पति.

आङ्गूष, (पु०) अङ्गूष-स्वार्थे अण् । प्रशंसा । स्तुति । वैदिक गीत । गीत.

आचक्ष्, अ० आ० । बोलना । प्रसिद्धकरना । सिखलाना । बतलाना । वर्णन करना । आचष्टे । आचक्षे । आचष्ट.

आचतुरम्, (अव्य०) चतुःपर्यन्तं+अच् समा० । चौथी पीढीतक । चारतक.

आचम्, भ्वा० प० । आचमन करना । चाटना । तनिकसा जल पीना । आचामति । चचाम । अचमीत्.

आचमन, (न०) आ+चम्+भावे ल्युट् । विधिसे जल पीना । मुख आदिका धोना । खानेके पीछे मुखमें जल डालना । विहित कर्म करनेसे प्रथम देहशुद्धिके लिये तीनवार हाथपर जलपान करना । भोजनसे पहिले जल पीना.

आचमनक, (न०) आचमनस्य मुखप्रक्षालनस्य कं जलं अत्र । जहां मुह धोनेका पानी पडे । थूकनेका पात्र । पीकदान.

आचमनीय, (न०) आचमनाय मुखप्रक्षालनाय दीयते । वृद्धात् छ । आ+चम्+करणे अनीयर् वा । मुह धोनेका पानी.

आचान्त, (त्रि०) आ+चम्+क्त । आचमन किया गया । जल पीयागया.

आचाम, (पु०) चम्+भावे घञ् । आचमन करना । पानी चूसना.

आचार, (पु०) आ+चर्+भावे घञ् । चरित्र । चालचलन । मनु आदिसे कहागया स्नान आचमन आदि व्यवहार.

आचार्य, (पु०) आ+चर्+ण्यत् । जो "शिष्यका यज्ञोपवीत कर कल्प और उपनिषद्सहित वेद पढावे" वेदका पढानेहारा । मतसंस्थापन करनेहारा शंकराचार्य आदि । "स्त्रियां टाप्" आचार्या । आचार्यकी स्त्री आचार्यानी.

आचार्यक, (पु०) आचार्यस्य कर्म भावो वा-वुञ्। आचार्यका काम। आचार्यपना। आचार्यके करनेलायक काम.

आचित, (त्रि०) आ+चि+क्त। संगृहीत। इकट्ठा कियागया। वाक्य। वचन। फैलाहुआ। एक रथका भार २५ मन.

आच्छन्न, (त्रि०) आ+छद्+क्त। आवृत। ढकाहुआ। रक्खाहुआ।

आच्छाद, (पु०) आच्छाद्यतेऽनेन। छद्+णिच्+करणे घञ्। वस्त्र। कपडा.

आच्छादन, (न०) आ+छद्+णिच्+ल्युट्। वस्त्र। कपडा। चोगा। पडदा.

आच्छिन्न, (त्रि०) आ+छिद्+बलाद्ग्रहणे क्त। बलसे पकडागया। काटागया। जोरसे खोयाहुआ.

आच्छुरित, (न०) आ+छुर्+क्त। शब्दसहित हसना। नखोंको घिसना। खिडखिडाकर हसना। नखूनोंका शब्द.

आज, (न०) आज्यतेऽनेन। आ+अज्+घञर्थे क। घी। "अजस्येदं अण्"। बकरेका मांस आदि.

आजक, (न०) अजानां समूहः वुञ्। छागसमूह। बकरोंका झुण्ड.

आजि, (स्त्री०) अजन्ति अस्यां। अज्+इन्-न वीभावः। समरभूमि। संग्रामभूमि। लडाईकी जगह। गाली। झिडक.

आजीव, (पु) आजीव्यतेऽनेन। आजीव्+करणे घञ्। आजीविका। जीनेका निर्वाह। "आजीविका" इसी अर्थमें.

आजू, (स्त्री०) आजवति। आ+जु+क्विप् दीर्घः। तनखाहबिना काम करनेहारा.

आज्ञा, (स्त्री०) आ+ज्ञा+अङ्। निदेश। ऐसा करो ऐसा शासन। हुकम। ज्योतिषप्रसिद्ध लग्नसे १० वां स्थान.

आज्य, (न०) आ अज्यते। अन्ज्+क्यप्-नलोपः। घृत। घी.

आज्यभाग, (पु०) आज्यस्य भागः। होम। आहुतिविशेष। घी.

आञ्जनेय, (पु०) अञ्जनाया अपत्यं-ढक्। हनुमान्.

आटविक, (न०) अटव्यां चरति, भवो वा ठक्। जंगली सेना। जंगली.

आटोप, (पु०) आ+तुप्+घञ्-पृषो० टत्वम्। अहंकार। वेग। जोर। वायुसे उत्पन्नहुई पेटकी बीमारी.

आडम्बर, (पु०) आ+डवि-अरन्+फेकना। हर्ष। खुशी। अहंकार। बाजेकी आवाज। आरम्भ। वेग। आंखके रोम। बादलका गर्जना। बाजा। गुस्सा। हाथीका शब्द.

आढक, (पु० न०) आढौकते-आ+ढौक्+घञ्-पृषो०। चारों ओरसे दस अंगुलका माप। चारप्रस्थ परिमाण। चारसेर। पडोप्पा। अनाज गिननेका पात्र.

आढकी, (स्त्री०) आढौकते-अच्-पृषो०। अहरनाम्नी शमीका धान.

आढ्य, (त्रि०) आ+ध्यै+क-पृषो०। युक्त। मिलाहुआ। बडा धनी.

आणक, (त्रि०) अणक एव स्वार्थे अण्। नीच। छोटा।-कं। स्त्रीपुरुषकी क्रीडा.

आणि, (पु०) अण्-इण्-स्त्रियां वा ङीप्। रथचक्रके आगेका कील। नोक। हद्द। कोना.

आतङ्क, (पु०) आ+तकि+घञ्। रोग। सन्ताप। सन्देह। ढोलका शब्द। भय। डर.

आतञ्चन, (न०) आ+अञ्च्+ल्युट्। वेग। खाक करना। जलाना। नाश। फेंकना। उपद्रव। मुसीबत.

आतत, (त्रि०) आ+तन्+क्त। फैला दिया गया। खिलार दिया गया.

आततायिन्, (त्रि०) आततेन विस्तीर्णेन शस्त्रादिना अयितुं शीलं अस्य। अय्+णिनि। शस्त्र उठाकर जिसका मारनेका स्वभाव है। मारनेको तयारहुआ। महापापी। छ प्रकारके महापराधी-आग लगानेहारा, विषदेनेहारा, शस्त्रवाला, धनका चोर, खेतका चोर, और स्त्रीका चोर.

आतन्, तना०उ०। फैलाना। बिछाना। ढांकना। तनोतितनुते। ततान-तेने। अतानीत्। अतनुत-अतत.

आतप, (पु०) आ+तप्+घञ्। पीडाका कारण। सूरज वा आगकी गरमी। धूप। प्रकाश। सूर्यका प्रकाश.

आतपत्र, (न०) आतपात् त्रायते। त्रै+क। छाता। जो धूपसे बचाता है.

आतर, (पु०) आतरत्यनेन। तॄ+अप्। नदीआदिके तरनेकेलिये भाडा.

आतर-आतारः, (पु०) आतरति अनेन-तॄ+अप्+घञ् वा। नदीके पार जानेका किराया। मसूल.

आतापि, (पु०) आ+तप्+इण्। एक दैत्यका नाम जिसे अगस्त्यने निगला.

आतापिन्, (त्रि०) आ+तप्+णिन्। खचरा (पु०) चीलपक्षी.

आतायिन्, (पु०) आ+ताय्+णिन्। चील नामसे प्रसिद्ध पक्षी.

आतिथेय, (न०) अतिथये इदम्-ढक्। अतिथिके लिये भोजनादि। "तत्र साधुः ढक्"। अतिथिकी पूजा। चतुर। कुशल (त्रि०).

आतिथ्य, (न०) अतिथेरिदं-ञ्यः । अतिथि । अतिथिसेवा.

आतिवाहिक, (त्रि०) अतिवाहे इहलोकात् परलोकप्रापणे नियुक्तः-ठक् । इस लोकसे परलोकमें पहुंचानेका काम करनेहारा । मरेहुएकी सूक्ष्मदेहको दूसरे लोकमें पहुंचानेके लिये ईश्वरसे नियत कियागया अर्चिरादिस्थानमें निवास करनेहारा देवविशेष । "आतिवाहिकस्तल्लिङ्गात्" वे० सू०

आतिशय्यं, (न०) अतिशय-स्वार्थे ष्यञ् । बहुत ही । बहुतायत । महाराशि.

आतिष्ठम्, (न०) अतिष्ठस्य भावः अण् । सबके ऊपर आज्ञा चलानेवाला.

आतुजि, (त्रि०) आ+तुज्+इन् । किसीपर आक्रमण करनेवाला । हानि पहुंचानेवाला । लेजानेवाला । हिंसा करनेवाला.

आतुर, (त्रि०) ईषदर्थे-आ+अत्+उरच् । पीडित । रोगयुक्त । रोगी । दुखिया.

आतृद्, रुधा० प० । वहजाना । दुःख पहुंचाना । धकेलना । खोलना । हिंसा करना । तृणत्ति । ततर्द । अतर्दीत् । तृण्ण.

आतृण्ण, (त्रि०) आ+तृद्+क्त दुःखी किया गया । वेधा गया । काटा गया.

आतोद्य, (न०) आसमन्तात् तुद्यते-आ+तुद्+ण्यत् । वीणाआदि चार तरहका बाजा । सब प्रकारका बाजा.

आत्तगन्धा, (त्रि०) आत्तो गृहीतोऽरिणा गन्धो गर्वो यस्य । शत्रुने जिसके अहंकारको दवालिया । शत्रुसे दवाया गया । काम.

आत्मगुप्ता, (त्रि०) आत्मनः गुप्तः स्वशक्त्यैव रक्षितः । आलकुशीनामी लता.

आत्मघातिन्, (त्रि०) आत्मानं देहं हन्ति । हन्+णिनि । जो वृथाही आग वा पानीआदिके द्वारा अपने देहका नाश करे । अपनी हत्या करनेहारा । खुदकशी.

आत्मघोष, (पु०) आत्मानं घोषयति स्वशब्दैः । आपही अपनेको बुलानेहारा । कौवा । कुक्कड । (का का) (कु कु) इस ध्वनिसे अपनेही नामका एकदेश लेते हैं.

आत्मज, (पु०) आत्मनो जायते, आत्मा वा जायते । जन्+ड । अपनेसे उत्पन्न होता है । वा आपही उपजता है । पुत्र । "आत्मा वै जायते पुत्रः" इति श्रुतिः । "आत्मजन्मा" इसीअर्थमें होता है । कन्या । लडकी । मनसे उत्पन्न हुई बुद्धि (स्त्री०).

आत्मदर्श, (पु०) आत्मा देहः दृश्यतेऽत्र । दृश्+आधारे घञ् । जहां शरीर देखा जाता है । दर्पण । शीशा । आरसी.

आत्मन्, (पु०) अत्+मनिन् । स्वरूप । यत्न । देह । मन । धृति । बुद्धि । सूर्य । अग्नि । वायु । जीव । ब्रह्म.

आत्मनीन, (त्रि०) आत्मने हितः+ख । किसीका अपना पुत्र । साला । (नाटकमें) विदूषक । अपना हित चाहनेहारा । स्वहितकारी.

आत्मनेपद, (न०) आत्मने आत्मार्थफलबोधनाय पदम् अलुक् स० । अपनेलिये पद । दो पदोंमेंसे एक जिनमें संस्कृत धातुओंका उच्चारण होताहै.

आत्मबान्धव, (पु०) आत्मनः बान्धवः । अपने बान्धव । माताकी बहिनके लडके । पिताकी बहिनके लडके । मामेके पुत्र ये सब अपने बन्धु समझने चाहिये.

आत्मभू, (पु०) आत्मनो मनसो देहात् वा भवति । भू+क्विप् । जो मनसे वा देहसे उपजता है । चारमुखवाला विधाता । कामदेव.

आत्मम्भरि, (त्रि०) आत्मानं बिभर्ति-ख-मुम्च । अपनाही पेट भरनेहारा स्वार्थी । लालची । अपनेहीको पालनेहारा.

आत्मयोनि, (पु०) आत्मा योनिः अस्य । विष्णु । महादेव । ब्रह्मा । कामदेव.

आत्मरक्षा, (स्त्री०) आत्मन एव रक्षा यस्याः । वृक्षभेद । अपनी रक्षा.

आत्मसात्, (अव्य०) अपने काबूमें । किसीका अपना । अपने आधीन.

आत्महन्, (पु०) आत्मानं हतवान् । हन्+क्विप् । जिसने अपनेको मारा । जो अकर्ता अभोक्ता स्वयंप्रभु आत्माको कर्ता भोक्ता आदि मानताहै । जो अपनेको यथार्थ नहीं जानता । मूर्ख । आत्मघाती । अपनेको मारनेहारा जन.

आत्माधीन, (पु०) आत्मनोऽधीनः । अपने आधीन । पुत्र । साला । प्राणका आश्रय.

आत्माश्रय, (पु०) आत्मानं आश्रयति । आ+श्रि+अच् ६ त० । जो अपना आसरा लेताहै । जिसे अपनी अपेक्षा आपही हो ऐसा तर्कका एक दोष.

आत्मीय, (त्रि०) आत्मनोऽयं-छ । ये अपना है । अपना । अपना संबंधी.

आत्मोद्भवा, (स्त्री०) आत्मनैवोद्भवति । भू+अच् । जो अपनेसे उपजे । माषपर्णी वृक्ष । "आत्मा उद्भवो यस्याः" कन्या । पुत्र (पु०).

आत्यन्तिक, (त्रि०) अत्यन्त-भावार्थे ठक् । बहुत होगया । अतिशयजात.

आत्ययिक, (त्रि०) अत्ययः नाशः प्रयोजनं अस्य ठक् । नाश । तकलीफ देनेहारा । बदकिसमत.

आत्रेय, (पु०) अत्रेरपत्यं-ढक् । अत्रिमुनिका पुत्र । शरीरका रस धातु । अत्रिके वंशमें हुआ । शिवजीका नाम । एक नदीका नाम । जो बंगालकी उत्तरदिशामें है (स्त्री०).

आत्रेयी, (स्त्री०) न सन्ति त्रिदिनानि कर्मयोग्यानि यस्याः। डच् स० सा अत्र। स्वार्थे ढञ्। जिसके तीन दिन काम करने योग्य नहीं। ऋतुमती स्त्री। एक नदीका नाम। "पुनः स्वार्थे कनि ह्रस्वे" आत्रेयिका भी.

आथर्वण, (पु०) अथर्वणा मुनिना दृष्टो वेदः -अण्-तं अधीते- वेत्ति वा-पुनः अण्। तत्र विहितं वा-पुनः अण्। अथर्वमुनिसे देखागया वेद। अथर्ववेदको जो पढता वा जानताहै। अथर्ववेदमें विधान कियागया। अथर्ववेदको पढानेहारा ब्राह्मण। अथर्ववेदमें कहागया अभिचार (शत्रुमारण) आदि काम। अथर्ववेदके अनुसार क्रिया करनेहारा ब्राह्मण (पुरोहित).

आदत्त-आत्त, (त्रि०) आ+दा+क्त। लिया गया। स्वीकार किया गया.

आदर, (पु०) आ+दृ+ऋप्। प्रतिष्ठा। समादर। सम्मान। आरम्भ। इज्जत.

आदर्श, (पु०) आदृश्यतेऽत्र। दृश्+आधारे घञ्। जिसमें स्वरूप देखा जाय। दर्पण। शीशा। आइना। टीका। प्रतिरूप। पुस्तक.

आदहनं, (न०) आ+दह्+अन+आदह्यते अस्मिन्। जलना हानिपहुंचाना। मारना। श्मशान (मसान)। वह स्थान जहां कोई पदार्थ जलाया जाय.

आदा, जु० आ०। आदत्ते। लेना। स्वीकार करना। आश्रय लेना। आगेसे लेने जाना.

आदान, (न०) आ+दा+भावे ल्युट्। ग्रहण। लेना। घोडेका जेवर.

आदि, (पु०) आ प्रथमं दीयते गृह्यते। आ+दा+कि। प्रथम। पहिले होना। कारण निकट। प्रकार। हिस्सा। मुख्य.

आदिकवि, (पु०) ब्रह्मदेव। और वाल्मीकिमुनि.

आदितेय, (पु०) अदित्या अपत्यं-ढक्। अदितिकी सन्तान। देवता.

आदित्य, (पु०) अदितेरपत्यं-ण्य। सूर्य। देवता। सूर्यमंडलमें रहनेहारा सुवर्णस्वरूप विष्णु। आकका वृक्ष। बारह सूर्य। "आदित्या द्वादश प्रोक्ताः"। पुनर्वसुनक्षत्र.

आदित्यसूनु, (पु०) सुग्रीव। यमराज। शनि। सावर्णिनामा मनु। वैवस्वत मनु। कर्णनामी राजा.

आदित्सु, (त्रि०) आ+दा+सन्+उ। लेनेकी इच्छा करनेवाला.

आदिन्, (त्रि०) अत्ति इति अद्+णिनि। खानेवाला.

आदिदेव, (पु०) आदौ दीव्यति-स्वयं राजते। दिव्+अच् ७ त०। जो प्रथमही क्रीडा करता है। आपही चमकता है। नारायण। शिवजी महाराज। आदिकारण ब्रह्मा.

आदिपु(पू)रुष, (पु०) आदौ पुरि देहे वसति। वस्+उषन्। स्वेन आत्मना पूरयति जगत्। पूर्+उषन् वा-पृ०वा ह्रस्वः। जो पहिले शरीरमें रहताहै। जो आपही सारे जगत्को पूर्ण कर्ताहै। पहिला जीव हिरण्यगर्भ। नारायण.

आदिम, (त्रि०) आदौ भवः। आदि+डिमच्। पहिले हुआ। आदिका। पहिला.

आदिवराह, (पु०) आदिभवो वराहः। विष्णु। (वह सबसे पहिले वराहरूपसे अवतार ग्रहण कर्ता भया).

आदिष्ट, (न०) आ+दिश्+भावे क्त। आज्ञा। हुकम। आदेश। "कर्मणि क्तः"। हुकम दियागया। आदेश कियागया। व्याकरणप्रसिद्ध स्थानजात जैसे इक्के स्थानमें यण् आदेश कियागया है तो आदिष्ट यण् हुआ। कहागया। पहिले कहागया। प्रतिनिधी हुआ.

आदीनव, (पु०) आ+दी+भावे क्त। आदीनस्य वानं प्राप्तिः-वाक। दोष। ऐब। क्लेश। दुःख। दुर्दम। जिसे वशमें लाना कठिन है.

आदृ, तु० आद्रियते। आदर करना। प्रतिष्ठा करना। इज्जत करना.

आदृत, (त्रि०) आ+दृ+कर्तरि क्त। पूजागया। आदरवाला। आदर कियागया.

आदृश्, भ्वा० प०। पश्यति। अदर्शत्। अद्राक्षीत्। देखना। तालाश करना। (णिचि) दिखाना। सूचन करना.

आदेश, (पु०) आदिश्+भावे घञ्। आज्ञा हुकम। उपदेश। शिक्षा। विधि नियम। शासन। इतिला.

आदेष्टृ, (त्रि०) (पु०) आ+दिश्+तृच्। वह यजमान कि जो पुरोहितको "मेरे इष्ट सम्पादनके लिये कर्म कीजिये" ऐसे कहताहै। यज्ञ करानेहरा। हुकम करनेहारा। उपदेश करनेहारा.

आद्य, (त्रि०) आदौ भवः। दिगा० यत्। पहिले हुआ। प्रथम। "अद्+ण्यत्"खानेलायक कोई वस्तु। धान्य (न०).

आद्या, (स्त्री०) आदौ भवा। शक्ति। सब देवियें। दुर्गा। काली। चण्डिका आदि.

आद्यून, (त्रि०) आदिना ऊनः। आदिशून्य। जिसका शुरू नहो। "आ+दिव्+क्त-ऊठ्-नत्वंच"। अथवा अद्-खाना इस धातुसे बनसक्ता है। सब काम छोडके केवल जिसे पेट भरनेहीकी इच्छा लगी रहे। पेटु। भूखा.

आधमन, (न०) अधीयते। आ+धा+क मनन्। बन्धक (हुण्डी) पर देनाआदि। निक्षेप। अमानत। गिरवी.

आधमर्ण्य, अधमर्णस्य भावः कर्म वा-ष्यञ्। कर्जदार होना.

आधर्मिक, (त्रि०) अधर्मं चरति ठञ्। अन्यायी बेइन्साफ करनेहारा। जो धर्म नहीं कर्ता.

आधर्षित, (त्रि०) आ+धृष्+क्त। अन्यायसे आक्रमण कियागया। जिसका अपराध देखागया। बेइन्साफीसे द-बाया गया। "मार्गेण धर्षितः परैः" इति स्मृतिः

आधान, (न०) आ+धा+ल्युट्। अमानत। मन्त्रआदिसे अग्नि रखना। "आधाने सोमपाने च" इति स्मृतिः। गर्भाधान.

आधार, (पु०) आ+धृ+घञ्। अधिकरण। आश्रय। आ-सरा। व्याकरणप्रसिद्ध औपश्लेषिक, वैषयिक, अभिव्या-पकनामी अधिकरणकारक। सप्तमी कारकमें पै, पर। आड (खेतीकी)। आलवाल (वृक्षका)। पुल.

आधि, (पु०) आधीयते अभिनिवेश्यते प्रतीकाराय मनो-ऽनेन। आ+धा+कि। मनकी पीडा। बडी आशा। आश्र-य। अमानत। व्यसन.

आधिकरणिक, (पु०) अधिकरणे नियुक्तः ठक्। कचह-रीमें लगा हुआ। जज्ज। न्याय करनेवाला.

आधिक्य, (न०) अधिकस्य भावः ष्यञ्। अधिकाई। जियादती। बहुतायत.

आधिज्ञ, (त्रि०) आधि+ज्ञा+क। टेढा। तकलीफ दियागया। पीडा जान्नेहारा.

आधिदैविक, (त्रि०) देवान् अग्निवाय्वादीन् अधिकृत्य निर्वृत्तम्। अधिदेव+ठञ्-द्विपदवृद्धिः। बहुत वायुआदिसे उपजा दुःख.

आधिपत्य, (न०) अधिपतेर्भावः-ष्यञ्। स्वामीका होना। मालिकपना.

आधिभौतिक, (त्रि०) भूतानि व्याघ्रसर्पादीनि अधिकृत्य-जातं। अधिभूत+ठञ्-द्विपदवृद्धिः। व्याघ्र सांप आदिसे उपजा दुःख.

आधिराज्यं, (न०) अधिराजस्य भावः कर्म वा+ष्यञ्। पातशाहत। चक्रवर्तिपन.

आधिवेदनिक, (न०) अधिवेदनाय विवाहोपरि विवाहाय हितं-ठक्। तत्र काले दत्तं ठञ् वा। दूसरे विवाहकी इच्छाहारे पुरुषसे पहिली स्त्रीको दियागया धन। द्वितीय विवाहके समय पहिली स्त्रीको दियागया पारितोषिक (इनाम).

आधु, स्वा० उ० कांपना। हिल्चल होना। धुनोति-धुनुते। दुधाव-दुधुवे। अधावीत्। अधविष्ट-अधोष्ट.

आधुनिक, (त्रि०) अधुना भवः-ठञ्। इदानीन्तन। अबका। नया.

आधेय, (त्रि०) आ+धा+यत्। आश्रित। एक वस्तुके ऊपरकी दूसरी वस्तु। ("मेजपर किताब" यहां किताब आधेय है).

आधोरण, (पु०) आ+धोरृ-चलनेकी चतुराई+ल्यु। हाथीके चलानेकी चतुराईको जान्नेहारा। हस्तिपक। हाथीवान.

आध्मात, (त्रि०) आ+ध्मा+क्त। शब्दित। फूंकागया। आवाज। भराहुआ। सडाहुआ। वायुरोगसे पेटका फूलना.

आध्मान, (पु०) आ+ध्मा+ल्युट्। वायुका रोग। फूलना। बाईकी बीमारी। लोहारकी फूंकनी। बढना.

आध्यात्मिक, (त्रि०) आत्मानं मनःशरीरादिकं अधिकृ-त्य भवः-ठञ्। शोक, मोह, ज्वरादिसे उत्पन्नहुआ दुःख.

आध्यान, (न०) आ+ध्यै+ल्युट्। चिन्ता। सोच। फिकर। उत्कण्ठापूर्वक स्मरण। बडे चावसे याद करना। बडे शोकके साथ स्मरण करना.

आध्यापकः, (पु०) अध्यापक एव, स्वार्थे अण्। शिक्षक। आत्मविद्याकी शिक्षा करनेवाला.

आध्यायिक, (त्रि०)-की (स्त्री०) अध्याप ठञ्। अध्य-यनमें लगा हुआ। वेद पढा हुआ। अधीतवेद.

आध्यासिक, (त्रि०)-की (स्त्री०) अध्यासेन कल्पितः ठक्। अध्यास (एक वस्तुमें दूसरीको चढादेना) से उत्पन्न हुआ.

आध्वनिक, (त्रि०) अध्वनि व्यापृतः-कुशलो वा ठक्। यात्रामें गयाहुआ। सफर करनेहारा। यात्रा करनेमें चतुर.

आध्वरिक, (त्रि०) अध्वर+ठक्। जो यज्ञ कराने जान-ताहै। पुरोहित। सोमयज्ञका विधान करनेहारा ग्रन्थ.

आध्वर्यव, (न०)-वी (स्त्री०) अध्वर्योः यजुर्वेदविद इदं अञ्। यजुर्वेदमें कहागया अध्वर्युका काम। अध्वर्युपना। अध्वर्युका यजुर्वेद जान्नेहारा.

आन, (पु०) आनित्यनेन। आ+अन्+करणे क्विप्। अन्तः-स्थित प्राणवायुका नासिकासे वाहिर आना। मुख। नाक। सांस लेना। फूंकना.

आनक, (पु०) आनयति सोत्साहान् करोति। अन्+ णिच्+ण्वुल्। बाजा। लडाईका बडा बाजा। मृदङ्ग। शब्दकरनेहारा बादल। उत्साहकरनेहारा (त्रि०).

आनकदुन्दुभिः, (पु०) आनकः प्रोत्साहको दुन्दुभि-र्देववाद्यविशेषो यस्य। वसुदेवका नाम। कृष्णदेवका पिता। (कृष्णजन्मके उत्सवमें ऐसाही बाजा उसके घरमें वजायागया)। बडाढोल (स्त्री०).

आनडुह, (त्रि०)-ही (स्त्री०) अनडुहः इदं+अण्। वृषभ (बैल) का अथवा बैलसे उत्पन्न हुआ.

आनत, (त्रि०) आ+नम्+क्त। कृतप्रणाम। प्रणाम करने-हारा। नीचेमुख। विनयसे झुकाहुआ। टेढापन.

आनति, (स्त्री०) आनमति प्रवणीभवति अनया। आ+ नम्+करणे क्तिन्। जिस्से झुकता है। सन्तोष। सबर। "भावे क्तिन्" झुकता। नीचे होना। नम्रता। आतिथ्य-करना। इज्जत करना.

आनद्ध, (न०) आ+नह्+क्त । चमडेसे ढकाहुआ बाजा । ढोल । मृदङ्ग । बाजा वालोंको सजाता । गुथाहुआ । फैलाहुआ । बंधाहुआ (त्रि०) पौशाक पहिरना । कपडोंपर जेवरोंका डालना.

आनन, (न०) अनिति अनेन । आ+अन्+करणे ल्युट् । जिस्से सांस लेता है । मुख.

आनन्तर्य; (न०) अनन्तरं एव चतुर्वर्णादित्वात् स्वार्थे ष्यञ् । अनन्तर । सामीप्य । नजदीकी । विनाफरक । पासही.

आनन्त्य, (न०) आनन्त+भावे·स्वार्थे वा ष्य । बहुतायत । गिनतीविना । देश और कालआदि न मापागया । अनन्तसुख । बडीखुशी.

आनन्द, (पु०) आ+नन्द्+घञ् । हर्ष । सुख । दुःखका न होना । ब्रह्म । आनन्दवाला (त्रि०) । "सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म" श्रुतिः.

आनन्दन, (न०) आनन्दयत्यनेन । आ+नदि+णिच्+करणे ल्युट् । जिस्से प्रसन्न करता है । जानेआनेके समय कुशलप्रश्नसे आनन्द उपजाना । जानेआनेके समय मित्रोंसे मिलना.

आनन्दमय, (पु०) आनन्दः प्रचुरोऽस्य-प्राचुर्ये मयट् । जिसे बहुत आनन्द हो । जीव । वेदान्तोक्त सुषुप्तिका साक्षी । प्राज्ञ.

आनन्दार्णव, (पु०) आनन्दः अर्णव इव असीमत्वात् । असीम होनेसे जिसका आनन्द समुद्रकी नाँईं है । परमेश्वर । ज्योतिषोक्त यात्राकालका लग्नविशेष । ६ त० । अत्यन्तानन्द.

आनन्दि, (पु०) आ+नदि+इन् । हर्ष । कौतुक । खुशी.

आनर्त, (पु०) आनृत्यति अत्र । आ+नृत्+आधारे घञ् । नृत्यशाला । नाचघर । रस । जल । द्वारकाके पासका देश । लडाई । आनर्तदेशवासी.

आनाय, (पु०) आनीयते मत्स्योऽनेन । आ+नी+करणे घञ् । जाल । "भावे अच्" । लाना । यज्ञोपवीतसंस्कार । जनेऊ पहिरना.

आनाह, (पु०) आ+नह्+घञ् । वस्त्रकी लम्बाई । मल और मूत्रको रोकनेहारा रोगविशेष । कबजी । दिक्की.

आनीति, (स्त्री०) आ+नी+क्तिन् । पास लाना.

आनुकूल्य, (न०) अनुकूलस्य भावः कर्म वा ष्यञ् । अनुकूलपना । आपसमें मिलकर रहना । आपसमें कृपा प्रकट करनी.

आनुगुण्य, (न०) अनुगुणस्य भावः कर्म वा ष्यञ् । तुल्यता । समानता । बराबरी । दयालु होना । मेहरवान होना.

आनुपूर्वी–र्व–र्व्य, (स्त्री० न०) पूर्वमनुक्रम्य अनुपूर्वं तस्य भावः ष्यञ् ततो वा ङीपि यलोपः । परिपाटी । क्रम । रीति । सिलसिला । मूलसे लेकर क्रम । यथार्थ जातिक्रम.

आनुमानिक, (त्रि०) अनुमानादागतः ठक् । स्त्रियां ङीप् । केवल अनुमान प्रमाणसे सिद्धहोनेहारा सांख्यशास्त्रमें कहागया प्रधान । "आनुमानिक" इति वेदान्तसूत्रम्.

आनुश्रविक, (त्रि०) गुरुपाठादनुश्रूयते अनुश्रवो वेदस्तत्र विहितः ठक् । वेदमें विधान कियागया । स्वर्गादिका साधन होनेसे वेदमें दिखायागया कर्मसमूह । "दृष्टवदानुश्रविकः" सां० का०.

आनुषङ्गिक, (त्रि०)–की (स्त्री०) अनुषङ्गात् आगतः–ठक् स्त्रियां ङीप् । किसीका संबंधी एकके साथ दूसरा मिला हुआ । जोडीदार गौण.

आनूप, (त्रि०)–पी, (स्त्री०) अनूपदेशे भवः, अण् । जलवाला । गीला । गीले स्थानसे उत्पन्न हुआ.

आनृण्यम्, (न०) अनृणस्य भावः कर्म वा+ष्यञ् । ऋण (करज) का न होना । बेकरज होना.

आनृत, (त्रि०) अनृतं शीलं अस्य । अण् । जिसका स्वभाव झूठा हो । जिसके सब काम झूठे हों.

आनृशंस्य, (न०) नृशंसो घातुकः । न० त० भावे यञ् । दया । रहम । मेहर्वानी.

आनैश्वर्यम्, (न०) अनीश्वरस्य भावः ष्यञ् । ईश्वरता । (सामर्थ्य) का न होना । शक्तिराहित्य.

आन्तर, (त्रि०) अन्तर्मध्ये भवः अण् । बीचमें हुआ । बीच । बीचका.

आन्तरतम्य, (न०) अन्तरतमस्य अत्यन्तसदृशस्य भावः ष्यञ् । दोनोंका आपसमें बहुतही समान होना । बहुतसदृश.

आन्तर्गेहिक, (त्रि०)–की । (स्त्री०) अन्तर्गेहं–वेश्मनि भवः+ठञ् । घरके भीतरका । घरके भीतरसे निकला.

आन्तिका, (स्त्री०) अन्तिका इव अण्+टाप् । ज्येष्ठ भगिनी । बडी बहिन.

आन्त्र, (न०) अमत्यनेन । अम्–जाना (गति)+क्त-उपधादीर्घः । नाडीभेद "अन्त्रस्येदं अण्" । आन्दरोंका (त्रि०) "स्त्रियां ङीप्".

आन्दोल, कांपला-झूलना । चुरा० उभ० सक० सेट् । आन्दोलयति–ते.

आन्दोलन, (न०) आन्दोल+भावे ल्युट् । वारवार झूलना । वारवार चलना । अनुसन्धान । तालाश करना.

आन्धसिक, (त्रि०) अन्धोऽन्नं शिल्पं अस्य ठक् । पाचक । रसोइया । अन्नपकानेहारा । बावरची.

आन्ध्य, (न०) अन्धस्य भावः ष्यञ् । अन्धहोना । अन्धापना । अंधेरा.

आन्वयिक, (त्रि०) अन्वये प्रशस्तकुले भवः ठञ् । अच्छे कुलमें उपजा । कुलीन.

आन्वाहिक, (त्रि०) अहनि अहनि अन्वहं तत्र भवः ठञ् । प्रतिदिन होनेहारा । हररोज रसोई आदि बनानेलायक.

आन्वीक्षिकी, (स्त्री०) अनु वेदश्रवणानन्तरं ईक्षा परीक्षणं अन्वीक्षा सा प्रयोजनं अस्याः तत्र साधुः वा ठञ् ङीप्। जिसके द्वारा सुनेगये वेदकी परीक्षा की जाय । तर्कविद्या । इल्म मन्तक । अध्यात्मविद्या । इल्म रूहानी.

आप्, स्वा० प० । आप्नोति कामं भ्वा० प० आपति । आप । आपत् । आप्स्यति । आप्तुं । आप्त । प्राप्त करना । पाना । लाभ करना.

आपः, (पु०) आप्+घञ् । आठ वसुओंमेंसे एक देवता । –पम् (न०) (अपां समूहः) जलसमूह । तुफान वा जलका भारी प्रवाह । जल । आकाश.

आपगा, (स्त्री०) आपोभिः जलसमूहेन गच्छति वहति–ड । जो जलके समूहसे चले–बहे । नदी । दर्या.

आपण, (पु० न०) आपणायन्ते विक्रीणन्त्यत्र । आ+पण्-नि० आधारे घञ् । जहां कुछ बेंचते हैं । हट्ट । क्रयविक्रयशाला । खरीद फरोख्तका स्थान । दुकान । "भावे घ" क्रयविक्रयव्यवहारक.

आपणिक, (त्रि०) आपणादायस्थानादागतः ठक् । आमदनके स्थानसे आया । खरीद फरोख्त करनेहारा । व्यापारी.

आपन्न, (त्रि०) आ+पद्+क्त । विपद्ग्रस्त । मुसिबतमें पडाहुआ । प्राप्त । पाया । हासल.

आपन्नसत्वा, (स्त्री०) आपन्नं सत्वं यया । जिसे प्राणी (गर्भ) प्राप्त हुआ । गर्भवती । जिसे गर्भ हो गया है । हामिलह.

आपयितृ, (त्रि०) आप्+णिच्+तृच् । प्राप्त करनेवाला । पानेवाला.

आपराह्णिक, (त्रि०) अपराह्णे भवः–ठञ् । दिनके पिछले भागमें हुआ । तीन भागोंमें विभाग किये गये दिनका तीसरा भाग । जिसमें पितृश्राद्धादि होता है । तीसरे भागमें होनेहारा पितरोंका श्राद्ध आदि.

आपस्, (न०) आप्+असुन् । जल । पानी । "सर्वमापोमयं जगत्" दे० मा० । पाप । गुनाह । कन्याराशि । धर्मसम्बन्धी उत्सव.

आपस्तम्ब, (पु०) एक धर्मशास्त्रके बनानेहारा मुनि.

आपस्तम्भिनी, (स्त्री०) अपः स्तभ्नाति । स्तम्भ+णिनि । जो पानीको रोकलेती है । लिङ्गिनी नाम लताविशेष.

आपात, (पु०) समन्तात् परिवेष्ट्य पच्यतेऽत्र । आ+पच्+आधारे घञ् । चारों ओरसे घेर कर जहां पकावें । कुम्हारके मट्टीके पात्र पकानेका स्थान । जनताहुआ तंदूर.

आपात, (पु०) आ+पत्+भावे घञ् । अचानक गिरना । "आधारे घञ्" । गिरनेका समय । मार्ग । रास्ता.

आपाततस्, (अव्य०) अधुना । अब । झट । जल्दी । बिना । नानिश्चय.

आपान, (न०) आपीयते सम्भूय पीयते सुराऽत्र आधारे ल्युट् । जहां इकट्ठे हो कर मद्य पी जाय । मद्य पीनेके लिये मिलकर बैठनां । चक्र । मद्य पीनेकी सभा । शराबिओंकी चौकडी.

आपिञ्जर, (न०) ईषत् पिञ्जरवर्णम् । थोडा पीला रंग । स्वर्ण । सोना.

आपीड, आ+पीड+अच् । चोटीकी माला । शिरका भूषण (जेवर) । घरसे बाहिर निकली हुई लकडी । कष्ट देना । माला.

आपीत, (न०) ईषत् पीतं । प्रा० त० । माक्षिक धातु । थोडासा पीयागया । मस्त । थोडा पीला । सुरस.

आपीन, (न०) आ+प्याय+क्त-पीभावः-तस्य नत्वम् । ऊध (हवाना) । कूप । खूआ (पु०) ईषत् स्फीत । थोडा मोटा (त्रि०).

आपूपिक, (न०)–की । अपूपः शिल्पं अस्य ठक् । अच्छे पूडे बनानेहारा । पूडे खानेहारा । पूडे बेचनेहारा । कडा बेचनेहारा । पूडोंका समूह । "अपूपानां समूहः".

आपूप्य, (पु०) अपूपाय साधुः वा ञ्यः । सत्तु । आटा । जिसके पूडे बनसकें.

आपृच्छा, (स्त्री०) आ+प्रच्छ+अङ् । आलाप । पूछना । बातचीत.

आपोक्लिमं, (न०) क्रमसे ३ री, ६ ठी, ९ वीं और १२ वीं राशि.

आप्त, (त्रि०) आप्+क्त । विश्वस्त । भरोसा किया गया । भरोसेके लायक । पाया । लाभ किया । सत्य । राग द्वेषआदिसे रहित । सच्चा उपदेश करनेहारा । भ्रमादिशून्य । सत्यज्ञाता.

आप्तकाम, (त्रि०) आप्तः प्राप्तः कामः कामनाविषयो येन । जिसने अपनी इच्छा पूरी की हो । जिसका मनोरथ सिद्ध हुआ । सदा तृप्त । हमेश रजाहुआ । परमेश्वर.

आप्तोक्ति, (स्त्री०) आप्तस्य उक्तिः । वच+क्तिन् । आप्तका वचन । सन्दिग्ध विषयका निर्णय करनेके लिये सिद्धान्ती-(फैसला करनेहारा) का वचन । ठीकजाननेहारेका वचन.

आप्यायन, (न०) आ+प्या+ल्युट् । तृप्ति । प्रीति । तसल्ली । खुशी । "णिच् ल्युट्" तसल्ली देना । खुश करना.

आप्रपद, (अव्य०) प्रपदं पादाग्रं तत्पर्यन्तं-अव्ययी० । पाँवतक । पाँवतक पौशाकका पहिरना । पाँवतक पहुंचनेहारा.

आप्रपदीन, (त्रि०) आप्रपदं पादाग्रान्तं प्राप्नोति-ख । पाँवतक लटकनेहारा कपडा आदि । "आप्रपदीनक" इसी अर्थमें होताहै.

आप्लु(प्ला)व, (पु०) आ+प्लु+घञ्-अप् वा । स्नान । नहाना । जलोंका चारों ओर उछलना । प्रवाह । डुबकी मारना । गीला होना.

आप्लुत, (त्रि०) आ+प्लु+क्त । नहायाहुआ । "भावे क्त" नहाना (न०).

आप्लुतव्रत, (पु०) आप्लुतं वेदाध्ययनानन्तरं स्नानं व्रतमस्त्यस्य । वेदपढनेके अनन्तर नहानेहारा । वेद पढा हुआ । गृहस्थाश्रम न करनेहारा ब्रह्मचारीभेद । स्नातक । ब्रह्मचर्यको समाप्त कर घरमें आया ब्राह्मण । गृहस्थविशेष.

आबद्ध, (न०) आ सम्यक् बद्धं । बन्ध्+भावे क्त । दृढ बन्धन । पक्का बंधाहुआ "आधारे क्त" प्रेम । मुहब्बत । "कर्मणि क्त" भूषण । जेवर । गहना । "करणे क्त" योक्त्र । जूला (पु०) । बंधाहुआ । रुकाहुका (त्रि०).

आबिल, (त्रि०) आ+बिल्-फाडना+क । कलुष । काला । नासाफ.

आबुत्त, (पु०) आपनं आप्+क्विप्, आपमुत्तनोति । उद्+तन्+ड । नाट्योक्तिमें भगिनीपति (बहनोई) की संज्ञा है.

आभरण, (न०) आ+भृ+कर्मणि ल्युट् । भूषण । जेवर । सजावट.

आभा, (स्त्री०) आ+भा+अङ् । दीप्ति । चमक । शोभा । कान्ति । सुन्दरता । उपमान । वायुका एकप्रकारका रोग.

आभाषण, (न०) आ+भाष्+ल्युट् । आलाप । बातचित । परस्परकथन.

आभास, (पु०) आ+भास्+अच् । प्रतीति । प्रतिबिम्ब । दीप्ति । चमक । ग्रन्थादिके आरम्भमें संगति दिखानेका प्रस्ताव । अवतरणिका । भूमिका । सदृश । समान.

आभास्वर, (पु०) आ+भास्+वरच् ६४ वा १२ देवगण.

आभिजन, (पु०) अभिजन+अण् । जन्मसम्बन्धी । कुलसम्बन्धी । जन्मकालसे कियागया । सम्बन्धी । रिश्तहदार.

आभिजात्य, (न०) अभिजातस्य भावः ष्यञ् । अच्छे कुलमें होना । कौलीन्य । पाण्डित्य । चातुर्य । चतुराई । अच्छी समझ.

अभीक्ष्ण्य, (न०) अभीक्ष्णस्य भावः ष्यञ् । पौनःपुन्य । बारबार होना.

आभीर, (पु०) आ सम्यक् भियं राति । रा+क । अहीर वर्णसंकरभेद । गोप । गवाल । देशभेद । (स्त्री०) गोपी । अहीरी.

आभीरपल्लिः, (स्त्री०) आभीराणां पल्लिः । ग्वालोंके घर । गोपोंके गांव । एक पक्षमें ङीप् होताहै.

आभील, (न०) आ समन्तात् भयं लाति । आ+भी+ला-क । कष्ट । तकलीफ । डरावना । रोगी (त्रि०).

आभोग, (पु०) आ+भुज्+भावे आधारे वा घञ् । वरुणका छाता । परिपूर्णता । पूरापन । कोशिश । गीतकी समाप्ति.

आभ्युदयिक, (त्रि०) अभ्युदयः प्रयोजनं अस्य-ठक् । चूडाआदि कर्म । शुभकर्मकी वृद्धिके लिये करने लायक श्राद्ध । धन देनेहारा । सम्पदा देनेहारा । खुशीका अवसर.

आम, (त्रि०) आ ईषत् अम्यते-पच्यते । आ+अम्+कर्मणि घञ् । अपक्व । जो पका नहिं । कचा । अजीर्णक नामी रोग । अनपच (पु०).

आमगन्धि, (न०) आमस्य अपक्वस्य गन्ध इव गन्धो यत्र । इत्सम० । कच्चे मांस आदिके समान गन्धवाला । जलते हुए मांसकी गन्ध । चिताके धूमकी गन्ध.

आमनस्य, (न०) अप्रशस्तं मनो यस्य तस्य भावः ष्यञ् । अच्छे मनका न होना । दुःख । दरद । शोक.

आमन्त्रण, (न०) आ+मन्त्र+ल्युट् । अभिनन्दन । प्रसन्न करना । बुलाना । अवश्यकर्तव्य (श्राद्धादि) में बुलाना । निमन्त्रण । दावत करना.

आमय, (पु०) आमं रोगं यात्यनेन+या । करणे घञर्थे क । आ+मीञ्-मारना+करणे अच् वा । जिस्से रोगी होताहै । रोग.

आमयाविन्, (त्रि०) आमयोऽस्यास्तीति विनिः दीर्घश्च । रोगयुक्त । रोगी.

आमर्दिन्, (त्रि०) आ+मृद्+इन् । मलनेवाला । पीसनेवाला । दबानेवाला.

आमर्शन, (त्रि०) आ+मृश+ल्युट् । स्पर्श । छूना । विचारना.

आमर्ष, (पु०) न+मृष्+घञ्-दीर्घः । क्रोध । गुस्सा.

आमलक-की, (पु०) आ+मल्+वुन् । वासकवृक्ष । ङीप् । आवला । आमलेका पेड । आमलेका फल.

आमाशय, (पु०) आमस्य आशयः । नाभि और स्तनोंके बीचका भाग । अपाकस्थान । न पकनेकी जगह । कच्ची जगह.

आमिक्षा, (स्त्री०) आमिष्यते-सिच्यते । मिष्+सक् । तपेहुए दूधमें दहि डालनेसे जो विकार होताहै । फटाहुआ दूध । छाना.

आमिष, (न० पु०) आ+मिष्-सीजना-डालना+क । मांस । खाने पीने और पहिरनेकी चीज । उत्कोच । वड्डी । रिश्वत । सुन्दररूप । बहुत लोभ । लाभ । कामदेवका गुण । भोजन विषय । मजमून । जम्बीरवृक्षका फल.

आमिषाशिन्, (त्रि०) आमिषं अश्नाति, अश्-इन् । मांस खानेवाला.

आमुक्त, (त्रि०) आ+मुच्+क्त । छोडागया । दहिरेहुए । सजेहुए । "कर्तरि क्त" । वह जन कि जिसने कवच (जिरह) पहिनाहै.

आमुख, (न०) आ+णिच्+करणे अच् । प्रारम्भ । (नाटकमें) प्रस्तावना (जहां नटी, विदूषक, वा पारिपार्श्वक सूत्रधारके साथ ऐसी रीति विचित्र बातचीत करें कि जिसमें नाटकीय कथा भी संक्षिप्त होजाय).

आमुष्मिक, (त्रि०) अमुष्मिन् परलोके भवः ठक् सप्तम्या अलुक् टिलोपश्च । परलोकमें होनेवाली बात । दूसरे जन्ममें होनेवाली वस्तु । "स्त्रियां ङीप्".

आमुष्यायण, (त्रि०) अमुष्य ख्यातस्य अपत्यं-नडा० फक्-अलुक्। अच्छे वंश वा अच्छे चरित्रसे प्रसिद्ध पुरुषकी सन्तान। अच्छे वंशमें उत्पन्न हुआ इसका बेटा.

आमृद्, क्र्या० प० । मलडालना । दवाना । मृद्नाति । ममर्द । अमर्दीत्.

आमृश्, तु० प० । स्पर्शकरना । छूना । हाथ फेरना । मृशति । ममर्श । अमार्क्षीत्.

आमोद, (पु०) आ समन्तात् मोदयति । आ+मुद्+णिच्+अच् । बहुत दूर फैला हुआ गन्ध । गन्ध मात्र । "भावे घञ्" हर्ष । खुशी.

आमोदिन्, (त्रि०) आमोदयति सुरभीकरोति-आमोद+कृत्यार्थे णिच्+णिनि । मुखपर खुशबू पैदा करनेहारा कर्पूर वगैरह । हर्षवान् । खुशी । खुशबूदार । सुगन्ध । खुशबू.

आम्ना, भ्वा० प० । परम्परासे अभ्यास करना । मनति । मम्नौ । अम्नासीत्.

आम्नात, (त्रि०) आ+म्ना+क्त । अभ्यस्त । विचार किया गया । खयाल किया गया । कहा गया.

आम्नाय, (पु०) आम्नायते-अभ्यस्यते-आ+म्ना+घञ् । जो परंपरासे अभ्यास किया जाताहै । वेद । आगम । निगम । गुरुपरम्परासे आयाहुआ सच्चा उपदेश । वंशकुलके क्रमसे कहना । "भावे घञ्" अभ्यास । आदत । खान्दानी । तरीकह । नसल । हिदायत.

आम्र, (पु०) अम्-जाना रोगीहोना आदि+रन्-दीर्घश्च । आम । आमका वृक्ष । आमका फल.

आम्रातक, (पु०) आम्रं तद्रसं आ ईषत् अतति याति । आ+अत्+ण्वुल् । आमडानामी वृक्ष । भिळावा.

आम्रेडित, (त्रि०) आ+म्रेड्+उन्माद होना । पागल होना । अच् । आम्रेडेन उन्मत्तेनेवाचर्यते । आम्रेड–आचारे क्विप्+क्त । पागलकी नाँईं कहेहुए वचनको दुवारा तिबारा कहना । वारवार कहागया । व्याकरणमें एक संज्ञा.

आम्ला, (स्त्री०) आ सम्यक् अम्लो रसो यस्याः । जिसका बहुत खट्टा रस हो । तिन्तिडीका वृक्ष । खट्टा स्वाद । इमलीका वृक्ष.

आय, (पु०) आ+इण्+अच् । अय्+घञ् । लाभ । हासिल । आमदनी । प्राप्ति । धनका आना । स्त्रियोंके घरका रखवार.

आयत, (त्रि०) आयम्+क्त दीर्घ । लंबा । खेंचागया । आ+यत्+अच् । अतियत्नशाली । बहुत कोशिश करनेहारा । चौडा.

आयतच्छद, (स्त्री०) आयतः दीर्घः छदोऽस्याः । जिसका पत्ता चौडा हो । कदली । केला.

आयतन, (न०) आयतन्तेऽत्र । यत् आधारे ल्युट् । जहां बहुत यत्न करतेहैं । देवादिवंदनस्थान । मन्दिर । आश्रय । बैठक । विश्रामस्थान । आरामकी जगह । यज्ञकी जगह.

आयति–ती, (स्त्री०) आ+या+डति वा ङीप् । उत्तर-काल । आनेवाला समय । प्रभाव । फल देनेका समय । आ+यम्+क्तिन् । मेल । लंबाई । प्रापण । पहुंचाता.

आयतीगवम्, (अव्य०) (आयान्ति गावः यस्मिन् समये) । गौओंका घरमें लौटनेका समय.

आयत्त, (त्रि०) आ+यत्+कर्तरि क्त । अधीन । मातहत-वशीभूत । काबुमें आया.

आयत्ति, (स्त्री०) आ+यत्+क्तिन् । स्नेह । दियार । सामर्थ्य । ताकत । सीमा । हद्द । मर्यादा । तरीकह । दिन । शयन । विस्तरा वा सोना । लंबाई.

आयःशूलिक, (त्रि०)–की (स्त्री०) अयःशूल+ठक् । चतुर । चालाक । तीक्ष्ण उपायसे कार्य सिद्ध करनेवाला.

आयस, (न०) अयसा निर्मितं तद्विकारो वा–अण् । लोहेका पात्र आदि । लोहा । लोहेसे बनाहुआ (त्रि०).

आयस्त, (त्रि०) आयस्+क्त । क्षिप्त । फेंकागया । दुःख दिया गया । हत । मारा गया । तीक्ष्णीकृत । तेज किया गया.

आयाम, (पु०) आ+यम्+घञ् । दैर्घ्य । लंबाई । रोकना । देरतक.

आयास, (पु०) आ+यस+घञ् । परिश्रम । मिहनत । बहुत कोशिश । दुःख । दरद । मनकी पीडा । उद्यम । क्लेश.

आयु, (पु० न०) इण्+उण् । जीवनकाल । उमर । घी । "मावधिष्ठा जटायुं मां" भट्टिः.

आयुध, (न०) आ+युध्+करणे घञर्थे क । प्रहरणमात्र । हथियार । अस्त्र.

आयुर्वेद, (पु०) आयुर्विद्यते लभ्यतेऽनेन । विद्-लाभकरना+करणे घञ् । आयुर्वेत्ति अनेन चिह्नज्ञापनेन । विद् –जानना+करणे घञ् वा । जिससे उमर जानी जाय । चिह्न (निशान) जताकर जिस्से आयु जानता है । वेदका उपाङ्ग । चिकित्साशास्त्र.

आयुष्मत्, (त्रि०) आयुर्विद्यतेऽस्य मतुप् । जिसकी उमर विद्यमान है । दीर्घजीवी । देरतक जीनेवाला । (पु०) । विष्कम्भ आदि योगोंमेंसे तीसरा योग.

आयुष्य, (त्रि०) आयुः प्रयोजनं अस्य । खर्गादिभ्यो यत् । आयुका हितकारी बडी उमर देनेहारा । पथ्य । हितकारी । अच्छा.

आयोग, (पु०) आ+युज्+घञ् । काम । गन्धमाल्योपहार । फूल चन्दन आदि भेट । तट । किनारा.

आयोगव, (पु०) अयोगव एव स्वार्थेऽण् । शूद्रसे वैश्यस्त्रीमें उत्पन्न हुआ सन्तान । प्रतिलोम । वर्णसंकरसे उपजा जातिभेद.

आयोजन, (न०) आ+युज्+ल्युट् । उद्योग । मिहनत आहरण । इकट्ठा करना वा लेना । लगाना । जोडना. ।

आयोधन, (न०) आ+युध्+आधारे ल्युट् । लडाईकी जगह । युद्धस्थान । "भावे ल्युट्" लड़ना । मारना । युद्ध । वध.

आर, (पु०) ऋ+कर्तरि घञ् । मंगलग्रह । शनिग्रह । मीठा खट्टा फल । वृक्षभेद । पीतल । कोण । सिरा । धुरा । सन्तरेका पेड.

आर(रा)व, (पु०) आ+रु+घञ्-अप्वा । शब्दमात्र । हर-एकतरहकी आवाज.

आरकूट, (पु० न०) आरं पित्तलं कूटयति-अच् । पीत-लका भूषण । पित्तलाभरण । पीतलका जेवर । पीतल । पित्तल.

आरट्टज, (पु०) आरट्टे देशे जायते । जन्+ड । अरब देशका घोड़ा.

आरण्यक, (पु०) अरण्ये भवः । मनुष्यादि वुञ् । जंगली रास्ता । अध्याय । न्याय । इन्साफ । विहारस्थान । क्रीडाका स्थान । हाथी । वेदका अंशविशेष (न०) "आरण्यकमधीत्य च" इति मनुः.

आरति, (स्त्री०) आ+रम्+क्तिन् । उपरम । हटना । निवृ-त्ति । ठहराव.

आरथ, (पु०) ईषत्=स्वल्पः रथः । छोटी गाडी । एक घोडे वा बैलसे चलानेवाली गाड़ी.

आरब्ध, (त्रि०) आ+रभ्+क्त । शुरू किया गया । आर-म्भ किया गया.

आरभटी, (स्त्री०) आरभ्यतेऽनया । आ+रभ्+अटि ङीप् । नटका काम । नटोंकी क्रीडा । एक प्रकारकी रचना । खेल । नाच.

आरम्भ, (पु०) आ+रभ्+घञ्-मुम्च । शुरू । त्वरा । काली । जल्दी । उद्यम । कोशिश । वध । मारना । अहंकार । प्रस्तावना.

आरा, (स्त्री०) अ+ऋ+अच् । चमड़ा फाड़नेका औजार । लोहेका अस्त्र.

आरात्, (अव्य०) दूर । समीप । पास । नजदीक.

आरात्रिक, (न०) अरात्र्यापि निर्वृत्तं-ठञ् । रातके विनाशी जो होताहै । दीपक तो रातकोहि दिखलाया जाताहै परन्तु यह तो दिनके समय भी दिखातेहैं । आर-ति । नीराजनकर्म.

आराधन, (न०) आ+राध्+ल्युट् । उपासन । पूजन । तोषण । प्रसन्न करना । प्राप्ति । पाना । सेवा करना । पकाना.

आराम, (पु०) आ+रम्+आधारे घञ् । उपवन । वगीचह । बाग । कृत्रिमवन । वनावटी बाग । क्रीडार्थवन । खेलने-का वन.

आरु, (पु०) ऋ+उण् । वृक्षभेद । कर्कट । शूकर । केकड़ा । सूअर.

आरुरुक्षु, (त्रि०) आ+रुह्+सन्+ड । ऊपर चढनेकी इच्छा करनेवाला.

आरुह्, भ्वा० प० । चढना । ऊपरको जाना.

आरूढ, (त्रि०) आ+रुह्+क्त । चढगया.

आरोग्य, (न०) अरोगस्य भावः ष्यञ् । रोगका न होना । तन्दुरुस्ती । आराम.

आरोप, (पु०) आ+रुह्+णिच्+करणे ल्युट् । औरसें और धर्मका प्रतीत होना । जैसे "रस्सीमें सांपका ज्ञान" । कायम करना । संस्थापन । कल्पना । मानलेना । धनुष झुकाना.

आशरः, (पु०) आ+शॄ+अच् । अग्नि । दैत्य । भूत । राक्षस । वायु । हवा.

आशवं, (न०) आशोः भावः-अण् । शीघ्रपना । वेग । तेजी । जल्दीपना । अरक निकाला हुआ । आसवभी.

आरोह, (पु०) आ+रुह्+घञ् । आरोहण । चढना । दैर्घ्य । लम्बाई । उत्तम स्त्रियोंका चूतड़ । ऊंचाई । परिमाणविशेष.

आर्किः, (पु०) अर्कस्य अपत्यं-इञ् । सूर्यका पुत्र । यम-राज । शनि । कर्ण । सुग्रीव । वैवस्वतमनु.

आर्क्षोद, (पु०) ऋक्षोद+अरण् । ऋक्षोद पर्वतमें निवास करनेवाला.

आर्घा, (स्त्री०) आ+अर्घ+अच् । एक प्रकारकी पीली मक्खी.

आर्च, (त्रि०)-र्ची (स्त्री०) अर्चा अस्ति अस्य । पूजा करनेवाला । भक्त । ऋग्वेदसम्बन्धी.

आर्चीक, (त्रि०) ऋचीके पर्वते भवः-अण् । ऋचीक पर्वतमें वास करनेवाला.

आर्जव, (पु०) ऋजोर्भावः-अण् । सरलता । सीधापन । दूसरेको न ठगना.

आर्जुनि, (पु०) अर्जुनस्य अपत्यं+इञ् । अर्जुनका पुत्र । अभिमन्यु.

आर्त, (त्रि०) आ+ऋ+क्त । पीड़ित । दुःखित । अस्वस्थ । बेआराम.

आर्तव, (न०) ऋतुरस्य प्राप्तः-अण् । स्त्रीपुष्प । ऋतुवाला मौसमी फूल । स्त्रीरज जो प्रतिमास स्त्रीको होताहै.

आर्त्विज्य, (न०) ऋत्विजो भावः कर्म वा ष्यञ् । ऋत्वि-ग्के करनेलायक काम.

आर्थिक, (त्रि०) अर्थं गृह्णाति-ठक् । अर्थात् आगच्छति वा ठक् । अर्थको ग्रहण करनेहारा । पण्डित । दाना । अर्थसे आया । निशान । धनी । दौलतमन्द । सच्चा । प्राकृतिक.

आर्द्र, (त्रि०) अर्द+रक्-दीर्घश्च । गीला । जलसिक्त । कोई चीज जिसमें जल मिला हो । (स्त्री०) छठा नक्षत्र.

आर्द्रक, (न०) आर्द्रायां भूमौ जातं-वुन् । अदरक । मूलविशेष.

आर्य, (त्रि०) ऋ+ण्यत् । स्वामी । मालिक । गुरु । सुहृद् । मित्र । श्रेष्ठ । सबसे अच्छा । वृद्ध । बूढा । लायक । नेक । श्रेष्ठ कुलमें उत्पन्न हुआ । पूजाके लायक । (नाट्योक्तिमें) मान्य । उदारचरित । जिसका चित्त शान्त हो । "कर्तव्यही करे, अकर्तव्य कमी न करे, और यथार्थ आचारमेंही रहे वह जन आर्य है".

आर्यक, (पु०) अतिशयेन आर्यः । प्राशस्त्ये कन् । पितामह, दादा । मातामह, नाना । "स्वार्थे कन्" श्रेष्ठ । मान्य । बहुत अच्छा (त्रि०).

आर्यपुत्र, (पु०) आर्यस्य श्वशुरस्य पुत्रः । ससुरका बेटा । पति । गुरुका पुत्र । (नाट्यमें) भर्ता । स्वामी । मालिक.

आर्यमिश्र, (त्रि०) आर्य-मिश्र+अच् । श्रेष्ठ । माननेके लायक । नेक.

आर्यावर्त, (पु०) आर्या आवर्तन्ते अत्र । आ+वृत्+आधारे घञ् । जहां आर्य निवास कर्ते हैं । पवित्र भूमि । विन्ध्य और हिमालयके बीचका देश । पूर्वसमुद्रसे ले पश्चिमसमुद्रके मध्यका देश.

आर्ष, (त्रि०) ऋषेरिदं अण् । जो ऋषिका हो । ऋषिओंसे रचागया धर्मशास्त्र । ऋषिओंसे स्मरण किया गया वेद । दो गौ लेकर कन्या देना यह आर्षविवाह है.

आर्हत, (पु०) अर्हत इदं-अण् । बुद्धविशेष । बुद्धदेवका (त्रि०).

आल, (न०) आलयन्ति भूषयन्ति । आ+अल्-सजाना-आदि । अच् । हरिताल । बहुत (त्रि०).

आलभन, (न०) आ+ल्युट् । स्पर्श । छूना । पाना.

आलम्ब, (पु०) आ+लबि+कर्मणि घञ् । अवलम्ब । आश्रय.

आलम्भ, (पु०) आ+लभ्+घञ्-मुमूच । वध । मारना । "अश्वालम्भं गवालम्भं" इति स्मृतिः । स्पर्श । छूना.

आलय, (पु०) आलीयतेऽस्मिन् । आ+ली+आधारे अच् । जहां छिपरहें । गृह । घर । (अव्ययी०) लयपर्यंत (अव्य०) "पिबत भागवतं रसमालयम्" भागवत । मृत्युतक.

आलयविज्ञान, (न०) आलयं लयपर्यन्तं स्थायि विज्ञानं । लयपर्यन्त रहनेहारा विज्ञान । बौद्धमतमें लयपर्यन्त रहनेहारा । अहंकारका स्थान । विज्ञान (इसके मतमें सम्पूर्ण ज्ञान क्षणिक है, अनुभवसे उत्पन्न हुआ संस्कार भी उसी ज्ञानमें कल्पित है, इस्से पहिले अनुभव की गई स्मृति सम्भवहै).

आलवाल, (न०) आ समन्तात् जललवं आलाति । आ+ला+क । जो चारों ओर जलबिन्दुओंको ग्रहण कर्ता है । वृक्षके मूलमें जल देनेके लिये मट्टी आदिसे बनाया गया जलका आश्रय । एक प्रकारका पुल (सेतु).

आलस्य, (न०) अलसस्य भावः-ष्यञ् । सामर्थ्य होनेपर भी अवश्य कर्तव्यमें उत्साह न करना । "स्वार्थे ष्यञ्" । आलसी.

आलान, (न०) आलीयतेऽत्र । आ+ली+ल्युट् । हाथीके बांधनेका थंभा । रस्सा । बंधन (हरएक प्रकारका).

आलाप, (पु०) आ+लप+करणे घञ् । कथोपकथन । बातचीत । सम्भाषण । बोलना । गुफ्तगू । संगीतकी सात सुरें.

आलि(ली), (स्त्री०) आ+अल्+इन् । सेतु । पुल । एक उमरकी सहेली । सखी । पङ्क्ति । कतार । बागके वृक्षोंकी कतर । सन्तति । भ्रमर । भौंरा । वृश्चिक । विच्छू (पु०).

आलिङ्गन, (न०) आ+लिगि+ल्युट् । प्रीतिपूर्वक आपसमें मिलना.

आलिञ्जर, (पु०) अलिञ्जर एव-स्वार्थे अण् । बडा मट्टीका जलपात्र । मट्ट.

आलिम्पन, (न०) आ+लिप्+ल्युट्-मुमूच । मंगलार्थलेपन । दीवारोंको सफेद करना । आट्टा.

आलीढ, (पु०) धनुर्धारीका पादविन्यासविशेष । खासतौरपर पाँवसे ठहरना । आ+लिह्+क्त । भुक्त । खाया । चाटा । क्षत । घाव किया.

आलीनक, (न०) आ ईषत् प्रयासेन अभिसम्बन्धमात्रेण लीयते द्रवीभवति । आ+ली+क्त-संज्ञायां कन् । आगके छूतेही जो पिघलजाय । धातुविशेष । रांगा । शीशा । "आलीन" ढलाहुआ (त्रि०).

आलेख्य, (न०) आ+लिख्+आधारे ण्यत् । चित्रपट । मूर्ति । नकशा । लिखना.

आलोक, (पु०) आ+लुक्+घञ् । दर्शन । देखना । प्रकाश । स्तुतिवचन.

आलोचन, (न०) आ+लुच्+णिच्+भावे ल्युट् । निश्चय करना कि यह मुझे करना है । विचार । सोचना । सांख्योक्त निर्विकल्पका शुद्धवस्तुविषयक पहिले उपजा ज्ञान.

आवपन, (न०) आ+उप्यते स्थाप्यतेऽत्र ल्युट् । धान रखनेका पात्र । थाली । आ+वप्+णिच् आधारे ल्युट् । सर्व मुण्डन । उस्तरेसे सारे सिरका मुंडाना.

आवरक, (न०) आ+वृ+करणे अप् संज्ञायां वुन् । अपवारक । ढँकना । छिपाना । ढँकनेहारा कपडा आदि । पडदा.

आवरण, (न०) आ+वृ+करणे ल्युट् । चर्ममय फलक । चमडेका फल्टा । ढाल । पडदा । 'भावे ल्युट्' ढँकना । छिपाना । वेदान्तमतमें अविद्या आदिसे ज्ञानके प्रकाशका आच्छादन । छिपना । ज्ञानका पडदा.

आवर्जन, (न०) आ+वृज्+अन । नीचेकी ओर झुकना । देना । जीवना.

आवरण, (त्रि०) आ+वृ+अन । छिपानेवाला । बंद करनेवाला ।–णम् (न०) छिपाना । रोकना.

आवरणशक्ति, (स्त्री०) आवरणस्य शक्तिः । मानसिक अविद्या जो वास्तविक पदार्थके स्वरूपपर पडदा डालदेती है.

आवर्जित, (त्रि०) आ+वृज्+णिच्+क्त । आहृत । लायागया । झुकाया गया । फेंका गया । दियागया । नीचे कियागया.

आवर्त, (पु०) आ+वृत्+भावादौ घञ् । चक्रके स्वरूपसे जलका आपही घूमना । घुंवर । देशविशेष । गोललौटना । घोडेका चिह्न (पीछेकी ओर रोमसमूह) । चिन्ता । मेघराजविशेष । माक्षिक धातु । मक्खिओंका शहत.

आवर्तक, (त्रि०) आवर्त एव स्वार्थे कन् । वार २ घूमनेवाला ।–कः (पु०) एक प्राकारका वादलभेद.

आवर्तन, (न०) आ+वृत्+णिच्+ल्युट् । दूंध आदिका आलोडन (रिडकना-मथना) । औटाना । बिलोना । गालना.

आवर्तित, (त्रि०) आ+वृत्+णिच्-क्त । लौटायागया । अभ्यास कियागया । गुणाकीयागया । जियादा कियागया.

आवश्यक, (त्रि०) अवश्यं भव्यः । वुञ् । नियतकृत्य । जरूरीकाम.

आवसथ, (पु०) आवसति अत्र । वस्+अथच् । निवासस्थान । रहनेकी जगह । घर कुटिया । विश्रामस्थान । आरामकी जहग । व्रतविशेष.

आवाप, (पु०) आ+वप्+कर्मणि घञ्-संज्ञायां कन् । आलवाल । वृक्ष पालनेके लिये जलका कुण्ड । पात्रविशेष । फेंकना । बोना । शत्रुकी चिन्ता । दूसरेके राज्यकी चिन्ता । नीचे ऊपर भूमि । विषमस्थान । प्रधानहोम । बडा होम.

आवारक, (त्रि०) आ+वृ+अक । आच्छादन करनेवाला । छिपानेवाला । निरोध करनेवाला+रोकनेवाला.

आवारिः, (पु०) आ+वृ+इण् । आपण । दुकान । वनेला.

आवास, (पु०) आ+वस्+आधारे घञ् । वासस्थान । घर आदि.

आवाहन, (न०) आ+वह+णिच्-ल्युट् । समीप आनेके लिये देवताओंको बुलाना । नजदीक लाना । बुलाना.

आविक, (न०) अविना तल्लोम्ना निर्मितं ठक् । मेंडके वालोंसे बना कम्बल । ऊनका । मेषसंबन्धी (त्रि०).

आविग्न, (पु०) आ+विज्+कर्तरि क्त । उद्विग्न । घबराहुआ । वृक्षविशेष.

आविद्ध, (त्रि०) आ+व्यध्+क्त । विद्ध । वेधागया । टेढा । शिकस्त दियागया । फेंकागया । दबायागया । मूर्ख.

आविष्करणं–ष्कारः, (न० पु०) आविस्+कृ+अन । प्रकट करना । जाहिर करना । दिखाना.

आविष्ट, (त्रि०) आ+विष्+क्त । भूतादिसे दबायागया। आवेशयुक्त । दबाहुआ । दाखिलहुआ । भराहुआ.

आविस्, (अव्य०) प्रकाश । जाहिर । (आविर्भावः (आविष्कार).

आवी, (स्त्री०) । अवीः एव–स्वार्थे अण् । गर्भवती स्त्री.

आवीत, (त्रि०) । आ+व्ये+क्त । धारित । पहिराहुआ । प्रविष्ट हुआ । चला गया । व्यतीत हुआः

आवीतिन्, (पु०) । आवीत इति । दक्षिण दहिने कंधेपर यज्ञोपवीत धारण करनेवाला ब्राह्मण.

आवुक, (पु०) अवति पालयति-उण्-संज्ञायां कन् । (नाट्योक्तिमें) जनक । पिता.

आवृ, स्वा० क्र्या० चु० उभ० । आच्छादन करना । ढांकना । छिपाना । वृणोति । वृणाति । वरयति.

आवृज्, भ्वा० आ० । देना । बकशना । (ved) किसीकी ओर लौटना । चुन्ना । णिचि झुकना । आवर्जयति.

आवृत्, भ्वा० आ० । लौटना । घूमना । आवर्तते । ववृते । अवर्तिष्ट.

आवृत, (त्रि०) आ+वृ+क्त । ढकाहुआ । आच्छादन कियागया.

आवृत्त, (त्रि०) आ+वृत्+क्त । हटाहुआ । निवृत्त । लौटाहुआ । अभ्यस्त । गुणित.

आवृत्ति, (स्त्री०) आ+वृत्+क्तिन् । अभ्यास । वारवार गुणना । लौटना.

आवेग, (पु०) आ+विज्+घञ् । घबराहट । चिन्ता । बेआरामी । शोक । दुःख । भय । जल्दी । वृद्धदारकका वृक्ष.

आवेश, (पु०) आ+विश्+घञ् । अहङ्कार । तकवा । संरम्भ । क्रोध । गुस्सा । अभिनिवेश । हठ । अनुप्रवेश । दाखिल होना । जैसे भूतका दाखिल होना । ग्रहोंका डर । भूतादिसे रोग.

आवेशिक, (त्रि०) आवेशे गृहे भवः आगतो वा ठञ् । घरका । घरमें आगया । असाधारण स्वकीयबान्धवादि । खास अपना रिश्तेदार वगैरह । अतिथि । महमान । आदरवाला.

आवेष्टक, (पु०) आवेष्टयति–ण्वुल् । आवरणकारक । ढाँकनेहारा प्राचीर (सफील) वगैरह (वेढा).

आशङ्का, (स्त्री०) आ+शकि+अ । त्रास । डर । संकोच । संशय.

आशय, (पु०) आ+शी+अच् । अभिप्राय । मतलब । आधार । आसरा । ऐश्वर्य । धन । पनसका वृक्ष । (वैद्योक्त) न पचनेकी जगह । अजीर्णस्थान । कर्मसे उपजा वासनारूप संस्कार । धर्मअधर्मरूप अदृष्ट । "आधारे अच्" आशयसहित चित्त । "भावे अच्" । शयन । सोना । स्थान.

आशंसा, (स्त्री०) आ+शंस्+अ । ऐसी चीजपानेकी खाहिश कि जो पास नहिं । चाहीगई वस्तुकी प्रार्थना । चाह । शक्र । आशा । उम्मेद । खयाल.

आशंसु, (त्रि०) आ+शंस्+उ । इच्छावान् । चाहनेहारा । चाही गई वस्तुके पानेकी इच्छा कहनेहारा । उम्मेदवार.

आशा, (स्त्री०) आसमन्तात् अश्नुते । अश्+अच् । उम्मेद । दिशा । दीर्घाकाङ्क्षा । । लम्बी खाहिश । तृष्णा । लालसा । चाह.

आशान, (त्रि०) आ+श्यै+क्त । ईषद्घनीभूत । थोडासा इकट्ठा होगया । सूकाहुआ.

आशास्, अ० आ० । आशीर्वाद देना । वर्कत देना । आशास्ते । आशासाञ्चक्रे.

आशित, (त्रि०) आ+अश्-क्र्यादि+क्त । भुक्त । खाया । भोजनसे तृप्तहुआ.

आशिस्, (स्त्री०) आ+शास्+क्विप् । अत इत्वम् । आशीर्वाद । नान्दी.

आशीर्वाद, (पु०) आशिषो वादः वचनं । आशीर्वचनं । वद्+घञ् । मंगलप्रार्थन । भलाईकी दरखास्त । भलाईके वचन.

आशीविष, (पु०) आशिषि आस्यां वा विषमस्य-पृषो० । जिसकी दाढमें जहर हो । सर्प । साँप.

आशुग, (पु०) आशु+गम्+ड । वायु । हवा । वाण । सूर्य । सूरज । शीघ्रगामी । जल्दीजानेहारा (त्रि०).

आशुतोष, (त्रि०) अश्-फैलना+उण् । आशु-शीघ्रं तोषो (तुष्+घञ्) यस्य । शीघ्र प्रसन्न । जल्दी खुश होगया । महादेव । जल्द प्रसन्न होनेहारा । सहजहीसे प्रसन्न हुआ.

आशुशुक्षणि, (पु०) आ+शुष्+सन्-अनि । अग्नि । आग । वायु । हवा.

आशौच, (न०) अशौचं एव-स्वार्थे अण् । वैदिककर्मके अयोग्यदशा । अशुद्धि । नासफाई । "दशाहं शावमाशौचं ब्राह्मणस्य" इति मनुस्मृति.

आश्चर्य, (त्रि०) आ+चर्+ण्यत्+सुट् । विचित्र । हैरान करनेवाला । वडी भारी वात । अजी.

आश्म, (त्रि०)–श्मी (स्त्री०) अश्मन्+अण् । पत्थरका बना हुआ । पथरीला.

आश्यै, भ्वा० आ० । सूकजाना । श्यायते । शिश्ये । आश्यास्त । श्यानः.

आश्रपण, (न०) (आ+श्रा+णिच्+ल्युट्) पकाना । उबालना.

आश्रम, (पु०) (न०)आ+श्रम्+आधारे घञ् । शास्त्रोक्त ब्रह्मचर्य आदि धर्मभेद । मुनिओंका वासस्थान । मठ । विद्यार्थिओंका वासस्थान । वन । कलिमें ब्रह्मचर्य और वानप्रस्थ नहिं होसक्ते इस्से गृहस्थ और संन्यास दोही आश्रम हैं । "गृहस्थो भिक्षुकश्चैव आश्रमौ द्वौ कलौ युगे" इति स्मृतिः । सम्पूर्णक्लेशोंका नाश होनेपर विश्रामका स्थान परमेश्वर.

आश्रय, (पु०) आश्रीयतेऽसौ । आ+श्रि+कर्मणि अच् । आसरा । सामीप्य । नजदीकी । आधार । गृह । घर । प्रवल । जोरावर । शत्रुका आसरा लेना (सन्धिआदि ६ में एक गुण).

आश्रयाश,(पु०)आश्रयं आधारं काष्ठं अश्नाति । अश्+अण् । अपने आधार अर्थात् लकडीको जो खाले । वह्नि । आग.

आश्रव, (पु०) आशृणोति वाक्यं । आ+श्रु+अच् । जो वचनको भलीभान्ति सुनले । अङ्गीकार । कवूल । क्लेश । तकलीफ । दोष । आज्ञाकारी । फरमावरदार.

आश्रित, (त्रि०) आ+श्रि+क्त । आश्रयप्राप्त । आसरेमें आगया शरणागत । शरणमें आपडा । आधेय । आसरे पर रहनेहारा.

आश्रुत, (त्रि०) आ+श्रु+क्त । अङ्गीकृत । कवूल कियागया । सुनागया.

आश्लेष, (पु०) आ-ईषदेकदेशेन श्लेषः सम्बन्धः । आ+श्लिष्+घञ् । एकदेशसम्बन्ध । एकओरसे मिलाहुआ.

आश्व, (न०) अश्वानां समूहः-अण् । अश्वसमूह । घोडोंका झुण्ड अश्वैरुह्यते अण् । जो घोडोंसे चलाया जाय । रथ । गाडी.

आश्वयुज, (पु०) अश्वयुजी अश्विनीनक्षत्रयुक्ता पौर्णमासी यस्मिन् मासे अण् । जिस महीनेमें अश्विनी नक्षत्रयुक्त पूर्णिमा हो । आश्विनमास । अस्सूका महीना.

आश्वास, (पु०) आ+श्वस्+घञ् । आश्रयदान । डरेहुएका डर दूर करनेके लिये धैर्य देना । हौंसला देना.

आश्विन, (पु०) आश्विनी पूर्णिमा यस्मिन् मासे अण् । अस्सूका महीना.

आश्विनेय, (पु०) द्विव० । अश्विन्याः अश्वाकारवत्याः सूर्यपत्न्याः संज्ञायाः अपत्ये ढक् । सूर्यकी स्त्री–संज्ञाके पुत्र । स्वर्गके वैद्य । अश्विनीकुमार.

आश्वीन, (त्रि०) अश्वेन एकाहेन अतिक्रम्यते-खञ् । घोडेका एक दिनमें पहुंचनेका स्थान । घोडेकी एक मंजिल.

आषा(शा)ढा(डा), (स्त्री०) उत्तराषाढा और पूर्वाषाढा दोनो नक्षत्र (तारे).

आषाढ–ड, (पु०) वैशाखसे तीसरा मास । हाड.

आषाढ, (पु०) आषाढी पूर्णिमाऽस्मिन् मासे अण् । आषाढ । (हाड) महीना.

आष्टं, (न०) अश् व्याप्तौ+ष्ट्रन् । आकाश । अन्तरिक्ष । अवकाश.

आष्टमः, अष्टमो भागः, अष्टम–ज । आठवां भाग । हिस्सा.

आस्, अ० आ० । आस्ते । आसाञ्चक्रे । आसिष्ट । आसितुं । आसित । आसीन । बैठना । विश्राम करना । निवास करना.

आस्, बैठना-अदा० आत्म० सक० सेट् । आस्ते । आसिष्ट.

आस्, (अव्य०) स्मरण । दूर करना । कोप । सन्ताप । अहंकारसे झिडकना.

आसक्त, (त्रि०) आ+सञ्ज्+क्त । फसाहुआ । निरत । सब काम छोडकर एकहीमें लगजाना । निरन्तर । नित्य (न०).

आसङ्ग, (न०) आ+सञ्ज्+घञ् । अभिनिवेश । एकबातका हठ । भोगकी अभिलाषा करनेका अभिमान । बचाना । संग.

आसत्ति, (स्त्री०) आ+सद्+क्तिन् । संसर्ग । मेल । लाभ । निकट । न्यायमतमें अन्वययोग्य दोनों पदार्थोंको विना फरक बोलना.

आसंदः, (पु०) आसीदति अस्मिन् प्रलयकाले । निपातः । प्रलयकालमें संसार जिसमें समाजाता है । विष्णु । वासुदेव ।-दी (स्त्री०) आसद्यते अस्याम् । बैठाजाता है जिसपर । छोटा कौच । चौकी । आरामकुरसी.

आसन, (न०) आस्+ल्युट् । उपवेशन । बैठना । "आधारे ल्युट्" । पीठ आदि चौकी वगैरह । हाथीका स्कन्धदेश । सन्धि आदि राजाके ६ गुणोंमेंसे एक (शत्रुके किले आदिको रोक कर ठहरना) । आराम करना । आठ योगके अंगोंमेंसे तीसरा (पद्मासनादि) । जीरकका वृक्ष (पु०).

आसन्न, (त्रि०) आ+सद्+क्त । निकटस्थ । नजदीक उपस्थित.

आसव, (पु०) आसूयते । आ+सू+कर्मणि अण् । मद्यमात्र । हरएक तरहकी शराब । गन्नेका रस जो पका नहिं.

आसादन, (न०) आ+सद्+णिच्+ल्युट् । सन्निधापन । रखदेना । हमला करना । मिलना । सामने जाना । पाना । पूरा करना.

आसार, (पु०) आ+सृ+घञ् । धारासम्पात । जोरसे वर्सना । छमाछम वर्सना । जोरकी वर्षा । फैलना । सेनाओंका चारों ओर फैलना । "करणे घञ्" । मित्रका बल.

आसिकः, (पु०) असिः प्रहरणं अस्य–ठक् । खड्ग जिसका शस्त्र है । तरवारधारी.

आसिका, (स्त्री०) पर्यायेण आसनं, आस–ण्वुल् । बैठनेका नियम । नियमानुसार बैठजाना.

आसिच्, तु० प० । पानीका किसीपर वा किसीमें बहाना । सींचना । गीला करना । भरदेना.

आसित, (त्रि०) आस्+क्त । बैठगया । आराम किया हुआ.

आसिधारं, (न०) असिधारा इव अस्ति अत्र–अण् । तरवारकी धारपर चलनेकी भांति एक प्रकार कठिन व्रत.

आसुति, (स्त्री०) आ+सु+क्तिन् । मद्यनिषादन । शराब निकालना.

आसुर, (पु०) असुरसम्बन्धी । दैत्यका । यज्ञ न करनेहारा । आठ प्रकारके विवाहोंमेंसे एक । जिसमें वर, कन्या, पिता, वा उसके सम्बन्धिओंको धन देकर वधू लेता है । जैसे मोलपर वस्तु खरीदते हैं.

आसेचन, (त्रि०) न सिच्यते तृप्यते मनोऽत्र । आधारे ल्युट् । जहां मन नहिं रजता । बहुत सुन्दर दर्शन । छिडकाव । सींचना.

आसेध, (पु०) आ+सिध्+घञ् । राजाकी आज्ञासे दूसरे स्थानमें जानेकी रोक । कैद.

आसेवा, (स्त्री०) आ+सेव्+अ । अभिलाषपूर्वक बार बार प्रवृत्ति । एक कामको बारबार करना । बारबार अच्छीतरह सेवा करना.

आस्कन्दन, (न०) आस्कन्द्यतेऽत्र । आ+स्कन्द्–आधारे ल्युट् । निरादर करना । सुकाना । आक्रमण । हमला करना । आधारे घञ् । युद्ध.

आस्तर, (पु०) आ+स्तॄ–करणे अप् । विच्छौना । हाथीकी पीठका कम्बल । झुल । "आस्तरणम्" इसी अर्थमें होताहै.

आस्तावः, (पु०) आ+स्तु+घञ् । यज्ञमें मन्त्रपाठ करनेका स्थान । स्तुति । वैदिक गीत.

आस्तिक, (त्रि०) अस्ति परलोक इति मतिर्यस्य–ठक् । परलोक है ऐसी जिसकी बुद्धि हो । परलोकके होनेपनको माननेहारा । जरत्कारु मुनिका बेटा । जो वेद, शास्त्र, और ईश्वरको स्वीकार करे । "आस्तीक" इसी अर्थमें होताहै.

आस्तीर्ण, (त्रि०) आ+स्तॄ+क्त । फैलाहुआ । विस्तीर्ण.

आस्था, (स्त्री०) आ+स्था+अङ् । ध्यान । खयाल । पर्वाह । आदर । आशा । उम्मेद । सहारा । विश्वास । भरोसा । स्थिति । यत्न । "आधारे अङ्" । प्रतिष्ठा । इज्जत । स्थान । जगह.

आस्थान, (न०) आस्थीयतेऽत्र आस्था । आधारे ल्युट् । जहां बैठतेहैं । सभा । सहारा । चढना । यत्न । कोशिश । विश्रामस्थान । आरामकी जगह । "आस्थानी" भी.

आस्थित, (त्रि०) आ+स्था+क्त । निवास किया । ठहरा । चढा । पहुंचा । मानगया । बडे यत्नसे एक काममें लगगया । घिराहुआ । फैलाहुआ.

आस्पद, (न०) आ+पद्+घ-सुट् च । प्रतिष्ठा । इज्जत । पद । दर्जा । स्थान । कृत्य । काम । प्रभुत्व । बडापन । जगह । कमरा । लग्नसे दसवाँ स्थान (ज्योतिष्शास्त्रके अनुसार).

आस्फालन, (न०) आ+स्फल्-चलना-रगडना—णिच् ल्युट्। चलन । चलाना । घसना । पछाडना । रगडना । छट्टेमारना.

आस्फोट, (पु०) आ+स्फुट्+अच् । अर्कवृक्ष । पहिलवानोंका भुजाओंपर हाथसे ठोकना । तालठोकना । (कुश्ती-करनेके समय खम ठोकतेहैं) । कापना । नवमल्लिकावृक्ष.

आस्माक, (त्रि०)–की (स्त्री०) आस्माकीन । अस्मद् अण्–खञ् अस्माकादेशः । हमारा । हम लोगोंका.

आस्य, (न०) अस्यते ग्रासोऽत्र । अस्+आधारे ण्यत् । जहां ग्रास डाला जाताहै । मुख । मुंका मध्यभाग । मुखका (त्रि०).

आस्यपत्र, (न०) आस्यमेव पत्रं अस्य । जिसका मुखही पत्र हो । पद्म । कमल.

आस्या, (स्त्री०) आस्+भावे क्यप् । स्थिति । आसन । ठहरना । निवास.

आस्यासव, (पु०) आस्यस्य आसवः प्रसवः ६ त० । मुंका मद । लाला । थुथु । लार.

आस्रव, (पु०) आस्रवति मनोऽनेन । करणे अप् । जिस्से मन वह जाताहै । क्लेश । दुःख । तकलीफ । "भावे अप्" । निरन्तर वहना.

आस्वनित, आस्वान्त (त्रि०) आस्वन्+क्त । शब्दित । शब्द किया गया । बुलाया गया.

आस्वाद, (पु०) आ+स्वद्+कर्मणि घञ् । रस । सुआद । "भावे घञ्" । स्वाद लेना.

आहकः, (पु०) आ+हन्+ड–कन् । एक प्रकारकी नाककी व्याधि.

आहत, (त्रि०) आ+हन्+क्त । ताडन कियागया । चोट दियागया । ज्ञात । जानाहुआ । ढक्का । बाजा (पु०) । पुराना वा नया कपडा (न०).

आहन्, अ० प० । ताडन करना । मारना । अपने शरीरका कोई अंग कर्म होनेसे आत्मनेपद होजाता है । जैसे आहते शिरः । हन्ति । जघान । अवधीत् । हतः.

आहव, (न०) आहूयन्तेऽरयोऽत्र । आ+ह्वे+अप्-सम्प्रसारणे गुणः । जहां शत्रु बुलाये जातेहैं । युद्ध । लडाई । आहूयतेऽत्र "आ+हु+अप्" । जहां देवताओंको दियाजाताहै । यज्ञ । होम.

आहवनीय, (पु०) आहवनं अर्हति-छ । गृहस्थीके अग्निसे लेकर होमके लिये संस्कार कियागया अग्नि । "आ+हु+अनीयर्" । हवनीय । हवनके योग्य । होमके लायक.

आहार, (पु०) आ+हृ+घञ् । आहरण । लाना । किसी चीजका गलेके नीचे करना । भोजन । खाना । "कर्मणि घञ्" अन्नादि.

आहार्य, (त्रि०) आ+हृ+ण्यत् । आहरणीय । खानेके लायक । लानेयोग्य । आगन्तुक । अतिथि । नेपथ्य । तमाशेकी जगह । कृत्रिम । बनावटी । रसादिको प्रकाश करनेहारे जेवर वगैरह.

आहाव, (पु०) आ+ह्वे+घञ्-सम्प्रसारणे-वृद्धिः । खूएके पास गौ आदिके पानी पीनेके लिये पत्थर आदिसे रचागया जलका स्थान । चुवच्चा । लडाई । बुलाना । आह्वान.

आहित, (त्रि०) आ+धा+क्त । न्यस्त । रख्खागया । स्थापित । टिकायागया । डालाहुआ । कियाहुआ । संस्कार कियागया.

अहितुण्डिक, (त्रि०) अहितुण्डेन दीव्यति-ठक् । साँपके मुंसे खेलताहै । साँप पकडनेहारा । मदारी.

आहुति, (स्त्री०) आ+हु+क्तिन् । देवताके उद्देशसे मन्त्र पढकर अग्निमें घी डालना । देवताके लिये होममें घी दान करना.

आहूतिः, (स्त्री०) आ+ह्वे+क्तिन् । बुलाना । पुकारना.

आहेय, (न०) अहेरिदं ढक् । साँपकी कुञ्ज । विष (जहर)-आदि.

आहो, (अव्य०) प्रश्न । सवाल । विकल्प । विचार । सन्देह.

आहोपुरुषिका, (स्त्री०) अहमेव पुरुषः शूरः=अहोपुरुषः तस्य भावः कन्-स्त्रीत्वात् टाप् । अहंकारसे पैदाहुआ । अपनी बडाईका खयाल । दर्पजन्य आत्मोत्कर्ष । सम्भावना.

आहोस्वित्, (अव्य०) विकल्प । सन्देह । प्रश्न । सवाल । जाननेकी इच्छा.

आह्निक, (त्रि०) अह्ना साध्यं ठञ् । दिनका काम । स्नान सन्ध्या तर्पण आदि । भोजन (न०) समूह । ग्रन्थका हिस्सा । सदाकी क्रिया.

आह्लाद, (पु०) आ+ह्लाद्+घञ् । आनन्द । प्रसन्नता ।

आह्वय, (पु०) आ+ह्वे+श । नाम । जूआ.

आह्वान, (न०) आ+ह्वेञ्+ल्युट् । आकारण । आहूति । बुलाना.

आह्वे, भ्वा० प० । पुकारना । बुलाना । आमन्त्रण करना । अहंकारसे बुलाना । ह्वयति । जुहाव । अह्वत् । अह्वत.

इ

इ, (पु०) अस्य विष्णोरपत्यम् । अ+अञ् । विष्णुकी सन्तान । कामदेव । अस्येदम् । अ+इञ् । भेद । क्रोधमें कहाहुआ वचन । तिरस्कार । दया । खेद । विस्मय । हैरानी । निन्दा । सम्बोधन.

इ, जाना । भ्वा० पर० सक० अनिट् । अयति । ऐषीत्.

इ(इण), अ० प० । जाना । पास आना । ऐति । इयाय । अगात् । एतुं । इत.

इकू, याद करना । अधिपूर्वक एव कित् । अदा० पर० सक० अनिट् । अध्येति । अध्यैषीत् । अधीयन्.

इक्षु, (पु०) इष्+क्सु । गन्ना । मीठे रसवाला पौंडा.

इक्षुकाण्ड, (पु०) इक्षोः काण्ड इव काण्डोऽस्य । काशवृक्ष । काही । गन्ना.

इक्षुपत्र, (पु०) इक्षोः पत्रं इव पत्रं अस्य । जिसका पत्ता गन्नेकासा हो । धान्यभेद । जुआर.

इक्षुमती, (स्त्री०) इक्षुस्तद्रसोऽस्त्यस्यां-मतुप् । जिस्में गन्नेकासा रस हो । एक नदी.

इक्षुर, (पु०) इक्षुं इक्षुगन्धं राति-क । तालमखाना । कोकिल वृक्ष.

इक्षुसार, (पु०) ६ त० । गुड । गन्नेका सार.

इक्ष्वाकु, (पु०) इक्षु इच्छां आकरोति । इक्षु+आ+कृ+उ-कटुतुम्बी । वैवस्वतमनुका बेटा । सूर्यवंशी प्रथम राजा.

इक्ष्वालिका, (स्त्री०) इक्षुरिव अलति व्याप्नोति-ण्वुल् । काश । काही.

इख्, जाना-इदित्-भ्वा० पर० सक० सेट् । इङ्खति । ऐङ्खीत्.

इग्, जाना-इदित्-भ्वा० पर० सक० सेट् । इङ्गति । ऐङ्गीत्.

इङ्, पढना- अधिपूर्व एव ङित् । अदा० आत्म० सक० अनिट् । अधीते । अध्यैष्ट-अध्यगीष्ट । अधिजगे । अध्यैष्यत-अध्यगीष्यत.

इङ्गित, (न०) इगि+क्त । अभिप्रायको प्रकाश करनेहारी शरीरकी क्रिया । मनोभिप्राय । आशय । संकेत । इशारह.

इङ्गुद, (पु०) इगि+उ-इङ्गुः रोगस्तं यति-दो+क । तापसतरु । तपस्वियोंका वृक्ष हिंगोट । "इङ्गुदी" इसी अर्थमें.

इच्छा, (स्त्री०) इष्+श । यह मेरे लिये हो इस प्रकारका मनोधर्मविशेष । सुख और उसका साधन । आत्माका धर्म । चाह.

इज्य, (पु०) इज्यतेऽसौ । यज्+क्यप् । सुरगुरु । देवगुरु । बृहस्पति । नारायण । परमात्मा । पूजाके लायक (त्रि०).

इज्या, (स्त्री०) यज्+भावे क्यप् । स्त्रीत्वात् टाप् । यज्ञ । दान । मिलाप "कर्मणि क्यप्" । प्रतिमा । गौ । कुट्टिनी.

इडा, (स्त्री०) इल्+अच्-वा । लस्य । डत्वम् । गौ । वाणी । भूमि । स्वर्ग । बुधकी स्त्री । शरीरके वाम भागकी टेढी नाडी.

इण्, जाना-अदा० पर० सक० अनिट् । एति । ऐषीत्.

इत, (त्रि०) इण्+क्त । गया । स्मरण किया हुआ । पाया हुआ । गत । स्मृत । प्राप्त.

इतर, (त्रि०) इना कामेन तरः । तॄ+अ । नीच । भिन्न । पामर । छोटे दरजेका । दूसरा.

इतरथा, (अव्य०) और प्रकारसे । अन्यथा.

इतरेतर, (त्रि०) इतर+द्वित्वम् । अन्योन्य । आपसमें परस्पर । मिथः.

इतरेद्युस्, (अव्य०) अन्यस्मिन्नहनि । दूसरे दिन । अगले दिन । और रोज.

इतस्, (अव्य०) यहांसे । मुझसे इस ओर । यहां । इधर । इसमें । अबसे.

इतस्ततः, (अव्य०) अस्मिन् तस्मिन् । इसमें उसमें । इधर उधर.

इति, (अव्य०) हेतु । प्रकाशन । निदर्शन । प्रकार । समाप्ति । प्रकरण । स्वरूप । निकटता । मत । प्रत्यक्ष । अवधारण । व्यवस्था । परामर्श । मान । प्रारम्भ । इसतरह । शब्दके स्वरूपको प्रकाश करनेहारा । प्रातिपदिकार्थद्योतक-इसके योगमें प्रथमा विभक्ति होती है । कभी कभी द्वितीयाके साथभी आता है । वाक्यके अर्थको प्रकाश करनेहारा.

इतिकर्तव्यता, (स्त्री०) इति कृत्वा इदं कर्तव्यं तस्य भावः । यह करके इसे करेंगे ऐसा काम करनेका क्रम । अवश्य करनेलायक.

इतिमध्ये, (अव्य०) अस्मिन् काले । इतनेमें.

इतिह, (अव्य०) उपदेशपरम्परा । देरसे सुनाजाता उपदेश । सुना । सुनाया अच्छा वचन । जैसे "इस वटपर भूत रहता है" यह सुनतेही चले आते हैं । किन्तु किसीने देखा नहीं.

इतिहास, (पु०) इतिह पारम्पर्योपदेश आस्तेऽस्मिन् । इतिह+आस+घञ् । "जिसमें पुरुषके चार अर्थों (धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष) का उपदेश प्राचीन कथाओंसे युक्त हो" ऐसे लक्षणसे युक्त पुराने वृत्तान्तका प्रकाशक । महाभारत, रामायण, श्रीभागवत आदि ग्रन्थ.

इत्थम्, (अव्य०) अनेन प्रकारेण । इस प्रकारसे । इस तरह । इस रीति । ऐसे.

इत्य, (त्रि०) इण्+क्यप्-तुक्च । प्राप्य । पहुंचनेके लायक जानेयोग्य.

इत्वर, (त्रि०) इण्+क्वरप् । पथिक । नीच । क्रूरकर्मा । दयारहित काम करनेहारा । नपुंसक (पु०) सत्वर । काला । तेज.

इत्वरी, (स्त्री०) इण्+क्वरप्+ईप् । अभिसारिका । जो प्यारेको मिलनेकी इच्छासे संकेत किये गये स्थानपर जाती है । व्यभिचारिणी । बदमाश औरत.

इदु, ऐश्वर्य होना-इदित् । भ्वा० पर० अक० सेट् । इन्दति । ऐन्दीत्.

इदम्, (त्रि०) (अयं-पुं०; इयं-स्त्री०; इदं-न०) यह किसी ऐसी चीजको जतलाता है जो कहनेहारेके नजदीक हो । सामने दिखलाई देरहा । चराचर । यह । यहां.

इदानीम्, (अव्य०) सम्प्रति । अब । इसवक्त । अभी । वरुक । अव.

इद्ध, (न०) इन्ध्+भावे क्त । आतप । धूप । दीप्ति । प्रकाश । आश्चर्य । "कर्तरि क्त" वृद्ध । बूढा । निर्मल । साफ (त्रि०).

इध्म, (न०) इन्ध्+मक् । समिधि । लकडी । आग जलानेके लिये काष्ठ.

इध्मः, (पु०) इध्यते अग्निः अनेन, इंध्+मक् । जिसके द्वारा अग्नि भडकती है । लकडी । यज्ञमें काम आनेवाली लकडी.

इन, (पु०) इण्+नक् । सूर्य । प्रभु । मालिक । नृपविशेष । एक राजा.

इन्दि(न्दी)वरं, (न०) इंदी=लक्ष्मीः तस्याः वरं=वरणीयं । अभीष्टम् । लक्ष्मीका पियारा । नीलोत्पल । लक्ष्मीके स्वीकार करने योग्य । नीला कमल.

इन्दिरा, (स्त्री०) इदि+इर । लक्ष्मी । धनकी देवी.

इन्दु, (पु०) उनत्ति चन्द्रिकया भुवं क्लिन्नां करोति । उन्द्+उ आदेरिच्च । जो चांदनीसे पृथिवीको गीलाकरदे । चन्द्र । चांद । मृगशिर नक्षत्र । एकसंख्या । कर्पूर । कपूर.

इन्दुकलिका, (स्त्री०) इन्दुरिव शुभ्रा कलिका यस्याः । चांदकी नाँई जिसकी कली सपेद हो । केतकीका पुष्प । केवडेका फूल.

इन्दुकान्त, (पु०) इन्दुः कान्तोऽभीष्टोऽस्य । जिसे चांद पियारा लगे । चन्द्रकान्तमणि । यह चांदके सामने पिघलतीहै.

इन्दुजनक, (पु०) ६ त० । चांदको पैदा करनेवाला समुद्र.

इन्दुजा, (स्त्री०) इन्दोर्जायते । जन्+ड । चांदसे निकली नर्मदा नदी.

इन्दुपुत्र, (पु०) ६ त० । बुधग्रह । चांदका पुत्र.

इन्दुभृत्, (पु०) इन्दुं बिभर्ति । भृ+क्विप् । शिवजी महाराज.

इन्दुमती, (स्त्री०) इन्दु+प्राशस्त्ये मतुप् । पूर्णिमा । अजराजकी स्त्री.

इन्दुरत्न, (न०) ६ त० । चांदका रत्न । मुक्ता । मोती । (चांददेवता होनेसे).

इन्दुलेखा, (स्त्री०) इन्दोर्लेखेव । चांदकी कला । सोमलता । अमृतालता । यमानिकालता.

इन्द्र, (पु०) इदि+र । देवताओंका स्वामी । परमेश्वर । ज्येष्ठानक्षत्र । बारह सूर्योंमेंसे एक । चौदहकी संख्या.

इन्द्रक, (न०) इन्द्रस्य कं सुखं इव कं यत्र । जहां मानों इन्द्रका सुख है । सभागृह । सभाका घर । कमेटीघर.

इन्द्रकील, (पु०) इन्द्रस्य कील इव अत्युच्चत्वात् । बहुत ऊंचा होनेसे इन्द्रकी मेख है । मन्दरपर्वत.

इन्द्रगोप, (पु०) इन्द्रो गोपो रक्षकोऽस्य वर्षाभवत्वात् । वर्षामें उपजनेसे इन्द्र जिसकी रक्षा कर्ताहै । इन्द्रसे रक्षा किया गया लाल रंगका कीडा । पटवीजना.

इन्द्रजाल, (न०) इन्द्रेण कौशलाद्यैश्वर्येण जालं द्रष्टुर्नेत्रावरणम् । आश्चर्य चतुराईसे नेत्रोंपर पड्दा डालदेना जिसमें वस्तुका असली स्वरूप नहिं दीख सक्ता । मन्त्र वा औषध आदिसे वस्तुका और स्वरूपसे नजर आना । कुहकवाजी । मायाका काम । छल.

इन्द्रजालिक, (त्रि०) इन्द्रजालं शिल्पं अस्य । ठन् । कुहककारी । माया रचनेहारा । मदारी । छलिया । कुछका कुछ दिखानेवाला.

इन्द्रजित्, (पु०) इन्द्रं जितवान् । जि–भूते क्विप् । जो इन्द्रको जीतगया रावणसुत । रावणका बेटा । मेघनाद.

इन्द्रधनुस्, (न०) इन्द्रस्य धनुरिव । मानो इन्द्रका धनुष् है । आकाशमें वायुसे चलाई गई धनुष् स्वरूपमें वदलीं सूर्यकी किरणें.

इन्द्रनील, (पु०) इन्द्र इव नीलः । इन्द्रकी नाँई नीला । जो दूधमें डालनेसे उसे नीला बनादे । पन्ना । मरकतमणि । नीलम.

इन्द्रप्रस्थ, (न०) इन्द्रस्य तत्स्थानमेरोः प्रस्थ इव । इन्द्रके स्थान सुमेरु पर्वतकी मानों एक चोटी है । दिल्ली शहर.

इन्द्रवंशा, (स्त्री०) वर्णवृत्त छन्दोभेद । बारह अक्षरोंके प्रतिपादवाला छन्दका भेद.

इन्द्रवज्रा, (स्त्री०) वर्णवृत्त । ग्यारह अक्षरोंके प्रतिपादवाला छन्दोभेद.

इन्द्रशत्रु, (पु०) इन्द्रः शत्रुः शातयिता यस्य । इन्द्र जिसका शत्रु है । वृत्रासुर.

इन्द्रसुत, (पु०) ६ त० । जयन्त । इन्द्रका बेटा । मध्यम पाण्डव । अर्जुन । अर्जुनवृक्ष । वाली नाम वानर.

इन्द्राणी, (स्त्री०) इन्द्रस्य पत्नी–ङीष्-आनुक् च । इन्द्रकी स्त्री । शची । सिन्धुवारवृक्ष । मोटी इलायची । छोटी इलायची । गौरी आदि सोलह माताओंमें पहिली माता । एक प्रकारकी तना.

इन्द्रायुध, (न०) इन्द्रस्य आयुधं धनुरिव । मानों इन्द्रका धनुष् है । इन्द्रका धनुष् । सूर्यकी किरणोंसे उपजताहै.

इन्द्रिय, (न०) इन्द्रस्य प्रत्यगात्मनः अनुमापकं लिङ्गम् । सर्वव्यापी परमात्माको जतानेका चिह्न (निशान) । "इन्द्र+घ" । ईश्वरसे रचगयां । ज्ञान और कर्मके साधन आंख वगैरह । चक्षुः, श्रोत्र, घ्राण, रसना, त्वचा, (ज्ञानेन्द्रिय) । वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ (कर्मेन्द्रिय) प्राण, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार.

इन्द्रियार्थ, (पु०) इन्द्रियाणां अर्थो विषयः । इन्द्रियोंके विषय (जानेलायक) शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध (ये पाँच विषय).

इन्द्रियायतन, (न०) ६ त० । इन्द्रियोंका विश्रामस्थान ।

इन्द्रियार्थसन्निकर्ष, (पु०) इन्द्रियाणां अर्थैः (स्वस्वविषयैः सह) सन्निकर्षः सम्बन्धः । इन्द्रियोंका अपने अपने विषयोंके साथ सम्बन्ध (रिश्ता) । प्रत्यक्ष ज्ञानका कारण इन्द्रिय और विषयका संयोग (मेल).

इन्ध्-चमकना, रुधादि० आ० अक० सेट् । इन्धते । ऐन्धिष्ट.

इन्धन, (न०) इध्यतेऽग्निरनेन । इन्ध्-करणे ल्युट् । जिससे आग जलतीहै । काष्ठ । लकड़ी । बाल्लन.

इभ, (पु०) इण्+भ-किच । हस्ती । हाथी । आठकी संख्या । फील.

इभकणा, (स्त्री०) इभोपपदा कणा । शाक० त० । गजपिप्पली । पीपल.

इभनिमीलिका, (स्त्री०) इभं हस्तिनं अपि निमीलयति (सेवनात् निद्रापयति) । जिसका सेवन करनेसे हाथीकोभी नींद आजाय । भङ्गा । भांग । विजया । भांगबूटी.

इभपालक, (पु०) इभं पालयति । जो हाथीको पालताहै । हस्तिपक । महौत.

इभ्य, (त्रि०) इभं हस्तिनं अर्हति-यत् । बड़े धनवाला । आढ्य । राजा.

इभ्या, (स्त्री०) इभ+यत्+टाप् । हस्तिनी । हथिनी.

इयत्, (त्रि०) इदं परिमाणं अस्य । इदम्+वतुप् । एतावत् । इतना.

इयत्ता, (स्त्री०) इयतो भावः तल् । इतनेका होना । सीमा । हद्द । परिमाण । माप । संख्या । गिनती.

इरम्मद, (पु०) इरया जलेन माद्यति वर्धते । इरा+मद्+खश् ह्रस्वः मुम्च । जो पानीसे बढे । वज्राग्नि । बिजली । वाडवानल । समुद्रकी आग (जो घोडीकी शकलमें है).

इरा, (स्त्री०) इण्+रक् । इं-कामं राति । रा+क वा । भूमि । पृथ्वी । वाणी । सुरा । मद्य । शराब । जल । अन्न । कश्यपकी स्त्री.

इरावती, (स्त्री०) इरां भूमिं अवति । अव+शतृ+ङीप् । वटपत्रवृक्ष । एक नदीका नाम जो पंजाबमें है, जिसे रावीभी कहते हैं । वह पत्थरोंकोभी फाडकर जमीनपर आतीहै.

इरिण, (न०) ऋ+इन्+किच । ऊषरभूमि (जहां बीजबोयागया नहिं उपजता) । आसरेके बिना । शून्य । सूना.

इरेश, (पु०) ६ त० । वरुण । बृहस्पति । राजा । विष्णु.

इर्वारु, (ऊ) (स्त्री०) उर्व+आरु-पृषो० । काकुड । ककडी । कर्कटी । आलू.

इल्, सोना अक० । जाना-फेंकना सक० । तुदा० पर०.

इल्, फेंकना चुरा०उभ०सक०सेट् । एलयति-ते । ऐलिलत्-त.

इलविला, (स्त्री०) पुलस्त्यमुनिकी स्त्री । कुबेरकी माता । इसी संबंधसे कुबेरका नाम ऐलविल है.

इला, (स्त्री०) इल्+क । भूमि । पृथिवी । गौ । वाणी । जम्बुद्वीपके ९ वर्षोंमेंसे एक । वैवस्वतमनुकी कन्या बुधकी स्त्री (वह विष्णुके वरसे पुरुष होकर महादेवके शापसे स्त्री होगई । बुधने उसे विवाह कर पुरूरवाको उत्पन्न किया । यह चरित्र पुराणमें प्रसिद्ध है).

इलावृत, (न०) इला पृथिवी वृता येन । जो पृथिवीको घेरे हुए है । जम्बुद्वीपके नौ वर्षोंमेंसे एक । चारों सीमावाला देश । "पश्चान्माल्यवतः प्राच्यां गन्धमादनशैलतः । इलावृतं नीलगिरेर्याम्यतो निषधादुदक्" । जगत्के ९ भागोंमेंसे एक.

इली, (स्त्री०) इल्+इन्-ङीष् । हाथछुरी । करवालिका । छोटी तरवार.

इल्वल, (पु०) इल्+वलच्-नि० गुणाभाव । अत्यन्त चञ्चल मत्स्यविशेष । एकप्रकारका मच्छ । दैत्यभेद (जिसे वसिष्ठने नाश किया । मृगशिरके पाँच तारे (स्त्री०).

इव्, फैलना । इदित । भ्वा०पर०सक०सेट् । इन्वति । ऐन्वीत्.

इव, (अव्य०) सादृश्य । बराबरी । उत्प्रेक्षा । मानों । थोडा । वाक्यालङ्कार.

इष्, जाना-सरकना । दिवा०पर०सक०सेट् । इष्यति । ऐषीत्.

इष्, चाहना । तुदा०पर०सक०सेट् । इच्छति । ऐषीत् । एषिता-एष्टा.

इष, (पु०) इष्-जाना+क्विप् । जिसमें जयकी इच्छा करनेहारे यात्रा करतेहैं । आश्विनमास । असुजका महिना.

इषु, (पु०) इष्यते हिंस्यतेऽनेन । जिससे मारते हैं (स्त्री०) इष्+उकित् ह्रस्वश्च । बाण । तीर । पाँचकी संख्या.

इषुधि, (पु०) (स्त्री०) इषवो धीयन्तेऽत्र । धा+कि । बाणाधारतूण । बाणका आश्रय तूण । तर्कस । जहां बाण रक्खे जाँय.

इष्ट, (त्रि०) इष्+क्त । पूजित । आदर कियागया । अभिलषित । चाहागया । पियारा । "यज्+क्त" (यज्ञादिका काम) एरण्डका वृक्ष (पु०) । संस्कार (न०) । चाह । धर्मका कार्य.

इष्टका, (स्त्री०) इष्+तकन् । मट्टी आदिका बनाहुआ एक प्रकारका मट्टीका टुकडा । ईंट.

इष्टा, (स्त्री०) इज्यतेऽनया । यजु-करणे क्त । शमीवृक्ष । जंडीका दरख्त.

इष्टापूर्त, (न०) इष्टं च पूर्तं च द्वयोः समाहारः पूर्वपददीर्घः । अग्निहोत्र, तप, सत्य, यज्ञ, दान, वेदरक्षा, आतिथ्य, वैश्वदेव और ध्यान आदि धर्मकार्य (इष्ट), और बावली, खूआ, तालाव, देवमन्दिर, अन्नदान और बागका लगाना आदि पूर्त कहाजाताहै । बहुतोंकी भलाईका काम.

इष्टि, (स्त्री०) यज्+क्तिन् । यज्ञ । दर्शपौर्णमासयज्ञभेद । "इष्+क्तिन्" अभिलाष । इच्छा । चाह । ख्वाहिश.

इष्म, (त्रि०) इष् इच्छायां–कर्मणि मक् । इच्छा करनेवाला । चाहनेवाला ।–ष्मः (पु०) कामदेव । वसन्त.

इष्यः,–ष्यं (पु० न०) इष्+क्यप् । बसन्त । बहार.

इष्वसन, (पु०) इषुः अस्यते क्षिप्यतेऽनेन । अस्+ल्युट् । ६ त० । धनुष्.

इष्वास, (पु०) इषवः अस्यन्तेऽनेन । अस्+घञ् । ६ त० । जिस्से तीर फेंकतेहैं । चाप । धनुष् । "इषून् अस्यति अण्" । बाण चलानेहारा (त्रि०).

इह, (अव्य०) अस्मिन् काले । इससमय । इसदेशमें । इसदिशामें.

इहत्य, (त्रि०) इह+त्यप् । यहांका । इस स्थानका । इस संसारका.

(ई)

ई, (स्त्री०) अस्य विष्णोः पत्नी ङीष् । विष्णुकी स्त्री । लक्ष्मी । (पु०) कामदेवका नाम । (अव्य०) दिलका टूटना । दरद । शोक । गुस्सा । अनुकम्पा । मिहर्बानी । प्रत्यक्ष । पुकारना.

ई, चाहना-अक० । जाना और फैलना-सक० अदा० पर० अनिट् । एति । ऐषीत्.

ई, जाना-दिवा० आत्म० सक० अनिट् । ईयते । ऐष्ट.

ईक्ष्, देखना । भ्वा० आत्म० सक० सेट् । ईक्षते । ऐक्षिष्ट.

ईक्षण, (न०) ईक्ष्+भावे ल्युट् । दर्शन । देखना । "करणे ल्युट्" । नेत्र । आंख.

ईक्षणिक, (त्रि०) ईक्षणं शुभाशुभदर्शनं शिल्पं अस्य ठन् । स्त्रियां टाप् । जिसका जीवन अच्छे वा बुरे फल कहनेसे चलता है । हाथकी रेखापर फल कहनेहारा । दैवज्ञ । ज्योतिषी.

ईक्षा, (स्त्री०) ईक्ष्+अ । दर्शन । देखना.

ईक्षित, (त्रि०) (ईक्ष्+क्त) देखा हुआ । ध्यान किया गया । तं० न० देखना.

ईक्षितृ, (त्रि०) ईक्ष्-तृच् । देखनेवाला । खयाल करनेवाला.

ईड्, स्तुति करना । तारीफ करना । चुरा० उभ० सक० सेट् । ईडयति-ते । ऐडिडत्-त.

ईड्, स्तुति करना । सराहना । अदा० आत्म० सक० सेट् । ईट्टे । ईडिषे । ईडिध्वे । ऐडिष्ट.

ईडा, (स्त्री०) ईड+अ । स्तुति । प्रशंसा । तारीफ.

ईडित, (त्रि०) ईड+क्त । स्तुति कियागया । कृतस्तव.

ईति, (स्त्री०) ईयतेऽनया । ई+क्तिन् । खेतीके छ प्रकारके उपद्रव जैसे बहुत वर्षा न होना, मकडि, मूसा, तोता, राजाओंका नजदीक आना । सफर करना । कष्ट.

ईदृक्ष, (त्रि०) अयमेव दर्शनं अस्य । इदम्+दृश्-क्स । इशादेशे दीर्घः । जो इसकी नाँई दीखताहै । ऐसा । इसके सदृश.

ईदृश, (त्रि०) अयमेव दर्शनं अस्य । इदम्+दृश्+क्विन्-इशादेशे दीर्घः । एतादृश । जो देखनेमें ऐसा है । ऐसा "ट" ईदृशः । इसी अर्थमें । स्त्रियां ङीप् । ईदृशी.

ईप्सा, (स्त्री०) आप्तुं इच्छा, आप्+सन्+अ । पानेकी इच्छा.

ईप्सित, (त्रि०) आप्+सन्+क्त । आप्तुमिष्ट । पानेको चाहागया । इष्ट । अपेक्षित । जरूरी.

ईप्सु, (त्रि०) आप्+सन्+उ । पानेकी इच्छा करनेवाला.

ईर्, जाना । चुरा० उभ० । पक्षे-भ्वा० पर० सक० सेट् । ईरयति-ते । ईरति । ऐरिरत्-त । ऐरीत्.

ईरिण, (त्रि०) ईर+इनन् । जंगली । वह स्थान जहां बीज बोआ गया नहीं उगता.

ईरित, (त्रि०) ईर+क्त । भेजा गया । प्रेरणा किया गया । चलाया गया । कहागया.

ईर्म, (न०) ईर्+मक् । व्रण । घाव । फोडा । जखम । "ईर्मं" भी होताहै.

ईर्ष्य्, ईर्षा करना । हसद करना । भ्वा० पर० अक० सेट् । ईर्ष्यति.

ईर्ष्या–र्षा, (स्त्री०) ईर्ष्य+अ । परोत्कर्षासहिष्णुता । दूसरेकी बडाईको न सहारना । वैर । हसद । दुश्मनी.

ईर्षालु, (त्रि०) ईर्षा लाति । ला+डु । ईर्षायुक्त । दूसरेकी वृद्धि न देखसकनेहारा.

ईला, (स्त्री०) ईड्+क डस्य लत्वम् । पृथिवी । वाणी । गौ । स्तुति.

ईलित, (त्रि०) ईड्+क्त-डस्य लत्वम् । स्तुत । तारीफ कियागया.

ईश्, (पु०) ऐश्वर्य होना । हुक्मत करना । अदा० आत्म० सक० सेट् । ईष्टे । ईशिषे । ईशिध्वे । ऐशिष्ट.

ईश, (त्रि०) ईश्+क । आज्ञा चलानेवाला । अधिकार रखनेवाला ।–शः (पु०) स्वामी । मालिक । रुद्र । ग्यारहवी संख्या.

ईशनम्, (न०) ईश्+ल्युट् । आज्ञा चलाना । हकूमत करना । इख्तिआर.

ईशान, (पु०) ईश्+शानच् । महादेव । परमेश्वर । शिवजीकी आठ मूर्तिओंमेंसे सूर्यकी मूर्ति । शमीवृक्ष । स्वामी (त्रि०).

ईशिता, (स्त्री०) ईशिनो भावः तल् । अणिमादि आठ ऐश्वर्योंमें सबपर मालिकपना । "ईशित्वम्" इसी अर्थमें.

ईशितृ, (त्रि०) ईश्+तृच् । मालिक । हुकूमत करनेवाला । –ता (पु०) जगत्का स्वामी.

ईश्वर, (पु०) ईश्+वरच् । महादेव । कामदेव । पातञ्जलके अनुसार क्लेश-कर्मविपाकाशयोंसे न छूआहुआ पुरुषविशेष । चैतन्यात्मा । सर्व सामर्थ्यवाला परमेश्वर । प्रभवादिके मध्यमें एक वरिसका नाम । पहिला । स्वामी (त्रि०) "स्त्रियां ङीष्" ईश्वरी । दुर्गा । लताभेद.

ईष्, (भ्वा० उ०) भाग जाना । उडजाना । बचाना । सिला चुगना । तालाश करना । देना । आक्रमण करना । मारना । ईषति-ते । ऐषीत् । ईषितुं । ईषित.

ईष, (पु०) ईस्+क । (त्रि०) स्वामी । मालिक । महादेव । परमेश्वर.

ईषत्, (अव्य०) अल्प । थोडा । किञ्चित् । कुछ.

ईषत्कर, (पु०) ईषत्+कृ० खल् । लेश । अल्प । थोडासा । अल्पप्रयाससाध्य (त्रि०) थोडे यत्नसे सिद्ध होनेहारा.

ईषदुष्ण, (पु०) 'ईषदक्ता'इति-त० । अल्पतप्त । मन्दोष्ण । थोडा तपाहुआ (गरम).

ईषा, (स्त्री०) ईष्+क । हलदण्ड । हलका डण्डा (फाल).

ईषिका, (स्त्री०) ईषेव "इवे प्रतिकृतौ" इति कन् । हस्तिनेत्रगोलक । हाथीकी आँखका गोलक (डेला) । तूलिका । मूरत लिखनेवालेकी कलम । अस्त्रभेद.

इषि(षी)का, (स्त्री०) इष्-गत्यादौ क्वुन् अत इत्वम् । कान्ता । घासका तिनका.

ईह, चेष्टाकरना-हर्कत करना । भ्वा० आ० अक० सेट् । ईहते । ऐहिष्ट.

ईहा, (स्त्री०) ईह्+अ । चेष्टा । उद्यम । वाञ्छा । कोशिश.

ईहित, (त्रि०) ईह+क्त मृगित । खोजागया । धूंडागया । चाहागया । प्रार्थना कियागया । "भावे क्त" इच्छा । चाह.

(उ)

उ, शब्द करना । आवाजकरना-भ्वा-आत्म० सक० अनिट् । अवते । औष्ट.

उ, (अव्य०) सम्बोधन । बुलाना । क्रोधका वचन । गुस्सेसे बोलना । दया । हुकम । विस्मय । हैरानी । "अत्+ड्" शिवजी.

उक्त, (त्रि०) वच्+क्त । कथित । कहागया । एक अक्षरके पादका छन्द (स्त्री०) "भावे क्त" कथन । कहना (न०).

उक्ति, (स्त्री०) वच्+क्तिन् । कथन । कहना.

उक्थ, (न०) वच्+थक । नौ प्रकारके सामवेदका एक भाग । सामवेदका प्रधान अङ्ग । महाव्रताख्य यज्ञ । प्राण.

उक्थशास, (पु०) उक्थानि सामावयवशास्त्राणि शंसति शंस+क्विप्-नि० । जो सामभागकी प्रशंसा कर्ता है । यजमन.

उक्ष्, सीचना (भ्वा० पर० सक० सेट्) । उक्षति । औक्षीत् । उक्षांवभूव.

उक्षणं, (न०) उक्ष्+ल्युट् । सींचना । सींचनेद्वारा राजतिलक देना.

उक्षतर, (पु०) तनुरुक्षा, उक्षन्० तनुत्वेर्थे ष्टरच् । तीसरी अवस्थाको पहुंचा हुआ बैल । बडा बैल । महावृषभ.

उक्षन्, (त्रि०) उक्ष्+कनिन् । बडा । सींचनेवाला (क्षा० पु०) वृषभ=बैल । सूर्य.

उक्षित, (त्रि०) उक्ष्+क्त । सींचागया । गीला किया गया । शुद्ध किया गया । सुगन्धित किया गया.

उख्,-जाना । भ्वा० पर० सक० सेट् । ओखति । औखीत् । उवोख.

उखा, (स्त्री०) उख+क । पाकपात्र । पकानेकेलिये पात्र । देशका । हाँडी.

उग्र, उच्०रक् । गश्चान्तादेशः । महादेव । वायुकी मूर्ति धारण करनेहारे शिवजी । क्षत्रियसे विवाही गई शूद्रामें उत्पन्न । संकीर्ण (दोगला) वर्ण । सुहांजना । उत्कट (त्रि०) जोरका । बडा । सख्त । वचा । यवानी । कोपी । गुस्साकरनेहारा । नक्षत्रसमूह । एक प्रकारका विष (स्त्री०ङीप्) उग्री । निर्दय (बेरहम) स्त्री.

उग्रकाण्ड, (पु०) उग्रः काण्डोऽस्य । करेला । कारवेल्लवृक्षभेद.

उग्रगन्ध, (पु०) उग्रः गन्धः पुष्पेऽस्य । जिसके फूलमें वडी गन्ध हो । चम्पक । चमेली । चम्वा । कटफल । अर्जकवृक्ष । लशुन । लसन । हींग (न०) तेजगन्धवाला (त्रि०).

उग्रता-त्वं, (स्त्री० न०) उग्र+तल् त्व । भीषणता । उरावनापन । तेजपना । क्रोध.

उग्रधन्वन्, (पु०) उग्रं धनुर्यस्य ब० अनङ्स० । जिसका धनुष् बडा तेज हो । शिव । इन्द्र । तेज धनुष्वाला (त्रि०).

उग्रम्पश्य, (त्रि०) उग्रं पश्यति, उग्रदृश्+खश्+मुम् । डरावनी दृष्टिवाला । भयानक । दुष्ट । बदमाश.

उग्रश्रवस्, (पु०) उग्रं उत्कटं श्रवः कर्णो यस्य । जिसका कान तेज हो अर्थात् उपदेशको झटही ग्रहण करले । रोमहर्षणका पुत्र पौराणिक (पुराणजाननेहारा).

उग्रसेन, (पु०) उग्रा सेना अस्य । जिसकी सेना जोंरावर हो । यदुवंशमें हुआ आहुक नाम हंसका पिता । राजा । मथुरा नगरीका राजा । धृतराष्ट्रका पुत्र.

उच्, इकठ्ठा करना । लायक होना । दि० पर० सक० सेट् । उच्यति । औचत् । औचीत्.

उचथं, (न०) उच्यते=स्तूयते अनेन, वच्+कथन् । जिस्से स्तुति कीजाती है । स्तुति करनेका मन्त्र । स्तोत्र.

उचथ्य, (त्रि०) उक्थ+यत् । स्तुति करनेयोग्य । तारीफके लायक.

उचित, (त्रि०) उच्+क्त । वक+कितकबा । लायक । मुनासिब । यथार्थ । ठीक । रक्खागया । परिचित । जुडाहुआ.

उच्च, (त्रि०) उत्क्षिप्य बाहू चीयते । उद्+चि+ड । जो भुजा उठाकर पकडे । उन्नत । ऊंचा.

उच्चतरु, (पु०) कर्म० नारिकेल । नरेलका दरख्त.

उच्चाटन, (न०) उद्+चट्+णिच्+ल्युट् । उत्पाटन । उखाडना । अपनी जगहसे अलग करना । तन्त्रोक्त "अभिचारभेद" । "उच्चाटनं स्वदेशादेर्भ्रंशनं परिकीर्तितम्".

उच्चार, (पु०) उद्+चर्+णिच्+घञ् । उच्चारण । कहना । "कर्मणि घञ्" । विष्ठा । मल.

उच्चावच, (त्रि०) उदक् उत्कृष्टं च अवाक् अपकृष्टं च । मयू० नि० । बडे छोटे कईभेद । तरहतरहके । अनेक प्रकारके.

उच्चूलन (ड), (पु०) उन्नता चूडा यस्य डस्य लत्वम् । जिसकी चोटी उंची हो । ध्वजोर्ध्वस्थित वस्त्रखण्ड । झण्डेके ऊपरका कोना । झण्डा । झण्डेके ऊपर बंधाहुआ भूषण.

उच्चैःश्रवस्, (पु०) उच्चैरुन्नतं श्रवोऽस्य । जिसके कान ऊंचेहों । उंचे कानवाला समुद्रमेंसे उपजा इन्द्रका वाहन (सवारी) घोडा । "उच्चैः उच्चशब्दं शृणोति-श्रु+असुन्" बधिर । बहिरा.

उच्चैर्घुष्ट, (न०) "उच्चैस्+घुष्+क्त । उच्चघोषणा । ढण्डोरा । डौण्डी.

उच्चैस्, (अव्य०) ऊंचा बडा । लम्बा । पूरा पूरा.

उच्छास्त्र, (त्रि०) उद्गतं शास्त्रात् । ग० स० । अतिक्रान्तशास्त्र । शास्त्रको लांघगया । शास्त्रविरुद्ध । अधर्मका काम.

उच्छिख, (त्रि०) उद्गता शिखा यस्य । प्रा० ब० जिसकी लाट वा जिसका आगेका भाग ऊंचा हो । आगेसे ऊंचा.

उच्छित्ति, (स्त्री०) उद्+छिद्+क्तिन् । उच्छेद । नाश । तवाह.

उच्छिलीन्ध्र, (न०) उच्छिखं शिलीन्ध्रं । ऊपरको उठा शिलीन्ध्र । छत्राक । खुंब । मशरूमसे भराहुआ.

उच्छिष्ट, त्रि०) उद्+शिष्+क्त । भुक्तावशिष्ट । खानेसे बचरहा । छोडागया । जूठा.

उच्छीर्षक, (न०) उत्थापितं शय्यात उत्तोल्य स्थापितं शीर्षं यस्मिन् ब० कप् । छेजसे उठाकर जिसपर सिर रक्खाजाय । शीर्षोपधान । तकिया । सिर्हाना । बालिश.

उच्छून, (त्रि०) उद्+श्वि+क्त । स्फीता । फूलाहुआ । बढाहुआ.

उच्छृङ्खल, (त्रि०) उद्गतं शृङ्खलातः । ग० स० । जो संकलीसे निकलगया । बंधनरहित । मालिकबिना । बिनरुकावट । खुल्लमखुल्ला । बगैर डरके । नियमके बिना । तरीकेको छोडकर.

उच्छेद, (पु०) उद्+छिद्+घञ् । छेदन । तोडना । विनाशन । तवाह करना.

उच्छोषण, (त्रि०) उद्+शुष्+णिच्+ल्युट् । सन्तापक । सुकानेहारा.

उच्छ्राय, (पु०) उद्+श्रि+अच्-घञ्वा । उच्चता । ऊंचापन । ऊंचाई.

उच्छ्रित, (त्रि०) उद्+श्रि+क्त । ऊंचा । वढाहुआ । बंधाहुआ.

उच्छ्वास, (पु०) उद्+श्वस्+घञ् । अन्तर्मुखश्वास । भीतरकी ओर जानेहारा सांस । आख्यायिकाका अध्याय । प्राण.

उच्छ्वासन, (न०) उद्+श्वस्+ल्यु । सांसलेना । प्राण.

उञ्छ, दानोंका बटोरना । तुदा० इदित् पर० सक० सेट् । उञ्छति । औञ्छीत्.

उञ्छ, बांधना-समासकरना । तुदा० पर० सक० सेट् । उञ्छति.

उज्जयि(य)नी, (स्त्री०) विक्रमादित्यकी राजधानी । अवन्तीपुरी.

उज्जासन, (न०) उद्+जस्+मारना+स्वार्थे णिच्+ल्युट् । मारण । मारना.

उज्जृम्भ, (पु०) उद्+जृम्भि+घञ् । विकाश । खिलना । स्फुटन । फूटना.

उज्ज्वल, (त्रि०) उद्+ज्वल्+अच् । दीप्त । चमकाहुआ । साफ । खिलाहुआ । स्वर्ण । (न०) शृङ्गाररस (पु०).

उज्झ, छोडना-तुदा० पर० सक० सेट् । उज्झति । औज्झीत्.

उञ्छन, (पु०) (न०) उञ्छि+ल्युट् । धान्यचयन । बाजारआदिमें गिरेहुए वेचनेके पीछे बचरहे धान्यआदिकी कणिओंका लेना.

उटज, (पु० न०) उटेभ्यो जायते-जन्+ड । पत्तोंकी बनीहुई शाला । मुनि वा ऋषिओंका घर । पर्णशाला.

उड्, इकट्ठाकरना-पर० अक० सेट् । ओडति । औडीत्.

उडु, (स्त्री० न०) उड+डु । नक्षत्र । तारा । जल । "स्त्रीलिङ्गमें वा ऊङ्".

उडु(डू)प, (पु० न०) उडूनि जले पाति-पा+क । प्लव । भेला । (पु०) चांद.

उडु(डू)पति, (पु०) उडूनां पतिः । तारोंका मालिक । चंदा । जलका स्वामी । वरुण.

उड्डामर, (त्रि०) उत्कटं डामरम् । अत्यन्तप्रचण्ड । बडेजोरका । सबसे ऊंचा.

उड्डीन, (न०) उद्+डी+क्त । पक्षिओंका ऊपरजाना । उडना.

उत, (अव्य०) विकल्प । समुच्चय । वितर्क । प्रश्न । अत्यर्थ । बहुतही । सन्देह । और भी । क्या । यातो । अथवा.

उतथ्य, (पु०) अङ्गिरासे श्रद्धा स्त्रीमें उत्पन्नहुआ बृहस्पतिका बडा भाई.

उताहो, (अव्य०) विकल्प । सन्देह । प्रश्न । विचार । ऐसा वा ऐसा.

उत्क, (त्रि०) उद्गतं मनोऽस्य । उद्+क+नि० । उन्मनस्क । जिसका मन और जहग चलागया । उखडेमनवाला.

उत्कट, (पु०) अतीव । उद्+कटच् । बहुत । तेज । लालगन्ना । वाण दारचीनी (न०) । मस्तहाथी (पु०).

उत्कण्ठा, (स्त्री०) उद्+कठि+अ । इष्ट लाभके पूरा करनेके लिये मनकी चिन्ता । फिकर । चाहीगई वस्तुमें देरको न सहारना । दुःख । बेआरामी । किसी पियारी चीजकी ख्वाहिश । शोक.

उत्कन्धर, (त्रि०) उन्नता कन्धरा अस्य । ऊंची गर्दन (कण्ठ)वाला.

उत्कम्प्, भ्वा० आ० । कांपना । थरथराना । कम्पते । चकम्पे । अकम्पिष्ट.

उत्कर, (पु०) उद्+कृ+अप् । धान आदिका इकट्ठा करना । हाथ पांव आदिका फैलाना । घासका फैलाना.

उत्कर्ष, (पु०) उद्+कृष्+घञ् । अतिशय । बहुत । जियादा.

उत्कल, (पु०) जगन्नाथके पासका देश । उडीसा उत्क, "-उत्कः सन् लाति ला+क" । व्याध । शिकारी । भारवाहक । बोझा उठानेहारा.

उत्कलिका, (स्त्री०) उद्+कल्+वुन् । उत्कण्ठा । काम आदिसे याद करना.

उत्कार, (पु०) उद्+कृ+घञ् । धानोंको इकट्ठा करना । और ऊपर उछालना । फेंकना.

उत्कीर्ण, (त्रि०) उद्+कृ+क्त । फेंकागया । फैलायागया । खिलाया गया । उल्लिखित । कृतवेध । वेधागया । घडागया.

उत्कुण, (पु०) उद्+कुण्+क । जूं । वालोंका कीडा.

उत्कोच, (पु०) उद्+कुच्+घञ् । अन्यायका काम करनेके लिये वादी (मुद्दई) किम्वा प्रतिवादी (मुद्दालह)-से धन लेना । घुस । रिशवत । वड्डी.

उत्क्रम, (पु०) उद्+क्रम्+घञ्-अवृद्धिः । व्युत्क्रम । उलटा । उलटाक्रम । उछलना । नियमविरुद्ध । सिलसिला छोडकर.

उत्क्रान्त, (त्रि०) उत्+क्रम्+क्त । चला गया । बाहिर गया । निकल गया.

उत्क्रोश, (पु०) उद्+क्रुश्+अच् । कुररीपक्षी । कूंज । चिल्लाना.

उत्क्षिप्, तु० प० । फेंकना । उठाना । जगहपर धर देना । गाडना । क्षिपति । चिक्षेप । अक्षैप्सीत्.

उत्क्षिप्त, (त्रि०) ऊपरको फेंकदिया । पकड लिया गया । ताडन किया गया.

उत्क्षेपण, (न०) उद्+क्षिप्+ल्युट् । ऊर्ध्वक्षेपण । ऊपर फेंकना । "कर्मणि ल्युट्" पंखा । "करणे ल्युट्" धान मलनेकी लकडी.

उत्खन्, भ्वा० प० । खोदना । खोद डालना । खनति । चखान । अखानीत् । खातः.

उत्खात, (त्रि०) उद्+खन्+क्त । उत्पाटित । उखाडागया.

उत्तंस, (पु०) उद्+तसि+अच् । कर्णाभरण । कानका भूषण । शिरोभूषण । शिरका जेवर.

उत्तप्त, (त्रि०) उद्+तप्+क्त । सन्तप्त । तपाहुआ । गरम । स्नात । नहायाहुआ । शुष्क मांस । सूकाहुआ मांस (न०).

उत्तमर्ण, (पु०) उत्तमं ऋणं अस्य । जिसका कर्जा अच्छा हो । कर्ज देनेहारा । महाजन । ऋणदाता.

उत्तमसाहस, (न०) दण्डभेद । बडी सजा । १००० वा कईओंके मतमें ५०००० हजार पणकी सजा । बडी दिलेरी.

उत्तमाङ्ग, (न०) कर्म० मस्तक । माथा । सिर । शरीरका सबसे अच्छा अंग.

उत्तम्भ, (पु०) उद्+स्तम्भ्+घञ् । ठहरना । पकडना । रोकना । आसरा देना । बुराईसे हटजाना । आराम करना.

उत्तर, (न०) उत्तीर्यते प्रकृतामियोगोऽनेन । उद्+तृ+अप् । जिसके द्वारा कियेगये सवालको तरसकें । राजाके निकट वादीसे किये हुए सवालको साफ करना । उत्तर नाम व्यवहारका अङ्ग । दोषके तोडनेका वचन । विराटराजाका पुत्र (पु०) । उदीची (उत्तर) दिशा । विराटराजाकी कन्या (स्त्री०) । अच्छा । ऊंचा । लायक । पीछे.

उत्तरकोशला, (स्त्री०) अयोध्या नाम नगरी । रामचन्द्रजीकी जन्मभूमि.

उत्तरङ्ग, (न०) उत्तरं अङ्गं । कर्म० । शकन्ध्वादि० । द्वारोर्ध्वस्थदारु । दर्वाजेके ऊपरकी लकडी । ऊंची तरङ्गोंवाला (त्रि०).

उत्तरच्छद, (पु०) कर्म० । शय्योपर्यास्तरणवस्त्र । छेजके ऊपर बिछानेका कपडा । बिछौना । ऊपरका कपडा.

उत्तरपक्ष, (पु०) वाद (मुबाहिसा) में पूर्वपक्ष । पहिले उठायागया सवाल । मलदेने योग्य । सिद्धान्तपक्ष (फैसलेका जवाब).

उत्तरमीमांसा, (स्त्री०) कर्म० । अगला विचार । फैसलेकी बात । ब्रह्ममीमांसा (ब्रह्मका विचार) । वेदान्तदर्शन.

उत्तरा, (स्त्री०) प्रेतकी पितृत्वप्राप्ति होनेपर सपिण्डीकरणके पीछेकी श्राद्धक्रियायें । उत्तरदिशा, काल, देश (अव्य०).

उत्तरात्, (अव्य०) उत्तरदिशा । उत्तरकी ओर । उत्तरकाल.

उत्तराधिकारिन्, (त्रि०) उत्तरं अधिकरोति । अधि+कृ+णिनि । पहिले स्वामीका सत्व (कब्जा) समाप्त होनेपर उसी सम्बंधसे कब्जा कायम करनेहारे अधिकारको पाये पुत्र पौत्र आदि दायाद । वारिस । शरीक.

उत्तराभास, (पु०) उत्तरमिवाभासते । आ+भास्+अच् । जो उत्तरकी नाईं प्रतीत हो । दुष्टोत्तर । खराब जवाब । बुरा जवाब.

उत्तरायण, (न०) माघसे लेकर दो २ महीनेके छह ऋतु (मौसमबहार) होते हैं, उन्मेंसे पहिले तीन ऋतु अर्थात् माघसे लेकर छ मासका समय । जिस समय सूर्य उत्तरकी ओर झुकता जाता है । सूर्यके मकर राशिमें जानेका दिन.

उत्तरासङ्ग, (पु०) उत्तरे ऊर्ध्वभागे आसज्यते । आ+सञ्ज+घञ् । जो ऊपरकी ओर लगाया जाता है । ऊपरका कपडा । चादर । दुपट्टा.

उत्तरीय, (न०) उत्तरस्मिन् देहभागे भवः छ । शरीरके ऊपरवाले भागपर धारण करनेका कपडा । दुपट्टा.

उत्तरेण, (अव्य०) उत्तर+एनप् । (ये षष्ठी वा द्वितीया विभक्तिके साथ आताहै) उत्तर । उत्तरकी ओर । "निषधस्योत्तरेण वृक्षवाटिकां सरः."

उत्तरेद्युस्, (अव्य०) उत्तर+एद्युस् । उत्तरदिन । अगला दिन । कल्ह.

उत्तान, (त्रि०) उद्गतस्तानो विस्तारो यस्मात् । जिसकी फैलावट जातीरही । विस्तारशून्य । ऊंचे मुख ठहरना । मुं ऊपर करके पीठके भार ठहरना । फैलाहुआ । ऊंचे मुं.

उत्तानपाद, (पु०) स्वायम्भुव मनुका पुत्र । ध्रुवका पिता । एकराजा.

उत्तानशय, (त्रि०) उत्तानः ऊर्ध्वमुखः सन्नेव शेते । शी+अच् । जो मुंको ऊंचेही कर सोताहै । छोटा बच्चा । (उसकी उस समय नीचे मुं करके सोनेकी सामर्थ्य नहिं होती).

उत्ताप, (पु०) उद्+तप्+घञ् । उष्णता । गरमी । दुःख । सन्ताप.

उत्तार, (त्रि०) उद्गता तारा यस्य । तारा (आंखकी पुतली) को उठाये हुए नेत्रवाला । बहुत ऊंचा । अच्छे तारेवाला.

उत्ताल, (त्रि०) चुरा० तल्-प्रतिष्ठाकरना-इजतकरना+अच् । प्रतिष्ठित । इज्जतवाला । बडा त्वरित । काला । ऊंचा । मजबूत । भयानक । डरावना । बन्दर (पु०).

उत्तीर्ण, (त्रि०) उद्+तॄ+क्त । मुक्त । छूटगया । पारचलगया । पासहोगया.

उत्तुङ्ग, (त्रि०) उत्कर्षं तुङ्गं । बडा ऊंचा । अत्युन्नत.

उत्तुष, (पु०) उद्गतः तुषोऽस्मात् । जिस्से भूसी अलग होजाय । लाजा (फुल्लियें) नाम भुनेहुए धान । खील.

उत्तेजना, (स्त्री०) उत्+तिज्+णिच्+युच् । प्रेरणा । घबराना । चमकाना । तेज करना.

उत्तोलन, (न०) उद्+तुल्-तोलना+ल्युट् । ऊंचे उठाकर तोलना.

उत्थान, (न०) उद्+स्था+ल्युट् । ऊंचे गिरना । खडेहोना । उद्यम । ऊंचे होनेकी कोशिश करना । उठना । "करणे ल्युट्" रण । लडाई । मन्दिर । बेडा । चौगान । सेना.

उत्थानैकादशी, (स्त्री०) उत्थानस्य हरेः निद्रातः प्रबोधस्य काले एकादशी । विष्णुके जागनेकी एकादशी । कार्तिक (कतक) के शुक्लपक्षकी एकादशी.

उत्पत, (पु०) उत्पतति ऊर्ध्वं गच्छति । उद्+पत+अच् । जो ऊंचे जाताहै । पक्षी.

उत्पताक, (त्रि०) उत्तोलिता पताका यत्र । ऊपरको उठी हुई झुण्डिओंवाला.

उत्पतिष्णु, (त्रि०) उत्+पत्+इष्णुच् । उडनेवाला । ऊपर जानेवाला । ऊपर वहनेवाला.

उत्पत्ति, (स्त्री०) उद्+पत्+क्तिन् । जन्म । जीवका देहसे मिलना । सांख्यमतमें आविर्भाव (जाहिर होना).

उत्पथः, (पु०) उत्क्रान्तः पन्थानम् । मार्गसे बाहिर हुआ । कुमार्ग । गल्त रास्ता.

उत्पल, (न०) उद्+पल्+अच् । नीला कमल । बिनमांस । कमजोर । कुष्ठौषध.

उत्पाटन, (न०) उद्+पट्+णिच्+ल्युट् । उन्मूलन । उखाडना । पटना.

उत्पात, (पु०) उद्+पत्+घञ् । उपद्रव । बडी मुसीबत । गजब । अचानक पैदाहुआ प्राणिओंके शुभ और अशुभको सूचन करनेहारा दैवका निमित्त भूकम्पवगैरह । (भूचाल) आदि.

उत्पादक, (पु०) ऊर्ध्वं स्थिताः पादा अस्य कप् । ऊंचे पाँववाला । आठ पांववाला शरभनामी मृगविशेष । (इसके चार पाँव पीठपर होते हैं) उत्+पद्+णिच्+ण्वुल् । पिता । पैदा करनेहारा (त्रि०).

उत्पादशय, (पु०) उत्पाद ऊर्ध्वक्षिप्तपादः सन् शेते । शी+ल्यु । जो अपने पांवको ऊंचे करके सोता है । टिट्टिभपक्षी । टिटहरा.

उत्प्रास, (पु०) उद्+प्र+अस्-चमकना आदि+घञ् । उपहास । हसना.

उत्प्रेक्षा, (स्त्री०) उद्+प्र+ईक्ष्+अ । पर्वाह न करना । समानता । अर्थालङ्कारभेद कि जिसमें असली विषयको छोडकर दूसरेके साथ एकही होनेका खयाल कियाजाय.

उत्प्लवन, (न०) उद्+प्लु+ल्युट् । उल्लङ्घन । उछलना । कूदना । पानीपर कूदना कि जिसमें ऊपर ही रहें । छाल लगाना । (पानीपर तैरना).

उत्प्लवा, (स्त्री०) उत् जलादेरुपरि प्लवते । प्लु+अच् । जो पानीके ऊपर तरतीहै । नौका । बेडी.

उत्प्लु, भ्वा० आ० । कूदना । उछलना । प्लवते । पुप्लुवे । अ-प्लोष्ट । प्लुत.

उत्फुल्ल, (त्रि०) उत्+फुल्+क्त । पतोंके आपसमें अलग अलग होनेसे खिलेहुए फूल वगैरह । खिलाहुआ.

उत्स, (पु०) उद्+स । पर्वत आदिसे वहेहुए पानीके गिरनेकी जगह । वहताहुआ पानी । झरना । निर्झर.

उत्सङ्ग, (पु०) उद्+सञ्ज्+घञ् । क्रोड । गोद । कुच्छड । गोदसे निकलगया (त्रि०).

उत्सञ्जनं, (न०) उत्+संज्+अन । ऊपर फेंकना । उठाना ऊपरको.

उत्सद्, भ्वा० प० । दुःखी होना । नाश होना । तवाह होना । सीदति । ससाद । असदत् । सन्न.

उत्सन्न, (त्रि०) उत्+सद्+क्त । नाश होगया । तवाह होगया.

उत्सर्ग, (पु०) उद्+सृज्+घञ् । व्याकरणमें कहागया अपानवायुका चलाना । सामान्य नियम । न्याय । छोडना । देना । यज्ञभेद.

उत्सर्पण, (न०) उद्+सृप्+ल्युट् । छोडकर आगेजाना । लांघना.

उत्सर्या, (स्त्री०) उद्+सृ+यत् । वह गौ जो बैलके साथ मिला देने योग्य है । गर्भके योग्य अवस्थावाली गौ.

उत्सव, (पु०) उद्+सू+अप् । आनन्दको उत्पन्न करनेहारा काम । विवाह आदि । खुशी.

उत्सवसंकेत, (पु० व०) हिमालयकी जंगली जातिके लोग (जहां स्त्रीपुरुषोंमें क्रीडाके लिये आपही संकेत होजाताहै अर्थात् अनुरागही कारण होताहै । जिसने जिसे चाहा स्त्री बना लिया) "शरैरुत्सवसङ्केतान्" रघुः.

उत्सह्, भ्वा० आ० । सामर्थ्य रखना । उत्साह करना । हौसला करना । दिलेरी करना । सहते । सेहे । असहिष्ट । सोढ.

उत्सादन, (न०) उद्+सद्+णिच्+ल्युट् । निकालना । नाश करना । खारिज करना । सुगन्धि लगाना । चढना । खेतमें दोवार हल चलाना । मैला साफ करना । सुगन्धिवाली वस्तुओंसे स्नान करना । उवटना । मलना.

उत्सारण, (न०) उद्+सृ+णिच्+ल्युट् । निकालना । दूर करना । चालना । हिलाना । किसी चीजको दूसरी जगहपर करदेना.

उत्साह, (पु०) उद्+सह+घञ् । उद्यम । निश्चय करनेलायक कामोंमें पकी कोशिश । राजाओंका विशेष गुण । सुख । इच्छा.

उत्सिक्त, (त्रि०) उद्+सिच्+क्त । गर्वित । अहंकारी । उद्धत जोशवाला । वर्धित । बढा हुआ । ऊपर सींचा हुआ । नहाये हुए । त्यक्तमर्याद । नियम तोडनेवाला.

उत्सिच्, तु० प० । सींचना । फैलना । अभिमानी होना । सिंचति । सिषेच । असिचत्.

उत्सुक, (त्रि०) उद्+सू+क्विप्-कनि ह्रस्वः । पियारी वस्तुको पानेके लिये लगा हुआ । अभीष्ट जायगा इससे उखडे हुए दिलवाला । बेआराम । शौकसे चाह रहा । किसीके लिये शोकमें पडा.

उत्सूत्र, (त्रि०) उत्क्रान्तः सूत्रम् । सूतको लांघ गया । सूतसे अलग कर दिया गया । खुल गया.

उत्सूरः, (पु०) उत्क्रान्तः सूरं=सूर्यं । सूर्यको लांघ गया । सायं । सांझका समय । दोनोसमय मिले हुएका समय । संध्या.

उत्सृष्ट, (त्रि०) उद्+सृज्+क्त । त्यक्त । छोडागया । दियागया.

उत्सेक, (पु०) उद्+सिच्+घञ् । अहंकार । जियादती । उठाकर वाहिर सींचना.

उत्सेध, (पु०) उद्+सिच्+घञ् । ऊंचाई । शरीर । लम्बा । उंचा.

उदक, (न०) उन्द+ण्वुल्-नलोपश्च-नि० । जल । पानी । "उदम्" इसीमें.

उदक्या, (स्त्री०) उदकं शुद्ध्यर्थं स्नानजलं चतुर्थदिने अर्हति । यत् । जो चौथे दिन नहाकर शुद्ध होती है । ऋतुमती स्त्री.

उदगद्रि, (पु०) उदक् उत्तरस्यां अद्रिः । उत्तरका पहाड । हिमालय.

उदगयन, (न०) उदक् उदीच्यां अयनम् । उत्तरका आश्रय लेना । सूर्यका उत्तरकी ओर जाना । उत्तरायण.

उदग्र, (त्रि०) उद्गतं अग्रं यस्य । ऊंचा । उन्नत.

उदङ्क, (पु०) उदच्यते उद्ध्रियतेऽत्र । उद्+अच्+घञ् । चमडेका वनाहुआ घी आदिका पात्र । कुप्पा.

उदञ्चन, (न०) उद्+अञ्च्+करणे ल्युट् । ढांकनेका पात्र । ढक्कन "भावे ल्युट्" । ऊपर फेंकना.

उदधि, (पु०) उदकानि धीयन्तेऽस्मिन् । धाञ्-आसरा लेना+कि-उदादेशः । जहां पानी रक्खे जाते हैं । समुद्र । घट । घडा.

उदन्त, (पु०) उद्गतोऽन्तो निर्णयो यस्मात् । जिस्से फैसला होताहै । बात । वृत्तान्त । कुशलादि कथन । साधु.

उदन्या, (स्त्री०) अतिलोमेन उदकं इच्छति क्यच् । उदन् भाव । बडी लालचसे पानी चाहता है । पिपासा । पियास.

उदन्वत्, (पु०) उदकानि सन्ति अस्य मतुप् उदन्भावः मस्य वः । समुद्र.

उदपान, (पु० न०) उदकं पीयतेऽस्मिन् । पा+ल्युट्-उदादेशः । जहां पानी पीया जाय । खूएके पास थोडेसे पानीका आश्रम । चुवच्चा । खूआ । गढा । खात.

उदय, उद्+इ+अच् । पूर्वका पर्वत । उठना । उंचाहोना । चमकना । हसिल.

उदयन, (पु०) उद्+इ+ल्यु । वत्सराज अगस्त्यमुनि । कुसुमाञ्जलि आदि ग्रन्थके बनानेहारे उदयनाचार्य । "भावे ल्युट्" उदय । उठना.

उदर, (न०) उद्+ऋ+अप् । जठर । पेट । नाभि और स्तनोंका बीच । "आधारे अप्" युद्ध । लडाई । "उद्+द+अप्-उदो दलोपश्च" पेटका रोग.

उदरम्भरि, (त्रि०) उदरं बिभर्ति । भृ+खि+मुमुच् । पांच यज्ञ किये बिन अपना पेटही भरनेहारा । क्षुधित । पेटू.

उदरावर्त, (पु०) उदरे आवर्त इव गम्भीरत्वात् । गहरी होनेसे पेटपर मानो पानीका भवर (चक्र) है । नाभि । नाफ । धुन्नी.

उदरिणी, (स्त्री०) उदरे गर्भोऽस्त्यस्याः इनि । जिसके पेटमें गर्भ हो । गर्भवती । गर्भवाली । अन्तर्वत्नी । हमलवाली.

उदर्क, (पु०) उद्+अर्क-अर्च वा घञ् । उत्तरकालमें होनेवाले फलवाला शुभ वा अशुभ कर्म । नतीजा । परिणाम । फल.

उदर्चिस्, (पु०) उद् ऊर्ध्वं अर्चिः रश्मिः अस्य । ऊंची लाटवाला । ऊंची शिखावाली आग । अधिक कान्ति होनेसे कामदेव । ऊर्ध्वरेता । वीर्यका ऊपर जाना होनेसे शिवजी । ऊंची लाट.

उदवसित, (न०) उद्+अव+सि+क्त । गृह । घर.

उदात्त, (पु०) उ+आ+दा+क्त । ऊंचे स्वरसे उच्चारण कियागया वर्ण (अक्षर) । मनोहर । बडा । दाता (त्रि०) अलङ्कारभेद । ऊंची आवाज । ऊंचा । अच्छा । चमकनेवाला बडावाजा.

उदान, (पु०) उद्+अन्+घञ् । गलेकी हवा । नाभि । सांपका भेद.

उदार, (त्रि०) उद्+आ+रा+क । दाता । बडा । सीधा । चतुर । गम्भीर । असाधारण (खास) । खुलादिल.

उदासीन, (त्रि०) उद्+आस्+शानच् । रागद्वेषरहित । मध्यस्थ । दो जीतनेवालोंमें किसीकामी पक्ष (लिहाज) नकरनेहारा । उपेक्षक । बेपर्वाह । किसीसे सम्बन्ध न रखनेहारा.

उदाहरण, (न०) उद्+आ+हृ+भावे ल्युट् । किसी बातको एक जगह दिखाकर सम्पूर्ण स्थानपर निश्चय करना । इष्टसिद्धिके लिये कहागया दृष्टान्त । प्रकृतकी सिद्धिके लिये निदर्शनरूप उपोद्घात । मिसाल.

उदाहृत, (त्रि०) उद्+आ+हृ+क्त । दृष्टान्तस्वरूपसे उपन्यास कियागया । मिसालके तौरपर दिखाया गया । कहागया.

उदित, (त्रि०) उद्+क्त । कहागया । उद्+इण्+क्त । उठा । निकला । बढा.

उदीच्य, (त्रि०) उदीचि उत्तरकालादौ भवः यत् । उत्तरकाल (आनेवाला वक्त) में होनेहारी चीज । शरावती (सरस्वती) नदीके उत्तर पश्चिमका भाग । उत्तरका । वालानामी गन्धद्रव्य.

उदीरण, (न०) उद्+ईर्+ल्युट् । कहना । उच्चारण करना । बोलना ।

उदीर्ण, (त्रि०) उद्+ऋ+क्त । उदार । खुलादिल । महान् । बडा । बडाहुआ.

उदूढ, (त्रि०) उद्+वह्+क्त । विवाहाहुआ । मोटा । धारणकिये । उठायेहुए.

उद्गत, (त्रि०) उद्+गम्+क्त । उदयहुआ उत्पन्नहुआ । ऊंचे गया । निकालाहुआ.

उद्गमनीय, (न०) उद्+गम्+अनीयर् । धौतवस्त्रद्वय । दो साफ कपडे.

उद्गाढ, (न०) उद्+गाह्+क्त । अतिशय । जियादा । अत्यन्त । बहुतही.

उद्गातृ, (पु०) उच्चैर्गायति साम । उद्+गै+तृच् । सामवेदके गानेहारा.

उद्गार, (पु०) उद्+गृ+घञ् । उद्गमन, कै । शब्द । आवाज.

उद्गीथ, (पु०) उद्+गै+थक् । एक सामवेदका भाग (हिस्सह).

उद्गूर्ण, (त्रि०) उद्+गुरी । उद्यम करना+क्त । उद्यत । तय्यार.

उद्धः, (पु०) उद्+हन्-नि० । श्रेष्ठ । बहुत उंदा । समासमें पीछे रहता है जैसे "ब्राह्मणोद्धः" प्रशस्त ब्राह्मण.

उद्घर्षण, (न०) उद्+घृष्+ल्युट् । घिसना । रगडना । अंगोंकी रगड । खुजली करना.

उद्घाटक, (पु० न०) उद्+घट्+णिच् ण्वुल् । खूयेसे पानी निकालनेके लिये एक प्रकारकी कला । अरघट । घुरना । "करणे ल्युट्" उद्घाटनम् (न०) इसीअर्थमें होताहै) "भावे ल्युट्" प्रतिबंधनिरास । रुकावटका दूरकरना । बंधीहुई वस्तुका बंधन खोलना । कुञ्जी । चाबी.

उद्घात, (पु०) उद्+हन्+घञ् । आरम्भ । शुरू । पाँवका पिसलना । प्राणायामके अङ्ग कुम्भकका भेद । ऊंचा । मुद्गर । शस्त्र । किसी ग्रन्थका भागविशेष.

उद्दान, (न०) उद्+दो+ल्युट् । बांधना । चुल्ही । समुद्रकी आग.

उद्दामन, (त्रि०) उद्गतं दाम्नः । जो रस्सीसे बाहिर निकलगयाहो । बंधनसे रहित । खुला । बिनरोक । स्वतन्त्र । खुदमुख्तार । बडासख्त । "उत्कृष्टं श्रेष्ठं दाम पाशाख्यं अस्त्रं यस्य" । जिसका पाशनामी अस्त्र बहुत अच्छाहो । वरुण (पु०).

उद्दित, (त्रि०) उत्+दो+क्त । बांधा हुआ.

उद्दिश्, तु० उ० । सूचन करना । इशारा करना । वर्णन करना । जतलाना । विख्यात करना । बतलाना । दिशति-ते । दिदेश-दिदिशे । अदिक्षत्- अदिक्षत.

उद्दिष्ट, (त्रि०) उद्+दिश्+क्त । उपदिष्ट । उपदेश कियागया । चाहागया । छन्दःशास्त्रमें प्रस्तारके विशेष ज्ञानका साधन (न०).

उद्दीपन, (न०) उद्+दीप्+णिच्+ल्युट् । प्रकाशन । रौशनी । चमकानेहारा । अलङ्कारशास्त्रमें कहेगये रस आदिको चमकानेहारे चन्द्रमा आदि विभाव । भडकाना.

उद्देश, (पु०) उद्+दिश्+घञ् । अनुसन्धान । ढूंडना । तलाश करना । खोजना । अभिलाष । इच्छा । चाह । निशान । लिये नामपर संक्षेप वस्तुका नाम लेना.

उद्द्राव, (पु०) उद्+द्रु+घञ् । पलायन । भागना । दौडना.

उद्द्योत, (पु०) उद्+द्युत्+घञ् । प्रकाश । रौशनी । धूप । चमक.

उद्धत, (पु०) उद्+हन्+क्त । राजमल्ल । राजाओंका पहिलवान । (त्रि०) बोलनेमें बडा चञ्चल । विनाविचारे बोलनेवाला । अविनीत । न सीखाहुआ । वहसी । अहंकारी । मगरूर । ऊपरको उठायेहुये । उठाहुआ । बडा सख्त जोशवाला.

उद्धरण, (न०) उद्+हृ+भावे ल्युट् । छुटकारा । कै । कर्जउतारना । उखाडना "कर्मणि ल्युट्" । वमन कियागया अन्न आदि.

उद्धर्ष, (न०पु०) उद्+हृष्+णिच्+घञ् । उत्सव । खुशी (विवाह आदि) । त्यौहार । बडीखुशी (विशेषकरके धर्मसम्बन्धी) शरदोत्सवादि.

उद्धर्षण, (न०) उद्+हृष्+णिच्+ल्युट् । रोमाञ्च । शरीरके रोमका खडा होना.

उद्धव, (पु०) उद्+हु+अप् । यज्ञका अग्नि । कृष्णदेवका पियारा यादवविशेष (यह कृष्णजीका बडाभक्त हुआहै) । उत्सव.

उद्धार, (पु०) उद्धियते । उद्+हृ+कर्मणि घञ् । जो उठाया जाताहैं । जिसे शोधन करना पडताहै । ऋण । कर्ज । "भावे घञ्" । मुक्ति । छुटकारा । बचाना । बाहिर निकालना । सम्पदा.

उद्धुर, (त्रि०) उद्गता धूः अस्मात् । भार निकल गया है जिस्से । बोझेसे स्वतन्त्र हुआ । बेरोक होगया । स्वतन्त्र.

उद्धूत, (त्रि०) उद्+धू+क्त । उत्क्षिप्त । उठायागया । फेंकागया.

उद्धूनन, (न०) उद्+धू+णिच्+ल्युट् । उत्क्षेपण । ऊपर फेंकना । उछालना.

उद्धृत, (त्रि०) उद्+हृ-धृ वा क्त । उठायागया । उछालागया । छुडायागया । जुदा कियागया । नाश कियागया । खानेसे छोडागया । रक्षा कियागया.

उद्बन्धन, (न०) उद्+बन्ध्+ल्युट् । गलेमें रस्सी लगाकर अपनेको बांधना । पाशबंधन । फांसीलगाना । अपनेको लटकादेना.

उद्बुद्ध, (त्रि०) उद्+बुध्+क्त । विकसित । खिलाहुआ । जागाहुआ । जानीहुई वस्तुके सम्बन्धी ज्ञानसे जागाहुआ वस्तुका संस्कार । जैसे हाथीको देखकर अनुभव कियेहुए हस्तिपक (महावत) का खयाल होजाना (ये न्यायादि मतमें स्वीकार कियागयाहै).

उद्बृंहण, (न०) उत्+बृंह्+अन । वृद्धि । बढना । उन्नति । तरक्की.

उद्बोध, (पु०) उद्+बुध्+घञ् । थोडी समझ । पहिचान । याद्दाश्त.

उद्भट, (पु०) उद्+भट्+अच् । कच्छु । छज्ज (चावल आदिके छांटनेका कामदेताहै) । अच्छे आशयवाला । महाशय । प्रवर । बहुतअच्छा । ग्रन्थसे बाहिरका श्लोक आदि । फुटकल । सूर्य । प्रसिद्ध । मशहूर.

उद्भव, (पु०) उद्+भू+अप् । उत्पत्ति । जन्म । पैदाइश । निकलना.

उद्भिज्ज, (त्रि०) उद्+भिनत्ति-क्विप्-उद्भित् तथा सन् जायते-जन्+ड । पृथिवी फाडकर उत्पन्नहुआ वृक्ष । झाडी आदि । भाजी । नवा तात । सब स्थावर.

उद्भिद्, (त्रि०) भूमिं उद्भिनत्ति-उद्+भिद्+ क्विप् । वृक्ष, तृण, झाडी, वल्ली और लतारूप पाँच प्रकारका स्थावर । यज्ञ (पु०).

उद्भूत, (त्रि०) उद्+भू+क्त । उत्पन्न । प्रगटहुआ । न्यायमतमें प्रत्यक्ष योग्य । जिसे आंखसे देख सकें.

उद्भेद, (पु०) उद्भियतेऽङ्गं अत्र घञ् । जिस्से शरीर ऊपरको उठताहै । रोमाञ्च । शरीरपर रोमका खडा होना । जन्म । पैदाइश । "भावे घञ्" फुरना.

उद्भ्रम, (पु०) उद्भ्राम्यत्यनेन । उद्+भ्रम्+घञ्-अवृद्धिः । जिस्से चित्त बहुत घूमताहै । उद्वेग । व्याकुलता । घबराहट । सन्देहहोना । भूल । फिकर । घूमना.

उद्यत, (त्रि०) उद्+यम्+क्त । तयारहुआ । ऊंचेकियागया । ग्रन्थका अध्याय.

उद्यम, (पु०) उद्+यम्+घञ्-अवृद्धिः । उद्योग । हिम्मत । दिलेरी । परिश्रम । मिहनत । कोशिश । तयारी.

उद्यान, (न०) उद्+या+आधारे ल्युट् । जाना सैरकरना । बाग । चौक । आक्रीडन । विलासकरनेका बाग । इरादा । आशय.

उद्यावः, (पु०) उद्+यु+घञ् । मिलाना । इकट्ठा करना.

उद्यासः, (पु०) उद्+यस्+घञ् । प्रयत्न । कोशिश. Ved.

उद्योग, (पु०) उद्+युज्+घञ् । यत्न । चेष्टा । उद्यम । उत्साह । कोशिश.

उद्रिक्त, (त्रि०) उद्+रिच्+क्त । अतिशयित । जियादा । अधिक । बढाहुआ.

उद्रिच्, रुधा० ब० प्रायः कर्मवाच्यमें प्रयुक्त होता है। अतिक्रमण करना। लांघना। (पंचमीके साथ आता है) "ममेवोद्रिच्यते तव जन्मनः" रिणक्ति। रिरेच। अरिचत्। रिक्तः.

उद्रेक, (पु०) उद्+रिच्+घञ्। वृद्धिः। बढना। उपक्रम। प्रारम्भ। नीमका पेड.

उद्वर्तन, (न०) उद्वर्त्यतेऽनेन। उद्+वृत्+णिच्+ल्युट्। जिस्से शरीर अच्छा बनायाजाय। शरीरके साफ करनेका द्रव्यआदि। "भावे ल्युट्" विलेपन। चन्दन लगाना। घसना। उछलना.

उद्वर्तनं, (न०) उद्+वृत्+अन। ऊपर जाना। उदय होना। बाहिर निकलना। सम्पत्ति। उन्नति। इधर उधर लौटना। चन्दन आदि लगाना। शरीरको सुगन्धित द्रव्योंसे मलना। कदाचार.

उद्वाहु, (त्रि०) उद्गतो बाहुर्यस्य। जिसकी भुजा ऊंचे हो। भुजा ऊपरको उठाये.

उद्वह, (पु०) उद्वहति ऊर्ध्वं नयति पितॄन्। वह्+अच्। जो पितरोंको ऊपर (स्वर्गादि लोकमें) लेजाताहै। पुत्र। ऊर्ध्वं वहति+अच् "प्रवहवायुके ऊपरकी हवा".

उद्वान्त, (पु०) उद्गतं वान्तं अन्तर्जलं अस्मात्। प्रा० ब०। जिस्से भीतरका जल बाहिर निकलाहै। मदरहित हाथी। उद्+वम्+क्त। उद्गीर्ण। बाहिर निकाला। कैकीया.

उद्वासन, उद्+चु०वस्+ल्युट्। मारण। मारना। "उद्+वस्+णिच्+ल्युट्"। विसर्जन। विदाकरवाना। छोडना.

उद्वाह, (पु०) उद्+वह्+घञ्। विवाह। शादी। परिणय.

उद्विग्न, (त्रि०) उद्+विज्+क्त। उद्वेगयुक्त। घबराया हुआ। दुःख दूर करनेकी शक्ति न होनेसे घबराये हुए दिल। खिजा हुआ.

उद्वीक्ष्, भ्वा० आ०। देखना। विचारना। खयाल करना। पहिचानना। ईक्षते। ईक्षाञ्चक्रे। ऐक्षिष्ट। ईक्षितः.

उद्वीक्षणं, (न०) उत्+वि+ईक्ष्+अत। ऊपर देखना। दर्शन। नेत्र.

उद्वीज्, चु० प०। पंखा करना। किसी पर वा सामने फूंकना। उद्वीजयति.

उद्वृत्, भ्वा० आ०। ऊपरको जाना। चढना। फूट निकलना। वर्तते। अवर्तिष्ट.

उद्वृत्त, (त्रि०) उद्गतो वृत्तात्। गति०। अच्छी चालसे उखड गया। दुर्वृत्त। दुराचारी। जिसका चालचलन अच्छा नहो। "उद्+वृत्त+क्त। उत्क्षिप्त। फेंकागया (ऊपरको).

उद्वृत्त, (त्रि०) उद्+वृत्+क्त। उन्नत। उठा हुआ स्तन, दन्त, मेघआदि। बढना। फूलगया। विरुद्ध होगया। सम्पन्न। आहत। अभिमानी। उद्धत। दुराचारी। क्षुब्ध.

उद्वेग, (पु०) उद्+विज्+घञ्। चित्तका व्याकुल होना। विरह (विछोडा) से दुःख उपजना। डर। "उद्गतो वेगोऽस्मात्" निश्चल। जो हिले नहिं। जल्दी जानेहारा.

उद्वेजन, (त्रि०) उद्+विज्+अन। भयसे कंपानेवाला। व्याकुल करनेवाला। किसीके चित्तको दुःखानेहारा। नं। ना क्षोभ। उत्कण्ठ०। दुःखदेना। शोक.

उद्वेजयितृ, (त्रि०) उद्+विज्+तृच्। भयानक। डरावना.

उद्वेजि(गि)न्–जक, (त्रि०) उद् विज्+णिन् ण्वुल्। संक्षोभक। घबरानेवाला। नाश करनेवाला। दुःख पहुंचानेवाला। उत्कण्ठित। नाखुश। बेआराम.

उद्वेदि, (त्रि०) उन्नता वेदिः यत्र। ऊंचे सिंहासनवाला.

उद्वेल, (त्रि०) उद्गतो वेलां। किनारेसे बाहिर होगया। मर्यादा तोडनेहारा.

उद्वेल्ल्, भ्वा० प०। कांपना। लहरना। इधर उधर चलना। वेलति.

उद्वेल्लित, (त्रि०) उद्+वेल्+क्त। कांप गया। लहराने लगा।–तं (न०) कांपना। कंप.

उद्वेष्टन, (न०) उद्+वेष्ट्+ल्युट्। हाथ और पांवका बन्धन। जुरांवां। दस्तान। पगडी। "उद्गतं वेष्टनात्" (त्रि०) खुलाहुआ (बंधनसे).

उन्द्, गीला करना-रुधा० पर० अक० सेट्। उनत्ति। औन्दीत्.

उन्दरु, (पु०) उन्द+अरु। मूषिक। चूहा। मूसा। "उन्दुर" उन्दुरु "तथा".

उन्न, (त्रि०) उन्द+क्त। आर्द्र। गीला। भीगाहुआ। दयावाला.

उन्नत, (त्रि०) उद्+नम्+क्त। उच्च। ऊंचा। महान्। बडा.

उन्नति, (स्त्री०) उद्+नम्+क्तिन्। वृद्धि। बढती। उदय। गरुडकी स्त्री.

उन्नद्ध, (त्रि०) उद्+नह्+क्त। अच्छीतरहसे बंधाहुआ। बढाहुआ.

उन्नमित, (त्रि०) उद्+नम्+णिच्+क्त। उठायागया। ऊंचे कियागया.

उन्नयन, (न०) उद्+नी+ल्युट्। वितर्क। दलील। उठाना.

उन्नयन, (त्रि०) ऊपरको उठायेहुए नेत्रोंवाला।–नं (न०) उठाना। ऊंचे करना। जल खेंचना। रस निकालना। संवाद करना। अनुमान करना.

उन्नस, (न०) उन्नता नासा यस्य। नसादेशः। ऊंची नाकवाला.

उन्निद्र, (त्रि०) उद्गता निद्रा मुद्रा यस्य। जिसका मूंदना जाता रहा। खिलाहुआ। जागाहुआ.

उन्नी, भ्वा० प०। ऊपरको लेजाना। उठाना। निकालना। तर्ककरना। नयति। अनैषीत्। आत्म०। उन्नयते.

उन्नेतृ, (त्रि०) उत्+नी+तृच् । उठानेवाला । अनुमान करनेवाला.

उन्मज्जक, (पु०) उद्+मज्ज+ण्वुल् । गलेतक पानीमें खडे होकर तपस्या करनेहारा तपस्वी । पानीपर तैरनेहारा (त्रि०).

उन्मत्त, (पु०) उद्+मद्–करणे क्त । धतूरा । मुचकुन्द वृक्ष । "कर्तरि क्त" उन्मादवाला । पागल । ग्रहके आवेशवाला (त्रि०).

उन्मद, (त्रि०) उद्गतो मदो हर्षोऽस्य । जिसे मद चढगया । पागल । "करणे अच्" मादक द्रव्य । नशेकी चीज.

उन्मनस्, (त्रि०) उद्भ्रान्तं मनोऽस्य । उखडे हुए दिलवाला । जिसका मन और जगह गया हो । जिसका दिल कायम नहिं.

उन्मनस्–नस्क, (त्रि०) उद्भ्रान्तं मनः अस्य । व्याकुल मनवाला । क्षुब्ध । वेआराम । उखडे हुए मनवाला.

उन्मथ, (पु०) उद्+मन्थ्+घञ् । वध । मारना । कतल करना.

उन्माथ, (पु०) उन्मथ्यतेऽनेन । उद्+मथ्+करणे घञ् । मांस देकर मृग आदिके फसानेके लिये लगाया गया कूटयन्त्र (फंदा) । "भावे घञ्" । मारना । तवाह करना । लाचार करना.

उन्माद, (पु०) उद्+मद्+घञ् । चित्तविभ्रम । दिलका वहुत घूमना । भूतादि प्रवेश करनेसे चित्तका कायम न रहना । विछुडेहुओंकी कामदेवसे कीगई एक प्रकारकी दशा । किसी शरीरके रोगसे वुद्धिका स्थिर न रहना । पागलपना । पागल.

उन्मादन, (पु०) उद्+मद्+णिच्+ल्युट् । उन्मत्त करनेहारा कामदेवका एक वाण.

उन्मान, (न०) उद्+मा+करणे ल्युट् । परिमाणका साधन तोला मासा आदि । मापना.

उन्मार्ग, (त्रि०) उत्क्रान्तः मार्गात् । मार्गसे लांघ गया । कुत्सित मार्गपर चलनेवाला ।–र्गः (पु०) कुत्सितमार्ग । दुराचार ।–र्गं (अव्य०) कुत्सित मार्गसे.

उन्मिषित, (त्रि०) उद्+मिष्+क्त । प्रफुल्ल । फूलाहुआ । खिलाहुआ । थोडासा चमकाहुआ.

उन्मीलन, (न०) उद्+मील्+ल्युट् । उन्मेष । नेत्रका झिमकना । खिलना.

उन्मुख, (त्रि०) उद्+ऊर्ध्वं मुखं अस्य । जिसका मुख ऊंचेहो । जो ऊंचे देखताहै । उद्यतहुआ । किसी काममें लगाहुआ.

उन्मुद्र, (त्रि०) उद्गता मुद्रा यस्मात् । जिस्से मूंदना जातारहा । त्यक्तमुद्र । खिलाहुआ.

उन्मूलन, (न०) उन्मूल्+णिच्+ल्युट् । उत्पाटन । उखाडना । जडसे निकालना.

उन्मेष, (पु०) उद्+मिष्+घञ् । नेत्र आदिका खोलना । थोडा प्रकाश.

उप, (अव्य०) समीपता । पासहोना । अधिक । आसन्न । सादृश्य । आरम्भ.

उपकण्ठ, (त्रि०) उपगतः कण्ठं । अत्या० स० । गलेके पास पहुंचा । निकट गलेकेपास । गाँवका पीछा । घोडोंकी उछलनेकी चाल.

उपकरण, (न०) उपक्रियतेऽनेन । उप+कृ+ल्युट् । जिस्से उपकार कियाजाताहै । प्रधान साधन । जैसे भोजनादिमें व्यञ्जन (सलूना-नालदा) । सोनेका साधन पलँग आदि । नहानेका सावन उबटन आदि । पूजामें फुल आदि । राजा आदिके लिये छाता, चौरी वगैरह साधन.

उपकार, (पु०) उप+कृ+घञ् । उपकृति । मदत । फैलायेहुए पुष्पआदि । अनुकूलता । नौकरी । मिहर्वानी.

उपकारक, (त्रि०) उप+कृ+ण्वुल् । उपकार करनेहारा "स्त्रीत्वे टापि अक इत्वे उपकारिका" । राजाका घर । कपडेका वनाहुआ राजाका घर । खेमा । तम्बू । पटभवन.

उपकार्य, (त्रि०) उप्+कृ+ण्यत् । उपकाराई । उपकारके लायक राजगृह । राजाका घर (कपडेका वनाहुआ) । राजभवन (स्त्री०).

उपकूप, (पु०) उपगतः कूपं-अत्या० स० । खूएके पास गया । खूएके पासका खोदा हुआ जलाशय (जलका स्थान).

उपक्रम, उप+क्रम्+घञ् । उपायजानकर आरम्भ करना । पहिला । आरम्भ । इलाज । शुरू । हिकमत । भागना । वल.

उपक्रोश, (पु०) उप+कुश्-बुलाना+घञ् । निन्दा । कोसके निकट । कोसभर (त्रि०) तर्जना । झिडकना.

उपक्रोष्टृ, (पु०) उप+कुश्+तृच् । गर्दभ । गधा । निन्दक । निन्दाकरनेहारा (त्रि०) ऊंचे चिल्लाना.

उपक(क्वा)णं, (न०) उप+क्वण् शब्दे–अप्–घञ् वा । वीणाका शब्द । बीनकी आवाज.

उपक्षिप्, तु० प० । फेंकना । किसीकी ओर वा ऊपर । धक्का लगाना । क्षिपति । चिक्षेप । अक्षैप्सीत् । अक्षिप्त । निन्दाकरना । ताना लगाना.

उपक्षीण,–(त्रि०) उप+क्षि+क्त । घट गया । छिप गया । नष्टहोगया.

उपक्षेतृ, (त्रि०) उप+क्षि+तृच् । पास जानेवाला । पास रहनेवाला । साथ लगाहुआ.

उपक्षेपः, (पु०) उप+क्षिप्+घञ् । विन्यास । इशारा (संकेत) करना । दोषलगाना । प्रारम्भ । किसीपर लगाके बात करनी.

उपगर्त, (त्रि०) उप+गम्+क्त । स्वीकृत । मानागया । पहुंचा । जानागया.

उपगम, (पु०) उप+गम्+घञ्-अवृद्धिः । पासजाना । अङ्गीकार । जान्ना.

उपगीति, (स्त्री०) उप+गै+क्तिन् । आर्याछन्दका भेद । गाना.

उपगुह्य, (त्रि०) उप+गुह्+ण्यत् । आलिङ्गनकरनेयोग्य । मिलनेलायक "भावे ण्यत्" मिलना.

उपगूहन, (न०) उप+गुह्+ल्युट् । आलिङ्गन । मिलना । ग्रहण । पकड़ना.

उपग्रह, (पु०) उप+ग्रह्+अप् । कारावन्धन । जेलखाना । जेलमें डालना । मिहर्वानहोना । "कर्मणि घञ्" कैदी । धूमकेतु आदि ग्रह.

उपग्राह्य, (न०) उप+ग्रह्+ण्यत् । उपढौकन । भेंटा । नजराना मिहर्वानीके लायक.

उपघात, (पु०) उप+हन्+घञ् । अपकार । नाश । रोग । चोट.

उपघ्नः, (पु०) उप+हन्+क । संनिकृष्ट । आश्रय । पासका आसरा स्थान । आश्रय । सहारा । स्थिति । रक्षा । जो किसीपर वा किसीसे हो.

उपचक्रः, (पु०) उपगतः चक्रं=चक्रवाकं । एक प्रकारका चकवा पक्षी.

उपचक्षुस्, (न०) उपगतं चक्षुः इव । नेत्रके समान लगा हुआ । ऐनक.

उपचय, (पु०) उप+चि+अच् । वृद्धि । बढना । उन्नति । ज्योतिषमें लग्नसे ३ रा ६ ठा १० वां और ११ वां स्थान.

उपचरित, (त्रि०) उप+चर्+क्त । उपासित । सेवा कियागया । जनायागया.

उपचर्म-र्मं, (अव्य.) चर्म चमडे पर वा चमडेके निकट.

उपचर्य, (स्त्री०) उप+चर्+क्यप् । चिकित्सा । हिकमत । सेवा.

उपचाय्य, (पु०) उपचीयते संस्क्रियतेऽसौ-नि० । जिसका संस्कार कियाजाताहै । यज्ञमें संस्कारकीगई आग.

उपचार, (पु०) उप+चर्+घञ् । चिकित्सा । हिकमत । सेवा । व्यवहार । रिश्वत । झूठीबातोंसे कीसीको खुश करना.

उपचित, (त्रि०) उप+चि+क्त । दग्ध । सडाहुआ । बढाहुआ । इकट्ठा कियाहुआ । तयार कियागया.

उपच्छन्द्, चुरा० प० । चापलूसी करना । प्रेरणा करना । प्रार्थना करना । देना । छन्दयति । अचिच्छन्दत्.

उपजरस्, (अव्य०) बुढापेके सन्मुख । बुढापेमें.

उपजल्प्, भ्वा० प० । बोलना । बातचीत करना (बकबक करना । उपदेश करना.

उपजाति, (स्त्री०) वर्णवृत्तछन्दोभेद । एकप्रकारका छन्द.

उपजाप, (पु०) उप+जप+घञ् । भेद । फरक । जुदाहोना । धीरे धीरे जप करना.

उपजापक, (त्रि०) उप+जप्+ण्वुल् । कानाफूसी करनेवाला । सूचक । विरोध बढानेवाला । वञ्चक । छलिआ.

उपजीविका, (स्त्री०) उपजीवयति । उप+जीव+ण्वुल् टाप् । रोजी । जीनेका साधन । वृत्ति । जीविका । गुजारा.

उपजीविन्, (त्रि०) उप+जीव+णिन् । आश्रित । आसरेमें पडाहुआ नौकर.

उपजीव्य, (त्रि०) उप+जीव्+ण्यत् । आश्रय । आसरा.

उपजुष्ट, (त्रि०) उप+जुष्+क्त । प्राप्त । पहुंचगया । सादर लाया गया वा स्वीकार किया गया । आश्रय लिया गया । सेवा किया गया । प्यार किया गया.

उपज्ञा, (स्त्री०) उप+ज्ञा+कर्मणि अङ् । उपदेश किये बिना आपही समझलेना । "भावे घञ्" । पहिला ज्ञान.

उपढौक्, णिजन्त –भेटा करना । सादर भेट चढाना । उपढौकयति.

उपढौकन, (न०) उप+ढौक्+कर्मणि ल्युट् । भेट । उपहार । उपायन.

उपतापः, (पु०) उप+तप्+घञ् । उष्णता । गरमी । क्लेश । विपत्ति । व्यथा । शोक.

उपत्यका, (स्त्री०) उप+त्यकन् । पर्वतके निकटकी भूमि.

उपदंश, (पु०) उप+दन्श्+घञ् । मद्यपानरोचकद्रव्यं । शराब पीनेके साथ अच्छा लगनेवाली खानेकी चीज़ । चटनी । उपस्थरोगभेद । एक प्रकारकी डंकमारना । डसना । लिङ्गकी बीमारी । दंशन । डंकलगाना । डंकमारना.

उपदर्शक, (पु०) उप+दृश्+णिच्+ण्वुल् । द्वारपाल । दरवान । दिखलानेहारा (त्रि०).

उपदर्शक, (त्रि०) उप+दृश्+ण्वुल् । दिखानेवाला । –कः (पु०) मार्गदर्शक । द्वारपाल । साक्षी.

उपदा, (स्त्री०) उप+दा । अङ् । उत्कोच । रिश्वत । बड्डी । भेट.

उपदृश्, भ्वा० प० । देखना । तालाश करना । पहिचान्ना कर्मवाच्य । दिखाई देना णिचि । दिखाना । आगे रखना । जतलाना । परिचित कराना । किसी व्यक्तिको मिथ्या स्वरूपसे छलना । वर्णन करना । पश्यति । ददर्श । अद्राक्षीत् । अदर्शत् । दर्शयति । दृश्यते । अदर्शि । दृष्टः.

उपदेश, (पु०) उप+दिश्+घञ् । गुप्तवार्ताकथन । छिपीहूई बातका कहना । भलाईकी बात बताना । सिखलाना । प्रवृत्त करानेहारा वचन.

उपदेष्टृ, (त्रि०) उप+दिश+तृच् । शिक्षा देनेवाला । (ष्टा० पु०) शिक्षक । गुरु । विशेषतः आध्यात्मिक विद्याका आचार्य.

उपद्रव, (पु०) उप+द्रु+अप् । उत्पात । मुसीबत । जुल्म । शुभ वा अशुभको सूचन करनेहारा भूकम्प (भूचाल) आदि । सख्ती.

उपद्रु, भ्वा० प० । पास ही भागना । किसीके सामने भागना । आक्रमण करना । उपद्रवति । दुद्राव । अदुद्रुवत् । द्रुत.

उपद्रुत, (त्रि०) उप+द्रु+क्त । व्याकुल । घबरायाहुआ । मुसीबतमें पडाहुआ.

उपधा, (स्त्री०) उप+धा+अच् । धर्म अर्थादिकी रचना-से मन्त्रिओंकी परीक्षा करना । छल । व्याकरणमें पिछले अक्षरका पहिला.

उपधा, जु० उभ० । स्थापन करना । रखना । किसीमें वा किसीके नीचे रखना । दधाति । धत्ते । दधौ । दधे । अधात् । अधित.

उपधातु, (पु०) उपमितः धातुभिः । स्वर्ण आदि प्रधान धातुओंके सदृश सात द्रव्य (स्वर्णमाक्षिक, तारमाक्षिक, तुत्थ, कांस्य, रीति, सिन्दूर, शिलाजतु) । शरीरकी सात धातु (रससे दुग्ध, लोहूसे रज, मांससे चर्बी, मेदसे गर्मी, अस्थिसे दांत, मज्जासे वाल, वीर्यसे ओजस्).

उपधान, (न०) उपधीयते शिरोऽत्र । जहां रशि रक्खा जाय । शिरोधान । सिहाना । वालिश । प्रणय । पियार । विष । एक प्रकारका व्रत.

उपधि, (पु०) उप+धा+कि । किसी वस्तुकों औरही प्रकारसे प्रकाश करना । कपट । छल । रथका पहिया.

उपधूपित, (त्रि०) उप+धूप्+क्त । आसन्नमरण । जि-सकी मौत नजदीक हो । सन्तापसे युक्त । दुःखमें पडाहुआ.

उपध्मा, भ्वा० प० । फूंकना । चलना । धमति । दध्मौ । अधमीत्.

उपनत, (त्रि०) उप+नम्+क्त । उपस्थित । हाजिर किया-गया । पहुंचा । आप्त.

उपनम्, भ्वा० प० । आना । पहुंचना । किसीकीभी ओर झुकना.

उपनय, (पुं०) उप+नी+अच् । उपनयन । पास लेजा-यांगया । शिक्षाके लिये गुरुके पास पहुंचाना । न्याय-मतमें जो जो धूमवाला है वह वह वह्निवाला भी है । यह (पर्वत) भी वैसाही (धूमवाला) है, इत्यादि वाक्यरूप न्यायका एक अवयव (प्रतिज्ञादि पञ्चावय-वोमेंसे) । ज्ञानलक्षणासे उत्पन्न हुआ ज्ञानका भेद.

उपनयन, (न०) उप+नी+ल्युट् । स्मृतिमें कहागया एक संस्कार । यज्ञसूत्र । जनेऊ धारण करना.

उपनाह, (पु०) उप+नह्+घञ् । बीनमें तारोंके बांध-नेकी जगह । व्रण । घाव । फोडा आदिकी शान्तिके लिये लेप करनेकी चीज । मर्हम । मल्हम । बीन बाजेके बंद.

उपनिधि, (पु०) उप+नि+धा+कि । न्यास । अमानत । विश्वाससे रक्खी गई चीज.

उपनिषद्, (स्त्री०) उपनिषीदति प्राप्नोति ब्रह्मात्मभावोऽ-नया । उप+नि+सद्+क्विप् । जिसके द्वारा जीव ब्रह्मस्वरूप हो जाताहै । ब्रह्मविद्या । ब्रह्मविद्याको प्रतिपादन करने-हारा वेदका शिरोभाग । वेदान्त । परा विद्या । श्रीमद्भग-वद्गीता । धर्म ज्ञाता । पास पहुंचना । अज्ञाननिवा-रिणी विद्या.

उपनी, भ्वा० प० । पास लाना । पहुंचाना । नयति । नि-नाय । अनैषीत् । अनित.

उपनेत्र, (न०) उपगतं नेत्रम् । नेत्रके पास आगया । आंखके पास रक्खा गया । काच आदिसे बनाया हुआ नेत्रका उपकार करनेहारा द्रव्य । चशमा । ऐनक.

उपन्यास, (पु०) उप+नि+अस्+घञ् । वाक्योपक्रम । वचनरचना । पास रखना । अमानत । विचार । छल । बहाना । भूमिका.

उपपति, (पुं०) उपमितः पत्या । पतिके समान खयाल कियागया । जार । दूसरा पति । गौणपति.

उपपत्ति, (स्त्री०) उप+पद्+क्तिन् । युक्ति । दलील । सिद्धि । सङ्गति । मिलावट.

उपपद, (न०) उपोच्चारितं पदम् । प्रा० स० । पास बोला गया पद । नामके पीछे उच्चारण किया गया शर्म-वर्मादिरूप शब्द । व्याकरणमें प्रत्यय आदि विधान करने-हारा और सप्तम्यन्त पदसे निर्देश किया गया सूत्र । जैसे "कर्मण्यण्" इत्यादि स्थलमें कर्मणि यह सप्तम्यन्त पद और "अण्" प्रत्ययके विधानमें उपपद है । वह शब्द जो पहिले बोला जाय.

उपपन्न, (त्रि०) उप+पद्+क्त । युक्तियुक्त । दलीलसे भराहुआ । मुनासिब पाया.

उपपातक, (न०) उपमितं पातकेन । पातकसे उपमा दि-या गया गोवधादिरूप पाप । गौको मरना आदि पाप । दूसरे दर्जेका पाप.

उपपादन, (न०) उप+पद्+णिच्+ल्युट् । युक्तिसे समर्थन करना । दलीलसे साबित करना । अच्छीतरह बयान करना.

उपपुर, (न०) उप समीपे पुरं । नगरके पास । शाखा-नगर । छोटा नगर.

उपपुराण, (न०) उपमितं पुराणेन । पुराणके समान । सनत्कुमार आदिसे कहे गये अठारह ग्रन्थ । सनत्कुमार, नारदीय, नारसिंह, शिव, कापिल, दुर्वासा, मानव, वरुण, उशनस, साम्ब, नन्दिकेश्वर, सौर, पराशर, महेश्वर, आदित्य, वासिष्ठ, भागवत, ब्राह्म.

उपप्लव, (पु०) उप+प्लु+अप् । आकाशसे उल्कापात (रेखाके स्वरूपसे गिराहुआ तेजका समूह) आदि उपद्रवका होना । चन्द्रमा और सूर्यका ग्रहण.

उपप्लु, भ्वा॰ आ॰ । तैरना । लोट पोट होना पानीका । कष्ट उठाना । प्लवते । पुप्लुवे । अप्लोष्ट.

उपप्लुत, (त्रि॰) उप+उ+क्त । पीडित । मुसीबतमें पडाहुआ । पानीमें डूबगया । उपद्रुत.

उपबृंहित, (त्रि॰) उप+बृन्ह्+क्त । वर्धित । बढाहुआ.

उपभोग, (पु॰) उप+भुज्+घञ् । भोजनादिसे उत्पन्न-हुआ सुखका अनुभव । भोग । सुख । खाना । खादलेना.

उपमर्द, (पु॰) उप+मृद्+घञ् । आलोडन । रिडकना । हिंसन । मारना । पहिले धर्मको छिपाकर दूसरेको कायम करना । मलना.

उपमा, (स्त्री॰) उप+मा+अङ् । सादृश्य । समानता । बराबरी । अर्थालङ्कारभेद.

उपमातृ, (स्त्री॰) उपमिता मात्रा । माताके समान दूसरी माता । सौतेली माता । धात्री । दाई । मास्सी–माम्मी-फूफी–बडी भरजाई आदि सभी मातृतुल्य हैं.

उपमान, (न॰) उपमीयतेऽनेन । उप+मा+ल्युट् । जिस्से समानता दिखलाई जाय । जैसे "चांदके समान मुख" यहां चन्द्र उपमान है क्योंकि इसीसे मुखकी उपमा दीगई । " भावे ल्युट् " सादृश्यज्ञान । समान होनेकी समझ.

उपमिति, (स्त्री॰) उप+मि+क्तिन् । सादृश्यज्ञान । उपमा.

उपमेय, (त्रि॰) उपमीयतेऽसौ उप+मि+यत् । सादृश्यका आश्रय । जैसे "चन्द्रके समान मुख" यहां मुख उपमेय है.

उपयन्तृ, (पु॰) उप+यन्+तृच् । स्त्रीसे विवाह करनेवाला । भर्ता । पति.

उपयम, भ्वा॰ उ॰ । विवाह करना । स्त्री बनाना इस अर्थमें आत्मनेपदमें है । यच्छति । उपयच्छते । ययाम । येमे । अयंसीत् । अयंस्त.

उपयम, (पु॰) उप+यम्+घञ्-अवृद्धिः । विवाह । शादी । " उपयाम ".

उपयाच्, भ्वा॰ आ॰ । चाहना । मांगना । प्रार्थना करना । याचते । अयाचिष्ट.

उपयाचक, (त्रि॰) प्रार्थना करनेवाला । भिक्षुक । मांग-नेवाला.

उपयाचितक, (न॰) उप+याच्+क्त-स्वार्थे कन् । प्रार्थित । मांगा गया । अपनी इष्टसिद्धिके लिये देवताको देनेलायक पशु आदि बलि.

उपयुक्त, (त्रि॰) उप+युज्+क्त । न्याय्य । ठीक २ रचा-गया । खायाहुआ.

उपयुज्, रुधा॰ आ॰ । काममें लाना । प्रयोग करना । नियोग करना । जोडना । उपयुंक्ते । युयुजे । अयुंक्त । युक्त.

उपयोग, (पु॰) उप+युज्+घञ् । भला आचरण । इष्टसि-द्धिके लिये व्यापार । भोजन । खुराक । जोडना । लगाना । इस्तिमाल.

उपयोगिता, (स्त्री॰) उपयोगिनो भावः तल् । फायदामन्द होना । लायकहोना । मौका । जरूरत । कृपा । मिहर्बानी । मतलब.

उपयोगिन्, (त्रि॰) उप+युज्+घिनुण् । इष्टका साधन । अनुकूल । योग्य काममें लगाना । इस्तिमाल करना । कामदेनेलायक । फायदामन्द । ठीक.

उपरक्त, (पु॰) उप+रञ्ज्+क्त । रंगनेवाले द्रव्यसे रंगाहुआ । राहुसे पकडाहुआ चन्द्रमा और सूर्य । विपत्तिमें पडाहुआ.

उपरञ्ज, दि॰ उ॰ । कर्मवाच्ये । लाल होना । ग्रहण लगना । उपरज्यते भगवान् चन्द्रः । णिचि । रंगना । कष्टमें डालना.

उपरत, (त्रि॰) उप+रम्+क्त । विरत । हटाहुआ । निहत । मारागया । मृत । मराहुआ । सबकामनाओंसे शून्य ठहरगया.

उपरति, (स्त्री॰) उप+रम्+क्तिन् । विरति । हटना । वस्तुकी प्राप्ति होनेपरभी उदासीन होना । विषयोंसे इन्द्रियोंको हटाना । जीवन, स्वामित्व, और विषयभोगा-दिके होनेपरभी अत्यन्त इच्छा न करना । " कर्मसे पुरुषका अर्थ सिद्ध नहि होसक्ता " ऐसी बुद्धिको उपरति कहते हैं.

उपरत्न, (न॰) उपमितं रत्नेन । रत्नके साथ उपमा दिया गया । गौण रत्न । छोटा रत्न । काच । शंख । शुक्ता आदि.

उपरम्, भ्वा॰ प॰ । कभी आत्मनेपदी भी है । त्याग करना । हटजाना । समाप्त करना.

उपराग, (पु॰) उप+रञ्ज्+घञ् । सूर्य और चन्द्रक ग्रहण । राहु । उपद्रव । निन्दा । व्यसन । तक्लीफ.

उपराम, (पु॰) उप+रम्+घञ् । निवृत्ति । हटना । विष-योंसे वैराग्य । आराम । शान्ति.

उपरि, उपरिष्टात् { अव्य॰ } ऊपर । ऊंचे (इनके साथ द्वितीया और षष्ठी विभक्ति मिलती हैं).

उपरूपक, (न॰) उपगतं रूपकं=दृश्यकाव्यं सादृश्येन । स-मानतासे नाटकके साथ मिलता जुलता छोटा नाटक । अठारह नाटिका त्रोटक आदि प्रकारके गौण दृश्यकाव्यों-मेंसे एक.

उपरोध, (पु॰) उप+रुध्+घञ् । आनुकूल्यके लिये कथनरूप अनुरोध । अपनी ओर करनेके लिये रुकावट । पास रोकना । इकरार । बडाई । सहायता । आसरा.

उपल, (पु॰) उपनीयते=उपस्तीर्यते गिरिरनेन । जिस्से पर्वत विछायाजाताहै । नी+ड, नस्य लत्वम् । पत्थर । रत्न.

उपलक्षण, (न॰) समीपस्थस्य स्वसम्बन्धिनश्च लक्षणं ज्ञानं यस्मात् । पास रहनेहारे और अपनेसे सम्बन्धरखनेवालेका ज्ञान जिस्से हो । जैसे " कौओंसे दही बचाई जाय " यहां कौआ यह पद अपने और अपनेसे भिन्न कुत्ते आदिकाभी बोधक है । अपना और अपनेसे भिन्नका अजहत्स्वार्था-लक्षणाद्वारा बोध करानेहारा शब्द.

उपलब्धि, (स्त्री०) उप+लभ्+क्तिन् । ज्ञान । जानना । प्राप्ति । हासिल.

उपलम्भः, (पु०) उप+लभ्+घञ्+मुम् च । लाभ । ज्ञान । साक्षात् ज्ञान । अनुभव.

उपलल्, चुरा० प० । प्यार करना । लाड करना । चापलूसी करना । उपलालयति । "नतांगीमुपलालयन्".

उपलिप्, तु० प० । लेप करना । पौलिश करना । लिम्पति । लिलेप । अलिपत्—अलिप्त । दूषित करना । विगाडना.

उपलिप्सा, (स्त्री०) उप+लभ्+सन्+अङ् । लाभ करनेकी इच्छा.

उपलेपिन्, (त्रि०) उप+लिप्+इन् । लेप करनेवाला । वटना मलनेवाला.

उपवद्, भ्वा० आ० । वातचीत करना । सान्त्वना । दिलासा करना । चापलूसी करना । "भृत्यानुपवदते" । निन्दा करना.

उपवन, (न०) उपमितं वनेन । वनके समान आपही लगाया गया वृक्षोंका समूह । वनावटी वन । उद्यान । वाग.

उपवर्ष, (पु०) उप+वृष्+अ । शंकर स्वामीके पुत्रका नाम । इसने मीमांसादर्शनपर अनेक ग्रन्थ लिखे हैं.

उपवर्ह, उप+वर्ह्+घञ् । शिरोधान । सिरका आसरा । सिहाना । वालिश । तकिया । "उपवर्हणम्" इसी अर्थमें.

उपवाद, (पु०) उप+वद्+घञ् । निन्दा । उपालंभ । दोष-लगाना.

उपवास, उप+वस्+घञ् । सूर्योदयसे लेकर आठ पहरतक न खाना । अनाहार । भोजन न करना.

उपवाह्य, (पु० स्त्री०) उप+वह्+ण्यत् । राजाकी सवारी हाथी किंवा हथिनी । राजाकी पालकी आदि.

उपविश्, तु० प० । बैठजाना । आसन लेना । पास बैठना । प्रतीक्षा करना । खेमा लगाना । अभ्यास करना । विशति । अविक्षत्.

उपवीणयति, नामधातु० प० । उत्सवमें किसीदेवताके आगे बीन बजाना.

उपवीत, (न०) उप+अज्+क्त-वीभावः । दक्षिण (दहिना) हाथ वाहिर निकालेहुए वायें भागमें रक्खागया कपाससे रचाहुआ यज्ञोपवीत (जनेऊ).

उपवीतं, (न०) उप+वि+क्त । यज्ञोपवीत धारण करना । हिन्दुओंमें प्रथम तीन वर्णोंसे धारण किया गया यज्ञोपवीत अर्थात् जनेऊ.

उपवीतिन्, (त्रि०) उपवीतं विद्यतेऽस्य । जिसका यज्ञोपवीत हो । यज्ञोपवीत धारण करनेहारा.

उपवेद, (पु०) उपमितः वेदेन । वेदके समान । आयुर्वेदादि.

उपवेष्टृ, (त्रि०) उप+विश्+तृच् । बैठनेवाला.

उपशम्, दि० प० । शान्त होना । शाम्यति । शशाम । अशमत् । शान्त.

उपशम, (पु०) उप+शम्+घञ् । इन्द्रियोंका रोकना । तृष्णाका नाश । रोगका उपाय । शान्ति । आराम.

उपशय, (त्रि०) उप+शी+अ । एक ओर सोनेवाला । सुख-देनेवाला.

उपशाय, (पु०) उप+शी+घञ् । क्रमसे शयन करना । वारोवारी सोना.

उपशल्य, (न०) उपगतं शल्यं अस्थिस्थानं । हड्डिओंके पास । नगर वा गांवके पास खुली जगह (मैदान) । ग्रामान्त.

उपशी, अदा० आ० । पास लेटजाना । परस्पर विषयप्रीति करना । किसीका भला करना । किसीके साथ सम्मत होना । शेते । शिश्ये । अशयिष्ट । शयित.

उपश्रु, स्वा० प० । श्रवण करना । सुनना । शृणोति । शुश्राव । अश्रौषीत् । श्रुत.

उपश्रुति, (स्त्री०) उप+श्रु+क्तिन् । अङ्गीकार । कवूल करना । देवसम्बन्धी शुभाशुभ प्रश्न । इकरार । भाग्य पूछना.

उपश्लेष, (पु०) उप ईषत् एकदेशेन श्लेषः (सम्बन्धः) । एक ओरकी मिलावट । आधार और आधेयका एक ओरमें मिलना । जैसे घर और घडेका उपश्लेष होता है.

उपश्लोकयति, नामधातु० प० । वर्णन करना । श्लोकोंद्वारा स्तुति करना । उपश्लोकयितव्यः.

उपष्टम्भक, (न०) उप+स्तम्भ्+ण्वुल् । स्थूणा । खूटा । किल्ला । जियादती । घरका थम्भा । रोकनेवाला (त्रि०).

उपसंग्रह, (पु०) उप+सम्+ग्रह्+अप् । पाँवपर हाथ लगाकर नमस्कार करना । झुकना । चरणवन्दना.

उपसंयम, (पु०) उप+सम्+यम्+घञ् । उपसंहार । खेंचना । समाप्त करना । वांधना । रोकना । जगतका नाश.

उपसंख्यान, (न०) उपसंख्यायतेऽनेन । व्येञ्+ल्युट् । पहिरनेका कपडा । धोती.

उपसंहार, (पु०) उप+सम्+हृ+घञ् । समाप्ति । इकट्ठा करना । खेंचना.

उपसत्ति, (स्त्री०) उप+सद्+क्तिन् । सेवा । मिलना । बयान । पूजा.

उपसर्ग, (पु०) उप+सृज्+घञ् । रोगका विकार । उपद्रव । शुभाशुभको सूचन करनेहारा महाभूतविकाररूप उत्पात । व्याकरणमें "प्र परा" आदि जो क्रियाके साथ जुडते हैं.

उपसर्गः, (पु०) उप+सृज्+घञ् । व्याधि । बीमारी । विघ्न । हानि । ग्रहण.

उपसर्जन, (न०) उप+सृज्+ल्युट् । अमुख्य । अप्रधान । गौण । विशेषण । समासशास्त्रमें प्रथमान्तनिर्दिष्ट । विपत्ति छोडना । प्रतिनिधि । एककी जगहपर काम करनेहारा.

उपसूर्यक, (न०) उपगतं सूर्यं सूर्यमिव चन्द्रं वा । संज्ञायां कन् । चन्द्रमा वा सूर्यके पास मण्डलाकार (गोलाकृति) परिघ (घेरा) । सूर्यके पास पहुंचगया.

उपसृ, भ्वा० प० । सम्मुख जाना । पहुंचना । निकट खेंचना । सरति । ससार । असार्षीत् । सृत.

उपसृज्, तु० प० । खुला वहा देना । देना । मिलना । जुडना । किसीके साथ मिलाना । उत्पन्न होना । नाश होना । सृजति । ससर्ज । असार्क्षीत् । सृष्ट.

उपसृष्ट, (न०) उप+सृज्+क्त । मिलाहुआ । दवाया हुआ । मैथुन । भोग । " प्र " आदि उपसर्गवाला । "प्रभाव" " विसृष्ट " (त्रि०).

उपसेक, (पु०) उप+सिच्+घञ् । सींचकर कोमल करना.

उपस्कर, (पु०) उप+कृ+अप्-सुट्च । व्यञ्जनादिको शुद्ध करनेका साधन । मसाला । घरमें रहनेका साधन । गृहकी वस्तु । साधन । सामग्री । भूषण । निन्दा । कलङ्क । दोष.

उपस्कारः, (पु०) उप+कृ+घञ् । परिशिष्ट । कोई वस्तु शेष रह गई । एक बात भूषित करनेके लिये दूसरीका जोड देना.

उपस्कृ, तना० उभ० । तयार करना । भूषित करना । सजाना । पकाना । करोति । कुरुते । चकार । चक्रे । अकार्षीत् । अकृत । कृत.

उपस्थ, (त्रि०) उप+स्था+क । निकटवर्ती । पास रहनेवाला । स्थ पु० अंक (गोद) । मध्यभाग । स्थः-स्थं प्र न । उत्पत्तिचिन्ह । लिंग वा योनि.

उपस्था, भ्वा० उभ० । निकट ठहरना । अपना भाग लेना । पास आना । पहुंचना । सेवा करना । तिष्ठति । उपतिष्ठते । अस्थात् । अस्थित.

उपस्थातृ, (त्रि०) उप+स्था+तृच् । सेवक । नौकर । पहुंचगया । पुरोहितभेद.

उपस्थान, (न०) उप+स्था+ल्युट् । उपेत्य स्थितिः । पहुंचकर ठहरना । निकट होना । नजदीकी । नमस्कार । प्रार्थना । प्राप्ति । वहुत लोग.

उपस्थित, (त्रि०) उप+स्था+क्त । समीपस्थित । हाजिर । प्राप्त । पहुंचाहुआ । आयाहुआ । शुद्ध कियाहुआ । उपासना कियागया.

उपस्पर्श, (पु०) उप+स्पृश्+घञ् । स्पर्श । छूना । नहाना "उपस्पृश्यन्ते इन्द्रियाणि अत्र" । जिसमें इन्द्रियोंको छूते हैं । विधिसे पहिले जलको पीकर मुख आदिको स्पर्श करना । विधिसे आचमन करना । "तथेत्युपस्पृश्य" इति रघुः.

उपस्पृश्, तु० प० । स्पर्श करना । जलको छूना । आचमन करना.

उपस्पृष्ट, (त्रि०) उप+स्पृश्+क्त । नहाया गया । छूआ गया । आचमन कियागया । पास स्पर्श कियागया.

उपहस्तिका, (स्त्री०) उपगता हस्तं अत इलम् । छोटी गुथली । संदूक । पान सुपारीआदि रखनेका डव्वा.

उपहार, (पु०) उप+हृ+घञ् । उपढौकन । भेट । नजर । " अव्य० स० " (समीपार्थ) हारके पास (न०).

उपहार, (पु०) उप+हृ+अप् । युद्ध । लडाई । निर्जन । एकान्त । निकट । नजदीक.

उपहित, (त्रि०) उप+धा+क्त । स्थापन किया गया । रक्खा गया । किसीपर वा किसीमें रक्खागया । न्यस्त । अमानत । रक्खा गया.

उपहृ, (भ्वा० प०) लाना । पास लाना । भेटा देना । हरति । जहार । अहार्षीत्.

उपाकरण, (न०) उप+आ+कृ+ल्युट् । यज्ञोपवीत (जनेऊ) डालकर वेदको पढना । सावन महीनेकी पूर्णिमाके दिन करनेलायक वैधकर्म । संस्कार करके यज्ञमें पशुओंको मारना । प्रारम्भ.

उपाकृ, तना० उ० । लाना । पहुंचाना । आमन्त्रण करना । बुलाना । देना । पाना । किसी विधिका समाधान करना.

उपांशु, (अव्य०) उप+अनश्+उ । निर्जन । अकेलीजगह । अप्रकाश । छिपाहुआ । विनाजाने । दूसरा न समझे, देवतामें मनको लगाकर अपनेही सुनेलायक जिसमें जीभ और ओठ थोडासा हिलें ऐसा जप उपांशु कहलाता है । धीरेसे उपास्यदेवताके मन्त्रादिका जप करना (पु०) "उपांशु स्याच्छतगुणः" इति मनुः.

उपाख्यान, (न०) उप+आ+ख्या+ल्युट् । पूर्ववृत्तकथन । प्राचीन वृत्तान्त कहना । पुराना हाल वयान करना-कहना । "रामोपाख्यानमत्रैव" इति महाभारतम्.

उपागम, (पु०) उप+आ+गम्+घञ् । स्वीकार । मानलेना । समीपागमन । पास आना । पहुंचना.

उपाङ्ग, (न०) उपमितं अङ्गेन । गति० । अङ्गके समान । प्रधानका सहायक । "शरीरके हाथ पांव आदि अङ्ग हैं तो अंगुलीयें उपाङ्ग हुये ।" "साङ्गोपाङ्गैरिहोदिताः" इत्यमरः.

उपाजे, (अव्य०) दुर्वलकी सहायता करना.

उपात्त, (त्रि०) उप+आ+दा+क्त । गृहीत । लियागया । प्राप्त । हासिल । पकडागया । वह हाथी कि जिसका मा प्रगट नहिं हुआ.

उपादान, (न०) उप+आ+दा+ल्युट् । ग्रहण । लेना । पकडना । अपने २ विषयोंसे इन्द्रियोंका हटानारूप प्रत्याहारद कार्य उपजानेके लिये ग्रहण किया गया कार्यके साथ मिलाहुआ कारण । जैसे मट्टी आदि घडे आदिके, सोना आदि अलंकार (जेवर) आदिके उत्पन्न करनेके लिये ग्रहण किया जाता है, और वह सदा कार्योंमें मिला हुआ है (मट्टीही घडा आदि है) । नियमसे कार्यके पहिले रहनेहारा कारण.

उपादेय, (त्रि०) उप+आ+दा+यत्। उत्कृष्ट। वहुत अच्छा। लेनेलायक। प्रधान। मुख्य। करनेलायक। मनोहर। अत्यंत उमदह.

उपाधि, (पु०) उप+आ+धाञ्+कि। धर्मकी चिन्ता। "विशेषणमें उपाधिका भेद होता है किन्तु उपाधिवालेका भेद कदापि नहिं हो सक्ता"। सांख्यसूत्रम्। अपने धर्मको दूसरेमें लेजाकर चमकानेहारा। जैसे दर्पण (शीशा) अपने नीलेपनको मुखमें लेजाकर, और जवाका फूल अपनी लालीको स्फटिक (विलौर) में लेजाकर चमकाता है, इसलिये यहां दर्पण आदि नीलापन आदिके प्रकाश करनेमें उपाधि है। न्यायमतमें हेतुके व्यभिचार (हेतु और साध्यका इकट्ठा न रहना) को दिखानेहारा साध्यमें व्यापक और साधनमें अव्यापक पदका अर्थ। छल। नाम। चिह्न। कुटुम्ब पालनेकी घवराहट.

उपाध्याय, (पु०) उपेत्य अधीयतेऽस्मात्। उप+अधि+इङ्+घञ्। पास जाकर जिस्से पढा जाय। जो जीविकाके लिये वेद वा वेदाङ्गके किसी एकदेशको पढावे। पढानेहारा। उस्ताद। "उपाध्यायी, उपाध्यायानी" (स्त्री०).

उपानह, (स्त्री०) उप+आ+नह्+क्विप्। उपसर्गको दीर्घ होजाता है। चर्मपादुका। चमडेकी खडावें। जूती.

उपान्त, (पु०) उपमितं अन्तेन। प्रा० स०। निकट। नजदीक। प्रान्त। सिरा। आंखका कोण.

उपान्त्य, (त्रि०) उपान्ते भवः यत्। अन्त्यसमीपभव। अन्तसे पहिला.

उपाय, (पु०) उप+अय्+घञ्। साधन। उपगम। हासिल। शत्रुओंको आधीन करनेके लिये चार कारण—साम, दान, भेद, दण्ड.

उपायन, (न०) उप+अय्+ल्युट्। तोषकारक उपहार। दूसरेको प्रसन्न करनेहारी भेट। समीप गमन। पास जाना.

उपारः, (पु०) उप+ऋ+कर्मणि घञ्। निकटता। समीपता। चूक। भूल। अपराध। पाप। गुनाह.

उपारत, (त्रि०) उप+आ+रम्+क्त। निवृत्त। हटगया। चलागया.

उपारम्, भ्वा० प०। विलास करना। खेलना। मनका विनोद कर दिलवहलाना। किसी बातमें प्रसन्न होना। किसी वातसे विरत होना (हटना)। उपारमति। उपारंसीत्। उपारतः.

उपालम्भ, (पु०) उप+आ+लभ्+घञ्-मुमूच। निन्दापूर्वक दुष्टवचन। किसीकी पहिले निन्दा करके बुरा वचन कहना। दोष। उलाहना। परस्परदूषण। आपसमें दोष लगाना। देरी करना.

उपावृत्त, (त्रि०) उप+आ+वृत+क्त। श्रमको दूर करनेके लिये वार २ पृथिवीपर लोटनेहारा घोडा। लौटगया.

उपास्, अदा० आ०। पास बैठना। एक ओर बैठना। सेवा-करना। पूजा करना। निवास करना। पहुंचना। उपास्ते। उपासाञ्चक्रे। उपासिष्ट.

उपासक, (त्रि०) उप+अस्+ण्वुल्। उपासना करनेहारा। भक्त सेवक.

उपासन, (न०) उप+अस्+ल्युट्। शराभ्यास। तीर चलानेकी विद्या। शुश्रूषा। सेवा। देवतादिका आराधन (स्त्री).

उपास्ति, (स्त्री०) उप+आस्+क्तिन्। उपासना। देवताकी सेवा। खिदमत.

उपेक्षक, (त्रि०) उप+ईक्ष+ण्वुल्। दो विवाद (मुबाहिसा) करनेवालोंकी जीतहारके साथ जिसका स्पर्श नहिं। उन दोनोंसे किये गये हर्षविषादसे शून्य। उदासीन। जो प्रतीकार (बदला) लेनेमें उद्यत नहिं होता। बेपर्वाह.

उपेक्षा, (स्त्री०) उप+ईक्ष+अ। त्याग। छोडना। "ये मेरेलिये न हो" इस प्रकारकी इच्छा। उदासीनता। बेपर्वाही.

उपेन्द्र, (पु०) उपगत इन्द्रं अनुजत्वात्। जो छोटा भाई होनेसे इन्द्रके पास गया। विष्णु। वह कश्यपसे अदितिमें इन्द्रके पीछे वामनरूपसे उत्पन्न हुआ.

उपेन्द्रवज्रा, (स्त्री०) ग्यारह अक्षरके पादवाला एक प्रसिद्ध छन्दोभेद.

उपेय, (त्रि०) उप+इण्+यत्। उपायसे सिद्धहोनेलायक। पानेयोग्य.

उपोढ, (त्रि०) उप+वह्+क्त। समीप। नजदीक विवाहाहुआ। कोटबंदी.

उपोद्घात, (पु०) उप+उद्+हन्+घञ्। प्रकृतोपपादक उदाहरण। असली वातको सिद्ध करनेहारी मसाल। असली अर्थको वर्णन करनेके लिये दूसरे अर्थका बयान करना। ऐसी चिन्ता कि जिस्से प्रकृतकी सिद्धि हो.

उपोषण, (न०) उप+उष्+ल्युट्। उपवास। दिन रात कुछ न खाना। व्रत। रोजह। फाका.

उप्त, (त्रि०) वप्+क्त। कृतवापधान्य। बोयाहुआ धान्य। बोयाहुआ पेडका बीज। बीजागया.

उप्तकृष्ट, (त्रि०) पूर्वं उप्तं पश्चात् कृष्टं-पूर्वकालेत्यादि स०। पहिले बोया गया पीछे खेंचा गया। बीज बोनेके अनन्तर खेंचा गया खेत.

उब्ज, कोमल होना। तुदा० पर० अक० सेट्। उब्जति.

उभ, (त्रि०) द्विव० उ+भक्। द्वय। दो। इसका समासमें प्रयोग नहिं। समासमें सदैव उभय हो जाता है। उभ्+अयट्.

उभयतस्, (अव्य०) उभ्+तसिल्-वृत्तौ अयः। दोनो ओर.

उभयत्र, (अव्य०) दोनों स्थान। दोनों जगह.

उभयथा, (अव्य०) दोनों प्रकार। दोनों तरह.

उम्, (अव्य०) रोष। गुस्सा। स्वीकार। मानना। प्रश्न। सवाल.

उमा, (स्त्री०) ओः शिवस्य मा लक्ष्मीः। शिवजीकी लक्ष्मी। दुर्गा। पार्वती। "उं शिवं माति पतित्वेन मन्यते-मा+क"। शिवजीको पतिस्वरूपसे मानती है। शिवजीकी स्त्री। "वे-मक् सम्प्रसारणम्" हरिद्रा। हलदी। अतसीवृक्ष। कीर्ति। यश। कान्ति। सुन्दरता। शान्ति। सुख.

उमाधव, (पु०) उमायाः धवः पतिः ६ त०। पार्वतीका पति। महादेव। "उमाकान्त" "उमेश" इसी अर्थमें.

उमासुत, (पु०) ६ त०। कार्तिकेय। "उमापुत्र"। "उमात्मज" ऐसेही.

उम्भ्, भरना-पूर्ण करना। तुदा० पर० सक० सेट्। उम्भति। औम्भीत्.

उर्, जाना। पर० सक० सेट्। ओरति। औरीत्.

उरग, (पु०) उरसा गच्छति। उरस्+गम्+ड+सलोपश्च। सर्प। सांप। जो छातीसे जाताहै। आश्लेषानक्षत्र.

उरगाशन, (पु०) उरगान् अश्नाति। उरग+अश्+ल्यु। उप० स०। जो सांपोंको खाताहै। गरुड.

उरण, (पु०) ऋ+क्यु धातोरुच्च। मेष। मेंढा। मेढ़ा.

उरभ्र, (पु०) उरु उत्कटं भ्रमति। भ्रम्+ड। पृषो० उ-लोपः। मेघ। बादल। मेंढा। मेढ़ा। जो बडा घूमताहै.

उररी, (अव्य०) अङ्गीकार। कबूलकरना। मानना। विस्तार। फैलाव.

उरश्छद, (पु०) उरश्छाद्यतेऽनेन। छद्+णिच्+घ-ह्रस्व। जिसके द्वारा छाती ढकी जातीहै। कवच। जिरह। संजोआ.

उरस्, (न०) ऋ+असुन्-धातोरुच्च। वक्षःस्थल। छातीकी जगह। छाती.

उरसिज, (पु०) उरसि जायते। जन्+ड-त० सप्तम्या अलुक्। जो छातीपर उपजताहै। स्त्रीकी छातीपर निकला स्तन। मम्मा। पिस्तान.

उरीकृत, (त्रि०) उरी+कृ+क्त। अङ्गीकृत। स्वीकार कियागया। मानागया। फैलायागया। कबूल कियागया.

उरुक्रम, (पु०) उरुर्महान् क्रमः पादो विक्रमो वा यस्य। जिसका पाँव वा बल बडा है। विष्णु। बडी शक्तिवाला.

उरोज, (पु०) उरस्+जन्+ड। (न०) स्त्रीस्तन। औरतका पिस्तान.

उर्णनाभ, (पु०) उर्णेव सूत्रं नाभौ गर्भेऽस्य। अच् समासः। जिसके शरीरके भीतर जाला है। मकडी.

उर्णा, (स्त्री०) उर्ण्यते आच्छाद्यते। उर्णु+ड-ह्रस्वश्च। मेषादि लोम, मेढे आदिके बाल। भौंके बीचकी रेखा.

उर्व्, मारना। भ्वा० पर० सक० सेट्। उर्वति। और्वीत्.

उर्वरा, (स्त्री०) उरु+ऋ+अच्। सर्वसस्याढ्य भूमि। हरएक ओर खेतीसे भरी हुई जमीन। जरखेज जमीन.

उर्वशी, (स्त्री०) उरून् अश्नुते वशीकरोति। उरु+अश्-क गौरा० ङीप्। स्वर्गकी वेश्या। अप्सराविशेष। हूर। (कहते हैं कि यह नारायण ऋषिके पट्टोंसे निकली).

उर्वी, (स्त्री०) उरु+ङीष्। भूमि। पृथिवी। जमीन.

उल्, देना- पर० सक० सेट्। ओलति। औलीत्.

उलप, (पु० न०) वल्+कपच्, सम्प्रसारणम्। डाली और पत्तोंके समूहवाली बेल। कोमल तृणभेद (न०).

उलूखल, (न०) ऊर्ध्वं खं उलूखं-पृषो० तत् लाति गृह्णाति ला+क। धान्य आदि कूटनेका साधन। काठ आदिका पात्र। उखरी। ऊखल। चट्टू। गुग्गुल.

उल्का, (स्त्री०) उष्-जलाना+क। नि० षस्य लः। रेखा (लकीर) के स्वरूपमें आकाशसे गिराहुआ तेजका समूह.

उल्कामुखी, (स्त्री०) उल्केव रात्रौ ज्वलत् मुखं यस्याः। जिसका मुख रात्रिके समय उल्काके समान जलता है। गीदडी.

उल्मुक, (न०) उष्-जलाना+मुक। षस्य लः। अङ्गार। जलती हुई लकडीका कोइला। लुआत्ती.

उल्लाप, (पु०) लप्+घञ्। काकुवाक्य। शोक वा रोग आदिसे ध्वनिका विकार। (आवाजका बदलना).

उल्लास, (पु०) उद्+लस्+घञ्। प्रकाश। चमक। आल्हाद। बडी खुशी। ग्रन्थका अध्यायरूप भाग। बढती.

उल्लिखित, (स्त्री०) उद्+लिख्+क्त। उत्कीर्ण। खोदागया। छोटा कियागया। ऊपर लिखागया। चित्रागया.

उल्लेख, (पु०) उद्+लिख्+घञ्। उच्चारण। बोलना। लिखना। कहना। अलंकारका भेद.

उल्लेखन, (न०) उद्+लिख्+ल्युट्। वमन। कै करना। खोदना। बोलना.

उल्लोच, (पु०) उद्+लोच्+घञ्। चन्द्रातप। चंदोआ। चांदनी.

उल्लोल, (पु०) उद्+लोड्+घञ्-डस्य लत्वम्। महातरङ्ग। बडी लहर.

उल्व, (न०) वल्+व-कृ-सम्प्रसारणम्। गर्भको ढाकनेहारा चमडा। जरायु। रेहम। गर्त। गढा.

उल्वण, (त्रि०) उद्+वण्+अच्। पृषो० दस्य लः। व्यक्त। स्पष्ट। जाहिर। साफ। वात-पित्त-कफ तीनों धातुओंमेंसे एककी अधिकता (जियादती).

उशनस्, (पु०) वश्+कनसि। भार्गव। शुक्र। भृगुका बेटा। शुक्र। (सु विभक्तिमें "उशना" संबोधनमें "उशनन्-उशन-उशनः").

उशीर, (पु० न०) वश्+ईरन्-किच्च। वीरणमूल। खस्स। खुशबोदार पोदा.

उष्, मारना-जलाना-भ्वा०पर०सक०सेट्। ओषति। औषीत्.

उष, (पु०) उष्+क । दिन । गुग्गल । रात्रिविशेष । खारी मट्टी । कामी.

उषण, (न०) उष्+क्युन् । मरिच । पिप्पली । सुण्ठी । (स्त्री०).

उषर्बुध, (पु०) उषसि सन्ध्यायां बुध्यते होमार्थं प्रकाशते । संध्याके समय जो होमके लिये चमकतीहै । उषस्+बुध्+क । अहरादित्वात् रः । अग्नि । चित्रकवृक्ष.

उषस्, (न०) उष्+असि-किच्च । प्रत्यूष । अहर्मुख । सुवह । पचमन घडिओंके पीछेका समय.

उषसी, (स्त्री०) उषं तापकत्वात् दिवसं स्यति । उष्+सो+क+ङीष् । जो दिनको नाश कर्ती है । साँझ । संध्या.

उषा, (स्त्री०) उष्+क+टाप् । सुवह । शव । वाणासुर राजाकी कन्या । उखा.

उषापति, (पु०) उषायाः पतिः ६ त० । उषाका पति । अनिरुद्ध । कामदेवका बेटा । कृष्णदेवका पोता । "उषाकान्त" । सूर्य.

उषित, (त्रि०) उष्+क्त । पर्युषित । वासीहोगया । जलगया । वस्+क्त । स्थित । ठहरा रहा.

उष्ट्र, (पु०) उष्+ट्रन्-किच्च । ऊंट । बाहिरकी गाडी.

उष्ण, (पु०) उष्+नक् । ग्रीष्मऋतु । गरमीका मौसिम (वहार) । धूप । पलाण्डु । पियाज । नरकभेद । गरम । तपाहुआ । आलस्यरहित । दक्ष । चतुर (त्रि०).

उष्णांशु (पु०) उष्णा अंशवो यस्य । जिसकी किरणें गरम हों । सूर्य । सूरज.

उष्णागम, (पु०) उष्णस्यागमोऽस्मिन् । जिसमें गरमी पडतीहै । निदाघकाल । गरमीका समय.

उष्णीष, (पु० न०) उष्णमीषते हिनस्ति । ईष्+क । शक० पररूपम् । जो गरमी नाश करे । शिरोवेष्टनवस्त्र । शिर ढाकनेके लिये कपडा । पटका । पगडी । किरीट । मुकुट.

उष्म, (पु०) उष्+मक् । निदाघ । गरमी । आतप । धूप । गरमीकी वहार.

उष्मपा, (पु०) उष्मं पिबन्ति । पा+क्विप् । भृगुका पुत्र । पितृगणभेद.

उस्र, (पु०) वसन्ति रसा अत्र । वस्+र+क्त । जहां रस रहतेहैं । किरण । सूर्यकी किरणोंमें जलरहताहै इसलिये वे किरणें रसवाली कही जातीहैं । वृष । बैल । सुरभी । उपचित्रा लता (स्त्री०).

उह्यमान, (त्रि०) वह्+कर्मणि शानच् । आकृष्यमाण । खेंचागया । उठायागया.

ऊ

ऊ, (अव्य०) सम्बोधन । वाक्यका आरम्भ । दया । रक्षा.

ऊ, (पु०) अवतीति अव्+क्विप्+ऊठ् । महादेव । चन्द्रमा । बचानेहारा (त्रि०).

ऊढ, (त्रि०) वह्+क्त । विवाहित । विवाहाहुआ । उठायाहुआ । लेजायागया.

ऊत, (त्रि०) ऊय्-तांतोंको फैलाना-बुनना-क्त । स्यूत । सीयागया । सूतसे गुथा हुआ । बनाहुआ.

ऊति, (स्त्री०) ऊय्+क्तिन् । सीना । "अव्+क्तिन्" । नि० बचाना । क्षरण । वहना.

ऊधस्, (न०) उन्द्+असुन् । नि० उतो दीर्घः । स्त्री वा गौ आदिकके दूधका आधार । आपीन । मेड । लेवा । हवाना । थन.

ऊधस्य, (न०) ऊधस्+यत् । जो हवानेमें हो । दुग्ध । दूध.

ऊन, (त्रि०) ऊन्-हानिकरना- नुकसानहोना । अच् । हीन । कमजोर । असम्पूर्ण । कम । नापूरा.

ऊम्, (अव्य०) क्रोधसे बोलना । प्रश्न । सवाल । निन्दा । गुस्ताखी.

ऊय्, तांतोंको फैलाना-बुन्ना । भ्वा०आ०सक-सेट् । ऊयते । औयिष्ट.

ऊररी, (अव्य०) अङ्गीकार । कबूल करना । विस्तार । फैलाव.

ऊरव्य, (पु०) ऊरु+भवार्थे यत् । वैश्य । उसका ब्रह्माके पट्टसे जन्महुआ । ऊरुसम्भव । पट्टसे उपजा.

ऊरु, (पु०) ऊर्णूयते=आच्छाद्यते । ऊरु+कर्मणि कुः-नुलोपश्च । जानूपरिभाग । घुटनेके ऊपरका हिस्सह । पट्ट.

ऊरुपर्वन्, (पु०) ऊरोः पर्वेव । पट्टकी मानों गांठ है । जानु । घुटना । गिट्टा.

ऊर्ज्, जीना, जोर करना । चु० उभ० अक० सेट् । ऊर्जयति-ते । और्जिजत्-त.

ऊर्ज, (पु०) ऊर्ज-आसरा लेना+घञ् । कार्तिक मास । कतक महीना "भावे घञ्" । बल । उत्साह । दिलेरी । "ऊर्जस्" इसीमें.

ऊर्जस्वल, (त्रि०) ऊर्जस्+अस्त्यर्थे वलच् । बलवाला । "ऊर्जस्वी".

ऊर्जित, (त्रि०) ऊर्ज+क्त । बडे बलवाला । वृद्धियुक्त । मशहूर । वर.

ऊर्णनाभ, (पु०) ऊर्णेव तन्तुर्नाभौ अस्य । अच् समा० ह्रस्वः । जिसकी नाभीमें ऊनकी नाई तांतें हो । मकडी । "ऊर्णनाभिः" इसी अर्थमें होता है । भौंके बीच गोल स्वरूपवाला महापुरुषका चिह्न । रोमसमूह.

ऊर्णा, (त्रि०) ऊर्णु+करणे ड । मेषलोम । मेढे आदिके रोम । ऊन । पशम । पानीका भंवर । दोनों भौंके बीचके रोम । "ऊर्णासनाथं" कादम्बरी.

ऊर्णायु, (पु०) ऊर्णाः सन्त्यस्य युच् । मेष । मेढा । कम्बल । मकडी । छिनभरमें टूट जानेहारा.

ऊर्णु, ढांकना। अदा०उभ०. सक० सेट्। ऊर्णोति-ऊर्णुते। और्णावीत्-और्णुवीत्-और्णवीत्। और्णविष्ट.

ऊर्ध्व, (त्रि०) उद्+हाड्+ड पृषो०. उरादेशः। ऊंचा। ऊपर.

ऊर्ध्वकण्ठी, (स्त्री०) ऊर्ध्वः कण्ठः मुखं अस्याः। व०। गौरा० ङीष्। जिसका मुख ऊंचे हो। महाशतावरीलता। वेल.

ऊर्ध्वजानु, (त्रि०) ऊर्ध्वे जानुनी यस्य। जिसके घुटने ऊंचे हो। मोटे घुटनो (गोड्डों) वाला.

ऊर्ध्वज्ञु, (त्रि०) ऊर्ध्वे जानुनी यस्य। (जानुशब्दको विकल्पसे ज्ञु आदेश होता है)। ऊपरका भाग। मोटे घुटनोंवाला.

ऊर्ध्वपाद (पु०) ऊर्ध्वाः पृष्ठस्थाः पादा अस्य। जिसके चारों पाव पीठपर हो। शरभ नाम हाथीका शत्रु-एक प्रकारका पशु। आठ पांववाला जीव.

ऊर्ध्वपुण्ड्र, (पु०) ऊर्ध्वः ऊर्ध्वमुखः पुण्ड्रः इक्षुयष्टिरिव। ऊंचे मुखवाला गन्नेकी टोरीकी नाई। माथेपर ऊंचे मुखवाला। पौंडे गन्नेकी तरह तीन रेखाओंके स्वरूपका तिलकभेद। एक प्रकारका ऊंचा टीका। प्रायः वैष्णव लोक माथेपर लगाते हैं.

ऊर्ध्वम्, (अव्य०) ऊंचा.

ऊर्ध्वरेतस्, (पु०) ऊर्ध्वं न पतत् रेतो यस्य। जिसका वीर्य ऊंचेको जाता है अर्थात् नहीं गिरता। महादेवजी। सनकादि। संन्यासी। भीष्मपितामह.

ऊर्ध्वलिङ्ग, (पु०) ऊर्ध्वं उत्कृष्टं लिङ्गं चिह्नं अस्य। जिसका निशान उत्तम है। महादेव। "ऊर्ध्वलिङ्गं विरूपाक्षं" सन्ध्याङ्गमन्त्रः.

ऊर्ध्वलोक, (पु०) कर्म०। ऊंचा लोक। स्वर्ग। बहिश्त.

ऊर्मि, (पु०) (स्त्री०) ऋ+मि-अर्तेरुच। तरङ्ग। लहर। प्रकाश। वेग। जोर। तेजी। पीडा। चाह। बुभुक्षा (भूख) आदि छे। ("जैसे भूख पियास प्राणकी, शोक मोह मनकी, जरा (बुढेप्पा) मृत्यु (मौत) शरीरकी ये छे ऊर्मियें है")। एकप्रकारकी घोडेकी चाल.

ऊर्मिका, (स्त्री०) ऊर्मिरिव कायति। कै+क। लहरकी तरह चमकनेहारी। अंगूठी। "स्वार्थे कन्" लहर आदि.

ऊर्मिमालिन्, (पु०) ऊर्मिमाला अस्त्यस्य इनि। जिसकी तरङ्गोंकी कतार हो। समुद्र। समुंदर.

ऊर्मिला, (स्त्री०) लक्ष्मणजीकी स्त्री.

ऊष, (पु०) ऊष्+क। खारी नदी। प्रभात। सुबह। चन्दन आदि.

ऊषण, (त्रि०) ऊष्+ल्यु। परिघ। पिप्पलीमूल। चीता। मघ। सांठ.

ऊषर, (त्रि०) ऊष्+मत्वर्थीयो रः। खारी नदीवाली जगह। वह देश जहां बोया गया बीज नहीं उगता.

ऊषवत्, (त्रि०) ऊष्+मतुप्-मस्य वः। ऊषरभूमि। कल्लरवाली जमीन.

ऊष्मन्, (पु०) ऊष्+मनिन्। ग्रीष्म। गरमीकी वहार। व्याकरणमें कहे गये गरम वायुसहित उच्चारण किये गये श-ष-स-ह-रूप चार अक्षर.

ऊह, वितर्क करना। दलील करना। भ्वा० आ० सक० सेट्। ऊहते। औहिष्ट.

ऊह, (पु०) ऊह्+घञ्। वितर्क। दलिल। अनुमान। नतीजा निकालना। अध्याहार। छूटेहुए शब्दोंको लगाकर वाक्य पूरा करना। किसी पदको लगाकर आकाङ्क्षाको पूर्ण करना। अन्वयके योग्य विभक्ति आदिकी कल्पना करना। जैसे "पार्वणे सौम्यासः" यद्यपि यह वचन ठीक है परन्तु एकोद्दिष्टमें इसका अन्वय नहीं बनता इसलिये "सौम्यः" एकवचनान्तकी कल्पना करनी पडी.

ऊहा, (स्त्री०) ऊह्+अ। स्त्रीत्वात् टाप्। अध्याहार। अर्थ पूरा न होनेके कारण दूसरे शब्द वा शब्दोंको बीचमें डालना.

ऊहिनी, (स्त्री०) ऊह्+इन्+ङीप्। सेना। राशि। ढेर.

ऋ

ऋ, जाना-भ्वा०पर०सक०अनिट्। ऋच्छति। आरत्। आर्षीत्.

ऋ, जाना-जुहोत्यादि०पर०सक०अनिट्। इयर्ति। आरत्.

ऋ, हिंसाकरना-मारना-स्वा०पर०सक०अनिट्। ऋणोति। आर्षीत्.

ऋक्थ, (न०) ऋच्+थक्। धन। दौलत। स्वर्ण। सोना। धर्मशास्त्रमें प्रसिद्ध दायरूप धन। बडोंका विरसह (धन) जो तक्सीम करनेलायक है। बडोंका द्रव्य जो विभाग करनेके योग्य है.

ऋक्ष, (पु०) ऋष्+स-किच्च। भल्लूक। रीछ नक्षत्र (तारा)। मेषआदि राशि (पु० न०).

ऋक्षगन्धा, (स्त्री०) ऋक्षान् गन्धति हिंनस्ति गन्ध्+अच्। ऋक्षिजाङ्गलि वृक्ष। महाश्वेता। क्षीरविदारी.

ऋक्षगिरि, (पु०) कर्म०। पर्वतोंका भेद। ऋक्षनामी पर्वत.

ऋक्षराज, (पु०) ऋक्षाणां राजा-त० टच्। रीछोंका राजा। जाम्ववान्। चांद.

ऋग्वेद, (पु०) ऋक्प्रधानो वेदः। जिसमें विशेषतः स्तुति वर्णित है। जिसमें परमात्माकी महिमा वर्णन है। (देवदेवस्य) वेदोंमेंसे एक। ज्योतिर्मय परमात्मा किंवा देवगण जिसके देवता हैं अर्थात् जिसमें सच्चिदानद परमेश्वर अथवा देवस्वरूप श्रीपरमात्माको बुलाकर धर्मार्थकामोक्षकी नानाविध अभिलाषाओंका वर्णन है ऐसा एक वेदभेद। सबसे पुराना वेद। हिन्दुओंका बहुत पवित्र (निबन्ध) पुस्तक.

ऋच्, स्तुति करना । तारीफ करना । बडाई करना । तुदा० पर० सक० सेट् । ऋचति । आर्चीत्.

ऋच्, (स्त्री०) ऋच्यते स्तूयतेऽनया-ऋच् क्विप् । जिसके द्वारा स्तुति कीजाय । सूक्त । गीत (जो मन्त्रोंका समूह हो) । श्लोक । ऋग्वेदका मन्त्र । सारा ऋग्वेद (बहुव०) स्तुति । पूजा.

ऋच्छ, मोह करना-मूर्च्छित होना-बेसुध होना-जाना । तुदा० पर०सक० और अक०सेट् । ऋच्छति । आर्च्छीत् । आनर्च्छ.

ऋज्, जाना और अर्जन करना । कमाना । भ्वा० आत्म० सक० सेट् । अर्जते । आनृजे । आर्जिष्ट.

ऋजीष, (न०) ऋज्+ईषन्-किच्च । भर्जनपात्र । पकाने वा भूंनेका पात्र । कडाई । धन । एक नरक.

ऋजु, (त्रि०) ऋज्+कु । सरल । सीधा । स्त्रीलिङ्गमें विकल्पसे ङीप् होताहै । ऋज्वी । ऋजुः.

ऋण्, जाना । तना० उभ० सक० सेट् । अर्णोति-ऋणोति । ऋणुते । आर्णीत् । आर्णिष्ट.

ऋण, (न०) ऋ+क्त-नि०नत्वम् । अधमर्ण (कर्जलेनेवाला) ने उत्तमर्ण (कर्जदेनेहारा) से फिरदूंगा ऐसे मानकर ग्रहण किया धन । कर्ज । उधार । जल । किला । किलेकी पृथिवी । देव ऋषि और पितृगणके उद्देशसे यथाक्रम यज्ञकरना । वेदका पढना और पुत्रका उत्पन्न करनारूप अवश्य करने योग्य कृत्य (काम) । "ऋणमन्त्यमवेहि" इति रघुः.

ऋणमार्गण, (न०) ऋणं परकीयं ऋणं आत्मीयत्वेन मार्गयति । चुरा० ऋग्-ल्युट् । दूसरेके ऋण (कर्ज) को जो आपना निश्चय कर्ताहै । प्रतिभू । जामिन.

ऋणमुक्ति, (स्त्री०) मुच्+क्तिन्-६ त० । ऋणकी सफाई । कर्ज उतारना.

ऋणादान, (न०) ऋणस्य आदानं । कर्जका लेना । देनेवालेने लेनेवालेसे व्याजसहित अपना धन लेना । अठारह प्रकारके व्यवहारोंमेंसे एक भेद.

ऋणिन्, (पु०) ऋण्-मत्वर्थीय इन् । ऋणलेनेवाला । कर्जउठानेवाला । ऋणग्रस्त । अधमर्ण.

ऋत-जाना (सौत्रः) पर० सक० सेट् । ऋतीयते-आर्तीत् । आर्तिष्ट.

ऋत, (न०) ऋ+क्त । ब्राह्मणकी उपजीव्य वृत्ति । ब्राह्मणके भोजन योग्य आहार । ब्राह्मणका खाना (जो प्राचीनसमयमें था) । "ऋतमुञ्छशिलं प्रोक्तम्" । जल । मोक्ष । कर्मका फल । "ऋतं पिबन्तौ" ऐसी श्रुति है । सुप्रियवचन । पियारावचन । सत्य (कायिक, वाचिक, मानसिक) दीप्त । चमकाहुआ । पूजागया (त्रि०).

ऋतधामन्, ऋतं सत्यं धाम यस्य । सत्य जिसका घर है । परमेश्वर । नारायण । विष्णु.

ऋतम्, (अव्य०) सत्य । सच.

ऋतम्भरा, (स्त्री०) ऋतं बिभर्ति । ऋतम्+भृ+अच् । जो सत्यको धारण किम्वा पुष्ट कर्ताहै । योगशास्त्रमें प्रसिद्ध विपर्यास (मिथ्याज्ञान) शून्य यथार्थज्ञानरूप चित्तकी वृत्तिका भेद.

ऋति, (स्त्री०) ऋ+क्तिन् । कल्याण । भला भाग्य । वर्त्म । रास्ता । स्पर्धा । हसद । निन्दा । जाना । बुराई.

ऋतु, (पु०) ऋ+तु किच्च । शिशिर, वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरत् और हेमन्त ये छे ऋतुयें माघ आदि दो २ महीनोंकी क्रमसे होती हैं । मौसिम । वहार । स्त्रियोंकी वह अवस्था कि जिसमें लोहूका दर्शन होता और गर्भधारण करनेकी शक्ति उपजती है । स्त्रीरज । हैज । दीप्ति । चमक.

ऋतुमती, (स्त्री०) ऋतु+मतुप् । रजस्वला । ऋतुधर्मिणी । हैजवाली.

ऋतुराज, (पु०) ऋतूनां राजा । ६ त० टच् स० । बहारोंका राजा । वसन्त.

ऋते, (अव्य०) विना । सिवाय.

ऋत्विज, (पु०) ऋतु+यज्+क्विन् । याजक । यज्ञकरानेहारा । ऋतुके अनुसार वैदिककर्म करनेवाला.

ऋद्ध, (न०) ऋध्+क्त । पक्व मर्दित धान्य । पका और मलाहुआ धान । समृद्ध । दौलतमन्द (त्रि०) सिद्धान्त.

ऋद्धि, (स्त्री०) ऋध+क्तिन् । वृद्धि । बढना । देवभेद । एक औषध । दुर्गा.

ऋध्, बढना । दिवा० और स्वा० पर० अक० सेट् । ऋध्यति-ऋध्नोति । आर्धीत्-आर्धत्.

ऋफ्, देना । मारना । निन्दा करना । लडाई करना-सक० सराहना । अक० तुदा० पर० सेट् । ऋफति । आर्फीत्.

ऋभु, (पु०) अरि स्वर्गे अदितौ वा भवति-ऋ+भू+डु । जो स्वर्ग वा अदितिमें हो । देव । देवता (अदितिके पुत्र).

ऋभुक्ष, (पु०) ऋभवो देवाः क्षियन्ति वसन्ति अत्र । क्षि-ड । जहां देवता वास कर्ते हैं । स्वर्ग । वज्र । इन्द्र.

ऋष्, जाना । गति । तुदा० पर० सक० सेट् । ऋषति । आर्षीत्.

ऋषभ, (पु०) ऋष्+अभक् । वृषभ । बैल । एक औषध । मुनि । कानका पोल । जैनोंका पहिला अवतार । अच्छा.

ऋषभतर, (पु०) तनुः ऋषभः । तनुत्वे ष्टरच् । बोझा उठानेमें थोडी शक्तिवाला बैल । स्त्रीलिङ्गमें "ऋषभतरी".

ऋषभध्वज, (पु०) ऋषभो ध्वजो यस्य । जिसके झण्डेपर बैलका चिह्न (निशान) है । जो बैलसे पहचाना जाता है । शिवजी । "वृषभध्वज" इसी अर्थमें.

ऋषभा, (स्त्री०) ऋषभ इवाचरति । ऋषभ+क्विप्-अच् । पुरुषके स्वरूपवाली स्त्री । शूकशिम्बी । शिवालता.

ऋषि, (पु०) ऋष्+इन्–किच । वेदमन्त्र देखनेहारा मुनि । अनुष्ठान करनेयोग्य कर्मको जतानेहारा सूत्रोंका कर्ता । आचार्य । गोत्र और प्रवरको चलानेहारा मुनि । तपस्वी । मत्स्यविशेष.

ऋषियज्ञ, (पु०) ऋषियोंके लिये यज्ञ । ब्रह्मयज्ञ । वेदका पढना.

ऋष्टि, (स्त्री०) ऋष्–करणे क्तिन् । दोनोंओर धारावाला खड्ग (तलवार).

ऋष्य, (पु०) ऋष्+क्यप् । मृगभेद । एक प्रकारका हरिण.

ऋष्यमूक, (पु०) ऋष्यो मृगो मूको यत्र । पम्पासरोवरके पास फूलेहुए वृक्षोंवाला एक पर्वत (रामायणमें प्रसिद्ध है) जहां रामचन्द्रजी सुग्रीवके पास कुछकालके लिये रहे.

ऋष्यशृङ्ग, (पु०) ऋष्यस्य मृगभेदस्य शृङ्गमिव शृङ्गं अस्य । एक हरिणके सींगकी नांई जिसके सींग है । विभाण्डक ऋषिका पुत्र । लोमपाद नाम राजाकी कन्या (जो राजा दशरथने इसे दी थी) । शान्ताका पति । मुनिविशेष.

ऋष्व, (त्रि०) ऋष्+क्वन् । (वेदमें) बडा । ऊंचा । अच्छा । देखनेलायक । इन्द्र और अग्निका नाम.

ॠ

ॠ, जाना । जुहो० पर० सक० सेट् । आरति । आरीत् । आर । आरतुः.

ॠ, (अव्य०) बचाना । रक्षा । निन्दा । डरना । छाती (न०) दैत्य और देवताओंकी माता (स्त्री०) यादगिरी । जाना । भैरव (पु०) दैत्य । दया.

ऌ

ऌ, (अव्य०) देवता और दैत्योंकी माता । पृथिवी । पहाड.

ॡ

ॡ, (अव्य) देवताओंकी माता । देवस्त्री । महादेव (पु०) दैत्योंकी मा (स्त्री०) विष्णु (पु०).

ए

ए, (अव्य०) इण्+विच् । दया । याद करना । घिन करना । बुलाना । विष्णु (पु०).

एक, (त्रि०) इण्+कन् । एककी संख्या । मुख्य । केवल सिरफ । और सच्चा । एकही । समान । अल्प । थोडा.

एकक, (त्रि०) एक+कन् । असहाय । अकेला.

एककार्य, (त्रि०) एकं कार्यं प्रयोजनं अस्य । जिसका एकही काम हो । एक तरहका काम करनेहारा । आपसमें याद करनेहारा विद्यार्थी.

एकगुरु, (पु०) एकोऽभिन्नो गुरुर्यस्य । जिसका एकही गुरु हो । जिनका अध्यापक (पढानेहारा) एकही हो । सतीर्थ्य.

एकचक्र, (न०) एकं चक्रं यत्र । जहां एकही चक्र (पहिया) हो । हरिका घर । सूर्यका रथ (पु०) । एकपुरी (स्त्री०) जहां बकासुरको मारनेके लिये पाण्डव ठरे.

एकचर, (त्रि०) एकः सन् चरति । पचाद्यच् । एक होकर विचरनेहारा । अकेला घूमनेवाला । सांप आदि.

एकजाति, (पु०) एका जातिर्जननं यस्य । जिसका एकहीवार जन्म होताहै । शूद्र (इसका यज्ञोपवीत नहीं होता) "एकजन्मा".

एकजातीय, (त्रि०) एकः प्रकारो विधा यस्य । प्रकारार्थे जातीयर् । तुल्यप्रकार । एक किसमका । एक जातिका.

एकतम, (त्रि०) एक+डतमच् । बहुतोंके बीचमें जाति आदिसे निश्चय कियागया एक । बहुतोंमें एक "बहूनामेकः".

एकतर, (त्रि०) एक+डतरच् । दोनोंके बीच जाति आदिसे निश्चय कियागया एक । दोनोंमेंसे एक । "द्वयोरेकः".

एकतस्, (अव्य०) एक ओरसे.

एकतान, (त्रि०) एकं तानयति । चु० तन् । श्रद्धा करना । भरोसा करना–अण् । जो एकपर विश्वास कर्ता है । अनन्यचित्तवृत्ति । जिसका खयाल एकही ओर हो । एक पदार्थमें लगे हुए चित्तवाला.

एकत्र, (अव्य०) एक+त्रल् । एकस्मिन्स्थानेन् । एक स्थानमें-पै-पर.

एकत्व, (न०) एक+त्व । ऐक्य । एकपन । अभेद । एक ही । साम्य । बराबर । सायुज्य मुक्ति जिसमें जीवका ध्येयसे अभेद हो जाता है.

एकदण्डिन्, (पु०) एकः केवलः शिखायज्ञोपवीतादिशून्यो दण्डोऽस्यास्ति । जो केवल दण्डहीको धारण कर्ताहै । शिखायज्ञोपवीत आदि नहीं.

एकदन्त, (पु०) एकः दन्तोऽस्य । जिसका एकही दांत हो । गणेश । (एकदंष्ट्र) इसी अर्थमें होताहै.

एकदा, (अव्य०) एक+काले दाच् । एकस्मिन् काले । किसीवक्त.

एकदृक्, (त्रि०) एका दृक् यस्य । जिसकी एक नजर हो । एक नेत्रवाला । काणा । काक=कौआ (पु०) एकं सर्वं अभिन्नं पश्यति । दृश्+क्विप् । जो एकही वस्तुको देखताहै अर्थात् जिसे भिन्नभाव नहीं । शिव.

एकधा, (अव्य०) एक+प्रकारे धाच् । एक प्रकार । एकतरह.

एकपक्ष, (त्रि०) एकः पक्षः यस्य । जिसका एकपक्ष है । सहायक.

एकपत्नी, (स्त्री०) एकः समानः अनन्यो वा पतिर्यस्याः+ ङीप् नुक्च । जिसका एक जैसा वा वही पति हो । सपत्नी । सौतिन । पतिव्रता । (पतिबिन दूसरा पुरुषतक भी न जानेहारी । सच्ची औरत.

एकपद, (न०) एकं पदं पदगतियोग्यकालो यत्र । एक पांवसे चलनेलायक समय । एक पांवपर । उसी समय । शृङ्गारभेद.

एकपदी, (स्त्री०) एकः पादोऽस्याम् । ङीष् । पद्भावः । वर्त्म । रास्ता । पथ.

एकपदे, (अव्य०) एक+पद्+के । अकस्मात् । अचानक । एकही वार । "कथमेकपदे निरागसम्" इति कुमारः.

एकपिङ्ग, (पु०) एकं नेत्रं पिङ्गं अस्य । जिसकी एक आंख पीली है । कुवेर । वह पार्वतीको दोषदृष्टिसे देखता भया । उसके शापसे इसका नेत्र जाता रहा फिर महादेवजीकी प्रसन्नतासे उसकी आंखमें पीलापन होगया (पुराणकथा).

एकभक्तव्रत, (पु० न०) आधा दिन बीतजानेपर जो नियमसे खाता है रात्रिको कुछ नहीं भोजन कर्ता, उसे एकभक्त कहते हैं ऐसा व्रत अर्थात् नियम.

एकयष्टिका, (स्त्री०) एका यष्टिरिव आवली यस्याः व० कप् । लाठीकेसमान जिसकी एकही लडी हो । एकलडा । एकावलीहार.

एकराज्, (पु०) एको राजते क्विप् । सार्वभौम । एकही चमक रहाहै । चक्रवर्ती । १२ मण्डलका राजा.

एकविंशति, (स्त्री०) एकाधिका विंशतिः । एक ऊपर वीस । इक्कीस संख्या.

एकवीर, (पु०) एको वीरः । कर्म० । एक वहादुर । वडा वीर । एक वृक्ष.

एकशफ, (पु०) एकः शफोऽस्य । जिसका एकही खुर हो । एक खुरवाले गधा आदि घोडा-खच्चर । शरभ.

एकशेष, (पु०) एकः शेषो यत्र । जहां एक वाकी रहे । व्याकरणमें प्रसिद्ध द्वन्द्वसमासका भेद । जैसे पुत्र और पुत्री (दोनोंका एकशेष) "पुत्रौ" होता है.

एकश्रुति, (स्त्री०) एका अभिन्ना उदात्तादिशून्या श्रुतिः उच्चारणम् । उदात्तादिसे शून्य एक एकही स्वरका उच्चारण करना । प्रातिशाख्यमें प्रसिद्ध उदात्त, अनुदात्त, और स्वरितका विभाग कियेविन बोलना.

एकसर्ग, (त्रि०) एकस्मिन् सर्गो निश्चयो यत्र । जहां एकही वातका निश्चय हो । एक ओर मनवाला । एकाग्रचित्त.

एकाकिन्, (त्रि०) एक+आकिन् । असहाय । जिसकी मदत कोई न हो । अकेला.

एकाक्ष, (पु०) एकं अक्षि यस्य । षच् स० । जिसकी एक आंख हो । कौआ । काणा (त्रि०).

एकाग्र, (त्रि०) एकं अग्रं विषयो यस्य । जिसका विषय एक हो । और विषयको छोडकर एकही ओर मनवाला । विक्षेपरहित ज्ञान । एकमन । "स्वार्थे ष्यञ्" । ऐकाग्र्य इसी अर्थमें होताहै.

एकादश, (त्रि०) एकादशन्+पूरणे डट् । ग्यारहको भरनेहारा । ग्यारवां । ग्यारवीं तिथि (स्त्री०) चान्द्रमासके हरएक पखवाडेकी ग्यारवीं तिथि (विष्णुका पवित्र दिन).

एकादशन्, (त्रि०) एकश्च दश च आलम् । एक और दस । ११ संख्या.

एकादशद्वार, (न०) एकादश द्वाराणि यत्र । जहां ग्यारह दर्वाजे हैं । शरीरनामी नगर (वहां नासिका, श्रोत्र, नेत्र दो २ छ मुखके हुए, एक मुख, नाभिसहित नीचेके तीन, और ब्रह्मरन्ध्र इसतरह ११ दर्वाजे हैं).

एकादशी, (स्त्री०) एकादशानां पूरणी । ११ हको पूरणकरनेहारी । दोनों पक्षोंमें प्रतिपदासे लेकर ११ हको पूरा करनेवाली तिथि । जहां हरिवासरव्रत होता है.

एकान्त, (त्रि०) एकः अन्तो निश्चयो यत्र । जहां एकही निश्चय हो । अत्यन्त । जरूरी । बहुतही । अकेला । दृढ.

एकान्ततस्, (अव्य०) एकान्त+तसिल् । अव्यभिचारी । न रुकनेहारा । जरूर होनेहारा । केवलमात्र । सिरफ । ज्यादह.

एकान्न, (त्रि०) एककालमेवान्नं भक्ष्यं यत्र । जहां एकवारही भोजन कियाजाता है । इकट्ठा खानेहारा । एकभक्तव्रत । एकवार खानेका व्रत.

एकान्नविंशति, (स्त्री०) एकेन न विंशतिः एक+न-आदुक् दस्य वा न, एकवीस । उन्नीसकी संख्या.

एकाब्दा, (स्त्री०) एकः अब्दो वयोमानं यस्याः । जिसकी अवस्था (उमर) एक वरिस हो । एक वर्षकी गौ.

एकायन, (त्रि०) एकं अयनं विषयो यस्य । जो एकही विषयमें लगा है । और विषयोंसे चित्तको हटानेहारा । एकाग्रमन.

एकावली, (स्त्री०) एका आवली मणिश्रेणिः । एक मणिओंकी लडी । एक लडाहार । अर्थालङ्कारका भेद.

एकाश्रय, (त्रि०) एक आश्रयो यस्य । जिसका एकही आश्रय हो । अनन्यगति.

एकाह, (पु०) एकं अहः । द्विगु० अच् । "अहाहान्ताः पुंसी"ति पुंस्त्वम् । एकदिन.

एकाहार, (पु०) एकस्मिन् दिवसे एक आहारो भोजनम् । एकदिनमें एकवार भोजन करना । दिनमें एकवार भोजन करनेहारा (त्रि०).

एकीभाव, (पु०) अनेकस्य एकस्य भावः । एक+च्वि+भू० घञ् । बहुतोंका एक होना । एकत्व । एकपन.

एकीय, (त्रि०) एक+छ (ईय) । एक पक्षका । एकका मददगार.

एकोद्दिष्ट, (न०) एक उद्दिष्टो यत्र । जिसमें एकहीका उद्देश हो । एककेलिये कियागया श्राद्ध । प्रेतश्राद्धके समान विधिवाला वार्षिक श्राद्ध.

एजृ, कांपना । भ्वा० आ० अक० सेट् । एजते । ऐजिष्ट.

एजृ, चमकना । भ्वा० पर० सक० सेट । एजति । एजीत्.

एड़, (पु०) इल्-सोना-अच् । मेष । मेढा । बधिर । बहिरा । डोरा (त्रि०).

एड़क, (पु०) इल्+ण्वुल् । मेड । बनका बकरा । बडे सींगोंवाला मेढा । हरएक मेढा । स्त्रीत्वात् टाप् । एडका । मेड.

एड़मूक, (त्रि०) श्रुतिरहित एडो बधिरश्चासौ मूकः । गूंगा औ बहिरा पुरुष.

एण, (पु०) इ-ण । कृष्णवर्णमृग । कालेरंगका हरिण । स्त्रियां एणी.

एणतिलक, (पु०) एणस्तिलक इव चिह्नं । जिसका निशान हरिण हो । मृगाङ्क । चन्द्र । चन्द्रमा । माहताब.

एणाजिन, (न०) एणस्य अजिनम् । हरिणका चमडा.

एत, (त्रि०) (पु०) इण्+तन् । हरिण (पु०) आया । कर्बुरवर्ण । चितकबरा रंग । चितकबरे रंगवाला । स्त्रियां एनी । रंगबरंगी । चमकनेवाली.

एतद्, (त्), (त्रि०) इण्-आदि-तुक्च । पुरोवर्ती । सामने । यह.

एध्, बढना । भ्वा० आ० अक० सेट् । एधते । ऐधिष्ट.

एधस्, (न०) इध्यतेऽग्निरनेन । इन्ध्+असि । जिस्से आग भड़कती है । नि० नलोप । गुणश्च । काष्ठ । काठ । लकडी.

एधित, (त्रि०) एध्+क्त । वृद्धियुक्त । बढाहुआ । बढगया.

एनस्, (न०) इण्+असुन्-नुट्च । पाप । अपराध । दोष । गुनाह.

एरका, (स्त्री०) इण्+रक् । गांठरहित तृण । एरा । घासविशेष.

एरण्ड, (पु०) ईरयति वायुं मलं वा । ईर्+अण्डच् । नि० गुणश्च । जो हवा वा मैलको दूर कर्ता है । एक पेड.

एला, (स्त्री०) इल्+अच् । एलानामी लता । इलायिची.

एव, (अव्य०) सादृश्य । बराबरी । अवधारण । तहकीकात । परिभव । तिरस्कार । हिकारत । थोडापनं । निश्चय । ही.

एवम्, (अव्य०) सादृश्य । मुसावहत । इसप्रकार । ऐसा निश्चय । स्वीकार । मात्रा । प्रश्न । सवाल.

एष्, जाना । आत्म० सक० सेट् । एषते । ऐषिष्ट.

एषण, (पु०) एष्+ल्यु । लोहेका बाण । युच् । इच्छा । पुत्र, लोक और धनकी कामना (स्त्री०) ल्युट् । सुनारका कांटा । "स्वार्थे कन्" "एषणिका" इसी अर्थमें होता है.

ऐ

ऐ, (अव्य०) स्मरण । बुलाना । शिव (पु०).

ऐकमत्य, (न०) एकमतस्य भावः । यत् । एकतरहका आशय । एकाशय.

ऐकागारिक, (त्रि०) एकं असहायं अगारं प्रयोजनं अस्य ठक् । अकेले स्थानपर जिसका प्रयोजन सिद्ध होता है । चौर । चोर.

ऐकाग्र, (त्रि०) एकाग्र । स्वार्थे अण् । अनन्यासक्तचित्त ।

ऐकात्म्य, (न०) एक आत्मा स्वरूपं यस्य तस्य भावः । ष्यञ् । एकस्वरूपका होना । एका करना । अद्वितीय आत्माका होना.

ऐकान्तिक, (त्रि०) एकान्तं व्याप्नोति ठञ् । निश्चयसे फैलनेहारा । अव्यभिचारी । न रुकनेहारा । जरूर होनेहारा । दृढ । मजबूत.

ऐकाहिक, (त्रि०) एकाहे भवः । कालात् ठञ् । एक दिनमें होनेवाला । एक दिनको लांघकर होनेहारा । एक दिनको छोडकर होनेहारा ज्वर । तइयेका तप । प्रतिदिन एकसमयपर होनेहारा ज्वर (ताप-बुखार) (पु०).

ऐक्य, (न०) एकस्य भावः । एक+ष्यञ् । अभेद । एकरूपपना । मेल । जोड.

ऐक्षव, (त्रि०) इक्षोर्विकारः इक्षु+अण् । गन्नेका विकार । गुडआदि.

ऐक्ष्वाक, (पु०) इक्ष्वाकोर्गोत्रापत्यम्-अण्, नि० इक्ष्वाकुके वंशमें उत्पन्न हुआ । सूर्यवंशी राजा.

ऐङ्गुद, (न०) इङ्गुद्याः फलं-फले अण् तस्य न लुक् । इङ्गुदीवृक्षका फल । हिंगोटका फल । तपस्वियोंका वृक्ष.

ऐण, (त्रि०) एणस्य कृष्णमृगस्य इदम् अण् । काले हरिणका चमडा आदि.

ऐणेय, (त्रि०) एण्या इदं ढक् । काली हरिणीका चमडा आदि.

ऐतिह्य, (न०) इतिह पारम्पर्योपदेशः स्वार्थे ष्यञ् । परम्परा । चलाआता सिलसिलेवार उपदेश । जैसे "वटके वृक्षपर यक्ष रहता है" इत्यादि बापदादोंसे चलाआता उपदेश । किसीने जानकर नहिं कहा । इतिहासी । ऐतिहासी । तारीखी.

ऐन्दव, (न०) इन्दुर्देवतास्य । जिसका देवता चन्द्रमा है । मृगशिरानक्षत्र चन्द्रमाका (त्रि०) । सोमराजी । (स्त्री० ङीप्).

ऐन्द्र, (त्रि०) इन्द्रस्येदम् । इन्द्र+अण् । इन्द्रका । ज्येष्ठा नक्षत्र (न०) स्त्रियां ङीप् । ऐन्द्री.

ऐन्द्रजालिक, (त्रि०) इन्द्रजालेन चरति । इन्द्रजालसे विचरता है । मायाकरनेहारा । छलिया (बाजीगर).

ऐन्द्रि, (पु०) इन्द्रस्य अपत्यं इञ् । इन्द्रका पुत्र । जयन्त । अर्जुन । सुग्रीव वानर । काक । कौआ.

ऐरावत, (पु०) इरा जलानि सन्त्यस्य । इरा+मतुप्-मस्य वः । इरावान् । समुद्रः तत्रभवः अण् । जलोंवाले स्थान (समुद्र)-में होनेवाला । समुद्रसे निकला इन्द्रका हाथी.

ऐरिण, (न०) ईरिणे ऊषरे भवा । सैन्धबलवण । पहाडीलून (निमक).

ऐरेय, (न०) इरा अन्नं तत्रभवः ढक् । अन्नमें होनेवाला । मद्य । शराब.

ऐल, (पु०) इलाया अपत्यं । इलाका बेटा । बुधका पुत्र । पुरूरवा राजा.

ऐलविल, (पु०) इलविलाया अपत्यम् । इलविलाका बेटा । कुबेर.

ऐशानी, (स्त्री०) ईशानो देवता अस्याः । महादेव जिसका देवता है । उत्तर औ पूर्वके अन्दरकी दिशा.

ऐश्वर्य, (न०) ईश्वरस्य भावः । ईश्वरपना । अणिमा आदि आठ प्रकारकी विभूतिएं । जैसे अणिमा, महिमा, लघिमा, गरिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व, वशित्व.

ऐषमस्, (अव्य०) अस्मिन् वत्सरे । नि० । वर्तमानवर्ष । हालका बरिस.

ऐहलौकिक, (त्रि०) इहलोके भवः कालात् ठञ् । द्विपद-वृद्धि । इसलोकका.

ऐहिक, (त्रि०) इह भवः कालात् ठञ् । इहलोकमें होने-वाला । ग्रहणकियेगये शरीरके लिये माला चन्दन आदि सुखका अनुभव आदि । इसलोकका.

ओ

ओ, (अव्य०) यादगिरी । स्मरण । सम्बोधन । बुलाना । दया.

ओ, (न०) जगत्के पति । ब्रह्मा.

ओक, (पु०) उच+क-नि० चस्य कः । पक्षी । वृषल । शूद्र.

ओकस्, (न०) उच्+असुन् । कुत्वम् । गृह । घर । आश्रयमात्र । पनाह.

ओकोदनी, (स्त्री०) ओक आश्रयः मूर्धरूपं अदनं भक्ष्यं यस्याः । जो मस्तकको भोजन कर्ताहै । केशकीट । जूं । यूक.

ओख्, सुकाना-सजाना-हटाना । सक० । सामर्थ्यरखना । अक० भ्वा० पर० सेट् । ओखति । औखीत्.

ओघ, (पु०) उच्+घञ् । समूह । जलका वेग । जल्दीसे नाचना-गाना-बजाना । द्रुतनृत्यादि.

ओङ्कार, (पु०) अव्+मन् । ऊठ्-गुण ओम्-ततः स्वरू-पे कार । प्रणव । जिसकी वेदशास्त्रमें सबसे अधिक स्तुति कीगई है । भक्तकी रक्षा कर्ताहै.

ओज, बल करना । जोरकरना । चुरा० उभ० अक० सेट् । ओजयति-ते । औजिजत्-त.

ओजस्, (न०) उब्ज्+असुन्-बलोपे गुणः । दीप्ति । चमक । रोक । प्राणका बल । प्रकाश । सामर्थ्य । ज्योति-षके अनुसार १ ली ३ री ५ वी ७ वी इत्यादि विषमराशि । शस्त्रआदिका कौशल । वैद्यशास्त्रके अनुसार धातुरसको पुष्ट करनेहारा वस्तुभेद । "ओज" भी इसी अर्थमें है.

ओजिष्ठ, (त्रि०) अतिशयेन ओजस्वी ओजस्विन्-इष्ठन् मतोर्लुक् । बहुत तेजवाला । बडे सारवाला । निहायत बलवाला.

ओण्, अपसारण करना । निकालना । हटाना । भ्वा०पर०सक० सेट् । ओणति-औणीत्.

ओत, (त्रि०) आ+वेञ्+क्त । अन्तर्व्याप्त । भीतर फैला-हुआ । कपडा । लंबी २ तातें.

ओतु, (त्रि०) अव+तुन्+ऊठ्-गुणः । विडाल । बिल्ला.

ओदन, (पु०) उन्द+युच्-नलोपो गुणश्च । भक्त । अन्न । अनाज । गीलाअन्न । उबलेहुए चावल । भात.

ओम्, (अव्य०) अव्+मन् तस्यातोलोपः । गुणः । प्रणव । अ उ और म् इन तीनोंसे बनाहुआ एक अक्षर । आरम्भ । स्वीकार । मान्ना । हटाना । मंगल । ब्रह्म । जान्नेलायक । निकालना.

ओष, (पु०) उष्+घञ् । दाह । जलाना.

ओषधि-धी, (स्त्री०) ओषो धीयतेऽत्र । ओष+धा+ की । जो दाहको धारण करे । वह वृक्ष जो फल पकने-तकही रहतेहैं । धान । जौआदि । फलपाकान्त वृक्ष । व्रीहियवादि.

ओषधिप्रस्थ, (पु० न०) ओषधिप्रधानः प्रस्थः । शाक० । वह शिखर कि जहां फल पकनेतक रहनेहारे वृक्षादि हैं । हिमालयपुर.

ओष्ठ, (पु०) उष्+कर्मणि ठन् । होठ । दांतोंका पडदा । दशनच्छद.

ओष्ठपुष्प, (पु०) ओष्ठोपमानं पुष्पं यस्य । जिसका फूल होठके समान लाल है । बन्धूकवृक्ष.

ओष्ठी, (स्त्री०) ओष्ठ इव आचरति । ओष्ठ+क्विप् । ततः अच् । गौरा०ङीष् । बिम्बफलनामी वृक्ष । तेलाकुचा.

ओष्ठ्य, (पु०) ओष्ठ+यत् । ओष्ठोचार्यवर्ण । वे अक्षर कि जिनका उच्चारण होठोंमें होताहै.

ओष्ठोपमफला, (स्त्री०) ओष्ठ उपमीयतेऽनेन । ओष्ठोपमं फलं यस्याः । जिसका फल होठके समान हो । बिम्बिकी लता (बेल).

औ

औक्ष, (न०) उक्ष्णां वृषाणां समूहः अण् टिलोपः । वृषसमूह । बैलोंका समूह वुञ् । "औक्षकम्" इसी अर्थमें है.

औख्य, (त्रि०) उखायां पक्वं ष्यञ् । स्थालीपक्व । थाली वा बटलोहीमें रांधीहुई वस्तु.

औचिती, (स्त्री०) } उचितस्य भावः ष्यञ् । न्याय्यत्व ।
औचित्य, (न०) } सत्यत्व । इन्साफपन । सचपना । योग्यता । लायकी.

औडव, (त्रि०) उडु+अण् । नक्षत्रसम्बन्धी । तारोंका । एक रागविशेष.

औत्कण्ठ्य, (पु०) उत्कण्ठाया भावः । ष्यञ् उत्कण्ठा । इच्छा । बडीचाह । खेद.

औत्तानपादी, (पु०) उत्तानपादस्य नृपभेदस्य अपत्यं इञ्। उत्तानपादनाम राजाकी सन्तान। इस संसारके भोगोंको समाप्त कर ज्योतिर्मण्डलमें निश्चल होकर तारेके स्वरूपमें स्थित हुआ ध्रुवनामी राजा। न हिलनेवाला तारा.

औत्सर्गिक, (त्रि०) उत्सर्गं सामान्यविधिं अर्हति ठञ्। सामान्यविधिके लायक। प्राकृतिक। त्याज्य। स्वाभाविक। जाती। छोडनेलायक.

औत्सुक्य, (न०) उत्सुकस्य भावः ष्यञ्। उत्कण्ठा। इच्छा। बेआरामी। बडी इच्छा.

औदनिक, (त्रि०) ओदनः शिल्पं अस्य ठञ्। भात बनानेवाला। सूपकार। रसोइया.

औदरिक, (त्रि०) उदरे प्रसितः ठक्। पेटमें लगाहुआ। केवल पेट भरनेकी इच्छावाला। पेटू.

औदार्य, (न०) उदारस्य भावः। ष्यञ्। उदारता। फयाजी। खुलादिल। महत्व। बडप्पन। बजुर्गी.

औदासीन्य, (न०) उदासीनस्य भावः। ष्यञ्। शुभ वा अशुभकी अपेक्षा। भले बुरेकी बेपर्वाही। किनारेपर खडाहोनापन। उदासीन होना। बेपर्वाह.

औदास्य, (न०) उदास्ते। उद्+आस्+अच्-भावार्थे ष्यञ्। पृथक् होकर वैठताहै। वैराग्य। प्रीतिसे शून्य होना। मन न लगाना.

औदुम्बर, (पु०) चौदह यमोंके मध्यमें एक यमका भेद। एक प्रकारका कुष्ठ (कोड) रोग। गूलरका बनाहुआ। तांबेका बनाहुआ। मौतका देवता.

औद्धत्य, (न०) उद्धत+ष्यञ्। अविनीतत्व। मगरूरी। जुल्म। बहादुरीके काम.

उद्भिज्ज, (न०) उद्भिज्ज+अण्। पांशु लवण (जो भूमिसे आपही उत्पन्न होताहै) एक प्रकारका निमक। पृथिवी फाडकर वडी धारासे वहनेवाला जल। "उद्भिद्य जायते जन्+ड" उद्भिज्जं ततः स्वार्थे अण् "औद्भिज्जम्" इसी अर्थमें औद्भिद भी होता है (न०).

औद्वाहिक, (न०) उद्वाहकाले लब्धं ठञ्। विवाहके समय मिला। विवाहके कालपर लाभ हुआ धनआदि.

औपचारिक, (पु०) उपचार एव। स्वार्थे ठक्। उपचारके अर्थमें (देखो).

औपनिषद, (पु०) उपनिषत्स्वेव वेद्यः अण्। उपनिषदोंसेंही जान्नेयोग्य। वेदान्तमात्रसे जान्नेलायक परमात्मा "तं त्वौपनिषदं पुरुषं पृच्छामि" इति श्रुतिः.

औपनीविक, (त्रि०) नीविसमीपे व्यापृतं ठक्। धोतीकी गांठके पास व्यापृत (लगा) हुआ। "औपनीविकमरुन्ध किल स्त्री" माघः.

औपम्य, (न०) उपमैव। स्वार्थे ष्यञ्। सादृश्य। मुसाविहत। बराबरी। एकजैसापन.

औपयिक, (त्रि०) उप+अय+घञ्। उपायः तेन लब्धः ठक् ह्रस्वश्च। उपायसे लाभ हुआ। ठीक। न्यायसे मिली चीज। तजवीजसे मिला.

औपसर्गिक, (पु०) उपसर्गेण निष्पादितः ठञ्। वात आदि सन्निपातसे उपजा रोगभेद। एक बीमारी.

औरभ्र, (न०) उरभ्रस्य मेषस्येदं अण्। मेषआदिके रोमसे बना। कम्बल.

औरभ्रक, (न०) उरभ्राणां समूहः वुञ्। मेषसमूह। मेढोंका समूह (गल्लह).

औरस, (पु०) उरसा निर्मितः अण्। छातीसे रचागया। एकवर्णवाली संस्कार कीगई स्त्रीमें आप उत्पन्न कियाहुआ पुत्र। धर्मशास्त्रके प्रकारसे विवाहीहुई स्त्रीसे उत्पन्न हुआ सबसे अच्छा पुत्र.

और्ध्वदेहिक, (त्रि०) ऊर्ध्वो देहः प्रेतदेहः तत्रभवं तस्मै देयं वा श्राद्धादि ठक्। प्रेतदेहपर वा उसके लिये कियागया श्राद्धादि कर्म। मरनेके दिनसे लेकर सपिण्डीकरणतक कियागया जलदान (तर्पण) और श्राद्धादिलक्षणवाला कर्मसमूह। "और्ध्वदैहिकम्" वा.

और्व, (पु०) उर्वस्यापत्यं अण्। उर्वकी सन्तान। वाडवानल (घोडीके स्वरूपमें समुद्रकी आग)। यह अग्नि उर्व मुनिसे उत्पन्न हुई। उस मुनिका स्थान भूगोलके दक्षिणसीमामें है। समुंदरी आग। पांशुलवण। उर्व्यां भवः। पहाडी निमक.

औलूक, (न०) उलूकानां समूहः अण्। पेचकसमूह। उल्लुओंका गल्लह.

औलूक्य, (पु०) वैशेषिकदर्शन रचनेहारा कणाद मुनि। उसके शास्त्रको जान्नेहारा.

औशनस, (न०) उशनसा शुक्रेण प्रोक्तं अण्। शुक्रसे कहागया उपपुराण आदि दण्डप्रणयनरूप शास्त्र। राजनीति.

औशीर, (न०) वश्+ईरन् किच्च। ततः अण्। शयन। विस्तरा आसन (चौकी)। चामरका दण्ड। शय्या और पीठ.

औषध, (न०) ओषधौ भवः अण्। रोगका नाश करनेवाला ओषधिका द्रव्य। रोग दूर करनेहारी कोई चीज। दवाई। भेषज.

औष्ट्र, (न०) उष्ट्रस्येदम् अण्। ऊंटका दूध आदि। जो कुछ ऊंटका.

औष्ट्रक, (न०) उष्ट्राणां समूहः वुञ्। ऊंटोंका समूह (गल्लह).

औष्ठ्य, (त्रि०) ओष्ठे भवः यत्। होठके स्थानसे उच्चारण किया गया उवर्ण और पवर्गादि। होठसे निकला.

औष्ण्य, (न०) उष्णस्य भावः ष्यञ्। गरमका होना। गरमी। धूप। सन्ताप.

औष्म्य, (न०) उष्म+ष्यञ्। सन्ताप। उष्णता, गरमी.

इति श्रीगणेशदत्तशास्त्रिप्रणीते पद्मचन्द्रकोशे (शब्दार्थगणेशे) स्वरवर्णादिकः शब्दः समाप्तिं गतः।

नमः शंकराय।

क

क, (पु०) कै-शब्द करना। कच्-चमकना। वा ड। ब्रह्म। वायु। आत्मा। यम। दक्षप्रजापति। सूर्य। अग्नि। विष्णु। काल। कामकी गांठ। राजा। मोर। शरीर। मन। धन। प्रकाश। शब्द। सुख। सिर। जल। रोग (न०).

कंस, (पु०) कन्+स। उग्रसेनका पुत्र। एक राजा। श्रीकृष्णजीका मामा। तैजसद्रव्य। कांस्य। तामा और रांगके मेलसे उत्पन्नहुआ धातुद्रव्य। कांसी। सोने वा चांदीका बनाहुआ पानपात्र। कटोरा। आढक नामसे प्रसिद्ध परिमाण। (अस्त्री०).

कंसक, (न०) कंसादिव कं जलं यस्मात् ५व०। हीराकस नामसे प्रसिद्ध नेत्रका औषधविशेष। उसके संयोगसे, अग्निसंयोगसे जैसे कांसी जल छोडतीहै वैसे आंखआदिसे जल बहताहै। आंखकी दवाई.

कंसकार, (पु०) कंस+कृ-अण्+उप०। कसेरा नामसे प्रसिद्ध एकजाति.

कंसजित्, (पु०) कंस+जि+क्विप्। ६ त०। कंसराजाको जीतनेहारा श्रीकृष्णदेव.

कंसहन्, (पु०) कंस+हन्+क्विप्-६ त०। कंसदैत्यको मारनेवाला। श्रीकृष्ण.

कंसाराति, (पु०) कंस+अराति। ६ त०। कंसराजाका शत्रु। श्रीकृष्णजी.

कंसास्थि, (न०) कंसः अस्थि इव। उपमितसमास। श्वेत होनेसे अस्थि हड्डीके समान कांसा नामसे प्रसिद्ध एक प्रकारका धातु.

कक्, चाहना। भ्वा०आ०सक०सेट्। ककते। अककिष्ट.

कक्, जाना। भ्वा० इदित् आत्म० सक० सेट्। कङ्कते। अकङ्किष्ट.

ककुत्स्थ, (पु०) ककुदि तिष्ठतीति। ककुत्+स्था+क। दैत्योंके मारनेको इन्द्रसे प्रार्थना कियागया बैलका रूप धारण कियेहुये इन्द्रके ककुद (हुड्ड) अर्थात् पीठके भागपर ठहरनेवाला। सूर्यवंशीय एक राजा जिसकी सन्तानने ककुत्स्थ यह उपाधि ग्रहण की। राजा इक्ष्वाकुका पोता। इसी कुलमें रामचन्द्रजी हुएहैं.

ककुत्स्थः, (पु०) ककुदि तिष्ठति-ककुद्+स्था-क। हुड्डपर बैठता है। इक्ष्वाकुके वंशमें पुरञ्जय राजाकी उपाधि। सूर्यवंशीय राजा.

ककुद्, (अस्त्री०) कं सुखं कौति। कु-शब्द करना-क्विप् तुक्च तस्य दः। बैलके कंधे और पीठका पिण्डाकार मांसझुंड वा हुड्डनामसे प्रसिद्ध बैलका अंग। चिह्नछाता आदि राजाका चिह्न। प्रधान। पर्वतकी चोटी.

ककुद, (अस्त्री.) कस्य=देहस्य सुखस्य वा-कं=भूमिं ददाति-दा+क। झुंड नामसे प्रसिद्ध बैलका एक अङ्ग। प्रधान। राजाका चिह्न छाता आदि। पर्वतका अग्रभाग। पहाडकी चोटी.

ककुद्मत्, (पु०) ककुत् अस्य अस्तीति मतुप्। हुड्डवाला। वृष। बैल। पर्वत। कमर। कटी (स्त्री०)। ककुदिव मांसपिण्डं अस्यास्तीति मतुप्-ङीप्.

ककुन्दर, (न०) कस्य शरीरस्य पृष्ठदेशस्य कुं भूमिं दारयतीति ककु+दृ+णिच्+अच् पृषो०। पीठकी भूमिको फाडनेहारा पृष्ठवंशके नीचेका तर्ताकार (टोयेकी शकलका) कूपक (खुआ).

ककुभ्, (स्त्री०) कं वातं स्कुभ्नाति। स्कुम्भ+क्विप्-पृषो०। दिशा। शोभा। चम्बेके फूलोंकी माला। शास्त्र। एक रागिणीका भेद.

कक्, हसना। भ्वा० पर० अक० सेट्। ककति। अककीत्.

कक्कोल, (क), (पु०) ककते गच्छति क्विप् कक्, कोलति संस्त्यायति अच् कोलः कक् चासौ कोलश्चेति कर्म०। गन्धद्रव्यका भेद। कांकोल (वंगभाषामें) वनकपूर नामसे प्रसिद्ध गन्धद्रव्य। इदमर्थे कन् (न०).

कक्ष, (पु०) कष्-मारना+स। स्त्रियोंके उत्तरीयवस्त्रमें पीछेकी ओरका आंचल। लता। सूका तिनका। सूका वन पासका भाग। राजाका अन्तःपुर। भुजाओंका मूल। कच्छ आंचल। कपडेका पल्लडा। हाथीके बांधनेका रस्सा। काञ्ची। तडागी। पाप। वन। घरकी दीवार। कच्छका रोग (स्त्री०).

कक्षोत्था, (स्त्री०) कक्षात् शुष्कतृणात् उत्तिष्ठति। उद्+स्था०क। जो सूके तिनकोंसे निकलताहै। भद्रमुस्ता। नागरमूथा.

कक्ष्या, (स्त्री०) कक्षे भवा यत्। हाथीके बांधनेकी चमडेकी रस्सी। महलका बडा कमरा (सहत)। स्त्रियोंकी तडागी। बराबरी। हिम्मत (स्त्री०)। उत्तरीयवस्त्र। ऊपरका कपडा.

कग, क्रियाकरना-चलना। भ्वा०पर०सक०अक०च सेट्। अकगीत्। अकागीत्.

कङ्क, (पु०) ककि-जाना+अच्। कांकनामी एक पक्षी। जिसके परोंसे बाणका पुङ्ख बनाया जाताहै। युधिष्ठिर। इसने विराटके नगरमें यह संज्ञा पाई.

कङ्कट, (पु०) कं देहं कटति। क+कट्+मुमुच। ककि चञ्चलहोना+अटन् वा। संजोह। वर्म। जिरह। स्वार्थे कन्। कङ्कटकः (यही अर्थ).

कङ्कण, (न०) कं शुभं कणति। कम्+कण्+अच्। करभूषण। हाथका जेवर। हरएक प्रकारका भूषण.

कङ्कत, (न०) ककि+अतच्। केशप्रसाधनी। बालोंको साफ करनेवाली। कंघी.

कङ्कतिका, (स्त्री०) ककि+अतच् ङीष्। स्वार्थे कनि ह्रस्वे टाप् प्रसाधनी। कंघी। नागबला.

कङ्कती, (स्त्री०) ककि+अतच् ङीष्। प्रसाधनी। कंघी.

कङ्कपत्र, (स्त्री०) कङ्कस्य पत्रं पक्षोऽस्य। कङ्कपक्षीके परोंवाला बाण। तीर.

कङ्कमुख, (पु०) कङ्कस्य मुखं इव मुखं अस्य । जिसका मुख कांकपक्षीके मुखकी नांई हो । सन्दंश । संढासी.

कङ्काल, (पु०) कं सुखं शिरो वा कालयति क्षिपति । कल्+अच् । लक्र (चमडा) मांसरहित शरीरके आरम्भ करनेहारा अस्थिओंका समूह । हड्डिओंका पिंजरा । हड्डी.

कङ्कालमालिन्, (पु०) कङ्कालानां माला अस्ति अस्य इन् । जिसकी माला अस्थिपिञ्जरकी है । रुद्र । शिव । महादेव.

कङ्कु-ङ्गु, (पु०) ककि+ड । कंगनी । धान्यभेद । पृषो० ककोग.

कच्, शब्द करना । भ्वा०पर०अक०सेट् । कचति । अकचीत्-आकाचीत्.

कच्, बांधना-वैर करना । भ्वा०पर०इदित् सक०सेट् । कञ्चति । अकञ्चीत्.

कच्, बांधना-सक०चमकना-अक०भ्वा०आ०सेट् । कचते । अकचिष्ट.

कच्, (पु०) कच्+अच् । केश । वाल । बृहस्पतिका पुत्र । सूका घाव । मेघ । बादल । हथिनी (स्त्री०) । "भावे" बांधना । सजावट.

कचाकचि, (अव्य०) परस्परं कचैः सह प्रहृत्य प्रवृत्तं युद्धम् । आपसमें एक दूसरेके वालोंको पकडकर किया हुआ युद्ध.

कचु, (स्त्री०) कच्+उ । एक वृक्ष । कचूर । हल्दी.

कच्चर, (त्रि०) कुत्सितं चरति । कु+चर्+अच्-कदादेशः । मलिन । मैला । छाछ (न०).

कच्चित्, (अव्य०) काम्यते इति कम् । चीयते निश्चीयते अर्थो यस्मात् । कम्+चि+क्विप् पृषो० मस्य दः । अपनी इच्छा जतानेकेलिये प्रश्न । हर्ष । मङ्गल । इष्टप्रश्न । ख्वाहिश जतानेका सवाल.

कच्छ, (त्रि०) कच्-बांधना+छ । केन जलेन छूणाति दीप्यते । छूः+ड वा । जलप्रायदेश वह स्थान कि जहां पानीही पानीहो । खाडी । किनारा । पुन्नागद्रुम । केशरका वृक्ष । बेडीका अङ्ग (पु०) । काछनी.

कच्छप, (पु०) कच्छे पिबति-पा+क । कूर्म । कच्छू । कुबेरका खजाना । शराब निकालनेकी कला । एक प्रकारका वृक्ष । पहलवानोंकी लडाई.

कच्छुर, (त्रि०) कुत्सितं छुरति । कु+छुर+क-कदादेश । पराई स्त्रीके पास जानेहारा । व्यभिचारिणी । बदमाश औरत (स्त्री०).

कज्, भ्वा० प० कजति । प्रसन्न होता । प्रसन्नतामें व्याकुल होजाता । अहंकार करना.

कज्जल, (न०) कुत्सितं ईषद् वा जलं नेत्रस्य यस्मात् । कोः कद् । जिससे बुरा वा थोडा पानी आंखसे निकलताहै । अञ्जन । कजल । काजल । बादल (पु०) । खास मच्छी (स्त्री०).

कज्जलरोचक, (न०) (पु०) कज्जलं रोचयति । रुच्+णिच्+अच् । दीपकका आधार । शमाँदान । जो कज्जलको चमकता है.

कञ्चुक, (पु०) कचि+उकन् । योधाओंका एक वस्त्रविशेष । लोहेका वर्म । चोसा । अंगरखा । केंचुली । चोली.

कञ्चकालुः, (पु०) कञ्चक+आलु । सर्प । सांप.

कञ्चुकिन्, (पु०) कञ्चुक+इन् । राजाओंके अन्तःपुरका अधिकारी । दर्वान । द्वारपाल । सांप । जार । जौं । जिरहपहिरे हुए (त्रि०) रनवासकी रक्षा करनेवाला । चणकनाम मुनि । जिसने अंगरखा पहिराहुआ है.

कञ्जक, (पु०) कञ्जः केश इव कायति । कै+क । मयना पक्षी । उसका काला रंग धोनेसे वालोंकी समानता है । कोयल.

कञ्जार, (पु०) कं जलं जारयति । जॄ+अण् । सूर्य । ब्रह्मा । उदर । पेट (न०) अचि "कञ्जर" भी इसी अर्थमें होता है.

कट,-जाना वरसना (भ्वा० पर० सक० सेट्) । कटति । अकटीत् । अकाटीत्.

कट, (पु०) कट्+अच्-कर्मणि घ वा । हाथीके गल्लका स्थान । कमरका पासा । हस्तिगण्डस्थल । अतिशय । बहुत । काल । तृण । मुर्देका रथ । तख्ता । औषध । श्मशान । मसाँन काही आदिका रस्सा । चटाई.

कटक, (अस्त्री०) कट्+वुन् । मेखला नाम पर्वतका मध्यभाग । पर्वतका नितम्बस्थान । पर्वतके पासे । भुजाका भूषण । कडा । हाथीदांत । पहिया । राजधानी । समुद्रका लून । सैंधानोन । दायरा । जमीन । सेना.

कटप्रू, (पु०) कटं प्रवते । प्रु+क्विप्-दीर्घश्च । महादेव । विद्याधर । अपनी इच्छासे रूपको धारण करनेवाला राक्षस । पासा खेलनेवाला । एक कीडा । जुआरिया.

कटभङ्ग, (पु०) भञ्ज्+घञ् । ६ त० सेनाके पराजित (शिकस्त) होनेसे राजाका विनाश । हाथसे धानको पाटना वा छीनना.

कटाक्ष, (पु०) कटं गण्डं अक्षति व्याप्नोति-अच् । आंखके सिरेमें देखना । अपाङ्गदर्शन । तिरछी नजर.

कटायन, (न०) कटस्य तृणासनस्य अयनं उत्पत्तिस्थानं । जिस्से चटाई बनती है । वारणमूला खस.

कटाह, (पु०) कटं आहन्ति । आ+हन्+ड । महिषीशिशु । भैंसका बच्चा । तैलंविपाकसाधनपात्र । तेल आदि पकानेका पात्र । कडाई । नरक । खप्पर.

कटि-टी, (स्त्री०) कट्+इन् । श्रोणिदेश । चूतड । लक्क । "वा ङीप्".

कटित्र, (न०) कटिं त्रायते । त्रै+क । काञ्ची । तडागी । कटिवस्त्र.

कट-टिप्रोथ । प्रोथ्+अच् । कटस्य कट्या वा प्रोथो मांसपिण्डः । कटिदेशका मांसपिण्ड । कटी । कमर । स्फिच्.

कटिल्ल, (पु०) कट्+इल्ल । कारवेल्ल । करेला.

कटिसूत्र, (न०) कटौ धार्यं सूत्रं-शाक० । कमरपर धारण करने योग्य कार्पास (कपा) वा (सोना चांदी) का बनाहुआ सूत्र । तडागी । मेखला । काञ्ची । घुनसी । गोट.

कटु, (न०) कट्+उ । दूषण । दुष्ट कार्य । रसभेद । कडवा । दुर्गन्ध । वदबू । खुशबू । कटुकी लता (स्त्री०) चम्पक । चीनकर्पूर । पटोल । नीम.

कटुकन्द, (पु०) कटुः कन्दो मूलं यस्य । जिसकी जड कडवी हो । शिग्रुवृक्ष (सजना) । अदरक । लशुन । लस्सन.

कटुकीटक, (पु०) कटुः कीटः स्वार्थे कन् । मशक । मच्छर.

कटुक्काण, (पु०) कटुस्तीक्ष्णः क्काणो यस्य । जिसकी आवाज तेज हो । (तित्तिर) टिट्टिभ पक्षी । टिटहरा परिंदा.

कटुग्रन्थि, (पु० न०) कटुः ग्रन्थिः अस्य । जिसकी गांठ कडवी हो । पिप्पलीमूल । पीपलीकी जड । शुण्ठीमूल । सोंठकी जड.

कटुच्छद, (पु०) कटुः छदः पत्रं यस्य । जिसका पत्ता कडवा हो । तगरवृक्ष । टगर.

कटुत्रय, (न०) कटूनां त्रयं । कटुत्रिक । तीन कडवी चीजें । सोंठ, पीपल, काली मिरच.

कटुदला, (स्त्री०) कटु दलं यस्याः । कडवे पत्तोंवाली । कर्कटी । कंडियारी बूटी.

कटुबीजा, (स्त्री०) कटु बीजं यस्याः । जिसका बीज कडवा हो । पिप्पली.

कटुर, (न०) कटुं विपाके कटुरसं राति । रा+क । पकनेपर जो कडवे रसको देती है । तक्र । छाछ । लस्सी.

कटुरस, (पु०) कटुस्तीक्ष्णो रसो ध्वनिर्यस्य । जिसका शब्द तेज हो । भेक । मेंडक.

कट्वर, (न०) कट्+ष्वरन् । तक्र । छाछ । व्यञ्जन । चटनी । सलूना.

कठ, (वडी चाहसे स्मरण करना) चुरा० उभ० पक्षे भ्वा० पर० सक० सेट् इदित् । कण्ठयति-ते । अचकण्ठत्-ते । अकण्ठीत्.

कठ, (खयाल करना वा वडी इच्छासे याद करना) इदित् भ्वा० आ० सक० सेट् । (प्रायः-यह धातु उत् उपसर्गके साथ आता है) । उत्कण्ठते । उदकण्ठिष्ट.

कठ, (पु०) कठ+अच् । मुनिभेद । ऋग्वेदकी शाखा । उस शाखाके पढनेहारा.

कठिन, (त्रि०) कठ+इनच् । क्रूर । बेहरम । कठोर । तलख । सख्त । स्तब्ध । रोकाहुआ । स्थाली (स्त्री०) थाली । रकाबी.

कठिनी, (स्त्री०) कठिन+ङीष् । अक्षर लिखनेका साधन । एक द्रव्य । चाकमट्टी । खडियामट्टी.

कठोर, (त्रि०) कठ+ओरन् । कठिन । सख्त । पूर्ण । भराहुआ.

कठोरता, (स्त्री०) कठोर-तलवाल=कठोरत्वं-न० । कठोरपना । सख्तपन.

कठोरीभूत, (त्रि०) कठोर+च्वि+भू+त । कठोर सख्त-तेज । होगया । "कठोरीभूतः दिवसः" मध्याह्नसमय । दुपहिरका समय.

कड, हर्ष करना-खुश होना । भ्वा० इदित् । उभ० सक० सेट् । कण्डति-ते । अकण्डीत्-अकण्डिष्ट.

कड, भेदन करना-फाडना और रक्षा करना-बचाना । चुरा० इदित् । कण्डयति-ते, अचकण्डत्-त.

कड, खाना । तुदा० पर० सक० सेट् । कडति । अकाडीत्-अकडीत्.

कडङ्गर, (न०) कडं गिरति-गृणाति वा अच्-नि० मुम् । म्मां और मूंग आदिकी जड । बुस । घास । तूडी.

कडङ्गरीय, (त्रि०) कडङ्गरं अर्हति । बुस भक्षण करनेवाले गौ आदि । तूडी खानेवाले पशु । डंगर.

कडार, (पु०) गड्-सींचना+आरन् । गको क होजाताहै । पिङ्गल वर्ण । पीला रंग । पीले रंगकी कोई चीज (त्रि०) दास । नौकर । गुलाम.

कड्ड, कर्कश होना । सख्त होना । भ्वा० पर० अक० सेट् । कड्डति । अकड्डीत्.

कण्, जाना । भ्वा० पर० सक० सेट् । कणति । अकाणीत्-अकणीत्.

कण्, भ्वा० प० । कणति । कणित । शब्द करना । चिलाना । विपत्तिमें जैसे । छोटा होना । जाना । पहुंचना.

कण, (पु०) कण्+अच् । धान्य आदिका अति सूक्ष्म अंश । कनियां । लेश । बहुत थोडा । बनजीरक । बनका जीरा (स्त्री०).

कणजीरक, (न०) कर्म० क्षुद्रजीरक । छोटा जीरा.

कणभक्ष, (पु०) भक्ष+अण् । उप० । काली चिडिया । कणाद मुनि । "कणभक्षक" यही अर्थ.

कणिक, (पु०) कणो विद्यतेऽस्य । अस्त्यर्थे ठन् । गोधूमचूर्ण (आटा) । मयदा । मैदा । बहुत छोटा हिस्सह । अग्निमन्थवृक्ष (स्त्री०).

कणेर, (पु०) कण्+एर । कर्णिकार वृक्ष । कनेरका वृक्ष । वेश्या । हाथिनी (स्त्री०).

कण्टक, (पु०) (न०) कटि+ण्वुल् । सूईकी नोक । कांटा । क्षुद्रशत्रु । रोमाञ्च । शरीरके रोमोंका खडा होना । मच्छीकी हड्डी । लग्नसे ४ था, १० वां और ७ वाँ स्थान.

कण्टकद्रुम, (पु०) कण्टकान्वितो द्रुमः । शाक० । कांटोंसे भराहुआ वृक्ष । शाल्मलीवृक्ष । (शिमुल) सिंवलका पेड.

कण्टकाशन, (पु०) कण्टकं अश्नाति । अश्+ल्युट् । उष्ट्र । ऊंठ । जो कांटोंको खाता है.

कण्टकित, (त्रि०) कण्टको रोमाञ्चो जातोऽस्य इतच् । जातपुलक । जिसके रोम खडे हुएहैं । प्रसन्न । खुश.

कण्टकिन्, (पु०) कण्टक+इन् । एक प्रकारकी मच्छी । खर्जूरका वृक्ष । खर्जूरका पेड । खदिरका पेड । मदनका द्रख्त । गोक्षुरका वृक्ष । वेरका वृक्ष । वंश । वांस.

कण्टपत्रफला, (स्त्री०) कण्टं कण्टकान्वितं पत्रं फलं यस्याः । जिसके पत्ते और फल कांटोंवाले हों । ब्रह्मदण्डी.

कण्टफल, (पु०) कण्टं कण्टकान्वितं फलं यस्य । जिसका फल कांटोंवाला हो । गोक्षुर । पनस । धत्तूरा । लताकरञ्ज । एरण्डभेद । कटहारा.

कण्टालु, (पु०) कटि+आलु । वृहती । वांस । वार्ताकी । कीकर । वेंगन.

कण्ठ्, भ्वा० चुरा० उभ० कण्ठति–ते । कण्ठयति–ते । कण्ठित । शोक करना । उदास होना । शोकसे स्मरण करना इस अर्थमें प्रायः "उद्" उपसर्गके साथ प्रयोग किया जाता है.

कण्ठ, (पु०) कण्+ठ । कठि+अच्वा । ग्रीवाका अगला भाग । गला । गलेका शब्द । मदनवृक्ष । समीप । पास । होमकुण्डके बाहिरकी अंगुलीभर जगह.

कण्ठतः, (अव्य०) कण्ठ+तसिल् । कण्ठ(गले)से.

कण्ठसूत्रम्, (न०) कण्ठे सूत्रं इव । एक प्रकारका आलिङ्गन । प्यारेके परिश्रमको दूर करनेकी इच्छासे प्यारी स्तनोंको टकराकर गाढ आलिङ्गन करना.

कण्ठाग्नि, (पु०) कण्ठे अग्निः पाकाग्निर्यस्य । (पक्षी) इसके गला नीचे करनेहीसे अन्नादि पकजाताहै, क्योंकि गलेमें आग भडक रहीहै । एक प्रकारकी चिडिया जो अपने कण्ठमेंही भोजन हजम कर्ताहै.

कण्ठाल, (पु०) कठि+आलच् । लज्जा । लडाई । ऊंठ । नाव । चप्पा । गौ वा बैलके कण्ठके नीचे जो मांस लटकताहै.

कण्ठिका, (स्त्री०) कठि+ण्वुल् । एक लडा । गलेका भूषण । कंठी । माला.

कण्ठीरव, (पु०) कण्ठ्यां रवो यस्य । जिसके गलेमें शब्द हो । सिंह । शेर । मत्तगज । मस्तहाथी । कपोत । कबूतर.

कण्ठेकाल, (पु०) कण्ठे कालः । सप्तमीका अलुक् होताहै । महादेव.

कण्डन, (न०) कडि+ल्युट् । मुसलादिसे चावलादिको तोह-रहित करना । धानसे तोहका अलग करना । कांडन.

कण्डनी, (स्त्री०) कण्ड्यतेऽनेन । कडि+ल्युट् । मुसल । उदूखल । मोहला । ऊखल.

कण्डिका, (स्त्री०) कडि+ण्वुल् । वेदैकदेश । वेदका एक भाग.

कण्डु, (स्त्री०) कडि+ड । गात्रघर्षण । अंगोंको रगडना । खुजली । खुरक । खुरकना.

कण्डू, (स्त्री०) कण्डूञ् । खुजलीकरना । क्विप् । कण्डूयते । खुरकना.

कण्डूघ्न, (पु०) कण्डू+हन्+टक् । गौरसर्षप । गोरीसरिओं.

कण्डूति, (स्त्री०) कण्डूञ्+क्तिन् । कण्डूयन । खुजलीकरना.

कण्डोल, (पु०) कडि+ओल । वांस आदिसे वनाया गया धान्यरखनेका पात्र । ऊंट । डोल.

कण्ठ्य, (त्रि०) कण्ठे भवः–यत् । कण्ठमें होनेवाला । गलेका.

कण्व, (पु०) कण्+वन् । मुनिभेद (जिसने शकुन्तलाका पालन किया) । पाप । गुनाह (न०).

कतक, (पु०) तक-हसना । कस्य जलस्य तको हासः प्रकाशो यस्मात् ५ ब० । जिससे जलका प्रकाश होताहै । (निर्मली) वृक्षभेद । जिसके फलके संयोगसे पानी साफ होजाताहै.

कतम, (त्रि०) किं+डतमच् । बहुतोंमेंसे एक वा कौन.

कतमालः, (पु०) कस्य=जलस्य तमाय=शेषणाय अलति= पर्याप्नोति–अल्+अच् । जो जलको सुकादेनेके लिये पर्याप्त काफी है । अग्नि । आग.

कतर, (त्रि०) किं डतरच् । दोनोंमेंसे कौन.

कति, (त्रि०) किम्+डति । संख्याभेद जाननेके लिये पूछा-गया । कितने । कियत्परिमाण.

कतिपय, (त्रि०) कति+अय पुच्-कुच । कितनेएक । कितने । कुछ.

कत्तृण, (न०) कुत्सितं तृणं । कोः कदादेशः । बुरा घास । सुगन्धिवाला तृण । चाकुलिया पाना.

कत्तोय, (न०) कुत्सितं ईषद्वा तोयं यत्र । बुरा वा थोडा जहां पानी हो । मद्य । शराब.

कत्थ्, सराहना । भ्वा०आ०अक०सेट् । कत्थते-अकत्थिष्ट.

कथ्, वाक्य बनाना । कहना । चुरा०उभ०सक०सेट् । कथयति-ते । अचीकथत्-त । अचकथत्-त । कथयाञ्चकार.

कथक, (त्रि०) कथ्+ण्वुल् । तत्वनिर्णयके लिये वादरूप कथा करनेहारा । कथापर जीनेहारा । नाटकका वर्णन करनेवाला । वक्ता । कहनेवाला.

कथङ्कारम्, (अव्य०) कथम्+कृ+णमुल् । किस रीति । किसतरहसे.

कथञ्चन, (अव्य०) कथम्+चन । किसीतरह । कैसे.

कथञ्चित्, कथं+चित् । कठिनता । मुश्किलसे । किसी न किसी प्रकारसे । बडी सावधानीसे.

कथनीय, (त्रि०) कथ्+अनीय। कथन करने योग्य। कहनेलायक.

कथम्, (अव्य०) किम्-प्रकारार्थे थमु-कादेशः। किसतरह। कैसे.

कथमपि, (अव्य०) अतियत्नसे। बडी कोशिशसे। बडे आदरसे.

कथम्भूत, (त्रि०) किं प्रकारं भूतः प्राप्तः। किम्भूत। किसप्रकारसे हुआ.

कथा, (स्त्री०) कथ+अ। कथन। कहना। प्रबंध रचना। कादम्बरी आदिग्रन्थ। कहानी। पक्ष और प्रतिपक्षकी वर्णनासे विचार करना। वादरूप वाक्य.

कथाप्रसङ्ग, (पु०) कथायां प्रसंगो यस्य। कथामें जिसका प्रसंग हो। वावदूक। वहुत वोलनेवाला। वातुल। पागल। विषवैद्य.

कथिकः, (पु०) कथ्+इक। कथा वाचनेहारा। कथा कहनेवाला.

कथित, (त्रि०) कथ्+क्त। कहागया। वर्णन कियागया। -तः (पु०) परमेश्वर।-तं (न०) परस्पर संभाषण। वातचीत.

कथीकृत, (त्रि०) कथा+च्वि+कृ+क्त। जो कथामें शेष रह गया। भर गया.

कद्, रोना-घवराना। अक०। बुलाना। सक० भ्वा० इदित्-पर० सेट्। कन्दति। अकन्दीत्.

कद्, घवराजाना। दिवा०आत्म०अक०सेट्। कद्यते। अकादिष्ट.

कदध्वन्, (पु०) कुत्सितोऽध्वा। कदादेशः। कुपथ। कुमार्ग। बुरा रास्ता.

कदन, (न०) कद्+णिच्+ल्युट्। पाप। मलना। मारना। लडाई.

कदम्ब, (पु०) कद्+अम्वच्। एकवृक्ष। देवताडवृक्ष। समूह (न०).

कदम्बगोलकन्याय, (पु०) कदम्वपुष्पस्य गोलके यथा सर्वावयवेषु युगपत् कुसुमानां उत्पत्तिस्तादृशे एकदोत्पत्तौ दृष्टान्तभेदः। कदम्वफूलके गोलमें जैसे सम्पूर्णभागोंमें एकहीवेर सब पुष्प निकलआते हैं ऐसी मिसाल.

कदर्थित, (त्रि०) कुत्सितोऽर्थः कदर्थः "तत् करोतीति" णिच्। कर्मणि क्त। दोष लगायागया। क्षुद्र कियागया। लोमीकियागया। घिनकिया। तिरस्कारकियागया.

कदर्य्य, (त्रि०) (कुत्सितोऽर्य्यः स्वामी कुगति०)। ऐश्वर्य होनेपरभी जो दान नहिं करता। क्षुद्र। नीच। कमीना। जो पुरुष लोभसे धन इकट्ठा करताहै, चाहे आपने धर्मका और पुत्र, स्त्री आदिका नाशभी होजाय.

कदली, (स्त्री०) काय दल्यते लगादौ जलवाहुल्यात्। रम्भावृक्ष। पताका। झण्डी। एकप्रकारकी हरिणी। केलेका पेड.

कदा, (अव्य०) कस्मिन् काले। किम्+दा-कादेश। किससमय। कव.

कदाख्य, (पु०) कुत्सिता आख्या यस्य कदादेशः। कुडवृक्ष। कुट.

कदाचन, (अव्य०) कदा+चन। किसी न किसी समय। किसी वक्त.

कदापि, (अव्य०) कस्मिन्नपि काले। किसी समयमें। किसी वक्तमें.

कदुष्ण, (पु०) कुत्सितं ईषदुष्णं कोः कदादेशः। ईषदुष्णस्पर्श। थोडा गरम छूना। थोडासा गरम.

कद्रु, (पु०) कद्+रु। पिङ्गलवर्ण। पीलारंग। पीला (त्रि०) नागमाता (स्त्री०).

कद्रू, (स्त्री०) कद्रु+संज्ञायां ऊङ्। नागमाता। सापोंकी मा। कश्यपकी स्त्री.

कद्वद, (त्रि०) कुत्सितं वदति। कु+वद्+अच्-कदादेशः। गर्हित वचन कहनेहारा। बुरा वोलनेवाला। वहुत नीच.

कन्, प्रीतिकरना-खुशहोना। अक० जाना। सक० भ्वा० पर० सेट्। कनति। अकनीत्-अकानीत्.

कनक, (न०) कन्-वुन्। स्वर्ण। सोना। किंशुकवृक्ष। केसु। धत्तूरा.

कनकक्षार, (पु०) कनकस्य तद् द्रावणाय क्षारः। सोनागालनेके लिये खार। सोहागा। इसके सम्वन्धसे सोना झट पिघलताहै.

कनकरस, (पु०) कनकं इव रसो यस्य। जिसका रस सोनेके समान हो। हरिताल.

कनकाचल, (पु०) कर्म०। सुमेरुपर्वत। सोनेका पहाड.

कनकारक, (पु०) कनकं दीप्तं यथा तथा ऋच्छति सर्वतो व्याप्नोति। कोविदारवृक्ष। कचनाल.

कनखल, (पु०) तीर्थभेद। गंगाके पासहीका एक पवित्र स्थान.

कनिष्ठ, (त्रि०) अयं एषां अतिशयेन अल्पो युवा वा ईषत् कनादेशः। यह इनमें वहुतही छोटाहै। अतिअल्प। छोटाभाई। सबसे छोटी ऊंगली चीचीऊंगली। छोटीवहिन (स्त्री०).

कनीनिका, (स्त्री०) कन्+ईन्। संज्ञायां कन्+टाप् अकोई अक्षितारा। आंखकी पुतली। कनिष्ठाङ्गुली। चीचीअंगुल.

कनीयस्, (त्रि०) अयं अनयोः अतिशयेन युवा अल्पो वा ईयसु० कनादेशः। दोनोंमें वहुत छोटा भाई। स्त्रीलिङ्गमें ङीप् होताहै.

कनीयस्, (न०) कनी दीप्तिः तस्यै यस्यति। यस्+अच्। ताम्र। तामा। तांबा.

कन्तु, (पु०) कम्+तु। कामदेव। हृदय (न०) कं सुखं अस्तीति। कम् अस्त्यर्थे तु। सुखवाला। सुखी.

कन्था, (स्त्री०) कम्+थन् । मृण्मयमिति । मट्टीकी दीवार । कंद । सूतसे गुथे हुए पुराने कपडोंके चीथडे । गोदडी.

कन्द, (पु०) (न०) कन्दति कन्दयति, कन्दते वा कदि+अच् णिच् अच् घञ् वा । शस्यमात्रकी जड । गृञ्जन । गाजर । मेघ । बादल (पु०).

कन्दर, (पु०) (स्त्री०) कं जलेन दीर्यते । कम्+दृ+अच् । घरके स्वरूपमें पर्वतका नितम्बदेश । गुहा । गुफा । स्त्रीत्वे टाप् ङीप् च । आंकुस । अंकुश (पु०) । आर्द्रक (न०) अदरक.

कन्दराकर, (पु०) ६ त० । पर्वत । जहां बहुतसी कन्दरा हों । एक पहाड.

कन्दराल, (पु०) कन्दरा+अस्त्यर्थे लच् । गर्दभाण्डवृक्ष । प्लक्षवृक्ष । पाकुड । आखोटवृक्ष । अखरोट.

कन्दर्प, (पु०) कं सुखं तेन तत्र वा दृप्यति । कम्+दृप्+अच् । कं कुत्सितो दर्पोऽस्मात् वा । सुखसे वा सुखमें अभिमान कर्ताहै । जिस्से बुरा अहंकार उपजताहै । कामदेव । इसमें जीवको सुखका अभिमान होताहै.

कन्दर्प-कूप, (पु०) कन्दर्पस्य कूप इव । मानों कामदेवका कूआं है । स्त्रीचिह्नभेद । स्त्रीका चिह्न । योनि । कुस.

कन्दर्प-जीव, (पु०) कन्दर्पं जीवयति उद्दीपयति । जीव्+णिच्+अण् । कामवर्धननाम वृक्ष । एक वृक्ष जो कामको बढाताहै.

कन्दर्पमूषल, (पु०) कन्दर्पस्य मूषल इव । मानो कामदेवका मोला है । पुरुषका चिह्न । लिङ्ग.

कन्दली, (स्त्री०) कन्दे लीयते । ली+ड । एक प्रकारका हरिण । गुल्मविशेष । एकझाडी । पताका । झुण्ड । पद्मबीज । कमलडोडा.

कन्दु, (पु० स्त्री०) स्कन्द्+उ । सलोपः । अयोमयपाकपात्र । लोहेका पकानेका वर्तन । तवा.

कन्दुक, (पु०) कदि+उक । गेन्दुक । गेन्द । खिद्दो । खेन्नु.

कन्दुपक्व, (त्रि०) जलोपसेकं विना कन्दुपात्रे पक्वं । पानी लगायेविना तवेपर पकाहुआ । भुजीहुई चीज । चावलआदि.

कन्दोट, (पु०) कदि+ओटन् । श्वेतोत्पल । चिट्टाकमल । नीलाकमल (न०)

कन्धर, (पु०) कं जलं धारयति धरः । जो पानीको धारण करे । मेघ । बादल । कंधा । ग्रीवा (गर्दन) (स्त्री०)

कन्धि, (स्त्री०) कं शिरो धीयतेऽस्मिन् । कम्+धा+कि । जिसपर सिर रक्खा जाताहै । गर्दन । गला.

कन्न, (न०) कद्+क्त । पातक । पाप । मूर्छा । गश । बेसुध होना.

कन्यका, (स्त्री०) अज्ञाता कन्या । कन्या+अज्ञातार्थे कन् । क्षिपकादिगणमें पाठ होनेसे इकार न हुआ । दस वर्षकी कुमारी । लडकी । कुवारी.

कन्या, (स्त्री०) कन्+यत् । अनूढा कुमारी । न विवाही हुई लडकी । दस वर्षकी क्वारी । मेषसे छठी राशि । मोटी इलाइची । देवी.

कन्याकुब्ज, (पु०) कन्याः कुब्जा यत्र । कान्यकुब्ज (कन्नौज) देश । वहां वायुने सौ कन्याको कुवडा करदिया । यह रामायणकी कथा है.

कन्याट, (पु०) कन्या अटति अत्र । घञ् । जहां लडकियें खेलती हैं । वासभवन.

कप्, चलना-हिलना । भ्वा०इदित् आत्म०अक०सेट् । कम्पते अकम्पिष्ट.

कपट, (पु० न०) के मूर्धनि अग्रे पट इव आच्छादकः । माथेपर कपडेकी नाईं ढाकनेहारा । अन्यथास्थित वस्तुको अन्यथारूपसे आच्छादन करना । छल । ठगी । लुचपना.

कपटिन्, (त्रि०) कपट+इनि । छलयुक्त । छलवाला । छलिया । लुच्चा.

कपर्द, (पु०) पर्व-भरना-क्विप् । रात् वलोपे पर् । कस्य गंगाजलस्य, परा पुर्या दायति शुध्यति । क+पर्+दैप्+क । शिवजीकी जटा । कवडी.

कपर्दिन्, (पु०) कपर्द+अस्त्यर्थे इनि । कपर्दवाला । महादेव । शंकर.

कपाट, (स्त्री० न०) कं वातं पाटयति बहिर्गमयति । पट्+णिच्+अण् । जो वायुको वाहिर निकालताहै । दर्वाजेका पडदा वनकर वायुको रोकनेहारा अपने नामसे प्रसिद्ध काष्ठआदि । किवाड । "कपाटी."

कपाल, (पु० न०) कं जलं पालयति अण् । घट आदिका अवयव । ठीकरा । सिरकी हड्डी । खोपरी । यतिओंका भीखमांगनेका पात्र । खप्पर । "कप्+कालन्" समूह । एक प्रकारका कोढ.

कपालभृत्, (पु०) कपालं अस्थिमयं पात्रं बिभर्ति । भृ+क्विप् । जो हड्डीओंका पात्र धारण कर्ताहै । शिवजीमहाराज.

कपालमालिन्, (पु०) कपालानां माला विद्यतेऽस्य इनि । खप्परोंकी मालावाला । शिवजी । दुर्गा (स्त्री०) ङीप्.

कपालिका, (स्त्री०) क्षुद्रं कपालं अल्पार्थे कन् अत इलम् । छोटा खप्पर । टूटेहुए मट्टीके वर्तनके टुकडे । ठीकरियें । ठीकरा.

कपालिन्, (त्रि०) कपाल+अस्त्यर्थे इन् । कपाल (खप्पर) वाला । महादेव.

कपि, (पु०) कप्+इ । वानर । लालचंदन । वराह । सूअर । विष्णु । धूप.

कपिकेतन, (पु०) कपिः केतनं ध्वजरूपं चिह्नं यस्य । जिसकी ध्वजापर वानरका चिह्न हो । अर्जुन । "कपिध्वज" (त्रि०).

कपिञ्जल, (पु०) कमिव पिञ्जलं पिजि+कलच् । गौरतित्तिर । गोरातीतर । चातक । पपीहा । "कपिञ्जलानालभेत" इति श्रुतिः.

कपित्थ, (पु०) कपिस्तिष्ठति अत्र । तत्फलप्रियत्वात् । स्था+क-पृषो० । जहां वानर बैठताहै, इसका फल उसे प्रिय होताहै । (कैतवेल) वृक्षभेद.

कपित्थास्य, कपित्थं इव आस्यं यस्य । जिसका मुख कपित्थकी नांई हो । गोलाङ्गूलनामी वानरका भेद.

कपिप्रिय, (पु०) ६ त० । आम्रातक वृक्ष । कपित्थका वृक्ष.

कपिरथ, (पु०) कपिः हनुमान् रथ इव वाहनं यस्य । हनुमान् जिसका रथकी नांई वाहन हो । रामचन्द्र । अर्जुन.

कपिल, (पु०) कप्+इलच्-पादेशः । अग्नि । वासुदेव । सांख्यशास्त्रके बनानेहारा एक मुनि (वह कर्दमप्रजापतिसे देवहूतीमें भगवान्के अंशसे उत्पन्न हुआ) । कुत्ता । एकदैत्य । पीलारंग । पीलेरंगवाला (त्रि०) । सोनेके रंगकी गौ । एक नदी । सुगन्धिवाली वस्तु । धूप । पुण्डरीकनाम दिग्गजकी हथिनी (स्त्री०).

कपिलधारा, (स्त्री०) कपिलेव शुद्धा धारा यस्याः । कपिलाकी नांई जिसकी धार साफ हो । स्वर्गकी नदी । गंगा । एक तीर्थ जो काशीमें प्रसिद्ध है.

कपिलाश्व, (पु०) कपिलरूपेण अश्वहरणात् । कपिलरूपमें घोडा चुरानेसे । कपिलवर्णाश्वयोगाच्च । पीले रंगका घोडा होनेसे । इन्द्र । देवोंका राजा । देवराज.

कपिलोह, (न०) कपितुल्यं पिङ्गलं लोहधातुः । वानरके समान पीला लोहाधातु । पीतल । पित्तल.

कपिवक्त्र, (पु०) कपेर्वक्त्रमिव वक्त्रं अस्य । जिसका मुख वानरके मुखकेसमान है । नारद (इसका मुख शापसे वानरका होगया था यह पुराणमें प्रसिद्ध है).

कपिवल्ली, (स्त्री०) कपिरिव तल्लोमतुल्या वल्ली । वानरके रोमोंके समान जिसकी वेल हो । गजपिप्पली.

कपिश, (पु०) कपिः कपिलवर्णोऽस्यास्ति । अस्त्यर्थे शः । जिसका रंग पीला हो । (शिलारस) सिल्हक । कालापीला मिलाहुआ रंग । वैसे रंगवाला (त्रि०) । एकनदी । माधवीलता (स्त्री०).

कपिशीर्ष, (न०) कपीनां प्रियं शीर्षं अग्रं शाक० । जिसका सिरा वानरोंको प्रिय है । प्राकाराग्र । कोटकी अगली ओर.

कपीज्य, (पु०) कपिभिः इज्यते । यज्+क्यप् । क्षीरिकावृक्ष । एकपौधा.

कपीन्द्र, (पु०) कपिः इन्द्र इव । वानर मानो इन्द्र है । हनुमान् । वानरोंका राजा । सुग्रीव.

कपीष्ट, (पु०) कपीनां इष्टः । राजादनवृक्ष । कपित्थ.

कपूय, (त्रि०) कुत्सितं पूयते । कुत्सित निन्दित । बुरा कमीना । बदशकल.

कपोत, (पु०) को वातः पोत इव यस्य । पारावत । कबूतर । पक्षिमात्र । परिंदा.

कपोतक, (न०) कपोत इव कायति प्रकाशते । कै+क । सौवीराञ्जन । सुरमा । जो कबूतरकी नांई चमकता है.

कपोतपालिका, (स्त्री०) पालयति पाल्+ण्वुल्-उप० । महल आदिके सिरेपर काष्ठ आदिसे रचागया पक्षिओंके निवासका स्थान । विटङ्क । पायराखोप । दडभा । पक्षिओंके रहनेके लिये छतरी छज्जा । "कपोतपाली".

कपोतवर्णी, (स्त्री०) कपोतस्य वर्णं इव वर्णो यस्याः । गौरा० ङीष् । जिसका रंग कबूतरके समान हो । सूक्ष्मैला । छोटी इलायची.

कपोतारि, (पु०) कपोतस्य अरिः ६ त० । कबूतरका शत्रु । श्येनपक्षी । बाज.

कपोल, (पु०) कप्+ओलच् । गण्ड । गल्ल । गाल.

कफ, (पु०) केन जलेन फलति । फल्+ड । शरीरका धातुभेद । श्लेष्मा । बलगम.

कफकूर्चिका, (स्त्री०) कफं कूर्चति विकरोति । कूर्चविकार होना-बदलना ण्वुल् । लाला । लार । मूंका मद । थूथु । थूक.

कफणि, (पु०) (स्त्री०) केन जलेन फणति स्फुरति इन् । भुजाके बीचकी गांठ । कूर्पर । कुहुई । कोहनी । "स्त्रीत्वे वा ङीप्".

कफविरोधिन्, (पु० न०) कफं विरुणद्धि । वि+रुध्+णिनि । जो कफको रोकदे । मरिच । कफका विरोधी (त्रि०).

कफारि, (पु०) ६ त० । कफका शत्रु । सुण्ठी । सोंठ.

कफिन्, (त्रि०) कफ अस्ति अर्थे इन् । कफवाला । बलगमसे भराहुआ.

कबन्ध, (पु०) कं मुखं बध्नाति । बन्ध्+अण् । मुखको बांधनेहारा । कं बध्यते छिद्यतेऽस्मात् । बन्ध्+घञ् । जिस्से सिर काटाजाताहै । केन वायुना बध्यते । वायुसे रुकनेवाला । उदर । पेट । धूमकेतु । राहु । राक्षसभेद । जल (न०) । सिरसे बिना क्रियाकरनेहारा शरीर । धड । पानी । बोदीवाला तारा । बिनासिरके देह.

कम्, (अव्य०) पादपूरण । जल । पानी । मस्तक । मुख । मंगल । निंदा.

कम्, चाहना । भ्वा० आत्म० सक० सेट् । कामयते । अचीकमत-अचकमत.

कमठ, (पु०) कम्+अठन्। कच्छप। कच्छु। संन्यासिओंका जलपात्र (न०)

कमण्डलु, (पु० न०) मण्डनं मण्डः कस्य जलस्य मण्डं लाति ला+कु। जो पानीकी सजावटको ग्रहण करे। संन्यासिओंका जलपात्र। मट्टी वा लकडीका पात्र जो भिक्षुलोक हाथमें रखते हैं। लक्षवृक्ष। चौपाओंका भेद.

कमन, (त्रि०) कामयते। कम्+ल्यु। कामुक। कामी। अभिरूप। सुन्दर। अशोकवृक्ष.

कमनच्छद, (पु०) कमनः सुन्दरः छदोऽस्य। जिसका पत्ता सुन्दर है। कङ्कपक्षी। वगुला.

कमनीय, (त्रि०) कम्+अनीयर्। मनोहर। कामनायोग्य। चाहनेलायक। सुन्दर। बहुत उंदा.

कमल, (न०) कं जलं अलति भूषयति। कम्+अल्+अच्। जो जलको सजा देताहै। पद्म। कमल। फूल। ताम्र। तांवा। औषध। मृगविशेष। सारसपक्षी (पु०)। जल (न०).

कमलख(ष)ण्ड, (न०) कमलानां समूहः। कमल+(ष)ण्डच्। पद्मसमूह.

कमला, (स्त्री०) कमलं विद्यतेऽस्याः। अर्शआदिलात् अच्। लक्ष्मी। कम्+अलच्। वरस्त्री। सुन्दरस्त्री.

कमलालया, (स्त्री०) कमलं आलयो यस्याः। जो कमलमें वास कर्ताहै। लक्ष्मी.

कमलासन, (पु०) कमलं आसनं यस्य। जिसका आसन कमल है। ब्रह्मा.

कमलिनी, (स्त्री०) कमलानां समूहः देशो वा। कमल+इनि। कमलोंका समूह। पद्मोंवाली लता.

कमलोत्तर, (न०) कमलं इव उत्तरं उत्कृष्टम्। कुसुम्भका फूल.

कमितृ, (त्रि०) कम्+तृच्। कामुक। कामी। शश्वती। चाहनेहारा.

कम्प्, तु० आ० कम्पते। चकम्पे। अकम्पिष्ट। कम्पित। कांपना। थरथरना। इधर उधर सरकना वा चलना.

कम्पन, (त्रि०) कम्प्+युच्। कांपनेवाला। थरथरानेवाला। (न० पु०) शिशिर ऋतु.

कम्प, (पु०) कपि-चलना घञ्। शरीरआदिका कांपना.

कम्पिल्ल-ल्ल, (पु०) कपि+इलच्। कमलागुंडा। रोचनी। एक वृक्ष। करंज.

कम्प्र, (त्रि०) कपि+र। कम्पान्वित। कम्पित। कांपाहुआ। हिलाहुआ.

कम्ब, गति-जाना। भ्वा० पर० सक० सेट्। कम्वति। अकम्बीत्.

कम्बल, (पु०) कम्ब्+कलच्। मेषादिलोमनिर्मित वसन। ऊनी कपडा। एक प्रकारका हरिण। सांप वा छोटा कीट। आसन.

कम्बलिन्, (त्रि०) कम्बल अस्ति अर्थे इनि। कम्बलवाला। ब्लैंकटवाला।–लः (पु०) वृषभ। बैल.

कम्बु, (पु० न०) कम्+उ-वुक्। शङ्ख। गज। हाथी। रंगवरंगी। घोंगा.

कम्बुपुष्पी, (स्त्री०) कम्बुः शङ्ख इव पुष्पं अस्याः। जिसके फूल शङ्खके समान हैं। शङ्खपुष्पी.

कम्बोज, (पु०) कवि+ओज। हाथीका भेद। शङ्खका भेद। देशभेद। हिन्दुस्तानके उत्तरमें एक देश.

कम्र, (त्रि०) कम्+र। भोगकी इच्छा करनेहारा। कामुक। मनोहर। सुंदर.

कर, (पु०) कॄ+अप्। कृ+अच् वा। हस्त। हाथ। किरण। राजाके लेनेयोग्य खिराज वा मसूल। वर्षोपल। ओला। गडा। हाथीकी सूंड। हस्तनामी नक्षत्र १३ वां.

करक, (पु०) कृ+वुन्। करंजवृक्ष। पक्षी। अनारका वृक्ष। कचनालका वृक्ष। बकुलवृक्ष। शरीर। नारियेलकी खोपरी। कमण्डलु. (पु० न०)। कर "स्वार्थेकन्" वर्षोपल। ओला। गडा.

करकङ्कणन्याय, (पु०) कङ्कणशब्दस्य करभूषणार्थत्वेपि यथा करशब्दप्रयोगस्तत्र तत्संलग्नतायोतनार्थः तद्रूपे दृष्टान्ते। कंकणशब्द यद्यपि हाथके भूषणमेंही आताहै तौभी कर "कङ्कण" कहनेसे हाथसे लगाहुआ ऐसा अभिप्राय है इस प्रकारकी मिसाल.

करकण्टक, (पु०) करस्य कण्टक इव। हाथका मानो कांटा है। नख। नखून। नौं.

करकाजल, (न०) करकाया जलं ६ त० (वरफ) करकास्यन्दिजल। ओलोंका वहा पानी.

करकाम्भस्, (पु०) करकाया अम्भ इव अम्भो यस्य। जिसका जल ओलोंके जलसमान हो। नारिकेल। नारियेल। नरेल.

करग्रह, (पु०) करस्य वधूकरस्य वरेण ग्रहो ग्रहणं यत्र। जहां वर वधूके हाथको पकडता है। विवाह। शादी। पाणिग्रहण.

करङ्क, (पु०) कीर्यते द्रव्यं अत्र। कृ+अप्। जहां कोई वस्तु फेंकी जातीहै। पात्रभेद। डब्बा। कमण्डलु। मस्तकखर्पर। माथेकी खोपरी। नारियेलकी हड्डी। खोल। "ताम्बूलकरङ्कवाहिनी" कादम्बरी.

करच्छद, (पु०) कर इवावरकः छदोऽस्य। जिसका पत्ता हाथकी नाईं हो। शाखोटवृक्ष। सिहोढा। सिन्दूरपुष्पी.

करज, (पु०) करे जायते। जन्+ड। हाथमें उपजताहै। नख। नखून। नौं। व्याघ्रनखनाम गन्धद्रव्य। "कं शिरः जलं वा रञ्जति"। रञ्ज्+णिच्+अण् नि० जो सिर वा पानीको रंगदे। करञ्जुआ। कञ्ज.

करञ्ज, (पु०) कं शिरः जलं वा रञ्जयति अण्। करमचा नामी वृक्ष । करंजुआ.

करट, (पु०) कृ+अटन्। गजगण्ड । हाथीकी गाल । कौआ । कुसुम्भवृक्ष । वह गौ जो दुःखसे दोहन कीजाय (स्त्री०) टाप्.

करटिन्, (पु०) करटः गजगण्डः । ततः अस्त्यर्थे इनि । हस्ती । हाथी.

करण, (न०) कृ+ल्युट् । क्रियाकी सिद्धिमें साक्षात् (विना फरकके) साधन । व्याकरणमें कहागया कारकका भेद । वर्ण । हेतु । क्षेत्र । इन्द्रिय । शरीर । "भावे ल्युट्" क्रिया । वैश्यसे शूद्रामें उत्पन्न कियागया जातिभेद । करण । कायस्थ (पु०).

करणाधिप, (पु०) करणानां इन्द्रियाणां अधिपः । इन्द्रियोंका स्वामी । जीव । आत्मा.

करण्ड, (पु०) कृ+अण्डन् । मधुचक्र । मधुमक्खिओंका छत्ता । खड्ग । तलवार । कारण्डव पक्षी । वांसआदिका रचाहुआ फूलोंका पात्र । पच्छी । समुद्र । संदूकडी । कलेजेकी बीमारी । यकृतरोग (स्त्री०) टाप्.

करतल, (पु०) ६ त० । हस्ततल । हाथकी तली । हाथ.

करताल; (न०) उल्-प्रतिष्ठा करना । आदर करना । ठहरना घञ् । करे तालो यस्य । जिसका ताल हाथपर हो । वाद्यभेद । (करताल) यह हाथपर रखकरही वजायां जाताहै । झांज । मंजीरा । कैसी.

करताली, (स्त्री०) करौ ताड्येते यत्र । घञ् । ताड+घञ् ६ त० ङीप् । ड कोल । जहां हाथ वजाये जाते हैं । करतलध्वनि । खडताल.

करतोया, (स्त्री०) करस्य गौरीविवाहकाले शिवकरस्य तोयात् (स्वच्छर्मवारितः) सम्भूतं तोयं यस्याः । पार्वतीके विवाहसमय महादेवके हाथसे वहेहुए पसीनेके पानीसे जिसका जल उत्पन्न होगया । कामरूपदेशमें अपने नामसे प्रसिद्ध एक नदी.

करपत्र, (न०) करात् पतति । पत्+ष्ट्रन् । हाथसे गिरताहै । करात । क्रकच । लकडीको फाडनेहारा । आरा । "करौ एव पत्रं वाहनं यत्र" । हाथही जहां सवारीहैं । जलक्रीडा । पानीकी खेल.

करपत्रवत्, (पु०) करपत्रं इव पत्रवृन्तोऽस्त्यस्य मतुप् । जिसके पत्तेकी जड आरेके समान हो । तालवृक्ष । ताडदरखत.

करपर्ण, (पु०) करः हस्त इव पर्णं यस्य । जिसका पत्ता हाथकी नाई हो । भ्येंट । भिण्डातकवृक्ष । रक्त एरण्ड । लाल हिरंड.

करपल्लव, (पु०) करस्य हस्तस्य पल्लव इव । हाथके पत्तेकी नाईं । अंगुली.

करपात्र, (न०) कर एव पात्रं जलनिक्षेपपात्रं यत्र । जहां हाथही जल फेंकनेका पात्र है । हाथोंसे उठाकर आपसमें पानी देने वा उछालनेकी खेल । कर्म० । हस्तरूप पात्र । हाथका पात्र.

करपाल, (पु०) करं पालयति । पाल्+अण् । हाथको बचाताहै । खड्ग । तलवार । "संज्ञायां कन् टाप् अत इत्वं" । हाथकी लकडी । सोटा.

करपीडन, (न०) करस्य वधूकरस्य वरेण पीडनं ग्रहणेन मर्दनं यत्र । वधूके हाथका वरके हाथसे पकड कर मलना जहां हो । विवाह.

करवाल, (पु०) करस्य वालः शिशुरिव । हाथका मानो बच्चा है । नख । नखून । नौं । "करे वालो गतिर्यस्य" । हाथमें जिसकी गति है । खड्ग । तलवार.

करभ, (पु०) कॄ+अभच् । करे भाति । भा+क वा । मणिबंधसे ले कनिष्ठातक हाथका वाह्यदेश । कोहनीसे चीचीउंगलीतक हाथका वाहिरला भाग । हाथीका बच्चा । ऊंठका बच्चा । नखीनाम गन्धद्रव्य । ऊंठ । "करभकण्टकडारं" इति माघः.

करमर्दन (पु०) करं मृद्नाति । मृद्+ल्यु । करमचा वृक्ष । करंचा । हाथमलना.

करमाला; (स्त्री०) करः कराङ्गुलिपर्व मालेव जपसंख्याहेतुत्वात् । अंगुलिओंकी गांठे जपकी गिनतीका कारण होनेसे मानो मालाकी नाईं हैं । अनामिकाके मध्यसे लेकर दहिनीओर तर्जनीके मूलपर्यन्त करमाला है । अङ्गुलिओंमें दस गांठोकी माला जो जपसंख्याके लिये है.

करम्ब, (त्रि०) कृ+अम्बच् । मिश्रित । मिलाहुआ । मिश्रण । मिलना (पु०).

करम्बित, (त्रि०) करम्बो मिश्रणं जातोऽस्य इतच् । जिसका मेल हुआहै । मिश्रित । मिलाहुआ । जुडाहुआ । "मधुकरनिकरकरम्बित" जयदेवः.

करम्भ, (पु०) केन जलेन रभ्यते सिच्यते । रभ्+घञ्-मुमूच । दहीसे मिलेहुए सत्तू । जलसे सींचा जाताहै.

कररुह, (पु०) करे रोहति । रुह्+क । हाथमें उगताहै । नख । नखून । नौं.

करवाल, (पु०) करं वालयति रक्षति (पु०) वल्-पालनकरना+अण् । हाथको बचाताहै । कृपाण । तरवार.

करवीर, (पु०) करं वीरयति । चुरा० । वीर-विक्रमकरना-बल दिखलाना+अच् । हाथको बल देताहै । कृपाण । तरवार । कृपण । सूम । कंजूस । एक वृक्ष । श्मशान । मसान । एक देशका नाम । "स्वार्थे कन्" । अर्जुन वृक्ष । कणेरका वृक्ष.

करशाखा, (स्त्री०) करस्य शाखेव । मानों हाथकी डाली है ।

करशीकर, (पु०) करस्य हस्तिहस्तस्य शीकरः । हाथीके सूंडकी बूंदें । हाथीकी सूंडसे निकलाहुआ पानीका कणा (कतरा).

करशूक, (पु०) करस्य शूकः सूचीव । मानो हाथकी सूई है । नख । नौं.

करसूत्र, (न०) ६ त० । विवाहआदिके समय हाथमें मंगलके लिये बांधागया सूत । कंगन.

करहाट, (पु०) करं हाटयति दीपयति । हट्-प्रकाशकरना+णिच्+अण् । किरणको चमकाताहै । पद्म आदिका मूल (जड) । मदनवृक्ष । पिण्डीवृक्ष । देशका भेद.

करहाटक, (पु०) करं हाटयति । हट्-चमकना+णिच्+ण्वुल् । हाथको प्रकाश कर्ताहै । मदनवृक्ष । ६ त० । हस्तका भूषण । सुवर्ण । हाथका जेवर । सोना.

कराल, (त्रि०) कृ+अप् । करो विक्षेपः तस्मै अलति पर्याप्नोति । अल्-पूरा-होना+अच् । जो विक्षेप (भय आदि)के लिये पूरा है । विकट । भयानक । तेलका भेद (गर्जनतैल) । सर्जरसवाला तेल । तैलधुना (न०) । दन्तुर । नतोन्नत । ऊंचानीचा । ऊंचा (त्रि०) । अनन्तमूलनामी वृक्षका भेद.

करास्फोट, (पु०) करेण आस्फोटः शब्दो यत्र । जहां हाथकी आवाज होतीहै । वक्षःस्थल । छातीकी जगह । सिकोडकर रक्खीगई एक भुजा । दुसरे हाथकी चोटसे शब्द करना । ताल ठोकना ३ त० । भुजाका ठोकना.

करिणी, (स्त्री०) करिन्+ङीप् । हस्तिनी । हथिनी । गौ । देवताभेद.

करिदारक, (पु०) करिणं दृणाति हिनस्ति । दृ+ण्वुल् । हाथीको फाडताहै । सिंह । शेर.

करिन्, (पु०) करः शुण्डादण्डः अस्ति इत्यर्थे इनिः । जिसका सुंडका डंडा हो । हस्ती । हाथी.

करीर, (पु०) कृ+ईरन् । घट । घडा । वंशाङ्कुर । वांसकी फुट । झिल्ली । करीरका वृक्ष । हस्तिदन्तमूल । हाथीके दांतकी जड (स्त्री०).

करीष, (पु० न०) कृ+ईषन् । शुष्कगोमय । सूका गोया । सूखा गोवर.

करुण, (पु०) कृ+उन । करुणनामी रसका भेद । करुणनामी वृक्षका भेद । दीन । अनाथ । दुःखित । करुणावाला । (दयालु) (त्रि०) दया (स्त्री०) टाप्.

करुणविप्रलम्भ, (पु०) करुणरसान्वितो विप्रलम्भः । करुणारसवाला विछोडा । अलंकारप्रसिद्ध शृङ्गाररसमें विप्रलम्भभेद । विछोडेमें प्रेमका अनुभव करना.

करुणामय, (त्रि०) करुणा+प्राचुर्ये मयट् । बडी दयावाला । करुणामयी (स्त्री०).

करूष, (पु०) कृ+ऊष । देशभेद.

करेणु, (पु०) कृ+एणु । गज । हाथी । हस्तिनी । हथिनी (स्त्री०).

करोट, (पु० न०) के शिरसि रोटते । रुट्+चमकना । अच् । सिरपर चमकती है । सिरकी हड्डी । खोपडी । "करोटी" यही अर्थ.

कर्क्, हसना । पर०अक०सेट् । कर्कति । अकर्कीत्.

कर्क, (पु०) करोति कृणोति क्रियते वा । कृ+क । तस्य न इत्वम् । वह्नि । आग । चिट्टा घोडा । दर्पण । शीशा । कुलीर । केकडा । कर्कटवृक्ष । कण्टक । मेष आदिसे चौथी राशि । घट । घडा । (पु० स्त्री०) वा ङीप्.

कर्कट, (पु०)कर्क+अटन् । छोटा आवला । कट्फल । कर्करेटपक्षी । जलजन्तुका भेद । कुलीर । केकडा । चौथी राशि । शाल्मलीवृक्ष । सिम्बलका पेड । "स्वार्थे कन्" कर्कटक । यही अर्थ.

कर्कटशृङ्गी, (स्त्री०) कर्कट इव शृङ्गं यस्याः । जिसका सींग केकडेकी नांई हो (ककडसिङ्गी) वृक्षभेद । "स्वार्थे कन्" कर्कटशृङ्गिका.

कर्कन्धू, (स्त्री०) कर्कं कण्टकं दधाति । धा+कू । नि० मुम् (जो कांटेको धारण कर्ताहै) । वदरीफल । बेर । वृक्षविशेष । उनाव.

कर्कश, (पु०) करे कशति । कश्-आवाज करना । अच् । पृषो० । कर्कः काठिन्यं अस्त्यर्थे श । कृ-फेंकना+विच् । कर् । कश्-मारना +अच्-कर्म०वा करञ्ज (करमचा) । खांसीको दूरकरनेहारा । इक्षु गन्ना तरवार । खरस्पर्श । तेजछूना । कठोर । साहसी । क्रूर । निर्दय । वेरहम । खरस्पर्शवाला (त्रि०).

कर्कसार, (न०) कर्कं हासं श्वेततां सरति गच्छति । सृ+अण् । करम्भ । दधिसक्तु । दहीसे मिलाहुआ आटा वा मांस.

कर्कारु, (पु०) कर्कं हासं श्वेततां ऋच्छति । ऋ+उण् । कूष्माण्ड । पेठा.

कर्कोट, (पु०) कर्क+ओट । सांपका भेद । नागराज । "स्वार्थे कन्" कर्कोटकनाम सांप जिसे दृष्टिविष (देखनेहीसे जिसकी जहर चढजातीहै) कहतेहैं । विल्वका वृक्ष । क्रांकदोलनामी दरख्त.

कर्चूर, (पु०) कर्च्०ऊर । पृषो० । (कचूर) गन्धद्रव्य । हरिताल.

कर्ज्, पीडाकरना । भ्वा० पर० सक० सेट् । कर्जति । अकर्जीत्.

कर्ण्, फाडना । चुरा० उभ० सक० सेट् । कर्णयति-ते । अचकर्णत्-त "आ उपसर्गके साथ इसका अर्थ सुना होजाताहै" । आकर्णयति । आकर्णयते.

कर्ण, (पु०) कृ+नन् । कर्ण्-फाडना । अच् । शब्द ग्रहणकरनेके लिये जो फेंकाजाताहै । कॄ+नन् । वा । श्रोत्रेन्द्रिय । कानकी इन्द्रिय । अंगदेशका राजा । कुन्तीका पुत्र । सूर्यका वेटा । तीन भुजावाला क्षेत्र । अरित्र । वेडीके चलानेकी लकडी । चप्पा.

कर्णकीटी, (स्त्री०) कर्णः खल्पः कीटः । अल्पार्थे ङीप् । छोटाकीडा । कनखजूरह.

कर्णगूथ, (न०) ६ त० कर्णमल । कानकी मैल.

कर्णजलूका, (स्त्री०) कर्णे जलूकेव । शतपदी । कनखजूरह । "कर्णजलौकस्".

कर्णजाह, (न०) कर्णस्य मूलं । कर्ण+जाह । कर्णमूल । कानकी जड.

कर्णधार, (पु०) कर्णं नौकाचालनदण्डं धारयति । धृ+णिच्+अण् । जो वेडी चलानेके दण्ड (चप्पा वा हाला) को पकडताहै । नाविक । मल्लाह.

कर्णपाली, (स्त्री०) कर्णं पालयति । पाल्+अण् । कानका वाला । एक प्रकारका कानका भूषण । वाली । वाला.

कर्णपूर, (पु०) कर्णं पूरयति । पूर+अण् । जो कानको भरताहै । कर्णाभरण । कानका भूषण । नीलोत्पल । नीलाकमल । शिरीषका वृक्ष । अशोक वृक्ष । इनके फूलोंसे स्त्रीके कान भूषित किये जातेहैं । "कर्णपूरक".

कर्णवर्जित, (त्रि०) ३ त० । वधिर । वहिरा । जिसको कान नहिं । सांप (पु०).

कर्णवेध, (पु०) विध्+घञ् । ६ त० । वह संस्कार जिसमें कानोंको वेधन करते हैं.

कर्णवेष्ट, (पु०) कर्णौ वेष्ट्येते अनेन । जिससे कान घेरे जाते हैं । कुण्डल । वाला । "ण्वुल्" कर्णवेष्टक । इसी अर्थमें । "भावे ल्युट्" कर्णावरण (कानका पडदा) (न०).

कर्णशष्कुली, (स्त्री०) कर्णस्य शष्कुलीव । कर्णगोलक । कानके बीचका आकाश । कानका छेक जो पतली झिल्लीसे ढका हुआ होता है, जिसपर वायुके लगनेसे शब्द सुनाई देताहै.

कर्णाट, (पु०) रामनाथसे लेके श्रीरंगतक देश । काव्यकी रीति (स्त्री०) ङीप्.

कर्णि, (पु०) कर्ण+इन् । शरभेद । तीर । कण्टकारिका ।

कर्णिका, (स्त्री०) कर्ण+ण्वुल् । करिहस्ताग्र । हाथीके सूंडकी नोक । हाथके बीचकी अंगुली (मध्यमा) । कानका भूषण । पद्मबीजकोष । लेखनी । कुट्टिनी । कमला । अग्निमन्थ वृक्ष । अजशृङ्गी वृक्ष.

कर्णिकार, (पु०) कर्णिकां ऋच्छति । ऋ+अण् । उप० (गणियारी) वृक्षभेद । कनेरका दरख्त । कनेरका फूल । छोटा सन्दल.

कर्णीरथ, (पु०) कर्णः सामीप्येन अस्ति अस्य कर्णी । जिसके पास कान रहे । स्कन्धः । तत्र ई शोभा यस्य । जिसकी शोभा कन्धेपर हो । स चासौ रथो रथतुल्यं वाहनं कर्म० । ऐसी रथके समान सवारी । कंधेपर उठाई जानेवाली सवारी । पालकी । डोली आदि.

कर्णीसुत, (पु०) कर्ण्याः कंसमातुः सुतः । कंसकी माका वेटा । कंसासुर । कंसराक्षस.

कर्णेजप, (पु०) कर्णे जपति । जप्+अच् । सप्तम्यां अलुक् । कानमें धीरेसे बोलता है । सूचक । चुगलखोर । पिशुन । खल । नीच । बुरीसलाह देनेवाला.

कर्त्, शिथिल होना-ढीला होना । चुरा० उभ० अक० सेट् । कर्तयति-ते । अचकर्तत्-त.

कर्तन, (न०) कृती-काटना । कृत+ल्युट् । छेदन । काटना । रूईके ढेरसे सूत निकालनेका व्यापार । कातना.

कर्तरी, (स्त्री०) कृत+घञ् । कर्त राति । रा+क-ङीष् । कृपाणी । वरछी । कटारी । केश आदिके काटनेका साधन । कैंची । अस्त्र.

कर्तव्य, (त्रि०) कृत+तव्य । काटनेके लायक । "पुत्रः सखा वा भ्राता वा पिता वा यदि वा गुरुः । रिपुस्थानेषु वर्तन्तः कर्तव्या भूतिमिच्छता".

कर्तृ, (त्रि०) कृ+तृच् । कारक । करनेहारा । व्याकरणमें कहागया दूसरे कारकोंका प्रेरक । क्रियाका आश्रय । स्वतन्त्र (खुदमुख्तार) । चतुरानन । ब्रह्मा (पु०).

कर्तृका, (स्त्री०) कृत+तृच्-इडभावः । संज्ञायां कन् । छोटी तरवार । चाकू.

कर्द, कुत्सित शब्द करना । बुरी आवाज करना । पेटकी आवाज करना । भ्वा० पर० अक० सेट् । कर्दति । अकर्दीत्.

कर्द, कर्द+अच् । कर्दम । कीचड.

कर्दम, कर्द+अम् । पङ्क । कीचड । पाप । ब्रह्मासे छायामें उत्पन्नहुआ प्रजापतिविशेष । मांस (न०) कीचडवाला (त्रि०) "कर्दमक" । एक प्रकारके धान.

कर्पट (पु० न०) कृ+कर्मणि विच् । कर्-पटः । पुराना कपडा । चीथडा । मैला कपडा । "करस्य पटः" शक० । गरमी आदि पोछनेके लिये हाथमें रक्खाहुआ कपडेका टुकडा । गेरीरंगका कपडा । रुमाल । उपर्णा.

कर्पर, (पु०) कृप्+अरन् । कपाल । खोपरी । कटाह । एक प्रकारका शस्त्र । अंजीरका वृक्ष । कडाही । सिरकी खोपरी.

कर्पराश, (पु०) कर्परस्य अंशः । कर्परका अंश । खापरा । शर्करा । रेता । कंकर.

कर्पास, (पु० न०) कृ+पास । वस्त्रयोनि । कपडेका कारण । कपास । कपा । वृक्षभेद । "कर्पासी".

कर्पूरमणि, (पु०) कर्पूरवर्णो मणिः । कपूरके रंगका मणि । एक रत्नविशेष । जवाहिर । "कर्पूराश्मा".

कर्मकर, (पु०) कर्म करोति । कृ+ट । भृत्य । नौकर । नोकरी करनेवाला (त्रि०).

कर्मकाण्ड, (पु०) कर्मणां समूहः । काण्डच् । कर्मसमूह । कर्मको प्रतिपादन करनेहारा वेदका भाग.

कर्मकार, (पु०) कर्म+कृ+अण् । लोहकारक । लोहार । कुह्मार । तनखाहके बिना काम करनेवाला । वेगार । बैलवाहक.

कर्मक्षेत्र, (न०) कर्मणां तद्विधानाय उचितं क्षेत्रम् । काम करनेका योग्य स्थान । भारतवर्ष । हिन्दुस्तान.

कर्मठ, (त्रि०) कर्मणि कुशलः । कर्मन्+ठ । क्रियाकुशल । काम करनेमें चालाक.

कर्मण्य, (त्रि०) कर्मणि साधुः । कर्मन्+यत् । काममें योग्य । काममें चतुर । कामके लायक । वेतन । तनखाह (अस्त्री०).

कर्मदेवता, (स्त्री०) कर्मणा यागादिना देवता । काम करके देवता होगया । यज्ञके द्वारा देवपनको प्राप्त हुआ । इस कल्पमें अश्वमेध आदि कर्मकर बडे पदको पाय जो देवताओंसे पूजे जातेहैं वे कर्मदेवता कहलाते हैं.

कर्मधारय, (पु०) व्याकरणमें कहागया अभेदान्वयसे समानविभक्तिक पदके साथ रचागया समासविशेष । विशेषण और विशेष्यका समास । जैसे "नीलोत्पलं."

कर्मन्, (न०) कृ+मनिन् । क्रिया व्याकरणमें कहागया कर्ताको इष्टतमरूप कारक । कर्ता जिसपर क्रियाका असर पहुंचाना चाहे.

कर्मफल, (न०) कर्मणः फलं । कामका फल । कर्मके पकनेसे उत्पन्नहुआ सुख दुःख आदि.

कर्मभू, (स्त्री०) कर्म कर्षणादि परिकर्म, पुण्यादि कर्म वा तस्य भूः । कृष्टभूमि । खेंचीगई जमीन । पुण्य आदिकर्मका स्थान । आर्यावर्त । भारतवर्ष । वेदमें कहेगये कर्म इसी वर्षमें कियेजातेहैं और स्थानमें नहिं.

कर्ममीमांसा, (स्त्री०) ६ त० । कर्मकाण्डप्रधान वेदके भागका विचारकरनेहारा जैमिनीसे रचागया ग्रन्थ.

कर्ममूल, (न०) कर्मणां मूलम् । कर्मोंकी जड । कुशनामी तृण (घांस) इसीसे सम्पूर्ण वैदिक आदि कर्म कियाजाता है.

कर्मरङ्ग, (पु० न०) कर्मणि भोजनादौ रङ्गो रतिर्यस्मात् । रञ्ज्+घञ् । जिससे भोजनमें रुचि वढे । (कामराङ्गा) जम्बीरभेद । इसके भोजनसे भोजनमें रुचि होतीहै.

कर्मविपाक, (पु०) विपच्यते । वि+पच्+कर्मणि घञ् । कर्मणो विपाकः । कर्मका पकना शुभाशुभकर्मका फलरूप सुखदुःख आदि । एक पुस्तक जिसमें जीवके भले वा बुरे काम मालूम होतेहैं.

कर्मव्यतिहार, (पु०) वि+अति+हृ+घञ् । कर्मणा व्यतिहारः ३ त० । आपसमें एकजातिका काम करना । कामका बदलना । जैसे आपसमें ताडन कर्तेहैं.

कर्मशूर, (पु०) कर्मणि शूरः काममें बहादुर । बडे यत्नसे प्रारम्भकियेगये कामको समाप्त करनेहारा । फलपर्यन्त कामकरनेहारा.

कर्मसङ्ग, (पु०) कर्मणि सङ्गः आसक्तिः । सञ्ज्+घञ् । यह मैं कर्ता हूं, इससे यह फल भोगूंगा इसप्रकारका अभिनिवेश । काममें लगना.

कर्मसंन्यासिन्, (पु०) जो वेदविहित कर्मोंको विधानसे त्याग कर्ताहै । सम्+नि+अस्+णिनि । सब कर्मको छोडनेहारा यति.

कर्मसाक्षिन्, (पु०) साक्षात् पश्यति । ६ त० । सूर्य । चन्द्र । यम । काल । पृथिवी । तेज । जल । वायु । आकाश । ये नौ शुभ और अशुभ कर्मके साक्षी (गवाह) हैं.

कर्मसिद्धि, (स्त्री०) ६ त० । इष्ट और अनिष्टके फलकी प्राप्ति.

कर्माध्यक्ष, (पु०) ७ त० । क्रियासाक्षी । कामके देखनेहारा । किये और न कियेको देखनेवाला.

कर्मार, (पु०) कर्म ऋच्छति । ऋ+अण् । कर्मकार । लोहार । तरखान आदि जाति । एकप्रकारका वृक्ष । वांसका भेद.

कर्मिष्ठ, (त्रि०) अतिशयेन कर्मी । इष्ठन् इनेर्लुक् । बहुत कामकरनेवाला । क्रियादक्ष जन । काममें चतुर । काममें लगाहुआ.

कर्मेन्द्रिय, (न०) कर्मणां क्रियाणां साधनभूतं इन्द्रियम् । क्रियाको सिद्ध करनेवाली इन्द्रिय । हाथ पाँव आदि, इनसे पकडना चलना आदि क्रिया सिद्ध होती है.

कर्व्, अहंकार करना । भ्वा० पर० अक० सेट् । कर्वति । अकर्वीत्.

कर्वट, (पुं०) कर्व्+अट । दोसौ गाँवमेंसे सुन्दर स्थान । जहां जाकर आसपासके देशके लोक इकट्ठे होकर खरीद फरोख्त कर्तेहैं । पुर । नगर । जिलहमेंसे वडा शहर.

कर्वुर, (पु०) कर्व्+उर । राक्षस । पाप । नानावर्ण । कईरंग । रंगवरंगी (त्रि०).

कर्व्, -जाना । भ्वा० पर० सक० सेट् । कर्वति । अकर्वीत्.

कर्वूर, (पु०) कर्व्+ऊर । राक्षस । शठी । स्वर्ण । सोना । हरिताल (न०).

कर्ष, (पु०) (न०) कृष्+अच् । कर्मणि+घञ् वा । सोलहमासेका माप । उतने मापका सोना.

कर्षक, (पु०) कृष्+ण्वुल् । कृषीवल । किसान । खेंचनेवाला.

कर्षण, (त्रि०) कृष्+कर्तरि अन । खेंचनेवाला । हानि पहुँचानेवाला । कृष्-भावे ल्युट् । खेंचना । झुकना । जैसा धनुष् । हल चलाना । लाचार होना.

कर्षफल, (पु०) कर्षं तन्मात्रं फलं अस्य । जिसका फल सोलहमासेका हो । विभीतक वृक्ष । बहेडा । आमलकी । (स्त्री०) टाप्.

कर्षिणी, (स्त्री०) कृष्+णिनि । क्षीरिणीवृक्ष । खलीन । कविका । घोडेकी लगामका लोहा.

कर्हि, (अव्य०) कस्मिन् काले । किम्+र्हिल् कादेशः । किससमय । कब.

कर्हिचित्, (अव्य०) कर्हि+चित् । किसीसमय.

कल्, गिनती करना । सक० आवाजकरना । अक० भ्वा० आत्म० सेट् । कलते । अकलिष्ट.

कल्, गति-जाना-गिनना । चुरा० उभ० सक० सेट् । कलयति-ते । अचीकलत्-त.

कल्, प्रेरण करना । चुरा० उभ० सक० सेट् । कालयति-ते । अचीकलत्-त.

कल, (पु०) कल्-शब्दकरना-घञ्-अवृद्धिः । मधुराव्यक्तशब्द । मीठी और धीमी आवाज । सालवृक्ष । अजीर्ण । वदह-जमी.

कलकण्ठ, (पु०) कलः कलान्वितः कण्ठोऽस्य । जिसके गलेमें मीठी आवाज हो । कोकिल । कोइल । हंस । पारावत । कबूतर । "स्त्रियां ङीप्" कलकण्ठी.

कलकल, (पु०) कलप्रकारः प्रकारे द्वित्वम् । कोलाहल । रौला । हौरा.

कलघोष, (पु०) कलो घोषो यस्य । जिसकी आवाज मीठी हो । कोइल.

कलङ्क, (पु०) कलयति क्विप् । कल् चासौ अङ्कश्चेति । चिह्न । निशान । अपवाद । तामाआदि धातुओंकी मल (कलत्तन) अपयश । वेइजती । दाग.

कलञ्ज, (पु०) केतिशब्दं लञ्जति भाषते । विषसे लिपटेहुए अस्त्रसे मारागया मृग (हरिण वा पशुविशेष) । पक्षी । ताम्रकूट । दसरुपयोंका माप.

कलत्र, (न०) गड्+त्रन् । गस्य कः डस्य लः । नितम्ब । चूतड । अपनी स्त्री । भार्या.

कलधौत, (न०) कलः मलः धौतः अस्य । जिसका मल धोयागया । सोना । चांदी । "कलधूतम्".

कलध्वनि, (पु०) ६ ब० । कोकिल । कोइल । कबूतर । मोर । मीठा और धीमा शब्द.

कलन, (पु०) कल्+ल्यु । वेतसवृक्ष । बैंतका वृक्ष । "भावे ल्युट्" चिह्न । दाग । एक महीनेका गर्भ । पडना । गिन्ना । "कलनात् सर्वभूतानाम्" इति स्मृतिः.

कलभ, (पु०) कल्+अभच् । पाँच वर्षका हाथीका बच्चा । धतूरेका पेड.

कलम, (पु०) कल्+अम । लेखनी । चोर । धान्यका भेद.

कलम्ब, (पु०) कड्+अम्बच् । डस्य लः । नालिका शाक । कलमीशाक । शर । तीर.

कलरव, (पु०) रु+अप्=रवः । कलो रवोऽस्य । मीठी आवाजवाला । कोइल । कबूतर । मीठा और धीमाशब्द.

कलल, (पु० न०) कल्+अलच् जरायु नामक गर्भके ढाकनेहारा चमडा.

कलविङ्क-ङ्ग, (पु०) फलं वङ्क(ङ्ग)ते । वकि (वगि) जाना । अच् पृषो० अतइलम् । चटक । चिडिया । पक्षी । श्वेतचामर । इन्द्रयव । इन्द्रजौं.

कलश, (पु०) कलं शब्दं शवति । शु+जाना+ड । घट । घडा । धागर । चौतीस सेरका माप.

कलह, (पु०) (न०) कलं हन्ति । हन्+ड । विवाद । झगडा । युद्ध । लडाई । असिकोष । तलवारका मियान.

कलहंस, (पु०) कलप्रधानो हंसः । मीठी आवाजवाला हंस । राजहंस । कादम्बहंस । राजाओंमें उत्तम । परमात्मा । तेरह अक्षरोंके पादवाला छन्दोभेद.

कला, (स्त्री०) कल्+अच् । चन्द्रमाके मण्डलका १६ वां भाग । दियेगये धनका लाभ होने योग्य अंश । सूद । समयका परिमाण । ज्योतिष्के अनुसार राशीके तीस भागका साठवां भाग । नौका । बेडी । कपट । विभूति । सामर्थ्य । संख्या । गिनती । मरीचिकी स्त्री । चौसठ प्रकारका गाना वजाना आदि.

कलाद, (पु०) कलां अंशं आदत्ते । आ+दा+क । अंशको लेताहै । स्वर्णकार । सुनार (वह भूषण बनानेके लिये दियेगये धनमेंसे अवश्य कोई न कोई अंश लेही लेताहै).

कलानिधि, (पु०) कला निधीयन्तेऽत्र । कला+नि+धा+कि । चन्द्रमा.

कलानुनादिन्, (पु०) कलं अनुनदति । णिनि । जो वार २ शब्द करताहै । भ्रमर । भौंरा । चटक । चिडिया.

कलाप, (पु०) कलां आप्नोति । कला+आप्+अण् । समूह । मोरकी पूंछ । अलंकार । मेखला । तर्कश । चांद । व्याकरणविशेष । एकगाँव.

कलापक, (पु०) कलाप+क । स्वार्थे कन् । कलापके अर्थमें । चार श्लोकका एक वाक्य.

कलापिन्, (पु०) कलापो बर्होऽस्यास्तीति । इनि । मयूर । मोर । मोरपंखके समान शाखावाला वट (बोड) । कल+आप्+णिनि । कोकिल । कोइल.

कलाभृत्, (पु०) कलां बिभर्ति । कला+भृ+क्विप् । चन्द्र । चांद.

कलावत्, (पु०) कला+अस्त्यर्थे मतुप् मस्य वः । चन्द्र । कलावाला (त्रि०).

कलि, (पु०) कल्+इन् । विभीतकवृक्ष । बहेडा । झगडा । लडाई । शूर बहादर । सबसे पिछला युग । कोरक । कली (स्त्री०).

कलिकारक, (पु०) कलिं करोति । कृ+ण्वुल् । नारद । झगडा करनेहारा (त्रि०) धूम्याट पक्षी (पु०).

कलिङ्ग, (पु०) कलिं गच्छति । गम्+खच्-मुम् । कुटज वृक्ष । करंजुएका वृक्ष । शिरीषवृक्ष । सरीहका वृक्ष । प्लक्षवृक्ष । जगन्नाथके पूर्वभागमें कृष्णाके दूसरे तीरतक देश.

कलित, (त्रि०) कल्+क्त । जानागया । पायाहुआ । फाडागया । पिसलगया । लियागया । कहागया । गिनागया । विचाराहुआ । बांधागया.

कलिन्द, (पु०) कलिं ददाति, यति वा खच्-मुम् च । एक पर्वत जहांसे यमुना नदी निकलीहै । विभीतक वृक्ष । सूर्य.

कलिन्दकन्या, (स्त्री०) ६ त० । यमुना । "कलिन्दजा", "कलिन्दोद्भवा".

कलिल, (त्रि०) कल्+इलच् । गहन । गाढा जंगल । मिलाहुआ.

कलुष, (पु० स्त्री०) कल्+उषच् । महिष । भैंसा । "लुष् हिंसाकरना, कस्य सुखस्य लुषः घातकः" । पाप (न०) पापी (त्रि०).

कलेवर, (न०) कले शुक्रे वरं श्रेष्ठं । वीर्यसे उत्पन्न होनेपर भी पवित्र है । "सप्तमीका अलुक् हुआ" । देह । शरीर । किस्म.

कल्क, (पु० न०) कल्+क । नेलम् । घी तेल आदिका शेष । पाखण्ड । विभीतक वृक्ष । विष्ठा । तुरस्कनामक गन्धद्रव्य । कानकी मैल । किट्ट । मैल । पाप । पापी (त्रि०) शठता । शरारत । कोई द्रव्य सिलापर पीसा गया, सूका वा जलसे मिलाहुआ हो । चूर्ण । ओषधिद्रव्य.

कल्कि, (पु०) कल्क+तत् करोति । णिच्+इन् । "सम्बल ग्राममें प्रधान महात्मा ब्राह्मण विष्णुयशके मन्दिरमें कल्कि प्रगट होगा" इस प्रकारके लक्षणवाला विष्णुका अवतार । सबसे पिछला अवतार.

कल्किन्, (पु०) कल्क+इनि । (मत्स्य, कूर्म, वराह, नरसिंह, वामन, परशुराम, रामचंद्र, कृष्ण, बुद्ध और कल्की ये दस अवतार हैं) दसवां अवतार.

कल्प, (पु०) कृप्+अच्-घञ् वा । यज्ञक्रियाओंका उपदेश करनेहारा शिक्षा, कल्प, व्याकरण आदिमेंसे एक वेदाङ्गभेद । बौधायनकृत अनुष्ठेय क्रमविधान । सूत्रस्वरूप कर्मपद्धतिग्रन्थ । ब्रह्माका दिन । प्रलय । विकल्प । कल्पवृक्ष । न्यायशास्त्र । सादृश्यअर्थमें कल्पप् प्रत्यय होता है । "पितृकल्पः", "गुरुकल्पः" गुरुके समान.

कल्पक, (पु०) कृप्+णिच्+ण्वुल् । नापित । नाई । काटनेवाला । कल्पना करनेहारा (त्रि०).

कल्पतरु, (पु०) कल्पते फलदानाय । अच् । कर्म० । जो फल देनेकेलिये पूरा है । कल्पवृक्ष.

कल्पन, (न०) कृ+भावे ल्युट् । रचना । काटना । अनुमितिभेद.

कल्पना, (स्त्री०) कृप्+णिच्+युच् । पलाने आदिसे हाथीका सिंगारना । अनुमितिभेद । रचना । उपाय.

कल्पान्त, (पु०) ७ व० । प्रलय । नाश.

कल्मष, (पु०) कर्म शुभकर्म स्यति । सो+क-पृषो० षत्वं रस्य लत्वं क । नरकभेद । पाप (न०) मैला । पापी (त्रि०).

कल्माष, (पु०) कलयति कल्+क्विप् । तं माषयति अभिभवति अण् माषः । उप० । राक्षस । चित्रवर्ण । रंगबरंगी । कालारंग । कालापीला रंग.

कल्माषकण्ठ, (पु०) कल्माषः कण्ठो यस्य । जिसका गला काला हो । शिवजी । वह आप तो श्वेत हैं, और विषयोगसे काला होनेसे वहां काला चिह्नपन पाया जाता है.

कल्य, (न०) कल्+यत् । कलासु साधुः । कला+यत् वा । प्रभात । सवेर । मधु । शहत । शराब । गतदिवस । बीत गया दिन । सज्जीभूत । तयार । रोगरहित । चतुर । सुखी जन (त्रि०).

कल्यजग्धि, (स्त्री०) अद्+क्तिन् । कल्ये प्रातः जग्धिः । प्रातःकालका भोजन । उपचारसे उस कालका खाना । सुबहकी खुराक.

कल्याण, (न०) कल्ये प्रातः अण्यते शब्द्यते । अण्+घञ् । जो प्रातःकाल पुकारा जाताहै । हेम । सुवर्ण । सोना । मङ्गल । खुशी । खुश (त्रि०).

कल्याणकृत, (त्रि०) कल्याणं शुभं शास्त्रविहितं करोति । कृ+क्विप् । शास्त्रके अनुसार काम करनेहारा.

कल्ल्,-कूजन-चिल्लाना । शब्दकरना । चुपरहना । भ्वा० आ० अक० सेट् । कल्लते । अकल्लिष्ट.

कल्ल, (त्रि०) कल्ल+अच् । बधिर । बहिरा । डोरा । सुननेकी इन्द्रियसे रहित.

कल्लोल, (पु०) कल्+ओलच् । कं जलं लोलं चपलं यस्माद्वा । महातरङ्ग । बडीलहर । हर्ष । खुशी । वैरी (त्रि०).

कव्, तारीफ करना । स्तुति करना । बयान करना । वर्णन करना । भ्वा०आ० सक० सेट् । कवते । अकविष्ट.

कवच, (पु०) कं वातं वञ्चयति । वञ्च्+क । गर्दभाण्ड वृक्ष । पटहवाद्य । जंगी बाजा । वर्म । जिरह । सन्नाेआ । भोजपत्रपर लिखकर धारण कियागया देवमन्त्र.

कवर, (पु० न०) कु+अरन् । अम्ल । खट्टा । तुरश । लवण । निमक । केशपाश । जुलफ । "कवरी"(स्त्री०)गुत्त.

कवर्ग, (पु०) कघटितो वर्गः सजातिसंघः । कआदि पांचों वर्ण.

कवल, (पु०) केन वलते । वल्+अच् । ग्रास । मत्स्यभेद । बेलमच्छी.

कवलित, (त्रि०) कवलं ग्रासं करोति । णिच्+क्त । ग्रास किया गया । खायागया । फैलाहुआ । व्याप्त.

कवाट, (न०) कं वातं वटति । वट्-वेष्टनकरना । घेरलेना । अण् । दर्वाजेको रोकनेवाला काठका टुकडा । किवाड । "कवाटी".

कवि, (पु०) कु+इ । शुक्र । वाल्मीकिमुनि । भास्कर । काव्यकर्ता । ब्रह्मा । पिछला अगला सब जाननेहारा । सूक्ष्म अर्थके देखनेहारा । पण्डित (त्रि०) । खलीन । लगाम कवी वा कवि (स्त्री०).

कविका, (स्त्री०) कु+इ । संज्ञायां कन् । खलीन । जो लोहेका वनाहुआ घोडेके मूंमे लगाम जोडनेके लिये दियाजाताहै.

कवोष्ण, (न०) ईषदुष्णं । कोः कवादेशः । ईषदुष्णस्पर्श । थोडा गर्मछूना.

कव्य, (न०) कु+यत् । पितरोंके उद्देशसे दियागया अन्नादि.

कश्,-शब्दकरना । भ्वा० अक० पर० सेट् । कशति । अकशीत्-अकाशीत्.

कशा, (स्त्री०) कश्+अच् । घोडे आदिको चलानेके लिये चोटका साधनपदार्थ । कोडा । चाबुक.

कशिपु, (पु०) कश्+कु । नि० । भक्त । अन्न । वस्त्र । कपडा । भोजनाच्छादन । शय्या । बिछौना । "सत्यां क्षितौ किं कशिपोः प्रयासैः" भागवतम्.

कशेरु, (पु० न०) कं शृणाति । शॄ-हिंसाकरना । उ एरङादेशः । पीठकी हड्डी । मेरुदण्ड । ब्रह्मदण्ड । जलमें उपजा मूलभेद.

कश्मल, (न०) कश्+कल-मुट्च । मूर्च्छा । मोह । पाप । मैल (स्त्री०).

कश्मीर, (पु०) कश्+ईरन्-मुट्च । कश्मीरनामी देश.

कश्मीरज, (पु०) कश्मीरे जायते । जन्+ड । कुङ्कुम । केसर । "कश्मीरजन्मा".

कश्यप, (पु०) कश्यं मद्यं पिवति । पा+क । मरीचिनामसे प्रसिद्ध ब्रह्माके पुत्रका बेटा । कश्य (मद्य) के पान करनेसे कश्यप प्रसिद्ध हुआ । मुनिभेद । मृगभेद । मत्स्यभेद.

कष्,-मारना । भ्वा० पर० सक० सेट् । कषति । अकषीत्-अकाषीत्.

कष, (न०) कष्+अच् । कष्टी । कसौटी । पत्थरका भेद.

कषण, (पु०) कष्+ल्यु । अपक्व । कच्चा । "भावे ल्युट्" घिसना । खुजली करना (न०).

कषाय, (पु०) कषति कण्ठं । कष+आय । स्योनाकवृक्ष । राग । क्रोध । अन्तःकरणका दोष । धववृक्ष । रसभेद । कसैला । लाल पीला मिलाहुआ रंग । क्वाथ । काढा (पु०).

कषायित, (त्रि०) कषायो रक्तपीतवर्णो जातोऽस्य इतच् । जिसका लाल पीला रंग होगयाहै । कसैलवाला.

कषायिन्, (त्रि०) कष्-अस्ति अर्थे इनि । कषायवाला । कसैला । लाल रंगसे रंगाहुआ । संसारमें मन लगानेवाला पुरुष आदि (पु०) कई एक वृक्षोंका नाम । खजूर आदि.

कष्ट, (न०) कष+क्त । पीडा । व्यथा । दर्द । पीडावाला । जंगल (त्रि०).

कस्,-तेजकरना-औरजाना । अदा० इदित् आत्म० सक० सेट् । कंस्ते । अकंसिष्ट.

कसनोत्पाटन, (पु०) कसनं कासरोगं उत्पाटयति । ल्यु । वासकवृक्ष । "वासकः कासनाशकः" यह वैद्यककी उक्ति है.

कसेरु, कस+ड एरुन्नागमः । शूकरका पियारा जलकन्दभेद । एक प्रकारका घास । जिसका मूल सूअर खातेहैं.

कस्तीर, (पु० न०) कं जलं तीरयति । अच् । नि० सुट् । रङ्ग । राङ् धातु.

कस्तूरिका, (स्त्री०) कस्+ऊरु-तुट् च । ङीप् । कस्तूरी । स्वार्थे क ह्रस्वे अत इत्वं । मृगमद । मृगनाभि.

कल्हार, (न०) के जले ह्लादते । ह्लाद्+अच् । पृषो० दस्य रः । चिट्टाकमल.

कांस्य, (न०) कंसेन निष्पादितं । कंस+ञ्य । एकप्रकारका वाजा । पानपात्र । पीनेका पात्र । ताम्वे और राङ्के मेलका वनाहुआ उपधातु । "स्वार्थे कन्" कांस्यक (वही अर्थ).

कांस्यकार, (पु०) कांस्य+कृ+अण् । उप० । कसेरा । जातिभेद.

काक, (पु०) कै-शब्दकरना । कन् तस्य नेत्वम् । अपने नामसे प्रसिद्ध पक्षी । कौआ । खञ्ज । लंगडा.

काकचिञ्चा, (स्त्री०) जिसके फलका सिरा कौएके रंगका हो । गुञ्जा । रत्ती । पृषो० "काकचिञ्चिः" "काकचिञ्ची" "काकचञ्चा" यही अर्थ.

काकच्छद, (पु०) काकस्य छदः पक्ष इव छदो यस्य । कौएके परके समान जिसका पर हो । खञ्जनखग । ममोला.

काकतालीय, (न०) काक (कौए) के गमनसमय अचानकही तालफलका गिरना । एक प्रकारका न्याय । अचानक होजानेवाली बात । अतर्कितसम्भव व्यापार । छ (ईय) प्रत्ययः.

काकतिन्दुक, (पु०) काकवर्णः तिन्दुकः । काकपीलुका । कुचला.

काकपक्ष, (पु०) काकस्य पक्ष इव । कौएके परके समान मस्तकके दोनों भागमें एक प्रकारकी केशरचना । वालकोंकी शिखाको काकपक्ष कहतेहैं । कांबोदिआँ । पटे.

काकपुष्ट, (पु०) काकेन पुष्टः । कौएसे पालागया । कोकिला । कोइल । खोइल । कौएके बिलसे कौएके बच्चेको दूरकर उसके स्थानमें अपने बच्चेको रखदेतीहै, और काकी अपने बच्चेकी बुद्धिसे उसे पालती है, यह प्रसिद्ध है.

काकभीरु, (पु०) काकात् भीरुः । पेचक । उल्लू.

काकली, (स्त्री०) कल्+इ । ईषत् कली । कादेशः वा ङीप् । सूक्ष्म मधुरशब्द । धीमी मीठी आवाज.

काकलीरव, (पु०) काकली मधुराव्यक्तो रवो यस्य । मीठे धीमे शब्दवाली । कोइल । कोकिल.

काकाक्षिगोलकन्याय, (पु०) जैसे कौएका एक नेत्र दोनों गोलकमें घूमजाताहै, वैसे जहां एकपदार्थका दोनोंसे मेल हो वह दृष्टान्त । उभयसम्बन्ध दृष्टान्त.

काकार, (त्रि०) कं=जलं आकिरति । जल खिलारनेवाला । पानी सींचनेवाला.

काकिणी, (स्त्री०) कक्-चञ्चल होना, तं अणति अण् पृषो० । पणका चौथा अंश वीस कौडी । एक दमडी । एकमास्सेका चौथा भाग । "काकिनी" यही अर्थ.

काकी, (स्त्री०) काक+ङीप् । कौएकी स्त्री । कौएका रंग होनेसे वायसीलता । एक प्रकारकी बेल । कौनी.

काकु, (स्त्री०) काक+उण् । शोक और भय आदिसे शब्दका बदलना । अलंकारमें प्रसिद्ध विरुद्ध अर्थकी कल्पना करनेहारा नञ्आदि शब्द । वक्रोक्ति.

काकुत्स्थ, (पु०) काकुत्स्थः सूर्यवंशीयः नृपभेदः । तस्यापत्यं अण् । सूर्यवंशी राजा । इक्ष्वाकु राजा । श्रीरामचन्द्र.

काकुद, (न०) काकुं ध्वनिभेदं ददाति । धत्ते । दा+क । ताळु । जिह्वा इन्द्रियका आश्रयस्थान । ताळुया.

काकेष्ट, (पु०) काकानां इष्टः । कौओंका पियारा । निम्ब । नीम । इसका फल कौओंको पियारा लगताहै.

काकोदर, (पु०) कुत्सितं अकति । अक्+अच् । कोः कादेशः । काकं ईषद् गतिमत् उदरं यस्य । जिसका पेट धीरे चलताहै । सर्प । सांप.

काकोल, (पु०) कक्-चञ्चलहोना-स्वार्थे णिच्-ओल । द्रोणकाक । पहाडीकौआ । सांप । एक प्रकारका सूअर । नरकभेद । विषभेद (पु० न०)। वायसी । कौनी । अश्वगंधा (स्त्री०).

काक्ष, (चाहना) भ्वा० उभ० इदित्-सक० सेट् । काङ्क्षति । काङ्क्षते । अकाङ्क्षीत् । अकाङ्क्षिष्ट.

काक्ष, (त्रि०) ईषत् कुत्सितं अक्षि यस्य कोः कादेशः । जिसकी आंख थोडीसी बुरी हो । बुरी आंखवाला जन । थोडासा आंखके कोनेमें देखना (न०).

काक्षीव, (पु०) ईषत् क्षीवति अस्मात् । क्षीव्+घञ् । कादेशः । जिससे थोडासा मस्त होजाताहै । शोभाञ्जनवृक्ष । सुहांजना.

काङ्क्षा, (स्त्री०) काक्षि+अ । इच्छा । चाह.

काङ्क्षा, (स्त्री०) कांक्ष+अ । इच्छा । चाह । अभिप्राय । इरादा । भूख.

काङ्क्षित, (त्रि०) कांक्ष्+क्त इष्ट । चाहा गया । आशा किया गया । (तं० न०) इच्छा.

काङ्क्षिन्, (त्रि०)-रति-(स्त्री०) काङ्क्ष+णिनि । किसी पदार्थकी इच्छा करनेवाला । खाहिशमंद.

काच, (पु०) कच्यतेऽनेन । कच्-बांधना-चमकना । घञ् । एक प्रकारकी मणि । रेत और एक प्रकारकी खारसे उत्पन्न पदार्थ । मोम । कच । शिका । खार । मट्टी.

काचक, (पु०) काच एव-स्वार्थे क आस । अस्तर । पत्थर । खार.

काचन, काचनकं-(न०) काच्+अन पार्सल वा गठडी बांधनेका कीता वा रस्सी.

काचनकिन्, (पु०) काचनक-इन् । हस्तलिखितग्रन्थ । हाथका लिखाहुआ.

काचलवण, (न०) काचस्य लवणम् । शोरा कालालूण.

काचित, (त्रि०) काचे शिक्ये चितं धृतं पृषो० । शिक्यधृतपदार्थ । छिकेपर रक्खी हुई वस्तु.

काचूक, (पु०) काच्+ऊक । पाचक । रसोइया । चकवा पक्षी.

काञ्चन, (पु०) काचि-चमकना+ल्यु । एकवृक्ष । चम्पक । चंवा । नागकेशर । उदुम्बर । धत्तूरा । सोना पद्मकी तिरी । काञ्चन आदि फूल । दीप्ति । चमक (न०).

काञ्चनक, (पु०) काञ्चनं इव कायति प्रकाशते । कै+क । जो सोनेके समान चमकताहै । पक्षिभेद । कोविदार वृक्ष । कचनालका दरख्त । हरिताल (न०).

काञ्चनदली, (स्त्री०) काञ्चनं इव दलं यस्याः । जिसके पत्ते सोनेकी नाईं हों । स्वर्णकदली सोनेकी कदली.

काञ्चनक्षीरी, (स्त्री०) काञ्चनं इव क्षीरं यस्याः । ङीष् । जिसका दूध सोनेकी नाईं हो । क्षीरिणीलता.

काञ्चनाल, (पु०) कञ्चनाय दीप्तौ अलति पर्याप्नोति अल्+अच् । कोविदारवृक्ष । कचनालके दरख्त.

काञ्चि-ञ्ची, (स्त्री०)। काचि-इन् वा ङीप् । स्त्रीकी कमरका भूषण । एकलडा हार । गुञ्जा । रत्ती । एकपुरी । तडागी.

काञ्च,-भ्वा० आ० कांचते । कांचित । चमकना । बांधना.

काजल, (न०) ईषत् (का) जलं । थोडासा जल अथवा कुत्सितं जलं । अशुद्ध (बुरा) जल.

काण, (पु०) कण-बन्दकरना । घञ् । काक । कौआ । एक आंखवाला (त्रि०) काणा.

काणेयः-रः, (पु०) काण+एय+रोका रतिका पुत्र । एक आंखवाली स्त्रीका बेटा.

काणेली, (स्त्री०) काण+एल+ई । व्यभिचारिणी स्त्री । दुष्टा नारी । न विवाही हुई स्त्री.

काणेलीमातः, (पु०) काणेली माता यस्य तत्संबुद्धौ । अविवाहिता स्त्रीका पुत्र । व्यभिचारिणीका बेटा.

काण्ड, (पु० न०) कण्-शब्दकरना । ड दीर्घः । स्तम्भ । थम्भा । तिनके आदिका गुच्छा । वृक्षका स्कंध । वाण । अवसर । मौका । प्रस्तर । पत्थर । नाडिओंका समूह । बहुतसे हिस्सोंवाला ग्रन्थका प्रकरण । अध्याय । निर्जन-स्थान । अकेली जगह । अखरोटका वृक्ष (पु०).

काण्डकटुक, (पु०) काण्डे स्कन्धेऽपि कटुकः तिक्तः । कारवेल्ल । करेला.

काण्डतिक्त, (पु०) काण्डे तिक्तः । भूनिम्ब । चिरायता.

काण्डपट, (पु०) काण्ड इव पटः । कनात । पटभेद । जिसे सिकोडनेपर काण्डरूपता होजातीहै.

काण्डपृष्ठ, (त्रि०) काण्डानि पृष्ठे । यस्य शस्त्राजीव । जो शस्त्रपर जीताहो । सिपाही । अपने कुलकी कुछभी पर्वाह न करके जो दूसरे कुलमें जाय इसी दुष्ट चरित्रसे वह ऐसा कहलाता है (पु०) । मुतवन्ना.

काण्डीर, (त्रि०) काण्डो वाणोऽस्यास्तीति । ईर । जिसका वाण हो । तीरन्दाज । वाणधारणकरनेहारा । अपामार्ग (न०) मजीठ । कारवेल (स्त्री०).

काण्डेक्षु, (पु०) काण्डेन स्कन्धेन इक्षुरिव । जो शाखामें गन्नेकीसी मालूम दे । तालमखाना । तृणभेद.

काण्व, (पु०) कण्वेन अधीतः अण् । कण्वसे पढागया । यजुर्वेदकी एक शाखाका भेद । "अपत्यार्थे अण्" कण्वका पुत्र (त्रि०).

कात्, (अव्य०) निन्दाको प्रकाश करनेवाला शब्द । प्रायः "कृ" के साथ कात्कृतः प्रयुक्त होताहै । एक प्रकारकी गाली वा तिरस्कारके अर्थमें आता है । "गुरुः सदसि कात्कृतः" । कातर्य न० कातरस्य भावः-कातर-य । अधीरपन । कायरपन.

कातर, (त्रि०) ईषत्तरति स्वं कार्यं कर्तुं शक्नोति । जो अपना काम थोडासा करसक्ताहै । अधीर । घबरायाहुआ । व्यसनाकुल । दुःखमें पडाहुआ । भीत । डराहुआ । विवश । बेबस । चञ्चल । "के जले आरति प्लवते नतु विशेषतो मज्जति" । जो पानीमें तैरताहै, बहुतसा नहिं डूबता । उडुप । पूल.

कातृण, (न०) कुत्सितं तृणं कादेशः । कुत्सित तृण । बुरा घास.

कात्यायन, (पु०) कत्यस्य अपत्यं फक् । कात्यका बेटा । एक मुनि (वह धर्मशास्त्रका बनानेवाला है) वररुचिनामी व्याकरणके वार्तिकका बनानेहारा.

कात्यायनी, (स्त्री०) कत्यस्य अपत्यं स्त्री० फन् । दुर्गा (वह कल्पान्तरमें कत्यकी सन्तान थी) । आधी बूढी । गेरुएकपडे पहिनेवाली विधवा (बेवा औरत).

कादम्ब, (पु०) कद्+णिच् अम्बच् । वालहंस । कलहंस । वाण । इक्षु । गन्ना । "कदम्बे भवः अण्" कादम्ब (यही अर्थ).

कादम्बरी, (स्त्री०) कुत्सितं मलिनं अम्बरं यस्य । कोः कदादेशः । कदम्बरो बलभद्रः तस्य प्रिया अण् । जिसका कपडा मैला हो अर्थात् बलभद्र (मद्यपानकरनेसे) उसकी पियारी । वलभद्रको पियारी लगनेवाली मदिरा । "कादम्बं रसं राति रा+क-ङीष्" । कोकिला । कोइल । सरस्वती । सारिका । मैना । शराब.

कादम्बिनी, (स्त्री०) कादम्वाः कलहंसा बलाका वा अनुधावकत्वेन सन्ति अस्याः इनि । जिसके पीछे कलहंस वा बलाका भागतेहैं । मेघमाला । वादलोंकी कतार.

कादाचित्क, (त्रि०) कदाचिद् भवः । ठञ् । कभी २ होनेवाला.

काद्रवेय, (पु०) कद्र्वाः अपत्यं ढक् । कद्रूकी सन्तान । देवयोनिभेद । नागविशेष । सर्प । सांप.

कानक, (त्रि०) कनक+अण् । सौवर्ण । सोनेका बना हुआ । कं-न० । जयपाल वा जप्पोलोहेका बीज.

कानन, (न०) कन्-चमकना । ल्युट्-युच् वा । बन । घर । ब्रह्माका मुख.

काननाग्नि, (पु०) ६ त० । शमीवृक्ष । जंडीका दरख्त । (इससे उत्पन्न हुई अग्निसे वनका दाह होताहै).

कानिष्ठिनेयः-यी, (पु० स्त्री०) कनिष्ठा अपत्यार्थे ठक्-इनङ् च । सबसे छोटी लडकीका बेटा सन्तान वा बेटी.

कानीन, (पु०) कन्याया अनूढाया अपत्यं अण् कनीनादेशश्च । विना विवाहीकी सन्तान । पुत्रभेद । जैसे व्यास । कर्ण.

कान्त, (पु०) कन्+क्त । कम्+क्त । पति । लोहा । सूर्यकान्तमणि । चन्द्रकान्तमणि । वसन्त । हिज्जलवृक्ष । वासुदेव । केसर । लोहविशेष (न०) । मनोहर । शोभन । अभीष्ट । बहुत पियारा (त्रि०) नारी । प्रियंगुवृक्ष (स्त्री०).

कान्तलौह, (पु०) कान्तो लौहो यस्य । जिसका लोहा अच्छा हो । अयस्कान्त । चुम्बक पत्थर । लौहसार.

कान्तार, (पु०) कस्य जलस्य सुखस्य अन्तस्तं कान्तं मनोहरं वा ऋच्छति । ऋ+अण् । कोविदारवृक्ष । कचनारका दरख्त । इक्षुभेद । गन्नेका भेद । उपद्रव । जंगल । पद्मभेद । बडाबन । कठिन मार्ग । गर्त । खाल । टोआ.

कान्ति, (स्त्री०) कम्+क्तिन् । शोभा । दीप्ति । चमक । अभिलाष । चाह.

कान्तिदा, (स्त्री०) कान्ति+दा+क । सोमराजी लता । दीप्तिदेनेवाला (त्रि०).

कान्तिमत्, (त्रि०) कान्ति-अस्ति अर्थे मतुप् । कान्तिवाला । प्यारा । सुन्दर । चमकदार.

कान्दव, (न०) कन्दौ भर्जनपात्रे संस्कृतं अण् । जिसे कडाईमें पकायागयाहै । मिठाई । पक्वान्न । भक्ष्यभेद.

कान्दविक, (त्रि०) कान्दवं पण्यं अस्य । ठक् । मिठाई जिसका सौदा हो । पूडे बनानेवाला । मिठाई बनानेवाला हलवाई.

कान्दिशीक, (त्रि०) कां दिशं यामि इत्याह । ठक् । पृषो० । कहां चलाजाऊं ऐसा कहनेहारा । डरसे भागाहुआ.

कान्यकुब्ज, (न०) कन्याः कुब्जा यत्र । कन्याकुब्ज+स्वार्थे ण् । पृषो० । जहां वायुने एकसौ कन्याको कुबडी करदिया । देशभेद । कन्नौज । विप्रभेद । कन्नौजिआ.

कापटिक, (त्रि०) कपटेन चरति । ठक् । कपटसे व्यवहार करनेहारा शठ । दूसरेके मर्मको जाननेहारा । छात्रभेद । एकतरहका विद्यार्थी (पु०).

कापथ, (पु०) कुत्सितः पन्थाः अच् समा० कादेशः । निन्द्य वर्त्म । बुरा रास्ता.

कापालिक, (पु०) कपालेन मस्तककर्परेण व्यवहरति भोजनपानादिकं करोति । ठक् । जो माथेकी खोपडीसे खानेपीनेका व्यवहार कर्ता है । अपने नामसे प्रसिद्ध वर्ण । कुलाचारिभेद । वामाचारी । एक प्रकारका योगी.

कापिल, (पु०) कपिलेन प्रोक्तं अधीतेऽण् । जो कपिलसे कहेगये शास्त्रको पढताहै । सांख्यशास्त्रको जाननेहारा । पीला रंग । पीले रंगवाला (त्रि०).

कापिश, (न०) कपिशवर्णोऽस्त्यस्य । अण् । मद्यभेद । एक प्रकारकी शराब.

कापुरुष, (पु०) कुत्सितः पुरुषः । कोः कादेशः । निन्दित पुरुष । बुराआदमी.

कापोत, (न०) कपोतानां समूहः अण् । कबूतरोंका समूह । कपोतस्येदं "अण्" । कबूतरका । सौवीराञ्जन । सुरमा । कबुतरजैसा रंग.

काफलः, (पु०) कुत्सितं फलं=बीजं । बुरा फल । बुरा बीज । खट्टा फल.

कामवृत्तिः, (त्रि०) कामेन=स्वेच्छया वृत्तिः=वर्तनं यस्य (ब० स०) । अपनी इच्छासे विचरनेवाला स्वेच्छाचारी.

काम, (न०) कम्+णिच्+अण् । शुक्र । वीर्य । "कम्+घञ्" पियारी वस्तुकी अभिलाषा । "पुरुषको जो विषयकी अपेक्षा होती है उसे काम कहते हैं" शहवतका देवता । कामदेव । (पु०).

कामकला, (स्त्री०) कामस्य कला प्रिया । कामदेवकी पियारी । कलाओंकी कारण कामदेवकी पत्नी । रति । कामप्रिया.

कामकार, (त्रि०) कामं काम्यं करोति अण् । जो इच्छाको कर्ताहै । अपनी इच्छासे विचरनेहारा । कामतः प्रवृत्त । आजाद.

कामकेलि, (पु०) कामे रतौ केलिर्यस्य । कामक्रीड करनेहारा । जार । सुरतक्रिया । यार.

कामचार, (पु०) कामेन स्वेच्छया चरति । चर्+घञ् । चारः । अपनी इच्छासे कर्ता है । यथेष्टाचरणशील । जो चाहता है सो कर्ता है.

कामद, (त्रि०) कामान् ददाति । दा+क । इच्छाओंको देनेहारा । अभीष्टदायक । कामना पूरी करनेहारा वनभेद.

कामदुघा, (स्त्री०) कामं दोग्धि । दुह्+क घादेशः । कामनाओंको देनेहारी । अभीष्टको सम्पादन करनेहारी । सुरभी गौ । कामधेनु । स्वर्गकी गौ.

कामदुह्, (स्त्री०) कामं दोग्धि । दुह्+क्विप् । इच्छाके अनुसार देनेहारी । कामधेनु । स्वर्गकी गाय.

कामध्वंसिन्, (पु०) कामं ध्वंसयति । ध्वंस्+णिच् । णिनि । कामको नाश करनेहारा । शिवजी महाराज.

कामपाल, (पु०) कामान् पालयति । पाल् । रक्षाकरना । अण् । कामनाओंको बचानेहारा । बलराम । श्रीकृष्णजीका बडा भाई । बलभद्र.

कामम्, (अव्य०) अनुमति । राय । प्रकाम । खूब । पर्याप्त । पूरा । चाहे । स्वीकार । हां.

कामरूप, (पु०) अपने नामसे प्रसिद्ध देश । "कामरूपं यस्य" इच्छा जिसका रूप है । अपनी इच्छासे रूप बनानेहारा । सुन्दररूपवाला (त्रि०) । "इनि" विद्याधर । मनोहर रूपवाला । अपनी इच्छासे रूप धारनेवाला (त्रि०)

कामल, (पु०) कामेन लसति । लस्+ड । वसन्तकाल । "मत्वर्थे लच्" कामयुक्त । कामी । शहवती (त्रि०) । "कामं कान्ति लुनाति लू+ड ।" रोगभेद । एकप्रकारकी बीमारी । (पु० स्त्री०)

कामवल्लभ, (पु०) ६ त० । कामका पियारा । कामका वृक्ष । (इसकी कली कामकी पियारी है).

कामशास्त्र, (न०) कामप्रतिपादकं शास्त्रम् । कामके स्वरूपको वर्णन करनेवाला शास्त्र.

कामसख, (पु०) ६ त० । कामस्य सखा+टच् समा० । कामका मित्र । वसन्तकाल । कामको भडकानेहारा चन्द्रमा.

कामसुत, (पु०) ६ त० । कामका बेटा । अनिरुद्ध.

कामसूत्र, (न०) कामस्य तत्तन्त्रस्य सूत्रम् । कामशास्त्रका सूत्र । कामशास्त्रको प्रतिपादन करनेहारा वात्स्यायन मुनिसे रचागया ग्रन्थ.

कामात्मन्, (त्रि०) कामे फलतृष्णायां आत्मा अन्तः-करणं यस्य । जिसका मन फलकी चाहमें लगा हो । फल-की कामना करनेहारा । जिसका चित्त कामसे व्याकुल हो । कामही जिसका स्वरूप होगया है । अर्थात् सैंकडों तरहकी विषयवासनाओंमें डूब रहाहै.

कामान्ध, (पु०) कामं यथेष्टं अन्धयति स्वरेण विरहिणं । पुरा० अन्ध्+अच् । जो अपनी आवाजसे दूसरेको पूरा २ अंधा करदे । कोकिल । कोइल । कामेन अन्धः ३ त० । विचारहीन (त्रि०).

कामावशा(सा)यिता, (स्त्री०) कामान् अवशेते । अव+शीङ्+णिनि तस्य भावः तल् । अणिमादि आठ प्रकार-के ऐश्वर्यमें सत्यसंकल्पता (जो इच्छा करे सो पूरा हो जाय) रूप ऐश्वर्य । "कामान् अवसातुं निश्चेतुं शीलं यस्य । स्यतेः णिनि । ततस्तल् "कामावसायिता" यह भी इसी अर्थमें है.

कामिन्, (पु०) काम+णिनि । चकवा । कबूतर । चि-डिया । सारसपक्षी (इन सवको काम अधिक होनेसे कामीपना है) । कामी (त्रि०) कामिनी (स्त्री०) डरपोक औरत । मदिरा.

कामुक, (पु०) कम्+णिङ्+उक । अशोक वृक्ष । अतिमुक्तक । माधवीलता । चटक । चिडिआ । जिसे बहुतही संभोग (मैथुन) की इच्छा रहे । (त्रि०) "स्त्रियां" कामुकी । जब "चाहनेवाली" ऐसा अर्थ करें तो "कामुका".

काम्पिल्य, (पु०) कम्पिलाया नद्या अदूरभवो देशः (ण्य) । कम्पिला नदीके पासका देश । उत्तरकी ओर एक देश । वहां उत्पन्न होनेवाली गुण्डारोचना नामी लता.

काम्बलः, (पु०) कम्बल-अहन् । ऊनी कपडे, वा त्वैंकटसे आच्छादित रथ (गाडी.)

काम्बविक, (पु०) कम्बुः शङ्खः शिल्पं अस्य । शङ्खका काम करनेवाला । शङ्खकार.

काम्बोज, (पु०) कम्वोजो देशोऽभिजनो निवासो वा यस्य अण् । कम्बोजदेशका वासी । कम्वोज देशमें उपजा घोडा । पुन्नागवृक्ष । म्लेच्छका भेद । धवलखदिर । माषपर्णी । हयपुच्छी (स्त्री०).

काम्य, (न०) कम्+णिङ्+यत् । अभिलषणीयकार्य । चहागया काम । कुछ न कुछ फलकी कामनासे किया-गया यज्ञ, दान, व्रत, पाठ और तपस्यादि । वह काम कि जिसके करनेमें बडा क्लेश हो । सुन्दर (त्रि०) चाह-नेके लायक.

काम्ल, (त्रि०) ईषत् अम्लं, थोडासा खट्टेरसवाला पदार्थ.

काय, (पु०) चीयतेऽन्नादिभिः चिञ्+घञ् । नि० । जो अन्नादिसे बढताहै । देह । शरीर । कः प्रजापतिः ब्रह्मा वा देवताऽस्य अण् । जिसका देवता प्रजापति वा ब्रह्मा है । प्राजापत्यविवाह । ब्राह्मतीर्थ । लक्ष्य । निशान । स्वभाव । मूलधन । ब्रह्मा.

कायवत्, (त्रि०) काय-अस्ति अर्थे मतुप् । कायवाला । शरीरवाला.

कायस्थ, (पु०) काये तिष्ठति । काय+स्था+क । शरीरमें स्थित होताहै । परमात्मा । लिपिका काम करनेहारा । वाबू । कएत । जातिभेद । "कायस्तिष्ठति अनया" स्था+क+टाप् । जिसके द्वारा शरीर रह सक्ताहै । हरीतकी । हरीड । आमलकी (स्त्री०).

कायिक, (त्रि०) कायेन निर्वात्यं । ठक् । जो शरीरसे कियाजाय । शारीरिक । दैहिक.

कार, (पु०) कॄ-मारना । कृ-करना । ना भावे घञ् । वध्य । मारनेलायक । निश्चय । यत्न । क्रिया । काम । हिमालय । यति । मारना । बलि । बरफसे आच्छादित पर्वत.

कारक, (त्रि०) कृ+ण्वुल् । क्रियाजनक । करनेवाला । जिसका साक्षात् क्रियासे सम्बन्ध हो ऐसे व्याकरणमें कर्ता कर्म आदि छ (न०).

कारकदीपक, (न०) अलङ्कारशास्त्रमें अर्थालङ्कारविशेष । सा० १० प०.

कारण, (न०) कृ+णिच्+करणे ल्युट् । हेतु । जिसके विना कार्यकी उत्पत्ति नहिं हो सक्ती । जैसे दण्डके विना घटकी उत्पत्ति नहिं होती इस्से दण्ड घटका कारण है । साधन । इन्द्रिय । देह । "कृल्" मारना । स्वार्थे णिच् । भावे ल्युट् । वध । मारना । "क्रियते इति कर्मणि" वाजेका भेद । "कॄल्-मारना । णिच्+युच्+टाप्" कारणा । पीडा (स्त्री०).

कारणमाला, (स्त्री०) अर्थालङ्कारभेद । साहि० १० परि०.

कारणोत्तर, (न०) कारणेन उत्तरम् । मतलब दिलमें रखकर उत्तर देना । व्यवहारोंमें वादी (मुद्दई) से उप-न्यास कीगई बातको सत्यरूपसे मानकर उसके विरुद्ध कारण वताना । जैसे "इसने मेरा सौरुपया देनाहै" ऐसा सवाल करनेपर ये कहे कि "हां ठीक लिया था परन्तु मैं तो उतारचूकाहूं" और "ये मेरी पृथिवीका भोग कर रहाहै" ऐसा सवाल किया जानेपर ये कहे कि "हां इसीकी भूमि है किंतु इसने तो मुझे दान करदीथी अथवा मैं तो इस्से मोलपर लेचुकाहूं" इसप्रकार उत्तर कहना । सच्ची प्रतिज्ञा करके उसके विरुद्ध उत्तर देना.

कारण्डव, (पु०) रम्+ड । रण्डः । ईषत् रण्डः कारण्डः तं वाति । वा कः । हंसभेद । एकप्रकारका हंस.

कारयितृ, कारयिष्णु -(त्रि०) कृ+णिच्+तृच् वा इष्णुच् । करनेवाला । सिद्ध करानेवाला.

कारव, (पु०) केति रवोऽस्य । जिसकी आवाज कक हो । काक । कौआ.

कारस्कर, (पु०) कारं करोति । कृ+अप् । नि० सुट् । किम्पालवृक्ष.

कारा, (स्त्री०) कॄ+अङ् । नि० दीर्घः । बंधनागार । जेलखाना । कैदखाना । दूती । बीणके नीचे काठका पात्र (तुम्बा) । सुवर्णकारिका । सुनारिन.

कारागार, (न०) कारैव आगारं । बंधनालय । जेलखाना.

कारापथ, (पु०) लक्ष्मणके पुत्र अङ्गद और चन्द्रकेतुका राज्यविषय । देशभेद.

कारि, (स्त्री०) कृ+इञ् । क्रिया । काम । शिल्पी । कारीगर (त्रि०).

कारिका, (स्त्री०) कृ+ण्वुल् । क्रिया । काम । "कर्तरि ण्वुल्" नटकी स्त्री । ऐसा श्लोक कि जिसमें अक्षर थोडे होनेपरभी अर्थ बहुत हो । शिल्प । कारीगरी । "कृ+भावे ल्युट्" । यातना । पीडा । दर्द । कृ+वुण् । नाई आदिका काम । वृद्धिभेद । सूद.

कारित, (त्रि०) कृ+णिच्+क्त । करवाया गया.

कारिन्, (त्रि०) कृ+णिनि । वनानेवाला । करनेवाला.

कारीरी, (स्त्री०) कं जलं ऋच्छति । क+ऋ+विच् । कारो मेघः, तं ईरयतीति । ईर्+अण् । वृष्टिको सम्पादन करनेहारी यज्ञक्रिया । पानी वर्सानेवाली यज्ञकी क्रिया.

कारीषं, (न०) करीषाणां समूहः अण् । सूके हुए गोहे (गोवर) का समूह.

कारु, (त्रि०) कृ+उक । शिल्पी । कारीगर । कारक । करनेवाला । विश्वकर्मा (पु०).

कारुज, (पु०) कं जलं आरुजति । कुत्सितं रुजति वा रुज+क । करभ । हाथीका बच्चा । वल्मी । वर्मी । नागकेशर । गैरिक (गेरी) । शरीरमें आपही उपजा तिल आदि चिह्न.

कारुणिक, (त्रि०) करुणा शीलं अस्य ठक् । दया । जिसका स्वभावही दयालु हो । दयाशील । दयाकरनेवाला.

कारुण्य, (न०) करुणस्य भावः । करुणैव वा घञ् । दया । मेहर्वानी.

कार्तवीर्यः (पु०) कृतवीर्यस्य अपत्यं पुमान्-कृतवीर्य अण् । हैहयोंका राजा कृतवीर्य जो माहिष्मती नगरीमें शासन करताथा.

कार्तस्वर, (न०) कृतस्वरे आकरभेदे भवः । कृतस्वर नाम कानमें होनेवाला । "कृताः पठिताः स्वरा येन तस्मै वैदिकाय ब्राह्मणाय वा इदं वा अण्" । जो वस्तु वेदजाननेहारे ब्राह्मणके लिये हो, स्वर्ण । सोना । धतूरा । काञ्चनवृक्ष.

कार्तिक, (पु०) कृत्तिकायां जातः अण् । कृत्तिकामें उपजा । स्कन्द । स्वामिकार्तिक । कृत्तिकानक्षत्रेण युक्ता पौर्णमासी कार्तिकी सा यत्र मासे ठक् । कृत्तिका नक्षत्रवाली पूर्णिमा (कार्तिकी) जिस मासमें हो । कत्तकका महीना । कत्तककी पूनो । शरत् ऋतुका दूसरा महीना.

कार्तिकेय, (पु०) कृत्तिकानां अपत्यं तत्पालितत्वात् ढक् । कृत्तिकाओंकी सन्तान (उनके पालनकरनेसे) । स्कन्द । स्वामिकार्तिक । शिवपुत्र.

कार्तिकोत्सव, (पु०) ७ त० । कार्तिकके शुक्लपक्षकी प्रतिपदाके दिन करनेयोग्य दीपोत्सव । दीवोंके चमकानेका मेला.

कार्त्स्न्य, (न०) कृत्स्नस्य भावः ष्यञ् । सारेका होना । सारासार । साकल्य । सामग्र्य । पूरा २.

कार्दमः, (पु०)-मी (स्त्री०), कार्दम (मि) क (न०) । की (स्त्री०) कर्दम+अण्-ठक् वा । कीचडवाला । पंकिल । कीचडसे ढका हुआ.

कार्पटः, (पु०) कर्पट-अण् । प्रार्थना करनेवाला । नालिश करनेवाला । गेरुए कपडे पहिननेवाला.

कार्पटिक, (पु०) कर्पटेन काषायवस्त्रेण चरति ठक् । गेरुये कपडोंसे विचरताहै । तीर्थयात्राके लिये तयार हुआ । तीर्थसेवा.

कार्पण्य, (न०) कृपणस्य भावः ष्यञ् । सूमपन । उचितव्यय (खर्च) को उकरके धन इकट्ठा करनेकी इच्छा करना । दीनता.

कार्पास, (पु०) कार्पास्याः फलं अण् तस्य लुक् तस्य विकारे वा अण् । तूल । रुई । कार्पासीफल । उस्से उत्पन्न हुआ कपडा आदि । कर्पास । कपा.

कार्पासी, (स्त्री०) कृ+पास्+स्वार्थेऽण् । वृक्षविशेष । कपास । कपा.

कार्म, (त्रि०) कर्मन्+ण । परिश्रमी । मेहनती.

कार्मण, (त्रि०) कर्मणि कुशलः । अण् । क्रियामें चतुर । काममें होशियार । योगविद्या । जादू वा यन्त्र, मन्त्रचलाना.

कार्मिक, -(त्रि०)-की (स्त्री०) कर्मन्-ठक् । घडा हुआ । बनाया गया । रंगीले सूतसे मिलाहुआ कपडा.

कार्मुक, (पु०) कर्मणे प्रभवति उकञ् । वंश । बांस । श्वेतखदिर । महानिम्ब । धनुष् (कमान) (न०) । काममें चतुर कामकरसकनेवाला (त्रि०).

कार्य, (न०) कृ+ण्यत् । प्रयोजन । हेतु । कारण । व्याकरणमें कहेगये आदेश प्रत्यय आगम । न्यायमतमें प्रागभावके प्रतियोगी (विरोधी) घट पट आदि विकाररूप कार्य । विनश्वर । अवयववाला । देह आदि । विवाद (झगडा) । पुण्य और अपुण्यरूप अपूर्व कर्तव्य । करनेलायक (त्रि०).

कार्श्य, (न०) कृशस्य भावः ष्यञ् । कृशका होना । कमजोरी । निर्बलता । सालवृक्ष । लकुचवृक्ष (पु०) । स्वार्थे ष्यञ्.

कार्षापण, (पु० न०) कर्षस्यायं अण् । आ+पण्+घञ् । कार्षस्य आपणः । सोलह पण । सोलह पैसा । पण । पैसा । कृषक (पु०) सोना । रुपया.

कार्षिक, (पु०) कर्षस्यायं ठञ् । पणका चौथा भाग । एकरुपयेका माप । एक तोलाभर.

कार्ष्ण, (त्रि०) –र्ष्णी (स्त्री०) कृष्ण–अण् कृष्णसम्बन्धी । कृष्णवाला । व्यासवाला । काले हरिणवाला । काला.

कार्ष्णिः, (पु०) कृष्णस्य अपत्यं इञ् । कृष्णकी सन्तान । कामदेवका एक नाम है.

काल, (पु०) कुत्सितं अलति । अल्+अच् कोः कादेशः । काला रंग । काले रंगवाला (त्रि०) लोहा । कक्कोलक (न०) कालयति सर्वं (चुरा०) कल्+अच् । यम । महाकाल । शिवजी । शनैश्चर । कोइल । रक्तचित्रक । कासमर्द । क्षण, घडी आदि समय (पु०) । ये सम्पूर्ण कार्योंमें निमित्तकारण हैं । वह सूर्यकी क्रियासे पहिचाना जाता है.

कालकण्ठ, (पु०) कालः कण्ठो यस्य । जिसका गला काला है । नीलकण्ठ । शिवजी । मोर । खञ्जन । दात्यूह । कलविङ्क । चिडिया.

कालकूट, (न०) कालं अपि कूटयति, दहति । कूट्+अण् । जो कालको भी जला देता है । विष । जहर । मृत्युका मानो समूह है । देवता और दैत्योंकी लडाईमें देवताओंसे मारेगये पृथुमाली दैत्यके लोहूसे उत्पन्नहुआ अश्वत्थसन्निभ (बोडके वृक्ष समान) वृक्षकी गोंद (निर्यासको मुनिओंने कालकूट कहाहै । एक किसमका जहर.

कालधर्म, (पु०) ६ त० । मृत्यु । मौत । समयस्वभाव । वक्तकी खसलत.

कालनियोग, (पु०) कालेन कृतो नियोगः कालस्य वा नियोगः । नि+युज्+घञ् । देवाज्ञा । ईश्वरका हुक्म । कालसे कियागया नियम.

कालनेमि, (पु०) राक्षसका भेद । हिरण्यकशिपुका पुत्र । दैत्य.

कालपर्ण, (पु०) कालं कृष्णं पर्णं अस्य । जिसका पत्ता काला हो । तगरवृक्ष.

कालपुच्छ, (पु०) कालः पुच्छोऽस्य । जिसकी पूछ काली हो । मृगविशेष । बारह सिंह.

कालपृष्ठ, (पु०) कालं पृष्ठं अस्य । जिसकी पीठ काली है । मृगभेद । कङ्क पक्षी । चाप । धनुष् । कालो यम इव पृष्ठं अस्य । जिसकी पीठ यमके समान हो । कर्णका धनुष्.

कालमूल, (पु०) कालं मूलं अस्य । रक्तचित्रकवृक्ष.

कालरात्रि, (स्त्री०) कालस्य रात्रिः नाशिका । कालको नाश करनेहारी । सम्पूर्ण जीवोंका नाश करनेवाली मृत्युदेवी । यमकी बहिन । कल्पान्तरात्रि । जिसे दीपावली कहते हैं । उसेही कालरात्रि कहते हैं । कार्तिककी अमावास्याकी रात्रिका समय । दीवाली.

काललौह, (न०) कर्म० । कृष्णायस । कालालोहा.

कालशाक, (न०) कर्म० । श्राद्धीय शाकभेद । श्राद्धमें काम आनेवाला साग.

कालसर्प, (पु०) कृष्णसर्प । काला सांप । बडी विषवाला सांप । (केउटा सांप).

कालसूत्र, (न०) कालस्य यमस्य सूत्रं इव । कुलालचक्र । सूत्रच्छेदनरूप नरकभेद । इक्कीस नरकोंमें एक.

कालस्कन्ध, (पु०) कालः स्कन्धो यस्य । जिसकी शाखा काली हो । तमालवृक्ष । तिन्दुकवृक्ष । उदुम्बर । जीरकवृक्ष.

काला, (स्त्री०) काल+अर्शआद्यच् । कृष्णत्रिवृति । काली तिरवी । अश्वगन्धा । मञ्जिष्ठा । मजीठ । कृष्णजीरक । काला जीरा । नीलिका । नील.

कालागुरु, (न०) प्राग्ज्योतिष देशमें उपजा काला अगुरुचंदन.

कालाग्नि, (पु०) कालकारः मृत्युकारी अग्निः । मृत्युको देनेहारी आग । प्रलयकी आग । कालानल इसी अर्थमें.

कालिक, (पु०) काले वर्षाकाले चरति । ठक् । जो वर्षाके समय विचरता है । बकखग । बगला पक्षी । " कालं कृष्णवर्णं अनुसरति " ठक् । कृष्णचन्दन । कालागुरु । "प्रकृष्टः दीर्घः कालोऽस्य प्रकृष्टे ठञ्" वैर । "कालेन निर्वृत्ते कालस्येदं वा ठक्" । कालमें होनेवाला । कालसम्बन्धी (त्रि०) " कालो वर्णोस्त्यस्याः ठन् " । देवीभेद । वृश्चिकपत्रवृक्ष । नया वादल । पटोलकी शाखा । काकी । कौवी । गिदडी । हरीतकी । हरीड (स्त्री०) । काला संदल । वक्तकी चीज.

कालिङ्ग, (पु०) कुत्सितं लिङ्गं अस्य । हस्ती । हाथी । सर्प । सांप । लौहभेद । कलिङ्गानां राजा अण् । कलिङ्गदेशका पति । कलिङ्गदेशका राजा । राजकर्कटी (स्त्री०).

कालिन्दी, (स्त्री०) कलिन्दाद्रौ भवा अण् । कलिन्द पर्वतकी । यमुनानदी । जमना.

कालिन्दीभेदन, (पु०) भिनत्ति हलेनाकर्षणेन गतिरोधादिना अन्यथाकरोति । भिद्+ल्यु ६ त० । जो हलसे गतिको रोकताहै । बलभद्र । श्रीकृष्णदेवका बडा भाई । (इसकी कथा हरिवंशमें है).

कालिमन्, (पु०) कालस्य भावः इमनिच् । कालापन । कृष्णता । कलत्तन.

काली, (स्त्री०) कालो वर्णोऽस्त्यस्याः । अच् । ङीष् । जिसका काला रंग हो । देवीविशेष । मत्स्यगन्धा । व्यासदेवकी माता । सत्यवती । नये बादलोंकी माला । परीवाद । गाली गलौज । रात्रि । कालाञ्जनी । आगकी जीभ.

कालेय, (पु०) कलेरपत्यं ढक् । दैत्यविशेष । कालचन्दन (न०) । कुत्ता । हल्दी (पु०).

काल्प, (त्रि०) (कल्प–अण्) विहित । नियम स्थिर करनेवाला । कल्पसम्बन्धी । किस मन्त्रसे क्या करना चाहिये इस नियमको बतानेहारा.

काल्पनिक, (त्रि०) कल्पनाया आगतः ठक् । कल्पनासे आया । कल्पित । बनावटी । कल्पनासे उपजा । आरोपित.

काल्या, (स्त्री०) कालः गर्भधारणयोग्यसमयः प्राप्तोऽस्य यत् । वह गौ कि जिसका गर्भधारण करनेका समय आपहुंचा.

कावचिक (त्रि०)–की (स्त्री०) कवच् ठञ् । कवच् (बख्तरजिरह, संजोआ) पहिना हुआ.

कावेरी, (स्त्री०) कस्य जलस्य वेरं शरीरं । तस्येदं अण् । नदीविशेष । "कुत्सितं अपवित्रं वेरं यस्याः "स्वाङ्गात् ङीप्" । वेश्या । ५ ब० । हल्दी.

काव्य, (पु०) कविरेव स्वार्थे ष्यञ् । शुक्र । कविका काम । ग्रन्थभेद । कविपन जिसमें ऋषि वा कविके गुण रहें । दैत्योंका गुरु.

काव्यलिङ्ग, (न०) अर्थालङ्कारविशेष । सा० १० परि०.

काश्, चमकना । भ्वा० आ० सक० सेट् । काशते । अकाशिष्ट । काशामास । चकाशे । णिच् । अचकाशत्-त.

काश, दीप्ति-चमकना । दिवा० आ० अक० सेट् । काश्यते.

काश, (पु०) काश्+अच् । रोगभेद । खांसी । तृणभेद । तृणके पुष्प.

काशिराज, (पु०) ६ त० टच् स० । एक राजाका भेद । दिवोदास । धन्वन्तरि । नृपभेद । एक राजा.

काशी, (स्त्री०) काश्+अच्+ङीष् । अपने नामकी नगरी.

काश्मीर, (न०) कश्मीरदेशेषु भवः अण् । कुङ्कुम । कमलकी जड । सोहागा । शारदापीठसे लेकर कुङ्कुम नाम पर्वततक पचास योजनमें काश्मीर देश कहाहै । "तेषां राजा अण्" कश्मीरका राजा । कश्मीरका वासी.

काश्यप, कश्यपस्य गोत्रापत्यं अञ् । मुनिविशेष । मृगभेद । मच्छीका किसम । गोत्रभेद । काश्यपपुत्र (चाहे कोईहो).

काश्यपि, (पु०) कश्यपस्य अपत्यं । इञ् । गरुडका बडा भाई । अरुण.

काश्यपी, (स्त्री०) कश्यपस्येयं अण् । ङीप् । पृथ्वी.

काषः, (पु०) कष्+घञ् । रगड । छीलना.

काषाय, (त्रि०) कषायेण रक्तं, अण् लाल । लाल रंगसे रंगा हुआ ।–यं (न०) लाल कपडा । गेरुए रंगकी पौशाक.

काष्ठ, (न०) काश्+कथन् । इन्धन । दारु । लकडी.

काष्ठकदली, (स्त्री०) काष्ठमिव कठिना कदली । बनकदली । बनका केला.

काष्ठकीट, (पु०) ६ त० । काठका कीडा । घुणनामी कीडा.

काष्ठकुद्दाल, (पु०) कुं उद्दालयति । दल्-फाडना । अण् । शक० कुद्दालः । ६ त० । बेडी आदिके मलको दूरकरनेके लिये काठका बनाहुआ फौडा.

काष्ठतक्ष्, (पु०) काष्ठं तक्षति । क्विप् । रथकार । वर्णसंकर । तरखान । "काष्ठतक्षक" इसी अर्थमें होताहै.

काष्ठलेखक, (पु०) काष्ठं लिखति । ण्वुल् । घुणनामी कीडा.

काष्ठा, (स्त्री०) काश्+कथन् । दिशा । पर्यवसान । हद्द । सीमा । आखिरी हद्द । अन्ततक । चिह्न । निशान । समयका परिमाण=$\frac{१}{३०}$ कला । जल । पानी । सूर्य.

कास्, भ्वा० आ० । कासते । कासित । चमकना । प्रकाश करना.

कास-कुत्सित, (बुरा) शब्दकरना । भ्वा० आत्म० अक० सेट् । कसते । अकासिष्ट । कासामास । णिच् । अचकासत्-त.

कास, (पु०) कास्+घञ् । रोगभेद । खांसीकी बीमारी । काही.

कासघ्नी, (स्त्री०) कासं रोगं हन्ति ठक् । कण्टकारी । कंडयारी.

कासार, (पु०) केन जलेनासम्यक् सारोऽस्य । सरोवर । तालाब.

कासीस, (न०) क्षुद्रः कासः कासी तां स्यति । षो+क । हीराकस उपधातुविशेष.

कासू, (स्त्री०) कस्+ऊ । णिच । विकलवाणी । घबराहटकी आवाज । दीप्ति । चमक । बुद्धि । रोग.

कासृतिः, (स्त्री०) कुत्सिता वा गुप्ता सृतिः=मार्गः । बुरा वा छिपा हुआ मार्ग । साथका रास्ता.

काहल, (न०) कुत्सितं हलति लिखति । अच् । कोः कादेशः । कुक्कड । बिल्ला । आवाज । बडा नगारा । बाजेका भेद । बडी आवाज । सूका । बहुत । नीच (त्रि०).

कि-जाना, जुहो० पर० सक० अनिट् । चिकेति । अचैषीत्.

किकीदिवि, (पु०) किकीति दीव्यति शब्दायते । किकि+दिव्+इन-नि० । जो किकी ऐसा शब्द कर्ताहै । चाषपक्षी.

किङ्कर, (त्रि०) किञ्चित् कुत्सितं वा करोति । ट । भृत्य । नौकर । स्त्रियां ङीप्.

किङ्किणी, (स्त्री०) किञ्चित् किणं करोति णिच् । अच् । ङीप् । कुछ शब्द कर्ताहै । कटिभूषण । कमरका जेवर । क्षुद्रघण्टिका । छोटीघंटी । विकङ्कतवृक्ष.

किङ्किर,(पु०) किम्+कृ+क । कोइल । भौंरा । घोडा । कामदेव.

किङ्किरात, (पु०) किङ्किरां रक्तवर्णं अतति गच्छति पुष्पद्वारा अण् । जिसका फूल लाल होताहै । अशोकवृक्ष । तोता । रक्ताम्लवृक्ष । रक्तभाटी.

किञ्च, (अव्य०) आरम्भ । समुच्चय । कुछ और.

किञ्चन , (अव्य०) किम्+ चन । न पूरा । थोडा.

किञ्जल्क, (पु०) किञ्चित् जलति । जल्-छिपाना । क । केसर बहुत महीन तिरियें । फूलकी धूरी । नागकेसर.

किट्, जाना । सक० । डरना । अक० भ्वा० पर० सेट् । केटति । अकेटीत्.

किट्ट, (न०) किट्+क्त-इट् । नहिं होता । धातुओंका मल । गूँह.

किण, (पु०) कण्-जाना -अच् । पृषो० अको इ होता है । (घेंटा) सूका घाव । मांसकी गांठ, घसडका दाग.

कित्, सन्देह करना-रोगका दूरहोना । भ्वा० पर० सक० सेट् । चिकित्सति । अचिकित्सीत् । रहना । अक० चाहना । सक० । केतति । अकेतीत्.

कित्, जानना । जुहो० पर० सक० सेट् । चिकेति । अकेतीत्.

कितव, (पु०) कि+भावे क्त । कितेन वाति । वा+क । जुआरिआ । ठग । नीच । चोरनामक गन्धद्रव्य । धत्तूरा.

किन्तनु, (पु०) किञ्चिन्मात्रा तनुर्यस्य । जिसका शरीर वहुत छोटा हो । आठ पांवका कीडा । मकडी.

किन्तु, (अव्य०) पूर्ववाक्यके संकोचको जतानेहारा । पहिले कहेगयेसे विरुद्ध अर्थ । फिर क्या । लेकिन.

किन्नर, (पु०) कुत्सितो नरः । घोडेका मुख और मनुष्यका शरीर । अथवा नरका मुख और घोडेका शरीर देवयोनिभेद । देवताओंका गवैया.

किन्नरेश, (पु०) ६ त० । किन्नरोंका स्वामी । कुबेर । धनका दाता.

किन्नु, (अव्य०) प्रश्न । वितर्क । सादृश्य । स्थान । क्या.

किम्, (अव्य०) प्रश्न । निषेध । वितर्क । निन्दा । क्या.

किमु, (अव्य०) विमर्श । सम्भावना । शङ्क.

किमुत, (अव्य०) प्रश्न । वितर्क । शङ्क । विकल्प । अतिशय । फिर क्या.

किम्पच, (त्रि०) किं पचति । अच् । सूम । कृपण । वह अपने पेट भरनेकोही पकाता है, आगन्तुक वा अतिथिओंके लिये नहिं.

किंपु (पू) रुष, (पु०) कुत्सितः पु (पू) रुषः । देवयोनिभेद । देवताओंका गवैया । हिमालय और हेमकूटके बीच नववर्षनामी जम्बुद्वीपका एक वर्ष.

कियत्, (त्रि०) किम्+परिमाणे वतुप् , किमः कादेशः, वस्य यः, कितना परिमाण । कितना.

किर, (पु०) कृ+क । शूकर । सूअर.

किरण, (पु०) कृ+क्यु । सूर्य । किरण । रश्मि.

किरणमालिन्, (पु०) किरणानां माला अस्ति अस्य इनि । जिसकी किरणोंकी माला हो । सूर्य । सूरज.

किरात, (पु०) कीर्यन्तेऽवस्करा अत्र । कृ+क पर्यन्तदेशस्तं अतति अण् । म्लेच्छजातिविशेष । भील । छोटे शरीरवाला । "तप्तकुण्डसे लेकर रामक्षेत्रतक किरातदेश है."

किरि, (पु०) कृ+इक् । शूकर । सूअर.

किरीट, (पु० न०) कृ+कीटन् । मुकुट । शिरका घेरा । पगडी.

किरीटिन्, (पु०) किरीट+इनि । अर्जुन । मुकुटवाला । कोनसामी किरीटधारी (त्रि०).

किर्मी, (स्त्री०) किरति क्विप् । किरं माति मा+क ङीष् । पलाशवृक्ष । घर । सोनेकी पुतली । लोहेकी पुतली.

किर्मीर, (पु०) कृ+इरन्-मुट् आगमः । नारङ्गवृक्ष । राक्षसविशेष । चित्रवर्ण । रंगवरंगी.

किल, (अव्य०) निश्चय । वात । पछतावा । प्रसिद्ध । प्रमाणका प्रकाश करनेवाला । सत्य । कारण । झूठ.

किलकिञ्चित, (न०) "हर्षसे रोकर गाना" । स्त्रिओंका विलासभेद.

किलकिला, (स्त्री०) किलकिलेति वीप्सायां द्वित्वं ततः क्यच् ततः क्विप् । हर्षकी आवाज । शेरकी आवाज । वानरोंके शब्दकी नकल करना.

किलाटक, (पु०) पकेहुए दूधका पिण्ड । दूधका विकार । मलाई । खोया । मावा.

किल्बिष, (न०) किल्+टिषच्-वुक् । अपराध । पाप । रोग । धर्म और अधर्मका फल । अनिष्ट । संसार.

किंवदन्ति–न्ती, (स्त्री०) किम्+वद्+शतृ+चा ङीष् । जनश्रुति । अफवाह । सचा वा झूठा लोकका अपवाद । (हौरा).

किंवा, (अव्य०) विकल्प । अथवा । या । वा.

किंशारु, (पु०) कुत्सितं शृणाति । किम्+शॄ+ञुण् । धानके वाल । वाण । तीर । कङ्कपक्षी । माहीखोर.

किशलय, (पु० न०) किञ्चित् शलति चलति कयन्-पृ० । पल्लव । पत्र । पत्ता.

किशोर, (पु०) कश्+ओरन् । नि० । हाथीका बच्चा । सूर्य । जवान । दसवर्षसे पीछे पन्द्रहवर्षतक.

किष्क, मारना । चुरा० आत्म० सक० सेट् । किष्कयते । अचिकिष्कत.

किष्किन्ध–न्धा, (पु०) । ओड्रदेशका एक पर्वत । वहांकी गुफा (स्त्री०).

किष्कु, (पु० स्त्री०) किष्क्+उ । बारह अंगुलीका माप । आंकडीका स्थान । हाथका परिमाण.

किसलय, (पु० न०) किञ्चित् सलति । सल्+जाना कयन्-पृ० । पल्लव । पत्र । पत्ता.

कीकट, (पु०) किञ्चित् कुत्सितं कटति-पृ० । घोडा । मगधदेश । "कीकटेषु गया पुण्या" इति पुराणम् । सूम । निर्धन । गरीब.

कीकश, (पु०) कीति कशति । कश्-शब्द करना । अच् । चण्डाल.

कीचक, (पु०) कीति अव्यक्तं चकति-अच् । दैत्यभेद । जो वायुसे ताडन कियेगये शब्द कर्ते हैं ऐसे बांस (तलतावांस) । विराटराजाका साला । केकयदेशका राजा.

कीचकजित्, (पु०) कीचकं जितवान् । जि+भूते क्विप् । जिसने कीचकको जीतलिया । भीमसेन । "कीचकभिद्" यही अर्थ.

कीट्, बांधना । चुरा० उभ० सक० सेट् । कीटयति-ते । अचीकिटत्-त.

कीट, (पु०) किट्+अच् । कीडीओंसे मोटा क्षुद्रजन्तुमात्र । कीडा । स्वार्थे कन् यही अर्थ । मागधजाति । कठिन । सख्त (त्रि०).

कीटघ्न, (पु०) कीटं हन्ति हन्+ठक् । गन्धक । कीडेको मारनेवाला.

कीटजा, (स्त्री०) कीटेभ्यो जायते । जन्+ड । कीडोंसे निकला । लाख.

कीटमणि, (पु०) कीटेषु मणिरिव । कीडोंमें मानो मणि है । खद्योत । टटाणा.

कीदृश्, (पु०) किम्+दृश्+क्विप्-किमः की । किंप्रकार । ट । कीदृश । क्स । कीदृक्ष । किसतरहका । कैसा । किसतौरका.

कीनाश, (पु०) कुत्सितं नाशयति-नि । यम । वानरविशेष । खेती करनेवाला । पशुओंको मारनेवाला । कमीना.

कीर, (पु०) कीति ईरयति । ईर्+अच् । तोतापक्षी । देशविशेष (न०) । मांस (न०).

कीर्ण, (त्रि०) कॄ+क्त । ढकाहुआ । रक्खाहुआ । फैलाहुआ.

कीर्णिः, (स्त्री०) कॄ+क्तिन् । खिलारना । आच्छादन करना । छिपाना । हानि पहुंचाना.

कीर्तनं, (न०) कॄत्+ल्युट् । कीर्तन करना । कहना । स्तुति करना । यश गाना.

कीर्तना, (स्त्री०) चुरा+कृत्+युच्+टाप् । यश.

कीर्ति, (स्त्री०) चु० कृत्+क्तिन् । यश.

कीर्तित, (त्रि०) चु० कृत्+क्त । कहागया । प्रसिद्ध कियागया.

कीर्तिशेष, (पु०) कीर्तिरेव शेषः । यशका बाकी रहना । मरण । मौत । बहु० मरगया (त्रि०).

कील्, बांधना । भ्वा०पर०सक०सेट् । कीलति । अकीलीत्.

कील, (पु० स्त्री०) कील्+क । आगकी लाट । "करणे घञ्" शङ्कु । शस्त्र । थंभा । लेश.

कीलक, (पु०) कील्+स्वार्थे संज्ञायां वा कन् । कील । मेख । गौओंको चोनेके लिये बांधनेका थंभा । किल्ला.

कीलाल, (न०) कीलं वह्निशिखां अलति वारयति अण् । जो आगकी लाटको हटादेवे । जल । लोहु । "कीलां और्वाग्नेः शिखां लाति" । ला+क । अमृत । कीलेन प्रतिबन्धेन अल्यते वार्यते" अल्+घञ् । पशु.

कीश, (पु०) "कस्य वायोरपत्यं । अतइञ् किः । हनुमान् ईशो यस्य" । जिसका स्वामी वायुका पुत्र हनुमान् है । वानर । बन्दर.

कु,-शब्दकरना । भ्वा० आ० सक० अनिट् । कवते । अकोष्ट.

कु, दुःखसे शब्द करना । तुदा० आत्म० सक० अनिट् । कुवते । अकुत.

कु, शब्द करना । अदा० पर० अक० अनिट् । कौति । अकौषीत्.

कु, (अव्य०) पाप । निन्दा । थोडा । निवारण । हटाना । भूमि । पृथिवी (स्त्री०).

कुकुद, (पु०) आदरके साथ अलंकार कीगई कन्याको देनेवाला.

कुकुन्दर, (पु०) कुं भूमिं दारयति । अन्तर्भूतण्यर्थे । दृ+अण् । नि० । स्त्रिओंके नितम्बमें स्थित गोल आकारवाले पीठकी हड्डीसे नीचेके दो गर्त (टोये) जहां कामीजन क्षुब्ध होते हैं.

कुकुर, (पु०) कुं पृथिवीं कुरति । कुर्+क । यदुवंशका एक राजा । इनको ययातिके शापसे राज्य नहिं मिलता । दशार्हदेश.

कुक्कुट, (पु०) कु+क्विप्-कुक् तेन कुटति कुट्+क । कुक्कड पक्षी । आगकी चिनगारी । "स्वार्थे कन्" । शूद्रसे निषादीमें उत्पन्नहुआ संकीर्ण वर्ण । "स्त्रियां ङीष्".

कुक्कुटव्रत, (न०) ज्येष्ठ औ भादोंकी शुक्लसप्तमीके दिन सन्तानके लिये करनेलायक व्रतविशेष.

कुक्षि, (पु०) कुष्+क्सि । उदर । पेट । पेटका बायां और दहिना भाग । वक्खी.

कुक्षिम्भरि, (त्रि०) कुक्षिं बिभर्ति । भृ+इन् । मुमूच । देवता और अतिथियोंको ठगकर केवल अपना पेट भरनेवाला.

कुङ्कुम, (न०) कुक्यते आदीयते । कुक्+उमक् । नि० नुम् । काश्मीर देशमें उपजा गन्धद्रव्य । केसर.

कुच, गुस्सा करना । मिलना लिखना । सक० । तिरछाहोना । अक० तुदा० पर० सेट् । कुचति । अकुचीत् । चुकोच.

कुच,-ऊंची आवाजकरना । भ्वा० पर० अक० सेट् । कोचति.

कुच, (पु०) कुच्-मिलना+अच् । स्तन । मम्मा । पिस्तान.

कुचफल, (पु०) कुचौ इव फलं अस्य । जिसका फल स्तनोंके समान हो । अनारका फल.

कुचर, (त्रि०) कुत्सितं चरति चर+अच् । दूसरेके दोष-को कहनेहारा.

कुज्, चुराना । भ्वा० पर० सक० सेट् । कोजति । अकोजीत्.

कुज, (पु०) कौ पृथिव्यां जायते । जन्+ड । मङ्गलग्रह । नरकासुर । वृक्षमात्र । सीता । कात्यायनी (स्त्री०).

कुज्झटि-टी. (स्त्री०) । कु+क्विप् कुत । झट्-इकट्ठा होना । इन् वा ङीप् । नीहार । कुयासा । वुखार । पाला.

कुञ्चन, (न०) कुञ्च्+ल्युट् । कुटिलता । अनादर । आंख-का रोग.

कुञ्चि, (पु०) कुञ्च्, कुटिल होना । इन् । आठ मुट्ठीका व्यावहारिकमाप.

कुञ्चिका, (पु०) कुञ्च्+ण्वुल्+टाप् । कालाजीरा । मच्छी-का भेद । कुञ्जी । चावी । वांसकी शाखा । रत्ती.

कुञ्चित, (न०) कुञ्च्+क्त । तगरका फूल । टेढा । सिकु-डाहुआ (त्रि०).

कुञ्ज, (पु०) कौ पृथिव्यां जायते । जन्+ड (पु०) । हत्थी । ठोडी । चारोंओर लताओंसे ढकाहुआ वीचसेशून्य (खुला) पर्वत आदिका स्थानविशेष । लतागृह । हाथीका दांत.

कुञ्जर, (पु०) कुञ्ज+अस्त्यर्थे र । हाथी । हस्ती.

कुञ्जरच्छाय, (पु०) त्रयोदशी और मघानक्षत्रका मेल होना.

कुञ्जराशन, (पु०) कुञ्जरैः अश्यते अश्-खाना+ल्युट् । वडका दरख्त.

कुट्, -कुटिल होना । तुदा० पर० सक० सेट् । कुटति । अकुटीत् । चुकोट.

कुट, (पु०) कुट्+अच् । दुर्ग । किला । गड । पर्वत । वृक्ष । घडा (पु०) (न०) घर (स्त्री०) ङीप् । शिलाकुट्ट अस्त्र । हथौडा (पु०) "कुट्ट".

कुटङ्क, (पु०) कुटं गृहं कषति । ड । (पु०) । घरका पडदा । लतागृह.

कुटज, (पु०) कुटे पर्वते जायते । जन्+ड (कडची) वृक्षभेद (जिसका फल इन्द्रयव है) । कुटे (घटे) जायते "अगस्त्यमुनि" । द्रोणाचार्य.

कुटप, (पु०) कुट्+कपन् । मुनि । घरके पासका छोटा वन । ३२ तोलेभर । कमल (न०).

कुटि(टी)र, (पु०) अल्पा कुटी ईरन् । पत्तोंकी कुटिया.

कुटिल, (त्रि०) कुट्+इलच् । वक्र । टेढा । भङ्गुर । भुरभुरा । तगरका फूल.

कुटि(टी)चर, (पु०) कुट्यां कुटौ वा चरति । संन्या-सीका भेद । "कुटौ जले चरति" चर० अच् । जलमें विचरनेवाला सूअर.

कुटुम्ब, धारण करना । चुरा० आत्म० अक० सेट् । कुटुम्बयते.

कुटुम्ब, (पु० न०) कुटुम्ब+अच् । पोष्यवर्ग । सम्बंधी । नातेदार । सन्तान.

कुटुम्बिनी, (स्त्री०) कुटुम्ब+इनि । पति और पुत्रवाली । सराहीगई स्त्री । वालवच्चेवाली स्त्री.

कुट्ट्, काटन-निन्दाकरना । चुरा० उभ० सक० सेट् । कुट्टयति-ते.

कुट्टक, (पु०) कुट्ट्+ण्वुल् । लीलावतीमें प्रसिद्ध गणितका अङ्कभेद.

कुट्टनी, (स्त्री०) कुट्ट्+ल्युट्+ङीप् । (कुट्टनी) दूसरे पुरुषके साथ दूसरेकी स्त्रीको मिलानेवाली स्त्री.

कुट्टमित, (न०) मित्रके साथ मिलनेकी इच्छा होनेपरभी न माननेके लिये हातका हिलाना । विलासभेद.

कुट्मल, (पु० न०) कुट्+कुमलच् । खिलनेपर आई कली । एक नरक जहां रस्सिओंसे नारकिओंको पीडा पहुंचाई जातीहै.

कुठ्, घवराना-आलस्य करना । अक० । छुडाना । सक० इदित् भ्वा० पर० सेट् । कुण्ठति । अकुण्ठीत्.

कुठ, (पु०) कुठ्+अच् । वृक्ष । दरख्त.

कुठार, (पु० स्त्री०) कुठ्+करन् । अस्त्रभेद । कुल्हाडा । वृक्ष (पु०).

कुठारु, (पु०) कुठ्+कारुन् । वानर । वृक्ष । शस्त्र बना-नेवाला.

कुड्, घवराना । भ्वा० इदित् । पर० अक० सेट् । कुण्डति.

कुड्, जलाना । भ्वा० इदित् । आत्म० सक० सेट् । कुण्डते.

कुड्, वचाना । चुरा० इदित् । उभ० सक० सेट् । कुण्ड-यति-ते.

कुड्, खाना-वालक होना अक० तुदा० पर० सेट् कुडति.

कुडप (व), (पु०) कुड्+कपन् (कवन्) वा सेरका चौथा भाग । एक पावभर.

कुड्मल, (पु०) (न०) कुड्+कुमलच् । खिलनेपर आई कली । नरकविशेष (न०).

कुड्य, (न०) कुड्+यत् । दीवार । लेपन । कौतूहल । शौक.

कुणप, (पु०) कुण्+कपन् । प्राणरहित । मृतदेह । शव । मुरदा । वदबूदार.

कुण्डल लं- (पु० न०) कुण्ड+मत्वर्थे ल । कानोंकी बाली वा मुंदरी । कुण्डल.

कुण्डलिन्, (पु०) कुण्डल+अस्त्यर्थे इनि० । घेरादेनेहारा सर्प । सांप.

कुण्डलिनी, (स्त्री०) कुण्डलं अस्य इनि० । सांपके स्वरू-पसे तीन घेरेवाली तन्त्रमें प्रसिद्ध शक्ति । सांपनी.

कुण्डिका, (स्त्री०) कुण्ड+संज्ञायां कन् । कमण्डलु । थाली । लोटा । कुंडी.

कुण्डिन्, (पु०) कुडि+इनच् । मुनिविशेष । विदर्भनगर । देशभेद.

कुतप, (पु०) कुत्सितं तपति । तप्+अच् । सूर्य । अग्नि । ब्राह्मण । अतिथि । गौ । भागिनेय । बहिनका पुत्र । दोहता । वाजा । नेपालका कम्बल । कुशाके तृण । दिनके दूसरे पहिरकी पिछली घडीसे तीसरे पहिरकी पहिली घडीतक समय.

कुतस्, (अव्य०) प्रश्न । सवाल । छिपाना । कहांसे । क्योंकर.

कुतुप, (पु०) कुतूः+डुपच् । छोटासा चमडेका कुप्पा । घीका पात्र.

कुतूहल, (न०) कुतुं चर्ममयं स्नेहपात्रं हलति लिखति । हल्+अच् । अपूर्व (अजीव) वस्तुके देखनेमें यत्न करना । अच्छा । अजीव (त्रि०) । निहायत शौक.

कुत्र, (अव्य०) कस्मिन् स्थाने वा काले । किसजगह वा किसवक्तमें । कहां । कव.

कुत्स, निन्दा करना । चुरा० आत्म० सक० सेट् । कुत्सयते.

कुत्सा, (स्त्री०) कुत्स्+अ+टाप् । निन्दा । परिवाद.

कुत्सित, (न०) कुत्स+क्त । कुष्ठनाम औषध । निन्दा कियाहुआ (त्रि०).

कुथ, (पु० स्त्री०) कुथ्+अच् । हाथीकी पीठका रंगीव-रंगी कंवल.

कुद्दाल, (पु० न०) कुं भूमिं उद्दालयति । उद्०दल्+अण् शक० । कोविदारवृक्ष । कचनालका दरख्त । कौएकी नासा । पृथ्वीको खोदनेका अस्त्र । औजार । कोदाल (न०).

कुनख, (पु०) वह रोग कि जिसमें नाखूनोंका रंग वदल जाताहै । कुनख रोगवाला जन (त्रि०).

कुन्त, (पु०) कुं भूमिं उनत्ति । उन्द्+त । शक० । गवे-धुका धान्य । प्रासनामी शस्त्र । मल । मेला । वरच्छा.

कुन्तल, (पु०) कुन्तं कुन्ताग्राकारं लाति । ला+क । केश । पीनेका पात्र । हाथ । देशभेद.

कुन्ति, (पु०) कम्+झिच् । देशभेद । युधिष्ठिर आदिकी माता (स्त्री०) वा ङीप् । वह शूरसेन राजाकी औरसी पृथा नामी कन्या थी । पुत्ररहित कुन्तिभोजको पिताने सन्तानके लिये दी.

कुन्द, (पु०) कुं भूमिं दायति द्यति वा । दै-दो वा-क नि० मुम् । (कुन्द) फूलोंका वृक्ष । कुन्दुरु नाम गन्धद्रव्य । भूमियन्त्र । खराद । कुबेरका निधिभेद । करवीरवृक्ष.

कुप्, क्रोध करना । दिवा० पर० अक० सेट् । कुप्यति । अकुपत् । अकोपीत्.

कुपाणि, (त्रि०) कुत्सितः पाणिः अस्य । ब० । बुरे हाथवाला । वक्रहस्त । टेढे हाथवाला.

कुपिन्द, (पु०) कुप्+किन्दच् । तन्तुवाय । तांती । जुलाहा.

कुपूय, (त्रि०) कुत्सितं पूयते । पूय्-फलाना+अच् । जो बुरी तरहसे फैलाता है । जाति और आचार आदिसे निन्दित । दुष्ट आचरण करनेवाला.

कुप्य, (न०) कुप्+क्यप् नि० । सोने और रूपेसे भिन्न तैजस उपधातु । दस्ता नामसे प्रसिद्ध धातु । सोने रूपे-से बिना और सब धातु.

कुबेर, (पु०) कुम्बति धनं एरक् । नलोपश्च । यक्षोंका राजा । नन्दीवृक्ष "कुत्सितं वेरं देहोऽस्य" जिसका देह बुरा हो । मूर्ख (त्रि०).

कुब्ज, (पु०) ईषत् उब्जं आर्जवं अस्य । शक० । जिस-की थोडीसी कोमलता हो । कुवडा (त्रि०) । तलवार । अपामार्ग । अपुठकांटा.

कुमार, (पु०) कुमारयति क्रीडति । कुत्सितो मारो यस्मात् कौ मारयति दुष्टान् वा । तोता पक्षी । कार्तिकेय । ना-ट्योक्तिमें युवराज । सिन्धुनद । वरुणवृक्ष । पांच वर्ष-का बालक.

कुमारभृत्या, (स्त्री०) भृ+क्यप् । ६ त० । जन्नेके समय गर्भिणीकी सेवा.

कुमारिका, (स्त्री०) कुमार+"वयसि प्रथमे" ङीप्+ स्वार्थे कन् । पांच वर्षकी विवाह विना कन्या । नवमल्लि-कावृक्ष । भारतवर्षखण्डभेद । "वर्णव्यवस्थितिरिहैव कुमारिकाख्ये" इति सिद्धान्तशिरोमणिः.

कुमारी, (स्त्री०) कुमार+ङीप् । नवमल्लिका । घृतकुमारी । नदीभेद । अपराजिता । मोटी इलाइची । वरुणका फूल । १२ वर्षकी अविवाहिता कन्या । श्यामा पक्षी.

कुमुद, (न०) कौ भूमौ मोदते । मुद्+क । कैरव । कल्हार । चिट्टाकमल । वानरभेद । दैत्यभेद । कपूर (पु०).

कुमुदिनी, (स्त्री०) कुमुदानां समूहः इनि० । कुमुदसमूह । "अस्त्यर्थे इनि०" कुमुदवाली पुष्करिणी (तलावडी) कुमुदलता.

कुमुदबान्धव, (पु०) ६ त० । चन्द्रमा । कपूर । कापूर.

कुमुद्वत्, (त्रि०) कुमुद्+मतुप्+ईप् । श्वेत कमलोंसे घिरा हुआ । ती (स्त्री०) चिट्टे फूलवाला । रात्रिको चन्द्रमाकी किरणोंके स्पर्शसे खिलता है । कम्मी.

कुम्भ, (पु०) कुं भूमिं कुत्सितं वा उम्भति । उन्भ्-भरना अच् । शब्द । घडा । हृदयका रोग । हाथीके सिरके दो मांसके गोले । कुम्भकर्णका पुत्र । वेश्याका पति । प्रा-णायामका अङ्ग । श्वासको रोकनेवाली चेष्टा । ६४ सेरका माप । ११ वीं राशि । गुग्गुल.

कुम्भक, (पु०) कुम्भ इव कायति निश्चलतया प्रकाशते । कै+क । श्वास प्रश्वासको छोडकर प्राणवायुका रोकनारूप प्राणायामका अंग । जिसमें वायु न वाहिर और नहीं भीतरको जाय अर्थात् मध्यमें रोकलिया जाय । जैसे घडा भराहुआ नहीं डोलता.

कुम्भकर्ण, (पु०) कुम्भ इव कर्णौ अस्य । जिसके कान घडेके समान हैं । रावणका छोटा भाई । राक्षसका भेद । (रामसे मारा गया).

कुम्भकार, (पु०) कुम्भं करोति । कृ+अण् । उप० । कुम्हार । जातिभेद । ककुभ पक्षी.

कुम्भयोनि, (पु०) कुम्भो योनिः उत्पत्तिस्थानं यस्य । जो घडेसे उपजा । अगस्त्यमुनि । "कुम्भसम्भव" । द्रोणाचार्य । द्रोणपुष्पी.

कुम्भाण्ड, (पु०) कुम्भाकारः अण्डः । घडेके समान अण्डा । पेठा । वाणासुरका मन्त्री । "कूष्माण्ड" यही अर्थ.

कुम्भिन्, (पु०) कुम्भ+अस्त्यर्थे इनि । हाथी । कुम्भीर । गुग्गुल.

कुम्भिल, (पु०) कुम्भ+अस्त्यर्थे इलच् । चोर । शालमच्छ । श्लोकके अर्थको चुरानेवाला । श्याल । साल.

कुम्भीपाक, (पु०) कुम्भ्यां तैलघटे पाको यस्मिन् । तेलके घडेमें जहां पकाते हैं । "जहां यमके चाकर तपेहुए तेलमें डालकर रींधते हैं" ऐसे लक्षणवाला नरकका भेद.

कुम्भीर, (पु०) कुम्भिनं हस्तिनं अपि ईरयति । जो हाथीकोभी हिला देताहै । ईर+अण् । (कुम्भीर) जलका जन्तु । तंदुआ.

कुर्, शब्दकरना । तुदा० पर० अक० सेट् । कुरति । चुकोर । अकोरीत्.

कुरङ्ग, (पु०) कौ रङ्गति । रङ्ग+अच् । "जो थोडासा लाल (ताम्र) और हरिणके स्वरूपका हो" मृगभेद । हरिणमात्र.

कुरर, (पु०) कवते । कुङ्-शब्दकरना । उत्क्रोश पक्षी । कूंज पक्षी.

कुरस, (पु०) कुत्सितो रसोऽत्र । जहां बुरा रस हो । मद्यका भेद । बुरे रसवाला (त्रि०) । गोजिह्वा लता (स्त्री०) टाप् । बुरा रस (पु०).

कुरु, (पु०) कृ+कु । चन्द्रवंशका एक राजा । हस्तिनापुरसे ले कुरुक्षेत्रका दक्षिण और पंजावके पूर्वका भाग । भात । कण्टकारिका । कंडिआरी । नव वर्षोंमेंसे जम्बुद्वीपका वर्षभेद.

कुरुक्षेत्र, (न०) कुत्सितं रौति । कुरु पापं कर्म तस्य क्षेपणात् दूरीकरणात् क्षेत्रम् । वह स्थान कि जहां पाप दूर होता है । कौरवपाण्डवोंके युद्धका स्थान.

कुरुबक, (पु०) ईषत् रौति । रु शब्द करना+संज्ञायां क्वुन् । उवङ् । रक्तझिण्ट । पीतझिण्टी । (कुडची) पुष्पवृक्ष.

कुरुबिल्व, (पु०) कुरुषु बिल्व इव । पद्मरागमणि । माणिक.

कुरुविन्द, (पु०) कुरून् विन्दति । विद्+श-मुम् । मोथा । कुल्माष । दर्पण । शीशा । हिङ्गुल । हींग । पद्मराग मणि (न०).

कुरुविस्त, (पु०) कुरुषु विस्तः । चार तोले सोनेका एक माप.

कुरुवृद्ध, (पु०) कुरूणां जनपदानां राजानः । तद्राजस्य तद्धितस्य वहुषु लुक् । तेषु कुरुषु वृद्धः । कौरवोंमें बूढा । भीष्मपितामह.

कुरूप्य, (न०) ईषत् रूप्यं शुभ्रत्वेन सादृश्यलात् । रूपेके समान चिट्टा होनेसे । रङ्ग नामक धातु । रांगाधातु.

कु(कू)र्द, खेलना । भ्वा० आत्म० अक० सेट् । कु(कू)र्दते । अकु(कू)र्दिष्ट.

कु(कू)र्दन, (न०) कु(कू)र्द-ल्युट् । क्रीडा । खेल.

कुर्पर, (पु०) कुर+क्विप्-कुर् पिपर्ति अच् । जानु । घुटना । गोड्डा । कफोणि.

कुर्वत्, (त्रि०) (कृ+शतृ) । कामकरनेवाला नौकर । कारक । करनेहारा.

कुल्, बांधना-मेलकरना । भ्वा० पर० अक० सेट् । कोलति । अकोलीत्.

कुल, (न०) कुल्+क । वंश । अपनी जातके लोक । देश । घर । शरीर.

कुलक, (न०) कुल्+अच्-संज्ञायां कन् । समूह । एक वाक्य बनेहुए पांच आदि श्लोकोंका समूह । वल्मीक । कुरवक वृक्ष (पु०).

कुलकुण्डलिनी, (स्त्री०) कुलैः उपास्या कुण्डलिनी शक्तिः । कुलाचारोंसे उपासनाके लायक अढाई घेरेवाली शक्ति । तन्त्रशास्त्रप्रसिद्ध मूलाधारमें स्थित सांपनीके समान शक्तिभेद.

कुलघ्न, (त्रि०) कुलं हन्ति+कुल+हन्+च । कुल (वंश) को नाश करनेवाला.

कुलज, (त्रि०) कुले सत्कुले जायते । जन्+ड । अच्छे कुलमें उपजा.

कुलटा, (स्त्री०) व्यभिचारार्थं भिक्षार्थं वा कुलानि अटति । अट्+अच् । शक० । भोग वा भीखके लिये घर २ में घूमनेवाली । असती । व्यभिचारिणी । भिक्षा मांगनेवाली । अपतिव्रता.

कुलधारक, (पु०) कुलस्य वंशस्य धारकः । धृ+णिच्+ण्वुल् । वंशके धारण करनेवाला । असली लडका । औरस पुत्र.

कुलपति, (पु०) ६ ब० । मुनिविशेष । "जो दस हजार मुनिओंको अन्नादिसे पालता और विद्या पढाताहै" । सेनाका मालिक.

कुलपर्वत, (पु०) कौ पृथिव्यां लीयते । ली+ड । महेन्द्र, मलय, सह्य, शुक्तिमान्, ऋक्षपर्वत, विन्ध्य, और पारियात्र ये सात कुलपर्वत हैं । "कुलाचल" यही अर्थ.

कुलंधरः, (त्रि०) कुल+धृ+षच् मुम् । कुलको धारण करनेवाला.

कुलधर्म, (पु०) कुलस्य धर्मः ष० त० । कुल (खान्दान) का धर्म (कर्तव्य).

कुलविद्या, (स्त्री०) कुलागता विद्या । कुलकी परम्परासे आरही विद्या.

कुलव्रतं, (न०) कुलस्य व्रतं ष० त० । कुलका व्रत (नियम).

कुलाचार, (पु०) ६ त० । कुलोचित धर्म । कुलका धर्म । "जीव, प्रकृतितत्त्व, दिशा, काल, आकाश, पृथिवी, जल, तेज और वायु" इन सबको "कुल" कहते हैं । उक्त सकलमें जो ब्रह्मकी बुद्धिसे विकल्परहित व्यवहार करना, इसीको कुलाचार कहतेहैं इसप्रकारका ज्ञान.

कुलाय, (पु०) कुलं पक्षिसंघातोऽयतेऽत्र । अय्+घञ् । पक्षिओंका घर । नीड । आलना । कोई जगह । "कौ लायो गतिः अस्मात्" शरीर । देह.

कुलाल, (पु०) कुल्+कालन् । कुलं अलति, अल्+अण् । कुम्भकार । कुम्हार । कक्कुभ पक्षी.

कुलिक, (पु०) कुल्+अस्त्यर्थे ठन् । आठ नागोंमेंसे एक । एक साग । समयविशेष । कुलमें सबसे अच्छा (त्रि०).

कुलिङ्ग, (पु०) कौ पृथिव्यां लिङ्गति चरणार्थं गच्छति अच् । जो पृथिवीपर विचरनेके लिये जाताहै । चटक । चिडिया । धूम्याट (पिङ्गा) । बुरे चिह्नवाला (न०).

कुलिन्, (पु०) कुल+अस्त्यर्थे इनि । पर्वत । अच्छे कुलवाला (त्रि०).

कुलिश, (पु०) (न०) कुले हस्ते शेते । शी+ड । कुलिनं पर्वतं श्यति शो+ड वा । वज्र । अस्थिसंहार वृक्ष । मत्स्यभेद.

कुली, (स्त्री०) कौ लीयते-ङीप् । कण्टकारी । बडीसाली.

कुलीन, (पु०) कुले आकरे भवः । ख । अच्छा घोडा । अच्छे कुलका (त्रि०) । कुलाचारवाला (त्रि०).

कुली(लि)र, (पु०) कुल+ईर वा ईरक् । कर्कट (कांकडा) केकडा । मेषसे चौथी राशि.

कुल्माष, (पु०) कोलति-कुल+क्विप्-कुल्-माषोऽस्मिन् ६ब० । आधे गीले छोले कणक आदि । शूकधान्य जौ आदि.

कुल्य, कुल्-इकट्ठाहोना+क्यप् । अस्थि । हड्डी । छज्ज । मांस । "कुले भवः"+यत् । अच्छे कुलमें उपजा वा कुलहितैषी । कुल्+क्यप्+टाप् । बनावटी छोटी नदी । नहर । कुलस्त्री.

कुवङ्ग, (न०) कुत्सितं वङ्गम् । सीसक (सीसा) धातुभेद.

कुवलय, (न०) कोर्वलयं इव शोभाहेतुत्वात् । कमल । चिट्टाकमल । नीलाकमल.

कुवलयापीड, (त्रि०) कुवलयं आपीडा भूषणं यस्य । नीले कमलके भूषणवाला जन । एक दैत्य जिसने हाथीका रूप धारण कियाथा और कृष्णजीसे मारा गया.

कुवाद, (त्रि०) कुत्सितं वदति अण् । दूसरेका दोष कहनेवाला । "भावे घञ्" । कुत्सितवाक्य । बुरावचन.

कुविन्द, (पु०) कुं भूमिं विन्दति । विद्+श । जुलाहा । शूद्रजातिकी स्त्रीके गर्भमें विश्वकर्मासे उत्पन्नहुआ वर्णभेद.

कुवेणि—णी, (स्त्री०) कुत्सितं वेणन्ते मत्स्या अस्य । वेण+इन् वा । मत्स्याधानी । मच्छिओंकी टोकरी.

कुश, (पु० न०) कौ शेते । शी+ड । कुशनाम तृण (घास) रामचन्द्रजीका पुत्र । घीके समुद्रसे घिराहुआ द्वीप (जजीरा) पापी । मस्त । पतला । कृश.

कुशध्वज, (पु०) जनकराजाका छोटा भाई.

कुशपुष्प, (न०) कुशाकारं पुष्पं अस्य । जिसके फूल कुशाकी नाईं हों । ग्रन्थिपर्ण वृक्ष.

कुशबुद्धि, (त्रि०) कुशा इव तीक्ष्णा बुद्धिः यस्य । कुशाके समान तीक्ष्ण (तेज) बुद्धिवाला.

कुशल, (न०) कुश् कलन् । कल्याण । सुख । सुखी (त्रि०) । कुशान् लाति । ला+क । चतुर (त्रि०) काममें चतुर.

कुशस्थल, (न०) ६ त० । कन्नौज देश । कान्यकुब्ज । द्वारका (स्त्री०) ङीप्.

कुशा, (स्त्री०) कुश्+क । लगाम । रस्सी । मधुककोटि.

कुशाग्रम्, (न०) कुशाया अग्रं-ष० त० । कुशनामी तृणकी तीक्ष्ण नोक.

कुशाग्रीयं, (त्रि०) कुशाग्रं इव छ । बहुत महीन । अतिसूक्ष्म.

कुशाचीरम्, (न०) कुशया निर्मितं चीरं । कुशाके तृणसे बनाई गई पौशाक.

कुशासनम्, (न०) कुशाया आसनं-ष० त० । कुशाका आसन । कुशाकी बनीहुई चटाई.

कुशावती, (स्त्री०) कुश्+अस्त्यर्थे मतुप् । मस्य वः दीर्घः । रामचन्द्रजीके पुत्र, कुशकी पुरी वा राजधानी.

कुशिक, (पु०) कुश्+अस्त्यर्थे ठन् । जमदग्निका पिता । विश्वामित्रका पिता । मुनिभेद । "कुश इव" काही । सर्जवृक्ष । बहेडा.

कुशिन्, (त्रि०) कुशा+इन् । कुशासे मिला हुआ जल.

कुशीलव, (पु०) कुत्सितं शीलं अस्त्यर्थे व । कुशीलं वाति । और देशमें यशको प्रसिद्ध करनेवाला । नट । कत्थक । मांगनेवाला । वाल्मीकमुनि । भाट.

कुशीलव, (पु०) द्वि० व० । कुशश्च लवश्च । द्वि० नि० । रामजीके दोनों पुत्र.

कुशूल, (पु०) कुश्+कूलच् । तुषाग्नि । तोहकी आग । अन्नका कोठा । ईंट आदिका बनाहुआ धान्य आदि रखने-लायक जगह । भडोला.

कुशेशय, (न०) कुशे जले शेते । शी+अच्-अलुक् । कमल । सारसपक्षी । करनेका वृक्ष.

कुशोदकम्, (न०) कुशायुक्तं उदकं । जलसे मिला हुआ कुशका तृण.

कुष्, खेंचना-क्र्या० पर० सक० सेट् । कुष्णाति । अकोषीत्.

कुषाकु, (पु०) कुष्णाति । कुष्+काकु । वानर सूर्य । आग । शरीर.

कुष्ठ, (न०) कुष्णाति रोगं देहं वा । कुष्+कथन् । एक रोग । एक दवाई । कोहड । कुष्ठ.

कुष्ठारि, (पु०) ६ त० । विट्खदिर । पटोल । गन्धक.

कुष्ठिन्, (त्रि०) कुष्ठ+अस्त्यर्थे इनि । कुष्ठरोगयुक्त । कोहडी.

कुष्माण्ड, (पु०) ईषत् ऊष्मा पित्तहेतुत्वात् । अण्डेषु बीजेषु यस्य शक० । जिसके बीजोंमें थोडीसी गर्मी हो । कुमडानामी वृक्ष । शिवजीके गणदेवताका भेद । "स्त्रियां ङीप्" । लताभेद । दुर्गा । उमा.

कुस्, आलिङ्गन करना । दिवा० पर० सक० सेट् । कुस्यति । अकुसत् । अकोसीत्.

कुसित, (पु०) कुस्+क्त । जनपद । आवाद नगर । थोडाचिट्ठा.

कुसीद, (न०) जो निर्भय होकर दुःखीहोतेहुएसेभी चार वा आठगुणा लियाजाताहै । सूद । व्याज । अर्थप्रयोग.

कुसुम, (न०) कुस्+उमक् । फूल । फल । स्त्रीरज । नेत्रका रोगभेद.

कुसुमकार्मुकः-चापधन्वन्, (पु०) कुसुमानि कार्मुकं= धनुः यस्य-ब० स० । फूल (अशोक-आय आदिके) ही जिसका धनुष् है । कामदेव.

कुसुमपुर, (न०) पटना नामसे प्रसिद्ध देश । पाटलीपुत्र "कुसुम" यहीअर्थ.

कुसुमपुरम्, (न०) कुसुमानां पुरम् । पाटलीपुत्र (पटना) नगरका नाम है.

कुसुमवत्, (त्रि०) कुसुम+मतुप् । फूलोंवाला.

कुसुमवती, (स्त्री०) कुसुम+मतुप्+ईप् । फूलवाली । वह स्त्री० जिसको मासिक ऋतुधर्म (फूल) आगया हो । ऋतु-मती स्त्री.

कुसुमलता, (स्त्री०) कुसुमानां लता । फूलोंकी बेल.

कुसुमशयनम्, (न०) कुसुमानां शयनम् । फूलोंकी शय्या (छेज).

कुसुमस्तबकः, (पु०) कुसुमानां स्तवकः । फूलोंका गुच्छा.

कुसुमाकर, (पु०) ६ त० । फूलोंकी खान । वसन्त ऋतु । "ऋतूनां कुसुमाकरः" गीता.

कुसुमापीड, (पु०) कुसुमानां आपीडः-भूषणम् । फूलोंकी माला । फूलोंका भूषण (जेवर).

कुसुमायुध, (पु०) कुसुमं आयुधं अस्य । जिसका फूल शस्त्र है । कामदेव.

कुसुमासव, (न०) कुसुमस्य तद्रसस्य आसवः । फूलके रसका मद्य । फूलका मधु । फूलका मद्य । शहत । फूलोंकी शराब.

कुसुमित, (त्रि०) कुसुम+इतच् । फूलवाला । जिसपर फूल निकल आये हों.

कुसुमेषु, (पु०) कुसुमानि इषवो यस्य । फूल जिसके बाण हैं । कामदेव.

कुसुमोच्चय, (पु०) कुसुमानां उच्चयः । फूलोंका समूह । गुच्छा.

कुसुमोज्ज्वल, (त्रि०) कुसुमैः उज्ज्वलः । तृ० त० । फूलोंसे चमकीला.

कुसुम्भ, (न०) कुस्+उम्भ । फूल जिसमें बहुत हों ऐसा वृक्ष । कुसुम्भा । फूल । "स्वार्थे" क । कमण्डलु.

कुसृति, (स्त्री०) कुत्सिता सृतिः । सृ+क्तिन् । शठता । शरारत । जादूगरी.

कुस्तुभ, (पु०) कुं भूमिं ईषद् वा स्तुभ्नाति । स्तुम्भ्+ अच् । नलोपः नि० । विष्णु । समुद्र.

कुह, आश्चर्यहोना । चुरा० आत्म० सक० सेट् । कुहयते अचूकुहत्.

कुह, (अव्य०) कुत्र । "कहा" इसी अर्थमें होताहै.

कुहक, (न०) कुह्+ण्वुल् । इन्द्रजालकी मायासे किसी वस्तुका औरही प्रकारके दीखना । माया । इन्द्रजाल । छल । जादूगरी । धूर्त (त्रि०).

कुहर, (पु०) कुं हरति । हृ+अच् । गुहा । गुफा । नाग-भेद । गढा । छिद्र । गला । कान । एकप्रकारका साप.

कुहु-हू, (स्त्री०) कुह्+कु वा ऊङ् । वह अमावस्या कि जिसमें चन्द्रमाकी कला छिपजाय और चतुर्दशीसे युक्त हो । कोइलका आलाप (बोलना).

कुहुकण्ठ, (पु०) कुहूरिति शब्दः कण्ठे यस्य । जिसके गलेमें कुहू ऐसा शब्द होताहै । कोकिल । कोइल.

कू, आवाज करना । क्र्या० उभ० अक० सेट् । कुनाति-कुनीते । अकवीत् । अकविष्ट.

कूकुद, (पु०) भूषितकन्यादाता गहनेकपडोंसे सहजाकर कन्यादेनहारा । चिह्न । निशान.

कूचिका, (स्त्री०) कू+चिक्-संज्ञायां कन् । तूलिका । वालोंकी कलम । "कूचि".

कूज,–शब्दकरना । भ्वा० पर० सक० सेट् । कूजति-अकूजीत्.

कूजित, (न०) कूज+क्त । पक्षीकी आवाज । अप्रकटशब्द.

कूट, (पु०) कूट्+अच् । कर्मणि घञ् वा । अगस्त्यमुनि । घर (पु०) (स्त्री०) न हिलनेवाला । धान आदिका ढेर । लोहेका मुद्गर । पाखण्ड । माया । यथार्थ वस्तुका ढांकना । पर्वतकी चोटी । तुच्छ । हलका अङ्ग । मूर्ख । मृगोंके बांधनेकी कला । पुरद्वार (पु०).

कूटकृत्, (पु०) कूटं मिथ्याभूतं करोति । कृ+क्विप्-तुक्च कायस्थ । कायथ । कितव । धूर्त । दगाबाज । घडे आदिके पाकका स्थान.

कूटकारः–कारकः, (पु०) कूटं करोति=वदति । झूठी साक्षी (गवाही) देनेवाला.

कूटतुला, (स्त्री०) कूटा=मिथ्या तुला । तकडीके झूठे पलडे । झूठी तकडी.

कूटधर्म, (त्रि०) कूटः धर्मः यस्य । कूठे धर्मवाला स्थान–घर–नगरआदि.

कूटमानम्, (न०) कूटं मानम् । झूठा माप.

कूटयुद्धम्, (न०) कूटं युद्धं । झूठा युद्ध (लडाई).

कूटसाक्षिन्, (त्रि०) झूठीगवाही देनेवाला । झूठागवाह.

कूटस्थ, (त्रि०) जो लोहेके मुद्गरके समान निश्चल है । स्था+क । सर्वकालमें रहनेवाले कभी न बदलनेवाले आकाश आदि । ब्रह्म । व्याघ्रनखनाम गन्धद्रव्य (पु०).

कूटस्वर्णम्, (न०) कूटं स्वर्णम् । झूठा सोना.

कूटाक्ष, (पु०) कूटः+अक्षः । झूठा वास्स । कूटागार.

कूटाख्यानं, (न०) कूटं आख्यानं । झूठी कथा । बनावटी कथा । मनघडत कहानी.

कूटागारं, (न०) क्रीडागृह । खेलनेका घर । झूठा घर । चौखण्डी.

कूटार्थः, (पु०) कूटः अर्थः । पेचदार अर्थ जिसके दो अर्थ हैं । मतलबवाला.

कूटोपाय, (पु०) कूटः उपायः । झूठा उपाय । छल.

कूप, (पु०) कुत्सिता ईषत् वा आपो यत्र । अच् समा० । कुवन्ति मण्डूका अस्मिन् । कू-पक्-दीर्घश्च वा । कूआ । जहां बुरा वा थोडा जल होताहै । जहां मेंडक बोलतेहैं । टोया "संज्ञायां कन्" । नाव बांधनेका थम्मा । तेलका पात्र । मस्तूल.

कूप्, चु० उभ० । कूपयति-ते, कूपित । निर्बल होना । कमजोर होना.

कूपमण्डूकः–की, (पु० स्त्री०) कूपे मण्डूकः । खूऐका मेंडक । एक अपरिचित (अनजान) व्यक्ति (शकस) । जिसको संसारका कुछ ज्ञान नहीं, केवल अडोसपडोसके लोगोंकोही जानता है । किसीको तिरस्कारका वाक्य बेसमझके लिये.

कूपयन्त्रम्, (न०) कूपस्य यन्त्रम् । खूएका यन्त्र । खूएसे पानी निकालनेकी मैशीन (कला),

कूपयन्त्रघटिका–घटी, (स्त्री०) कूपस्य यन्त्रघटिका । खूएमेंसे जल निकालनेके लिये अरहट्ट (चक्र) के साथ लगाई गई घडियें.

कूपकः, (पु०) कूप इव । कन्–इवार्थे । खूएकी भांति । थोडे समयके लिये बनावटी खूआ । छिद्र (सुराख) । गुफा । चूतडोंके नीचेका सुराख । जहाजका पतवार । चिता । चिताके नीचेका गडा । चमडेका कुप्पा । नदीके मध्यका पर्वत वा वृक्ष । किसी नाव कूपिका (स्त्री०) नरहके बीचका पत्थर.

कूपी, (स्त्री०) कूप्+ई । छोटीखूई । खूई । बोतल.

कूर्च, (पु० न०) कुर्यते । कुर+चट्-नि दीर्घः । भौंका बीच दाडी । छल । दर्भ । मोरकी पूछ । कुशाकी मुट्ठी । चरण । सिर.

कूर्चशीर्ष, (पु०) कूर्चं श्मश्रु तद्वत् शीर्षं अस्य । जिसका सिर दाढीके समान हो । नारिकेल । नारियेल । नरेल.

कूर्पास, (पु०) कञ्चुकी । अंगिया.

कूर्म, (पु०) कुत्सितः कौ वा ऊर्मिर्वेगो यस्य पृ० । कच्छू । देहका एक प्रकारका वायु.

कूर्मचक्र, (न०) कूर्माकारं चक्रम् । ज्योतिषमें कहागया कृषिकर्मके लायक । जपादि कर्मके लायक । कच्छूके आकारका चक्र.

कूर्मपृष्ठ–पृष्ठकम्, (न०) कूर्मस्य पृष्ठम् । कछुकी पीठ । थालीका ढकना.

कूर्मावतार, (पु०) कूर्मस्य अवतारः । ष० त० । कछुएका अवतार विष्णुका.

कूल्,–ढांकना । भ्वा० पर० सक० सेट् । कूलति । अकूलीत्.

कूलङ्कष, (पु०) कूलं कषति । कष् । खच्-मुम् च । समुद्र । नदी (स्त्री०).

कूवर, (पु० न०) कूङ्-शब्द करना+वरच् । गाडीके पहियेकी लकडीको जोडनेवाला काष्ठ । जूलेको उठानेवाला रथ । जिरह.

कूष्माण्ड, (पु०) कुत्सितः ऊष्मा अण्डेषु बीजेषु यस्य । जिसके बीजोंमें बुरी गरमी हो । वृक्षभेद । पेठा । गणदेवताका भेद.

कृ, करना । भ्वा० उभ० सक० अनिट् । करति–करते । अकार्षीत् । अकृत.

कृ, करना । तना० उभ० सक० अनिट् । करोति । कुरुते । अकार्षीत् । अकृत.

कॄ, फेंकना । तुदा० पर० सक० सेट् । किरति । अकारीत् । कीर्णः.

कृकवाकु, (पु०) कृकेण कण्ठेन वक्ति । वच्-वोलना-ञुण् कश्च । कुक्कड । मोर । सरट पक्षी.

कृकाटिका, (स्त्री०) कृकं कण्ठं अटति । अट्+ण्वुल्-टाप्-कापि अतइत्वम् । ग्रीवामें ऊंची जगह । घण्डी.

कृच्छ्र, (न०) कृत्+रक्-छोऽन्तादेशः । कष्ट । दुःख । दुःखका कारण पाप । कष्टदेनेवाला प्राजापत्य आदि व्रत । मूत्रकृच्छ्ररोग.

कृत्, काटना । तुदा० पर० सक० सेट् । चकर्त । कृन्तति । अकर्तीत् ।

कृत्, कीर्तन करना । चु० उभ० सक० सेट् । कीर्तयति-ते । अचकीर्तत्-त । कृत्तः.

कृत, (न०) कृ+क्त । देवताओंका वारहजार वर्ष । मनुष्योंके मानसे १७२८००० वर्ष । सत्ययुग । पूरा । अलं । वस । फल । रचागया (त्रि०).

कृतक, (न०) कृत+कुन् । वनावटी । झूठीकल्पना किया गया.

कृतकर्मन्, (त्रि०) । कृतं कर्म । येन । जो अपना काम कर चुका है । चतुर । परमात्मा । संन्यासी.

कृतकृत्य, (त्रि०) कृतं कृत्यं कर्तव्यं येन । जो अपना काम करचुकाहो । कृतार्थ । समाप्तकार्य । धन्य । विद्वान्.

कृतकृत्यः-क्रियः, (त्रि०) कृतं कृत्यं येन । जिसने अपना प्रयोजन सिद्ध कर लिया है । कामयाव.

कृतक्षण, (त्रि०) कृतः क्षणः समयो येन । जिसे समय मिलगया हो । लब्धावकाश.

कृतघ्न, (त्रि०) कृतं हन्ति । हन्+क । जो कियेको नाश कर्ता है । उपकारीका अपकार करनेहारा । "कृतघ्ने नास्ति निष्कृतिः" पुराणम्.

कृतचूड, (पु०) कृतं चूडाकर्म यस्य । जिसका चूडाकर्म (मुण्डनसंस्कार) हो चुका है.

कृतज्ञ, (त्रि०) कृतं जानाति ज्ञा+क । कियेको जानेहारा । शुकरगुजार.

कृतज्ञ, (त्रि०) कृतं कृतोपकारं जानाति । ज्ञा+क । जो कियेगये उपकारको जानता है । उलट कर उपकार करनेवाला.

कृतधी, (त्रि०) कृता सम्पादिता धीर्येन । जिसने शास्त्र-के अभ्याससे अन्तःकरणको शुद्ध कियाहै.

कृतप्रणाश, (पु०) कियेगये पुण्य और पापका भोगके विना नाश होना । कृतहानि । पुण्यपापकी हानि.

कृतम्, (अव्य०) "अलं" इस अर्थमें । वस । निषेध । रोकना.

कृतलक्षण, (त्रि०) कृतानि लक्षणानि अस्य । जिसके लक्षण कियेगये हों । गुणोंसे प्रसिद्ध कियागया.

कृतविद्य, (त्रि०) कृता अभ्यस्ता विद्या येन । जिसने विद्याका अभ्यास किया हो । अभ्यस्तविद्य । विद्वान्.

कृतवीर्य, (पु०) कृतं वीर्यं अनेन । एकवीरराजाका पुत्र । वली । एक राजा.

कृतश्रम, (त्रि०) कृतः श्रमो येन । (जिसने मिहनत की हो । महोत्साही । वडे चाववाला.

कृतस्वर, (पु०) कृतः स्वरो यत्र । सोनेके उपजनेकी जगह । सोनेकी खान.

कृतहस्त, (त्रि०) कृतः अभ्यस्तः हस्तो येन । जिसके हाथमें वाण आदि चलानेकी चतुराई हो । तिरंदाज सीखा-हुआ जन.

कृताञ्जलि, (पु०) जो हाथ जोडनेके समान पत्तोंको सिकोड लेताहै । लज्जालुवृक्ष । हाथ जोडेहुए (त्रि०).

कृतात्मन्, (पु०) कृतः शिक्षितः संस्कृतो वा आत्मा अन्तःकरणं यस्य । जिसका चित्त सीखाहुआ है । जिसका मन साफ है । शिक्षितचित्त । शुद्धान्तःकरण.

कृतात्यय, (पु०) कृतस्य कर्मजन्यभोगस्य अत्ययोऽ-वसानं । कर्मसे उत्पन्नहुए भोगका अन्त । भोगके विना कियेगये कर्मका नाश.

कृतान्त, (पु०) कृतः अन्तो येन । जिसने अन्त कर-लिया । सिद्धान्तको जानाहुआ । ज्ञातसिद्धान्त । "कृतो नाशो येन" । नाशकरनेवाला । दैव । पाप । यम.

कृतार्थ, (त्रि०) कृतः अर्थः प्रयोजनं येन । जिसनें काम करलिया । कृतकार्य.

कृतास्त्र, (त्रि०) कृतं शिक्षितं अस्त्रं येन । जिसनें अस्त्र-का चलाना सीख लियाहो । शिक्षितास्त्र.

कृति, (स्त्री०) कृ+क्तिन् । पुरुषका प्रयत्न । कर्ताका व्यापार । २० अक्षरके पादवाला छन्दोभेद.

कृतिन्, (पु०) कृतमनेन । पण्डित । योग । पुण्यवान् । चतुर । साधु । कृतार्थ.

कृतोदक, (त्रि०) कृतः उदकसंस्कारः यस्य । ब० स० । जिसका तर्पण वा जलाञ्जलिसंस्कार किया गया हो । अञ्जली दिया हुआ.

कृतोद्वाह, (त्रि०) कृतः उद्वाहः येन । ब० स० । जिसका विवाह होगया हो.

कृतोपकार, (त्रि०) कृतः उपकारः यस्य । ब० स० । उप-कार किया गया । सहायता पहुंचाया गया.

कृतोपभोग, (त्रि०) कृतः उपभोगः येन । जिसका भोग भोग लिया है । किसी वस्तुको काममें ला चुका हो.

कृत्त, (त्रि०) कृत्+क्त । काटागया । घेराहुआ.

कृत्ति, (त्रि०) कृत्+क्तिन् । चमडा । भोजपत्र.

कृत्तिका, (स्त्री०) कृत्+क्तिन्-संज्ञायां कन् । अश्विनीसे तीसरा तारा.

कृत्तिवासस, (पु०) कृत्तिश्चर्म वासो यस्य । चमडा जिनका कपडा है । कृत्तिं वस्ते । वस्+असुन् । वा । शिवजी महाराज.

कृत्नु, (त्रि०) कृ+क्नु । अच्छा काम करनेवाला । शक्तिमान्.

कृत्य, (न०) कृत्+क्यप् । काम । व्याकरणमें कहेगये ण्यत्, क्यप्, तव्य, अनीयर्, यत्, केलिम प्रत्यय (पु०) करनेलायक (त्रि०)

कृत्रिम, (न०) कृ+क्ति-क्त्रेर्मप्च । विड्लवण । काचलवण । एक प्रकारका निमक । तुरस्कनाम गन्धद्रव्य । बारह प्रकारके पुत्रोंमेंसे एक (पु०) बनावटी (त्रि०) । मुतवन्ना.

कृत्स्न, (न०) कृत्+क्स्न । सारा । पानी । कुक्षि । कोख । सम्पूर्ण (त्रि०).

कृन्तन, (न०) कृत्+ल्युट् । नि० मुमूच । काटना । छेदन.

कृप्, कल्पना करना-रचना करना । भ्वा० आत्म० । लुङ् लुट् लृट् लृङ्में उभ० अक० वेट् । कल्पते । अकल्पत् । अकल्पिष्ट-अक्लृप्त । कल्प्तासि । कल्पितासे-कल्प्तासे । कल्प्स्यति । कल्पिष्यते.

कृप, (पु०) कृप्+क । शरद्वान्का पुत्र । द्रोणका साला । कृपाचार्य.

कृपण, (पु०) कृप्+क्युन् । कीडा । मूर्ख । कमीना । दीन । सूम । न देनेवाला (त्रि०).

कृपा, (स्त्री०) कृप्+अङ् । दया । फलको न चाहकर दीनजनोंपर अनुग्रह करनेकी इच्छा.

कृपाण, (पु०) कृपां नुदति । नुद्+ड । तलवार । "ङीप्" कृपाणी इसी अर्थमें । छुरी । कैंची.

कृपालु, (त्रि०) कृपां लाति । ला+डु । कृपायुक्त । दयावाला.

कृपी, (स्त्री०) द्रोणाचार्यकी स्त्री । शरद्वानकी पुत्री.

कृपीट, (न०) कृप्+कीटन् । उदर । पेट । तोय । जल । पानी.

कृपीटयोनि, (पु०) कृपीटस्य जलस्य योनिः । जलका कारण । वह्नि । अग्नि । आग.

कृमि, (पु०) क्रम्+इन् । सम्प्रसारणं च । कीडा । लाख । पेटके कीडोंका रोग.

कृमिकोषोत्थ, (न०) कृमेः कोषात् उत्तिष्ठते । उद्+स्था+क । जो कीडोंके कोषसे बनता है । कौषेय । रेशमी कपडा.

कृमिघ्न, (पु०) कृमिं हन्ति । हन्+क । वावडिङ्ग । गंडा । हल्दी (स्त्री०) धूपपत्रा.

कृश्, छोटाकरना । दिवा० पर० सक० सेट् । कृश्यति । अकृशत् । अकर्शीत्.

कृश, (त्रि०) कृश+क्त । नि० । थोडा महीन । अल्प । सूक्ष्म.

कृशतनु, (स्त्री०) कृशा तनुः यस्याः । जिसका शरीर पतला है । कोमल शरीरवाली । कृशोदरी.

कृशाङ्ग, (त्रि०) कृशानि अङ्गानि यस्य । कमजोर अंगोंवाला । पतला.

कृशानु, (पु०) कृश्+आनुक् । आग । चित्रकवृक्ष.

कृशानुरेतस, (पु०) कृशानौ वह्नौ रेतो यस्य । आगमें जिसका वीर्य पडाहै । शिवजी । पार्वती वीर्यको न सहारसकी इसलिये आगमें फेंकागया । यहांसे अग्निके समान कार्तिकेय हुआ.

कृष्, खेंचना । तुदा० आत्म० सक० अनिट् । कृषते । अकृक्षत्-अकृष्ट.

कृष्, खेंचना । भ्वा० पर० सक० अनिट् । कर्षति । अक्राक्षीत्-अकार्क्षीत् । अकृक्षत्.

कृषक, (पु०) कृष्+कुन् । समय । वक्त । बैल । खेंचनेवाला (त्रि०) खेतीकरनेवाला.

कृषि, (स्त्री०) कृष्+इक् । वैश्यका काम । खेतीकरना । किश्तकारी.

कृषीवल, (त्रि०) कृषिः अस्य अस्ति । वलच् । दीर्घश्च खेतीकरनेवाला.

कृष्ट, (त्रि०) कृष्-कर्मणि क्त । खेंचा गया । लुभाया गया.

कृष्ण, (पु०) कृष्+नक् । भगवान्के अवतारका भेद । वसुदेवका पुत्र । देवकीनन्दन । सच्चिदानन्दस्वरूप ब्रह्म । वेदव्यास । अर्जुन । कालारंगहोनेसे कौआ । कोइल । नीला रंग । नीलेरंगवाला (त्रि०).

कृष्णगन्ध, (पु०) कृष्ण उग्रः गन्धोऽस्य । सुहांजनेका दरख्त.

कृष्णद्वैपायन, (पु०) द्वीपे भवः । फञ् । व्यास । उसका पराशरसे यमुनाद्वीपमें जन्म हुआ । इति पुराणम्.

कृष्णपक्ष, (पु०) प्रतिपदासे अमावास्यातक पन्द्रह तिथियें । मासका समय । अंधेरापाख.

कृष्णलोह, (न०) अयस्कान्त । चुम्बक (चमक) । पत्थर.

कृष्णवर्त्मन्, (पु०) कृष्णं वर्त्म अस्य । जिसका मार्ग काला है । आग । राहुग्रह । चित्रकवृक्ष । दुष्ट कामकरनेवाला (त्रि०).

कृष्णवर्त्मन्, (पु०) कृष्णं वर्त्म यस्य । ब० स० । काले मार्गवाला । अग्नि.

कृष्णशा(सा)र, (पु०) कृष्णश्चासौ शारः (सारः) शबलश्च । कालसारमृग । हरिणका भेद । जो काला औ चित्रित हो । टालीका द्रख्त.

कृष्णसखः-सारथिः, (पु०) कृष्णस्य सखा वा कृष्णस्य सारथिः-टच् स० । श्रीकृष्णका मित्र वा रथवाही । अर्जुन.

कृष्णाजिन, (न०) कृष्णसार हरिणका चमडा.

कृष्णालक, (पु०) कृष्णं वर्णं लाति । ला+क । कनूच । गुञ्जाफल । रत्ती । वह आधी काली होतीहै.

कृष्णाष्टमी, (स्त्री०) कृष्णस्य अष्टमी । कृष्णके जन्मदिन श्रावणकृष्णपक्षकी अष्टमी । गोकुलाष्टमी इसी अर्थमें.

कृष्णिका, (स्त्री०) कृष्णेव । संज्ञायां कन् । राई । राजसर्षप.

कृष्या, (स्त्री०) कृष्+अर्हार्थे क्यप् । खेंचनेलायक पृथिवी.

केकय, (पु०) देशभेद । सूर्यवंशीयराजाका भेद । दशरथराजाकी स्त्री (स्त्री०).

केकर, (पु०) के मूर्ध्नि कर्तुं शीलं अस्य । कृ+अच् । अलुक् स० । निम्नोन्नताक्षियुक्तपुरुष । नीची ऊंची आंखवाला पुरुष । टीरा.

केका, (स्त्री०) के मूर्ध्नि कायते कर्मणि ड अलुक् स० । मोरकी वाणी.

केकिन्, (पु०) केका अस्त्यर्थे इनि । मोर । मयूर.

केतक, (पु०) कित्-निवास करना । ण्वुल् । केतकीवृक्ष । क्योडा.

केतन, (न०) कित्+ल्युट् । घर । झण्डा । चिह्न । काम । धंधा कृत्य.

केतु, (पु०) चाय्+तु क्यादेशः । रोग । चमक । झण्डी । चिह्न । शत्रु । नवग्रहोंमेंसे एक ग्रह । धूमकेतु । बीमारी.

केदार, (पु०) के शिरसि दारोऽस्य । पर्वतभेद । केदारेश्वर महादेव । पृथिवीका भागविशेष । क्यारा.

केनिपात, (पु०) के जले निपातोऽस्य अलुक् स० । अरित्र । बेडी आदिकी गतिको रोकनेवाला । हालानामसे प्रसिद्ध काष्ठ । "केनिपातक" यही अर्थ.

केयूर, (पु०) के बाहुशिरसि याति । या+उरक् । अलुक् स० । जो भुजाके सिरेपर डालाजाताहै । बाजु । बुहट्टा.

केरल, (पु०) देशभेद । वह देश कि जहां वेदसे यज्ञकरनेका अधिकार नहीं । क्षत्रियभेद.

केल्, दिलाना । भ्वा० पर० सक० सेट् । केलति । अकेलीत्.

केलि, (पु० स्त्री०) केल्+इन् । परीहास । मखौल । खल । पृथिवी.

केव्, सेवाकरना । भ्वा० आ० सक० सेट् । केवते । अकेविष्ट.

केवल, (त्रि०) केव्+कलच् । के सरति वलयति । वल्+अच् । अलुक् स० । एक । अकेला । पूरा । निश्चय कियाहुआ । ज्ञानभेद । शुद्ध । साफ (न०).

केश, (पु०) क्लिश्यते क्लिश्नाति वा क्लिश्+अच् ललोपश्च । कस्य ईशो वा । वरुण । दैत्यभेद । विष्णु । वाल । मज्जधातुका उपधातुविशेष.

केशपाशी, (स्त्री०) केश+पाश+ङीष् । शिखा । चोटी । केशोंके वीचकी चूडा (कलगी).

केशमार्जक, (न०) केशान् मार्ष्टि । मृज्+ण्वुल् । कंगी । कंकतिका.

केशर, (पु०) के जले शीर्यते । शृ+अप् । शेरके कंधेकी जटा । घोडेके कंधेपरके वाल । फूलकी तिरी । नागकेसरका द्रख्त । सुपारीका पेड.

केश(स)रिन्, (पु०) केश(स)राः सन्त्यस्य इनि । सिंह । शेर । घोडा । पुन्नागवृक्ष । नागकेसर । वीजपूरकवृक्ष । तरवूज । हनुमान्का पिता । वानरभेद.

केशव, (पु०) केशौ ब्रह्मरुद्रौ अपि अनुकम्प्यतया वाति वा+ड । ब्रह्मा और रुद्रजीपरभी जो दया कर्ता है । "केशं केशिनं वाति हिनस्ति वा क" विष्णु । केशीदैत्यके मारनेवाला । सूर्य आदि अंशवाला परमेश्वर । केश+प्राशस्त्ये व" । अच्छे वालोंवाला.

केशवेश, (पु०) केशस्य वेशः । वालोंकी सजावट । गुत्तका वंधन.

केशिका, (स्त्री०) केशिन इव कायति । कै-क । शतावरी नाम एक वृक्ष.

केशिन्, (त्रि०) प्रशस्ताः केशाः सन्त्यस्य । केश+इनि । अच्छे वालोंवाला । विष्णु । दैत्यभेद । सिंह । शेर.

केशिनिषू(सू)दन, (पु०) केशिनं निषूदयति हिनस्ति । नि+सूद+णिच्+ल्युट् । केशीको मारनेवाला । कृष्ण । "केशिहा" यही अर्थ.

कै, शब्दकरना । भ्वा० पर० अक० अनिट् । कायति । अकासीत्.

कैकसः, (पु०) कीकस-अण् । कीकस पुत्र । एक दैत्य । जिन्न.

कैकेय, (पु०) केकयानां राजा, अण् । केकय देशका राजा वा शासक.

कैकेयी, (स्त्री०) केकयस्यापत्यं स्त्री अण् । भरतकी मा । दशरथकी स्त्री.

कैटभजित्, (पु०) कैटभं जितवान् । जि+भूते क्विप् तुक्च । विष्णु.

कैतकम्, (न०) केतक्याः पुष्पं-अण् । केतकी (केवडा). वृक्षका फूल.

कैतव, (न०) कितवस्य कर्म अण् । कपटता । छल । जूआ । धत्तूरा.

कैदारिक, (न०) केदार+समूहार्थे वुन् । ठञ् वा । क्षेत्रसमूह । बहुत खेत.

कैरव, (न०) के जले रौति । रु+अच् । अलुक् समा० । "केरवो हंसः तस्य प्रियं अण्" कुमुद । उत्पल । चिट्टा कमल । शत्रु.

कैरवी, (स्त्री०) केरवाय हिता अण् । चन्द्रिका । चांदनी.

कैलास, (पु०) के जले लासो लसनं दीप्तिः अस्य अलुक् स० । केलसः स्फटिकः तस्य इव शुभ्रः अण् । पानीमें चमकरहे बिल्लौरके समान चिट्टा । शिव और कुबेरजीका स्थान । एक पर्वत है.

कैलासपति, (पु०) ६ त० । कैलासके पति । शंकर । शिव.

कैवर्त, (पु०) के जले वर्तते । वृत+अच्-अलुक् स० ततः स्वार्थे अण् । जो अधिक पानीमें रहे । धीवरजाति । मच्छी पकडनेहारा.

कैवल्य, (न०) केवलस्य शुद्धस्य भावः । शुद्धहोना । निर्वाण । मोक्ष । मुक्ति.

कैशिक, (त्रि०) की-स्त्री० केश+ठक् । केशोंकी भांति । वालकी भांति सुन्दर.

कैशोर, (न०) किशोरस्य भावः अञ् । किशोरपना । दस वर्षतक पौगण्ड और पन्द्रह वर्षतक यह अवस्था है.

कैश्य, (पु०) केशानां समूहः ष्यञ् । केशों (वालों)-का समूह.

कोक, (पु०) कोकते । कुक्-लेना+अच् । चकवा । वृक (भेडिया) खजूरका वृक्ष । मेंडक । विष्णु.

कोकनद, (पुं०) कोक+नद्+अच् । लाल कुमुद । लाल कमल । कोकनबेर.

कोकिल, ला (पु० स्त्री०) कुक्+इलच् । कोइलपक्षी । उल्का । चुआत्ती.

कोकिलाक्ष, (पु०) कोकिलस्य अक्षीव रक्तं अक्षि पुष्पं अस्य । कोइलकी आंखके समान जिसके लाल फूल हों । तालमखाना.

कोकिलावास, (पु०) ६ त० । आम्रवृक्ष । आमका दरख्त.

कोङ्कण, (पु०) कोमिति कणन्ति अत्र । एक देशका नाम । सह्यपर्वत और समुद्रके बीचकी भूमि.

कोच, (पु०) कुच्+अच् । खेंचना । सूकना । देशभेद । जातिभेद.

कोजागर, (पु०) को जागर्ति इति लक्ष्म्या उक्तिः अत्र । पृ० । अस्सूकी पूर्णिमा.

कोट, (पु०) कुट्+घञ् । कुटिलता । दुर्ग । गड । किला.

कोटर, (पु०)(न०) कोटं कौटिल्यं राति । रा-क । वृक्षकी गुहा । समूह । कुटिया.

कोटवी, (स्त्री०) कोटं वाति । वा+क । ङीष् । नंगी औरत । दुर्गा.

कोटिः-टी, (पु० स्त्री०) कट्+इञ् । कमानका मुडा हुआ सिरा । धनुषकी नोक । उत्कर्षता । चन्द्रमाकी कला । एक करोडकी संख्या.

कोटीर, (पु०) कोटिं ईरयति । ईर्+अण् । किरीट । मुकुट । जटा.

कोटीश्वर, (पु०) कोट्याः ईश्वरः । एक करोडका अधिपति (मालिक).

कोट्ट, (पु०) कुट्+घञ् । नि० । गुणः । दुर्ग । किला । राजधानीभेद.

कोट्टार, (पु०) कुट्ट+आरक् । अरघट्टा खूआ । तलावडीका फाटक.

कोण, (पु०) कुण्+करणे घञ्-कर्तरि अच्वा । वीणा आदि बजानेका साधन जो धनुषके समान लकडी होती है । घरआदिका एक देश । अस्त्रोंका सिरा । लठ । मङ्गल-ग्रह । तरवारकी तेज धार.

कोदण्ड, (न०) कु-शब्दकरना-विच् । कोदण्डोऽस्य । धनुष मौंकी लता । देश.

कोद्रव, (पु०) कु-विच् । कोः द्रवति । द्रु-अच् कर्म० । धान्यभेद । बाजरा.

कोप, (पु०) कुप्+भावे घञ् । क्रोध । गुस्सा । इच्छा पूरी न होनेसे चित्तका विकार.

कोमल, (न०) कु+कलच् मुट् । नि० गुणः । जल । पानी । मृदु । नरम । नासख्त । मनोहर । सुन्दर (त्रि०).

कोयष्टि, (पु०) कं जलं यष्टिरिव अस्य (पु०) अको ओ होता है । जलकुक्कुभपक्षी । "संज्ञायां कन्" । टिटहरा पक्षी । "कोयष्टिक".

कोरक, (पु० न०) कुर्यते कुर्+वुन् । कली । कमलकी डंडी । यह शब्द प्रायः पुँलिंग है.

कोल, (पु०) कुल्-संस्त्याने-गाढाहोना+अच् । सूअर । शनिग्रह । डोङ्गा । पूला । मेला । मिरच । एक तोला । बेरका फल (न०)

कोलमूल, (न०) कोलस्य बदर्या इव मूलम् । जिसकी जड बेरके समान हो । पिप्पलीमूल.

कोलम्बक, (पु०) कुल्+अम्बच्-संज्ञायां कन् । वीणाका शरीर । आकार.

कोलाहल, (पु०) कुल्+घञ्-तं आहलति-अच् । बहुत प्रकारका दूरजानेवाला अव्यक्त शब्द । रौला । हौरा.

कोविद, (पु०) कुङ्-शब्दकरना-विच् । को वेदस्तं वेत्ति । विद्+क । पण्डित । विद्वान्.

कोविदार, (पु०) कुं भूमिं विद्दणाति । वि+दृ+अण् । रक्तकाञ्चन । कचनाल.

कोश-ष, (पु०), कुश्+घञ् । पानपात्र । शराबका पियाला । कली । तरवारका ढकना । म्यान । खजाना । अण्डकोष । पतालू । पटारी । पात्र । सन्दूक । खाना । पडदा । छिपाहुआ घर.

कोशकारकः, (पु०) कोशं करोति कृ+ण्वुल् । रेशमका खजाना बनानेवाला । रेशमी कीडा.

कोशल, (पु० स्त्री०) कुश्+कलच्-नि० गुणः । अयोध्यापुरी । -ला टाप्.

कोशलात्मजा, (स्त्री०) कोशलानां राजा ६ त० । तस्यात्मजा=बेटी । रामचन्द्रजीकी माता.

कोशशुद्धिः, (स्त्री०) कोशस्य शुद्धिः । पेटकी शुद्धि (सफाई).

कोशाध्यक्षः, (पु०) कोशस्य अध्यक्षः । कोश (खजाना)-का मालिक । खजाञ्ची.

कोषशायिका, (स्त्री०) कोषे शेते । शी+ण्वुल् । छुरीखानेमें रक्खाहुआ चाकू.

कोष्ठ, (पु०) कुष्-उन् । घरका मध्य । धान आदि रखनेका पात्र । भडोला । कुटिया । अयना (त्रि०).

कोष्ण, (न०) ईषदुष्णं कोः कादेशः । जो छूनेमें थोडा गरम हो । गरमवस्तु (त्रि०).

कोहल, (पु०) कौ हलति स्पर्धते । अच् पृ० गुणः । बाजेका भेद । शरावका भेद.

कौक्कुटिक, (पु०) कुक्कुटीं मायां पादपतनदेशं च पश्यति । ठक् । पाखण्डी । कीडे आदिके मरनेके डरसे पांव पडनेकी जगहको देखनेहारा संन्यासी । दम्भी.

कौक्षेयक, (पु०) कुक्षौ सन्ततं बद्धः । ढकञ् । सदा कांखमें दबाईहुई तलवार । तरवार.

कौटतक्ष, (पु०) स्वतन्त्र तर्खान । अपने घरमें इच्छापूर्वक काम करनेवाला.

कौटिक, (त्रि०) कूटेन मृगबन्धनयन्त्रेण चरति ठक् । मांस बेचकर जीविका करनेवाला व्याध (शिकारी) । जो जालके साथ घूमता है.

कौणप, (पु०) कुणपः शवः भक्ष्यत्वेन विद्यतेऽस्य अण् । जो मुर्दे खाता है । राक्षस.

कौतुक, (न०) कुतुक+स्वार्थेऽण् । इच्छा । तमाशा । अजीब देखनेका चाव.

कौतूहल, (न०) कुतूहल स्वार्थेऽण् । कौतुक । तमाशा । बडीचाह.

कौपीन, (न०) कूपे पतनं अर्हति अकार्यार्थे नि० । पाप । पापी (त्रि०) । "गोप्यत्वात् पुरुषलिङ्गं अपि कौपीनं, तदाच्छादकत्वात्" । छिपानेलायक होनेसे पुरुषका लिङ्गका आच्छादन । लंगोटी.

कौबेरी, (स्त्री०) कुबेरस्य इयं अण् । कुबेरकी । उत्तर दिशा (जहां कुबेरजी वास करतेहैं) । कुबेरकी शक्ति । मातृभेद.

कौमार, (न०) कुमारस्य भावः अन् । उपजतेही जिसने पृथ्वीको पांवसे मारा । पांच वर्षतककी अवस्था (उमर) । कार्तिकेयकी शक्ति (स्त्री०) कुमारी.

कौमारिकेयः-(पु०) कुमारिकायाः अपत्यं-ढक्+एय । कुमारीका पुत्र । कुमारीका लडका.

कौमुदी, (स्त्री०) कुमुदानां हर्षहेतुरियं अण् । चांदनी । इसके छूनेसे कुमुद खिलतेहैं । कार्तिककी पूर्णिमा । अस्सूकी पूर्णिमा.

कौमोदकी, (स्त्री०) कोः पृथिव्याः पालकत्वात् मोदकः कुमोदको विष्णुः तस्येयं अण् । पृथिवीको पालन करनेहारे विष्णुकी जो हो । गदाका नाम है । (विष्णुकी गदा).

कौरव, (पु०) कुरोरयम्+अण् । कुरुराजाकी सन्तति । धृतराष्ट्र और पाण्डुके पुत्र (दोनों कुरुके वंशमें उपजनेसे).

कौरव्य, (पु०) कुरु+ण्य । कुरुवंशमें उपजा क्षत्रिय । "कुरवः" बहु०.

कौल, (त्रि०) कुले सत्कुले भवः अण् । अच्छे कुलका । तन्त्रमें कहेहुए कुलाचारमें लगा हुआ.

कौलटिनेय, (पु० स्त्री०) भिक्षुक्याः सत्या अपत्यं ढक् इनादेशश्च । भीखमांगनेवाली सती (पतिव्रता स्त्री) का बेटा । "कुलटायाः अपत्यम्" । व्यभिचारिणीस्त्रीका बेटा । बदमाश औरतका पुत्र.

कौलटेय, (पु० स्त्री०) कुलटायाः सत्या असत्या वा अपत्यं ढक् । व्यभिचारिणी स्त्रीका पुत्र । नेकबाबद फकीरनीका पुत्र । बेटा.

कौलटेर, (पु० स्त्री०) कुलटायाः असत्याः अपत्यं ढक् । बदमाश स्त्रीका पुत्र.

कौलिक, (त्रि०) कुलात् आगतः ठक् । कुलपरम्परासे चलाआया । "कुलेनाचरितः ठक्" । कुलका आचार । "कौलं कुलधर्मं प्रवर्तयति ठक्" । कुलधर्मको चलानेहारा तन्त्रमें कहाहुआ शिवजी । मनु आदि । खानदानी । जुलाहा । शाक्तधर्म.

कौलीन, (न०) कौ पृथिव्यां लीनं यस्मात् । अलुक् समा० । बडोंसे चलाआया । छिपाहुआ । निन्दा । दुष्ट काम । फकीरनीका बेटा । वाममार्गमें शक्तिका उपासक । बुरी खबर । मुरगोंकी लडाई । लडाई । अच्छेकुलमें पैदा हुआ.

कौलूत, (पु०) कुलूतस्य राजा+अण् । कुलूत देशका अधिपति । राजा.

कौलेयक, (पु०) कुले भवः ढकञ् । अच्छे वंशका कुत्ता.

कौशल, (न०) कुशलस्य भावः अण् । काममें चतुराई । खुशी । सम्पदा.

कौशलिका, (स्त्री०) कुशलस्य पृच्छा ठक् । कुशल प्रश्न । "कुशलाय स्वमङ्गलाय नीयते ठञ्" । जिसे अपनी भलाईके लिये लेजातेहैं । उपायन । भेटा । मित्रतासे दूसरेके आरामका पूछना.

कौशलेय, (पु०) कौशल्याया अपत्यं ढक् । यलोप । रामचन्द्र.

कौशल्या, (स्त्री०) कोशलदेशे भवा छय । रामचन्द्रजी-की माता.

कौशाम्बी, (स्त्री०) कुशाम्बेन निर्वृत्ता नगरी । अण् । एकनाम पुराने नगरका जो गंगापर है । वत्सराजाकी नगरी.

कौशिक, (पु०) कुशिकस्य गोत्रापत्यं । कुश+ठञ् । कुशिक+अण् वा । विश्वामित्र मुनि । "कोशे भवः" ठक् । नेवला पकडनेवाला । उल्लू । इन्द्र । गुग्गुल । "कोशेऽधि-कृतः ठक्" । कोशाध्यक्ष । खजानची.

कौशिकी, (स्त्री०) इस नामकी दुर्गा । एक नदी । नाट-कमें एक वृत्ति.

कौशेय, (त्रि०) कोशात् उत्थितं ढक् । कीडाके खजाना-से बनाहुआ कपडा । रेशमी कपडा.

कौसल्यायनिः, (पु०) कौसल्याया अपत्यं फिञ् । श्रीराम-चन्द्रजी.

कौसुम्भ, (पु०) कुसुम्भ+स्वार्थे अण् । बनका कुसुम्भा । शाकभेद । "कुसुम्भेन रक्तं अण्" । कुसुम्भेके रंगसे रंगा-हुआ कपडा आदि.

कौसृतिक, (त्रि०) कुसृत्या चरति ठक् । मायाकरनेवाला । जादूगर । धूर्त.

कौस्तुभ, (पु०) कुं भूमिं स्तुभ्नाति कुस्तुभो जलधिः तत्र भवः अण् । समुद्रसे निकला । विष्णुकी छातीपर बडे तेजवाला मणि.

कौस्तुभवक्षस्, (पु०) ६ व० । कौस्तुभो वक्षसि यस्य । भगवान् विष्णु.

क्नथ, मारना । चुरा० उभ० पक्षे भ्वा० पर० सेट् । क्नथयति-ते । क्नथति । अचिक्नथत्-त । अक्नाथीत्.

क्नस्, टेढाहोना । चमकना । बोलना । दिवा० चुरा० पर० अक० सेट् । क्नस्यति । अक्नसीत्-अक्नासीत् । क्नसयति-ते.

क्नूय्, दुर्गन्ध उठना । गीला होना । शब्दकरना । भ्वा० आत्म० अक० सेट् । क्नूयते । अक्नूयिष्ट । क्नोपयति-ते.

क्रकच, (पु०) क्रयति क्रइति शब्दायते । कच्+अच् । गांठ-दार वृक्ष । आरा (पु० न०) ज्योतिषमें एक योगका भेद.

क्रकचपाद्-द, (पु०) क्रकचमिव पादौ यस्य वा अन्त्यलो-पः । जिसके पांव आरेके समान हों । कृकलास । किरला.

क्रकर, (पु०) क्रइति शब्दं कर्तुं शीलं अस्य । अच् । जो क्र क्र शब्द कर्ताहै । एक प्रकारका तीतर । गरीब आदमी.

क्रतु, (पु०) कृ+कतु । यूपवाला वा यूपके विना यज्ञ । संकल्प । मरीच आदि मुनिविशेष । वैश्वदेवभेद । इन्द्रिय । विष्णुका नाम । शक्ति । इच्छा । मेदा । पूजा । बुद्धि.

क्रतुद्विष्, (पु०) क्रतुं द्वेष्टि । द्विष्+क्विप् । यज्ञका वैरी दैत्य । नास्तिक.

क्रतुध्वंसिन्, (पु०) क्रतुं दक्षयज्ञं ध्वंसयति । ध्वंस्+ णिच्+णिन् । दक्षके यज्ञको नाश करनेवाला शिवजी.

क्रतुपतिः, (पु०) क्रतोः पतिः-ष० त० । यज्ञका पति । यज्ञका अनुष्ठान करनेवाला.

क्रतुपशुः, (पु०) क्रतोः पशुः । यज्ञका पशु.

क्रतुपुरुषः, (पु०) क्रतोः पुरुषः । यज्ञका पुरुष । विष्णु.

क्रतुभुज्, (पु०) क्रतौ यज्ञे दत्तहविरादिकं भुङ्क्ते । भुज्+क्विप् । यज्ञमें दियेगये घीआदिको खानेवाला । अग्नि देवता.

क्रतुराज्, (पु०) क्रतुषु राजते-राज्+क्विप् । यज्ञोंमें चमकता है । यज्ञोंका राजा (अश्वमेध).

क्रतुराज, (पु०) क्रतूनां राजा । टच् समा० । यज्ञोंका राजा । अश्वमेध यज्ञ । राजसूय यज्ञ.

क्रथ्, मारना । भ्वा० पर० अक० सेट् । क्रथति । अक्रथीत्-अक्राथीत्.

क्रथन, (न०) क्रथ् ल्युट् । मारना । काटना । "संज्ञायां कन्" ऊंठ.

क्रदि, रोना । घबराना । अक० । बुलाना । सक० पर० सेट् । क्रन्दति । अक्रन्दीत्.

क्रन्दन, (न०) क्रदि-भावे ल्युट् । शोक आदिसे आंसू गिराना । रोना.

क्रप्, कृपा करना । भ्वा० अक० आत्म० सेट् । क्रपते । अक्रपिष्ट.

क्रम्, जाना । भ्वा० पक्षे दिवा० पर० सक० सेट् । क्रमति । क्राम्यति.

क्रम, (पु०) क्रम्-भावकरणादौ घञ् । पांव रखना । पांव जाना । एकके पीछे दूसरा । सिलसिलेवार । नियम । हमला.

क्रमणः, (पु०) क्रामति अनेन-करणे ल्युट् । जिसके द्वारा चलता है । पाद । पाँव । अश्वं । -णं (न०) सर-कना । चलना । लांघना.

क्रमिक, (त्रि०) क्रमात् आगतः ठन्-इक । क्रमसे आया । क्रमानुसार सिलसिलेवार.

क्रमुक, (पु०) क्रम्+उन् । ततः संज्ञायां कन् । सुपारी । भद्रमोथा.

क्रमेल, (पु०) क्रामति । क्रम्-विच् । एलति अच् । ऊंठ । -क । "कन्" ऊंठ.

क्रय, (पु०) क्री+भावे अच् । मोल देकर चीज लेना । खरीदना.

क्रयिक, (पु०) क्रयेण जीवति ठन् । जो खरीदसे जीवता है । बणियाजन । व्यौपारी.

क्रय्य, (त्रि०) क्री+यत् । "खरीदनेवाले खरीदें" इस विचारसे जो फैलायाजाय । खरीदनेके लिये दुकानपर फैलाई गई चीजें । "क्रय्यस्तदर्थे" इति नि०.

क्रव्य, (न०) क्रव्+ण्यत्-रलयोरेकत्वात् । आममांस । कच्चामांस.

क्रव्याद्, (पु०) क्रव्यं अत्ति । अद्+क्विप् । मांस खाताहै । राक्षस । गीध आदि.

क्रव्याद, (पु०) क्रव्यं अत्ति । अद्+अण् । राक्षस । शेर । बाज । मुर्देके मांसको खानेवाली आग । "क्रव्यादो मृतभक्षणे".

क्रव्याद, (पु०) क्रव्यं अत्ति । अद्+क्विप् । मांस खानेवाला । राक्षस । गीध.

क्रशिमन्, (पु०) कृशस्य भावः इमनिच् । कृशता । कमजोरी । झुकना.

क्रान्त, (पु०) क्रम्+क्त । घोडा । दवायाहुआ । लांघगया । घिराहुआ (त्रि०).

क्रान्तदर्शिन्, (त्रि०) क्रान्तं अतीतं पश्यति णिनि । जो पिछली वातको जानताहै । पण्डित । कवि । अतीतद्रष्टा.

क्रान्ति, (स्त्री०) क्रम्+क्तिन् । आक्रमण । चढाई करना । दवाना । जाना । चढना । आकाशके गोलेमें कुच्छ टेढी गोल रेखा जहांसे सूरज गति कर्ता है.

क्रिमि, (पु०) क्रम्+इनि । इत्वादेः । कृमि । कीडा । मकोडा । छोटी कीडी.

क्रिया, (स्त्री०) कृ+भावे श टाप् । करना । पूराकरना । काम । आरम्भ । चेष्टा । इन्द्रियोंका व्यापार । धातुका अर्थ । वदला । पूजा सिखलाना । इलाज करना । गर्भाधानादि संस्कार । व्यवहारका एक भाग.

क्रियापद, (पु०) व्यवहारका तीसरा पाद । (गवाह लेख्य किये गये दावेको पूरा करना । ये तीन पाद हैं).

क्रियाफल, (न०) ६ त० । कामका फल । यज्ञादिसे उत्पन्नहुआ पुण्यापुण्य.

क्रियायोग, (पु०) योगके लिये कियागया देवताका आराधन आदि.

क्रियासमभिहार, (पु०) सम्+अभि+हृ+घञ् ६ त० । किसी कामको बार२ करना । "क्रियासमभिहारेण विराध्यन्तं क्षमेत कः" माघः.

क्री, मोल लेना । क्र्यादि० उभ० अक० अनिट् । क्रीणाति-क्रीणीते । अक्रैषीत् । अक्रेष्ट.

क्रीड्, खेलना । भ्वा० पर० अक० सेट् । क्रीडति । चिक्रीड । अक्रीडीत्.

क्रीडन, (न०) क्रीड्+ल्युट् । परीहास । मखौल खेलन । खेलना.

क्रीत, (पु०) क्री+क्त । खरीदाहुआ । वारह प्रकारके पुत्रोंमेंसे एक । मोल लीगई कोई चीज (त्रि०).

क्रीतानुशय, (पु०) क्रीते अनुशयः पश्चात्तापो यत्र । खरीदकर किसी प्रकारकी दुष्टतासे पछताना । १८६ प्रकारके विवादोंमेंसे एक.

क्रुञ्च्, (पु०) क्रुन्च्+क्विप् । क्रुञ्ज । एक प्रकारका वगला.

क्रुञ्च्, जाना । टेढा होना । अनादर करना । सक० पर० सेट् । क्रुञ्चति । अक्रुञ्चीत्.

क्रुञ्च, (पु०) क्रुञ्च+कर्मणि घञ् । क्रौञ्चपर्वत । "अच् टाप्" । एकवीणा.

क्रुथ्, क्लेशहोना । गले मिलना । क्र्या० पर० अक० सेट् । क्रुन्थति । अक्रुन्थीत्.

क्रुध्, गुस्सा करना । दिवा० पर० अक० उपसर्गसहित-सक० अनिट् । क्रुध्यति । अक्रुधत् । भृत्यं अभिक्रुध्यति.

क्रुध्–धा, (स्त्री०) क्रुध्+क्विप्-वा टाप् । इच्छाकी प्राप्ति न होनेसे उत्पन्न हुआ चित्तकी वृत्तिका भेद । कोप । गुस्सा.

क्रुश्, रोना । चिल्लाना । सक० भ्वा० पर० अनिट् । क्रोशति । अक्रुक्षत्.

क्रुष्ट, (न०) क्रुश्–भावेक्त । रोना । शब्द करना । आङ्+कर्मणि क्त । बुलायागया (त्रि०).

क्रूर, (त्रि०) कृत्+रक्-धातोः क्रू । कठिन । सख्त । निर्दय । वेरहम । दूसरेके साथ वैर करनेवाला । गरम । वाजपक्षी । कङ्कपक्षी । ज्योतिषमें कहागया सूर्य, मंगल, शनि, राहु और केतु ग्रह । सुनहरी करनेका दरख्त.

क्रेय, (त्रि०) क्री+यत् । खरीदनेलायक कोई चीज । क्रेतव्य वस्तुमात्र.

क्रोड, (पु०) (न०) क्रुड्-इकट्ठा होना । जमजाना । घनीभाव । संज्ञायां कन् । अंक । गोद । राक्षस । सूअर (पु०) घोडोंकी छाती और भुजाओंका मध्य । (स्त्री०) टाप् । वाराही कन्द (पु० स्त्री०).

क्रोडाङ्घ्रि, (पु०) क्रोडे अङ्घ्रिर्यस्य । जिसके पांव गोदमें हो । कच्छप । कच्छू.

क्रोध, (पु०) क्रुध्+घञ् । दूसरेका अपकार (वुराई) करनेके लिये चित्तकी वृत्तिका भेद । दूसरेके अनिष्टकी इच्छा । गुस्सा.

क्रोधकृत्, (त्रि०) क्रोधं करोति कृ+क्विप् । क्रोध करनेवाला । क्रोधी.

क्रोधज, (पु०) क्रोधात् जायते । जन्+ड । मोह । अज्ञान । वेसमझी । क्रोधके आठ गण हैं जैसे चुगलखोरी, दिलेरी, वैर, ईर्षा, दूसरेकी उन्नति न सहारना, असूया (गुणोंमें दोष लगाना), अर्थदूषण (धनको बिगाडना), वाग्दण्ड (गाली गल्लौज करना), पारुष्य कठिनता । सख्ती.

क्रोधन, (पु०) क्रुध्+ल्यु । कोपयुक्त । गुस्सेवाला । कोपशील । भैरवभेद.

क्रोधवश, (त्रि०) क्रोधस्य वशः । क्रोधके आधीन हुआ.

क्रोधहन्, (पु०) क्रोधं हन्ति हन्+क्विप् । क्रोधको मारनेवाला । विष्णु.

क्रोधानलः, (पु०) क्रोधस्य अनलः ष० त० । क्रोधकी आग.

क्रोधान्धः, (पु०) क्रोधेन अन्धः तृ० त० । क्रोधसे अंधा होगया.

क्रोधेद्धः, (त्रि०) क्रोधेन इद्धः=संदीप्तः । क्रोधसे प्रदीप्त हुआ । भडका हुआ.

क्रोधोज्झित, (त्रि०) क्रोधात् उज्झितः । क्रोधसे आवेशसे छूटा हुआ.

क्रोधालुः, (त्रि०) क्रुध् आलुच् । क्रोधी । क्रोधके स्वभाववाला.

क्रोधिन्, (त्रि०) क्रुध् णिनि । क्रोधवाला । गुस्सेवाला.

क्रोश, (पु०) क्रुश्+घञ् । रोना । बुलाना । आठहजार हाथोंका माप । एककोस (दो हजार हाथका माप) इति लीलावती.

क्रोष्टु, (पु०) क्रोशति । क्रुश्+तुन् । गीदड । "स्वार्थे कन्" यही अर्थ । स्त्रियां क्रोष्ट्री.

क्रौञ्च, (पु०) क्रुञ्च्+स्वार्थे अण् । क्रौंच बक । एकप्रकारका बगला । कुररपक्षी । कूंज । एक दैत्य । एक द्वीप । एक पर्वत.

क्रौञ्चदारुक-रण, (पु०) क्रौञ्चं दैत्यं पर्वतं वा दारयति । दृ+णिच्-ण्वुल् युच् वा । कार्तिकेय । इसके साथ युद्ध करके क्रौञ्चदैत्य मारा गया । परशुरामका नाम.

क्रौञ्चादन, (न०) क्रौञ्चानां बकभेदानां अदनं भक्ष्यं । एकप्रकारके बगलोंका भोजन । मृणाल । कमलकी डण्डी । पिप्पली । कमलके बीज (बी) (स्त्री०).

क्लथ्, मारना । चुरा० उभ० पक्षे भ्वा० पर० सक० सेट् । क्लथयति-ते । क्लथति । अचिक्लथत् । अक्लाथीत्-अक्लथीत्.

क्लन्द्, रोना -अक० बुलाना -सक० इदित् । पर० भ्वा० सेट् । क्लन्दति । अक्लन्दीत्.

क्लम, ग्लानिकरना । थकजाना । दिवा० पर० अक० सेट् । क्लाम्यति । अक्लमीत् । क्लमित्वा । क्लान्त्वा । क्लान्तः.

क्लम, (पु०) क्लम्+घञ्-अवृद्धिः । आयास । यत्न । थकना । मिहनत.

क्लान्त, (त्रि०) क्लम+क्त । श्रमार्त । श्रान्त । मिहनतकरनेमें घबरा गया.

क्लिद्, गीलाहोना । दिवा० पर० अक० सेट् । क्लिद्यति । अक्लिदत् । अक्लेदीत् । अक्लैत्सीत्.

क्लिन्न, (त्रि०) क्लिद्+क्त । गीला । आर्द्र.

क्लिश्, उपताप करना । लाचारहोना । दुःखी होना । दिवा० आत्म० अक० सेट् । क्लिश्नाति । अक्लेशीत् । अक्लिक्षत्.

क्लिशित, (त्रि०) क्लिश्+क्त । क्लेशयुक्त । तकलीफवाला । " इट् न होनेसे " क्लिष्ट.

क्लीब्-व्, मस्तहोना । नपुंसक होना । चतुर न होना । भ्वा० आत्म० अक० सेट् । क्लीब (व) ति । अक्लीबि (वि) ष्ट.

क्लीब-व, (पु०) क्लीव् (व्) अच् । नपुंसक । विक्रमहीन । धर्मके कार्य आदिमें निरुत्साह । हीजडा । कमजोर.

क्लृप्त, (त्रि०) क्लृप्+क्त । रचाहुआ । नियत । कायम । बनाहुआ.

क्लृप्, भ्वा० आ० । कल्पते । चक्लृपे । अक्लृपत् । अक्लृप्त । अकल्पिष्ट । कल्पिष्यते । कल्प्स्यति-ते । कल्पितुं । कल्प्तुं । क्लृप्त । योग्य होना । रचना करना । समर्थ होना.

क्लृप्तिः, (स्त्री०) क्लृप्+क्तिन् । रचना । बनावट । समाप्ति.

क्लेद, (पु०) क्लिद्+घञ् । गीलापन । तकलीफ । उपद्रव.

क्लेद, (त्रि०) (क्लिद्+णिच्+ल्युट्) गीला करनेवाला । (न० पु०) श्लेष्म (बलगम) (नं० न०) गीला करना । गीला होना.

क्लेश, मारना । लाचारहोना । भ्वा० आत्म० अक० सेट् । क्लेशते । अक्लेशिष्ट.

क्लेश, (पु०) क्लिश्+घञ् । दुःख । रोग आदि । योगशास्त्रमें कहेगये अविद्या अस्मिता आदि पांच.

क्लैब्य-व्य, (न०) क्लीव् (व्) भावे घञ् । निष्पौरुषत्व । कमजोरी.

क्लोमन्, (न०) क्लुङ् -जाना+मनिन् । मूत्रका आधार । फूंकना । मसाना.

क्व, (अव्य०) कहां । "क्वचित्" "क्वचन" इसी अर्थमें होते हैं.

क्वण्, शब्द करना । भ्वा० पर० अक० सेट् । क्वणति । अक्वा-(क्व)णीत्.

क्वण, (पु०) क्वण्+अप् । वीणाकी आवाज । कोई आवाज.

क्वथ्, अच्छी तरह पकना । काढना । क्वथति । अक्वथीत्.

क्वथित, (त्रि०) क्वथ्+क्त । बहुत पकाहुआ व्यञ्जन (नाल्दा) आदि । काढाहुआ.

क्वाथ, (पु०) क्वथ्+घञ् । दुःख । किसी चीजका बहुत पकना । काढा.

क्षण्, वधकरना । मारना । तना० उभ० सक० सेट् । क्षणोति-क्षणुते । अक्षणीत् -अक्षणिष्ट.

क्षण, (पु०) क्षणोति दुःखं । क्षण्+अच् । जो दुःखको दूर कर्ताहै । उत्सव । मेला । अवसर । मौका । मध्य । बीच । लहजा । थोडा वक्त.

क्षणद, (पु०) क्षणं मुहूर्तं उत्सवं वा ददाति । दा+क । जो अच्छा समय बतलाता वा खुशी देताहै । ज्योतिषी । पानी (न०) रात (स्त्री०).

क्षणप्रभा, (स्त्री०) क्षणं व्याप्य प्रभा यस्याः । जिसकी चमक छिनभरके लिये हो । विद्युत् । बिजली.

क्षणभङ्गुर, (त्रि०) क्षणात् भज्यते । भञ्ज्+कर्मकर्तरि घुरच् । छिनभरमें नाश होनेवाली कोई चीज.

क्षणविध्वंसिन्, (त्रि०) क्षणेन विध्वंसते उप० स० । क्षणभरमें नष्ट होजानेवाला । एक प्रकारका नास्तिक जो सम्पूर्ण पदार्थोंका क्षणिक उत्पाद और विनाश मानताहै.

क्षणिक, (त्रि०) क्षणं व्याप्नोति ठन् । एक क्षणकेलिये रहनेवाला पदार्थ । जिनका पहिले क्षणमें उत्पत्ति, दूसरेमें स्थिति, और तीसरे क्षणमें नाश होताहै वे क्षणिक हैं, जैसे "बुद्धि" यह तार्किक कहतेहैं । कार्य करनेमें समर्थ सत्पदार्थोंकी पहिले क्षणमें उत्पत्ति और दूसरे क्षणमें नाश होताहै यह बौद्ध कहतेहैं । एक दमका । छिनभरके लिये । "क्षणिका" (स्त्री०) विजली.

क्षत, (न०) क्षण्+भावे क्त । वह घाव जिसमेंसे लोहू और पीक वह रहाहो । "कर्मणि क्त" घाववाला (त्रि०) जिसे घाव लगाहो । फाडागया । चीरागया । तोडागया.

क्षतज, (न०) क्षतात् जायते जन्+ड । घावसे निकला । रुधिर । लोहू.

क्षति, (स्त्री०) क्षण्+क्तिन् । हानि । नुक्सान । नाश । अपचय । घाव.

क्षत्ता, (पु०) क्षद्+तृच् । शूद्रसे क्षत्रियामें उत्पन्न हुआ वर्णसंकर । द्वारपाल । रथचलानेवाला । दासीका पुत्र (विदुर) । ब्रह्मा । मछली । खजाञ्ची.

क्षत्र, (पु० न०) क्षण्+क्विप् । क्षत् । ततः त्रायते त्रै+क । हिंसासे बचानेवाला । क्षत्रिय । राज्य । ताकत । शक्ति । सिपाही.

क्षत्रबन्धु, (पु०) क्षत्रस्य बन्धुरेव तत्कर्मकर्तृत्वाभावात् न तत्कर्ता । क्षत्रियके कामको न करसकनेवाला । निन्दाके लायक क्षत्रिय.

क्षत्रिय, (पु०) क्षत्रस्य अपत्यं घ । क्षत्रजातिका । राजन्य । युद्धकरनेवाली जातिका पुरुष । दूसरी जातिका पुरुष.

क्षत्रियका, क्षत्रिया-क्षत्रियिका-क्षत्रियाणी (स्त्री०) क्षत्रियजातिकी स्त्री । क्षत्रियकी स्त्री । "क्षत्रियी" क्षत्रियकी स्त्री.

क्षद्, पीसना । (वेद) काटना-मारना । खाना । ढांकना । बचाना । आत्म० सक० अनिट् । क्षदते । अक्षदत.

क्षप्, प्रेरणा करना । फेकना । भेजना । चुरा० उभ० सक० सेट् । क्षपयति-ते । अचिक्षिपत्-त.

क्षपणक, (पु०) क्षपयति विषयरागं । क्षप्+युच्-संज्ञायां कन् । जो विषयकी प्रीतिको फेकदेवे । बौद्धमतका संन्यासी.

क्षपा, (स्त्री०) क्षपयति चेष्टां । जिसमें काम बंदकिया जाताहै । रात्रि । रात । हल्दी.

क्षपाकर, (पु०) क्षपायां रात्रौ करो दीधितिर्यस्य । जो रात्रिके समय अपनी किरणोंका प्रकाश कर्ताहै । चन्द्र । चांद । वह रात्रिके समय सूर्यके तेजसे चमकताहै.

क्षपाट, (पु०) क्षपायां अटति । अट्+अच् । जो रातको घूमताहै । राक्षस । "ततः क्षपाटैः पृथुपिङ्गलाक्षैः" भट्टिः.

क्षम्, सहारना । भ्वा० आ० सक० वेट् । क्षमते । अक्षमिष्ट-अक्षंस्त । क्षान्तः.

क्षम्, सहारना । दिवा० पर० सक० सेट् । क्षाम्यति । अक्षमीत्.

क्षम, (न०) क्षम्+अच् । युक्त । उचित । शक्त । हित । क्षमावाला (त्रि०).

क्षमता, (स्त्री०) क्षम+तल् । योग्यता । लायकी । शब्दमें अर्थको प्रकाशकरनेवाली ताकत । शक्ति । ताकत.

क्षमा, (स्त्री०) क्षम्+अङ् । तितिक्षा । सहारना । सब प्रकारके दुःखको सहारनेवाली चित्तकी वृत्ति । भूमि । पृथिवी.

क्षमितृ, (त्रि०) क्षम् । तृच् । क्षमा करनेवाला । सहारनेवाला । मुआफ करनेवाला.

क्षमिन्, (त्रि०) क्षम्+घिनुण्-वृद्ध्यभावः । क्षमावाला । मुआफकरनेवाला । "कामं क्षाम्यतु यः क्षमी" इति माघः.

क्षय, (पु०) क्षि+अच् । नाश । खांसीका रोग । घर । विराम । हिंसा । साठवर्षोंमेंसे एक । एक प्रकारका मास.

क्षयपक्ष, (पु०) क्षयस्य पक्षः । चांद घटनेका पक्ष । कृष्णपक्ष.

क्षर्, चलना-वहना । भ्वा० पर० सक० सेट् । क्षरति । अक्षारीत्.

क्षर, (पु०) क्षरति-स्यन्दते मुञ्चति वा क्षर्+अच् । मेघ । वादल । नाशहोनेवाला (त्रि०).

क्षरण, (न०) क्षर्+भावे ल्युट् । वहना । वगना । चोना.

क्षल्, चुरा० उभ० । क्षालयति-ते । क्षालित । अचिक्षलत्-त । प्रक्षालन करना । धोना । साफ करना.

क्षल्, शोधना । साफकरना । चु० उभ० पक्षे भ्वा० पर० सक० सेट् । क्षालयति-ते । क्षलति । अचिक्षलत्-त । अक्षालीत्.

क्षवथु, (पु०) क्षि+अथु । कासरोग । खांसीका रोग.

क्षान्त, (त्रि०) क्षम्+क्त । क्षमा कर दिया गया । सहारा गया । मित्रस्वभाव.

क्षान्त, (त्रि०) क्षम्+क्त । सहारनेवाला । जो सामर्थ्य रखनेपरभी दूसरेको पीडा पहुंचाना नहिं चाहता.

क्षान्तिः, (स्त्री०) क्षम् क्तिन् । क्षमा । सहारना । मुआफी । वर्दाश्त करना.

क्षान्ति, (स्त्री०) क्षम्+क्तिन् । क्षमा । तितिक्षा । सहारना । सर.

क्षान्तु, (त्रि०) क्षम्+तुन् वृद्धिश्च । क्षमा करनेवाला । सहारनेवाला ।–तुः (पु०) पिता । बाप.

क्षाम, (त्रि०) क्षै+क्त । तस्य म । क्षीण । दुर्बल । कमजोर.

क्षार, (पु०) क्षर्+ण । खारनामी रस । लून । खारसे उपजा काच । भस्म । राख । गुड । धूर्त । सुहागा । जौखार.

क्षारभूमि, (स्त्री०) क्षारयुक्ता भूमिः । खारी जमीन । समुद्रके पासकी जमीन.

क्षारमृत्तिका, (स्त्री०) क्षारसंयुक्ता मृत्तिका । खारवाली मट्टी । खारीमट्टी.

क्षारित, (त्रि०) क्षर्+णिच्+क्त । दोष लगायागया । वहताहुआ खार.

क्षात्र, (न०) क्षत्रस्य कर्म भावो वा अण् । क्षत्रियका काम.

क्षालित, (त्रि०) चु० क्षल्+क्त । साफ । धोयाहुआ । धोयागया.

क्षि, क्षयहोना । भ्वा० पर० अक० अनिट् । क्षयति । अक्षैषीत्.

क्षि, हिंसाकरना । स्वा० पर० सक० अनिट् । क्षिणोति.

क्षि, जाना-सक० निवासकरना । अक० तुदा० पर० अनिट् । क्षियति । अक्षैषीत्.

क्षि, मारना । क्या० पर० सक० अनिट् । क्षिणाति । अक्षैषीत्.

क्षिण्, मारना । तना० उभ० सक० सेट् । क्षिणोति-क्षिणुते । अक्षेणीत् । अक्षेणिष्ट.

क्षिति, (स्त्री०) क्षि रहना-आधारे क्तिन् । भूमि । पृथिवी । "भावे क्तिन्" निवास । "क्षि-क्षयहोना-भावे क्तिन्" क्षय.

क्षितिजः, (पु०) क्षितेः जायते जन्+ड । पृथिवीसे उपजताहै । वृक्ष । द्रख्त । पृथिवीका कीडा.

क्षितितलम्, (न०) क्षितेः तलम् । पृथिवीका तला.

क्षितिदेवः, (पु०) क्षितेः देवः ष० त० । पृथिवीकी देवता । ब्राह्मण.

क्षितिधर, (पु०) क्षितिं धारयति धृ+णिच् अच् ह्रस्वः । जो पृथिवीको धारण कर्ताहै । पर्वत । कच्छू । वासुकी । शेषनाग । दिग्गज.

क्षितिपति, (पु०) ६ त० । राजा । नृपति । "क्षितीश-आदि" यही अर्थ.

क्षितिरुह, (पु०) क्षित्यां=पृथिव्यां रोहति । रुह्+क । ७ त० । वृक्ष । द्रख्त.

क्षितिवर्धन, (पु०) क्षितिं वर्धयति । वृध्+णिच्-ल्यु । जो पृथिवीको वढाताहै । शव । मुर्दा । मराहुआ शरीर.

क्षिप्, प्रेरणकरना । भेजना । फेकना । तुदा० उभ० सक० अनिट् क्षिपति-ते । अक्षैप्सीत् । अक्षिप्त.

क्षिपणि-णी, (स्त्री०) क्षिप्+अनि वा ङीप् । नौकादण्ड । शस्त्र । हथियार । वडिश । मच्छीपकडनेकी कुण्डी । पुरोहित । जाल.

क्षिपणुः, (पु०) क्षिप् अनङ् । धनुर्धर । शस्त्र । धरक वायु । हवा.

क्षिपण्यु, (त्रि०) क्षिप् कन्युच् । सुगन्ध । मीठी गन्ध । -ण्युः (पु०) । शरीर । बसन्त कालसमय बहार.

क्षिप्त, (त्रि०) क्षिप्+क्त । भेजागया । फेंकागया । राग-द्वेषके वशसे विषयोंमें डूबाहुआ चित्त । हवाके रोगसे पकडागया.

क्षिप्नु, (त्रि०) क्षिप्+क्नु । फेंकनेवाला । मारनेवाला.

क्षिप्र, (न०) क्षिप्+रक् । जल्दी । जोरवाला । वेगवाला । एक समयका परिमाण=१/१६ मुहूर्त । जल्दी करनेवाला(त्रि०).

क्षिप्रकारिन्, (त्रि०) क्षिप्रं करोति । कृ+णिनि । जल्दी-करनेवाला । चालाक । शीघ्र क्रियाकरनेवाला.

क्षिप्रपाकिन्, (पु०) क्षिप्रं शीघ्रं पच्यते+घिणुन् । एक वृक्ष । जल्दी पकानेवाला (त्रि०).

क्षी, मारना । भ्वा० उभ० सक० अनिट् । क्षयति-ते । अक्षैषीत् । अक्षैष्ट.

क्षीण, (त्रि०) क्षि+क्त । दुर्बल । कमजोर । पतला । नाजुक । गरीब । खोयागया । मरगया । नाशहोगया.

क्षीब्, मदहोना । मस्तहोना । भ्वा० आत्म० अक० सेट्.

क्षीव-ब, (त्रि०) क्षीव् (ब्)+क्त-नि० । मत्त । मतवार । मस्त.

क्षीर, (न०) क्षीं+क्विप्-तां ईरयति । ईर्+अण् । दूध । वा पानी.

क्षीरकण्ठ, (पु०) क्षीरं कण्ठे यस्य । जिसके गलेमें दूध है । स्तनन्धय बालक । दूधपीनेवाला बच्चा.

क्षीरतनया, (स्त्री०) क्षीरस्य तनया । दूध (दूधका समुद्र)-की कन्या । लक्ष्मी जो क्षीरसमुद्रसे उपजी है.

क्षीरपर्णी, (स्त्री०) क्षीरं पर्णे यस्याः ङीष् । जिसके पत्तेमें दूध हो । आकका वृक्ष । अर्कवृक्ष.

क्षीरवारिधि, (पु०) क्षीरस्य वारिधिः । दूधका समुद्र.

क्षीरवृक्ष, (पु०) क्षीरप्रधानो वृक्षः । उदुम्बर । गूलर । अश्वत्थ । पीपल.

क्षीरसार, (पु०) क्षीरस्य सारः । दूधका सार । नवनीत । मक्खन.

क्षीराब्धि, (पु०) क्षीरस्य=दुग्धरसस्य अब्धिः । दूधके रसका समुद्र.

क्षीराब्धिजा, (पु०) क्षीराब्धौ जायते । जन्+ड । जो दूधके समुद्रमें उपजाहै । चन्द्र । चांद । लक्ष्मी (स्त्री०).

क्षीरिन्, (पु०) क्षीर+इनि । दूधवाला पेड । प्लक्ष । गूलर । अक.

क्षीरोद, (पु०) क्षीरं उदकं अस्य । उदकको उद आदेश होताहै । जिसका पानी दूध है । क्षीरसमुद्र । दूधका समुद्र.

क्षीरोर्मिः, (पु०) क्षीरस्य ऊर्मिः । दूधके समुद्रकी तरंग.

क्षु, नीछ मारना । खांसीकरना । अदा० पर० अक० सेट् । क्षौति । अक्षावीत् । चुक्षाव । क्षुतः । क्षुत्वा । क्षवथुः.

क्षुण्ण, (त्रि०) क्षुद्+क्त । माराहुआ । पीसागया । अभ्यास कियागया । पीछा कियागया.

क्षुत, (न०) क्षु+क्त । नासासे हवा निकलनेसे उपजा छीक । नीछ । निच्छ.

क्षुत्, (स्त्री०) क्षु+क्विप् । तुकच । क्षुधा । भूख । नीछ । छीक । छीक.

क्षुद्, पीसना । रुधा० उभ० सक० सेट् । क्षुणत्ति-क्षुन्ते । अक्षुदत्-अक्षोत्सीत् । अक्षोदिष्ट.

क्षुद्र, (त्रि०) क्षुद्+रक् । नीच । सूम । निर्दय । दरिद्र । थोडा । टूटगये चावल । मक्खी । मच्छर । धतूरा.

क्षुद्रकम्बुः, (पु०) क्षुद्रः कंबुः । छोटा शंख.

क्षुद्रकुलिशः, (पु०) क्षुद्रं कुलिशम् । छोटा वज्र । कीमती पत्थर । हीरक.

क्षुद्रकुष्ठम्, (न०) क्षुद्रं कुष्ठम् । एक प्रकारका सामान्य कुष्ठ-कोढ.

क्षुद्रघण्टिका, (स्त्री०) क्षुद्रा घण्टिका । छोटी घण्टी । छोटी घंटिओं (घुगरियें) की तडागी.

क्षुद्रचन्दनं, (न०) क्षुद्रं चन्दनं । लाल चन्दनकी लकडी.

क्षुद्रजन्तुः, (पु०) क्षुद्रः जन्तुः । एक प्रकारका छोटा जीव.

क्षुद्रदंशिका, (स्त्री०) क्षुद्रा दंशिका । छोटी मक्खी.

क्षुद्रबुद्धिः, (त्रि०) क्षुद्रा बुद्धिः यस्य । छोटी बुद्धिवाला । कम अकल । तुच्छ.

क्षुद्ररसः, (पु०) क्षुद्रः रसः । शहत.

क्षुद्रसुवर्ण, (न०) क्षुद्रं सुवर्णं । छोटा वा बुरा सोना.

क्षुद्रता, (स्त्री०) क्षुद्र+तल् । छोटापन । कमीनापन । -त्वं-त्व । वहीअर्थ.

क्षुद्राञ्जनम्, (न०) क्षुद्रं अञ्जनं । एक प्रकारका अंजन जो नेत्रोंकी विशेष व्याधिमें प्रयोग किया जाता है.

क्षुद्रान्त्रः, (पु०) क्षुद्रः अन्त्रः । हृदयका छोटासा अवकाश.

क्षुद्रोलूकः, (पु०) क्षुद्रः उलूकः । छोटाउल्लू.

क्षुध्, खानेकी इच्छा करना । दिवा० पर० सक० अनिट् । क्षुध्यति । अक्षुधत्.

क्षुध्-धा, (स्त्री०) क्षुध्+क्विप् वा टाप् । भोजनेच्छा । खानेकी चाह.

क्षुधार्त, (त्रि०) इत० । भूखसे पीडित । जिसे वहुत भूख लगरही हो.

क्षुधित, (त्रि०) क्षुध्+इतच् । क्षुधायुक्त । भूखा.

क्षुप, (पु०) क्षु+पक् । एक वृक्ष जिसकी शाखा और जडें छोटी हों । झाडी । द्वारकाके पश्चिम दिशाकी ओर एक पर्वत । क्षत्रियभेद.

क्षुब्ध, (पु०) क्षुभ्+क्त । नि० । मन्थनदण्ड । मथन करनेकी लकडी । रिडकनेका डण्डा । मधानी । क्षुभित । (त्रि०) कम्पित । व्याकुलहुआ । घबरायाहुआ.

क्षुभ्, संकोचकरना । सिकोडना । भ्वा० आत्म० सक० सेट् । क्षोभते । अक्षोभिष्ट । क्षुब्धः । क्षुभितः.

क्षुभ्, अंगहिलाना । दिवा० क्र्या० अक० सेट् । क्षुभ्यति । क्षुभ्नाति । अक्षोभीत्.

क्षुभित, (त्रि०) क्षुभ्+क्त । आलोडित । चारोंओरसे हिलाया गया । व्याकुल । डराहुआ.

क्षुमा, (स्त्री०) क्षु+मक् । अतसी । अलसी । सन । नीलिकानामी लता.

क्षुर्, काटना । तुदा० पर० सक० सेट् । क्षुरति । अक्षोरीत्.

क्षुर, (पु०) क्षुर्+क । उस्तरा । काटनेवाला । बाल मूंडनेवाला । चाकू । नाईका अस्त्र । पशुओंका खुर । गोक्षुर । बाण । तीर.

क्षुर-रि, कर्मन् (न०) क्षुरस्य=नापितस्य क्षुरिणो वा कर्म । उस्तरे वा उस्तरेवाले नाईका काम । क्षौर । हजामत । नखून और बालोंका काटना.

क्षुरधान, (न०) क्षुरो धीयतेऽस्मिन् । जिस्में उस्तरा आदि रक्खा जाता है । नाईके हथियार रखनेका पात्र । गुच्छी । "क्षुरभाण्ड" भी.

क्षुरप्र, (पु०) क्षुरः इव पृणाति हिनस्ति पृ+क । जो उस्तरेकी नाईं मारती है । "खुरपी" इस नामसे प्रसिद्ध घास काटनेका हथियार.

क्षुरमर्दिन्, (पु०) क्षुरं मृद्नाति घर्षयति । मृद्+णिनि । उस्तरा घसनेवाला । नापित । नाई.

क्षुरमुण्डिन्, (पु०) क्षुरेण मुण्डयति । मुण्ड+णिनि । जो उस्तरेसे मूंडताहै । नापित । नाई.

क्षुरिणी, (स्त्री०) क्षुर० अस्त्यर्थे-इनि+ङीप् । नापितकी स्त्री । नाइन । नैन.

क्षुरिन्, (पु०) क्षुर+इनि । उस्तरे वा खुरवाला नाई.

क्षुल्ल, (त्रि०) क्षुद्+क्विप् । तां लाति । ला+क । अल्प । थोडा । हलका । लघु । छोटा । कनिष्ठ.

क्षुल्लक, (त्रि०) क्षुधा लक्यते । लक्-आस्वादन-स्वाद-लेना । घञ्के अर्थमें " क " होता है । नीच । पामर । अल्प । थोडा.

क्षेत्र, (न०) क्षि+ष्ट्रन् । देह । शरीर । अन्तःकरणं । मन । भीतरकी इन्द्रिय । इन्द्रिय आदिका समूह । खेतीके उपजनेका स्थान । सिद्धोंकी जगह । स्त्री । मेष आदि राशियें.

क्षेत्रज, (पु०) क्षेत्रे जायते । जन्+ड । बारह प्रकारके पुत्रोंमेंसे एक । अपनी स्त्रीमें दूसरेके वीर्यसे उत्पन्नहुआ पुत्र । जो कुछ क्षेत्रमें उपजाहो (त्रि०) श्वेतकण्टकारी । चिट्टीकंडियारी.

क्षेत्रज्ञ, (पु०) क्षेत्रं देहं आत्मत्वेन जानाति ज्ञा+क । जो देहको अपने स्वरूपसे जानताहै । जीवात्मा । खेतको जाननेहारा.

क्षेत्रपति, (पु०) ६ त० । क्षेत्रका पति । रुद्र अग्नि आदि । कोई क्षेत्रका स्वामी । "क्षेत्रपाल" आदि इसी अर्थमें.

क्षेत्राजीव, (पु०) क्षेत्रं.शस्योत्पादनभूमिः आजीवो यस्य । जिसका जीवन खेतीको उपजानेवाली भूमिपर है । कृषक । किसान.

क्षेत्रिक, (त्रि०) क्षेत्र+अस्त्यर्थे ठन् । खेतवाला । खेतका मालिक.

क्षेत्रिन्, (त्रि०) क्षेत्र+अस्त्यर्थे इनि । खेतवाला । क्षेत्रका खामी.

क्षेत्रिय, (पु०) परक्षेत्रे देहान्तरे चिकित्स्यः । परक्षेत्रः+घ-नि० । दूसरे देहमें इलाज करनेलायक असाध्य रोग । दूसरेके क्षेत्रमें उपजा पुत्र । क्षेत्रज पुत्र । क्षेत्रमें उपजाहुआ लडका.

क्षेप, (पु०) क्षिप्+घञ् । विक्षेप । निन्दा । अहंकार । लांघना । देरी । खेल । भेजना.

क्षेपः, (पु०) क्षिप्+घञ् । फेंकना । इधर उधर हिलना । अंगोंका हिलाना.

क्षेपक, (त्रि०) क्षिप् ण्वुल् । फेंकनेवाला । भेजनेवाला । गाली देनेवाला । निरादर करनेवाला.

क्षेपक, (त्रि०) क्षिप्+ण्वुल् । फेंकनेवाला । घञ् स्वार्थे कन् । ग्रन्थ आदिमें ग्रन्थकर्ताके विना किसी दूसरेसे डालागया पाठ । गुच्छा जोडनेलायक अंक (कुट्टक).

क्षेपणम्, (न०) क्षिप् ल्युट् । फेंकना । भेजना । चलाना । बिताना (समय).

क्षेपण, (न०) क्षिप्+ल्युट् । प्रेरण । भेजना । फेंकना । बिताना.

क्षेपणिका, (स्त्री०) क्षिप्यते चाल्यतेऽनया । क्षिप्+अनि । जिस्से (बेडीको) चलाते हैं । नौका चलानेका दण्ड । जालभेद.

क्षेपणीय, (त्रि०) क्षिप्+अनीयर् । भिन्दिपाल अस्त्र । पत्थर आदि फेंकनेवाला अस्त्र । फेंकनेलायक कोई चीज.

क्षेपिष्ठ, (त्रि०) अयं एषां अतिशयेन क्षिप्रः इष्ठन् । बहुत शीघ्र (जलदी) जानेवाला । " वायुर्वै क्षेपिष्ठा देवता " इति श्रुतिः.

क्षेम, (न०) क्षि+मन् । चोरनामी गन्धद्रव्य । मिलीहुई वस्तुको बचाना (पु० न०) कुशल (न०) कुशलवाला (त्रि०) मुक्ति । छुटकारा (न०).

क्षेमिन्, (त्रि०) क्षेम । इन् । सुखी । खुशी.

क्षेम्य, (त्रि०) क्षेमाय साधु यत् । सुख देनेवाला । आराम पहुंचानेवाला । स्वस्थ । तन्दुरुस्त । भाग्यवान् । शान्तिदेनेवाला.

क्षै, क्षयहोना । कमहोना । भ्वा० पर० अक० अनिट् । क्षायति । अक्षासीत्.

क्षैरेय, (त्रि०) क्षीरे संस्कृतं-ढञ् । दूधमें संस्कार किया गया । लप्सी (स्त्री०) । यवागू.

क्षैत्र, (न०) क्षेत्राणां समूहः । अ । क्षेत्रसमुदाय । खेतोंका समूह.

क्षोणि-णी, (स्त्री०) क्षु+नि+वा ङीप् । धरा । पृथिवी । क्षोणिः । यही अर्थ.

क्षोद, (पु०) क्षुद्+घञ् । रज । धूरी । चूर्ण । चूरा । पेषण । पीसना.

क्षोदक्षम, (त्रि०) क्षोदं क्षमते अच् । विचारको सहारनेवाला । तत्त्वको निश्चय करनेकेलिये दोष लगनेके विना वचन । पीसनेलायक.

क्षोदिष्ठ, (त्रि०) अयं एषां अतिशयेन क्षुद्रः । इष्ठन् क्षोदादेशः । बहुत छोटा । बहुत कमीना.

क्षोभ, (पु०) क्षुभ+घञ् । व्यर्थ इधर उधर हिलना । चित्तके भय आदिका कारण । अपने कामको न करनेकी शक्ति । घवराहट । हलचुल.

क्षोभण, (पु०) क्षोभयति क्षुभ्+णिच्+ल्यु । जो घवरादे । कामदेवके बाणका भेद । सांख्यमें कहागया प्रकृतिको प्रेरणकरनेवाला पुरुष । ईश्वर.

क्षौद्र, (न०) क्षुद्राभिः सरघाभिर्निर्वृत्तम् । शहतकी मक्खिओंसे बनायाहुआ । "अण्" शहत.

क्षौद्रज, (न०) क्षौद्राज्जायते जन्+ड । शहतसे उपजाहुआ । मोम । सिक्थक.

क्षौद्रधातु, (पु०) कर्म० । माक्षिक मधु । मक्खिओंका शहत । छत्ता.

क्षौम, (पु० न०) क्षुमाया अतस्या विकारः अण् । अतसी (अलसी) की खाल (वल्कल) का बनाहुआ कपडा । रेशमीवस्त्र । सनका बनाहुआ कपडा । क्षु+मम्+अण्.

क्षौर, (न०) क्षुरेण निर्वृत्तं अण् । उस्तरेसे कियागया वपन (मुण्डन) आदि । हजामत.

क्षौरिकः, (पु०) क्षुरेण जीवति+क्षुर+ठक्+इक । उस्तरेसे जीता है । नापित । नाई.

क्ष्णु, तेजकरना । अदा०पर०सक० सेट् । क्ष्णौति । अक्ष्णावीत्.

क्ष्मा, (स्त्री०) क्षमते भारं । क्षम्+अच् । उपधाका लोप । पृथिवी.

क्ष्माभृत्, (पु०) क्ष्मां पृथिवीं बिभर्ति पालयति । भृ० क्विप् । तुक्च । जो पृथिवीका पालन कर्ता है । नृप । राजा । पर्वत । पहाड.

क्ष्माय, कांपना । भ्वा० आ० सक० सेट् । क्ष्मायते । अक्ष्मायिष्ट.

क्ष्विड्, प्यारकरना । भ्वा० आ० अक० सेट् । क्ष्वेडते । अक्ष्वेडिष्ट.

क्ष्विद्, कूजना । ऊंचे बोलना । भ्वा० पर० अक० सेट् । क्ष्वेदति.

क्ष्वेड, (पु०) क्ष्विड्+अच् । पीतघोषानामी वृक्ष । विष । जहर । अक्षरोंकी आवाज । वर्णात्मकध्वनि । कुटिल (त्रि०).

क्ष्वेडा, (स्त्री०) क्ष्विड्+अच्+टाप् । घोषातकी । सिंहकी आवाज.

क्ष्वेडित, (न०) क्ष्वेड+क्त । सिंहका नाद । शेरका शब्द.

क्ष्वेल्, संचालन-हिलाना-जाना । सक० । खेलना । अक० पर० सेट् । क्ष्वेलति । अक्ष्वेलीत्.

क्ष्वेला, (स्त्री०) क्ष्वेल+अ । क्रीडा । खेला.

ख

ख, (पु०) खर्व्+ड । सूर्य । इन्द्रिय । शरीर । पुर । शून्य । मेघ । विन्दु । आकाश । स्वर्ग । सुख (न०).

खक्ख्, हसना । भ्वा० पर० अक० सेट् । खक्खति.

खग, (पु०) खे आकाशे गच्छतीति । गम्+ड । सूर्य । देवता । बाण । पक्षी । वायु । सूर्य, चन्द्र आदिग्रह.

खगप, (पु०) खगान् पाति । पा+क । गरुड । "खगपति" यही अर्थ.

खगपति, (स्त्री०) ६ त० । पक्षीकी चालें (डीन, प्रडीन, उड्डीन, संडीन, परिडीन, विडीन, अवडीन, अतिडीन, डीन, डीनक, गतागत, प्रपतित, सम्पात) । तरह २ की परिंदोंकी चालें.

खगोल, (पु०) खं गोल इव । गोलेकी भांति आकाश । भूगोलके ऊपर ठहराहुआ गोलस्वरूपवाला आकाश.

खच्, बांधना । चुरा० उभ० सक० सेट् । खचयति–ते । अचखचत्-त.

खचर, (पु०) खे आकाशे चरति । चर्+ट । जो आकाशमें विचरताहै । राक्षस (स्त्रीलिङ्गमें ङीप् होताहै) । सूर्य । वायु । ग्रह । खचर । आकाशमें जानेहारा (त्रि०).

खचर, (पु०) खे चरति–वा -खेचर । आकाशमें घूमनेवाला । पक्षी । मेघ । सूर्य । वायु । दैत्य । आकाशीभूत । गंधर्व आदि.

खचित, (त्रि०) खच्+क्त । बंधाहुआ । मिलाहुआ । बद्ध । इकट्ठा । संयुक्त.

खज्, मथन करना । रिडकना । भ्वा० पर० सक० सेट् । खजति । अखाजीत् । अखजीत्.

खज्, पिंगलाहोना । भ्वा० इदित् पर० सक० सेट् । खञ्जति । अखञ्जीत्.

खज्, (पु० स्त्री०) खज्+अच् । दधि । कडछी । चमचा । मधानी.

खजलम्, (न०) खस्य जलम् । आकाशका जल । ओस । आकाशसे वृष्टि.

खजिक, (पु०) खे आकाशे जीयते । अज्+घञ् । आजो गतिः सोऽस्यास्तीति ठन् । लाजा । फुल्लियें । खील । थोडीसी वायु चलनेपरही वे आकाशमें उडने लगतीहैं.

खज्योतिस्, (पु०) खे आकाशे ज्योतिः अस्य । जिसका प्रकाश आकाशमें हो । खद्योतकीट । टिटाणा । एककीडा.

खञ्ज–क, (पु०) खजि–चालकी विकलता । ठीक न चलसकना । अच् । ण्वुल् । पादविकल । लूला । लंगडा.

खञ्जन, (पु०) खञ्ज्+ल्यु । एक पक्षी । ममोला । गमन । जाना (न०).

खट्, चाहना । भ्वा० पर० सक० सेट् । खटति । अखाटीत्–अखटीत्.

खट, (पु०) खट्+अच् । अंधाखूआ । कफ । बलगम । हल । घास.

खटि, (पु० स्त्री०) खट्+इन् । शवरथ । मुर्देका तख्ता.

खटिक, (पु०) खट्+ठन् । कुबडे हाथवाला । टेढे हाथवाला । खडियामट्टी । लिखनेका द्रव्य (स्त्री०).

खट्ट, घेरादेना । चुरा० उभ० सक० सेट् । खट्टयति-ते । अचखट्टत्-त.

खट्वा, (स्त्री०) खट्+क्वन् । आठ काठके खण्डोंसे वनीहुई छेज । पलंग.

खट्वाङ्ग, (पु०) एक राजा । मानो छेजका अंग है । नरपञ्जर । मनुष्यकी हड्डिओंका पिंजरा । महादेवका शस्त्रविशेष । पीठका वंश । ६ त० । खट्वाका अङ्ग (न०).

खट्वाङ्गभृत्, (पु०) खट्वाङ्गं बिभर्ति । भृ+क्विप्-तुक्च । जो खट्वाङ्ग(नरपञ्जर) को धारण कर्ताहै । शिव । वटुकभैरव.

खट्वारूढ, (पु०) खट्वा+अम् । आ+रुह्+क्त । नित्यसमा० । प्रमादवाला । भूलनेवाला । बेपर्वाह । पलंगपर चढाहुआ.

खड्, रिडकना । तोडना । भ्वा० आत्म०सक०सेट् । खण्डते । अखण्डिष्ट.

खड्ग, (पु०) खडि+ग । नि० नलोपः । गैंडेका सींग । गैंडेके सींगवाला । गैंडापशु । चोरनाम गंधद्रव्य । लोह(न०).

खड्गकोष, (पु०) ६ त० । चमडेका वनाहुआ तरवारका ढकना । मिआन । ढाल.

खड्गपिधान, (न०) खड्गः पिधीयतेऽनेन । जिसके द्वारा तरवार छिपाई जातीहै । तरवारका खजाना । मियान.

खड्गिन्, (पु०) खड्ग+अस्त्यर्थे इनि । गैंडापशु । वह जन कि जिसके पास तरवार है.

खण्ड, (पु०) खडि+घञ् । भेद । टुकडा । गन्नेका विकार । खांड । एकदेश.

खण्डकर्ण, (पु०) खण्ड इव कर्णः कन्दो यस्य । जिसकी जड टुकडोंके समान है । शकरकन्दी । आलूका भेद.

खण्डधारा, (स्त्री०) खण्डे एकदेशे धारा यस्य । जिसकी धार एकओर हो । कर्तरी । कैंची.

खण्डन, (न०) खण्डि+ल्युट् । तोडना । फाडना । खण्ड करना । निकालना.

खण्डपरशु, (पु०) खण्डयति खण्डः परशुः अस्य । जिसका कुल्हाडा टूटाहुआ है । महादेव । महादेवका शिष्य परशुराम । "खण्डपर्शुः" इसी अर्थमें होताहै.

खण्डित, (त्रि०) खडि+क्त । फाडागया । तोडागया । दोटुकडे कियागया । खण्डिता नायिका (स्त्री०).

खण्डीर, (पु०) अपकृष्टा खण्डी+र । पीली मूंगी । पीतमुद्ग.

खतिलक, (पु०) खस्य तिलकः । सूर्य.

खद्, पक्का होना अक० । मारना-सक० भ्वा० पर० सेट् । खदति । अखादीत्–अखदीत्.

पद्म० २२

खदिर, (पु०) खद्+किरण । खैरकी लकडी । एक वृक्ष । इन्द्र । चन्द्रमा.

खदिरसार, (पु०) ६ त० । खदिरवृक्षकी गोंदका सार.

खद्योत, (पु०) खे द्योतते । द्युत+अच् । जो आकाशमें चमकता है । सूर्य । एक प्रकारका कीडा । टिटाणा । पटबीजना.

खधूप, (पु०) खं आकाशं धूपयति । धूप्+अण् । आगकी खेल.

खन्, फाडना । खोदना । भ्वा० उभ० सक० सेट् । खनति । अखानीत् -अखनीत् । अखनिष्ट । खायात् -खन्यात्.

खनक, (पु०) खन्+वुन् । मूषिक । मूसा । चूहा । सन्धितस्कर । सन्नलगानेवाला चोर । पृथिवीको फाडनेवाला (त्रि०).

खनन, (न०) खन्+ल्युट् । खोदना । फाडना । सन्नलगाना । गढाकरना.

खनि-नी, (स्त्री०) । खन्+इ वा ङीप् । धातुरत्न आदिके उपजनेका स्थान । खान । पृथिवीको फाडना । कान.

खनित्र, (न०) खन्+इत्र । अस्त्रभेद । खोदनेका हथियार । अवदारण । रंबा.

खपराग, (पु०) खस्य परागः । आकाशकी धूरी । अंधकार.

खपुष्पम्, (न०) खस्य पुष्पम् । आकाशका फूल । कोईभी असंभव नामुमकिन वस्तु.

खमूर्तिः, (स्त्री०) खस्य मूर्तिः । आकाशकी मूर्ति (शकल)। शंकरका नाम.

खर, (पु०) खं मुखबिलं अतिशयेन अस्ति अस्य+र । खं इन्द्रियं राति । रा+क वा । जिसके मुखका बिल वहुत बडा हो । गधा । गर्दभ । खचरा । राक्षसभेद । कण्टकीवृक्ष । कामदेव । लङ्कपक्षी । तीक्ष्ण स्पर्श । कठिन स्पर्शवाला (त्रि०).

खरदूषण, (पु०) खरं उग्रं दूषणं उन्मादकताहेतुर्दोषो यत्र । जहां अत्यन्त उन्माद (पागलपना) उपजताहै । धत्तूरह । खर और दूषण नाम प्रसिद्ध राक्षस रावणके प्रधान । वडे दोषवाला (त्रि०).

खरध्वंसिन्, (पु०) खरं खरनामानं राक्षसं ध्वंसयति । ध्वन्स्+णिच्+णिनि । खरनाम राक्षसको नाश करनेवाला । श्रीरामचन्द्रजी.

खरयानम्, (न०) खरवाहितं यानम् । गधोंसे चलाई गई गाडी । गधेगाडी.

खरशब्दः, (पु०) खरस्य शब्दः । गधेकी आवाज.

खरशाला, (स्त्री०) खराणां शाला । गधोंका तवेला.

खराश्या, (स्त्री०) खरैः अश्यते भुज्यते अश्+य । जो खरोंसे खाई जाती है । मयूरशिखा । मोरकी कलगी (चोटी) । रुद्रजटानामी वेल.

खरु, (पु०) खन्+कु । अन्तमें रका आदेश होताहै । अहंकार । घोडा । दांत । कामदेव । चित्तरंग । चित्तरंगवाला । निर्बोध । बेसमझ । क्रूर । निर्दय । बेरहम (त्रि०).

खर्ज, पीडाहोना । अक० साफ करना । सक० पर० सेट् । खर्जति । अखर्जीत्.

खर्जन, (न०) खर्ज+ल्युट् । कण्डूयन । खुजली करना । खुरकना.

खर्जु-र्जू, (स्त्री०) खर्ज+वा ऊङ् । कण्डु । खुजली । एकप्रकारका कीडा । खजूरका वृक्ष.

खर्जुघ्न, (पु०) खर्जु कण्डूयनं हन्ति । हन्+ठक् । धत्तूरा । खुजलीको दूर करनेहारा आकका वृक्ष.

खर्द, दंशन । डंकमारना । डसना । भ्वा० पर० सक० सेट् । खर्दति । अखर्दीत्.

खर्पर, (पु०) कर्परशब्दके समान पृ० खलम् । तस्कर । चोर । धूर्त । नटखट । भीखका पात्र । कपाल । खप्पर । छाता । खापरी.

खर्व्-र्व्, जाना भ्वा० पर० सक० सेट् । खर्वति । अखर्वीत्.

खर्व,-र्व, (पु०) खर्व् (र्व्)+अच् । कुब्ज । कुवडा । निधिभेद । संख्याभेद (हजार क्रोड) । नीच । वामन । बौना (त्रि०).

खर्वट, (पु०) खर्व्(र्व्)+अटन् । वह गांव कि जिसके पासही एक ओर नगर वस रहाहो । और नदी एवं पर्वत भी वहां हो । पर्वतके पासका गांव । मण्डी लगनेका पुर.

खल्, चलना । हिलना । भ्वा० पर० अक० सेट् । खलति- अखालीत्.

खल, (न०) खल्+अच् । धान मलनेका स्थान । खलवाडा । पृथिवी । तिलोंका चूर्ण । खल । नीच । अधम । निर्दय । वेरहिम (त्रि०) "खे लीयते ली+ड" । जो आकाशमें छिपजाता है । सूर्य । "खं वर्णतः लाति ला+क" जिसका रंग आकाशके समान है । तमालवृक्ष.

खलति, (पु०) स्खल् हिलना । पृ० । इन्द्रलुप्तरोग । गंजका रोग । गंजा (त्रि०).

खलपू, (त्रि०) खलं भूमिं पुनाति । पू+क्विप् । स्थानको शोधन करनेहारा । साफ करनेहारा । फरास । फराश.

खलि, (पु०) खल्+इ । तैलकिट्ट । तेलका मैल । खल.

खलि(ली)न, (पु० न०) खे मुखछिद्रे लीनं । पृ० वा ह्रस्वः । जो मुखके छेकमें छिपी हो । घोडेकेसे मुखमें स्थित होरही कविका । कडियाल । जो घोडेके मूंमें दिया जाता है.

खलिनी, (स्त्री०) खलानां धान्यमर्दनस्थानानां समूहः इनि । धान मलनेके स्थानोंका समूह । खराव आदमिओंका समूह.

खलु, (अव्य०) प्रश्न । सवाल । निश्चय । वाक्यकी शोभा करनेहारा । विशेष इच्छा । निषेध । वाक्यको पूरा करनेवाला । कारण.

खलेकपोत, (पु०) खले धान्यमर्दनस्थाने यथा कपोता युगपत् पतन्ति । धान मलनेके स्थानपर जैसे कबूतर एकहीवार आ गिरते हैं वैसे विशेषणोंका एकही स्थानपर अन्वय होना । इस प्रकारका एक न्यायभेद.

खल्या, (स्त्री०) खलानां समूहः यत् । धान मलनेके स्थानका समूह.

खल्ल, (पु०) खलतीति क्विप् । खल् । तं लातीति । ला+क । एकप्रकारका कपडा । काम । गढा । चातक । पपीहा । मशक । औषध (दवाई) मलनेका पात्र । खल । खरल.

खावष्प, (न०) ६ त० । रातको आकाशसे बहनेवाला पानी । बरफ । ओस.

खविद्या, (स्त्री०) खस्य विद्या । आकाशकी विद्या । एक प्रकारका ज्योतिःशास्त्र.

खश, (पु०) देशभेद । हिमालयके पासका देश । पतित । क्षत्रियभेद.

खसखस, (पु०) पोस्तनामी फलवाला वृक्षभेद । जिसके रसको अहिफेन कहतेहैं । अफीम.

खाण्डव, (पु०) इन्द्रप्रस्थ । देहली नगरके पासका वन.

खात, (न०) खन्+क्त । गढा । तलावडी आदि । "पूर्तं खातादि कर्म च" इति स्मृतिः.

खातक, (पु०) खन्+घञ् । स्वार्थे कन् । परिखा । खाई । "खात इव कायति । कै+क" अधमर्ण । कर्जदार । ऋणी.

खाद, खाना० । भ्वा० पर० सक० सेट् । खादति । अखादीत्.

खादक, (पु०) खादति । खाद्+ण्वुल् । ऋणलेनेवाला । कर्जदार । खानेवाला । खवैया (त्रि०) । "खादिका" (स्त्री०).

खादतमोदता, (स्त्री०) खादतं मोदध्वं इति सततं यत्र अभिधीयते । खाओ खुशीमताओ इस प्रकार जहां निरन्तर कहा जाता है.

खादनः, (पु०) खाद-करणे ल्युट् । जिसके द्वारा खाया जाता है । दांत । (नं० न०) खाना । चावना । भोजन । खुराक.

खादिर, (त्रि०) खदिरस्य विकारः अञ् । खदिर (खैर)-की लकडीका बनाहुआ यूप (यज्ञका थंभा) आदि.

खाद्य, (त्रि०) खादितुं योग्यम् । खानेलायक । -द्यम् (न०) भोजन । खाना.

खारि-री, (स्त्री०) खं आराति । रा+क । ङीष् । वा ह्रस्वः । धान आदिका परिमाण (माप) जो १६ द्रोण अर्थात् १२ मन ३२ सेरका होता है (५१२ सेर).

खारीक, (त्रि०) खार्यां वापः । खारि(री) परिमाणं अस्य वा ईकन् । खारी (१६ द्रोण) परिमाण । धानोंके बोनेका क्षेत्र । खारीभर धानआदि.

खार्कार, (पु०) गर्दभशब्द । गधेकी आवाज । जो शंखके समान प्रतीत होती है.

खिट्, डरना । भ्वा० पर० अक० सेट् । खेटति । अखेटीत्.

खिद्, दीन होना । दिवा० और रुधा० आत्म० अक० अनिट् । खिद्यते । खिन्ते । अखित्त । खित्तः.

खिन्न, (त्रि०) खिद्+क्त । दैन्ययुक्त । दुःखमें पडाहुआ । आलसी । खेदयुक्त.

खिल्, कणियें चुगना । दाना २ लेना । तुदा० पर० सक० सेट् । खिलति । अखेलीत्.

खिल, (त्रि०) खिल्+क । हल आदि न खेचागया खेत आदि । वह खेत कि जहां हल नहीं चलाया गया । थोडेमें सार । पहिले न कहेगयेका परिशिष्ट (बाकी) जैसे ऋग्वेद आदिमें श्रीसूक्त । यजुर्वेदमें शिवसंकल्प आदि । महाभारतमें हरिवंश नारायण (यह नीलकण्ठने लिखाहै).

खु, शब्द (आवाज) करना । भ्वा० आत्म० अक० अनिट् । खवते । अखोष्ट.

खुज्, चुराना । भ्वा० पर० सक० सेट् । खोजति । चुखोज । अखोजीत्.

खुड्, फाडना । टुकडे २ करना । चुरा० उभ० सक० सेट् । खोडयति-ते । अचुखोडत्-त.

खुर्, काटना टुकडे २ करना । पंजा मारना । तुदा० पर० सक० सेट् । खुरति । अखोरीत्.

खुर, (पु०) खुर्+क । शफ । पशुओंके खुर । नखीनामी गंधद्रव्य । नाईका अस्त्र । उस्तरा । पलंग आदिका पावा.

खुरणस्-स, (त्रि०) खुर इव नासिका अस्य । नसादेशः वा अन्त्यलोपः । जिसका नाक खुरकी भांति हो । चिपटी नासिकावाला । चौडे नाकवाला.

खुरालिक, (पु०) खुराणां आलिभिः कायति प्रकाशते । कै+क । जो खुरोंकी कतारोंसे चमकता है । भांडा । नाईके अस्त्रों (हथियारों)का भांडा । गुच्छी । नाराचास्त्र । बाण । तकिया.

खुर्द-खूर्द, खेलना । भ्वा० आत्म० अक० सेट् । खु (खू) र्दते । अखु(खू)र्दिष्ट.

खेचर, (पु०) खे चरति । चर्+ड-अलुक् स० । जो आकाशमें विचरताहै । शिवजी । सूर्य आदि ग्रह । विद्याधर । मुद्राभेद (स्त्री०).

खेट्, भोजन करना । खाना । चुरा० उभ० सक० सेट् । खेटयति-ते । अचिखेटत्-त.

खेट, (पु०) खेअटति । आकाशमें घूमता है । सूर्य आदि ग्रह । कफ । ग्रामभेद । मृगया । अहेर । शिकार । (पु० न०) नीच (त्रि०).

खेटक, (पु०) खेट+ण्वुल् । फलक । ढाल । "खेटकं पूर्णचापं च" इति दुर्गाध्यानम्.

खेद, (पु०) खिद्+घञ् । दुःख । शोक । दिलकी घबराहट.

खेय, (न०) खन्+यत् । परिखा । खाई । खोदनेलायक (त्रि०).

खेल्, हिलना जाना । भ्वा० पर० सक० सेट् । खेलति । अखेलीत्.

खेलन, (न०) खेल्+ल्युट् । क्रीडा । खेल । खेलना.

खेला, (स्त्री०) क्रीडा । खेल खेलना.

खेव्, सेवाकरना । भ्वा० आत्म० सक० सेट् । खेवते । अखेविष्ट । अचिखेवत.

खेसर, (पु०) खे आकाश इव शीघ्रगामित्वात् सरति । सृ+ट । अलुक् समा० । जल्दी हलनेसे मानों आकाशमें चलती है । अश्वतर । खच्चर । अस्तर । एकप्रकारका पशु.

खोट्, गतिप्रतिघात चालका रुकना । भ्वा० पर० सक० सेट् । खोटयति-ते । अचुखोटत्-त.

खोटि-टी, (स्त्री०) खोट्+इन ङीप् । चतुर स्त्री । अकलमन्द और खचरी (स्त्री०).

खोड्, चालका रुकना । भ्वा० पर० सक० सेट् । खोडति । अखोडीत् । अचुखोडत्-त.

खोड, (त्रि०) खोड+अच् । खञ्ज । लंगडा । लूला । लंडा.

खोर्, गतिवैकल्य-चालका टूटना । भ्वा० पर० सक० सेट् । खोलति । अखोलीत् । अचुखोलत्-त.

खोर-ल, (त्रि०) खोर् (ल्)+अच् । खञ्ज । लंगडा । लूला । लूला.

ख्या, कहना । अदा० पर० सक० सेट् । ख्याति । अख्यत्.

ख्यात, (त्रि०) ख्या+क्त । ख्यातिसमन्वित । प्रसिद्धिवाला । मशहूर । कथित । कहागया.

ख्यात, (त्रि०) ख्या+क्त । प्रसिद्ध । जाना गया । नामवाला पुकारा गया । कहा गया । जाना गया.

ख्याति, (स्त्री०) ख्या+क्तिन् । प्रशंसा । स्तुति । तारीफ । मशहूरी । कहना.

ख्यापक, (त्रि०) ख्या+णिच्+ण्वुल् । पुक् च । प्रकाश करनेहारा । प्रसिद्ध करनेवाला । मशहूर करनेहारा.

ग

ग, (त्रि०) गम्+ड । (केवल समासमें पीछे आताहै) जो जाताहै । जानेवाला । हिलना । होना । ठहरना । रहना । गंधर्व । गणेशजीका नाम । छन्दोग्रन्थमें गुरु अक्षरके लिये चिह्न (पु०) गीत । गै+क (न०).

गगन-ण, (न०) गम्+युच् । गाऽन्तादेशः । कई कहते हैं कि "णल" की भूल है जैसे "फाल्गुने गगने फेने णत्वमिच्छन्ति बर्बराः" । आकाश । पोलाद । शून्य । सिफर । स्वर्ग । बहिश्त.

गगनध्वज, (पु०) गगनस्य ध्वज इव । मानो आकाशका झण्डा है । मेघ । बादल । सूर्य । सूरज । आफताब.

गगनसद, (त्रि०) गगने सीदति । आकाशमें रहनेवाला । (पु०) स्वर्गवासीभूत । देवता.

गगनसिन्धु, (स्त्री०) गगनस्य सिन्धुः । आकाशकी नदी । गङ्गाका नाम.

गगनस्थ, (त्रि०) गगने तिष्ठति-स्था+क । आकाशमें रहनेवाला । स्थित । इसी अर्थमें.

गगनस्पर्शनः, (पु०) गगनं स्पृशति-अन आकाशको छूनेहारा । वायु । आठ मरुतोंमेंसे एक.

गगनाङ्गना, (स्त्री०) गगनस्य अङ्गना । आकाशकी स्त्री । अप्सरा.

गगनाम्बु, (न०) गगनस्य अम्बु । आकाशका जल । वर्षाका पानी.

गगनेचर, (पु०) गगने चरति । चर्+ठक् । जो आकाशमें विचरता है । सूर्य आदि ग्रह । नक्षत्र । तारा । पक्षी । देवता । राशिओंका चक्र.

गङ्गा, (स्त्री०) गम्+गन् । अपनेनामसे प्रसिद्ध नदीविशेष । दुर्गा । देवी.

गङ्गाज, (पु०) गङ्गायां जायते । जन्+ड । जो गंगामें उपजा । भीष्म । कार्तिकेय । शिवजीने अग्निमें वीर्यको डाला वह सहार न सका इसलिये उसने गंगामें डाल दिया उस्से कार्तिकेय उपजा यह पुराणकथा है.

गङ्गादत्त, (पु०) गङ्गया दत्तः । गंगासे दिया गया । भीष्म वा कार्तिकेयका नाम.

गङ्गाद्वारम्, (न०) गङ्गाया द्वारम् । गंगाके उतरनेका स्थान । हरिद्वार.

गङ्गाधर, (पु०) गङ्गां धरति । धृञ्+अच् । ६ त० । शिवजी (इसने जटामें गंगाको धारण किया) " यह पुराण है" । समुद्र.

गङ्गापुत्र, (पु०) गङ्गायाः पुत्रः ष० त० । गंगाका पुत्र । भीष्म वा कार्तिकेय । एक प्रकारका नीच जातिका पुरुष जिसका काम मुर्दोंको लेजाना है । यात्रियोंको गंगास्नान करानेवाला ब्राह्मण.

गङ्गाभृत्, (पु०) गङ्गां बिभर्ति-भृ+क्विप् । गङ्गाको धारण करनेवाला शंकर । महादेव.

गङ्गाम्बु-अंभस्, (न०) गङ्गाया अम्बु+अम्भः । गङ्गाका जल । शुद्ध वृष्टिका जल जो अस्सुवा आश्विन मासमें गिरता है.

गङ्गालहरी, (स्त्री०) गङ्गायाः श्लोकात्मिका लहरी । जगन्नाथ पण्डितका बनाया हुआ एक प्रकारका काव्य जो गंगाकी स्तुतिमें है.

गङ्गावतारः, (पु०) गङ्गाया अवतारः । गङ्गाका पृथिवीपर उतरना.

गङ्गाष्टकम्, (न०) गङ्गायाः अष्टकं=अष्ट श्लोकानां समूहः । गंगाकी स्तुतिमें आठ श्लोकोंका समूह.

गङ्गासागर, (पु०) गङ्गायाः सागरः । वह स्थान जहां समुद्रमें गङ्गा गिरती है.

गच्छ, (पु०) गम्+श । वृक्ष । दरख्त । लीलावतीमें प्रसिद्ध अंकभेद.

गज, मदसे शब्दकरना । भ्वा० पर० अक० सेट् । गजति । अगाजीत् । अगजीत्.

गज, (पु०) गज्+अच् । हाथी । आठकी संख्या (गिनती) । मनुष्यकी ३० अंगुलतकका परिमाण । एक दैत्य जिसे महादेवने मारदियाथा.

गजच्छाया, (स्त्री०) अस्सू महीनेकी मघानक्षत्रवाली त्रयोदशी (इस्में श्राद्ध करनेका विशेष पुण्य होताहै).

गजता, (स्त्री०) गजानां समूहः तल् । हाथिओंका समूह.

गजदन्त, (पु०) गजस्य दन्तौ इव दन्तौ अस्य । गणेशजी । हाथीदांतके समान दांतवाला (त्रि०) ६ त० । हाथीका दांत । करिदन्त (पु०).

गजपुट, (पु०) हाथभरका गढा.

गजप्रिया, (स्त्री०) ६ त० । शल्लकीवृक्ष.

गजबन्धिनी, (स्त्री०) गजा वध्यन्तेऽत्र । ल्युट्+ङीप् । हाथीबांधनेकी शाला । अस्तबल । तबेला.

गजभक्ष्या, (स्त्री०) गजैर्भक्ष्या । जिसे हाथी खाते हैं । शल्लकीवृक्ष.

गजवल्लभा, (स्त्री०) ६ त० । बहुतसे बीजवाली गिरिकदली । शल्लकी.

गजसाह्वय, (न०) गजेन हस्तिनामकनृपेण सहित आह्वयो नाम यस्य । हाथीनामी राजासे जिसका नाम प्रसिद्ध हुआ । हस्तिनापुर । वारणावत । दिल्ली । कुरुकी राजधानी.

गजा (द) शन, (पु०) गजैरश्यते । कर्मणि ल्युट् । जिसे हाथी खाते हैं । अश्वत्थवृक्ष । बोडका दरख्त । शल्लकी (स्त्री०) ङीप्.

गजाजीव, (पु०) गजैस्तत्पालनादिभिराजीव्यते । जीव् अच् । हाथीओंका पालन करनेसे जिसका जीवन होताहै । हस्तिपालक । हाथीओंको पालनेवाला.

गजानन, (पु०) गजस्य इव आननं मुखं यस्य । हाथीके समान जिसका मुख हो । गणेश । "शनिकी दृष्टिसे इसका सिर कटागया पीछे हाथीके मस्तकसे इसका मुख हुआ" यह पुराणकी बात है.

गजारोह, (पु०) गजं आरोहति । रुह्+अण् । जो हाथीपर चढताहै । हस्तिपाल । महौत । हाथीवान्.

गजाह्व, (न०) गजसहिता आह्वा यस्य । हाथीके साथ जिसका नाम हो । हस्तिनापुर (दिल्ली) । "गजाह्वय" यही अर्थ.

गञ्ज, (पु०) गजि+घञ् । अवज्ञा । आदर न करना । "आधारे घञ्" । भाण्डागार । पात्रोंका घर । खनि । खान । गौयें बांधनेकी शाला । नीचोंका घर । मद्यका पात्र । मद्यकी शाला (स्त्री०) टाप् । दुकान । बाजार । मंडी.

गड्, सींचना । बाहिर निकालना । रस निकालना । भ्वा० पर० सक० सेट् । गडति । अगाडीत्–अगडीत् । चुरा० पर० । गड्यति । "गड-छिपाना । ढाकना."

गड, (पु०) गड्+अच् । एक प्रकारकी मच्छी (गड्डुई) । विघ्न । रोक । खाई । व्यवधान । फरक । बीचमें पडगया देशभेद.

गडि–लि, (पु०) गड्+(ल) इन् । सामर्थ्य होनेपर भी पुष्टतासे बोझा उठानेके डरसे सोगया वृषभ (बल्द) आदि । बच्छा.

गडु, (पु०) गड्+उ । मांसको बढानेवाला रोग । पृष्ठगडु (कुब्ज) नाम रोगविशेष । गलगण्ड रोग । कुबडा । बर्च्छी.

गड्डरि(लि)का, (स्त्री०) गड्डरं (लं) मेषं अनुधावति । ठन् । मेढेके पीछे जानेहारी मेढोंकी कतार (पंक्ति).

गण्, गिनना । चुरा० उभ० सक० सेट् । गणयति-ते । अजीगणत्-त । अजगणत्-त.

गण, गण्+कर्मणि कर्तरि वा अच् । शिवजीका अनुचर । भूतसमूह । संख्या । गिनती । २७ हाथी, २७ रथ, ८२ घोडे, १३२ पदाति (पैदल) इतनी गिनतीकी सेना । भ्वादि अदादि आदि धातुओंके समूह । ज्योतिषमें देव आदि नामवाले नक्षत्र (तारे) छन्दोग्रन्थमें तीन ३ अक्षरोंवाले "म य र" आदि आठ । गणेशजीका नाम.

गणक, (पु०) गणयति+ण्वुल् । जो गिनती कर्ताहै । दैवज्ञ । ज्योतिषी.

गणदेवता, (स्त्री०) गणः सन् गणीभूय वा देवता । देवताओंका समूह जैसे १२ बारह आदित्य, १० विश्वेदेवा ८ वसु, ३६ तुषित, ६४ आभास्वर, ४९ वायु, २२० महाराजिक, १२ साध्य, ११ रुद्र । "आदित्यविश्ववसवस्तुषिता भास्वरानिलाः । महाराजिकसाध्याश्च रुद्राश्च गणदेवताः".

गणनाथ, (पु०) गणानां प्रमथादीनां नाथः । प्रमथ आदिगणोंके स्वामी । गणेश । शिव । "गणनायक आदि" यही अर्थ.

गणरात्र, (न०) गणानां रात्रीणां समाहारः । "गणशब्दके संख्यावाचक होनेसे द्विगुसमास होकर पच् प्रत्यय होगया" । रात्रिओंका समूह, बहुतसी रातें । रात्रिवृन्द,

गणरूप, (पु०) गणा बहूनि रूपाणि अस्य । जिसके बहुतसे रूप हों । अर्कवृक्ष । आकका दरख्त.

गणशस्, (अव्य०) गणान् गणान् इति गण+शस् । अनेक वक्त । बहुतवार.

गणान्न, (त्रि०) गणाय उत्सृष्टं, गणानां वाऽन्नं । बहुतोंके लिये दियागया अन्न । बहुतोंका अन्न । मठ (भण्डार) आदिमें बहुतोंके लिये दिया गया अन्न । वह अन्न कि जिसके बहुतसे स्वामी हों । " गणान्नं गणिकान्नं चेति " मनुने निषिद्ध अन्नमें गिना है.

गणिका, (स्त्री०) गणः समूहोऽस्त्यस्याः भर्तृत्वेन ठन् । जिसके बहुतसे पति हों । वेश्या । कंचनी । कंजरी । हथिनी.

गणित, (न०) गण्+भावे क्त । गिनना । "करणे क्त" व्यक्त और अव्यक्तरूप अंकशास्त्र । पाटीगणित रेखा और बीजगणित । "कर्मणि क्त" गिनती कियागया । गिनागया (त्रि०).

गणेय, (त्रि०) गण्+ण्य । गिन्नेलायक । गणनीय.

गणेरु, (त्रि०) गण्+एरु । कनेरका वृक्ष । हथिनी । वेश्या । कंचनी.

गणेश, (पु०) गणानां ईशः । गणोंका मालिक । अपने नामसे प्रसिद्ध देवता । शिवजी.

गण्ड, (पु०) गडि+अच् । हाथीकी गाल । गाला । गण्डीर । गैंडा । चिह्न । निशान । वीर । घोडेका भूषण (जेवर) बुद्बुदा । बुलबुला । स्फोटक । फोडा । विष्कम्भादिमें एक योग । पिटक । संदूकडी.

गण्डक, (पु०) गण्ड-स्वार्थे क विघ्न । गण्ड । चिह्न । दाग । फोडा । वियोग । चार कौडीका गंडा.

गण्डक, (पु०) गण्ड+स्वार्थे कन् । अपने नामका पशु । गैंडा । गंडा (चार कौडी) । अन्तराय । रुकावट । अंग । निशान.

गण्डकी, (स्त्री०) एक नदीका नाम जो गंगामें बहती है । गैंडी.

गण्डकीशिला, (स्त्री०) गण्डक्यां उत्पन्ना शिला । गण्डकीमें उत्पन्नहुई शिला (पत्थरका टुकडा) । शालग्रामशिला.

गण्डगात्र, (न०) गण्डाः स्फोटका गात्रेऽवयवे यस्य । जिसके शरीरपर सर्वांगमें फोडे हों । सीताफल । माता निकलना.

गण्डभित्ति, (स्त्री०) प्रशस्तः गण्डः । हाथीकी गालका फटना जिसमेंसे मद चूता है । दीवारकी भांति हाथीकी गाल । बहुत उंदा, चौडी और सुन्दर हाथीकी गाल.

गण्डमाला, (स्त्री०) गण्डानां स्फोटकानां माला । फोडोंकी कतार । एकप्रकारका रोग जिसमें बहुत फोडे निकलतेहैं.

गण्डमूर्ख, (त्रि०) गण्डः=अत्यन्तः मूर्खः । अत्यन्त (बहुतही) मूर्ख । बडा बदमाश.

गण्डशैल, (पु०) शैलस्य गण्ड इव । राज० समा० । पर्वतसे गिरेहुए मोटे पत्थर । ललाट । मस्तक.

गण्डस्थली, (स्त्री०) गण्डस्य स्थली । गलाका स्थान । गल । कपोल.

गण्डु, (पु० स्त्री०) गडि+उ । गांठ । उपधान । तकिया.

गण्डूपद, (पु०) गण्डूयुक्तानि पदानि यस्य । जिसके पांव कोडोंवाले हों । केंचुआ । किञ्चुलक.

गण्डूष, (पु०) गडि+ऊषन् । मुं भरनेलायक पानी । चुली । हाथीके सूंडकी नोक । आथकी अंगुली.

गण्य, (त्रि०) गण्+यत् । संख्येय । गिन्नेके लायक । धरनेके लायक.

गत, (त्रि०) गम्+क्त । जानागया । पायाहुआ । जायागया । लाभ कियागया । गिरगया । समाप्त हुआ.

गतागत, (न०) गतं च आगतं च । जाना और आना । गया और आया । पक्षीकी चालका भेद.

गतार्तवा, (स्त्री०) ऋतोरयं आर्तवः तत्फलं गर्भादि च गत आर्तवो यस्याः । जिसकी गर्भ धारण करनेकी शक्ति नहिं रही । बांझ । बूढी.

गति, (स्त्री०) गम्+भावादौ क्तिन् । जाना । पथ । रास्ता । ज्ञान । पहुंचना । दशा । यात्रा । सफर । उपाय । कामका फल.

गद, (पु०) गद्+अच् । श्रीकृष्णका छोटा भाई । रोग । बीमारी । "भावे क" । कथन । कहना । विष । जहिर.

गदा, (स्त्री०) गद्+अच्+टाप् । अपने नामसे प्रसिद्ध लोहेके कीलवाली । लोहेका अस्त्र । पाटलावृक्ष । ढाल । गदा.

गदाग्रज, (पु०) ६ त० । गदका बडा भाई । श्रीकृष्णदेव.

गदाधर, (पु०) गदां धरतीति । धृ० अच् । ६ त० । श्रीकृष्ण.

गदाराति, (पु०) ७ त० । औषध । दवाई.

गद्गद, (पु०) गद् इत्यव्यक्तं गदति क । अच् वा । अव्यक्त और अस्फुट शब्द । ऐसी आवाज कि जो प्रगट न होनेसे रुका साफ सुनाई न पडे । गिडगिडाना.

गद्गदध्वनि, (पु०) गद्गदः अव्यक्तः ध्वनिः । कफ आदिसे रुका कफसहित आवाजका ठीक न निकलना.

गद्य, (त्रि०) गद्+यत् । कथनीय । कहनेलायक । पद्यभिन्न कविका रचाहुआ पादरहित पदसमूह । वह रचना जो श्लोकमें नहिं.

गन्त्री, (स्त्री०) गम्यतेऽनया ष्ट्रन् । ङीप् । बैलोंसे खेंचनेलायक गाडी । जानेवाली.

गन्त्रीरथ, (पु०) गन्त्री रथ इव अभीष्टस्थानप्रापकत्वात् । रथकी नाईं चाहे गये स्थानपर पहुंचा देनेहारा । शंका । गड्डा । वैलगाडी.

गन्द, वैर करना । चुरा० आत्म० अक० सेट् । गन्धयते । अजगन्धत.

गन्ध्, हसना । भ्वा०पर० सक० सेट् । गन्धति । अगन्धीत्.

गन्ध, (पु०) गन्ध्+अच् । सम्बन्ध । लेश । गंधक । अहंकार । सुहांजना । घिसेगये चन्दन आदिका नासिकाइन्द्रियसे ग्रहण करने योग्य गुणभेद (वह गन्ध पांच प्रकारका है, जैसे चूर्ण कियागया, घिसागया, जलाया वा खेंचागया, भलीभांति मलागया, प्राणियोंके अंगोंसे उपजा हुआ) घिसाहुआ चन्दन आदि.

गन्धकचूर्ण, (पु०) गन्धकप्रधानश्चूर्णः । ऐसा चूर्ण कि जिसमें गंधक वहुत हो । वारूदनामी पदार्थ.

गन्धकाष्ठ, (न०) गंधयुक्तं काष्ठं कर्म० । अगुरुचंदन.

गन्धज्ञा, (स्त्री०) गंधं जानाति अनया । घञर्थे क । जिस्से गंधको जानता है । नासिका । नाक.

गन्धतैल, (न०) गंधयुक्तस्य चंदनस्य अग्निसंयोगेन जनितं तैलं । गंधवाले चंदनका आगके संयोगसे उत्पन्न हुआ तेल। अत्तर आदि.

गन्धत्वच्, (स्त्री०) गंधान्विता त्वक् यस्याः । जिसका छिलका गंधवाला हो । एला । इलायची.

गन्धदला, (स्त्री०) गन्धयुक्तं दलं यस्याः । जिसके पत्तोंमें गंध हो । अजमोदा । अजवाईन । जवैन.

गन्धन, (न०) गन्ध्+भावादिषु ल्युट् । उत्साह । दिलेरी । प्रकाशन । जाहिर करना । सूचन । चुगलखोरी । हिंसा । मारना.

गन्धपाषाण, (पु०) गंधयुक्तः पाषाणः । गंधवाला पत्थर । गंधक.

गन्धबन्धु, (पु०) ६ त० । आम्रवृक्ष । आमका दरख्त.

गन्धबीजा, (स्त्री०) गंधो बीजे यस्याः । जिसके बीज (बीओं) में गंध हो । मेथिका साग । मेथी.

गन्धमादन, (पु० न०) गंधेन मादयति । मद्+णिच्+ल्युट् । गंधसे जो मस्त कर्ताहै । पर्वतभेद । भ्रमर । भौंरा । वानर । बंदर । गंधक (पु०).

गन्धमादिनी, (स्त्री०) गंधेन मादयति । मद्+णिच्+णिनि । लाक्षा । लाख । सुरानामी गंधवाला द्रव्य.

गन्धमांसी, (स्त्री०) गंधयुता मांसी । कर्म० । जटामांसीभेद । एक वनस्पति.

गन्धमुखी, (स्त्री०) गंधो मुखेऽस्याः । जिसके मुंमें गंध हो । छुछुंदरी । छुंचा । छछूंदर.

गन्धमृग, (पु०) गंधप्रधानो मृगः । वह मृग (हरिण) जिसमेंसे बहुत गंध निकलता है । कस्तूरीमृग.

गन्धराज, (न०) गंधेन राजते । राज्+अच् । जो गंधसे चमकता है । चंदन । गुग्गल । अपने नामका वृक्ष.

गन्धर्व, (पु०) गंधं अर्वति । अर्व् -जाना । अच् । मृगभेद । घोडा । कोइल । स्वर्गका गवैया । देवयोनिभेद । देवोंका गायन.

गन्धर्वनगर, (पु० न०) गंधर्वाणां नगरं इव । मानों गंधर्वोंका नगर है । शून्यका आश्रयपुरका स्वरूप । नीले पीले आदि बादलोंकी रचनाका भेद । इन्द्रजाल । "गंधर्वपुरम्" इसी अर्थमें है.

गन्धर्वलोक, (पु०) ६ त० । गुह्यलोकके ऊपर विद्याधरोंके लोकके नीचेका स्थान.

गन्धर्ववेद, (पु०) ६ त० । सामवेदका उपवेद । संगीतविद्या । गाधर्व.

गन्धलोलुपा, (स्त्री०) गन्धे लोलुपा । गन्धका लालच करनेवाली । मक्खी.

गन्धवती, (स्त्री०) गंध्+मतुप्–मको व होता है । व्यासकी माता । पृथिवी । वायु और वरुणकी नगरी । सुरा । शराब.

गन्धवल्कल, (न०) गंधो वल्कलेऽस्य । जिसके छिलकेमें गंध हो । दारचीनी । दालचीनीका छिलका.

गन्धवह, (पु०) गंधं वहति । वह्+अच् । ६ त० । वायु । हवा । गंधवाला नायक (स्वामी) आदि (त्रि०).

गन्धवहः (पु०) गन्धं वहति । गन्धको उठानेवाला । वायु । हवा.

गन्धवारि, (न०) गंधवासितं वारि । गंधवाले द्रव्यसे सुगंधीवाला जल (पानी).

गन्धवाह, (पु०) गन्धं वहति । वह्+अण् । उप० । हवा । वायु । जो गंधको उठातीहै । नासिका । नाक । (स्त्री०).

गन्धशाली, (पु०) गंधप्रधानः शालिः । बडी सुगंधीवाले चावल । आमोदवाले धान्यभेद । वासमती आदि.

गन्धसार, (पु०) गंधयुक्तः सारो यस्य । जिसका सार गंधवाला हो । चंदनका वृक्ष.

गन्धसोम, (न०) गंधार्थं सोमो विधुर्यस्य । चन्द्रमा जिसकी सुगंधीको बढाता है । कुमुद (फूल), चन्द्रमाके उदय होनेसे इसका गंध होताहै.

गन्धहारिका, (स्त्री०) गन्धं हरति । सुगन्धि द्रव्यको तयार करनेवाली स्त्री.

गन्धा, (स्त्री०) गंध्+णिच्+अच् । गंधका कारण । चम्पककलिका । चम्बेकी कली.

गन्धाजीव, (पु०) गंधेन (गंधद्रवेण) आजीवति । जो गंधवाले द्रव्योंसे व्यवहार करके जीता है । गंधवणिज् । गंधका व्यापारी । गांधी.

गन्धाढ्य, (पु०) गंधेन आढ्यः । गंधसे भराहुआ । चंदनवृक्ष । नागरंग वृक्ष । गंधवाला दरख्त (त्रि०) । स्वर्णयूथी (स्त्री०).

गन्धाढ्य, (त्रि०) गन्धेन आढ्यः=पूर्णः । सुगन्धिसे भरा हुआ । बहुत खुशबूदार.

गन्धाधिकम्, (न०) गन्धे अधिकं । बहुत गंधवाला । एक प्रकारका अत्तर.

गन्धापकर्षणं, (न०) गन्धं अपकर्षति । गन्धको निवारण करना.

गन्धाम्बु, (न०) (गन्धयुक्तं अंबु) गंधवाला जल । सुगंधिवाला (खुशबूदार) जल.

गन्धार; (पु०) गंधं ऋच्छति । ऋ+अण् । उप० राग । सिन्दूर । एक प्रकारका स्वर (आवाज) देशभेद.

गन्धाश्मन्, (पु०) गन्धवान्-अश्मा । सुगंधिवाला पत्थर । सल्फर । गंधक.

गन्धाष्टकम्, (न०) गन्धानां अष्टानां समूहः । आठ सुगन्धिवाले द्रव्य जो देवताओंपर चढाये जाते हैं.

गन्धाष्टक, (न०) गंधानां (गंधद्रव्याणां) अष्टकं । आठ सुगंधीवाले द्रव्य । चंदन आदि आठ गंधवाली चीजें.

गन्धिनी, (स्त्री०) गंधो विद्यते अस्याः इनिः । जिसका गंध हो । सुरानामी गंधवाला द्रव्य । शराब.

गन्धेभ, (पु०) गन्धप्रधानः इभः । गंधप्रधान हाथी । बहुत ही उत्तम हाथी.

गन्धोत्तमा, (स्त्री०) गंधेन उत्तमा उत्कृष्टा । बहुतही गंधवाली । मदिरा (मद्य) । शराब.

गभस्ति, (पु०) गम्यते (ज्ञायते) गम्-ड-गः (विषयः) तं बभस्ति (भासयति) भस्+क्तिच् । विषय (पदार्थ)को प्रकाश करनेवाली । किरण । सूर्य.

गभस्तिमत्, (पु०) गभस्ति+मतुप् । किरणोंवाला । सूर्य.

गभस्तिहस्त, (पु०) गभस्तयो हस्ता इव यस्य । जलको खेंचनेसे जिसकी किरणें मानों हाथ हैं । सूर्य । सूरज.

गभीर, (त्रि०) गच्छति जलं अत्र । गभ् ईरन् । भान्तादेशश्च । निम्न स्थान । नीचेकी जगह । जिसका तला न छूआ जाय । गहन । जहां प्रवेश करना कठिन हो । न हटाया जानेहारा.

गम्, जाना । भ्वा० पर० सक० अनिट् । गच्छति । अगमत् । जगाम । गतः.

गम, (पु०) गम्+अप् । एक प्रकारका जूआ । जीतनेकी इच्छावालेकी यात्रा । जाना । मार्ग । सदृश पाठ.

गमक, (त्रि०) गमयति (बोधयति) गम्+णिच्+ण्वुल् । बोधक । समझानेवाला । "गमक होनेसे समास हुआ" यह भाष्य है । सबूती । जतानेवाला.

गम्भीर, (त्रि०) गच्छति जलं अत्र । गम्+ईरन् । मुक्का आगम हुआ । नि० जहां पानी जाता है । नीचेका स्थान । मन्द । गहिरा । जम्बीर । कमल । ऋग्वेदका मन्त्रभेद (पु०) । "स्वरे सत्वे च नाभौ च त्रिषु गंभीरता शुभा".

गम्भीरवेदिन्, (पु०) गम्भीरं (मन्दं) वेत्ति । विद्+णिन् । अभ्यास की गई शिक्षाको भी जो चिरकालसे जानताहै ऐसा हाथी । चमडा फाडनेसे लोहू बहनेसे मांस काटनेसे भी जो अपनेको नहिं समझता उसे गंभीर वेदितामी कहते हैं ऐसा हाथी । "गंभीरवेदिता."

गय, (पु०) एक दैत्यका भेद । वानरभेद । वंदर । एक राजा । तीर्थविशेष (स्त्री०) टाप्.

गर, (पु०) गॄ-निगलना । बोलना । पुकारना । बुलाना । +अच् अव् वा । विष । जहर । रोग । बीमारी । पांचवां करण.

गरल, (न०) गिरति जीवनं । गॄ+अलच् । जो जीवनको निगलजाय । विष । जहर । सर्पविष । सांपका जहर । तिनकोंका मूल.

गरिमन्, (पु०) गुरोर्भावः इमनिच् । गरादेशः । बडेका होना । गौरव । बडाई.

गरिष्ठ, (त्रि०) अतिशयेन गुरुः इष्ठन् । बहुतही बडा । " गुरुतर " "गरीयान्."

गरुड, (पु०) गरुद्भ्यां डयते । डी+ड पृ० तका लोप । कश्यपका बेटा बिनताके गर्भसे उपजा पक्षिओंका राजा. ।

गरुडध्वज, (पु०) गरुडो ध्वजः (चिह्नं) अस्य । जिसका चिह्न गरुड है । विष्णु.

गरुडपुराण, (न०) गरुडेन प्रोक्तं पुराणम् । गरुडसे कहाहुआ पुराण । पुराणोंमेंसे एक.

गरुडाग्रज, (पु०) ६ त० । विनताका बडा पुत्र सूर्यका सारथी अरुण.

गरुत्, (पु०) गृ-गॄ-वा उति । पक्षिओंके आकाशमें जानेका कारण । पर । पंख.

गरुत्मत्, (पु०) गरुत् अस्ति अस्य मतुप् मको व नहिं होता । परोंवाला गरुड । विहगमात्र । हरएक पक्षी.

गर्ग, (पु०) गॄ+ग । ब्रह्माका पुत्र । मुनिविशेष.

गर्गरि, (स्त्री०) गर्ग इति शब्दं राति । रा+क+ङीष् । दही रिडकनेका पात्र । कलस । घडा । मच्छका भेद । जवान-पशु (पु०).

गर्ज, बडे जोरकी आवाज करना । भ्वा० पर० सक० सेट् । गर्जति । अगर्जीत् । "गर्ज गर्ज क्षणं मूढ" देवीमाहात्म्यं.

गर्जर, (न०) गृ+विच् । गरं जरयति । जॄ+णिच्+अच् । गाजर । एकप्रकारका मूल (जड).

गर्जित, (न०) गर्ज+क्त । बादलकी आवाज । मेघका शब्द । "कर्तरि+क्त" मत्तहस्ती । मतवारा हाथी । गाजना । गज्जना.

गर्त, (पु०) गृ+तन् । पृथिवीका छिद्र । गढा । स्त्रिओंके नितम्ब(चूतड)में खूएके खरूपका एक अंश । रोगभेद । टोआ.

गर्द, शब्द करना । चुरा० उभ० पक्षे० भ्वा० पर० अक० सेट् । गर्दयति-ते । गर्दति । अजगर्दत्-त.

गर्दभ, (पु०) गर्द+अभच् । गधा । गर्दभ । गंधका भेद । चिट्टाकुमुद.

गर्दभाण्ड, गर्दभं (गंधविशेषं) अमति । अम्+ड । डको इकार न हुआ । जिसके पत्ते वट (वोड) के समान हों ऐसा वृक्ष । पाकुड । प्लक्ष नामसे प्रसिद्ध.

गर्दभी, (स्त्री०) गर्द+अभच् । ङीष् । गोमयकीट । गोहेका कीडा । चिट्टीकंडियारी । अपराजिता । रासभी । गधी.

गर्द्ध, लिप्सा । लाभ करनेकी इच्छा करना । चुरा० उभ० सक० सेट् । गर्द्धयति-ते । अजगर्द्धत्-त.

गर्द्ध, (पु०) गृध्+घञ्+अच् वा बहुत चाह । अतिशय स्पृहा । गर्द्धभाण्ड नामी वृक्ष.

गर्द्धन, (त्रि०) गृध्+युच् । लुब्ध । लोभी.

गर्भ, गृ+भन् । भ्रूण । शुक्र (वीर्य) और शोणित (लोहू)-के मेलसे उपजा शरीरकें जन्मका करनेहारा मांसका पिण्ड (गोला) । बच्चा । कुक्षि । कोख । नाटकमें संधिका भेद । अन्न । आग । पुत्र । गंगा आदि पवित्र नदिओंके पासका स्थान.

गर्भक, (पु०) गर्भे (केशमध्ये) कायति । कै+क । केशोंके बीचकी माला । केशमध्यस्थ माल्य.

गर्भकाल, (पु०) गर्भस्य कालः ष० त० । गर्भका समय.

गर्भक्लेशः, (पु०) गर्भस्य क्लेशः । गर्भका क्लेश । बच्चा उत्पन्न होनेके समयका दुःख.

गर्भक्षय (पु०) गर्भस्य क्षयः । गर्भका नाश होजाना वा गिरजाना.

गर्भगृह, (न०) गर्भ इव गृहम् । गर्भकी नांई घर । घरके मध्यका भाग । बीचका कमरा.

गर्भघातिनी, (स्त्री०) गर्भं हन्ति । हन्+णिनि । लाङ्ग-लिका वृक्ष.

गर्भच्युत, (त्रि०) गर्भात् च्युतः । गर्भसे गिर पडा जैसा कि बच्चा.

गर्भपोषणं, (न०) गर्भस्य पोषणं=भरणम् । गर्भका पुष्ट करना । गर्भका पालना.

गर्भद, (पु०) गर्भं ददाति । दा+क । पुत्रजीव वृक्ष । गर्भ देनेहारा अर्थात् इसके सेवनसे गर्भ हो जाता है । क्षुपभेद.

गर्भपातक, (पु०) गर्भं पातयति । पत्+णिच्+ण्वुल् । जो गर्भको गिरा देताहै । रक्तशोभाजन । लाल सजना । लाल सुहांजना.

गर्भवती, (स्त्री०) गर्भो विद्यते अस्याः । मतुप् । मको व होता है । आपन्नगर्भा स्त्री । बच्चा जननेवाली औरत । हामिलह.

गर्भशय्या, (स्त्री०) गर्भस्य शय्या इव स्थानम् । गर्भका वह स्थान जो छेजके समान है । "शंखकी नाभीके समान तीन आवर्त (घेरे) हैं, इस प्रकारकी योनि है, इसके तीसरे आवर्तमें गर्भशय्या (गर्भकी छेज) है, जहां गर्भका निवास होताहै."

गर्भस्राव, (पु०) स्रु+घञ् ६ त० । प्रसूतिकाल आनेके पहिले रोग आदिसे गर्भका गिरना.

गर्भस्राविन्, (पु०) गर्भं स्रावयति । स्रु+णिच्+णिनि । गर्भको गिरा देता है । हिन्ताल वृक्ष.

गर्भागार, (न०) गर्भ इवागारं । घरका मध्य (बीच)का भाग । निवास करनेका स्थान (जगह) । गर्भरूपी घर । गर्भका स्थान.

गर्भाधान, (न०) गर्भः शुद्धतया आधीयतेऽनेन । जिस-के द्वारा शुद्ध होकर गर्भ ठहराजाताहै । दश प्रकारके संस्कारोंमेंसे गर्भके पात्रको संस्कृत (साफ) करके वीर्यका सींचना.

गर्भाशय, (पु०) गर्भ आशेतेऽत्र । शी+अच् । जहां गर्भ सोता है । गर्भका वेष्टन (पडदा घेरनेवाला) रूप चमडा । जरायु । जेर.

गर्भाष्टम, (पु०) गर्भात् (गर्भग्रहणसमयात्) अष्टमः गर्भधारण करनेके समयसे आठवा । गर्भग्रहणसे लेकर आठवाँ महीना अथवा वर्ष (वरिस) । "गर्भाष्टमेऽब्दे कुर्वीत" मनुः.

गर्भिणी, (स्त्री०) गर्भोऽस्त्यस्याः इनि । जिसे गर्भ हो । गर्भवाली स्त्री । हामिलह.

गर्भेश्वरः, (पु०) गर्भात् एव ईश्वरः । जन्मका धनी । जन्म-सेही चक्रवर्ती.

गर्व, मदकरना । अहंकार करना । भ्वा० पर० सक० सेट् । गर्वति । अगर्वीत्.

गर्व, अहंकार करना । चुरा० आत्म० सेट् । गर्वयते । अज-गर्वत.

गर्व, जाना-गति । भ्वा० पर० सक० सेट् । गर्वति । अगर्वीत्.

गर्व, (पु०) गर्व अहंकारकरना+घञ् । अहंकार । मगरूरी.

गर्व, (पु०) गर्व+घञ् । अभिमान । अहंकार । मगरूरी । "धन, रूप, जवानी, कुल, विद्या और बलको पाकर दूसरोंको कुल न समझना" इस प्रकार अवज्ञाका भेद.

गर्ह, निन्दा करना । चुरा० पक्षे भ्वा० आत्म० सक० सेट् । गर्हयते । अजगर्हत । गर्हते । अगर्हीत् । अर्हिष्ट.

गर्हणं-णा, (न० स्त्री०) गर्ह्+ल्युट्+, अन । निन्दा । उपालम्भ । धिक्कार । गाली.

गर्हा, (स्त्री०) गर्ह्+अ । निन्दा । गाली.

गर्हित, (त्रि०) गर्ह्+क्त । निन्दा कियागया । उपालम्भ कियागया । तिरस्कार कियागया । निषेध कियागया । निकृष्ट । बुरा । तं० न० । उपालंभ वा पापजनक कृत्योंसे भराहुआ काम.

गर्ह्य, (त्रि०) गर्ह्+ण्यत् । निन्दाके योग्य । अत्यंत नीच । नालायक.

गर्ह्यवादिन्, (त्रि०) गर्ह्यं वदति । वद्+णिनि । निन्दाके लायक बोलताहै । खराब वचन बोलनेवाला । निंद्यवादी । "कद्वद".

गल्, खाना । बहाना । गालना । भ्वा० पर० सक० सेट् । गलति । अगालीत्.

गल, (पु०) गल्+अच् । कण्ठ । गला । सर्जरस (धुना) बाजा । मच्छी.

गलक, (पु०) गल्+वुन्+अक । गला । कण्ठ । गर्दन । एक प्रकारकी मल्छी.

गलकम्बल, (पु०) गले कम्बल इव । गलमें मानों कंबल है । साझा । गौओंके गलेमें रहनेहारा मांसका गोला.

गलगण्ड, (पु०) ७ त० । (एरगण्ड) एक प्रकारका रोग.

गलग्रह, (पु०) जहां आरम्भ होकर प्रत्यारंभ (पीछे हटना) प्रतीत नहिं होता उसे गर्गादि सम्पूर्ण मुनिओंने गलग्रह कहाहै । फिर न (प्रत्यारम्भ) लौटकर शुरु होनेवाला पदार्थ । कृष्णपक्षकी चतुर्थी सप्तमी आदि तीन दिन, त्रयोदशी आदि चर दिनमें आठ गलग्रह कहे जाते हैं । आप डालीगई विपत्ति । मच्छीकी चटनी.

गलनं, (न०) गल्+भावे ल्युट्+अन । चूना । गिरना पिसलना.

गलन्तिका, (स्त्री०) गल्+शतृ+ङीप् । अल्पार्थे कन् । थोडेजलकी धारावाली गगरिया । झारा । कर्करी । "देवे देया गलन्तिका" स्मृतिः.

गल(ले)स्तनी, (स्त्री०) गले स्तनौ यस्याः वा अलुक् स० । जिसके गलेमें स्तन (मम्मा) हो । छागी । बकरी.

गलहस्त, (पु०) गले हस्तः । निकालनेके लिये गलेमें दियागया हाथ । गलहत्था.

गलित, (त्रि०) गल्+क्त । पतित । गिरपडा । ढिलकगया । गलगया.

गलितकुष्ठं, (न०) गलितं कुष्ठं क० स० । निरुपाय (बे-इलाज) कोढ जिसमें अंगुलियें झड जातीहैं.

गलितनखदन्त, (त्रि०) गलिताः नखाः दन्ताश्च यस्य ब० स० । जिसके नखून और दांत गल गयेहैं.

गलितयौवन, (त्रि०) गलितं यौवनं यस्य । जिसका यौवन (जवानी) नष्ट होचुकाहै । वृद्ध होगया.

गलितवयस्, (त्रि०) गलितं वयः यस्य । जिसकी आयु जा चुकीहै.

गल्या, (स्त्री०) गलानां (कण्ठानां) समूहः । गलोंका समुदाय (समूह).

गल्ल, (पु०) गल्+ल । गाल । गल्ल । गण्ड । कपोल । रुक्सारा.

गल्लक, (पु०) गलति+क्विप्-गल् तं लाति गृह्णाति । ततः स्वार्थे कन् । चषक । पानपात्र । मद्यपीनेका वर्तन । शराबका पियाला.

गवय, (पु०) गु+अयच् । गौके समान गलेमें कंवलके विना पशुका भेद । एकप्रकारका वानर.

गवल, (पु०) गुङ्-शब्दकरना+अप् तं लाति । ला+क । वडा शब्द करनेहारा । वनमहिष । वनका भैंसा । उसका सींग (न०).

गवाकृति, (त्रि०) गोः आकृतिः इव आकृतिः यस्य ब० स० । गौकी आकृति (शकल) वाला.

गवाक्ष, (पु०) गवां किरणानां अक्षि रन्ध्रं इव । मानो किरणोंकी आंख अर्थात् निकलनेका द्वार है । जालके समान कुलीन स्त्रियोंके देखनेका स्थान । झरोखा । वातायन.

गवेन्द्रः, (पु०) गवां इन्द्रः ष० त० । गौओंका स्वामी (मालिक) । उत्कृष्ट वृषभ । बैल व सांड.

गवेशः ईश्वरः, (पु०) । गवां ईशः वा ईश्वरः ब० त० । गौओंका स्वामी (मालिक).

गवेषु, अन्वेषण । तालाशकरना । खोजना । ढूंडना । चुरा० आत्म० सेट् । गवेषयते । अजगवेषत.

गवेषणा, (स्त्री०) गवेष्+युच्+टाप् । अन्वेषण । तलाश । खोजना । ढूंड.

गव्य, (त्रि०) गोर्विकारः गवि भवं । गोर्हितं । गोरिदं वा सर्वत्र यत् । गौका विकार, गौमें हुआ, गौके लिये हितकारी, गौका ये । गोसम्बन्धीय । दूध । दही । मक्खन । गोबर । गोमूत्र । पीला.

गव्यूति, (स्त्री०) गोर्यूतिः । क्रोशयुग । दोकोस । जहां गौएं मेलें.

गह्, गहन-गाढा होना (जैसा कि जंगल) कठिनतासे दाखिल होना । चुरा० उभ० सक० सेट् । गहयति-ते । अजगहत्-त.

गहन, (न०) गाह्+युच् -पृ० ह्रस्वः । जंगल । गव्हर । दुःख । दुर्गम । दुष्प्रवेश । जहां दाखिल होना कठिन है । (त्रि०).

गह्वर, (पु०) गाह्+वरच् । नि० । निकुञ्ज । कुञ्ज । वृक्षोंकी छायामें रास्ता । गुहा । गुफा । वन । रोना । पाखण्ड । कठिन स्थान.

गा, जाना । भ्वा० आत्म० सक० अनिट् । गाते । अगास्त.

गा, स्तुति । तारीफ करना । सक० । जन्महोना । अक० जुहो० । जगाति । अगासीत्.

गाङ्गेय, (पु०) गङ्गा+ढक् । गंगाका पुत्र । भीष्म । कार्तिकेय । सोना । धतूरा.

गाढ, (त्रि०) गाह्+क्त । डुबकी लगाया हुआ । नहाया हुआ । अच्छी तरह जलमें प्रविष्ट हुआ.

गाढ, (गाह्+क्त) । अतिशय । बहुतही । दृढ । पक्का । भरीहुई । सेवित । सेवा कियागया । "तपस्विगाढां तमसां प्राप" रघुः.

गाणपत, (त्रि०)–ती । (स्त्री०) । गणपति अण् । गण (सेना)का स्वामी (मालिक) । गणपति (गणेश) वाला.

गाणपत्य, (पु०) गणपति–यक् । गणेशजीकी पूजा करनेवाला ।–त्यं ·(न०) गणेशकी पूजा । सेनाका नायक होना । सर्दार होना.

गाणिक्य, (न०) गणिकानां समूहः+ष्यञ् । वेश्या (कंजरी) ओंका समूह.

गाण्डि(ण्डी)व, (पु० न०) गाण्डी ग्रन्थिरस्यास्तीति वा पूर्वपददीर्घः । गांठवाला । अर्जुनका धनुष् । हरएक प्रकारका धनुष्.

गाण्डी(ण्डि)विन्, (पु०) गाण्डि (ण्डी) व+इनि । अर्जुन वेषधारी । अर्जुनवृक्ष.

गातव्य, (त्रि०) गै–तव्य । गाने योग्य । जो गाया जाना चाहिये.

गातृ, (त्रि०) त्री–(स्त्री) गै+तृच् । गानेवाला (पु०) गंधर्व । गानेहारा.

गात्र, शैथिल्य । ढीला होना । चुरा० आत्म० अक० सेट् । गात्रय । तेअजगात्रंत.

गात्र, (न०) गा+ष्ट्रन् । देह । अंग । हाथीके आगेकी लातें (जंघा).

गाथकः–थिकः, (पु०) गै–थकन् । गानेवाला पवित्र पुराणादि रचनाके गानेवाला.

गाथक, (त्रि०) गै+थकन् । गायक । गाकर जीनेवाला गवैया.

गाथा, (स्त्री०) गै+थन् । आर्याछन्द । प्राकृत । अपनी देशीआदि भाषामें रचाहुआ श्लोक गीत.

गाध, प्रतिष्ठा । ठहरना । गुथना । पानेकी इच्छा करना । भ्वा० आत्म० अक० सेट् । गाधते । अगाधिष्ट । अजगाधत्.

गाध, (पु०) गाध+घञ् । स्थान । लिप्सा । पानेकी इच्छा । थोडा गहरा (जिसका तल छूआ जाय).

गाधि, (पु०) गाध+इन् । चन्द्रवंशी कन्नौजका स्वामी । विश्वामित्रका पिता । एक राजा.

गाधिज, (पु०) गाधेर्जायते । जन्+ड । गाधीका बेटा । विश्वामित्र.

गाधेय, (पु०) गाधि+ढक् । विश्वामित्रमुनि.

गान, (न०) गै+ल्युट् । गीत । ध्वनि । आवाज । सुर । गाना.

गान्दिनी, (स्त्री०) गंगा । यादवोंके वंशमें अक्रूरजीकी माता.

गान्धर्व, (त्रि०) गंधर्वस्य इदं अण् । गंधर्वसम्बंधी । वह विवाह जिसमें कन्या और वरका अपनी इच्छासे मेलहो । हिंदुस्तानका एक उपद्वीप । (पु०) सामवेदका उपवेद । संगीतशास्त्र । गान (वाक्यमें स्वरोंका समूह तालसे मिलाहुआ और ध्यानसे बोलागया) (न०).

गान्धर्वशाला, (स्त्री०) गान्धर्वाणां शाला ष० त० । गान्धर्वोंकी शाला । गाने नाचने बजानेका घर.

गान्धार, (पु०) गंधं सौरभं ऋच्छति+अण् । गंधक देनेवाला गंधरस । सिंधूर । एक प्रकारका राग । तीसरी सुर । एक राग । कंधारका देश । कंधारमें उपजा (त्रि०) (न०) । गंधक (न०).

गान्धारराज, (पु०) गांधाराणां (जनपदानां) राजा टच् । दुर्योधनका नाना सुवल । उसका पुत्र । शकुनि । दुर्योधनका मामा.

गान्धारी, (स्त्री०) गांधारस्य अपत्यं स्त्री+अण् । दुर्योधनकी माता । धृतराष्ट्रकी स्त्री.

गान्धारेय, (पु०) गान्धार्याः अपत्यं+ढक्+ण्य । गान्धारीकी सन्तान । दुर्योधन आदिकोंका नाम.

गान्धिक, (पु०) गंधेन जीवति+ठक् । जिसका जीवन गंधपर हो । गांधी । गंधका व्योपार करनेवाला.

गामिन्, (त्रि०) गम्+णिनि । समासके पीछे प्रयुक्त होताहै । जानेवाला । हिलनेवाला । परिभ्रमण करनेवाला.

गाम्भीर्य, (न०) गम्भीरस्य भावः+ष्यञ् । गम्भीरपना । गहरापना (जल, शब्द,) अर्थ वा चरित्रका.

गायः, (पु०) गै+भावे घञ् । गाना । गीत.

गायक, (पु०) गै+ण्वुल् । गानेवाला । गवैया.

गायत्री, (स्त्री०) गायन्तं त्रायते । त्रै+क । जो गातेहुएको बचाती है । वेदमें कहागया एक मन्त्र । छ वा आठ अक्षरोंके पादवाला छन्द.

गायन, (त्रि०) गै+ल्युट् । गानोपजीवी । गाकर जीनेवाला "स्त्रियां ङीप्".

गारुड, (न०) गरुडो देवता अस्य । जिसका देवता गरुड हो । मरकतमणि । विषका मन्त्र । स्वर्ण । "तेन प्रोक्तं" अण् । गरुडसे कहागया पुराण.

गारुडिक, (पु०) गारुडेन (विषमन्त्रेण) जीवति ठक् । जिसका जीवन विष निकालनेवाले मन्त्रपर हो । विषवैद्य.

गारुत्मत, (न०) गरुत्मान् देवता अस्य । जिसका देवता गरुड है । मरकतमणि.

गार्भिण, (न०) गर्भिणीनां समूहः+अञ् । गर्भवालीस्त्रियोंका समूह.

गार्हपत्य, (पु०) गृहपतेः नाम्ना युक्तः । गृहस्थीके नामवाली । एकप्रकारकी यज्ञकी अग्नि.

गार्हमेध, (त्रि०)-धी (स्त्री०) गृहमेधस्य इदं अण् । गृहस्थके योग्य ।-धः (पु०) गृहस्थके करने योग्य पांच यज्ञ.

गार्हस्थ्य, (पु०) गृहस्थस्य भावः कर्म वा । गृहस्थआश्रममें करनेलायक काम । गृहस्थीका धर्म.

गालव, (पु०) गल्+घञ् । तं वाति । वा+क । एक मुनि । लोधवृक्ष.

गालि, (पु०) गल्+इन् । शाप । निन्दा । बुरा वचन.

गावल्गणि, (पु०) गवल्गणस्य अपत्यं पुमान्+अण्-इ । गवलणका बेटा । सञ्जयका नाम.

गाहू, (पु०) विलोडन । भलीभांतिदेखना । तलाशकरना । भ्वा० आत्म० सक० सेट् । गाहते । अगाहिष्ट । अ गाढ.

गाहनं, (न०) गाह्+ल्युट्+अन । जलका गाहना । डुबकी लगाना । स्नान करना.

गाहित, (त्रि०) गाह्+क्त । वीचमें नहाया हुआ । डुबकी लगाया हुआ । पानीके बीचमें प्रविष्ट हुआ.

गाहित्र, (त्रि०) गाह्+तृच् । पानीमें डुबकी लगानेवाला । जलमें प्रविष्ट होनेवाला.

गिर्-रा, (स्त्री०) गृ+क्विन्- वा टाप् । वाक्य । वचन । शब्द । वाणी.

गिरि, (पु०) गृ+कि । पर्वत । पहाड । एकप्रकारका संन्यासी । संन्यासीकी उपाधि (उपनाम) जैसे आनन्दगिरि । बालमूषिका (स्त्री०).

गिरिकूटं, (न०) गिरेः कूटं । पर्वतका शिखर । चोटी.

गिरिगुहा, (स्त्री०) गिरेः गुहा । पर्वतकी गुफा.

गिरिचरः, (पु०) गिरौ चरति । पहाडपर विचरनेवाला.

गिरिज, (न०) गिरौ जायते । जन्+ड । अभ्र । बादल । शिलाजतु । लोहा । गेरी । पार्वती । मातुलुङ्गी (स्त्री०).

गिरिदुर्ग, (न०) गिरिरेव दुर्गं । पहाडका किला । राजाओंके निवासका वह स्थान कि जहां शत्रुओंसे निर्भय होकर रह सकें । गड । पहाडका वैसा स्थान.

गिरिन(ण)दी, (स्त्री०) गिरेः नदी । पहाडकी नदी.

गिरिभिद्, (पु०) गिरिं भिनत्ति । भिद्+क । जो पर्वतको फाडता है । वह वृक्ष जो पत्थरको फाड देता है । इन्द्र.

गिरिश, (पु०) गिरौ शेते । शी+ड । जो पर्वतपर सोता है । शिव.

गिरिसुत, (पु०) पर्वतका पुत्र । मैनाक नामी पहाड । पार्वती (स्त्री०).

गिरीश, (पु०) गिरेः कैलासस्य ईशः । कैलासका स्वामी । महादेव.

गिलित, (त्रि०) गॄ+क । गिलो जातोऽस्य । इतच् । भक्षित । खायाहुआ । खायागया.

गीत, (न०) गै+क्त । गाना । सुरतालसे वचनको बोलना.

गीतक्रमः, (पु०) गीतस्य क्रमः । गानेका क्रम । सिलसिला । प्रकार । ढंग.

गीतज्ञ, (त्रि०) गीतं जानाति-ज्ञा+क । गीतको जाननेहारा । गायक । गवैया.

गीतप्रिय, (त्रि०) गीतस्य प्रियः । गीतका प्यारा शौकीन.

गीतमोदिन्, (पु०) गीतेन मोदते+मुद्+णिन् । गीतसे हर्ष करनेवाला । किन्नर । गन्धर्व.

गीतशास्त्र, (न०) गीतस्य शास्त्रम् । गीत । गानेका शास्त्र । गंधर्वविद्या.

गीता, (स्त्री०) गै+कर्मणि क्त । गुरु और शिष्यकी कल्पनासे उपदेशस्वरूप कथाविशेष । वह भगवद्गीता रामगीता आदि भेदसे बहुत प्रकारकी है किन्तु गीताओंमें भगवद्गीता हीं प्रसिद्ध है.

गीतायन, (न०) गीतस्य अयनं=साधनं । गीतका साधन । बीणा । सितार । बाजा.

गीति, (स्त्री०) गै+क्तिन् । गाना । आर्याछन्दका भेद.

गीर्णि, (स्त्री०) गॄ+क्तिन् । गिलन । खाना । स्तुति । बडाई.

गीर्वाण, (पु०) गीरेव बाणो यस्य । वाणीही जिसका बाण है । देव.

गीष्पति, (पु०) गिरां पतिः । वाणिओंका मालिक । बृहस्पति । देवताओंका गुरु । "गीर्पतिः" "गीष्पतिः" यही अर्थमें.

गु, शब्दकरना । भ्वा० आ० अक० अनिट् । गवते । अगोष्ट.

गु, विष्ठोत्सर्ग । मलका छोडना । तुदा० पर० अक० अनिट् गुवति.

गुग्गुल, (लु), (पु०) गुज+क्विप् गुक् ततो गुडतिं (रक्षति) उ । गुड+क वा । गुग्गल । एकप्रकारका वृक्ष । रक्त शोभाञ्जन । लाल सुहांजना.

गुच्छ, (पु०) गु+क्विप् गुतं छ्यति-छो+क । कलिओंके फूल आदि समूह । बालस्तबक (गुच्छा) । बाईस लडोंका हार । मोरका पर । मुक्ताहार । मोतिओंका हार । "गुच्छक" गुलदस्तह.

गुच्छ(पत्र), (पु०) गुच्छाकृतीनि पत्राणि अस्य। जिसके पत्ते गुच्छेकी शकलके हों। तालका वृक्ष। इसका प्रत्येक पत्र गुच्छेके स्वरूपका है.

गुच्छफल, गुच्छाकृतीनि फलानि अस्य। जिसके फल गुच्छेकी भांति हों। रीठा। करञ्जा। राजादनी। कतक (इमली) अग्निदमनी। काकमाची। केला। दाख (स्त्री०) टाप्.

गुज्, ध्वनि। आवाज करना। गुजति। जुगोज अगुजिष्ट.

गुञ्ज्, कूकना। शब्दकरना। भ्वा० पर० सक० सेट्। गुञ्जति.

गुञ्जा, (स्त्री०) गुजि+अच्। एक प्रकारकी लता (वेल) तीन जौंका परिमाण (माप)। नगारा (पटह)। मीठी और धीमी आवाज। शरावका घर। रत्ती.

गुटी, (स्त्री०) गु+टिक् वा ङीप्। गोलस्वरूपकी गुटिका। दवाईकी गोली। मूर्ति। शतरञ्जकी नर्द। स्वार्थे कन्। टाप्। वही अर्थ.

गुठ्, वेष्टन। घेरादाना। लपेटना। चुरा० उभ० सक० सेट्। गुण्ठयति-ते। अजुगुण्ठत्-त.

गुड्, लपेटना। तोडना। रोकना। तुदा० पर० सक० सेट्। गुडति। जुगोड अगुडीत्.

गुड, (पु०) गुड्+क। गोल। हाथीका सन्नाह (फन्दा)। इक्षुपाक। गन्नेका पकाहुआ रस। गुड.

गुडक, (पु०) गुडेन पक्वः-वा कन्। गुडका गोला। ग्रास। गुडकी बनाई गई एक प्रकारकी मद्य.

गुडत्वक्-च्, (पु०) गुड इव मधुरा त्वक् (त्वचा) यस्य। जिसकी त्वचा (छाल) गुडके समान मीठी हो। छाल। दाल (र) चीनी.

गुडपुष्प, (पु०) गुड इव मधुरं पुष्पं अस्य। जिसका फूल गुडके समान मीठा हो। मधूक (महुआ) वृक्ष.

गुडशिग्रु, (पु०) गुड इव मधुरा शिग्रुः। लालसुहांजना.

गुडाका, (स्त्री०) गुड-विशेष। तोडना। रोकना। आक। निद्रा। नींद.

गुडाकेश, (पु०) गुडाकायाः (निद्रायाः) ईशः वशित्वात्। नींदको काबू करनेवाला। शिव। अर्जुन.

गुडाशय, (पु०) गुड इव मधुरः आशयः (फलमध्यं) यस्य। जिसके फलमें गुडकी मिठास हो। आखरोटका वृक्ष। ६ त०। गुड चाहनेवाला.

गुडु(डू)ची, (स्त्री०) गुड् बचाना। उ (ऊ) चट्। अपने नामकी लता। गिलोयकी वेल.

गुण्, मन्त्रण। सलाह करना। दूरा करना। चुरा० उभ० सेट्। गुणयति-ते। अजुगुणत्-त.

गुण, (पु०) गुण+अच्-घञ् वा। धनुषका चिल्लह। धनुष खेंचनेकी रस्सी। रस्सी। शूरता आदि धर्म। राजाओंके संधि विग्रह यान आसन द्वैध और आश्रय छे साधन। ज्ञान विनय आदि। सांख्यके मतमें पुरुषके भोगका साधन होनेसे उसे बांधनेहारे सत्व रज तम पदार्थ। अप्रधान। न्यायमतमें रूप आदि चौवीस पदार्थ। व्याकरणमें अ ए ओ। अलंकारमें माधुर्य आदि। दुहराना। तन्तु। दूर्वा। घास.

गुणक, (पु०) गुण्। दुहराना। भरना+ण्वुल्। भरनेवाला। वह राशि जिसके साथ गुणा जाता है। "गुण्यान्त्यमङ्कं गुणकेन हन्यात्" लीलावती.

गुणतः, (अव्य०) गुण+तसिल्। तीन गुणों (जगत्के सम्पूर्ण पदार्थोंमें) के अनुसार सत्व, रज, तम.

गुणता-त्वं, (स्त्री० न०) गुण+तत्-वा त्व-भावे। गुणपना। अच्छापन। उत्कृष्टता। धर्म। गुणना। रस्सीपना.

गुणनं, (न०) गुण्-ल्युट् अन्। गुणना। प्रसिद्ध करना। गुणवर्णन करना.

गुणनिका, (स्त्री०) गुण्-भावे युच्-स्वार्थे क। अध्ययन अभ्यास। नृत्य। नाचनेकी विद्या। नाटककी प्रस्तावना। माला। हार.

गुणनीय, (त्रि०) गुण्+करणे अनीयर्। गुण जरब। देनेयोग्य। गिन देनेलायक। उपदेश करने योग्य.

गुणमय, (त्रि०) गुण+मयट्। छोटेसे तन्तु (धागे) वाला। प्रकृतिके तीन गुणोंवाला। अच्छे गुणोंवाला। धर्मात्मा.

गुणवृक्षक, (पु०) वृक्ष इव कायति। कै+क। गुणानां (नौकाकर्षणरज्जूनां बन्धनाधारः) वृक्षः। बेडिओंको खेंचनेवाली रस्सिओंके बांधनेका आश्रय। मस्तूल.

गुणित, (त्रि०) गुण्+कर्मणि क्त। गुणागया। आहत। चोट कियागया। भरागया। पूरित.

गुणिन्, (पु०) गुणोऽस्त्यस्य इनि। चिल्लेवाला। धनुष्। गुणवाला (त्रि०).

गुणीभूत, (त्रि०) अगुणः गुणः भूतः। च्वि+भू+क्त। अप्रधान कियागया.

गुणीभूतव्यङ्ग्य, (न०) गुणीभूतं वाच्यार्थात् अपकृष्टं व्यङ्ग्यं यत्र। वाच्यार्थ (असली अर्थ) से जहां व्यङ्ग्य (व्यञ्जना शक्तिसे जाना गया) अर्थ अपकृष्ट (छोटा) हो। अलंकारमें कहाहुआ मध्यम काव्य.

गुण्डिक, (पु०) गुण्ड+अस्ति अर्थमें ठन् (इक)। पीसे हुए चावल आदि.

गुत्स, (पु०) गुध्+स किच्च । स्तबक । गुच्छा । खिली-हुई कली.

गुद्, केलना । भ्वा० आत्म० अक० सेट् । गोदते । अगोदिष्ट.

गुद, (न०) गुद्+क । मल छोडनेका द्वार (दर्वाजा) । नीचेकी वायु (हवा) के निकलनेका द्वार.

गुदकील, (पु०) गुदे कील इव । गुदापर मानों मेख लगी है । बवासीर रोग । "गुदाङ्कुर" यही अर्थ है.

गुदग्रह, (पु०) गुदं गृह्णाति । ग्रह्+अच् । जो गुदाको पकडता है । उदावर्त नामक रोग.

गुदस्तम्भः, (पु०) गुदं स्तभ्नाति–उप–स । गुदाको रोक लेनेवाला । वदहजमी.

गुध्, रोकना । क्र्या० पर० अक० सेट् । गुध्नाति । जुगोध अगोधीत्.

गुध्, खेलना । भ्वा० आ० अक० सेट् । गोधते । अगोधिष्ट.

गुध्, वेष्टन । घेरादेना । लपेटना । दि० पर० अक० सेट् । गुध्यति.

गुप्, गोपन । रक्षाकरना । छिपाना । बचाना । भ्वा०आ०सक० सेट् । गोपते । अगोपिष्ट.

गुप्, निन्दाकरना । भ्वा० आत्म० सक० सेट् । जुगुप्सते । अजुगुप्सिष्ट.

गुप्, बचाना । भ्वा० पर० सक० सेट् । गोपायति । अगोपायीत्-अगोपीत् अगौप्सीत्.

गुप्, -घबराना । दिवा० पर० सक० सेट् । गुप्यति । अगुपत् । अगोपीत्.

गुप्त, (त्रि०) गुप्-बचाना-वा छिपाना+क्तः । रक्षित । बचायागया । छिपायाहुआ । ढांकाहुआ । वैश्य जातिकी संज्ञा (पु०).

गुप्तकथा, (स्त्री०) गुप्ता कथा । छिपी हुई कथा (बातचीत.)

गुप्तगतिः, (पु०) गुप्ता गतिः यस्य ब० स० । छिपीहुई चालवाला । गुप्तचर । जासूस.

गुप्तदानं, (न०) गुप्तं दानं । छिपाहुआ दान । छिपी हुई भेट.

गुप्ति, (स्त्री०) गुप्+क्तिन् । बचाना । छिपाना । राजाओंकी अपनी नगरी । दूसरेकी नगरी । रक्षा । पहिरा । जेलखाना । पृथिवीका गढा । अवस्करस्थान । मैला डालनेकी जगह । अरूडी । बेडीका छेक । यम । गढेके लिये पृथिवीका खोदना.

गुफ्, ग्रन्थ गांठना । तुद० पर० सक० सेट् । गुम्फति । अगोफीत् । गुफितः.

गुम्फ, (पु०) गुम्फ्+घञ् । गांठना । वाहूका भूषण (जेवर) । डाढी.

गुम्फना, (स्त्री०) गुम्फ्+युच् । "वाक्यमें शब्द और अर्थकी अच्छी रचना" गूथना । अच्छी रचना.

गुम्फित, (त्रि०) गुम्फ्+क्त । ग्रथित । गुथागया । रचागया । गांठागया.

गुर्, मारना । जाना । यत्नकरना । तकलीफ देना । नुकसान करना । दिवा० आत्म० सक० सेट् । गूर्यते । अगोरिष्ट । गूर्णः । गोरणं.

गुरु, (पु०) गिरति अज्ञानं, गृणाति (उपदिशति) वा धर्मं । गृ+कु उच्च । जो अज्ञान (बेसमझी) को दूर कर्ता अथवा जो धर्मका उपदेश देता है । निषेक (वीर्यसिञ्चन) आदि कर्मोंका करनेहारा पिता । वेद पढानेहारा आचार्य । शास्त्रका उपदेशकरनेहारा । सम्प्रदाय (मत) चलानेवाला । पढानेवाला । पाधा । तन्त्रके मन्त्रोंका उपदेश करनेवाला । बृहस्पति । पुष्यतारा । दो मात्रा । दीर्घस्वरवाला वर्ण । बिन्दु और विसर्गवाला एकमात्र । संयुक्त वर्णके पहिले रहनेवाला एकमात्र । द्रोणाचार्य । बलवान् महान् पूजनेके लायक । "स्त्रियां" "गुर्वी" वा "गुरुः".

गुरुक्रम, (पु०) ६ त० । गुरुपरम्परोपदेश । बडोंसे चलाआया उपदेश.

गुरुचर्या, (स्त्री०) गुरोः चर्या । गुरुकी सेवा.

गुरुजनः, (पु०) गुरुजनः । कोई आदरके योग्य व्यक्ती । अपनेसे बडा सम्बन्धी.

गुरुतल्प, (पु०) गुरोः तल्पः=दाराः । गुरकी स्त्री.

गुरुतम, (त्रि०) अतिशयेन गुरुः–तमप् । अत्यन्त आवश्यक वा प्रयोजनीय । –मः (पु०) श्रेष्ठ शिक्षक । विष्णुका एक नाम.

गुरुता-त्वं, (स्त्री० न०) गुरोः भावः-तल्-त्व । भारीपना । बडाई.

गुरुतल्पग, गुरोः (पितुस्तुल्यं दारान्) गच्छति । गम् ड । गुरुकी छेजपर जानेहारा । सौतेली मांके पास जानेहारा.

गुरुदक्षिणा, (स्त्री०) गुरोः दक्षिणा । अध्यात्मविद्या पढानेवाले गुरुको देने योग्य दक्षिणा.

गुरुप्रसाद, (पु०) गुरोः प्रसादः । गुरुकी कृपाका फल (विद्या.)

गुरुवर्तिन्–वासिन्, (पु०) गुरोः समीपे वर्तते वा वसति वृत् वा वस्+णिनि । गुरुके पास रहनेवाला । गुरुके घरमें निवास करनेवाला ब्रह्मचारी.

गुरुवारः, वा वासरः, (पु०) गुरोः वारः। गुरुका वार। बृहस्पतिवार। वीरवार.

गुरुवृत्तिः, (स्त्री०) गुरौ वृत्तिः=वर्तनं। गुरुके सन्मुख शिष्यका व्यवहार.

गुरुव्यथ, (त्रि०) गुरुः व्यथा यस्य। बडी पीडावाला। पीडासे व्याकुल होरहा.

गुर्जर, (पु०) देशभेद। गुजरात (दक्षिण)। उस देश-का वासी.

गुर्वङ्गना, (स्त्री०) गुरोः अङ्गना। गुरुकी स्त्री। अत्यन्त आदरके योग्य स्त्री.

गुर्वर्थ, (त्रि०) गुरोः अर्थः। अत्यन्त उपयोगी आवश्यक।—र्थः (पु०) गुरुदक्षिणा। शिष्यको विद्या पढानेकी.

गुर्विणी, (स्त्री०) गुरुर्गर्भोऽस्त्यस्याः। इनि। नि० जिसे गर्भ हो। गर्भवती। गर्भवाली स्त्री.

गुर्वी, (स्त्री०) गुरु+ङीप्। गर्भवती। "नहि वन्ध्या विजानाति गुर्वीप्रसववेदनाम्"। आदरवाली स्त्री बडी स्त्री.

गुल्फ, (पु०) गुल्+फक्-नि०। पाओं की गांठ। पादग्रन्थि। गिट्टा.

गुल्म, (पु०) गुड-रक्षा करना-बचाना। लपेटना-घेर-लेना+मक्। डलयोरैक्यम्। प्रधानपुरुषोंसे आश्रय दिया-गया रक्षा करनेहारा पुरुषोंका समूह। (हाथी ९, रथ ९ घोडे २७, पदाति ४५) इतनी संख्याकी सेना। एक प्रकारका रोग। झाडी। प्लीहरोग.

गुल्ममूल, (न०) गुल्माकृति मूलमस्य। जिसकी जड झाडीके समान हो। आर्द्रक। अदरक.

गुल्मवल्ली, (स्त्री०) गुल्माकारा वल्ली। झाडीके समान वेल। सोमलता.

गु(गू)वाक, (पु०) गु+आक। नि०। सुपारी। क्रमुक। पूगीफल.

गुहू, संवरण। छिपाना। ढांकना। भ्वा० उभ० सक० सेट्। गूहति-ते। अगूहीत्। अघुक्षत्। अगूहिष्ट-अगूढ.

गुह, (पु०) गुह्+क। कार्तिकेय। घोडा। रामचन्द्रजीका मित्र शृङ्गवेरका स्वामी। चण्डालोंका नाथ। गढा। विष्णु। सिंहपुच्छी वेल। पर्वतका गढा। हृदय (स्त्री०)। "गुहां प्रविष्टौ" इति श्रुतिः.

गुहा, (स्त्री०) गुह्+अङ्। गुफा। छिपनेका स्थान.

गुहाशय, (पु०) गुहायां (गर्ते) आशेते। शी+अच्। जो गढेमें सोता है। अज्ञान। सिंह आदि। हृदय। बुद्धिमें रहनेहारा जीव। ईश्वर। "गुहाशयं गह्वरेष्ठं" इति श्रुतिः.

गुहाहित, (त्रि०) गुहायां आहितः। गुफा. (हृदयमें) रक्खा गया.

गुह्य, (त्रि०) गुह+क्यप्। कच्छू। पाखण्ड। परमात्मा। एकान्त। भग। लिङ्ग (न०) रहस्य। छिपानेके लायक (त्रि०).

गुह्यक, (पु०) गुह्यं कं (सुखं) यस्य। गुह्यं कुत्सितं कायति। कै+क वा। जिसका सुख छिपा हुआहो। जो बुरा शब्द कर्ता है। कुबेरके धनको बचानेहारा। देव-योनिभेद.

गुह्यकेश्वर, (पु०) ६ त०। गुह्यकोंका स्वामी। कुबेर.

गुह्यगुरुः, (पु०) गुह्य-गुरुः। छिपने योग्य गुरु। शिवजी। गुह्यकेश्वर.

गुह्यभाषितं, (न०) गुह्यं भाषितं। छिपीहुई बातचीत। गुप्तभाषण.

गू, विष्ठात्याग। मलका छोडना। तुद० पर० अक० सेट्। गुवति। अगुविष्ट। जुगाव। गूनः.

गूढ, (त्रि०) गूह्+क्त। गुप्त। छिपाहुआ। ढका हुआ। गहन। एकान्त (न०).

गूढचार-चारिन्, (त्रि०) गूढं चरति-चर्-णिन्। छिप-कर इधर उधर घूमनेवाला.

गूढज, (पु०) गूढं गुप्तं यथातथा जातः। गूढः सन् वा जातः। जन्+ड। छिपाकर पैदाहुआ। छिपाहुआ उपजा। बारह प्रकारके पुत्रोंमेंसे एक.

गूढपथ, (पु०) गूढः पन्थाः। छिपाहुआ मार्ग। गुप्तमार्ग.

गूढपाद्-द, (पु०) गूढाः पादा अस्य वा पद्भावः। जिसके पांव छिपेहुए हों। सर्प। सांप.

गूढपुरुष, (पु०) छिपाहुआ पुरुष। गुप्तचर। प्रणिधि। जासूद.

गूढभाषितं, (न०) गूढं भाषितं। गुप्तवार्ता। छिपीहुई बात। खवर.

गूढमैथुन, (पु०) गूढं केनापि अदृश्यं मैथुनं यस्य। जिसे भोग कर्ते कोई भी नहिं देख सक्ता। काक। कौआ.

गूढसाक्षिन्, (पु०) छिपाहुआ गवाह। अर्थी (मुद्दई) अपने प्रयोजनकी सिद्धिके लिये प्रत्यर्थी (मुद्दालह)के छिपेहुए वचनको जिसके द्वारा स्पष्ट करके सुनवाताहै इस प्रकारका गवाह। मुद्दईसे पोशीदह मुद्दालहके इजहार सुने-वाला गवाह.

गूढाङ्ग, (पु०) गूढानि अङ्गानि अस्य। जिसके अंग अर्थात् शरीरके भाग छिपेहुए हों। कच्छप। कच्छू.

गूढोत्पन्न, (पु०) छिपकर उत्पन्नहुआ। जारसे उत्पन्नहुआ एक प्रकारका पुत्र। "ये किसका पुत्र है" ऐसा नहिं जान सके.

गूथ, (पु० न०) गू+थक्। विष्ठा। मल। गूह.

गूर्, उद्यम करना। चुरा० आत्म० अक० सेट्। गूर्यते अजूगुरत.

गूर्, मारना। जाना। दिवा० आत्म० सक० सेट्। गूर्यते। अगूरिष्ट.

गृ, सेक। सींचना। भ्वा० पर० सक० अनिट्। गरति। अगार्षीत्.

गृज, ध्वनि। शब्दकरना। भ्वा० पर० अक० सेट्। गर्जति। अगर्जीत्.

गृञ्जन, (पु०) गृञ्ज्यते (भक्ष्यत्वेन कथ्यते) रोगेषु। गृजि+ल्युट्। गाजर। विषवाले पशुका मांस (न०).

गृधू, लालच करना। लिप्सा। दिवा० पर० सक० सेट्। गृध्यति। अगृधत्-अगर्द्धीत्। गर्द्धित्वा. गृद्ध्वा.

गृध्नु, (त्रि०) गृध्+क्नु। लुब्ध। लोभी। लालची.

गृध्र, (पु०) गृध्+क्नु। शकुनि। पक्षी। गीध। लोभी। (त्रि०).

गृध्रराज, (पु०) ६ त०। गरुडका पुत्र। जटायु पक्षी। पक्षिओंका राजा.

गृष्टि, (स्त्री०) सकृत् गर्भं गृह्णाति। ग्रह+क्तिच्-पृ-नि०। एकवार जनेवाली गौ। वराहक्रान्ता। बदरा औषध। काश्मरी.

गृह्, ग्रहण लेना। पकडना। चुरा० आत्म० सक० सेट्। गृह्येत-अजगृह.

गृह, (न०) ग्रह्-घरके अर्थमें क। ईंट मट्टी आदिसे बना हुआ घर। गृह्-लेना-अच्। कलत्र। स्त्री। औरत। नाम। मेष आदि राशिका मन्दिर। एक घरके अर्थमें यह शब्द नपुंसक और बहुत घरोंके अर्थमें पुंलिङ्ग होताहै। "तत्रागारं धनपतिगृहान्" इति मेघदूतम्। स्त्रीके अर्थमेंभी दार शब्दके समान बहुवचनान्त होता है.

गृहकपोतः, (पु०) गृहपालितः कपोतः। घरका पालाहुआ कबूतर.

गृहच्छिद्रं, (न०) गृहस्य छिद्रं=दोषः। घरेलू दोष.

गृहजः-जातः, (पु०) गृहे जातः-जन्-ड वा क्त। घरमें उत्पन्न हुआ (दास).

गृहजनः, (पु०) गृहस्थितः जनः। घरकी व्यक्ति (स्त्री०). घरके लोग.

गृहज्ञानिन् वा **गृहेज्ञानिन्,** (पु०) गृहे एव ज्ञानी-ज्ञा+णिन्। घरके भीतर ही जो समझदार है। नावाकिफ.

गृहदासः, (पु०) गृहस्थितः दासः। घरका दास। घरेलू नौकर.

गृहदेवता, (स्त्री०) गृहस्य देवता। घरकी देवी। गृहस्थकी देवताओंकी एक श्रेणि (जमात).

गृहदेहली, (स्त्री०) गृहस्य देहली। घरकी देहली। दलीज। ड्योढी.

गृहपति, (पु०) ६ त०। गृहका पति। घरका मालिक। मन्त्री। वजीर। धर्म.

गृहपत्नी, (स्त्री०) गृहस्य पत्नी। Ved. घरकी मालिक (स्वामिनी)। गृहस्थकी स्त्री.

गृहपालः, (पु०) गृहं पालयति। घरको वचानेवाला। घरका रखवारा.

गृहबलिः, (पु०) गृहस्य वलिः। घरेलू बलि। वचेहुए भोजनमेंसे घरके देवता सम्पूर्ण पशुपक्षिओंको देने योग्य भेटा.

गृहमणि, (पु०) गृहे मणिरिव। घरमें मानो मणि है। प्रदीप। दीवा.

गृहमृग, (पु०) गृहस्य मृग इव। मानो घरका पशु है। कुकुर। कुत्ता.

गृहमेधिन्, (पु०) गृहैः दारैर्मेधते (संगच्छते) मेध्। सङ्गम-मिलना+णिनि। जो घरका संग कर्ते हैं। गृहस्थ.

गृहमेधीय, (पु०) गृहमेधिनोऽयं छ (ईय)। गृहस्थिओंके धर्म.

गृहयालु, (त्रि०) गृह+आलु। ग्रहीता। लेनेवाला.

गृहवाटिका, (स्त्री०) गृहसमीपे वाटिका आरामः। घरके पासका छोटा वन। गृहके समीपका उपवन.

गृहशकुन्तिका, (स्त्री०) गृहे पालिता शकुन्तिका= पक्षिणी। घरमें पालाहुआ पक्षी (परिंदा).

गृहस्थ, (पु०) गृहेषु तिष्ठति (अभिरमते) स्था+क। जो स्त्रीके साथ विलासकर्ता है। घरमें रहनेवाला। गृही। द्वितीयाश्रमी। वालवच्चेदार.

गृहागत, (पु०) गृहं आगतः। आ+गम्+क्त। अतिथि। आगन्तुक। महिमान वा पाहुना। घरमें आगया (त्रि०).

गृहाधिपः, (पु०) गृहस्य अधिपः। घरका स्वामी। गृहस्थ.

गृहाराम, (पु०) गृहे (गृहसमीपे) आरामः। घरके पासका छोटा वन। गृहसमीपस्थ उपवन। वाग.

गृहार्थः, (पु०) गृहस्य अर्थः। घरका काम काज। कोई भी घरेलू वृत्तान्त.

गृहावग्रहणी, (स्त्री०) गृहं अवगृह्यतेऽनेन। जिसके द्वारा घर पकडा जाय। अव+गृह्+करणे ल्युट्+ङीप्। देहली। देओयाल। देवढी.

गृहिणी, (स्त्री०) गृह+अस्त्यर्थे इनि। जिसका घर हो। घरवाली। भार्या। जोरू। औरत। स्त्री। घरके काममें चतुर स्त्री। "गृहिणी सचिवो मिथः सखी" इति रघुः.

गृहिन्, (पु०) गृहा दाराः सन्ति अस्य इनि। जिसकी स्त्री हो। गृहस्थ। घरमें रहनेहारा.

गृहनर्दिन्, (पु०) गृहे एव नर्दति न सम्पराये (युद्धे)। जो घरहीमें गर्जता है। लडाईमें पीठ दिखानेवाला। खोटा आदमी। कापुरुष। रणमें डरनेवाला। घरमेंही ऊधम मचानेहारा.

गृहीत, (त्रि०) ग्रह्+क्त। स्वीकार कियागया। मानागया। मनजूर कियागया। प्राप्त। पाया। हासिल किया। ज्ञात। जानागया। धृत। पकडागया.

गृहीत, (त्रि०) ग्रह+क्त कर्मणि। लिया गया। पकडा गया.

गृहीतगर्भा, (स्त्री०) गृहीतः गर्भः यया व० स०। गर्भवाली स्त्री औरत.

गृहीतदेह, (त्रि०) गृहीतः देहः येन। जिसने पृथिवीपर अवतार लिया है.

गृहीतनामन्, (त्रि०) गृहीतं नाम येन। नाम लेनेवाला। नामसे पुकारा गया.

गृहीतवेतन, (त्रि०) गृहीतं वेतनं येन। जिसने अपनी तनखाह लेली है। मिहनतका फल चुका दिया गया.

गृहीतार्थ, (त्रि०) गृहीतः अर्थः येन-व० स०। जिसने अर्थ प्रयोजन-मतलब समझ लिया है। समझे हुए मतलबवाला.

गृहीतिन्, (त्रि०) गृहीत+णिनि। समझा हुआ। अच्छीतरह जान चुका.

गृह्य, (पु०) ग्रह+क्यप्। गृहासक्त। घरमें फसाहुआ। पक्षी और पशु। मलका द्वार (दर्वाजा)। वेदमें कहेहुए कर्मके प्रयोग (लगाव) को जतानेहारा गोभिलसूत्र आदि ग्रन्थविशेष। अस्वतन्त्र। पराधीन। जो आजाद नहिं। अपनी ओरका (त्रि०) "गृहे भवः" यत्। घरमें हुआ। घरका। वस्तु (चीज) (न०) "अपने अर्थमें कन्"। नगरके बाहिरका गांव (स्त्री०) टाप् गृह्या.

गृ, विज्ञापन। जताना। जनाना। इत्तिला देना। चुरा० आत्म० सक० सेट्। गारयते। अजीगरत.

गृ, शब्द आवाज करना। क्र्या० पर० सक० सेट्। गृणाति। अगारीत्.

गृ, निगरण। निगलजाना। गडप्प करना। तुदा० पर० सक० सेट्। गिरति गिलति। अगारीत् अगालीत्.

गेद, जाना गति। भ्वा० आत्म० सक० सेट्। गेदते। अगेदिष्ट। अजिगेदत्। गेदित्वा-गेत्वा.

गेन्दु(ण्डु)क, (पु०) गच्छतीति गः इन्दुरिव। इवार्थे कन्। जो चांदकी भांति जाता है। कन्दुक। गेन्द। कपडेका बनाहुआ गोल स्वरूपका खिलौना। पृषो० "गेण्डुक" यही अर्थ.

गेय, (त्रि०) गै-गाना+यत्। कर्तरि। गवैया "भावे यत्" गीति। गाना। गीत। "कर्मणि यत्" गानेलायक (त्रि०).

गेह, (न०) गो (गणेशः) गन्धर्वो वा ईहः (ईप्सितः) यत्र। जहां गणेश वा गंधर्व होनेकी इच्छा की जाय। घर.

गै, गाना। भ्वा० पर० सक० सेट्। गायति। अगासीत्.

गैरिक, (न०) गिरौ भवः+ठक् (इक)। पर्वतमें उपजा उपधातु (छोटा धातु)। सोना। गेरी.

गो, (पु०) गम्+डो। वृषभ। बैल। स्वर्ग। किरण। वज्र। जल। पशु। चांद। हवा। वायु। सूर्य। और ऋषभनामी औषध। सौरभेयी। गौ। दृष्टि। नजर। बाण। तीर। दिशा। माता। वाणी। भूमी (स्त्री०).

गोकर्ण, (पु०) गौर्नेत्रं कर्णो यस्य। आंखही जिसके कानहैं। सांप। "गोरिव कर्णौ यस्य"। जिसके कान गौके समान हों। अश्वतर। वछेरा। खचरा। एक प्रकारका पशु। गणदेवताका भेद। शैवतीर्थभेद। एकनाम.

गोकील, (पु०) गोः पृथिव्याः कील इव। मानो पृथिवीकी मेख है। लाङ्गल। मुसल। हल.

गोकुल, (न०) गवां कुलं यत्र। जहां गौओंका समूह हो। गौओंकी जगह। गोष्ठ। गौओंके बांधनेका स्थान। यमुनाके निकट नन्दके निवासका स्थान। व्रजनामी प्रसिद्ध स्थान। "गोकुले रामकेशवौ" पुराणं.

गोक्षीरं, (न०) गोः क्षीरम्। गौका दूध.

गोगृष्टिः, (पु०) गोषु गृष्टिः=सकृत्प्रसूता गौः। गौओंमें एक वार जनी हुई गौ.

गोगोष्ठं, (न०) गवां गोष्ठं। गोवाडा। गोभवन। गौओंके निवासका स्थान.

गोग्रासः, (पु०) गवां ग्रासः। गौओंको देनेयोग्य ग्रास (घास) अन्न.

गोघातः-घातकः, घातिन्, (पु०) गाः घातयति हन्+क्त +ण्वुल्+णिनि। गौको मारनेवाला.

गोघृतं, (न०) गवां घृतं। वृष्टिका जल। शुद्ध मक्खन। गौका घी.

गोघ्न, (पु०) गौर्हन्यते यस्मै। हन् सम्प्रदाने टक् (अ)। जिसके लिये गौ. मारीजाती है। अतिथि। महमान। (इसके आनेपर मधुपर्कके लिये गौका मारना विहितहै। ये बहुत पुरानी चाल थी। जिस समय मरीहुई गौकोभी फिर जीवन देनेकी सामर्थ्य रखतेथे)। "कर्तरि ठक्"। गौकों घातकरनेहारा (कसई) (त्रि०).

गोचर, (पु०) गावः (इन्द्रियाणि) चरन्ति अस्मिन्। नि० क। जहां इन्द्रियें विचरतीं हैं। इन्द्रियोंके विषय रूप रस आदि। "गावश्चरन्त्यस्मिन्" नि० क०। गौओंके विचरनेका स्थान। देशमात्र। जन्मराशिसे तत्तत् स्थानमें सूर्य आदि ग्रहोंका जाना.

गोचर्मन्, (न०) ६ त० । गवां चर्म । गौओंका चमडा । पृथिवीका परिमाण (माप) १०० गज लंबा और ३ गजके निकट चौडा.

गोज, (त्रि०) गोः=पृथिव्याः जायते-जन्+ड । पृथिवीसे उत्पन्न हुआ.

गोजलं, (न०) गवां जलम् । गौओं वा बैलोंका मूत्र । गोमूत्र.

गोजा, (स्त्री०) गवि (पृथिव्यां) व्रीह्यादिरूपेण जायते आत्मम् । पृथिवीपर धान आदिके रूपसे जो उपजता है । चावलआदि गोलोमिका नामी द्रव्य.

गोजिह्वा, (स्त्री०) गोर्जिह्वेव । मानों गौकी जीभ है । लताविशेष । गोजिवा.

गोणी, (स्त्री०) गुण्+घञ्-नि० गुणः । गोण+ङीप् । धान्यका आश्रय । गुणनामसे प्रसिद्ध आवपनपात्र । पुराना कपडा । छट्ट । एक प्रकारका माप । छट्टभर.

गोतम, ब्रह्माका पुत्र । अपने नामसे प्रसिद्ध मुनिभेद.

गोत्र, (पु०) गां (पृथिवीं) त्रायते । त्रै+क । जो पृथिवीको बचाता है । पर्वत । पहाड । नाम । वन । जंगल । क्षेत्र । खेत । घर । वंश । रास्ता । छाता । एक जातिका समूह । पोता आदि संतान । मनुसे कहे गये चौवीस शाण्डिल्य आदि ऋषि आदिपुरुष.

गोत्रज, (त्रि०) गोत्रे (समाने गोत्रे) जायते । जन्+ड । एक गोत्रमें उपजा.

गोत्रभिद्, (पु०) गोत्रान् पर्वतान् भिनत्ति । भिद्+क्विप् । पर्वतोंको फाडनेहारा । इन्द्र । देवताओंका राजा.

गोत्रा, (स्त्री०) गोत्राः (पर्वताः) सन्ति अस्याः । अच् पर्वतोंवाली धरा । पृथिवी । "गोः समूहः त्रल् ।" गौओंका झुण्ड.

गोदन्त, (न०) गोर्दन्त इव अवयवो यस्य । जिसके अवयव गौके दांतके समान हों । हरिताल । बनस्पति । गौका दांत (पु०).

गोदान, (न०) गावः (केशाः) दीयन्ते (छियन्ते) अत्र । दो+ल्युट् (अन) । जिसमें केश (वाल) काटे जाये । केश उतरवानेका संस्कार । "अथास्य गोदानविधेरनन्तरं" रघुः । गौका दान.

गोदारण, (न०) गां (भूमिं) दारयति । दृ+णिच्+ल्यु । पृथिवीको फाडनेहारा । लाङ्गल । हल । कुद्दाल.

गोदावरी, (स्त्री०) नदीविशेष । गोदावरी (नासिकपर्वतके पास).

गोदोहः, (पु०) गवां दोहः । गौओंको दूध निकालना चूना । गौओंका दूध.

गोधन, (न०) गवां धनं (समूहः) । गोरूपधन । गोसमूह । "गौरेव धनं अस्य" गोधनम् । जिसके पास गौएंही धन हो (त्रि०).

गोधा, (स्त्री०) गुध्यते (वेष्ट्यते) बाहुः अनया । करणे घञ् । जो भुजाको घेरलेता है । धनुष्के चिल्लेकी चोटसे बचनेके लिये प्रकोष्ठ (आंकडी) पर बंधाहुआ चमडा । " कर्तरि अच् " । गोसाप नामसे प्रसिद्ध सांपका भेद । " शशकः शल्लकी गोधा " मनुः.

गोधूम, (पु०) गुध्+ऊम । व्रीहिभेद । कनक । गेहूं । एक प्रकारके धान.

गोधूलि, (पु०) गोभ्य उत्थितो धूलिर्यत्र काले । जिस समय गौओंसे धूल उठती है । सूर्यके अस्त होनेका समय । सांझसमय.

गोनर्दीय, (पु०) गोनर्दे (तत्समीपे देशे) भवः । गोनर्द देशके पास उत्पन्न हुआ । पाणिनी मुनि । (शिक्षा, सूत्रपाठ, धातुपाठ, व्याकरणका) कर्ता.

गोनस, (पु०) गोरिव नासा अस्य । जिसकी नासा गौके समान है । एक प्रकारका सांप.

गोपति, (पु०) ६ त० । गौओंका पति बैल । सांड । वृषके पति शिव । पृथिवीका पति । श्रीकृष्ण । किरणोंका पति सूर्य । स्वर्गका पति इन्द्र । ऋषभ नाम औषध.

गोपा, (स्त्री०) गां पाति । पा+क-टाप् । श्यामालता (वेल).

गोपानसी, (स्त्री०) गवां (किरणानां) पानं (शोधनं) गोपानं-स्यति । सो+क ङीष् । दीवारोंपर पडदेके लिये लगाया गया टेढा काठ । वलभी । वडभी । छज्जा । घरोंके आगे तिरछी लकडी.

गोपाल, (पु०) गां (गो-वृषभादिकं-भूमिं वा) पालयति । गौ बैल वा पृथिवीकी रक्षा करनेहारा । गोप । गवार । राजा । नन्दराजाका पुत्र.

गोपुर, (न०) गावः पूर्यन्ते यत्र । पॄ+क । जहां गौएं भरजाती हैं । पुरद्वार । शहरका दर्वाजा । बडा दर्वाजा । कैवर्तीमुस्तक.

गोपुरीषं, (न०) गवां पुरीषं । गौओंका गोहा.

गोप्य, (त्रि०) गुप्+मन् । रक्षाके योग्य । छिपानेलायक । गोपीसमूह (पु०).

गोप्रकाण्डं, (न०) गोषु प्रकाण्डं=श्रेष्ठं । एक बहुत अच्छी गौ वा वृषभ बैल.

गोभृत्, (पु०) गां=पृथिवीं बिभर्ति-भृ+क्विप् । पृथिवीको धारण करनेवाला । पर्वत । पहाड.

गोमण्डलं, (न०) गवां मण्डलं । गौओंका मण्डल (समूह).

गोमती, (स्त्री०) नदीविशेष । वेदका मन्त्रविशेष.

गोमय, (पु० न०) गवां पुरीषम् । गो+मयट् । गौओंका मल । गोया । गौजैसा.

गोमायु, (पु०) गां=विकृतां वाचं=मिनोति । मा+उण् । जिसकी विगडी हुई आवाज हो । श्रृगाल । गीदड । सियार । गन्धर्व.

गोमिन्, (त्रि०) गो+अस्त्यर्थे मिनि । गौओंका स्वामी । गीदड (पु०).

गोमुख, (पु०) गोरिव मुखं अस्य । जिसका मुख गौके समान हो । यक्षविशेष । नक्र । तंदुआ । मगर । तिरछा घर । एक प्रकारका वाजा । चोरसे कीगई एकप्रकारकी सन्धि (सन्न) लेपन । जपमाला रखनेके लिये पट्टके सूतका बनाहुआ एकप्रकारका यन्त्र । गुप्ती । हिमालयके एक ओरसे गंगाके गिरनेकी गुहा । गोमुखी । गंगोत्री (स्त्री०).

गोमूत्रिका, (स्त्री०) गोमूत्रं साधनत्वेन अस्याः ठन् । जो गौके मूत्रसे उपजती है । गोमूत्रसे उपजी लता (एकप्रकारकी वेल) । एक काव्यकी रचना जो आकृतिसे गौके मूत्रसमान बनाई हो.

गोमेद, (पु०) मणिविशेष । जवाहर । द्वीपभेद । एक जजीरा.

गोमेध, (पु०) गावो मेध्यन्ते यत्र । मेधृ+आधारे घञ् । जहां गौएं मारीजाती हैं । एक प्रकारका यज्ञ.

गोयानं, (न०) गवां यानम् । वैलोंसे चलाया गया यान (रथ) । वैलगाडी.

गोयुगं, (न०) गवां युगं । गौओंका जोडा.

गोरसः, (पु०) गवां रसः । गौओंका रस (दूध).

गोरोचना, (स्त्री०) गोभ्यो जाता रोचना (हरिद्रा) । गौओंसे उपजी हरिद्रा । अपने नामसे प्रसिद्ध सुगन्धवाला द्रव्य । गौके मस्तकसे निकला पीलेरंगका पदार्थ.

गोल, (पु०) गुड+घञ् । (ड और ल समान है) । चारों ओरसे गोल । मदन (मैना) का वृक्ष । भर्ताके मरजानेपर जारसे उत्पन्न हुआ पुत्र । भूगोल । आकाशका गोला । एक राशिमें छ ग्रहोंका जुडना । " स्वार्थे कन् " गोलक । लकडीका गेंद.

गोलाङ्गूल, (पु०) गोरिव कृष्णं लाङ्गूलं अस्य । गौके समान जिसकी काली पूछ हो । काले मुखवाला एक प्रकारका वानर.

गोलास, (पु०) गवि (गोमये) लासो (जन्म) यस्य । जो गोहेमें उपजा हो । गोमयकीट । गोहेका कीडा । शिलीन्ध्र । खूंबे.

गोलोक, (पु० न०) ६ त० । वैकुण्ठके दहिनी ओरका स्थान । विष्णु महाराजके निवासकी जगह (पु०).

गोवर्द्धन, (पु०) गां वर्द्धयति । वृध्+णिच्+ल्यु । गौको बढानेहारा । वृन्दावनका एक पर्वत । (घास आदि द्वारा यह गौओंको बढाता है) । यहां गौएं भली भांति पलती हैं.

गोवर्द्धनधर, (पु०) गोवर्द्धनं (पर्वतं) धारयति । धृ+अच् । पर्वतको उठानेहारा । श्रीकृष्ण । नन्दजीके नन्दन.

गोविन्द, (पु०) गां विन्दति । विद्+श । गौको लाभ कर्ता है । श्रीकृष्ण । वृहस्पति । गौओंका अध्यक्ष (स्वामी).

गोशीर्ष, (न०) गोः शीर्ष इव । गौके सिरकी नाईं । गोशीर्षः (पर्वतः) "तत्र जातत्वात्" । मलयके एक देशमें उपजा चन्दन । ६ त० । गोमस्तक (न०).

गोष्ठ, संघात -इकट्ठा होना । भ्वा० आ० अक० सेट् । गोष्ठते । अगोष्ठिष्ट.

गोष्ठ, (न०) गावः तिष्ठन्ति अत्र । क-षत्वं । जहां गौएं ठहरें । गौओंका स्थान । गोवाडा । गोशाला । ग्वाल । गूजर.

गोष्ठी, (स्त्री०) गावः (अनेका वाचः) तिष्ठन्ति अत्र । क-षत्वम् । जहां वहुतसी वाणिएं निकलें । सभा । मजलस.

गोष्पद, (न०) " गोः पदं " । गौका पांव फंसनेसे उपजा गढा । गौके पांव जितना । गौओंसे सेवन किया गया देश । वह देश जहां वहुतसी गौएं हों (त्रि०).

गोसव, (पु०) गावः सूयन्ते (वध्यन्ते) अत्र । सु+अप् । जिसमें गौओंको मारकर होम कियाजाय । गोयज्ञ । गोमेधयज्ञ.

गोस्तन, (पु०) गोः स्तना इव गुच्छो यस्य । जिसका गुच्छा गौके स्तनोंकी नाईं हो । चार लडोंवाला हार । गौका स्तन.

गोस्तनी, (स्त्री०) गोरिव स्तनः (फलं) अस्याः । जिसका फल गौके स्तनकी नाईं हो । एकप्रकारकी दाख.

गोस्थानक, (न०) गवां स्थानं स्वार्थे कन् । गौओंकी जगह । गोष्ठ । गौओंका घर.

गौड, (पु०) एक नगरका नाम । बंगालेसे लेकर भुवनेशतक एक देश । उस देशके लोग । बहु० । विंध्यपर्वतके उत्तर भागमें निवास करनेहारे ब्राह्मणविशेष । बहु०.

गौडी, (स्त्री०) गुडस्य विकारः अण् । गुडका विकार । एकप्रकारकी मद्य (शराब) । मिठाई (न०) । अलंकारमें एकप्रकारकी रीति.

गौण, (त्रि०) गुणात् आगतः+अण् । गुणसे आया । गुणके योगसे प्रवृत्त हुआ शब्द । अमुख्य वृत्तिसे सिद्धहुआ अर्थ । छोटा । दूसरा । व्याकरणमें प्रधानका विरोधी.

गौणपक्ष, (पु०) कर्म० । युक्तिका निर्बल भाग । जिस ओर दलीलकी कमजोरी हो.

गौणिक, (त्रि०) तीन गुणोंवाला (सत्व, रजस्, तमस्) । गौण । छोटा.

गौतम, (पु०) गोतमस्य अपत्यम् । शिष्यो वा अण् । गोतमकी सन्तान वा उसका चेला । नचिकेताका पिता । शंतानन्दनामी एक मुनि । शाक्यसिंह । भारद्वाज ऋषि । बुद्धका नाम । न्यायशास्त्रके रचनेहारेका नाम.

गौतमी, (स्त्री०) गोतम+इदं अर्थे अण्। ततो ङीप्। गौतमकी। गोतमसे रची गई सोलह पदार्थोंवाली विद्या। गोदावरी नदी। एक राक्षसीका नाम। द्रोणकी स्त्री कृपी। बुद्धदेवकी विद्या। गोरोचना। कण्वकी बहिन। दुर्गा.

गौधार, (पु०) गोधाया अपत्यं आरक्। गोधाका पुत्र गिरगिट.

गौर, (पु०) गुड्+र नि० चिट्टा रंग। चिट्टी सरिओं। श्वेत सर्षप। चन्द्रमा। घनवृक्ष। विशुद्ध। बडा साफ। लालरंग.

गौरव, (न०) गुरोर्भावः अण्। गुरुत्व। बडापन। सामनेसे उठ खडे होना आदि मान (इज्जत).

गौरी, (स्त्री०) गौरी+ङीष्। गौरी। पार्वती। आठ वर्षकी स्त्रीधर्म (रज वा ऋतु) रहित कन्या। हल्दी। गोरोचना। नदी। मजीठ। तुलसी। सुवर्णकदली। आकाशमांसी। एकप्रकारकी रागिणी.

गौरीशिखर, (न०) पार्वतीका तपस्यास्थान। पार्वतीके तप करनेकी जगह.

गौष्ठीन, (न०) पूर्वं भूतं गोष्ठं खञ्। भूतपूर्व गोष्ट। पुराना गोवाडा.

ग्रथ्, कुटिलीकरण। तिरच्छाकरना। टेढाकरना। गुथना। गाँठना। रचनाकरना। आत्म०-इदित्-सक० सेट्। ग्रन्थते। अग्रन्थिष्ट.

ग्रथित, (त्रि०) ग्रन्थ-रचनाकरना+क्त। गुम्फित। गुथा गया। हिंसित। मारागया। आक्रान्त। दवायागया.

ग्रन्थ, (पु०) ग्रन्थ+घञ्। गुम्फन। गुथना। धन। "करणे घञ्" शास्त्र। अनुष्टुप् छन्दवाला श्लोक वा पद्य। जिल्द। रचना। किताव.

ग्रन्थि, (पु०) ग्रन्थ्+इन्। वंशादिसंधि। वांस आदिकी गांठ (जोड)। ग्रन्थिपर्ण वृक्ष। बंधन। एकप्रकारका रोग। गांठ। गुच्छा। वांसली थैली। गुथली। धन। पौशाक। शरीरके जोड। टेढापन। झूठापन.

ग्रन्थिभेद, (पु०) ग्रन्थिं भिनत्ति, भिद्+अण्। गांठ फाडनेवाला। गांठ कतरनेहारा। गंडीकप्प। चोर.

ग्रन्थिमूल, (न०) ग्रन्थियुतं मूलं अस्य। जिसकी जड गांठवाली हो। गृञ्जन। गाजर.

ग्रन्थिल, (न०) ग्रन्थिं लाति। ला+क। गांठवाला (त्रि०)। पिप्पलीमूल। मघ। आर्द्रक। अदरक। पूदना.

ग्रस, भक्षण-खाना। भ्वा० आत्म० सक० सेट्। ग्रसते। अग्रसिष्ट। ग्रसित्वा-ग्रस्त्वा.

ग्रस्त, (न०) ग्रस्+क्त (कर्मणि)। खायागया। आधा बोला गया वाक्य (त्रि०) वा शब्द.

ग्रह्, ग्रहण। पकडना। क्र्या० उभ० सक० सेट्। गृह्णातिगृह्णीते। अग्राहीत्-अग्रहीष्ट.

ग्रह, (पु०) ग्रह+अच्। सूर्यादि नव। सूर्य आदि नौ। अनुग्रह। हठसे पकडना। लडाईका उद्यम। बालकोंको दुःख देनेहारे पूतना आदि। चन्द्र और सूर्यका ग्रास.

ग्रहण, (न०) ग्रह्+भावादौ ल्युट्। स्वीकार। कबूल करना। मानलेना। आदान। लेना। आदर। बंधन। चांद वा सूरजका ग्रास। इन्द्रिय.

ग्रहणीहर, (न०) ग्रहणीं हरति। हृ+अच्। लवङ्ग। लौंग। ग्रहणी रोगको दूर करनेहारा (त्रि०).

ग्रहनायकः, (पु०) ग्रहाणां नायकः। ग्रहोंका स्वामी। ग्रहमुख्य सूर्य.

ग्रहपति, (पु०) ६ त० ग्रहोंका स्वामी। सूर्य। "ग्रहनायक आदि".

ग्रहयाग, (पु०) ग्रहेभ्यो यागः। ग्रहोंके लिये यज्ञ। दुःख दूर करने वा पुष्टिके लिये ग्रहोंके उद्देशमें कियागया यज्ञ.

ग्रहराजः, (पु०) ग्रहाणां राजा+टच्। ग्रहोंका राजा। सूर्य.

ग्रहसंगमः, (पु०) ग्रहाणां संगमः। सूर्य आदि ग्रहोंका परस्पर मिलना.

ग्रहाधार, (पु०) ६ त०। ग्रहोंका आश्रय। ध्रुवनामी नक्षत्र (तारा).

ग्राम, (पु०) ग्रस्+मन्-आदन्तादेशः। पिण्ड। गांव। समूह। स्वरभेद। रागका उठाव। जिसप्रकार सव-कुटुंबी इकठ्ठे होते हैं वैसा स्वरोंका समूह ग्राम होता है। ब्राह्मण आदि वार्णोंका वासस्थान। जहां खेती करनेकी भूमि हो और जहां विशेष करके शूद्रोंका वास हो.

ग्रामकण्टकः, (पु०) ग्रामस्य कण्टकः। गांवका कांटा। गांवको कष्ट पहुंचानेका कारण.

ग्रामकुक्कुटः, (पु०) ग्रामस्य कुक्कुटः। गांवका कुक्कुड। पालाहुआ कुक्कुड.

ग्रामकुमार, (पु०) ग्रामस्य कुमारः। गांवका सुन्दर बालक। गांवका लडका.

ग्रामगृह्या, (स्त्री०) ग्रह+बाह्यार्थे क्यप्। ग्रामके बाहिरकी सेना, गांवसें गृहीत.

ग्रामज—जात, (त्रि०) ग्रामे जायते अथवा जातः। गांवमें उत्पन्न हुआ.

ग्रामणी, (पु०) ग्रामं नयति। नी+क्विप्। णत्वम्। जो ग्रामको अपनी आज्ञामें लेजाता है। नापित। नाई। प्रति। प्रधान (त्रि०) कोतवाल। गामके भोगनेलायक वेश्या (कंजरी)। नीलिका (स्त्री०).

ग्रामता, (स्त्री०) ग्रामाणां समूहः तल्। ग्रामका समूह.

ग्रामदेवता, (स्त्री०) ग्रामस्य देवता। गांवकी देवता (देवी).

ग्रामद्रुमः, (पु०) ग्रामस्य द्रुमः। एक पवित्र गांवका वृक्ष (दरख्त).

ग्रामधर्म, (पु०) ग्रामे (भवः) धर्मः । गांवका धर्म । मैथुन । स्त्रीपुरुषका जुडकर विलास करना । "व्यवाय."

ग्रामयाजक, (पु०) ६ त० । ग्रामके कई प्रकारके वर्णोंको यज्ञ करानेहारा नीच ब्राह्मण.

ग्रामाचारः, (पु०) ग्रामस्य आचारः । गांवका आचार (रसम-व्यवहार).

ग्रामाध्यक्षः, (पु०) ग्रामस्य अध्यक्षः । गांवका स्वामी (मालिक).

ग्रामान्तः, (पु०) ग्रामस्य अन्तः । गांवका किनारा । गांवके पासका स्थान.

ग्रामीन, (पु०) ग्रामे भवः खञ् । गांवका कुक्कर । कुत्ता । कौआ । गांवका सूअर । गांवमें उपजा (त्रि०).

ग्रामोपाध्यायः, (पु०) ग्रामस्य उपाध्यायः । गांवका पुरोहित अथवा पांधा.

ग्राम्य, (त्रि०) ग्रामे भवः य । गांवमें हुआ । प्राकृत । नीच । मूढ । गांवका । (ज्योतिषमें) मिथुन आदि राशिभेद । गालीको प्रकट करनेहारा भांड आदिका वचन.

ग्राम्यकर्मन्, (न०) ग्राम्यं कर्म । गांववासीका काम । इन्द्रियोंका सुख.

ग्राम्यधर्मः, (पु०) ग्राम्यः धर्मः-क० स० ग्रामवासीका कर्तव्य । विषयभोग.

ग्राम्यपशुः, (पु०) ग्राम्यः पशुः । गांवका पशु । पालित घरेलू पशु.

ग्राम्यबुद्धिः (त्रि०) ग्राम्या बुद्धिः यस्य । गांवमें निवास करनेवालेकी बुद्धिवाला । मूर्ख । अज्ञानी । बेसमझ.

ग्राम्यवल्लभा, (स्त्री०) ग्राम्याणां वल्लभा । गांव वासिओंकी प्यारी । वेश्या । कंजरी.

ग्राम्यसुखं, (न०) ग्राम्यं सुखं । गांववासीका सुख । इन्द्रियोंका सुख.

ग्राम्याश्वः, (पु०) ग्राम्यः अश्वः । गांवका घोडा । गर्दभ । खेचर गधा.

ग्रावन्, (पु०) ग्रसते-ग्रस्+ड । ग्रः । आवनति-वन्-वांटना । विच् । पत्थर । पर्वत । मेघ । बादल । दृढ । मजबूत (त्रि०).

ग्रास, (पु०) ग्रस्+घञ् । गोलमोल अन्नादिकी ग्राई (ग्रास) । इतना अन्न कि जिस्से मुख भरजाय.

ग्राह, (पु०) ग्रह्+भावे घञ् । पकडना । जानना । लेना । "कर्तरि ण" । जलका जीव (तंहुआ वा संसार).

ग्राहक, (पु०) ग्रह+ण्वुल् । राजपक्षी । सांप पकडनेवाला । लेनेवाला (त्रि०).

ग्राहिन्, (त्रि०) ग्रह्+णिनि । पकडनेवाला । इकठ्ठा करनेवाला । खेंचनेवाला.

ग्राह्य, (त्रि०) ग्रह+ण्यत् । लेनेके लायक । ग्रहणयोग्य । उपादेय । माननेलायक । जाननेलायक.

ग्रीवा, (स्त्री०) गृ+व-नि० । कंधरा । गला । गर्दन । कंठ.

ग्रीष्म, (पु०) ग्रस्+म-नि० । निदाघ । गरमी । पसीना । पसीनेको उपजानेहारी धूप आदि । जेठ हाडका महीना । गर्मीवाला (त्रि०).

ग्रुच, चोरीकरना । जाना । भ्वा० पर० सक० सेट् । ग्रोचति । अग्रुचत्-अग्रोचीत् । ग्रुचित्वा-ग्रुत्वा.

ग्रैव, (न०) ग्रीवायां भवं अण् । गलेमें हुआ । गलेका भूषण (जेवर).

ग्रैवेय, (न०) ग्रीवायां भवं ढञ् । ग्रीवाभूषण । गलेका अलंकार गलेका गहना । "ग्रैवेयकम्" ढकञ् । यही अर्थ.

ग्लस, भक्षण । खाना । भ्वा० आत्म० सक० सेट् । ग्लसते । अग्लसिष्ट । ग्लसित्वा-ग्लस्त्वा.

ग्लह्, आदाने-पकडना वा चुरा० उभ० पक्षे भ्वा० सक० वेट् । ग्लाहयति-ते । अजग्लहत्-त । ग्लहति । अग्लहीत्.

ग्लह, (पु०) ग्लह+घ । द्यूतादौ कृते पणे । जूये आदिमें लगाया गया दाव वा शर्त । जूआ । द्यूत । पासा.

ग्लानि, (स्त्री०) ग्लै-हर्षक्षय । वीर्यक्षय । दिलका टूटना । क्तिन् । दिलकी घवराहट । थकना । हानि । नुकसान । खुश न होना । बीमारी.

ग्लास्नु, (त्रि०) ग्लै+स्नु । ग्लानियुक्त । थकाहुआ । घवरायाहुआ.

ग्लुच, चोरी करना और गति । भ्वा० पर० सक० सेट् । ग्लोचति । अग्लुचत्-अग्लोचीत् । वा क्त्वा.

ग्लुञ्च, (चोरी करना और जाना) भ्वा० पर० सक० सेट् । क्त्वा वेट् । ग्लुञ्चति । अग्लुञ्चत् । अग्लुञ्चीत्.

ग्लेपृ, देना । गरीबहोना । दुखीहोना । कांपना । हिलना । जाना । भ्वा० आत्म० सक० सेट् । ग्लेपते । अग्लेपिष्ट । अजिग्लेपत्.

ग्लेवृ, सेवन-सेवा करना । पूजा करना । भ्वा० आत्म० सक० सेट् । ग्लेवते । अग्लेविष्ट । अजिग्लेवत.

ग्लेषृ, अन्वेषण । तालाशकरना । ढूंढना । खोजना । भ्वा० आत्म० सक० सेट् । ग्लेषते । अग्लेषिष्ट । अजग्लेषत्.

ग्लै, हर्षक्षय । कष्टका अनुभव करना । थकजाना । घवराना । भ्वा० पर० अक० अनिट् । ग्लायति । अग्लासीत्.

ग्लौ, (पु०) ग्लै+डौ । चन्द्र । चांद । कर्पूर । कापूर । पृथिवी.

घ

घ, (पु०) घट्+ड । घण्टा । घर्घर शब्द । (समासमें शब्दके पीछे आता है जैसे पाणिघ, राजघ आदि) मारना । ताडन करना । नाश करना) (त्रि०)

घग्घ्, हंसना । भ्वा० पर० अक० सेट् । घग्घति । अघग्घीत्.

घट्, चेष्टा । कामकरना । हरकत करना । यत्न करना । भ्वा० आत्म० अक० सेट् । घटादि । घटते । अघटिष्ट । घटयति.

घट्, शब्द करना । चुरा० उभ० अक० सेट् । इदित् । घण्टयति-ते.

घट, (पु०) घट्+अच् । कलस । घडा । जलकी घडी । कुंभराशिका चिह्न । वीस द्रोणका परिमाण.

घटक, (त्रि०) घटयति (स्वविशिष्टतया निरूपयति) घट्+णिच्+ण्वुल् । साथ रहनेसे बतानेहारा । वाक्य आदिके बीचमें पडनेहारा पदार्थ । योजक । जोडनेहारा । अपने लिये यत्न करनेहारा । पूरा करनेहारा । बीआ सिलाई बनानेहारा.

घटकारः-कृत्, (पु०) घटं करोति । घडा बनानेवाला । कुह्मार । कुम्भकार.

घटग्रहः, (पु०) घटं गृह्णाति । घडा लानेवाला । पानी भरनेवाला । भिशर.

घटना, (स्त्री०) चु० घट्+युच् । संहतकरण । इकट्ठा करना । जोडना । मेलना । हाथिओंका समूह । रचना । यत्न । बनाना.

घटस्थापनं, (न०) घटस्य स्थापनं । किसी देवताकी प्रतिष्ठाका चिह्न । घडेका स्थापन करना.

घटा, (स्त्री०) घट्+अ । यत्न । कोशिश । सभा । समूह । हाथिओंका झुण्ड । बादलोंकी फैलावट (आडम्बर).

घटिका, (स्त्री०) साठ पलोंका दण्डरूप काल । घडी । " घटति विहितकार्यकरणाय " घट्+णिच्+ण्वुल् । विहित (वेदमें कहागया) कार्य करनेकें लिये जो लगाता है । दो दण्ड । मुहूर्तस्वरूप काल अर्थात् दोघडी । "अल्पो घटः कन्" । छोटा घडा "इवार्थे कन्" । नितम्ब । चूतड.

घटीयन्त्र, (न०) ६ त० । कूएमेंसे पानी निकालनेकी कला । अरघट्ट । माल । उद्घाटन । खोलना । ग्रहणीरोगभेद.

घटोत्कच, (पु०) एक राक्षस । हिडम्बा राक्षसीके पेटमें भीमसेनने उत्पन्न कियागया । यह बडा पराक्रमी था और कुरुक्षेत्रके युद्धमें पाण्डवोंकी ओरसे लडा परन्तु कर्णने इन्द्रसे प्राप्तकीगई शक्ति (बरछी) से मार दिया.

घटोद्भवः, (पु०) घटात् उद्भवति-उप० स० घटजः घटात् जायते । जन्-ड-घट योनिः । घटः योनिः यस्य-ब० स० संभवः+घटात् संभवति-उप० स० । घडेसें उत्पन्न होता है । अगस्त्य ऋषि.

घटोध्नी, (स्त्री०) घट इव उधः यस्याः । जिसके थन हवाना घडोंके समान पूर्ण होरहे हैं.

घट्ट, चालन । हिलना । भ्वा० आत्म० सक० सेट् । घट्टते । अघटिष्ट.

घट्ट, हिलना-चुरा० । उभ० सक० सेट् । घट्टयति-ते । अजघट्टत्-त.

घट्ट, (पु०) घट्टतेऽत्र । घञ् । नहानेके लिये उतरनेका स्थान । घाट । शुल्क (फीस-मासूल) लेनेका स्थान । भावे घञ् । हिलाना.

घट्टकुटी, (स्त्री०) घट्टस्य कुटी-ष० त० । शुल्क (मसूल) लेनेकी कुटिआ । मसूलकी चौंकी.

घट्टित, (त्रि०) घञ्+क्त । निर्मित । बनायाहुआ । हिलायागया । रंगा गया । घोटागया.

घण्, दीप्ति-चमकना । तना० उभ० अक० सेट् । घणोति-घणुते । अघाणीत्-अघणीत् । अघाणिष्ट । घणित्वा.

घण्ट्, बोलना । चमकना । भ्वा०चुरा० पर० । घण्टति-घण्टयति.

घण्टा, (घंट-अच्) घंटी । कांसी आदिका बनाहुआ एक प्रकारका बाजा । अतिबला । नागबला । घंटारुलि वृक्षभेद.

घण्टानादः, (पु०) घण्टायाः नादः । घण्टाका शब्द । घंटीकी आवाज.

घण्टापथ, (पु०) घंटोपलक्षितः । घंटेसे पहिचाना गया मार्ग (रास्ता) । घंटेवालों (हाथी आदि) के जानेयोग्य रास्ता । टच् । नगरका प्रधानमार्ग । मुल्ककी बडी सडक.

घण्टाशब्दः, (पु०) घण्टायाः शब्दः । घंटीकी आवाज.

घण्टिका, (स्त्री०) क्षुद्रा घंटा । अल्पार्थे कन् । छोटी घंटी । इसीके समान स्वरूप होनेसे तालुकी जीभ । घंडी.

घन, (पु०) हन्+अप । घनादेशः । मेघ । बादल । मोथा । प्रवाह । दृढ । मजबूत । कठिन । सख्त । फैलाव । शरीर । लोहेका मुद्गर । कफ । अभ्रक । समानजातिके तीन अंकोंको आपसमें गुणना । जैसे तीनका घन २७ और चारका ६४ है । निबिड । गाढा । भराहुआ । बाजा । मध्यम नाच । लोहा (न०).

घनकफ, (पु०) घनस्य (मेघस्य) कफ इव । मानो बादलकी कफ है । बादलके पत्थर । गडे । ओले.

घनच्छद, (पु०) घनः (निबिडः) छदः यस्य । शिग्रु । गाढे पडदेवाला वा बादलके पडदेवाला.

घनध्वनिः, (पु०) घनस्य ध्वनिः । मेघगर्जना । बादलकी आवाज । मेघशब्द.

घननाभि, (पु०) ६ त० । धूम । धूआं । बादलका कारण होनेसे उसे नाभिपन प्राप्त हुआ । पद "धूमज्योतिः सलिलमरुतां" इस प्रकार मेघदूतमें धूमको भी कारण कहा है.

घनपदवी, (स्त्री०) ६ त० । बादलोंका मार्ग । आकाश । (इसे मेघका आधार होनेसे ऐसा कहा है क्योंकि यहीं बादल घूमते हैं).

घनरस, (पु०) घनस्य रसः (निष्यन्दः)। बादलका रस। पानी। गाढा रस। कर्पूर। कापूर। पीलुपर्णी (पु०) गाढे रसवाला (त्रि०).

घनवल्ली, (स्त्री०) घनस्य वल्लीव। मानों बादलकी बेल है। बिजली.

घनश्याम, (त्रि०) घन इव श्यामः-उपमित-स०। मेघके समान श्याम। सांवला। बडा काला।-मः (पु०) श्रीराम। श्रीकृष्ण.

घनसार, (पु०) घनस्य सार इव शीतलत्वात्। ठंडा होनेसे मानों बादलका सार है। कापूर। पारद। पारा। जल। पानी। एक प्रकारका वृक्ष.

घनागम, (पु०) घनानां (मेघानां) आगमः यत्र= जिस समय बादल आजाय। वर्षाका काल। पानी वर्सनेका समय (वक्त).

घनागमः-उदयः, (पु०) घनस्य आगमः अथवा उदयः। मेघ (बादल) का आना। वर्षाऋतु। वर्सातका समय.

घनाघन, (पु०) हन्+अच्-नि० इन्द्र। बर्सनेवाला बादल। मस्तहाथी। अन्योन्यघटन। एक दूसरेको धकेलना। निरन्तर। सदा। सदा मारनेवाला (त्रि०).

घनात्यय, (पु०) घनानां अत्ययः (नाशः) यत्र काले। जिस समय बादल छिपजाय। शरत्काल। अस्सु और कत्तक। खिजा.

घनामय, (पु०) घनः (दृढः) आमयः यस्मात् ५ ब०। जिस्से दृढ (पक्का) रोग होता है। खर्जूरका वृक्ष। (दरख्त).

घनाम्बु, (न०) घनस्य अम्बु-ष० त०। मेघजल। बादलका पानी.

घनोपल, (पु०) ६ त०। घनस्य उपल इव। कठिन होनेसे मानो बादलका पत्थर है। करक। शिल। गडा। ओला.

घम्ब्, जाना। हिलना। भ्वा० पर० सक० सेट्। घम्बति। अघम्बीत्.

घरट्ट, (पु०) घृ+अच्। घरः अट्टो यस्मात् ५ ब० शक० जांता। घराट.

घर्घर, (पु०) पुनः पुनः घरति। यङ्लुक् अच्। चलते हुए पानीका शब्द (आवाज)। बडानद। दर्वाजा। एकप्रकारकी स्वर (आवाज).

घर्घरिका, (स्त्री०) घर्घर+अस्त्यर्थे ठन्। छोटी घण्टी। एक बाजा। भुनेहुए धान। एक नद (पु०).

घर्म, (पु०) घृ-सींचना+मक् नि० गुणः। श्रमसे पीडित हुएके अंगोंसे वहरहा पानी। पसीना। धूप। गरमी.

घर्व्, जाना। भ्वा० पर० सक० सेट्। घर्वति। अघर्वीत्.

घर्मान्तः, (पु०) घर्मस्य अन्तः। गरमीका अन्त। वर्षा ऋतु.

घर्मांशुः, (पु०) घर्मा अंशवः यस्य ब० स०। उष्ण किरणोंवाला। सूर्य.

घर्मोदकम्, (न०) घर्मस्य उदकं। पसीनेका पानी। पसीना.

घर्षणी, (स्त्री०) घृष्+कर्मणि ल्युट्-ङीप्। हरिद्रा। हल्दी.

घस्, खाना। भ्वा० पर० सक० अनिट्। घसति। अघसत्। घस्ता.

घस्मर, (त्रि०) घस्+क्मरच्। भक्षणशील। खानेवाला। खाइड.

घस्र, (पु०) घस्+रक्। दिन। हिंस्र। मारनेवाला (त्रि०).

घाण्टिक (पु०) घण्टया चरति ठक्। घंटा लेकर विचरता है। राजाओंको जगानेके लिये घंटा बजायकर स्तुति पढनेहारा। धतूरा। घंटा बजानेहारा (त्रि०).

घात, (पु०) हन्+घञ्। प्रहार। चोट। मारना। अंकको पूरा करना। गुणना। "करणे घञ्" वाण। तीर.

घातिन्, (त्रि०) हन्+तच्छीलार्थे णिनि। धातुका मारनेके स्वभाववाला.

घातुक, (त्रि०) हन्+उकञ्। हिंस्र। मारनेवाला। क्रूर। निर्दय। बेरहम.

घार, (पु०) घृ-सींचना-घञ्। सेचन। सींचना। छिडकना.

घार्तिक, (पु०) घृतेन निर्मितः तस्य विकारो वा ठक्। घीका बनाहुआ। एकप्रकारका खाना। घ्योर। घीसे भराहुआ.

घास, (पु०) घस्+कर्मणि घञ्। गौआदिके खाने योग्य तृण आदि.

घासिः (घस्+इण्) अग्नि। घास.

घु, शब्दकरना। भ्वा० आत्म० अक० अनिट्। घवते। अघोष्ट.

घुट्, लौटना। पीछे हटना। भ्वा० आत्म० सक० सेट्। घुटते। अघुटत। अघोटि। अघोटिष्ट.

घुट्, सामनेसे चोटकरना। उलटकर मारना। तुदा० पर० सक० सेट्। घुटति। अघुटीत्। जुघोट.

घुट, (पु०) घुट्+अच्। चरणग्रन्थि। पांवकी गांठ। गिट्टा (गुल्फ)। एडी.

घुण्, घूमना-लेना। तुदा० उभ० सक० सेट्। घुणति। अघोणीत्। घुणते। अघोणिष्ट.

घुण, (पु०) घुण्+क। अपने नामसे प्रसिद्ध लकडीको खानेहारा कीडा.

घुर्, शब्द करना। बडी आवाज करना। गुडगुडाना। तुदा० पर० अक० सेट्। घुरति। अघोरीत्.

घुर्घुर, (पु०) जो "घुर" इस प्रकार शब्द निकालता है। घुर्घुरिया कीडा। सूअरकी आवाज.

घुष्, स्तुति (तारीफ) करना-आविष्करण । जाहिर (प्रगट) करना । चुरा० उभ० पक्षे भ्वा० पर० सक० सेट् । घोषयति-ते । घोषति । अजुघूषत्-त । अघुषत्.

घुसृण, (न०) घुस्+ऋणच् । कुङ्कुम । केसर.

घूक, (पु०) "घु" इति कायति । कै+क । "घु" ऐसा चिल्लाता है । उल्लू । पेचक.

घूर्, मारना-सक० पुराना होना । अक० दिवा० आत्म० सेट् । घूर्यते । अघूरिष्ट । घूर्णः.

घूर्णृ, घूमना । तुदा० उभ० सक० सेट् । घूर्णति-ते । अघूर्णीत् । अघूर्णिष्ट । घूर्णितः.

घृ, सींचना (सेक) भ्वा० पर० सक० अनिट् । घरति । अघार्षीत्.

घृण्, चमकना । तना० उभ० अक० सेट् । घृणाति-घृणुते.

घृणा, (स्त्री०) घृ+नक् । कारुण्य । दया । निंदा । घिन.

घृणि, (पु०) घृ+नि० नि० किरण । लाट । तरङ्ग । लहर । सूर्य.

घृत, (न०) घृ-चमकना । भावे क्त । चमक । "कर्तरि क्त" चमकाहुआ (त्रि०) सींचनेके अर्थमें "कर्तरि क्त" पानी । पकाहुआ मक्खन । घी.

घृतकुमारी, (स्त्री०) घृतप्रधाना कुमारी । एक औषधी (दवाई) । इसका पत्ता मलनेपर घीकीनाईं वहताहै । जीमीकंद.

घृताची, (स्त्री०) एक अप्सरा । रात । चमकनेवाली । घीवाली.

घृष्, घसना-रगडना । सक० प्रसन्न होना । अक० भ्वा० आत्म० सेट् । घर्षते । अघर्षिष्ट.

घृष्टि, (पु०) घृष्+क्तिच् । वराह । सूअर । "क्तिन्" घिसना । रगडना.

घोट (क), (पु०) घुट्+अच्-ण्वुल् वा । अश्व । घोडा.

घोटकारि, (पु०) ६ त० । महिष । भैंसा (घोडेका शत्रु).

घोणा, (स्त्री०) घुण्+अच् । घोडेकी नासिका । नासा (सबकी).

घोणिन्, (पु०) घोणा नासा अस्ति अस्य इति । (लंबी) नासावाला । सूकर (इसकी लंबी नासा होती है).

घोर, (पु०) घुर्+अच् । शिव । एक ऋषि । (सांख्यमें, रजोगुणप्रधान । आकाशआदि विशेष धर्म । विष (जहर) (न०) (सख्त) भयानक । दुर्गम (त्रि०).

घोरासन, (पु०) घोरं रासनं (शब्दः) अस्य । डरावनी आवाजवाला । गीदड । सियार.

घोल, (पु०) (न०) घुड्+कर्मणि घञ् । डकोल । तक्र । लस्सी । छाछ । मथाहुआ दही । मट्ठा.

घोष, (पु०) घोषन्ति गावः अत्र । घुष्+आधारे घञ् । जहां गौएं शब्द कर्ती हैं । आभीरपल्ली । अहीरोंका गांव । "भावे घञ्" शब्द । वादलकी आवाज । "कर्तरि अच्" एक प्रकारकी लता । (व्याकरणमें) बाह्यप्रयत्नका भेद । कांसी (न०).

घोषकः, (पु०) घोष-स्वार्थे क । चिलानेवाला । घोषणा । ढिण्डोरा करनेवाला । ढण्डोरा देनेवाला.

घोषणा, (स्त्री०) घुष्+णिच्-युच् । लोकमें प्रसिद्ध करनेके लिये ऊंचे शब्द करना । डौंडी । मुनादी । ढंडोरा देना.

घ्रा, गंधलेना । भ्वा० पर० अक० लेना-सक० अनिट् । जिघ्रति । अघ्रासीत् । घ्राणः । घ्रातः.

घ्राण, (त्रि०) घ्रा-कर्मणि+क्त । सूंघा गया ।-णः (पु०)-णं-(न०) गन्ध-सूंघनेकी क्रिया । नासिका+नाक.

घ्राणचक्षुस्, (त्रि०) घ्राणं चक्षुः यस्य । घ्राण (नाक) से देखनेवाला । अंधा । जो मार्गमें सूंघता जाता है.

घ्राणतर्पण, (पु०) घ्राणं (नासिकां) तर्पयति । तृप्+णिच्+ल्यु । जो नासिकाको तृप्त कर्ता है । सुगन्धि । खुशबू.

घ्राणपाकः, (पु०) घ्राणस्य पाकः । नासिका (नाक) की व्याधि.

घ्रातव्य, (त्रि०) घ्रा+तव्य । सूंघनेलायक.

घ्रेय, (त्रि०) घ्रा-यत् । सूंघनेके योग्य । सूंघनेलायक.

ङ.

(इस अक्षरका बोलचालमें आनेवाला कोई शब्द नहीं).

ङ, (पु०) ङु+ड । विषयकी इच्छा । भोगकी चाह । इच्छा । शिवजीका नाम.

ङु, शब्द करना । भ्वा० आत्म० अक० अनिट् । ङवते । अङविष्ट.

च.

च, (अव्य०) चि-ड । अन्वाचय (एककी प्रधानतासे दूसरेको साथ कहना) जैसे "गांवको जा और बकरीको ला" यहां गांवमें जानाहि मुख्य और बकरीका लाना तो आनुषङ्गिक (उसके साथ) है । समुच्चय (एक दूसरेकी अपेक्षाके विना बहुतोंका एक काम आदिमें सम्वन्ध) जैसे "पिता और पुत्र गांवको जाता है" यहां एक जानारूप काममें पिताकी नाईं पुत्रका भी संबंध है । इतरेतर योग (आपसमें अपेक्षावालोंका एक कर्ममें अन्वय) जैसे "पिता और पुत्र जाते हैं" यहां दोनोंहीका जानारूप कर्ममें आपसमें अपेक्षासहित अन्वय है । समाहार (मिलेहुओंका अन्वय) जैसे हाथ और पांवको वजाता है, यहां हाथ आदि मिलेहुओंकाही अन्वय है । और । निश्चय हेतु समान । पादपूरण । चन्द्रमा । कछुआ । चोर (पु०).

चकु, तृप्ति। रजना। खुशहोना। प्रसन्नहोना। अक० भ्वा० उभ० सेट्। चकति-ते। अचकीत्-अचाकीत्। अचकिष्ट.

चकास्, दीप्ति। प्रकाश होना। चमकना। अदा० पर० अक० सेट्। चकास्ति। अचकासीत्। अचचकासत्.

चकित, (न०) चक्+भावे क्त। भय। डरना। "कर्तरि क्त"। डराहुआ। हैरानहुआ (त्रि०) सोलह अक्षरके पादका एक छन्द (स्त्री०).

चकोर, (पु०) चक्-तृप्त होना+ओरन्। अपने नामका पक्षी। (कहते हैं कि चन्द्रमाकी किरणोंका पान कर्ता है).

चक्क, पीडित होना। अर्ति। तकलीफ उठाना। चुरा० उभ० सक० सेट्। चक्कयति-ते। अचचक्कत्-त.

चक्कल, (त्रि०) चक्क-अलन्। गोल। घेरेदार.

चक्र, (पु०) क्रियते अनेन। कृ+घञर्थे क। नि० द्विलम्। चकवा पक्षी चक्कर (पहिया) रथाङ्ग। चाका। सेनाके लोग। सबके सब राज। एक प्रकारका पाखण्ड। कुह्मारका साधन (चक्कर)। एक प्रकारका अस्त्र। जलावर्त। घुंवरघेर। (तन्त्रमें) मूलाधार आदिमें रहनेवाले छ पद्म। देवताकी पूजा करनेके यन्त्र। (कला) एक प्रकारकी काव्यरचना। तेलकी चक्की। समूह। गांवका समूह। पुस्तकका भाग। नदीकी गूंज। (लक्ष्य भेदसेही इसका लिङ्ग होता है).

चक्रक, (पु०) चक्रं इव कायति। कै+क। जिसकी पहियेकीसी आवाज निकलती है। (न्यायशास्त्रमें) एक प्रकारका तर्क (दलील)। एक दोष.

चक्रचारिन्, (पु०) चक्रेण चरति-उप० स०। चक्र (पहिये) से चलता है। रथ.

चक्रधर, (पु०) चक्रं (अस्त्रभेदं) (फणमण्डलं वा) धारयति। धृ+अच्। एक प्रकारके अस्त्र (हथियार) वा फणसमूहको उठानेहारा। विष्णु। सांप। सर्प। राजा.

चक्रधारा, (स्त्री०) चक्रस्य धारा (अग्रं)। पहियेकी नोक। पहिये वा अस्त्रके आगे जो एकभागमें तीक्ष्णता (तेजी) होती है.

चक्रनदी, (स्त्री०) चक्रं इव वहन्ती नदी। चक्रकी भांति घूमती हुई चलनेवाली नदी। गण्डकी नदी.

चक्रनामन्, (पु०) चक्रं इति नाम यस्य। चक्रके नामवाला। चकवाकपक्षी.

चक्रनायक, (पु०) चक्रस्य=सेनाराशेः नायकः। सेनासमूहके चलानेवाला। सेनापति। कप्तान.

चक्रपाणि, (पु०) चक्रं (प्रहरणं) पाणौ यस्य। जिसके हाथमें चक्रनामी अस्त्र (हथियार) है। विष्णु.

चक्रपाद, (पु०) चक्रं पाद इव यस्य। पहिया मानों जिसका पांव है। रथ। गाडी। "चक्रं इव पादः अस्य"। जिसका पैर मानो पहिया है। हस्ती। हाथी.

चक्रपुष्करिणी, (स्त्री०) हरिचक्रेण निखाता पुष्करिणी। हरिके चक्रसे खोदीगई तलावडी। काशीमें मणिकर्णिकाका चक्रतीर्थ.

चक्रबन्धु, (पु०) चक्रयोः बन्धुः (इव)। चकवोंका (मेल करानेसे) मानों बंधु है। सूर्य। (दिनकेही समय वे मिल जाते हैं).

चक्रभृत्, (पु०) चक्रं बिभर्ति-भृ+क्विप्। जिसके हाथमें चक्र है। विष्णु.

चक्रभेदिनी, (स्त्री०) चक्रौ भिनत्ति (मिथो वियोजयति) भिद्+णिनि। जो चकवोंका आपसमें वियोग करावे। रात्रि। रात। (रातको वे विछुड जाते हैं यह लोकमें प्रसिद्ध है).

चक्रभ्रम, (पु०) चक्रं इव भ्रमति+अच्। पहियेकी तरह घूमनेहारा। कुन्दनामी कारीगरोंकी कल। पीसनेकी चक्की.

चक्रवर्तिन्, (पु०) चक्रे (भूमण्डले) वर्तितुं, चक्रं (सैन्यचक्रं) वा (सर्वभूमौ) वर्तयितुं शीलं अस्य। वृत्+णिच् वा णिनि। जो पृथिवीमण्डलपर रहता है वा सेनाके समूहको सकल पृथिवीपर घूमानेहारा। समुद्रतक पृथिवीका स्वामी। महाराजाधिराज। सारी दुनियाका बादशाह। चकवेके समान घूमनेहारा। (त्रि०) गोल। मुख्य। सबसे आगे। जटामांसी (स्त्री०).

चक्रवाक, (पु०) चक्रशब्देन उच्यते। वच्-बोलना+"कर्मणि" घञ्। जो "चक्र" शब्दसे बोला जाता है। अपने नामका पक्षी.

चक्रवाड-ल, (पु०) चक्रं इव वाडते वेष्टयति अच्। जो चक्रके समान घेर लेता है। लोकालोक पर्वत। मण्डल (न०).

चक्रवृद्धि, (स्त्री०) वृद्धीकी वृद्धि। एकप्रकारकी वृद्धि। सूदका सूद। सूददरसूद.

चक्रव्यूह, (पु०) चक्रं इव व्यूहः। लडाईके लिये चक्रकी भांति गोल रीतिपर सेनाको ठहराना.

चक्रहस्त, (पु०) चक्रं हस्ते यस्य-ब० स०। जिसके हाथमें चक्र है। विष्णु.

चक्रा, (स्त्री०) चक्-तृप्ति+रक्। नागरमोथा। कक्कडसिंगी.

चक्राङ्ग, (पु०) चक्रस्य अङ्गं (अर्धचक्रं) इव (अङ्गं) यस्य। आधे पहियेके समान जिसका स्वरूप हो। हंस। "चक्रं अङ्गं अस्य" पहिया जिसका अंग है। रथ। गाडी.

चक्रिन्, (पु०) चक्र+अस्ति अर्थे इनिः। चक्र (हथियार)-वाला। विष्णु। सांप। चकवा। कुह्मार। चुगलखोर। सूचक। एक प्रकारका तेली। चक्रवर्ती राजा। चक्रवाला (त्रि०).

चक्रीवत्, (पु०) चक्रवत् भ्रमणं अस्य अस्ति मतुप्। मको व होता है। अको ई होती है। जो चक्रकी भांति घूमता है। गधा। एक राजाका नाम.

चक्रेश्वर, (पु०) चक्रस्य ईश्वरः-ष०त० । सम्पूर्ण ब्रह्माण्डका ईश्वर (स्वामी) । विष्णुका नाम । किसी प्रदेशका अधिकारी । जिलाहाकिम.

चक्रोपजीविन्, (पु०) चक्रेण उपजीवति । तेलके चक्र (कोल्हू) से जीता है । तेल निकालनेवाली । तेली आदमी.

चक्ष्, कहना । छोडना । खयाल करना । अदा० आत्म० अक० सेट् । चष्टे । अख्यत-अख्यत् । (भाष्यके मतमें) अक्शासीत् । अक्शात । (छोडना इस अर्थमें तो) समचक्षिष्ट.

चक्षण, (न०) चक्ष्+ल्युट्-नख्यादेशः । कहना । बोलना । भूख बढानेके लिये एक प्रकारकी चटनी.

चक्षुस्, (न०) चक्ष्+करणे उसि । देखना । आंख । नजर । प्रकाश.

चक्षुश्रवस्, (पु०) चक्षुषा शृणोति । श्रु+असुन् । चक्षुरेव श्रवः कर्णो यस्य वा । आंखसे सुनता है । जिसकी आंखही कान है । सर्प । सांप.

चक्षुष्य, (पु०) चक्षुषे हितः यत् । नेत्रके लिये हितकारी । केतक (केवडा) । पुण्डरीकवृक्ष । सुहांजना । सुरमा । कज्जल । आंखका उपकारी (त्रि०) अजशृङ्गी । वनकुलत्थिका (स्त्री०).

चङ्क्रमण, (न०) क्रम्+यङ्+ल्युट् । वारवार घूमना । बहुत घूमना । इधर घूमना । तिरछे घूमना.

चञ्चरी, (स्त्री०) चञ्च्-जाना+घञ्--तं लाति । ला+क । रको ल होता है । ङीष् । भ्रमरी । भौरी । तिन्तिडीवृक्ष । "चञ्चरीक" यही अर्थ.

चञ्चल, (पु०) चञ्च्+अलच् । तं लाति । ला+क । रको ल । कामुक । शहवती । विषयी और वायु । चपल और अस्थिर (त्रि०) बिजली और लक्ष्मी (स्त्री०).

चञ्च्, गति-जाना । भ्वा० पर० सक० सेट् । चञ्चति । अचञ्चीत्.

चञ्चलदलः-पत्रः, (पु०) चञ्चलानि दलानि यस्य । चंचल पत्तोंवाला अश्वत्थवृक्ष । पीपलका द्रख्त.

चञ्चलचित्तम्, (त्रि०) चञ्चलं चित्तं यस्य । चंचलचित्तवाला । अस्थिरमनवाला.

चञ्चा, (स्त्री०) चञ्च्+अच् । कट । चटाई । चौकी । तिनकोंका बनाहुआ पुरुष । घासकी गुडियां । तिनकोंकी पुतली.

चञ्चु, (पु०) "चञ्च्+उ । अत्र वा ऊङ् इत्येके" चञ्चू । चोंच (पक्षिओंकी).

चञ्चुपुट, (पु०) बंद की गई पक्षीकी चोंच.

चट्, मारना । तोडना । फाडना । ढांकना । चुरा० उभ० सक० सेट् । चाटयति-ते । अचीचटत्-त.

चटक, (पु०) चटति (भिनत्ति) धान्यादिकं । क्वन् । जो धान्य आदिको तोडडालती है । चिडिया । "स्वार्थे कन्" । चटककः । चटकिका (स्त्री०).

चटकाशिरस्, (पु०) चटकायाः शिर इव । चिडियाके सिरकी नाईं । पिप्पलीमूल । मघ.

चटु, (पु०) चट्+कु । पियारा वचन । व्रतिओंका एक आसन । उदर । पेट.

चटुल, (त्रि०) चप्+उलच् । चञ्चल । फुरतीला । बिजली (स्त्री०).

चड्, कोप । क्रोध करना । खफाहोना । इदित् । चुरा० उभ० अक० सेट् । चण्डयति-ते । अचचण्डत्-तं.

चण्, जाना । मारना । शब्दकरना और देना । भ्वा० पर० सक० सेट् । चणति । अचाणीत्-अचणीत् । चणयति-चाणयति । वा घटादि.

चणक, (पु०) चण्-देना+क्वुन् । शस्यभेद । तृणविशेष । छोले चने । एक मुनिका नाम जिसके गोत्रमें चाणक्य मुनि हुआ.

चण्ड, (पु०) चडि-कोप+अण् । तिन्तिडी वृक्ष । इमलीका दरख्त । यमके दूत और एक दैत्य । तीक्ष्ण । तेज । (न०) तेजीवाला और गुस्सेवाला (त्रि०) । "स्त्रियां ङीप्" चण्डी, चण्डिका.

चण्डातक, (पु० न०) चण्डां (कोपनां) अतति । अत् । ण्वुल् । सुन्दरस्त्रियोंका आधे उरुओं (पट्टों) तक कपडा । छोटा कोट.

चण्डाल, (पु०) चडि+आलच् । अपनी नामकी जाति । शूद्रसे ब्राह्मणीमें उत्पन्न कियागया संकीर्ण (मिलाहुआ) वर्ण.

चण्डांशु, (पु०) चण्डाः (तीव्राः) अंशवः यस्य । जिसकी किरणें तेज हों । सूर्य.

चण्डी, (स्त्री०) चडि+अच्+ङीप् । क्रोधवाली । दुर्गादेवी । उसीके माहात्म्यको कहनेसे सप्तशती नामक स्तोत्रको चण्डी कहते हैं.

चण्डीश्वरः, (पु०) चण्ड्याः ईश्वरः । चण्डी दुर्गा वा (पार्वती) का ईश्वर । शिव.

चण्डुः, (पु०) चण्ड्+उन् । मूषक । मूसा । छोटासा बानर.

चत्, मांगना । जाना । भ्वा० उभ० द्विक० सेट् । चतति-ते । अचेतीत् । अचतिष्ट.

चतुःशाला, (स्त्री०) चतस्रः शाला यत्र । एक दूसरेके सामने स्थित होरहे चार घरोंवाला मन्दिर । चौखंडी.

चतुर्, (त्रि०) ब० चत्+उरन् । चारकी गिनती । चार संख्यावाला । "स्त्रियां" चतस्रः । "नपुंसके" चत्वारि.

चतुर, (पु०) चत्+उरच् । हस्तिशाला । हाथीका घर । काममें कुशल । दक्ष । आंखोंके सामने । और चालाक (त्रि०).

चतुरङ्ग, (न०) चत्वारि अंगानि यस्य । जिसके चार अंग हों । हाथी, घोडा, गाडी, पैदलरूप चार अंगोंवाली सेना । लाल, हरा, पीला और काले चार सेनाके समान खेलके साधन जिसके हों । सतरंज । चौपडकी खेल.

चतुरन्ता, (स्त्री०) चत्वारः अन्ताः यस्याः–ब० स० । चार अन्तवाली । पृथिवी.

चतुरशीति, (त्रि०) चतुरधिकः अशीतितमः । चुरासिवां । चार ऊपर अस्सीवा.

चतुरशीति, (स्त्री०) चतुरधिका अशीतिः । चुरास्सीकी संख्या.

चतुरश्र–स्र, (त्रि०) चतस्रः अश्रयः=कोणाः यस्य । चार कोनवाला.

चतुरश्र, (त्रि०) चतस्रः अंश्रयः=कोणा यस्य । नि० । चतुष्कोण । चौकोना । चार कोनवाला । (ज्योतिषमें) लग्नसे चौथा और आठवां स्थान । "चतुरस्र" भी होताहै.

चतुरानन, (पु०) चत्वारि आननानि यस्य । जिसके चार मुख हों । ब्रह्मा । "चतुर्मुख" आदि इसी अर्थमें होते हैं.

चतुर्गुण, (त्रि०) चतुरावृत्ताः गुणाः यस्य । चारवार गुणा हुआ सोलहकी संख्या.

चतुर्थ, (त्रि०) चतुर्णां पूरणः । जिस्से चारकी संख्या पूर्ण (भर) होतीहै इस प्रकारका तुरीय (चौथा).

चतुर्थांश, चतुर्थोऽशः । चार भागोंमेंसे एक भाग । चौथा.

चतुर्थी, (स्त्री०) चन्द्रमाके पक्षका चौथा दिन । चौथी तिथि । (व्याकरणमें) ङे भ्यां भ्यस् ये तीनों प्रत्यय.

चतुर्थ, (त्रि०)–र्थी । (स्त्री०) चतुर्णां पूरणः–डट् । चारोंको पूरा करनेवाला । चौत्था । वा चौत्थी ।–र्थः (पु०) किसी श्रेणीका चौथा अक्षर ।–र्थं (न०) चौत्था भाग.

चतुर्थभक्त, (त्रि०) चतुर्थं भक्तं यस्य । चौत्था भोजन करनेवाला । चौत्थीवार खानेवाला.

चतुर्थभाज्, (त्रि०) चतुर्थं भजति–भज्+ण्वि । प्रत्येक आय (आमदन) का चौत्था भाग लेनेवाला (प्रजासे) राजा.

चतुर्थांशः, (त्रि०) चतुर्थः अंशः यस्य । चौत्थे अंश (हिस्से)का भागी । चौत्था हिस्सा लेनेवाला ।–शः (पु०) चौत्था भाग । चतुर्थांश.

चतुर्थाश्रमः, (पु०) चतुर्थः आश्रमः यस्य । चौत्थे आश्रम (संन्यास)वाला ब्राह्मण.

चतुर्थीकर्मन्, (न०) चतुर्थ्यां कर्म । विवाहसे चौथी रात-पर कर्तव्य कर्म (रीतरसम).

चतुर्दन्त, (पु०) चत्वारो दन्ता अस्य । जिसके चार दंत हों । ऐरावत । इन्द्रगज । इन्द्रजीका हाथी.

चतुर्दशन्, (त्रि०) ब० व० । चतुरधिका दश । चार ऊपर दस । चौंदहकी संख्या (गिनती) । "तस्य पूरणे डट्"–चतुर्दशः (चौदवां) । "स्त्रियां" चतुर्दशी । चौदवीं तिथि.

चतुर्दिशं, (अव्य०) चतसृणां दिशां समाहारः–समा०द्वं० । चार दिशाओंका समूह.

चतुर्द्वारं, (अव्य०) चत्वारि द्वाराणि यस्य । चार द्वार (दर्वाजों)वाला (घरआदि).

चतुर्धा, (अव्य०) प्रकारे धा प्रत्ययः । चार प्रकारसे । चार तरहसे.

चतुर्द्धा, (अव्य०) चतुःप्रकारं+धाच् । चार प्रकार (तरह) से.

चतुर्बाहुः, (पु०) चत्वारः बाहवः यस्य । चार हाथोंका । चार भुजावाला । विष्णु.

चतुर्भद्रं, (अव्य०) चतुर्णां भद्राणां समूहः–समा० द्वं० । चार मानवजीवनके कल्याण (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष.)

चतुर्भद्र, (न०) चत्वारि भद्राणि । धर्म, अर्थ, काम, मोक्षरूप चारों इकट्ठे हुए कल्यान । मिलेहुए धर्म आदि चार.

चतुर्भुज, (पु०) चत्वारो भुजा (हस्ताः) अस्य । जिसके चार हाथ हों । विष्णु.

चतुर्मुख, (पु०) चत्वारि मुखानि यस्य । चार मुखोंवाला । ब्रह्मा.

चतुर्युग, (न०) चतुर्णां युगानां समाहारः । सत्य, त्रेता, द्वापर और कलिरूप चारों युग । "विज्ञेयं तंचतुर्युगं" इति मनुः.

चतुर्वर्ग, (पु०) चतुर्णां वर्गः (समुदायः) धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष समूह । चार प्रकारका पुरुषका अर्थ.

चतुर्वर्ग, (पु०) चत्वारः वर्गाः । मानव जीवनके चार समूह (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष).

चतुर्वर्णः, (पु०) चत्वारो वर्णाः येषु-ब०स० । हिन्दुओंके चार वर्ण वा चार जातिएं अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र.

चतुर्वर्षिका, (स्त्री०) चत्वारि वर्षाणि वयो यस्याः (गोः) इत्यर्थः । चार वर्ष अवस्थावाली गौ । चार वर्षकी गौ.

चतुर्विद्य, (पु०) चतस्रो विद्याः (वेदज्ञानरूपाः) यस्य । चार वेदोंके जाननेहारा । चारों विद्यावाला भी होताहै.

चतुर्विद्यः, (त्रि०) चतस्रः विद्याः अभ्यस्ताः येन–ब०स० । चार वेदोंको पढा हुआ । चारवेदोंका ज्ञाता.

चतुर्विद्या, (स्त्री०) चतस्रः विद्याः–क० स० । चार विद्याएं । चारों वेद.

चतुर्विध, (त्रि०) चतस्रः विधाः यस्य । चार प्रकारवाला । चार तरहका.

चतुर्विधशरीर, (न०) जरायुज, अण्डज, स्वेदज और उद्भिदरूप चार प्रकारके शरीर । "चतुर्विधशरीराणि धृत्वा मुक्ताः सहस्रशः" इति.

चतुर्विंशः, (त्रि०) चतुरधिका विंशतिः–यस्मिन्। चार अधिक बीसवां। चौवीसकी संख्यासहित.

चतुर्विंशति, (स्त्री०) चतुरधिका विंशतिः। चार ऊपर बीस। चौवीस। चौवीसकी गिनती। वा उस संख्यावाला.

चतुर्वेदः, (पु०) चत्वारः वेदाः यस्य। चार वेदोंको जान्नेहारा.

चतुर्व्यूह, (पु०) सृष्ट्यादिकार्यार्थं चत्वारो व्यूहा विभागा यस्य। उत्पत्ति आदि कार्यके लिये जिसके चार भाग हैं। वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न और अनिरुद्धस्वरूप विष्णु.

चतुर्हायन–ण, (त्रि०) चत्वारि हायनानि यस्य–व० स०। चार वर्षवाला.

चतुर्होत्रकम्, (अव्य०) चतुर्णां होतॄणां समाहारः। चार पुरोहित.

चतुष्क, (न०) चतुर्भिः स्तम्भैः कायति। कै+क (चार थंभों (खंबे)वाला घर। जिसमें चार हों। चारों ओर चार (न०).

चतुष्टय, (त्रि०) चत्वारो अवयवा (विधा) अस्य तयप्। चार भागोंवाला। चार हिस्सोंवाला। चार प्रकारका "स्त्रियां" चतुष्टयी.

चतुष्पथ, (पु०) चत्वारः पन्थानः ब्रह्मचर्यादय आश्रमाः यस्य। अच् समा०। चार आश्रमोंवाला। ब्राह्मण। "चतुर्णां पथां समाहारः" अच्। चार रास्तोंका मिलाप। चौंरास्ता। चौराहा। चार मुखवाला मार्ग। चौक.

चतुष्पद, (पु०) चत्वारि पदानि चरणा यस्य। चार पांववाला। चौपाया। गौ आदि पशु। (ज्योतिषमें) एक करण। (पादको पद् आदेश होनेसे) "चतुष्पात्."

चतुष्पदी, (स्त्री०) चत्वारः पादाः अस्याः। ङीप्। (पाद्-शब्दको पात् होकर ङीप् आनेपर फिर पद हुआ) चार पांववाली। चार हिस्सोंवाली। चार चरणोंका पद्य वा श्लोक जिसके ३२ अक्षर हैं.

चतुष्टय, (त्रि०)–यी (स्त्री०) चत्वारः अवयवाः विधाः अस्य तयप्। चार भागवाला। चार तरहका चौरा.

चतुष्षष्टि, (त्रि०) (स्त्री०) चतुरधिका षष्टिः। चोसठ। चोसठ अध्यायवाला ऋग्वेद.

चतुस्त्रिंशत्, (त्रि०) चतुरधिका त्रिंशत्। चार ऊपर तीस। चौंतीस। चौंतीस संख्यावाला.

चतूरात्रं, (अव्य०) चतसृणां रात्रीणां समाहारः। चार रात्रिओंका समूह.

चत्वर, (न०) चत्+ष्वरच्। स्थण्डिल। थडी। यज्ञके लिये शुद्ध पृथिवी। आंगन। वेडा। अंगन.

चत्वारिंशत्, (स्त्री०) चत्वारो दशतः परिमाणं अस्य। नि० दससे चार गुण परिमाणवाला। चालीस। एकसंख्या.

चत्वाल, (पु०) चत्+ष्वलच्। होमका कुण्ड। दर्भ। कुशा.

चद्, मांगना। भ्वा० उभ० द्विक० सेट्। चदति-ते। अचदीत्.

चद्, आह्लाद। खुश होना। प्रसन्न होना और चमकना। भ्वा० पर० अक० सेट्। इदित्। चन्दति। अचन्दीत्.

चन्, शब्द करना। मारना। चनति। अचानीत्-अचनीत्.

चन, (अव्य०) न पूरा। जो कुछ। भी.

चन्दन, (पु० न०) चदि+णिच्+ल्यु। मलयपर्वतमें उपजा गंधसार। लाल चन्दन। एक वानर। एक बूटी.

चन्दनधेनु, (स्त्री०) चन्दनेन अङ्किता धेनुः। वह गौ जिसपर चन्दन छिडका गया हो। यदि पति और पुत्रवाली स्त्री भर्ताके पहिले मरजाय तो उसे स्वर्ग पहुंचानेके उद्देशमें ऐसी गौ दान की जाती है जिसके शरीरपर चन्दन मला हो। सर्वाङ्गपर चन्दनके निशानवाली दान करनेयोग्य धेनु.

चन्द्र, (पु०) चदि+रक् चन्द्रमा। मृगशिर नामा तारा। कर्पूर। हीरा। पानी। सुन्दर। कालारंग। मोरका चांद। मोटी इलायची। रोशन.

चन्द्रक, (पु०) चन्द्र इव कायति। कै+क इवार्थे कन् वा। मोरके पंखका चांदके स्वरूपवाला पदार्थ। एक प्रकारकी मच्छी। सुपेद मरीच। श्वेत मरिच.

चन्द्रकला, (स्त्री०) ६ त०। चन्द्रका षोडश भाग। चांदका सोलवां हिस्सा। द्रविडदेशका एक बाजा.

चन्द्रकान्त, (पु०) चन्द्रः कान्तः अभीष्टः यस्य। चांद जिसका पियारा है। स्वनामसे ख्यात एकप्रकारकी मणि, (चांदको देखकर वह पिघलती है)। कमल और श्रीखण्ड। चन्दन (न०)। रात। चांदनी और चन्द्रमाकी स्त्री (स्त्री०).

चन्द्रकान्ति, (न०) चन्द्रस्य इव कान्तिः अस्य। जो चांदकी भांति चमकती है। चांदी। रूपा। ६ त०। चांदकी चमक.

चन्द्रकिन्, (पु०) चन्द्रकः+अस्ति अस्य+इनि। बरोबर चांदवाला। मयूर। मोर.

चन्द्रगुप्त, (पु०) नन्दराजाकी मुरानाम दासीमें उत्पन्न हुआ, चाणक्य ब्राह्मणसे पुत्रसहित योगानन्दको मारकर राज्याभिषेक कियागया एक राजा। मगधदेशका राजा। चित्रगुप्त। यमराजकी कचहरीका बाबू.

चन्द्रदाराः, (पु० बहु०) चन्द्रस्य दाराः=स्त्रियः। चन्द्रमाकी स्त्रियें। सत्ताइस दक्षप्रजापतिकी कन्यायें जो चन्द्रमाको दीगईं.

चन्द्रद्युतिः, (स्त्री०) चन्द्रस्य द्युतिः इव द्युतिः यस्य। चन्द्रमाके प्रकाशके समान। चन्दन। चांदनी.

चन्द्रनिभ, (त्रि०) चन्द्रेण निभः=सदृशः । चन्द्रमाके समान चमकनेवाला रोशन । सुन्दर.

चन्द्रप्रभा, (स्त्री०) चन्द्रस्य प्रभा । चन्द्रमाकी रौशनी । चांदनी.

चन्द्रबाला, (स्त्री०) चन्द्रस्य (कर्पूरस्य) बाला इव । (समानगंध होनेसे) मानों कापूरकी कन्या है । मोटी इलायची.

चन्द्रभागा, (स्त्री०) काश्मीरदेशकी एक नदी.

चन्द्रमण्डल, (न०) ६ त० । चन्द्रमाका मण्डलाकार खरूप । चांदकी गोल शकल.

चन्द्रमस्, (पु०) चन्द्रं (आह्लादं) मिमीते । आनन्द देनेवाला । "चंद्रं" (कर्पूरं) माति (तुलयति) मा+असि-वा । कापूरके समान दीखनेहारा । चन्द्र । चन्द्रमा । चांद.

चन्द्रमुखी, (स्त्री०) चन्द्र इव मुखं यस्याः–ब० स० । जिसका मुख चन्द्रमाके समान है । प्यारी सुन्दर स्त्री.

चन्द्रमौलि, (पु०) चन्द्रः मौलौ यस्य । जिसके माथेपर चन्द्रमा है । चन्द्रशेखर । शिव । शंकर । महादेव.

चन्द्रलोकः, (पु०) चन्द्रस्य लोकः । चन्द्रमाका लोक.

चन्द्रवल्लरी, (स्त्री०) ६ त० । सोमलता । एकप्रकारकी वेल.

चन्द्रवदन, (त्रि०) चन्द्र इव वदनं यस्य । चन्द्रमाके समान उज्ज्वल मुखवाला.

चन्द्रवंशः, (पु०) चन्द्रस्य वंशः । चन्द्रवंशी राजालोग.

चन्द्रव्रत, (न०) चन्द्रस्य (चन्द्रलोकप्राप्तये) व्रतं (नियमः) । चन्द्रमाके लोकमें जानेके लिये नियम । चान्द्रायण नामी व्रत.

चन्द्रशाला, (स्त्री०) चन्द्रः शाला इव आधारः अस्याः । घरके समान चांद जिसका आश्रय है । चांदनी । "चन्द्र इव आह्लादिका शाला" । चन्द्रमाके समान प्रसन्न करनेवाला घर । प्रासादोपरिस्थ गृह । बडा ऊंचा महलके ऊपरका घर.

चन्द्रशेखर, (पु०) चन्द्रः शेखरं (शिरोभूषणं) यस्य । चन्द्रमा जिसके सिरका भूषण (जेवर) है । शिवजी । पूर्वदेशमें एक पर्वत.

चन्द्रसम्भव, (पु०) सम्भवति अस्मात् सम्भवः । चन्द्रः सम्भवः यस्य । चन्द्रमासे उत्पन्नहुआ । बुध । इसी-प्रकार "सोमसुत" आदि भी इसी अर्थमें । नर्मदा नदी और मोटी इलायची (स्त्री०).

चन्द्रहास, (पु०) चन्द्र इव हासः (प्रभा) अस्य । चन्द्रं हसति वा । जिसका प्रकाश चांदके समान हो । वा जो (सुपेद होनेसे) चांदको भी हस रहा है । अण् वा खड्ग । तरवार । रूपा (न०) । गुडूची (स्त्री०).

चन्द्रा, (स्त्री०) चदि+रक् । एला । इलायची । चन्द्रातप । चंदोआ.

चन्द्रातप, (पु०) चन्द्रस्य आतः (गमनं) ततः पाति । पा+क । चंदोआ । चांदकी किरण । ज्योत्स्ना । चांदनी.

चन्द्रापीड, (पु०) चन्द्रः आपीडः (शिरोभूषणं) यस्य । चन्द्रमा जिसके सिरका अलंकार है । शिवजी । तारा-पीडका पुत्र एक राजा.

चन्द्रार्धः, (पु०) चन्द्रस्य अर्धः । चन्द्रमाका आधा । आधा चन्द्रमा.

चन्द्रिका, (स्त्री०) चन्द्रः स्वाश्रयत्वेन अस्ति अस्याः ठन् । चन्द्रमा जिसका अपना आश्रय है । चांदनी । मोटी इलायची । तेरह अक्षरके पादवाला एक छन्द.

चन्द्रोपल, (पु०) चन्द्रप्रियः उपलः । चन्द्रमाका पि-यारा पत्थर । चन्द्रकान्तमणि.

चप्, चूर्णीकरण–पीसना । सान्त्वन–हौंसला देना । शान्ति देना । चुरा० वा भ्वा० उभ० सक० सेट् । चपयति–ते । अचीचपत्–त । चपति । अचापीत् । अचपीत्.

चपल, (पु०) चप्-मंदगति-धीरे २ चलना+कल । पारद । पारा । मछली । एक पत्थर । और राजमाष । चञ्चल । क्षणिक । छिनभरके लिये रहनेहारा घवराया हुआ । और दुर्विनीत । अशिक्षित । बेवकूफ (त्रि०) लक्ष्मी । बिजली । पुंश्चली । खराव औरत । मद्य । पिप्पली । विजया । मदिरा । जिह्वा । जीभ । और आर्याछन्दका भेद (स्त्री०).

चपेट, (पु०) चप्-घञर्थे क । चपाय (सांत्वनाय) अटति (गच्छति) इट्+क । जो दूसरेको ठंडा करनेके लिये जाती है । फैलीहुई अंगुलीओंवाला हाथ । चपेड । "खण्डिकोपाध्यायः शिष्याय चपेटां ददाति" इति भाष्य-प्रयोगात् । "स्वार्थे कन्" । चपेटकः । यही अर्थ.

चम्, खाना । भ्वा० खा० पर० सक० सेट् । चमति । आचामति । विचमति । चम्नोति । अचमीत् । चमित्वा-चान्त्वा.

चमत्कार, (पु०) चमत् इति अव्यक्तं क्रियते । कृ+घञ् । लोकातीतवस्तु । (अजीब चीज) को देखकर चित्तके आनन्दका कारण प्रकाश । विस्मय । हैरानी । आश्चर्य । अपामार्ग वृक्ष.

चमर, (पु०) चम्+अरच् । भैंसेके खरूपका एक हरिण । जिसकी पूछसे चामर (चौंरी) नामी पंखा बनाते हैं और एक दैत्य । "स्त्रियां" चमरी । चमर पंखा (न०).

चमस, (पु० न०) चम्+असच् । लकडीका बनाहुआ यज्ञका एक पात्र । सोमरसपीनेका पात्र । लड्डू (पु०) चमचा.

चमीकर, (पु०) कृतस्वर नामी सोनेके उपजनेका स्थान । (जिस कारण सोनेको "चामीकर" कहतेहैं).

चमू, (स्त्री०) चम्+ऊ । सेना । (हाथी ७२९, रथ ७२९, घोडे २१८७, पैदल ३६४५) इतनी संख्यावाली सेना.

चमूरु, (पु०) चम्+ऊरच् । मृगभेद । एक प्रकारका हरिण । कचनालका वृक्ष । "चारुचमूरुचर्मणः" इति माघः.

चम्पक, (पु०) चपि-जाना+क्वुन् । केला । ढेउका वृक्ष । चंबेका फूल.

चम्पकमाला, (स्त्री०) ६ त० । सोनेके चम्पकोंसे बनाहुआ स्त्रियोंके गलेका अलंकार । दस अक्षरके पादवाला पंक्तिछंदका भेद । छंदोविशेष.

चम्पाधिप, (पु०) ६ त० । चम्पाका स्वामी कर्णराजा.

चम्पू, (स्त्री०) गद्यपद्यमिश्रित संस्कृत वाक्य । गद्य और पद्यसे मिलाहुआ वचन । एक प्रकारका काव्य.

चम्बु, जाना । भ्वा० पर० सक० सेट् । चम्बति । अचम्बीत्.

चय्, जाना । भ्वा० आत्म० सक० सेट् । चयते । अचयिष्ट.

चय, (पु०) चि+अच् । प्राकारमूल । कोट । समूह । चौकी आदि.

चयः, (पु०) चि+अच् । समूह । ढेर.

चयन, (न०) चि+ल्युट् । एक प्रकारकी नीचे ऊपर ईंटोंकी रचना । फूल आदिका चुनना । इकट्ठा करना.

चर्, जाना । भ्वा० पर० सेट् । चरति । अचारीत्.

चर, (पु०) चर्+अच् । अपने और दूसरे राज्यके वृत्तान्तको जाननेके लिये राजाकी आज्ञासे घूमनेहारा दूत । प्रणिधि । गुप्तदूत । जासूद । और (ज्योतिषमें) मेष, कर्क, तुला और मकर राशियें । स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण ये तीनों तारे । और सोमवार (न०) । चलनेवाला । जानेहारा (त्रि०).

चरक, (पु०) चर्+क्वुन् स्वार्थे कन् वा । एक मुनिका नाम (वैद्यशास्त्रके बनानेहारा) । मुनिके नामका ग्रंथ (मुनिकी रचना होनेसे) । चार । छिपाहुआ दूत । पापड । भिक्षु (फकीर) । संन्यासी । "देवाकर्णय सुश्रुतेन चरकस्योक्तेन जानेऽखिलम्" नैषध.

चरण, (पु० न०) चर्+करणे ल्युट् । जिस्से चलतेहैं । पाद । पैर । पाँव । वेदका एक भाग । शाखारूप ग्रंथ । उसको पढनेहारा जन । और गोत्र । "भावे ल्युट्" जाना । खाना । आचार । स्वभाव (न०).

चरणगत, (त्रि०) चरणौ गतः । चरणोंपर गिरा हुआ । पादप्रणत.

चरणग्रन्थि, (पु०) ६ त० । गुल्फ । गिट्टा । टखना । पांवकी गांठ.

चरणामृतम्, उदकं (न०) चरणयोः अमृतं-उदकं वा । पूज्य ब्राह्मण वा अध्यात्मविद्याके शिक्षक आचार्यके चरणोंके धोनेका जल.

चरणायुध, (पु०) चरणाभ्यां आयुध्यति । आ+युध्+क । पांवसे लडता है । कुक्कुट । कुक्कड.

चरणारविन्दं, कमलं-पद्मं (न०) चरणः (णं) अरविन्दं इव-उप० स० । कमलके समान चरण (पांव).

चरणव्यूह, (पु०) चरणानां (वेदशाखानां) व्यूहः (विशेषेण ऊहः) निरूपणं यत्र । जिसमें वेदकी शाखाओंका विशेषरूपसे वर्णन हो । व्यासका बनायाहुआ एक ग्रन्थ.

चरम, (त्रि०) चर्+अमच् । अन्त । अवसान । पश्चिम । आखिरी.

चराचर, (न०) चर्+अच् नि० । चलने और न चलनेवाला । जगत् । दुनिआं । समा० द्वं० । जङ्गम और अजंगम । आकाश । शिवजीकी जटा (पु०).

चरित, (त्रि०) (न०) चर्+क्त (इत्र वा) । चलागया । पालिया । करलिया । जानागया । अनुष्ठान । काम । सञ्चार । विचरना । व्रतकर्मआदिमें यत्न करना । लीला आदि । कहानी । चालचलन । स्वभाव.

चरित्रम्, (न०) चर्-इत्र । सदाचार । चालचलन.

चरिष्णु, (त्रि०) चर्+इष्णुच् । चलनेवाला । चालाक । इधर उधर घूमनेहारा.

चरु, (पु०) चर्+उ । हव्यान्न । होममें डालनेके पदार्थ (घी दूध आदि) । चरु पकानेका पात्र (भांडा) । (चरुको घीमें पकाकर इसके ऊपर दूध छिडकते हैं).

चर्च्, (पढना) चुरा० उभ० सक० सेट् । चर्चयति-ते । अचचर्चत्-त । चर्चितः । चर्चा.

चर्च्, कहना । झिडकना । भर्त्सन । तुदा० पर० सक० सेट् । चर्चति । अचर्चीत्.

चर्चक, (त्रि०) चर्च्+ण्वुल् । किसीके विषयमें बातचीत करनेवाला । दुबारा कहनेवाला.

चर्चनम्, (न०) चर्च्+ल्युट् । अभ्यास करना । दुहराना । वार वार पढना.

चर्चरी, (स्त्री०) चर्च्+अरन्+ङीष् । एकप्रकारका गीतिछन्दका भेद । कुटिलकेश । तिरछे वाल । हर्षसे खेलना । अहंकारका वचन.

चर्चा, (स्त्री०) चर्च+अ । विचार । चिन्ता । फिकर । चन्दनादिसे देहको लपेटना । दुर्गा.

चर्य, (त्रि०) चर्+कर्मणि यत् । जानेलायक । अभ्यास करने योग्य ।-र्या (स्त्री०) इधर उधर जाना । हिलना.

चर्चित, (त्रि०) चर्च्+क्त । सुगन्धित । खुशबूदार किया गया । परिमलित.

चर्पटः, (पु०) चृप्+अटन् । अंगुलियें फैलाये हुए खुली हाथकी तली.

चर्मबन्धः, (पु०) चर्मणः बन्धः । चमडेकी पेटी.

चर्मवसनः, (पु०) चर्मणः वसनं यस्य । चमडेके वस्त्रवाला । शिवजीका नाम.

चर्मवाद्यम्, (न०) चर्मणः वाद्यम् । ढोल । एक प्रकारका चमडेसे ढका हुआ बाजा.

चर्ममय, (त्रि०) चर्म+मयट् । चमडेका बना हुआ.

चर्व्, जाना । खाना । भ्वा० पर० सक० सेट् । चर्वति । चचर्व । अचर्वीत्.

चर्मकार, (पु०) चर्म (तन्मयं पादुकादिकं) करोति कृ+अण् । चमडेकी जूती आदि बनानेहारा । चर्मक । चमार । मोची.

चर्मण्वती, (स्त्री०) चर्म अस्ति अस्यां । मतुप् । नि० नदीभेदका नाम,

चर्मदण्ड, (पु०) चर्मणा कृतः दण्डः । चमडेका बनाहुआ डंडा । कशा । चाबुक । कोडा.

चर्मन्, (न०) चर+मनिन् । फलक । ढाल । चाम । एक इन्द्रिय जिस्से छूते हैं । "शरीरावरकं शस्त्रं चर्म इत्यभिधीयते".

चर्मपादुका, (स्त्री०) चर्मनिर्मिता पादुका । चमडेकी बनीहुई खडाव । उपानह । जूता.

चर्मप्रसेविका, (स्त्री०) चर्मणा प्रसीव्यते । सिव्+ण्वुल् । (आग भडकानेके लिये) चमडेसे सीया जाता है । भस्त्रानामी यन्त्र । भस्त्रा । धोंकनी । फूंकनी.

चर्मावकर्तिन्, (पु०) चर्म अवकर्तयति । चमडा काटनेवाला । जूतीबनानेवाला । मोची.

चर्मिक, (त्रि०) चर्म+ठन्+इक । ढालनामी हथियार धारण किया हुआ.

चर्मिन्, (पु०) चर्म (फलकं) अस्य अस्ति । इनि । जिसके पास ढाल नामी हथियार हो । त्वचारूप चमडेवाला । भूर्जवृक्ष । भृङ्गरीट । कदली । चमडेवाला । सिपाही.

चर्या, (स्त्री०) चर्+क्यप् । नियमका न छोडना । गुरुसे उपदेश कियेगये व्रतआदिका अनुष्ठान । विचरना । गाडीमें जाना । व्यवहार । स्वभाव । खाना.

चर्व्, खाना (दांतोंसे चूरा करना) । चाबना । चुरा० उभ० पक्षे भ्वा० पर० । चर्वयति-ते । चर्वति । चचर्व । अचचर्वत्-त । अचर्वीत्.

चर्वण–णा, (न० स्त्री०) चर्व्+भावे ल्युट् । चाबना । खाना । स्वाद लेना । कठिन भोजन.

चर्वा, (स्त्री०) चर्व्+अङ् । चपेडलगाना । चाबना.

चर्वित, (त्रि०) चर्व्+कर्मणि क्त । चाबागया । खाया. गया । स्वाद लिया गया.

चर्व्य, (त्रि०) चर्व्+कर्मणि ण्यत्–यत् वा । चाबनेलायक । -र्व्यं (न०) कठिन भोजन.

चर्षणि, (पु०) कृष्+अणि पृ० । पहिले अक्षरको च होता है । जन । लोग । (वेद) देखना । खयाल करना । चालाक मनुष्य.

चल्, जाना-भ्वा० पर० सक० सेट् । चलति । अचालीत् । चलः । चालः.

चलचञ्चुः, (पु०) चलः चञ्चुः यस्य । चञ्चल फुर्तीली चोंचवाला । चकोर.

चलन, (त्रि०) चल्+भावे ल्युट् । चलनेवाला । हिलनेवाला । कांपनेवाला । (न०–पु०) पाद । पैर (पांव).

चला, (स्त्री०) चल्+अच् । चलनेवाली । लक्ष्मी.

चलाचल, (त्रि०) चल्+अच्-नि० । अत्यन्त चञ्चल । काक । कौआ (पु०).

चलात्मन्, (त्रि०) चलः आत्मा यस्य । चल स्वभाव । चञ्चल मनवाला.

चलित, (त्रि०) चल्+क्त । कांपाहुआ । हिलाहुआ । चलागया । जुदाहोगया.

चलुः, (पु०) चल्+उन् । जलका घूट.

चलुकः, (पु०) चलुना मीयते+कन् । अंजलीभर पानी । पानीकी चुली.

चलेन्द्रिय, (त्रि०) चलानि इन्द्रियाणि यस्य–ब० स० । चञ्चलइन्द्रियोंवाला.

चलेषुः, (पु०) चलः इषुः यस्य । चञ्चल तीरवाला । जिसका तीर लक्ष्य (निशान) पर नहीं लगता.

चषति, (स्त्री०) चष्+अति–भावे । भक्षण करना । खाना । मारना.

चष्, खाना । भ्वा० उभ० सक० सेट् । चषति-ते । अचाषीत्-अचषीत्.

चषक, (पु० न०) चष्-करना+क्वन् । मद्यपानपात्र । शराब पीनेका पात्र (पियाला) । "कर्मणि क्वुन्" शहत । एक प्रकारकी मद्य (न०).

चषाल, (पु०) चष्+आलच् । यज्ञका पशु बांधनेके लिये लकडी । यूप (खंबा) के मध्यमें देनेयोग्य कडेके भांति लकडी वा लोहेका पदार्थ.

चह्, ठगना । भ्वा० पर० सक० सेट् । चहति । अचहीत्.

चाकचक्य, (न०) चक्+अच् । चकः । प्रकारे द्वित्वं । चकचकः । तस्य भावः । उज्वलता । प्रकाशता । रौशनी । प्रकाश । चमक.

चाक्र, (त्रि०)–क्री (स्त्री०) चक्रेण निर्वृत्तं अण् । रथ-(गाडी)-से पूराहुआ (युद्ध) । गाडीके पहियेका.

चाक्रिक, (त्रि०)–की (स्त्री०) चक्रेण चरति । समूहके साथ संबंध रखनेवाला ।–कः. (पु०) कुम्हार (चाक चलानेवाला । तेल निकालनेवाला । तेली.

चाक्रेय, (त्रि०) चक्र+ढक् । चक्र पहियासम्बंधी । चक्रका.

चाक्षुष, (न०) चक्षुषा निर्वृत्तं+अण् । आंखसे उपजा ज्ञान । देखना । नजर । छठा मनु.

चाञ्चल्यं, (न०) चञ्चल+ष्यञ् । चञ्चलपना । अस्थिरता.

चाट, (पु०) चट्-भेद । फाडना+अच् । पहिले विश्वास देकर पीछे धन लेजानेहारा चोर । "चाटचारणदासेषु दत्तं भवति निष्फलम्" स्मृतिः.

चाटकैर, (पु०) चटकायाः चटकस्य वा अपत्यं एरक् । चिडियाका बच्चा । चटकापत्य.

चाटु, (पु० न०) चट्+ञुण् । पियारा वचन । झूठ पियारा वचन । स्वार्थे कन्.

चाटुकार, (त्रि०) चाटु करोति उप० स० । झूठाप्यारा वचन बोलनेवाला । चापलूसी करनेवाला.

चाटुपटु, (पु०) चाटौ (मिथ्या परितोषणे वाक्ये) पटुः । झूठेही प्रसन्न करनेवाले वचनमें चतुर । भांड । खुशामदी । पृ० पको व । "चाटुपटु" विदूषक । नाटकमें एक मखौलिया.

चाटूक्तिः, (स्त्री०) चाटुः उक्तिः । दूसरेके प्रसन्न करनेके लिये झूठा कथन । चापलूसीका वचन.

चाणकीन, (त्रि०) चणकस्य भवनं क्षेत्रं, खञ् । चनोंछोलोंका खेत.

चाणक्य, (पु०) चकणस्य मुनेर्गोत्रापत्यं+यञ् । चणकमुनिके वंशमें हुआ । नौ नन्दोंको मारकर चन्द्रगुप्त राज्य देनेहारा विष्णुगुप्त (कौटिल्य) । प्रसिद्ध नीतिशास्त्रका बनानेहारा । एक नीतिका पुस्तक.

चाणूर, (पु०) चण्+ऊरण् । कंस राजाका बडा पहिलवान (मल्ल).

चाणूरसूदन, (पु०) चाणूरं सूदयति+ल्युट् । चाणूरको मारनेहारा । श्रीकृष्ण.

चाण्डाल, (पु०) चण्डाल एव+अण् । चण्डालही चाण्डाल । अंत्यज । श्वपच.

चातक, (पु०) चतति (याचते) सततं अम्भः (मेघं) चत्+ण्वुल् । जो सदा बादलका पानी मांगता है । चकवा । पपीहापक्षी.

चातकानन्दन, (पु०) चातकं आनन्दयति–उप० स० । पपीहेको आनंद देनेहारा । वर्षाऋतु । बर्सात.

चातुरक्षं, (न०) चतुर्भिः अक्षैः निष्पाद्यते+अण् । चौपड खेलनेके चार पास्से.

चातुरर्थिकः, (पु०) चतुर्षु अर्थेषु विहितः+ठक् । व्याकरणमें चार भिन्न अर्थोंमें शब्दके साथ प्रयोग कियागया एक प्रत्यय.

चातुराश्रमिक, (त्रि०) चतुर्षु आश्रमेषु विहितः+ठक् । चार आश्रमोंमें विधान कियागया । चारोंमेंसे ब्राह्मणका एक आश्रम.

चातुरिकः, (पु०) चातुरीं=रथचर्यां वेत्ति+ठक् । रथकी सेवाको जाननेवाला । रथवाही । साईस । सारथी । गाडी चलानेवाला.

चातुरी, (स्त्री०) चतुरस्य भावः । तस्येदं वा+अण् । चतुराई । होशयारी । छल.

चातुर्मास्य, (न०) चतुर्षु मासेषु विहितं+ण्य । चार महीनोंमें विधान कियागया । चार महीनोंमें समाप्त होनेहारा यज्ञ वा व्रत । आषाढशुदी द्वादशीसे ले कार्तिकशुदी द्वादशीतक चार महीने (जो शुभ कर्मके लिये अच्छे हैं).

चातुर्य, (न०) चतुरस्य भावः+ष्यञ् । चतुराई । चालाकी । सुन्दरता.

चातुर्वर्ण्य, (न०) चत्वारः (ब्राह्मणादयः) वर्णा एव । स्वार्थे ष्यञ् । ब्राह्मण आदि चारों वर्ण । "चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं" गीता । "भावे ष्यञ्" । "चातुर्वर्णधर्म" । चार वर्णोंका धर्म.

चातुष्टय, (त्रि०) चतुष्टयं वेत्ति+अण् । चारके समूहको जाननेवाला.

चान्दनिक, (त्रि०)–की (स्त्री०) चंदनेन सम्पद्यते+ठक् । चंदनका बनाहुआ । चंदनसे निकालाहुआ । चंदनके रससे सुगन्धित कियागया.

चान्द्र, (पु०) चन्द्रः देवता अस्य । तस्येदं वा+अण् । जिसका देवता चन्द्रमा है । वा चन्द्रमाका यह । चन्द्रकान्तमणि । तीस तिथिओंवाला पौर्णमासी वा अमावास्यातक एक महीना । चान्द्रायणव्रत (न०) । चन्द्रमाका लोक (पु०) । "चन्द्रेण प्रोक्तं" अण् । चन्द्रसे कहागया । एक प्रकारका व्याकरण । "तदधीते" । "फिर अण्" चान्द्रव्याकरण पढनेहारा (त्रि०).

चान्द्रमस, (त्रि०)–सी (स्त्री०) चन्द्रमसः इदं+अण् । चन्द्रमाके साथ संबंध रखनेवाला । चन्द्रमाका वा चन्द्रमाकी.

चान्द्रायण, (न०) चान्द्रः (चन्द्रलोकः) अय्यते अनेन अय्+ल्युट् णत्वम् । जिस्से चन्द्रलोक मिलता है । एक व्रतका भेद.

चाप, (पु०) चपस्य (वंशभेदस्य) विकारः । वांसका बनाहुआ । "अण्" । धनुष् । कमान । मेषसे लेकर नवमी राशि.

चापल, (न०) चपलस्य भावः कर्म वा अण् । चपलका होना । दिलको आराम न होना । विना सोचे कोई काम करना । प्रयोजनबिन हाथपांवका हिलाना । अनवस्थान । बेकरारी । "ष्यञ्" चापल्य (यही अर्थ).

चापिन्, (त्रि०) चापः अस्ति अस्य इनि । धनुषकमान । चढायेहुए.

चामर, (पु० न०) चमरस्य विकारः । चमर (मृग)-की पूंछका बनाहुआ पंखा.

चामरग्राहः–ग्राहिन्, (पु०) चामरं गृह्णाति । चौरी पकडनेवाला.

चामीकर, (न०) चमीकरे (आकरभेदे) भवः अण् । चमीकर नामी खानसे उपजा । सोना । स्वर्ण । धतूरा.

चामुण्डा, (स्त्री०) चमूं (सेनां-वियदादिसमूहरूपां) लाति (आदत्ते) । ला+क । आकाशआदि समूहरूप सेनाको ग्रहण करनेवाली । दुर्गादेवी । चण्ड और मुण्डको लानेवाली । "यस्माच्चण्डं च मुण्डं च गृहीत्वा त्वमुपागता । चामुण्डेति ततो लोके ख्याता देवी भविष्यसि".

चाम्पेयक, (न०) चम्पायां भवः+ढक्, ततः स्वार्थे कन् । चम्पक । चंबेका फूल । नागकेशर । सोना । किञ्जल्क.

चाय्, दर्शन । देखना । भ्वा० उभ० सक० सेट् । चायति–ते । अचायीत्-अचासीत् । अचायिष्ट–अचास्त.

चार, (पु०) चर इव+स्वार्थे अण् । चर । गुप्तदूत । "चारैः पश्यन्ति राजानः" इति नीतिशास्त्रम् । चर्+भावे घञ् । गमन । जाना । आधारे घञ् । कारागार (जेलखाना) । कैदखाना । कृत्रिमविष । बनावटी जहिर (न०).

चारण, (पु०) चारयति (कीर्तिं) चर्+णिच्+ल्यु । यश-को फैलानेहारा । कीर्तिसञ्चारक । नट.

चारु, (पु०) चर्+उण् । बृहस्पति । मनोहर । सुन्दर । कान्त (त्रि०).

चार्चिक्य, (म०) चर्च्+धात्वर्थे ण्वुल् । चर्चिकैव । "स्वार्थे ष्यञ्" । चन्दन आदिसे शरीरको लीपना.

चार्म, (पु०) चर्मणा परिवृतः रथः अण् । चमडेसे ढका-हुआ रथ । चारोंओर चमडेसे मढीहुई गाडी.

चार्वाक, (पु०) चारुः (लोकसिद्धः) वाकः (वचनं) यस्य (पु०) जिसका वचन संसारको अच्छा लगे । प्रत्यक्षप्रमाणको माननेहारा लोकायतिक (नास्तिक) । इस मतके चलानेवाले बृहस्पति हैं । एक राक्षसका नाम.

चार्वी, (स्त्री०) चारु+ईप् । सुन्दर । सुन्दर स्त्री । चांदनी । बुद्धि । प्रकाश । कान्ति । दमक । कुबेरकी स्त्रीका नाम.

चालः, (पु०) चल्+ण । घरकी छत । नीला । गरुड.

चालनम्, (न०) चल्+णिच्+भावे ल्युट् । हिलानेवाला । कंपानेवाला.

चालनी, (स्त्री०) चाल्यते शस्यादि अनया । चल्+णिच् +करणे ल्युट् । जिस्से धानआदि छाटते हैं । अपने नामका बहुत छेकोंवाला धानआदि चलानेका साधनरूप पदार्थ । छानणी.

चाष, (पु०) चष्-खाना+णिच्-अच् । सोनेकीसी चोटीवाला नीलेरंगका पक्षी । नीलकण्ठ.

चि, चयन-चुनना । चुरा० पक्षे भ्वा० उभ० द्विक० अनिट् । चपयति-ते । चयति-ते । अचीचपत्-त । अचेषीत्-अचेष्ट.

चिकित्सक, (पु०) कित्-रोगापनयन । रोग दूरकरना । इलाजकरना । "स्वार्थे सन् ण्वुल्" । रोग दूर करनेवाला वैद्य । हकीम.

चिकित्सा, (स्त्री०) कित्+स्वार्थे सन्+भावे अ । रोगप्रतीकार-करण । रोगका उपाय करना । बीमारीका इलाज करना.

चिकित्सित, (त्रि०) कित्+स्वार्थे सन्+कर्मणि क्त । चिकित्सा कियागया । इलाज कियागया.

चिकित्स्य, (त्रि०) चिकित्सयितुं योग्य । अर्हार्थे ण्यत् । उपायके योग्य (रोग) । इलाजके लायक । (बीमारी) रोग छुडानेलायक जन.

चिकीर्षक, (त्रि०) कृ+सन्+ण्वुल् । करनेकी इच्छा कर-नेवाला.

चिकीर्षा, (स्त्री०) कृ+सन्+अङ् । करनेकी इच्छा । इच्छा । चाह । खाहिश.

चिकीर्षित, (त्रि०) कृ+सन्+क्त । चहागया । करनेकी इच्छा कियागया ।-तं (न०) संकल्प । इरादा । प्रयोजन.

चिकीर्षु, (त्रि०) कृ+सन्+उ । करनेकी इच्छा करनेवाला.

चिकुर, (पु०) चि-इति अव्यक्तं शब्दं कुरति । कुर+क । जो "चि" इस शब्दको धीरेसे करे । केश । बाल (शिरके) । एक वृक्ष । पर्वत । और (सांपआदि) सरीसृप । चपल । चञ्चल । तरल (त्रि०).

चिक्क्, पीडन । तकलीफ पहुंचाना । चुरा० उभ० सक० सेट् । चिक्कयति-ते.

चिक्कण, (पु०) चिक्क्+क्विप् । चिक्, तं कणति+कण्-शब्द-आवाजकरना+अच् । गुवाक वृक्ष । उसका फल (न०) चिकना (त्रि०) । चिकनेरूप गुणवाली उत्तम गौ (स्त्री०).

चिक्किरः, (पु०) चिक्क्+इरच् । मूषक । मूसा । चूहा.

चिदुल्लासः, (पु०) चितः उल्लासः । हृदयको प्रसन्न कर-नेहारा.

चिच्छक्ति, (स्त्री०) चिदेव शक्तिः । चैतन्यरूप सामर्थ्य । मन और बुद्धिकी ताकत । "चिच्छक्तिः परमेश्वरस्य विमलं चैतन्यमेवोच्यते" । चैतन्य.

चिञ्चा, (स्त्री०) "चिं" इति अव्यक्तं शब्दं चिनोति । चि+ड । इमलीका दरख्त । तिन्तिडीका वृक्ष.

चिट्, प्रेषण । भेजना । भ्वा० पर० सक० सेट् । चेटति । अचेटीत्.

चित्, ज्ञान । जानना । भ्वा० पर० पक्षे चुरा० आत्म० सक० सेट् । चेतति-चेतयते । अचेतीत्.

चित्, स्मृति । यादकरना । चुरा० उभ० सक० सेट् । इदित् । चिन्तयति-ते.

चित्, (स्त्री०) चित्+सम्पदा० क्विप् । ज्ञान । चेतना । चैतन्य । होश.

चित्, (अव्य०) चित्+क्विप् । असाकल्य । नापूरा । थोडा । जैसे किञ्चित्.

चित, (त्रि०) चि+क्त । चुनेहुए फूलआदि । छन्न । ढकाहुआ । मुर्देको जलानेके लिये लकडीकी चुल्ली (चिता) (स्त्री०).

चिति, (स्त्री०) चि+क्तिन् । चिता । समूह । चुन्ना । (वेदान्तमें) निर्विषयसंवेदन । ऐसा ज्ञान कि जिसका विषय कोई नहीं । "निर्विशेषचितिरेव केवला" इति संक्षेपशारीरक । प्रासाद (महल) आदिमें ईंटोंकी गिनतीको जाननेके लिये अंकशास्त्रमें कहागया "घर" इस नामसे प्रसिद्ध एक पदार्थ । आगका एक स्थान.

चित्त, (न०) चित्यते (ज्ञायतेऽनेन) चित्+क्त । जिस्से जानते हैं । बुद्धि । मन । (वेदान्त) अनुसन्धान । (सोचना) स्वरूपवृत्ति (खयाल) वाला अन्तःकरण । चिताकी लकडी.

चित्तविक्षेप, (पु०) चित्तं विक्षिपन्ति (योगात् अपनयन्ति) क्षिप्+अण् । जो चित्तको योगसे हटालेते हैं । योगशास्त्रमें कहेगये योगके विरोधी व्याधिआदि नौ.

चित्तविप्लव, (पु०) चित्तस्य विप्लवः अनवस्थानं यस्मात् ५ ब० । जिससे चित्त स्थिर न रहे । उन्माद रोग । पागल होनेकी बीमारी.

चित्ताभोग, (पु०) सम्यक् भोग आभोग एकविषयता । ६ त० । चित्तका भलीभांति उठना । इसका कारण अहंकार । दिलका एक ओर लगना.

चित्तिः, (स्त्री०) चित्+भावे क्तिन् । खयाल करना । संकल्प । समझ । बुद्धि । ज्ञान.

चित्य, (पु०) चीयतेऽसौ । चि+क्यप् । जो चिनी जाती है । आग । चिता (स्त्री०).

चित्र्, (क्षणिक । छिनभरके लिये होना । लिखना) । (मूर्ति आदि) । आश्चर्य होना । चुरा० उभ० सक० सेट् । चित्रयति-ते.

चित्र, (पु०) चित्+क्विप् । त्रायते । त्रै+क वा तलोपः । चित्र्+अच् वा । यमका भेद । "वृकोदराय चित्राय" यह तर्पणका मन्त्र है । अशोक वृक्ष । (चिता) चित्रक वृक्ष । एरण्डवृक्ष । आकाश । एक प्रकारका कोढ । और नाना वर्ण । कई रंगोंवाला (त्रि०) मूरत । तिलक । एक शब्दसम्बंधी अलंकार (न०) । "स्वार्थे कन्" वही अर्थ । (चिरायता) एक प्रकारका वृक्ष । "चित्र इव कायति" कै+क । एक प्रकारका व्याघ्र (मेडिया).

चित्रकण्ठ, (पु०) चित्रः कण्ठः अस्य । जिसका गला रंगबरंगी हो । पारावत (मीठी आवाज निकालनेवाला कबूतर) । बनका कबूतर । घुघु.

चित्रकर, (पु०) चित्रं करोति । कृ+टच् । मूरत बनानेवाला । वर्णसंकर (एक प्रकारका) । "चित्रकार" यही अर्थः

चित्रकूट, (पु०) चित्रं कूटं अस्य । जिसकी चोटी चित्र हो । एक पहाड.

चित्रगुप्त, (पु०) यमका भेद । "चित्रगुप्ताय वै नमः" इति तर्पणम्.

चित्रपट, (पु०) चित्रः पटः । रंगबरंगी कपडा । मूरत । मूर्ति । तसबीर.

चित्रपादा, (स्त्री०) चित्रौ पादौ यस्याः । जिसके पांव चित्र हैं । सारिका पक्षी । मैना इस नामका परिंदा.

चित्रभानु, (पु०) चित्रा भानवः यस्य । जिसकी किरणें चित्र हों । अग्नि । आग । सूर्य । चित्रकवृक्ष । आकका दरख्त.

चित्ररथ, (पु०) चित्रः रथः अस्य । जिसका रथ चित्र है । सूर्य । सूरज । गंधर्वभेद । एक गवैया देवता । गंधर्वोंका राजा । कश्यपके सोलह पुत्रोंमेंसे एक.

चित्रलेखा, (स्त्री०) अप्सरोभेद । इक अप्सरा (कुम्भाण्डकी कन्या) उषाकी सखी (सहेली) । अठारह अक्षरोंके पादवाला एक प्रकारका छन्द.

चित्रशिखण्डिन्, (पु०) चित्रः शिखण्डः अस्ति अस्य+इनि । अजीव चोटीवाला । "मरीचि, अङ्गिरा, अत्रि, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, और वसिष्ठ ये सब जगह" सुप्रसिद्ध सात मुनि.

चित्राङ्गद, (पु०) शन्तनुराजाका पुत्र । विचित्रवीर्यका भाई । एक गन्धर्व.

चित्राङ्गी, (स्त्री०) चित्रं अङ्गं अस्याः । जिसका अजीव अंग हो । मजीठ । कर्णजलौका । कानकोलन.

चिदाकाश, (न०) चिद् आकाशं इव । (लेपरहित और सबका आधार होनेसे) चैतन्य मानों आकाश है । शुद्ध (साफ) ब्रह्म.

चिदाभास, (पु०) चित् आभासः (प्रतिबिम्बः) । चैतन्यकी परछाही । बुद्धिमें आत्माका प्रतिबिम्ब । जीव.

चिद्रूप, (पु०) चित् एव रूपं अस्य । जिसका चैतन्यही रूप है । आत्मा । फुरनेवाला । रूप । परमेश्वर.

चिन्ता, (स्त्री०) चिति+अ । पहिले अनुभव कियेगये ज्ञानसे उपजी । संस्कारको जगानेहारी । देखेहुए पदार्थका पूरा स्मरण (यादकरना) फिकर । सोच.

चिन्तामणि, (पु०) चिन्ताविषयस्य मणिः । चाहेगये पदार्थको उत्पन्न करनेहारा मणि । सोचनेहीसे चिन्ता कीगई वस्तुको देनेहारी मणि । एक मणि जो मन मांगा देवे । ब्रह्मा । बुद्धदेव.

चिन्मय, (पु०) चित्+मयट् । चिदेव । चैतन्यही । चैतन्यस्वरूप परमेश्वर । "चिन्मयस्याद्वितीयस्य" इत्यादि । परब्रह्म.

चिन्मात्र, (न०) चित् एव । शुद्धचेतनं.

चिपिट, (पु०) चि+पिटच् । एक प्रकारका भोजन । चिडवा । चौडेनाकवाला.

चिरम्, (अव्य०) दीर्घ । चिरसे । देरीसे.

चिरक्रिय, (त्रि०) चिरकालेन क्रिया यस्य । जो देरीसे काम कर्ता है । दीर्घसूत्र । ढीला काम करनेवाला । आलसी.

चिरजीविन्, (पु०) चिरं जीवति+णिनि । जो देरतक जीता है । कौआ । जीवकवृक्ष । सिंवलका पेड । मार्कण्डेय । "अश्वत्थामा, बलि, व्यास, हनुमान्, बिभीषण, कृपाचार्य और परशुराम ये" सात देरतक जीनेवाले (त्रि०).

चिरण्टी, (स्त्री०) चिरेण अटति पितृगृहात् भर्तृगेहं । अट्+अच् (पु०) जो पिताके घरसे पतिके घरको देरसे जाती है । पिताके घरमें निवास करनेहारी युवती (जवान औरत) (स्त्री०).

चिरत्न, (त्रि०) चिरे भवः+त्न । चिरन्तन । देरका । पुरातन । पुराना.

चिरन्तन, (त्रि०) चिरं+ट्युल्+तुट्च । पुरातन । पुराना । "ङीप्".

चिररात्राय, (अव्य०) बहुकाल । बहुत समय । देरतक.

चिरायुस्, (पु०) चिरं आयुः यस्य । जिसकी बडी उमर हो । देवता । देरतक जीनेवाला (त्रि०).

चिर्भटी, (स्त्री०) चिरेण भटति । अच्+ङीप् (पृ०) कर्कटी । खक्खडी । खीरा । तर.

चिल्, शैथिल्य । ढीलाहोना । भ्वा० पर० अक० सेट् । चिल्लति । अचिल्लीत्.

चिल्ल, (पु०) चिल्+अच् । चीलनाम पक्षी । दुखतेहुए नेत्रवाला (त्रि०).

चिल्लाभ, (पु०) चिल्ल इव प्रसह्य हारित्वात् आभाति । भा+क । (जोरसे लेजानेके कारण) चीलकी नाईं प्रतीत होताहै । चोर.

चिबुक, (न०) चिव्-संवरण । ढाँकना । पृ० ह्रस्वः । ओठके नीचेका भाग । ठोडी । "स्वार्थे कन्" वही अर्थ । मुचकुन्द वृक्ष.

चिह्न, लक्षण । निशान लगाना । चुरा० उभ० सक० सेट् । चिह्नयति-ते.

चिह्न, (न०) चिह्न+अच् । लाञ्छन । लक्षण । निशान । दाग । पताका (झंडा).

चीन, (पु०) चि+नक् । पृ० दीर्घः । एक नगरका नाम । चीनदेश । एकप्रकारका हरिण । एकप्रकारका महीन कपडा । चीनदेशके लोग (बहुवचन).

चीत्कार, (पु०) चित् इति अव्यक्तशब्दस्य कारः कृ+घञ् । एकप्रकारकी डरावनी आवाज । चीखना । चीक मारना.

चीभ्, प्रशंसा । बडाई करना । भ्वा० आत्म० सक० सेट् । चीभति.

चीर, (न०) चि+क्रन्-दीर्घश्च । वस्त्रखण्ड । कपडेका टुकडा । "चीराणि किं पथि न सन्ति" इति भागवतम् । (चोटी).

चीर्ण, (त्रि०) चर्+क्त-पृ० । अको ई होता है । कियाहुआ । इकट्ठाकिया । सीखाहुआ । काटागया.

चीव्, ग्रहण-लेना । संवृति-ढांकना । भ्वा० उभ० सक० सेट् । चीवति-ते । अचीवीत्-अचीविष्ट । अचिचीवत्-त.

चीव्, चमकना । दीप्ति । चुरा० उभ० सक० सेट् । चीवयति—ते, चिचील.

चीवर, (न०) चि+ष्वरच् । दीर्घश्च । भिक्षुवस्त्र । फकीरका कपडा । संन्यासीका वस्त्र । कौपीनआदि (लंगोटी आदि).

चुक्क्, पीडन । पीडा देना । तकलीफ पहुंचना । चुरा० उभ० सक० सेट् । चुक्कयति-ते । अचुचुक्कत्-त.

चुट्ट्, अल्पीभाव । थोडा होना । चुरा० उभ० सक० सेट् । चुट्टयति-ते.

चुड्, काटना-छेदन । चुरा० उभ० अक० सेट् । इदित् । चुण्डयति-ते.

चुत्, क्षारण-वगना-वहया-सरना । भ्वा० पर० अक० सेट् । चोतति । अचुतत्-अचोतीत्.

चुद्, प्रेरण-प्रेरणकरना-चुरा० उभ० सक० सेट् । चोदयति-ते.

चुप्, मन्दगति । धीरे २ चलना । भ्वा० पर० अक० सेट् । चोपति । अचोपीत्.

चुब्, चुमना । चुम्बन । चुरा० उभ० वा भ्वा० पर० सक० सेट् । चुम्बयति-ते । चुम्बति । अचुचुम्बत्-त । अचुम्बीत्.

चुम्बक, (पु०) चुबि+ण्वुल् । अयस्कान्तमणि । चमकपत्थर । धूर्त । ठग । चूमनेवाला (त्रि०).

चुर्, स्तेय । दूसरेकी वस्तु चुराना । चु० उभ० पक्षे भ्वा० पर० सक० सेट् । चोरयति-ते । चोरति । अचूचुरत्-त । अचोरीत्.

चुरा, (स्त्री०) चुर्+क-टाप् । चौर्य । चोरी.

चुल्, समुच्चय उठना । ऊंचा होना । बढना । डुबकी मारना । चुरा० उभ० सक० सेट् । चोलयति-ते । अचूचुलत्-त.

चुलुक, (पु०) चुल्+उकक् । निबिड पङ्क । बडा कीचड । एकप्रकारका भांडा । छोटी हांडी । मांका दाना डूबनेके लायक जल (पानी) (न०) चुली.

चुल्ल, (पु०) क्लिन्नस्य चुलादेशः लच् प्रत्ययः । गीलीआंख । गीलेनेत्रवाला (पु०).

चुल्लि—ल्ली, (स्त्री०) चुल्ल्-खेलना+इन् वा ङीप् । पकानेके लिये आग रखनेकी जगह । चुल्हा.

चूड़ा, (स्त्री०) चुद्+अङ्-नि० । मोरकी शिखा (चोटी) मस्तकके मध्यमें रहनेहारी शिखामात्र (चोटी)। जूटिका (जूंडा)। बाहुका भूषण । आगे । भूषणमात्र । कूप (खूआ) । दस प्रकारके संस्कारोंसे एक । "प्रथमेऽब्दे तृतीये वा" मनुः.

चूड़ामणि, (पु०) ६ त० १ शिरोरत्न । शिरकी मणि.

चूड़ाल, (न०) चूडा (शिखा) अस्ति अस्य । ल । चोटीवाला । सिर । मस्तक । शिखावाला जन (त्रि०)। चिट्टीरत्ती । नागरमोथा.

चूण, संकोच । सिकोडना । चुरा० उभ० सक० सेट् । चूणति । अचूणीत्.

चूत (पु०) चुप्+क्त-पृ० । चूसागया । आम्र । आम । चू+क्त-पृ० । घरका दर्वाजा (न०)। "स्वार्थे कन्" आम । कूपक । गांड । योनि (कुस).

चूर्ण्, पेषण । पीसना । चुरा० उभ० सक० सेट् । चूर्णयति-ते.

चूर्ण, (पु०) चूर्ण्+घञ् । पीसनेसे उपजी धूली । अबीर नामी द्रव्य । पान चावनेलायक द्रव्य । "चूर्णमानीयतां तूर्णं" इति.

चूर्णक, (पु०) चूर्ण्+ण्वुल् । सक्तु (सत्तु)। "स्वार्थे कन्" चूरा । "एकप्रकारका गद्य जिसके अक्षर कठोर न हों और समास कहीं २ आवे" (न०)। नसर । छन्दोविशेष.

चूर्णकुन्तल, (पु०) चूर्ण्यते इति चूर्णः । सिरके छोटे २ वाल । घुंघरूवाले वाल । अलक (जुल्फ).

चूर्णी-र्णि), (पु०) चुर्-चट् वा क्विच् । नि० । पतञ्जलिसे कियागया महाभाष्य । कपर्दक । शिवजीमहाराजकी जटा.

चूलिका, (स्त्री०) चुल्+ण्वुल् । पृ० दीर्घः । हाथीके कानका मूल । नाटकाङ्गभेद । नाटकमें एकप्रकारका अंग.

चूष्, पान-पीना । चूसना भ्वा० पर० सक० सेट् । चूषति । अचूषीत्.

चूषा, (स्त्री०) चूष्+अङ् । चमडेकी लगाम (हाथीके लिये) लगाम । चूसना.

चूष्य, (त्रि०) चूष्+कर्मणि ण्यत् । चूसनेलायक पदार्थ वा भोजन.

चृत्, (हिंसा) मारना । ग्रन्थन । गाठना । तुदा० सक० सेट् । चृतति । अचर्तीत्.

चेट-ड, (पु०) चिट्+अच्, वा टस्य डः । नौकर । सेवक । दास । "ङीप्" । दासी । "ण्वुल्" दास । उपनायक.

चेत्, (अव्य०) यदि । अगर । संदेह न होनेपरमी संदेहसे कहना । (वाक्यके पहिले कमी नहिं आता).

चेतक, (त्रि०) चित्+ण्वुल् । सुझानेवाला । खयाल करनेवाला ।-की (स्त्री०) हरीतकी । सीड.

चेतन, (पु०) चित्+युच् । आत्मा । रूह । जीव । परमेश्वर । प्राणी । चैतन्यवाला (त्रि०).

चेतनकी, (स्त्री०) चेतनं करोति । कृ+ड । ङीप् । हरीतकी । हरीड । जो चेतन बनाडाले.

चेतना, (स्त्री०) चित्+युच्+टाप् । बुद्धि । समझ । ज्ञान । जान्ना.

चेतनावत्, (त्रि०) चेतना+मतुप् । चेतनावाला । सजीव । होशवाला.

चेतस्, (न०) चित्+असुन् । चित्त । दिल । आत्मा (पु०) "साक्षी चेता केवलो निर्गुणश्च" इति श्रुतिः.

चेतोजन्मन्, (पु०) चेतसः जन्म यस्य । चित्तसे उपजा । कामदेव । प्यार.

चेतोमुख, (पु०) चेतो मुखं द्वारं अस्य । चित्त जिसका द्वार है । (वेदान्तमें) सुषुप्तिका अभिमानी जीव.

चेतोविकार, (पु०) चेतसः विकारः । चित्तका बिगडना । क्षोभ.

चेदि, (पु०) एकदेश । उस देशमें रहनेहारे लोग (ब० व०).

चेदिपति, (पु०) चेदीनां पतिः । चेदिदेशका मालिक । दमघोषका पुत्र । "चेदिराज" "चेदिभूभृत्" आदि, इसी अर्थमें.

चेल्, जाना । चलना । चञ्चल होना । भ्वा० पर० सक० सेट् । चेलति । अचेलीत्.

चेल, (न०) चिल, आच्छादन-ढांकना+कर्मणि घञ् । वस्त्र । कपडा । पौशाक । (समासके अन्तमें आनेसे) खराब । बदमाश । "भार्याचेलं" खराब औरत । "चेलप्रक्षालकः" धावक । धोबी.

चेल्ल, चालन । हिलाना । जाना । भ्वा० पर० सक० सेट् । चेल्लति । अचेल्लीत्.

चेष्ट, ईहा । इधर उधर चलना । जीवनके चिह्न दिखाना । कोशिश करना । झगडा करना । पूराकरना । भ्वा० आत्म० अक० सेट् । चेष्टते । अचेष्टिष्ट.

चेष्टा, (स्त्री०) चेष्ट्+अङ्, "आत्मासे इच्छा, इच्छासे यत्न, और यत्नसे चेष्टा उत्पन्न होती है" । शरीरका व्यापार । कोशिश । तालाश.

चेष्टित, (त्रि०) चेष्ट्+कर्तरि क्त । चलायागया । हिलायागया । त० (न०) क्रिया । काम । चालचलन.

चैतन्य, (न०) चेतन+भावे स्वार्थे वा ष्यञ् । चेतना । होश । ब्रह्म । प्रकृति । माया.

चैत्य, (न०) चितायाः इदं अण् । गाँव आदिमें प्रसिद्ध महावृक्ष । देवताके वासका वृक्ष । बुद्धभेद । मंदिर । चिताका चिह्न (निशान)। जनसभा । यज्ञका स्थान । लोगोंके विश्रामकी जगह । देवताका स्थान । बिम्ब । अक्स.

चैत्यगृह, (न०) चैत्यस्य समीपे गृहम् । (चौकमें) चैत्यके पासका घर.

चैत्र, (पु०) चित्रा नक्षत्रेण युक्ता पौर्णमासी चैत्री सा अस्मिन् मासे+अण् । जिस महीनेमें चित्रा नक्षत्रवाली पूर्णिमा हो । चेतका महिना । "चैत्रिकः ठक्" "कन् चैत्रकः" वही अर्थ । "चैत्रक" एक पहाड.

चैत्ररथ, (पु०) चित्ररथेन (गन्धर्वेण) निर्वृत्तं+अण् । चित्ररथ नामी गन्धर्वने बनाया । कुबेरोद्यान । कुबेरका बाग । उद्यान.

चैद्य, (पु०) चेदीनां (जनपदानां) अयं ष्यञ् । शिशुपाल.

चोदना, (स्त्री०) चुद+युच् । "चोदना, उपदेश, और विधि एकही अर्थको बतलाते हैं" । प्रवर्तनावाक्य । उपदेशका वचन । "चोदनालक्षणोऽर्थो धर्मः" इति मीमांसासूत्रम् । प्रेरण । तर्जना । झिडकना.

चोद्य, (न०) चुद+ण्यत् । प्रश्न । सवाल । पूर्वपक्ष । अजीव । प्रेरणाके लायक (त्रि०).

चोर, (पु०) चुर+अच् । स्तेयकर्ता । चोरी करनेवाला । दूसरेका द्रव्य उठालेजानेवाला । एकप्रकारका गंधवाला द्रव्य.

चोल, (न०) चुल+घञ् । स्त्रियोंका कञ्चुक नामी पाँवतक कपडा । चोला इस नामसे प्रसिद्ध पुरुषोंका वस्त्र । द्राविड और कलिङ्गके बीचका एक देश.

चोली, (स्त्री०) अल्पः चोलः । ङीष् । छोठा कंचुक । अंगिया.

चोष्य, (त्रि०) चूष+ण्यत् (पु०) चूसने लायक । इक्षु-दण्ड (गन्ना) आदि । एक प्रकारका खाना (भक्ष्य).

चौड-ल, (न०) चूडा प्रयोजनं अस्य+अण् । चूडाकर्म । एक संस्कार (जिसमें बालकके बाल उतरवाते हैं) । डको ल विकल्पसे होता है.

चौर्य, (न०) चोरस्य भावः+ष्यत् । चोरपन । चोरी । लुटेरबाजी । छलपन.

चौर्यवृत्ति, (स्त्री०) चौर्यस्य वृत्तिः । चोरीका स्वभाव.

च्यवन, (न०) च्यु+ल्युट् । धीरे २ चूना । एक ऋषिका नाम.

च्यु, गति । जाना । भ्वा० आत्म० सक० अनिट् । च्यवते । अच्योष्ट.

च्यु, हास-हसना । सहन-सहारना । चुरा० उभ० सक० अनिट् । च्यावयति-ते । अचुच्यवत्-त.

च्युत्, रक्षण । बगना । बहना । भ्वा० पर० अक० सेट् । च्योतति । अच्युतत् । चुच्योत । अच्योतीत्.

च्युति, (स्त्री०) च्यु+क्तिन् । क्षरण । झरना । गिरना । बगना । नाश । "अपादाने क्तिच्" भग.

च्यौत्न, (त्रि०) च्यु-गति+करणे त्नण् । जानेवाला । छोडा-हुआ । बदमाश । धर्मसे रहित । अण्डेसे उपजा हुआ । त्यागके योग्य.

छ

छ, (त्रि०) छो+क छेदक । काटनेहारा । निर्मल । साफ और चञ्चल । घर (न०).

छगल, (पु०) छो+कलच्-गुटच् । एकप्रकारका पशु । छाग । बकरा.

छटा, (स्त्री०) छो+अटन् । दीप्ति । प्रकाश । चमक । परम्परा । लगातार.

छत्र, (पु०) छद्+णिच्-ष्ट्रन्-ह्रस्वः । खुंब । शिलीन्ध्र । और सोयेका साग । छाता । छतडी (न०).

छत्रक, (पु०) छत्रं इव कायति । कै+क । एक वृक्ष । एक प्रकारका पक्षी । "स्वार्थे कन्" छाता (न०).

छत्रधरः-धारः, (पु०) छत्रं धारयति उप० स० । छाता धारण करनेवाला । छाता उठानेवाला.

छत्रभङ्ग, (पु०) छत्रस्य भङ्गो यत्र । जहां छातेका भंग होगया । नृपनाश । राजाका नाश । वैधव्य । रंडापन । पराधीनता । ताबेदारी । अस्वातन्त्र्य.

छत्राक, (न०) छत्रा इव कायति (कै+क) । शिलीन्ध्र.

छद्, छादन-ढांकना । चुरा० पक्षे भ्वा० उभ० सक० सेट् । छदति-ते । छादयति-ते.

छद, (पु०) छद्+क । पत्र । पक्षिओंका पर । तमालवृक्ष । ग्रन्थिपर्ण.

छदन, (न०) छद्+ल्युट् । पत्र । पर । पक्ष । त्वचा । खलडी । "भावे ल्युट्" । पिधान । ढकना । बंदकरना.

छदपत्र, (पु०) छदार्थं पत्रं अस्य । जिसका पत्ता ढकनेके काममें आता है । भूर्जपत्र । भोजपत्र । मुनिलोग इसे पहिरते हैं.

छदि, (पु०) छद्+इन् । पटल । छात । छत । घरको आच्छादन करनेहारा तृणसमूह । भोजपत्ता.

छद्मतापस, (पु०) छद्मना (छलेन) तापसः । छलसे तपस्या करनेहारा । लोगोंको ठगनेके लिये अपनेको तपस्वी प्रकट करनेकी इच्छासे तपस्वियोंके वेशको धारण करनेहारा । तपस्वियोंका काम करनेहारा बैडालव्रतिक (बिल्लेका व्रत करनेवाला).

छद्मन्, (न०) छाद्यते स्वरूपं अनेन । छद्+मनि । जिसके द्वारा स्वरूप छिपाया जाय । कपट । छल.

छन्द, (पु०) छदि-संवरण-ढांकना । धातुओंके अनेक अर्थ होनेसे यहां इच्छा (चाह) अर्थमें घञ् प्रत्यय हुआ । अभिलाष । चाह । वशता । आधीनता । विषभेद.

छन्दस्, (न०) छदि+असि । वेद । अपनी इच्छासे चाल-रखनी । स्वैराचार । अभिलाष । चाह । गायत्रीआदि छन्द । पद्य.

छन्दोग, (पु०) छन्दः (सामवेदं) गायति—गै+क । सामवेद गानेहारा ब्राह्मण.

छन्न, (त्रि०) छद्+णिच्+क्त नि० । आच्छादित । ढका-हुआ । निर्जन (एकान्त) तनहा (न०).

छर्द, वमन-ऊपर छल होना । चुरा० उभ० सक० सेट् । छर्दयति–ते.

छर्दन, (पु०) छर्द+णिच्+ल्यु । नीमका वृक्ष । मदनका वृक्ष । "भावे ल्युट्" वमन (ऊपर छल होना) (न०).

छर्दि–र्दी, (स्त्री०) छर्द+णिच्+इन् । वमनरोग । वा ङीप् । वान्ति।

छल, (न०) छो+कलच् । शाठ्य । शरारत । स्वरूपको छिपाना। (न्यायमें) किसी और तात्पर्यसे प्रयोग कियेगये शब्दको वादीने दूसरे अर्थमें लगाना । प्रतिवादीसे दियागया दूषण । जैसे यह "नेपालसे आया है क्यों कि इसके पास नव कम्बल है" ऐसे वादीद्वारा कहेजानेपर "नव" शब्द "नये" इस अर्थमें लगाये जानेपरभी प्रतिवादीद्वारा "नव"-का नौ (संख्या) अर्थकी कल्पनासे यह कहना कि इसके पास तो एकही कंबल है नौ कम्बल कहां है इस प्रकार दोष लगाना.

छलना, (स्त्री०) छल । तत्करोति+णिच्+भावे युच् । परवञ्चना । दूसरेको ठगाना.

छल्ली, (स्त्री०) छद्+क्विप् तां लाति । ला+क ङीष् । वल्कल । छाल । लता । वेल । सन्तति । औलाद.

छवि, (स्त्री०) छ्यति असारं, छिनत्ति तमो वा नि० । असारको दूर कर्ती है । अंधेरेको काटती है । शोभा । कान्ति । चमक । भडक.

छाग, (पु०) छो+गन् । छागल । बकरा । स्त्रियां ङीप् । पुरोडाश । चरु । "इदमर्थे अण्" बकरीका दूध । बकरेका मांस (न०).

छागवाहन, (पु०) छागो वाहनं अस्य । बकरा जिसकी सवारी है । अग्नि.

छात, (त्रि०) छो+कर्मणि-कर्तरि वा क्त । कटाहुआ । छिन्न । दुर्बल । कमजोर । "छाततराम्बुच्छटेति" काव्य० प्र० १ उ.

छात्र, (त्रि०) गुरोर्दोषाच्छादनं छत्रं, तच्छीलं अस्य+ण । गुरुके दोषके छिपानारूप छातेवाला । शिष्य । चेला । शहतका छत्ता (न०)

छदन, (न०) छद्+णिच्+ल्यु । नीलका खिलाहुआ वृक्ष । "भावे ल्युट्" छादन । पडदा । ढकना । "करणे ल्युट्" पत्र । पत्ता (न०).

छान्दस, (पु०) छन्दो वेदं अधीते+अण् । वेद पढनेहारा.

छान्दोग्य, (न०) छन्दोग+आम्नायार्थे ञ्य । सामवेदकी उपनिषत् । सामवेद गानेवालोंका धर्म । मन्त्रब्राह्मणस्वरूप शास्त्रसमूह.

छाया, (स्त्री०) छो+ण । आतपाभाव । धूपका न होना । कान्ति । चमक । प्रतिबिम्ब । परछाही । पालन । उत्कोच । रिश्वत । वड्डी । पंक्ति । कतार । सूर्यकी स्त्री । उन्नीस अक्षरोंके पादवाला एक छन्द.

छायातनय, (पु०) ६ त० । शनैश्चर । "छायासुत" "छायापुत्र" यही अर्थ । शनैश्चर.

छायातरुः–द्रुमः, (पु०) छायाप्रधानस्तरुः । बडी छायावाला वृक्ष । बहुत सायेदार दरख्त.

छायाद्वितीय, (त्रि०) छाया एव द्वितीयः यस्य । जिसके साथ दूसरी छाया है । एकान्त । अकेला.

छायापथः, (पु०) छायायाः पन्थाः । छायाका मार्ग । आकाश.

छायापुरुष, (पु०) छायया पुरुष इव । छायासे पुरुषकी नाईं । आकाशमें देखनेलायक अपनी छायाके समान छायाके स्वरूपका पुरुष । (अपनी परछाहीको देखकर आकाशमें आंख उठाकर देखनेसे छायापुरुष देखा जाता है).

छायाभृत्, (पु०) छायां बिभर्ति-भृ+क्विप् १ छायाको धारण करनेवाला । चन्द्रमा । चांद.

छिक्कनी, (स्त्री०) छिक् इति अव्यक्तं नासिकाशब्दं करोति शब्दायते+अच् । ङीष् । नाकसे "छिक्" ऐसा शब्द कर्ती है (नाकछिकनी) एक प्रकारका वृक्ष । नसवार.

छिक्का, (स्त्री०) छिक् इति अव्यक्तं शब्दं करोति कृ+ड । नीछ । क्षुत.

छिद्, काटना । रुधा० उभ० सक० अनिट् । छिनत्ति । छिन्ते । अच्छैत्सीत् । अच्छिदत् । अच्छित्त । छिदा.

छिदिर्, (पु०) छिद्+किरच् । कुठार । कुल्हाडा । पावक । अग्नि । एक प्रकारकी रस्सी । करवाल । तरवार.

छिदुर, (त्रि०) छिद्+कुरच् । वैरी । धूर्त । ठग । छेदक । काटनेहारा । छेदनद्रव्य । काटनेका हथियार.

छिद्र, भेदन । फाडना । चुरा० उभ० सक० सेट् । छिद्रयति-ते । अचिच्छिद्रत्-त.

छिद्र, (न०) छिद्+रक् । छिद्र+अच् वा । दूषण । ऐब । गर्त । गढा । आकाश । (ज्योतिषमें) लग्नसे आठवां स्थान.

छिद्रदर्शन, (त्रि०) छिद्रं पश्यति । दोष देखनेवाला.

छिन्न, (त्रि०) छिद्+क्त । काटागया । जुदा किया गया । नाश किया गया.

छिन्नकेश, (त्रि०) छिन्नाः केशाः यस्य । जिसके बाल काटे गये हों । हजामत किया गया.

छिन्नद्रुमः, (पु०) छिन्नः द्रुमः । काटा गया वृक्ष.

छिन्नद्वैध, (त्रि०) छिन्नं द्वैधं=द्विधाभावः यस्य । जिसका संशय दूर होगया हो । निस्संशय.

छिन्ननासिक, (त्रि०) छिन्ना नासिका यस्य । कटी हुई नासिका(नाक)वाला । विननाकवाला.

छिन्नभिन्न, (त्रि०) छिन्नश्चासौ भिन्नश्च । इधर उधरसे काटा और फाडागया । कटा हुआ.

छिन्नमस्ता, (स्त्री०) छिन्नं मस्तं यस्याः । जिसका शिर कटा हो । दश महाविद्याओंमें एक महाविद्या । दुर्गा । देवी.

छिन्नमूल, (त्रि०) छिन्नं मूलं यस्य । जडसे कटा हुआ । जिसकी जड काटी गई हो.

छिन्नरुह, (पु०) छिन्नोऽपि रोहते । रुह्+क । काटाहुआ भी उगता है । तिलवृक्ष । गुडूची (स्त्री०) गिलोय । स्वर्ण-केतकी.

छित्वर, (त्रि०) छिद्+ष्वरप् । पृ० । तुच्छ । वैरी । दुष्मन । धूर्त और छेदक । काटनेहारा । छेदन । काटना (न०).

छिन्नसंशय, (त्रि०) छिन्नः संशयः यस्य । जिसका संशय (शक) काटा गया हो । काटे गये संदेहवाला । निस्स-न्देह । संशयरहित । पक्का किया गया.

छुट्, काटना । चुरा० उभ० पक्षे तुदा० पर० सक० सेट् । छोटयति-ते । छुटति । अच्छुटीत्.

छुर्, छेद-काटना । भ्वा० पर० सक० सेट् । छोरति । अच्छोरीत्.

छुर्, लेपन । लेपकरना । तुदा० पर० सक० सेट् । छुरति.

छुरिका, (स्त्री०) छुर्+कुन् । एकप्रकारका हथियार । छुरी । काचू । चाकू.

छृद्, भडकाना । चमकना । खेलना । वमन । ऊपरछलककरना । चुरा० उभ० पक्षे भ्वा० पर० सक० सेट् । छर्दयति-ते । छर्दति । अचच्छर्दत् । अचिच्छृदत् । अच्छर्दीत्.

छेक, (पु०) छो+ईकन् । गृहासक्त पक्षी । घरमेंही हिलाहुआ पक्षी । मृग । और हरिण । विदग्ध । चतुर । नागर । नागरक (न०).

छेकानुप्रास, (पु०) छेकस्य (विदग्धस्य) प्रियः अनुप्रा-सः शाक० । पण्डितका पियारा अनुप्रास । अनुप्रासका भेद । शब्दसम्बंधी अलंकार.

छेकोक्ति, (स्त्री०) छेकायाः विदग्धाया उक्तिः । चतुर-स्त्रीका वचन । पेचदार वचन । वक्रोक्ति (टेढावचन)-रूप अलंकारका भेद.

छेत्तृ, (त्रि०) छिद् । तृच् । काटनेवाला.

छेद्, छेदन-काटना । चुरा० उभ० सक० सेट् । छेदयति-ते.

छेद, (पु०) छिद्+घञ् । काटना । तोडना । काटनेवाला । भाजक । खण्ड । टुकडा "बलाहकच्छेदविभक्तरागा" इति कुमारः.

छेदकरः, (पु०) छेदं=छिद्रं करोति । छेक निकालनेवाला । लकडी काटनेवाला.

छेदक, (त्रि०) छिद्+ण्वुल् । काटनेवाला । विभक्त (जुदा)-करनेवाला.

छेदन, (त्रि०) छिद्-ल्युट् । काटनेवाला । जुदा करनेवाला । न (न०) काटना । जुदा २ करना । फाडना । नाश करना । हटाना.

छेदि, (त्रि०) छिद्+इन्, काटनेवाला । तोडनेवाला ।-दिः (पु०) तर्खान । इन्द्रका वज्र.

छेदित, (त्रि०) छिद्+क्त । काटागया । फाडागया.

छेद्य, (त्रि०) छिद्-र+ण्यत् । काटनेके योग्य । काटनेलायक.

छैदिक, (पु०) छेदं नित्यं अर्हति । ठक् । वेतस । वेत्र । वेतकी छडी.

छो, काटना-दिवा० पर० सक० अनिट् । छ्यति । अच्छात् । अच्छासीत्.

छोटिका, (स्त्री०) चुरा० छुट्+ण्वुल् । तर्जनी और अंगूठेका शब्द । चुटकी.

छ्यु, जाना भ्वा० आत्म० सक० अनिट् । छ्यवते । अछ्योष्ट.

ज

ज, (पु०) (जि+जन्-वा ड) (समासके अन्तमें आता है) उसमें और उससे पैदाहुआ (अधिनेत्रज, कुल-ज, जलज, अंडज) शिवजी । विष्णु । पिता । वेग । मुक्ति । विष । (छंदःशास्त्रमें) गुरुमध्यवाले तीन वर्ण (अक्षर).

जक्ष्, भक्षण-खाना । सक० । हसना । अक० अदा० पर० सेट् । जक्षति । अजक्षीत् । जक्षित वा जग्ध.

जगच्चक्षु, (पु०) जगतां चक्षुः इव । (सब पदार्थोंको दिखानेवाला होनेसे) संसारकी मानों आँख है । सूर्य । सूरज.

जगत्, (पु०) गम्+क्विप्-नि० । वायु । हवा । जंगम (त्रि०) लोक (न०).

जगती, (स्त्री०) गम्+क्विप् । नि० । पृथिवी । भुवन । जन । लोक । जम्बुक्षेत्र । दुनियां । १२ अक्षरोंके पादवाला एक छन्द.

जगत्प्राण, (पु०) जगतां प्राणः (जीवनहेतुत्वात् ।) (जीवनका कारण होनेसे) संसारका मानों प्राण है । वायु । हवा.

जगत्साक्षिन्, (पु०) जगतां साक्षीव । (सबको साक्षात् देखनेसे) संसारका मानों साक्षी (गवाह) है । सूर्य.

जगत्सेतुः, (पु०) जगतः सेतुः । जगत्का पुल । परमात्मा.

जगत्स्रष्टृ, (पु०) जगतः स्रष्टा । जगत्का रचनेवाला । ब्रह्मा । शिव ।

जगदम्बा, (स्त्री०) जगतः अम्बा वा अम्बिका=माता । जगत्की माता दुर्गा भगवतीका नाम.

जगदात्मन्, (पु०) जगतः आत्मा। जगत्का आत्मा। परमात्मा.

जगदाधार, (पु०) ६ त०। वायु। हवा। जगत्का आश्रय। "कालो हि जगदाधारः" इति स्मृतिः.

जगदीशः–पतिः, (पु०) जगतां ईशः वा पतिः। जगतोंका मालिक। परमेश्वर। परमदेव.

जगद्गुरुः, (पु०) जगतः गुरुः। जगत्का गुरु। परमेश्वर.

जगद्धात्री, (स्त्री०) धा+तृच्। ६ त०। जगत्की माता। एक दुर्गा.

जगद्योनि, (पु०) जगतां योनिः उत्पत्तिः यस्मात्। जिससे जगत्की उत्पत्ति होती है। शिव। विष्णु। हिरण्यगर्भ। कुमार। ६ त०। पृथिवी.

जगन्नाथ, (पु०) ६ त०। जगत्का नाथ (मालिक)। विष्णु। विष्णुका क्षेत्र। विमलपीठका एक भैरव.

जग्ध, (त्रि०) अद्+क्त। वा जक्ष्+क्त। भुक्त। खाया-हुआ। खा लिया.

जग्धि, (स्त्री०) अद्+क्तिन्। भोजन। खाना। सहभोजन। इकट्ठे खाना.

जघन, (न०) हन्+यङ्+अच्–पृ०। स्त्रिओंकी श्रोणी (लक्क)-का अगला भाग। स्त्रिओंकी कमर। जांघ। पद.

जघन्य, (स्त्री०) हन्+यङ्+अच्-(पु०)। जघनं इव (इवार्थे यत्) जघनकी नाईं। अधम। नीच। चरम। सबसे पिछला और अहंकारी। शूद्र (पु०) उपस्थ। लिंङ्ग.

जघन्यज, (पु०) जघन्ये (चरमे) जायते। जन्+ड। सबसे पीछे उत्पन्न होता है। शूद्र। कनिष्ठ। सबसे छोटा (त्रि०).

जङ्गम, (त्रि०) गम्+यङ्+अच्। गतिशक्तिसमन्वितः। चलनेकी सामर्थ्यवाला.

जङ्गल, (न०) गल्+यङ्+अच्। पृ०। वन। एकान्त। तनहा। मांस (पु०).

जङ्घा, (स्त्री०) जङ्घन्यते=कुटिलं गच्छति। "जाना" अर्थवाले हन्धातुके आगे कौटिल्यअर्थमें यङ् हुआ। अ। (पु०)। गुल्फ और जानुका अन्तराल अवयव। गिट्टे औ घुटनेके बीचका अंग। जांघ। लात.

जङ्घाकरिक, (त्रि०) कृ+अप्-करः (विक्षेपः) ६ त०। ततः अस्ति अर्थे ठन्। जंघाचलनेन आजीवयति। जंघाओंके चलनेसे आजीवन (रोजी) वाला। धावक। जिसका जीवन लातोंके चलनेपर है। दौडनेवाला.

जङ्घाल, (त्रि०) जंघा वेगवती अस्ति अस्य। लच्। जिसकी जंघा (लात) में बडा वेग (जोर) हो। धावक। दौडनेवाला। जंघाके आसरे जीनेवाला। कईएक पशु (पु०).

जज्, योधन-लडाई करना। भ्वा० पर० सक० सेट्। इदित्। जञ्जति.

जट्, संहति। जुडना। इकट्ठा होना (जैसे वालोंका) भ्वा० पर० अक० सेट्। जटति। अजाटीत्-अजटीत्.

जटा, (स्त्री०) जट्+अच्। अन्योन्यसंलग्नकेश। आपसमें जुडेहुये वाल। व्रतिओंकी शिखा। सिंह (शेर)-आदिकी सटा। जूडा। वृक्षआदिका मूल। जटामांसी। एक प्रकारसे वेदका पाठ। महादेवकी जटा। लता। शतावरी.

जटाजूट, (पु०) ६ त०। जटानां जूटे (बन्धे) समूहे च। जटाओंका बंधन। जटाओंका समूह.

जटामांसी, (स्त्री०) जटां मन्यते। मन्+स-दीर्घश्च। अपने नामसे प्रसिद्ध सुगन्धिवाला द्रव्य.

जटायु–स्, (पु०) जटां याति। या+कु। जट्। जुडना+अच्। जटं (संहतं) आयुः अस्य वा। जिसकी वडी उमर हो। अपने नामका पक्षी। जटौर। गुग्गुल.

जटाल, (पु०) जटा अस्ति अस्य लच्। गुग्गल। वट। वोड। कर्पूर। कापूर। जटावाला (त्रि०) जटामांसी (स्त्री०).

जटिन्, (पु०) जटा अस्ति अस्य+इनि। प्लक्ष। पाकुडका पेड। बोडके समान पत्तोंवाला वृक्ष। जटावाला (त्रि०).

जटिल, (पु०) जटा अस्त्यर्थे। इलच्। जटावाला। सिंह। शेर। ब्रह्मचारी। जटायुक्त (त्रि०) जटामांसी। पिप्पली। मघ। वचा। दमनवृक्ष (स्त्री०).

जठर, (न०) जायते जन्तुः गर्भो वा अस्मिन्। जन्+अर-ठान्तादेशः। जिसमें जीव वा गर्भ उपजता है। कुक्षि। वक्खी। पेट। वृद्ध। बढाहुआ और कठिन। (सख्त) (त्रि०).

जठरयन्त्रणा, यातना, (स्त्री०) जठरस्य यन्त्रणा वा यातना। गर्भके भीतर लचेसे अनुभव की गई पीडा.

जठरव्यथा, ज्वाला, (स्त्री०) जठरस्य व्यथा वा ज्वाला। पेटकी पीडा वा लाट.

जठराग्निः, (पु०) जठरस्य अग्निः। पेटकी (अन्नको) पचानेवाली अग्नि.

जठरामयः, (पु०) जठरस्य आमयः। पेटकी अग्निका रोग.

जठरीकृत, (त्रि०) अजठरः जठरः कृतः-जठर+च्विं+कृ+क्त। छातीके भीतर (गर्भमें) छिपायागया.

जड, (त्रि०) जलति (घनीभवति) जल्+अच्-डस्य लः। इष्टानिष्टानभिज्ञ। भला बुरा न जाननेहारा। शीतसे पीडित। मूक। गुंगा। बुद्धिसे हीन। बेअकल। अंधेरा। वेद पढनेमें असमर्थ और मूर्ख। जल और सीसा (न०).

जडता, (स्त्री०) जडस्व-भावे। जडपना। मूर्खता। आलसपना। भूल। बेवकूफी.

जडिमन्, (पु०) जड। इमन्। मूर्खपना.

जडीकृत, (त्रि०) अजडः जडः कृतः-जड+च्वि+कृ+क्त । जड किया गया । बेहोश किया गया.

जतु, (न०) जन्+उ । अन्तमें तका आदेश होता है । अलक्त । लाक्षा । लाख.

जत्रु, (न०) जन्+रु । तान्तादेशः । स्कन्ध और कक्षकी संधि । कंधे और काख (कच्छ) का जोड । गलेके नीचेकी दो हड्डियें.

जन्, जनन उत्पन्न होना । दिवा० आत्म० अक० सेट् । जायते । अजनिष्ट । जनयति । जातः.

जन, (पु०) जन्+अच् । लोक । लोग । पामरलोक । नीच लोग । आप्त लोग । महोलोकसे ऊपरका लोक । जीव । (स्त्री वा पुरुष) । "एवं जनो गृह्णाति".

जनक, (पु०) जन्+णिच्+ण्वुल् । पिता । बाप । मिथिला नगरीका एक राजा (सीताजीका पिता) । कारण (सबब) (त्रि०).

जनकसुता, (स्त्री०) जनकस्य सुता । ६ त० । जनककी कन्या । सीतादेवी । श्रीरामजीकी पत्नी (स्त्री).

जनता, (स्त्री०) जनानां समूहः+तल् । जनसमूह । भीड । बहुत लोग.

जननि–नी, (स्त्री०) जन्+अनि वा ङीप् । माता । मां । जनिनाम सुगंधवाला द्रव्य । दया । अलक्तक । लाखका रंग । जटामांसी । मजीठ.

जनपद, (पु०) जनाः पद्यन्ते गच्छन्ति यत्र । पद्+घ । जहां लोग जाते हैं । देश । मुल्क.

जनप्रवाद, (पु०) जनानां प्रवादः । लोगोंका बहुत बोलना । किंवदन्ती । अफवाह । निंदा.

जनप्रिय, (पु०) जनानां प्रियः । लोगोंका प्यारा । लोकहितकारी.

जनमेजय, (पु०) जन+एज्+णिच् मुम्च । परीक्षित् राजाका पुत्र । हस्तिनापुरका प्रसिद्ध राजा । अर्जुनका पोता । (इसका पिता सांपसे डसाहुआ मरगया, जनमेजयने सांपोंके कुलको नाश करनेकी इच्छासे सर्पेष्टि यज्ञ किया जिसमें तक्षक नाग बिन सब सांप दग्ध हुए । ये वही राजा है जिसे वैशम्पायनने महाभारत सुनायकर ब्रह्महत्यादिसे छुडाया) । "जन्मेजय" ऐसामी होता है (पु०).

जनयितृ, (पु०) जन्+णिच्+तृच् । उत्पन्न करनेहारा । पिता । माता (स्त्री०) ङीप्.

जनलोक, (पु०) महोलोकके ऊपर एक भुवन । ऊपरका एक जगत्.

जनव्यवहार, (पु०) जनानां व्यवहारः । लोगोंका व्यवहार । रीतरसम.

जनश्रुत, (त्रि०) जनेषु श्रुतः । लोगोंमें विख्यात । सबसे जानाहुआ । मशहूर.

जनश्रुति, (स्त्री०) जनानां श्रुतिः । लोगोंकी सुनीहुई बात । किंवदन्ती । अफवाह.

जनश्रुति, (स्त्री०) जनेषु श्रुतिरेव न दृष्टिः यस्याः । लोगोंने सुनाही है देखा नहिं । सच्चा वा झूठा लोगोंका वचन । लोकप्रवाद । किंवदन्ती । अफवाह.

जनसंबाध, (त्रि०) जनानां संबाधः-ष० त० । लोगोंकी गाढी भीड.

जनस्थानं, (न०) जनानां स्थानं । लोगोंका स्थान । दण्डकवनका एक । भाग.

जनस्थान, (न०) दण्डकवनके पास एक स्थान । लोगोंके रहनेकी जगह । "जनस्थाने भ्रान्तम्" इति उद्भटः.

जनाकीर्ण, (त्रि०) जनैः आकीर्णः । लोगोंसे ३ त० भराहुआ । लोगोंसे खचाखच हुआ.

जनाचार, (पु०) जनानां आचारः । ६ त० । लोगोंका आचार । रीतरसम वा चालचलन.

जनान्तिक, (न०) ६ त० । जनसमीप । अनेक लोगोंके पास । अप्रकाश । छिपकर की गई बातचीत (नाटक) । अभिनय (नकल) करनेवाले दोनोंकी आपसमें गुप्त बातचीत.

जनार्णव, (पु०) जननां अर्णवः-ष० त० । बहुत लोगोंका इकट्ठा जनसमुद्र । जनसमूह.

जनार्दन, (पु०) जनैः अर्द्यते याच्यते स्वामीष्टं असौ । अर्द-मांगना+कर्मणि ल्युट् । लोग अपनी इच्छा जिस्से पूरी किया चाहते हैं । "जनं अर्दयति वा अर्द+मारना । ल्यु वा" । जो जीवोंको (पापके कारण) मारता है । विष्णु । नारायण.

जनाशन, (पु०) जनान् अश्नाति-अश्+ल्यु । लोगोंको खाजाताहै । व्याघ्र । भेडिया.

जनाश्रम, (पु०) जनानां आश्रमः । लोगोंके निवासका स्थान । सराय.

जनाश्रय, (पु०) जनानां लोकानां आश्रयः । लोगोंका आसरा । मण्डप । कुटिया । घर.

जनि–नी, (स्त्री०) जन्+भावे इन् वा ङीप् । उत्पत्ति । पैदायश । "जायते गर्भः अस्याम्" । जिसमें गर्भ उपजता है । नारी । औरत । माता । मा । स्नुषा । बहु । जाया । "जायते आरोग्यं अनया" । जिस्से आरोग्य (तंदुरस्ती) होता है । एक औषधी । जतुका । एक खुशबूदार पौदा.

जनुस, (न०) जन्+उसि । उत्पत्ति । पैदायश.

जनु–नू, (स्त्री०) जन्+उ वा ऊङ् । उत्पत्ति । पैदायश.

जनित, (त्रि॰) जन्+णिच्+क्त। उत्पन्न कराया गया। पैदा किया गया.

जनितृ, (पु॰) जन्+तृच्। उत्पन्न करनेवाला। पिता। बाप.

जनित्री, (स्त्री॰) जन्+तृच्+ङीप्। उत्पन्न करनेवाली। माता। मां.

जनेन्द्र, (पु॰) जनानां इन्द्रः ईशः-ईश्वरः। लोगोंका इन्द्र (स्वामी) राजा.

जन्तु, (पु॰) जन्+तु। प्राणी। प्राणवाला। अविद्यादोषसे देहमें आत्माका अभिमान करनेवाला। जीव.

जन्तुघ्न, (पु॰) जन्तून् कृमीन् हन्ति+टक्। विडङ्ग। हिङ्गु। हींग। प्राणिओंको मारनेवाला (त्रि॰).

जन्तुफल, जन्तवः फले अस्य। जिसके फलमें जीव हों। उदुम्बर। गूलर.

जन्तुला, (स्त्री॰) जन्तून् कीटान् लाति। ला+क। काशतृण। काही। इसमें बहुतसे कीडे रहते हैं.

जन्मन्, (न॰) जन्+मनि। उत्पत्ति। आद्यक्षणका सम्बंध। गर्भमें रहकर योनिसे बाहिर आना। (न्यायमें) अपूर्वदेहादिसे सम्बंध। (ज्योतिषमें) जन्मका नक्षत्र (तारा)। जन्मलग्न.

जन्मनामन्, (न॰) जन्मना नाम। जन्मसे बारहवें दिनमें रक्खा गया नाम.

जन्मप्रतिष्ठा, (स्त्री॰) जन्मनः प्रतिष्ठा। जन्मका स्थान। अपनी पैदाइशकी जगह.

जन्मभाषा, (स्त्री॰) जन्मना प्राप्ता भाषा। जन्मसे प्राप्त हुई भाषा। मातृभाषा.

जन्मभूमि, (स्त्री॰) जन्मनः भूमिः। जन्मकी पृथिवी। उत्पत्तिस्थान.

जन्ममास, (पु॰) ६ त॰। जन्मका महीना। जन्मदिनकी अवधिवाला तीस दिनका महीना.

जन्मरोगिन्, (त्रि॰) जन्मना रोगः अस्ति अस्य। णिनि। जो जन्महीसे रोगी है.

जन्महेतुः, (पु॰) जन्मनः हेतुः। जन्मका कारण। पैदाइशका सबब.

जन्मान्तर, (न॰) अन्यत् जन्म मयू॰ स॰। दूसरा जन्म। दूसरा संसार। परलोक। नई दुनियां.

जन्मान्तरं, (न॰) अन्यत् जन्म-मयूरव्यंस॰ स॰। दूसरा जन्म। और जन्म.

जन्मान्ध, (त्रि॰) जन्मना अन्धः। जो जन्महीसे अन्धा है.

जन्माष्टमी, (स्त्री॰) श्रीकृष्णके जन्मकी तिथि। सावनके कृष्णपक्षकी अष्टमी.

जन्मी, (पु॰) जन्म अस्ति अस्य इनि। प्राणी। जानदार। जीव। प्राणधारी.

जन्य, (त्रि॰) जन्+कर्तरि यत्। जायमान। पैदाहुआ। "जन्+णिच्+यत्" उत्पाद्य। पैदाकरनेलायक। जनक। पिता। पैदाकरनेवाला। और नई विवाही हुई स्त्रीके जातीके लोग। अट। अटारी। परीवाद। बदनामी। प्रीति। युद्ध। लडाई और शरीर (पु॰)। "भावे यत्" जनन। उत्पन्न होना (न॰)। मांकी सहेली (स्त्री॰).

जप्, मनमें बोलना। उच्चारण। बोलना। भ्वा॰ पर॰ सक॰ सेट्। जपति। अजापीत्-अजपीत्.

जप, (पु॰) जप्+अच्। वेदके मन्त्रआदिका वार २ बोलना। वार २ उच्चारण करना। मन्त्र आदिका भाषण.

जपा, (स्त्री॰) जप्+अच् वा पस्य वः। अपने नामका वृक्ष उसका फूल.

जभ्, मैथुन-जुडा-भोग करना। भ्वा॰ पर॰ सक॰ सेट्। इदित्। जम्भति। अजम्भीत्.

जभ्, जृम्भण। उबासी लेना। भ्वा॰ आत्म॰ सेट्। जम्भते। अजम्भिष्ट.

जम्, भक्षण। खाना। भ्वा॰ पर॰ सक॰ सेट्। जमति। अजमीत्.

जमदग्नि, (पु॰) परशुरामका पिता। एक मुनि.

जम्पती, (पु॰ द्वि॰ व॰) जाया च पतिश्च। द्वं॰ जायाया जम्। दम्पती। स्त्री और पुरुषका जोडा.

जम्बाल, (पु॰) जम्ब्+घञ् जम्बं आलाति। आ+ला+क। पङ्क। कीचड। शैवल। सेवाल। केतकी। केवडा.

जम्बालिनी, (स्त्री॰) जम्बाल+अस्ति अर्थे इनि। जंगालवाली नदी.

जम्बु-म्बू, (स्त्री॰) जन्+कु नि॰। वुक्। पृ॰। वा उङ्। जामनूका वृक्ष। "उसका फल" इस अर्थमें अण् उसका विकल्पसे लोप। "जाम्बवं" वा ह्रस्वे "जम्बु" सी। जामनका फल.

जम्बुक, (पु॰) जम्बु इव कायति। कै+क। गोलावजामनुनामी वृक्ष। "स्वार्थे कन्" जम्बुशब्दके अर्थमें। गीदड.

जम्बुद्वीप, (पु॰) जम्बुवृक्षचिह्नितो द्वीपः। शाक॰। जामनुवृक्षके निशानवाला द्वीप (जजीरा)। सात द्वीपोंमेंसे एक.

जम्बूक, (पु॰) जम्-नि॰। शृगाल। गीदड। नीच। वरुण। गुलाब। जामनु। दाख (स्त्री).

जम्भ, (पु॰) जभि+घञ्। एक दैत्य। दांत। जंबीर। अंश। हिस्सा। हनु। ठोडी और तूण। तर्कस "भावे घञ्" खाना। उबासी लेना। जृम्भण। "अ" जृम्भा। उबासी। जम्भाई (स्त्री॰).

जम्भभेदिन्, (पु०) जम्भं दैत्यं भिनत्ति । भिद्+णिनि । जो जम्भ नामी दैत्यको फाडता है । इन्द्र । " जम्भभेदन " आदि । यही अर्थ.

जम्भला, (स्त्री०) जम्भं जृम्भां लाति । ला+क । एक राक्षसी (इसका स्मरण करनेसे ज्वर (ताप-बुखार) नाश हो जाता है और ज्वरके उठनेपर उसके पहिले आनेहारी उवासीका भी नाश होता है) । " समुद्रस्योत्तरे तीरे जम्भला नाम राक्षसी".

जय, (पु०) जि+भावे अच् । शत्रुओंका अभिभवन (तिरस्कार-दवाना) । नारायणका पार्श्वचर (पास विचरनेहारा) । विराटके पुरमें गुप्त नामवाला युधिष्ठिर । देवी (स्त्री०).

जयढक्का, (स्त्री०) जयसूचिका ढक्का । जीतको बतानेहारा बाजा । वाद्यभेद । एक प्रकारका बाजा.

जयद्रथ, (पु०) जयन् रथो यस्य । जिसका रथ जीतनेवाला है । सिन्धुदेशका राजा । दुर्योधनका भगिनीपति (बहनोई) । महाभारतकी लडाईमें इसीने अभिमन्युको मारा और आप अर्जुनसे मारागया.

जयन्त, (पु०) जि+झच् । इन्द्रके पुत्रका नाम । चन्द्रमा । शिवजी । विराटके पुरमें गुप्तनामवाला भीम.

जयन्ती, (स्त्री०) जयति रोगान् । जि० शतृ+ङीप् । एक दुर्गा । " जयन्ती मङ्गला काली " इति मन्त्रः । झंडा । इन्द्रकी कन्याका नाम । जरा । बुढाप्पा । जयन्ती वृक्ष । " सावना (श्रावण) महीनेको कृष्णपक्षकी अष्टमी यदि रोहिणी नक्षत्रके साथ हो और आधीरातके पहिले वा पीछे भी उसकी कोई कला (भाग) अवश्य हो उसका नाम जयन्ती हो जाता है " इस प्रकारका योग (इसी योगमें श्रीकृष्णदेवका जन्म हुआ) पताका । निशान । झंडी.

जयपत्र, (न०) जयसूचकं पत्रम् । जीतको जतानेहारा पत्र । " पहिली और पिछली क्रियावाला निर्णय (फैसला करनेके पीछे जो जीतनेवालेको लिखाहुआ पत्र दिया जाता है " जीतका लेख (नविश्त) । अश्वमेधयज्ञमें घोडेके मस्तकपर बंधा पत्र (चिट्ठी).

जयपाल, (पु०) जयेन पालयति । पाल+अच् । वृक्षविशेष । ब्रह्म । विष्णु । राजा । जमालगोटेका वृक्ष.

जया, (स्त्री०) जि+अच् । हरीतकी । हरीड । जयन्ती । दुर्गा । विजया (भंगा-भांग) । एक झंडी । नीलदुर्गा । शान्तावृक्ष । (ज्योतिषमें) त्रयोदशी, अष्टमी और तृतीया तिथिसमूह.

जय्य, (त्रि०) जेतुं शक्यः । जी+यत् । "क्षय्यजय्यौ शक्यार्थे" नि० । जिसे जीतसक्ते हैं । जेतुं शक्य । जीता जासकनेवाला.

जरठ, (त्रि०) जॄ+अरठच् । कर्कश । कठोर । सख्त । पाण्डु । जर्द । जीर्ण । पुराना । बूढा.

जरत्, (त्रि०) जॄ+अतृन् । वृद्ध । बूढा । जीर्ण । पुराना । जरायुक्त । बुढाप्पेवाला । "स्त्रियां" जरती । बूढी.

जरत्कारु, (पु०) मनसादेवीका पति । एकमुनि । मनसादेवी. (स्त्री०).

जरद्गव, (पु०) जरन् गौः षच्समा० वृद्धोक्ष । बूढा बैल । एक गीध.

जरन्त, (पु०) जॄ+झच् । महिष । भैंसा । जीर्ण । बूढा । (त्रि०).

जरा, (स्त्री०) जॄ+अङ् । वह अवस्था कि जिसमें शरीर शिथिल (ढीला) हो जाता है । बुढाप्पा.

जराजीर्ण, (त्रि०) जरया जीर्णः । बुढेपेसे जीर्ण (पुराना) । शिथिल अंगोंवाला.

जरातुर, (त्रि०) जरया आतुरः–तृ० त० । बुढेपेसे पीडित । ढीले अंगोंवाला । वृद्ध । बूढा.

जराभीरुः, (पु०) जरायाः भीरुः । पं० त० । प्यारका देवता । कामदेव । (बुढेपेसे डरनेवाला).

जरायुज, (त्रि०) जरायुतो जायते । जन्+ड । जो जरासे युक्त उपजता है । पशु-मृग सांप-भीतर बाहिर दांतवाले-राक्षस-पिशाच और मनुष्य जरायुज हैं । जो चमडेके समान महीनसी होती है उसे जरायु कहते हैं उसीमें शुक्र (वीर्य) और शोणित (लोहू)का योग होकर गर्भ बनता है इसीसे वह जरायुज कहा जाता है " इस प्रकारका गर्भ " जो जेरसे निकलें.

जरावस्था, (स्त्री०) जरायाः अवस्था । बुढेपेकी अवस्था (हालत) बुढापा । वृद्धावस्था.

जरासंध, (पु०) एक प्रसिद्ध राजाका नाम । जो बडा बहादुर था । बृहद्रथका पुत्र । इसे जरानाम राक्षसीने नदीमें बहतेहुए दो भागोंको जोड दिया इसी निरुक्तिसे इसका नाम जरासन्ध हुआ.

जरित, (त्रि०) जरा+इतच् । जिसे बुढपा आगया । बूढा । बडी उमरवाला.

जरिन्, (त्रि०)–णी । (स्त्री०) । जरा अस्ति अस्य+इनि । जिसे बुढापा है । बूढा । बडी उमरवाला.

जरूथ, (त्रि०) जॄ+ऊथन् । कठिन (सख्त) बोलनेवाला.

जर्जरित, (त्रि०) जर्ज-णिच्+कर्मणि-क्त । जर्जर (बूढा) होगया । ढिलक गया.

जर्च–र्झ–(र्ज), कहना-झिडकना । तुदा० पर० सक० सेट् । जर्च (र्छ) र्जति । अजर्चीं (र्छीं) र्जीत्.

जर्जर, (पु०) (न०) जर्ज+अरन् । इन्द्रका झंडा । शक्रध्वज । बूढा (त्रि०).

जर्झ्, कहना। निन्दा करना। तुदा॰ पर॰ सक॰ सेट्। जर्झति.

जल्, आच्छादना। ढांकना। चुरा॰ उभ॰ सक॰ सेट्। जाल्यति-ते.

जल्, तेज होना। भ्वा॰ पर॰ सक॰ सेट्। जलति। अजालीत्। जल। जालः.

जल, (त्रि॰) जल्+अच्। जड। मूर्ख। ठंडा। उदर। पेट। गंधद्रव्य। (ज्योतिषमें) लग्नसे चौथा घर। पूर्वाषाढा नक्षत्र (न॰) पांच भूतोंमेंसे एक अर्थात् पानी (न॰).

जलकण्टक, (पु॰) जलस्य कण्टक इव। मानों पानीका कांटा है। शृङ्गाटक। सिंघाडा। कुम्भीर। संसार.

जलकपि, (पु॰) जले कपिरिव। मानों पानीमें बानर है। शिशुमार। जलजन्तुभेद। घडियाल.

जलकरङ्क, (पु॰) जलस्य करङ्क इव आधारः। खोपडीके समान पानीका आसरा। नारिकेल। नारियेल। नरेल। मेघ। बादल। कमलफूल। खंख। पानीकी तरंग (लहर).

जलकाक, (पु॰) जले काक इव। पानीमें मानों कौआ है। पानकौडी नामी एक प्रकारका पक्षी.

जलकुन्तल, (पु॰) जलस्य कुन्तलः केश इव। मानो पानीकी जुल्फ है। शैवाल.

जलक्रीडा, (स्त्री॰) जलस्य क्रीडा। जलकेली। जलकी खेल। आपसमें पानीसे खेल करना.

जलचर, (पु॰) जले चरति। चर्+टक्। मत्स्य-कूर्म ग्राह-आदि जलके जीव.

जलचारिन्, (पु॰) जले चरति+णिनि। जलमें फिरनेवाला मत्स्य। मच्छी.

जलज, (पु॰) जले जायते। जन्+ड। पानीमें उपजता है। शैवाल वा नीरवृक्ष। मत्स्य। मच्छ। (ज्योतिषमें) कर्क मीन और मकर राशिका पिछला आधा। कमलफूल (न॰) शंख (पु॰ न॰) पानीमें उपजी वस्तु (त्रि॰).

जलतरङ्ग, (पु॰) जलस्य तरङ्गः। जलकी तरंग (लहर).

जलताडनम्, (न॰) जलस्य ताडनम्। जलका ताडन करना (टकराना)। कोईसी निरर्थक (निष्प्रयोजन) किया.

जलद, (पु॰) जलं ददाति दा+क। पानी देता है। मेघ। बादल। कर्पूर। काफूर। पानी देनेवाला (त्रि॰).

जलदागम, (पु॰) जलदानां आगमः यस्मिन् समये। जिस वक्त बादल आते हैं। वर्षाकाल। मेघका पानी वर्सनेका काल.

जलधर, (पु॰) जलानां धरः। धृ+अच्। पानी रखनेवाला मेघ। बादल कर्पूर। समुद्र। जलधारण करनेवाला (त्रि॰).

जलधि, (पु॰) जलानि धीयन्ते अत्र। धा+कि। जहां पानी ठहरता है। समुद्र। समुंदर। "तोयधी" आदि भी इसी अर्थमें। चारकी संख्या। एकप्रकारकी गिनती.

जलधिजा, (स्त्री॰) जलधेः जायते। जन्+ड। समुद्रसे निकलती है। लक्ष्मी.

जलनिधि, (पु॰) जलानि निधीयन्ते अत्र। नि+धा+कि। जहां पानी ठहरते हैं। समुद्र। चारकी संख्या.

जलनिर्गम, (पु॰) जलानां निर्गमः। जलोंका निकास। नदी आदिके जलका घूमना। नीचे ठहिरेहुए पानीका ऊपरको जाना। प्राकार। फसील.

जलप्राय, (न॰) जलं प्रायं यत्र। जहां अधिक पानी हो। बहुजलदेश.

जलबुद्बुद, (न॰) ६ त॰। जलका बुलबुला। जलबिम्बः

जलमार्ग, (पु॰) ६ त॰। प्रणाली। मोरी। नाली। जलका रास्ता.

जलमुच्, (पु॰) जलानि मुञ्चति। जो पानी छोडताहै। मुच्+क्विप्। मेघ। बादल.

जलयन्त्र, (न॰) जलानां उत्क्षेपणार्थं यन्त्रं। पानीके ऊदण ऊपर फेंकनेकी कला। फोहारा। भुआरा.

जलयानम्, (न॰) जलस्य यानं। जलकी सवारी। पोत। जहाज.

जलराशि, (पु॰) जलस्य राशिः। जलका समूह। समुद्र.

जलवाद्यम्, (न॰) जलस्य वाद्यं। जलका वाद्य (वाद्य)। एक प्रकारका बाजा जिसे जलतरंगभी कहते हैं.

जलवेतस, (पु॰) जले जातः वेतसः। शाक॰। पानीमें उपजाकौं। वेतसभेद। वैंत.

जलव्याल, (पु॰) जलस्थः व्यालः हिंस्रः। पानीका मारनेवाला जीव। सर्प। सांप। क्रूर (बेरहम) काम करनेवाला जन्तु (जीव).

जलशायिन्, (पु॰) जले (समुद्रजले) शेते। शी+णिनि। जो समुद्रके पानीमें लेटता है (सोताहै)। विष्णु। नारायण.

जलशुक्ति, (स्त्री॰) जलस्य शुक्तिरिव। मानो पानीकी सीपी है। एक प्रकारका जलका जीव। घोंगा। सिप्पी.

जलहस्तिन्, (पु॰) जले हस्तीव। मानों पानीमें हाथी है। ग्राह (तन्दुआ) नामी पानीका जीव। ७ त॰ पानीमें हाथीके स्वरूपका एक जीव.

जलहासं, (पु॰) जलानां हास इव। (चिट्टा होनेसे) मानों पानीका हसना है। फेन। झाग। समुद्रफेन। समुद्रकी झाग.

जलहास, (पु॰) जलस्य हासः। जलका हसना। झाग। एकप्रकारकी मच्छी.

जलात्यय, (पु०) जलस्य अत्ययः ष० त०। जलका नाश। शरद ऋतु। इसमें जल वर्सना समाप्त होजाता है.

जलाधार, (पु०) ६ त०। छोटा तालाव। बडा तालाव। समुद्र। "जलं आधारो यस्य" जिसका आश्रय पानी है। शृङ्गाटक। सिंघाडा। उशीर (न०) चंदन। पानीमें ठहराहुआ (त्रि०) (इसी प्रकार "जलाशय" आदि शब्दभी इसी अर्थमें).

जलाधिदेवत-तं, (पु० न) जलस्य अधिदैवतः वा-तं। जलका अधिष्ठातृ देवता। वरुण देवता.

जलाधिपः, (पु०) जलस्य अधिपः। जलका ईश्वर। वरुण देवता.

जलाम्बिका, (स्त्री०) जलस्य अम्बिका। जलकी माता। कूप। खूआ.

जलार्कः, (पु०) जलस्य अर्कः। जलमें प्रतिबिम्बित सूर्यका स्वरूप। पानीका सूर्य.

जलार्णवः, (पु०) जलस्य अर्णवः। जलका समुद्र। वर्षा-ऋतु। मौसिमी वहार। वर्सात.

जलार्थिन्, (त्रि०) जलस्य अर्थः अस्ति अस्य+णिनि। जल-के प्रयोजनवाला। तृषालु। प्यासा.

जलावर्त, (पु०) आ+वृत्+णिच्+अच् ६ त०। आपही जलोंका घूमना। भंवर। घुंवरघेर.

जलूका, (स्त्री०) जलं ओको यस्याः ६ ब०। जिसका स्थान पानी है। जलौका। जोक.

जलेचर, (पु०) जले चरति। चर्+टक्-अलुक् स०। पानीमें विचरता है। हंस आदि.

जलेन्धन, (पु०) जलानि एव इन्धनानि यस्य। पानीही जिसकी लकडियें हैं। वाडवानल। समुद्रकी आग.

जलेश्वर, (पु०) ६ त०। जलका स्वामी। वरुण। समुद्र.

जलोच्छ्वास, (पु०) जलानि उच्छ्वसन्ति एभिः। उद्+श्वस्+घञ्। जिनसे पानी उछलते हैं। बढेहुए पानीके निकलनेका मार्ग। वहुत पानीका चारों ओर वहना.

जलोदर, (पु०) जलप्रधानं उदरं यस्मात्। ५ ब०। जिस्से पेटमें पानी भरजाय। उदरामय। रोगभेद। एक प्रकारका पेटका रोग.

जलौकस्, (स्त्री०) जलं ओको वसतिः अस्याः। जिसका पानीमें वास है। जोंक। लोहू पीनेवाली। "जलौकसेनेव रक्ताकृष्टिनिपुणेन वेश्याजनेन" वासवदत्ता.

जलौका, (स्त्री०) उच्+क नि०। जलं ओकः स्थानं यस्याः। जिसका स्थान पानी है। जोंक। लोहू पीनेवाली.

जल्प्, वाग्विशेष-बोलना-कहना-अधिक बोलना-बकना। बक-बककरना। भ्वा० पर० सक० सेट्। जल्पति। अज-ल्पीत्। "मयि जल्पति कल्पनाधिनाथे" इति न्याय-शिरोमणिः.

जल्प, (पु०) जल्प्+घञ्। दूसरेको निराकरण (तोड)-कर अपने मतको स्थापन (क़ायम) करनेहारा बचन। जीत चाहनेवालेकी कथा। बात। जल्प। गप्प.

जल्पनम्, (न०) जल्प+ल्युट्। बोलना। कहना। बिकना.

जल्पाक, (त्रि०) जल्प्+षाकन्। बहुनिन्दितवदनशील। बहुत बुरे वचन बोलनेवाला। बकवादी। बक्ता। वाचाल। बहुत बोलनेवाला.

जल्पित, (त्रि०) जल्प-कर्मणिक्त। कहागया। बोल गया। बकवाद किया गया।-तं। बोलना। गप्प लगाना। गप्प.

जव, (पु०) जु+अप्। वेग। जोर (हवा आदिका) तेज.

जवन, (पु०) जु+युच्। वेगवान्। जल्दी जानेवाला। घोडा। एक देश। एक जाति.

जवनिका, (स्त्री०) जवन्ति अस्यां। जु+ल्युट्+स्वार्थे कन्। कनात। पडदा नामसे प्रसिद्ध कपडा.

जवस, (न०) जु+असच्। घास। "यवस" ऐसा भी होता है.

जविन्, (पु०) जवः अस्ति अस्य। इनि। जिसका वेग हो। घोडा। उष्ट्र। ऊंठ। वेगवाला (त्रि०).

जषु, मारना। भ्वा० उभ० सक० सेट्। जषति-ते.

जस्, मोक्षण। छुडाना। दिवा० पर० सक० सेट्। जस्यति। अजसत्। अजासीत् अजसीत्.

जस्, मारना। अनादर। बेइज्जतकरना। चुरा० उभ० सक० सेट्। जासयति-ते। अजीजसत्-त.

जहत्स्वार्था, (स्त्री०) जहत् स्वार्थो यां। अपना अर्थ जिसे छोडता है। एक लक्षणा। जैसे "आयुर्घृतम्".

जहदजहल्लक्षणा, (स्त्री०) जहच्च अजहच्च स्वार्थः यां तादृशी लक्षणा। एक प्रकारकी लक्षणा कि जिसका एक अंश अपने अर्थको छोडता और दूसरा नहीं। वाच्य (अभिधेय) अर्थके एक देशको त्यागकर दूसरे देशमें रहनेवाली लक्षणा। जैसे "ये वही देवदत्त है" यहां "वह" और "यह" समयरूप अर्थको त्यागकर केवल देवदत्त मात्र अर्थके जतानेसे वाच्यार्थके एक देशमें वृत्तिता (रहना-पन) है.

जहल्लक्षणा, (स्त्री०) जहत् स्वार्थः यां उत्तरपदलोपः। कर्म० जिसको अपना अर्थ छोड देता है। जहत्स्वार्था लक्षणा। जैसे "आयुर्घृतम्".

जह्नु, (पु०) चन्द्रवंशका एक राजा। (जिसने गंगाके अवतरण (नीचे आना-उतरना) के समय गंगाको पीलिया) ये पुराणमें प्रसिद्ध है.

जह्नुतनया, (स्त्री०) जह्नोः तनया इव। जह्नुकी मानों कन्या है। उसके पेटमें जाकर फिर निकलनेसे। गंगा.

जागर, (पु०) जागृ+अप्। निद्राभाव। नींदका न होना। जागना। कवच। जिरह.

जागरक, (त्रि०) जागृ+ण्वुल्+गुणः । जागनेवाला । जागा हुआ.

जागरणम्, (न०) जागृ+भावे+ल्युट् । जागना । खबर्दारी रखना । किसी धार्मिक व्रतमें रातको जागा करना.

जागरित, (न०) जागृ+क्त । वह अवस्था कि जिसमें इन्द्रियोंसे विषयोंको भोग सक्ते हैं । जीवहीं स्वप्न आदिके कारण कर्मोंके नाश होनेपर इन्द्रियोंके विषय आदिको जिस अवस्थामें अनुभव कर्ता है । "कर्तरि+क्त ।" जागाहुआ (त्रि०).

जागरितस्थान, (पु०) जागरितं स्थानं अस्य । जिसका स्थान जागाहुआ है । (वेदान्तमें) विश्वनामवाला जीव.

जागरितृ, (त्रि०)–त्री (स्त्री०) जागनेवाला । जागा हुआ । नींदरहित.

जागरिन्, (त्रि०) जागृ+णिनि । जागा हुआ.

जागरूक, (त्रि०) जागृ+ऊक । जागरणशील । जागाहुआ । हुशियार । अप्रमत्त.

जागर्या, (स्त्री०) जागृ+श । जागरण । जागना । "अ" । "जागरा" यही अर्थ.

जागृ, निद्राभाव । जागना । अदा० पर० अक० सेट् । जागर्ति । अजागरीत्.

जाग्रत्, (न०) जागृ+शतृ । इन्द्रिय आदिसे विषयोंके जाननेलायक अवस्था (हालत) । जागाहुआ । (त्रि०) स्त्रियां ङीप्.

जाङ्गल, (पु०) जङ्गले भवः । तत् शीलितं यस्य वा+अण् । जङ्गलमें होनेवाला वा वहीं रहनेवाला । कपिञ्जल पक्षी । निर्जल (बिनपानी) देश हरिण आदि पशु । कुरु देशके पासका देश । उस देशके वासी (त्रि०) व० व०.

जाङ्घिक, (त्रि०) जङ्घाभ्यां आजीवति । जिसका जीवन लातोंपर है । धावक । भागनेवाला । जंघापर जीनेवाला । ऊंठ (पु०).

जाठर, (त्रि०)-री (स्त्री०) जठरे भवः—अण् । पेटमें होनेवाला.

जाड्यम्, (न०) जडस्य भावः+ष्यञ् । जडपना । शीतलता । ठंडापन । अलसपना.

जात, (न०) जन्+क्त । समूह । व्यक्त । प्रकट (जाहिर) जन्म । और पैदाइश । उत्पन्न । पैदाहुआ । अच्छा । प्रशस्त (त्रि०).

जातक, (न०) जातस्य हितं+कन् । उत्पन्न हुएके शुभ वा अशुभका निर्णय (फैसला) करनेवाला बृहज्जातक आदि ग्रन्थ । जातकर्म (जो पैदा होनेके समय किया जाता है)-रूप एक प्रकारका संस्कार.

जातकर्मन्, (न०) जातस्य कर्म । सन्तानके उत्पन्न होनेपर करनेका कर्म (रीतरसम).

जातपक्ष, (त्रि०) जाताः पक्षाः यस्य । जिसके पर निकल आयेहों । परोंवाला.

जातपाश, (त्रि०) जातः पाशः यस्य । जिसे पाश (फांस) पडगयाहो.

जातप्रत्यय, (त्रि०) जातः प्रत्ययः यस्य । जिसे विश्वास होगया हो । विश्वासमें आया हुआ.

जातप्रेत, (त्रि०) जातः एव प्रेतः । उत्पन्न होतेही मरगया.

जातरूप, (न०) जातं रूपं अस्य । जिसका रूप उपजाहै । प्रशस्तवर्ण । अच्छे रूपवाला । स्वर्ण । सोना.

जातवेदस्, (पु०) जातान् प्राणिनः विन्दते जठरानलत्वेन । विद्+लाभ–पाना । असुन् । उत्पन्न होतेही प्राणिओं (जान्दारों) को पेटकी आगके स्वरूपसे प्राप्त कर्ताहै । वह्नि । आग । चित्रकवृक्ष । चित्रा.

जातापत्या, (स्त्री०) जातं अपत्यं यस्याः । जिसे बच्चा उत्पन्न होगयाहो । माता । मां.

जातामर्ष, (त्रि०) जातः अमर्षः यस्य । जिसे क्रोध चढ गया हो । क्रोधमें आयाहुआ । खिजा हुआ.

जाताश्रु, (त्रि०) जाताः अश्रवः यस्य । जिसके आंसु वह आये हों.

जाति, (स्त्री०) जन्+क्तिन् । जन्म । पैदाइश । बहुतोंमें रहनेवाला एक धर्म । जैसे गोत्व-मनुष्यत्व-ब्राह्मणत्व-शूद्रत्व आदि । (व्याकरणमें) पोता आदि संतानरूप गोत्र । वेंदकी एक शाखा । (न्यायमें साहचर्य (हेतु-और साध्यका) नियमकी अपेक्षा न करनेहारे साधर्म्यसे और वैधर्म्यसे वादिके वचनोंमें दूषण लगानेवाला वचन । षड्ज आदि सात स्वर । एक अलंकार । चुल्ली । आवला । एक छन्द । मालती (चमेली) एक वृक्ष । जिस्से फूल बहुत निकलते हैं.

जातिब्राह्मण, (पु०) जात्या ब्राह्मणः । जातिसे ब्राह्मण । तपस्या औ वेदसे हीन ब्राह्मण । निन्दाके लायक ब्राह्मण.

जातिवैरिन्, (पु०) जात्या वैरं अस्ति अस्य+णिनि । जन्महीसे जो शत्रु हो.

जातिशब्दः, (पु०) जातिवाचकः शब्दः । जातिहीको सूचन करनेहारा शब्द जैसेगौः–अश्वः–पुरुषः–हस्ती.

जातिस्मर, (त्रि०) जातिं (पूर्वजन्म) स्मरति । पहिले जन्मको याद कर्ता है । पिछले जन्मको यादकरनेवाला जन.

जातीफल, (न०) ६ त० । जायफल नामसे प्रसिद्धफल.

जातीय, (त्रि०) जातौ भवः+छ (ईय) । जातिमें हुआ । एकजातका । सजातीय । (किसी शब्दके आगे "जातीय" प्रत्यय प्रकार अर्थमें आजाता है जैसे "तार्किकजातीयः" तार्किकप्रकारः । न्यायशास्त्रके जाननेहारा).

जातु, (अव्य०) कदाचित् । किसीसमय । कभी । शब्द । निन्दा । निषेध । निस्सन्देह.

जातुधान, (पु०) जातु धानं (सन्निधानं) अस्य । कभी अवसर पाकर जिसे पकडते हैं । राक्षस । "यातुधान" भी.

जातुष (त्रि०) जतुनो विकारः+अण् । षुगागमः । लाखका वनाहुआ पदार्थ । लाखकी चीज.

जातूकर्ण, (पु०) एक मुनिका नाम । शिवजीका नाम.

जातेष्टि, (स्त्री०) यज्+क्तिन् इष्टिः । जात । उत्पन्नहुएके संस्कारके लिये कियागया यज्ञ । जातकर्म नामी एक संस्कार । वह संस्कार जो जन्मके समय कियाजाता है.

जातोक्ष, (पु०) जातः प्राप्तशिक्षणीयदशः उक्षा टच्+समा० सिखाने लायक दशाको पहुंचा साँड । जवान साँड.

जात्य, (त्रि०) जातौ भवः+यत् । जातिमें हुआ । कुलीन । श्रेष्ठ । कान्त । खान्दानी । अच्छा । सुन्दर.

जात्यन्ध, (त्रि०) जातौ (जन्मनि) एव अंधः । जन्मका अंधा । जन्मान्ध । "जात्यन्धो बधिरस्तथा" इति मनुः.

जात्युत्तर, (न०) जात्या व्याप्तिहीनाभ्यां साधर्म्यवैधर्म्याभ्यां उत्तरं । हेतु और साध्यके इकठ्ठा रहनेके नियम विन साधर्म्य और वैधर्म्यसे उत्तर देना । झूठा उत्तर । असत् उत्तर.

जानकी, (स्त्री०) जनकस्य इयं+अण् । जो जनककी (लडकी) हो । सीता.

जानपद, (त्रि०) जनपदे भवः । तत आगतो वा+अण् । देशका वा देशसे आयाहुआ । स्त्रियां ङीप्.

जानु,जन्+ञुण् । ऊरुजंघामध्यभाग । पद और लातोंके बीचका हिस्सा । घुटना । गोड्डा । "स्वार्थे कन्".

जाप, (पु०) जप्+घञ् । चुपचाप मनहीकी प्रार्थना । गुनगुन । कानाफूसी । जप.

जापक, (त्रि०) जप्+ण्वुल् । जप करनेवाला.

जाप्य, (त्रि०) जप्+ण्यत् । जप करनेयोग्य.

जाबाल, (पु०) जबालाया अपत्यं+अण् । जबालाकी सन्तान मुनिभेद । एक मुनि.

जामदग्न्य, (पु०) जमदग्नेः अपत्यं+यञ् । जमदग्निकी सन्तान । जमदग्निका पुत्र परशुराम.

जामा, (स्त्री०) जय् अदने+अण् स्त्रीलम् । कन्या । लडकी पतोहू । नूं.

जामातृ (पु०) जायां माति मिनोति-मिमीते वा तृच् । जो स्त्रीको मापता (हरएक काम उसका देखता है) फेंकता (काम विगडनेपर झिडकता है) और मारता (बडा दोष करनेपर शासन भी कर्ता) । पियारा । स्वामी । लडकीका पति । दुहितृपति । जवाई.

जामि, (स्त्री०) जन्+मिण् नि० वृद्धिः । भगिनी । बहिन । दुहिता । लडकी । स्नुषा । नूं । बहू । कुलस्त्री । निकटकी स्त्री । "जामयो यानि गेहानि" मनुः.

जामेय, (पु०) जाम्याः भगिन्याः अपत्यं+ढञ् । भगिनीसुत । बहिनका लडका । मनेवां.

जाम्बवत्, (पु०) रामायणमें प्रसिद्ध भल्लूकराज (रीछोंका राजा).

जाम्बवती, (स्त्री०) जाम्बवतः अपत्यं स्त्री । जाम्ववान्की स्त्रीरूप सन्तान । कृष्णदेवकी भार्याओंमेंसे एक । जाम्ववान्की कन्या । सापोंको कावू करनेहारी.

जाम्बूनद, (न०) जम्बूनदे भवं+अण् । जम्बूनदमें हुआ स्वर्ण । सोना । एक प्रकारका शुद्ध सोना । धत्तूरा.

जाया, (स्त्री०) जन्+यक् । "पति स्त्रीमें प्रवेशकरके गर्भ होकर इस संसारमें उपजता है । जायाका जायापन यही कि इसमें पतिही पुत्र रूपसे उत्पन्न होता है" । स्त्री । औरत । लग्नसे सातवां घर.

जायाजीव, (पु०) जायया जीवति । जीव्+क । जो स्त्रीके आसरे जीता है । नट । नकल करनेवाला.

जायु, (पु०) जयति रोगान् । जि+उण् । जो रोगोंको जीत लेता है । औषध । दवाई । बूटी.

जार, (पु०) जीर्यते अनेन । जॄ+करणे घञ् । उपपति । जार । यार.

जारज, (त्रि०) जारात् जायते जन्+ड । यारसे पैदा होता है । यारसे उत्पन्न हुआ । कुण्ड । गोलक पुत्र.

जाल, (पु०) जल्-सम्वरण-ढांकना+घञ्, जल्-मारना । णिच्+अच् । जले क्षिप्यते अण् वा । जिससे ढांकते, मारते वा जिसे पानीमें फेंकते हैं । कदमका वृक्ष । बारीका झरोखा । गवाक्ष । छिद्र । मच्छिओंको पकडनेके लिये सणके सूतका बनाहुआ आनाय (जाल) । न खिलीहुई कली । क्षुद्रफल । और पशुपक्षिओंके पकडनेके लिये पाश (फाई-फंदा) । शाठ्य । धूर्तता । दम्भ । पाखण्ड । समूह । इन्द्रजाल (न०) स्वार्थे कन् । मोचकफल । नई कलिओंका समूह (न०).

जालक, (न०) जालं इव कायति कै+क । जालकी भांति शब्द करता है । जाल । समूह । इकठ्ठ.

जालवत्, (त्रि०) जाल+मतुप् । जालवाला । छलिया । कपटी । मायावी.

जालन्धर, (पु०) जाल+धृ+खच्+मुम् । भारतके उत्तर-पश्चिमका एक देश । व्यस ओर सतलुज नदीयोंके मध्यका एक देश.

जालिक, (पु०) जालेन चरति । जाल+ठक् । वागुरिक । फंदक । जालसे जीनेवाला । कैवर्त । धीवर । मर्कटक । मकडी.

जाल्म, (त्रि०) जालयति अपवारयति "म" । (जो अपने दोषको) छिपाताहै । पामर । नीच । मूर्ख । क्रूर । बेरहम । आवला.

जाहम्, (न०) जाहच्–एक प्रत्यय है । संज्ञावाचक शब्दोंके साथ लगाया जाता और शरीरके किसी अवयवको प्रकाश कर्ता है जैसे "कर्णजाहं" कानका मूलस्थान.

जाह्नवी, (स्त्री०) स्वर्गसे आईहुई गंगाको वेगवती देखकर जह्नुराजर्षिने पहिले मुखसे पीलिया पीछे कानके मार्गसे निकाला इसलिये जह्नु राजर्षिकी कन्या होनेसे गंगाको जाह्नवी भी कहागया । गंगानदी.

जि, जय-जीतना । भ्वा० पर० सक० अनिट् । जयति । अजैषीत्.

जिगीषा, (स्त्री०) जि+सन्+अ । जयेच्छा । जीतनेकी इच्छा । चाह । प्रकर्ष । रक्षक । उद्यम । मिहनत.

जिगीषु, (त्रि०) जि+सन्+उ । जीतनेकी इच्छा करनेवाला.

जिघत्सा, (स्त्री०) अद्+सन्+घसादेशः । भावे । भक्षणेच्छा । खानेकी इच्छा.

जिघत्सु, (त्रि०) अद्+सन् घसादेशे-उ । खानेकी इच्छावाला । भूखा.

जिघांसु, (त्रि०) हन्+सन्–उ । मारनेकी इच्छावाला.

जिज्ञासा, (स्त्री०) ज्ञा+सन्+भावे अङ् । जाननेकी इच्छा.

जिज्ञासु, (त्रि०) ज्ञातुं इच्छुः । ज्ञा+सन्+उ । जाननेकी इच्छा करनेवाला । मुमुक्षु । छूटनेकी चाहवाला.

जित्, (त्रि०) जि+क्विप् । "समासके पीछे आता है" जीतनेवाला । "कंसजित्".

जित, (न०) जि+क्त (भावे) जय । जीत "कर्मणि क्त" । अभिभूत । दबायागया । पराजित । हरादियागया । जीतपानेवाला । वशीकृत । काबू कियागया । आयत्तीकृत.

जितकाशिन्, (त्रि०) जितेन (जयेन) काशते (प्रकाशते) णिनि । जो जीतसे चमक रहा है । जिताहव । जिसने लडाई जीती है । जयी । जीतनेवाला । फतहयाब.

जितमन्यु, (त्रि०) जितः मन्युः येन ब० स० । क्रोधको जीतनेवाला.

जितशत्रु, (त्रि०) जिताः शत्रवः येन । शत्रुओंको जीतनेवाला । विजयी.

जितस्वर्ग, (त्रि०) जितः स्वर्गः येन । स्वर्गको जीतनेहारा.

जितात्मन्, (त्रि०) जितः (वशीकृतः) आत्मा । (इन्द्रियं-मनो वा) येन । जिसने इन्द्रिय वा मनको वश किया है । जितेन्द्रिय.

जिति, (स्त्री०) जि+क्तिन् । जीत । लाभ । नफा । हासिल.

जितारि, (त्रि०) जिताः अरयः येन । जिसने अपने शत्रुको वा कामक्रोधादिको जीत लिया है । रिः (पु०) बुद्धदेव.

जितेन्द्रिय, (त्रि०) जितानि (वशीकृतानि) इन्द्रियाणि येन । जिसने अपनी इन्द्रियोंको वश किया है । "जो मनुष्य सुन, देख, छू, खा और सूंघकर राग द्वेष नहीं कर्ता" हर्ष और विषाद (रंज) से रहित शान्त जीव । कामको बढानेहारा वृक्ष.

जित्वर, (त्रि०) जि+क्वरप् । जयशील । जीतनेवाला । स्त्रियां ङीप्.

जिन, (पु०) जयति संसारं । जि+नक् । संसारको जीतनेहारा । बुद्ध । विष्णु "जित्वर" (त्रि०).

जिष्, सेक-सींचना । भ्वा० पर० सक० सेट्० । जेषति । अजेषीत्.

जिष्णु, (पु०) जिष्+ग्स्नु । अर्जुन । इन्द्र । विष्णु । सूर्य । आठ वसु । जीवनेवाला (त्रि०).

जिष्णु, (त्रि०) जि+ग्स्नु । जीतनेवाला । जयशील.

जिह्म, (त्रि०) हा+मन्-द्वित्वादि नि० । कुटिल । तिरछा । मन्द । मूर्ख । तगरका वृक्ष.

जिह्मग, (पु०) जिह्मं गच्छति । गम्+ड । जो टेढा होकर चलता है । सर्प । सांप । मदनका वृक्ष । धीरे जानेवाला । कुटिल (त्रि०).

जिह्वा, (स्त्री०) लेढि अनया । लिह्+वा नि० । जिस्से चाटता है । रसको जाननेवाली इन्द्रिय । रसना । जीभ । जबान.

जिह्वामूलीय, (पु०) जिह्वामूले भवः+छ । जीभकी जडमें हुआ । क और खसे पहिले आधी विसर्गका चिह्न । जैसे ×क ×ख.

जिह्वारद, (पु०) जिह्वैव रदो दन्तः चर्वणसाधानं यस्य । जीभही जिसके चावनेका साधन है । दन्तहीन । दांतोंके विना । जीभहीसे चावनेहारा पक्षी.

जीन, (त्रि०) ज्या-वयोहानि । अवस्थाका घटना । बूढा होना. कर्तरि क्त सम्प्रसारणं-दीर्घश्च । वृद्ध । बूढा । चर्मपुट् । चमडेका होना.

जीमूत, (पु०) ज्या+क्विप्-जीः तया जरया मूतो बद्धः । मू+वांधना+क्त । बुढेप्पेसे बंधाहुआ । "जयति नभः" जो आकाशको जीतता है । "जीयते वायुना वा" जो हवासे जीता जाता है । जि+क्त-मूट्-दीर्घश्च । "जीवनस्य (जलस्य) मूतः (पटबन्धः)" पानीकी गठडी । मेघ । बादल । मोथा । पर्वत । (पहाड) । देवताड वृक्ष । इन्द्र । कोषातकीलता (बेल).

जीर, (पु०) ज्या+रक् । जीरक । जीरा नामी पदार्थ । (जो मसालेमें डाला जाता है) । खड्ग । तरवार । अणु । छोटा.

जीर्ण, (पु०) जॄ+क्त । जीरा । शैलज (बूटी आदि) (न०) । जरान्वित । बुढाप्पेवाला (त्रि०) । मोटा जीरा (स्त्री०).

जीर्णज्वर, (पु०) जीर्णः ज्वरः । पुराना ज्वर (बुखार).

जीर्णवस्त्र, (त्रि०) (जीर्णानि वस्त्राणि यस्य) । जिसने पुराने वस्त्र (कपडे) पहिने हों.

जीर्णोद्धार, (पु०) जीर्णस्य (भग्नमन्दिरस्य) उद्धारो नवीकरणं यत्र। जहां टूटे फूटे मन्दिर आदिको नया बनवाया जाय। (संस्कार).

जीर्णोद्यानम्, (न०) जीर्णं उद्यानम् कर्म० स०। पुराना उद्यान (बाग).

जीव्, प्राणधारण। प्राणोंको पकडना। भ्वा० पर० अक० सेट्। जीवति। अजीवीत्। णिच्। अजिजीवत्-त। आजीजिवत्-त.

जीव, (पु०) जीव्+क। देहका अभिमानी। आत्मा। मनुष्यसे लेकर कीडों मकौडोंतक चेतन। "प्राणोंको क्षेत्रज्ञ (क्षेत्रको जाननेहारा) स्वरूपसे धारण कर्ताहुआ जीव कहलाता है" प्राणी। "करणे घञ्" जीवनका उपाय "जीव्+णिच्+अच्" वृक्षविशेष। "भावे घञ्" प्राणोंको पकडना.

जीवगृह-मंदिर, (न०) जीवस्य गृहं। जीवका घर। शरीर.

जीवग्राहः, (पु०) जीवन्तं गृह्णाति जीव+ग्रह+णमुल्। जीतेजी पकडा गया अपराधी.

जीवघन, (पु०) जीव एव घनो मूर्तिः (सैन्धवशिलाशकल इव) यस्य। सेंधे लून (नून)की शिलाके टुकडेके समान जीवही जिसकी मूर्ति है। हिरण्यगर्भ.

जीवजीव, (पु०) जीवान् जीवयति+क। देखनेसे तृप्ति करता है। वृत्ति। जीवोंको। जिलानेहारा। चकोर पक्षी.

जीवथ, (त्रि०) जीव्-अथ। बडी आयु (उमर) वाला। -थः (पु०) जीवन (जिंदगी)। सत्ता। कच्छू.

जीवन, (न०) जीव्यते अनेन। जीव+ल्युट्। जिस्से जीते हैं। वृत्ति। जीविका। जल। हैयङ्गवीन। ताजामक्खन। "भावे ल्युट्" प्राणोंको धारण करना "जीवयति"। णिच्-ल्यु। पत्र। जीविक औषध। वायु। छोटे फलोंवाला वृक्ष (पु०).

जीवनयोनि, (स्त्री०) ६ त०। (न्यायमें) शरीरमें प्राणोंके चलनेका कारण इन्द्रियोंसे न जाननेयोग्य एक प्रकारका यत्न.

जीवनहेतु, (पु०) ६ त०। जीनेके कारण। "विद्याशिल्प (कारीगरी), भृति (नौकरी) सेवा, गौओंकी रक्षा, विपणि (दुकानदारी) वृत्ति, कुसीद (व्याज), कृषि (खेती), और भीख मांगना इस प्रकार जीनेके उपाय हैं.

जीवन्ती, (स्त्री०) जीव्+झ+ङीप् स्वार्थे कन् ह्रस्वे अत इत्वम्। गुडूची। जीवाख्यशाक। वन्दा। हरीतकी। हरीड.

जीवन्मुक्त, (त्रि०) जीवन्नेव मुक्तः (त्यक्तसंसारः)। जिसने जीतेही संसारको छोडदिया। आत्माको साक्षात् करनेहारा। जिसने आत्माको जानलिया। प्रारब्धकर्मोंके नाशतक सुषुप्तिके समान व्यवहार करनेहारा। आत्माको जाननेवाला जीव। ब्रह्मस्वरूप आत्माको जाननेवाला.

जीवन्मुक्ति, (स्त्री०) जीवत एव मुक्तिः। जीतेही कर्तृत्व भोक्तृत्व (मैं कर्ता हूं मैं भोक्ता हूं) से छूटना। जीतेही बंधकी निवृत्ति.

जीवपत्नी, (स्त्री०) जीवतः पत्नी। वह स्त्री जिसका पति जीता है.

जीवस्थान, (न०) ६ त०। जीवका स्थान। मर्म। छिपीहुई जगह। जहां चोट लगनेसे जल्दी प्राण छूटजाय.

जीवा, (स्त्री०) जीव्+अच्। जीवयतेरच् वा टाप्। धनुषका चिल्ला। जीवन्तिका औषधी। वचा। पृथिवी। जल। जीवनका उपाय.

जीवातु, (पु० न०) जीव्+आतु। अन्न। जीवन। जीवनकी औषध। मुर्देको जिलानेवाली दवाई.

जीवात्मन्, (पु०) कर्म०। देहका अभिमानी जीव.

जीवाधार, (पु०) जीवस्य आधारः। जीवका आधार। आश्रय। हृदय.

जीविका, (स्त्री०) जीव्+अ+कन्-अत इत्वम्। जीवनका उपाय। आजीवन। रोजी.

जीवितेश, (पु०) ६ त०। जीवनका मालिक। यम। प्राणोंका स्वामी। जीवन। चंद्रमा। सूर्य। पियारा स्वामी (त्रि०).

जीवोपाधि, (पु०) ६ त०। जीवकी उपाधि। स्वप्न, सुषुप्ति और जाग्रत् अवस्था.

जीवोत्सर्गः, (पु०) जीवस्य उत्सर्गः। जीवन (जिदनी) प्राणका त्याग.

जु, रंह-जोरसे चलना-वेग। भ्वा० पर० अक० अनिट्। जवति। जवः.

जुग, त्याग-छोडना। भ्वा० पर० अक० सेट्। इदित्। जुङ्गति.

जुगुप्सा, (स्त्री०) गुप्-निन्दा करना। स्वार्थे सन्-अ-टाप्। निन्दा.

जुटिका, (स्त्री०) जुट्-संहति-इकट्ठा होना-टाप्-नि० पृ० शिखा। चोटी। इकट्ठे हुए २ वाल.

जुड, बांधना-जाना। तुदा० पर० सक० सेट्। जुडति। अजोडीत्.

जुत्, चमकना। भ्वा० आत्म० सक० सेट्। जोतते.

जुन्, गति-जाना। तुदा० पर० सक० सेट्। जुनति.

जुष्, हर्ष-खुशहोना। अक० सेवाकरना। सक० तुदा० आत्म० सेट्। जुषते। अजोषिष्ट.

जुष्ट, (न०) जुष्+क्त। उच्छिष्ट। जूठा। सेवित। सेवा कियाहुआ (त्रि०).

जुहू, (स्त्री०) जुहोति अनया। हु+क्विप्-नि०। जिस्से होम कर्ता है। पलाशकी लकडीका बनाहुआ आधे चंद्रमाके स्वरूपका यज्ञपात्रविशेष। पत्तोंका बनाहुआ एक प्रकारका यज्ञका पात्र.

जूति, (स्त्री०) जु+क्तिन् । नि० दीर्घः । वेग । जोर । तेजसे चलना.

जूर, बूढाहोना । अक० वध । मारना । सक० दिवा० आत्म० । जूर्यते । जूर्णः.

जूर्ति, (स्त्री०) ज्वर+क्तिन् । सम्प्रसारणं । ज्वर । ताप । बुखारका रोग.

जूष्, मारना । भ्वा० उभ० सक० सेट् । जूषति-ते । अजूषीत् । अजूषिष्ट.

जॄ, जरा-बूढाहोना । दिवा० पर० अक० सेट् । जीर्यति । अजरत् । अजारीत्.

जृम्, जृम्भणम् । खोलना-उबासी लेना । भ्वा० आत्म० सक० सेट् । जर्मते । अजर्मिष्ट.

जृम्भ, (पु०) जृभि+घञ् । मुखविकाश । मुंका खोलना । अ टाप् । इसी अर्थमें (स्त्री०) । ततः स्वार्थे कन् । अत इत्वं "जृम्भिका".

जृम्भकास्त्र, (न०) जृभि+णिच्+ण्वुल्-कर्म० । शत्रुको उबासी लानेवाला हथियार । सुलानेवाला अस्त्र.

जेतृ, (त्रि०) जि-तृच् । जीतनेवाला.

जेमन, (न०) जिम्+ल्युट् । भक्षण । भोजन । खाना । खुराक.

जेय, (त्रि०) जि+कर्मणि यत् । जेतव्यमात्र । जीतनेलायक.

जै, क्षय । नाशहोना । घटना । भ्वा० पर० अक० अनिट् । जयति । अजासीत् । जानः.

जैत्र, (त्रि०) जेता एव । प्रज्ञादि अण् । जयशील । जीतनेवाला । पारद । पारा (पु०) औषध । दवाई (न०).

जैन, (पु०) जिनो देवता अस्य अण् । जिसका देवता जिन है । बौद्धधर्मको अवलम्बन करनेहारा । अर्हत्‌का उपासक.

जैमिनी, (पु०) वेदपर मीमांसाके सूत्र बनानेहारा । व्यासका शिष्य एक मुनि.

जैव, (त्रि०) जीवस्य इदं+अण् । जीवका । अथवा आत्माका सम्बन्धी । जीववाला.

जैवातृक, (पु०) जीव्+आतृच् । ततः कण् वृद्धिश्च । चन्द्रमा । औषध । कर्पूर । काफूर । दीर्घायुष्क । बडी उमरवाला (त्रि०).

जोषम्, (अव्य०) सुख । प्रशंसा । तारीफ । बडाई । चुपचाप । लांघना.

जोषा, (स्त्री०) जुष्-घञ् । नारी । स्त्री । औरत । तीमत.

जोषित्, (स्त्री०) जुष्+इति । नारी । स्त्री । औरत । तीमत.

ज्ञप्, मारना-प्रकाशकरना-तेजकरना-प्रसन्नकरना-स्तुति करना । चुरा० उभ० सक० सेट् । ज्ञपयति । ते अजिज्ञपत्-त.

ज्ञपित, (त्रि०) ज्ञप्+क्त । मारित । मारागया । ज्ञापित । इत्तिला दियागया । जनायागया । नि० । "ज्ञप्त" भी होताहै.

ज्ञप्ति, (स्त्री०) ज्ञप्+क्तिन् । अकिल । जान्ना.

ज्ञा, बोध-समझना । जान्ना । क्र्या० पर० सक० अनिट् । जानाति । अज्ञासीत्.

ज्ञातसिद्धान्त, (पु०) ज्ञातः सिद्धान्तः तत्वार्थः येन । जिसने असली बातको जानलिया है । सिद्धान्तको अच्छी तरह जान्नेहारा.

ज्ञाति, (पु०) ज्ञा-कर्तरि-करणे वा क्तिच् । पिता । पिताके वंशमें होनेवाला । सपिण्ड, सकुल्य, समानोदक और गोत्रजरूप एक गोत्रमें उत्पन्नहुए चाचाआदि । बरादरी.

ज्ञातृ, (त्रि०) ज्ञा+तृच् । जान्नेवाला.

ज्ञातेय, (न०) ज्ञातेर्भावः ढक् । जातिका होना । जातिका= कुलका काम.

ज्ञान, (न०) ज्ञा+भावे ल्युट् । जान्ना । सामान्य विशेषरूप बुद्धि । "ज्ञान दो प्रकारका है वस्तुमात्रको प्रकाश करनेहारा निर्विकल्पक, और संज्ञा (नाम) आदिको प्रकाश करनेहारा सविकल्पक है" । वह (सविकल्पक) संकल्प, संशय, भ्रान्ति, स्मृति, सादृश्य, निश्चय और अनुभव आदि भेदसे कई प्रकारका है.

ज्ञानकृत, (त्रि०) ज्ञानेन कृतम् । जानबूझकर किया गया.

ज्ञानगम्य, (त्रि०) ज्ञानेन गम्यम् । ज्ञानसे प्राप्त वा लाभ करनेयोग्य.

ज्ञानचक्षुस्, (न०) ज्ञानस्य चक्षुः । ज्ञानका नेत्र । प्रज्ञाचक्षु । मनकी आंख.

ज्ञानतः, (अव्य०) ज्ञान+तसिल् । ज्ञानसे । जानबूझकर । इरादेसे.

ज्ञानतत्त्वम्, (न०) ज्ञानस्य तत्त्वम् । ज्ञानका तत्त्व (असलीमत) सच्चा ज्ञान । ईश्वरका ज्ञान.

ज्ञानदुर्बल, (त्रि०) ज्ञाने दुर्बलः । ज्ञानमें दुर्बल (कमजोर) ज्ञानरहित.

ज्ञाननिष्ठ, (त्रि०) ज्ञाने निष्ठा यस्य । स० । आध्यात्मिक ज्ञानकी प्राप्तिमें लगा हुआ.

ज्ञानमय, (त्रि०) (ज्ञान+मयट्) ज्ञानस्वरूप.

ज्ञानयज्ञः, (पु०) ज्ञानं एव यज्ञः यस्य । सत्य आत्मिक ज्ञानको धारण करनेवाला मनुष्य । दार्शनिक । तत्त्वज्ञानी.

ज्ञानयोग, ज्ञानं एव योगः कौशलं ब्रह्मप्राप्त्युपायो वा । ज्ञानरूपी चतुराई वा ब्रह्मकी प्राप्तिका उपाय है । ब्रह्मके पानेका उपाय । एक प्रकारकी निष्ठा (स्थिति).

ज्ञानलक्षण, (स्त्री०) ज्ञानं एव लक्षणं स्वरूपं यस्या व्याप्रतेः । जिस व्यापारका ज्ञानही स्वरूप है । (न्यायमतमें) ज्ञानका साधन । अलौकिक सन्निकर्षविशेष.

ज्ञानवापी, (स्त्री०) ज्ञानकी बावली । काशीमें एकतीर्थ है.

ज्ञानसाधन, (न०) सिध्+णिच्-करणे ल्युट् । ६ त० । जान्नेका साधन । इन्द्रिय.

ज्ञानापोह, (पु०) अप-ऊह+घञ् । ६ त० । विसरण । भूलना । ज्ञानका जाता रहना.

ज्ञानाभ्यास, (पु०) ६ त० । ज्ञानका अभ्यास । "उसीको सोचना । कहना, आपसमें समझना । और उसीमें लगे रहना" इत्यादिरूपसे ध्यान करनेयोग्य विषयकी चिन्ता.

ज्ञानिन्, (त्रि०) ज्ञानं अस्य अस्ति+इनि । जान्नेवाला । सामान्यज्ञानवाला । तत्त्वज्ञानी । असली बातको जान्नेहारा । दैवज्ञ । ज्योतिषी (पु०).

ज्ञानेन्द्रिय, (न०) ६ त० । ज्ञानकी इन्द्रिय । सुन्ने देखने आदि ज्ञानके साधन । कान, आंख, नाक, जीभ, त्वग्रूप इन्द्रिय । अन्तःकरण । मन.

ज्ञापक, (त्रि०) ज्ञा+णिच्+ल्यु । जनानेवाला । सिखानेवाला । जतलानेवाला ।–कः (पु०) शिक्षक । सिखानेवाला । आज्ञा करनेवाला । स्वामी । मालिक ।–कं (न०) (दर्शनमें) किसी नियमके नियत शब्दोंमेंसे अधिक अर्थको सूचन करनेवाला नियम.

ज्ञापनम्, (न०) ज्ञा+णिच्+ल्युट् । जतलाना । इत्तिला-देना । सिखलाना । सूचन करना.

ज्ञापित, (त्रि०) ज्ञा+णिच्+क्त । जतलाया गया । इत्तिला दियागया । सूचना दियागया.

ज्ञीप्सा, (स्त्री०) ज्ञा+सन्+भावे अ । जान्नेकी इच्छा.

ज्ञेय, (त्रि०) ज्ञा+कर्मणि यत् । जान्नेके योग्य । समझनेलायक । ध्यान करनेयोग्य । प्रत्यक्ष होनेलायक.

ज्या, बूढा होना । क्र्या० पर० अक० अनिट् । जिनाति । अज्ञासीत्.

ज्या, (स्त्री०) ज्या+अङ् । मौर्वी । धनुषका चिल्ला । माता । भूमि । जमीन.

ज्यानि, (स्त्री०) ज्या+क्तिन् । जीर्णता । बूढापन । पुरानापन । हानि । नुकसान । नदी । दर्या.

ज्यायस्, (त्रि०) अतिशयेन वृद्धः ईयसुनि ज्यादेशः । इको आ होताहै । बहुत बडा । बहुत बूढा । बुढापावाला । अतिशय वृद्ध । स्त्रियां ङीप्.

ज्युत्, दीप्ति-चमकना । भ्वा० पर० अक० सेट् । ज्योतति.

ज्येष्ठ, (त्रि०) वृद्ध० इष्ठन् । ज्यादेशः । बहुतही बूढा । अतिवृद्ध । बहुत अच्छा । अग्रज (पु०) (बडा भाई) बडी बहिन । अवस्थामें बडी बडे भाईकी स्त्री (स्त्री०) टाप् । गंगा । अलक्ष्मी । अठारवां नक्षत्र (स्त्री०) । ङीप् । "ज्येष्ठी".

ज्येष्ठतात, (पु०) तातस्य ज्येष्ठः । पिताके आगे उत्पन्न हुआ ताया जेठा.

ज्येष्ठवर्णः, (पु०) ज्येष्ठः वर्णः । सबसे ऊंची जाति (ब्राह्मण).

ज्येष्ठांशः, (पु०) ज्येष्ठस्य अंशः । बडेभाईका भाग (हिस्सा) । उत्तमभाग.

ज्येष्ठाश्रम, (पु०) ज्येष्ठ आश्रमो यस्य । सबसे बडे आश्रम-वाला । "तीनो आश्रमोंको अन्नादिद्वारा गृहस्थही धारण कर्ता है इस लिये यही बडा आश्रम है" गृहस्थाश्रम.

ज्यैष्ठी, (पु०) ज्येष्ठानक्षत्रेण युक्ता पौर्णमासी ज्यैष्ठी साऽस्मिन् मासे अण् । अपने नामका चांद्रमास । जेठका महीना.

ज्यैष्ठ्य, (न०) ज्येष्ठस्य भावः ष्यञ् । ज्येष्ठत्व । बडापन । "विप्राणां ज्ञानतो ज्यैष्ठ्यम्" इति मनुः.

ज्योक्, (अव्य०) सम्प्रति । अब । बहुत समय । जल्दी । सवाल । प्रश्न.

ज्योतिरिङ्ग, (पु०) ज्योतिरिव इङ्गति । इग्+अच् । रौशनीकी तरह चमकताहै । खद्योत । टणाणा ।–रिङ्गण । आगकी मक्खी.

ज्योतिर्विद्, (पु०) ज्योतिषां (सूर्यादीनां) गत्यादिकं वेत्ति । जो सूर्य आदिकी गति (चाल) को जानताहै । विद्+क्विप् । ज्योतिःशास्त्रको जान्नेवाला.

ज्योतिःशास्त्र, (न०) ६ त० । ग्रह और नक्षत्र आदि-की गति और स्वरूपका निश्चय करनेवाला । इस शास्त्रके पांच स्कन्ध शास्त्रमें कहे हैं "होरा, गणित, संहिता, केरल और शकुन".

ज्योतिश्चक्र, (न० ६ त० । सूर्यआदि ज्योतियोंका मण्डल (दायरा) । सत्ताईस नक्षत्रोंवाला मेषआदि राशिओंका चक्र.

ज्योतिष्, (न०) ज्योतिः अधिकृत्य कृतो ग्रन्थः । ज्योति (ग्रह आदि) के विषयमें रचागया ग्रन्थ । नि० न वृद्धिः । ज्योतिःशास्त्र । वृद्धि । तरक्की । "ज्यौतिषं" यही अर्थ.

ज्योतिष्टोम, (पु०) ज्योतींषि स्तोमा यस्य षत्वम् । ज्योति जिसके स्तोम (धन वा स्तोत्र) हैं । सोलह ऋत्विजोंसे सिद्ध करने योग्य यज्ञविशेष.

ज्योतिष्मत्, (पु०) ज्योतिः अस्ति अस्य मतुप् । ज्योति-वाला सूर्य । प्लक्षद्वीप (जजीरां)का एक पर्वत । और मालकङ्गनी नामी लता (बेल) । रात्रि । रात । (योग-शास्त्रमें) चित्तकी वृत्तिका एक भेद । (स्त्री०) ङीप् । ज्योतिषवाला (त्रि०).

ज्योतिस्, (पु०) द्योतते द्युत्यतेऽनेन वा । द्युत्+इसुन् । आदि दको ज होता है । चमकता है वा जिस्से चमकाया जाता है । सूर्य । अग्नि । और मेथीका वृक्ष । आंखकी कनीनिका (पुतली) में देखनेका साधन । पदार्थ । नक्षत्र (तारा) । प्रकाश । आपही चमकनेवाला । सबको चमकानेहारा चैतन्य (न०).

ज्योत्स्ना, (स्त्री०) ज्योतिः अस्ति अस्यां । न । उपधालोपश्च । जिसका प्रकाश हो । कौमुदी । चांदनी । चन्द्रमाकी किरण । ङीप् । ज्योतिवाली रात्रि (स्त्री०).

ज्यौतिषिक, (पु०) ज्योतिषां शास्त्रं वेत्ति अधीते वा ठक् (इक्) । ज्योति (ग्रह आदि) ओंके शास्त्रको जानता वा पढता है । दैवज्ञ । भाग्यको जानेहारा । ज्योतिषी.

ज्रि, अभिभव-दबाना-तिरस्कार करना । भ्वा० पर० सक० अनिट् । ज्रयति । अज्रैषीत्.

ज्री, वयोहानि । बूढा होना । चुरा० उभ० पक्षे क्र्या० पर० अक० अनिट् । ज्राययति-ते । ज्रिणाति.

ज्वर्, रोग-रोगी होना । भ्वा० पर० अक० सेट् । ज्वरति.

ज्वर, (पु०) ज्वर्+घ । अपने नामका एक रोग । बुखारकी बीमारी । ताप । कस्स । बुखारकी गर्मी.

ज्वरघ्न, (पु०) ज्वरं हन्ति । हन्+टक् । जो ज्वर (बुखार को मारता है । गिलोय । गुडूची । ज्वरका नाशक (त्रि०) मंजीठ (स्त्री०).

ज्वरप्रतीकार, (पु०) ज्वरस्य प्रतीकारः । ज्वरका उपाय (इलाज).

ज्वराग्निः, (पु०) ज्वरस्य अग्निः । ज्वर (बुखार) की अग्नि=ताप (आग).

ज्वरान्तक, (पु०) अन्तयति । अन्त+तत् करोति णिच् ण्वुल् । ६ त० । ज्वरको अन्त करनेवाला । नेपालकी नीम । लोहेकी बनीहुई दवाई । बुखारको दूर करनेवाली दवाई (त्रि०).

ज्वरापहा, (स्त्री०) ज्वरं अपहन्ति । अप+हन्+ड । ज्वरको दूर कर्ती है । वेल । सोंठ । बिल्वपत्र । ज्वरनाशक (त्रि०).

ज्वरित, (त्रि०) ज्वरः सञ्जातः अस्य । तारका० इतच् । जिसे बुखार होगया हो । ज्वरयुक्त । बुखार चढाहुआ.

ज्वल्, दीप्ति-चमकना-चलन-चलना । भ्वा० पर० अक० सेट् । ज्वलति । अज्वालीत् । ज्वलयति । ज्वलः । ज्वालः.

ज्वलन, (पु०) ज्वलति । जलता है । चमकताहै । ज्वल्+युच् । वह्नि । आग । चित्रकका वृक्ष । "भावे ल्युट्" दीप्ति । चमकना । दाह । जलना.

ज्वलनाश्मन्, (पु०) ज्वलतीति ज्वलनो देदीप्यमान अश्मा (सूर्यकी किरणोंके पडनेसे) चमकताहुआ पत्थर । सूर्यकान्त मणि । सूर्यकी पियारी मणि । सूरजका पत्थर.

ज्वलित, (त्रि०) ज्वल्+क्त । दग्ध । जलाहुआ । दीप्त । चमका हुआ । उज्वल । प्रकाशमान । भास्वर । चमकीला.

ज्वाल, (पु०) ज्वल्+ण । अग्निशिखा । आगकी लाट । स्त्रीलिंगमें टाप् । यही अर्थ । चमकाहुआ (त्रि०).

ज्वालजिह्व, (पु०) ज्वालः (शिखेव) जिह्वा यस्य । (जलनेवाली) वस्तुको चाटनेसे लाटकी नाईं जिसकी जीभ है । वह्नि । आग.

ज्वालामुखी, (स्त्री०) पीठस्थानविशेष । दुर्गाका स्थान । "ज्वालामुख्यां महाजिह्वो देव उन्मत्तभैरवः । अम्बिका सिद्धिकानाम्नी स्तनो जालन्धरे ममेति" तन्त्रम्.

ज्वालावक्त्र, (पु०) ज्वाला एव वक्त्रं यस्य । लाटही जिसका मुख है । शिवजीका नाम । अग्नि.

ज्वालिन्, (त्रि०) ज्वल्+णिनि । लाटवाला । चमकनेवाला । शिवजी महाराजका एक नाम.

झ

झ, (पु०) झग-संहति-इकट्ठाहोना-ग्रह-पकडना-पिधानवंद करना । ड । झञ्झावात । बडी जोरकी हवा (जिसमें वर्षाभी साथ हो) । बृहस्पति । इन्द्र । ध्वनि । आवाज । नष्टद्रव्य । खोईगई चीज (त्रि०).

झग (गि) ति, (अव्य०) शीघ्र । जल्दी । उसी समय । एकवारही.

झंकार, (पु०) झं इत्यव्यक्तशब्दस्य कारः । कृ+घञ् (अ) । भ्रमर आदिका शब्द । भौंरेकी आवाज.

झंकृति, (स्त्री०) झन् इत्यव्यक्तशब्दस्य कृतिः । कृ+क्तिन् । कांसीआदिकी आवाज.

झञ्झा, (स्त्री०) एक प्रकारकी ध्वनि (आवाज) । बडी वायु (हवा) सख्तहवा.

झट्, (संहति) इकट्ठा होना । भ्वा० पर० अक० सेट् । झटति । अझाटीत्-अझटीत्.

झटिति, (अव्य०) शीघ्र । जल्दी । झट । उसीवक्त । एकहीवार.

झण, (न०)-त्कार, (पु०)-झणदित्यव्यक्तशब्दस्य कारः करणम् । कृ+घञ् । झमझम करना । कङ्कण (कडे) आदिकी आवाज.

झम्प, (पु०) झम्+पन् झं इति कृत्य पतति । पत्+ड वा । वलके साथ ऊपरसे नीचेको गिरना । कूदना । (स्त्रियां) " झम्पा ".

झर, (पु०) झॄ+अप् । निर्झर । झरना । झरनेसे निकला जलका प्रवाह.

झर्च (र्छ) झं, कहना-झिडकना । तुदा० पर० सक० सेट् । झर्चं (र्छ) झंति.

झर्झर, (पु०) झर्झ+अरन् । (झांज) वाजेका भेद । ढोल । कलियुग । एकनद । वाजा.

झल्लक, (पु० न०) झर्झ+ण्वुल् पृ० । कांसीका वाजा । एक प्रकारका वाजा । मंजीराह.

झल्लरी, (स्त्री०) झर्झ+अरन् । पृ० । एक प्रकारका वाजा । शुद्ध । सफा । गीलां । ढोल.

झष्, मारना । भ्वा० पर० सक० सेट् । झषति । अझाषीत् । अझषीत्.

झष्, लेना-चंदकरना । भ्वा० उभ० सक० सेट् । झषति-ते । अझाषीत्.

झष, (पु०) झष्यते कर्मणि घ (अ) । मत्स्य । मच्छ । मछली । मीनराशि "भावे घ (अ)" । ताप । गर्मी । धूप । वन (न०).

झषकेतु, (पु०) झषो (मीनः) (मकरः वा) केतुः यस्य । जिसका निशान (झंडा) मछली हो । मदन । कामदेव । "झषकेतन" आदि.

झषोदरी, (स्त्री०) झषस्य उदरं इव उदरं यस्याः–ब०स० । सत्यवतीका नाम । व्यासमाता.

झाट, (पु०) झट्+णिच्+अच् । वेलोंसे ढकाहुआ स्थान । कान्तार । जंगल । व्रण (फोडा वा जखम) आदिका धोना.

झामक, (न०) झम्+कर्मणि ण्वुल् (अक) । वहुत पकी-हुई ईट.

झिङ्गिनी, (स्त्री०) पृ० । झिंगिनीका पेड । उल्का चुआती.

झिल्ली, (स्त्री०) झिल्लति । झिल्+अच्-पृ० । एक प्रकारका कीडा । झींगुर.

झुण्ट, (पु०) झुण्ट्+अच्-पृ० । स्तम्ब । गुल्म । झाडी.

झॄ, बूढा होना । दिवा० पर० अक० सेट् । झीर्यति । अझा-रीत् । झरा.

ञ

ञ, (पु०) वृष (वैल) । शुक्र । तिरछे जाना । गायन । गाना । घर्घर ध्वनि । घुरघुराना.

ट

ट, (पु०) टल्+ड । वामन । वौना । पाद । पांव । निस्वन । चुपचाप । नरेलकी खोपडी । टंकार (न०).

टकु, वांधना । चुरा० उभ० सक० सेट् । इदित् । टङ्कयति-ते । अटटङ्कत्-त.

टङ्क, (पु०) टकि+घञ्-अच् वा (अ) । कोप । गुस्सा । खजाना । कोष । तरवार । और पत्थर फाडनेका अस्त्र (औजार) । चार मासेका माप । जांघ । खनित्र । रंवा । अहंकार (पु० न०).

टङ्कक, (पु०) टङ्क्यते घञ् (अ) संज्ञायां कन् । रजतमुद्रा । चांदीकी मोहर । रुपया.

टङ्कार, (पु०) टं इति अव्यक्तशब्दस्य कारः । कृ+घञ् (अ) । टंकोर । एक प्रकारकी आवाज । धनुषमें चिल्ले चढानेकी आवाज । विस्मयध्वनि.

टङ्कन (पु०) टकि+युच् (अन्) एक प्रकारकी खार । सुहागा.

टिटि, (ट्टि) भ, (पु०) टि टि (ट्टि) इति अव्यक्तशब्दं भाषते । भाष्+ड । टि टि शब्द करनेवाला । टिटहरा । "स्वार्थे कन्" यही अर्थ.

टिपृ नोदन-प्रेरणा करना । चलाना । चुरा० उभ० सक० सेट् । टेपयति-ते.

टिप्पनी, (स्त्री०) टिप्+क्विप् । टिपा पन्यते स्तूयते अच् । अर्थद्योतक टीका.

टीकृ, गति-जाना । भ्वा० आत्म० सक० सेट् । टीकते । अटीकिष्ट.

टीका, (स्त्री०) टीक्+क । कठिनपदोंका वर्णन दिखाने= करनेहारी वृत्ति.

ठ

ठ, (पु०) मण्डल । चन्द्रमाका बिम्ब (स्वरूप) । सूना । महेश्वर । महादेव । बडी आवाज.

ठक्कुर, (पु०) ठाकुर । देवताकी प्रतिमा (मूर्ति) । ब्राह्म-णोंकी एक उपाधि.

ड

ड, (पु०) डी+ड (अ) । वाडवाग्नि । समुद्रकी आग । शब्द । आवाज । चासपक्षी । शिवजी.

डमरु, (पु०) डम् इति शब्दं इयर्ति । ऋ+उन् । डौरु । एक प्रकारका वाजा । कापालिक योगिओंके वजानेलायक । चमत्कार.

डल्लक, (नं०) वांस आदिका रचाहुआ पात्र । डल्ल.

डवित्थ, (पु०) काष्ठमयमृग । लकडीका वनाहुआ हिरन.

डाकिनी, (स्त्री०) डाकानां समूहः इनि । कालीके पार्षद गणोंमेंसे एक.

डामर, (पु०) शिवजीसे कहागया तन्त्रशास्त्र । भयानक । खौफनाक.

डिण्डिम, (पु०) डिण्डि इति शब्दं मिनोति प्रकाशयति मि+ड । जो डिं डिं ऐसे शब्दको निकालता है । एक बाजा । वृक्षविशेष.

डिण्डि (ण्डी) र, (पु०) डिण्डि इति शब्दः अस्ति अस्य रः (पहिले पदको दीर्घ हो जाता है) समुद्रकी फेन (झाग).

डित्थ, (पु०) लकडीका हाथी । श्यामरूप, जवान, विद्वान्, सुन्दर, सम्पूर्णशास्त्रोंके अर्थको जाननेहार कोई पुरुष.

डिपृ, इकट्ठा होना । चुरा० उभ० पक्षे भ्वा० आ० अक० सेट् डेपयति-ते । डेपते.

डिबृ, प्रेरण-चलाना । चुरा० उभ० पक्षे भ्वा० पर० सक० सेट् । इदित् । डिम्भयति-ते । डिम्भति.

डिमृ, हिंसन-मारना । भ्वा० पर० सक० सेट् । डेमति । अडेमीत्.

डिम्ब, (पु०) डिबि+घञ् (अ) । शिशु । बच्चा । अंडा । भयानक शब्द । डर.

डिम्भ, (पु०) डिभि+अच् । मूर्ख । बच्चा । "स्वार्थे कन्" यही अर्थ.

डी, आकाशमें जाना। उडना। भ्वा० आ० अक० सेट्। डयते। अडयिष्ट.

डीन, (न०) डी+भावे क्त। पक्षिओंकी गति (चाल)। उड्डान उडना.

डुण्डुभ, (पु०) डुण्डु+भण्-भावे+ड। (ढोंडा) एक प्रकारका सांप.

ढ

ढ, (पु०) ढक्का। बाजा। कुत्ता कुत्तेकी पूछ। निर्गुण। गुणहीन। ध्वनि। आवाज। सांप.

ढक्का, (स्त्री०) ढक् इति कायति। कै+क। एक बाजा। बडा वा दूरा बाजा। यशका बाजा.

ढुण्ढ, अन्वेषण (ढूंडना। तालाश करना। खोजना) भ्वा० पर० सक० सेट्। ढुण्ढति.

ढुण्ढि, (पु०) ढुण्द्+इन्। गणेश (काशीमें प्रसिद्ध ढुण्ढि-राज).

ढौक, प्रेरण। चलाना और जाना। भ्वा० आत्म० सक० सेट्। ढौकते। अढौकिष्ट.

ण

(इस "ण" अक्षरके साथ प्रारम्भ होनेवाला ऐसा शब्द कोई नहिं कि जिसे संस्कृतमें अधिक बोलचालमें लातेहों। बहुतसे धातु जो धातुपाठमें "ण" के लिखे जाते हैं वास्तवमें वे "न" के साथ प्रारम्भ होते हैं। "ण" के साथ लिखनेका कारण यह है कि जिस्से जाना जाय कि "न" कईएक उपसर्गों [प्र-अन्तर आदि] के पहिले आनेसे "ण" के साथसी बदला जायगा.

ण, (पु०) णख्-जाना-ड (अ) पृषो०। ज्ञान। इल्म। निर्णय। फैसला। भूषण। जेवर। जल। पानी। जलका स्थान। बुरा आदमी। शिवजी। नाहिंकी आवाज। देना। बखशीश.

णट्, नाचना-बतावेके साथ नटका कामकरना-मारना। भ्वा० पर० अक० सेट्। नटति-प्रणटति। अनाटीत्-अनटीत्। (मारना) प्रनटति.

णद्, अव्यक्त शब्द। गुप्त आवाज करना। भ्वा० पर० अक० सेट्। नदति। प्रणदति.

णश्, अदर्शन। छिपाना। नाश होना। दिवा० पर० अक० वेट्। नश्यति। प्रणश्यति। अनेशत्-अनशत्। प्रनष्टः.

णह्, बांधना। दिवा० उभ० सक० अनिट्। नह्यति- ते। प्रणह्यति-ते। अनात्सीत्। अनद्ध.

णिज्, शोधन। साफ करना। जुहो० उभ० सक० अनिट्। नेनेक्ति। प्रणेनेक्ति। नेनिक्ते। अनिजत्। अनैक्षीत्। अनिक्त.

णिस्, चूमना। अदा० सक० सेट्। इदित्। निंस्ते। प्रणिंस्ते। अनिंसीत्.

णी, प्रापण -पहुंचाना -लेजाना। भ्वा० उभ० द्विक० अनिट्। नयति। प्रणयति। अनैषीत्। अनेष्ट.

णु, स्तुति। तारीफ करना। अदा० पर० सक० वेट्। नौति। प्रणौति। अनावीत्। अनौषीत्। नुनुविव.

त

त, (पु०) तक् -सहना-हसना। वाड (अ)। चोर। झूट। पूछ। गोद। म्लेच्छ। रत्न। सियारकी पूंछ। छाती। लडाका। चंचल और पुण्य (न०).

तक्, दौस्थ्य-दुखी होना। भ्वा० पर० सक० सेद। इदित्। तङ्कति। अतङ्कीत्.

तक्र, (न०) तक्+रक्। चौथा भाग जलके संयोगसे मथाहुआ दही। छाछ। लस्सी.

तक्रकूर्चिका, (स्त्री०) [छाना]। पकेहुये गर्म दूधमें लस्सीके संयोगसे बनीहुई आमिक्षा.

तक्ष्, कार्श्य। कमजोर करना। काटना। छीलना। भ्वा० (पक्षे) स्वा० पर० सक० वेट्। तक्षति-तक्ष्णोति। अतक्षीत्-अताक्षीत्। (झिडकना)। संतक्षति.

तक्षक, (पु०) तक्ष+ण्वुल्। तर्खान। कारीगर। विश्वकर्मा। कश्यपका पुत्र। एक नागका नाम.

तक्षन, (पु०) तक्ष+कनिन्। विश्वकर्मा। तर्खान। चित्रा-नामी नक्षत्र (तारा).

तक्षशिला, (स्त्री०) सिंधदेशमें एक नगरी.

तगर, (पु०) (ढगर) एक वृक्षका नाम.

तङ्कन, (न०) तकि+ल्युट् (अन)। दुःखसे जीना। डरना.

तच्छील, (त्रि०) तत् शीलं यस्य। उस स्वभाववाला कोई जन.

तञ्ज, सिकोडना। रुधा० पर० सक० वेट्। तनक्ति। अतञ्जीत्। अताङ्क्षीत्.

तट्, ऊंचा होना। भ्वा० पर० सक० सेट्। तटति। अताटीत्-अतटीत्.

तट, (त्रि०) तट्+अच्। कूल। किनारा। तीर। नदी आदिका कंडा.

तटस्थ, (त्रि०) तटे तिष्ठति। स्था+क। तीरका। कि-नारेका। पासका। स्वरूपसे भिन्न विशेषण। मध्यस्थ उदासीन पुरुष.

तटाक, (पु०) तटं अकति। अक्-टेढाजाना+अण् (अ)। थोडेपानीवाला तालाव.

तटाग, (पु०) तटं अगति। अग्-टेढाजाना+अण् (अ)। तलाव (तडाग).

तटा (डा) घात, (पु०)। हाथीने सूंडको ऊंचे फटका-रना। वप्रक्रीडा। किनारेपर हाथीने सूंडसे खेलना.

तटिनी, (स्त्री०) तट्+अस्ति अर्थे इनि । नदी । दर्या.

तडाग, (पु०) तड्-चोट लगाना । निं० । तालाव । गहरा तालाव । हरिण पकडनेका जाल.

तडित्, (स्त्री०) ताडयति मेघम् । जो बादलको फटकारती है । चुरा० तड्-नि० । विजली.

तडित्वत्, (पु०) तडित् अस्ति अस्य मतुप् मको व । विजलीवाला । बादल.

तडिद्गर्भ, (पु०) तडित् गर्भे यस्य । बिजली जिसके गर्भ (मध्य)में है । बादल । मेघ.

तडिल्लता, (स्त्री०) तडित् लता इव । विजली जो वेलके स्वरूपमें है । तीक्ष्ण विजली.

तडिल्लेखा, (स्त्री०) तडितः लेखा । विजलीकी रेखा (लकीर).

तडिन्मय, (त्रि०) तडित्+मयट् । विजलीवाला । विजलीसे भरा हुआ.

तण्डक, (पु०) तडि+ण्वुल् (अक०) । ममोला । झाग । ऐसा वचन कि जिसमें समास (वहुत शब्दोंका एकशब्द हो जाना) बहुत हों । घरकी लकडी और वृक्षका स्कन्ध । मायावी । फरेवी । कतलकरनेवाला जन (त्रि०).

तण्डुल, (पु०) तडि+उलच् । धानोंका सार । चावल । तोहररहित धान.

तत्, (अव्य०) तन्+क्विप् । हेतु । इसलिये । इसकारण.

तत, (न०) तन्+क्त । वीणा आदि बाजा । वायु । हवा (पु०) । घिराहुआ । फैलाहुआ (त्रि०).

ततम, (त्रि०) तद्+डतम् । वहुतोंमेंसे एक । "ततर" । दोनोंमेंसे एक.

ततस्–ततः, (अव्य०) तद्+तसिल् । उस पुरुष वा स्त्रीसे वा उस स्थानसे । वहांसे । उसके अनन्तर.

ततस्त्य, (त्रि०) अव्ययसे त्यप् होता है । तत्रभवः । वहां होनेहारा । वहांका.

तति, (स्त्री०) तन्+क्तिन् । श्रेणी । कतार । समूह । फैलना.

तत्काल, (पु०) सः कालः । वह समय । वर्तमानकाल । होरहासमय.

तत्कालधी, (त्रि०) तस्मिन् योग्ये समये धीर्मतिर्यस्य । जिसकी ठीक समयपर बुद्धि फुरे । सिरपर आई विपत्तिको दूर करनेवाली अकल.

तत्क्रिय, (त्रि०) वेतनं विना क्रिया यस्य । तनखाहके विना काम करनेहारा.

तत्क्षण, (पु०) स चासौ क्षणः । उसी वक्त । झट्ही । सद्यः । जल्दीसे.

तत्त्व, (न०) तन्+क्विप् । ततो भावः । तस्य भावः । त्व वा तलोपः । सचाई । स्वरूप । असली शकल । परमात्मा । ब्रह्मपन । नाचना । बजाना । गाना । चित्त । वस्तु । सांख्यके २५ पदार्थ.

तत्त्वज्ञान, (पु०) ६ त० । यथार्थज्ञान । सचाज्ञान । ब्रह्मज्ञान । ब्रह्मका जान्ना.

तत्त्वविद्, (त्रि०) तत्त्वं वेत्ति । ठीक २ जानता है । दार्शनिक । ब्रह्मके वास्तविक स्वरूपको जाननेहारा.

तत्त्वाभियोगः, (पु०) तत्त्वेन अभियोगः । यथार्थ अपराध । सच्ची नालिश.

तत्पर, (त्रि०) तत् परं (उत्तमं) यस्य । तद्गत । उसमें गया । उसीमें फसगया.

तत्परायण, (त्रि०) तदेव परं अयनं यस्य (णत्व) । वही जिसका बडा आश्रय है । तदासक्त । उसीमें निरंतर लगाहुआ.

तत्पुरुष, (पु०) मुख्य पुरुष । परमात्मा । समासोंमेंसे एक । (जिसमें पहिला पद दूसरे पदके अर्थको जताता है) जैसे "राजपुरुषः".

तत्पुरुष, (पु०) सः पुरुषः । वह मुख्य पुरुष वा परमात्मा । एकप्रकारका समास जिसमें प्रथम पद प्रधान होता है.

तत्र, (अव्य०) तस्मिन् कालादौ त्रल् । उस समय । उस जगह । वहां.

तत्रत्य, (अव्य०) तत्र भवः (अव्ययसे त्यप्) । वहां होनेवाला । वहांकी चीज.

तत्रभवत्, (त्रि०) सः पूज्यो भवान् (प्रथमाके अर्थमें त्रल्) कर्म० । पूज्य । पूजा करनेके लायक । हजूर (जो आंखोंसे परे हो उसके लिये बोला जाता है । इज्जतको जाहिर कर्ता है).

तथा, (अव्य०) प्रकार अर्थमें थाच् (था) । साम्य । वैसेही । पहिलेकी भांति मानलेना । निश्चय । उसी तौरपर.

तथाकृत, (त्रि०) तथाकृतः इस प्रकार किया गया । वैसे किया हुआ.

तथागत, (त्रि०) तथा गतः । ऐसी दशामें हुआ । ऐसी हालतमें प्राप्त हुआ.

तथागुण, (त्रि०) तथा गुणाः यस्य । वैसे गुणोंवाला.

तथाच, (अव्य०) पहिले कहेहुए अर्थको पक्का करना । उसपरभी । जैसा कि.

तथारूप, (त्रि०) तथा रूपं यस्य । वैसे रूप (शकल) वाला.

तथाविध, (त्रि०) तथा विधा यस्य । वैसे प्रकारवाला । इस तरहवाला.

तथात्वम्, (न०) तथा त्व । वैसापन.

तथाहि, (अव्य०) निदर्शन । मसाल । दृष्टान्त । प्रसिद्ध है । जैसा कि.

तथ्य, (न०) तथा । तत्र साधुः+यत् । सत्य । सच । सचवाला (त्रि०).

तद्, (त्रि०) तन्+अदि । पहिले कहाहुआ । बुद्धिमें ठहराहुआ । विचार करनेलायक । दूरका विषय । ब्रह्म (न०) "ओं तत्सदिति" गीता.

तदनन्तर, (त्रि०) तस्मात् अनन्तरः । उसके अनन्तर (पीछे) वाला ।-रं(अव्य०) उसके अगला । इसपर.

तदर्थ, (त्रि०) तस्य अर्थः । उसके प्रयोजनवाला । उसवाला.

तदर्ह, (त्रि०) तस्य अर्हः । उसके योग्य । उसके लायक.

तदवधि, (अव्य०) वहांतक.

तदवस्थ, (त्रि०) सा अवस्था यस्य । उस दशाअवस्था (हालत) वाला.

तदा, (अव्य०) तस्मिन् काले दाच् । उस समय । तब । उसवक्त.

तदात्मन्, (त्रि०) स आत्मा यस्य । जिसका वह स्वरूप हो । उस रूपवाला.

तदानीम्, (अव्य०) तस्मिन् काले । तद्+दानीम् । तब । उसवक्त.

तदेकचित्त, (त्रि०) तस्मिन् एकं चित्तं यस्य । उसमें एक चित्तवाला । उसीपर एक चित्त लगाये हुए.

तद्गत, (त्रि०) तस्मिन् गत आसक्तः । तत्पर । एकमन होनेसे उसीमें लगाहुआ.

तद्गुण, (पु०) अर्थालङ्कारविशेष.

तद्गुणसंविज्ञान, (पु०) तत्र (बहुव्रीहौ) गुणस्य (विशेषणस्य) संविज्ञानं (विशेष्यपारतन्त्र्येण बोधनं) यत्र । व्याकरणमें बहुव्रीहिसमासका एक भेद । जहां विशेष्यके आधीन होकर विशेषणका ज्ञान हो जैसे "लम्बकर्णमानय" यहां गुणीभूत कर्णका भी लाना है.

तद्धन, (त्रि०) तदेव धनं यस्य । जिसका वही धन है । कृपण (सूम) । (इसे जितना मिले उसे थोडा समझकर अपनेमें उतनेही धनका अभिमान करताहै).

तद्धर्मन्, (त्रि०) किसी और उद्देश्यके बिना जिसका वही धर्म हो "यह अपना धर्म है" ऐसा समझकर धर्ममें लगाहुआ जन.

तद्धित, (पु०) तेभ्यः हितः । उनके लिये हितकारी । व्याकरणमें नामके आगे लगनेवाले प्रत्यय.

तद्वत्, (अव्य०) तेन तुल्यं वा तुल्या सा चेत् क्रिया । उसके समान क्रियावाला । उसके समान । "तद्वत् शिवस्य विभुता."

तन्, फैलना-विस्तृत होना । उभ० सक० सेट् । तनोति-तनुते । अतानीत्-अतनीत् । अतत-अतनिष्ट.

तनय, (पु०) तनोति कुलम् । तन्+कयन् (अय) । जो कुलको फैलाता है । पुत्र । बेटा । लडकी । बेल । जीवीकंद (स्त्री०).

तनिमन्, (पु०) तनोर्भावः इमनिच् । छोटेका होना । छुटाई । कार्श्य । बारीक । नाजुकपना.

तनु, (स्त्री०) तन्+उ । देव । शरीर । मूर्ति । शकल (वा ऊङ्) । थोडा । विरला । कृश । बारीक । नाजुक । (स्त्रियां वा ङीप्) तन्वी-तनुः.

तनु(नू)ज, (पु०) तनोः तन्वा वा जायते । जन्+उ । शरीरसे उपजा । पुत्र । बेटा । लडकी (स्त्री०) । जो देहसे उत्पन्न हो (त्रि०).

तनुच्छाय, (पु०) तन्वी छाया यस्य । जिसकी थोडी छाया हो । बर्बुरक वृक्ष । शरीरकी छाया वा शोभा । ६ त० । (स्त्री० न०).

तनुत्यज्, (त्रि०) तनुं त्यजति । शरीरको छोडनेवाला । मरनेवाला.

तनुज, (पु०) तनोः वा तन्वाः जायते । शरीरसे उत्पन्न होता है । पुत्र । बेटा ।-जा (स्त्री०) पुत्री । बेटी.

तनुत्र, (न०) तनुं (देहं) त्रायते । त्रै+क । जो शरीरको बचाता है । कवच । जिरह । ल्युट् । "तनुत्राणं" यही अर्थ.

तनुभस्त्रा, (स्त्री०) तनोः (देहस्य) भस्त्रा इव । मानों शरीरकी फूंकनी है । नासिका । नाक । कर्म० । छोटी धौकनी.

तनुभृत्, (पु०) तनुं (देहं) बिभर्ति । (आत्मत्वेन अभिमन्यते) भृ+क्विप् । जो शरीरको अपना मानलेता है । जीव । "या दुस्त्यजा तनुभृतां".

तनुवार, (न०) तनुं (देहं) वृणोति । वृ+अण् । उप० । जो शरीरको ढांक लेता है । कवच । जिरह । सन्नाह.

तनुस्, (न०) तन्+उसि (उस्) । देह । शरीर । जिस्म.

तनूनपात्(द्), (पु०) तनुं न पातयति । पत्+णिच्+क्विप् । जो शरीरको न गिरनेदे । अग्नि । आग । पेटमें रहकरभी खायेहुए अन्नको पकानेसे यह देहको गिरने नहिं देती । तनूं न पाति (रक्षति) । पा+शतृ । जो शरीरको न बचावे । वह्नि । आग । (यह शरीरको जला देती है) । (पक्षे) तन्वा ऊनं कृशं पाति तनूनपं घृतादि तत् अत्ति । अद्+क्विप् जो निर्बलको बचावे (घी) । उसे खाजाय । वह्नि । आग.

तनूरुह, (न०) तनौ रोहति । रुह्+क । जो शरीरपर उगता है । लोम । रोम । लूं । पक्षिओंके पर.

तन्तु, (पु०) तन्+तुन् (तु) । ग्राह । एकप्रकारका पानीका जीव । अपत्य । सन्तान । औलाद । सूत्र । सूत । तान । तन्द.

तन्तुकीट, (पु०) तन्तूत्पादकः कीटः । सूतको निकालनेवाला कीट (कीडा) । रेशमी कीडा.

तन्तुनाग, (पु०) तन्तुवत् दीर्घः नागः । बडा लंबा नाग (सर्प).

तन्तुनाभ, (पु०) तन्तुः नाभौ अस्य । अघ् स० । जिसकी नाभिमें सूत हो । लूता । मकडी.

तन्तुनिर्यास, (पु०) तन्तुः इव निर्यासः यस्य । जिसकी गोंद तांतोंके समान हो । तालका वृक्ष.

तन्तुपर्वन्, (न०) तन्तोः यज्ञोपवीतस्य दानरूपं पर्व । यज्ञोपवीत (जनेऊ) के देनेका पर्व । सावन (श्रावण)-की पूर्णिमा । (इस दिन वामनजीको जनेऊ दान करनेका उत्सव किया जाता है).

तन्तुर-ल, (न०) तन्तुः विद्यते अस्य । र । लच् वा । तांतवाला । मृणाल । कमलकी डण्डी । भें.

तन्तुभ, (पु०) तन्तुवत् भाति । तांतकी तरह चमकता है । सरसोंका बीज । वत्स । वच्छा । वछेरा.

तन्तुवर्धन, (पु०) तन्तुं=वंशं वर्धयति+वृध्+ल्यु । वंशको वढानेवाला । विष्णु । शिव.

तन्तुवाद्यं, (न०) तन्तुमिश्रं वाद्यं । तान्तोंवाला वाजा । सितार । बीन.

तन्तुवाप, (पु०) तन्तून् वपति । वन्+अण् उप् । जो तांतोंको वोता है । तन्तुवाय । जुलाहा । वुनेवाला.

तन्तुवाय, (पु०) तन्तून् वयति । वे+अण् । जो तांतोंको वुनता है । जुलाहा । जातिविशेष.

तन्तुविग्रह, (स्त्री०) तन्तवः विग्रहे यस्याः । जिसके शरीरमें तांतें हों । कदली । केला । इसकी खालमें वहुत सूत प्रकट होते हैं.

तन्तुशाला, (स्त्री०) तन्तूनां वपनाय शाला । तांत वुनेका घर । सूत वुनेका घर । जुलाहेका घर.

तन्तुसन्तत, (त्रि०) तन्तुभिः सन्ततं (व्याप्तं) । जो तांतोंसे घिराहो । स्यूतवस्त्र । सीयागया कपडा.

तन्त्र, (न०) तन्+ष्ट्रन् । सिद्धान्त । फैसला । औषध । दवाई । कुटुम्ब (कुनवा) का कार्य । प्रधान । बडा । जुलाहा । दूसरेके आधीन होकर करना । परिच्छद । पौशाक । हेतु । सवव । अर्थ (कार्य) को सिद्ध करनेहारा । तंतु । तांत । अपने राज्यकी चिन्ता । परिजन । नौकर । चाकर । तन्तुवाय (जुलाहेकी सलाई) । प्रवन्ध । वन्दोवस्त । शपथ । कसम । सौं । धन । घर । वोनेका साधन । कुल । वेदकी एक शाखा । वेदादि शास्त्र । अपने नामसे प्रसिद्ध शिवजीका कहाहुआ शास्त्र.

तन्त्रक, (न०) तन्त्रात् अचिरात् अपहृतं+कन् (क) । जल्दी लियागया । नवीन वस्त्र । नया कपडा.

तन्त्रावाप, (य), (पु०) तन्त्राणि (तन्तून्) वप(य)-ति । वप्-वा-वे+अण् । उप० । तन्तुवाय । जुलाहा । तांती.

तन्त्रिका, (स्त्री०) तन्त्र्यते । तन्त्र+ई (फिर) स्वार्थे कन् (क) । गिलोय.

तन्त्री, (स्त्री०) तन्त्रि+ई । गिलोय । एक प्रकारकी वीणा. सितार । शरीरकी । रस्सी । एक नदी । एक जवान औरत.

तन्द्रा, (स्त्री०) तन्द्रि+अ । आलस्य । ऊंघना । नींद । जागोमीटी । प्रमीला.

तन्द्रालु, (त्रि०) तन्द्रि+आलुच् । निद्राशील । वहुत सोनेवाला.

तन्द्रित, (त्रि०) तन्द्रा जाता अस्य-तन्द्रा+इतच् । जिसे ऊंघ आगई है । आलसी.

तन्द्रिन्, (त्रि०) तन्द्रा+इन् । आलसी । सुस्त । विश्रान्त । थकाहुआ.

तन्मंय, (त्रि०) तदेव । मयट् । वही । उसी स्वरूपको पहुंचा । अभेद । वही । तद्रूप.

तन्मय, (त्रि०) तद्+मयट् । उसका वनाया हुआ । उस स्वरूपवाला.

तन्मात्र, (त्रि०) तदेव । तदात्मक । वही । उसी शकलका । शब्द-स्पर्श-रूप-रस और गंध.

तन्वी, (स्त्री०) तनु+ङीप् । एक प्रकारकी वेल । कृशाङ्गी । नाजक स्त्री । क्षीणमध्या । पतली कमरवाली स्त्री । एक प्रकारका छन्द.

तप्, दाह-जलाना । भ्वा० उभ० सक० सेट् । तपति-ते । अताप्सीत्-अतप्त । अतपिष्ट.

तप, (पु०) तप्+अच् (अ) ग्रीष्म । गरमी । जेठ और हाडका महीना.

तपःक्लेश, (पु०) तपसः क्लेशः । तपस्याका दुःख.

तपती, (स्त्री०) तप्+शतृ-ङी० । छाया नामवाली सूर्यकी स्त्री । एक नदी । सूर्यकी कन्या (जिसके योगसे कुरु तापत्य कहे जातेहैं).

तपन, (पु०) तप्+ल्यु (अन) सूर्य । ताप । गरमी । भल्लातकवृक्ष । एक नरक । गर्मीका मौसम (ऋतु) । आकका वृक्ष । सूर्यकान्तमणि.

तपनतनय, (पु०) ६ त० । यम । यमुना और शमी (जंडी) वृक्ष (स्त्री०).

तपनमणि, (पु०) तपनस्य मणिः । सूर्यमणि.

तपनात्मजा, (स्त्री०) तपनस्य=सूर्यस्य आत्मजा । सूर्यकी पुत्री । यमुना.

तपनी, (स्त्री०) तप्+ल्यु (अन) ङीष् । गोदावरी नदी.

तपनीय, (पु०) तप्+अनीयर् । स्वर्ण । सोना । तपनेलायक । स्वार्थे कन् । यही अर्थ.

तपश्चरण, (न०) तपसः चरणं । तपस्याका करना । तपका अभ्यास.

तपस्, (पु०) तप्+असुन् । माघका महीना । शिशिर ऋतु । जनलोकके ऊपरका लोक । आलोचन । सोचना । अपने आश्रमका विहित धर्म । चान्द्रायण आदि कर्म (ज्योतिषमें) लग्नसे नवम घर.

तपस्य, (पु०) तपसि साधुः (अनतिशीतोष्णत्वात्) यत्। तपस्या करनेके लिये जो अच्छा हो (जिस्में न तो बहुत गर्मी और न सर्दी हों) फाल्गुनमास । फागनका महीना । "तपसि (माघे) भवः" । कुन्दनामी पुष्प (फूल) । तपस्यामें लगाहुआ (त्रि०).

तपस्या, (स्त्री०) तपः चरति । तपस्+क्यच् (य)+अ । तपश्चरण । तपस्या करना । व्रत करना । व्रतचर्या.

तपस्विन्, (त्रि०) तपस्+(है इस अर्थमें) विनि (विन्) जो तपस्या कर्ताहै । तापस । तपस्या करनेवाला । चान्द्रायण आदि व्रत करनेहारा । दीन । अच्छे तपवाला । चिडिया (पु०).

तपस्विनी, (स्त्री०) तपस्+(विनि-विन्)+ङीप् (ई) । तपस्या करनेहारी स्त्री (औरत) दीना । दुःखिया औरत। दया करनेलायक स्त्री (औरत) । जटामांसी.

तपात्यय, (पु०) तपस्य (ग्रीष्मस्य) अत्ययः (अवसानं) यत्र काले । जिस समय गर्मीका अन्त हो जाता है । वर्षाकाल । वर्षातका मौसिम । "तपात्यये वारिभिरुक्षितेति" कुमारः.

तपोधन, (पु०) तपः धनं (अतीवेप्सितत्वात्) यस्य । जिसका तपही (बहुत पियारा होनेसे) धन है । तापस । तपस्या करनेहारा । तपन नामी वृक्ष.

तपोनिधि, (पु०) तप एव निधिः यस्य । तपोरूप कोपवाला । बडा पवित्र पुरुष.

तपोनिष्ठ, (त्रि०) तपसि निष्ठा यस्य । तपस्या करनेवाला । तपमें लगा हुआ.

तपोबलं, (न०) तपसः बलम् । तपका प्रभाव वा बल (जोर).

तपोभृत्, (त्रि०) तपः बिभर्ति । तपको धारण करनेवाला । तपस्वी.

तपोमूर्ति, (पु०) तपसः मूर्तिः । तपका स्वरूप । यति । तपस्वी । परमात्मा.

तपोराशि, (पु०) तपसः राशिः । तपका समूह । तपस्वी । संन्यासी.

तपोलोक, (पु०) तपसः लोकः । जनलोकके ऊपरका लोक.

तपोवन, (न०) ६ त० । तपस्याका वन । एक वन जहां तपस्वी निवास कर्ते हैं । एक तीर्थका नाम.

तपोवास, (पु०) तपसः वासः । तपस्याका स्थान.

तपोवृद्ध, (त्रि०) तपसि वृद्धः । तपस्यामें बडा हुआ । बडा यति वा संन्यासी वा भक्त.

तपःशील, (त्रि०) तपसः शीलं यस्य । तप करनेके स्वभाववाला.

तपःसमाधि, (पु०) तपसः समाधिः । तपका अभ्यास.

तपःस्थली, (स्त्री०) तपसः स्थली । तप करनेका स्थान.

तप्तकाञ्चनं, (न०) तप्तं काञ्चनं । अग्निमें तपाया हुआ सुवर्ण (सोना).

तप्तकुम्भ, (पु०) तप्तः कुम्भः यत्र । जहां तपाहुआ घडा हो । नरकभेद । एक नरकका नाम.

तप्तकृच्छ्र, (न०) एक प्रकारका व्रत (जिसमें तीन २ दिन तपाहुआ जल (पानी) घी और वायु (हवा) पीना पडता है अर्थात् पहिले तीन दिन गर्म पानीही पीना, दूसरे तीन दिन गर्म घी पीना और तीसरे तीन दिन गर्म वायुको पान करके व्यतीत करना).

तम्, खेद-थकजाना । तकलीफ उडाना । अक० । चाहना (इच्छा) सक० दिवा० पर० सेट् । ताम्यति । अतमत्-अतमीत् । तमित्वा-तान्त्वा.

तम, (पु०) ताम्यति । तम्+अच् (अ) । तमोगुण । राहु (एक मतमें) तमालका वृक्ष.

तमस्, (न०) तम्+असुन् (अस्) । नेत्रकी वृत्तिको निरोध करनेहारा रात आदिका अंधेरा । शोक (अफ्सोस) । पाप (गुनाह) कार्य (करनेलायक) और अकार्य (न करनेयोग्य) का न विचारना । विशेष दर्शनको रोकनेहारा दोष । "गुरुवरणकमेव तमः" सांख्य । एक गुण (जिसके साथ जीव अंधा हो जाताहै) । राहु.

तमस्विनी, तमस् (अस्त्यर्थे) विनि (विन्) । जिसमें अंधेरा हो । रात्रि । रात.

तमाल, (पु०) तम+कालन् (आल) । एक वृक्ष । तिलक । वरुणवृक्ष । खड्ग । तलवार.

तमि–मी, (स्त्री०) तम+इन् वा ङीप् (ई) । अंधेरेवाली रात । रात्रि.

तमिस्र, (न०) तमः अस्ति अत्र । र । नि० । अंधकार । अंधेरा । कोप । गुस्सा । सारे अहंकारकी जड । अज्ञान । अंधेरी रात (स्त्री०).

तमिस्रपक्ष, (पु०) तमिस्रप्रधानः पक्षः । अंधेरापक्ष, (पखवाडा).

तमोघ्न, (पु०) तमः (अन्धकारं-मोहं- अज्ञानं वा) हन्ति हन्+ठक् (अ) । जो अंधेरे-मोह-वा अज्ञानको नाश कर्ता है । सूर्य । अग्नि । चन्द्र । चांद । बुद्ध । विष्णु और शिवजी.

तमोज्योतिस्, (पु०) तमसि (अंधकारे) ज्योतिः अस्य । जो अंधेरेमें चमकता है । खद्योतकीट । टणाना.

तमोनुद, (पु०) तमः नुदति, अंधेरेको दूर करनेवाला । सूर्य । चन्द्रमा । परमेश्वर.

तमोपह, (पु०) तमः (अंधकारं-अज्ञानं वा) हन्ति । जो अंधेरे वा अज्ञान (बेसमझी) को दूर कर्ता है । अप+हन्+ड (अ) । सूर्य । चांद । वह्नि । आग । नक्षत्र । ज्ञान । जाना.

तमोभिद्, (पु०) (तमः भिनत्ति+भिद्+क्विप्) । अंधेरेको फाडनेवाला । खद्योत । टटाना.

तमोविकार, (पु०) तमसां विकारः । अंधेरेका विकार । व्याधि । बीमारी.

तमोवृत, (त्रि०) तमसावृतः । अंधेरेसे ढका हुआ । बिगडा हुआ । बादलसे ढका हुआ । क्रोधसे भरा हुआ.

तरक्षु, (पु०) तरं (गतिं-मार्ग वा) क्षिणोति । जो रास्तेको रोकता है । पशुओंको खानेवाला छोटा मेडिया.

तरङ्ग, (पु०) तॄ+अङ्गच् (अङ्ग) । उर्मी । लहर । वायुसे हिलकर पानीका नीचे ऊपर उछलना.

तरङ्गिणी, (स्त्री०) तरङ्ग (अस्त्यर्थे) इनि (इन)+ङीप् (ई) लहरोंवाली नदी । दर्या.

तरङ्गित, (त्रि०) तरङ्गः सञ्जातः अस्य । इतच् । जाततरङ्ग । जिसमें लहरे हों । लहरीला । लहरोंवाला । चंचल.

तरण, (पु०) तॄ+ल्यु (अन) मेलक । मेला । डोङ्गा । और स्वर्ग । भावे ल्युट् (अन) पारजाना । तरना (न०).

तरणि, (पु०) तॄ-अणि (अनि) । सूर्य । डोंगा । आकका वृक्ष । किरण और तांवा (मा) । बेडी । नौका । जीमीकंद (स्त्री०).

तरंत, (पु०) तॄ+झच् । समुद्र । भारी मेघका धमाधम वर्सना । मेंडक । एक दैत्य । राक्षस । भक्त । ती (स्त्री०) नौका । किश्ती.

तरतम, (त्रि०) न्यून (कम) अधिक (जियादा) भाववाला अर्थ । जो शब्दके अन्तमें लगानेसे दोमेंसे एककी (तर) और बहुतोंमेंसे एककी (तम) अधिकता जतानेवाले प्रत्यय.

तरपण्य, (न०) तरस्य (नद्यादिपारयानस्य) पण्यं (शुल्कं) । नदी आदिके पार जानेका मासूल । नदी आदिके पारजानेके लिये देनेलायक फीस (मासूल).

तरल, (पु०) तॄ+अलच् । हारके बीचकी मणि । हार । और तल । चपल । कामी । विस्तार । चमकीला । वहां हुआ पदार्थ खिचडी । लप्सी । मद्य । शराव (स्त्री०).

तरलनयना, (स्त्री०) तरले नयने यस्याः व० स० । चंचल नेत्रोंवाली.

तरलित, (त्रि०) तरल+इतच् । चंचल । कांपनेवाला.

तरवारि, (पु०) तरं (शत्रूणां गतिं) वारयति । वृ+णिच् (इ)+इन् । जो शत्रुओंकी गतिको रोकता है । एक तरवार.

तरस्, (न०) तॄ+असुन् (अस्) । जल । वेग । तेजी । जल्दीसे जाना । रोग । तीर । वानर.

तरसा, (अव्य०) झटिति । बहुत जल्दी । झट.

तरस्विन्, (पु०) तरस्+(अस्त्यर्थे) विनि (विन्) वायु । हवा । गरुड । तेज चलनेवाला शूर (बहादुर) (त्रि०).

तरि-री, (स्त्री०) नौका । द्रोणी । बेडी । कपडेकी पिटारी । कपडेका पल्लडा.

तरु (ष) खण्ड, (पु०) तरूणां समूहः तरु+ष (ख) ण्ड । वृक्षोंका समूह । वृक्षोंके टुकडे.

तर, (त्रि०) तॄ+भावे अप् । लांघनेवला । तरनेवाला । जीतनेवाला.

तरण, (पु०) तॄ+ ल्युट् । नौका । किश्ती । स्वर्ग.

तरुण, (पु०) तॄ+उनन् (उन) । एरण्डका वृक्ष । मोटा जीरा । कुब्जपुष्प । एक प्रकारका फूल (न०) । नूतन (नया) । जवान (त्रि०) । फिर उदयहुआ । गर्म । कोमल । ताजा । सद्यः मट्टीके तेलका पौदा । जवान औरत (स्त्री) । "वृद्धस्य तरुणी विषम्" हि० प०.

तरुणज्वर, (पु०) एक ज्वर (बुखार) जो बराबर सात दिनतक रहता है । एक सप्ताहतक रहनेवाला ताप.

तरुमृग, (पु०) तरोः मृगः । वृक्षका मृग । बंदर । वानर.

तरुराज, (पु०) तरूणां राजा+टच् । वृक्षोंका राजा । तालका वृक्ष । पारिजातक.

तरुशायिन्, (पु०) तरौ शेते-शी+णिनि । वृक्षपर सोनेवाला । पक्षी । परिंदा.

तरुणिमन्, (पु०) तरुण+इमन् । जवानपना । जवानी । जवान । युवा.

तरुविलासिनी, (स्त्री०) वृक्षकी मानों विलासिनी है । नवमल्लिका.

तर्क, (पु०) तर्क्+घञ् (अ) । आकाङ्क्षा । जानेकी चाह । दलील । वितर्क । शक । खयाल । संभावना । ढकवंज । "प्रसन्नस्ते तर्कः" वे० सं० । विवाद (झगडा) । न्यायशास्त्र । हेतु । केवल दलीलको माननेवाला शास्त्र । जहां व्याप्य (हेतु) को मानकर व्यापकभी माना जाय । जैसे "यदि यहां आग न होवै तो धूम भी न होगा" । मीमांसा आदि शास्त्र । वेदशास्त्रके साथ विरोध न रखनेहारी दलीलसे वेदशास्त्रकी परीक्षा करना । व्यभिचार (हेतुमें दोष) की शंकाको मिटानेहारे । न्यायमें कहेहुए आत्माश्रय आदि पांच दोष । न जानेहुए अर्थको दलीलोंसे ठीक २ जानना.

तर्क्, दीप्ति (चमकना)-अक० वितर्क । खयाल करना । शक करना । अनुमान करना । सक० चुरा० उभ० सेट् । तर्कयति-ते । अततर्कत्-त.

तर्कक, (त्रि०) (तर्क+ण्वुल्) तर्क (दलील) करनेवाला.

तर्कविद्या, (स्त्री०) तर्कस्य विद्या । तर्क (युक्ति) की विद्या (इल्म).

तर्कशास्त्रं, (न०) तर्कस्य शास्त्रं । तर्कका शास्त्र । न्यायशास्त्र (मंतक).

तर्काभास, (पु०) तर्कस्य आभासः निगमनं । बातका निचोडमें झूठा हेतु.

तर्किन्, (त्रि०) तर्क+णिनि । तर्क करनेवाला । दलीलबाज । नैयायिक । मंतकी.

तर्कु, (पु०) कृत्+उ-नि० । एकप्रकारका यन्त्र (जिसपर रुई निकासते हैं) बेलना । कातनेका साधन.

तर्ज्, भर्त्सन । झिडकना । चुरा० आत्म० सक० सेट् । तर्जयते । अततर्जत् । भ्वा० पर० सक० सेट् । तर्जति । अतर्जीत्.

तर्जनं-ना, (न० स्त्री०) तर्ज+भावे ल्युट् । झिडकना । निरादर करना । निन्दा करना । शर्मिंदा करना.

तर्जित, (त्रि०) तर्ज्+क्त । झिडकागया । डराया गया । निन्दा किया गया । निराहार किया गया.

तर्जनी, (स्त्री०) तर्ज्यतेऽनया । तर्ज्+ल्युट् (अन) । जिस्से झिडकते हैं । अंगूठेकी पासकी अंगुली.

तर्ण, (पु०) तृण्+अच् (अ) । वत्स (पियारा) । ण्वुल् (अक०) । गौका वछडा । अभी उत्पन्न हुआ बचा.

तर्द, हिंसा (मारना) । भ्वा० पर० सक० सेट् । तर्दति । अतर्दीत्.

तर्दू, (स्त्री०) तर्द-वृद् वा+उ । लकडीकी वनी हुई दर्वी (कडछी).

तर्पण, (न०) तृप्+ल्युट् । तृप्ति । रजना । "तृप्+णिच्+ल्युट् (अन) । खुश करना । ताजा करना । प्रसन्न करना । गृहस्थीपुरुषोंके करनेयोग्य । पांच यज्ञोंमेंसे पितृयज्ञ । यज्ञकी लकडी । देवता ऋषि और पितरोंको पानी देकर रजाना.

तर्पण, (त्रि०) तृप्+णिच्+वा ल्युट् । तृप्त करनेवाला । प्रसन्न करनेवाला । नित्य करनेयोग्य पांच यज्ञोंमेंसे एक । पितृयज्ञ.

तर्पित, (त्रि०) तृप्+णिच्+क्त । खुश (प्रसन्न) किया गया.

तर्व, गति-जाना । भ्वा० सक० पर० सेट् । तर्वति । अतर्वीत्.

तर्ष, (पु०) तृष्+घञ् (अ) । अभिलाष । चाह । तृष्णा । लालच.

तर्हि, (अव्य०) तद्+र्हिल् (र्हि) तदा । उसवक्त (समय).

तल्, प्रतिष्ठा । स्थिर होना । कायम करना । पूरा करना । इकरार पूरा करना । चुरा० उभ० पक्षे भ्वा० पर० अक० सेट् । तालयति-ते । तलति.

तल, (पु० न०) तल्+अच् (अ) । स्वरूप (जैसे पृथिवीका तल । हाथका तल) । नीचेका भाग । चपेड । और तालका वृक्ष । तरवारकी मुट्ठी । आधार (आसरा) । और स्वभाव (पु०) वन (न०).

तलघात, (पु०) तलेन घातः । हाथकी तलीसे तमाचा मारना.

तलयुद्धं, (न०) तलेन युद्धम् । हाथकी तलिओंसे युद्ध करना.

तललोक, (पु०) तलः लोकः । तललोक । नीचेका संसार । पाताल.

तलिन, (त्रि०) तल्+इनन् । पतला । छोटा । स्पष्ट । साफ । निर्बल.

तलप्रहार, (पु०) तलेन(चपेटेन) प्रहारः । प्र+हृ+घञ् (अ) । चपेड मारना । चपेटका आघात (चोट).

तलातल, (न०) अतलादिमेंसे पांचवां पाताल.

तलित, (न०) तल्+इतच् । भृष्टमांस । भुनाहुआ मांस । तलाहुआ.

तलुन, (पु०) तृ+उनन् (उन) रको ल होता है । वायु । हवा । जवान । पट्ठा (त्रि०) । जवान औरत (स्त्री०) ङीप् (ई).

तल्प, (पु०) (न०) तल्+पक् (प) शय्या । छेज । अटारी । दारा । स्त्री.

तल्लज, (पु०) लज्-कान्ति-चाहना+अच् (अ) प्रशस्त । बहुत अच्छा (समासमें यह शब्द पीछे रहता है और अपने लिङ्गको नहिं छोडता) (ब्राह्मणीतल्लजः).

तष्ट, (त्रि०) तक्ष्+क्त (त) । छोटा कियागया । दो टुकडे टुकडे कियागया । गुणागया.

तष्टृ, (पु०) तक्ष्+तृच् । एक प्रकारकी जाति । विश्वकर्मा । तर्खान.

तस्, अलंकार-सजाना । चुरा० उभ० पक्षे भ्वा० पर० सक० सेट् । इदित् । तंसयति-ते । तंसति । अततंसत्-त । अतंसीत्.

तस्, उत्क्षेप । ऊपर फेंकना । दिवा० पर० सक० सेट् । तस्यति । अतसीत्-अतासीत् । तसित्वा-तस्त्वा.

तस्कर, (पु०) तत् करोति । तद्+कृ अच्-नि० । चोर । पीछे वा सामने दूसरेकी चीजको चुरानेहारा । दमनक वृक्ष.

ताच्छील्य, (न०) तत् शीलं अस्य ष्यञ् (य) । जिसका वही स्वभाव है । नियत । तत्स्वभाव । नियमसे उस स्वभाववाला.

ताटस्थ्य, (न०) तटस्थस्य स्वभावः+ष्यञ् (य) । उदासीन होना । पास होना.

ताडका, (स्त्री०) एक राक्षसी (जिसे रामचन्द्रजीने नाश किया.

ताडकेयः, (पु०) ताडकायाः अपत्यं+ढक् । ताडका राक्षसीका पुत्र । मारीच.

ताडनी, (स्त्री०) ताड्यतेऽनया । जिस्से चोट लगताहै । तड्-चोट लगाना+ल्युट् (अन) । कशा (कोडा) । चाबुक.

ताण्डव, (न०) तण्डुना (मुनिना) प्रोक्तं अनुष्ठानं यस्य अण् (अ) । जिसका प्रकार तण्डुमुनिने कहाहै । पुरुषके नाचको ताण्डव और स्त्रीके नाचको लास्य कहते हैं । पुरुषोंका नाच । एक प्रकारका घास । जोरसे नाचना.

ताण्डवप्रिय, (पु०) ताण्डवं प्रियं यस्य । पुरुषका नाच जिसे पियारा लगता है । शिवजी । नाचका पियारा । (त्रि०).

तात, (न०) तन्+क्त (त) दीर्घश्च । पिता । दया करने लायक । और पूजाके लायक (त्रि०) । पियारा । ताया.

राततुल्य, (पु०) तातेन तुल्यः । पिताके समान । चाचा । ताया.

तात्कालिक, (त्रि०) तत्काले भवः+ठक् । उसी समयमें होनेवाला.

तात्पर्य, तत्परस्य भावः ष्यञ् (य) । निचोड । मतलब । इरादा । कहनेवालेकी इच्छा (चाह) । अभिप्राय । एककाममें लगना.

तात्त्विक, (त्रि०) तत्त्वे भवः । तत्त्वमें होनेवाला । असल । दरअसल । पारमार्थिक.

तादर्थ्य, (न०) तस्मै इदं तदर्थं तस्य भावः ष्यञ् (य) । उसके लिये होना । उसके लिये तदुद्देश । उसकी बाबत.

तादात्म्य, (न०) स आत्मा (स्वरूपं यस्य) तस्य भावः ष्यञ् (य) । उसी स्वरूपका होना । अभेद । एकही स्वरूप । शकल.

तादृक्ष, (त्रि०) तस्य इव दर्शनं अस्य । दृश्+क्स । जो उसकी नाईं दिखलाई देता है । उस प्रकारका । उस जैसा.

तान, (पु०) तन्+घञ् (अ) । एक धागा । कमलकी तांत । (संगीतशास्त्रमें) लंबी आवाज (सुर) "तानप्रदायित्वमिवोपगन्तुम्" कु० (तानोंकी संख्या ४९ उनचास हैं) । फैलाव.

तानवं, (न०) तनोर्भावः । छोटापन । पत्तलापन । सूक्ष्मता.

तान्तव, (त्रि०) वी० (स्त्री०) तंतोर्विकारः+अञ् । तन्तु (सूत) का बना हुवा.

तान्त्रिक, (त्रि०) तन्त्रं (सिद्धान्तं) तन्नामकं शास्त्रं वा अधीते वेद वा ठक् (इक) । सिद्धान्त (असली बात) वा इस नामके शास्त्रको जो पढता वा जानता है । ज्ञातसिद्धान्त । जिसने सिद्धान्त जान लिया । ब्रह्मवादी । जो परमात्माके विषयमें बातचीत कर्ता है । तन्त्रशास्त्रके जानेहारा.

ताप, (पु०) तप्+घञ् (अ) सन्ताप । शोक । गर्मी । कृच्छ्र । मुश्किल । दुःख.

ताप, (पु०) तप्+घञ् । उष्णता । गर्मी.

तापक, (त्रि०) तप्+ण्वुल् । तपानेवाला । गरमी देनेवाला । जलानेवाला ।-कः-(पु०) ज्वर (बुखार).

तापत्रय, (न०) तापानां त्रयं । आध्यात्मिक आदि संसारके तीन ताप (दुःख).

तापन, (त्रि०) तप्+णिच्+भावे ल्युट् । गरम करनेवाला । जलानेवाला.

तापस, (पु०) तपसि साधुः अच् (अ) । तमालपत्र (इन दिनों तमाकूको भी इसी नामसे बोलते हैं । तेजपत्ता)"तपः अस्ति अस्य (अच्)" जो तप कर्ताहै (तपस्वी) (त्रि०) । दमनक वृक्ष (पु०).

तापसतरु, (पु०) तापसोपयुक्तः तरुः । तपस्विओंके कामका वृक्ष । इङ्गुदीका वृक्ष (इसके तेल आदिसे तपस्वीओंके सब काम पूरे होतेहैं).

तापहर, (त्रि०) तापं हरति । तापको दूर करनेवाला । शीतल करनेवाला । शान्ति (दिलासा) देनेवाला.

तापिञ्छ-ञ्ज, (पु०) । तापिनं छादयति जयति वा । छद्-जि वा ड (अ) । पृषो० । ताप दूर कर्ता है । तमालका वृक्ष.

तापित, (त्रि०) तप+णिच्+क्त । तपायागया । गरम किया गया । पीडा पहुंचाया गया.

तापिन्, (त्रि०) तप्+णिनि । तपानेवाला । किसी प्रकारकी व्याधिसे पीडित । गरम करनेवाला । गरम.

तापी, (स्त्री०) तापयति । अच् । ङीष् (ई) । विन्ध्य पर्वतमें पश्चिमओर वहनेवाली एक नदी.

तामरस, (न०) तामरे (जले) सस्ति । सस्+ड । जो जलमें सोता है । पद्म । सोना । धतूरा । बारह अक्षरोंके पादवाला एक छन्द.

तामस, (पु०) तमसि (अंधकारे) अविद्यागुणे वा रतः+अण् (अ) । अंधेरे वा अविद्या (बेसमझी)के गुणमें पचगया । सांप । उल्लू । नीच । "तमसा (गुणभेदेन) निर्वृत्तं+अण् (अ)" । जो तमोगुणसे बना है (सांख्यमें) तमोगुणसे उत्पन्नहुए अहंकार आदि (त्रि०) "तमसः (राहोः अपत्यं) अण्" राहुकी सन्तान । (ज्योतिषमें) राहुका पुत्र केतु । तमसा व्याप्ता अण् (अ) ङीप् (ई) । रात्रि । रात । जटामांसी । वह स्त्री जिसमें तमोगुण बहुत है (स्त्री०).

तामसिक, (त्रि०)-की (स्त्री०) तमसा निर्वृत्तं+ठञ् । अंधकारसे बना । अंधेरा । अंधेरेके साथ संबंध रखनेवाला.

तामिस्र, (पु०) तमिस्रं अस्ति अस्मिन् ण (अ) जिसमें अंधेरा हो । (सांख्यमें) अठारह प्रकारका विपर्यय (वस्तुको उलटा दिखानेहारा) रूप अज्ञान । भोगकी इच्छाके रुकनेसे उपजा क्रोध (गुस्सा) । राक्षस (जिसके बुरे आचार हैं) । एक नरक । जिसमें अंधेराही अंधेरा हो (न०).

ताम्बूल, (न०) तम्+उलच् (उल) बुक् आताहै । और दीर्घ होजाताहै । पाननामसे प्रसिद्ध नागवल्लीका पत्ता । गुवाक.

ताम्बूलकरङ्क, (पु०) ६ त० । पानका डब्बा । पानदान। पान रखनेका पात्र.

ताम्बूलपेटिका, (स्त्री०) तांबूलस्य पेटिका । पानकी पीटारी (डब्बा) । पानदान । पानपुडा.

ताम्बूलदः-धरः, वाहकः, (पु०) तांबूलं ददाति—धारयति वा तांबूलस्य वाहकः । पानदान उठानेवाला भृत्य (नौकर) जो आवश्यकता पडनेपर पान लगाकर देता है.

ताम्बूलवल्ली, (स्त्री०) तांबूलस्य वल्ली । तांबूल (पान) की वेल.

ताम्बूलाधिकार, (पु०) तांबूलस्य अधिकारः । पान देनेका काम.

ताम्बूलिक, (त्रि०) ताम्बूलं पण्यं अस्य+ठक् (इक) । पानका सौदा करनेवाला । पान बेचकर जीनेहारा । एक प्रकारकी जाति.

ताम्र, (न०) तम्+रक् (र) दीर्घ होगया । एक प्रकारका धातु (तामा) । एक प्रकारका कुष्ट (कोड) का रोग (बीमारी) । अरुण (लाल) वर्ण (रंग) (पु०) । लाल रंगवाला (त्रि०).

ताम्रकर्णी, (स्त्री०) ताम्रौ (अरुणौ) कर्णौ यस्याः । जिसके लाल कान हों । पश्चिम दिशाकी हथिनी । एक नदी.

ताम्रकार, (पु०) ताम्रं (ताम्रमयं) करोति । कृ+अण् (अ) तामेका काम करनेवाला । कसेरा । एक प्रकारकी जाति.

ताम्रकूट, (न०) ताम्रस्य (ताम्रवर्णस्य) कूटं इव । मानो तामेके रंगका ढेर है । तमाकू । "संविदाकालकूटश्च ताम्रकूटं च धुस्तुरं" इति तन्त्रम्.

ताम्रचूड, (पु०) ताम्रा चूडा यस्य । जिसकी चोटी (कलगी) तामेके रंगकी है । कुक्कुट । कुक्कड.

ताम्रपट्ट, (न०) ताम्रमयं पट्टं । तामेका पटरा । पट्टी । तामेका बनाहुआ लिखनेका पत्ता.

ताम्रपर्णी, (स्त्री०) एक नदी (मलय पर्वतमेंसे निकली है और इसमें मोती होते हैं).

ताम्रपल्लव, (पु०) ताम्राणि पल्लवानि यस्य । जिसके लाल पत्ते हों । अशोकवृक्ष.

ताम्रबीज, (पु०) ताम्रं बीजं यस्य । जिसका लाल बी हो, कुलत्थ । कुलथी.

ताम्रवल्ली, (स्त्री०) कर्म० । मञ्जिष्ठा । मजीठ (जिसकी लाल वेल हो).

ताम्रशिखिन्, (पु०) ताम्रवर्णा शिखा अस्ति अस्य । जिसकी चोटी लाल रंगकी हो । कुक्कुट । कुक्कड.

ताम्रसार, (पु०) ताम्रवर्णं सारं अस्य । तामेके रंगका जिसमें सार हो । लालचन्दनका वृक्ष (रक्तचन्दन) । तामेका सार (न०).

ताम्रिक, (पु०) ताम्रघट्टनं शिल्पं अस्य । जो तामेका काम कर्ता है । "ताम्रस्य अर्थे" ठक् (इक) । तामेका कांस्यकार (कसेरा) एक जाति । तामेका बनाहुआ पदार्थ.

ताय्, पालन करना-विस्तार-फैलना । भ्वा० आत्म० अक० सेट् । तायते । अतायि-अतायिष्ट । "णिच्" अततायत्-त.

तार, (पु०) तॄ+अपने अर्थमें+अच् (अ) । प्रेरण । चलाना । "णिच् करणादौ घञ् वा" । एक वानर । शुद्धमुक्ता (साफ मोती) । प्रणव (ओं) । देवीका प्रणव (ह्रीं) । और तरना । नक्षत्र (तारा) । नेत्र (आंख) के बीचकी कनीनिका (पुतली) (स्त्री०) । निर्मल (साफ) (न०) रूपा । बडी उंची आवाज । बहुत ऊंचा । निर्मल (साफ) (त्रि०) । एक प्रकारकी महाविद्या । वालीकी स्त्री । बृहस्पतिकी स्त्री (स्त्री०).

तारक, (पु०) तारयति । तॄ+णिच्+ण्वुल् (अक) । तारनेवाला । नाविक (मल्लाह) । मेला । और एक दैत्य । तारा । आंखकी पुतली (स्त्री०) टाप् (आ) । तारका (इ नहीं होता).

तारकजित्, (पु०) तारकं जितवान् । जी+क्विप् (भूते) । जिसने तारक दैत्यको जीतलिया । कार्तिकेय । स्वामिकार्तिक । "तारकहा".

तारकित, (न०) तारका जाताः अस्य इतच् (इत) । जिसमें तारे निकल आये हों । तारोंवाला । नक्षत्रयुक्त । आकाश-आसमान.

तारतम्य, (न०) तरतमयोर्भावः ष्यञ् (य) । न्यूनाधिक्य । कमजियादा । थोडाबहुत । भेद । फरक.

तारापति, (पु०) ६ त० । ताराका पति । शिवजी । चन्द्रमा । बृहस्पति । वालीनामी वानर और सुग्रीव.

तारापथ, (पु०) ६ त० । तारोंका भ्रमण करनेका रास्ता । आकाश । आसमान.

तारापथः, (पु०) ताराणां पंथाः । तारोंका मार्ग । आकाश । आसमान.

तारापीड, (पु०) तारा आपीड इव अस्य । तारा जिसका मानों भूषण है । चन्द्रमा । कादम्बरीकी कथामें प्रसिद्ध एक राजा.

ताराभ्र, (पु०) तारः (निर्मलः) जलशून्यः अभ्रः (मेघः) इव शुभ्रत्वात् । श्वेत (चिट्टा) होनेसे मानो पानीसे विना बादल है । कर्पूर । कापूर.

तारामैत्रकं, (न०) ताराभिः मैत्रकं । तारों (नक्षत्र मिलनें) की मित्रता । अचानकही परस्पर दोकी चार होनेसे मित्रता होजाना । आकस्मिक प्रेम.

तारावर्ष, (न०) ताराणां वर्ष। तारोंकी वृष्टि । वर्सना-गिरना.

तारिणी, (स्त्री०) तारयति । तॄ+णिच्+णिनि (इन्) ईप् (ई) । तारनेहारी । शिवजीकी स्त्री । पार्वती । दूसरी महाविद्या.

तारिन्, (त्रि०) तॄ+णिच्+णिनि । तारनेवाला । बचानेवाला.

तार्किक, (पु०) तर्कं वेत्ति अधीते वा ठक् (इक) । जो तर्क (दलील) को जानता है वा पढता है । तर्कशास्त्रको पढनेहारा । तर्कशास्त्रको जान्नेहारा । तर्कशास्त्र गौतम, कणाद और बृहस्पति आदिसे रचाहुआ है.

तार्क्ष्य, (पु०) तार्क्षस्य अपत्यं यञ् (य) । तार्क्ष (कश्यप)-की सन्तान । गरुड । अरुण (सूर्यका सारथि) । सांप । घोडा । सोना । रथ.

तार्क्ष्यध्वजः, (पु०) तार्क्ष्यः ध्वजो यस्य । गरुडके झण्डेवाला भगवान् विष्णु.

तार्णः, (त्रि०)-र्णी (स्त्री०) तृणस्य इदं-अण् । घासका बना हुआ.

तार्तीय, (त्रि०) तृतीय एव+स्वार्थे अण् । तीसरा । तीसरे-का सम्बन्धी ।-यं-(न०) तीसरा भाग (हिस्सा).

तार्तीयीक, (त्रि०) तृतीय-(अपने अर्थमें) +ईकक् । तीसरा । तृतीय.

ताल, (पु०) तल्+घञ् (अ) । णिच्-अच् वा । अपने नामका वृक्ष । हडताल । देवीका सिंहासन । गानपरिमाण । रागका वजन (शब्दकी क्रियाका मान-माप) । दोनों हाथोंका शब्द (ताली वजाना) कांसीका बनाहुआ वाजा । त्सरु (तलवारकी मूठ) । बारह वार जानु (गोड्डा) पर चारोंओर हाथ घुमानेसे जितना समय लगता है । ताला.

तालक, (न०) तल्+ण्वुल् (अक) । दर्वाजेको वंद कर-नेकी कला । ताला । हडताल.

तालध्वज, (पु०) तालचिह्नितः ध्वजः यस्य । जिसके झंडे-पर तालका निशान है । बलभद्र । बलराम.

तालपत्र, (न०) तालस्य पत्रं इव । मानो तालका पत्ता है । कर्णभूषण । कानका जेवर । ताडंक । एक प्रकारका सुवर्ण-निर्मित कानका भूषण.

तालवृन्त, (न०) ताले (करतले) वृन्तं (बधनं) अस्य । जिसका हाथकी तलीपर बंधन होता है । "तालस्य इव वृन्तं अस्य वा" । जिसका बंधन तालकी नाई हो । व्यजन । पक्खा (पंखा) "अपने अर्थमें कन्" यही अर्थ होता है.

तालव्य, (त्रि०) तालौ भवः+यत् । तालुसे संबंध रखने-वाला ।-वर्णः (पु०) तालुसे उच्चारण किया गया अक्षर.

तालाङ्क, (पु०) तालचिह्नितः अङ्कः (ध्वजः) अस्य । जिसके झंडेपर तालका चिह्न हो । बलभद्र । बलदेव.

तालिक, (पु०) तालेन (करतलेन) निर्वृत्तः ठक् (इक) हाथकी तलीसे बना । चपेट । थप्पड । हाथकी तली.

तालु, (न०) तरन्ति अनेन वर्णाः । तॄ+ञुण् (उ) रको ल होता है । जिससे अक्षर तैरते हैं । जीभ (इन्द्रिय)-का आसरा.

तालुजिह्व, (पु०) तालु एव जिह्वा यस्य । तालुही जिसकी जीभ है । कुम्भीर (संसार) । जीभके न होनेपरभी यह तालुहीसे रसका स्वाद लेता है.

तावक, (त्रि०)-की (स्त्री०) तव इदम् । तावकीन (त्रि०) (तव इदं+ठ+ईन) तेरा.

तावत्, (अव्य०) तत्परिमाणं अस्य । नि० । उसका इतना माप है । इतना । सारा । माप । अवधि (हद्द) । निश्चय । प्रशंसा । तारीफ । वाक्यका भूषण (सजावट) । तदा । (तव) । इतना बडा.

तिक्, जाना । भ्वा० आत्म० अक० सेट् । तेकते । तेकां-चक्रे । अतेकिष्ट.

तिक्त, (पु०) तिज्+क्त (त) । कसैला । खट्टा छ रसोंमेंसे एक.

तिग्म, तिज्+मक्-जको ग होता है । तीक्ष्ण । तेज । तेज चीज (त्रि०).

तिग्मरश्मि, (पु०) तिग्मा रश्मयः अस्य । जिसकी तेज किरणे हों । सूर्य । सूरज.

तिघ, घातन-कतल करना । स्वा० पर० सक० सेट् । तिघ्नोति । अतेघीत्.

तिज्, तीक्ष्णीकरण । तेजकरना । चुरा० उभ० सक० सेट् । तेजयति-ते.

तिज्, क्षमा (मुआफ) करना । अपने अर्थमें सन् (स) होताहै । भ्वा० आत्म० सक० सेट् । तितिक्षते । अति-तिक्षिष्ट । (जब सन् नहीं होता तो) तेजते । तेजिष्ट.

तितउ, (पु०) छाननी । चालनी.

तितिक्षा, (स्त्री०) तिज् । क्षमा करना (अपने अर्थमें सन्-अ-टाप्) क्षमा (मुआफी) । दूसरेसे कियेगये अपमान आदिको सहारना । शीत (सर्दी) उष्ण (गर्मी) आदिं सहारना.

तितिक्षु, (त्रि०) तिज्+सन् (स)+उ । शीत आदिं सहारनेवाला । ऐसी रीतिसे कि जिसमें प्राणोंका वियोग न हो जाय.

तित्तिर-रि, (पु०) तिति इति अव्यक्तशब्दं राति । रा+क (अ) डि वा । एक प्रकारका पक्षी (परिंदा) । तित्तिर । तीतर.

तिथि-थी, (पु० स्त्री०) अत्+इथिन्-पृ० वा ङीप् (ई) । चन्द्रमाकी पन्द्रह कलाओंके हिसाबसे होनेवाली प्रतिपदा आदि तिथि । पन्द्रहकी संख्या.

तिथिक्षय, (पु०) तिथीनां (तिथ्युपलक्षितचन्द्रकलानां क्षयः यस्मिन् । जिसमें चन्द्रमाकी कलाओंका क्षय=नाश होजाता है । दर्श (सूर्य और चन्द्रमाका संगम-मेल) अमावास्या । ६ त० । तिथिओंका नाश.

तिथिपत्री, (स्त्री०) तिथीनां पत्री । तिथि (तारीक) बतानेवाली पत्री.

तिथिप्रणी, (पु०) तिथीन् प्रणयति (स्वगत्या निष्पादयति) प्र+णी+क्विप् । जो अपनी गति (चाल) से तिथिओंको बनाता है । चन्द्रमा.

तिम्, आर्द्रीभाव । गीला होना । भ्वा० पर० अक० सेट् । तेमति । अतेमीत्.

तिमि, (पु०) तिम्+इन् (इ) मत्स्य । मच्छी । समुद्र । बडे शरीरवाला समुद्रका मच्छ.

तिमिङ्गिल, (पु०) तिमिं (मत्स्यं) गिरति । गृ-निगल जाना+खश् मुम् च । एक प्रकारका मच्छ । जो तिमि मच्छको भी निगल जाता है । वडाभारी मच्छ.

तिमित, (त्रि०) तिम्+क्त (कर्तामें) । निश्चल (न हिलनेवाला । कायम) । गीला.

तिमिर, (न०) तिम्+किरच् (इर) । अंधकार (अंधेरा) एक प्रकारका नेत्रोंका रोग (बीमारी).

तिरस्कृत, (त्रि०) तिरस्+कृ+क्त । तिरस्कार किया हुआ । बेइकात किया गया.

तिरश्चीन, (त्रि०) तिर्यक्+ख (अपने अर्थमें) (ईन) टेढा हो गया । " गतं तिरश्चीनमनूरुसारथेः " इति माघः.

तिरस्, (अव्य०) अंतर्धान । छिपना । तिरस्कार (बेइज्जती) तिरछा । वक्र.

तिरस्करिणी, (स्त्री०) तिरस्+कृ+णिनि-नि० । जवनिका (पडदा) "तिरस्करिण्यो जलदा भवन्ति" कुमारः.

तिरस्कार, (पु०) तिरस्+कृ+घञ् । अनादर । बेइजती । झिडक.

तिरोधान, (न०) तिरस्+धा+ल्युट् (अन) । अन्तर्धान । छिपना.

तिरोहित, (त्रि०) तिरस्+धा+क्त (त) । अन्तर्हित । छिपाहुआ । आच्छादित (ढकाहुआ).

तिर्यक्, (अव्य०) वक्र । टेढा । निरुद्ध । रुकाहुआ । पशु । पक्षी । टेढा चलनेवाला (त्रि०).

तिल्, स्नेह-चिकना होना । तुदा० पर० अक० अनिट् । तिलति.

तिल, (पु०) तिल्+क (अ) । अपने नामका वृक्ष । उसका फल.

तिलक, (पु०) तिल्+क्वुन् (अक) । तिल+कन् (क) वा । तिलवृक्ष । एक प्रकारका घोडा । एक प्रकारका रोग । चन्दन आदिका तिलक । (पु० न०) । प्रधान (त्रि०) " रघुकुलतिलकः " इति नाटकम्.

तिलकट, (न०) तिलस्य रजः । तिल+कटच् । तिलोंका चूरा । चूर्ण.

तिलकल्क, (पु०) तिलस्य कल्कः । तिलोंका चूरा । पिण्याक । खल.

तिलकालक, (पु०) तिल इव कालकः (कृष्णः) । जो तिलकी नांई काला हो । शरीरपर तिलके स्वरूपका निशान । एक प्रकारका रोग.

तिलतैल, (न०) तिलस्य स्नेहः । तिल+तैलच् (तैल) । तिलोंका स्नेह । तिलोंकी चिकनाई । " तिलरस " इसी अर्थमें.

तिलधेनु, (स्त्री०) तिलनिर्मिता धेनुः । तिलोंकी बनाई गई गौ । दान ब्राह्मको (देने) के लिये तिलोंकी बनाईगई गौ (धेनु).

तिलोत्तमा, (स्त्री०) रत्नोंका तिल २ (छोटा २ टुकडा) लाकर बनाईगई एक अप्सरा (स्वर्गकी वेश्या । कंजरी).

तिल्य, (न०) तिलानां भवनं (क्षेत्रम्)तिल्यं+यत् । तिलोंका खेत.

तिष्ठद्गु, (अव्य०) तिष्ठन्ति गावो यत्र । नि० । जिस समय गौएं सोनेके लिये ए ठहरती हैं (एक घण्टा वा डेढ घण्टा रात गये).

तिष्य, (पु०) तुष्यन्ति अस्मिन् । तुष्+क्यप् (य) नि० । पुष्यनक्षत्र । कलियुग । "तिष्यनक्षत्रमें उपजा" अण् तस्य लुक् । पुष्य नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ (त्रि०).

तिष्यफला, (स्त्री०) तिष्ये (कलियुगेऽपि) फलं यस्याः ५ व० । कलियुगमें भी जिसका फल होता है । आमलकी । आवला । आमला.

तीक, याचन (मांगना) । भ्वा० आत्म० द्विक० सेट् । तीकते । अतीकिष्ट .

तीक्ष्ण, (न०) तिज्+क्स्न (दीर्घ हो गया) । मरना । लडाई । विष । तेज । लोहा । शस्त्र (औजार) । आलसरहित और मोक्ष चाहनेवाला । योगी (पु०).

तीक्ष्णकण्टक, (पु०) तीक्ष्णः कण्टकः अस्य । जिसका कांटा तेज हो । धतूरा । इङ्गुदीवृक्ष । और वांस.

तीक्ष्णकन्द, (पु०) तीक्ष्णः कन्दः (मूलं) अस्य । जिसकी जड तेज हो । पलाण्डु । गंडा.

तीक्ष्णकर्मन्, (त्रि०) तीक्ष्णं कर्म यस्य । तेज काम करनेवाला । चालाक । उत्साही । दिलेर.

तीक्ष्णगन्धा, (पु०) तीक्ष्णः गन्धः अस्याः । जिसकी तेज गंध हो । वचा । राजिका । कंथारी । छोटी इलाइची । जीवन्ती.

तीक्ष्णतण्डुला, (स्त्री०) तीक्ष्णाः तण्डुला यस्याः । जिसके तेज चावल हों । पिप्पली । मघ.

तीक्ष्णदंष्ट्र, (पु०) तीक्ष्णाः दंष्ट्राः यस्य । तेज दाढोंवाला । व्याघ्र । चीता.

तीक्ष्णधारः, (पु०) तीक्ष्णा धारा यस्य । ६ त० । तेज धारवाला । तरवार.

तीक्ष्णपुष्प, (पु०) तीक्ष्णं पुष्पं अस्य । जिसका तेज फूल हो । लवङ्ग । लौंग । केतकी (स्त्री०).

तीक्ष्णबुद्धिः, (त्रि०) तीक्ष्णा बुद्धिः यस्य । तीक्ष्ण (तेज) बुद्धि (अकेल) वाला । चतुर । चालाक.

तीक्ष्णरश्मिः, (पु०) तीक्ष्णा रश्मयः यस्य । तेज किरणोंवाला । सूर्य.

तीक्ष्णरसः, (पु०) तीक्ष्णः रसः यस्य । तेज रसवाला । विषमय रस । कोईभी जहरीला रस । विष । जहर.

तीक्ष्णशूक, (पु०) तीक्ष्णः शूकः अग्रं यस्य । जिसके आगेका भाग तेज हो । यव । जौ । जौं.

तीक्ष्णायस, (न०) तीक्ष्णं अयः+अच् समा० । तेज लोहा । स्टील । लोहेकी कलम । एक प्रकारका लोहा.

तीक्ष्णांशुः, (पु०) तीक्ष्णाः अंशवः यस्य । तीक्ष्ण (तेज–कठिन) किरणोंवाला । सूर्य । अग्नि.

तीक्ष्णोपायः, (पु०) तीक्ष्णः उपायः । कठिन उपाय । तीक्ष्ण (तेज) साधन.

तीम्, क्लेदन । गीला करना । भिगोना । दिवा० पर० अक० सेट् । तीम्यति । अतीमीत्.

तीर्, पारगति । पारजाना । तैरजाना । काम समाप्त करना । चुरा० उभ० अक० सेट् । तीरयति-ते । अतितीरत्-त.

तीर, (न०) तीर्+अच् (अ०) नदीआदिका तट (किनारा) । बाण । तीर । सीसक (सिक्का) (पु०).

तीर्ण, (त्रि०) तॄ+क्त । उत्तीर्ण । तैरगया । पारहुआ । अभिभूत । दवाया गया । आप्लुत (नहायाहुआ).

तीर्थ, (न०) तॄ+थक् (थ) । शास्त्र । यज्ञ । क्षेत्र (कुरुक्षेत्र आदि) उपाय । स्त्रीका रज (फूल) । नदी आदिका उतरना । घाट । विद्या आदि गुणोंवाला पात्र । उपाध्याय (पाधा) । पढानेहारा । मन्त्री (सिकत्तरवजीर) । पानीका स्थान । पवित्र स्थान । यात्राका स्थान । योनि । दर्शन । आगम । निदान (आदिकारण) । आग । खूएके पासका सरोवर (तालाव) । कोई पवित्र विषय (जो विशेषकर किसी पवित्र नदीके तीरपर वा पासही हो) । "शुचि मनो यद्यस्ति तीर्थेन किम्" भर्तृ० । शरीर, मन और पृथिवीके पवित्र स्थान । (शरीरके अङ्गुलीके आगे दैव, अङ्गुलीओंके मूलमें प्राजापत्य, अंगूठे और अङ्गुलिके बीचमें पैत्र और अंगूठेके मूलमें ब्राह्म तीर्थ है,) मनके तीर्थ सत्य, क्षमा, इन्द्रिओंका निग्रह (रोकना), सब जीवोंपर दया, सबके साथ कोमल रहना, दान, दम । (अपनेको काबू करना) सन्तोष (सबकरना) ब्रह्मचारी होना बडा तीर्थ है । (वीर्यकी रक्षा करना, स्त्रीके निकट न जाना) । पियारा वचन बोलना । ज्ञान (अपने आपको जानना) । धीरज करना । पुण्य करना । (सबसे अधिक तत्त्वको पहिचाननेवाले कहते हैं कि सब तीर्थोंमें बहुत बडा तीर्थ तो मनकी विशुद्धि अर्थात् सफाई है) । पृथिवीके तीर्थ (जिस प्रकार शरीरके कईएक स्थान बहुत पवित्र होते हैं वैसेही पृथिवीके कईएक स्थान पुण्यतम अर्थात् बहुतही पुण्यको देनेहारे हैं जहां स्नान, ध्यान, पान होना बडेही शुभ भाग्यका फल समझागया है । पृथिवीके अधिक प्रभाव, जलके तेज, और मुनिओंके आश्रय लेनेसे तीर्थोंका सेवन पुण्यके देनेहारा है । पवित्र बातोंके सिखानेहारा गुरु "मया तीर्थादभिनयविद्या शिक्षिता" मृ०.

तीर्थंकर, (पु०) तीर्थं (हितशासनं आगमं) करोति । कृ+टक् (अ) । हितको कहनेहारे शास्त्रका उपदेश करनेवाला । गौतम, कपिल, कणाद आदि । जैन । जैनोंका सन्त । "तीर्थंकर" भी इसी अर्थमें होताहै.

तीर्थोदकं, (न०) तीर्थस्य उदकं । तीर्थका जल । पवित्र जल.

तीर्थकमण्डलु, (पु० न०) तीर्थस्य कमण्डलुः । तीर्थके जलसे भरा हुआ कमण्डलु । संन्यासिओंका पात्र वा घडा.

तीर्थकाकः–ध्वाङ्क्षः–वायसः, (पु०) तीर्थस्य काकः । तीर्थका कौआ । अर्थात् बहुतही लोभी (लालची) पुरुष.

तीर्थदेव, (पु०) तीर्थस्य देवः । तीर्थकी देवता । शिव.

तीर्थयात्रा, (स्त्री०) तीर्थस्य यात्रा । तीर्थकी यात्रा (सफर).

तीर्थराज, (पु०) तीर्थानां राजा+टच् । तीर्थोंका राजा । प्रयागराज.

तीर्थविधि, (पु०) तीर्थस्य विधिः । तीर्थपर निवास करनेका नियम । तीर्थपर करने योग्य रीत रसम.

तीर्थसेविन्, (त्रि०) तीर्थं सेवते+णिनि । तीर्थकी सेवा करनेवाला । तीर्थयात्री.

तीव्, स्थौल्य । मोटा होना । भ्वा० पर० अक० सेट् । तीवति । अतीवीत्.

तीव्र, (पु०) तीव्+रक् (र) । शिवजी । लोहा । सिक्का और तेज "न सहारा जानेहारा" । बहुत तेज (त्रि०) गरम । बिनहद्द । मजबूत.

तीव्रवेदना, (स्त्री०) कर्म० अत्यन्तपीडा (बहुतही दर्द । यातना (पीडा).

तु, (अव्य०) किन्तु । लेकिन । पादको पूरण कर्ताहै । और वा (कभी वाक्यके पहिले नहीं आता, परन्तु प्रायः पहिले शब्दके पीछे आता है) । वही तो । इसके सिवा । तौभी । पर । भी । और.

तुङ्ग, (पु०) तुञ्ज्+घञ् (अ) । पर्वत (पहाड) केसरका दरख्त । नारियेल । और (ज्योतिषमें सूर्य आदिके विशेष अंशोंसे पहिचानीगई मेषआदि राशियें) ऊंचाईवाला । ऊंचा । प्रधान (त्रि०).

तुङ्गभद्र, (पु०) बडा मस्त हाथी । दक्षिण देशमें इसनामकी एक नदी (स्त्री०).

तुच्छ, (न०) तुद्+क्विप् (तुदा-व्यथया छयति -छो+क) । चावलोंसे रहित धान्य । तोः । तुष । हीन । निकम्मा । थोडा । सूना (त्रि०).

तुज्, हिंसा । मारना । कतल करना । भ्वा० पर० सक० सेट् । तोजति । अतोजीत्.

तुड्, द्विधाकरण । दो टुकडे करना । तोडना । भ्वा० पर० सक० सेट् । तोडति । अतोडीत्.

तुण्ड, (न०) तुड्+अच् (अ) । मुख । मूं । चिहरा.

तुण्डिभ-ल, (त्रि०) तुण्ड+भ लच् वा । बहुत बोलनेवाला । बडी नाभि (धुन्नी) वाला । "तुन्दिल" यही । गोगडिया अर्थ.

तुत्थ्, स्तुति । सराहना । तारीफ करना । चुरा० उभ० सक० सेट् । तुत्थयति-ते.

तुत्थ, (पु०) तुद्+थक् (थ) । अग्नि (आग) । एक प्रकारका अञ्जन (सुरमा) (न०).

तुद्, व्यथन । पीडा पहुंचाना । तुदा० उभ० सक० अनिट् । तुदति-ते । अतौत्सीत् । अतुत्त.

तुन्दकूपी, (स्त्री०) ह्रस्वः कूपः कूपी । तुन्दस्य कूपीव । मानों पेटकी खुई है । नाभी (धुन्नी) । (अपने अर्थमें कन् (क) "तुन्दकूपिका" यही अर्थ.

तुन्न, (पु०) तुद्+क्त (त) । (तुंद) वृक्ष । पीडा पहुंचाया गया । कटा गया (त्रि०).

तुन्नवाय, (पु०) तुन्नं छिन्नं वयति । वे+अण् (अ) । जो कटेहुएको जोडता है । सौचिक । दर्जी । सूईका काम करनेवाला.

तुभ्, हिंसा । मारना । कतलकरना । दिवा० क्र्या० पर० सक० सेट् । तुभ्यति । तुभ्नाति-अतोभीत्.

तुमुल, (पु०) तु+मलक् (तुल) कलिवृक्ष (बयडा) । घबरायाहुआ और लडाई । घबराहटकी लडाई (न०).

तुम्बरु, (पु०) तुवि+उरुच् (उरु) । एक गंधर्व । एक प्रकारका बाजा.

तुर्, वेग । जल्दी जाना । जु० पर० अक० सेट् । तुतोर्ति । अतोरीत्.

तुरग, (पु०) तुरेण (वेगेन) गच्छति । गम्+ड (अ) । जो बडे जोर वा तेजीसे जाता है । घोडा । चित्त । मन । दिल.

तुरगस्कन्ध, (पु०) तुरग (समूहअर्थमें) स्कन्धच् (स्कन्ध) । घोडोंका समूह । ६ त० । घोडेका कंधा.

तुरङ्ग, (पु०) तुरेण गच्छति । गम्+ख मुम् वा । घोडा । चित्त । "तुरङ्गम" यही अर्थ होता है.

तुरङ्गवदन, (पु०) तुरङ्गस्य इव वदनं अस्य । जिसका घोडेकी नाईं मुख हो । किन्नर (एक प्रकारकी देवता).

तुरङ्गारि, (पु०) ६ त० । करवीरवृक्ष । महिष । भैंसा.

तुरासाह, (पु०) तुरां (वेगं) सहते । तुरं (वेगवन्तं) वा साहयते (अभिभवति) वा क्विप् -षत्वम् । जो वेगको सहारताहै अथवा जो वेगवालेको दबा लेते हैं । इन्द्र । देवताओंका राजा.

तुरि-री, (स्त्री०) । तुर्+इन्-वा ङीप् । जुलाहेकी लकडीका घनाहुआ बुनेका साधन (औजार).

तुरीय, (त्रि०) चतुर+पूरण अर्थमें तीय प्रत्यय होताहै । निपा० । चौथा । चार हिस्सोंवाला । शक्तिवाला । (वेदान्तदर्शनमें) आत्माकी चौथी दशा जिसमें यह ब्रह्म वा परमात्माके साथ एक हो जाता है । शुद्धस्वरूप निर्गुण ब्रह्म । तीनोंसे पहिली दशावाला.

तुरीयवर्ण, (पु०) कर्म० । चौथी चतुर्थ जातिका मनुष्य । शूद्रवर्ण.

तुरुष्क, (पु०) तुर+उसिक्-स्वार्थे कन्-षत्वम् । एक प्रकारका गंधवाला द्रव्य (शिलारस) । तुर्क लोग (बहुवचन).

तुर्य, (त्रि०) चतुर्णां पूरणः । यत् । नि० । चारोंको पूरा करनेवाला । चौथा.

तुर्व, हिंस । कतलकरना । मारना । भ्वा० पर० सक० सेट् । तुर्वति । अतूर्वीत् । तूर्त.

तुर्वसु, (पु०) ययातिराजाका पुत्र.

तुल्, उन्मान । तोलना । मापना । चुरा० उभ० पक्षे भ्वा० पर० सक० सेट् । तोलयति-ते । तोलति । अतूतुलत्-त । तुला शब्दसे णिच् होकर "तुलयति" बनता है.

तुलन, (न०) तुल्+ल्युट् । बोझा उठाना । बराबरी.

तुलसी, (स्त्री०) तुलां अस्यति अस्+ अण् (अ) शक० । जो बराबरीको फेंक देती है अर्थात् जिसके समान संसारमें और कोई वृक्ष नहिं । (तुलसी) अपने नामसे प्रसिद्ध एक वृक्ष.

तुला, (स्त्री०) तुल+अङ् (अ) । सादृश्य । बराबर मान । माप । तकडी । एक बडा पात्र (वर्तन) । सातवी राशि । तोलनेका डण्डा.

तुलाकोटि-टी, (स्त्री०) । तुलया तुलां वा कोटयति (परितापयति) कुट्+इ वा ङीप् । नूपुर । पंजेब । झांजर । एक माप.

तुलाधर, (त्रि०) तुलाया (मानदण्डस्य) धरः । तकडी पकडनेवाला । धृ+अच् (अ) । वाणिआ । तुलाराशि.

तुलापरीक्षा, (स्त्री०) तुलया परीक्षा । तकडीद्वारा सच्चे वा झूठेकी पहिचान.

तुलापुरुष, (पु०) सोलह प्रकारके महादानोंमेंसे एक.

तुलायष्टि, (स्त्री०) तुलायाः यष्टिः । तकडीकी डण्डी.

तुलासूत्र, (न०) तुलायाः सूत्रं । तकडीका लड वा सूत.

तुलित, (त्रि०) तुला+तत्करोति णिच् (कर्मणि क्त) परिमित । मापागया । सदृशीकृत । बराबर कियागया.

तुल्य, (त्रि०) तुलया संमितं यत् । सदृश । बराबर । समान.

तुल्यदर्शन, (त्रि०) तुल्यं पश्यति–दृश्+ल्यु । बराबर देखनेवाला.

तुल्यपानं, (न०) तुल्यं पानम् । इकट्ठे मिलकर पीना.

तुल्ययोगिता, (स्त्री०) अर्थालंकारका एक भेद.

तुवर, (पु०) तरति (हिनस्ति) रोगान् । तु+ष्वरच् निपा० । जो रोगोंको मारता है । एक प्रकारके धान । कषाय । कसैला स्वाद । कसैले स्वादवाला (त्रि०).

तुष्, तोष । प्रसन्न करना । रजाना । दिवा० पर० अक० अनिट् । तुष्यति । अतुषत्.

तुष, (पु०) तुष्+क (अ) । बिभीतक वृक्ष (वहेडा) । धानकी खाल । अपने नामका पदार्थ । भूसी.

तुष, (पु०) तुष्+चावलोंका छिलका वा भूसी । तोह.

तुषानल, (पु०) तुषस्य अनलः । तोहकी आग । तोहसे पैदाहुई आग.

तुषार, (पु०) तुष्+आरक् (आर) । हिम (बर्फ) । कर्पूर । कपूर । कापूर और शीत (सर्दी) । उसवाला (त्रि०).

तुषित, (पु०) तुष्+कितच् (इत) । तोषआदि वारह वा छत्तीस गणदेवता.

तुष्टि, (स्त्री०) तुष्+क्तिन् (ति) । सन्तोष (सवर) । अकृतार्थ (जो करना था वह न किया) दशामें भी ऐसी बुद्धि होना कि मैं कृतार्थ (जो करना था सो कर चुकाहूं) हो गयाहूं । सांख्यमें नौ प्रकारकी कही है.

तुह्, वध । मारना । भ्वा० पर० सक० सेट् । तोहति । अतुहत् । अतोहीत्.

तुहिन, (न०) तुह+इनम् (इन) । हिम । बरफ । चन्द्रमाका तेज.

तुहिनांशु, (पु०) तुहिना अंशवो यस्य । जिसकी किरणें बरफ हों । चन्द्रमा । चांद । "हिमांशुः" इसी अर्थमें होता है.

तूण, संकोच । सिकोडना । चुरा० उभ० सक० सेट् । तूणयति-ते । अतुतूणत्-त.

तूण्, पूरण । भरना । चुरा० आत्म० सक० सेट् । तूणयते । अतुतूणत्-त.

तूण-णी, (पु० स्त्री०) । तूण्+क्त । बाण (तीर)का आधार । तरकस.

तूणीर, (पु०) तूणीं (संकोचं) राति (ददाति) रा+क । तरकस । तीररखनेका पात्र.

तूर्ण, (न०) त्वर्+क्त (त) ऊठ् । (तको न हो जाताहै) । शीघ्र (जल्दी) । जल्दीवाला (त्रि०).

तूर्य, (न०) तुर् । हिंसा । मारना+यत् (य) । एक प्रकारका वाजा । तुरी वाजा.

तूल्, पूरण । चुरा० आत्म० सक० सेट् । तूलयते । अतूतुलत्.

तूल, (पु० न०) (तुल्+क) । एक प्रकारकी कपास (कपाह) । आकाश । तुंद नामका वृक्ष (न०).

तूलिका, (स्त्री०) तूल्+अस्त्यर्थे ठन् (इक) । शय्या (छेज) का साधन । ण्वुल् (अक) । मूर्ति लिखनेका साधन । तूली (द्रव्य).

तूवर, (पु०) तु+वर् -दीर्घश्च । वह गौ जिसके सींग नहिं । वह पुरुष जिसकी दाढी नहिं निकली । कसैला रस.

तूष्णीक, (त्रि०) तूष्णीं । तूष्णीं शीलं यस्य । शीलअर्थमें कन् (क) मलोप हो जाता है । चुप रहनेहारा.

तूष्णीम्, (अव्य०) मौन (चुपचाप).

तूष्णींशील, (त्रि०) तूष्णीं शीलं अस्य । मौनावलम्बी । चुप रहना जिसका स्वभाव है (पु०).

तूस्त, (न०) तुस्+तन्-दीर्घश्च । जटा । संहतकेश । इकट्ठेहुए वाल । धूर । महीन.

तृण्, भक्ष-खाना । तना० उभ० सक० सेट् । तृणोति-तर्णोति । तृणुते -तर्णुते । तर्णित्वा-तृण्ढ्वा.

तृण, (न०) तृद्+नक् । नका लोप होता है । नडादि । घास वगैरह । तिनका.

तृणकाण्ड, (न०) तृणानां समूहः । काण्डच् (काण्ड) । तृणसमूह । तिनकोंका ढेर.

तृणद्रुम, (पु०) तृणजातीया द्रुमाः । शाक० । तृणजातिके वृक्ष (असार होनेसे) । नारिकेल (नारियेल-नरेल) ताल । खजूर.

तृणधान्य, (तृणं) इव धान्यं । शाक० । तिनकेकी नाईं धान । ऐसी भूमिमें उपजता है कि जिसे कर्षण नहिं कियागया । नीवार खांकके चावल.

तृणराज, (पु०) तृणेषु राजते । राज्+अच् (अ) । ६ त० । टच् वा । तालका वृक्ष.

तृणशून्यं, (न०) तृणैः शून्यं । तृणों (तिनकों)से शून्य (रहित) । केतकी । नलिका.

तृणसिंह, (पु०) तृणेषु सिंह इव । तिनकोंमें शेरकी तरह । कुल्हाडी.

तृणहर्म्य, (पु०) तृणानां हर्म्यम् । तिनकोंका (बनाहुआ) घर । तिनकोंसे आच्छादित.

तृणीकृत, (त्रि०) तृण+च्वि+कृ+क्त । तिनका बनाया गया । हलका किया गया । तिरस्कार किया गया । निरादर किया गया.

तृणौकस्, (न०) तृणनिर्मितं ओकः । तिनकोंका बना हुआ घर । मकान.

तृण्य, (त्रि०) तृणानां समूहः । य । तिनकोंका ढेर.

तृतीय, (त्रि०) त्रयाणां पूरणः । तृ+तीय । सम्प्रसारण । तीनोंका पूरा करना । वह पदार्थ जो तीनकी संख्याको पूरा करे.

तृतीया, (स्त्री०) चन्द्रमाके मण्डलकी तीनकलावाली पडवासे तीसरी तिथि । तीज.

तृतीयाकृत, (त्रि०) तृतीयं कृतम् । तीरा कियागया । तिगुना कियागया । तृतीय+डाच्+कृ+क्त (त) । तीन वार खेंचाहुआ क्षेत्र (खेत).

तृतीयाप्रकृति, (स्त्री०) स्त्रीपुंसौ अपेक्ष्य तृतीया प्रकृतिः (प्रकारः) । स्त्री और पुरुष न होकर तीसरा प्रकार । नपुंसक । क्लीब । नपुंसक लिङ्ग.

तृद्, अनादर । आदर न करना । रुधा० उभ० अक० सेट् । तृणत्ति । तृन्ते । अतर्दीत्-अतृदत्.

तृन्ह्, हिंसा । मारना । तुदा० पर० सक० सेट् । क्त्वा वेट् । तृंहति । अतृंहत्.

तृप्, प्रीणन । तृप्तहोना । रजना । दिवा० पर० सक० वेट् । तृप्यति । अतर्पीत् । आताप्सीत्.

तृप्त, (त्रि०) तृप्+त्र । तृप्त हुआ । प्रसन्न हुआ.

तृप्ति, (स्त्री०) तृप्+क्तिन् (ति) । वहुत खाजानेसे खानेकी इच्छा न रहना । रजना । प्रसन्न होना.

तृफ्, प्रीणन । प्रसन्न होना । रजना । तुदा० पर० सक० सेट् । तृफति । अतर्फीत्.

तृ (त्रि) फला, (स्त्री०) त्रयाणां फलानां समाहारः । वा सम्प्रसारणम् । तीन फलोंका इकट्ठा होना । हरीतकी (हरीड) । आमलकी (आवला) और अक्ष (बहेडा) वयस्थारूप तीन फल.

तृष्, तृष्णा । चाहना । दिवा० पर० सक० सेट् । तृष्यति । अतृषत् । अतर्षीत्.

तृष्-षा, (स्त्री०) तृष्+क्विप् । भागुरीके मतमें हलन्त होनेके कारण विकल्पसे टाप् (आ) होताहै । तृष्णा । चाह । कामदेवकी कन्या.

तृषाभू, (स्त्री०) ६ त० । क्लोम । हृदयका एक स्थान । चाहकी जगह.

तृषित, (त्रि०) तृषा जाता अस्य । तार० इतच् (इत) । पियासा । चाहवाला । तृष्णावाला.

तृष्णाक्षय, (पु०) तृष्णाया (लोभस्य) क्षयो यस्मात् । जिस्से लोभ नष्ट होजाताहै । शम (वासनाका छोडना) । मनको रोकना.

तृष्णालु, (त्रि०) तृष्णा+आलुच् । बडा पिआसा (तृषार्त) । बडा लालची.

तृह्, हिंस् । मारना । तुदा० पर० सक० वेट् । तृहति । अतर्हीत् । अतृक्षत्.

तृ, तरण । तरना । प्लवन । उछलना । अभिभव । दवाना । भ्वा० पर० सक० सेट् । तरति । अतारीत्.

तेज्, निशान । तेजकरना । पालना । भ्वा० पर० सक० सेट् । तेजति । अतेजीत्.

तेजःफल, (पु०) तेजस्करं फलं यस्य । जिसका फल तेजी कर्ता है । तेजवलवृक्ष.

तेजस्, (न०) तिज्+असुन् । उष्ण (गरम) स्पर्शवाला अग्निआदि द्रव्य । (सांख्यमें) शब्द और स्पर्शतन्मात्राके साथ रूपतन्मात्रासे उठाहुआ भूत (आग) । प्रकाश । प्रभाव । पराक्रम । वीर्य । मक्खनसे उपजा घी । तपानेवाला । ज्योति । सूर्य । शरीरकी कान्ति । सोना आदि धातुरूप द्रव्य । पित्त । अपमान आदिका न सहारना । घोडोंका स्वाभाविक बल (जोर) । चैतन्यस्वरूप परम प्रकाशरूप ब्रह्म । सांख्यमें सत्वगुण.

तेजस्विनी, (स्त्री०) तेजस्+विनि । तेजवाली स्त्री । ज्योतिष्मती लता । तेजबल.

तेजीयस्, (त्रि०) तेजस्विन्+अतिशायने ईयसुनि विनका लोप । तेजवाला । "तेजीयसां न दोषाय वह्नेः सर्वभुजो यथा" भागवतं.

तेजोमय, (त्रि०) तेजस्+प्रचुरार्थे मयट् । बहुत तेजवाला । जिसमें प्रधान तेज हो । ज्योतिर्मय । प्रकाशस्वरूप । स्त्रियां ङीप् । "तेजोमयी वाक्" श्रुतिः.

तेजोमात्रा, (स्त्री०) तेजसां (सत्वगुणानां) मात्रा (अंशः) । सत्वगुणोंका अंश । इन्द्रिय (भूतोंके सात्विक अंशोंसेही इनकी उत्पत्ति सांख्यमें स्वीकार की गई है).

तेप्, कांपना और गिरना । भ्वा० आ० अक० सेट् । तेपते । अतेपिष्ट.

तेम, (पु०) तिम्-घञ् (अ) आर्द्रीभाव । गीला होना । गिलावट.

तेमन, (न०) तिम्+ल्युट् (अन) । आर्द्रीकरण । गिला करना । कर्मणि ल्युट् । व्यञ्जन । नाल्दा । भाजी । एकप्रकारका चुल्हा.

तैजस, (न०) तेजसः विकारः+अण् । तेजका विकार । घी । और धातुका पदार्थ । (सांख्यमें) सत्वगुणसे उत्पन्न हुआ भूत (त्रि०) चमकीला । शक्तिवाला (ताकतवाला) (त्रि०) । (वेदान्तमें) सूक्ष्मशरीर.

तैतिल, (पु०) गण्डक पशु । गेंडापशु । बवादिसे चौथा करण (न०).

तैत्तिरीया, (स्त्री०) तित्तिरिभ्यः अधिगता+छण् (ईय) । तीतरों (याज्ञवल्क्यसे गुरुके साथ विवाद होनेके कारण वमन कीगई विद्याको वैशम्पायनके शिष्योंनें तीतरका रूप बनाकर ग्रहण किया यह उपनिषत्की कथा है) से लीगई । यजुर्वेदकी एक शाखा । कृष्णयजुः.

तैत्तिरीयि-य०, (त्रि०) तैत्तिरीयां शाखां वेत्ति अधीते वा+ठक्-कन् वा । तैत्तिरीय शाखाको पढनेहारा वा जानेहारा.

तैमिरिक, (न०) तिमिरं (नेत्ररोगभेदः) अस्ति अस्य+(ठन्-इक) । तिमिरनाम आंखके रोगवाला.

तैर्थिक, (त्रि०) तीर्थं (दर्शनशास्त्रं) कृतं अनेन+ठक (इक) । दर्शनशास्त्रके रचनेहारा । शास्त्रके बनानेहारा कपिल कणाद आदि.

तैल, (न०) तिलस्य विकारः+अण् । तिल आदि चिकने पदार्थोंकी चिकनाईको तेल कहते हैं । तिल, सरसों और अतसी आदि स्निग्ध वस्तुओंका स्नेहरूप विकार । तेल.

तैलकार, (पु०) तैलं करोति । कृ+अण् । तेल निकालनेवाला । तेली.

तैलकिट्ट, (न०) ६ त० । तेलकी मैल । खल.

तैलङ्ग, (पु०) एक मुल्कका नाम (तैलंग) । कर्णाटक । तेलंगदेशके वासी (बहु०).

तैलफला, (स्त्री०) तैलं फले यस्याः । जिसके फलमें तेल हो । इङ्गुदीका वृक्ष । बिभीतक (बहेडा).

तैलस्पाता, (स्त्री०) तिलस्य पातः अत्र । ञ-नि० मुमूच । स्वधा । जहां तिलोंसे बहुत काम किया जाताहै । श्राद्ध । तैलमिश्रित (तेलिया) (त्रि०).

तैलीन, (त्रि०) (न०) तिलानां भवनं क्षेत्रं (ईन) । तिलोंका खेत.

तैष, (पु०) तिष्यनक्षत्रयुक्ता पौर्णमासी तैषी साऽस्मिन् मासे+अण् । पौषमास । पोहका महीना । पोहकी पूनों (स्त्री०).

तोक, (न०) तु+क । अपत्य । सन्तान । पुत्र । बेटा । लडकी । दुहिता.

तोटक, (न०) द्वादशाक्षरपादका छन्द । बारह अक्षरके पादवाला छन्द.

तोड्, अनादर । बेइज्जत करना । भ्वा० पर० सक० सेट् । तोडति । तुतोड.

तोत्र, (न०) तुद्+ष्ट्रन् । गौ आदिके ताडन करनेका डण्डा । छडी । चाबुक । हाथीके चलानेका डंडा । अंकुश.

तोदन, (न०) तुद्यतेऽनेन+ल्युट् (अन) । मुख । मुं । "भावे ल्युट्" व्यथा । पीडा । दर्द.

तोमर, (पु० न०) तु+विच् । तोर्गतो म्रियतेऽनेन । मृ+अच् । एक प्रकारका अस्त्र (रायवास) । एक प्रकारका लोहेका दण्डा.

तोय, (न०) तु+विच् । तवे (पूर्त्यै) याति । या+क । जो भराजाताहै । जल । पानी । पूर्वाषाढा नक्षत्र (तारा).

तोयकाम, (पु०) तोयं कामयते । कम्+अण् । जो पानी चाहताहै । जलवेतस । पानीका बैंत । पानी चाहनेवाला.

तोयकाम, (त्रि०) तोयं कामयते । जलकी इच्छावाला । पिआसा । पिपासु.

तोयक्रीडा, (स्त्री०) तोयस्य क्रीडा । जलकी क्रीडा (खेल).

तोयद, (पु०) तोयं ददाति । दा+क । पानी देनेवाला । बादल । मेघ । मोथा । घास । घी (न०).

तोयधि, (पु०) तोयानि धीयन्तेऽत्र । धा+कि । जहां पानी रक्खे जाते हैं । समुद्र । समुंदर । "तोयनिधिः" यही अर्थ.

तोयनिधि, (पु०) तोयस्य निधिः । जलका निधि (खजाना) समुद्र.

तोयसूचक, (पु०) तोयं (तोयवर्षं) सूचयति (रवेण) सूच्+ण्वुल् (अक) । जो अपनी आवाजसे पानीके बर्सनेको जतलाताहै । मेक । मेंडक । डड्डू.

तोयेश, (पु०) तोयस्य ईशः । जलका स्वामी । वरुण देवता.

तोरण, (पु० न०) तुर्+युच् (अन) । बाहिरका दर्वाजा । थंभेके ऊपर शेरके स्वरूपकी एक लकडी । दर्वाजेके बाहिरका भाग । गर्दन (न०).

तोल, (पु० न०) तुल्+अच् । तोलक । एक प्रकारका माप । षण्णवति रक्तिका (छिआनवे रत्तीका परिमाण) एक तोला.

तोष, (पु०) तुष्+भावे घञ् । सन्तोष । सबर । तृप्ति । प्रसन्नता । हर्ष । खुशी.

तोषण, (त्रि०) तुष्+कर्तरि ल्यु । प्रसन्न करनेवाला । खुशकरनेवाला । ण (न०) (भावे ल्युट्) सन्तोष । प्रसन्नता । तृप्ति । खुशी.

तोषित, (त्रि०) तुष्+णिच्+क्त । प्रसन्न किया गया । तृप्त किया हुआ.

तोषिन्, (त्रि०) तुष्+णिनि । समासके अन्तमें आता है । प्रसन्न होनेवाला । तृप्त होनेवाला.

तौर्य, (न०) तूर्ये (मुरजादौ) वाद्ये भवं+अण् (अ) । मुरज आदि बाजेकी आवाज.

तौर्यत्रिक, (न०) त्रयः परिमाणं अस्य+कन् (क) । बाजोंसे जानेगये तीन । नाचना गाना और बजाना तीनो.

तौलिक, (पु०) तूल्या जीवति ठक् (इक) जो । तूली (मूर्ति लिखनेकी कूची (कलम) से जीताहै) । चित्रकार । मूर्ति लिखनेवाला । नकाश.

त्यक्त, (त्रि०) त्यज्+क्त । छोडा गया.

त्यक्ताग्नि, (पु०) त्यक्तः अग्निः येन । गार्हपत्य अग्निकी पूजाको छोडनेवाला ब्राह्मण । अग्निहोत्ररहित ब्राह्मण.

त्यज्, हानि । नुक्सान । छोडना और दान देना । भ्वा० पर० सक० अनिट् । त्यजति । अत्याक्षीत्.

त्यद्, (त्रि०) त्यज्+अदि । तत्शब्दके अर्थमें । वह.

त्यागिन्, (त्रि०) त्यज्+घिनुण् (इन)। दाता। देनेवाला शूर। (बहादर)। वर्जनशील। जिसका स्वभाव त्याग (रोकने) का है। कर्मके फलको छोडनेहारा.

त्रक्, गति जाना। भ्वा० आत्म० सक० सेट्०। त्रकते। अत्रकिष्ट.

त्रप्, लज्जा। शरम करना। भ्वा० आ० अक० वेट्। त्रपते। अत्रपिष्ट। अत्रप्त.

त्रपा, (स्त्री०) त्रप्+भावे अङ्। लज्जा (शर्म)। अच्। व्यभिचारिणी (बदमाश औरत)। कुल। कीर्ति (यश).

त्रपु, (न०) (अग्निं दृष्ट्वा) त्रपते (लज्जते) इव, लज्जया द्रवीभवति वा। जो आगको देख शरम कर्ताहै। अथवा लज्जासे ढल जाताहै। सीसक (रांगा) टीन.

त्रपुटी, (स्त्री०) त्रप्+उटङ् (उट) ङीप् (ई)। छोटी इलायची.

त्रपुस, (न०) त्रप्+उसि (उस)। रांगा। टीन.

त्रय, (न० स्त्री०) त्रयाणां अवयवाः। त्रयोऽवयवा येषां वा+अयच्। तीनोंका भाग। वा तीन भागवाला। तीनो "ऋणत्रयमपाकृत्य" मनुः। स्त्रीमें ङीप् (ई)। तीन संख्यावाला (त्रि०)। ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद (तीनों वेद)। ब्रह्मादि तीनों मूर्तियें। कुटुम्बिनी स्त्री। अच्छी बुद्धि.

त्रयीतनु, (पु०) त्रयी एव तनुः यस्य। वेद (तीनवेद) ही जिसका शरीर है। सूर्य। शिवजीका नाम (त्रयीमयः).

त्रयीधर्म, (पु०) त्रय्या (वेदत्रयेण) विधीयमानो धर्मः। तीनों वेदोंसे विधान कियाहुआ। वैदिक धर्म। ज्योतिष्टोमादि.

त्रयीमुख, (पु०) त्रयी एव मुखं यस्य। वेदही जिसका मुख है। ब्राह्मण.

त्रयोदशन्, (त्रि०) त्रयश्च दश च, त्र्यधिका दश वा। तीन ऊपर दशकी संख्या। तेरह। तेरहको पूरण करनेके अर्थमें डट् (अ) त्रयोदशः (त्रि०)। चांदकी तेरह कलावाली तिथि स्त्री० ङीप् (ई) त्रयोदशी.

त्रस्, भय। डरना। दिवा० पर० अक० सेट्। त्रस्यति–त्रसति। अत्रासीत्–अत्रसीत्। त्रेसतुः–तत्रसतुः.

त्रसरेणु, (पु०) त्रसः (चलः) रेणुः। झरोखेके भीतर गईहुई सूर्यकी किरणोंमें वार २ कांपरहा अत्यन्त सूक्ष्म परमाणुका छठा भाग। तीन द्व्यणुकके स्वरूपमें धूरी। सूर्यकी स्त्रीका नाम (स्त्री०).

त्रस्त, (त्रि०) (त्रस्+क्त) डराहुआ.

त्रस्त, (त्रि०) त्रस्+क्त (त)। भीत। डराहुआ। चकित। हैरान हुआ। जल्दी (न०).

त्रस्नु, (त्रि०) त्रस+क्नु (नु)। भीरु। डरनेवाला। डरपोक.

त्रापुष, (त्रि०) त्रपुणा निर्वृत्तं अण्। रांगका पात्र। टीनका वर्तन.

त्रास, (त्रि०) त्रस्+भावे घञ्। डरनेवाला। सरकनेवाला। –सः (पु०) डर। भय.

त्रि, (त्रि०) बहु० तॄ+ड्रि। तीनकी संख्यावाला। स्त्रियां तिसृ आदेशः.

त्रिंश, (त्रि०) त्रिंशत्+पूरणे डट् (अ)। तीसको पूरा करनेवाला। तीसवां.

त्रिंशक, (त्रि०) त्रिंशता क्रीतः+वुन् (अक)। तीसकी संख्यावाले द्रव्यसे खरीदी गयी वस्तु। तीसपर मोल ली-गई चीज.

त्रिक, (न०) त्रयाणां संघः+कन् (क)। तीनोंका समूह। पृष्ठवंशके नीचेका भाग। पीठकी हड्डीके नीचेका हिस्सह। कटिका भाग। त्रिफला (हरीड वहेडा और आमला)। त्रिकटु (सोंठ-मघ-और मिरच)। मिलेहुए वात आदि.

त्रिककुद्, (पु०) त्रीणि ककुदतुल्यानि शृङ्गाणि अस्य। (ककुदके अन्त्यका लोप हो जाता है)। तीन हड्डोंके समान जिसके तीनों सींग हैं। त्रिकूट नामी पर्वत (पहाड).

त्रिकाल, (न०) त्रयाणां कालानां समाहारः। (भूत भविष्यत् और वर्तमान) तीनों समय। सवेर दुपहर और सांझ.

त्रिकालज्ञ, (पु०) त्रिकालवर्तिपदार्थान् जानाति। ज्ञा+क। तीनों समयके पदार्थोंको जान्नेहारा। ज्योतिषी। सर्वज्ञ। सब कुछ जान्नेहारा.

त्रिकूट, (पु०) त्रीणि कूटानि अस्य। जिसकी तीन चोटियें हों। लंकाके पास सुवेल नामी पर्वत (पहाड).

त्रिकोण, (त्रि०) त्रयः कोणा यस्य। जिसके तीन कोन हों। तीन नोकोंवाला पदार्थ। (ज्योतिषमें) लग्नसे नौवां और पांचवां स्थान (न०).

त्रिगर्त, (पु०) तीन गढे। सुशर्मा नाम राजाका देश। उस देशके लोग। ब० व०.

त्रिगुण, (न०) त्रयाणां गुणानां समाहारः। तीन गुणोंका मेल (सांख्यमें) प्रधान (सारे जगत्का मूलकारण) "त्रिभिर्गुण्यते" गुण्-गिनती करना+घञ् (अ) तीनोंसे गुणा गया (त्रि०)। तीनसे जर्ब दियागया.

त्रिगुणाकृत, (त्रि०) त्रिगुणं कृत्वा कृष्टं। डाच्+कृ+क्त (त)। तीन वार हलसे खेंचागया खेत आदि.

त्रिगुणात्मक, (न०) त्रयो गुणाः (सत्वादयः) आत्मा (स्वरूपं) यस्य+कप्। तीन गुण जिसका स्वरूप है। (सांख्यमें) प्रधान। (वेदान्तमें) अज्ञान.

त्रिजटा, (स्त्री०) रामायणमें प्रसिद्ध एक राक्षसी.

त्रिणाचिकेत, (पु०) त्रिःकृत्वः नाचिकेतः अग्निः चितः येन। तीन वार आगको बटोरनेहारा। अध्वर्यु (यजुर्वेदको जान्नेहारा पुरोहित) का भेद। "पञ्चाग्नयो ये च त्रिणाचिकेताः" इति श्रुतिः.

त्रिणे(ने)त्र, (पु०) त्रीणि नेत्राणि अस्य । जिसकी तीन आंख हैं । शिवजी । तीन आंखवाला.

त्रितय, (न०) त्रयाणां अवयवाः, त्रयोऽवयवा येषां वा+तयप् । तीनोंका हिस्सह वा तीन हिस्सोंवाला । तीनों । तीन संख्यावाला (त्रि०).

त्रिदण्ड, (न०) त्रयाणां दण्डानां समाहारः । तीन दण्डोंका समूह । वचन, मन और शरीरके तीनदण्डोंसे पहिचाना गया संन्यास पदका आश्रम.

त्रिदण्डिन्, (त्रि०) त्रिदण्डं अस्ति अस्य । इनि । जिसके पास तीन दण्ड हों । वचन, मन और शरीरके दण्डको धारण करनेहारा । एक प्रकारका संन्यासी.

त्रिदश, (पु०) तिस्रः दशा येषां । जिसकी तीन (उपजना, होना और नाश हो जाना) दशा हों अर्थात् जिनकी मनुष्योंकी नाईं (बढना, बदलना और घटते जाना) दशा नहिं । देवता । त्र्यधिकात्रिरावृत्ताश्च दश परिमाणं एषां+डट् (अ) । तेतीस देवता (१२ सूर्य ११ रुद्र और ८ वसु आदि).

त्रिदशाधिप, (पु०) ६ त० । देवताओंका स्वामी (मालिक) इन्द्र.

त्रिदशाध्यक्ष, (पु०) तिसृणां दशानां, त्रिदशानां (देवानां) वा अध्यक्षः । तीनदशा (जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति)-ओंको देखनेहारा । देवताओंको अपनी आज्ञामें रखनेहारा । सर्वसाक्षी ब्रह्म । देखनेहारा ब्रह्म । सर्व (परमात्मा) । विष्णु.

त्रिदशालय, (पु०) ६ त० । त्रिदशानां आलयः । देवताओंका स्थान । स्वर्ग.

त्रिदिव, (पु०) त्रयो दीव्यन्ति अत्र । आधारे क (अ) । ब्रह्मा विष्णु और शिव तीनों जहां प्रकाशरहे हैं । सत्व आदि तीन प्रकारसे जो प्रकाशते हैं । दिव्+क वा । स्वर्ग । आकाश । सुख (न०).

त्रिदिवेश, (पु०) ६ त० । देव । देवता । "त्रिदिवौकस" आदि यही अर्थ । इन्द्र । देवताओंका राजा.

त्रिदोष, (पु०) त्रयाणां दोषाणां ऐक्यं । वात, पित्त और श्लेष्मके सन्निपात (इकट्ठा होना) से दोष । वातआदिके सन्निपातसे उपजा विकारको करनेहारा एक प्रकारका रोग.

त्रिधा, (अव्य०) त्रि+प्रकारे धाच् (धा) । तीनप्रकार । तीन तरह.

त्रिधामन्, (पु०) त्रीणि धामानि यस्य । पृथिवी आदि तीनों स्थानवाला । सत्वादि तीनों तेजवाला । शिव । विष्णु । अग्नि (आग).

त्रिनयन, (पु०) त्रीणि नयनानि यस्य । जिसकी तीन आंख हैं । शिवजी । तीन आंखवाला (त्रि०) । दुर्गा (स्त्री०).

त्रिपताक, (न०) तिस्रः पताका इव यत्र । जहां मानों तीन झंडियें हैं । झण्डीके स्वरूपमें तीन रेखाओंवाला ललाट (मस्तक -माथा) । तीन झण्डिओंके स्वरूपवाला हाथ (मध्यमा और अनामिकाको सिकोडकर बाकी अंगुलीओंको ऊपर उठाना), (पु०) । नाटकमें एक ओर होकर बात करनेके अवसरमें ऐसा ही हाथ बना लेतेहैं (जनान्तिक).

त्रिपथगा, (स्त्री०) त्रयाणां पथां समाहारः । अच् समा० । तेन गच्छति गम्+ड । तीन मार्गोंका मेल । उस्से जाती है । गंगा । भागीरथी.

त्रिपदी, (स्त्री०) त्रयः पादा अस्याः (पादकों पाद् हुआ फिर ङीप् होनेके अनन्तर पद् हो गया) । गोधापदी वेल । एक प्रकारका छंद । हंसपदी । हाथीके पांवका वंधन । हाथीको वांधनेका संगल.

त्रिपर्ण, (पु०) त्रीणि त्रीणि प्रतिपत्रं पर्णानि अस्य । हर-एक पत्तेमें तीन २ पत्तेवाला । किंशुक । पलाशका दरख्त.

त्रिपाद्, (पु०) त्रयः पादा अस्य । पाद होता है । जिसके तीन पांव हों । विष्णु । "पादोस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि" इति श्रुतिः । ताप । बुखार.

त्रिपिबत्, (पु०) त्रिभिः कर्णाभ्यां जिह्वया च पिबति । पा+शतृ । जो तीनों (दोनों कान और जीभ) से पानीको पीता है.

त्रिपुट, (पु०) त्रयः पुटा यस्य । तीन कोनवाला । हाथकी तली । धनुष् । मल्लिका (चमेली) । सूक्ष्मैला । छोटी (इलाइची) । त्रिवृत (तिरवी) । एक देवी (स्त्री०) टाप् । तिरवी और एरण्ड । वा ङीप् । तीन दोनोंका समूह । दोने (वा ङीप्).

त्रिपुण्ड्र, (न०) त्रयाणां पुण्ड्राणां समाहारः । गन्ने (पुण्ड्र)-की भांति तीन आकारों (शकलों) का समूह । माथेपर टेढी तीन रेखा (लकीरें) । एक तिलकका भेद जिसमें ऊंची तीन रेखा होती हैं । माथेपर तीन टेढी लकीरें जो भस्मसे की जाती हैं.

त्रिपुर, (पु०) त्रीणि पुराणि अस्य । स्वर्गआदि तीन पुरों-(शहरों) वाला एक दैत्य । "समाहारद्विगुः" "न ङीप्" तीन पुर (शहर).

त्रिपुरान्तक, (पु०) ६ त० । त्रिपुरको अन्त करनेहारा । शिवजी.

त्रिपुष्कर, (न०) ज्येष्ठादि भेदसे तीन प्रकारका ब्राह्मतीर्थ । ज्योतिषमें एक प्रकारका योग (वार क्रूर तिथि अच्छी, एक पांव टूटेहुए नक्षत्रमें जन्महोनेसे जारज योग और मरनेसे त्रिपुष्कर योग होता) है (पु०).

त्रिभुज, (पु०) त्रयो भुजा अस्य । जिसकी तीन भुजा हों । तीन कोनवाला क्षेत्र.

त्रिभुवन, (न०) त्रयाणां भुवनानां समाहारः । तीनों लोक । त्रिलोकी (स्वर्ग मर्त्य पाताल).

त्रिमधु, (न०) त्रयाणां मधूनां समाहारः । तीनों मीठे घी मिशरी और शहत । ऋग्वेदमें "मधु वाता" इत्यादि तीन मन्त्र । "मधु वाता" आदि तीनों मन्त्रोंको जान्नेहारा (पु०).

त्रिमार्गगा, (स्त्री०) त्रिभिर्मार्गैर्गच्छति । गम्+ड (अ) । तीन रास्तोंसे जाती है । गङ्गा "त्रिमार्गगेव त्रिदिवस्य मार्गः" कुमारः.

त्रियामा, (स्त्री०) त्रयो यामाः प्रहरा अस्याः । जिसके तीन पहर हों । रात (पहिली और पिछली चार घडीको छोडकर) । हल्दी । नीली.

त्रिरात्र, (न०) तिसृणां रात्रीणां समाहारः । षच् समा० । तीन रातें । उनसे पहिचानेगये तीन दिन । "त्रिरात्रमद्युन्विर्भवेत्" स्मृतिः.

त्रिरेख, (पु०) तिस्रो रेखा यत्र । जहां तीन लकिरें हों । तीन रेखावाला शंख.

त्रिलोकी, (स्त्री०) त्रयाणां लोकानां समाहारः । ङीप् । तीनों लोक.

त्रिलोकेश, (पु०) त्रयाणां लोकानां ईशः । तीन लोकोंका स्वामी । "उत्तरपदद्विगुः" । सूर्य । विष्णु । शिवजी.

त्रिलौहक, (न०) त्रयाणां लोहानां समाहारः । तीन धातु सोना चांदी और तांमा.

त्रिवर्ग, (पु०) त्रयाणां वर्गः । धर्म अर्थ और कामका समूह । धर्म, और कामरूप तीन पुरुषार्थ । त्रिफला तीन कौडी चीजें । सांख्यमें सत्व, रज और तमोगुण । आय (आम्दन) व्यय (खर्च) और वृद्धि (जोडना) रूप तीन.

त्रिविक्रम, (पु०) त्रीन् लोकान् विशेषेण क्रामति । वि+क्रम्+अच् (अ) । सारेही तीन लोकोंमें पांव रखनेहारा विष्णु । बलिको बांधनेके समय विष्णुने ऐसा रूप लिया.

त्रिपि(वि)ष्टप, (पु०) मर्त्यपातालापेक्षया तृतीयं भुवनम् । पृथिवी और पातालसे तीसरा लोक (भुवन) । स्वर्ग । बहिश्त.

त्रिवृत्-ता, (पु०) त्रीन् अवयवान् वृणोति । वृ+क्विप् । तीन भागोंको ढांकती है । अथवा तीन भगोंसे ढांकी गई । एक प्रकारकी औषधि । "वर्तनं वृत् तिस्रो वृतो यत्र ।" जहां तीन घेरे हों । त्रिगुना । तिगुण । (त्रि०) । मिलेहुए पृथिवी, जल और तेज । तीरा । तीन हिस्सोंवाला (पु०) । एक प्रकारका यज्ञ । तिलडी माला (स्त्री०) ।

त्रिवेणी, (स्त्री०) तिस्रः वेण्यः (प्रवाहाः) यत्र । जहां तीन प्रवाह हों । प्रयाग (अलाहाबाद) के पास एक स्थान जहां गंगा यमुनाके साथ मिलकर पृथिवीके नीचे सरस्वतीके साथ मिलजाती है.

त्रिवेदिन्, (पु०) त्रयो वेदाः पाठ्यत्वेन सन्ति अस्य+इनि । ऋग्वेद आदि तीनोंका पाठ करनेहारा.

त्रिशङ्कु, (पु०) सूर्यवंशका एक राजा । तीन भागोंमें कीलकी तरह । शलभ । पतंग । कीडा । बिल्ला । पपीहा । टणाना.

त्रिशिख, (पु०) तिस्रः शिखाः प्रतिपत्रं अस्य । जिसके हरएक पत्तेमें तीन शिखा हों । बिल्व । बिल्ल । एक राक्षस । त्रिशूल (न०) । तीन शिखा (बोदी)वाला बालक आदि.

त्रिशिरस्, (पु०) त्रीणि शिरांसि अस्य । जिसके तीन शिर हैं । एक राक्षस । ज्वर । बुखार । कुबेर.

त्रिशीर्षक, (न०) त्रीणि शीर्षाणि अस्य । जिसके तीन शीर्ष (सिरे) हों । कप् । त्रिशूल । तीन सिरेवाला (त्रि०).

त्रिशूल, (न०) त्रीणि शूलानि (शिखाग्राणि) यत्र । जहां तीन सिरेकी नोकें हों । एक प्रकारका अस्त्र.

त्रिशूलिन्, (पु०) त्रिशूलं अस्ति अस्य+इनि । त्रिशूलवाला । शिवजी । त्रिशूल पकडनेहारा (त्रि०).

त्रिशृङ्ग, (पु०) त्रीणि शृङ्गाणि अस्य । तीन सींगोंवाला त्रिकूटपर्वत.

त्रि-(त्रु) ष्टुप्, (स्त्री०) त्रिषु स्थानेषु स्तुभ्नाति । स्तुम्भ्+क्विप् । तीन जगह रुकता है । ग्यारह अक्षरके पादवाला एक छन्द.

त्रिसन्ध्य, (न०) तिसृणां संध्यानां समाहारः । तीन दोनों वक्त मिलेहुए । तीन समय (सवेर दुपहिर सांझ).

त्रिस-(ष) वन, (न०) त्रीणि सवनानि यत्र काले । वा षत्वं । तीन स्नानका समय । तीन वक्त । तीन वक्तका तीन स्नान.

त्रिस्रोतस, (स्त्री०) त्रिषु लोकेषु स्रोतो यस्याः । जिसका प्रवाह तीन लोकमें है । गंगा । भागीरथी.

त्रिहल्या, (त्रि०) त्रिवारं हलेन कृष्टं यत् । तीन वार हलसे खेंचागया (खेत).

त्रिहायणी, (स्त्री०) त्रयो हायना (वयोमानं) अस्याः+ङीप् । णत्वम् । जिसकी उमर तीन वरसकी है । तीनवरसकी उमरवाली गौ.

त्रुट् छेदन । काटना । दिवा तुदा० पर० सक० सेट् । त्रुट्यति-त्रुटति । अत्रुटीत्.

त्रुटि-टी, (स्त्री०) त्रुट्+इन् वा ङीप् । लेश । जरासा । संशय । शक । छोटी इलाइची । दो निमेष (आंखका फडकना) का समय । हानि । नुकसान.

त्रुम्प्, वध । कतल करना । मारना । भ्वा० पर० सक० सेट् । त्रुम्पति । अत्रुम्पीत्.

त्रेता, (स्त्री०) त्रीन् इता-नि० । दक्षिणाग्नि गार्हपत्य आहवनीय तीनो इकट्ठी अग्नियें । सत्ययुगके पीछे आनेवाला हिन्दुओंका युग । जूएकी खेलका साधना । पासोंका ऊंचे होकर गिरना । जिस पास्से तीन अंक हैं । तीन कौडियोंका ऊंच होकर गिरना । तीनों मिलेहुए.

त्रेधा, (अव्य०) त्रि+प्रकारार्थे धाच् । तीन प्रकार । तीन तरहसे । तीनभाग.

त्रै, पालन । बचाना । भ्वा० आत्म० सक० अनिट् । त्रायते । अत्रास्त.

त्रैगुणिक, (त्रि०) त्रिगुणार्थं प्रयच्छति । तिगुणा होनेके लिये देता है । त्रिगुणं ग्रहीतुं एकगुणं प्रयुङ्क्ते । ठक् । तिगुना लेनेके लिये एकगुणा देता है । एकगुना देकर तिगुना लेनेवाला । तीन तरहका एक प्रकारका बूढा.

त्रैगुण्य, (न०) त्रयाणां सत्वादीनां गुणानां समाहारः । तीनों (सत्व रज तम) गुण । "स्वार्थे ष्यञ्" (य) । तीनों गुणोंके कार्य पुण्यपापरूप कर्मोंके फलवाला संसार । "त्रैगुण्यविषया वेदाः" इति गीता.

त्रैध, (न०) त्रिप्रकारं । तीन तरह.

त्रैलोक्य, (न०) त्रयाणां लोकानां समाहारः । "स्वार्थे ष्यञ् (य)" । तीनों (स्वर्ग मर्त्य पाताल) लोक.

त्रैलोक्यविजया, (स्त्री०) त्रैलोक्यं विजयते (सेवते, आधीनं करोति) । तीन लोकको जीतती है (सेवन करनेसे आधीन कर्ती है) वि+जि+अच् (अ) । भङ्गा । भांग.

त्रैविद्य, (पु०) तिस्रो विद्याः समाहृताः । तीनो विद्या लीगई । ऋग् यजुः और सामवेदरूप तीनो विद्याओंको जानता वा पढता है । तीन वेदोंको जाननेहारा.

त्र्यम्बक, (पु०) त्रीणि अम्बकानि (नेत्राणि) अस्य । जिसकी तीन आंख हैं । शिवजी । (कहीं भाषामेंभी इयङ् आदेश माना है इस लिये "त्रियम्बक" भी इसी अर्थमें है).

त्र्यम्बकसख, (पु०) ६ त० । महादेवका मित्र । "षच् समा०" कुबेर.

त्र्यहस्पर्श, (पु०) त्रयाणां अह्नां (तिथीनां) स्पर्शो यत्रैकस्मिन् सौरदिने । सूर्यका वह दिन कि जिसमें तीन तिथिओंका मेल है । तीन तिथिओंको छूनेहारा सूरजका एक दिन.

त्व, (त्रि०) अन्यस्मिन् । और । भिन्न । जुदा (वेदमें) एक.

त्वक्पत्र, (न०) त्वगिव पत्रं अस्य । जिसका पत्ता छिलकेकी नाईं हो । गुडत्वच् । दालचीनी । तेजपत्ता । हींग (स्त्री०).

त्वक्ष्, (कार्श्ये) कमजोर होना । भ्वा० पर० सक० सेट् । त्वक्षति । अत्वक्षीत्.

त्वच्, संवरण । ढांकना । छिपाना । तुदा० पर० सक० सेट् । त्वचति । अत्वाचीत्-अत्वचीत्.

त्वच्-चा, (स्त्री०) त्वच् +क्विप् वा टाप् । वल्कल । खलडी । छिलका । चमडा । बक्कल । गुडत्वच । दालचीनी.

त्वच, (न०) त्वच्+अच् । चमडा । छिलका (बक्कल) । तेजपात । दालचीनी.

त्वचिसार, (पु०) त्वचि सारोऽस्य (सप्तमीका अलुक् होता है) । जिसकी त्वचामें सार हो । वंश । वाँस.

त्वत्, (त्रि०) तन्+क्विप् । अन्को विकल्पसे तुक् होता है) और । दूसरा । (यह सर्वनाम है).

त्वर्, वेग । जल्दी करना । जोर करना । भ्वा० आत्म० अक० । सेट् । त्वरते । अत्वरिष्ट.

त्वरा, (स्त्री०) त्वर्+अङ् । वेग । जोर । चाहे गये पदार्थको पानेके लिये विलम्बका न सहारना "णिच्" । त्वरयति । अत्वरत् । त्वरा.

त्वरित, (न०) त्वर्+क्त । शीघ्र । जल्दी । जल्दीवाला कोईभी (त्रि०).

त्वरितोदित, (त्रि०) त्वरितं यथा तथा उदितं । वद्+क्त । जल्दी बोल दियागया । शीघ्रोच्चारित.

त्वष्टृ, (पु०) त्वक्ष्+तृच् । देवताओंका शिल्पी (कारीगर) । विश्वकर्मा । १२ आदित्योंमेंसे एक । तर्खान । चित्रानक्षत्र.

त्वादृक्ष, (त्रि०) त्व इव दर्शनं अस्य+क्स । जो तेरी नाईं दीखता है । तेरे समान । तेरे जैसा । त्वत्सदृश-ट.

त्वाष्ट्र, (पु०) त्वष्टुरपत्यम् । विश्वकर्माकी सन्तान । वृत्रासुर । वृत्रनामी आदित्य । संज्ञा नामवाली सूर्यकी पत्नी (स्त्री०) । चित्रानक्षत्र.

त्विष्-षा, (स्त्री०) त्विष्+क्विप् वा टाप् । दीप्ति । प्रकाश । चमक । रौशनी.

त्विष्, दीप्ति । चमकना । भ्वा० उभ० अक० अनिट् । त्विषति-ते । अत्विषत्-अत्विक्षत.

त्विषांपति, (पु०) ६ त० । अलुक् समास । किरणोंका (प्रकाशों)का मालिक.

त्सर्, छद्मगति । कपटसे जाना । भ्वा० पर० सक० सेट् । त्सरति । अत्सारीत्.

त्सरु, (पु०) त्सर्+उ । खड्गमुष्टि । तर्वारकी मुट्ठी (मूठ) । तरवारका कबजह.

त्सारुक, (त्रि०) त्सर्+उकञ् । तर्वार पकडनेमें चतुर.

थ

थ, (पु०) थुड्+ड (अ) । पर्वत (पहाड) । बचानेहारा । डरका निशान । एक बीमारी । खाना.

थुड्, संवृति । ढांकना । छिपाना । तुदा० पर० अक० सेट् । थुडति । अथुडीत्.

थुत्कार, (पु०) थुत् इत्यव्यक्तशब्दस्य कारः । कृ+घञ् (अ) । थूकनेकी ध्वनि । निष्ठीवनत्याग (थूक छोडना) की आवाज.

थैथै, (अव्य०) किसी तरहके बाजेके आवाजकी नकलका शब्द.

द

द, (पु०) (समासमें पीछे रहता है) देना । दा-दैप् वा+क । पर्वत (पहाड) । तोडना । भार्या (औरत) (स्त्री०) । दाता (देनेहारा) (त्रि०).

दंश, (पु०) दन्श्+अच् (अ) । वनकी माखी । काटना । डांसना । डंग । करणे घञ् (अ) । मर्म । छिपाहुआ हिस्सा । दोष । तोडना । सांपका डंग मारना.

दंशन, (न०) दन्श्+भावे ल्युट् (अन) । दांत आदिसे काटना । डंग मारना । "करणे ल्युट्" वर्म (जिरह).

दंशित, (त्रि०) दंशः (वर्म) संजातः अस्य । जिरह पहिरे हुए । कमर बांधेहुए.

दंष्ट्रा, (स्त्री०) दश्यतेऽनया । दन्श्+ष्ट्रन् । दांतका भेद । दांतोंकी दो कतारोंके पीछे दुगुनी दंतावली (दांतोंकी कतार) । दाढ.

दंष्ट्रिन्, (पु०) दंष्ट्रा+अस्त्यर्थे इनि । दाढवाला । सूकर-(सूअर) और सांप । दाढवाला (त्रि०).

दक्ष, वृद्धि बढाना और जल्दी करना । भ्वा० आ० अक० सेट् । दक्षते । अदक्षिष्ट.

दक्ष, (त्रि०) दक्ष+अच् । निपुण । चालाक । कार्यकुशल । काममें चतुर । सीखाहुआ । आलसरहित । और होशियार । कुक्कुड । शिवका बैल । एक मुनि ब्रह्माके अंगूठेसे उत्पन्न हुआ । एक प्रजापति (पु०).

दक्षकन्या, (स्त्री०) ६ त० । दक्षप्रजापतिकी लडकी । अश्विनी आदि तारा । "दक्षजा" यही अर्थ.

दक्षाध्वरध्वंसक, (पु०) दक्षस्य अध्वरस्य ध्वंसकः+ध्वंस् ण्वुल् । दक्षके यज्ञका नाश करनेवाला । शंकरका नाम.

दक्षिण, (पु०) दक्ष्+इनन् । सब नायिकाओं (स्त्रियों)-में एक जैसी प्रीति दिखानेहारा एक प्रकारका नायक । मध्यदेशसे दक्षिणका देश । और शरीरका दहिनाभाग । सरल (सीधा) । दूसरेकी मर्जीको माननेहारा । दहिनीओर । उदार स्वभाव (त्रि०).

दक्षिणतस्, (अव्य०) दक्षिण+अतस् । दक्षिणदेश वा दिशा.

दक्षिणपूर्वा, (स्त्री०) दक्षिणपूर्वयोः अन्तराला दिक् बहु० । दक्षिण और पूर्वके बीचकी दिशा । अग्निकोण.

दक्षिणमार्ग, (पु०) कर्म० । पितृयान (पितरोंके पास जानेका रास्ता) रूप कर्मिओंके जानेआनेका रास्ता । तन्त्रमें एक प्रकारका मार्ग (आचार).

दक्षिणसागर, (पु०) दक्षिणस्य सागरः । दक्षिण दिशाका समुद्र.

दक्षिणस्थ, (पु०) दक्षिणे तिष्ठति । स्था+क । जो दहिनी ओर बैठता है । सारथि । रथ चलानेहारा.

दक्षिणा, (स्त्री०) दक्षिण+आच् (आ) । दक्षिणदिशा । यमदेवताकी दिशा । यज्ञके शेषमें कर्मको पूरा करनेके लिये देनेलायक द्रव्य (धन) । यज्ञकी पत्नी । प्रतिष्ठा । दक्षिणकालिका । रुचिं प्रजापतिकी कन्या.

दक्षिणाग्नि, (पु०) कर्म । यज्ञमें एक अग्निका भेद.

दक्षिणाचल, (पु०) दक्षिणः अचलः । दक्षिण दिशाका पर्वत । मलयाचल.

दक्षिणाचार, (पु०) कर्म० । अपने धर्ममें रहकर पंचतत्वसे पूजन करे वही दक्षिणाचार है, शिव होकर शिवका पूजन करना । एकप्रकारका आचार.

दक्षिणात्, (अव्य०) दक्षिणा+आति । दक्षिणसे । दक्खनसे.

दक्षिणापथ, (पु०) ७ त० । अवन्ती (उज्जैन) से पार दक्षिण दिशाका देश । दहिनी ओरका रास्ता.

दक्षिणाभिमुख, (त्रि०) दक्षिणस्य अभिमुखः । दक्षिणकी ओर मुख किया हुआ.

दक्षिणामूर्ति, (पु०) कर्म० । शिवजीमहाराजकी एकमूर्ति.

दक्षिणायन, (न०) दक्षिणस्यां अयनं (गमनं) । दक्षिण दिशामें जाना । वह जिस समयमें हो । कर्क राशिमें सूर्यका बदलना । तबसे लेकर छ महीनेका समय.

दक्षिणावर्त, (त्रि०) दक्षिणे आवर्तते । आवृत्+अच् (अ) । दहिनी ओर मुडाहुआ कोई पदार्थ । "दक्षिणावर्तशंखोऽयं" इति नाटकं.

दक्षिणेर्मन्, (पु०) दक्षिणे ईर्म (व्रणं) यस्य । नि०+अनिच् । जिसके दहिनी ओर घाव हो । वह हरिण कि जिसके दहिनी ओर व्याधने घाव करदिया है.

दक्षिण्य, (त्रि०) दक्षिणां अर्हति । यत् । दक्षिणाके लायक पुरोहित आदि । छ (ईय) "दक्षिणीय" यही अर्थ.

दग्ध, (त्रि०) दह्+क्त (त) । भस्मीकृत (खाककरडाला) जलादिया.

दघ, घातन । मारना । स्वा० पर० सक० सेट् । दघ्नोति । अदाघीत्, अदघीत्.

दण्ड्, (दण्डपातन-सजादेना) चुरा० उभ० सक० सेट्। दण्डयति-ते । अददण्डत्-त.

दण्ड, (न०) दण्ड्+अच् (अ) । लगुड (लाठी) । डंडा । घोडा । कोण । रिडकनेका डंडा (मथानी) । और सेना । साठ पलका समय । पृथिवीका एक माप । सूर्यका अनुचर (नौकर) (पु०) । "दण्ड्+भावे घञ् । राजाओंका चौथा उपाय ।" दण्ड+कर्तरि अच् (अ) । यमराज.

दण्डका, (स्त्री०) दण्डक वनमें जनस्थाननामका वन.

दण्डकारण्य, (न०) दण्डकनामी राजाका देश (शुक्रके शापसे वन वनगया) । जनस्थानका वन । एक तीर्थ.

दण्डधर-धार, (पु०) दण्डं धारयति । धृ+णिच्+अच् ह्रस्वः अण् वा । दण्ड पकडनेहारा । यमराज । राजा । कुम्भकार । कुम्हार । जिसके हाथमें डंडा है (त्रि०).

दण्डनायक, (पु०) ६ त० । चार प्रकारकी सेनाका मालिक । कोतवाल । सिपाही.

दण्डनीति, (स्त्री०) दण्डो नीयते (बोध्यते) यथा । नी+क्तिन् । जो दण्ड (सजा देना)को बोधन कर्ताहै । शुक्रआदिसे कहाहुआ नीतिशास्त्र । फौजदारीका कानून.

दण्डपाणि, (पु०) दण्डः पाणौ यस्य । ष० व० । जिसके हाथमें दण्ड (सजा वा दंडा है) यमराज । बनारसके शिवजीका नाम.

दण्डपारुष्य, (न०) दण्डेन पारुष्यं यत्र । जहां सजासे सख्ती है । अठारह प्रकारके विवादों (झगडों)मेंसे एक । राजाओंका एक प्रकारका व्यसन (बुरी आदत).

दण्डविधि, (पु०) दण्डस्य विधिः । दण्ड (सजा)का नियम (कायदा).

दण्डव्यूह, (पु०) (दण्डस्य व्यूहः=रचना । एक प्रकारसे सेनाको पंक्तिओंमें खडा करना.

दण्डशास्त्र, (न०) दण्डविधायकं शास्त्रम् । दण्डका विधान करनेवाला शास्त्र । फौजदारी कानून.

दण्डाजिन, (न०) दण्डः अजिनं च । दण्ड और मृगचर्म.

दण्डाज्ञा, (स्त्री०) दण्डस्य आज्ञा । दण्ड (सजा)की आज्ञा । सजाका हुक्म.

दण्डादण्डि, (अव्य०) दण्डैश्च दण्डैश्च प्रहृत्य इदं प्रवृत्तं युद्धं । क्रियाव्यतिहारे (जो एक क्रिया कर्ताहै उसे देख दूसराभी वैसाही करे) इच्-समा० पूर्वपददीर्घः । आपसमें दंडोंकी चोटके साथ कीगई लडाई । डंडमडंडा । लाठमलाठी.

दण्डाधिप, (पु०) दण्डस्य अधिपः । दण्ड (सजा) का स्वामी । बडा हाकिम । माजिस्ट्रेट.

दण्डानीक, (न०) दण्डस्य अनीकं । सैन्यविभाग । फौजका हिस्सा । बडी तेज सेना.

दण्डार्ह, (त्रि०) दण्डस्य अर्हः=योग्यः । दण्ड (सजा) देनेलायक.

दण्डाहत, (न०) दण्डेन आहन्यते । आ+हन्+क्त । डंडेसे चोट कियागया । तक्र । छाछ.

दण्डिन्, (पु०) दण्ड+अस्ति अर्थे इनि । जिसके पास डंडा हो । यमराज । राजा । द्वारपाल (दर्वान) । सूर्यके पास विचरनेहारा । जिनका भेद । चौथे आश्रमवाला । दण्डी । संन्यासी । काव्यादर्शनाम साहित्यग्रन्थके रचनेहारा एक कवि । दण्डवाला.

दण्ड्य, (त्रि०) दण्डयितुं योग्यः+यत् । सजावार । दण्ड देनेयोग्य (लायक) । जुर्मानेके लायक.

दत्त, (त्रि०) दा+क्त । विसृष्ट । दियागया । छोडा गया । और रक्खा गया । बारह प्रकारके पुत्रोंमेंसे एक (दत्तक) । एकप्रकार वैश्यकी उपाधि । और दत्तात्रेयनामी भगवानका एक अवतार "भावे क्त" दान देना और एकप्रकारका दान (न०) । "स्वार्थे कन् (क)" एकप्रकारका पुत्र । जिसे माता और पिता आपही देवे (पु०).

दत्ताप्रदानिक, (न०) दत्तस्य आप्रदानं पुनः आदानं अस्ति अस्मिन्+ठन् (इक) । अठारह प्रकारके विवादों (झगडों)- मेंसे एक (जिसमें दीगई वस्तुको फिर लेलेते हैं) । नारदने कहा व्यवहारका भेद.

दत्तात्मन्, (पु०) दत्त आत्मा येन । जिसने अपनेको आपही देदिया है । एकप्रकारका पुत्र.

दत्रिम, (त्रि०) दानेन निर्वृत्तः । दा+त्रि-त्रेर्मप्-त्र । दाननिर्वृत्त । देनेसे हुआ (बनगया) । जिसे माता पिता आपत्तिका समय जान आपही देवें । दत्तक पुत्र (पु०).

दद्, दान देना । धीरज करना । भ्वा० आ० सक० सेट् । ददते । अददिष्ट । ददद्दे.

दद्रु, (पु०) दद्+रु । एकप्रकारका रोग (दाद-धद्री) । कछुआ.

दद्रुघ्न (पु०) दद्रुं हन्ति । हन्+ठक् । जो दादको दूर कर्ताहै । चक्रमर्दक । दादमर्दन.

दद्रुण, (त्रि०) दद्रु+अस्ति अर्थे न । दादकी बीमारीवाला.

दद्रू, (पु०) दरिद्रा+उ (निपा०) । शरीरके चमडेका रोग दाद । धद्री.

दध्, देना । धारण करना । भ्वा० आत्म० सक सेट् । दधते । अदधिष्ट.

दधि, (न०) दध्+इन् (इ) दही । एकप्रकारका दूधका विकार । और कपडा (धा+कि) द्वित्वं । धारण करनेहारा (त्रि०).

दधिकूर्चिका, (स्त्री०) दहीके साथ दूध पकाहुआ । आमिक्षा (छाना) । गरम दूधमें खट्टा दही डालनेसे जो एक वस्तु बनती है.

दधिसार, (पु०) ६ त० । दहीका सार । नवनीत । मक्खन । माखन.

दधीचि–च, (पु०) अथर्वमुनिका औरस (असली) पुत्र। कर्दमप्रजापतिकी कन्यामें उपजा एक मुनि । वृत्र दैत्यको मारनेके लिये जिसकी हड्डिओंसे देवताओंने वज्र बनाया था.

दनु, (स्त्री०) कश्यपकी पत्नी (स्त्री०) । दक्षप्रजापतिकी कन्या । दानवमाता । राक्षसोंकी माता । दैत्योंकी माता.

दनुज, (पु०) दनोर्जायते । जन्+ड । दनुसे उपजता है । असुर । दैत्य.

दन्त, (पु०) दम्+तन् । चर्वणसाधन । चावनेका साधन । मुखमेंके दांत.

दन्तक, (त्रि०) दन्ते प्रसितः+कन् । दांतोंमें लगाहुआ । दांत साफ करके जीनेहारा । नागदन्त (खूंटी) । पहाडसे टेढा बाहिर निकलाहुआ पत्थर (पु०).

दन्तकाष्ठ, (न०) दन्तधावनार्थं काष्ठं । दांत साफ करनेका काठ.

दन्तच्छद, (पु०) दन्ताः छाद्यन्ते अनेन । जिस्से दांत ढके जाते हैं । छद्+णिच्+घ ह्रस्वः । ओष्ठ । होठ । ओठ.

दन्तधावन, (पु०) दन्तान् धावति (शोधयति) । धाव+ल्यु (अन) । खदिर (खैर)का वृक्ष । और बकुल । दातुन । "भावे ल्युट्" । दांतकी सफाई.

दन्तपत्रक, (न०) दन्त इव शुभ्रं पत्रं (दलं) यस्य । दांतकी नांई जिसका सफेद पत्ता हो । कुन्दपुष्प । कुन्दलताका फूल.

दन्तबीजक, (पु०) दन्तवत् बीजानि यस्य । जिसके बीज (बी) दांतोंकी नाई हो । दाडिम । अनारका वृक्ष.

दन्तवक्र, (पु०) दन्तप्रधानं वक्रं अस्य । जिसके मुखमें बडे २ दांत हों । कृष्णजीका विरोधी एक राजा.

दन्ताघात, (पु०) दन्तं आहन्ति । आ+हन्+अण् । निम्बूक । निम्बु । "भावे घञ्" । दांतोंसे चोट लगाना । दांत खुबोना.

दन्तालिका, (स्त्री०) दन्तान् अलति (भूषयति) तेभ्यो वा पर्याप्नोति । अल्+अण् । वा ण्वुल् (अक) । जो दांतोंको सजा देती है । वा जो दांतोंके लिये पूरी है । वल्गा । लगाम.

दन्तावल, (पु०) दन्त+अस्ति अर्थे वलच् (पहिलेको दीर्घ होता है) । दांतोंवाला । हस्ती । हाथी.

दन्तिन्, (पु०) दन्त+इनि (इन्) । दांतोंवाला । हाथी.

दन्तुर, (त्रि०) उन्नता दन्ताः सन्ति अस्य । दन्त+उरच् । जिसके ऊंचे दांत हों । ऊंचे दांतवाला । नीचे ऊपर जगह.

दन्त्य, (त्रि०) दन्ते (दन्तमूले वा) भवः (यत्) । दांतकी जडसे निकला । दांतोंसे "निकले" तथदधन ल स ऋ अक्षर "दन्तेभ्यः हितः+यत्" दांतोंके लिये हितकारी । दांतोंका हित कहनेहारा.

दन्दशूक, (पु०) गर्हितं दशति । दन्श्+गर्हार्थे यङ् ऊक । बुरी तरहसे डसता है । सरकनेहारा । सांप.

दन्भ्, दम्भ । पाखण्ड करना । स्वा० पर० अक० सेट् । दभ्नोति । अदम्भीत्.

दन्श्, दंशन । डसना । भ्वा० पर० सक० अनिट् । दशति । अदाङ्क्षीत्.

दभ्, प्रेरण । चलाना । भेजना । चुरा० उभ० सक० सेट् । इदित् । दम्भयति-ते । अददम्भत्-त.

दभ्र, (न०) दभ्+रक् । अल्प । थोडा । "अदभ्रदर्भामधिशय्य" इति भारविः.

दम्, शान्ति करना । दण्ड (सजा) देना । रोकना । दिवा० अक० सेट् । दाम्यति । अदमत् । अदमीत् । दमित्वा । दान्त्वा.

दम, (पु०) दम्+घञ् । दण्ड (सजा) । बाहिरकी इन्द्रियोंका ध्यान करनेलायक विषयसे व्यतिरिक्त (जुदा) पदार्थोंसे निवर्तन (हटाना) । "बाहिरकी वृत्तिओंके रोकनेको दम कहते हैं" । विकार (बिगडने) का हेतु । निकट होनेपरभी मनका (स्थिर) कायम रहना । कुत्सित (खोटे) कामसे मनको हटाना । कीचड । रोकना.

दमघोष, (पु०) शिशुपालका पिता । चन्द्रवंशमें एक राजा.

दमयन्ती, (स्त्री०) दम्+णिच्+शतृ । नलराजाकी पत्नी । (स्त्री०) दमदोषकी लडकी । भद्रमल्लिका.

दमित, (त्रि०) दम्+क्त । नि० । दान्त । रोकनेवाला । इन्द्रियोंकी वृत्तिओंको रोकनेहारा । बोझा उठानेआदि क्लेशको सहारनेहारा.

दमु (मू) नस्, (पु०) दम्+उनसि-वा दीर्घः । आग । शुक्राचार्य (दैत्योंका राजा वा गुरु).

दम्पती, (पु० द्वि० व०) जाया च पतिश्च (द्वन्द्वमें जायाशब्दको दम् आदेश होता है) । मिलेहुए स्त्री और पति (औरत खाविन्द).

दम्भ, (पु०) दम्भ्+घञ् (अ) । कपट । छल । शाठ्य । धूर्तता । पाप । अभिमान । गरूर.

दम्भोलि, (पु०) दभ्नोति (खेदयति) दम्भ+ओलि । वज्रनाम अस्त्र । एक प्रकारका हथियार । योगसे एक प्रकारकी मुद्रा जिसको बडे क्लेशमें करते हैं.

दम्य, (पु०) दम्+यत् क्यप् वा । बोझा उठानेलायक उमरमें पहुंचाहुआ बत्स (बछडा) । और बैल । काबू करनेलायक (त्रि०).

दय्, जाना। मारना। देना। और पालन करना। भ्वा० आत्म० अक० सेट्। दयते। अदयिष्ट.

दया, (स्त्री०) दय-भिदा० अङ्। यत्न (कोशिश) सेभी दूसरेके दुःखको दूर करनेके लिये इच्छाका उपजना। मिहर्वानी.

दयालु, (त्रि०) दय+आलुच्। कृपायुक्त। दयावाला। रहमदिल। "दयालुरपि स कृष्णः" उद्भटः.

दयित, (पु०) दय+क्त। पति (खाविन्द)। पियारा (त्रि०) -ता। स्त्री (औरत) (स्त्री०).

दर, (अव्य०) दृ+अप्। ईषत्। थोडा। डर। और गढा (पु० न०).

दरकण्ठिका, (स्त्री०) दरः कण्ठः यस्याः। अपने अर्थमें कन्। जिसपर कोई २ (थोडा) कांटा हो। शतावरी.

दरद्, (स्त्री०) दृ+अदि। पहाडपर पानीका गिरना (प्रपात)। भय। पर्वत। वाण। म्लेच्छजातिविशेष। और हृदय। दरद (पु०)। खसजाति.

दरिद्र, (पु०) दरिद्रा+अच् (आका लोप)। निर्धन। धनरहित (गरीव)। दीन (दुःखिया).

दरिद्रा, वुरेहाल होना। गरीव होना। अदा० पर० अक० सेट्। दरिद्राति। अदरिद्रीत्-अदरिद्रासीत्.

दर्दुर, (पु०) दुनाति कर्णौ शब्दैः+उरन्। आवाजोंसे जो कानको दुःख देवे। बादल। मेंडक (डड्डु)। एक प्रकारका वाजा। एक पहाड। एकप्रकारका मट्टीका पात्र। दक्षिणमें एक पर्वतका नाम जिसका संवंध मलयसे है। "स्तनाविव दिशस्तस्याः शैलौ मलयदर्दुरौ" रघुः। एक प्रकारके चावल.

दर्दू, (स्त्री०) दरिद्रा+ऊ-नि०। (दाद)। रोगभेद। एक प्रकारकी बीमारी.

दर्प, (पु०) दृप्+घञ्-अच् वा। अहंकार। गर्व। गरूर। एक प्रकारका हिरन। असारता। छल.

दर्पक, (पु०) दर्पयति। दृप्+णिच्+ण्वुल् (अक)। कामदेव। अभिमानको उपजानेहारा (त्रि०).

दर्पण, (पु०) दृप्+ल्यु (अन)। रूपकी परछाही देखनेका आधार (आसरा) आदर्श। शीशा। एक सुप्रसिद्ध पहाडका नाम.

दर्भ, (पु०) दृप् (गांठना) +घञ् (अ)। दृ+भ वा। "कुशा, काश, बल्वल, तीक्ष्ण रोमवाले (तेजलूंवाले) मौज और शाद्वल" ये छ दर्भ कहे जातेहैं। काश आदि छ प्रकारका घास.

दर्वि-र्वी, (स्त्री०)। दृ+विन् वा ङीप्। व्यञ्जन (नाल्दा) आदिको उठानेका साधन। देचकीसे नाल्दा इसीसे निकालते और देखते हैं। कडछी। लकडी आदिका बनाहुआ पदार्थ। "स्वार्थे कन्" इसी अर्थमें। और गोजिह्वालता (वेल).

दर्वीकर, (पु०) दर्वीव करः फणो यस्य। दर्वीव फणं करोति वा कडछीके समान जिसका फन है अथवा जो कडछीकी नाईं फन बनाता है। "कृ+अच्" सर्प। सांप.

दर्श, (पु०) दृश्यते (शास्त्रे) चन्द्रार्कसङ्गमो यत्र। दृश्+घञ् (अ)। जहां चांद और सूर्यका मेल होता है। अमावास्या तिथि। यज्ञविशेष। "दर्शपूर्णमासाभ्यां यजेत" श्रुतिः। "भावे घञ्" दर्शन। देखना। दृश्+अच्। देखनेहारा (त्रि०).

दर्शक, (पु०) दर्शयति राजानं आगतान्। जो आये हुओंको राजाका दर्शन करावे। दिखानेहारा (त्रि०).

दर्शन, दृश्+ल्युट् (अन)। जिस्से देखते हैं। आंख (नेत्र)। स्वप्न (सुपना)। बुद्धि। धर्म। उपलब्धि। मिलाहुआ (हासल)। शीशा। अध्यात्म (अपनाआप)। ज्ञानके उपाय। न्याय आदि शास्त्र.

दर्शनीय, (त्रि०) दृश्+अनीयर्। मनोहर। दिलपसंद। देखनेलायक.

दर्शयितृ, दृश्+णिच्+तृच्। दिखलानेहारा (त्रि०)। द्वारपाल (दर्वान) दर्वाजेपर आयेहुओंको राजाका दर्शन कराता है (पु०).

दल्, भेदन। फाडना। तोडना। दलना। भ्वा० पर० सक० सेट्। दलति। अदालीत्। "णिचि"। दालयति-ते। अदीदलत्-त.

दल, (न०) दल्+अच्। ऊंचाई। टुकडा। शस्त्रच्छद (मियान)। अपद्रव्य (खोट)। पत्ता। बादल। तमालका पत्ता। आधा.

दलित, (त्रि०) दल्+क्त। प्रफुल्ल (फूलाहुआ-खिलाहुआ)। तोडागया। आधा कियागया.

दव्, गति-जाना। भ्वा० पर० सक० सेट्। इदित्। दन्वति। अदान्वीत्.

दव, (पु०) दुनोति। दु+अच्। वन। जंगल। बनकी आग "भावे अच्"। उपताप। गरमी.

दवथु, (पु०) टु-दु-उपताप। गरम होना। अथुच्। गर्मी। अंग आदिकी जलन.

दवाग्नि, (पु०) दवस्य (वनस्य) अग्निः। जंगलकी आग। दावानल.

दविष्ठ, (त्रि०) अतिशयेन दूरः। इष्ठन्। अन्त्यका लोप और गुण। बहुत दूर। "ईयसुन्"दवीयस्। यही अर्थ। स्त्रियां ङीप्.

दश्, दीप्ति। चमकना। दंशन। डसना। चुरा० आत्म० अक० सेट्। इदित्। दंशयति। अददंशत्। उभ० "अक०" दंशयति-ते। अददंशत्-त.

दशक, (न०) दश परिमाणं अस्य+कन्। दशकी संख्या (गिन्ती).

दशकण्ठ, (पु०) दश कंठाः यस्य । जिसके दश गले हैं । दशमुख । रावण.

दशकर्म, (न०) दश कर्माणि । दस प्रकारका संस्कार । गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूडाकरण, उपनयन और विवाह.

दशत्, (पु०) दश परिमाणं अस्य+अति । दसोंका समूह.

दशधा, (अव्य०) दश+प्रकारे धाच् । दस प्रकारका.

दशन्, (त्रि०) दन्श्+कनिन् । दस एक संख्या.

दशन, (पु०) दश्यतेऽनेन । जिस्से डसाजाता है । नि० "नका लोप" दांत । शिखर "करणे ल्युट् (अन)" । कवच (जिरह) । "भावे ल्युट्" दंशन (डसना) । दांत आदिसे चोट लगाना.

दशनोच्छिष्ट, (न०) दशनेन उच्छिष्टं यत्र । जहां डसनेसे जूठा होता है । ओठ (होठ) आदिका चूमना.

दशवल, (पु०) दश बलानि यस्य । जिसके दस बल हैं । बुद्धमुनि । दान, शील, क्षमा, वीर्य, ध्यान, प्रज्ञा, बल, उपाय, प्रणिधि और ज्ञान ये दशबल हैं.

दशभुजा, (स्त्री०) दश भुजा यस्याः । दस भुजावाली दुर्गा (देवी).

दशम, (त्रि०) दशानां पूरणः+डट्-मट् । दसवां । जो दसवीं संख्याको पूरा करदे.

दशमिन्, (त्रि०) पूरण अर्थमें+इनि । नव्वेसे ऊपरकी उमरवाला । बहुत बूढा.

दशमी, (स्त्री०) दशानां पूरणी । दसोंको पूरा करनेवाली । दशमी तिथि । नव्वेसे ऊपरकी ऊमर । बहुत बूढी उमर । कामदेवकी दसवीं अवस्था (मरणरूप).

दशमीस्थ, (त्रि०) दशम्यां अवस्थायां तिष्ठति । स्था+क (अ) । अतिवृद्ध । बहुत बूढा । नव्वेसे ऊपरकी उमरवाला । क्षीणराग । जिसकी संसारके पदार्थोंमें प्रीति ढीली होगई । स्मृतिहीन (जो वात याद नहीं रख सक्ता) । विरहसे मौतकी हालतको पहुंचगये कामिओंका जोडा.

दशमूल, (न०) दश मूलानि यत्र । जहां दस जडें हैं । एकप्रकारका पाचन (खायेगये अन्नको पचानेहारा) । बिल्व, श्योनाक, गम्भारी, पाटला, गणिकारिका, शालपर्णी, पृश्निपर्णी, दोनों बृहती और गोक्षुर ये दस मूल हैं.

दशरथ, (पु०) दशसु दिक्षु गतो रथो यस्य । जिसका रथ दसों दिशाओंमें गया । सूर्यवंशी राजा । श्रीरामजीके पिता.

दशरथसुत, (पु०) ६ त० । रामचन्द्र (दशरथका पुत्र) । "दशरथात्मज."

दशवार्षिक, (त्रि०) दशवर्षेषु भवः-ठक्+इक । दशवर्षके अनन्तर होनेवाला । दशवर्षमें समाप्त होनेवाला.

दशविध, (त्रि०) दश विधाः=प्रकाराः यस्य । दस प्रकार (तरह) का.

दशसहस्रं, (न०) दश सहस्राणि । दस हजार.

दशहरा, (स्त्री०) दशविधानि दशजन्मार्जितानि च पापानि हरति । हृ+ठक् । दस प्रकार वा दस जन्मोंके इकठ्ठेहुए पापोंको दूर कर्ती है । गंगाके जन्मका दिन । जेठ महीनेमें शुक्लपक्षकी दशमी.

दशा, (स्त्री०) दन्श्+अङ् । नि० । नलोपः । अवस्था । हालत । दिवेकी वत्ती (वट्टी) । "अपेक्षन्ते न च स्नेहं नपात्रं न दशान्तरम् । परोपकारनिरता मणिदीपा इवोत्तमाः" इत्युद्भटः । वस्त्रान्त । आँचल (पल्लडा) गर्भवासजन्मादि । बालकपन । जवानी । बुढेप्पा । कामसे उपजी विरहिओंकी दसप्रकारकी हालत । योगिनी दशा.

दशाकर्ष, (पु०) दशया (तैलादिकं) आकर्षति । जो वत्तीसे तेल आदिको खेंचता है । आ+कृष्+अच् । प्रदीप । दीआ । वस्त्राञ्चल । कपडेका पल्लडा (आँचल).

दशाधिपति, (पु०) दशाया अधिपतिः । दशाका स्वामी । सूर्य वा अन्य ग्रह.

दशान्त, (पु०) दशायाः अन्तः । वत्तीका अन्त (सिरा).

दशार्ण, (पु०) दश ऋणानि (दुर्गाणि जलानि वा) यत्र । जहां दस किले वा पानी हैं । एक देश । एक नदी (स्त्री०).

दशार्ह, (पु०) यदुराजाका देश । उस देशके वासी । बहु० व०.

दशावतार, (पु०) दश मीनादयोऽवतारा यस्य । मछली आदि जिसके दस अवतार हैं । विष्णु.

दशाश्व, (पु०) दश अश्वा रथे यस्य । जिसके रथमें दस घोडे हैं । चन्द्र । चाँद । चंद्रमा.

दशाश्वमेधिक, (पु०) दश अश्वमेधा ब्रह्मणा कृताः सन्ति अत्र+ठन् (इक) । जहां ब्रह्माने दस अश्वमेध यज्ञ किये हैं । काशीजीमें एक तीर्थविशेष है.

दशाह, (पु०) दशानां अह्नां समाहारः । टच्-समा० । दस दिन । "दशाहं सूतकी भवेत्" इति स्मृतिः.

दशेन्धन, (पु०) दशा वर्तिकैव इन्धनं यस्य । वत्तीही जिसकी लकडी है । प्रदीप । दीआ । दीवा । लैंप.

दस्, उत्क्षेप । फेंकना । लूटना । दिवा० पर० सक० सेट् । दस्यति । अदसत्-अदासीत्-अदसीत्.

दस्, दर्शन । देखना । दंशन-डसना । चुरा० आत्म० सक० सेट् । इदित् । दंसयते । अददंसत्.

दस्यु, (पु०) दस्+युच् (अन् आदेश नहीं होता) चोर । दुश्मन । शत्रु । महासाहसिक । बडा दिलेर.

दस्र, (पु०) दस् । रक् । गर्दभ । गधा । अश्विनीकुमार (द्वि०) अश्विनीतारा.

दह्, दाह । जलाना । भ्वा० पर० अनिट् । दहति । अधाक्षीत्.

दहन, (पु०) दह+ल्यु० (अन) । अग्नि । आग । चित्रकवृक्ष । खराब दिल । "भावे ल्युट्" दाह । जलना (न०)

दहर, (पु०) दह्+अरन् । मूषिक । (मूसा) । धातुद्रव्यके पिघलानेका पात्र (वर्तन) । सूक्ष्म । वारीक । दिल । हृदयका आकाश । "दहरोऽस्मिन् अन्तराकाश" । इति श्रुतिः.

दहराकाश, (पु०) कर्म० । चिदाकाश । चैतन्यआकाश । हृदयस्थ ईश्वर.

दा, दान देना । जुहो० उभ० सक० सेट् । ददाति-दत्ते । अदात्-अदित.

दा, छेदन । काटना । अदा० पर० सक० अनिट् । दाति । अदात्.

दाक्षायणी, (स्त्री०) दक्षस्य अपत्यं स्त्री+फिञ् गौरा० ङीष् । अश्विनीआदि तारा । सतीनाम्नी शिवजीकी पत्नी (स्त्री०).

दाक्षिणात्य, (पु०) दक्षिणस्यां दिशि भवः । दक्षिण+त्यक् (त्य) । जो दक्षिणदिशामें हो । नारिकेल । नरेल । दक्खिनी.

दाक्षिण्य, (न०) दक्षिणस्य भावः+ष्यञ् । अनुकूलता । दूसरेकी इच्छाको पूरा करना । "दक्षिणां अर्हति" ञ्य (य) । जिसे दक्षिणा देनी चाहिये । ऋत्विज् (पुरोहित).

दाक्षी, (स्त्री०) दक्षस्य गोत्रापत्यं स्त्री+इञ् ङीप् । पाणिनि मुनिकी माता (मां).

दाक्षीसुत, (पु०) ६ त० । व्याकरणके कर्ता पाणिनिमुनि.

दाडि(लि)म, (त्रि०) दल्+घञ् । दालः । तेन निर्वृत्तः । इमप् वा लस्य । अनारका वृक्ष । "स्त्रियां ङीप्" "वियोगिनीमैक्षत दाडिमीमसौ" नौषधं.

दाण्, दान्-देना । भ्वा० पर० सक० सेट् (ण् इत् होता है) । यच्छति । अदात्.

दात, (त्रि०) दो+क्त । छिन्न (काटागया) । "दैप्+क्त" शुद्ध (साफ कियागया).

दात्यूह, (पु०) दो+क्तिन् । दितिं (खण्डनं) वहति (दितिवाट्) स एव अण् । वाह ऊठ्-इतको आ । कालकण्ठकनामी एकप्रकारका पक्षी । जलकाक । पपीहा.

दात्र, (न०) दा+ष्ट्रन् (छेदसाधन) काटनेका साधन (दात) । शस्त्र (औजार).

दान, (न०) दो-दै-दा-वा+ल्युट् । हाथीके मदका जल । पालना । बचाना । काटना । सफाई । त्याग । छोडना । त्याग । देना.

दानव, (पु०) दनोः अपत्यं अण् । दनुकी सन्तान । असुर । दैत्य.

दानवारि, (पु०) ६ त० । देवता और विष्णु । कर्म० । हाथीके मदका जल (न०).

दानवीर, (पु०) दाने वीरः । देनेमें वीर (बहादुर) । बडा उदार मनुष्य.

दानशील, (त्रि०) दानं शीलं सततं अनुष्ठानं यस्य । देनेके स्वभाववाला । बहुदाता । बहुत देनेवाला.

दानशौण्ड, (त्रि०) दाने शौण्डः दक्षः । देनेमें चतुर । बहुत देनेहारा.

दापित, (त्रि०) दा+णिच्+क्त । साधित । साधागया । काबू कियागया । धन आदिसे वश किया हुआ । दण्डदिया गया । दिलाया गया.

दामन्, (स्त्री० न०) दो+मनिन् । दोहन (चोना)के समय पशुके बांधनेकी रस्सी । रस्सी । माला "वा टाप्" दामा दामे.

दामोदर, (पु०) दाम उदरे यस्य ६ त० । "सम्पूर्णलोकोंके नाम जिसके पेटमें हैं" विष्णु.

दाम्भिक, (त्रि०) दम्भेन चरति धर्म+ठक् । संसारमें अपनी कीर्ति आदि प्रसिद्ध करनेके लिये धर्मका आचरण करनेहारा । बैडालव्रतिक । बिल्लेके व्रतवाला । पाखण्डी । बगला पक्षी (पु०).

दाय्, देना । भ्वा० आत्म० सक० सेट् । दायते । अदायिष्ट.

दाय, (पु०) दा+कर्मणि घञ् । पिता आदिका धन जो पुत्र आदिसे विभाग करनेके लायक है । बडोंका विरसह । विवाहके समय जामाता (जवाई) आदिके तई देने योग्य धन । "भावे घञ्" दान (देना) । "घञ्" खण्डन (तोडना) । "दैप्+करणादौ घञ्" जल (पानी).

दायभाग, (पु०) पैतृकधनविभाग । बापके बिरसेकी तक्सीम । एक ग्रन्थका नाम । अठारह प्रकारके विवादों (झगडों) मेंसे एक.

दायाद, (पु०) दायं (विभजनीयं धनं) आदत्ते (आ+दा+क) । जो तक्सीम करनेलायक धनको लेता है । पुत्र (बेटा) "दायं अत्ति-अद्+अण्" उपपदसमासः । सपिण्ड.

दार, (पु० ब०) दारयन्ति भ्रातृस्नेहं । दृ+णिच्+अच् । जो भाईओंके प्रेम (मुहब्बत) को फाड डालती है । पत्नी (स्त्री).

दारक, (पु०) दृणाति (भिनत्ति) उदरं । दृ+ण्वुल्(अक) । जो पेटको फाडता है । बालक । लडकी (स्त्री०) । फाडनेवाला (त्रि०) । गांवका सूअर (पु०).

दारकर्मन्, (पु०) दारौपयिकं (दारसम्पादकं) कर्म० । स्त्रीको देनेहारा काम । विवाह । "सवर्णाग्रे द्विजातीनां प्रशस्ता दारकर्मणि" इति मनुः.

दारु, (न०) दृ+उण् । काष्ठ । लकडी । पीतल । और देवदारु (दियार) कारीगर । फाडनेहारा (त्रि०).

दारुक, (पु०) कृष्णजीका सारथी (गाडी चलानेहारा).

दारुण, (पु०) दारयति चित्तं । दृ-डरना+उनन् । चित्रा रौद्ररस और भयानक रस । डरावना । दुःसह । भीषण । भयका कारण (त्रि०).

दारुसार, (न०) दारुषु सारं (श्रेष्ठं) । लकडियोंमें बहुत अच्छी लकडी । चन्दन.

दारुसिता, (स्त्री०) दारुमयी सिता (मधुरत्वात्) लकडीकी मिशरी (मीठी होनेसे) । दारचीनी । दालचीनी.

दार्वट, (न०) दारुवत् निश्चलतया अटन्ति अत्र । अट्+क । जहां लकडीकी नाईं चुपचाप होकर घूमते हैं । चिन्तागृह । सोचनेका घर । विचार करनेका घर । कचहरी.

दार्वाघाट, (न०) (पु०) दारूणि आहन्ति । हन्+अण् वा टान्तादेशः । एक प्रकारका पक्षी (काटठोकरा).

दार्वी, (स्त्री०) दॄ+उण् गौ० ङीष् । दियारकी लकडी । हल्दी । गोजिह्वा । दारुहरिद्रा.

दाव, (पु०) दुनोति (दु+ण) । वन । जंगलकी आग । "भावे घञ्" ताप (गरमी).

दावाग्नि, (पु०) दावस्य (वनस्य) अग्निः । वनकी आग । " दावानल ".

दाविक, (त्रि०) देविकायां (नद्यां) भवः । देविका नदीमें हुआ.

दाशृ-स्, हिंसन मारना । स्वा० पर० सेट् । दाश्नो-(स्नो)-ति । अदाशी(सी)त्.

दाशृ, देना । चुरा० उभ० सक० सेट् । दाशयति-ते । अदिदाशत्-त.

दाश-स, (पु०) दशति मत्स्यान् । दन्श्+घञ् । नि० । जो मच्छिओंको डसता है (पकडता है) "दास्यते मूल्यं अस्मै । दास्+घञ् वा" जिसे मोल दिया जाताहै । दास (नौकर) । मच्छिओंपर जीनेवाला धीवर । मच्छी पकडनेहारा.

दाशरथ, (पु०) दशरथस्य अयं अण् । जो दशरथका हो । श्रीरामचन्द्र । "प्रदीयतां दाशरथाय मैथिली" नाटक.

दाशरथि, (पु०) दशरथस्य अपत्यं+अत इञ् । दशरथराजाकी सन्तान । श्रीराम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न.

दाशार्ह (पु०) दाशं (दानं) अर्हति । अर्ह+अण् । जो दानके योग्य है । " दशार्हवंशे भवः अण् वा " दशार्हवंशमें उपजा । विष्णु । दशार्ह देशमें जन्मा (त्रि०).

दासृ, देना । भ्वा० उभ० सक० सेट् । दासति-ते । अदासीत्-अदासिष्ट.

दास, (पु०) दास्+अच् । शूद्र । अपनेको जाननेहारा । धीवर । दानके लायक । शूद्रकी उपाधि । "दास्यते (दीयते) अस्मै अन्नादि । दास्+घञ् " । जिसे अन्नादि दिया जाता है । भृत्य और सेवक । " स्त्रियां " दासी.

दासेय, (पु०) दास्या अपत्यं ढक् (एय) । दासीके गर्भमें उपजा । दास । " दाशस्य (धीवरस्य) अपत्यं ढक् " (एय) । धीवरकी सन्तान । व्यासकी माता (स्त्री०).

दासेर, (पु०) दास+एरक् । ऊंट । "दास्या अपत्यं ढक्" (एय) । दासीका बेटा । कन्+स्वार्थे.

दासेरक, (पु०) मालवा देश । उस देशके लोग बहु०.

दाह, (पु०) दह्+घञ् । भस्मीकरण । जलाना । खाक करना । शरीर आदिका तपना.

दाहक, (पु०) दह्+ण्वुल् (अक) । चित्रा वृक्ष । लाल चित्रा । जलानेवाला (त्रि०) " स्त्रियां " दाहिका.

दिक्कर, (पु०) दिक्षु कीर्यतेऽसौ । कृ+अण् । जो दिशाओंमें फेंकाजाय । तरुण । जवान । युवती (स्त्री०).

दिक्चक्रं, (न०) दिशां चक्रम् । दिशाओंका समूह । सारा संसार.

दिक्पति, (पु०) ६ त० । दिशाओंका ईश्वर (मालिक) । " इन्द्रो वह्निः पितृपतिर्नैर्ऋतो वरुणो मरुत् । कुबेर ईशः पतयः पूर्वादीनामधीश्वराः ".

दिगम्बर, (पु०) दिक् (शून्यं) एव अम्बरं यस्य । दिशाही जिसका कपडा है । शिवजी । एक प्रकारका बौद्ध । संन्यासी । शरीरके माप जितना जीव माननेहारा । बौद्धोंमेंसे एक । नग्न (नंगा) (त्रि०) कालिका (स्त्री०) ङीप् । "दिशाओंको कपडेकी नाईं ढाकनेसे" । तमः (अन्धकार-अंधेरा) (न०).

दिग्गज, (पु०) ६ त० । पूर्व आदि दिशाओंमें पृथिवीको पकडनेके लिये ठहरेहुए ऐरावत आदि हाथी । " ऐरावतः पुण्डरीको वामनः कुमुदोऽञ्जनः । पुष्पदन्तः सार्वभौमः सुप्रतिकश्च दिग्गजाः ".

दिग्ध, (पु०) दिह्+क्त । विष (जहर)से लिपटाहुआ वाण (तीर) और वह्नि (आग) । " भावे क्त " स्नेह । चिकनाई (तेल) और लेपन (न०) । "कर्मणि क्त" लिप्त "लिबडाहुआ" (त्रि०).

दिङ्नाग, (पु०) दिशां नागः ष० त० । दिशाओंका नाग (हाथी) । दिग्गज.

दिग्विजय, (पु०) दिशां विजयः ष० त० । दिशाओंका विजय (जीत) । संसारका विजय.

दिङ्मात्र, (न०) दिशो मात्रा अंशः । एक देश । एक ओर । ६ ब० । थोडासा (त्रि०).

दिति-ती, (स्त्री०) दो+वा ङीप् । क्तिच् । दैत्योंकी माता । कश्यपकी स्त्री । " भावे क्तिन्-ङीप् नहीं होता " तोडना.

दितिज, (पु०) दितेर्जायते । जन्+ड (अ)। दितिसे उपजा । असुर । दैत्य । "दितिसुत" यही अर्थ.

दित्सा, (स्त्री०) दा+सन्+अङ् । देनेकी इच्छा.

दित्सु, (त्रि०) दा+सन्+उ । देनेकी इच्छा करनेवाला.

दिधिषु(षू), (पु०) दिधिषुं आत्मन इच्छति+क्यच् क्विप् । पृ० वा ह्रस्वः । दूसरी वार विवाही गई स्त्रीका स्वामी । दूसरा खाविंद.

दिधिषू, (स्त्री०) दिधिं धैर्यं स्यति । सो ऊ वा षत्वम् । जो धीरजको तोडदे । द्विरूढा । दोवार विवाहीहुई औरत । वडी भगिनी (वहिन-भैन) के न होते छोटीका विवाह । "ज्येष्ठायां अनूढायां सत्यां ऊढायां कनिष्ठभगिन्यां च".

दिधिषूपति, (पु०) ६ त० । भाईके मरजानेपर जो उसकी स्त्रीमें विषयभोगकी इच्छासे किंवा धर्मसे अनुरक्त होता है । दूसरी वार विवाहीगई स्त्रीका पति । विधवाका पति । वडीके न विवाहे जानेपर विवाहीगई छोटी वहिनका पति । रंडी (वेवा) का खसम.

दिधीर्षा, (स्त्री०) धृ+सन्+ड । धारण करनेकी इच्छा । आश्रय देनेकी इच्छा.

दिन, (पु०) द्यति तमः । जो अंधेरेको काटता है । सूर्यकी किरणोंसे पहिचाना गया (६०) साठ घडी वा चार पहिरका समय । दिन । रोज.

दिनकर, (पु०) दिनं करोति स्वोदयेन । कृ+टक् । जो अपने उदयसे दिनको वनाता है । सूर्य । सूरज.

दिनक्षय, (पु०) जिस दिन तीन तिथियें इकठी आजांय । दिनका नाश.

दिनपति, (पु०) ६ त० । दिनका पति सूर्य । आकका वृक्ष.

दिनमणि, (पु०) दिने मणिः इव (प्रकाश करनेसे) दिनके समय मानो मणि चमक रही है । सूर्य । आकका वृक्ष.

दिनमुखम्, (न०) दिनस्य मुखम् । दिनका मुख । प्रातः-काल । सवेरा.

दिनयौवनम्, (न०) दिनस्य यौवनम् । दिनकी जवानी । दिनमध्य । दुपहिर.

दिनादि, (पु०) ६ त० । दिनका प्रारम्भ (शुरू) । प्रातः-काल । सवेर । सुवह.

दिनान्त, (पु०) ६ त० । दिनका अन्त । दिवसका अव-सान । सायंकाल । शाम । सांझ.

दिम्, प्रेरण । चलाना । चुरा० उभ० सक० सेट् । इदित् । दिम्भयति-ते । अदिदिम्भत्-त.

दिलीप, (पु०) सूर्यवंशमें होनेवाला एक राजा । रघुका पिता.

दिव्, प्रीति । प्रसन्न होना । भ्वा० पर० सक० सेट् । इदित् । दिन्वति । अदिन्वीत्.

दिव्, जीत चाहना-शर्त लगाना-व्यवहार-इच्छा-आज्ञा-खेलना-स्तुति करना-खुशहोना-चमकना । दिवा० पर० अक० (और) सक० सेट् । दीव्यति । अदेवीत् । देविता । धूता.

पद्म० ३२

दिव्, (स्त्री०) दिव्+दिवि । स्वर्ग (वहिश्त) । आकाश । आस्मान.

दिव, (न०) दिव्+क । स्वर्ग । आकाश । दिन । वन । जंगल.

दिवस, (पु०) दीव्यन्ति अत्र । दीव्+असच् । दिन । रोज.

दिवसमुख, (न०) ६ त० । दिनका मुख (शुरू) । प्रभात । सवेर.

दिवसविगम, (पु०) दिवसस्य विगमः-ष० त० । दिनका चला जाना । सायं । सांझ । सूर्यास्त.

दिवस्पति, (पु०) ६ त० । अलुक् समा० (सका आगम) स्वर्गका पति । इन्द्र । देवताओंका राजा.

दिवस्पृथिवी, (स्त्री०) द्वि० । दिवस् च पृथिवी च । नि० सुट् । स्वर्ग और पृथिवी । मिलेहुए पृथिवी और स्वर्ग । जमीन-आस्मान.

दिवा, (अव्य०) दिव्-का । दिवस । दिन । रोज.

दिवाकर, (पु०) दिवा करोति । दिन करता है । सूर्य । कौआ । सूरजका फूल.

दिवाकीर्ति, (पु०) दिवैव कीर्तिः कृत्यं यस्य । जिसका काम दिनहीके समयमें है (रातको हजामतका करना मने है) नापित । नाई । नौआ.

दिवाटन, (पु०) दिवा अटति । दिनके समय घूमता है (रातको अंधा होजाता है) कौआ.

दिवातन, (त्रि०) दिवा भवः+ट्यु-तुट्च् । दिवाभव । दिनमें होनेहारा । स्त्रियां ङीप्.

दिवानिशम्, (अव्य०) दिवा च निशा च तयोः समाहारः । दिन और रात.

दिवान्ध, (पु०) दिवा (दिने) अन्धः (देख न सकनेसे) जो दिनमें अंधा होता है । उल्लू आदि । "दिवान्धाः प्राणिनः केचित्" चण्डी.

दिवाभीत, (पु०) दिवा (दिवसे) भीतः । दिनके समय डराहुआ । चोर । चांद । उल्लू । "दिवाभीतमिवान्धकारम्" इति कुमारः.

दिवामध्यम्, (न०) दिवा=दिनस्य मध्यम् । दिनका मध्य । मध्यदिन.

दिवारात्रम्, (अव्य०) दिवा च रात्रिश्च तयोः समाहारः । दिन और रात.

दिवावसानम्, (न०) दिवा=दिनस्य अवसानं । दिनका अन्त (आखिर) सायं । सांझ.

दिवाशय, (त्रि०) दिवा शेते+शी+अ । जो दिनके समय सोताहै.

दिविज, (पु०) दिवि जायते (जन्+ड) अलुक् समा० । स्वर्गका । दिविभव.

दिविषद्, (पु०) दिवि सीदति क्विप्-षत्वम् । स्वर्गमें रहने-हारा । देवता.

दिवो(वौ)कस्-स, (पु०) दिवि-दिवं वा ओकस् यस्य प० अकारान्त भी होता है । देवता (जिसका स्वर्गमें स्थान है) । "तारकेण दिवौकसः" इति कुमारः.

दिवोदास, (पु०) चंद्रवंशमें काशीनगरीका एक राजा.

दिव्य, (न०) दिवि भवं यत् । लौंग । चंदन । शपथ (कसम-सौं) । गुग्गल । स्वर्गकी चीज । एक प्रकारका नायक (पु०) "दीव्यते अनेन-दिव्+क्यप्" । मनोहर । सुन्दर । अजीव । चमकीला (त्रि०).

दिव्यगन्ध, (पु०) दिव्यो मनोहरो गन्धोऽस्य । जिसका मनोहर गंध है । गंधक । लौंग (न०) । छोटी इलायिची (स्त्री०) । कर्म० उत्तम गंध (पु०).

दिव्यगायन, (न०) कर्म० । अजीव गानेहारा । गंधर्व (देवताओंका गवैया).

दिव्यचक्षुस्, (पु०) दिव्यं चक्षुः यस्य । जिसकी अजीव आँख हो । जिसके सुन्दर नेत्र हों । जो ज्ञानकी आँख रखता है । अंधा.

दिव्यज्ञान, (न०) दिव्यं ज्ञानं क० स० । विचित्र (स्वर्गीय वा हैरात करनेवाला) ज्ञान (समझ) । आश्चर्यज्ञान.

दिव्यतेजस्, (स्त्री०) दिव्यं तेजो यस्याः । जिसका आश्चर्य तेज हो । ब्राह्मी लता । एक प्रकारकी बेल.

दिव्यदृश्, (पु०) दिव्यं पश्यति उप० स० । आश्चर्य रूपसे देखनेवाला । ज्योतिषी.

दिव्यदोहद, (न०) अभीष्टसिद्धि (चाहीगई चीजकी कामयाबी)के लिये जो पदार्थ देवताओंको दिया जाता है.

दिव्यप्रश्न, (पु०) दिव्यः प्रश्नः । स्वर्गीय (आश्चर्यजनक) बातोंका पूछना । भावी वृत्तांतका पूछना.

दिव्यमान, (न०) दिव्यं मानं क० स० । आश्चर्य माप । देवताओंके वर्ष और दिनके अनुसार समयका परिमाण.

दिव्यरथ, (पु०) दिव्यः रथः । स्वर्गकी गाडी । आकाशमें चलती है.

दिव्यवस्त्र, (त्रि०) दिव्यानि वस्त्राणि यस्य ब० स० । जिसके दिव्य वस्त्र हैं । स्वर्गकी पौशाकवाला ।–स्त्रः (पु०) धूप.

दिव्याङ्गना, (स्त्री०) दिव्या अंगना । कर्म० स० । स्वर्गकी अप्सरा । अत्यन्त सुन्दरी नारी.

दिव्यादिव्य, (त्रि०) दिव्यश्च अदिव्यश्च । दिव्य (स्वर्गीय) अदिव्य (मानवीय) । आधा मनुष्य और आधा देवता.

दिव्यांशु, (पु०) दिव्याः अंशवः यस्य ब० स० । स्वर्गकी चमकीली किरणोंवाला । सूर्य.

दिव्योदक, (न०) दिव्यं उदकं । स्वर्गका जल । वर्षा (वर्सात)का पानी.

दिव्यौषधि, (स्त्री०) कर्म० । मनःशिला । गेरीआदि । अजीव दवाई.

दिश्, दान-देना । हुक्मकरना । तुदा० उभ० सक० अनिट् । दिशति । अदिक्षत्.

दिश्, शा, (स्त्री०) दिश्+क्विप् । आशा (दिशा) । तरफ.

दिशा, (स्त्री०) दिश्+अङ् । ओर.

दिशोभाज्, (पु०) दिशः भजति भज्+ण्वि । सब दिशाओंमें भागनेवाला । कांदिशीक । चपल.

दिश्य, (त्रि०) दिशि भवं-दिग्भ्य उपनीतं वा यत् । दिशामें होनेवाला । दिशाओंसे लायागया । जो कुछ दिशामें हो.

दिष्ट, (न०) दिश्+क्त । भाग्य । किस्मत । समय (वक्त) (पु०) । उपदेश कियागया (त्रि०).

दिष्टान्त, (पु०) दिष्टस्य (भाग्यस्य) अन्तः । भाग्यका अन्त । मरण । मौत.

दिष्टि, (स्त्री०) दिश्+भावे क्तिन् । संज्ञायां+कर्तरि क्तिच् वा । भाग्य । अपना भाग । किस्मत । भावी । नियम । अच्छा भाग्य । कोई मंगलवृत्तान्त.

दिष्ट्या, (अव्य०) मङ्गल । हर्ष । भाग्यसे । मैं बहुत प्रसन्न हूं.

दिह्, लेपन । लीपना । चंदन आदि लगाना । अदा० उभ० सक० अनिट् । देग्धि-दिग्धे । अदिक्षत्-अदिक्षत । अदिग्ध.

दी, क्षय । घटना । नाशहोना । दि० आ० अ० अनिट् । दीयते । अदास्त । दिग्ये । दीनः.

दीक्ष, मुंडवाना । यज्ञोपवीत करना । नियम वा व्रतकी आज्ञा करना । भ्वा० आत्म० सक० सेट् । दीक्षते । अदीक्षिष्ट.

दीक्षा, (स्त्री०) दीक्ष्+अ । नियम । संस्कार "विवाहदीक्षां निरवर्तयद्गुरुः" इति रघुः । अभीष्ट देनेहारा मन्त्रका लेना (तन्त्रमें) । मन्त्रका उपदेश और यज्ञ । देवी.

दीक्षागुरु, (पु०) मन्त्रआदिका उपदेश करनेहारा गुरु । उपदेशका दाता.

दीक्षान्त, (पु०) दीक्षायाः (प्रधानयागस्य) अन्तः (तत्समापको यागभेदः) । अवभृथरूप यागभेद । बडे यज्ञके अन्तमें जो उसका अंगरूप छोटा यज्ञ किया जाता है.

दीक्षित, (त्रि०) दीक्ष+क्त । सोमयाग आदिमें संकल्प करके नियम लिया गया । "दीक्षा जाता अस्य+इतच्" । जिसने तन्त्रके अनुसार दीक्षा (मन्त्रका उपदेश) लीहो.

दीदिवि, (पु०) दिव्+किन् -अभ्यास और दीर्घ । बृहस्पति (देवताओंका गुरु) । अन्न (पु० न०) । उदयहुआ (उठाहुआ) (त्रि०) । उबलेहुए चावल (पु० न०).

दीधिति, (स्त्री०) दीधि+क्तिन्-इट्-और इकारका लोप । किरण । अुआ.

दीन, (त्रि०) दी+क्त तको न । दुःखित । निर्धन । भीत (डराहुआ) । तगरका फूल (न०).

दीनार, (पु०) दी+आरक्-नुट् । सोनेका भूषण (गहना, जेवर) । मोहर । बत्तीस रत्तीभर सोना । सोनेका सिक्का.

दीप्, दीप्ति । चमकना । दिवा० आत्म० अक० सेट् । दीप्यते । अदीपि-अदीपिष्ट । दीप्तः.

दीप, (पु०) दीप्+क । प्रदीप । दीपक । दिया । चराग । लैंप किसी प्रकारका दीप.

दीपक, (पु०) दीप्+स्वार्थे कन् । दिआ । वाज पक्षी । एक प्रकारका राग । केसर । एकप्रकारका अर्थालंकार (न०) । कुशल । कामको प्रकाश करनेहारा (त्रि०) "स्त्रियां टाप् -अको इ" । एक ग्रंथका नाम.

दीपन, (पु०) दीपयति भक्षणात् जठराग्निं उत्तेजयति । दीप्+णिच्+ल्यु (अन) । जो खानेसे पेटकी आगको भडकाताहै । तगरकी जड । पलाण्डु (प्याज) । केसर । और खांसीको दूर करनेहारे । चमकानेवाला (त्रि०) । मेथी (स्त्री०).

दीपनीय, (त्रि०) दीप्+अनीय । प्रकाश करनेयोग्य । जगानेलायक.

दीपमालिका, (स्त्री०) दीपानां माला यस्यां+कप् अको इ होती है । जिसमें दीवोंकी कतार हो । दीवोंवाली अमावस्या । दीवाली । ६ त० । दीवोंका समूह.

दीपित, (त्रि०) दीप्+क्त । अग्निमें जलाया गया । प्रकाश किया गया । तेज किया गया.

दीपिन्, (त्रि०) दीप्+णिनि । प्रकाश करनेवाला । जगानेवाला । चमकनेवाला । रोशन करनेवाला.

दीप्त, (पु०) दीप्+क्त । नींवू और सिंह (शेर) । सोना और हींग (न०) जलाहुआ । सडाहुआ । चमकाहुआ । चमकील (त्रि०):

दीप्तजिह्वा, (स्त्री०) दीप्ता ज्वलन्ती जिह्वा यस्याः । जिसकी जीभ जलरही है । उल्कामुखी (चुआतीमुई) । एक प्रकारकी गीदडी । (इसकी जीभ रातको जलती है यह प्रसिद्ध है).

दीप्तमूर्ति, (पु०) दीप्ता मूर्तिः यस्य । चमकरही मूर्तिवाला । सूर्य वा विष्णु.

दीप्तलोचन, (पु०) दीप्ते लोचने यस्य । चमकदार आंखोंवाला । बिल्ला । बिडाल । बिल्ली.

दीप्ताग्नि, (पु०) दीप्तः अग्नि जठरानलो यस्य । जिसकी पेटकी आग चमक रही है । अगस्त्यमुनि । तेज पेटकी आगवाला (त्रि०).

दीप्ति, (स्त्री०) दीप्+क्तिन् (ति) । कान्ति । बहुत बढगई सुन्दरता । स्त्रियोंका एक प्रकारका गुण । चमक । भडक.

दीप्तिमत्, (त्रि०) दीप्ति+मतुप् । प्रकाशवाला । चमकदार.

दीप्य, (त्रि०) दीप्+यत् । प्रकाश करनेलायक । जगानेलायक.

दीर्घ, (पु०) दॄ+घञ् (द्राघीयस् -द्राघिष्ठ) । लता । शालका वृक्ष । ऊंठ । दो मात्राका अक्षर जैसे "आ" । लंबा (आयत) (त्रि०).

दीर्घकण्ठ, (पु०) दीर्घः कण्ठो यस्य । जिसका लंबा गला हो । वक । वगुला । लंबे गलेवाला (त्रि०).

दीर्घग्रन्थि, (पु०) दीर्घो ग्रन्थिः पर्वं यस्य । जिसकी गांठ लंबी हो । गजपिप्पली.

दीर्घग्रीव, (पु०) दीर्घा ग्रीवा यस्य । लंबी गर्दनवाला ऊंठ.

दीर्घच्छद, (पु०) दीर्घाः च्छदा यस्य । जिसके लंबे पत्ते हों । इक्षु । गन्ना.

दीर्घजङ्घ, (पु०) दीर्घा जङ्घा यस्य । जिसकी लंबी लातें हों । ऊंठ । वगुला.

दीर्घजिह्व, (पु०) दीर्घा जिह्वा यस्य । जिसकी लंबी जीभ है । सर्प । सांप.

दीर्घतपस्, (पु०) दीर्घं तपः यस्य । लंबे तपवाला । अहल्याका पति गोतमऋषि.

दीर्घदर्शिन्, (पु०) दीर्घात् पश्यति । दृश्+णिनि । दूरसे देखनेहारा । दूरदर्शी । पण्डित और रीछ (भल्लूक) । आनेवाले कामको जानेहारा । दूरसे देखनेवाला (त्रि०).

दीर्घदृष्टि, (पु०) दीर्घा दृष्टिः अस्य । जिसकी लंबी नजर हो । पण्डित । दीर्घा दूरगा दृष्टिः यया । ३ व० । दूर जाती है नजर जिस्से । दूरवीक्षण । दूरबीन । एकप्रकारकी कला.

दीर्घनाद, (पु०) दीर्घो नादः अस्य । (दूर जानेसे) जिसकी लंबी आवाज हो । शंख (इसका शब्द दूर जाता है).

दीर्घनिद्रा, (स्त्री०) कर्म० । लंबी नींद । मृत्यु (मौत) । बहुत देरकी नींद.

दीर्घपल्लव, (पु०) दीर्घः पल्लवः अस्य । जिसका लंबा पत्ता हो । सनका वृक्ष । "कर्म०" लंबा पत्ता (पु० न०) । लंबे पत्तेवाला (त्रि०).

दीर्घपादप, (पु०) कर्म० । लंबा वृक्ष । तालका दरख्त । सुपारीका वृक्ष.

दीर्घपृष्ठ, (पु०) दीर्घं पृष्ठं अस्य । जिसकी लंबी पीठ हो । सर्प । सांप.

दीर्घरागा, (स्त्री०) दीर्घो (बहुकालस्थायी) रागो (रञ्जनं) यस्याः । जिसका रंग बहुत देरतक रहता है । हरिद्रा । हल्दी । वडा पियार करनेवाली औरत.

दीर्घरात्र, (न०) कर्म० । लंबीरात । ७ व० । बहुत रात्रवाला । देरतक.

दीर्घवक्त्र, (पु०) दीर्घं वक्त्रं यस्य । लंबे मुखवाला । हाथी.

दीर्घसत्र, (न०) कर्म० । बहुत कालमें होनेहारा एक प्रकारका यज्ञ । ६ व० । उस यज्ञको करनेहारा (त्रि०) "हविषे दीर्घसत्रस्य सा चेदानीं प्रचेतसः" इति रघुः.

दीर्घसूत्र, (त्रि०) दीर्घेण (बहुकालेन) सूत्रं (अभिलषितकर्म) यस्य । जिसका चाहागया काम देरसे होता है । प्रारम्भ कियेगये कामको देरसे समाप्त करनेहारा । ढिलंगी "कर्म" लंबी तांत (न०)

दीर्घायुष्य, (पु०) दीर्घं आयुष्यं यस्य । जिसकी लंबी उमर हो । मार्कंडेय.

दीर्घायुस्, (पु०) दीर्घं आयुः (जीवनकालः) अस्य । जिसका जीनेका समय लंबा है । कौआ । सिंवलका पेड.

दीर्घिका, (स्त्री०) दीर्घा एव । जिसकी फैलावट लंबी हो । एक प्रकारका जलका स्थान । बावली.

दीर्ण, (त्रि०) दृ+क्त । विदारित । फाडागया । डराहुआ । "भावे क्त" फाडना । डरना (न०).

दु, उपतापन । दुःख देना । तपाना । स्वा० पर० सक० सेट् । दुनोति । अदावीत् -अदौषीत् । दूनः । दवथुः.

दुःख, दुःख करना । चुरा० उभ० सक० सेट् । दुःखयति-ते.

दुःख, (न०) दुःख्+अच् घञ् वा । जो अपनेको अच्छा न लगे । चित्तका धर्म । (न्यायमतमें) आत्माका धर्म । पीडा । तकलीफ और कष्ट । दुःख देनेवाला पदार्थ और दुःखवाला (त्रि०).

दुःखत्रय, (न०) ६ त०, तीन दुःख (आध्यात्मिक आधिभौतिक और आधिदैविक).

दुःखलोक, (पु०) दुःखकरः लोकः । दुःख देनेहारा लोक । सांसारिक जीवन । नित्य दुःखका दृश्य संसार.

दुःखशील, (त्रि०) दुःखकरं शीलं यस्य । जिसका स्वभाव दुःखदायी है । कठिनतासे प्रसन्न किया जानेवाला । बुरे स्वभाववाला । जिसका वशमें आना कठिन है.

दुःखसागर, (पु०) दुःखस्य सागरः । दुःखका समुद्र । सांसारिकजीवन.

दुःखातीत, (त्रि०) दुःखात् अतीतः । दुःखसे अतिक्रमण कर गया । निर्दुःख । दुःखरहित.

दुःखार्त, (त्रि०) दुःखेन आर्तः । दुःखसे पीडित । दुःखी.

दुःखित, (त्रि०) दुःख+इतच् । दुःखी हुआ । पीडित हुआ । निर्धन । अप्रसन्न । तं० न० । कष्ट.

दुकूल, (न०) दु+उलच्-कुक्च । पृ० । क्षौमाम्बर । रेशमी कपडा । चिकना कपडा । महीन कपडा । दुपट्टा.

दुग्ध, (न०) दुह्+क्त । दूध । स्त्रीजातिके स्तनोंसे वहाहुआ द्रव्य । "कर्मणि क्त" । चोईगई (कृतदोहा) धेनु (गौ) आदि (स्त्री०) । प्रपूरित (बहुत भराहुआ) (त्रि०) । "भावे क्त" दोहन (चोना) (न०).

दुन्दुभि, (पु०) दुन्दु इति शब्देन उभति (पूरयति) उभ्+क । शक० दूं दूं शब्दसे भरतीहै । वृहद्ढक्का । बडानगारा (नौवत) । वरुण । एक दैत्य । एक राक्षस । विष । जहर । ६० वर्षोंमें एक वर्ष । पाशक (पास्सा) (स्त्री०).

दुर्-स्, (अव्य०) दुष्ट । निन्दा । निषेध । दुःख.

दुरक्ष, (पु०) दुष्टः अक्षः । छलका पास्सा । "दुष्टोऽक्षो यत्र" । जहां कपटका पास्सा है । छलका जूआ । दुष्टद्यूत.

दुरत्यय, (त्रि०) दुःखेन अतीयते । दुर्+अति+इ+खल् (अ) । जिसे मुश्किलसे लांघसकें । दुरतिक्रमणीय । दुःखसे लांघनेयोग्य । दुस्तर । जिसे दुःखसे तरसकें.

दुरदृष्ट, (न०) दुष्टं अदृष्टं । बुरी किस्मत । दुर्भाग्य । पाप । दुर्गम । जहां पहुंचना कठिन है । जिसे कठिनतासे जा न सकें.

दुरधिगम, (त्रि०) दुःखेन अधिगम्यते । दुर्+अधि+गम्+खल् । जो दुःखसे हासिल किया जाय । दुष्प्राप्य । मुश्किलसे मिलने लायक.

दुरधीत, (त्रि०) दुष्टं अधीतः । बुरी तरहसे पढागया.

दुरध्यवसाय, (पु०) दुष्टः अध्यवसायः क० स० । बुरा काम । बुरा निश्चय.

दुरध्व, (पु०) दुष्टः अध्वा+अच् । बुरारास्ता । दुष्टमार्ग । बुरीसडक.

दुरन्त, (त्रि०) दुष्टः अन्तः (अवसानं) यस्य । जिसका नतीजा बुरा है । द्यूत (शिकार), जूआ, मद्य (शराब) आदिका पीना आदि व्यसन (बुरीआदतें) । क्योंकि ये सब पहिले सुख देकर अन्तमें दुःख देते हैं । "दुर्ज्ञेयः अन्तः (परिच्छेदः) यस्य" । जिसका विचार न करसकें । दुर्ज्ञेय । गभीर । गहिरा.

दुराग्रह, (पु०) दुष्ट आग्रहः (निर्बन्धः) । बुरा हठ । युक्तिरहित अभिनिवेश । (दलीलके बिनाहठ) ६ व० । हठीला (त्रि०).

दुराचार, (पु०) दुष्ट आचारः । बुरा चालचलन । विरुद्धाचरण । ६ व० । बुरे आचारवाला (त्रि०) । "अपि चेत्सुदुराचारः" गीता.

दुरात्मन्, (त्रि०) दुष्ट आत्मा (चित्तं) यस्य । बुरेदिलवाला । दुष्टचित्त जन । दुष्ट चित्तवाला जन (पुरुष वा स्त्री).

दुराधर्ष, (पु०) दुष्टान् (राक्षसान्) आधर्षयति+अच् । जो राक्षसोंका तिरस्कार करे । चिट्टी सरिओं (श्वेतसर्षप) इसके फेंकनेसे भूत आदि भाग जाते हैं । "दुःखेन (ईषदपि धर्षयितुं शक्यम्" -दुर्+आ+धृष्+खल् (अ) "जिसे मुश्किलसे थोडासासी झिडक नहिं सकें" (त्रि०).

दुराप, (त्रि०) दुःखेन आप्तुं शक्यः । दुःखसे पाया जासकनेवाला.

दुराराध्य, (त्रि०) दुःखेन आराधयितुं योग्यः । दुःखसे सेवा किया जासकनेवाला । कठिनतासें वशमें आनेवाला.

दुरारोह, (पु०) दुःखेन आरुह्यते । दुर्+आ+रुह्+खल् । जहां चढना कठिन है । सिंबलका पेड (शाल्मली) । मुश्किलसे चढनेलायक (त्रि०).

दुरालाप, (पु०) दुष्ट आलापः । बुरा वचन । बुरा वचन कहना । ग्लानिका प्रकाश करना । ६ व० । बुरा बोलनेहारा (त्रि०).

दुरालोक, (त्रि०) दुःखेन आलोकयितुं शक्यः । दुःखसे देखा जासकनेवाला । बुरे प्रकाशवाला.

दुराशा, (स्त्री०) दुष्टा आशा । बुरी आशा (उम्मीद).

दुरासद, (त्रि०) दुःखेन आसद्यते (गम्यते) असौ । जिसके पास पहुंचना कठिन है । दुर्+आ+सद्+खल् । दुर्गम्य । दुर्धर्ष । जिसका सामना नहिं कर सक्ते । "वभूव दुरासदः" इति रघुः.

दुरित, (न०) दुष्टं इतं (गमनं) नरकादिप्राप्तिः अनेन । जिस्से नरक आदि बुरे स्थानकी प्राप्ति हो । पाप । बुरा काम । खोटा चलन.

दुरुक्त, (न०) दुष्टं उक्तं । बुरा कहागया । शाप । लानत.

दुरुच्छेद, (त्रि०) दुःखेन उच्छिद्यते असौ । दुर्+उद्+छिद्+खल् । जिसे मुश्किलसे हटाया जाय । दुर्निवार.

दुरुत्तर, (त्रि०) दुःखेन उत्तीर्यते । दुर्+उद्+तृ+खल् । जिसे कठिनतासे तरसकें । दुस्तर । "दुष्टं उत्तरं" बुरा उत्तर (न०).

दुरूह, (त्रि०) दुःखेन ऊह्यते (वितर्क्यते) । "ऊह+खल्" । जो वहुत दुःखसे खयालमें लाया जाय । दुर्विज्ञेय.

दुरोदर, (पु०) दुष्टं समन्तात् उदरं अस्य । चारों ओरसे जिसका परिणाम (नतीजा) खराव हो । बुरा है पेट जिसका । द्यूत्कार । जुवारिआ । पण । शर्त । दा । पास्सा । जूआ (न०) "दुरोदरच्छद्मकृतां" भारविः.

दुर्ग, (पु०) दुःखेन गम्यते असौ । कर्मणि ड । जिसके पास मुश्किलसे पहुंचसकें । एक दैत्य । उस दैत्यको मारनेहारी देवी (स्त्री०) । "दुःखेन गच्छति अत्र" दुर्+गम्+आधारे ड । जहां पहुंचना कठिन है । ऐसा देश पर्वत जो आदिसे कठिन स्थान बनगया । कोट । किला । गड (न०) । दुर्गमदेश । ऊंचा । दुःखसे मिलनेलायक (त्रि०) । काम क्रोध आदि दुःखके कारण कठिनतासे तराजानेवाला संसार (न०).

दुर्गत, (त्रि०) दुर्गच्छति । दुर्+गम्+क्त । दोषको प्राप्त हुआ । बुरी दशामें पहुंचा.

दुर्गति, (स्त्री०) दुर्+गम्+क्तिन् । बुरी दशा । नरक । निर्धनता.

दुर्गन्ध, (पु०) दुष्टः गधः । बुरी गंन्ध । ६ ब० । बुरी गंधवाला (त्रि०) गंदा (पु०).

दुर्गानवमी, (स्त्री०) ६ त० । दुर्गा (देवी) की नवमी । कार्तिकके शुक्लपक्षकी नवमी (इस दिन जगद्धात्रीनामक दुर्गाकी पूजा होती है).

दुर्जन, (त्रि०) दुष्टः जनः । बुरा आदमी (जिसकी नाई आचरण (चालचलन) करनेसे साधु (भला) भी दूषित हो जाता है । नीच (पु०).

दुर्जर, (त्रि०) जृ+अङ्-जरा । दुःखेन जरा यस्य । जो मुश्किलसे पुरानी हो । वह पदार्थ जो मुश्किलसे जीर्ण होता है । ज्योतिष्मती लता (स्त्री०).

दुर्जात, (न०) दुष्टं जातं । प्रा० । व्यसन (बुरीआदत) । आपद (मुसीवत) ६ ब० । जो अच्छा नहिं हुआ और अनुचित (नामुनासिव) (त्रि०).

दुर्णामा, (त्रि०) दुष्टं निन्दितं नाम अस्य । बुरेनामवाला.

दुर्दान्त, (पु०) दुष्टं दान्तं (दमनं) यत्र । जहां रोकना मुश्किल है । कलह (झगडा) । दुःखेन दम्यतेस्म । मुश्किलसे रोकागया । अशान्त (जिसे शान्ति नहिं) बछड़ा (त्रि०).

दुर्दिन, (न०) यति तमः इति दिनं । दुष्टं दिनं । प्रा० । मेघों (वादलों) के आच्छादन (ढांकना) आदिसे अंधेरेको दूर न करसकनेवाला दिन कि जिसका स्वरूप प्रतीत न हो । वादलोंसे अंधेरा । वर्सना । पानीका वरसना.

दुर्धर, (पु०) दुर्+धृ+खल् । एक नरक । एक दैत्य । "दुःखेन मुमुक्षुभिर्हृदये धार्यते, केनापि न धार्यते+वा खल्" । मोक्षके चाहनेहारे जिसे मुश्किलसे हृदयमें धारण करते हैं वा जो किसीसे भी पकडा नहिं जाता । विष्णु । वह पदार्थ कि जिसका पकडना वा धारण करना मुश्किल है (त्रि०).

दुर्धर्ष, (त्रि०) दुःखेन धृष्यते । जो मुश्किलसे पकडा वा सहाराजाय । जिसका सामना करना मुश्किल है । अक्षोभ्य । जो व्याकुलतासे रहित हैं.

दुर्निवार-निवार्य, (त्रि०) दुःखेन निवारयितुं योग्यः । दुःखसे हठाया जानेवाला.

दुर्नीतम्, (न०) दुष्टं नीतं कुटिलनीति । बुरी चाल.

दुर्बल, (त्रि०) दुष्टं बलं यस्य । जिसका जोर बुरा है । निर्वल । कमजोर । कृश । थोडे मांसवाला.

दुर्बुद्धि, (त्रि०) दुष्टा बुद्धिः यस्य । बुरी अकलवाला । मूढ । बेवकूफ.

दुर्भग, (त्रि०) दुष्टं भगं (भाग्यं) यस्य । जिसकी बुरी किसमत है । अल्पभाग्य । अभागा । वह स्त्री जो पतिसे प्रेम नहिं कर्ती (स्त्री).

दुर्भिक्ष, (अव्य०) भिक्षाया अभावः । अन्नका न मिलना । अकाल । कैहत । काल.

दुर्मति, (त्रि०) दुष्टा मतिर्यस्य । जिसकी बुरी अकिल है । विचारको रोकनेवाले पापसे काली बुद्धिवाला । बेअकिल । बेवकूफ । ६० वर्षोंमेंसे एक (पु०) प्रा० स० । दुर्बुद्धि । बुरी अकिल.

दुर्मनस्, (त्रि०) दुष्टं मनः अस्य । जिसका मन (चिन्ता आदिसे) व्याकुल (घबराया) है । विमनस्क । जिसका दिल बिगडा हुआ है.

दुर्मर्याद, (त्रि०) दुष्टा मर्यादा यस्य । जिसकी मर्यादा (सदाचार) बुरी है । अशिक्षित । अविनीत । दुष्ट.

दुर्मुख, (पु०) दुष्टं मुखं अस्य । जिसका मुं खराव है । घोडा । बन्दर । एक प्रकारका हाथी । एक दैत्य । अप्रियवादी । कडवा वचन बोलनेहारा (त्रि०).

दुर्मेधस्, (त्रि०) दुष्टा मेधा अस्य । असिच् समा० । जिसकी बुरी बुद्धि है । मंदबुद्धि । जो चित्तसे विचार नहीं कर सक्ता.

दुर्योधन, (पु०) दुःखेन युध्यते असौ । युध्+युच् (खल्के अर्थमें जिसके साथ लडाई करना कठिन है । धृतराष्ट्र-राजाका बडा पुत्र । एक राजा । दुःखसे युद्ध करने-योग्य (त्रि०).

दुर्लभ, (पु०) दुर्+लभ्+खल् । जिसका मिलना मुश्किल है । कचूर । जो मुश्किलसे मिले (त्रि०) । "मानुष्यं दुर्लभं लोके" इति पुराणम्.

दुर्ललित, (न०) दुष्टं ललितं (इष्टं) । लल्-ईप्स । चाहना +क्त । बुरी चाहना । चन्द्रमा आदि न मिलसकनेवाले पदार्थोंमें चाहना । दुश्चेष्टित (बुरी चाल) । बुरे आशय-वाला । दुश्चेष्ट (बदचलन) (त्रि०).

दुर्व(व)ध, (मारना) भ्वा० पर० सक० सेट् । दूर्वति । अदूर्वीत् । दूर्तः.

दुर्वर्ण, (न०) दुष्टोपि वर्ण्यते (रज्यते) अनेन । जो बुरे (वस्त्रआदि)को रंग देता है । अथवा जो मैलेको भी सुन्दर बना देता है । रजक । रंगरेज । बुरेरंगवाला । मैला (त्रि०)

दुर्विध, (त्रि०) दुष्टा विधा यस्य । जिसका प्रकार (हालत) बुरा है । दरिद्र (निर्धन) । गरीव । "रुचिगर्वदुर्विधं" नैषधं । नीच । मूर्ख.

दुर्हृद्, दुष्टं हृदयं यस्य । बुरे हृदयवाला (शत्रुके अर्थमें नित्यही हृद्का आदेश होता है) शत्रु (दुश्मन) बुरे चित्त-वाला । "दुर्हृदयः" इसी अर्थमें होताहै.

दुल्, उत्क्षेप (ऊपर फेंकना । झुलाना) चुरा० उभ० सक० सेट् । दोलयति -ते । अदूदुलत्-त.

दुलि-ली, (स्त्री०) । दुल्+इन्-नि० । कमठी । कच्छूकी स्त्री । एक मुनिका नाम (पु०).

दुःशासन, (पु०) दुःखेन शिष्यतेऽसौ । शास्+युच् (अन) जिसे दुःखसे आज्ञामें रक्खाजाय । दुर्योधनका छोटा भाई । धृतराष्ट्रका पुत्र (भारतमें प्रसिद्ध है).

दुश्चर्मन्, (पु०) दुष्टं चर्म यस्य । बुरे चमडेवाला । महापातकसे उपजे चिह्नवाला । "दुश्चर्मा गुरुतल्पी स्यात्" इति स्मृतिः.

दुश्च्यवन, (पु०) दुःखेन च्यवनं पतनं यस्य । जो मुश्कि-लसे गिरे अथवा जिस पर च्यवन मुनि क्रुद्ध हुआ । इन्द्र । च्यवनने किसीसमय इसे कुपित होकर अपने पदसे गिरादिया.

दुष्, वैकृत । वदल जाना । वैर करना । दिवा० पर० अक० अनिट् । दुष्यति । अदुषत्-अदुक्षत्.

दुष्कर, (न०) दुःखेन कीर्यते । कृ०+खल् । जो मुश्किल-से खिंडाया जाय वा फेंका जाय । आकाश (आस्मान) "कृ+खल्" मुश्किलसे करनेलायक (त्रि०).

दुष्कर्मन्, (न०) कर्म० प्रा० स० । बुरा काम । पाप । ६ व० । पापवाला (त्रि०).

दुष्कृत, (न०) दुष्टं कृतं कृतिः । बुरा काम । पाप । ६ व० । पापी (त्रि०).

दुष्ट, (त्रि०) दुष्+क्त । दुर्बल । कमजोर । अधम । नीच । दुर्जन । बदआदमी आदि । दोषवाला (ऐबी) । कोढ (कुष्ट) (पु०) । व्यभिचारिणी (बदमाश) स्त्री (औरत) (स्त्री०).

दुष्ट, (त्रि०) दुष्+क्त । बिगडगया । दूषित होगया । नष्ट होगया.

दुष्टचेतस्-धी-बुद्धि, (त्रि०) दुष्टं चेतः वा दुष्टा धीः बुद्धिर्वा यस्य । दुष्ट (बिगडे हुए) स्वभाववाला.

दुष्टात्मन्, (त्रि०) दुष्टः आत्मा यस्य । दुष्टस्वभाववाला । बदमाश.

दुष्य-(ष्म)न्त, (पु०) चन्द्रवंशका एक राजा । भरतराजाका पिता । शकुन्तलाका पति.

दुःसहा, (स्त्री०) दुःखेन सह्यते । दुर्-सह्-खल् । जो दुःख-से सहारी जाय । नागदमनी.

दुःस्थ, (त्रि०) दुःखेन तिष्ठति । स्था+क । दुःखसे रहता है । दीन । मूर्ख । लोभी । लालची.

दुःस्थित, (त्रि०) दुर्+स्था+क्त । अनवस्थित । (जिसका चित्त कायम नहिं-कमी कुछ २) । वेचारह । दुःखमें पडा.

दुःस्पर्श, (पु०) दुःखेन स्पृश्यतेऽसौ । जिसे दुःखसे छूते हैं । दुर्+स्पृश ण्वुल् । दुरालभा (स्त्री०) आकाशवेल । कंडिआरी.

दुह्, दोह । चोना । अदा० उभ० अक० अनिट् । दोग्धि-दुग्धे । अधुक्षत्-त । अदुग्ध.

दुह्, वध । मारना । भ्वा० पर० सक सेट् । दोहति । अदु-हत् । अदोहीत्.

दुहितुःपति, (पु०) ६ त० । अलुक् समा० । लडकीका पति । जवाई.

दुहितृ, (स्त्री०) दुह्+तृच् । गुण न हुआ -और इट् हो गया । नि० सुता । लडकी । बेटी.

दू, खेद । तकलीफ उठाना । दिवा-आत्म० अक० सेट् । दूयते । अदविष्ट । दून.

दूत, (पु०) दु+क्त -दीर्घश्च । संदेश (खबर)को लेजाने-हारा । बात पहुंचानेवाला । कासिद.

दूति-ती, (स्त्री०) । दू+क्तिच् वा ङीप् । संदेशा पहुंचानेहारी स्त्री.

दूत्य, (न०) दूतस्य दूत्या वा भावः कर्म वा+यत् । दूत वा दूतीका होना वा काम । दूतका काम । दूतका स्वभाव.

दून, (त्रि०) दू+क्त । रास्ते (मार्ग)में चलने आदिसे श्रान्त (थका) हुआ । बहुत तपाहुआ । बहुत दुःखी हुआ.

दूर, (त्रि०) दुःखेन ईयते (प्राप्यते) दुर्+इण्+रक् इन्का लोप । विप्रकृष्ट । दूर । अगोचर । जो आंखोंसे परे है.

दूरदर्शन, (पु०) दूरात् पश्यति । दूरसे देखता है । दृश्+युच् । गृध्र । गीध.

दूरदर्शिन्, (पु०) दूरात् (कार्योत्पत्तेः प्राक्) पश्यति । जो कार्यके उपजनेसे पहिले देखता है । दृश्+णिनि । पण्डित । दूरसे देखनेहारा (त्रि०).

दूर्वा, (स्त्री०) दूर्व् । हिंसा । मारना-अ । एक प्रकारका घास.

दूर्वाकाण्ड, (न०) दूर्वाणां समूहः+काण्डच् । दूर्वाका समूह । घासका ढेर.

दूष, (त्रि०) दूष्+अ । समासके पीछे आता है । "पंक्तिदूषक" विगाडनेवाला । दूषित करनेवाला.

दूषक, (त्रि०)-षिका (स्त्री०) दूष्+णिच्+ण्वुल् । दूषित करनेवाला । दाग लगानेवाला । विगाडनेवाला.

दूषण, (पु०) रावणकी मास्सीका बेटा । एक राक्षस । दुष्+णिच्+ल्युट् । दोषदान । ऐब लगाना । ऐब (न०).

दूषिका, (स्त्री०) दूषयति (नेत्रं क्लिन्नं करोति) दुष्+णिच्+ण्वुल् । नेत्रमल । आंखकी मैल । गिड्ड.

दूषित, (त्रि०) दुष्+णिच्+क्त । अभिशस्त । शापदियागया । निन्दा कियागया । दोष लगायागया । तोहमत लगाया हुआ.

दूष्य, (न०) दुष्+णिच्+य । कपडेका बनाहुआ घर । तंबू । दूषण देनेके लायक (त्रि०) । हाथीकी बेटी (स्त्री०).

दृ, वध । मारना । स्वा० पर० सक० अनिट् । दृणोति । अदार्षीत्.

दृ, आदर करना । तुदा० आत्म० सक० अनिट् । इसके पहिले आङ् उपसर्ग रहता है । आद्रियते । आदृत.

दृ, डरना । भ्वा० पर० सक० सेट् । दरति । अदारीत् । (णिच्) दरयति.

दृ, फाडना । दिवा० क्र्या० पर० सक० सेट् । दीर्यति । दृणाति । अदारीत्.

दृक्प्रसाद, (पु०) दृशं प्रसादयति । जो नजरको साफ करे । कुलत्था । इसका अंजन डालनेसे आँखें साफ हो जाती हैं.

दृढ, (न०) दृह्+क्त-नि० । लोहा । अतिशय और बहुत । मोटा । गाढा । बलवाला । ताकतवाला और सख्त (त्रि०).

दृढभूमि, (त्रि०) दृढा भूमिः अस्य । दृढ (मजबूत) भूमिवाला । योगाभ्याससे संस्कृत अंतःकरणवाला । ऐसा चित्त कि जिसे विषयसुखकी प्रीतिसे चला नहिं सक्ते.

दृढमुष्टि, (पु०) दृढा मुष्टिः यत्र यस्मात् वा । जहां पक्की मुट्ठी है । खड्ग (तरवार) । इसके धारण करनेसे मुट्ठी पक्की होती है । "दृढा (अशिथिला) मुष्टिः यस्य" । जिसकी मुट्ठी ढीली नहिं होती । कृपण । सूम । कंजूस । वह धन आदिको मुट्ठीमें रख न देनेकी इच्छासे दृढतर बांधलेताहै (मुट्ठीसे निकलता नहिं).

दृढव्रत, (त्रि०) दृढं व्रतं नियमः अस्य । जिसका पक्का नियम हो । प्रारम्भ कियेगये कामको फलोदयपर्यन्त (नतीजा निकलनेतक) न छोडनेहारा । एक इकरार करनेहारा.

दृढसन्धि, (त्रि०) दृढः सन्धिः सन्धानं यस्य । पक्के जोडवाला.

दृता, (स्त्री०) द्रियते । दृ+क्त । जीरक । जीरा.

दृति, (पु०) दृ+क्तिच् । चमडेका बनाहुआ पानीका पात्र । मशक । एकप्रकारकी मच्छी.

दृन्भू, (पु०) दृम्+उ० नि० । नृप । राजा । वज्र । सूर्य । सांप । पहिया.

दृप्, बाधन । तकलीफ पहुंचाना । तुदा० पर० सक० सेट् । दृपति.

दृप्, सन्दीपन । भडकाना । वा चुरा० उभ० पक्षे भ्वा० पर० सक० सेट् । दर्पयति-ते । दर्पति । अदीदृपत्-त । अददर्पत्-त । अदर्पीत्.

दृप्, हर्ष-खुशहोना । गर्व-अहंकार करना । दिवा० पर० अक० सेट् । दृप्यति । अदृपत् । अदर्पीत् । दर्पिता । दृप्त्वा.

दृप्त, (त्रि०) दृप्+क्त । गर्वित । मगरूर हुआ.

दृफ, क्लेश । तकलीफ उठाना । तुदा० पर० अक० सेट् । दृम्फति.

दृब्ध, (त्रि०) दृभ्+क्त । ग्रथित । गुथा हुआ । भीत । डराहुआ.

दृभ्, ग्रथन । गांठना वा चुरा० उभ० पक्षे तुदा० पर० सक० सेट् । दर्भयति-ते । दृभति.

दृश, प्रेक्षण । देखना । भ्वा० पर० सक० अनिट् । पश्यति । अदर्शत् । अद्राक्षीत्.

दृश्-शा, (स्त्री०) दृश्-भावे क्विप् । वा टाप् । देखना । जाना । "करणे क्विप्" नेत्र । आँख । दोकी संख्या । "कर्तरि क्विप्" साक्षी । गवाह । देखने और जानेहारा (त्रि०).

दृषद्, (स्त्री०) दृ फाडना+आदि सुक् (शुक्) वा ह्रस्वः । पाषाण । पत्थर । पीसनेकी सिल । सिला.

दृषद्वती, (स्त्री०) दृशद्+मतुप् (मको व) एक नदी "सरस्वतीदृष (श) द्वत्योः" इति मनुः । आर्यावर्तकी पूर्वी सीमाको बनानेहारी सरस्वतीमें गिरती है.

दृष्ट, (न०) दृश्+क्त । अपनी वा शत्रुकी सेनाका भय । देखा गया डर । देखागया । और लौकिक (दुनिआवी) (त्रि०).

दृष्टकूट, (न०) कर्म० । कूटप्रश्न । मुश्किल सवाल । पहेली । बुझारत.

दृष्टान्त, (पु०) दृष्टः अन्तः यस्मिन् । जिसमें नाश सीमा और विचार देखा गया हो । मरण । मौत । शास्त्र । उदाहरण । मिसाल । एक प्रकारका अर्थालङ्कार.

दृष्टि, (स्त्री०) दृश्+भावे क्तिन् । दर्शन । देखना । बुद्धि । अकिल । "करणे क्तिन्" नेत्र । आंख । दोकी संख्या । मनका व्यापार.

दृष्टिगोचर, (त्रि०) दृष्टे गोचरः=प्रत्यक्षः । नेत्रका विषय । जिसे आंख देख ले.

दृष्टिपथ, (पु०) दृष्टेः पन्थाः पथिन्+ड+अ समासे । नेत्रका मार्ग । नेत्रका विषय.

दृष्टिपूत, (त्रि०) दृष्ट्या पूतः । दृष्टिसे पवित्र किया.

दृष्टिविभ्रम, (पु०) दृष्टेः विभ्रमः ष० त० । दृष्टिका विलास । रसभरी आंखोंसे देखना.

दृहू, बढना । भ्वा० पर० अक० सेट् । दर्हति । अदर्हीत् । (यह इदित् भी होता है) दृंहति । अदृंहीत्.

दे, पालन । बचाना । भ्वा० आ० सक० अनिट् । दयते । अदास्त.

देय, (त्रि०) दा+कर्मणि यत् । देनेयोग्य । देनेलायक.

देवृ, खेलना । भ्वा० आ० अक० सेट् । देवते । अदेविष्ट.

देव, (पु०) दिव्+अच् । अमर । देवता । प्रकाशस्वरूप आत्मा । परमेश्वर । ब्राह्मणकी उपाधि । और इन्द्रिय (न०) । पूजाके लायक (त्रि०) नाट्योक्तिमें राजा (पु०).

देवक, (पु०) श्रीकृष्णका नाना (मातामह) । देवकीका पिता । एक राजा.

दे(दै)वकी, (स्त्री०) देवकराजाकी कन्या । श्रीकृष्णकी माता । वसुदेवकी स्त्री । "अपत्यार्थेऽण्" "दैवकी" यही अर्थ.

दे(दै)वकीनन्दन, (पु०) ६ त० । श्रीकृष्ण । वसुदेवका बेटा "देवकीसुत".

देवकुसुम, (न०) देवानां प्रियं (योग्यं) वा कुसुमम् । देवताओंके लायक फूल वा शाक । लवङ्ग । लौंग.

देवखात, (न०) देवेन खातं । खन्+क्त । देवताने खोदा अकृत्रिम जलाशय । ऐसा सरोवर (तालाव) जो किसीने नहिं बनाया । देवताके पास खोदा गया तालाव आदि.

देवखातबिल, (न०) देवेन खातं (विदारितं) बिलम् । देवतासे फाडी गई बिल (सुराख) । गुहा । गुफा.

देवगायन, (पु०) ६ त० । देवताओंका गवैया । गन्धर्व.

देवगुरु, (पु०) ६ त० । देवताओंका वृक्ष । मन्दार, पारिजात, सन्तान, कल्पवृक्ष और हरिचन्दन ये पांच वृक्ष.

देवच्छन्द, (पु०) देवैः छन्द्यते (प्रार्थ्यते) छन्द+कर्मणि घञ् । देवताओंसे प्रार्थना कियाजाता है । सौलडोंवाला हार.

देवतरु, (पु०) ६ त० । देवताओंका गुरु । बृहस्पति.

देवता, (स्त्री०) देव+स्वार्थे तल् । इन्द्र आदि देवता.

देवदत्त, (पु०) देवा एनं देयासुः+आशिषि क्तच् । "देवता इसे देवें" (स्वर्गवास) । देवताको अर्पण किया गया । इसनामवाला कोई जल । अर्जुनका शंख । उबासी लानेवाला वायु (हवा) । "देवाय दत्तः" देवताके उद्देश छोडा हुआ (त्रि०).

देवदारु, (न०) देवानां प्रियं दारु यस्य । जिसकी लकडी (चन्दन) देवताओंको पियारी हैं । एक वृक्ष । "यह पुंलिङ्गमें भी होता है" "अमुं पुरः पश्यसि देवदारुम्" इति रघुः.

देवदासी, (स्त्री०) देवं (इन्द्रियं) दास्नोति-दास्-मारना+अण् । जो इन्द्रियको मारती है । वेश्या । कंजरी । वनका तर्बूज.

देवदीप, (पु०) देवेषु (इन्द्रियेषु) दीप इव । इन्द्रियोंमें मानों (रूपका प्रकाश करनेसे) दीपक अर्थात् दीआ है । नेत्र । आंख । लोचन.

देवदेव, (पु०) देवेषु मध्ये दीव्यति । दिव्+अच् । "देवताओंमें चमकता है" । महादेव । शंकर.

देवन, (पु०) दीव्यति अनेन । दिव्+करणे ल्युट् । जिससे खेलना है । पाशक । पास्सा । "भावे ल्युट्" क्रीडा । खेल । चमक । व्यवहार । जीतनेकी इच्छा । स्तुति । तारीफ । (न०) "दीव्यति अत्र -आधारे ल्युट्" जहां खेलता है । खेलनेका बाग । कमल.

देवनदी, (स्त्री०) ६ त० । देवताओंकी नदी । गङ्गा । "असंबाधा देवनदी" म० भा०.

देवपथ, (पु०) देवैः उपलक्षितः पन्थाः । अच् -समा० । देवताओंसे पहिचाना गया मार्ग । उत्तरका रास्ता । देवताओंका रास्ता । छायापथ (यमका मार्ग).

देवपुरोधस्, (पु०) ६ त० । देवताओंका पुरोहित । बृहस्पति.

देवभवन, (न०) देवानां भवनं इव । मानों देवताओंका मन्दिर है । स्वर्ग बहिश्त.

देवभूय, (न०) देवस्य भावः । भू+क्यप् । देवताका होना । देवत्व । देवपन । देवसायुज्य.

देवमणि, (पु०) देवेषु मणिरिव प्रकाशकत्वात्। देवताओंमें (प्रकाशक होनेसे) मानो मणि है । शिवजी । घोडेके गलेमें रोमावर्त (वालोंकी गोलावट)। कौस्तुभ मणि.

देवयान, (न०) ६ त० । देवरथ । देवताकी गाडी । देवताओंका रास्ता । अर्चिरादिमार्ग । शुक्राचार्यकी कन्या (स्त्री०) ङीप्.

देवयोनि, (पु०) देवाः एव योनिः कारणं अस्य । देवताही जिसके कारण हैं । देवताओंकी अंशसे उपजे विद्याधर आदि.

देवर, (पु०) देव+अर । पतिका छोटाभाई.

देवराज, (पु०) देवानां राजा+टच् समा० । देवताओंका राजा । इन्द्र.

देवरात, (पु०) देवाः एनं रायासुः+क्तच् । देवता इसे लें । अभिमन्युका पुत्र । परीक्षित राजा.

देवर्षि, (पु०) वेदद्रष्टा ऋषिः । देव एव सन् ऋषि । जो देवताही वेदके देखनेहारा है । नारद आदि मुनि.

देवल, (पु०) एक मुनि । व्यासका शिष्य (चेला)। धौम्यऋषिका वडाभाई । "देवान् जीविकार्थं लाति+लाक+क" । जो जीविकाके लिये देवताओंको ग्रहण कर्ता है । देवपर जीनेवाला । "स्वार्थे कन्" यही अर्थ । एकप्रकारका ब्राह्मण.

देवलोक, (पु०) ६ त० । देवताओंका लोक । स्वर्ग । ईश्वरकी सम्पदारूप लोक । भूरादि सात लोक.

देववर्धकी, (पु०) ६ त० । देवताओंका तर्खान । कारिगर । विश्वकर्मा.

देवव्रत, (पु०) देवं (इन्द्रियसंयमनं) व्रतं अस्य । इन्द्रिओंको रोकना जिसका नियम है । भीष्म । पितामह.

देवसात्, (अव्य०) देवेभ्यो देयं । देवताओंको देनेलायक। देवताओंके आधीन.

देवसायुज्य, (न०) युनक्ति-युज्+क । सह युजेन सयुजः तस्य भावः सायुज्यं । देवेन सायुज्यं । देवताके साथ एक आसनपर बैठनेकी योग्यता । देवताके साथ मेल.

देवसेना, (स्त्री०) इन्द्रकी कन्या । षष्ठीनामवाली कार्तिकेयकी स्त्री । सोलह माताओंमेंसे एक । ६ त० । देवताओंकी सेना.

देवसेनापति, (पु०) ६ त० । देवताओंकी सेनाका मालिक । कार्तिकेय । इन्द्रका पुत्र । देवसेनाका पति.

देवस्व, (न०) जो यज्ञ करनेवालोंका धन है । देवताओंका धन.

देवहूति, (स्त्री०) स्वायम्भुवमनुकी कन्या। कपिलमुनिकी मा.

देवाजीव, (त्रि०) देवं (देवप्रतिमाद्रव्यं) आजीवति । जीव्+अण् । देवताकी प्रतिमाके द्रव्यसे जीनेहारा । पूजारी । देवल । "देवाजीवी" इसी अर्थमें है.

देवात्मन्, (पु०) देवो विष्णुः आत्मा यस्य । विष्णु जिसका स्वरूप है । पीपलीका पेड (अश्वत्थ)। देवता जैसा । देवस्वरूप. (त्रि०).

देवानांप्रिय, (पु०) अलुक् समा० । देवताओंका पियारा । वकरा । मूर्ख (वेवकूफ) (त्रि०).

देवापि, (पु०) चन्द्रमाके वंशका एक राजा.

देवार्ह, (न०) देवान् अर्हति+अण् । जो देवताओंके योग्य है । सुरपर्ण । सहदेवी लता (स्त्री०) देवयोग्य (त्रि०).

देवालय, (पु०) देवानां आलयः । देवताओंका स्थान (घर) । स्वर्ग । देवोंकी प्रतिमा (मूर्ति)ओंका घर । "देवायतन" यही अर्थ.

देविका, (स्त्री०) दिव्+ण्वुल् । एक नदी (जो दो कोस चौडी और वीस कोस लंबी है)। धतूरा.

देवी, (स्त्री०) दीव्यति दिव्+अण् ङीष् । जो अनेकप्रकारसे खेलती है । दुर्गा । देवताकी स्त्री । ङीप् । (नाटकमें) कृताभिषेका राजवनिता (पटराणी) । ब्राह्मणस्त्रिओंकी उपाधि । "देव्यन्ता विप्रयोषितः" इत्युक्तेः.

देवृ, (पु०) दिव्+ऋ । देवर । स्वामीका छोटाभाई । थोर.

देवेश, (पु०) ६ त० । देवताओंका स्वामी । महादेव । उसकी स्त्री दुर्गा । ङीप्.

देवेष्ट, (पु०) देवानां इष्टः । देवोंका पियारा । गुग्गुल । वनवीजपूरक (स्त्री०).

देवोद्यान, (न०) ६ त० । देवताओंका वाग । वैभ्राज, मिश्रक, सिद्धकारण, और नंदन ये चार वन.

देश, दिश्+अच् । पृथिवीके गोलेका कोई विभाग । हिस्सा । मुल्क । कुरु पाञ्चाल आदि प्रसिद्ध जनपद (देश) । स्थान (जगह).

देशक, (पु०) दिश्+कर्तरि ण्वुल् । शासक । आज्ञा चलानेवाला । शिक्षक । मार्गप्रदर्शक । रास्ता दिखानेवाला.

देशकालज्ञ, (त्रि०) देशकालौ जानाति ज्ञा+क+अ । यथार्थ देश और कालको जाननेहारा.

देशज, जात, (त्रि०) देशात् जातः जन्+ड । देशसे उपजा । देशी पदार्थ.

देशदृष्ट, (त्रि०) देशे दृष्टः । शहरमें देखा गया.

देशना, (स्त्री०) दिश्+णिच्+युच्+अन । शिक्षा । उपदेश.

देशभाषा, (स्त्री०) देशस्य भाषा । देशकी भाषा । मुल्की जवान.

देशव्यवहार, (पु०) देशस्य व्यवहारः । देशका व्यवहार (चाल-रस्म).

देशान्तर, (न०) अन्यो देशः । और देश । परदेश । दूसरा मुल्क.

देशिक, (पु०) देशेषु प्रसितः+ठन् । देशोंमें लगाहुआ । पथिक । राही । देशे । उपदेशे साधुः+ठन् (इक) । उपदेश करनेमें अच्छा । गुरु । उपदेश करनेवाला.

देशिनी, (स्त्री०) दिशति । दिश्+णिन् । जतलातीहै । अंगूठेके साथकी अंगुली । तर्जनी.

देशीय, (त्रि०) देशे भवः+छ+ईय । देशमें होनेवाला । देसी आदमी वा चीज.

देश्य, (न०) दिश्+ण्यत् । पूर्वपक्ष । पहिली राय । देशं अर्हति । देशके लायक (त्रि०).

देह, (पु०) (न०) दिह्+घञ् । शरीर । जिस्म । (स्थूल, सूक्ष्म और कारणरूप) । ज्योतिषमें लग्नका स्थान । "घञ्" लेपन । लेप करना (चन्दन आदि लगाना).

देहधारक, (पु० न०) देहं धारयति । धृ+णिच्+ण्वुल् । जो शरीरको पकडता है । अस्थि । हड्डियें । शरीरकी हड्डी.

देहबद्ध, (त्रि०) देहेन बद्धः–तृ० त० । देहसहित । देही । शरीरी । अवतार.

देहबन्ध, (पु०) देहस्य बन्धः । देहकी रचना । शरीरकी बनावट.

देहभाज्, (त्रि०) देहं भजति । भज+ण्वि । देहसहित । शरीरी । (पु०) शरीरी वा जीवन धारण करनेहारा कोई भी प्राणी विशेषतः मनुष्य.

देहभृत्, (पु०) देहं बिभर्ति । जो देहको धारता वा पुष्टि कर्ता है । भृ+क्विप् । जीव । जीवात्मा । रूह.

देहयात्रा, (स्त्री०) देहो याति (गच्छति) अनेन । या+करणे ष्ट्रन् न ङीप् । जिस्से शरीर चलता है । शरीरकी रक्षाका साधन । भोजन । अन्न आदि खाना । ६ त० । शरीरका चलना । मरण (मौत).

देहली–लि, (स्त्री०) देहं (लेपनं) लाति (गृह्णाति) । ला+वा ङीष् पृ० वा ह्रस्वः । जहां लेपन दिया जाता है । लेप देनेलायक दर्वाजेकी पिण्डिका (ड्योढी) । ताकके नीचेकी लकडी.

देहसार, (पु०) ६ त० । देहका सार (असल) । मज्जा । मिज्ज.

देहात्मवादिन्, (पु०) देहं एव आत्मतया वदति । वद्+णिनि । जो शरीरहीको आत्माका स्वरूप बोलता है । चार्वाक । नास्तिक.

देहिन्, (त्रि०) देह+अस्ति अर्थे इनि । शरीरवाला । प्राणी । देहस्वरूप आत्माका अभिमान करनेहारा जीव.

देहिन्, (त्रि०) (नी० स्त्री०) (देह+इनि) । शरीरवाला । अवतार । जीता हुआ प्राणी विशेषतः मनुष्य.

दैतेय, (पु०) दितेः अपत्यं । दिति+ढक् (एय) । दितिकी सन्तान । असुर । दैत्य । "दैत्य" यही अर्थ.

दैत्यगुरु, (पु०) ६ त० । दैत्योंका गुरु । शुक्राचार्य । "दैत्याचार्य".

दैत्यनिसूदन, (पु०) दैत्यान् निसूदति (हिनस्ति) । सूद्+णिच्+ल्यु । दैत्योंका नाश कर्ता है । विष्णु.

दैत्यमेदज, (पु०) दैत्यानां मेदाज्जायते । दैत्योंकी चर्बीसे बना । जन्+ड । गुग्गुलु । पृथिवी । जमीन.

दैत्या, (स्त्री०) दैत्यस्य प्रिया+यत् । दैत्यकी पियारी । दैत्यकी स्त्री । सुरा (शराब).

दैत्यारि, (पु०) ६ त० । दैत्योंके शत्रु । विष्णु.

दैन, (न०) दीनस्य भावः । दीनपन । कायरपन । दिने भवं अण्+दिनमें होनेहारा (त्रि०).

दैनन्दिन, (त्रि०) दिनं दिनं (प्रतिदिनं) तत्र भवं ।+अण्-नि० । प्रतिदिन होनेहारा । हररोज होनेवाला.

दैनन्दिनप्रलय, (पु०) ७ त० । ब्रह्माके अपने मापके अनुसार प्रति दिनका अन्त । सम्पूर्ण रचेहुए पदार्थोंका क्षय (नाश).

दैन्य, (न०) दीनस्य भावः ष्यञ् (य) । दीनपना । दीन होना । दीनता । कायरपना । गरीबी । कार्पण्य (सूमपना).

दैप्, साफ करना । भ्वा० पर० सक० सेट् । दायति-अदासीत्.

दैव, (न०) देवादागतं । देवतासे आया । "देवो देवता अस्य" देव (विष्णु आदि) जिसका देवता है । "देवस्य इदं वा अण्" ये देवताका है । भाग्य । किस्मत । पहिले जन्ममें अर्जन (इकट्ठा) कियाहुआ कर्म (काम) । दहिने हाथकी अंगुलिओंके आगे देवताओंका तीर्थ है । एक प्रकारका विवाह । तीन प्रकारकी भूतोंकी रचना (पु०) । देवसम्बन्धी श्राद्धहोम आदि (त्रि०).

दैवज्ञ, (पु०) दैवं जानाति । ज्ञा+क । जो जीवोंके पहिले जन्ममें अर्जन किये गये शुभ वा अशुभको जन्मलग्न (उत्पत्तिका समय) आदिसे जानता है । गणक । गिननेवाला । ज्योतिर्विद् । ज्योतिषी । लक्षण आदिसे शुभाशुभको जाननेहारी स्त्री (स्त्री०) टाप्.

दैवत, (पु० न०) देव एव देवता (फिर अण्) देवता । देवताओंका समूह (अण्) (न०) । बहुतसे देवता.

दैवतन्त्र, (त्रि०) जो भाग्यहीके आधीन है । "दैवस्य तन्त्रं (आयत्तं) । भाग्याधीन.

दैवपर, (त्रि०) दैवं एव परं (श्रेष्ठं) यस्य । जो भाग्यहीको अच्छा समझता है । दैवसार । "जो होगा, सो होगा" कहनेहारा.

दैवप्रश्न, (पु०) रातके समय अकस्मात् (अचानक) आकाश आदिमें सुनागया शुभाशुभको सूचन (बताना) करनेहारा वाक्य (वचन).

दैववाणी, (स्त्री०) देवस्य इयं+अण् कर्म० । देवताकी जो है । आकाशवाणी (संस्कृतवाणी) संस्कृत जबान.

दैवसर्ग, (पु०) देवकृतः (सत्वगुणकृतः) सर्गः। (सांख्यमें) सात्विकअंशकी सृष्टि (भूतोंकी रचनामें).

दैवात्, (अव्य०) दैवे अतति। क्विप्। हठात्। अचानकसे। ईश्वरकी इच्छासे.

दैविक, (न०) देवो देवता अस्य+ठक् (इक)। देवताओंके उद्देशमें कियागया श्राद्ध। देवतासे आया। देवसम्बन्धी। देवताका (त्रि०).

दैवी, (स्त्री०) देवस्य इयं+अण्। देवताकी। सात्विक प्रकृति। सत्व गुणका स्वभाव। देवसम्बन्धिनी। देवताओंकी। "दैवी सम्पद् विमोक्षाय" गीता.

दैवोदासी, (स्त्री०) दिवोदासस्य अपत्यं+अत इञ्। दिवोदासकी सन्तान। प्रतर्दन राजा.

दैव्य, (न०) देवेन कृतं देवानां इदं वा+यञ्। देवसे कियागया। वा जो देवताओंका है। भाग्य। किस्मत। देवताका (त्रि०).

दैशिक, (त्रि०) देशस्य इदं देशेन वा निर्वृत्तं ठक्। देशका। (न्यायमें) देशसे कियागया स्वरूपका कियाहुआ भेद। विशेषणसम्बन्ध.

दैष्टिक, (त्रि०) दिष्टं (भागधेयं) एव सर्वसाधनं इति यस्य मतिः+ठक्। भाग्यही सबका साधन है ऐसी बुद्धिवाला। भाग्याधीनतावादी.

दो, छेद-काटना। दिवा० पर० सक० अनिट्। द्यति। अदात्.

दोग्धृ, (पु०) दुह्+तृच्। दुहनेहारा। गोपाल। गुज्जर। वत्स। बछडा। सोनेवाला (त्रि०) गौ (स्त्री०) ङीप्.

दोर्दण्ड, (पु०) दोर्दण्ड इव। (लंबा और कामको सिद्ध करनेहारा होनेसे) भुजा (बाहु-वां) मानो डंडा है। "भुजदण्ड" यही अर्थ.

दोर्मूल, (न०) ६ त०। भुजाका मूल। कक्ष। कच्छ.

दोल, (पु०) दुल्+भावे घञ्। श्रीकृष्णका दोलनरूप उत्सव। दोलयात्रा। दोलोत्सव। कृष्णको झूलनेमें झूलाया जाता है.

दोला, (स्त्री०) दुल्+अच् टाप् अ वा। (डोली)। एक प्रकारकी सवारी। बाग आदिमें खेलनेकेलिये दोलनयन्त्र (झूलनेकी कला)। पींग आदि.

दोलाधिरूढ, (त्रि०) दोलां अधिरूढः। पघूंडेपर चढा हुआ.

दोशिखर, (न०) ६ त०। भुजाकी चोटी। स्कन्ध। कंधा। मोढा.

दोलायमान, (त्रि०) दोलां आमयते। अय+शानच्। कर्ताहुआ। झूलताहुआ। दोलायन्त्र (पघूंडा) पर चढा हुआ.

दोष, (पु०) दुष्+घञ्। दूषण। ऐब। पाप। गुनाह। वात, पित्त, कफ, तीन दोष। (अलंकारमें) रस आदि बिगाडनेहारा दुष्ट शब्द। (न्यायमें) राग, द्वेष, मोह.

दोषग्राहिन्, (त्रि०) दोषान् एव गृह्णाति न गुणान्+ग्रह्+णिनि। जो दोषोंकोही लेता है गुणोंको नहिं। दुर्जन। "दोषग्राही गुणत्यागी चालनीव हि दुर्जनः".

दोषज्ञ, (त्रि०) दोषान् जानाति। ज्ञा+क। दोषोंको जानता है। पण्डित। वात आदि दोषोंको जाननेहारा। चिकित्सक। हकीम.

दोषत्रय, (न०) दोषाणां त्रयं। तीनदोष। वात, पित्त, कफ.

दोषा, (अव्य०) दुष्+अच्। रात्रि। रात.

दोषाकर, (पु०) दोषां (रात्रिं) करोति। जो रात बनाता है। चन्द्र। चांद। दोषोंका समूह। दोषोंका आश्रय। कसूरवार.

दोषैकदृक्, (त्रि०) दोषे एव न गुणे एका दृग् यस्य। गुणको छोडकर जो केवल दोषहीको देखता है। खल। नीच। बहुत खराब.

दोस्-षा, (पु०) दस्-करना+डोसि। भुजा। बाहु-वां। टापि षत्वम्.

दोह, (पु०) दुह्+कर्मणि घञ् (अ)। दुग्ध। दूध। "आधारे घञ्"। दोहनपात्र। चोनेका वर्तन (भांडा)। "भावे घञ्"। दोहन। चोना.

दोहद, (पु० न०) द्वयोः (गर्भिणीतदपत्ययोर्हृदयं) अत्र। निपा०। जहां दोनों (गर्भिणी और सन्तान)का हृदय हो। गर्भ। "दोहं (आकर्षं) ददाति"। दा+का। गर्भिणीकी अभिलाषा (चाह)। लालसा। चिह्न (निशान) और गर्भका लक्षण (न०)। "पृ० औत्" "दौहदम्" यही अर्थ है.

दोहदिनी, (स्त्री०) दोहदः अस्ति अस्याः+इनि। जिसका गर्भ हो। गर्भिणी। गर्भवाली। द्विहृदया। दो हृदयवाली.

दोहनी, (स्त्री०) दुह्यतेऽत्र। आधारे ल्युट्। जहां चोआ जाता है। चोनेका पात्र (दोहनपात्र).

दोहा, (स्त्री०) एक प्रकारका मात्राछन्द है (प्रायः भाषामें आता है).

दौत्य, (न०) दूतस्य भावः कर्म वा+ष्यञ्। दूतका होना (दूतपना) वा उसका काम.

दौर्भागिनेय, (पु०) दुर्भगाया अपत्यं+ठक् (एय)। इनङ् आदेश। दोनों पदोंको वृद्धि हो जाती है। दुर्भगा (पतिसे स्नेह न करनेवाली) स्त्रीका पुत्र.

दौर्मनस्य, (न०) दुर्मनसो भावः+ष्यञ् (य)। बाहिरी वा भीतरके कई एक कारणोंसे मनका दौस्थ्य (बेआरामी) चित्तका बिगडना। फिकर। चिन्तासे घबराहट.

दौवारिक, (पु०) द्वारे नियुक्तः। ठञ् (इक)। दर्वाजेपर लगाया गया। द्वारपाल। दरवान। प्रतिहारी (स्त्री०) द्वाररक्षिका.

दौष्कुलेय, (त्रि०) दुष्कुलस्य अपत्यम्+ढक् (एय) । निन्दितकुलमें उपजा । खोटे खान्दान वा छोटी जातिओंमें उपजा.

दौहित्र, (पु०) दुहितुः अपत्यं+अण् । दुहिता (लडकी) का लडका । दोहतरा । दोहता.

द्यावापृथिवी, (स्त्री० द्वि० व०) द्यौश्च पृथिवी च-द्यावादेशः । मिलेहुए स्वर्ग पृथिवीका इकट्ठा नाम । जमीन-आसमान.

द्यु, (पु०) दिव+क्विप् -पु० ह्रस्वः । अग्नि । सूर्य । आकका दरख्त । आकाश । दिन (न०).

द्युत्, दीप्ति । चमकना । भ्वा० आ० सक० सेट् । द्योतते । अद्युतत्-अद्योतिष्ट.

द्युति-ती, (स्त्री०) द्युत्+इन् वा ङीप् । कान्ति । शोभा । चमक । प्रकाश.

द्युपति, (पु०) ६ त० । दिनका पति । सूर्य । आकका वृक्ष । "द्युमणि".

द्युम्न, (पु०) दिव । मनति । म्ना+क । धन । दौलत । बल । जोर.

द्यूत, (न०) दिव+क्त । जूआ । पासेकी खेल । कैतव । कपटा छल.

द्यूतकर, (त्रि०) द्यूतं करोति । कृ+ठक् । पास्से आदिकी खेल करनेहारा । जुआरिआ । "ण्वुल्" "द्यूतकारक" "क्विप्" द्यूतकृत् (यही अर्थ).

द्यूतपूर्णिमा, (स्त्री०) द्यूतस्य (द्यूतार्थं वा) पूर्णिमा । जूएकी वा जूएके लिये पूर्णिमा । आश्विनपूर्णिमा । अस्सूकी पूर्णिमा । कोजागरी.

द्यूतवृत्ति, (पु०) द्यूतं एव वृत्तिः जीविका यस्य । जूआही जिसकी जीविका है । सभिक । जूएपर जीनेवाला.

द्यो, (स्त्री०) द्युत्+डो । स्वर्ग । आकाश । आसमान । वहिश्त.

द्योत, (पु०) द्युत्+घञ् (अ) । प्रकाश । आतप । धूप । चमक.

द्रढिमन्, (पु०) दृढस्य भावः+इमनिच्-द्रढादेशः । दृढपन दृढता । दार्ढ्य । मजबूती । पक्कापना.

द्रप्स्य-प्स, (न०) दृप्यन्ति अनेन । स । स्य । अमुच । गाढा । वा वहाहुआ दधि (दही) । मठा । छाछ । लसी.

द्रम्, गति-जाना । भ्वा० पर० सक० सेट् । द्रमति । दद्राम । अद्रमीत्.

द्रम्म, (पु०) एकप्रकारका परिमाण (माप) । सोलहपण (काहन).

द्रव, (पु०) द्रु+अप् । रस । भागना । जाना । वेग । परिहास । मस्खरी । वहजानेवाला पदार्थ । वहना.

द्रवज, (पु०) द्रवात् (रसात्) जायते । जन्+ड । जो रससे निकलता है.

द्रवत्व, (न०) द्रवति (स्यन्दते) । द्रु+अच् । तस्य भावः । वहनापन, वहनेका कारण पृथिवी जल और तेजमें रहनेवाला एक गुण (न्यायमें).

द्रवद्रव्य (न०) द्रवतीति द्रवं कर्म० । दूध । दही और घी आदि वहनेवाली चीज.

द्रवन्ती, (स्त्री०) द्रु+शतृ । नदी । शतमूलिका । मूषिकपर्णी.

द्रविड, (पु०) एक देश । उस देशके निवासी । व० व०.

द्रविण, (न०) द्रु+इनन् । वित्त (धन) । सोना । पराक्रम । बल.

द्रव्य, (न०) द्रु+यत् । पीतल । धन । लीपनेका द्रव्य । (चंदन आदि) । दवाई । लाख । विनय । शराव (मद्य) । (न्यायमें) पृथिवी आदि नौ । (व्याकरणमें) वह पदार्थ कि जिसका लिङ्ग और संख्यासे अन्वय हो । "द्रोः (वृक्षस्य) विकारः" । वृक्षका विकार । वृक्षसम्बन्धी (त्रि०).

द्रव्यपरिग्रह, (पु०) द्रव्यस्य परिग्रहः । पदार्थ वा धनका अधिकार (लेना).

द्रव्यसंस्कार, (पु०) द्रव्यस्य संस्कारः । द्रव्य (पदार्थ)-की शुद्धि (सफाई).

द्रव्योघ, (पु०) द्रव्यस्य ओघः । द्रव्य (पदार्थ, वस्तु, चीज)-का समूह.

द्रष्टव्य, (त्रि०) दृश+तव्य । देखने योग्य (लायक) । प्रत्यक्ष । सुन्दर.

द्रष्टृ, (त्रि०) दृश्+तृच् । विचारमें कुशल । चेतन । (होशियार) । साक्षी (गवाह) । देखनेहारा.

द्रा, स्वप्न । सोना । भागना । अदा० अक० अनिट् । द्राति । अद्रासीत्.

द्राक्, (अव्य०) द्रा+कु । शीघ्र । झटिति । जल्दी । झट.

द्राक्ष, चाहना । भ्वा० पर० सक० सेट् । इदित् । द्राङ्क्षति । अद्राङ्क्षीत्.

द्राक्षा, (स्त्री०) द्राक्षि+अ । नि० नका लोप । मृद्वीका । किसमिस । दाख.

द्राघिमन्, (पु०) दीर्घस्य भावः । इमनिच् । द्राघादेशः । लंबापन । दीर्घत्व । लंबाई.

द्राघिष्ठ, (त्रि०) अतिशयेन दीर्घः+इष्ठन् द्राघादेशः । अतिलंबा । "ईयसुन्" "द्राघीयस्" यहभी इसी अर्थमें । स्त्रियां ङीप्.

द्राव, (पु०) द्रु+भावे घञ् । वहना । वेग (तेजी) । भागना । गर्मी । पिघलना.

द्रावक, (पु०) द्रु+ण्वुल् । चन्द्रकान्तमणि । जार । यार । एक रस.

द्राविडी, (स्त्री०) द्रविडे जाता+अण् । द्रविडमें उपजी । छोटी इलायची.

द्राह्, जागना। भ्वा० आ० अक० सेट्। द्राहते। अद्राहिष्ट.

द्रु, जाना। भ्वा० पर० सक० अनिट्। द्रवति। अदुद्रुवत्.

द्रु, (पु०) द्रवति ऊर्ध्वं। द्रु+कु डु वा। जो ऊपरको वहता है। वृक्ष। दरख्त। शाखा। डाली.

द्रुघण, (पु०) द्रुं हन्ति अनेन। हन्+करणे अप् ह्रस्वः कुत्वं च। जिस्से वृक्षको मारते हैं। मुद्गर। कुल्हाडा। ब्रह्मा। चारमुखवाला। भूमिचंपक (चम्वा).

द्रुड, मज्जन। डुवकी मारना। भ्वा० पर० सक० सेट्। द्रोडति.

द्रुण, टेढाकरना। तुदा० पर० सक० सेट्। द्रुणति। अद्रोणीत्.

द्रुणस्, (त्रि०) द्रुः इव दीर्घा नासिका अस्य। जिसकी वृक्षके समान लंबी नासिका (नाक) हो। लंबेनाकवाला जन (शखस).

द्रुणी, (स्त्री०) द्रुण-क-ङीप् (ई)। काष्ठाम्बुवाहिनी। एक पात्र लकडीका जिस्से वेडीमेंसे पानी निकालते हैं। कच्छपी। कछुई (कच्छूकी स्त्री)। कर्णजलौका। कानखजूरा। कन्नखजूरा.

द्रुत, (पु०) द्रवति ऊर्ध्वं। द्रु+क्त। ऊपरको वहता है। वृक्ष। जल्दी नाचना। गाना और वजाना। और जल्दी। (न०) शीघ्रतावाला (जिसे जल्दी हो)। पिघलाहुआ। भागाहुआ (त्रि०).

द्रुपद, (पु०) चन्द्रवंशमें युधिष्ठिर आदिका श्वशुर (सौरा) एक राजा.

द्रुम, (पु०) द्रुः (शाखा) अस्ति अस्य+म। डालीवाला। वृक्ष। दरख्त। पारिजात। कुवेर.

द्रुह्, अनिष्ट चिन्तन। बुरा खयालकरना। दिवा० पर० वेट्। द्रुह्यति। अद्रुहत्। द्रोहिता-द्रोग्धा-द्रोढा.

द्रुहिण, (पु०) द्रुह्+इनन्। जगत्स्रष्टा। जगत् रचनेहारा। चतुर्मुख। चार मुखवाला। ब्रह्मा.

द्रेकृ, स्वन। शब्दकरना। उत्साहकरना। भ्वा० आत्म० अक० सेट्। द्रेकते.

द्रै, स्वप्न। सोना। भ्वा० पर० अक० अनिट्। द्रायति। अद्रासीत्.

द्रोण, द्रुण्+अच्-द्रु+न वा। भारतमें प्रसिद्ध एक योद्धा। द्रोणाचार्य। द्रोणनामका कौआ। वृश्चिक (विच्छू)। एकप्रकारका वादल। एक वृक्ष। चौतीस सेरका परिमाण (माप)। एक जलाशय (तालाव) जो आठसौ गज लंबा होता है.

द्रोणायन, (पु०) द्रोणस्य अपत्यं+फक् (आयन)। द्रोणाचार्यकी सन्तान। अश्वत्थामा.

द्रोणि-णी, (स्त्री०) द्रुण्+इन् वा ङीप्। एक देश। एक नदी। काष्ठाम्बुवाहिनी (नाव-वेडी)। नीलका वृक्ष। एक पर्वत.

द्रोह, (पु०) द्रुह्+घञ्। अनिष्टचिन्तन। बुरा सोचना। वैर। दुश्मनी.

द्रौपदी, (स्त्री०) द्रुपदस्य अपत्यं स्त्री+अण्। द्रुपदराजाकी कन्या। पाण्डवोंकी स्त्री.

द्वन्द्व, (पु०) द्वौ द्वौ सहाभिव्यक्तौ। दो २ इकठ्ठेही प्रकट हुए। निपा०। रहस्य (भेद-खुफिआ)। कलह (झगडा) मिथुन (जोडा) स्त्रीपुरुषका संयोग (सोवहत)। विवाद (लडाई)। एकप्रकारकी बीमारी। छ समासोंमेंसे एक (जिसमें दोनों पद प्रधान रहते हैं)। शोक। हर्ष। शीत-उष्ण.

द्वन्द्वचर, (पु०) द्वन्द्वीभूय चरति। चर+अच्। जोडाहोकर विचरता है। चक्रवाक। चकवा.

द्वय, (न०) द्वौ अवयवौ अस्य। द्वि अवयवं वा। द्वि+अयट्। दोकी संख्या। "स्त्री० ङीप्"। दोकी गिनतीवाला (त्रि०).

द्वाः(द्वा)स्थ, (पु०) द्वारि तिष्ठति। स्था+क वा विसर्गलोपः। दर्वाजेपर रहता है। द्वारपालक। दर्वान। "द्वाः (द्वा) स्थित".

द्वाचत्वारिंशत्, (स्त्री०) द्वि अधिका चत्वारिंशत्। द्वौ च चत्वारिंशच्च वा। दोसे जियादा वा दो और चालीस। वेआलीस। वतालीस.

द्वादश, (त्रि०) द्वादशानां पूरणः+डट्। बारहको पूरा करनेहारा। जिस्से बारहकी संख्या पूरी हो जाती है.

द्वादशकर, (पु०) द्वादश करा (हस्ता) अस्य। जिसके वारह हाथ हैं। कार्तिकेय और वृहस्पति। "द्वादशहस्त".

द्वादशनेत्र, (पु०) द्वादश नेत्राणि अस्य। जिसकी १२ आंख हों। छ मुखवाला कार्तिकेय। "द्वादशलोचन" यही अर्थ.

द्वादशाङ्गुल, (पु०) द्वादश अङ्गुलयः प्रमाणं अस्य+अच् समा०। वारह अंगुलके मापवाला। वितस्तिप्रमाण। विलस्तका माप.

द्वादशात्मन्, (पु०) द्वादश आत्मानो (मूर्तयोऽस्य)। जिसकी १२ मूर्तियें हो। सूर्य। और आकका वृक्ष.

द्वापर, (पु०) द्वौ परौ प्रकारौ विषयौ वा यस्य+पृ० आत्वम्। जिसके दो प्रकार वा विषय हों। संशय। शङ्क। सत्य और त्रेताके पीछेका युग (समय)। वह पास्सा कि जिसपर दो अङ्क हों.

द्वामुष्यायण, (पु०) द्वयोः अमुयोः अपत्यम्। नि०। दोनोंका पुत्र ; गौतम मुनि.

द्वार, (स्त्री०) द्वृ-वरण-णिच्-विच्। गृहादि-निर्गमस्थान। घर आदिके निकलनेका स्थान। दर्वाजा। उपाय। मुखी। वसीला। तजवीज.

द्वार, (न०) द्वृ+णिच्+अच् । घर आदिसे निकलनेकी जगह । द्वारपाल । दर्वाज । उपाय । वसीला । मुख । तजवीज.

द्वारका, (स्त्री०) द्वारेण (प्रशस्तद्वारेण) कायति । कै+क । अच्छे दर्वाजेसे शब्द कर्ता है । समुद्रके पास एक तीर्थ है । "द्वारावती" यही अर्थ.

द्वारकेश, (पु०) ६ त० । द्वारकाका स्वामी । श्रीकृष्णदेव.

द्वारप, (त्रि०) द्वारं पाति (रक्षति) । पा+क । दर्वाजेकी रक्षा करनेहारा । द्वारपाल । "पाल्+अण्-ण्वुल् च" यही अर्थ.

द्वारयन्त्र, (न०) ६ त० । दर्वाजेकी कला । ताला (जंदरा) । कुलुफ.

द्वारावती, (स्त्री०) द्वाराणि (मोक्षोपायाः) सन्ति अस्य । मतुप्-दीर्घः । जहां मोक्षके उपाय हैं । एक तीर्थ । "द्वार +अस्त्यर्थे ठन्" । "द्वारिका" यही अर्थ.

द्वारिन्, (त्रि०) द्वारं (पाल्यत्वेन) अस्ति अस्य+इनि । जिसे दरवाजेकी रक्षा करनी पडतीं है । द्वारपाल । दरवान.

द्वाविंशति, (स्त्री०) द्व्यधिका विंशतिः । द्वौ च विंशतिश्च आत्वं । दो अधिक वीस । वा दो और वीस । बाईस । बाई.

द्वि, (त्रि०) द्वि० व० । द्वृ+ड । द्वित्वसंख्या । दोकी गिनती । दो.

द्विक, (पु०) द्वौ कौ (ककारौ) यत्र । जहां दो ककार हैं । कौआ । "द्वि अवयवं कन्" दोकी संख्या । दो संख्यावाला (न०).

द्विककुत्, (पु०) द्वे ककुदे यस्य । अन्त्यलोपः । जिसके दो ककुद (हुड्ड) हों । उष्ट्र । ऊंठ । ऊंट.

द्विगु, (पु०) व्याकरणमें कहागया एक समास (जिसमें संख्यावाचक शब्द पहिले रहता है) ६ ब० । दो गौओंका स्वामी (त्रि०).

द्विगुण, (त्रि०) द्वाभ्यां गुण्यते । गुण+घञर्थे क । दोसे गुणागया । दुगुना.

द्विगुणाकृत, (त्रि०) द्विगुणं कृत्वा कृष्टं । डाच्+कृ+क्त । दुगुना करके खेंचागया । दोवार खेंचा (बाआ) गया खेत.

द्विज, (पु०) द्विर्जायते । जन्+ड । दोवार जन्मता है । ब्राह्मण । ब्राह्मण आदि तीनों वर्ण । दांत । पक्षी (अण्डेसे निकला) । तुम्बुरुका एक वृक्ष । संस्कार किया गया ब्राह्मण.

द्विजदेव, (पु०) द्विजेषु देव इव । दो वार जन्मवालोंमें मानो देवता है । ब्राह्मण । ऋषि.

द्विजन्मन्, (पु०) द्विः जन्मनी यस्य । जिसको दो जन्म हैं । ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य (तीनों वर्ण) । दान्त । अण्डेसे निकला । पक्षी.

द्विजबन्धु, (पु०) द्विजो बन्धुर्यस्य । द्विज जिसका बंधु है । (उसके गोत्रमें उपजनेसे) । अपने कार्यसे रहित जन्ममात्रसे जीनेहारें नीच ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य.

द्विजराज, (पु०) ६ त० । टच् समा० । द्विजोंका राजा । चन्द्र । चांद । अनन्त । गरुड । पक्षिओंका राजा.

द्विजवर, (पु०) द्विजेषु वरः । द्विजोंमें श्रेष्ठ (अच्छा विप्र । ब्राह्मण.

द्विजाति, (पु०) द्वे जाती (जन्मनी) यस्य । (जिसके दो जन्म हैं) । ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य (तीनों वर्ण).

द्विजिह्व, (पु०) द्वे जिह्वे यस्य । जिसकी दो जीभ हैं । सर्प (सांप) । खल (नीच) । चोर । दुःसाध्य (मुश्किलसे बनेहारा) (त्रि०).

द्वितय, (त्रि०) द्वौ अवयवौ अस्य । द्वि अवयवं वा । द्वि +तयप् । द्वित्वसंख्यान्वितं (दोकी संख्यावाला) दोकी संख्या (न०).

द्वितीय, (त्रि०) द्वयोः पूरणः । दोको पूरा करनेवाला । दूसरा । द्वितीया तिथि (दूज) (स्त्री०) । "भागार्थेऽण्" दूसरा हिस्सा.

द्वितीयाकृत, (त्रि०) द्वितीयं कृत्वा कृष्टं । डाच्+कृ+क्त । दोवार करके खेंचा गया । दोवार खेंचा गया खेत.

द्विदत्, (त्रि०) द्वौ दन्तौ अस्य । दन्तको दत्रादेश होता है । वयसि । दो दांतोंसे पहिचानी गई उमरवाला । दोदांतवाला । बैल आदि । स्त्रियां ङीप्.

द्विदैव, (पु०) द्वौ देवौ अस्य+अण् । जिसके दो देवता हैं । विशाखा नामी नक्षत्र (तारा) । इसके इन्द्र और अग्नि देवता हैं.

द्विधा, (अव्य०) द्विप्रकारं । द्वि+धाच् । दो प्रकार । दोतरहसे.

द्विप, (पु०) द्वाभ्यां (मुखशुंडाभ्यां) पिवति । जो दोनों (मूं और सूंड) से पीता है । पा+क । हस्ती । हाथी.

द्विपद्, (पु०) द्वे पदे यस्य । जिसके दो पाँव हैं । मनुष्य । देवता । पक्षी । राक्षस । राशि.

द्विपदा, (स्त्री०) द्वौ पादौ अस्याः (पादके अन्त्यका लोप होता है) टाप् । ऋग्वेदका एक मन्त्रविशेष । एक छन्दका नाम (जिसके दो पाद होते हैं) । "ङीप् द्विपदी."

द्विमातृक, (पु०) द्वे मातरौ अस्य । जिसकी दो माता हों । दुर्गा और चामुण्डासे पालन किया गया गणेश । जरासंध.

द्विमुख, (पु०) द्वे मुखे यस्य । दो मूंवाला । राजसर्प दो मुखवाला (त्रि०).

द्विरद, (पु०) द्वौ रदौ यस्य । जिसके दो दांत हैं । हाथी । दो दांतवाला (त्रि०).

द्विरागमन, (न०) द्विः आवृत्तं आगमनं । दो वार लौटकर आना । विवाहके अनन्तर कन्याका फिर पिताके घरजाना । मुकलावा । गौना.

द्विरुक्त, (त्रि०) द्विः उक्तं । (विवाद-झगडा) आदिसे दोवार बोलागया । दोवार कहागया । (व्याकरणमें) अभ्यस्तसंज्ञावाला.

द्विरूढा, (स्त्री०) द्विवारं ऊढा । वह+क्त । दोवार विवाही-गई स्त्री.

द्विरेफ, (पु०) द्वौ रेफौ (वाचकनाम्नी) यस्य । जिसके नामको वतनेहारे दो रेफ अर्थात् "रकार" हैं । भ्रमर । भौंरा.

द्विवचन, (न०) द्वौ वक्ति, द्वौ वा उच्येते अनेन । दो कहता है वा दो जिस्से कहे जाते हैं । (व्याकरणमें) दोको वतानेहारा प्रत्यय.

द्विवार्षिक, (त्रि०) द्वयोः वर्षयोः भवः+ठक् । दो वर्षोंमें हुआ । दो वरसके चावल आदि.

द्विशफ, (पु०) द्वौ शफौ यस्य । जिसके दो खुर हैं । गौ, वकरी, भैंस आदि.

द्विशस्, (अव्यय) द्वौ द्वौ ददाति करोति वा । दो २ देता वा कर्ता है । दोवार.

द्विष्, वैरकरना । अदा० उभ० सक० अनिट् । द्वेष्टि-द्विष्टे । अद्विक्षत्-अद्विक्षत.

द्विषत्, (पु०) द्विष्+शतृ । वैर कर्ता हुआ । शत्रु । वैरी दुश्मन.

द्विषन्तप, (पु०) द्विषन्तं तापयति+तप्-णिच्-खच्+ह्रस्वः मुमृच । जो वैर कर्ते हुएको तपाता है । शत्रुओंका तपा-नेहारा.

द्विष्ठ, (त्रि०) द्वयोः तिष्ठति । स्था+क-षत्व । दोनोंमें ठहरता है । दोनोंके बीचका । संयोग आदि पदार्थ.

द्विस्, (अव्य०) द्वि+सुच् । दोवार कीगई क्रिया । दोवार.

द्विसप्तति, (स्त्री०) द्व्यधिका सप्ततिः । द्वौ च सप्ततिश्च वा । न आत्वं । दो ऊपर सत्तर वा दो और सत्तर । बहत्तरकी संख्या.

द्विहल्य, (त्रि०) द्विवारं हलेन कृष्टम् । यत् । दोवार हलसे खेंचा गया । दोवार हलसे खेंचा हुआ खेत (क्षेत्र).

द्विहायनी, (स्त्री०) द्वौ हायनौ (वयोमानं) यस्याः । जिस-की उमरका माप दो वर्षका है । ङीप् । दो वरसकी गौ.

द्विहृदया, (स्त्री०) द्वे हृदये यस्याः । जिसके दो हृदय हैं । गर्भवाली स्त्री । (अपना और गर्भका हृदय).

द्वीन्द्रियग्राह्य, (पु०) द्वाभ्यां (नेत्रत्वगिन्द्रियाभ्यां) गृह्यतेऽसौ । जो दोनों (नेत्र और त्वचा) इन्द्रियोंसे ग्रहण किया जाता है । (न्यायमें) संख्यासे ले परत्व-तक, द्रवत्व और स्नेह (ये सब गुण दोनों इन्द्रियोंसे जानेजाते हैं).

द्वीप, (न०) द्वयोः गता आपः अत्र । अच् । आदिको अ और ई होती है । जिसके दोनों ओर पानी हो । पानीके वीच थलका भाग । समुद्र आदिसे घिरेहुए पृथि-वीके प्रदेशविशेष । जजीरा चीतेका चमडा । बाघ । द्विवर्ण । दोरंगवाला । दुरंगा.

द्वीपवत्, (पु०) द्वीप+अस्ति अर्थे मतुप्-मको व होताहै । द्वीपवाला नद (बडा दर्या) । समुद्र । नदी और भूमि (स्त्री०) ङीप्.

द्वीपिन्, (पु०) द्वौ वर्णौ अयते । ई-पक् । द्वीपं (द्विवर्ण) चर्म । तद् अस्ति अस्य+इनि । जिसका चमडा दुरंगा हो । चीता । बाघ । एक प्रकारका बाघ (मेडिया).

द्वृ, संवरण । ढांकना । भ्वा० पर० सक० अनिट् । द्वरति । अद्वार्षीत.

द्वेधा, (अव्य०) द्वि+प्रकारे धाच्-ए हो जाता है । द्विधा । दो तरहसे.

द्वेष, (पु०) द्विष्+घञ् । विरोध । वैर । दुश्मनी । नफरत.

द्वेषण, (त्रि०) द्विष्+युच् (अन) । शत्रु । दुश्मन । "भावे ल्युट्" वैर (न०).

द्वेष्य, (त्रि०) द्विष्+ण्यत् (य) । शत्रु । दुश्मन । विरोधी.

द्वैगुणिक, (त्रि०) द्विगुणं ग्रहीतुं एकगुणं प्रयच्छति टक् । जो दुगुना लेनेको एकगुना देता है । वृद्धि (व्याज)पर जीनेवाला । वार्धुषि । व्याज चलानेहारा.

द्वैत, (न०) द्विधा इतं द्वीतं तस्य भावः+अण् । दो प्रकारके भेदवाला । दोकी संख्या । "स्वार्थेऽण्" दो तरहके भेदवाला (त्रि०).

द्वैतवन, (न०) द्वे इते (गते) यस्मात् । कर्म० । जिस्से दोनों जाते रहे हैं । शोक, मोह, क्षुधा, तृषा आदि जोडोंसे रहित । एक वन.

द्वैतवादिन्, (त्रि०) द्वैतं वदति । वद्+णिनि । जो दो करके बोलताहै । जीव और ईश्वरका भेद स्वीकार करने-हारा नैयायिक आदि.

द्वैध, (न०) द्वि+प्रकारे धमुञ् । दोप्रकार । दोतरह.

द्वैप, (पु०) द्वीपिनो विकारः+अञ् । व्याघ्र (मेडिया-चीता) विशेषका चमडा । द्वीपिके चमडेसे ढकाहुआ रथ.

द्वैपायन, (पु०) द्वीपं अयनं (जन्मभूमिः) यस्य । द्वीपा-यनः । स एव+अण् । जिसकी जन्मभूमि द्वीप है । व्यास-देव । व्यास । पुराणोंका कर्ता.

द्वैमातुर, (पु०) द्वयोः मात्रोः अपत्यं+अण् । उत्वं । रपर-त्वम् । दो माताओंकी सन्तान । दुर्गा और चामुण्डासे पाला-गया । गणेश । जरासन्धनामी राजा.

द्व्यणुक, (न०) द्वयोः अण्वोः (संयुक्तयोः) भवः+कन् । मिलेहुए दो अणुओंसे हुआ । दो परमाणुओंसे उपजा द्रव्य.

द्व्याष्ट, द्वे (हेमरूप्ये) अश्नुते (व्याप्नोति) । अश्+क्त । जो सोना और चांदीमें व्याप्त होता है । ताम्र । तामा । ताँवा.

द्व्यामुष्यायण, (पु०) अमुष्य (प्रसिद्धस्य) अपत्यं फक् (आयन) आमुष्यायणः द्वयोः आमुष्यायणः । ६ त० । तेरा और मेरा कहके जो पुत्र लियाजाता है । एक प्रकार-का पुत्र.

ध

ध, (पु०) धे-धावा+ड । धर्म । कुबेर और ब्रह्मा । धन (दौलत) (न०).

धक्क्, नाशकरना । चुरा० उभ० सक० सेट् । धक्कयति-ते । अदधक्कत्-त.

धट, (पु०) धन्+अच्-टान्तादेशः । तुला । लकडी । तराजू । दिव्य प्रमाणरूप एक प्रकारकी परीक्षा । ७ वीं राशि.

धटक, (पु०) एक परिमाण -माप (४२ रतिका होताहै).

धण्, ध्वान । शब्द करना । भ्वा० पर० सक० सेट् । धणति । अधाणीत्-अधणीत्.

धत्तूर, (पु०) धयति धातून् । धा+ऊर पृ० । जो धातुओंको फूंकता है । धत्तूरा.

धन्, धानोंको उत्पन्न करना । जुहो० पर० अक० सेट् । दधन्ति । अधानीत्-अधनीत्.

धन्, रव । शब्दकरना । भ्वा० पर० अक० सेट् । धनति । अधानीत्-अधनीत्.

धन, (न०) धन्+अच् । वसु । अर्थ । दौलत । धन । स्नेह । पियारा । धनिष्ठा नक्षत्र (तारा).

धनञ्जय, (पु०) धनं जयति । जि+खच् -मुम्च । जो धनको जीतता है । अर्जुन । वह्नि (आग) । एक हाथी । पुष्टकरनेवाला शरीरका वायु (पेटको फुला देता है) । एकवृक्ष.

धनद, (पु०) धनं दयते-दें-पालन-बचाना । जो धनकी रक्षा कर्ता है । कुबेर । हिज्जल वृक्ष । "दा+क" धनके देनेहारा (त्रि०).

धनदण्ड, (पु०) धनस्य दण्डः । धनका दण्ड (सजा) । जुर्माना.

धनदानुचर, (पु०) ६ त० । धनदका अनुचर । यक्ष (एक प्रकारका देवता) (कुबेर यक्षोंका राजा होनेसे).

धनदानुज, (पु०) ६ त० । कुबेरका छोटा भाई । रावण.

धनपति, (पु०) धनस्य पतिः । धनका स्वामी (मालिक).

धनपाल, (पु०) धनं पालयति उप० स० । धनका पालन करनेवाला । कुबेर.

धनमद, (त्रि०) धनेन मदः यस्य । धनसे मत्त होनेवाला । थैलीका अभिमानी.

धनवत्, (त्रि०) धन+मतुप् । धनवाला.

धनव्यय, (पु०) धनस्य व्ययः । धनका व्यय (खर्च).

धनहर, (पु०) धनं हरति उप० स० । धनको हरनेवाला । वारिस । चोर.

धनहार्य, (त्रि०) धनेन हर्तुं+वशीकर्तुं शक्यः । धनसे वश किया जानेवाला.

धनहीन, (त्रि०) धनेन हीनः तृ० त० । निर्धन । धनसे रहित.

धनाधिप, (पु०) ६ त० । कुबेर धनोंका स्वामी (त्रि०).

धनिक, (पु० न०) धनिवत् कायति । कै+क । धनीके समान शब्द कर्ता है । धन्याक (धनिआं) । धन (दौलत) (पु०) । "धनं विद्यते अस्य ठन्" । जिसके पास धन हो (धनी-दौलतमंद) । धनका मालिक । उत्तमर्ण-कर्जा देनेहारा (त्रि०).

धनिष्ठा, (स्त्री०) अतिशयेन धनवती । इष्ठन् । इन्का लोप होता है । बहुत धनवाली । अपने नामका एक नक्षत्र (तारा).

धनुर्गुण, (पु०) ६ त० । धनुष्का गुण (चिल्ला) । मौर्वी । चिल्ला.

धनुर्ग्रह, (ग्राहः) (पु०) धनुः गृह्णाति धनुष (कमान)-को पकडनेवाला.

धनुर्ज्या, (स्त्री०) धनुषः ज्या । धनुषका चिल्ला.

धनुर्धर, (पु०) धनुः धारयति । धृ+अच् । जो धनुष्को पकडता । धानुष्क । तीरन्दाज । तीर चलानेहारा.

धनुर्विद्या, (स्त्री०) धनुषः विद्या । धनुषकी विद्या (इल्म).

धनुर्वेद, (पु०) धनुषः वेदः । यजुर्वेदका उपवेद । वह शास्त्र कि जिसमें शस्त्र और अस्त्र चलाने आदिके प्रतिपादन करनेहारे मन्त्र पाये जाते हैं.

धनुर्वेदिन्, (पु०) धनुः वेत्ति । धनुषविद्या जाननेवाला । शिवजी.

धनुष्पाणि, (त्रि०) धनुः पाणौ यस्य । जिसके हाथमें धनुष है.

धनुष्मत्, (पु०) धनुः अस्ति अस्य+मतुप्-षत्वम् । धानुष्क । तीरंदाज.

धनुस्, (पु०) धन्+उसि । पियालका दरख्त । धनुष् पकडनेहारा (त्रि०) चाप । धनुष् । तीर । मेषसे नवमी राशि (न०).

धन्य, (पु०) धनाय हितम् । धनके लिये हितकारी । "यत्" । अश्वकर्णका वृक्ष । श्लाघ्य । सराहनेलायक । कृतार्थ । कामयाब । पुण्यशील । धन देनेहारा नीतिशास्त्र । धनके लिये हितकारी । धनके कारण (त्रि०).

धन्यंमन्य, (त्रि०) आत्मानं धन्यं मन्यते-मन् खश+मुम् । अपने आपही धन्य माननेवाला । जो आपही अपनेको भाग्यवान् समझता है.

धन्यवाद, (पु०) धन्यस्य वादः+प्रशंसनम् । प्रसन्नताकी प्रशंसा शुकर गुजारी.

धन्याक, (न०) धन+आकन् । नि० । धनिया नामका एक वृक्ष.

धन्वन्, (त्रि०) धन्व+कनिन् । धनुष् । तीर । मरु- (विनपानी) देश.

धन्वन्तरि, (पु०) धन्वन् (शिल्पशास्त्रं) तस्य अन्तं इयर्ति । ऋ+इन् । शिल्पशास्त्र । (कारीगरीकी) विद्याका अन्त करनेहारा । स्वर्गका एक वैद्य (हकीम जो समुद्रके मथन करनेसे नारायणका अंश प्रकट हुआ) । दिवोदास नामी काशीका राजा । विक्रमादित्यकी सभामें बैठनेहारा एक पण्डित.

धन्वी, (पु०) धन्वं विद्यते अस्य+इनि । अर्जुन । ककुभका दरख्त । दुरालभा । और वकुल । विदग्ध । चतुर । धनुष पकडनेहारा (त्रि०).

धम्, शब्दकरना । तुदा० पर० सक० सेट् । धमति । अधमीत्.

धमक, (पु०) धम्+ण्वुल् (अक) । फुंकनेहारा लुहार । लोहार.

धमन, (पु०) धम्यते अनेन । धम्+ल्यु (अन) । नल । धोंकनी (फूंकनी) के धौंने (फुंकने)हारा । क्रूर । (बेरहम) (त्रि०).

धमनि-नी, (स्त्री०) धम्+अनि वा ङीप् । नाडी । शिरा । ग्रीवा (गर्दन) । हल्दी.

धम्मिल्ल, (पु०) धम्+विच्+मिल्+क-पृ० । संयतकेश । बंधेहुए वाल । मध्यमें फूल रखकर ऊपरसे मोतिओं वा और किसी रत्नकी लडिओंसे बंधाहुआ वालोंका जूडा.

धर, (पु०) धृ+अच् । पर्वत (पहाड) कच्छुओंका राजा । वसुओंमेंसे एक । कार्पासस्त्र । कपासका सूत्र (धागा वा तार).

धरण, (पु०) धृ+युच् (अन) । एक पहाड । लोक । गुण । धान । सूर्य । सेतु (पुल) । चौबीस वा दस रत्तिओंका माप.

धरणि, (पु०) धृ+अनि वा ङीप् । पृथिवी (जमीन) वनका कंद (स्त्री०).

धरणि(णी)धर, (पु०) धरणिं(णीं) धरति । धृ+अच् । पर्वत । (पहाड) । विष्णु । और कच्छप (कच्छूका अवतार).

धरणिपति, (पु०) धरण्याः पतिः । पृथिवीका पति (मालिक) राजा.

धरणीधर, (पु०) धरणीं धारयति । पृथिवीको उठाता है । शेषनाग । विष्णु । पर्वत । पहाड । कच्छ । राजा । दिग्गज.

धरा, (स्त्री०) धृ+अच् । पृथिवी । गर्भका आशय । (बीचकी जगह) । जरायु । मेद (चर्वी) को उठानेहारी नाडी.

धरात्मजा, (स्त्री०) धरायाः आत्मजा । पृथिवीकी पुत्री । सीता । रामभार्या.

धराधर, (पु०) धरां धारयति । धृ+अच् । जो पृथिवीको धारण कर्ता है । पर्वत । विष्णु (वराह-सूअररूप).

धरामर, (पु०) धरायां अमर इव । पृथिवीपर मानों देवता है । ब्राह्मण । "भूदेव" आदि शब्दभी इसी अर्थमें है.

धरित्री, (स्त्री०) धृ+इत्र् । ङीष् । पृथिवी । भूमि । जमीन.

पद्म० ३४

धर्म, (पु० न०) धृ+मन् । जो (नदी-संसाररूपमें वहे जातेको) पकडता है । श्रुति (वेद) स्मृति (धर्मशास्त्र) में कहा गया कर्म । कर्मसे उपजा अदृष्ट (शुभ वा अशुभ) । आत्मा (देहको धारण करनेसे) जीव । आचार । स्वभाव । उपमा । यज्ञ आदि । अहिंसा (किसीको न मारना) । न्याय-उपनिषद् । यमराज । सत्सङ्ग । धनुष् । (ज्योतिषमें) लग्नसे नवम (नवां) स्थान । दान आदि (न०).

धर्मक्षेत्र, (न०) धर्मका क्षेत्र । (स्थान) । कुरुक्षेत्र (जहां कौरव और पाण्डव कुलका घोर युद्ध हुआ) ६ त० । धर्मका स्थान.

धर्मगुप्त, (त्रि०) धर्मः गुप्तः अनेन । धर्मकी रक्षा करनेवाला.

धर्मचारिणी, (स्त्री०) धर्म (दाम्पत्यधर्म) चरति चर+णिनि । जो धर्मको कर्ता है । भार्या । जाया । (स्त्री०) । जोरू । एक लता (बेल).

धर्मजिज्ञासा, (स्त्री०) धर्मस्य जिज्ञासा=(ज्ञातुं इच्छा) (स्त्री०) धर्म (नियम) जाननेकी इच्छा.

धर्मदान, (न०) किसी प्रयोजनको चित्तमें न रखके धर्मबुद्धिसे जो वस्तु पात्र (योग्य पुरुष)को दीजाय.

धर्मद्रवी, (स्त्री०) धर्मजनको द्रवो यस्याः । जिसका वहना धर्मको उत्पन्न कर्ता है । गङ्गा "महानदी" "देवनदी."

धर्मध्वजिन्, (त्रि०) धर्मो ध्वज इव अस्ति अस्य+इनि । जिसका धर्म झण्डेकी नाई हों । जीविकाके लिये जटा आदि रखनेहारा.

धर्मपत्नी, (स्त्री०) धर्मार्थं पत्नी । धर्मके लिये स्त्री । पहिले विवाही गई अपने वर्णकी स्त्री । कीर्ति । वाणी । स्मृति । मेधा । धृति । क्षमा.

धर्मपुत्र, (पु०) ६ त० । धर्मका पुत्र । युधिष्ठिर.

धर्मपाठक, (पु०) धर्मस्य पाठकः -ष० त० । धर्मशास्त्रके पढानेवाला.

धर्मराज, (पु०) धर्मस्य राजा+टच् । धर्मका राजा । यमराज.

धर्मराज, (पु०) धर्मेण राजते+अच् । धर्मसे शोभा पाता है । "धर्मस्य राजा वा+टच् समा०" धर्मका राजा । यमराज और युधिष्ठिर.

धर्मलक्षण, (न०) धर्मो लक्ष्यते अनेन । लक्ष्+ल्युट् । जिस्से धर्म पहिचाना जाता है । धृति, क्षमा, दम, चोरी, शौच, इन्द्रियोंको रोकना, धी, विद्या, सत्य और क्रोध न करना ये दस.

धर्मवाद, (पु०) धर्मस्य वादः । धर्मविषयपर विवाद (झगडा).

धर्मविधि, (पु०) धर्मस्य विधिः । धर्मका नियम । कानूनी हुकम.

धर्मविप्लव, (पु०) धर्मस्य विप्लवः । नियमका तोडना । दुराचार.

धर्मशास्त्र, (न०) धर्मप्रतिपादकं शास्त्रम् । धर्मका वर्णन करनेहारा शास्त्र । मनु आदिसे रचाहुआ स्मृतिशास्त्र.

धर्मशील, (त्रि०) धर्मः शीलं यस्य । जो सदा धर्महीका अनुष्ठान कर्ता है । धार्मिक । धर्म करनेहारा.

धर्मसंस्थापन, (न०) धर्मस्य सम्यक् (अधर्मनिराकरणेन) स्थापनम् । अधर्मको दूर करके धर्मको नियत करना । "धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे" गीता । वेदमें कहेहुए धर्मको कायम करना.

धर्मसंहिता, (स्त्री०) धर्मवृद्ध्यर्थं संहिता-बद्धा-रचिता सम्+धा+क्त । धर्मकी वृद्धिके लिये रचीगई । मनु आदिसे कहाहुआ धर्मको प्रतिपादन करनेहारा शास्त्र.

धर्मसेतु, (पु०) धर्मस्य सेतुः । धर्मका सेतु (पुल) । शंकर.

धर्माचार्य, (पु०) धर्मस्य आचार्यः । धर्मका आचार्य (गुरु) । नियम वा रीत रसमकी शिक्षादेनेवाला गुरु.

धर्मात्मज, (पु०) धर्मस्य आत्मजः । धर्मका पुत्र । युधिष्ठिर.

धर्मात्मन्, (पु०) धर्म आत्मा (स्वभावो) यस्य । जिसका स्वभाव धर्म करनेका है । चित्तको धर्मके पीछे लगानेहारा.

धर्माधिकरण, (पु०) धर्मार्थं अधिक्रियतेऽसौ । "कर्मणि ल्युट्" । जिसे धर्मके लिये अधिकार दिया जाता है । धर्माध्यक्ष (मुनसिफ) जो शत्रु और मित्रमें समान, धर्मशास्त्रमें चतुर मुख्य कुलीन ब्राह्मण हो सक्ता है । ६ त० । धर्मका स्थान (जहां धर्मशास्त्रके अनुसार नीतिशास्त्रका विचार किया जाता है) । विचारका स्थान । कचहरी (न०).

धर्माधिकरणिकः-अधिकारिन्-अधिकरणिन्, (पु०) धर्मं अधिकरोति-उप० स० । धर्मपर अधिकार रखता है । न्याय करनेवाला । जज्ज.

धर्माध्यक्ष, (पु०) धर्मका अधिकारी (मुन्सिफ) । ६ त० । सम्पूर्ण धर्मका साक्षी (देखनेहारा-गवाह) और परमेश्वर.

धर्माभास, (पु०) धर्म इव आभासते । धर्मके समान प्रतीत होता है, वास्तवमें धर्म नहीं (शास्त्ररहित होनेसे) श्रुति और स्मृति भिन्न और शास्त्रोंमें कहाहुआ.

धर्मासन, (न०) ६ त० । धर्मका आसन । राजाका धर्म देखनेके लिये आसन । इन्साफकी कुरसी.

धर्मिन्, (त्रि०) धर्म+अस्त्यर्थे इनि । धर्मवाला । दानशूर, पुण्यवाला.

धर्मिष्ठ, (त्रि०) अतिशयेन धर्मी+इष्ठन् । इन्का लोप । अत्यन्त धर्मवान् । बहुत धर्मात्मा । साधु । पुण्यशील । नेक.

धर्मोपदेशक, (पु०) धर्मं उपदिशति । धर्मका उपदेश करनेवाला शिक्षक (गुरु).

धर्म्य, (त्रि०) धर्मात् अनपेतः, धर्मेण प्राप्यो वा+यत् । धर्मसे न छूटाहुआ । वा धर्मसे पानेलायक । धर्मवाला । धर्मसे लाभ करनेलायक.

धर्ष, (पु०) धृष्+घञ् । प्रागल्भ्य (चतुराई) । अमर्ष (गुस्सह) । शक्तिबंधन (ताकतका बांधना) । संहति (मेल-मजमा) । हिंसा (मारना) । बेइज्जत करना.

धर्षण, (न०) धृष्+भावे ल्युट् (अन) । तिरस्कार (बेइज्जत करना । मलामत करना) । "कर्मणि ल्युट्" अभिसारिका स्त्री (पियारेके मिलनेकी खातिर संकेतकियेगये स्थानपर गई).

धर्षित, (न०) धृष्+भावे क्त । मैथुन (भोग करना सोहवत) । "कर्मणि क्त" । कृतधर्षण (अपमान कियागया) । बेइज्जत कियाहुआ (त्रि०) । असती स्त्री (खराब औरत) (स्त्री०).

धव्, गति । जाना । भ्वा० पर० सक० सेट् । इदित् । धन्वति । अधन्वीत्.

धव, (पु०) धवति धुवति धुनोति धुनाति । धु-धू-वा+अच् । पति (मालिक) । खाविंद । धूर्त (नटखट आदमी) । फ़रेब । अपने नामका वृक्ष । "भावे अप्" । कम्पन । कांपना.

धवल, (पु०) धवं (कम्पं) लाति । ला+क । धववृक्ष । चिट्टी मिर्च । अच्छा बैल । चीन देशका कपूर । चिट्टा रंग (वर्ण) । चिट्टे रंगवाला । और सुन्दर (त्रि०) । चिट्टे रंगकी गौ (स्त्री०).

धवलपक्ष, (पु०) धवलौ पक्षौ यस्य । जिसके चिट्टे पर हैं । हंस । कर्म० । शुक्लपक्ष । चांदना पखवाडा.

धवलमृत्तिका, (स्त्री०) कर्म० । खटिनी । खडी । खटिमअट्टी । चिट्टी मट्टी.

धवलोत्पल, (न०) कर्म० । चीट्टा कमल । कुमुद । रातको खिलनेहारा कमल.

धवित्र, (न०) धूयतेऽनेन (धू+इत्र्) । जो हिलाया जाता है । व्यजन । पंखा । पक्खा.

धा, धारण । पकडना । पोषण । वढाना । देना । जुहो० उभ० सक० अनिट् । दधाति । धत्ते । अधात् । अधित.

धातु, (पु०) धा+तुन् । वात, पित्त और कफ तीन । (क्योंकि शरीरको धारण कर्ते हैं) । रस, रुधिर, मांस, मेद (चर्वी), अस्थि (हड्डी), मज्जा (मिज्ज) और शुक्र (वीर्य) ये सात । स्वर्णआदि (सोना-चांदी-तामा-हरताल-मनःशिला आदि) । हेम आदि नौ । परमेश्वर । (क्योंकि सबको धारण कर्ता है) । "स एष विद्धातुः" इति श्रुतिः । (व्याकरणमें) गणोंमें पढागया क्रियाको बतानेहारा "भू" आदि शब्दोंका भेद.

धातुघ्न, (न०) धातून् हन्ति । हन्+ठक् । काञ्जिक । काञ्जी.

धातुद्रावक, (न०) धातून् द्रावयति । जो अपने संबंधसे धातुओंको पिघला देता है । "द्रु+णिच्+ण्वुल्" सोहागा.

धातुभृत्, (पु०) धातून् बिभर्ति भृ+क्विप् । जो धातु (गेरी आदि)ओंको धारण कर्ताहै । पर्वत (पहाड)। शरीरमें धातुओंको पुष्ट करनेहारा रसके स्वरूपमें पहिला धातु । वीर्य । धांत बढानेहारी चीज.

धातुमारिणी, (स्त्री०) धातून् (स्वर्णादीन्) मारयति मृ+णिच् । णिनि । जो सोने आदिको मारनेहारा । सर्जिका (सोहागा).

धातुवैरिन्, (पु०) ६ त० । सोने आदिका वैरी (गंधक).

धातुशेखर, (न०) धातूनां शेखर इव । धातुओंका सिरा है । कासीस (एकप्रकारका धातु).

धातृ, (पु०) दधाति धा+तृच् । जो पालता वा धारण कर्ता है । चार मुखवाला ब्रह्मा और विष्णु । धारण वा पालन करनेहारा (त्रि०).

धातृपुत्र, (पु०) धातुः पुत्रः -ष-त० । ब्रह्माका पुत्र । सनत्कुमार.

धात्रम्, (न०) धा+आधारे ष्ट्रन् । किसीभी वस्तुको धारण-करनेवाला पात्र । आश्रय.

धात्री, (स्त्री०) धीयते (पीयते) असौ । धा+ष्ट्रन् । ङीष् । जिसे टीया जाता है । माता (मां) । आमलकी (आँवला) । दाई..

धात्रेयी, (स्त्री०) धात्री+इवके अर्थमें ढक् । (एय) । मानों माँ है । उपमाता (दाई-छोटीमां) । "स्वार्थे कन्" ह्रस्वः । दूध पिलानेहारी । यही अर्थ.

धानम्–धानी, (न० स्त्री०) धा+भावे ल्युट् । आश्रय । स्थान । "मसीधानी".

धाना, (स्त्री०) धा+न–टाप् । धन्याक (धनिआँ) । सत्तू । भुनेहुए जौ । ब० व०.

धानाचूर्णम्, (न०) धानायाः चूर्णं । भुने हुए चावल (फुलिओं) का चूरा । फुलिओंका भोजन.

धानापूप, (पु०) धानायाः पूपः । फुलिओंका पूडा.

धानी, (स्त्री०) धीयते अस्यां (+आधारे) ल्युट् (अन्)। ङीष् । जिसमें रहकर पालन पोषण कर्ता है । जैसे राजधानी, मत्स्यधानी । जो चावल साफ नहिं कियेगये । वर्तन (पात्र) । पीलूका वृक्ष.

धानुष्क, (पु०) धनुः करे यस्य-षत्वम् । जिसके हाथमें धनुष् है । धानुष्क । तीरंदाज । तीर चलनेवाला.

धानुष्क, (त्रि०) धनुः प्रहरणं अस्य+ठक् । धनुष् (कमान) जिसका शस्त्र है । "धनुषा जीवति+ठञ् वा" । जिसका जीवन धनुषपर है । धनुर्धर (कमान पकडनेहारा).

धानुष्य, (पु०) धनुषे हितः+यञ् । जो धनुषके लिये अच्छा है । वंश, वांस.

धानेय, (न०) धानाय साधु+ढक् (एय) । धन्याक (धनिआँ).

धान्य, (न०) धाने (पोषणे) साधुः+यत् । जो पुष्ट करनेमें अच्छा है । तुष (तोह-तुस) सहित चावल । (धान) । धनिआँ । चार तिलोंका परिमाण । (चार तिलभर).

धान्यकोष्ठ–क, (न०) ६ त० । धान्यागार । धानोंका कोठा । भडोला । गोला.

धान्यत्वच्, (स्त्री०) ६ त० । धानोंकी त्वचा (पडदा). तृष् । तुस । तोह.

धान्यवीर, (पु०) धान्येषु वीर इव । (बल देनेके कारण)। धानोंमें मानों वीर (बहादुर) है । माष (म्मा).

धान्याचल, (पु०) ६ त० । धानोंका पर्वत । (दानके लिये विधानसे धानोंका बनाहुआ पर्वत).

धान्योत्तम, (पु०) धान्येषु उत्तमः । धानोंमें अच्छा । शालिधान्य (चावल).

धामन्, (न०) धा+मनिन् । घर (गेह) । देह शरीर) । किरण । आसरा (आश्रय) । स्थान (जगह) । जन्म । त्विष् (तेज) । ज्योति । प्रभाव । स्वयंप्रकाश (अपनेआप प्रकाशनेहारा).

धामनिधि, (पु०) धामानि (तेजांसि) निधीयन्ते अत्र । नि+धा+कि । जहां (सब) तेज रक्खे जाते हैं । सूर्य । आकका वृक्ष.

धाय्या, (स्त्री०) धीयते (पुष्यते) अग्निः अनया । जिस्से आग बढती है । धीयते (अर्प्यते) समित् अनया (जिस्से समिध अर्पण की जाती है) । आगको भडकानेके लिये ऋग्वेदका मन्त्र । धाय्यः (पु०) पुरोहित । कुलपुरोहित.

धार, (न०) धाराभिः निर्वृत्तं+अण् । शिला आदि पात्रमें रक्खागया वर्षासे उत्पन्न हुआ जल । मेहका पानी । पानीकी धार.

धारणयोग, (पु०) धारणायाः योगः । ष० त० । धारणाका योग (अभ्यास वा समाधि) । गाढी भक्ति.

धारणशक्ति, (स्त्री०) धारणायाः शक्तिः । गुरुसे सुनेगये अर्थको धारण करनेकी शक्ति (ताकत).

धारणा, (स्त्री०) धृ+णिच्+युच् (अन) । यम, नियम-आदिवाले आत्मामें मनकी स्थिरता (ठहरना) को योगशास्त्र-वाले सन्तजन धारणा कहते हैं । आत्मामें चित्तकी स्थिति । मर्यादा । उचितमार्गमें ठहरना । निश्चय । "धृ+णिच्+ल्युट् (अन)" । नाडी । श्रेणी (कतार) । (स्त्री०) ङीप्.

धारा, (स्त्री०) धृ+णिच्+अङ् । घडे आदिका छेक । सन्तति (लगातर द्रव । ढीले-बहनेवाले) द्रव्यका निरंतर गिरना । तरवार आदिका तेज । सिरा । उत्कर्ष (जिआदती) । यश । बहुत वर्षा । समूह । बादलका घडाघड (मोहलेधर) वर्सना । समान । एक पुरी (नगरी) । घोडोंकी पांच प्रकारकी गति (चाल) । सेनाके आगेका स्कन्ध (दुश्मन).

धाराग्रहम्, (न०) धारायाः गृहम्। छमाछम पानी वर्सनेका घर। भुआरेवाला घर (नहानेका कमर).

धाराट, (पु०) धारार्थं अटति+अच्। जो (मेघकी) धाराके लिये घूमता है। पपीहा (चातक)। घोडा। वादल। मत्तगज। मस्त हाथी.

धाराधर, (पु०) धारयति। धृ+णिच्+अच् ह्रस्वः। जिसकी धारा होतीहै। मेघ। वादल। मेह। मीं। मींह.

धारानिपात, (पु०) धारायाः निपातः। वृष्टि (वर्षा)-का गिरना। छमाछम भारी वृष्टिका पडना.

धारावाहिन्, (त्रि०) धारया (सन्तत्या) वहति। वह्+णिनि। जो निरन्तर वहताहै। निरन्तर गिरनेहारा। धीरे २ लगातार हो रहा। "स्वार्थे कन्" "धारावाहिक" यही अर्थ.

धारासम्पात, (पु०) धाराणां सम्पातः (पतनम्)। (पानीकी) धारोंका गिरना। महावृष्टि। बडी वर्षा। वहुत वर्सना.

धारिणी, (स्त्री०) धृ+णिनि। जो धारणकरे भूमि। (जमीन)। सिम्वलका पेड.

धारिन्, (पु०) धृ+णिनि। टीलुका वृक्ष। धारण करनेहारा। आसरा देनेहारा। वचानेहारा (त्रि०).

धार्तराष्ट्र, (पु०) धृतराष्ट्रे (सुराजदेशे) भवः+अण्। अच्छे राजावाले देशमें हुआ। अथवा सुराजनाम देशमें हुआ। एक सांप। एक हंस (जिसकी चोंच और चरण (पांव) काले रंगके हों और शरीर चिट्टा हो)। "धृतराष्ट्रस्य अपत्यं+अण्"। धृतराष्ट्रकी सन्तान। दुर्योधन आदि.

धार्म, (त्रि०) धर्मस्य इदं+अण्। धर्मसंवंधी। धर्मका.

धार्मिक, (त्रि०) धर्मं चरति (सततं अनुशीलयति)+ठक्। जिसका निरन्तर धर्मही करनेका अभ्यास है। धर्मशील। धर्मात्मा। धर्मवाला। धर्मी.

धार्ष्ट्य, (न०) धृष्टस्य भावः+ष्यञ्। ढीठपन। निर्लज्जता। वेशरमी.

धाव्, जव। जल्दी चलना। भागना। अक० सेट्। और शुद्धि। साफ करना। भ्वा० आ० अक० सेट्। धावते। अधाविष्ट (जव "सृ" को "धाव" आदेश होता है तव परस्मैपदी है).

धावक, (पु०) धाव्+णिच्+ण्वुल्। रजक (धोवी-रंगरेज)। धाव+ण्वुल्। जल्दी जानेहारा। शीघ्र। भागनेहारा। (त्रि०) धाउडिया.

धावन, (न०) धाव्+ल्युट्। शोधन। साफकरना। जल्दी जाना.

धावल्यम्, (न०) धवलस्य भावः। चिट्टापन। श्वेतपना.

धावित, (त्रि०) धाव्+क्त। शुद्ध किया गया। साफ किया हुआ। भागा हुआ.

धि, धृति। पकडना। रखना। तु० पर० सक० अनिट्। धियति। अधैषीत् (सं-के साथ इसका अर्थ सन्धि-सुलह करना).

धिक्, (अव्य०) अनिष्ट शब्दोंसे भय उपजाना। झिडकना। निन्दा। "धिग् धिग् शक्रजितम्" इति नाटकम्। निन्दाके लायक। छिः, शरम, शोकके लायक। इन अर्थोंमें प्रायः द्वितीया होती है। "धिक् तां च तं च मदनं च इमां च मां च".

धिक्कार, (पु०) धिक्+कृ+घञ्। तिरस्कार। निरादर। वेइज्जती.

धिक्कृत, (त्रि०) धिक् (निन्दनीयः) कृतः। कृ+क्त। निन्दाके योग्य कियागया। निर्भर्त्सित। झिडकागया। तिरस्कार कियागया.

धिक्ष्, सन्दीपन। जगाना। रहना। सक०। क्लेश और जीवन अर्थमें अक० भ्वा० आत्म० सेट्। धिक्षते। अधिक्षिष्ट.

धिषण, (पु०) धृष्+क्यु-धिङ्का आदेश। वृहस्पति। देवताओंके गुरु.

धिषणा, (स्त्री०) धृष्णोति अनया। धृष्+क्यु-धिङ्का आदेश। जिस्से धीरज और वहादुरी कर्ता है। वुद्धि। अकील.

धिष्ण्य, (न०) धृष्+ण्य-नि०। स्थान। जगह। गृह। घर। शक्ति। ताकत और तारा। अग्नि-आग। एक प्रकारकी आग। और शुक्र (पु०) ऊंचे पदके योग्य (त्रि०).

धी, अनादर। खयाल न करना। तिरस्कार करना। वेइज्जत करना। सेवा करना। दिवा० आत्म० सक० अनिट्। धीयते-अधेष्ट। धीनः.

धी, (स्त्री०) ध्यै+क्विप्-सम्प्रसारणं च। वुद्धि। जानना। ज्ञान। अकील। समझ.

धीति, (स्त्री०) धे+क्तिन् (ति)। पीना। चूसना। पियास। (वेदमें) अंगुलियें। खयाल। अनुभव। भक्ति। वेइज्जत करना-खयाल न करना.

धीन्द्रियम्, (न०) चक्षु, श्रोत्र आदि जानेके लिये इन्द्रिय.

धीमत्, (पु०) धीः (प्रज्ञा) अस्ति अस्य-मतुप् (मत्)। वृहस्पति। वुद्धिवाला-पण्डित आदि (त्रि०).

धीर्+अवज्ञा-निरादर करना। चुरा० उभ० सक० सेट्। (नित्य "अव" उपसर्ग इसके पहिले रहता है)। अवधीरयति-ते। अवधीर्य.

धीर, (त्रि०) धियं राति (रा+क) धियं ईरयति (ईर् +अण्) धीरजवाला (हौंसलेवाला) । नम्र (हलीम) । वलवाला और पण्डित । राजा वलि । बुद्धिको प्रेरनेहारा । बुद्धिका साक्षी (गवाह) और परमेश्वर (पु०) केसर (न०) एक नायिका । ठहरीहुई चित्तकी वृत्ति (स्त्री०).

धीरचेतस्, (त्रि०) धीरं चेतः यस्य । व० स० । धीर चित्तवाला । पक्का । दृढ । धीरजवाला.

धीरता, (स्त्री०) धीरस्य भावः+तल् । धीरपना । हौंसला.

धीरप्रशान्त, (पु०) धीरः प्रशान्तश्च । कर्म० स० । किसी काव्य वा नाटकका नायक जो धीर और शान्त स्वभाववाला है.

धीरोदात्त, (पु०) एक नायक (एक प्रकारका पुरुष).

धीवर, (पु०) दधाति मत्स्यान् । धा+ष्वरच्-नि० । कैवर्त । मच्छी पकडनेहारा.

धीशक्ति, (स्त्री०) ६ त० । शुश्रूषा (सेवा) आदि आठ प्रकारके गुण.

धीसख, (पु०) धियः सखा । टच्-समा० । अमात्य (वजीर) बुद्धिका मित्र.

धीसचिव, (पु०) मन्त्री-वजीर । "धीसख" यही अर्थ.

धु, कम्पन । कांपना । स्वा० उभ० सक० अनिट् । धुनोति-धुनुते । अधौषीत्-अधोष्ट.

धुक्ष्, सन्दीपन । जगाना । रहना । भ्वा० आ० सक० सेट् । धुक्षते । अधुक्षिष्ट.

धुत, (त्रि०) धु+क्त । छोडागया । कांपगया । त्यक्त । शोधित । कम्पित.

धुनि–नी, (स्त्री०) धुनोति वेतसादीन् । जो वैंतआदिको कंपाती है । नदी (दर्या).

धुन्धुमार, (पु०) बृहदश्व राजाका पुत्र । इन्द्रगोपकीडा । (वीरवहूटी).

धुर्–रा, (स्त्री०) धुर्वं+क्विप्-वा टाप् । चिन्ता (फिकर) । रथ आदिके आगेका भाग (हिस्सा) । गाडीका मुं और भार (वोझा).

धुरन्धर, (त्रि०) धुरं धारयति । धृ+णिच्+खच्-मुम्-ह्रस्वश्च । भारवाहक (वोझा उठानेहारा) वैल आदि । वोझा सहानेहारा.

धुरीण, (त्रि०) धुरं वहति+ख । वोझा उठाता है । श्रेष्ठ । अच्छा.

धुर्य, (त्रि०) धुरं वहति+यत् । भार उठानेहारा । अच्छा.

धुर्व, हिंसा मारना-भ्वा० पर० सक० सेट् । धुर्वति । अधुर्वीत् । धूर्तः.

धुवित्र, (न०) धु+इत्र । यज्ञ आदिमें आगको (संधुक्षण) सुलगाना.

धू, कांपना । भ्वा० उभ० सक० वेट् । धवति-ते । अधावीत् । अधविष्ट । अधोष्ट.

धू, कांपना । वा चुरा० उभ० पक्षे तुदा० पर० सक० सेट् । धूनयति-ते । धुवति । अदूधुनत्-अधुवीत्.

धू, कांपना । स्वा० क्र्यादि० उभ० सक० वेट् । धूनोति-धूनुते । धुनाति-धुनीते.

धूत, (त्रि०) धू+क्त । कांप गया । चलागया । पंखा कियागया । छोडा गया । जुदा कियागया । झिडकागया.

धूप्, दीप्ति । चमकना । चुरा० उभ० अक० । जगाना-सक० सेट् । धूपयति-ते.

धूप्, तपना-अक० तपाना-सक० भ्वा० पर सेट् । धूपायति.

धूप, (पु०) धूपयति रोगान् (दोषान् वा) धूप्+अच् । गुगल आदि सुगन्धिवाले द्रव्योंसे निकलाहुआ धूम (धूआं) उसका साधन द्रव्य.

धूपित, (त्रि०) धूप्+क्त वा आयका अभाव । मार्ग आदि चलनेसे श्रान्त (थका) हुआ । सन्ताप दिया गया.

धूम, (पु०) धू+मक् । गीली लगडीसे उपजा मेघ और कज्जलका कारण । आगका झण्डा.

धूमकेतन, (पु०) धूमः केतनो यस्य । धूआं जिसका झण्डा है । धूम इव केतनः । धूएंकी नाईं झण्डा । उत्पात(उपद्रव)-रूप अशुभको वतानेहारा एक प्रकारका तारोंका समूह । ६ व० । आग.

धूमयोनि, (पु०) धूमः योनिः अस्य । धूम जिसका कारण है । मेघ (वादल) मोथा (मुस्तक) । ६ त० । आग । गीली लकडी.

धूमल, (पु०) धूमं (धूमवद्वर्णं) लाति । ला+क । जो धूएंवाले रंगको लेता है । काला और लाल रंग । उसवाला (त्रि०).

धूम्या, (स्त्री) धूमानां समूहः+य । धूमका समूह । धूमका साधन (त्रि०).

धूम्र, (पु०) धूमं (तद्वर्णं) राति । रा+क-पृ० । गधेके रोमकी भांति । काला और लाल रंग । उसवाला (त्रि०) सिल्हक.

धूम्रक, (पु०) धूम्र इव कायति । कै+क ऊंठ । ऊंट.

धूम्रलोचन, (पु०) धूम्रे लोचने यस्य । जिसके नेत्र धूमिले हैं । कपोत (कबूतर) । महिषासुर नामी एक सेनाका पति (मालिक).

धूम्रवर्ण, (पु०) धूम्रः वर्णः अस्य । जिसका धूमिला रंग है । सिल्हक । काला और लाल रंग, ऐसे धूंयेंसरीखे रंगवाला (त्रि०).

धूम्रिका, (स्त्री०) धूम्रः वर्णः सारे अस्ति अस्य+ठन् (इक) । टालीका दरख्त.

धूर्, वध । मारना और जाना (गति)। दिवा० आत्म० सक० सेट्। धूर्यति । अधूरिष्ट । धूर्तः.

धूर्जटि, (पु०) जट्-संघात (इकट्ठा होना)+इन्। धुरः (त्रैलोक्यचिन्तायाः) जटिः (संघातः) अत्र । जहां तीनों लोककी चिन्ता इकट्ठी हो रही है । शिवजीमहाराज.

धूर्त, (पु०) धुर्व्-धूर् वा+क्त । धतूरेका वृक्ष । और एक-प्रकारका नायक । खचरा । जूआ खेलनेहारा । वञ्चक (ठग) (त्रि०).

धूर्तक, (पु०) धूर्त इव (वञ्चक इव) । इवके अर्थमें कन् । जो ठगकी नाई है । शृगाल (सिआर) । गीदड.

धूर्वह, (त्रि०) धुरं वहति । वह्+अच् । भारवाहक । बोझा उठानेहारा । धुरंधर । "धुर्वह".

धूलि-ली, (स्त्री०) । धू+लिक् वा ङीप् । रजस् । पराग । धूरी । धूल.

धूलिध्वज, (पु०) धूलिः एव ध्वजः अस्य । धूरीही जिसका झंडा है । वायु । हवा.

धूसर, (पु०) धू-सर । गर्दभ (गधा) । ऊंट । कबूतर । तैलाकार । जिसका स्वरूप तेलकी नाईं हो । काला, चिट्टा, पीला उस रंगवाला (त्रि०).

धूस्तूर, (पु०) धूस्+क्विप्-तूर्+क पृ० वा ह्रस्वः । धतूरा.

धृ, पतन । भ्वा० आत्म० अक० अनिट् । धरते । अधृत.

धृ, स्थिति ठहरना । अक० । धृति-पकडना-सक० । भ्वा० उभ० अनिट् । ध्रियते । अधृत.

धृ, धारण । पकडना । चुरा० उभ० सक० अनिट् । धारयति-ते । अदीधरत्-त.

धृत, (त्रि०) धृ+क्त । कर्मणि । धारण कियागया । उठाया गया । आश्रय दियागया । पहिरा गया । इस्तिमाल किया गया.

धृतराष्ट्र, (पु०) एक राजा (चन्द्रवंशमें दुर्योधनका पिता) । साँप । पक्षी.

धृति, (स्त्री०) धृ+क्तिन् । तुष्टि । प्रसन्न होना । पकडना । यज्ञ । आठवां योग । सुख । धारणा । (चित्तका किसी एक देशमें रुकजाना) । दुःखमें भी शरीर आदिको रोकनेकी शक्ति । अठारह अक्षरके पादवाला एक छन्द । १२ की संख्या.

धृतिमत्, (त्रि०) धृति+मतुप् । धैर्यवाला । दृढ । पक्का । निश्चल । एक चित्तवाला । प्रसन्न । सन्तुष्ट.

धृष्, प्रागल्भ्य । चतुराई दिखाना । स्वा० पर० अक० सेट् । धृष्णोति । अधर्षीत् । धृष्टः.

धृष्, सामर्थ्यबन्धन । ताकतको रोकना । चुरा० आत्म० अक० सेट् । धर्षयते.

धृष्, क्रोध । गुस्सा करना और अभिभव । दबाना । चुरा० उभ० पक्षे भ्वा० सक० सेट् । धर्षयति-ते । धर्षति.

धृष्णु, (त्रि०) धृष्+क्नु । प्रगल्भ । चतुर । होशिआर । निर्लज्ज । बेशरम.

धृष्ट, (त्रि०) धृष्+क्त । निर्लज्ज । प्रगल्भ । एक नायक.

धृष्टद्युम्न, (पु०) धृष्टं (प्रगल्भं) द्युम्नं (बलं) यस्य । जिसका गंभीर बल हो । द्रुपदराजाका पुत्र.

धेनु, (स्त्री०) धयति सुतान् । धे+नु । नई प्रसूतहुई गौ.

धेनुक, (पु०) धेनुः इव । (इवके अर्थमें कन्) । एक असुरदैत्य । हथिनी (स्त्री०) "अपने अर्थमें कन्" धेनु.

धेनुकसूदन, (पु०) धेनुकं सूदयति (हिनस्ति) सूद्+ल्यु (अन) । श्रीकृष्णदेव "धेनुकहा" आदि इसी अर्थमें.

धेनुदुग्धकर, (पु०) धेनोः दुग्धं इव किरति । कृ+अच् । जो गौके दूधकीनाईं फैलादे । गर्जर (गाजर) गाजर.

धेनुष्या, (स्त्री०) धेनु+संज्ञामें यत्-सुक् च । ऋण शोधने-(कर्जा उठादेने) के लिये उत्तमर्णको (जिस्से कर्जा लिया जाता है) बंधकके तौरपर दीगई गौ.

धैनुक, (पु०) धेनूनां समूहः+ठक् । धेनुओंका समूह । बहुत गौएं.

धैर्य, (न०) धीरस्य भावः+ष्यञ् (य) । मनकी स्थिरता । धीरज । ऊंचाई । कारणोंके होनेपर भी मनका निर्विकार रहना (न बिगडना) । न घबराना.

धैवत, (पु०) एकप्रकारकी गलेसे निकलीहुई आवाज.

धोर, गतिचातुर्य । चालकी चतुराई । भ्वा० पर० अक० सेट् । धोरति । अधोरीत् । णिच् । अदुधोरत्-त.

धोरण, (न०) धोरति अनेन । धोर+ल्यु-ल्युट् (य) वा । हाथी, घोडा, गाडी आदि सवारी (यान) । "भावे ल्युट्" । एकप्रकारकी घोडेकी चाल.

धौत, (त्रि०) धाव्+क्त-ऊट् । मार्जित (साफ कियागया) धोयागया । उत्तेजित (भडकाया गया) । और चिट्टा । चांदी (न०).

धौतकौषेय, (न०) कर्म० । धोया हुआ । कीडोंके खजानेसे उपजा कपडा.

धौरेय, (त्रि०) धुरं वहति+ढक् (एय) । भार उठानेहारा । बैल आदि.

ध्मा, अग्निसंयुत फूंकना । ऐसा शब्द करना कि जिसमें लंबे सांस निकलें । भ्वा० पर० । वैसी आवाजसे बजाना । सक० अनिट् । धमति । अध्मासीत्.

ध्मात, (त्रि०) ध्मा+क्त । संधुक्षित । भडकाया हुआ । फूंकागया.

ध्माङ्क्ष, आकाङ्क्षा चाहना सक० । घोररव । डरावना शब्द । अक० भ्वा० पर० सेट्-इदित् । ध्माङ्क्षति । अध्माङ्क्षीत्.

ध्माङ्क्ष, (पु०) ध्माक्षि+अच् । काक (कौआ) । मच्छिओंको खानेहारा । और भिक्षुक (भीखमांगनेहारा).

ध्मापित, (त्रि०) ध्मा+णिच्+क्त । भस्म किया गया । खाक हो गया । फूंका गया । जलाया गया.

ध्यात, (त्रि०) ध्यै+क्त । खयाल किया गया । सोचा गया । चिन्तन किया गया.

ध्यातव्य, ध्येय (त्रि०) ध्यै+तव्य+यत् । ध्यान करनेयोग्य । सोचनेलायक.

ध्यानम्, (न०) ध्यै+भावे ल्युट् । खयाल । चिन्तन । सोच । ध्येयकी एकतानता.

ध्यानयोग, (पु०) ध्यानस्य योगः । ध्यानका योग (अभ्यास) । गाढ समाधि.

ध्यानस्थ, (त्रि०) ध्याने तिष्ठति । स्था+क । ध्यानमें स्थित । एकचित्त होगया.

ध्यै, भ्वा० प० । ध्यायति । ध्यात । दध्यौ । दिध्यासति । ध्यायते । ध्यान करना । खयाल करना.

ध्रु, स्थैर्य-टिकना-पक्काहोना-जाना-चलना-मारना । भ्वा० तुदा० ध्रवति-ध्रुवति । अध्रौषीत्-अध्रुवीत्.

ध्रुव, (पु०) ध्रु+अच् । शंकु (एकप्रकारका कील) । विष्णु । महादेव । उत्तानपादराजाका पुत्र । एकप्रकारका योग । नासाके आगेका भाग । माथेपर एकप्रकारकी गोलावट । भूगोलके दोनों (उत्तर और दक्षिण) केन्द्रों (सिरों) के ऊपरका भाग । और एक तारा जो स्थिर रहता है । निश्चित (पक्का) । दलील (तर्क) । आकाश (न०) । सन्तत (लगातार) । न बदलनेवाला । स्थिर (कायम) (त्रि०) । "संज्ञा (नाम) में कन्" । एक गीत (न०).

ध्रौव्य, (न०) ध्रुवस्य भावः+ष्यञ् । पक्काहोना । स्थिर रहना.

ध्वज्, गति । जाना । भ्वा० पर० सक० सेट् । ध्वजति.

ध्वज, (पु०) ध्वज्+अच् । झंडा । निशान । एक प्रसिद्ध पुरुष । "कुलध्वज" अपने वंशमें विशेष पुरुष । शौण्डिक (कलाल) । बेडीका चप्पा । सेना (स्त्री०) । मेढ्र (पुरुषका चिह्न) (पु० न०).

ध्वजिन्, (पु०) ध्वज+अस्ति (है) अर्थमें इनि । राजा । झंडेवाला । रथ (गाडी) । ब्राह्मण । घोडा । सांप । कलाल । मोर.

ध्वजिनी, (स्त्री०) ध्वजा अस्ति अस्याः+इनि । जिसकी ध्वजा हो । सेना (फौज).

ध्वन्, शब्द । बोलना । आवाज निकलना । चुरा० उभ० सक० सेट् । ध्वनयति.

ध्वन, (पु०) ध्वन्+घञ् (अ) शब्द (आवाज) । सुर.

ध्वनि, (पु०) ध्वन्+इन् । धीमा मृदंग आदिका शब्द । अलंकारमें एक उत्तम काव्यभेद.

ध्वन्स-ध्वंस, (पु०) ध्वन्स्+घञ् (अ) । विनाश । गिरना । बर्बादी.

ध्वँस्, गति । जाना । विनाश । होना गिरना । भ्वा० आत्म० अक० सेट् । ध्वंसते । "क्त्वा" में विकल्पसे इट् होता है.

ध्वस्त, (त्रि०) ध्वन्स्+क्त । गिरपडा । नष्ट । नाश हो गया । चलागया.

ध्वाङ्क्ष्, चाहना । डरावना । शब्द करना । भ्वा० पर० सक० सेट्-इदित् । ध्वांक्षति । अध्वांक्षीत्.

ध्वाङ्क्ष, (पु०) ध्वांक्षि+अच् । कौआ । बगला । फकीर । घर.

ध्वान, (पु०) ध्वन्+घञ् । शब्द । आवाज.

ध्वान्त, (न०) ध्वन्+क्त । नि० । अंधकार । अंधेरा.

ध्वान्तारि, (पु०) ६ त० अन्धेरेका शत्रु । सूर्य । आकका वृक्ष । चांद । और आग.

न

न, (अव्य०) नह् बांधना (बन्धन) । ड(अ) । निषेध (रोकना) "क्रियाके साथ योग होनेपर" न होना (अभाव) और उपमा । खाली । तारीफ कियागया । (स्तुत) (त्रि०) मोती (पु०).

नकुट, (न०) न+कुट्+अ । नाक । नासिका.

नकुल, (त्रि०) नास्ति कुलं अस्य । जिसका कुल न हो । निष्फल सांपका वैरी नेवला । "यदयं नकुलद्वेषी स कुलद्वेषी पुनः पिशुनः" वासवदत्ता । चौथे पाण्डवका नाम । शिव । (पु०) । कुक्कडी । जटामांसी और केसर (स्त्री०).

नक्त, (न०) नञ्+क्त । रात्रि (रात) । एक व्रत जिसमें सारा दिन विताकर रात्रिको चार घडी बीत जानेपर भोजन करना होता है.

नक्तम्, (अव्य०) नज्-शर्माना+तमु (तम्) । रात्रि । रात.

नक्तचारिन्, (पु०) नक्ते (रात्रौ) चरति । चर्+णिनि । जो रातको विचरता है । पेचक (उल्लू) । बिल्ला । रातमें विचरनेहारा कोई हो (त्रि०).

नक्तञ्चर, (पु०) नक्ते, नक्तं वा चरति+ठक् । राक्षस । चोर । उल्लू और बिल्ला । "रात्रिमें विचरनेहारा" (त्रि०).

नक्तन्दिव, (न०) नक्तं दिवा च । नि० । रात और दिन.

नक्र, (पु०) न क्रामति दूरस्थलं । न+क्रम+ड (अ) । जो दूर स्थानपर पर पांव नहि पसारता । कुम्मीर (संसार तंदुआ । झणकाट) । दर्वाजेके आगेकी लकडी और नासिक (नाक) (न०).

नक्षत्र, (न०) नक्ष्+अत्रन् । अश्विनीआदि तारे.

नक्षत्रचक्र, (न०) नक्षत्रघटितं चक्रम् । तारोंका बनाहुआ एक चक्र (चक्कर) । अश्विनी आदि २७ तारे । आकाशके गोलेमें राशिओंका चक्र.

नक्षत्रदर्श, (पु०) नक्षत्रं पश्यति । दृश्+अ । तारोंको देखनेवाला । ज्योतिषी.

नक्षत्रनेमि, (पु०) नक्षत्राणां नेमिरिव । मानों नक्षत्रोंकी धारा है । ध्रुव नामी तारा । चांद । विष्णु.

नक्षत्रपाठक, (पु०) नक्षत्राणि पठति । पठ्+ण्वुल् । नक्षत्रों (तारोंको पढनेवाला) । ज्योतिषी.

नक्षत्रमाला, (स्त्री०) नक्षत्राणां इव माला । तारोंकी नाई माला है । २७ मोतिओंका बनाहुआ एक हार । ६ त० । तारोंकी कतार "सैव नक्षत्रमाला स्यात्सप्तविंशतिमौक्तिकैः" कोश.

नक्षत्रलोक, (पु०) नक्षत्राणां लोकः । नक्षत्रों (तारों)का लोक । आकाश.

नक्षत्रविद्या, (स्त्री०) नक्षत्राणां विद्या । तारोंकी विद्या । ज्योतिःशास्त्र.

नक्षत्रसूचक, (पु०) नक्षत्राणि शुभाशुभतया सूचयति+ण्वुल् । जो तारोंका अच्छा वा बुरा फल कहता है । सिद्धान्तको न जान्नेहारा ज्योतिषी । "णिनि" "नक्षत्रसूची".

नक्षत्रेश, (पु०) ६ त० । तारोंका मालिक । चन्द्रमा । चांद । "नक्षत्रपति" आदि यही अर्थ है.

नख्, गति । सर्पण । जाना । चलना । सर्कना । भ्वा० पर० सक० सेट् । नखति । अनखीत्-अनाखीत्.

नख, (पु० न०) नखं (छिद्रं) अत्र । जहां छेक-सुराख है । नखून । नौं अंगुलीका कांटा.

नखकुट्ट, (पु०) नखान् कुट्टयति । कुट्ट+अण् । जो नखूनोंको कूटता-उतारता है । नापित । नाई.

नखर, (पु० न०) नखं राकते । रा+क । नख । नखून । नौं.

नखरायुध, (पु०) नखरं आयुधं यस्य । नखून जिसका शस्त्र (औजार) है । सिंह (शेर) व्याघ्र । (भेडिया) और कुक्कड । "नखायुध" यही अर्थ.

नखानखि, (अव्य०) "नखैः नखैः प्रहृत्य इदं युद्धं प्रवृत्तं" । आपसमें नखूनो (नौं) की लडाई करना.

नग, (पु०) न गच्छति । गम्+ड । जो नहिं चलता । पर्वत (पहाड) वृक्ष (दरख्त).

नगण, (पु०) लघु (एक मात्रावाला) रूप तीन अक्षर । न गण्यते (नहिं गिनी जाती है) गण्+अच्.

नगभिद्, (पु०) नगान् भिनत्ति । भिद्+क्विप् । पर्वतोंको फोडता है । इन्द्र । पहाडोंको तोडनेहारा (त्रि०)

नगभू, (स्त्री०) नग एव भूः (उत्पत्तिस्थानं) यस्याः । जो पहाडसे निकलती है । छोटा पत्थर.

नगर, (न०) नगाः (वृक्षाः पर्वता वा) सन्ति अस्मिन् । नग+र । पुर । शहर (जहां अच्छे २ काम करनेहारे चारों वर्ण हों । बहुत कलाओंसे भरीहुई अनेक जातियें हों और सब देवताओंके स्थान भी हों) । नगरी (स्त्री०).

नगरजन, (पु०) नगरस्थः जनः । नगरके लोग.

नगरन्ध्रकर, (पु०) "नगस्य रन्ध्रं करोति" । जो पहाड (क्रौञ्च पर्वत) में छेक सुराख कर्ता है । कृ+अच् । कार्तिकेय (महादेवका बडा पुत्र).

नगरप्रदक्षिणा, (स्त्री०) नगरस्य प्रदक्षिणा । ष० त० । नगरकी प्रदक्षिणा । किसी उत्सवमें देवताको नगरके चारों ओर घुमाना.

नगरप्रान्त, (पु०) नगरस्य प्रान्तः । नगरका प्रान्त (सिरा).

नगरमर्दिन्, (पु०) नगरं मर्दयति । उप० स० । नगरको मलनेवाला । मतवाला हाथी.

नगरमार्ग, (पु०) नगरस्य मार्गः । ष० त० । नगरका रास्ता । बडी सडक । राजमार्ग.

नगाट, (पु०) नगेषु (वृक्षेषु) अटति-अच् । जो वृक्षोंमें घूमता है । वानर । वन्दर.

नगाधिप, (पु०) नगानां अधिपः । पहाडोंका राजा । हिमालय पर्वत.

नगौकस, (पु०) नग ओको यस्य । पहाड जिसका स्थान है । पक्षी (परिंदा) । शेर । शरभ । कौआ.

नग्न, (त्रि०) नज्+क्त । वस्त्ररहित । कपडेके विना । नंगा । दिगम्बर नामी बौद्धोंका भेद (पु०) । तीन भेदरूप पडदे (आवरण) को छोडनेहारा जन । "नग्नक्षपणके देशे रजकः किं करिष्यति."

नग्निका, (स्त्री०) नग्नैव+स्वार्थे कन् । नंगी । वह स्त्री कि जिसे अभी स्त्रीधर्म (रज) नहिं हुआ । बेशरम औरत.

नग्नीकृत, (त्रि०) अनग्नः नग्नः कृतः । नग्न+च्वि+कृ+क्त । नंगा किया गया.

नज्, व्रीडा । शरम करना । भ्वा० आ० अक० सेट् । नजते । अनजिष्ट । नग्नः.

नञ्, (अव्य०) एक विशेष शब्द निषेध अव्ययके लिये । नहिं । न होना । रोकना । थोडापन । बुरा । लांघना । थोडा । बराबर । विरोध । फरक । सादृश्ये अब्राह्मणः । अभावे-अपापम् । भेदे-अघटः पटः । ईषत्-अनुदरा कन्या । अपत्ये-अकेशा । विरोधे-असुरः.

नट्, नृत्य-नाचना और हिंसा-मारना । भ्वा० पर० सक० सेट् । नटति । अनटीत्-अनाटीत् । परिनटति.

नट, (पु०) नटति । नट्+अच् । नाटक आदि देखनेयोग्य अभिनय (नकल) करनेहारा । एक प्रकारका नाचनेहारा । स्त्रीपर जीनेवाला । एकप्रकारका वर्णसंकर (दोगला) । अशोक वृक्ष.

नटन, (न०) नट+ल्युट् (अन) । नाच । नृत्य.

नटी, (स्त्री०) नट्+अच् । ङीप् (ई) । वेश्या । कंजरी । नटकी औरत.

नड्, गिरना । चुरा० उभ० अक० सेट् । नाडयति-ते.

नड, (पु०) नड्+अच् । नडतृण । नड । नडघास । चूडीगर.

नड्या, (स्त्री०) नडानां समूहः+य । नड (घास) । तृणका समूह.

नड्वल, (त्रि०) नडाः सन्ति अस्य+ड्वलच् । नडवाला देश.

नत, (त्रि०) नम्+क्त । नम्र । झुकाहुआ । आधा दिन बीतनेपर जन्मकी घडी (पु०) । तगरकी जड (न०).

नतनासिक, (त्रि०) नता नासिका अस्य । जिसका नाक झुका है । चिपटीनाकवाला (खान्दा).

नताङ्गी, (स्त्री०) नतं अङ्गं अस्याः+ङीप् । स्तन और जघनके बोझेसे जिसका अंग झुका हो । एक औरत.

नति, (स्त्री०) नम्+क्तिन् । नम्रता । झुकना । सात तरहका निंवना.

नद्, सन्तोष । खुशहोना । सवरकरना । भ्वा० पर० अक० सेट् । नन्दति । अनन्दीत् । नन्दथुः । प्रनन्दति.

नद, (पु०) नद्+अच् । सिंधु-भैरव-शोण आदि स्वाभाविक जलके प्रवाह.

नदथु, (पु०) नद्+अथुच् । शब्द । बडी ऊंची आवाज । बैलका शब्द.

नदपति-राज, (पु०) नदीनां पतिः वा नदीनां राजा । नदिओंका स्वामी । समुद्र.

नदी, (स्त्री०) नद्+अच्+ङीप् । गंगा, यमुना आदि बहुत वा थोडे जलके प्रवाह । (एक हजार आठ धनुष् जितने मापमें बहनेहारी नदी कही जाती है) । दर्या.

नदीज, (पु०) भीष्म । नद्याः समीपे जायते । जन्+ड (अ) । अर्जुनवृक्ष । और अभिमंथवृक्ष । जो नदीमें उपजता है (त्रि०).

नदीन, (पु०) ६ त० । नदिओंका स्वामी । समुद्र । और जलस्वामी वरुण.

नदीमातृक, (त्रि०) नदी माता इव पोषिका अस्य । नदी जिसे माताकीनाईं पुष्ट कर्ती है । नदीके जलसे उपजे धानोंसे पाला गया देश.

नदीरय, (पु०) नदीनां रयः । नदीका वेग (तेजी).

नदीष्ण, (त्रि०) नद्यां स्नातुं जानन्ति । स्ना+क-षत्वम् । नदीमें स्नान करना अच्छा जानता है । जिस २ नदीमें जैसे उतरना चाहिये वह जानेहारा.

नद्ध, (त्रि०) नह्+क्त । बंधाहुआ । मिलाहुआ.

नद्ध्री, (स्त्री०) नह्यतेऽनया+ष्ट्रन्+ङीप् । चमडेकी बनीहुई रस्सी.

ननन्द, (स्त्री०) न नन्दति । नन्द्+ऋन् (सेवा करनेपर भी) जो प्रसन्न नहीं होती । स्वामीकी भगिनी (बहिन) । ननद । "ननान्दा" यही अर्थ.

ननु, (अव्य०) प्रश्न (सवाल) । यकीनन । बुलाना । संबोधन । निन्दा.

नन्द, (पु०) नन्द्+अच् । श्रीकृष्णके पिता । एक गोप । महानन्दका पुत्र । एक राजा । आनन्द । एक खजाना.

नन्दक, (पु०) नन्दयति । नन्द+णिच्+ण्वुल् । हरीका खड्ग (तलवार) । और मेंडक । आनन्द देनेहारा । और कुलको पालनेहारा.

नन्दथु, (पु०) नन्द्+अथुच् । आनन्द । खुशी.

नन्दन, (पु०) नन्दयति । नदि+णिच् । खुशकर्ता है । पुत्र । मेंडक । एक पहाड । और ६० मेंसे एक वर्ष । इन्द्रका वाग (न०) । आनन्द करनेहारा (त्रि०).

नन्दनन्दन, (पु०) नन्दस्य नन्दनः । नन्दजीको खुश करनेहारा । श्रीकृष्ण । "नन्दसुत" आदि यही अर्थ.

नन्दनन्दिनी, (स्त्री०) ६ त० । दुर्गा । नन्दकी कन्या.

नन्दा, (स्त्री०) नन्द्+अच् । गौरी । पार्वती । मद (अलिञ्जर) । एक तिथि । (एकम, एकादशी और षष्ठी ननद । ननद । ननाण.

नन्दिग्राम, (पु०) श्रीरामके वनवास होनेपर जहां भरतजीने १४ वर्ष निवास किया वह ग्राम (गांव).

नन्दिन्, (पु०) नन्द्+णिनि-(इन्) । शिवजीका द्वारपाल (दार्वान).

नन्दिनी, (स्त्री०) नन्दयति । नन्द्+णिनि । वसिष्ठजीकी धेनु (गौ) । लडकी (सुता) । पार्वती । गंगा । ननद । व्याडिकी माता । रेणुका औषधी.

नन्दिनीसुत, (पु०) ६ त० । व्याकरणका संग्रह करनेहारा । व्याडिमुनि.

नन्दिपुराण, (न०) नन्दिना प्रोक्तं पुराणम् । नन्दीसे कहागया पुराण । एक उपपुराण.

नन्दी, (पु०) नन्द्+इन् । एक वृक्ष । आनन्द । महादेवका एक पार्श्वचर (पास विचरनेहारा) नन्दिकेश्वर । विष्णु । शिव.

नन्दीश, (पु०) नन्दी ईश इव । शिवजीका द्वारपाल । नन्दीनामा मालिक है.

नपात्, (पु०) न पातयति पितॄन् पत्+क्विप् । पौत्र । पोता (वेदमें प्रायः आताहै) । "तनूनपात्".

नपुंसक, (पु० न०) न स्त्री न पुमान् । नि० । स्तन और केशोंवाली नारी, और रोमवाला पुरुष है । जो इन दोनोंसे भिन्न हो । क्लीब.

नप्तृ, (पु०) न पतन्ति पितरः अनेन । न+पत्+तृच् । ति० । जिससे पितर गिरते नहीं । पौत्र । पोता और दोहता । पोती और दोहती (स्त्री०).

नभ, (न०) नभ्+अच् । आकाश (आस्मान) सावनका महीना (पु०).

नभःसद्, (पु०) नभसि सीदति । सद्+क्विप् । जो आकाशमें स्थित है । देवता.

नभश्चर, (पु०) नभसि चरति+अच् । मेघ (बादल) । वायु (हवा) । परिंदा । सूर्य आदि ग्रह । और राक्षस । आकाशसे जानेहारा (त्रि०).

नभस, (न०) आकाश । सावनका महीना और बादल.

नभस, (न०) नभ्+असच् । आकाश । आस्मान.

नभस्य, (पु०) नभसि (मेघे) साधु+यत् । जो वर्सनेमें अच्छा है । भाद्रपदका मास । भादों.

नभस्वत्, (पु०) नभः अस्ति (आश्रयत्वेन)+मतुप् (मको व) आकाश जिसका आसरा है । वायु (हवा).

नभस्सद्, (पु०) नभसि सीदति सद्+क्विप् । आकाशमें रहता (विचरता) है । पक्षी । तारा । देवता.

नभस्सरित्, (स्त्री०) नभसः सरित् । आकाशकी नदी । गङ्गा । दूधका रास्ता.

नभस्थली, (स्त्री०) नभसः स्थली । आकाशका स्थान । स्वर्ग । आकाश.

नभोदीप, (पु०) नभसः दीपः । आकाशका दीपक (दीवा) चन्द्रमा.

नभोमणि, (पु०) नभसः मणिः इव । प्रकाशक होनेसे मानों आकाशकी मणि है । सूर्य । सूरज.

नभोयोनि, (पु०) नभः योनिः अस्य । आकाशसे उपजा । वा जिससे आकाश उपजा । शिव.

नभोरजस्, (न०) नभसः रजः इव । दृष्टि (नजर) ढांकनेसे मानों आकाशकी धूर है । अंधेरा.

नभ्राज्, (पु०) न भ्राजति । भ्राज्+क्विप् । नहिं चमकता । मेघ । बादल.

नमस्, (अव्य०) नति । झुकना । छोडना । शब्दकरना.

नमस्कार, (पु०) नमस्+कृ+घञ् । हाथोंसे सिर लगाकर अपनी छुटाई सूचनकरनेहारा व्यापार । सलाम । आदर करना.

नमस्य, (त्रि०) नमस् करोति । नमस्+क्य (य) । नमस्करणीय । नमस्कार करनेलायक । "भावे अ" नति और पूजा.

नमुचि, (पु०) न मुञ्चति । नमुच्+कि । जो लडाईको नहिं छोडता । शुम्भ और निशुम्भका छोटाभाई । एक दैत्य.

नमुचिद्विष्, (पु०) ६ त० । इन्द्र नमुचिका वैरी "नमुचिसूदन" यही अर्थ.

नमेरु, (पु०) नम्+एरु । सुरपुन्नाग वृक्ष । रुद्राक्ष.

नमोवाकम्, (अव्य०) नमः शब्दका कहना । नमस्कारका वचन.

नम्ब्, गति । जाना । भ्वा० पर० सक० सेट् । नम्बति.

नम्र, (त्रि०) नम्+र । नत । झुकाहुआ । विनयान्वित । हलीम.

नम्रक, (पु०) नम्र इव कायति । कै+क । इवार्थे कन् वा । वेतस । वेंत । "अपने अर्थमें कन्" नम्र (त्रि०).

नय्, गति । जाना । भ्वा० आत्म० सक० सेट् । नयते । अनयिष्ट.

नय, (पु०) नी+अच् । नीति । शुक्राचार्य आदिसे रचाहुआ एक शास्त्र । "कर्तामें अच्" नेता । रहनुमा । लेजानेहारा । न्याय्य । मुनासिब । एक प्रकारका जूआ.

नयन, (न०) नीयते अनेन+करणे ल्युट् । (अन०) जिस्से ले जाय । नेत्र । चक्षु । आंख । +भावे ल्युट् । पहुचांना.

नयज्ञ, (त्रि०) नयं जानाति ज्ञा० क० । नीतिको जाननेवाला.

नयवादिन्, (पु०) नयं वदितुं शीलं यस्य-वद्+णिनि । नीतिज्ञ । नीतिकी बात करनेवाला । चाल बाज.

नयशालिन्, (त्रि०) नयेन शालते शोभते+णिनि । नीतिसे शोभा पाता है । धर्मात्मा । न्याय (इन्साफ) की बात कहनेवाला.

नर, (पु०) नृ-नृ-वा+अच् । परमात्मा । "आपो वै नरसूनवः" इति मनुः । विष्णु । मनुष्यका अवतार । अर्जुन । एक ऋषि । मनुष्य । छाया प्रमाणको जाचेमें काम आनेहारा । शङ्कु.

नरक, (पु०) नृ+वुन् । पृथिवीके वीच वराहसे उत्पन्नहुआ एक दैत्य । पापिओंके दुःख भोगनेके लिये एक स्थान । रौरव आदि २१ नरक.

नरककुण्ड, (न०) ६ त० । नरकका कुण्ड । पापिओंके पीडा भोगनेके लिये एक कुण्ड.

नरकजित्, (पु०) नरकं जितवान् । जि+भूते क्विप् । जिसने नरकनामी दैत्यकों जीतलिया । श्रीकृष्ण । "नरकान्तक".

नरकेशरिन्, (पु०) नरेषु केशरी । मनुष्योंमें सिंह । विष्णुका चौथा अवतार । नरसिंह.

नरदेव, (पु०) नरो देव इव । मनुष्य मानों देवता है । नृपति । राजा.

नरनारायण, (पु०) द्वि० । नरश्च नारायणश्च । द्वं० । नर् और नारायण । कृष्ण और अर्जुनके स्वरूपसे उतरे दो मुनि । भगवान्का एक अवतार । ऋषभदेव.

नरपति, (पु०) ६ त० । राजा । "नरदेव" आदि यही अर्थ.

नरपुङ्गव, (पु०) पुमान् गौः पुङ्गवः (वृषः) नरः पुङ्गव इव । मनुष्य मानों बैल है (बोझा उठानेके योग्य होसेने) मनुष्योंमें श्रेष्ठ (बहुत अच्छा) और राजा.

नरमाला, (स्त्री०) नराणां माला । मनुष्योंको (सिरोंकी) माला । "नरमालाविभूषणा" इति चण्डी.

नरमेध, (पु०) नरः मेध्यते (वध्यते) अत्र । जिसमें मनुष्यको मारकर संस्कार किया जाता है । एक यज्ञ । जिसमें नरके मांससे होम किया जाता है.

नरवाहन, (पु०) नराः वाहनानि अस्य । मनुष्य जिसकी सवारी है । कुबेर (उसे मनुष्य उठाते हैं) । जो मनुष्योंसे उठाया जाय (त्रि०).

नरसिंह, (पु०) नरश्चासौ सिंहश्च । मनुष्य शेर । नर और सिंहके स्वरूपवाला । हिरण्यकशिपुको नाश करनेके लिये प्रगटहुआ भगवान्का एक अवतार । "नरः सिंह इव" । मनुष्य मानों शेर है । शौर्य आदिसे अच्छा आदमी.

नरस्कन्ध, (पु०) नर-समूहे स्कन्धः । नरोंका समूह । वहुतसे आदमी.

नरेन्द्र, (पु०) नर इन्द्र इव । मनुष्य मानो इन्द्र है । राजा । विषवैद्य (जहिर निकालनेहारा) । २१ अक्षरके पादवाला एक छन्द.

नरोत्तम, (पु०) नरेषु उत्तमः । पुरुषोंमें उत्तम । नारायण । वैरागी पुरुष । और राजा.

नर्तक, (पु०) नृत्+ण्वुल् (अक) । चारण (तारीफ करनेहारा) । नलतृण । नाचके जाननेहारा नट (त्रि०) "नर्तकी" (स्त्री०).

नर्तन, (न०) नृत्+ल्युट् (अन) नृत्य । नाच.

नर्द, शब्द । आवाज करना । अक० जाना । सक० भ्वा० पर० सेट् । नर्दति-प्रनर्दति.

नर्मद, (पु०) नर्म (परिहासं) ददाति । दा+क । जो मखौल देता है । केलिसचिव । मखौलके लिये वजीर । मखौलिया (त्रि०) । नदी (स्त्री०).

नर्मन्, (न०) नृ+मनिन् । परिहास । हसीठट्ठा । केलि । क्रीडा । खेल.

नलकिनी, (स्त्री०) नलकं (सच्छिद्रं अस्थि) अस्य+इनि । जिसकी छेकवाली हड्डी हों । जङ्घा । लात.

नलकूबर, (पु०) नलः कूवरो युगंधरोऽस्य । इस नामका कुबेरका पुत्र.

नलिका, (स्त्री०) नल+स्वार्थे कन्-टाप् । नाडी । नाली । सुगंधिद्रव्य.

नलिनीखण्ड, (न०) नलिनी+समूहे खण्ड । कमलिनीओंका समूह.

नल्व, (पु०) नल्+व । चारसौ हाथका गिनाहुआ देश । चारसौ हात.

नव, (पु०) नु+अप् । स्तव । तारीफ+अच् । नूतन हुआ (त्रि०).

नवग्रह, (पु०) कर्म० । सूर्य आदि नौ ग्रह.

नवति, (स्त्री०) नव दशतः परिमाणं अस्य नि० । नव्वेकी संख्या.

नवदल, (न०) कर्म० । कमलकी कर्णिकाके पासका पत्ता । नया पत्ता.

नवदुर्गा, (स्त्री०) कर्म० । शैलपुत्री आदि नौ दुर्गाकी मूर्तिएं.

नवद्वारपुर, (न०) नव द्वाराणि यत्र तादृशं पुरम् । वह पुर कि जिसके नौ दर्वाजे हैं । देह । शरीर (इसमें दो कान दो आंख, दो नासा और एक मुख । ये ऊपरके सात स्थान) गुदा और लिङ्ग (ये नीचेके दो) इसतरह ९ हैं.

नवधा, (अव्य०) नवन्+प्रकारे धाच् । नवप्रकार । नौ तरह.

नवधातु, (पु०) कर्म० । सोना आदि ९ धातु.

नवन्, (त्रि०) बहु० । ९ की संख्या.

नवनीत, (न०) नवं नीयते स्म । नी+क्त । नया निकालागया । दूधका सार । मक्खन.

नवनीतक, (न०) नवनीतस्य विकारः+कन् । मक्खनसे बनाया गया । घी । घृत.

नवम, (त्रि०) नवानां पूरणः+डट्-मट् । ९ की संख्याको पूरा करनेहारा । नावां ।-मी । "नवमी" एक तिथि (स्त्री०).

नवमल्लिका, (स्त्री०) कर्म० । नवमालिका । बहुतफूलोंवाला वृक्ष.

नवयज्ञ, (पु०) नवः यज्ञः । ऋतु (मौसिम) पर उपजे फलोंकी पहिली भेट देवताके लिये.

नवयौवन, (न०) नवं यौवनं । नई जवानी । -ना (स्त्री०) नई जवानीवाली.

नवरत्न, (न०) नवानां रत्नानां समाहारः । ९ रत्नोंका मेल । विक्रमादित्यकी सभाके ९ पण्डित.

नवरात्र, (न०) नवानां रात्रीणां समाहारः । ९ रात । और ९ दिन.

नववध्वागमन, (न०) ६ त० । नववध्वाः आगमनम् । नई वधूका (पिताके घरसे पतिके घरमें) आना.

नववस्त्र, (न०) कर्म० । अनाहत नूतनवस्त्र । पहिलेही पहिरा गया नया कपडा । नूतन कपडा.

नववस्त्र, (न०) नवं वस्त्रं । नया वस्त्र (कपडा).

नवशशिभृत्, (पु०) नवं शशिनं बिभर्ति-भृ+क्विप् । नये चन्द्रमाको धारण करनेवाला.

नवशायक, (पु०) माली, तेली, नाई आदि जाति.

नवश्राद्ध, (न०) कर्म० १।३।५।७।९।११ आदि विषम दिनोंमें करने योग्य श्राद्ध। ग्यारहवेंदिन करनेलायक श्राद्ध.

नवसूतिका, (स्त्री०) नवं सूतं अस्ति अस्याः+ठन् (इक)। जिसका नयाही प्रसव हुआ है। धेनु। नई प्रसूता गौ.

नवान्न, (न०) कर्म०। नवीन अन्न। नया अनाज। "नवं अन्नं यत्र"। नये अनाज आनेका समय.

नवीन, (त्रि०) नव+ख (ईन)। नूतन। नया.

नवोढा, (स्त्री०) नवा ऊढा वह्+क्त+आ। नई विवाही गई (स्त्री०).

नवोदक, (न०) कर्म०। नवजल। नया पानी। "नवं उदकं यत्र"। नये पानीका समय.

नवोद्धृत, (न०) कर्म०। नवनीत। मक्खन। नया निकाल गया (त्रि०).

नव्य, (त्रि०) नु+यत्। नूतन। नया.

नष्ट, (त्रि०) नश्+क्त। तिरोहित। छिपाहुआ। जो दीखता नहिं.

नष्टचेष्टता, (स्त्री०) नष्टा चेष्टा यस्य तस्य भावः+तल्। हर्ष (खुशी) वा शोक (अफसोस) आदिसे सब चेष्टा (हर्कत) ओंसे रहित। बेहोश.

नष्टाग्नि, (पु०) नष्टः अग्निः यस्य। प्रमाद (भूल) आदिसे जिसने अग्निहोत्र करना छोड दिया। निरग्नि.

नष्टेन्दुकला, (स्त्री०) नष्टा चन्द्रकला यस्याम्। जिसमें चन्द्रमाकी कला छिपगई हो। चतुर्दशीसे मिलीहुई अमावस्या.

नस्य, (न०) नसे हितं। नासाके लिये अच्छा। मिरगी आदि रोगकी निवृत्तिके लिये नाकमें देनेलायक चूर्ण। नसवार.

नस्योत, (पु०) नसि सम्यक् ऊतः। आ+वे+क्त। नासामें अच्छीतरह परोना गया। बलीवर्द। बैल.

नहि, (अव्य०) निषेध। रोकना। नहिं.

नहुष, (पु०) चन्द्रवंशका एक राजा। एक नाग (सांप).

नहुषात्मज, (पु०) ययातिनामी राजा। नहुषका बेटा.

ना, (अव्य०) निषेध। नहिं.

नाक, (पु०) न कं अकं (दुःखं) तन्नास्ति यत्र। जहां दुःख नहिं। बहुत सुखका स्थान.

नाकिन्, (पु०) नाकः अस्ति अस्य। (जिसके रहनेका स्थान) स्वर्ग है। देव। देवता.

नाग, (पु०) न गच्छति (अगः) न अगः। वासुकी आदि सांप जिनका स्वरूप मनुष्यकासा। फण और पूछवाले सांप। हाथी। बादल। नागकेशर। मोथा। एक प्रकारकी हवा (वायु) जो शरीरमें उद्गार (डकार) कर्ती है। "नगे भवः"+अण्। पर्वतका (त्रि०).

नागकन्यका, (स्त्री०) नागानां कन्यका। नागों (सापों)-की कन्या.

नागदन्त, (पु०) नागस्य दन्त इव। हाथीके दांतकी नाई है। घरसे निकली हुई लकडी (किल्ली)। हाथीदांत.

नागपञ्चमी, (स्त्री०) नागानां पंचमी। श्रावणके शुक्लपक्षकी पंचमी (पांचवां दिन).

नागपाश, (पु०) नागः पाश इव। (बंधनका कारण होनेसे) नाग मानो पाश है। वरुण देवताका एक अस्त्र.

नागर, (त्रि०) नगरे भवः। नगरका। विदग्ध। होशियार। नागरमोथा.

नागरक, (पु०) नगरे भवः (बुरे और चतुराईके अर्थमें)+वुञ्। (अक) चोर। मूरत लिखनेहारा। शिल्पी। कारीगर.

नागराज, (पु०) नागानां राजा+टच् समा०। सापों वा हाथीओंका राजा। अनन्तनामी साँप। साँप। ऐरावत हाथी। हाथी.

नागराज, (पु०) नागानां राजा-राजन्+टच्। नागोंका राजा। शेषनाग.

नागलता, (स्त्री०) नागाकारा लता। एक बेल जिसकी शकल सांपजैसी है। ताम्बूली (पानकी बेल)। पुरुषका लिङ्ग.

नागलोक, (पु०) ६ त०। नागोंका लोक। पाताल.

नागाङ्गना, (स्त्री०) नागस्य अङ्गना। हाथीकी स्त्री। हथिनी.

नागान्तक, (पु०) नागस्य अन्तकः। सर्पका नाश करनेवाला। गरुड। मयूर। मोर.

नागाशन, (पु०) नगान् अश्नाति। अश्+ल्यु (अन)। सापोंको खाता है। गरुड.

नागाह्व, (पु०) नागेन युक्ता आह्वा यस्य। हातीके नामवाला। हस्तिनापूर.

नागेन्द्र, (पु०) नागानां इन्द्रः। हाथियोंका राजा.

नाचिकेतस्, (पु०) अग्नि। आग। एक ऋषि। वेदकी कही हुई एक कथा.

नाट, (पु०) नट्+घञ्। नृत्य। नाच। कर्णाट देश.

नाटक, (पु०) कामाख्याके पास एक पहाड। देखनेयोग्य एकप्रकारका काव्य (प्रसिद्ध वृत्तान्त और पाँच सन्धिवाला).

नाटार, (पु०) नटस्य अपत्यं+आरक्। नटका पुत्र.

नाटिका, (स्त्री०) एकप्रकारका नाटक.

नाटेय-र, नट्या अपत्यं+ढक् (एय) ढक् (रेय) वा। नटीका पुत्र.

नाट्य, (न०) नटानां कर्म+ष्यञ्। नटका काम (नाचना गाना और बजाना).

नाट्यप्रिय, (पु०) नाट्यस्य प्रियः । नृत्यका पिआरा । शंकरका नाम.

नाट्यशाला, (स्त्री०) नाट्यस्य नाट्यार्थं वा शाला । नाट्यं वा नाट्यके लिये शाला । नटमन्दिर । नाचने गाने बजानेकी शाला । नाचघर । देवमन्दिरके सामनेका घर.

नाट्यशास्त्रम्, (न०) नाट्यस्य शास्त्रम् । नाटक विद्या । नाच विद्या.

नाट्याचार्य, (पु०) नाट्यस्य आचार्यः ष० त० । नाट्यका आचार्य । नाचका सिखानेवाला.

नाट्योक्ति, (स्त्री०) नाट्ये (नटकर्मणि) उक्तिः । नाटकसम्बन्धी बचन । नाटकमें उपयोगी वचन.

नाडि-डी, (स्त्री०) । नड्-भ्रंश गिरना+इन् वा ङीप् । शरीरकी शिरा (नाडी) । वृक्षकी शाखा । घडी । नाली । ६० पल.

नाडिन्धम, (पु०) नाडीं धमति । ध्मा+खश्-धमादेशः । मुम् हस्वश्च । जो बांस आदिकी नालीको फूंकता है । स्वर्णकार । सुनार.

नाडीचक्र, (न०) नाभिस्थनाडीनिस्सरणचक्र । धुन्नीमें रहनेहारा नाडिओंके निकलनेका चक्र.

नाडीजङ्घ, (पु०) नाडीव जंघा अस्य । जिसकी लात नाडीके समान है । कौआ । ब्रह्माका पियारा एक बगला । एक मुनि.

नाडीपरीक्षा, (स्त्री०) नाड्याः परीक्षा । नाडीकी परीक्षा (पहिचान).

नाणक, (पु०) न आणकः कुत्सितः । जो बुरा नहिं । प्रशस्त । अच्छा । मोहर आदि (जिसपर निशान खुदा हो) (न०).

नाथ्, उपताप । गरम होना । तपना । मांगना । पर० । आशीर्वाद देना । आत्म० सक० । ऐश्वर्य-हकूमत करना-सेट् । नाथति । अनाथीत् । नाथते । अनाथिष्ट (आशीष).

नाथ, (पु०) नाथ्-ऐश्वर्य+अच् (अ) । अधिप । स्वामी । मालिक । शिवजी । प्रार्थना करनेलायक (त्रि०).

नाथवत् (त्रि०) नाथः अस्ति अस्य मतु० (मको व) । जिसका मालिक हो । पराधीन । परतन्त्र । बचानेहारा.

नाद, (पु०) नद्+घञ् (अ) । शब्द (आवाज) । चन्द्रबिन्दु । बडी ऊंची आवाज । एक प्रकारकी प्राणोंकी हवा (वायु).

नादेय, (न०) नद्या नदस्य वा इदं+ढक् (एय) । नदी वा नदका । सैन्धवलवण । सेंधानोन । नदी वा नदका पानी । काश और वेतस (बैंत) (पु०) नदीका (त्रि०).

नाधृ, मांगना (नाथके सब अर्थ) । भ्वा० आ० सक० सेट् । नाधते.

नाना, (अव्य०) विना । अनेक (बहुत) । दोनों.

नानाजातीय, (त्रि०) नानाजातौ भवः+ईय । कई जातिमें होनेवाला । कई प्रकारका । कई तरहका.

नानारूप, (त्रि०) नाना रूपाणि यस्य । कई स्वरूप (शकल) वाला.

नानार्थ, (त्रि०) नानाविधाः अर्था यस्याः । बहुत नाम और प्रयोजन (मतलब)वाला.

नानाविध, (त्रि०) नाना विधाः प्रकाराः यस्य । नाना (कई) प्रकारवाला । कई तरहका.

नानावीर्य, (त्रि०) नाना वीर्याणि यस्य । कई प्रकारकी शक्तिवाला.

नान्तरीयक, (त्रि०) अन्तरं (व्यवधानं) अनुभवति । (नञ्के अर्थवाले "न" के साथ समास होनेसे) नान्तरीयं । फिर अपने अर्थमें कन् (क) होता है । अवश्यम्भावी । जरूर होनेहारा । फैलाहुआ । व्याप्त.

नान्दी, (स्त्री०) नन्दन्ति देवाः पितरो वा यत्र । नन्द्+इन् ङीप् । पृ० । जहां देवता वा पितर प्रसन्न होते हैं । "नान्दीश्राद्धं ततः कुर्यात्" इति स्मृतिः । समृद्धि । सम्पदा । हश्मत । नाटकमें सूत्रधारसे करनेयोग्य एक प्रकारका मङ्गलाचरण.

नान्दीमुख, (पु०) नान्यर्थं (वृद्ध्यर्थं) बन्धनान्वितं मुखं यस्य । वृद्धिके लिये जिसका मुख बांधा गया है । खूएका पडदा । "नान्दी (वृद्धिः) तदर्थं श्राद्धम्" । विवाहआदिके पहिले किया जानेहारा मङ्गलश्राद्ध । नान्दीश्राद्धमें भोजन करनेहारे पितर.

नान्दीवादिन्, (पु०) नान्यर्थं वदति वादयति वा । नाटकके आदिमें मङ्गलपाठ करने वा करानेहारा सूत्रधार । उसके लिये तूर्य (बाजे आदि बजानेहारा नटआदि.

नापित, (पु०) उस्तरेका काम करनेहारा । एक जातिका नाम । नाई.

नापितायनि, (पु०) नापित+आयन् । नापित (नाई)-का पुत्र.

नाभि, (पु०) नह्यन्ते अत्र, नह्यते अनेन वा । नह्+इञ् भान्तादेश । १२ राजाओंके चक्रका बीच । पहियेकी धुरी । मुख्य राजा । और क्षत्रिय । कस्तूरी (स्त्री०) । धुन्नी (पु० स्त्री०) । प्रधान । मुख्य (त्रि०).

नाभिज, (पु०) नाभौ जायते । जन+ड । जो विष्णुकी नाभिमें उपजता है । चतुर्मुख । ब्रह्मा । "नाभिजन्मा".

नाभिल, (त्रि०) नाभिः अस्ति अस्य+लच् । नाभि (नाफ-धुन्नी) वाला । नाभीसे उपजा वा आया.

नाभ्य, (त्रि०) नाभि+यत् । नाभिवाला । नाभिमें ।-भ्यः (पु०) शिव.

नाम, (अव्य०) स्वीकार । विस्मय । स्मरण । सम्भावना । निन्दा । प्राकाश्य । विकल्प । अलीक (झूठ) । कोप.

नामकरण, (न०) नाम क्रियते अत्र । कृ+ल्युट् (अन) । जिसमें नाम रक्खा जाता है । दसवें आदि दिनमें करनेलायक एक प्रकारका संस्कार.

नामधेय, (न०) नामैव+स्वार्थे धेय । नाम । वाचकशब्द । संज्ञा । "वाचारम्भणं विकारो नामधेयं" इति श्रुतिः.

नामन्, (न) नम्यते अभिधीयते अर्थः अनेन । "नामन् सीमन्" नि० । जिस्से अर्थ कहा जाता है । आकाश आदि प्रपञ्चके अर्थको जतानेहारा संज्ञाशब्द । नाम.

नामशेष, (त्रि०) नाम एव शेषः अस्य । जिसका केवल नाम बाकी रहा । मृत । मरगया । "नाममात्रं शेषः यत्र" जिसमें केवल नाम बचरहा । मरना (पु०).

नाममाला, (स्त्री०) नाम्नां माला । नामोंकी पंक्ति (कतार–लिस्ट).

नाममुद्रा, (स्त्री०) नाम्नः मुद्रा । नामका चिह्न । नामकी मोहर.

नामानुशासनम्, (न०) नाम्नां अनु–शासनम् । नाम (संज्ञावाचक) शब्दोंके लिंगोंका नियम.

नायक, (पु०) नी+ण्वुल् (अक०) नेता । लेजानेहारा । स्वामी । प्रभु । हारके बीचकी मणि । सेनाका पति । शृङ्गाररसको अवलम्ब करनेहारा पति वा उपपति (यार) आदि । पहुंचानेहारा (त्रि०).

नायिका, (स्त्री०) नी+ण्वुल् (अक०) । शृङ्गाररसको आलम्बन करनेहारी स्त्री आदि । प्रेममें भरीहुई जवान औरत । दुर्गाशक्ति । नायिका ३ प्रकारकी होतीं हैं अपनी, दूसरी और सबकी.

नार, (पु०) नरस्य अयं+अण् । बालक । और पानी । परमात्माका और मनुष्यका (त्रि०) । नरोंका समूह । संघ (न०).

नारक, (पु०) नृ+वुन् (अक) । "नरके भवः"+ अण् । नरकका (त्रि०).

नारकिन्, (त्रि०) नारकं भोग्यत्वेन अस्ति अस्य+इनि । नरककी पीडाओंको भोगनेहारा जीव.

नारङ्ग, (पु०) एक प्रकारका रस । गाजर । मेघका अर्क । जौडोंमेंसे एक । संतरेका वृक्ष.

नारद, (पु०) नारं (जलं) ददाति-दा+क । पानी देता है । एक मुनि । नारं (अज्ञानं) द्यति-दो+क । नारं (ज्ञानं) ददाति दा+क । वा जो अज्ञानकी तोडता वा ज्ञानको देता है । एक मुनि । उस मुनिका कहाहुआ २५००० का महापुराण । (न०) देवर्षि (पु०).

नारसिंह, (न०) नरसिंहं अधिकृत्य कृतः ग्रन्थः+अण् । वह ग्रन्थ कि जिसमें नरसिंहका वर्णन है । उपपुराण.

नाराच, (न०) नराणां समूहः । नारं आचामति । चम्+ ड (अ) । सर्वलोहमय अस्त्र । लोहेका हथियार । बाण । तीर.

नारायण, (पु०) "नार" नाम जलका है, वे जल नरसे उपजे हैं, सबसे पहिले जलही जिसका "अयन" अर्थात् निवासस्थान है ऐसे मनुजीके अर्थानुसार विष्णु अर्थ होता है । नरसमूहका आश्रय (आसरा).

नारायणक्षेत्र, (न०) ६ त० । गंगाजीके दोनों ओर चार २ हाथ जगह.

नारायणबलि, (पु०) धर्मशास्त्रमें कहागया एक प्रायश्चित्त जो मरेहुए पाषण्डीआदिकोंका किया जाताहै.

नारायणी, (स्त्री०) विष्णुकी शक्ति । लक्ष्मी । गंगा । शतावरी.

नारिकेल, (पु०) नल्+इण्–नालिः । केन (वायुना जलेन वा इलति-चलति) इल्+क । कर्म० । जो वायु वा जलसे हिलता है । एक वृक्ष । नारियेल । नरेल.

नारी, (स्त्री०) नृ–नर–वा जातौ+ङीष् नि० स्त्री । औरत.

नारीदूषणम्, (न०) नार्या दूषणम् । स्त्रीका दोष (ऐब).

नारीरत्नम्, (न०) नारीषु रत्नं नारिओंमें श्रेष्ठ । बहुत उत्तम स्त्री । उंदी औरत.

नार्पत्य, (त्रि०) नृपतेः अयं+यत् । राजावाला । राजाका । राजसंबंधी.

नाल, (न०) नल्+ण । कमलकी डण्डी । उत्पलादि दण्ड.

नालीक, नाल्यां कायति । कै+क । धनुष् । कमान । कमल । कमण्डलु.

नाविक, (पु०) नावा चरति+ठक् (इक) । जो बेडीसे विचरता है । कर्णधार । जहाजपर जानेहारा मुसाफिर । मल्लाह । नावका.

नाव्य, (त्रि०) नावा तीर्यते असौ । नौ+यत् । जो नावसे तराजाता है । नावसे तैरनेलायक देश वा नदी.

नाश, (पु०) नश्+घञ् (अ) । पलायन । भागना । अदर्शन । न दीखना । निधन । मरना । अनुपलम्भ । न मिलना.

नाशक, (त्रि०) नश्+णिच्+ण्वुल् । नाश करनेवाला.

नाशन, (त्रि०) नश्+णिच्+ल्युट् । नाश होनेवाला (तवाह करनेवाला.

नासत्य, (पु० द्वि० व०) नास्ति असत्यं ययोः । नासां त्यजतः । त्यज्+ड नि० वा जिनमें झूठ नहिं । अश्विनीकुमार । "सूर्यके तेजको न सहारकर संज्ञा देवी उत्तरकुरुमें घोडीका रूप बनाकर तपस्या कर्ती हुई घोडेके स्वरूपमें सूर्यसे संगत हुई परन्तु इसने दूसरे पुरुषकी बुद्धिसे उस सूर्यके वीर्यको नासाके छेकसे निकाल दिया, ये दोनों नासासे बाहिर हुए" इस प्रकार पुराणकी कथा है.

नासा, (स्त्री०) नस्-शब्द+अ । नासिका । गन्धको ग्रहण करनेहारी एक इन्द्रिय और शब्द । नास.

नासिका, (स्त्री०) नास् शब्दकरना+ण्वुल् । नाक । नास्त । नाककी मूर्तिवाला.

नासिकामल, (पु०) नासिकायाः मलः । नाकका मैल.

नासिक्य, (त्रि०) नासिकायै हितः-तत्र भवो वा+यत् । नासिकाके लिये हितकारी वा उसमें होनेहारा । नासासे उपजे अश्विनीकुमार (पु० द्वि० व०).

नासीर, (न०) नास+ईरन् । अग्रेसर सैन्य (आगे जानेहारी फौज) सेनाका मुख । आगे जानेहारा । अग्रसर (त्रि०).

नास्ति, (अव्य०) अविद्यमानता । न होना । "अस्ति नास्ति न जानाति" चाणक्यः.

नास्तिक, (त्रि०) नास्ति परलोकादिकं इति मतिः अस्य+ठन् । जिसका विचार ऐसा है कि "परलोक, उसका साधन धर्म वा अधर्म, उसका साक्षी (गवाह) ईश्वर कुछ भी नहीं" चार्वाक आदि । स्वर्ग, स्वर्गका साधन, और ईश्वर तीनोंको न माननेवाला.

नास्तिकता, (स्त्री०) नास्तिकस्य भावः । नास्तिकका होना । मिथ्यादृष्टि । झूठी नजर (स्वर्ग आदि न माननेसे).

नि, (अव्य०) छोटापन । नीचे । बहुत । सदा । संदेह । कौशल । फेंकना । हटना । पास । आदर । देना । छूटना । रोकना.

निकट, (न०) नि+कट्+अच् (अ) । समीप । पास.

निकर, (पु०) नि+कृ+ अप् । समूह । सार । वित्त (धन) । निधि । खजाना.

निकर्षण, (न०) निर्गतः कर्षणात् । खेचनेसे निकलगया । गांव आदिमें घर आदिको बनानेके लिये मापा हुआ देश । बाहिर सैर करनेकी भूमि । बहिर्विहरणभूमि.

निकष-स, (पु०) नि+कष् (म्) अच्-घ वा (अ) । कषपाषाण । शाण । सोना आदि कसनेका पत्थर । कसौटी । हथियार आदिको तेज करनेवाला पत्थर.

निकषा, (अव्य०) निकट (पास) । मध्य (बीच) । राक्षसोंकी माता (स्त्री०).

निकषोपल, (न०) कर्म० । शाण । सान । सोने आदिको पहिचाननेहारा एक पत्थर । कसौटी । "कष्टिपत्थर."

निकाम, (न०) नि+कम्+घञ् (अ) । यथेप्सित । इच्छाके अनुसार । जैसा चाहागया । अतिशय (बहुत) । गृह । घर । परमात्मा.

निकाय, (न०) नि+चि+घञ्-कुत्वम् । समानधर्मप्राणिसङ्घः । एकधर्मवालोंका झुण्ड । निवास । रिहायश । समूह.

निकाय्य, (न०) निचीयते अत्र । नि+चि+ण्यत्-कुत्वम् । गृह । घर.

निकार, (नि+कृ+घञ्) । परिभव । तिरस्कार । बेइज्जती । अपकार । कॄ+घञ् । धान आदिका ऊपर फेंकना । छटना.

निकाश, (पु०) नि+काश्+घञ् । मूर्ति । शकल । आकार । दर्शन । निकट सदृश (बराबर) (समासमें पीछे रहता है).

निकुञ्ज, (न०) निःशेषेण कौ जायते । जन्+ड-पृ० । लतादिपिहित स्थल । बेल आदिसे ढकाहुआ स्थान.

निकुम्भ, (पु०) नि+स्कुम्भ+अच् । पृ० । कुम्भकर्णराक्षसका पुत्र । दन्तीवृक्ष.

निकुम्भिला, (स्त्री०) लङ्काके पश्चिमकी ओर एक गुफा । वहांकी एक देवी.

निकुरम्ब, (न०) नि+कुर्-शब्दकरना+अम्बच् । समूह । बहुतसा.

निकृत, (त्रि०) नि+कृ+क्त । परिभूत । बेइज्जत किया गया । उपद्रुत । जुल्म कियागया । ठगागया । नीच । शठ । धूर्त.

निकृति, (स्त्री०) नि+कृ+क्तिन् । शाठ्य । क्षेप । तिरस्कार और दैन्य । बेइज्जत करना । शरारत । गरीबी.

निकृष्ट, (त्रि०) नि+कृष्+क्त । जाति और आचार आदिसे निन्दित । अपकृष्ट । नीच । अधम । बुरा.

निकेत, (पु०) नि+कित्-निवास-रहना । आधारे+घञ् । गृह । घर । निकेतन.

निक्त, (त्रि०) निज्+क्त । धोया गया । साफ किया गया.

निक्व (क्वा) ण, (पु०) नि+क्वण्+अप्-घञ् वा । वीणाका शब्द । बीनकी आवाज.

निःक्षत्रिय, (त्रि०) नास्ति क्षत्रियः यत्र । जहां क्षत्रिय नहीं रहा । विनक्षत्रिय जातिवाला.

निक्षिप्त, (त्रि०) नि+क्षिप्+क्त । न्यस्त । रक्खागया । फेंकागया । स्थापित.

निक्षेप, (पु०) नि+क्षिप्+कर्मणि घञ् । दूसरेमें अर्पण किया गया अपना धनआदि । अमानत । शिल्पी (नक्काश) के हाथमें ठीक करनेके लिये दीहुई चीज.

निक्षेपण, (न०) नि+क्षिप्+ल्युट् । फेंकना । नीचे रखना.

निक्षेप्तृ, (पु०) नि+क्षिप्+तृच् । फेंकनेवाला । इमानत रखनेवाला.

निखर्व, (पु०) १०००००००००००० इतनी संख्या । दस हजार करोड दश खर्व संख्या । वामन (त्रि०) । बौना.

निखात, (त्रि०) नि+खन्+क्त । खोदकर रक्खागया । खोदाहुआ । गढा.

निखिल, (त्रि०) निवृत्तं खिलं (शेषः) यस्मात् । जिस्से बाकी निकलगया । सकल । सारा । सब.

निगड, (पु॰ न॰) नि+गल्+अच् । डत्वम् । शृंखला । संगली । संगल । हथकडी । बेडी.

निगडित, (त्रि॰) निगडः जातः अस्य । इतच् । बद्ध । संयत । बंधाहुआ.

निगद, (पु॰) नि+गद्+अच् । भाषण । बोलना । श्रेष्ठोंकी उक्ति-शब्दमात्र.

निगम, (पु॰) निगम्यतेऽत्र अनेन वा । नि+गम् घञ् । निश्चय । प्रतिज्ञा । वेद । न्यायके पांच अवयवोंमेंसे पिछला अवयव । व्यापार । बाजार । वेदकी शाखा । रास्ता.

निगमन, (न॰) नि+गम्+ल्युट् (अन) । प्रतिकूल (बरखिलाफ) प्रमाण (सबूत) को तोडकर प्रकृत (असली) प्रमाणका निश्चय करानेहारा न्यायके पांच अवयवोंमेंसे सबसे पिछला "इसलिये यहां अग्नि है" इत्यादि स्वरूपवाला.

निगा(ग)र, (पु॰) नि+गृ+अप्-घञ् वा । भोजन । खाना । आहार.

निगाल, (पु॰) नि+गल्-अदन-खाना+घञ् । अश्व (घोडे) के गलका स्थान.

निगीर्ण, (त्रि॰) नि+गृ+क्त । निगला गया । खाया गया । पूरा २ चाबा गया । छिपाया गया.

निगूढ, (त्रि॰) नि+गुह्+क्त । छिपाया गया । गुप्त । छिपा हुआ.

निगूह,+गुह+क्त । वनमुद्ग । बनकी मूंग । छिपाहुआ और आलिङ्गित । मिलाहुआ (त्रि॰).

निगृहीत, (त्रि॰) नि+ग्रह+क्त । तर्जित (झिडकागया) । पीडा पहुंचाया हुआ । और रोकाहुआ.

निग्रह, (पु॰) नि+ग्रह्+अप् । झिडकना । सीमा (हद्द) । बन्धन । अनुग्रहाभाव (नाराजगी) । निषिद्ध प्रवृत्ति देखकर तिरस्कार करना । मारना । प्रवृत्तिसे हटाना । और रोध (रोक).

निग्रहस्थान, (न॰) निग्रहस्य (वादिपराजयस्य) स्थानम् । वादिके पराजय (हार) की जगह । गौतमसे कहेंगये १६ पदार्थोंमेंसे सबसे पिछला रुकनेकी जगह.

निग्राह, (पु॰) नि+ग्रह्+घञ् । "तेरा अनिष्ट (बुरा) हो" इस प्रकारका शाप (बुरावचन बोलना).

निघ, (पु॰) निर्विशेषेण हन्यते । पूरा २ चोट दिया जाता है । हन्+क । नि॰ । जो लंबा चौडा एक जैसा है (समविस्तार दैर्घ्य) । दायरा । गेंद । वृक्ष । दरख्त.

निघण्टु, (पु॰) नि+घटि+उ । इस नामवाला कोष (डिक्शनरी) जिस्में प्रायः वैदिक शब्द आते हैं.

निघस, (पु॰) नि+अद्+अप्-घसका आदेश होता है । भोजन । आहार । खुराक.

निघ्न, (त्रि॰) नि+हन्+घञ्के अर्थमें क होता है । अधीन (ताबेदार) । गुणित । गुणागया (जर्ब खाया हुआ) "द्विगुणान्त्यनिघ्न" इति लीलावती.

निचय, (पु॰) नि+चि+कर्मणि अच् । अवयव आदिसे उपचित (बढाहुया) पदार्थ । सीमासे बाहिर निश्चय । बढाहुआ । समूह । ढेर.

निचाय, (पु॰) नि+चि+घञ् । राशीकृत (इकट्ठा किया-हुआ) धान्य आदि (झोना आदि अनाज) । समूह.

निचित, (त्रि॰) नि+चि+क्त । व्याप्त । पूरित । भराहुआ । फैलाहुआ । सङ्कीर्ण । मिलाहुआ । निर्मित । रचाहुआ.

निचोल, (पु॰) नि+चुल्+अच् । प्रच्छदपट । (जिस्से छेज आदि बिछाई जाती है-बिछौना) । डोलीका पडदा । स्त्रीपिधानपट (बुर्का) । दुपट्टा वा चादर.

निज्, जु॰ उभ॰ । नेनेक्ति, नेनिक्ते । नेनिक्त । प्रक्षालन करना । धोना । साफ करना.

निज, (न॰) नि+जन्+ड । आत्मीय । अपना । स्वाभाविक.

निटिल, (न॰) कपाल । माथा । खोपरी.

नितम्ब, (पु॰) नि+तम्ब्+अच् । निभृतं तम्यते (काम्यते) कामुकैः । कामीजन जिसकी इच्छा एकान्तमें कर्ते रहते हैं । स्त्रिओंकी कमरका पिछला भाग । कटितट । चूतड । कंधा । किनारा । कमर.

नितम्बबिम्बम्, (न॰) नितम्बस्य बिम्बम् । गोल नितम्ब (चूतड).

नितम्बवती, (स्त्री॰) नितम्ब+मतुप्+ई । अच्छे (सुन्दर) और वडे जघनवाली औरत.

नितम्बिनी, (स्त्री॰) नितम्ब+प्राशस्त्ये इनि । अच्छे नितम्बवाली स्त्री । कोई औरत.

नितराम्, (अव्य॰) नि+तर+आम् । सुतराम् । सदा । अतिशय । विशेषकरके.

नितल, (न॰) निःशेषेण तलं (अधोभागः) । एक पाताल जो बहुत नीचे है.

नितान्त, (न॰) नितम्यति स्म । नि+तम्+क्त । एकान्त । अकेले । अत्यन्त । बहुत ही । उसवाला (त्रि॰).

नित्य, (न॰) नियमेन वा भवं+नि+त्यप् । जो सदा रहे । निरन्तर । उसवाला (त्रि॰) । तीन कालमें होनेहारा (पु॰) । समुद्र । सदा । प्रतिदिन । उत्पत्तिविनाशरहित । यथा "वर्णा नित्याः".

नित्यकर्म, (न॰) कर्म॰ । न करनेसे दोषको उपजानेहारा संध्यावन्दन आदि । हररोजका काम.

नित्यता-त्वं, (स्त्री॰ न॰) नित्यस्य भावः+तल्+त्व । नित्यभवन । सदा होना.

नित्यतृप्त, (त्रि०) नित्यं तृप्तः (सदा तृप्त-रजाहुआ) "नित्येन ब्रह्मानन्देन वा तृप्तः"। ब्रह्मस्वरूप आनन्दसे तृप्त। परमानन्दके लाभसे सदा तृप्त। "नित्यतृप्तो निराश्रयः" इति स्मृतिः.

नित्यदा, (अव्य०) सातत्य। सदा। हमेशहसे.

नित्यमुक्त, (पु०) नित्यं मुक्तः। सदा छुटाहुआ। तीन कालमें भी बंधनसे रहित। परमात्मा.

नित्ययज्ञ, (पु०) कर्म०। फलकी इच्छा न रखके जीवनमात्रके लिये विधान कियागया यज्ञ। अग्निहोत्र आदि.

नित्ययौवना, (स्त्री०) नित्यं यौवनं यस्याः ब० स०। नित्य (सदा) यौवन (जवानी) वाली स्त्री। द्रौपदीका नाम.

नित्यशङ्कित, (त्रि०) नित्यं शङ्का जाता अस्य+इतच्। सदा संशय करनेवाला.

नित्यसत्वस्थ, (त्रि०) नित्यं (अचलं) यत् (सत्वं) धैर्य (गुणभेदो वा) तत्र तिष्ठति। स्था+क। न हिलनेवाले धीरजरूपी गुणमें रहनेहारा। धैर्य करनेहारा। रजस्तमस्को दवाकर सदा सत्वगुणका आश्रय लेनेहारा.

नित्यसमास, (पु०) कर्म०। एक प्रकारका समास। (आवश्यक समास। जिसका अर्थ समासविन भिन्न पदोंमें कुछभी समझमें नहिं आसक्ता)। जुदा अर्थ एकहीमें डूबाहुआ। यथा "जमदग्नि" "जयद्रथ" "वागर्थाविव".

नित्यानध्याय, (पु०) सर्वथा वर्जनीय वेदपाठादि छुट्टीका दिन। वेद न पढनेकी छुट्टी.

नित्याभियुक्त, (त्रि०) नित्यं अभि (समन्तात्) युक्तः (योगे व्यापृतः)। सदाही चारों ओरसे योगाभ्यासमें लगाहुआ। केवल शरीरके रक्षाके लिये यत्न करनेहारा.

निदर्शन, (न०) नि+दृश्+ल्युट्। उदाहरण। मिसाल। अर्थालङ्कार.

निदाघ, (पु०) नितरां दह्यते अत्र। जिस समय बहुत जलते हैं। नि+दह्+घञ्। उष्ण। गरम। घर्म। पसीना। गर्मीका मौसम (जेठ और हाड).

निदाघकर, (पु०) निदाघं (घर्म) करोति। कृ+अच्। जो गर्मी कर्ता है। सूर्य। सूरज.

निदान, (न०) नितरां दीयते। दा+ल्युट्। आदिकारण। खास सबब। सबब। शुद्धि (सफाई)। तपका फल मांगना। वछडेकी रस्सी। अवसान। आखिर। रोगका निर्णय करनेहारा एक ग्रन्थ। और रोगका कारण.

निदिग्ध, (त्रि०) नि+दिह्+क्त। उपचित। बढाहुआ। लेपआदिसे बढाहुआ। खुशबोदार कियागया.

निदिध्यासन, (न०) गुरुके मुखसे सुनेहुए अर्थका निरन्तर (लगातार) विचार करना। एक प्रकारका ध्यान। सोचेहुए अर्थमें डूबजाना.

निदिध्यासन, (न०) नि+ध्यै+सन्+अन। निरन्तर ध्यान लगाना। निरन्तर (लगातार) समाधि लगाना.

निदेश, (पु०) नि+दिश+घञ्। शासन। आज्ञा। हुक्म। कहना। निकट (पास)। भाजन (बर्तन).

निद्रा, (स्त्री०) नि+द्रा+अङ्। शयन। सोना। नींद। जीवकी वह अवस्था कि जिसमें कर्मेन्द्रिय विषयोंसे हटजाती है.

निधन, (पु०) (न०) नि+धा+क्यु। मरना। नाश। कुल। लग्नसे ८ वां स्थान.

निधान, (न०) नि+धा+ल्युट्। शङ्ख पद्म आदि निधि (खजाना)। आश्रय (आसरा)। कार्यका अन्त.

निधि, (पु०) नि+धा+कि। शंख पद्म आदि खजाना। फिर लेनेके लिये किसी स्थानमें अर्पण करना। वह द्रव्य कि जिसका कोई मालिक नहिं। आसरा जैसे "गुणनिधिः" "वारिधिः".

निधीश, (पु०) ६ त०। खजानेका मालिक। कुबेर। "निधिपति".

निधुवन, (न०) नितरां धुवनं (हस्तादिकम्पनं) यत्र। जिसमें हाथ आदि अंग बहुत कांपते हैं। सुरत। क्रीडा। स्त्री और पुरुषकी खेल। कामविलास। भोग.

निध्यै, भ्वा० प० ध्यायति। दध्यौ। ध्याता। चिन्ता करना। खयाल करना। किसीपर ध्यान लगाना। एक चित्तसे तालाश करना.

निन(ना)द, (पु०) नि+नद्+अप-घञ् वा। ध्वनि। शब्द। आवाज। रथका शब्द। गाडीकी आवाज.

निन्द्, आ० प० निन्दति। निन्दित। प्रसिद्ध निन्दा करना। उपालंभ लगाना। दोष निकलना.

निन्दक, (त्रि०) निंद्+घञ्+अक। निन्दा करनेवाला। दोषलगानेवाला.

निन्दा, (स्त्री०) निन्द+अ। अपवाद। गर्हा। कुत्सा। निन्दना। बदनामी। ऐब। दूषण। दोष.

निन्द्य, (त्रि०) निन्दितुं योग्यः निन्द्+यत्। निन्दाके लायक.

निन्दित, (त्रि०) निन्द्+क्त। निन्दा किया गया। दोषलगाया गया.

निपत्य, (स्त्री०) निपतति अत्र+आधारे क्यप्। युद्धभूमि। लढाईकी जगह.

निपात, (पु०) निकृष्टः पातः। अन्तिमपतन। आखिरी गिरना। मरना। व्याकरणमें "च" आदि "प्र" आदि.

निपान, (न०) नियतं पीयते अत्र। जहां नियमसे पीते हैं। खूएके पासका जलाशय (तालाव)। चुबचा। गौ चोनेका पात्र (बर्तन).

निपीडित, (त्रि०) नितरां पीडितः । नि+पीड+क्त । बहुतही पीडा पहुंचाया गया । कृतनिष्पीडन । निचोडा-गया.

निपुण, (त्रि०) नि+पुण्+कर्मणि क । प्रवीण । चतुर । काममें दक्ष (होशिआर).

निबन्ध, (पु०) नि+बन्ध्+घञ् । अमुक समयपर मैं देऊंगा इस प्रकार प्रतिज्ञा करना । शरा । ग्रन्थकी रचना । मूत्र रुकनेकी बीमारी (रोग) । बंधन । "निबध्नाति कोष्ठं+अच्" नीमका वृक्ष । (इसके सेवनसे कोठा=पेटका भाग रुकजाता है.)

निबन्धन, (न०) निबध्यते अनेन अत्र वा+ल्युट् । जिस्से वा जहां फस जाता है । हेतु (सबब) । बांधना । वीन बाजेका ऊपरला भाग (हिस्सा).

निभ, (पु०) निभाति । नि+भा+क । व्याज (बहाना) । "यदि पिछले पदमें रहे" सदृश । समान (त्रि०) जैसे "पितृनिभः" "मातृनिभः" इत्यादि अर्थात् उसके समान.

निभृत, (त्रि०) नि+भृ+क्त । घृत (घी) । विनीत । (सीखाहुआ) । निश्चल (न हिलनेहारा) । एकाग्र । गुप्त (चुपचाप) निर्जन (एकान्त) । अस्तके लिये उपस्थित हुआ । छिपनेपर आगया.

निमग्न, (त्रि०) नि+मस्ज्+क्त । डूबा हुआ.

निमज्जथु, (पु०) नि+मस्ज्+अथुच् । अवगाहन । दाखिल होना । स्नान करना । जल आदिमें प्रवेश करना । चुपचाप ठहरना.

निमज्जन, (न०) नि+मस्ज+ल्युट् । अवगाह । जल आ-दिमें प्रवेश करना । चुपचाप ठहरना । निश्चलस्थिति.

निमन्त्रण, (न०) नि+मन्त्र+ल्युट् । श्राद्ध आदिमें भोजनके लिये बुलाना । आह्वान । बुलाना.

निमस्ज्, तु० प० । मज्जति । ममज्ज । अमांक्षीत् । मग्न । डूबता.

निमान, (न०) निमीयते (क्रीयते) अनेन । मा+ल्युट् । जिस्से खरीदते हैं । मूल्य । मोल । कीमत.

निमि, (पु०) इक्ष्वाकुके वंशमें और चन्द्रमाके वंशमें एक राजा.

निमित्त, (न०) नि+मिद्+क्त् । कारण । हेतु । सबब । शरव्य (निशानह) चिह्न । निशान । भाविशुभाशुभको सूचना करनेहारा शकुन । उद्देश्य । मुद्दआ.

निमित्तकारण, (न०) कर्म० । न्यायमें कहागया समवायि और असमवायिसे भिन्न कारण जैसे घट आदिमें मट्टीआदि समवायि कारण और कपालोंका संयोग असमवायि कारण है, इन दोनोंसे भिन्न कुलाल (कुह्मार) आदि निमित्तका-रण है.

निमि(मे)ष, (पु०) निमेषति । नि+मिष्+क+अच् वा । एक समय । आंखके स्वाभाविक फुरकनेका काल (पलक) । "भावे अप्" आंखका मीटना.

निमीलन, (न०) नि+मील्+ल्युट् । मरना । सिकोडना । आंखका मीटना.

निम्न, (त्रि०) निकृष्टं मनति । म्ना+क । गभीर (गहरा) । नीचे । नीच.

निम्नगा, (स्त्री०) निम्नं गच्छति । गम्+ड । जो नीचे जाती है । हरएक नदी । दर्या । नीचे जानेवाला (त्रि०).

निम्नोन्नत, (त्रि०) निम्नं च तद् उन्नतं च । उन्नतानत । नीचे ऊपर । बंधुर.

निम्ब, (पु०) निम्बति स्वास्थ्यम् । निबि-सेचने+अच् । नीमका वृक्ष.

निम्लोचन, (न०) नि+म्लुच्+ल्युट् । अस्तप्राय । गरुब.

नियत, (त्रि०) नि+यम्+क्त । निश्चित (पक्का) । नित्य । आचारवाला । नियमवाला । जिसकी इन्द्रिय अपने वशमें है । नित्यका काम (न०).

नियति, (स्त्री०) नि+यम्+क्तिन् । नियम । भाग्य । कि-स्मत । "नियतिः केन बाध्यते" इति पुराणम् । पूर्वजन्मके भले बुरे काम और पुण्य.

नियन्तृ, (पु०) नियच्छति वाहान् । नि+यम्+तृच् । जो घोड़ों आदिको काबू कर्ता है । सारथि । गाडी चलानेवाला । प्रभु (मालिक) । सजा देनेवाला और पशुको चलानेहारा (त्रि०)

नियन्त्रित, (त्रि०) नितरां यन्त्रितः । नि+यन्त्र+क्त । अबाध । और प्रतिरुद्ध । रुकाहुआ । अच्छीतरह काबू कियागया.

नियम, (पु०) नि+यम्+घञ् । प्रतिज्ञा । निश्चय । मन्त्रण । रोक । इकरार । यकीन । अंगीकार । कबूल । एक प्र-कारका व्रत । मीमांसाकी एक विधि । शौच । सन्तोष । तपस्या । वेदका पढना । ईश्वरमें मन देना.

नियामक, (पु०) नि+यम्+ण्वुल् । कर्णधार । मल्लाह । हुक्म चलानेहारा । मालिक (त्रि०).

नियुत, (न०) दसलक्ष संख्या । दस लाख १००००००.

नियोग, (पु०) नि+युज्+भावे घञ् । अवधार (जताना) । निश्चय । आज्ञा (हुक्म) । निकृष्टप्रेरण (नौकरोंको काममें लगाना) "नियुज्यते अस्मिन्" काम.

नियोग्य, (त्रि०) नियोक्तुं अर्हति+ण्यत् । जो किसी काममें लगाता है । प्रभु । मालिक.

नियोजन, (न०) नि+युज्+ल्युट् । लगाना । हुक्म देना । मिलाना । कायम करना.

नियोज्य, (त्रि०) नियोक्तुं शक्यते+कर्मणि ण्यत् । जिसे काम दिया जासका है । प्रेष्य । भेजनेलायक । भृत्य । नौकर.

निर्, (अव्य०) नृ+क्विप् । निषेध । नहीं । निश्चय । (यकीन) निकलना । बाहिर.

निरग्नि, (पु०) नास्ति अग्निः अस्य । जिसकी आग नहीं । अग्निसे सिद्ध होनेलायक वैदिक कर्मसे शून्य ब्राह्मण आदि तीनों वर्ण.

निरङ्कुश, (त्रि०) निर्गतः अङ्कुशात् । जो अंकुश (रोकसे) निकलगया । बाधशून्य । जिसे रोक नहीं सक्ते.

निरञ्जन, (त्रि०) निर्गतं अञ्जनं यस्मात् । जिस्से मैल निकल गई । निर्मल (साफ) तमोगुणसे निकलगया वा तम जिस्से निकलगया । परब्रह्म । परमात्मा । "निरञ्जनः साम्यमुपैति दिव्यम्" इति श्रुतिः.

निरतिशय, (त्रि०) निर्गतः अतिशयः अस्मात् । अतिशयशून्य । परमोत्कृष्ट । सबसे बहुतही अच्छा.

निरत्यय, (त्रि०) निर्गतः अत्ययः अस्मात् । नाशसे रहित । न रुकनेहारा । अमायिक । जिसमें छल नहीं.

निरनुक्रोश, (पु०) निर्गतः अनुक्रोशः यस्मात् । ब० स० । निकल गई है दया जिस्से । निर्दय । बेरहम.

निरनुनासिक, (पु०) निर्गतः अनुनासिकः यस्मात् । जो वर्ण नासिका (नाक)से नहीं बोला जाता.

निरन्तर, (त्रि०) निर्गतं अन्तरात्, निर्गतं अन्तरं वा यस्मात् । बीच निकलगया । निबिड । संघना । निरवधि (असीम) । लगातार । वग़ैर फरकके.

निरन्वय, (त्रि०) नास्ति अन्वयः=वंशः यस्य । ब० स० । जिसका वंश नहीं । सन्तानरहित । असंबद्ध । वाक्यमें अन्वयके साथ संबंध न रखनेवाला.

निरपत्रप, (त्रि०) निर्गतः अपत्रपायाः । लज्जासे निकलाहुआ । बेशरम.

निरपराध, (त्रि०) नास्ति अपराधः यस्य । अपराधरहित । निर्दोष.

निरपाय, (त्रि०) निर्गतः अपायः दुःखं यस्य । दुःखरहित । अक्षय । अविनाशी.

निरपेक्ष, (त्रि०) निर्गता अपेक्षा यस्य । अपेक्षा (आवश्यकता । जरूरत) रहित । बेपर्वाह । स्वतन्त्र.

निरभिमान, (त्रि०) निर्गतः अभिमानो यस्मात् । ब० स० । निकल गया है अभिमान जिस्से.

निरर्गल, (त्रि०) निर्गतं अर्गलं यस्मात् । जिस्से होढा (रोक) निकल गई । न रुकनेहारा । अबाध । प्रतिबंधरहित.

निरर्थक, (त्रि०) निर्गतः अर्थः यस्मात्+कप् । जिस्से मतलब निकल गया । निष्प्रयोजन । बिना मतलब । जिसका कुछ अर्थ नहीं.

निरवग्रह, (त्रि०) निर्गतः अवग्रहात् । बेरोक । निष्प्रतिबंध । आजाद । वृष्टिप्रतिबंधाभाव । वारिशमें रोकका न होना.

निरवद्य, (त्रि०) निर्गतः अवद्यात् । निन्दासे निकला हुआ । दोषरहित । और उत्कृष्ट (अच्छा).

निरवयव, (पु०) निर्गतः अवयवात् । हिस्सेसें निकल गया । परमाणु (सबसे छोटा) । आकार (स्वरूप) शून्य आकाश आदि (त्रि०).

निरवशेष, (त्रि०) निर्गतः अवशेषः यस्मात् । जिस्से बाकी निकलगया । सर्वस्मिन् । सब । सारा.

निरवसित, (त्रि०) निर्+अव+सो+क्त । पात्रसे बाहिर कियागया । (जिसका खानेका पात्र-बर्तन संस्कार (साफ) करनेसेभी शुद्ध नहीं होता) । चाण्डाल आदि नीच वर्ण.

निरंश, (त्रि०) निर्गतः अंशः अस्य । जिसका हिस्सा नहीं रहा । अंशरहित । पतित (जो मतसे बिगडगया) नपुंसक आदि पुत्र । संक्रान्तिका दिन.

निरसन, (न०) निर्+अस्+ल्युट् । परित्याग । छोडना । तिरस्कार करना । मारना । निकलना.

निरस्त, (त्रि०) निर्+अस्+क्त । जल्दी बोला गया । (त्वरितोच्चारित) । थूका गया । चोट लगायागया । तिरस्कार कियागया.

निराकरण, (न०) निर्+आ+कृ+ल्युट् । निवारण (हटाना) । दूर करना । तिरस्कार करना.

निराकरिष्णु, (स्त्री०) निर्+आ+कृ+इष्णुच् । निराकरणशील । निकाल देनेवाला.

निराकृति, (स्त्री०) निर्+आ+कृ+क्तिन् । निवारण । हटाना.

निरामय, (त्रि०) निर्गतः आमयात् । रोगसे निकला । रोगरहित । वनका बकरा और सूअर (पु०).

निरुक्त, (न०) निश्चयेन उच्यते अत्र । निर्+वच्+क्त । प्रकृतिप्रत्यय आदि अवयवोंके अर्थको निचोड कर प्रतिपादन करनेहारा वेदका एक अंग । एक ग्रन्थ । पदोंको तोडनेहारा व्याकरण । कहाहुआ (त्रि०).

निरुक्ति, (स्त्री) निर्+वच्+क्तिन् । निर्वचन । किसी शब्दके विषयमें पूरा २ कहना । प्रकृति (धातु) प्रत्यय आदि अवयवोंके अर्थको कहकर मिलेहुए अर्थको बोधन करना । यास्कके भाष्यका नाम जो निघण्टुपर कियागया है.

निरुपाख्य, (त्रि०) निर्गता उपाख्या यस्मात् । जिस्से प्रसिद्धि निकल गई । असत्पदार्थ (न होनेहारा पदार्थ) बंध्या (बांझ स्त्री)का पुत्र आदि । मन वा वाणीसे जिसे प्रकाश नहिं कर सक्ते ऐसा परब्रह्म । अस्फुटस्वरूप.

निरूढ, (पु०) निर्+वह्+क्त । शक्तिके समान लक्षणसे अर्थको जतानेहारा शब्द । न विवाहा हुआ (त्रि०).

निरूढलक्षणा, (स्त्री०) निरूढा (शक्तितुल्या) लक्षणा । जो अर्थ व्याकरण वा कोशसे प्रसिद्ध है उसमें शक्तिके समान लक्षणरूप शब्दके अर्थको जतानेहारी शक्ति.

निरूढि, (स्त्री०) निर्+वह्+क्तिन् । प्रसिद्धि । मशहूरी.

निरूपण, (न०) नि+रूप्+ल्युट् । तत्त्वज्ञानके अनुकूल शब्दका प्रयोग करनेहारा विचार । निदर्शन । दृष्टान्त । अच्छीतरह एक बातको सोचना । अलोक । प्रकाश नियोग (मुकररकरना).

निरूपित, (त्रि०) नि+रूप्+क्त । नियुक्त । किसी काममें लगाया । कृतनिरूपण । बयान कियागया । रचागया.

निरोध, (पु०) नि+रुध्+घञ् । नाश । तबाही । "न निरोधो न चोत्पत्तिः" इति पुराणम् । प्रलय । प्रतिरोध । प्रतिबंध । रोक.

निरोधन, (न०) नि+रुध्+ल्युट् । कारागार (जेलखाना) आदिमें डालकर गतिको रोकना । बंद करना.

निर्ऋति, (पु०) नियता ऋतिः (घृणा) यत्र । जहां जरूर घिन आती है । दक्षिण और पश्चिम दिशाका पति । अलक्ष्मी (मुसीबत) (स्त्री०) । निरुपद्रव=उपसर्गरहित । (बेखटके) (त्रि०).

निर्गुण, (पु०) निर्गतः गुणेभ्यः । सत्व, रज, तम, रूप गुणसे रहित । सम्पूर्ण धर्मोंसे शून्य परमात्मा । "जिस्से शौर्य (बहादुरी) आदि वा रूप आदि गुण निकल गये" गुणहीन (मूर्ख) (त्रि०).

निर्गुण्डी, (स्त्री०) निर्गता गुणात् (वेष्टनात्) । नीरस । खुश्क । कमलकी जड । सिन्धुवारका वृक्ष । कलिका.

निर्ग्रन्थ, (पु०) निर्गतः ग्रन्थेभ्यः । जो ग्रंथोंसे निकलगया । क्षपणक दिगम्बर । बौद्धका भेद । जुआरिया । और एक मुनि । निर्धन मूर्ख । निःसहाय । वीतराग । वैरागी (त्रि०).

निर्ग्रन्थिक, (पु०) निर्गतः ग्रन्थिः यस्य । जो कौपीनसी नहीं पहिनता । क्षपणक । निर्गुण । ग्रन्थिहीन (त्रि०).

निर्घात, (पु०) निर्+हन्+घञ् । पवनाहत । पवनजन्यशब्द । दोनों वायुओंके टकरानेका शब्द । नाश । तुफान । भूचाल.

निर्घृण, (त्रि०) निर्गता घृणा (दया) यस्मात् । जिस्से दया निकल गई । बेरहम । निर्दय.

निर्घोष, (पु०) निर्+घुष्+घञ् । शब्दमात्र । हरएक प्रकारकी आवाज.

निर्जन, (त्रि०) निर्गतः जनः यस्मात् । जहां कोई जन नहीं । विजन । एकान्त । अकेले । तनहाई.

निर्जर, (पु०) निर्गता जरा यस्मात् । जिस्से बुढापा निकल गया । देवता । बुढापेसे रहित (त्रि०) । ५ व० । अमृत.

निर्जरा, (स्त्री०) निर्गता जरा यस्याः । ५ व० । गुडूची । तालपर्णी । गिलोय.

निर्झर, (पु०) निर्+झॄ+अप् । पर्वतसे निकला जलका प्रवाह । झरणा.

निर्झरिणी, (स्त्री०) निर्झरः अस्ति (कारणत्वेन) अस्याः+इनि । झरनेसे निकली । नदी । दर्या.

निर्णय, (पु०) निर्+नी+अच् । निश्चय । यकीन । ज्ञान । इलम । सन्देह (शक) । विरोधको मिटाना । मीमांसाके पांच अवयवोंमें सबसे पिछला । अर्थका निश्चय । फैसला.

निर्णिक्त, (त्रि०) निर्+निज्+क्त । शोधित । साफ कियागया । अपगतमल (जिसकी मैल दूर की गई).

निर्णेजक, (पु०) निर्+णिज्+ण्वुल् । साफ करनेहारा । रजक । धोबी.

निर्दहन, (पु०) निःशेषेण दहति । ल्यु । पूरा २ जलादेता है । भल्लातक । मूर्वालता (स्त्री०) । "जिस्से आग निकल गई" आगके बिना (श्रौत आदि वह्निसे शून्य) निरग्नि (त्रि०).

निर्दिष्ट, (त्रि०) निर्+दिश्+क्त । उपदिष्ट । बतलाया हुआ । दिखलाया हुआ । और कहाहुआ.

निर्देश, (पु०) निर्+दिश्+भावे घञ् । शासन । सिखाना । आज्ञा । हुकम । और उपदेश । "जिस्से कहा जाय"+घञ् । जतलानेहारा शब्दरूप नाम । वेतन । तनखाह "कालमेव प्रतीक्षेत निर्देशं भृतको यथा" इति पुराणम् । कहना । देशसे निकल गया (त्रि०).

निर्द्वन्द्व, (त्रि०) निर्गतः द्वन्द्वेभ्यः । (शीत, उष्ण, आदि विरुद्ध धर्मोंके) जोडोंसे निकलाहुआ । राग द्वेष, शीत उष्ण, लाभ अलाभ, आदि जोडोंसे रहित.

निर्धन, (पु०) निकृष्टं धनं अस्मात् । जरद्गव । धनसे हीन (त्रि०) गरीब.

निर्धारण, (न०) निर्+धृ+णिच्+ल्युट् । जाति, गुण, क्रिया और नामरूप समुदायसे एक देशको पृथक् करना । "जैसे मनुष्योंमें क्षत्रिय शूर है" यहां क्षत्रियको जुदा किया है.

निर्धारित, (त्रि०) निर्+धृ+णिच्+क्त । कृतनिश्चय । फैसला किया गया । और निर्धारणका विषय । मालूम किया हुआ.

निर्बन्ध, (पु०) निर्+बन्ध्+घञ् । आग्रह । अभिनिवेश । हठ । प्रार्थना । अर्ज.

निर्बाध, (त्रि०) निर्गता बाधा यस्मात् । जिस्से पीडा निकल गई । निरुपद्रव । बाधाशून्य । विनरोक । तकलीफके विना.

निर्भय, (पु०) निर्+भी+अच् । हयश्रेष्ठ । अच्छा घोडा । भयरहित (त्रि०) बेखौफ.

निर्भर, (न०) निःशेषेण भरः (भारः) अत्र । जहां साराही भार हो । अतिमात्र । निहायत । उद्गाढ । जो वहुतही हो (त्रि०).

निर्मक्षिक, (अव्य०) मक्षिकाया अभावः । जहां मक्खीका भी न होना । एकान्त.

निर्मम, (त्रि०) निर्गतः ममकारः यस्मात् । जिस्से मे-रापन जाता रहा) पुत्रके शरीर आदिमें ममतासे रहित एक योगी.

निर्मल, (त्रि०) निर्गतः मलात् । मलसे निकल गया । रजः, तमः आदि मलसे रहित । राग आदि मलरहित अ-शुद्धीसे रहित । शुद्ध (साफ) । "जिस्से मल दूर हो जाता है" कतक (निर्मली) इसका फल पानीमें मिलानेसे पानी-की सारी मैल दूर हो जाती है (यह बात प्रसिद्ध है).

निर्माल्य, (न०) देवताका विसर्जन करनेके अनन्तर देव-ताको दियागया द्रव्य । देवोच्छिष्ट (देवताका जूठा) देव-ताके ऊपर चढाये हुए द्रव्यका वाकी.

निर्मुक्त, (पु०) निर्+मुच्+क्त । केंचुली (कुंज) उतार चुका साँप । पूरा छोड दिया । निष्परिग्रह (जो अपने पास कुछभी नहिं रखता । संघरहित । बन्धशून्य (त्रि०).

निर्मोक, (पु०) निर्+मुच्+घञ् । सर्पकञ्चुक । साँपकी केंचुली मोचन (छोडना) । सन्नाह (संजोह वा जिरह) और आकाश (आस्मान).

निर्याण, (न०) निर्+या+ल्युट् । गजापाङ्गदेश । हाथीकी आँखका कोना । पशुओंके पाँवको बांधनेकी रस्सी । "जंजीर" रास्ते आदिसे निकलना (सफर) । और मोक्ष.

निर्यातन, (न०) निर्+यत्+णिच्+ल्युट् । वैरशुद्धि । वैर निकालना । प्रतिदान । लौटकर देना । देना । न्यास । समर्पण । अमानत देना.

निर्यास, (पु०) निर्+यस्+घञ् । वृक्षके फूलनेसे निक-लता और समय पाकर कठिन हो जाता है । रस । गोंद । वृक्षका रस । काढा (क्वाथ).

निर्यूह, (पु०) निर्+ऊह+क । पु० । नागदन्तक (किल्ली) । द्वार (दर्वाजा) । गोंद । मुकुट । शेखर । चोटी.

निर्वचन, (न०) निर्+वच्+ल्युट् । धातु और प्रत्ययके विभा-गसे अर्थको कहनेहारी निरुक्ति । अर्थका निचोडना । पूरा २ कहना.

निर्वपण, (न०) निर्+वप्+ल्युट् । अन्न आदिका विभाग करना । दान । देना । पितरोंके लिये श्राद्ध करना । पृथि-वीमें बीज बोना.

निर्वर्तित, (त्रि०) निर्+वृत्+णिच्+क्त । निष्पादित । अन्ततक पहुंचायाहुआ.

निर्वहण, (न०) निर्+वह्+ल्युट् । नाट्योक्तिमें प्रस्तुत (शुरु कीगई) कथाकी समाप्ति । आखिर (अन्त) । नाश । नाटककी एक संधि.

निर्वाण, (न०) निर्+वा-भावे क्त । मोक्ष । छुटकारा । आत्यन्तिक मोक्ष (ऐसा छूटना कि फिर कभी नहिं फसे) निवृत्ति (हटना) । विनाश । हाथीका नहाना । और कीचड । "कर्तामें क्त" निर्वृत्त (वहुत खुश) शान्त । मुक्त । निश्चल । शून्य । और विश्रान्त (थका हुआ)= श्रमित । (त्रि०).

निर्वाद, (पु०) निर्+वद्+घञ् । लोकापवाद । वदनामी । लोकनिन्दा । शोरत.

निर्वापण, (न०) निर्+वप्, वा णिच्+ल्युट् । मारना । मार डालना । देना.

निर्वासन, (न०) निर्+वस्+णिच्+ल्युट् । नगरसे बाहिर करना । निकालना । देससे निकाल देना । मारना । कतल करना । विसर्जन । छोडना.

निर्वाह, (पु०) निर्+वह+घञ् । कार्यसम्पादन । कामका वंदोवस्त । निष्पत्ति । पूरा २ करना और समाप्ति । अन्त । खतम । जीविका । गुजारा.

निर्विकल्प, (त्रि०) निर्गतः विकल्पः (ज्ञातृज्ञेयादिविभागः, विशेष्यविशेषणतासम्बन्धो वा) यस्मात् । जिस्से जाननेहारा, जाननेलायक, आदि विभाग अथवा नाम और गुणपनेका सम्बंध निकल गया । वेदान्तमें कहाहुआ ज्ञातृज्ञेयादि विभागशून्य और विशेष्यविशेषणतासम्बन्धरहित । जीव और ब्रह्मकी एकता जतानेहारा अखण्डाकारवाला एकही विषयका ज्ञान । वा कप् । न्यायशास्त्रमें (प्रकारतादिशून्य-सम्बन्धानवगाहिज्ञान) अलौलिक आलोचन (अनुभव) खरूपज्ञान.

निर्विकार, (पु०) प्रकृतेः अन्यथा भावः (विकारः) स निर्गतः यस्मात् । जिसका स्वभाव नहिं बदलता । जन्म, मरण आदि छ विकारोंसे हीन । परमात्मा । विका-रशून्य (त्रि०).

निर्बीजा, (स्त्री०) निर्गतं बीजं यस्याः । जिस्से बीज निकल गया । एक प्रकारकी दाख (द्राक्षा) । थोडे बीजवाला और बीज (बी) से शून्य (त्रि०) सांख्यमें एक प्रकारकी समाधि.

निर्वृति, (स्त्री०) निर्+वृ+क्तिन् । सुख । सुस्थिति । आरामसे रहना । अस्त हो जाना । मोक्ष (छुटकारा) । और मौत.

निर्वृत्त, (त्रि०) निर्+वृत्+क्त । निष्पन्न । पूरा कियाहुआ "निर्गता वृत्तिः यस्य" वृत्तिरहित । जिसकी कोई जीविका नहीं (त्रि०).

निर्वेद, (पु०) निर्+विद्+घञ् । अपना अवमान । खाकसारी । अनुताप । "इतना यत्न करनेपरभी काम न बना" इस तरह पछताना । उदासीनता । उदासी । वैराग्य । संसारके पदार्थोंसे मुं मोडना.

निर्वेश, (पु०) निर्+विश्+घञ् । भोग । वेतन (मजदूरी) । मूर्च्छन (बेहोशी) । विवाह (शादी) । प्राप्ति (हासिल).

निर्व्यूढ, (त्रि०) निर्+वि+वह्+क्त । त्यक्त (छोडाहुआ) । असमाप्त (जो खतम नहीं हुआ) । पूरा हुआ । समाप्तहुआ । ढवडा । "उपचित" "जो काम सचाईसे पूरा कियागया हो" । पूरा दिखलाया गया.

निर्हरण, (न०) निःशेषेण हरणम् । पूरा २ ले जाना । दाह (जलाना) के लिये शव (मूर्दा) आदिका लेजाना और निकालना.

निर्हार, (पु०) निर्+हृ+घञ् । निखात (फंसेहुए) शल्य (तीर) आदिका उद्धरण (निकालना) । मल, मूत्र आदिका त्याग । "आहारनिर्हारविहारयोगाः" इति स्मृतिः । प्रेत (मराहुआ) के शरीरको जलानेके लिये बाहिर लेजाना । जडसे उखाडना । छोडना । अपनी इच्छासे विनियोग (लगाव) करना.

निर्हारिन्, (पु०) निर्हरति (दूरं गच्छति) निर्+हृ+णिनि । दूर जानेहारा गन्ध । जलानेके लिये लाशको बाहिर लेजानेहारा (त्रि०).

निर्ह्राद, (पु०) निश्चयेन ह्रादः । ह्रद्+घञ् । शब्द । आवाज.

निलय, (पु०) निलीयते अत्र । ली+अच् । जहां छिपरहते हैं । गृह । घर । आवासस्थान । रहनेकी जगह.

निलयनम्, (न०) नि+ली+अन । छिपना । आश्रयस्थान । निवास । बाहिर जाना.

निलीन, (त्रि०) नि+ली+क्त । विघलगया । बंद किया गया । किसीमें छिपगया । गिराहुआ । नाश किया गया । वदलगया.

निवचन, (अव्य०) वचननियम । वाणी रोक कर । कलाम रोककर.

निवप्, भ्वा० प० । खिलारना । वोना । बीजारोपण करना । देना (जैसा चरु) विशेषतः पितरोंको.

निवपन, (न०) नियतं वपनम् । पिता आदिके नामपर देना । पितरोंके लिये दान.

निवर्तन, (न०) दोनों ओरसे वीस वांसके मापका खेत आदि । सौ वर्ग गज पृथिवी । नि+वृत्+ल्युट् । हटाना.

निवर्हण, (न०) नितरां वर्हणं । वर्ह-हिंसायां-मारना+ल्युट् । मारना.

निवसति, (स्त्री०) नि+वस्+आधारे अतिच् । गृह । निवासस्थान । घर.

निवसथ, (पु०) न्युष्यते अत्र । नि+वस्+अथच् । बसाहती ग्राम गांव.

निवसन, (न०) न्युष्यते अत्र । गृह (जहां रहतेहैं) । नि+वस्-आच्छादन-ढांकना+ल्युट् । वस्त्र । कपडा.

निवह, (पु०) नितरां उह्यते । वह+घ । समूह । झुण्ड नि+वह्+अच् । सात हवाओंमेंसे एक.

निवात, (पु०) निवृत्तः निरुद्धः वा वातः अस्मात् । जिस्से वायु हटजाता वा रुकजाता है । दृढकवच । पक्का संजोह । वह जिरह जिस्से शस्त्र (औजार) आदि फाडा नहीं जा सक्ता । और आश्रय (आसरा) । वातशून्य देश । (बेहवा जगह) (त्रि०).

निवातकवच, (पु०) हिरण्यकशिपुके पुत्र प्रह्लाद दैत्यका बेटा । एकदेव.

निवाप, (पु०) न्युप्यते । नि+वप्+घञ् । पितरोंके लिये दान देना.

निवापक, (पु०) नि+वप्+ण्वुल् । वोनेवाला । खिलारनेवाला.

निवास, (पु०) नि+वस्+आधारे घञ् । गृह (घर) । और आसरा । "जगन्निवासो वसुदेवसद्मनि" इति माघः.

निवासिन्, (त्रि०) नि+वस्+णिनि । रहनेवाला । निवास करनेवाला । कपडे पहिरे हुए.

निविड, (त्रि०) नितरां विडति (संहन्यते) । नि+विड्+क । सान्द्र । घन । नीरन्ध्र । मोटा । संघना । छेकरहित.

निविद्, अदा० प० । प्रायः प्रेरणार्थक णिजन्तमें होता है । कहना । खबरदेना । इत्तिला देना । चतुर्थीके साथ प्रयोग किया जाता है.

निवीत, (न०) नि+अज्+क्त । गले लटकाहुआ जनेऊ । कण्ठलम्बित यज्ञसूत्र । पौशाक पहिनेहुए.

निवृत्त, (न०) नि+वृत्+भावे क्त । निषेध । "कर्तरि क्त" निरत (हटाहुआ) । हटगया । लौटगया । चुपचाप होगया (त्रि०).

निवृत्ति, (स्त्री०) नि+वृत्+क्तिन् । उपरम । हटना । विरति । "निवृत्तिस्तु महाफला" इति मनुः.

निवेदन, (न०) नि+विद्+णिच्+ल्युट् । सम्मानपूर्वक ज्ञापन । आदरसे जतलाना (दरखास्त) और समर्पण (सौपना).

निवेदित, (त्रि०) नि+विद्+णिच्+क्त। जतलाया गया। प्रगट किया गया। कहा गया। दिया गया.

निवेश, (पु०) नि+विश्+घञ्। विन्यास। धरना। शिबिर (छावनी)। विवाह (उद्वाह-शादी)। और स्थान (जगह).

निवेशन, (न०) नि+विश्+आधारे ल्युट्। गेह (घर)। "भावे ल्युट्।" प्रवेश (दाखिल होना)। और रहना.

निशा, (स्त्री०) नितरां श्यति (तनूकरोति व्यापारान्)। जो कामोंको बिल्कुल बंदकर देतीहै। शो+क-पृ०। (रात्रि) हरिद्रा। हल्दी.

निश(शा)मन, (न०) नि+शम्+णिच्+ल्युट्। वा ह्रस्वः। श्रवण (सुना) और देखना.

निःशलाक, (त्रि०) निर्गतः शलाकायाः। निर्गता शलाका यस्मात् वा। जो सलाईसे निकलगया, अथवा जिस्से सलाई निकल गई। निर्जन। रहस्। एकान्त। अकेले.

निशा, (स्त्री०) नितरां श्यति व्यापारान्। शो+क। रात। और हल्दी। मेष आदि राशियें.

निशाकर, (पु०) निशां करोति। कृ+ट। जो रातको बनाता है। चंद्र। चांद और कुक्कुड.

निशाचर, (पु०) निशायां चरति चर्+ट। राक्षस। (जो रातको विचरता है) गीदड। उल्लू। सांप। पिशाच। चकवा। और चोर। रातको विचरनेहारा। (त्रि०).

निशा (शि) त, (त्रि०) नि+शो+क्त वा इत्वम्। तेजित। तीक्ष्णीकृत। तेज कियागया.

निशाट, (पु०) निशायां अटति। रात्रिको घूमता है। उल्लू। दैत्य.

निशादर्शिन्, (पु०) निशायां पश्यति+दृश्। णिनि। रातको देखता है। उल्लु.

निशान, (न०) नि+शो+ल्युट्। तीक्ष्णीकरण। तेज करना.

निशान्त, (न०) निशायां अम्यतेस्म। अम्। जाना+कर्मणि क्त। जहां रातको जाते हैं। गृह। घर। "बहुत शान्त" (त्रि०).

निशापति, (पु०) ६ त०। रातका मालिक। चन्द्रमा। और कपूर.

निशावसान, (न०) निशायाः अवसानम्। रात्रिका अन्त। रातका बीतजाना.

निशावेदिन्, (पु०) निशां वेदयति+विद्+णिनि। रातको जानता है। मुर्गा। कुक्कुट। कुक्कुड.

निशीथ, (पु०) निशेरते अत्र। नि+शी+थक्। जिसमें सो जाते हैं। अर्धरात्र (आधीरात)। और रात.

निशीथिनी, (स्त्री०) निशीथः अस्ति अस्याः+इनि। जिसकी आधी रात हो। रात्रि। रात.

निशुम्भ, (पु०) नि+शुम्भ्+अच्+घञ् वा। शुम्भ दैत्यका भाई। एक। दैत्य। और मर्दन (मलना).

निःशेष, (त्रि०) निर्गतः शेषात्। प्रा० स०। जो बाकीसे निकलगया। निखिल। सकल। सब। सारा। तमाम.

निश्चय, (पु०) निर्+चि+अच्। संशयसे भिन्न ज्ञान। निर्णय (फ़ैसला-यकीन)। सिद्धान्त। पक्का.

निश्चल, (त्रि०) निर्+चल्+अच्। स्थिर (पक्का)। अचल (न हिलनेहारा) असम्भावना और विपरीतभावनासे रहित। भूमि (जमीन) और शालपर्णी (स्त्री०).

निश्चेतन, (त्रि०) नास्ति चेतनं यस्मिन्। व० स०। जिसमें चेतनता (होश) नहीं। बेहोश। बेसुध.

निश्चेष्ट, (त्रि०) नास्ति चेष्टा यस्य। जिसकी चेष्टा (हर्कत) नहीं। निर्व्यापार। हिलनेके विना। शक्तिरहित.

निःश्रयणी, (स्त्री०) निःशेषेण श्रयति अनया। श्रि+ल्युट्+ङीप्। जिससे पूरा आसरा लेता है। अधिरोहिणी। पौडी। सीढी.

निःश्रेणि–णी, (स्त्री०) निर्गता श्रेणिः अत्र। जहां कतार निकली हो। वंशनिर्मित सोपान। बांसकी बनीहुई सीढी। लकडीकी पौडी.

निःश्रेयस, (न०) नितरां श्रेयः। निः+अच्-समा०। निश्चयकल्याण। मोक्ष। छुटकारा। मुक्ति। मंगल। विज्ञान। भक्ति। शिव.

निःश्वास, (पु०) निर्+श्वस्+घञ् (अ)। मुख और नासासे निकलीहुई। वायु (हवा) सांस.

निश्वास, (पु०) नि+श्वस्+घञ्। मुख और नासिकासे प्राणवायुका बाहिर निकलना। सांस.

निषङ्ग, (पु०) नितरां सजन्ति शरा यत्र। सञ्ज्+घञ्। जहां पूरे २ तीर साथ लग जाते हैं। तूणीर (तर्कश).

निषङ्गिन्, (त्रि०) निषङ्ग+अस्ति अर्थे इनि। धनुर्धर। धनुष् पकडनेहारा.

निषद्, भ्वा० प०। निषीदति। बैठजाना। दुःख सहारना.

निषद्या, (स्त्री०) निषीदन्ति अस्यां जनाः। सद्+क्यप्। पण्य। विक्रयशाला। सौदा वेचनेका स्थान। बाजार। दुकान। हट्ट। क्षुद्रखट्वा। छोटा खटोला। छोटा मंजा। मंडी। मार्कट.

निषद्वर, (पु०) नि+सद्+क्विप्। निषद् तां वृणाति। वृ+अच्। जम्बाल। कर्दम (कीचड) कामदेव.

निषध, (पु०) नि+सद्+अच्। पृ०। कठिन (सख्त)। एक देश। उस देशके वासी। ब० व०। उस देशका राजा। निषाद स्वर.

निषत्त, (त्रि०) नि+सद्+क्त। बैठगया (ऊपर वा बीचमें) आराम किया हुआ.

निषाद, (पु०) निषीदति मनः पापं वा यस्मिन् । षद्+घञ् । "निषादं रौति कुञ्जरः" वीणा वा गलेसे निकलीहुई आवाज । चाण्डाल । ब्राह्मणसे शूद्रामें उपजा पारशव नाम वर्णसंकर । दोगला.

निषादित, (त्रि०) नि+सद्+णिच्+क्त । बैठाया गया । दुःखी किया गया.

निषादिन्, (पु०) निषादयति हस्तिनम् । नि+सद्+णिच्+णिनि । जो हाथीको बैठाताहै । हस्तिपाल । हस्तिपक । हाथी चलानेवाला.

निषिक्त, (त्रि०) नि+सिच्+क्त । सींचा गया । छिनका गया.

निषिद्ध, (त्रि०) नि+सिधू+क्त । निषेधका विषय । हटायाहुआ । रोका गया.

निषेक, (पु०) नि+सिच्+घञ् । गर्भाधान । हमल ठहरना । सींचना "निषेकादि श्मशानान्तम्" इति मनुः.

निषेचनम्, (न०) नि+सिच्+अन । सींचना । छिडकाव करना.

निष्क्, मान । मापना । चुरा० आत्म० सक० सेट् । निष्कयति । अनिनिष्कत । प्रादिसे णत्व नहीं होता.

निष्क, (पु० न०) निश्चयेन कायति । कै+क । सोलह मास्सेका परिमाण । १०८ एकसौ आठ रतिभर सोना । वक्षोभूषण । छातीका जेवर (हार) सोना । एक तरहका सोनेका वर्तन.

निष्कण्टक, (त्रि०) निर्गताः कण्टकाः यस्मात् । ब० स० । जिसमेंसे कांटे निकल गये हों । शत्रुरहित । भयरहित.

निष्कपट, (त्रि०) निर्गतं कपटं यस्मात् । छलरहित । निरपराध । सरलहृदय । साफ दिलवाला.

निष्कम्प, (त्रि०) निर्गतः कम्पः यस्य । न कांपनेवाला । स्थिर । निश्चल.

निष्करुण, (त्रि०) निर्गता करुणा यस्मात् । ब० स० । निर्दय । बेरहम.

निष्कर्ष, निर्+कृष्+घञ् । इयत्तापरिच्छेद । बडी बातका सार (निचोड) । निश्चय । यकीन.

निष्कल, (त्रि०) निर्गता कला यस्मात् । कलाशून्य । बेहुनर । और नष्टवीर्य (जिसका वीर्य नाशहोचुका) आसरा (पु०) । "कला" (अवयवः) तच्छून्यः । निरवयव ब्रह्म.

निष्कलङ्क, (त्रि०) निर्गतः कलङ्कः यस्य । कलंक (दोष)-रहित । बेदाग.

निष्काम, (त्रि०) निर्गतः कामः यस्य । इच्छारहित । बेखाहश.

निष्कारण, (त्रि०) नास्ति कारणं यस्य । कारणरहित । विना किसी प्रयोजनवाला.

निष्कासित, (त्रि०) निस्+कस् गति+णिच्+क्त । निःसारितं (निकाला गया) (न०).

निष्किंचन, (त्रि०) नास्ति किंचन यस्य । जिसके पास कुछ नहीं । निर्धन.

निष्कुट, निस्+कुट्+क । घरके पासका उपवन । बाग । बगीचा । खेल । अन्तःपुर । रनवास । निष्कुटिः (टी) (स्त्री०) इलाइची.

निष्कुल, (त्रि०) नास्ति कुलं यस्य । निर्वंश । संसारमें अकेल रह गया.

निष्कुषित, (त्रि०) निर्+कुष्+क्त । खण्डित । तोडागया । निस्त्वचीकृत । खाल उतारा गया.

निष्कृति, (स्त्री०) निर्+कृ+क्तिन् । निस्तार । निर्मुक्ति । छुटकारा, । पाप आदिसे निकलना । "कृतघ्ने नास्ति निष्कृतिः" इति स्मृतिः.

निष्कृष्ट, (त्रि०) निर्+कृष्+क्त । सारांश । सार । निकाला हुआ.

निष्कोषण, (न०) निर्+कुष्+ल्युट् । भीतरके अवयवों-(हिस्सों)को बाहिर निकालना.

निष्क्रमण, (न०) निर्+क्रम्+ल्युट् । बहिर्गमन । बाहिर जाना । चौथे महीनेमें करनेलायक एक संस्कार.

निष्ठा, (स्त्री०) नि+स्था+अङ् । नाट्यमें प्रस्तुत कथाकी समाप्ति । निष्पत्ति नाश । अन्त । मांगना । बडाई । दुःख । व्रत । गुरुकी सेवा । धर्म आदिका विश्वास । पक्का रहना । व्याकरणमें "क्त" "क्तवतु" दो प्रत्यय.

निष्ठी(ष्ठि)व, (पु०) नि+ष्ठिव्-घञ् वा दीर्घः । मुखसे श्लेष्म निकालना । थूक । खखार निकालना । "निष्ठी-(ष्ठे) वन".

निष्ठुर, (न०) नि+स्था+उरच् । परुषवाक्य । सख्त वचन । कठोर (सख्त) (त्रि०) । अश्लील वाक्य । गाली निकालना वा वचन बोलना (न०) । उस स्वभाववाला (त्रि०).

निष्ठ्यूत, (त्रि०) नि+ष्ठिव्+क्त । क्षिप्त । फेंकागया । थूकाहुआ.

निष्णात, (त्रि०) नितरां स्नातः (पारंगतः) शुद्धो वा । नि+स्ना+क्त षत्वम् । अच्छीतरह नहायाहुआ (पारहुआ) वा साफहुआ । निपुण (चतुर) पारङ्गत-पार पहुंचगया.

निष्पत्ति, (स्त्री०) निर्+पद्+क्तिन् । समाप्ति । पूरापन । सिद्धि । फल । नतीजह.

निष्पत्राकृति, (स्त्री०) पत्रं (पुङ्खं) अस्य अस्ति+अच् । पत्रः (शरः) तस्य अपरपार्श्वे निष्कासनं निष्पत्रं ततः कृञि "सपत्रनिष्पत्रादतिव्यथने" डाच्+क्तिन् । तीरका दूसरी ओरसे निकालना । अतिव्यथा । बहुत पीडा (दरद).

निष्पन्न, (त्रि०) निर्+पद्+क्त । सिद्ध । समाप्त । पूराहुआ.

निष्परिग्रह, (त्रि०) निर्गतः परिग्रहः अस्मात् । कन्था (गोदड़ी) कौपीन (लंगोटी) और पुस्तक आदिके विना जिसके पास कुछ नहिं । परमंहस संन्यासी । जिसने सबका संग छोडदिया । त्यक्तसंग (त्रि०).

निष्फल, (त्रि०) निर्गतं फलं यस्मात् । जिस्से फल निकलगया । फलसे रहित । वेफायदह । पलाल (पु०).

निस्, (अव्य०) निषेध । निश्चय । साकल्य । पूरा २ । गुदरगया.

निस्पृह, (त्रि०) निवृत्ता स्पृहा यस्य । जिसकी इच्छा जाती रही । विषयोंके सुखकी इच्छासे रहित.

निसर्ग, (पु०) नि+सृज्+घञ् । स्वभाव । स्वरूप और सृष्टि.

निःसत्व, (त्रि०) निर्गतं सत्वं यत्र । जहां हौंसला न रहा । धैर्यशून्य । जिसमें वीर्य नहिं । कमजोर । जीवरहित.

निःसम्पात, (पु०) निर्गतः सम्पातः (गतागतं) यत्र । जिसमें आना जाना नहिं रहा । अर्धरात्र । निशीथ । आधी रात.

निःसरण, (न०) निःसरति अस्मात् । निर्+सृ-अपादाने ल्युट् । जिस्से निकलता है । गेहादिद्वार । घर आदिका दर्वाजा "भावे ल्युट्" निकलना । मरना । और निर्वाण । बुझना.

निःसार, (पु०) निर्गतः सारात् । सारसे निकलगया । शाखोडका वृक्ष । साररहित (त्रि०) । केलेका वृक्ष । कदली (स्त्री०).

निःसारण, (न०) निःसार्यते अनेन । निर्+सृ+णिच्+ल्युट् । घर आदिसे निकलनेका पंथ (रास्ता).

निसूदन, (न०) नि+सूद्+ल्युट् । मारण । मारना । वध । उच्छेद । नाश.

निसृता, (स्त्री०) नितरां सृता । सृ+क्त । बहुत फैलगई तिओडी । त्यूडी.

निसृष्ट, (त्रि०) नि+सृज्+क्त । न्यस्त । छोडाहुआ । रक्खाहुआ । मध्यस्थ । बीचमें.

निसृष्टार्थ, (पु०) "दोनोंके भावको समझकर जो आप उत्तर दे और कहेहुए कामको करे" एक प्रकारका दास.

निस्तरण, (न०) नि+तॄ-करणे+ल्युट् । "भावे ल्युट्" निस्तार । पार जाना । तरना । और निकलना.

निस्तल, (त्रि०) निरस्तं तलं (प्रतिष्ठा) यस्य । वर्तुल (गोल) । जिसका तला (नीचेका भाग) न हो । हिलनेहारा.

निस्तार, (पु०) निःशेषेण तारः । पूरातरना (पारजाना) उद्धार । छुटकारा । पार पहुंचना । अपनी इच्छाको पाना.

निस्तुषक्षीर, (पु०) निस्तुषं अन्तः शस्यं क्षीरं इव शुभ्रं यस्य । तोहसे रहित-जो भीतरसे दूधकी नाईं श्वेत हो । गोधूम (कनक) । इसका आटा दूधकी नाईं चिट्टा होताहै.

निस्तेजस्, (त्रि०) निर्गतं तेजः यस्मात् । जिसमेंसे तेज (गया) निकल गया हो । शक्तिरहित । अग्निरहित । नपुंसक । आलसी.

निस्राव-निस्रव, (पु०) नि+स्रु+अप् । "घञ् वा" नदी । प्रवाह । उबलेहुए चावलोंकी पीछ (मांड) । अपक्षरण-वहना.

निस्त्रप, (त्रि०) निर्गता त्रपा यस्य । जिसकी लज्जा (शर्म) जाती रही । बेशरम । निर्लज्ज.

निस्त्रिंश, (पु०) निर्गतः त्रिंशद्भ्यः अङ्गुलिभ्यः+डच् । समा० । जो तीस अंगुलिओंसे निकलगया । खड्ग (तलवार) तीस अंगुलसे अधिकहीको कहते हैं, उस्से छोटी छुरी होता है । उसके समान मारनेवाला होनेसे निर्दय । बेरहम (त्रि०).

निस्त्रैगुण्य, (त्रि०) निष्कान्तः त्रैगुण्यात् । तीन गुणोंके कार्यसे, संसारसे वा कामादिसे निकलाहुआ । कामना (इच्छा-चाह) आदिसे रहित । संसारसे पारहुआ.

निःस्नेहा, (स्त्री०) निर्गच्छति स्नेहः यस्मात् । जिस्से स्नेह निकलगया । अतसीका वृक्ष । प्रेमसे रहित (त्रि०).

निस्य(ष्य)न्द, (पु०) नि+स्यन्द वा ष्यन्द+घञ् वाषत्वम् । स्यन्दन । "ईषत् क्षरण"-थोडासा वहना । सिमाना । "निष्कान्तं स्यन्दनं यस्मात्" । जिसके पास रथ नहिं (त्रि०).

निःस्व, (पु०) नास्ति स्वं अस्य । जिसके पास धन नहिं । दरिद्र । निर्धन । गरीब.

निस्वा--स्व, नि+स्वन्+अप् वा । शब्द । आवाज.

निहत, (त्रि०) नि+हन्+क्त । मारागया । कत्तल किया गया । लगा हुआ.

निहनन, (न०) नि+हन्+ल्युट् । वध । मारना । कतलकरना.

निहन्तृ, (त्रि०) नि+हन्+तृच् । मारनेवाला । नाश करनेवाला.

निहव, (पु०) नि+ह्वे+अप् । आह्वान । बुलाना । पुकारना.

निहित, (त्रि०) नि+धा+क्त । स्थापित । रक्खाहुआ । गुप्त । छिपाहुआ । ठहराहुआ । डालाहुआ । "नितरांहितः" बहुत हितकारी.

निह्नव, (पु०) नि+ ह्नु+अप् । शठता । और प्रकारसे स्थित होरही वस्तुको औरही प्रकारसे सूचन करना । अपलाप । छिपाना.

निह्ववनम्, (न०) नि+ह्नु+अन । मुकर जाना । अपने ज्ञानको छिपाना । प्रतिवाद करना.

निह्नुत, (त्रि०) नि+ह्नु+क्त । छिपाया गया । प्रतिवाद किया गया.

निह्नुति, (स्त्री०) नि+ह्नु+क्तिन् । छिपाना । मुकरना.

निह्राद, (पु०) नितरां ह्रादः । नि+ह्रद्+घञ् । अव्यक्त शब्द । ऐसा शब्द कि जिसका अर्थ प्रकट नहि.

नीकाश, (पु०) नि+काश्+घञ्-दीर्घः । निश्चय । यकीन । अव् । सदृश । समान (बराबर) । "वज्रनीकाश" वज्रसरीखा आदि.

नीच, (त्रि०) निकृष्टां ईं लक्ष्मीं चमति । चम्+ड । पामर । नीच । वामन (बौंना) । चोरनामी गन्धद्रव्य हुख (पु०).

नीचैस्, (अव्य०) । नीचे । थोडा । और क्षुद्र (कमीना).

नीड़, (पु०) निश्चिता इलन्ति अत्र । इल्+क । निवासस्थान । रहनेकी जगह । पक्षिओंका कुलाय-आलना (घोंसला).

नीड़ज, (पु०) नीडे जायते । जन्+ड़ । घोंसलेमें उपजता है । विहग । पक्षी । परिंदह । "नीडोद्भव" यही अर्थ.

नीत, (त्रि०) नी+क्त । लेजाया गया । चलाया गया । लाभ किया गया । व्यतीत होगया.

नीति, (स्त्री०) नीयन्ते उन्नीयन्ते अर्था अनया । नी+क्तिन् । जिसके द्वारा अर्थ समझा जाय । नी+क्तिन् । शुक्राचार्य आदिसे कहीहुई शास्त्रविद्या । एक शास्त्र "भावे" पहुंचाना । इखलाकका इल्म । न्याह् (इनसाफ) । हासिल करना.

नीतिमत्, (त्रि०) नीति+मतुप् । नीतिवाला । नीतिमें चतुर । दाना.

नीतिशास्त्र, (न०)नीतिबोधकं शास्त्रं । नीतिविद्या सिखानेहारे शास्त्र । बृहस्पति । शुक्राचार्य । कामन्दक । चाणक्य । विष्णुशर्मा आदिके रचेहुए पञ्चतन्त्र । हितोपदेश आदि.

नीप, (पु०) नी+पक् । कदम्ब । बन्धूक । नील अशोकका वृक्ष । प्रियक.

नीर, (न०) नी+रक् । निर्गतं रात् अग्नितो वा । जो आगसे निकला जल । पानी । रस.

नीरज, (न०) नीरे जायते । जन्+ड । पानीमें हुआ कमल । मोती । जो पानीमें उपजे (त्रि०) एक जलका जीव (पु०).

नीरद, (पु०) नीरं ददाति । दा+क । मेघ (जो पानी देता है) बादल और मुस्तक (मोथा) । "निर्गतः रदः दन्तः अस्मात्" । दंतसे शून्य (त्रि०).

नीरन्ध्र, (त्रि०) निर्गतं रन्ध्रं यस्मात् । जिस्से छेक (सुराख) निकलगया । सान्द्र (गाढा) घन.

नीरस, (पु०) निःसरन् रसः यस्मात् । जिस्से रस निकलगया । दाडिम (अनार) जिस्में रस नहिं (त्रि०).

नीराजन, (न०) नीरस्य शान्त्युदकस्य अजनं क्षेपः अत्र । नि० । निःशेषेण राजनं अत्र वा । जिसमें शान्तिका पानी फेंकते है । अथवा जहां पूरा २ चांदना होता है । दीप आदिसे आदर करना । पहिले दीप दिखाना २ शंखमें पानी दिखाना- ३ पवित्र कपडा दिखाना- ४ आम वा पीपलके पत्तेसे पानी सींचना–५ दंडवत प्रमाण करना । आरात्रिक । आरती करना । आश्विन (असूके) महीनेमें घोडे आदिकी पूजा करनी.

नीरुज, (स्त्री०) निवृत्ता रुक् । बीमारी दूरहुई । आराम (स्वास्थ्य) । "निवृत्ता रुक् यस्मात्" । जिस्से बीमारी दूर हुई । रोगरहित (त्रि०).

नील, (पु०) नीला रंग । क । इलावृतवर्षके उत्तरमें रम्यकवर्षका मर्यादापर्वत । भारतवर्षका एक पर्वत । एक वानर । एक निधि (खजाना) । लाञ्छन । निशान । बोडका वृक्ष । इन्द्रनीलमणि । नीलम । एक प्रकारका बैल । नीले रंगवाला (त्रि०).

नीलकण्ठ, (पु०) नीलः कण्ठः अस्य । जिसका गला नीला है । शिवजी महाराज । मयूर (मोर) । पपीहा । गांवकी चिडिआ । खञ्जन (ममोला) । चन्दन.

नीललोहित, (पु०) नीलः कण्ठे, लोहितः केशेषु । गलेमें नीला और बालोंमें लाल शिवजी । उसके उद्देशमें एक व्रत । काला और लाल मिलाहुआ रंग.

नीलवसन–वासस्, (त्रि०) नीलं वसनं-वासः वा यस्य । नीले वस्त्रोंवाला । नीली पौशाकवाला.

नीलाम्बर, (पु०) नीलं अम्बरं यस्य । जिसका कपडा नीला है । बलदेव । शनैश्चर । नीला कपडा (न०) ६ ब० (त्रि०).

नीलोत्पल, (न०) कर्म० । इन्दीवर । बडी सुगन्धीवाला । नीले रंगका नीलोफर कमल । नीला कमल.

नीवार, (पु०) नि+वृ०घञ् दीर्घः । तृणधान्यभेद । खांकके चावल.

नीवि–वी, (स्त्री०) । निव्ययति । निवीयते वा । नि+व्ये-इन्-यका लोप । वणियोंका मूलधन । पूंजी । औरतोंका कमरबंद.

नीवृत्, (पु० स्त्री०) नियतं वर्तते अत्र । नि+वृत्+क्विप् दीर्घः । जहां बहुत रहता है । देश । जनपद । जहां बहुतलोग रहते हैं.

नीशार, (पु०) नितरां शीर्यते हिमानिलौ अत्र अनेन वा । जहां वा जिस्से पाला वा वायु द्रवता जाता है । नि+शॄ+घञ्-दीर्घः । हिम और वायुको दूर करनेहारा प्रावरण (पडदा) । कनात । काण्डपट.

नीहार, (पु०) निह्रियते । नि+हृ+घञ्-दीर्घः । घनीभूत-शिशिर । बरफ । कोरा.

नु, (अव्य०) विकल्प । अनुनय । अतीत । प्रश्न । हेतु । वितर्क । अपमान । अपदेश । अनुताप । निश्चय । सवाल.

नुति, (स्त्री०) नु+क्तिन् । स्तव । तारीफ । और प्रणाम । स्तुति । पूजा.

नुत्त-न्न, (त्रि०) नुद्+क्त-विकल्पसे न होता है । प्रेरित । क्षिप्त । चलायाहुआ.

नूतन, (त्रि०) नव एव । नव+तन । नवस्य नुः । अभिनव । नवीन । नया । त्न "नूत्न" यही अर्थ.

नूद, (पु०) नुदति पापं । क । पृ० दीर्घः । वृक्षविशेष । शतूतका दरख्त.

नूनम्, (अव्य०) वितर्क । निश्चित । स्मरण । वाक्यपूरण । उत्प्रेक्षाद्योतन । दलील । यकीनन । याद होना.

नूपुर, (न०) नू+क्विप्-पूर्+क । पादाङ्गद । पाँवका भूषण । पाँवटा.

नैघण्टुकम्, (न०) निघण्टूनां=नाम्नां=अभिधानानां वा समूहः+कन् । वैदिक शब्दोंका कोष (खजाना) (पांच अध्यायोंमें है, जिसपर यास्कने टीका की है).

नैचिकी, (स्त्री०) नीचैः अशब्दं चरति+ठक्+ङीप् । उत्तम गौ.

नैत्यि(त्य)क, (न०) नित्यं अनुष्ठेयम्+कन्-ठन् वा । नित्यानुष्ठेय । प्रतिदिन करनेलायक.

नैपुण्य-ण, (न०) निपुणस्य भावः+ष्यञ्-अण् वा । दक्षता । चतुराई.

नैमित्तिक, (त्रि०) निमित्तात् आगतम्+ठक् । पुत्रजन्म आदि निमित्तका आश्रयकर कियागया जातेष्टिआदि । सववसे.

नैमित्तिकलय, (पु०) कर्म० । "चार हजार (सहस्र) युगोंके पीछे नैमित्तिक लय होता है" । ब्रह्माका दिन बीत जानेपर जगतोंका प्रलय.

नैमिष, (न०) एक तीर्थ । यहां निमेष (विष्णु) ने दैत्यका नाश किया.

नैयग्रोध, (न०) न्यग्रोधस्य विकारः+अण् । वटफल । बोडका फल.

नैयायिक, (त्रि०) न्यायं वेत्ति-अधीते वा+ठक् । जो न्यायको जानता वा पढता है । न्यायज्ञ । न्यायशास्त्रके जाननेहारा.

नैरन्तर्य, (न०) निरन्तरस्य भावः+ष्यञ् । अविच्छेद । लगातार होना.

नैराश्य, (न०) निराशस्य (निष्कामस्य) भावः+ष्यञ् । चाह न रखना । आशाशून्यत्व । आशासे रहितपन । "नैराश्यं परमं सुखम्".

नैरुक्तः-नैरुक्तिकः, (पु०) निरुक्तं वेत्ति-अधीते वा+अण्+ठक्+इक । शब्दोंके प्रकृतिप्रत्ययको जाननेहारा.

नैर्गुण्यम्, (न०) निर्गुणस्य भावः+य । निर्गुणपन । गुणोंका न होना.

नैर्घृण्यम्, (न०) निर्घृणस्य भावः निर्घृण्यम् । निर्दय होना । बेरहमी.

नैर्देशिक, (पु०) निर्देशं करोति+ठक्+इक । आज्ञाको माननेवाला । भृत्य । नौकर.

नैर्मल्य, (न०) निर्मलस्य भावः+ष्यञ् । निर्मलता । स्वच्छता । सफाई । विषयोंसे वैराग्य.

नैर्लज्ज्यम्, (न०) निर्लज्जस्य भावः+य । निर्लज्जपना । शरमिंदगी.

नैल्यम्, (न०) नीलस्य भावः+यत् । नीलापन । काला । नीला रंग.

नैवेद्य, (न०) निवेदं (निवेदनं) अर्हति+ष्यञ् । नि+विद्+णिच् कर्मणि यत्+स्वार्थे अण् वा । जो निवेदनके योग्य है । देवताके उद्देशसे छोडनेलायक पदार्थ । देवताके आगे चढानेका पदार्थ.

नैःश्रेयस, (त्रि०) निःश्रेयसाय हितं+अण्+सी+स्त्री । निश्चित श्रेय (कल्याण)को पहुंचानेवाला । आनंददाता । मोक्षका देनेवाला.

नैषध, (पु०) निषधानां (जनपदानां) अयं+अण् । निषधदेशका नलनामा राजा । इसीके विषयमें बनाया हुआ ग्रन्थ (न०) उस देशमें हुआ और उसका सम्बंधी (त्रि०).

नैष्कर्म्य, (न०) निष्कर्मणो भावः । कामसे रहित होना । विधिसे सब कामोंको छोडना । "न कर्मणामनारम्भान्नैष्कर्म्यं" गीता.

नैष्किक, (पु०) निष्के (हेम्नि-दीनारे) नियुक्त+ठक् । सोने वा मोहरोंके काममें लगाया गया । कोषाध्यक्ष (खजानची) । टंकशालानियुक्त (टकसालिया).

नैष्ठिक, (पु०) निष्ठा (संसारसमाप्तिः)प्रयोजनं अस्य+ठक् । संसारको समाप्त करना जिसका प्रयोजन है । जो सारा जीवन ब्रह्मचारी होकर गुरुके गृहमें निवास कर्ता है । एक प्रकारका ब्रह्मचारी । "निश्चल स्थितिमें लगाहुआ" एकनिष्ठ (त्रि०).

नैष्ठुर्यम्, (न०) निष्ठुरस्य भावः+य । निठुरपन । निर्दयता । बेरहमी.

नैसर्गिक, (त्रि०) निसर्गेण (स्वभावेन) निवृत्तः+ठक् । स्वभावसे बना । स्वाभाविक । कुदरती.

नैस्त्रिंशिक, (त्रि०) निस्त्रिंशः प्रहरणं अस्य+ठक् । तलवार जिसका शस्त्र है । तरवारसे लडनेहारा (त्रि०).

नो, (अव्य०) अभाव । नहीं । न होना.

नोचेत्, (अव्य०) निषेध । नहीं तो । यदि न हुआ.

नोदनम्, (न०) नुद्+भावे ल्युट् । प्रेरणा । चलाना । धकेलना.

नोधा, (अव्य०) नवप्रकारं । नौ प्रकार । नौ तरहसे.

नोपस्थातृ, (त्रि०) न उपतिष्ठति । स्था+तृच् । दूरस्थ । दूररहनेहारा दूरका । दुष्टवादी । बुरेवचन बोलनेहारा.

नौ, (स्त्री०) नुद्+डौ । पानीपर तरनेका साधन । बेडी "नौका".

नौकर्णधार, (पु०) नावः कर्णधारः=चालकः । बेडीके चलानेवाला । मल्हाह । मला.

नौकादण्ड, (पु०) ६ त० । बेडी चलानेके लिये दोनो ओर बंधाहुआ काठका डंडा । चप्पा.

नौयायिन्, (त्रि०) नावा याति-उप० स० । किश्तीमें जानेवाला । मुसाफिर.

नौव्यसनम्, (न०) नावःव्यसनम् । बेडीकी तकलीफ । जहाजका टकराना वा टूटजाना.

नौसाधनम्, (न०) नावां साधनम् । किश्तिओंका साधन (उपाय).

नृ, (पु०) नी+ऋन् । मनुष्य । और पुरुष । नर । "जातौ ङीप्" नारी.

नृकरोटिका, (स्त्री०) ६ त० । नरकपाल । मनुष्यकी खोपरी.

नृग, (पु०) इक्ष्वाकुके वंशमें एक राजा.

नृत्, नाचना । दिवा० पर० अक० सेट् । नृत्यति । अनर्तीत् । नर्तिष्यति-नर्त्स्यति.

नृत्त-त्य०, (न०) नृत्+क्त+क्यप् वा । ताल और स्वरसहित विलासवाला अङ्गोंका विक्षेप । नाचना.

नृप, (पु०) नॄन् पाति । पा+क । जिसका १६ कोशतक अधिकार हो । एकप्रकारका राजा । और राजा । बादशाह.

नृपति, (पु०) ६ त० । कुवेर । और राजा । मनुष्योंका मालिक.

नृपप्रिय, (पु०) ६ त० । राजपलाण्डु । बडा पियाज । शालिधान्य । और आम्र (आम) । राजाका पियारा । (त्रि०).

नृपसभ, (न०) नृपाणां सभा-शाला-संहतिर्वा । राजाओंकी सभा वा शाला-समूह । राजाके रहनेकी शाला.

नृयज्ञ, (पु०) नृणां यज्ञः । अतिथिका पूजन । "नरयज्ञ" यही अर्थ.

नृवराह, (पु०) ना वराहः । मनुष्य और वराह (सूअर)-के स्वरूपमें नारायणका एक अवतार.

नृवाहन, (पु०) ना वाहनं यस्य । मनुष्य जिसकी सवारीहै । ईशानीवा कुवेर.

नृशंस, (त्रि०) नॄन्+शंसति । शन्स्-हिंसा+अण् । घातुक । क्रूर । परद्रोही । कतल करनेहारा । बेरहम । दूसरेके साथ वैर करनेहारा.

नृसिंह, (पु०) ना सिंहइव । मनुष्य और सिंह (शेर) के स्वरूपवाला भगवान्का एक अवतार (जिसने प्रह्लादकी रक्षा की).

नृसोम, (पु०) ना सोमः=चन्द्र इव । दीप्तिमान् पुरुष । महापुरुष । बडा आदमी.

नॄ, नय । इन्साफकरना । भ्वा० पर० स० सेट् । नरति । अनारीत् । नरयति (णिच्).

नेजक, (पु०) निज्-शुद्धि+ण्वुल् । रजक (धोबी) । साफ करनेहारा (त्रि०).

नेतृ, (त्रि०) नी+तृच् । प्रभु । निर्वाहकरनेहारा । नायक । चलानेहारा । पहुंचानेहारा । नीमका वृक्ष (पु०).

नेत्र, (न०) नयति नीयते वा अनेन+ष्ट्रन् । मथनेकी रस्सी । एक प्रकारका कपडा । वृक्षका मूल (जड) । रथ । जटा । नाडी । शलाका और आँख । पहुंचानेहारा । लेजानेका साधन । प्रवर्तक (त्रि०).

नेत्रगोचर, (त्रि०) नेत्रयोः गोचरः=प्रत्यक्षः । नेत्रोंका विषय । आंखोंके सामने प्रतीत होनेवाला.

नेत्रच्छद, (पु०) नेत्रयोः छदः=आवरणम् । नेत्रोंका पडदा.

नेत्रमलम्, (न०) नेत्रयोः मलं । आखोंकी मैल । गिड्ड.

नेत्ररोगहन्, (पु०) नेत्ररोगं हन्ति । हन्+क्विप् । वृश्चिकाली वृक्ष (यह नेत्रोंके रोगको दूर कर्ताहै).

नेत्राञ्जनम्, (न०) नेत्राय अञ्जनं-च० त० । नेत्र (आंख)-के लिये अंजन (सुर्मा).

नेत्रान्त, (पु०) नेत्रस्य अन्तः । नेत्रका बाहिरी कोन (सिरा).

नेत्राभिष्यन्द, (पु०) नेत्रयोः अभिष्यंदः । नेत्रोंका वहना । एक प्रकारका नेत्ररोग.

नेत्राम्बु-अंभस्, (न०) नेत्रस्य अंबु । नेत्रका जल । अश्रु । अस्र । आंसु.

नेत्रोत्सव, (पु०) नेत्रयोः उत्सवः । नेत्रोंका आनंदस्थान । नेत्रोंके लिये सुखदाई कोई पदार्थ.

नेदिष्ठ, (त्रि०) अतिशयेन अन्तिकः । इष्ठन्-नेदादेशः । जो बहुतही पास हो । अतिशय निकटस्थ.

नेदीयस, (त्रि०) अतिशयेन अन्तिकः । ईयसुन्-नेदादेशः । अत्यन्त समीपस्थ । बहुतही पास.

नेपथ्य, (न०) नी+विच्-नयः-नेतुः पथ्यम् । भूषण (जेवर) वेश । वेशका स्थान । नाटक आदिकी नकलके लिये सज्जा-भूमि (अखाडा).

नेपाल, (पु०) अपने नामसे प्रसिद्ध एक देश । नेपाल.

नेम, (पु०) नी+मन् । अवधि (हद्द) । काल । अर्ध (आधा) । (आधेके अर्थमें यह शब्द सर्वनाम होताहै).

नेमि, (पु०) नी+मि । तिनिशका दरख्त । खुएके पासका चौतडा । पहियेका घेरा (परिधि) चरखी । जिनदेवता (पु०).

नेमिश, (न०) "ब्रह्मासे रचेहुए चक्रकी धुरी जहां टूट जाती है" शॄ+ड । नैमिषारण्य क्षेत्र । "स्वार्थे अण्" नैमिशम्.

नेमिवृत्ति, (त्रि०) नेमिः इव वृत्तिः=व्यापारः यस्य-च० स० । चक्रकी धारके समान नियमसे चलनेवाला.

नेष्, भ्वा० आ० । नेषते । जाना । सरकना.

नेष्टृ, (पु०) नेष्+तृ । सोमयज्ञमें प्रधान पुरोहित जिसकी सोलवीं संख्या है.

नैक, (त्रि०) न एकः-न० त० । जो एक नहिं । जो अकेला नहीं (प्रायः समासमें प्रयुक्त होताहै).

नैकचर, (त्रि०) न एकः चरति । बहुतों (समाज)में रहनेवाला.

नैकट्यम्, (न०) निकटस्य भावः निकटता । समीपता । पासहोना । पडोसीपना.

नैकधा, (अव्य०) न एकप्रकारकः । कई प्रकारसे । कई तरहसे.

नैकभावाश्रय, (त्रि०) न एकं भावं आश्रयते-उप० स० । एक भाव (खयाल) का आश्रय न करनेवाला । चंचल-परिणामी.

नैकशस्, (अव्य०) न एकवारं । संख्यामें बहुत । वारवार । कईवार.

नैकृतिक, (त्रि०) निकृतिं करोति+ठक् इक+वृद्धिः । तिरस्कार करनेवाला । जो सरलहृदय न हो । बइमान । निर्दय । नीच । बदमाश.

नैगम, (पु०) निगम एव+अण् । नीति । उपनिषद् । ब्रह्मविद्या (उसका कहनेहारा वेदान्तशास्त्र । "निगमे भवः+अण् । " वणिग्जन । बनिआं (व्यापारी) । नगरका.

न्यक्कार, (पु०) न्यक्+कृ+घञ् । नीचकरण । तिरस्कार । निरादर करना.

न्यग्रोध, (पु०) न्यक् रुणद्धि । रुध्+अच् । वटवृक्ष । बोडका दरख्त । सबको नीचे करके ठहरा हुआ । विष्णु । चार हाथका माप । जंडीका द्रख्त.

न्यङ्क, (पु०) नितरां अञ्चति । नि+अञ्च्+ड—कुलम् । एक मुनि । एक हरिण जिसके बहुत सींग होते हैं.

न्यच्, (त्रि०) निम्नं अञ्चति । नि+अञ्च्+क्विन् । नीचे । नीचला । निम्न.

न्यञ्चित, (त्रि०) नि+अञ्च्+क्त । अधः क्षिप्त । नीचे फेंकागया.

न्यस्त, (त्रि०) नि+अस्+क्त । क्षिप्त । फेंकागया । त्यक्त । छोडाहुआ । और रक्खागया.

न्याद, (पु०) नि+अद्+घञ् (घस् आदेश नहिं होता) । भोजन । खुराक.

न्याय, (पु०) नि+ई+इण् वा घञ् । उचित (मुनासिब) । गौतमसे कहाहुआ एक शास्त्र । प्रतिज्ञा आदि पांचोंको प्रतिपादन करनेहारा एक प्रकारका वाक्य । नीति । नीतिका उपाय । भोग । युक्ति (दलील) । दलीलसे मिलाहुआ दृष्टान्त (मिसाल).

न्यायशास्त्रम्, (न०) न्यायस्य शास्त्रम् । तर्कका शास्त्र । युक्तिविद्या.

न्यायसूत्रम्, (न०) न्यायस्य सूत्राणि । न्यायशास्त्रके संकेतवाक्य.

न्याय्य, (त्रि०) न्यायात् अनपेतं+यत् । जो न्यायसे बाहिर नहिं । उचित (मुनासिब) । युक्तियुक्त । दलीलसे मिलाहुआ.

न्यास, (पु०) नि+अस्+कर्मणि, भावे वा घञ् । स्थाप्य-द्रव्य । रखनेलायक चीज (अमानत) । त्याग देना । संन्यास.

न्युब्ज, (त्रि०) नि+उब्ज+घञ्-कुत्व नहिं हुआ । अधोमुख । नीचेमुं । कुब्ज (कुबडा) । यज्ञका एक पात्र । कुशा । सुवा । मूंधा (औंधा) मारागया.

न्यून, (त्रि०) न्यूनयति । नि+ऊन-परिमाणे अच् । ऊन । कम । गर्ह्य (निन्दाके लायक).

न्योजस्, (त्रि०) तिरच्छा । टेढा । बुरा । बदमाश.

प

प, (पु०) पत्-पा-वा ड (समासमें पीछे रहता है) । पीना । "द्विप" बचाना । खबर्दारी करना । हकूमत करना । वायु (हवा) । पत्ता । अण्डा.

पक्त्रिम, (त्रि०) पच्+क्त्रि-ततो मप् । पाकनिर्वृत्त । पकानेसे निपटाहुआ । पकाकर तयार किया.

पक्व, (त्रि०) पच्+क्त-तस्य वः । पकाहुआ । डवलाहुआ । भुनाहुआ.

पक्व, (त्रि०) पच्+क्त (तको व होता है) परिणत । पकाहुआ । दृढ (मजबूत) । विनाशोन्मुख । नाश होनेपर आगया । कृतपाक । पकाया गया.

पक्कण, (पु०) पचति । पच्+क्विप् । कण्+अच् । कर्म० । शबरालय । भीलोंका घर । चाण्डालकी कुटिआ.

पक्ष्, लेना पकडना-कबूल करना (परिग्रह) । चुरा० उभ० सक० सेट् । भ्वादिमें पर० । पक्षयति-ते । पक्षति.

पक्ष, (पु०) पक्ष्+अच् । पञ्चदशदिन । १५ दिन (पखवाडा । पक्षी । परिंदह । समय । पक्षिओंके पर । "केशसे परे समूह अर्थमें" केशपक्ष (वालोंका समूह) । पास । घर । दोहफ्ते । न्यायमें जहां साध्यका संदेहहो-जैसे "पहाडपर आग है" विरोध । बल । सहाय । मित्र । हाथी । समूह । शरीरका आधा भाग.

पक्षक, (पु०) पक्ष इव कायति । कै+क । पार्श्वदार । पासेका दर्वाजा । खिडकी.

पक्षता, (स्त्री०) पक्षस्य भावः । पक्षका होना । अनुमित्सा-विरहविशिष्टसिद्ध्यभाव । एक पक्ष पकडना । न्यायशास्त्रमें "जहां वह्निमत्व (आगका होना) का निश्चय नहिं वहीं पक्षता होतीहै, उसका निश्चय होनेपर यदि अनुमानकी इच्छा रहे तौ भी होसक्तीहै नहिं तो नहिं" इस प्रकार मानते हैं.

पक्षति, (स्त्री०) पक्षस्य मूलं-ति । पखवाडेकी जड । पक्षको आरम्भ करनेहारी प्रतिपदा । पडवा । एकम । एक तिथि । पक्षिओंके परोंका मूल । परकी जड.

पक्षद्वयम्, (न०) पक्षस्य द्वयम् । युक्तिके दोनों ओर । दो पक्ष (युक्तियें).

पक्षपात, (पु०) पक्षे (अन्याय्यसाहाय्ये) पातः (अभिनिवेशः । एक ओर गिरना (जहां इन्साफ नहिं) । अन्यायके लिये सहायता करना । तरफदारी । मुलाजा.

पक्षहोम, (पु०) पक्षाय होमः । एक पक्ष (पखवाडे) में समाप्त होनेवाला होम वा यज्ञसंबंधी संस्कार वा रीति.

पक्षाघात, (पु०) पक्षस्य आघातः । युक्तिके एक अंशका टूटजाना.

पक्षान्त, (पु०) पक्षस्य अन्तः यत्र । जहां पक्षका अन्त होताहै । अमावास्या । और पूर्णिमा तिथि.

पक्षाभास, (पु०) पक्षस्य आभासः=प्रतीतिमात्रम् । मिथ्यायुक्ति । झूठी दलील.

पक्षाहार, (पु०) पक्षे आहरति । पक्ष (१५ दिन)में एकही वार भोजन करनेवाला.

पक्षिणी, (स्त्री०) पक्षतुल्ये अहनी विद्येते अस्या+इनिः । जिसके दोनों दिन परोंकी तरह हों । दोनों (आनेवाले और वर्तमान) दिनोंसे मिलीहुई रात । पक्षिओंका समूह.

पक्षिन्, (पु०) पक्ष+अस्ति अर्थे इनि । जिसका पर हो । परिन्दह । वाण (तीर) । "विहङ्गम."

पक्षिल, (त्रि०) पक्षः साहाय्यं+अस्ति अर्थे इलच् । साहाय्यकारक । सहायता देनेहारा । मदत करनेहारा । न्यायका भाष्य बनानेहारा वात्स्यायन मुनि (पु०) परवाला (त्रि०).

पक्ष्मन्, (न०) पक्ष+मानिन् । नेत्रावरकलोम । आंखको बंद करनेहारा रोम (लुं) । झिम्मणी । पलक । कमलफूलकी तिरी । पक्षिओंका पर । बहुत छोटा सूत.

पक्ष्मल, (त्रि०) पक्ष्म+लच् । नेत्रोंके सुन्दर रोम (लुं) वाला.

पक्ष्य, (त्रि०) पक्षे भवः+यत् । पखवाडेमें उत्पन्न होनेवाला । एक ओर होनेवाला । प्रत्येक पक्षमें बदलनेवाला.

पङ्क, (पु० न०) पचि+घञ्-नि० । कुत्व । कर्दम । कीचड । बूरा, पाप.

पङ्क(ङ्के)ज, (न०) पङ्के जायते जन्+ड । पङ्के अलुक् समासः । जो कीचडमें उपजता है । पद्म । कमलफूल । सारस.

पङ्किल, (त्रि०) पङ्क+अस्ति अर्थे इलच् । वह देश कि जहां कीचड हो । कर्दमवाला देश.

पङ्केरुह, (न०) पङ्के रोहति । रुह्+क । अलुक् समासः । पद्म (कमलफूल) । सारस खग । सारस मरिन्दह.

पङ्क्ति, (स्त्री०) पचि+क्तिन् । सजातीयसन्तति । एक जैसोंकी कतार । पाँच वा दस अक्षरके पादवाला छन्द । दसकी गिनती । पृथिवी । गौरव । बडापन । पाक । पकना । और प्रपञ्च । विस्तार (फैलावट).

पङ्क्तिदूषक, (पु०) श्राद्धमें भोजनके लिये बैठीहुई ब्राह्मणोंकी पाँतिको जो दूषित कर देता है (विगाडता है) । दुष्+णिच्+ण्वुल् । जो पङ्क्तिके लायक नहिं । जिसे श्राद्ध आदिमें भोजन न देना चाहिये । धूर्त.

पङ्क्तिपावन, (पु०) श्राद्धमें भोजनके लिये बैठीहुईं ब्राह्मणोंकी कतारको जो पवित्र कर्ता है । पू+णिच्+ल्युट् । श्राद्धभोजनके लिये बैठेहुओंकी पङ्क्तिको पवित्र करनेहारा विद्वान् आदि.

पङ्गु, (त्रि०) खजि+कु । (पक् आदेश) और नुक् । गतिहीन । जो चल नहिं सक्ता । (स्त्रीमें उङ्) । लंगडा । लुंजा । शनैश्चर । शनीचर (पु०).

पच्, पाक-पकाना-भ्वा० उभ० सक० अनिट् । पचति-ते । अपाक्षीत् । अपक्त । पक्त्रिम । पक्व.

पच्, व्यक्तीकार । प्रकटकरना । जाहिरकरना । भ्वा० आ० अनिट् । पचते (अपक्त).

पच्, विस्तार । फैलाना । चुरा० उभ० सक० सेट् । इदित् । पचयति-ते । अपपचत्-त.

पचेलिम, (त्रि०) पच्+केलिमर् । पकानेवाला । स्वभावसे पकाहुआ.

पज्, आवरण-ढांकलेना । भ्वा० पर० सक० सेट् । इदित् । पञ्जति । अपञ्जत्.

पज्ज, (पु०) पद्भ्यां (ब्रह्मणः चरणाभ्यां) जायते । जन्+ड । जो ब्रह्माके चरणोंसे उपजता है । शूद्र "पद्भ्यां शूद्रो अजायत" इति श्रुतिः.

पञ्चक, (न०) पञ्चानां अवयवः+कन् । पाँचोका हिस्सह । पांचकी गिनती और धनिष्ठासे ले पांच नक्षत्र (तारे) । युद्धक्षेत्र (लडाईका मैदान).

पञ्चकषाय, (पु०) कर्म० । पांचप्रकारकी कसैली चीजें । जम्बु (जामनू जम्मु) शाल्मली (सिंवल), वाट्याल, वकुल और वदर (वेर).

पञ्चकोष, (पु०) पञ्च कोषा इव आवरका यस्य । खजानों-की नाईं जिसके पांच पडदे हैं । वेदान्तमें कहाहुआ अन्नमय आदि पांच कोषका अभिमान करनेहारा जीव । समा० द्विगुः । अन्नमय आदि पाँच कोषवाले देह (न०) । (अन्नमय कोष) (स्थूल शरीर) प्राणमय, मनोमय और विज्ञानमय (लिङ्गशरीर) एवं आनन्दमय (कारणशरीर) है सवसे पिछला शरीर मोक्षकी दशा है । अर्थात् इसी आनन्दमयकोषरूप शरीरमें मुक्त पुरुष आपही आनन्दका भोक्ता है.

पञ्चकोशी, (स्त्री०) पञ्चानां क्रोशानां समाहारः । पांच कोसका अंतर (फासलो).

पञ्चखट्वम्-ट्वी, (न० स्त्री०) पञ्चानां खट्वानां समाहारः । पांच खाटों (कौच) का समूह । पांच पलंग । पांच मेजे.

पञ्चगवम्, (न०) पञ्चानां गवां समाहारः । पांच गौओंका समूह । पांच गौएं.

पञ्चगव्य, (न०) गोर्विकारः यत्-पञ्चानां गव्यानां समाहारः । गौका विकार । पाँच गव्योंका मेल । दही-दूध-घी-गोमूत्र (गमूतर)-और गोहा ये पाँच.

पञ्चचूडा, (स्त्री०) पञ्च चूडा यस्याः । जिसकी पाँच चोटी हों । एक अप्सरा.

पञ्चजन, (पु०) पञ्चभिः भूतैः जन्यते । जन्+घञ् (वृद्धि नहि होती) । जिसे पाँचों भूत उत्पन्न कर्तेहैं । मनुष्य । एक दैत्य (जिसकी हड्डीसे कृष्णचन्द्रका पांचजन्य नामरका शङ्ख बना).

पञ्चतत्व, (न०) पाँचो तत्त्व इकट्ठे (पृथिवी-जल-तेज-वायु और आकाश) मद्य-(शराव), माँस-मत्स्य (मच्छी) मुद्रा और मैथुन "तन्त्रशास्त्रमें कहेहुये पाँच।" पञ्चप्रकार क्योंकि सवका पहिला अक्षर म है).

पञ्चवाण, (पु०) पञ्च वाणा अस्य । जिसके पांच वाण हैं । कामदेव "पञ्चशर".

पञ्चवटी, (स्त्री०) वटः (वृक्षः) समा० द्विगुः । "अश्वत्थ (पीपल) विल्व (विल्ल), वट (वोड), धात्री (आमला), और अशोकवृक्ष । दण्डक वनका एक भाग है जहां रामचन्द्रजी सीता और लक्ष्मणके साथ चिरकाल रहे (यहीं गोदावरीका प्रकाश होता है) । यह नासिक पर्वतसे दो मीलकी दूरीपर है.

पञ्चवर्षदेशीय, (त्रि०) पञ्चवर्ष+देशीयर् । पांच वरिसके लगभग आयु (उमर)वाला.

पञ्चशाख, (पु०) पञ्च शाखाकारा अङ्गुलय यत्रः । जहां डालिओंके स्वरूपमें पांच अंगुलियें हैं । हस्त । हाथ.

पञ्चसूना, (स्त्री०) पञ्चसूनाः (प्राणिवधस्थानानि) । जीवोंके मरनेकी पांच जगह । "चुल्ली, पेषणी (चक्की), उपस्कर (घरकी सामग्री), कण्डनी (वुहारी) और पानीका घडा" ये पांच जगह जहां कीडे कीडिआं मरते हैं.

पञ्चाग्नि, (पु०) पञ्च अग्नयः उपास्या यस्य । जो पांच अग्निओंकी उपासना कर्ता है । पांच अग्निवाला (त्रि०).

पञ्चाङ्ग, (न०) समा० द्विगुः । एक वृक्षके त्वक् (छिलका) आदि पाँच । "तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण" ये पाँच । जिसके पाँच अङ्ग हैं । "जप, होम, तर्पण, अभिषेक और ब्राह्मणभोजन" इस प्रकार तन्त्रशास्त्रका पुरश्चरण । पाँच अंग जिसके वशमें हैं । कूर्म (कच्छुआ) (पु०) । (यह अपने अङ्गोंको इच्छापूर्वक सिकोड लेताहै).

पञ्चामृत, (न०) समा० द्वि० "दूध, शर्करा (खंड), घी, दही और शहत" ये पाँच.

पञ्चाल, (पु०) एक देश । और उस देशका राजा । उस देशके वासी (वहु०).

पञ्चाली, (स्त्री०) पञ्च (प्रपञ्चं) अलति (पर्याप्नोति) अल्+अण् । वस्त्रकृतपुत्तलिका । कपडेकी वनीहुई पुत्तली । गुड्डी । एक प्रकारका गीत.

पञ्चाशत्, (स्त्री०) पंच दशतः परिमाणं अस्य । नि० । पञ्चाश । पचासकी संख्या । पचास.

पञ्चेन्द्रिय, (न०) समा० द्वि० । पांच ज्ञानइन्द्रिय "(श्रोत्र-कान), त्वक्, नेत्र, रसन (जीभ) और (घ्राण नासिका)" वाक्, पाणी,पाद, पायु (गुदा), उपस्थ (लिङ्ग) ये कर्मेन्द्रिय हैं.

प(पि)ञ्जर, (पु० न०) पजि-पिजि वा+अरच् । शरीरकी हड्डिओंका समूह । कङ्काल । पक्षीआदिके वांधनेकी जगह (पिंजरा) (न०).

पञ्जि-ञ्जी, पजि+इन्-वा ङीप् । सूत्रसाधन तालिका (सूतकी अट्टी) "स्वार्थे कन्" तिथि वार आदि पञ्चाङ्गको जतानेहारी । पत्रिका । पत्री (जंतरी).

पञ्चतपस्, (त्रि०) पञ्चाग्निसाध्यं तपः अस्य । जिसकी तपस्या पांच अग्निओंसे सिद्ध होती है । चारोंओर चार अग्नियें और ऊपर सूर्यके तेजको तपनेहारा.

पञ्चतय, (न०) पञ्चानां अवयवा येषां वा+तयप् । पांचकी संख्या । उस गिनतीवाला (त्रि०).

पञ्चतन्मात्र, (न०) तत् एव तन्मात्रं । पञ्चानां तन्मात्राणां समाहारः । पांच तन्मात्राओंका मेल । साँख्यआदिमें प्रसिद्ध महाभूतों (पृथिवी आदि) के कारण शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्धस्वरूप पाँच सूक्ष्मभूत.

पञ्चत्व, (न०) पञ्चानां (पृथिव्यादिभूतानां) भावः । त्व । पाँचपन । मरण । मौत (इसमें शरीरके आरम्भ करनेहारे भूतोंका अपने २ अंशोंमें प्रवेश होता है) "पञ्चता".

पञ्चदश, (त्रि०) पञ्चदशानां पूरणः+डट् । पन्द्रहको पूरा करनेहारा । जिस्से १५ हवीं संख्या भरजाती है । पन्द्रह । पन्द्रहवां "पञ्चदशी" पूर्णिमा । वेदान्तका एक ग्रन्थ है (स्त्री०).

पञ्चधा, (अव्य०) पञ्च प्रकारं । पञ्च प्रकार । पांचतरहसे.

पञ्चनख, (पु०) पञ्च नखा यस्य । जिसके पाँच नखून हों । हाथी । व्याघ्र (मेडिआ) । पाँच नखोंवाला (त्रि०).

पञ्चनद, (पु०) पञ्च नद्यो यत्र । जहां पाँच नदीयें हों (वितस्ता-इरावती-चन्द्रभागा-शतद्रु और विपाशा) । पञ्जाव नामसे प्रसिद्ध मद्रका देश । काशीमें बिन्दुमाधव तीर्थके पासकी पाँच नदियें.

पञ्चभूत, (न०) पञ्चानां भूतानां समाहारः । पाँच भूतोंका मेल । वैशेषिक आदिसे कहेहुए पृथिवी-जल-तेज-वायु और आकाश स्वरूप पाँच भूत.

पञ्चम, (त्रि०) पञ्चानां पूरणः । पञ्चन्+मट् । जिस्से पाँचकी संख्या पूरी होती है । पांचवां । +स्त्रियां ङीप् । पञ्चमी तिथि.

पञ्चमकार, (न०) पञ्चानां (मकारादिवर्णानां) समाहारः । तन्त्रमें कहेहुए मद्य -मांस-मत्स्य-मुद्रा -और मैथुन । (वे पाँच शब्द जिनका पहिला वर्ण "म" है).

पञ्चमहायज्ञ, (पु०) महान् यज्ञः=महायज्ञः । ततः कर्म० । पाँच हत्याओंके दोषको दूर करनेहारे पाँच बडे यज्ञ । स्वाध्यायपाठ-अग्निहोत्र-अतिथिपूजन-पितृतर्पण और वलिकर्म.

पञ्चमास्य, (पु०) पञ्चमः (स्वरभेद) आस्ये (तदेकदेशकण्ठे) यस्य । जिसके गलेमें पञ्चमकी सुर निकलती है । कोकिल । कोइल.

पञ्चहायन, (त्रि०) पञ्च हायनानि यस्य पांच वरिसकी उमरवाला.

पट्, गति-जाना । भ्वा० पर० सक० सेट् । पटति । अपाटीत्-अपटीत्.

पट्, दीप्ति । चमकना । चु० उभ० अक० सेट् । पाटयति-ते । अपीपटत्-त.

पट्, वेष्टन-घेरादेना-लपेटना । चु० उभ० सक० सेट् । पटयति । ते अपपटत्-त.

पटकार, (पु०) पटं करोति । कृ+अण् । कपडा बनाता है । तन्तुवाय । जुलाहा.

पटकुठी, (स्त्री०) पटनिर्मिता कुटी । शा० । पटमय गृह । कपडेका घर (तंबू) । "पटगृह" आदि-यही अर्थ.

पटच्चर, (न०) पट्यते (आवेष्ट्यते) । पट्+अति । पटत्+चरट् । जीर्णवस्त्र । पुराना कपडा । "पटमिव वेष्टित इव चरति" चर+अच् । "जो अपनेको लपेटकर चलताहै" चोर (पु०).

पटल, (न०) पट-वेष्टन+कलन् । छदि । छात । पडदा । नेत्रका रोग । और पटारी । वृक्षविशेष । एकप्रकारका ग्रन्थ (पु०).

पटवासक, (पु०) पटान् वासयति (सुरभीकरोति) । जो कपडोंको सुगन्धीवाला कर्ता है । वास्+ण्वुल् । वसनवासक । केसरआदिका चूर्ण । अल्ता । गुलाल.

पटह, (पु० न०) पटेन हन्यते-हन् । "पट" इत्येवं शब्दं जहाति वा । हा-वाड । पटसे ताडन किया जाता वा पट २ शब्दको छोडता है । ढक्कावाद्य । ढोल.

पटिमन्, (पु०) पट+इमन् । चतुरता । चतुराई । चालाकी । सख्ती । उपद्रव.

पटीर, (न०) पट+इरन् । चालनी (छान्नणी) । केदार (खेत) । मेघ (वादल) । वंशसार (वंशलोचन) । खदिर (खैर) । उदर (पेट) कंदर्प (कामदेव) । चंदन.

पटीयस्, (त्रि०) अतिशयेन पटुः+ईयसु । जो काम करनेमें वहुतही चतुर हो.

पटुजातीय, (त्रि०) पटुप्रकारः+जातीयर् । पटुप्रकार । अच्छीतरहका.

पटुरूप, (त्रि०) प्रशस्तः पटुः । प्राशस्त्ये+रूपप् । अतिशयदक्ष । वहुत चतुर.

पटोल, (पु०) पट्+ओलच् । इस नामकी एक वेल । वस्त्रविशेष (न०).

पट्ट, (न०) पट्+क्त । ट वा । नगर । मुल्क । चतुष्पथ । चुरस्ता (चौक) । राजा आदिका लेख्यपत्र (पटा) । पटडा । फलक (ढाल) । राजाका सिंहासन (तख्त) । ऊपरका कपडा । कौशेय (रेशम) । पीसनेका पत्थर । (पु०).

पट्टज, (न०) पट्टात् जायते । पट्टनिर्मितवस्त्र । रेशमी कपडा.

पट्टदेवी, (स्त्री०) पट्टे (राजासने) (देवी कृताभिषेका स्त्री) । राजाके साथ सिंहासनपर अभिषेककीगई औरत । पटराणी । "राजमहिषी" "पट्टमहिषी".

पट्ट (त्त) न, (न०) पट (त) न्ति जना यत्र । पट्-पत वा+तनन् । जहां बहुत लोग आतेहैं । प्रधाननगर । राजधानी । बडा मुल्क.

पठ्, लिखिताक्षर वाचन-लिखेहुए अक्षरोंको वाचना । भ्वा० पर० सक० सेट् । पठति । अपाठीत्-अपठीत्.

पड्, गति (ज्ञान-गमन और प्राप्ति) जाना० । भ्वा० आ० सक० सेट् । पण्डते । अपण्डिष्ट.

पण्, व्यवहार । क्रयविक्रय । मोल लेना और वेचना । और स्तुति-तारीफकरना । भ्वा० आ० सक० सेट् । पणायति-न्ते । पणते । "व्यवहारमें तो" पणायति । अपणायीत् । अपणायिष्ट । अपणिष्ट.

पण, (पु०) पण्यते अनेन । पण्+अच् । जिस्से व्यवहार कर्ते हैं । मूल्य (कीमत) धन । ताम्र (तामा) एक पैसा । "भावे अच्" । भृति (मजदूरी) । द्यूत (जूआ) । ग्लह (दाव) । नियम । और व्यवहार । चार काकिनी । अशीतिकपर्दिका । अस्सी कौडियें.

पणन, (न०) पण्+भावे ल्युट् । विक्रय । वेचना । फरोक्त करना.

पणव, (पु०-स्त्री०) पणं (व्यवहारं) वाति । वा+क । पटहभेद । एकप्रकारका ढोल । "पणवानकगोमुखाः" इति गीता.

पणाया, (स्त्री०) पण्+स्वार्थे आय ततः-अ । व्यवहार । "नचोपलेमे वणिजां पणाया" इति भट्टिः.

पणायित, (त्रि०) पण्+आय+क्त । स्तुत । सराहागया । तारीफ कियागया । "आप" न होनेपर "पणितं" ऐसाभी होता है.

पणितव्य, (त्रि०) पण्+तव्य । विक्रेतव्य (खरीदनेकी योग्य) । स्तोतव्य (तारीफके लायक) । और व्यवहार्य (व्यवहारके योग्य) +यत् । इसी अर्थमें "पण्यं" भी होता है.

पण्डित, (पु०) पण्डा (तत्त्वानुगा बुद्धिः) जाता अस्य । तार० इतच् । जिसकी बुद्धि तत्त्वको पहिचानती है । शास्त्रके तात्पर्यको जान्नेहारा । विद्वान् । आलिम । दाना । चतुर । समझवाला.

पण्डितम्मन्य, (पु०) आत्मानं पण्डितं मन्यते । जो अपनेको पण्डित मानता है.

पण्यवीथी, (स्त्री०) ६ त० । विक्रेयद्रव्य । विक्रेयशाला । वेचनेलायक पदार्थोंके वेचनेका स्थान । विपणि । दुकान । हट्ट । "स्वार्थे कन्" । पण्यवीथिका "पण्यशाला".

पण्यस्त्री, (स्त्री०) कर्म० । वह स्त्री जिसे मोल ले सक्ते हैं । वेश्या । कंजरी.

पण्याजीव, (पु०) पण्येन आजीवति । आ+जीव्+अच् । जिसका जीवन (खरीद फरोक्त कियेहुए द्रव्यसे) होता है । वणिग्जन । बनियां । व्यापारी (व्यवहारी).

पत्, गति । जाना । गिरना । उतरना । नीचे आना । भ्वा० पर० सक० सेट् । पतति । अपसत्.

पतग, (पु०) पतति अनेन-पतः (पक्ष) तेन गच्छति-गम्+ड । जो परसे जाता है । विहङ्गम । पक्षी । परिन्दह.

पतङ्ग, (पु०) पतन् सन् गच्छति । गम्+खच् । जो गिरताहुआ जाता है । सूर्य (सूरज) । शलभ (मकडी) । खग (पक्षी) । महुएका द्रख्त.

पतञ्जलि, (पु०) पतन् अञ्जलिः यस्मै । (नमस्कार करनेके योग्य होनेसे जिसके लिये दोनों जुडेहुए हाथ गिर रहे हैं) । पाणिनी मुनिके सूत्रोंपर भाष्यकी रचना करनेहारा । योगके सूत्र वनानेहारा । और एक मुनि । (यह साँपके स्वरूपमें आकाशसे पाणिनीकी अंजलीमें गिराथा).

पतत्, (पु०) पत्+शतृ । पक्षी । परिंदह.

पतत्र, (पु०) पतन्तं त्रायते । त्रै+क । पक्षिओंका पर जो गिरते हुएको वचाता है.

पतत्रि, (पु०) पत्+अत्रिन् । पक्षी । पतत्री । परिंदह.

पतत्रिन्, (पु०) पतत्रः अस्य अस्ति+इनि । पक्षी । पतत्री । परिंदह । परवाला.

पतद्ग्रह, (पु०) पतत् (मुखादिभ्यः स्रवत्) जलादि गृह्णाति । मुख आदिसे गिरतेहुए जल आदिको लेता है । पीकदानी । एकप्रकारका पात्र.

पतयालु, (त्रि०) पत्+आलुच् । पतनशील । पातुक । गिरनेवाला.

पताका, (स्त्री०) पत्यते (बोध्यते) योधादिभेदः अनया । पत्+आकम् । जो जुदा २ लडनेवालोंको जतला देती है । वांस (लकडी) पर देनेलायक तीन कोनके स्वरूपवाला कपडेका टुकडा । झण्डी । सौभाग्य । नाटकका एक अंग । छंदमें एक चक्र.

पताकिन्, (त्रि०) पताका+अस्त्यर्थे इनि । पताकाधारी । झण्डी पकडनेहारा । ज्योतिषमें इस शकलका दुःखको सूचन करनेहारा एक चक्र (पु०).

पति, (पु०) पा+डति । भर्ता । स्वामी । खाविंद । शौहर । खसम । अधिपति (मालिक) (त्रि०) । स्त्रियां वा ङीप्.

पतित, (त्रि०) पत्+क्त । चलित । हिलाहुआ । गिराहुआ । अपने धर्मसे गिराहुआ.

पतिधर्म, (पु०) पत्युः धर्मः । पतिके सम्बन्धमें स्त्रीका कर्तव्य.

पतिप्राणा, (स्त्री०) पतिः एव प्राणो यस्याः । पतिही जिसका प्राण (जीवन) है । पतिव्रता स्त्री.

पतिलङ्घनम्, (न०) पत्युः लङ्घनं=तिरस्करणम् । दूसरे पतिसे विवाह करके मृतपतिका तिरस्कार करना.

पतिवत्नी, (स्त्री०) पतिः अस्ति अस्याः+मतुप् । नि० । नुक् । मको व । ङीप् च । सधवा स्त्री । सुहागन । पतिवाली औरत.

पतिंवरा, (स्त्री०) पतिं वृणीते । वृ+खच् । वह कन्या जो अपनी इच्छासे पतिको स्वीकार कर्ती है । कालाजीरा.

पतिंवरा, (स्त्री०) पतिं वृणोति-पति+वृ+सच्+मुम्) पतिको वरणे (स्वीकार) करनेवाली स्त्री.

पतिव्रता, (स्त्री०) पतिः (पतिसेवनं) व्रतं यस्याः । पतिकी सेवा करना जिसका नियम है । सती । अच्छी औरत । पतिकी आज्ञामें रहनेहारी.

पतिसेवा, (स्त्री०) पत्युः सेवा । पतिकी सेवा (नौकरी-खिदमत).

पत्ति, (पु०) । पद+क्तिन् । सेना (पैदल चलनेहारी फौज) । "क्तिन्" गति (जाना) । एक रथ, एक हाथी, ३ घोडे, ५ पैदल) इतनी संख्यावाली एक प्रकारकी सेनाका नाम.

पत्नी, (त्रि०) पति+यज्ञके सम्बन्धमें ङीप्-नुक् च । पतिकृतयज्ञवती । वह स्त्री जो यज्ञमें पतिके साथ रहती है । विधिसे विवाहीहुई स्त्री.

पत्र, (न०) पतत्+ष्ट्रन् । वाहनमात्र (असवारी) । पर्ण (पत्ता) । पक्षिओंका पक्ष (पर-पंख) लेखनका आधार द्रव्य (कागज) । चिट्ठी.

पत्रभङ्ग, (पु०) पत्रस्य इव भङ्गः (खण्डः) यत्र । स्तन-आदिपर पत्तोंके टुकडोंकी नाँई लिखागया तिलक-आदि । जहां पत्तेकी नाईं रचना है.

पत्ररथ, (पु०) पत्रं (पक्षः) रथ इव (गतिसाधनं) यस्य । जिसका पंख गाडीकी नाईं साधन है । पक्षी । परिंदह.

पत्रसूचि, (स्त्री०) पत्राणां सूचिः इव । पत्तोंकी मानों सूई है । कण्टक । कांटा । कंडा.

पत्राञ्जन, (न०) पत्रं (लेखनपत्रं) अज्यते अनेन । ल्युट् । जिसके द्वारा लिखनेका पत्र सजाया वा काला किया जाता है । मसी । स्याही.

पत्रिन्, (पु०) पत्रं (पक्षः) अस्ति अस्य+इनि । पंखवाला । पक्षी । शर (तीर) । श्येन (बाज) । रथी (गाडीपर चढाहुआ) । पर्वत और ताल.

पथ्, जाना । भ्वा० पर० सक० सेट् । पथति । अपथत्.

पथ, (पु०) पथ्+अच् । मार्ग । पथ । रास्ता.

पथिक, (त्रि०) पन्थानं गच्छति । पथिन्+कन् । परदेशमें जानेके लिये घरसे निकलकर मार्गमें जानेहारा । मुसाफिर । राही.

पथिन्, (पु०) पथ+इनि । पथ । अध्वा । मार्ग । रास्तह.

पथ्य, (त्रि०) पथे (चिकित्सानुसारिमार्गाय) हितम् । चिकित्सा (इलाज) के उपयोगी रोगी (बीमार) के सेवन करनेलायक वस्तु । और हितकारक (भलाई करनेहारा) । हरीतकी (हरीड) का वृक्ष (स्त्री०).

पद्, गति (जाना) दिवा० आ० सक० अनिट् । पद्यते । अपादि.

पद्, गति । जाना वा हर्कत करना । चुरा० आ० सक० सेट् । पदयते.

पद, (न०) पद्+क्विप् । श्लोकका चौथा भाग (पाद) । किरण (पु०).

पद, (न०) पद्+अच् । चिह्न (निशान) । स्थान । उद्यम । चीज । वह शब्द कि जिसके अन्तमें सुप् वा तिङ् प्रत्यय हो । श्लोकका एक पाद (हिस्सह).

पदग, (त्रि०) पदेन गच्छति । गम्+ड । पदातिंग । पांवसे जाताहै । पैदल.

पदवि–वी, (स्त्री०) पद+अवि वा ङीप् । पथ । रास्ता । दर्जा.

पदाजि, (पु०) पादाभ्यां अजति (पदादेशः) । पांवसे चलनेहारा.

पदाति, (पु०) पादाभ्यां अतति । अत्+इन् । पदादेशः । पैदल चलनेहारा.

पदाति, (पु०) पद्भ्यां अतति+अत्-अच् । पांवसे चलता है । पादचारी योद्धा । पैदल.

पदातिन्, (त्रि०) पद्भ्यां अतति+अत-णिनि । पैदल चलनेवाला । (पु०) पैदलयोद्धा.

पदारविन्द, (न०) पदं अरविन्दं इव । पाँव मानों कमलके समान हैं । पादपद्म.

पदार्थ, (पु०) पदबोध्यः अर्थः । शाक० । पदसे समझनेलायक अर्थ । अर्थ । अभिधेय । वस्तुमात्र । चीज.

पद्ग, (पु०) पद्भ्यां गच्छति । गम्+ड । पादगामी । पैदल चलनेहारा.

पद्धति–ती, (स्त्री०) पद+हन्+क्तिन् वा ङीप् । पगडण्डी । पथ । रास्तह । पङ्क्ति । कतार । पूजाआदिके जतानेहारा एक प्रकारका ग्रन्थ.

पद्म, (न०) पद्+मन् । कमल । हाथीके शरीरपरके बिन्दुओंका समूह । एक प्रकारका सेनाका चक्र जो कमलकी नाईं खडा कियाजाताहै । निधिभेद (दस अर्बकी संख्या) । पुष्करमूल । धातु । सीसा । नाडीचक्र.

पद्मक, (न०) पद्मं इव+कन् । कमलके समान खडी कीगई सेना । हाथीकी सूंड और मुख रंगीले दाग.

पद्मकलिका, (स्त्री०) पद्मस्य कलिका । कमलकलि । न खिलाहुआ कमल.

पद्मकेशर, (पु०) ६ त० । किञ्जल्क । कमलकी तिरी.

पद्मखण्डं-षण्डं, (न०) पद्मानां खण्डं+षण्डं । कमलोंका समूह.

पद्मगर्भ, (पु०) पद्मं (विष्णुनाभिपद्मं) गर्भं (उत्पादकं) यस्य । जो विष्णुकी नाभि (धुन्नी) के कमलफूलमें उपजा है । चतुर्मुख । ब्रह्मा । चारमुखवाला ब्रह्मा । कर्म० । कमलका मध्य.

पद्मगन्ध-गन्धि, (त्रि०) पद्मस्य गन्धः । कमलकी गंधवाला.

पद्मजः-जातः-भवः-भू-योनिः-संभवः, (पु०) पद्मात् जायते+जन्-ड । कमलसे उपजा । ब्रह्मा.

पद्मतन्तु, (पु०) पद्मस्य तन्तुः । कमलकी तांत । कमलकी तांतवाली डंडी.

पद्मनाभ, (पु०) पद्मं नाभौ यस्य+अच् । जिसकी नाभिमें कमल है । विष्णु.

पद्मपुराण, (न०) पद्मं अधिकृत्य कृतं+अण् । उसका लोप । कर्म० । महापुराणोंमेंसे एक पुराण.

पद्मबन्ध, (पु०) पद्माकारो बन्धः (सन्निवेशः) । जिसकी रचना कमलकी नाँई है । शब्दसम्बन्धी एक अलंकार.

पद्मबन्धु, (पु०) ६ त० । सूर्य । भ्रमर (भौंरा) । कमलफूलका मित्र । "पद्ममित्र".

पद्मभू, (पु०) पद्मं (विष्णोर्नाभिपद्मं भूः (उत्पत्तिस्थानं) यस्य ।) जिसकी उत्पत्तिका स्थान विष्णुकी नाभिकमल है । चतुर्मुख ब्रह्मा । "पद्मोद्भव" यही अर्थ होताहै.

पद्मराग, (न०) पद्मस्य इव रागो यस्य । जिसका कमलकी नाँई रंग है । लाल रंगका एक प्रकारका मणि । माणिक.

पद्मरेखा, (स्त्री०) पद्माकारा रेखा । हाथमें कमलके आकारकी रेखा लकीर-सामुद्रिक शास्त्रानुसार.

पद्मलाञ्छन, (पु०) पद्मं लाञ्छनं अस्य । कमल जिसका चिह्न है । सूर्य । ब्रह्मा । नृप । (राजा) । और कुबेर (धनका राजा).

पद्महस्त-कर, (त्रि०) पद्मं हस्ते यस्य । जिसके हाथमें कमल है । विष्णुका नाम.

पद्महास, (पु०) पद्मं इव स्फुटः हासः यस्य । कमलके समान प्रकाशमान हसनेवाला । विष्णुका नाम.

पद्मा, (स्त्री०) पद्मं अस्ति अस्याः+अच् । कमलवाली । लक्ष्मी । लवंग (लौंग) । मनसादेवी । कुसुम्भेका फूल.

पद्माकर, (पु०) पद्मानां आकरः । कमलोंकी खान । कमलोंसे भराहुआ बडा तालाव.

पद्माक्ष, (त्रि०) पद्मं इव अक्षिणी यस्य । पद्म-अक्षि-अ । कमलके समान नेत्रोंवाला ।-क्षः (पु०) विष्णुका नाम.

पद्मावती, (स्त्री०) पद्म+मतुप्-ङीप् । कमलवाली । लक्ष्मीका नाम । एक नदी.

पद्मालय, (पु०) पद्मं एव आलयः यस्य । कमलके घरवाला । ब्रह्माका नाम.

पद्मासन, (न०) पद्माकारं आसनं । एक प्रकारका योगासन । कमलासन । वाम (वाएं) पादको दहिने पदपर और दहिने पादको वाएं पदपर धरना पद्मासन नामसे प्रसिद्ध है.

पद्मासन, (न०) पद्मं इव आसनं । कमलफूलकी नाई आसन (वैठना) । योगशास्त्रमें प्रसिद्ध एक प्रकारका आसन.

पद्मिन्, (पु०) पद्मं (विन्दुजालं) अस्ति अस्य+इनि । विन्दुसमूहवाला । हस्ती । हाथी । कमलोंवाला (त्रि०).

पद्मिनी, (स्त्री०) पद्मानां समूहः सन्निकृष्टदेशो वा+इनि । कमलोंका समूह । कमलोंवाला देश । तालावकी लता (वेल) एक प्रकारकी औरत (स्त्री०).

पद्मेशय, (पु०) पद्मे शेते । शी+अच् । अलुक् समा० । कमलमें सोता है । विष्णु.

पद्य, (न०) पदं (चरणं) अर्हति । पद+यत् । कविसे रचागया चार चरणोंवाला (शायरोंका शेर) श्लोक । एक वाक्य.

पन्, स्तुति-तारीफ करना । भ्वा० आ० सक० सेट् । पनायते.

पनस, (पु०) पन्+असच् । वृक्षविशेष । कांटाल । कंटकीफल । कटहर.

पन्न, (त्रि०) पद्+क्त । गलित । च्युत । गिराहुआ ।

पन्न, (त्रि०) पद्+क्त । गिराहुआ । डूबगया । नीचे चलागया । उतर गया । "पद्+तन्" नीचे जाना (न०).

पन्नग, (पु०) पन्नं (अधोमुखं) यथा तथा गच्छति । पद्भ्यां न गच्छति वा । जो नीचे मुख जाता है वा पाँवसे नहिं जाता । गम्+ड । सर्प । सांप । "जातौ ङीप्" । सर्पिणी । सांपनी.

पन्नगाशन, (पु०) पन्नगान् अश्नाति । अश्+ल्यु । साँपोंको खाता है । गरुड.

पन्नद्धा, (स्त्री०) पदि नद्धा (बद्धा) नह्+क्त । पाँवमें बांधीगई । चर्मपादुका । जूती.

पम्पा, (स्त्री०) दक्षिणकी ओर एक नदी है । "पश्य लक्ष्मण! पम्पायाम्" रामायणम्.

पय्, गति-जाना । भ्वा० आ० सक० सेट् । पयते । अपयिष्ट.

पयश्चय, (पु०) पयसः चयः=समूहः । जलका समूह । ह्रद । कील.

पयस्, (न०) पा+असुन् (इकार अन्तमें होता है) । दुग्ध । दूध । जल । पानी.

पयःसुहृत्-द्, (पु०) पयसः सुहृद् । जलका मित्र । मयूर । मोर.

पयस्य, (त्रि०) पयसो विकारः+यत् । दुग्धविकार । दूधका विकार (दही आदि) । बिडाल (बिल्ला) (पु०) । अर्कपुष्पिका और कुटुम्बवाली औरत (स्त्री०).

पयस्विनी, (स्त्री०) पयस्+अस्ति अर्थे विनि । दूधवाली धेनु । गौ । नदी (पानीवाली) । काकोली । बकरी । जीवन्ती और रात्रि.

पयोजन्मन्, (पु०) पयसः जन्म यस्य । जलसे उत्पन्न हुआ । मेघ । बादल.

पयोद, (पु०) पयः ददाति+दा+क । जल देनेवाला । बादल । मेघ.

पयोधर, (पु०) पयांसि धारयति । धृ+णिच्+अच्-ह्रस्वः । जो पानीको धारण कर्ता है । मेघ (बादल) । स्त्रीका स्तन (औरतका मम्मा) । नारिकेल (नारियेल-नरेल).

पयोधि, (पु०) पयांसि धीयन्ते अत्र । पयस्+धा+कि । जहां पानी रक्खे जाते है । समुद्र (समुंदर).

पयोनिधि, (पु०) पयसां निधिः+धा+कि । जलोंका कोश । खजाना । समुद्र.

पयोराशि, (पु०) पयसां राशिः । जलोंका ढेर (समूह) समुद्र.

पयोव्रत, (न०) पयोमात्रपानरूपं व्रतं । केवल दूध पीनेवाला व्रत (फाका) । एकप्रकारका व्रत जो बारह दिनमें समाप्त होता है.

पर, (त्रि०) पृ+भावे अप् । कर्तरि अच् । वा । अन्यस्मिन् । भिन्न । और दूसरा । उत्तर । अगला । दूर । सीमापरिच्छिन्न (मापाहुआ) । सबसे अच्छा । मोक्ष (छुटकारा) । और केवल । ब्रह्म (न०) । शत्रु (पु०).

परकलत्रम्, (न०) परस्य कलत्रम् । दुसरेकी स्त्री । विगानी औरत.

परकीय, (त्रि०) परस्य इदं छ (ईय) । परसम्बन्धी । दूसरेका । उपनायिका (स्त्री०).

परगामिन्, (त्रि०) परं गच्छति । दुसरेके पास जानेवाला । दुसरेके साथ संबंध रखनेवाला । दुसरेका हितकारी । परोपकारी.

परच्छन्द, (पु०) परेच्छा । दूसरेकी मर्जी । "परस्य छन्देन छन्दो यस्य" पराधीन (त्रि०).

परच्छिद्रं, (न०) परस्य छिद्रम् । दुसरेका दोष.

परजन, (पु०) परः जनः । विगाना शक्स । दूसरा आदमी । अजनबी.

परजात, (त्रि०) परस्मात् जातः । दूसरेसे पैदा हुआ । वा दूसरेसे पुष्ट हुआ । (दूसरेके यत्नसे पालागया).

परजित्, (त्रि०) परेण जितः+जि+क्त । दूसरेसे जीता गया । दूसरेसे पालागया.

परतन्त्र, (त्रि०) परः तन्त्रं (प्रधानं) यस्य । दूसरा जिसका वडा है । पराधीन । दूसरेके काबूमें.

परत्व, (न०) परस्य भावः+त्व । वैशेषिकमतमें सिद्ध एकप्रकारका गुण और भेद.

परदाराः, (पु०) बहुवचन । परस्य दाराः । दुसरेकी स्त्री.

परदेश, (पु०) परः देशः । दुसरा मुल्क.

परदेशिन्, (पु०) परः देशः अस्ति अस्य देश+इनि । परदेसी.

परद्रोहिन्-द्वेषिन्, (त्रि०) परं द्वेष्टि वा द्रुह्यति+ उप० स० द्रुह+णिनि । दूसरेके साथ वैर करनेवाला.

परधनम्, (न०) परस्य धनम् । दूसरेका धन (दौलत).

परधर्म, (पु०) परस्य धर्मः । दूसरेका धर्म । कर्तव्य-ड्यूटी.

परध्यानम्, (न०) परं ध्यानम् । वडा ध्यान । गाढी समाधि.

परपक्ष, (पु०) परस्य=शत्रोः पक्षः । शत्रुका पक्ष पास्सा-पार्टी.

परपदम् (न०) परं पदम् । वडा अधिकार । वडा दरजा.

परपिण्ड, (पु०) परस्य पिण्डः । दूसरेके पिण्ड=अन्न । दूसरेसे दियागया भोजन.

परपिण्डाद, (त्रि०) परस्य पिण्डं (ग्रासं) अत्ति । अद्+अण् । सदा दूसरेके अन्नपर जीनेहारा । परान्नोपजीवी.

परपुरुष, (पु०) परः पुरुषः । दूसरा पुरुष (आदमी.)

परपुष्ट, (पु०) परया (काकया) पुष्टः । पुष्+क्त । कोकिल । कोइल (ये अपने अण्डेको फोडकर काउंनीकी बिलमें धर देतीं है । वहां रहनेसे काउंनी अपने बच्चेकी बुद्धिसे पालन कर्ती है ऐसा लोकमें प्रसिद्ध है) । "परभृत" यही अर्थ । दूसरेसे पालागया (त्रि०) । वेश्या (स्त्री०).

परपूर्वा, (स्त्री०) परः (इतरः) पूर्वो यस्याः । पहिले जिसका दूसरा है । जो अपनेसे अपकृष्ट (गुण आदिहीन) पतिको छोडकर किसी दूसरे उत्कृष्ट (गुणआदिवाला) का सेवन कर्ती है, इसप्रकारकी औरत (पुनर्भू) । दूसरा खाविन्द करनेहारी औरत.

परब्रह्मन्, (न०) परं ब्रह्म । वडा ब्रह्म । परमात्मा.

परभाग, (पु०) भज्यते (सेव्यते) अनेन भागः (उत्कर्षः) कर्म । अत्यन्तोत्कर्ष । वहुत वडाई । भागः (खण्डः) कर्म० । श्रेष्ठांश । अच्छा हिस्सह । ६ त० । दूसरेका भाग (हिस्सह).

परभाषा, (स्त्री०) परस्य भाषा । दूसरेकी भाषा (बोली) (जवान).

परभुक्त, (त्रि०) परेण भुक्तः+भुज्-क्त । दूसरेसे भोगा गया वा इस्तिमाल किया गया.

परभृत, (पु०) (परं-कोकिलडिंबं खडिम्बबुद्ध्या) बिभर्ति । भृ+क्विप् । जो कोईलके बच्चेको अपने बच्चेके खयालसे पालता है । नियोग । क्षेप । केवल । काक । कौआ अनन्तर.

परभोजिन्, (त्रि०) परस्य भुंक्ते+युज्+णिनिं । दूसरेके भोजनपर जीता है.

परम, (त्रि०) परं (परत्वं) माति । मा+क । उत्कृष्ट । ऊंचा । प्रधान । वडा । पहिला । और प्रणव (ओंकार).

परमम्, (अव्य०) अनुज्ञा । हुक्म । स्वीकार । कवूल करना.

परमर्मज्ञ, (त्रि०) परस्य मर्म जानाति+ज्ञा+क । दुसरेकी गुप्त (छिपीहुई) वातोंको जान्नेहारा.

परमर्षि, (पु०) परमं (ब्रह्म) ऋषति (गच्छति) जानाति वा । ऋष्-गति+इन्। जो ब्रह्मके पास जाता वा ब्रह्मको जानता है । ब्रह्मवेत्ता । ब्रह्मके जान्नेहारा । कर्म० । श्रेष्ठ मुनि । वहुत अच्छा सन्त.

परमहंस, (पु०) कर्म० । कुटीचकआदि चारप्रकारके संन्यासिओंमेंसे एक संन्यासी । आत्मत्वेन (अपनेको जान्नेहारा).

परलोक, (पु०) परः लोकः । दुसरा लोक (संसार । दुनिआं).

परमाणु, (पु०) कर्म० । वैशेषिकमें सिद्धहुआ पृथिवीआदि चार भूतोंके द्व्यणुकरूप अवयवोंको आरम्भ करनेहारा सूक्ष्मभूत । वहुत महीन चीज । झरोंखेमें पडीहुई सूर्यकी किरणमें जो महीन धूरीके समान उडताहुआ दृष्टिमें पडता है, उस एक रजका छठा भाग । जर्रा.

परमात्मन्, (पु०) कर्म० । "इस जगत्में सम्पूर्ण वडाईओंका आश्रय आत्मा है इस लिये वेदमें परब्रह्मको परमात्मा कहा है" परब्रह्म.

परमान्न, (न०) कर्म० । पायस (दूधसे वनीहुई खीर) । दूधमें पकाहुआ अन्न । यह देव आदिका पियारा होनेसे परम है.

परमायुस्, (न०) परमं (शेषावधिकं) आयुः (जीवितकालः) वडी उमर । ज्योतिष्में कहाहुआ मनुष्योंका सौवरिस । १०० वर्षकी अवस्था.

परमेश्वर, (पु०) कर्म० । जगत्की उत्पत्ति, स्थिति, और प्रलय करनेहारा सगुण तीन मूर्तिओंवाला ब्रह्म । चक्रवर्ती राजा.

परमेष्ठिन्, (पु०) परमे ब्रह्मणि तिष्ठति (लीयते) । स्था+इन् नि-षत्वम् । जो परमात्मामें लीन होता है । चार मुखवाला ब्रह्मा । और शालग्रामकी मूर्तिविशेष.

परम्परा, (स्त्री०) परं (अतिशयेन) पृणाति-पिपूर्ति वा । पृ-पॄ वा+अच् । जो वहुतायतसे भर देती है । वंश (खान्दान) । व्यवधान (फरक) । सन्तति (लगातार) । सिलसिला.

परम्पराक, (न०) परं (अतिशयेन) परा (श्रेष्ठा) परम्परा तया (धारया) आको (हिंसनं) यत्र । अक्-कुटिल जाना+घञ् । जहां वहुत अच्छे प्रकारसे किसी जीवको मारते हैं । किसी प्रकार अनिष्ट (वुराई) उत्पन्न न करनेसे अच्छी हिंसा । "कन् वा नपुंसकत्वम्" । यज्ञके लिये पशुका मारना (यज्ञकी हिंसा तो हिंसा नहिं).

परम्परीण, (त्रि०) परम्परया (धारया) आगतः (ख-६ त०) । लगातार चलाहुआ । सिलसिलेवार । अविच्छेद सन्ततत्याग.

परवत्, (त्रि०) परः (परायत्तता) अस्ति अस्य+मतुप् । मको व होता है । जिसे पराधीनता है । दूसरेके कावूमें आयाहुआ.

परवश, (त्रि०) परस्य वशः (आयत्तः) पराधीन । दूसरेके आधीन.

परवेश्मन्, (न०) परस्य वेश्म । दूसरेका निवासस्थान । परमात्माका निवासस्थान । हृदय.

परःशत, (न०) शतात् परे नि० । शताधिकसंख्या । सौसे अधिक संख्या.

परशु, (पु०) परं शृणाति शॄ+कु । जो शत्रुको मारता है । कुल्हाडा (इसी अर्थमें "पर्शु" भी होता है) । एक प्रकारका औजार.

परशुराम, (पु०) परशुधारी रामः । शाक० । जमदग्निका वेटा । भगवान्का अवतारविशेष । जिसने कुल्हाडेसे इक्कीसवार पृथिवीको क्षत्रियरहित किया.

परश्व(स्व)ध, (पु०) पृ० श्वि+ड=श्वाः (वृद्धिः)परस्य श्वं धयति । परस्य स्वं (काष्ठं) धयति । धे+क । जो दूसरेकी वृद्धिको वा लकडीको काट देता है । कुल्हाडा । एक प्रकारका अस्त्र.

परःश्वस्, (अव्य०) श्वः परे दिने नि० । आनेवाले अगले दिनसे परला दिन । परसों.

परःसहस्र, (न०) सहस्रात् परे (न०) । एक हजारसे ऊपरकी संख्या.

परस्पर, (त्रि०) पर+वीप्सायां द्वित्वं-सुट् च । अन्योन्य । आपसमें.

परस्मैपद, (न०) परस्मै (परोद्देशेन) फलं (फलवोधनं) यस्मात् । जिस्से दूसरेके लिये फलका ज्ञान हो । व्याकरणमें कहेहुए तिप् आदि (ये दूसरेके लियेही फलका वोधन कर्तेहैं).

परहित, (त्रि०) परस्य हितः=हितकरः । दूसरेका हितकारी । परोपकारी ।-तं (न०) । दूसरेका उपकार (भलाई).

परा, (अव्य०) पृ+आ। विमोक्ष (छुटकारा)। प्रातिलोम्य- (उलटापन)। प्राधान्य (वडापन)। धर्षण (बुरे वचन कहना)। आभिमुख्य (सामने)। त्याग (देना)। विक्रम (वहादुरी)। भृश (निहायत)। गति (जाना)। भङ्ग (टूटना)। अनादर। तिरस्कार। प्रत्यावृत्ति (लौटना)। मूलाधारमें रहनेहारा एक प्रकारका शब्द। "परा वह है कि जिस्से अविनाशी पुरुष जानाजाय" ब्रह्मविद्या (स्त्री०) दूसरा उपसर्ग जो नाश-तिरस्कार-लौटना, इन सव अर्थोंमें है.

पराक, (पु०) वारह दिनतक उपवाससे सिद्ध होनेयोग्य प्रायश्चित्तरूप एक प्रकारका व्रत। १२ दिनका फाका। तरवार। एक प्रकारका रोग। छोटा.

पराक्रम, (पु०) परा+क्रम्+घञ्। वल (जोर)। देहज सामर्थ्य। वहादुरी.

पराक्रमिन्, (त्रि०) पराक्रमः अस्ति अस्य+इन्। पराक्रमी। वलवाला। धैर्यवाला। वहादुर.

पराक्रान्त, (त्रि०) परा+क्रम्+क्त। दृढ। वहादुर। उत्साहवाला। आक्रमण किया गया। हमला किया गया। लौटाया गया.

पराग, (पु०) परागच्छति। परा+गम्+ड। धूलिमात्र। धूर। पुष्परज। फूलोंका रज (जर्रा)। केसरका चूर्ण आदि। उपराग (ग्रहण)। चन्दन.

पराङ्मुख, (त्रि०) पराक् (प्रत्यावृत्तं) मुखं यस्य। लौटा है मुख जिस्का। विमुख (मुं मोडेहुए)। आरम्भ कियेहुए कामसे हटना.

पराचितं, (त्रि०) परेण आचितः (पुष्टः) व्याप्तो वा। दूसरेसे पुष्टहुआ वा घिराहुआ। आ+चि+क्त। दूसरेसे पालाहुआ.

पराचीन, (त्रि०) परागभवः। पराच्+ख। पराङ्मुख। मुं मोडेहुए। परकालिक। पिछले समयका। पुराना.

पराजय, (पु०) परा+जि+अच्। पराभव। तिरस्कार। हठाना। हार.

पराजि, भ्वा० आ० (पराजयते)। शिकस्त खाना। हारना। वश करना.

पराजित, (त्रि०) परा+जि+क्त। जीतागया। वश किया-गया। शिकस्त दियागया। कानूनसे हारगया.

पराजिष्णु, (त्रि०) परा+जि+इष्णुच्। जीतनेवाला। जीता हुआ। शिकस्तदिया हुआ.

पराधीन, (त्रि०) पराधि+ख। परस्य आधीनो वा। परायत्त। दूसरेके आधीन। परवश। दूसरेके मातहत.

परान्न, (त्रि०) परस्य अन्नं एव अन्नं अस्य। दूसरेका अन्नही जिसका अन्न है। दूसरेके अन्नपर जीनेहारा। ६ त०। अन्य स्थान। दूसरेका अन्न (न०).

पराभव, (पु०) परा+भू+अप्। तिरस्कार। बेइज्जती। अभिनव। दवाव। विनाश। तवाही.

पराभूत, (-त्रि०) परा+भू+क्त। हरायागया। जीतागया। दवाया गया। तिरस्कार कियागया.

पराभूति, (स्त्री०) परा+भू+क्तिन् तिरस्कार। पराजय। पराभव। हार.

परामर्श, (पु०) परा+मृश्+घञ्। युक्ति (दलील)। विवेचन (विचार)। न्याय आदिमें कहाहुआ व्याप्ति (हेतु और साध्यका इकट्ठा रहना) विशिष्टतासे पक्षका ज्ञान जैसे यह पर्वत वह्निव्याप्य धूमवाला है अर्थात् "इस पर्वतमें आग है".

परामर्शन, (न०) परा+मृश्+अन्। स्मरण। यादगिरी। विचार। खयाल.

परामृष्ट, (त्रि०) परा+मृष्+क्त। स्पृष्ट। छूआगया। पकडा-गया। विचारागया। दवायागया.

परायण, (न०) परं अयनं (णत्वम्)। अत्यन्त आसक्ति। किसी काममें वहुत लगजाना। उत्तमाश्रम। ६ व०। वहुतही लगनेहारा। जैसे "धर्मपरायणः" (धर्ममें वहुत लगाहुआ)। तत्पर और पियारा (त्रि०).

परारि, (अव्य०) पूर्वतरवत्सर। पहिलेसे पहिला वर्ष। परार। गत तृतीय वत्सर (पिछला वरिस)। परोरिः। अत्यन्तशत्रु (वडाही दुश्मन) (त्रि०).

परार्ध, (न०) ऋध्+अच् कर्म०। चरम संख्या। पिछली गिनती। १००००००००००००००००० ब्रह्माकी आयु-का दूसरा आधा.

परार्ध्य, (त्रि०) परार्ध (चरमसंख्यां उपचारात्) श्रेष्ठत्वं अर्हति यत्। श्रेष्ठ। वहुत अच्छा.

परावर्त, (पु०) परा+वृत्+घञ्। परीवर्त। विनिमय। वदलना। वदल। लौटना.

परावर, (त्रि०) परः अवरश्च। दूर और निकट। आगे पीछे। पहिला पिछला। नीचे ऊपर। पौराणिक.

परावृत्, भ्वा० आ०। परावर्तते। लौटना। मुडना.

परावृत्त, (त्रि०) परा+वृत्त+क्त। लौटाहुआ। मुडाहुआ। घुमायागया। वदलागया। उलटा पडगया (जैसे कि न्याय-इन्साफ)। लौटा दियागया.

पराशर, (पु०) व्यासदेवका पिता। एक मुनि.

परासन, (न०) परा+अस्+ल्युट्। मारण। मारना.

परासु, (त्रि०) परागता असवो यस्य। जिसके प्राण दूर हो गये। मृत। मरगया.

परास्त, (त्रि०) परा+अस्+क्त। निरस्त (निकाला गया।) पराजित (हरायाहुआ).

पराह, (पु०) परं (उत्तरं) अहः। कर्म० टच् समा० (पुँलिङ्ग होता है)। परदिन। दूसरा दिन.

पराह्ण, (पु०) परं अहः । एकदेशि समा०टच् समा०अह्ना-देशः । णत्वं । दिनका पिछला भाग । स्मृतिमें कहाहुआ अपराह्ण काल । दिनका पिछला पहिर.

परि, (अव्य०) सर्वतः (चारों ओरसे) । वर्जना । व्याधि (बीमारी) । शेष (बाकी) । निरसन (निकालना) । पूजा । भूषण । उपरम । शोक । सन्तोष । बोलना । बहुत । त्याग और नियम.

परिकर, (पु०) परि+कृ+अप । पर्यङ्क (पलंग) । परिवार (खान्दान) । सभारम्भ (शुरू) । समूह । अच्छी तरह-से अंगोंको बांधना । कमर कसना । विवेक (विचार) और सहचारी (साथी).

परिकर्तन, (न०) परि+कृत+ल्युट्+अन । काटना । काट-डालना । व्यथा पहुंचाना.

परिकर्तृ, (पु०) परि+कृत+तृ । बडे भाईके विवाहे विन छोटे भाईका विवाह करानेवाला पुरोहित । काटनेवाला.

परिकर्मन्, (न०) कर्म (संस्कारादि) तत् यस्मात् वा ५ व० । देहका संस्कार (सजावट) । केशरआदि अंगोंपर मलनेका द्रव्य । भूषण (गहना-जेवर) । उब-टन । लगाना । शरीरका धोना । ६ व० । सेवक (नौकर) (त्रि०).

परिकल्पन, (न०) परि+क्लृप्+अन । रचना करना । नियत करना । निर्णय करना । विभाग करना.

परिकल्पित, (त्रि०) परि+क्लृप्+क्त । निर्णय कियागया । रचागया । बनायागया । विभाग कियागया । दियागया.

परिकीर्ण, (त्रि०) परि+कॄ+क्त । खिलरा हुआ । फैलाया-गया । घिराहुआ.

परिकीर्तन, (न०) परि+कृत+अन । घोषित करना । ढण्डोरा देना । कहना । बोलना । अहंकार करना । नाम लेना.

परिकीर्तित, (त्रि०) परि+कृत+क्त । घोषित किया-गया । मशहूर कियागया । कहागया । अहंकार किया-गया.

परिकृत्, चु० उभ० परिकीर्तयति-ते । वर्णन करना । घो-षणा करना । प्रसिद्ध करना.

परिक्रम, (पु०) परि+क्रम्+घञ् । क्रीडा आदि (खेल वगैरह) । पूजादि प्रदक्षिणा करनेके लिये पाँवसे गमन (जाना).

परिक्रय-क्रयणम्, (पु० न०) परि+क्री+अ+वा अन । मजूरी । किराया । मजूरीपर नियोग करना । खरीदना.

परिक्लान्त, (त्रि०) परि+क्लम्+क्त । थका हुआ । क्षीण होगया.

परिक्लिष्ट, (त्रि०) परि+क्लिश्+क्त । खिजाया गया । कष्ट दिया गया.

परिक्री, क्र्या० आ० । परिक्रीणीते । खरीदना । क्रय करना.

परिक्षित्, (पु०) अभिमन्युसे उत्तरामें उत्पन्न किया हुआ कुरुवंशका एक राजा । "परिक्षित" यही अर्थ होताहै.

परिखा, (त्रि०) परितः खन्यते । कन्+ड । चारों ओर-से खोदी जाती है । पुर आदिमें शत्रु आदि प्रवेश न करसकें इसलिये गढारूप पानी रहनेकी जगह । खाई.

परिखिन्न, (त्रि०) परि+खिद्+क्त । क्षुब्ध । कष्ट पहुं-चायागया । तकलीफ दियागया.

परिख्याति, (स्त्री०) परि+ख्या+क्तिन् । विख्याति । यश । शोरत । प्रसिद्धि.

परिगत, (त्रि०) परि+गम्+क्त । प्रान्त (सिरा) । ज्ञात (जानाहुआ) । विस्मृत (भूलाहुआ) । चेष्टित (हर्कत किया गया) । वेष्टित (घिराहुआ) । और गत (चला-गया).

परिगम-परिगमनम्, (पु० न०) परि+गम्+अ+वा अन । चारों ओर जाना । घेरा देना । फैलाना । लाभ करना । जान्ना । इरादा करना । निश्चय करना.

परिगलित, (त्रि०) परि+गल्+क्त । डूबगया । गिरगया । पिसलगया । छिपगया । पिघलगया । बहगया.

परिगूढ, (त्रि०) परि+गुह्+क्त । पूरा छिपा हुआ । अ-त्यन्त गुप्त । न जानागया । कठिनतासे समझागया.

परिगृहीत, (त्रि०) परि+ग्रह्+क्त । स्वीकार कियागया । समझागया । पकडागया । आलिंगन कियागया । कृपा कियागया । विवाह कियागया.

परिग्रह, परि+ग्रह्+अच् । स्वीकार (कबूल करना) सैन्यका पश्चाद्भाग (सेनाकी पीठ) । "कर्मणि घ" । भार्या (औरत) जोरू । परिजन (नौकर-चाकर) । "करणे अप्" । शपथ (कसम).

परिघ, (पु०) परि+हन्+क नि० । लोहेका मुद्गर । लोहेसे मढाहुआ लट्ठ मुद्गर । शूल । घट (कलसा-घडा) । गृह (घर) । मोहला । "विष्कम्भ" आदि २७ स योगोंमेंसे १९ सवां.

परिचय, (पु०) परि+चि+अच् । ज्ञातस्य पौनःपुन्येन ज्ञानम् । जानेहुएको वार २ जान्ना । वा कैफियत् । सं-स्तव (तारीफ) । प्रणय (पियार).

परिचर्या, (स्त्री०) परिचर+क्यप् । सेवा । आधीनता । शुश्रूषा । पूजा.

परिचाय्य, (पु०) परिचीयते (संस्क्रियते) असौ । चि+ ण्यत् । जिसका संस्कार किया जाय । यज्ञाग्नि । यज्ञकी आग.

परिचारक, (पु०) परि+चर्+ण्वुल् । सेवक । भृत्य । (खिदमतगार).

परिच्छद, (पु०) परि+छद्+घ ह्रस्वः। उपकरण (सामान) (हाथी, घोडा, रथ, पैदल वगैरह)। कपडा गहना आदि। परिवार। "सेना परिच्छदस्तस्य" रघुः.

परिच्छेद, (पु०) परि+छिद्+घञ्। विशेषरूपसे इयत्ताकरण। खासतौरपर हद्द बांधनी। ग्रन्थके ठहिरावकी जगह (सर्ग-अध्याय आदि)। सीमा (हद्द)। विचार.

परिजन, (पु०) परिगतः जनः। चारोंओरके लोग। परिवार। प्रतिपाल्यजन (पालन करनेलायक जीव पुत्रादि).

परिणत, (त्रि०) परि+नम्+क्त। णत्वम्। परिपक्व। पकाहुआ। वृद्धिंगत (वढाहुआ)। दूसरी अवस्थाको पहुंचा। टेढे दांत चलानेहारा हाथी.

परिणय, (पु०) परि+नी+अच्। विवाह। शादी.

परिणाम, (पु०) परि+नम्+घञ्। प्रकृतिका अन्यथाभाव। विकार। स्वभावका वदलना। वदलना। शेष। वाकी। नतीजा। अर्थालंकार.

परिणाह, (पु०) परि+नह्+घञ्। विस्तार। फैलाव.

परिणेतृ, (पु०) परि+नी+तृच्। विवाह करनेहारा। भर्ता। खाविंद.

परितस्, (अव्य०) परि+तसिल्। सर्वतः। चारोंओरसे.

परिताप, (पु०) परितप्यते (भावादौ घञ्)। तपना। दुःख। उष्णता (गरमी)। शोक (अफसोस)। भय (डर)। कम्प (कांपना)। एक प्रकारका नरक.

परित्राण, (न०) परि+त्रै+ल्युट्। रक्षण। वचाना। बुराईमें लगेहुएको निवारण करना (हटाना).

परिदान, (न०) परिवर्तेन दानम्। दा+ल्युट्। विनिमय। द्रव्यान्तरग्रहणेन द्रव्यान्तरदानं। वदलना। एक चीज लेकर दूसरी देना.

परिदेवन, (न०) परि+दिव+ल्युट्। अनुशोचना। वार २ सोचना। विलाप (रोना)। कियेगये कामको सोचना कि "अनुचित किया है".

परिधान, (न०) परि धीयते। पहिरना। परि+ध+कर्मणि ल्युट्। परिहितवस्त्र। पहिराहुआ कपडा.

परिधि, (पु०) परि+धा+कि। चन्द्रमा और सूर्यके पास मेघ (वादल) आदिके निकट होनेसे उत्पन्नहुआ वेष्टन (घेरा) के स्वरूपमें मण्डल। सूर्यकी सभा। चन्द्रकी सभा। परिवेष। गोल। दायरा। गूलरके वृक्षकी शाखा। चारोंओर और पास.

परिधिस्थ, (त्रि०) परिधौ तिष्ठति। स्था+क। घेरेमें रहताहै। परिचारक। चाकर। लडाईमें रथीको वचानेकेलिये चारोंओर ठहरीहुई सेना.

परिनिष्ठा, (स्त्री०) परि+नि+स्था+अङ्। पूर्णज्ञान। पूरी समझ। पूरा परिचय। पूरी समाप्ति (खातिमा)। पूरी सीमा (हद्द).

परिनिष्ठित, (त्रि०) परि+नि+स्था+क्त। पूर्णज्ञानी। किसी विषय पूरा जानाहुआ.

परिपक्क, (त्रि०) परि+पच्+क्त+व। पूरा पकाहुआ। पूरा जलाहुआ.

परिपन, (न०) परिपन्यते (व्यवह्रियते) अनेन। पन्+घञ्। मूलधन। मूडी.

परिपन्थक, (पु०) परिपन्थयति (दोषाख्यानं गच्छति)+ण्वुल् वा कन्। पन्थादेशः। पन्थानं वर्जयित्वा गच्छति। जो दोषको प्रकट कर्ता है वा जो मार्गको रोककर जाता है। शत्रु (दुश्मन).

परिपन्थिन्, (पु०) परि+पन्थि+इनि। शत्रु (दुश्मन).

परिपाक, (पु०) परि+पच्+घञ्। नैपुण्य (चतुराई)। उत्तमपाक। अच्छी तरहसे पकना.

परिपाटि–टी, (स्त्री०) परि+पट्+इन्। अनुक्रम। सिलसिला। कायदह। रीति.

परिप्लव, (न०) परि+प्लु+अच्। चञ्चल। अस्थिर। जो कायम न हो.

परिवर्ह, (पु०) परि+वर्ह+घञ्। राजाके योग्य हाथी, घोडा, रथ आदि सामान। हस्त्यश्वरथादि परिच्छद.

परिभ(भा)व, परि+भू+अप्-घञ् वा। अनादर। तिरस्कार। हिकारत। वेइज्जती.

परिभाषण, (न०) परि+भाष्+ल्युट्। निन्दासे दुष्टवचनवाली वातचीत। और नियम (कायदह).

परिभाषा, (स्त्री०) परि+भाष्+अ। कृत्रिमसंज्ञा। वनावटी नाम। अवयवार्थका अनादरकर समुदायअर्थ। विशेष नाम.

परिभूत, (त्रि०) परि+भू+क्त। तिरस्कृत। अनादृत। वेइज्जत कियाहुआ। हिकारत कियागया.

परिमण्डल, (त्रि०) परितो मण्डलं। चारोंओर गोल। वर्तुलाकार। गोल शकल.

परिमल, (पु०) परि+मल्+अच्। केसर चंदन आदिका मलना। मलनेसे निकली सुगन्धि.

परिमाण, (न०) परिमीयते अनेन। परि+मा+ल्युट्। जिस्से परिमाण किया जाय। माप। वरावरी। अरज। प्रमाण। समता। परिसर.

परिमित, (त्रि०) परि+मा+क्त। कृतपरिमाण। मापागया। युक्त। मुनासिव। ठीक माप। यथार्थ परिमाण.

परिमितकथ, परिमिता कथा यस्य। थोडा वोलनेवाला.

परिमिताभरण, (त्रि०) परिमितानि आभरणानि यस्य व० स०। थोडेसे भूषण (जेवर) पहिरा हुआ.

परिमितायुस्, (त्रि०) पिरिमितं आयुः यस्य। थोडीसी आयु (उमर) वाला.

परिमिताहार-भोजन, (त्रि०) परिमितः आहारः यस्य। थोडा खानेवाला। अल्पभोजन.

परिमेय, (त्रि०) परि+मा+यत् । मापनेलायक । थोडासा । परिच्छिन्न.

परि(री)रम्भ, (पु०) परि+रभ्+घञ्-मुम् च वा दीर्घः । आलिङ्गन । छातीसे लगाना । बगलगिरी.

परिवर्जन, (न०) परिवर्ज्यते असुभिः अनेन । वृज्+णिच्+ल्युट् । मारण । मारना । वृज्+भावे ल्युट् । त्याग । छोडना । देना.

परि(री)वर्त, (पु०) परि+वृत्+भावे घञ् वा दीर्घः । विनिमय । बदली । आधारे घञ् । युगके अन्तका समय । अध्यायआदि । "कर्तरि अच्" । कूर्मराज (कच्छुओंका राजा) । "भावे ल्युट्" परिवर्त्त.

परिवह, (पु०) परि+वह्+अच् । सात वायुओंमेंसे एक.

परि(री)वाद, (पु०) परि+वद्+घञ् वा दीर्घः । अपवाद । निन्दा । कलंक । बदनामी । गाली.

परिवादिनी, (स्त्री०) परितो वदति (सष्टाक्षरं इव वदति) । जो साफ अक्षरोंकी नाईं बोलती है । वद्+णिनि । सात तारोंवाली बीन । निन्दा करनेवाली स्त्री.

परि(री)वाप, (न०) । वप्+णिच्+घञ् । मुण्डन (मुंडना) । ल्युट् । परिवापण.

परिवापित, (त्रि०) परि+वप्+णिच्+क्त । मुण्डित । मुण्डाहुआ.

परि(री)वार, (पु०) परिव्रियते असौ । अनेन वा । परि+वृ+घञ् वा दीर्घः । परिजन । कुटुंब आदि । तरवारकी मिआन.

परि(री)वाह, (पु०) परि+वह्+घञ् वा दीर्घः । जलोच्छ्वास । पानीका प्रवाह । चारोंओर पानीके उछलनेसे । नल.

परिविन्न, (त्रि०) परिविद्यते असौ । कर्मणि क्तः । छोटे भाईके विवाहसमय न विवाहा हुआ बडा भाई । वैसी बहिन (स्त्री०) । अनुजविवाहकाले अनूढ ऐसा ज्येष्ठ.

परिविन्ति, (पु०) परि विद्यते असौ । परि+विद्+कर्मणि क्तिच् । बडे भाईके न विवाहनेपर विवाहागया छोटा भाई । व्याहेहुए छोटे भाईका बडा भाई (न विवाहाहुआ).

परिवृढ, (त्रि०) परि+वृह्+क्त । अधिप । प्रभु । मालिक । (स्वामी).

परिवेदन, (न०) परिवर्जयित्वा उचितकालं वेदनम् । (विवाहः लाभो वा) । बडे भाईके बैठे रहनेपर छोटेका विवाह होजाना.

परिवेश, (पु०) परि+विश-व्याप्ति+भावे घञ् । वेष्टन । घेरा । बादल आदिके छूनेसे उत्पन्न हुआ चन्द्रमा और सूर्यके मण्डलका घेरा । दायरा । परिधि.

परिवेषण, (न०) परि+विष्+णिच्+ल्युट् । भोजनके लिये अन्न आदिका भोजनपात्र । भोजनका परोसना । वेष्टन । घेरा । घेरना.

परिवेष्टृ, (पु०) परि+विष्-तृच् । भोजनके लिये प्रतीक्षा.

परिव्राज्, (पु०) परि+व्रज्+क्विप्-नि० । सब कर्मोंको छोडकर (कर्मोंके फलका परित्याग कर) और आश्रममें जानेहारा । चौथे आश्रमवाला । यति । संन्यासी.

परिव्राज-क (पु०) । परित्यज्य सर्वकर्माणि व्रजति । व्रज्+घञ्-ण्वुल् वा । सब कामोंको छोडकर जाता है । चौथे आश्रमवाला यति । संन्यासी.

परिशिष्ट, (न०) परि+शिष्+क्त । "अस्ति अर्थे अच्" । अवशिष्टांशप्रतिपादक ग्रन्थ । समाप्ति हो चुकनेपरभी बाकी भागको कहनेहारा ग्रन्थ । क्रोडपत्र । खतमहुआ २ बाकी.

परिशीलन, (न०) परि+शील्+अन । स्पर्श । छूना । संबंध । मेल । बातचीत । अभ्यास । किसीवस्तुमें आसक्ति.

परिशुद्धि (स्त्री०) परि+शुध्+क्तिन् । पूरा संस्कार । पूरी सफाई.

परिशुष्क, (त्रि०) परि+शुष+क्त । पूरा सूकगया.

परिशेषण, (न०) परि+शिष्+अन । शेष । बाकी । बचाहुआ.

परिश्रम, (पु०) परि+श्रम्+घञ् न वृद्धिः । व्यायाम । ऊठ बैठ आदिकी कसरत । क्लेशकारक आयास । मिहनत.

परिश्रय, (पु०) परि+श्रि+आधारे अच् । सभा । मजलिस । कमेटी.

परिश्रान्ति, (स्त्री०) परि+श्रम्+क्तिन् । थकावट । कष्ट । क्षीणता । परिश्रम । यत्न.

परिषद्, (स्त्री०) परितः सीदति अस्याम् । सद्+क्विप् । चारों ओर बैठता है जिसमें । सभा । धर्मका उपदेश करनेहारा पण्डितोंका समूह । धर्मसभा.

परिषद, (पु०) परितः सीदति (गच्छति) सद्+अच् । चारों ओर जाता है । अनुचर । चाकर । पार्श्वचर । पास २ विचरनेहारा । परिश्रम । मिहनत । तकलीफ.

परिषद्वल, (त्रि०) परिषद्+अस्त्यर्थे वलच् । सभावाला । सभासद । सभ्य । मैम्बर । मजलिसका.

परिष्क(स्क)न्द, (त्रि०) परिष्कन्द्यते (पूर्यते) । परि+स्कन्द+घञ् वा परपुष्ट । दूसरेसे पालागया । "क्त" परिस्कन्न यही अर्थ.

परिष्कार, (पु०) परि+कृ+घञ्-सुट् च । भूषण (गहना-जेवर) । स्वच्छ । साफ । सजावट । तयार करना । पकाना । सामान.

परिष्वङ्ग, (पु०) परि+स्वञ्ज+घञ् । आलिङ्गन । मिलना । बगलगिरी.

परिसर, (पु०) परि+सृ+अप् । नदी, नगर, वा पर्वत आदिके पासका स्थान । मृत्यु (मौत) । विधि । (नियम).

परिसर्ग, (पु०) परितः सृज्यते । सृज्+घञ् । चारों ओरसे लपेटना (परितो वेष्टन) । चारों ओर जाना (समन्तात् गमन).

परिसर्या, (त्रि०) परि+सृ+यत् । सर्वतो गमन । चारों ओर जाना । सेवा.

परिसंख्या, (स्त्री०) परि+सम्+ख्या+अङ् । गिनती । राशि । जमा । नम्बर.

परिसंख्यात, (त्रि०) परि+सम्+ख्या+क्त । गिनागया । समझागया.

परिस्यन्द, (पु०) परि+स्यन्द्+घञ् । चारों ओर चलना । कांपना फूल और पत्तेआदिकी रचना । सफाई । चाकर । नौकर । परिवार.

परि(री)हार, (पु०) परि+हृ+घञ् वा दीर्घः । त्याग देना । दोषापाकरण । दोष दूर करना । अनादर (बेइज्जती) । छोडना । तोडना.

परि(री)हास, (पु०) परि+हस्+घञ् वा दीर्घः । केलि । क्रीडा । मखौल । ठट्ठा.

परीक्षक, (त्रि०) प्रमाणेन परीक्षते । परि+ईक्ष्+ण्वुल् । प्रमाण (सबूती) की रचनासे विषयको जाचनेहारा । परीक्षा करनेहारा । इम्तिहान करनेहारा । मुम्तहिन.

परीक्षण, (न०) परि+ईक्ष्+ल्युट् । प्रमाणसे वस्तुका निरूपण करना । परखना.

परीक्षा, (स्त्री०) परि+ईक्ष्+अ । दुष्टादुष्टत्वावलोकन । बुराई भलाई देखना । प्रमाणसे वस्तुको पहिचानना । "स्मृतिमें" बुरे भलेको दिखलानेहारा तुला (तकडी) आदिका प्रमाण (माप).

परीक्षित्, (पु०) परि+ईक्ष्+क्विप् । परीक्षा करनेवाला । अभिमन्युका पुत्र और अर्जुनका पौत्र (पोता) एक राजा.

परीक्षित, (त्रि०) परि+ईक्ष्+क्त । परीक्षा कियागया । इम्तिहान लियागया.

परुत्, (अव्य०) पूर्वस्मिन् वर्षे+उत् परश्चान्तादेशः । गतवत्सर । पिछला वरिस । पिछला साल.

परुत्न, (त्रि०) परुद्भवः+त्न । गतवर्षभव पदार्थ । पिछले सालका । पिछले वरिसका.

परुष, (न०) पॄ+उषन् । निष्ठुरवचन । सख्तकलाम । बुरा बोलना । गाली । चित्रवर्ण (रंगबरंगी) । और कठोर (सखत) (त्रि०).

परुस्, (न०) पॄ+उसि । ग्रन्थि (गांठ) और पर्व (गिरह).

परेत, (त्रि०) परा+इण्+क्त । मृत । मरगया । दूरचलागया.

परेतराज–ज्, (पु०) त० । टच् समा० । परेतेषु राजते । राज्+अच्+क्विप् वा । मरेहुओंका राजा वा जो मरेहुओंमें प्रकाशता है । यमराज । यम । मौतका राजा.

परेद्युस्, (अव्य०) परस्मिन्नहनि । पर+एद्युस् । परदिन । दूसरा दिन.

परोक्ष, (अव्य०) अक्ष्णः परम् । (अव्य०) सुट्-नि० । आँखोंसे परे । अप्रत्यक्ष । छिपाहुआ । जो हाजिर न हो । "परोक्षे लिट्" सि० कौ०.

परोक्षवृत्ति, (त्रि०) परोक्षा वृत्तिः यस्य । छिप कर रहनेवाला.

पर्जन्य, (पु०) पृषु सेचने-सींचना+अन्य-जान्तादेशः । इन्द्र । मेघ । बादल । "यज्ञाद्भवति पर्जन्यः" इति मनुः । बादलका शब्द.

पर्ण, हरितभाव । हरा होना । चु० उभ० सक० सेट् । पर्णयति-ते.

पर्ण, (न०) पॄ+न । पर्ण्+अच् वा । पत्र (पत्ता) । पक्ष (पर) । पलाशका वृक्ष (पु०) ताम्बूल (पान)(न०) पत्तेवाला (त्रि०).

पर्णनर, (पु०) पर्णनिर्मितः नराकारः शवः । पत्तोंका बनाहुआ मनुष्यके स्वरूपका मुद्रा । पलाशके पत्तोंका पुतला, जिसे हिन्दुलोग पलाशका पता न मिलनेपर ऊनसे लपेट जौंकी पीठी मल शवका प्रतिनीधि समझकर दाह कर्ते हैं.

पर्णलता, (स्त्री०) पर्णानां लता । नागवल्ली । पर्णवल्ली । पानकी बेल.

पर्णशय्या, (स्त्री०) पर्णानां शय्या । पत्तोंकी शया बिछौना (सेज).

पर्णशाला, (स्त्री०) पर्णनिर्मिता शाला । शाक० । पत्रनिर्मित कुटीर । पत्तोंकी बनीहुई कुटिआ.

पर्णास–सि, (पु०) पर्णानि अस्यति । अस्+अच्-इन् वा । पत्ते फेंकती है । तुलसी.

पर्द्, अपानवायुक्रिया । नीचेसे हवा छोडना । पद्द मारना । भ्वा० आत्म० अक० सेट् । पर्दते । अपर्दिष्ट.

पर्वणी, (स्त्री०) पर्व+करणे ल्युट् स्त्रियां ङीप् । पूर्णमासीका दिन । नये चंद्रमाका दिन । उत्सवदिन । जोडोंकी व्याधि (बीमारी) मरना.

पर्पट, (पु०) पर्प+अटन् । पापड नामसे प्रसिद्ध पीठीका पतला बटकभेद.

पर्यङ्क, (पु०) परिगतः अङ्कं । प्रा० । खट्वा । खाट । मंजा । पलंग । एक प्रकारका आसन जो योगी लोक अभ्यास करते हैं । योगपट्ट । वीरासन । कपडे आदिसे पीठ जानु और लातोंको बांधना वा काबू करना.

पर्यटन, (न०) परितः अटनं । चारोंओर घूमना । बार २ घूमना सैर करना । पुनःपुनर्भ्रमण.

पर्यनुयोग, (पु०) परितः अनुयोगः (प्रश्नः)। अच्छी-तरह पूछना । सवाल.

पर्यन्त, (पु०) परिगतः अन्तं (सीमां)। हद्दतक पहुंचा हुआ । गांव वा वनआदिकी शेष सीमा.

पर्यन्तभू, (स्त्री०) पर्यन्तस्य भूः। ग्राम आदिकी शेष सीमाका स्थान । परिसर । हद्दकी जगह.

पर्यय, (पु०) परित्यज्य शास्त्रलौकिकमर्यादां अयः। इण्+अच्। ऐसा आचार (चालचलन) कि जो शास्त्र और लोकव्यवहारसे बाहिर है। समयका खोना। कर्तव्यका भूलना.

पर्यवस्था, (स्त्री०) परि+अव+स्था+अङ् । विरोध । प्रतिपक्षपात । बर्खिलाफ ठहरना । (णिच्) हरएक जगहमें होना । साबित करना.

पर्यस्त, (त्रि०) परि+अस्-फेंकना+क्त । विक्षिप्त (फेंका हुआ) । पतित । गिराहुआ । हत (माराहुआ).

पर्याण, (न०) परि+या+ल्युट् । पृ० । अश्वसज्जा (घोडेकी काठी) । पल्ययन (जींद) । " इण्+ल्युट् " । "पर्ययणम्" यही अर्थ.

पर्याप्त, (न०) परि+आप्+भावे क्त । यथेष्ट (इच्छापूर्वक) । पूरा २ । तृप्ति (रजना) । सामर्थ्य (ताकत) । निवारण (हटाना) । और योग्यता (लायकपन).

पर्याय, (पु०) परि+इण् घञ् । अनुक्रम (सिलसिला) । प्रकार (तरीका) । निर्माण (रचना) । सम अर्थको बोधन करनेहारा शब्द । एक जैसे अर्थवाला लफज (शब्द).

पर्युदञ्चन, (न०) पर्युदच्यते (उद्ध्रियते) कर्मणि ल्युट् । जो उठाया (चुकाया वा उतारा) जाय । ऋण । कर्ज.

पर्युदस्त, (त्रि०) परि+उद्+अस्+क्त । निवारित । हटाया गया.

पर्युदास, (पु०) परि+उद्+अस्+घञ् । निवारण । एक प्रकारका हटाना.

पर्युषित, (त्रि०) परिक्रम्य (स्वकालं अतिक्रम्य) उषितं । वस्+क्त । अपने समयको बिताकर रहा । वासी । बिआ । वह पदार्थ कि जिसे बने एक पहिरसे ऊपर होगया.

पर्येषणा, (स्त्री०) परितः (तर्कादिना एषणा (परीक्षा)। तर्कादिद्वारा पदार्थकी परीक्षा । दलील वगैरहसे किसी पदार्थको पहिचानना । अन्वेषणा (तालाश).

पर्व्, (गति जाना) भ्वा० पर० सक० सेट् । पर्वति । अपर्वीत्.

पर्व्, पूर्ति-भारना । भ्वा० पर० सक० सेट् । पर्वति । अपर्वीत्.

पर्वगामिन्, (पु०) पर्वणि गच्छति+गम्+णिनि । अमावास्यादि शास्त्रनिषिद्ध दिनोंमें स्त्रीसंग करनेवाला.

पर्वत, (पु०) पर्व्+अतच् । पर्वाणि (भागाः) सन्ति अस्य त वा । जिसके हिस्से हों । गिरि । भूधर । पहाड । एक मुनि । एक मच्छी । वृक्ष । एकप्रकारका साग.

पर्वतीय (पु०) पर्वते भवः (छ) । एक प्रकारकी जाति । पहाडिआ.

पर्वन्, (न०) पॄ+वनिप् । उत्सव । ग्रन्थि (गांठ) । पुस्तकमें विश्रामका स्थान । पाँच (चतुर्दशी, अष्टमी, अमावास्या, पूर्णिमा और सूर्यका संक्रमण) काल (धर्मशास्त्रमें).

पर्वभाग, (पु०) पर्वणः भागः मणिबंधः । आंकडी.

पर्वसन्धि, (पु०) पर्वणः सन्धिः । पर्वका मेल । पूर्णिमा और अमावास्याका मेल । चंद्र और सूर्यग्रहणका काल.

पर्शुका, (स्त्री०) पर्शुः इव कायति (प्रकाशते) कै+क । जो कुल्हाडीकी नाईं प्रकाशती है । पार्श्वस्थअस्थि । पसलीकी हड्डी.

पर्ष्, स्नेह । पियार करना । भ्वा० आत्म० सक० सेट् । पर्षते । अपर्षिष्ट.

पर्षद्, (स्त्री०) पृष्+अदि । सभा । धर्मको उपदेश करनेहारा पण्डितोंका समाज । " उस्से अस्ति अर्थमें वलच् " । सभासद (त्रि०).

पल्, गति जाना । भ्वा० पर० सक० सेट् । पलति । अपालीत्.

पल्, रक्षण (बचाना) । चुरा० उभ० सक० सेट् । पालयति-ते.

पल, (न०) पल्+अप् । मांस । एक प्रकारसे समयका पाप । चार कर्षभर वजन । घडीका साठवां हिस्सह.

पलगण्ड, (पु०) पलं (मांसं) गण्डति (गण्डमिव) करोति । जो मांसको गालकी नाईं कर्ता है । लेप करनेहारा । राजा । कारीगर.

पलल, (न०) पल्+कलच् । मांस । पङ्क (कीचड) । तिलोंका चूरा । " जो मांसको ग्रहण कर्ता है " ला+क । राक्षस (पु०).

पलाण्डु, (पु०) पलं (मांसं) अण्डति । अण्ड्-उ । पियाज । मूलभेद । एक प्रकारकी जड.

पलायन, (न०) परा+अय्+ल्युट् (रको ल होता है) । डर आदिसे एक जगह छोडकर दूसरी जगह जाना । भागना.

पलाल, (पु० न०) पल्+कालन् । शस्य । धान्य । धान्यकाण्ड । झोन्ना । नाडा । पोआल.

पलाश, (न०) पल् गति (जाना)+क । पलं (चलनं) अश्नुते । अपने नामका वृक्ष । "नवपलाशपलाशवनम्" इति माघः । हरा रंग (पु०).

पलिक्की, (स्त्री०) पलित+ङीप् नि० । वृद्धा योषित् । बूढी औरत । बालगर्भिणी गौ कि जो बालअवस्थामें गर्भवाली हो जाती है.

पलित, (न०) पल्+भावे क्त । केश (बाल) आदिमें जरा (बुढेपा) से उत्पन्न हुई श्वेतता (चिटाई) वालोंका सुफेद होना । कर्तरि क्त । वृद्ध । बूढा । "स्त्रियां" पलिता.

पल्यङ्क, (पु०) (परिगतोऽङ्कं) रको ल होता है । शय्या । छेज । पलंग.

पल्ययन, (न०) परि+इण्+ल्युट् । रको ल । घोटक सज्जा भेद । जीन.

पल्ल, गति जाना । भ्वा० पर० सक० सेट् । पल्लति । अपल्लीत्.

पल्लव, (पु०) पल्यते । क्विप् । पल्, लूयते । लू+अप्-कर्म० । नये पत्तोंकी फैलावट । वल । लाक्षाराग । शाखा । पत्ता । अंकुर.

पल्लवग्राहिन्, (त्रि०) पल्लवान् गृह्णाति–ग्रह्+णिनि पत्तोंको लानेवाला । अंकुर खिलानेवाला.

पल्लवाद, (पु०) पल्लवान् अत्ति । पत्तोंको खानेवाला । लाग । हरिण.

पल्लवाधारः-अङ्कुरः, (पु०) पल्लवस्य आधारः । पत्तेका आधार–पत्तेकी कूमली.

पल्लवास्त्र, (पु०) पल्लवा एव अस्त्रं यस्य । पत्तोंके अस्त्रवाला । कामदेवका नाम.

पल्लवित, (त्रि०) पल्लव+इतच् । पत्तोंवाला । छोटी २ कूमलीवाला । फैलगया.

पल्लि–ल्ली, (स्त्री०) पल्ल+इन वा ङीप् । क्षुद्रग्राम । छोटा गांव । कुटिआ । और घर.

पल्वल, (पु० न०) पल्+वल । क्षुद्रसर । छोटा तालाव । छपडी.

पल्वलपङ्क, (पु०) पल्वलस्य पङ्कः । छोटे तालाव (छपड)-का कीचड.

पल्वलावास, (पु०) पल्वलं आवासः यस्य । छपडी (छोटासा तालाव) में रहनेवाला कच्छप । कच्छू.

पवन, (पु०) पू+ युच् । धान आदिका शोधन (सफाई) "कर्तरि ल्यु" वात । हवा । "भावे ल्युट्" । शोधन (साफ करना) (न०) "करणे ल्युट्" जल (पानी) (न०) । "आधारे ल्युट्" कंचेघडे आदिके पकनेकी जगह.

पवनतनय–सुत, (पु०) पवनस्य सुतः । वायुका पुत्र । हनुमानका नाम.

पवनवाहन, (पु०) पवनः वाहनं यस्य । पवनकी सवारीवाला । अग्नि । आग.

पवनात्मज, (पु०) ६ त० । हनुमान् । भीमसेन । और वह्नि (आग) । "पवनसुत".

पवनाश, (पु०) पवनं अश्नाति । अश्+अण् । जो हवाको खाता है । सर्प । सांप । वायुके भक्षण करनेहारा । (त्रि०) । " युच् " पवनाशन.

पवमान, (पु०) पूञ्+शानच् । जो पवित्र कररहा है । वायु । हवा.

पवि, (पु०) पू+इन् । वज्र इन्द्रका हथियार (वज्र).

पवित्र, (स्त्री० न०) पू+इन । यज्ञ आदिके लिये कुशा । तामा । जल । घसना । अर्घका सामान । यज्ञोपवीत । शहत (मधु) । घृत (घी) (न०) । व्रत आदिसे शुद्ध (त्रि०) तुलसी । हल्दी । एक नदी (स्त्री०).

पवित्रपाणि, (त्रि०) पवित्रं पाणौ यस्य । कुशावाले हाथवाला.

पवित्रारोपण, (न०) पवित्रस्य (यज्ञोपवीतस्य) विष्णवे आरोपणं (दानं) यत्र । जिसमें यज्ञोपवीत (जनेऊ)-को विष्णुके निमित्त अर्पण किया जाता है । श्रावणमासके शुक्लपक्षकी द्वादशी । "पवित्रारोहण" यही अर्थ होता है.

पश–ष्, बन्ध-रोकना । भ्वा० उभ० सक० सेट् । पश(ष)-ति । पश (ष) ते.

पश–ष्, बन्ध (बांधनां) छूना । जाना । चुरा० उभ० सक० सेट् । पाश(ष)यति ते.

पशु, (पु०) सर्वं अविशेषेण पश्यति । दृश्+कु पशादेशः । सबको समान देखता है । मृग आदि । रोमवाली-पूछवाला जीव और देवता । देखना (अव्य०).

पशुपति, (पु०) पशूनां (सर्वत्र समदर्शिनां) देवानां पतिः । सबमें एक जैसा देखनेहारे देवताओंका पति । महादेव । शंकर । शिव.

पशुपालनम्–रक्षणं, (न०) पशूनां पालनम् । पशुओंकी रक्षा करना.

पशुपाश, (पु०) पशोः पाशः । याज्ञिक (यज्ञवाले) पशुकी काही (रस्सी) । जीवात्माकों बन्धन (विषयादि प्रीति).

पशुयाग–यज्ञ, (पु०) पशोः यागः । पशुका यज्ञ.

पशुराज, (पु०) पशूनां राजा+टच् समा० । पशुओंका राजा । सिंह । शेर.

पशुसमाम्नाय, (पु०) पशोः समाम्नायः । पशुओंके नामोंका समूह.

पश्चात्, (अव्य०) चरम । पीछे.

पश्चात्ताप, (पु०) पश्चात् (चरमः) तापः । पीछेतापना । अनुशय । पछतावा । किसी अनुचित (नामुनासिब) कामको करके अनुशोचन । वार २ सोचना.

पश्चार्ध, (पु०) अपरं अर्धं (पश्चका आदेश) । शेषार्ध । बाकीका आधा । अपर भाग । दूसरा (पिछला) हिस्सह । "पश्चार्धेन प्रविष्टः" शाकुन्तल.

पश्चिम, (त्रि०) पश्चात् भवः । डिमच् । शेषभव । पीछेको । प्रतीचि । अस्ताचलके पासकी दिशा (मगरब) (स्त्री०).

पश्चिमावस्था, (स्त्री०) पश्चिमा अवस्था । पिछली अवस्था (हालत) । मृत्युका समय । पश्चिम दिशावाली.

पश्यतोहर, (पु०) पश्यन्तं अनादृत्य हरति । हृ+अच् । अलुक् ६ त० । जो देखते २ लेजाता है (चुराता है) । एक प्रकारका चोर । गांठ काटनेहारा । सुनार.

पश्यन्ती, (स्त्री०) दृश्+शतृ+ङीप् । "परा" आदि चार प्रकारके शब्दोंमेंसे एक प्रकारकी (वाणी).

पस्, बाध । रोकना और ग्रन्थ गांठना । भ्वा० उभ० सक० सेट् । पसति–ते । अपसीत्–अपासीत् । अपसिष्ट.

पस्त्यम् (न०) पस्+त्यक् घर । निवासस्थान-स्त्या (स्त्री०) घरके कामकाजकी देवता.

पह्लव, (पु०) श्मश्रुधारि म्लेच्छ जातिभेद । दाढ़ी रखनेहारी म्लेछोंकी जाति.

पा, पान । पीना । भ्वा० पर० सक० अनिट् । पिबति । अपात् । णिच् । पाययति.

पा, रक्षण । बचाना । अदा० पर० सक० सेट् । पाति । अपासीत् । (णिच्) पालयति.

पांशु–सु, (पु०) पश् पसि वा कु० पृ० । धूलि । खेतीके लिये देरसे इकट्ठा कियाहुआ सूका गोमय (गोआ) । एक प्रकारका कपूर.

पांशुल, (पु०) पांशु (पांशुतुल्यं पापं) अस्य अस्ति । मट्टीके समान पापवाला । पापी । कुलटा (बदमाश औरत) (स्त्री०) । विभूतिवाला । महादेव (पु०) । धूरवाला (त्रि०)

पाक, (पु०) पच्+भावे घञ् । पचन । पकाना । परिणाम (नतीजह) । एक दैत्य । "आधारे घञ्" स्थाली (थाली) आदि "पिबति स्तनम्" पा+क बच्चा (त्रि०).

पाकज, (न०) पाकाज्जायते । जन्+ड । जो पकानेसे उपजता है । काचलवण.

पाकल, (न०) पाकं लाति । ला+क । कुष्ठौषधि । आग और हवा । कुष्ठ.

पाकशाला, (स्त्री०) ६ त० । पाकस्थान । पकानेकी जगह । रसोईखाना "पाकगृह" । "पाकस्थान" यही अर्थ.

पाकशासन, (पु०) पाकं (तन्नामासुरं) शास्ति । शास्+ ल्यु । जो पाकनामी दैत्यके ऊपर हुक्म चलाताहै । इन्द्र । देवताओंका राजा.

पाकाभिमुख, (त्रि०) पाकस्य अभिमुखः । पकनेके सामने हुआ । पाकगया.

पाकिन, (त्रि०) पाकेन निर्वृत्तं+इमन् । पाकनिष्पन्न । पककर तयार हुआ.

पाक्ष, (त्रि०)–पाक्षी-(स्त्री०) पक्षे भवः+अण् । शुक्लपक्षवाला । पखवाडेवाला । पार्टीको बतानेवाला.

पाक्षपातिक, (त्रि०)–की (स्त्री०) पक्षपातं करोति+ठक् +इक । पक्षपात (लिहाज) करनेवाला.

पाक्षिक, (त्रि०) पक्षतः प्राप्तः+ठक् । पक्षसे प्राप्तहुआ । एकतरफसे आया प्राप्ति और अप्राप्तिकी सम्भावनाका विषय । दोनोंमेंसे एक पक्ष । हाथ देनेहारा । नियम । पक्षका । पखवाडेका.

पाखण्ड, (पु०) पाति इति पाः=वेदादिशास्त्रं–तत् खण्डयति । वेदकी आज्ञाको तोडनेवाला पाखण्डी । मकर करनेवाला.

पाङ्क्तेय, (त्रि०) पङ्क्तौ भवः वा पङ्क्तौ योग्यः । योजन एक पंक्ति (कतार) में बैठनेलायक संबंध करनेयोग्य । मिलापके लायक.

पाचक, (पु०) पचति । पच्+ण्वुल् । वह्नि । आगपकानेहारा सूद आदि । खायेगये अन्नको पचानेहारी औषधि (त्रि०) । पित्तधातु (न०).

पाचन, (न०) पच्+णिच्+ल्युट् । पित्त आदि दोषको नाश करनेहारा वैद्यकमें कहाहुआ एक प्रकारका क्काथ (काढा) । और प्रायश्चित्त (पछतावा) । "पच्+णिच् कर्तरि ल्यु" । वह्नि (आग) । अम्ल (खट्टारस) । और लाल एरण्ड.

पाञ्चजन्य, (पु०) पञ्चजने (दैत्यभेदे) भवः+यञ् । पञ्चजन नामी दैत्यमें हुआ । विष्णुका शंख । "पाञ्चजन्यं हृषीकेशः" गीता.

पाञ्चनद, (त्रि०) पञ्चनदीभिः निर्वृत्तः । पांचनदिओंसे बना (प्रसिद्धहुआ) । पंजाबादः (पु०) पंजाबका राजा । (बहुवचन) पंजाबके वासी (लोग).

पाञ्चभौतिक, (त्रि०) पञ्चभिः भूतैः निर्वृत्तः+ठक्+इक । पृथिव्यादि पांच भूतोंसे सिद्धहुआ.

पाञ्चाल, (त्रि०) पञ्चालदेशे भवः+अण् । पञ्चाल देशमें हुआ । स्त्रियां ङीप् । पाञ्चाली.

पाटच्चर, (पु०) पटच्चर एव+स्वार्थे अण् । चौर । चोर.

पाटल, (पु०) पाटयति । पट्+णिच्+कलच् । श्वेतरक्तवर्ण । चिट्टा और लाल रंग । गुलाबी । उसवाला (त्रि०) । पाटलीपुष्प । गुलाबका फूल.

पाटलिपुत्र, (न०) पटना नामसे प्रसिद्ध एक नगर.

पाटव, (न०) पटोर्भावः+अण् । पटुता । क्रियायोग्यता । होशियारी । आरोग्य । तन्दुरुस्ती.

पाठ, (पु०) पठ+घञ् । अक्षरोंका उच्चारण करना । और गुरुके मुखसे सुन कर बोलना । पढना । सबका बडा यज्ञ.

पाठक, (पु०) पठति-पाठयति वा+ण्वुल् । पढनेहारा । पढानेहारा.

पाठशाला, (स्त्री०) ६ त० । पढने पढानेका स्थान । पाठमन्दिर । स्कूल.

पाठिन्, (पु०) पठ+इनि । चित्रवृक्ष । पाठक (पढानेहारा) (त्रि०).

पाठीन, (पु०) पाठिं (पृष्ठं) नमयति । नम्+ड दीर्घः । जो पीठको झुका दे । गुग्गुलका वृक्ष । मत्स्यभेद । एक मछली । "पठ+ईनण्" पाठक (पढानेहारा) (त्रि०).

पाणि, (पु०) पण्+इण् -आमाभावः । कर (हाथ) कुलिक वृक्ष.

पाणिगृहीती, (स्त्री०) पाणिः गृहीतो यस्याः+ङीप् । हाथ पकडा है जिसका । भार्या । औरत । स्त्री.

पाणिग्रहण, (न०) पाणिः गृह्यते अत्र । ग्रह्+आधारे ल्युट् । हात पकडा जाता है जिसमें । विवाह । शादी.

पाणिघ, (पु०) पाणिं हन्ति । पाणिना वा हन्ति (वादयति) हन्+टक् कुत्वम् । हाथ बजानेहारा । और हाथसे मृदङ्ग आदि वाजा बजानेहारा । पाणिताडक । और मृदङ्गादिवादक.

पाणितलम्, (न०) पाणेः तलम् । हाथकी तली.

पाणिधर्म, (पु०) पाणेः=पाणिग्रहणस्य धर्मः । विवाहका यथार्थस्वरूप.

पाणिनि, (पु०) पणनं (पणः) ततः अस्त्यर्थे इनि । तदपत्यं+अण् तस्य छात्र+इञ् । अष्टाध्यायीरूप व्याकरणके बनानेहारा दाक्षीका पुत्र । शालातुरीय नामी गांवमें उत्पन्न हुआ एक मुनि.

पाणिनीय, (त्रि०) पाणिनिना प्रोक्तं, तस्येदं वा+छ । पाणिनि मुनिसे बनायागया अष्टाध्यायीरूप व्याकरण.

पाणिपल्लव, (पु०) पाणिः पल्लव इव+उप स० । पत्तेके समान (नरम) हाथ उंगलियें.

पाणिपात्र, (त्रि०) पाणिः एव पात्रम् । हाथही पात्र है । हाथसे पीनेवाला.

पाणिसर्ग्या, (स्त्री०) पाणिना सृज्यते असौ सृज्+ण्यत् । जो हाथसे बनाई जाती है । रज्जु । रस्सी.

पाण्डर, (पु०) पडि+अर् दीर्घश्च । मरुक वृक्ष । श्वेत वर्ण (चिट्टा रंग) । उसवाला (त्रि०) । कुन्दका फूल और गैरिक (गेरि) (न०).

पाण्डव, (पु०) पाण्डोः अपत्यं+अण् । पाण्डुकी सन्तान । चंद्रवंशीय एक राजाके क्षेत्रमें उपजा युधिष्ठिर आदि.

पाण्डित्यम् (न०) पण्डितस्य भावः+ष्यञ् । पण्डितपना । पण्डिताई । उच्चशिक्षा.

पाण्डु, (पु०) पडि+कु-नि० दीर्घः० । चंद्रवंशीय एक राजा । चिट्टारंग । श्वेतवर्णवाला एक नाग । चिट्टा हाथी । एक रोग । और पटोलका वृक्ष (पु०).

पाण्डुपुत्र, (पु०) पाण्डोः पुत्रः । पाण्डुके पुत्रोंमेंसे कोई एक.

पाण्डुर, (पु०) पाण्डुः वर्णः अस्य अस्ति+र । श्वेतपीतमिश्रित वर्ण । चिट्टा पीला मिलाहुआ रंग । उसवाला (त्रि०) कामलेका रोग (न०).

पाण्ड्या, (पु०) बहुवचन एक नगरका नाम और वहांके निवासी ।-ड्यः (पु०) उसी देशका राजा.

पात, (पु०) पत्+घञ् । पतन । गिरना । पा+क्त । रक्षित । बचाया हुआ । (त्रि०) पत्+ण । राहुग्रह (ज्योतिषमें).

पातक, (न०) पातयति (अधोगमयति) पत्+णिच्+ण्वुल् । नीचे ले जाता है । नीचे गिरानेवाला पाप । पापजनक । प्राणिओंका वध करना.

पातञ्जल, (न०) पतञ्जलिना प्रोक्तम्+अण् । पाणिनीके रचेहुए सूत्रोंपर व्याख्यान । "अथ शब्दानुशासनम्" इत्यादि महाभाष्यम् । "अथ योगानुशासनम्" इत्यादि योगशास्त्रम्.

पातन, (त्रि०) पत्+णिच्+ल्यु+ल्युट् वा । गिरनेवाला । काटनेवाला ।-नं (न०) गिराना । फेंकना । खडखडाना.

पाताल, (न०) पत्+आलञ् । पृथिवीके नीचेका लोग । लग्नसे ४ थी राशी.

पातालगङ्गा, (स्त्री०) पातालस्य गङ्गा । पातालकी गङ्गा.

पातालनिलयः, निवासः-वासिन् (पु०) पातालं निलयः=निवासस्थानं यस्य । पातालके रहनेवाला । दैत्य.

पातित, (त्रि०) पत्+णिच्+क्त । गिराया गया । फेंकागया (ऊपरको).

पातुक, (त्रि०) पत्+उकञ् । पतनशील । गिरनेहारा.

पात्र, (न०-स्त्री०) पाति (रक्षति आधेयं) । जो आधेय (बीचमें आईहुई चीज) को बचाता है । "पिबति अनेन वा पा+ष्ट्रन् स्त्रियां ङीप्" । जल आदिका आधार । भोजनके योग्य वर्तन । विद्या आदिवाला दानके योग्य ब्राह्मण । यज्ञका स्रुवा आदि । दोनों किनारों (तटों-तीरों)के बीचमें जल टिकनेका स्थान । नाटकमें नायक आदि (न०).

पात्रीय, (त्रि०) पात्रे (यज्ञपात्रे) योग्यः (छ) । यज्ञका द्रव्य । "स्वार्थे छ" योग्य (लायक) । "विप्रः पात्रीयतामियात्" इति स्मृतिः.

पात्रेसमित, (त्रि०) पात्रे (भोजनपात्रासादनकाले एव) समितः (सङ्गतः) । भोजनका पात्र पानेके समय ही पहुंचा । भोजनके विना न पहुंचनेहारा । काममें जो चतुर नहीं.

पाथ, (न०) पीयते अदः (थ) । जिसे पीयाजाय । जल (पानी) । "पाति (रक्षति) (थ)" जो बचाता है । अग्नि (आग) और सूर्य.

पाथस्, (न०) पाति (रक्षति) । पीयते वा । पा-पीना । वा बचाना । असुन् (थुक्) । जल । पानी । अन्न (इसके खानेसे शरीरकी रक्षा होती है).

पाथेय, (त्रि०) पथि हितं+ढञ् । रास्तेमें खानेके लायक चीज । सफरी खाना । पथि भोजनोचित द्रव्य.

पाद, (पु०) पद्+णिच्+क्विप् । चरण । पाद । पैर । पाँव.

पाद, (पु०) पद्यते (गम्यते) अनेन+करणे घञ् । जिस्से जाते हैं । चरण । पाँव । चतुर्थांश । चौथा हिस्सह । वृक्ष आदिका मूल.

पादकटक, (पु०) पादस्य कटक इव । पाँवका मानों कडा है । नूपुर । पँजेव । झांजर.

पादकृच्छ्र, (पु०) पादं इतः (चतुर्थांशं इतः) कृच्छ्रः । शाक० । एक भागमें आया हुआ कृच्छ्र (व्रतं) । एक प्रकारका व्रत । एक दिनका उपवास । एक दिनका फाकह.

पादग्रहण, (न०) पादयोः ग्रहणं यत्र । जिसमें पाँवको पकडते है । पाँव पकडकर कियागया प्रणाम । "अमुष्य पादग्रहणं प्रत्यहं चाभिवादनं" मनुः.

पादचारिन्, (पु०) पादेन चरति । चर्+णिनि । ३ त० । पाँवसे चलता है । पदाति । पैदल । पाँवसे चलनेहारा (त्रि०).

पादत्राण, (न०) पादौ त्रायेते येन । त्रै+करणे ल्युट् । जो पाँवको बचाता है । पादुका । जूती । खडावें.

पादप, (पु०) पादेन (मूलेन) पिबति (सिक्तं जलं) पा+क । जो सींचेहुए पानीको जडसे पीता है । वृक्ष (दरख्त) । पादं पाति (रक्षति) पा+क । पाँवको बचाता है । पादपीठ । पाँवका पीढा । स्टूल । पांव रखनेका आसन.

पादमूल, (न०) ६ त० । चरणाधोभाग । पादके नीचेका हिस्सह । पांवकी तली.

पादरथी, (पु०) पादयोः रथी । पांवकी गाडी । उपानत् । जूती । बूट.

पादविक, (त्रि०) पदवीं धावति+ठक् । रास्तेमें भागता है । पथिक । रास्तेमें चलनेहारा । पथिधावक । वह सिपाही जो पांवसे चलता है । पैदल.

पादाग्रम्, (न०) पादस्य अग्रम् । पाँवका अग्रभाग । पांवकी नोक (सिरा).

पादाङ्क, (पु०) पादस्य अङ्कः । पाँवका चिन्ह (निशान).

पादाङ्गद, (न०) पादस्य अङ्गदं इव । मानों पावका बुहटा है । नूपुर । पंजेव । झांजर.

पादाङ्गुष्ठ, (पु०) पादस्य अङ्गुष्ठः । पांवका अंगूठा.

पादात, (न०) पदातीनां समूहः+अण् । पैदलोंका इकट्ठ । सैन्यसमुदाय । बहुतसी सेना । "पादाभ्यां अतति (गच्छति) अच्" । पांवसे चलती है । पैदल चलनेहारी सेना । "पादाति" "पादातिक".

पादवन्दन, (न०) पादयोः वन्दनं–वंद+अन । चरणवंदना । पांवपर वंदना करना.

पादशौचम्, (न०) (पादयोः शौचं) । पाँवका धोना (सफाई).

पादसेवनम्-सेवा, (न० स्त्री०) पादयोः सेवनम् । पाँवकी सेवा । चरण छूकर आदर दिखाना.

पादुका, (स्त्री०) पद्+णिण्+ऊ ततः स्वार्थे कन् ह्रस्वः । चमडे आदिका पांवके आच्छादन करनेका पदार्थ । जूती । खडावां.

पादोदकं-जलम्, (न०) पादस्य उदकम् । पाँवका जल (पानी) । पाँवधोनेके लिये जल । महात्मा पुरुषके चरण धोनेका जल (बडा पवित्र माना जाता है).

पाद्य, (न०) पादाय (पादप्रक्षालनाय) साधु+यत् । जो पाँव धोनेके लिये अच्छा है । पांव धोनेके लिये पानी.

पान, (न०) पा+ल्युट् । द्रवद्रव्यस्य गलाधः संयोजन । किसी वहनेहारी (ढीली) चीजको गलेके नीचे लेजाना । और बचाना । "आधारे ल्युट्" । "पानभाजन" पीनेका पात्र (वर्तन).

पानगोष्ठी, (स्त्री०) पानार्थं गोष्ठी (सभा) । (चक्र) पीनेके लिये सभा । शराव पीनेवालोंकी चौकडी.

पानभाजन, (न०) पीयते अस्मिन् । पा+ल्युट्+कर्म० । पानपात्र । पीनेका पात्र । शराव पीनेका पियाल वा ग्लास.

पानीय, (न०) पीयते यत् । पा+अनीयर् । जो पीया जाय । जल (पानी) पीने लायक और बचानेलायक (त्रि०).

पानीयशालिका, (स्त्री०) पीयते अस्यां+आधारे अनीयर् । तादृशी पानीयवितरणार्थं या शाला+स्वार्थे कन् । पानी देनेके लिये एक घर । प्रपा । छबील.

पान्थ, (पु०) पन्थानं गच्छति । पथिन्+अण् । पन्थादेशः । पथिक । मुसाफिर.

पाप, (न०) पाति (रक्षति) आत्मानं अस्मात् । पा+अपादाने प । जिस्से अपनेको बचाता है । नरकका कारण बुरा अदृष्ट (अधर्म) । उसका साधन हिंसा आदि । गुनाह.

पापकृत्, (पु०) पापं करोति+कृ+क्विप् । पापकरनेवाला । पापी.

पापग्रह, (पु०) पापः ग्रहः । बुरे फलको देनेवाला ग्रह । मंगल-शनि-राहु–केतु.

पापघ्न, (पु॰) पापं हन्ति+ठक्। जो पापको नाश कर्ता है। तिल। इनके दानसे पाप दूर होता है। पापनाशक (त्रि॰).

पापपुरुष, (पु॰) पापात्मकः पुरुषः (पुरुषाकारः)। पुरुषकी शकलमें पापका स्वरूप। गुनाहगार आदमी। तन्त्रमें कहाहुआ बाइं कुक्षि (वक्खी) में पापस्वरूप ध्यान करनेलायक मनुष्यके आकारका पदार्थ.

पापसङ्कल्प, (त्रि॰) पापः सङ्कल्पः यस्य। बुरे संकल्प (खयाल) वाला.

पापहन्, (त्रि॰) (पापं हन्ति) पाप (बुराई) को मारने (नाश करने) वाला.

पापात्मन्, (पु॰) पापयुक्तः आत्मा (अन्तःकरणं) यस्य। जिसका मन पापसे भरा है। पापान्वित (पापी) जीव.

पापाशय-चेतस्, (न॰) पापः आशयः यस्य। जिसका हृदय पापसे भराहो। बुरे चित्तवाला.

पापिष्ठ, (त्रि॰) अतिशयतमं पापः+इष्ठन्। बहुत पापी (गुनाहगार).

पाप्मन्, (पु॰) आप्नोति (व्याप्नोति)। आप+मनिन्। नि॰। जो फैल जाता है। पाप। गुनाह.

पामन्, (न॰) पा+मनिन्। विचर्चिका। खुजली (खुरक)-की बीमारी। "पामा" इसी अर्थमें होता है.

पामघ्न, (पु॰) पाम हन्ति। हन्+टक्। गंधक (जो खुजली दूर कर्ता है).

पामन, (त्रि॰) पामा अस्ति अस्य+न। खुजलीके रोगवाला। "पामरोगवान्".

पामर, (त्रि॰) पाति+क्विप्। पाः (त्रयीधर्मः) स म्रियते अनेन। मृ+घ। जो तीन वेदोंके धर्मको मार डालता है। नीच। मूर्ख। खल। बेवकूफ.

पायस, (पु॰) पयसि (दुग्धे) संस्कृतः+अण्। दूधमें संस्कार किया हुआ। परमान्न। सबसे अच्छा अन्न (खाना)। खीर आदि। दूधका (त्रि॰).

पायु, (पु॰) पा+उण्। अपानवायुस्थान। नीचेके हवाकी जगह। गुदा। गुह्यद्वार.

पार, (कर्मसमाप्ति)। काम खतम करना। चुरा॰ उभ॰ सक॰ सेट्। पारयति-ते.

पार, (न॰) परं एव+अण्। पारं (परं तीरं) पृ॰ घञ् वा। नदी लांघकर पहुंचनेलायक परला तीर। दूसरा किनारा। "पार+अच्-घञ्"। सिद्ध। प्रान्त। भाग.

पारक्य, (त्रि॰) परलोकाय हितं+ष्यञ्+कुक् च। वह काम कि जो दूसरे लोकके लिये हितकारी हो। परलोक-हितसाधन कर्म.

पारग, (त्रि॰) पारं गच्छति। गम्+ड। पार जाताहै। कामको समाप्त करनेहारा। दूसरे किनारे पार जानेहारा। शेषगामी। खतम करनेहारा.

पारगामिन्, (त्रि॰) पारं गच्छति–गम्+णिनि। पार जानेवाला। दुसरे किनारे पार जानेवाला.

पारण, (न॰) पार+ल्युट्। व्रतान्तभोजन। व्रतसमाप्तिमें भोजन करना। "युच्" वही अर्थ (स्त्री॰).

पारतन्त्र्य, (पु॰) परतन्त्रस्य भावः+ष्यञ्। पराधीनता। दूसरेके काबूमें रहना। ताबेदारी.

पारत्रिक, (त्रि॰) परत्र भवं, हितं वा+ठक्। परलोकमें होनेहारा। परलोकके लिये हितकारी। वह काम कि जो परलोकमें भला करेगा। और परलोक (दूसरा लोक)-में होनेहारा.

पारद, (त), (पु॰) पृ+णिच्-तन्। पृ॰। तको द विकल्पसे होता है। धातुविशेष। पारा। "पारं ददाति। दा+क" पारदेनेहारा (त्रि॰).

पारदार्य, (पु॰) परस्य दारा एव दारा यस्य। तस्य भावः+ष्यञ्। दूसरेकी स्त्रीको ही अपनी स्त्री जान्ना। परदार-गमन। दूसरेकी स्त्रीसे गमन (भोग) करना। "पारदार्यं पारवित्तं" स्मृतिः.

पारदृश्वन्, (त्रि॰) पारं दृष्टवान्–दृश्+क्वनिप्। दूरतक-देखनेवाला। पण्डित। दाना। चतुर। जिसने किसी वस्तुको पूरे तौरपर देखलिया.

पारदेशिक, (त्रि॰)-की-(स्त्री॰) (परदेशे भवः+ठक्+इक) दूसरे देशमें होनेवाला। दूसरे देशका। परदेसी.

पारमार्थिक, (त्रि॰) परमार्थाय (पारलौकिकधर्माय) हितं+ठक्। जो दूसरे लोकके धर्मके लिये हितकारी हो। असली वस्तुका उपायस्वरूप कल्याणका साधन। कर्म। असली.

पारम्पर्य, (न॰) परम्परैव+स्वार्थे ष्यञ्। कुलादिपरम्परा। लगातार चला आता। एक कुलके पीछे दूसरी आदि कुलमें आरहा.

पारम्पर्योपदेश, (पु॰) पारम्पर्येण (पित्रादिपरम्परया उपदेशः नतु साक्षात्कारादिज्ञानं)। वह उपदेश कि जो पिता आदिसे चला आता है परन्तु देखा नहिं। ऐतिह्य। इतिहास। जैसे इस "वटवृक्ष" पर एक यक्ष रहता है ऐसा सब उपदेश ही कर्ते हैं परन्तु वहां यक्षको किसीनेभी देखा नहिं.

पारलौकिक, (त्रि॰) परलोकाय हितं+ठक्। दूसरे लोकके लिये हितकारी काम वा दूसरे जन्म आदिमें हितकारी। दूसरे लोकका.

पारवश्य, (न॰) परवशस्य भावः+यत्। दूसरेके वश (आधीन) होना। पराधीनता। दूसरेकी मुहताजी.

पारशव, (पु॰) विवाही शूद्रामें ब्राह्मणसे उत्पन्न किया गया निषादरूप संकीर्ण वर्ण। दोगला। दूसरेकी स्त्रीका बेटा। और लोहा। "परशु+इदं अर्थे अण्"। परशुसम्बन्धी। कुल्हाडेका (त्रि॰).

पारश्वध, (पु०) परश्वधः प्रहरणं अस्य+अण् । कुल्हाडेसे युद्ध करनेहारा+ठक् । "परश्वधिक" यही अर्थ है.

पारसीक, (पु०) एक देश । उस देशके वासी । फारसके । ब० व० । उस देशका घोडा (पु०) । अरबी घोडा.

पारस्त्रैणेय, (त्रि०) परस्त्रिया अपत्यं+ढक् इनङादेशः । जारज । पराई स्त्रीका पुत्र । परस्त्रीसुत.

पारापत, (पु०) परात् अपि आपतति प्रेम्णा । आ+पत्+अच् । दूरजाकर भी चला आता है (पियारसे) । पारावत । कबूतर.

पारापा(वा)र, (न०) पारं अपारं च अस्ति अस्य+अच् । जिसका पार अवार दोनों हों । समुद्र । समुंदर । दोनों किनारे । "पारावार".

पारायण, (न०) पारं (समाप्तिं) अयते अनेन+अय्+ल्युट् । जिसके द्वारा एक कामको खतम कर्ता है । (पार पहुंचता है) । साकल्य (पूरापन) । ग्रन्थ आदिके आदिसे अन्ततक । किसी ग्रन्थका पूरा २ पाठ करना.

पारावारीण, (त्रि०) पारं अवारं च गच्छति+खञ् । तटद्वयगामी । दोनों किनारोंपर जानेहारा । समुद्रके पार जानेहारा । "पारापारीण" यही अर्थ.

पाराशर, (पु०) पराशरस्य अपत्यं+अण् । पराशरका बेटा । वेदव्यास । अको इ होनेसे "पाराशरिः" यही अर्थ.

पाराशरिन्, (पु०) पराशरेण प्रोक्तं (भिक्षुसूत्रं) अध्येयतया अस्ति अस्य+इनि । जो पराशरसे रचेहुए भिक्षुसूत्रको पढता रहता है । भिक्षुक । सब कर्मको त्यागनेहारा । संन्यासी.

पाराशर्य, (पु०) पराशरस्य अपत्यं+यञ् । पराशरका बेटा । वेदव्यास.

पारिकाङ्क्षिन्, (पु०) पारं अस्य अस्ति+इनि । पारि (ब्रह्मज्ञानं) तत् काङ्क्षति+णिनि । जो ब्रह्मके ज्ञानको चाहता है । मौन (चुप रहना) व्रतको धारण करनेहारा । वाचंयम (वाणीको काबू रखनेहारा) एकप्रकारका मुनि.

पारिजात, (पु०) पारं अस्य अस्ति पारी (समुद्रः) तत्र जातः जन्+क्त । समुद्रमें उपजा । देवताओंका एक वृक्ष.

पारिणाय्य, (त्रि०) परिणयकाले लब्धं+ष्यञ् । (वहधन) जो विवाहके समय मिलाहो.

पारिपन्थिक, (पु०) परिपन्थं गृह्णाति+ठक् । पन्थका आदेश । जो रास्ता घेरलेता है । चोर.

पारिपा(या)त्र, (पु०) विन्ध्य पर्वतके पश्चिमकी और मालवदेशकी सीमा (हद्द) का पर्वत (पहाड).

पारिपार्श्विक, (पु०) परिपार्श्वं गृह्णाति । तत्र चरति वा+ठक् । जो पासको पकडता वा आसपास विचरता है । सूत्रधारके पास विचरनेहारा नट.

पारिप्लव, (न०) परि+प्लु+अच् । +स्वार्थे अण् । चञ्चल । आकुल.

पारिभाव्य, (न०) परिभावाय (रोगप्रशमनाय) हितः+ष्यञ् । जो रोगकी शान्तिके लिये हितकारी है । कुछ औषधि । परिभुवः (प्रतिभुवो भावः)+ष्यञ् । प्रतिभूभवन । जामिन होना । "साक्षित्वं प्रातिभाव्यं च" इति स्मृतिः.

पारिभाषिक, (त्रि०) परिभाषायां भवः+ठक्+इक । सामान्य रूपमें होनेवाला । साधारण नियम । सबसे स्वीकार किया गया (माना हुआ) सांकेतिक । संकेतसे जाना गया शब्द आदि । सबकी बोलीमें आया हुआ शब्द.

पारिमाण्डल्य, (न०) परितो मण्डलं यस्य । सर्वत्र विद्यमानत्वात् परिमण्डलः (परमाणुः) तस्य भावः+ष्यञ् । सब जगह विद्यमान होना । न्यायमें कहा हुआ कारणपनेसे रहित परमाणुका परिमाण (माप) । जर्रा.

पारिषद, (त्रि०) परिषदि भवः । तिष्ठति वा+अण् । सभामें हुआ वा रहता है । सभास्थ । सभ्य । सभामें बैठनेहारा । मजलिसका मैम्बर.

पारिहार्य, (पु०) परिह्रियते असौ । परि+हृ+कर्मणि घञ् । स्वार्थे ष्यञ् । वलय । कटक । कडा.

पारीण, (त्रि०) पारं गच्छति । पार+खञ् । पारग । पार जाता है । कामको समाप्त करनेहारा.

पार्थ, (पु०) पृथाया अपत्यं+अण् । पृथाका पुत्र । युधिष्ठिर आदि । अर्जुनवृक्ष । पृथिवीका पति । राजा.

पार्थिव, (पु०) पृथिव्या ईश्वरः+अण् । पृथिवीका मालिक । राजा । "पृथिव्या विकारः, इदं वा+अण्" । पृथिवीसे होनेहारा (त्रि०) ।–वी । सीता (स्त्री०).

पार्वण, (त्रि०) पर्वणि (पूर्णिमादौ) भवः+अण् । पूर्णिमा आदिमें होनेहारा । "पर्वणि (अमावास्यादौ) विहितं+अण्" । स्मृतिमें कहाहुआ एक श्राद्ध (न०) पृ+वनिप्+अण् । एकप्रकारका मृग (पु०).

पार्वत, (पु०) पर्वते भवः+अण् । पहाडमें हुआ । पर्वतका (त्रि०).

पार्वतीनन्दन, (पु०) ६ त० । पार्वतीका पुत्र । स्कन्द । कार्तिकेय.

पार्वतीय, (त्रि०) पर्वते भवः+ईय । पर्वत (पहाड) में निवास करनेवाला । (बहुवचन) । एक प्रकारकी पहाडी जाति.

पार्वतेय, (त्रि०) पर्वते भवः+ढक्+एय । पर्वत (पहाड)-में उत्पन्न हुआ.

पार्श्व, (पु० न०) स्पृश्-श्वण्-पृ० । कक्षाधोभाग । कांख (कच्छ) के नीचेका हिस्सह । समीप (पास) । चक्र (पहिया).

पार्श्वग, (पु०) पार्श्वे गच्छति+गम्+ड । पास जानेवाला । सेवक । परिचारक.

पार्श्वनाथ, (पु०) पार्श्वः नाथः । पास रहनेवाला स्वामी । जैनोंकी देवता.

पार्श्ववर्तिन्, (त्रि०) पार्श्वे वर्तते । पास रहनेवाला । परिचारक । सेवक.

पार्श्वशय, (त्रि०) पार्श्वे शेते+उप-स० शी+अ । पास सोने (शयन) वाला.

पार्श्वस्थ, (त्रि०) पार्श्वे तिष्ठति+स्था+क+अ । पास रहनेवाला । सहचर । साथी.

पार्श्वस्थित, (त्रि०) पार्श्वे स्थितः+स्था+क्त । पास ठहरा हुआ । अनुचर.

पार्श्विक, (त्रि०)-की (स्त्री०) पार्श्वेभवः+ठक्+इक । पास हुआ । निकटवर्ती । पास रहनेवाला । कः-(पु०) सहचर । साथी । जादूगार । चोर.

पार्षद, (पु०) पर्षदि भवः, तत्र स्थितो वा+अण् । सभास्थ । सभामें बैठाहुआ । मैम्बर । सभ्य । मीरमजलिस.

पार्ष्णि, (पु० स्त्री०) पृष्+नि । नि० । वृद्धिः । गुल्फाधोभाग । गिट्टेके नीचेका हिस्सह । एडी । अड्डी । सेनाकी पीठ.

पार्ष्णिग्राह, (पु०) पार्ष्णि (पृष्ठपदं) गृह्णाति+अण् । पीठ । पीछे आज्ञा देनेहारा । पीछे रहनेहारा । शत्रु । (दुश्मन).

पार्ष्णिघात, (पु०) पार्ष्णौ घातः । पासकी चोट । लत्ता । लात मारना.

पाल, रक्षण (बचाना) चु० उभ० सक० सेट् । पालयति-ते.

पाल, (त्रि०) पालयति (पाल्+अच्) । जो बचाता है । रक्षक.

पालक, (पु०) पालयति । पाल्+ण्वुल् । अश्वरक्षक । घोडेका रखवारा और चित्रकवृक्ष । बचानेहारा (त्रि०).

पालकाप्य, (पु०) एक ऋषिका नाम । करेणुका पुत्र । जिसने पहिले पहिले गजविद्या (हाथीके वशकरनेकी) सिखाई.

पालङ्क, (पु०) पाल्+क्विप्-पाला-अङ्क्यते । अङ्क+घञ् । पलंग । एकप्रकरका साग । कुन्दुरुवृक्ष (स्त्री).

पालन, (त्रि०) पाल्+भावे ल्यु+ल्युट्वा+अन । रक्षा करनेवाला । बचानेवाला ।-नं (न०) रक्षा करना । बचाना । बचाव.

पालनीय, (त्रि०) पाल्+अनीय । रक्षा करनेके योग्य । बचानेलायक । पालनेलायक । खयाल करनेलायक (प्रतिज्ञाआदि).

पालयितृ, (पु०) पाल्+तृच् । रक्षा करनेवाला । बचानेवाला । रखवारा.

पालाश, (न०) पलाशं (पर्णं) अस्ति अस्य+अण् । तेजपत्र । "उस रंगवाला" हरा रंग (पु०) पलाशसम्बन्धी (त्रि०).

पालित, (त्रि०) पाल्+क्त । पालागया । रक्षा कियागया । पूरा कियागया.

पावक, (पु०) पुनाति । पू+ण्वुल् । पवित्र कर्ता है । वह्नि (आग) । वैद्युताग्नि । बिजलीकी आग.

पावकात्मज, (पु०) पावकस्य आत्मजः । आग्निका पुत्र । कार्तिकेय । सुदर्शन ऋषिका नाम.

पावकी, (पु०) पावक+अपत्यार्थे इञ् । अग्निका बेटा । कार्तिकेय (वह शिवजीके अग्निमें रक्खे हुए वीर्यसे उपजा) पुराणमें.

पावन, (पु०) पावयति । पू+णिच्+ल्यु । पवित्र कर्ता है । अग्नि (आग) । व्यासदेव । और सिल्हक । गोमय (गोहा) । प्रायश्चित्त । कठिनतासे होनेहारा काम (न०) "पाव्यते अनया+ल्युट् ङीप्" । जिस्से पवित्र कियाजाय । गङ्गा । हरीतकी । हरीड और तुलसी । (स्त्री० पवित्रताको सिद्ध करनेहारा (त्रि०).

पावनध्वनि, (पु०) पावनः ध्वनिः । पवित्र शब्द । शङ्ख । (जिसका आवाज पावन है).

पाश, (पु०) पश्यते (बध्यते) अनेन । पश्+घञ् । पशु और पक्षिओंको बांधनेहारा एक प्रकारकी रस्सीका फांद । फंदा । हरएक प्रकारकी रस्सी । "कर्ण" से परे यह शब्द शोभाके लिये लगाया जाताहै जैसे "कर्णपाशः" (अच्छे कानवाला).

पाशक, (पु०) पश्+ण्वुल् । द्यूतक्रीडासाधन । जूएकी खेलका साधन । गुटिका आदि । पाश । पास्सा.

पाशपाणि, (पु०) पाशः पाणौ यस्य (जिसके हाथमें फांद है) । वरुण । "पाशहस्त" इसी अर्थमें होता है.

पाशव, (त्रि०)-वी (स्त्री०) पशोः इदं+अण् । पशुका । पशुके साथ संबंध रखनेवाला । पशुसे निकल । पशुवाला ।-वं(न०) पशुओंका समूह (गल्ला).

पाशिन्, (पु०) पाशः अस्ति अस्य+इनि । फांदवाला । वरुणदेवताका नाम । यमराज । फंदक । व्याध.

पाशुपत, (पु०) पशुपतेः इदं । सः अस्य देवता वा+अण् । पशुपतिका । वा पशुपति जिसका देवता है । एक व्रत । एक अस्त्र । औजार (न०) महादेवका भक्त (त्रि०).

पाशुपतास्त्रम्, (न०) पशुपतेः इदं अस्त्रम् । महादेवका अस्त्र जो अर्जुनने लाभ कियाथा.

पाशुपाल्य, (न०) पशून् पालयति+अण् तस्य भावः+ततः ष्यञ् । पशुओंका पालना । वैश्यधर्म । वैश्यजातिका धर्म.

पाश्चात्त्य, (त्रि०) पश्चाद् भवः । पश्चिम देशभव । पश्चिम देशका.

पाश्या, (स्त्री०) पाशानां समूहः+यत् । पाशोंका समूह । वहुतसे फंदे.

पाष(ख)ण्ड, (पु०) पाति (रक्षति दुरितेभ्यः) । पा+क्विप् । पाः (वेदधर्मः) तं ख(ष)ण्डयति (निष्फलं करोति) । जो बुराइओं (पापों) से वचता है ऐसा कौन है वेदका धर्म उसे जो तोडता है वा फलरहित कर्ता है । वेदाचारत्यागी । वेदके आचारको छोडनेहारा.

पाषण्डिन्, (पु०) पां (वेदधर्म) षण्डयति । षण्ड+णिच्+इणि । जो वेदके धर्मको तोडता है । पाषाण्ड.

पाषाण, (पु०) पिनष्टि । पिष्-संचूर्णन । चूरा २ करना । (पीसना) आनच् । पृ० । जो पीस डालता है । प्रस्तर । पत्थर.

पाषाणदारण, (पु०) पाषाणं दारयति । दृ+ण्वुल् । टंकास्त्र । टंक नामी औजार (छैणी-पत्थरको काटनेहारी).

पि, गति (जाना) । तु० सक० पर० अनिट् । पियति.

पिक, (पु०) अपि+कायति । कै+क । अपिके "अ"-का लोप होता है । मीठा शब्द कर्ता है । कोकिल । कोइल.

पिकवन्धु, (पु०) ६ त० । पिक (कोइल) का वंधु । आमका वृक्ष.

पिङ्ग, (पु०) पिजि-वर्णे (रंगना)+अच् । मूषक । मूसा । दीवेकी लाट (शिखा) के समान पीला रंग । उसवाला (त्रि०) हरिताल (न०).

पिङ्गजट, (पु०) पिङ्गा जटा यस्य-व० स० । पीली जटावाला । महादेव.

पिङ्गल, (पु०) पिङ्गं लाति । ला+क । पिजि+कलच्-कु वा कुत्वम् । एक नाग । रुद्र । सूर्यके पास रहनेहारा । वानर । एक निधि (खजाना) । एक मुनि । मंगलग्रह । प्राकृत भाषामें छन्दोग्रन्थको बनानेहारा सांपके स्वरूपमें एक मुनि । एक नाडी । राजनीति । और एक वेश्या (स्त्री०).

पिङ्गाक्ष, (पु०) पिङ्गे अक्षिणी यस्य+षच् समा० । जिसकी पीली आँखें हैं । शिवजी । (इसकी तीसरी आँख आगका स्वरूप है) । "पिङ्गेक्षण" यही अर्थ है.

पिचण्ड, (पु०) अपि+चम्+ड । "अपि" के "अ" का लोप होता है । उदर । पेट । पशुका अवयव (अंग) पृ० "इ" भी होता है । "पिचिण्डः" यही अर्थ.

पिचु, (पु०) पच्+उ पृ० । कार्पास (कपास । कपा) । रूई । एकप्रकारका कोढ (कुष्ट).

पिच्च, छेद (काटना) । चुरा० उभ० सक० सेट् । पिच्चयति-ते । अपिपिच्चत्-त.

पिच्चट, (न०) पिच्+अटन् । सीसक । रांगा । नेत्ररोगविशेष । आंखकी बीमारी.

पिच्छ, वाध (रोकना), तोडना । तु० प० सक० सेट् । पिच्छति । अपिच्छीत्.

पिच्छ, (न०) पिच्छ+अच् । मयूरपुच्छ । मोरकी पूंछ । और चूडा (चोटी) । लाङ्गूल (पूछ) (पु०) । सिंवलका पेड । सुपारी । कतार । खजाना (कोष).

पिञ्ज्, दीप्ति-चमकना । वास-रहना । बल-जोर करना । अक० । हिंसा (मारना) और दान (देना) । सक० चु० उभ० सेट्-इदित् । पिञ्जयति-ते.

पिञ्ज, (न०) पिजि+अच् । बल (जोर) । एकप्रकारका काफूर (पु०) । व्याकुल (घवराया हुआ-हैरान) (त्रि०) । तूल (रूई) । हरिद्रा (हल्दी) । अहिंसा (स्त्री०).

पिञ्जट, (पु०) पिजि+अटन् । नेत्रमल । आंखकी मैल । (पिचुटी).

पिञ्जर, (न०) पिजि+अरच् । हरिताल (हडताल) । स्वर्ण (सोना) नागकेशर । पक्षी आदिके बंधनका स्थान (पिंजरा) । देहास्थिवृन्द । शरीरकी हड्डिओंका समूह । एकप्रकारका घोडा (पु०) । पीला और लाल रंग (पु०) । उसवाला (त्रि०).

पिट्, संहति-इकट्ठा होना । ध्वनि-शब्दकरना । भ्वा० पर० सक० सेट् । पिटति-अपेटीत्.

पिटक, (पु०) पिट्+क । वांसके पत्ते आदिका बना हुआ पात्र (वर्तन) । पिटारी । मञ्जूषा । विस्फोट (फोडा) । "स्वार्थे कन्" यही अर्थ.

पिठ्, क्लेश-तकलीफ उठाना । अक० । वध-मारना । सक० भ्वा० पर सेट् । पेठति । अपेठीत्.

पिठर, (पु०) पिठ्+करन् । एकप्रकारका घर । मुस्ता । मोथा । मन्थान दंड (मथानि-रिडकनेका डण्डा ।) (न०) थाली । (पु० स्त्री०).

पिण्ड, राशीकरण (इकट्ठा करना) । भ्वा० आत्म० सक० सेट् । पिण्डते । अपिण्डिष्ट । "ये चुरादिमें भी होता है" उभ० । पिण्डयति-ते.

पिण्ड, (त्रि०) पिडि+घञ् -अच् वा । संहत (इकट्ठाहुआ) और घन । शरीर । शरीरका एक भाग । घरका एक हिस्सह । सामवेद गानेवालोंका पितरोंके देनेलायक गोल आकारवाला अन्न (भोजन) । श्राद्धका पिण्ड । गोल । सिल्हक । समूह । कवल (ग्रास-गराई) । हाथीका कुम्भ (माथा) और मदन वृक्ष (मयनाका दरख्त) (पु०) । आजीवन (गुजारा) । लोहा । यजुर्वेदओंमें पितरोंको देनेयोग्य श्राद्धमें वलिके स्वरूपका अन्न (न०).

पिण्डकः–कं, (पु० न०) पिण्ड इव+कन् । पिण्डके समान । अन्नका गोला ।–कः-भूत.

पिण्डखर्जूर, (पु०) (स्त्री०) पिण्डाख्यः खर्जूरः । पिण्ड-खजूरका दरख्त.

पिण्डद, (त्रि०) पिण्डं ददाति+दा+क+अ । अन्नदाता । भोजन देनेवाला.

पिण्डनिर्वपणम् (न०) पिण्डस्य निर्वपणं निर्+वप्+अन । पितरोंके लिये पिण्ड (अन्न) का निर्वपण (दान).

पिण्डभाज्, (त्रि०) पिण्डं भजति+भज्+ण्वि । मृतकके लिये दियेगये पिण्डको लेनेका अधिकारी । (पु० बहुवचन) मृतपितर.

पिण्डयज्ञ, (पु०) पिण्डस्य यज्ञः । मरेहुए पितरोंके लिये पिण्डका यज्ञ.

पिण्डलोप, (पु०) पिण्डस्य लोपः । पुत्रके न होनेसे पितरोंके पिण्डका समाप्तहोजाना.

पिण्डसंबन्ध, (पु०) पिण्डस्य संबन्धः । पिण्डका सम्बन्ध (रिश्ता) पीढीतक पिण्डका संबन्ध (जीते हुओंका मरेहुओंके साथ).

पिण्डायस, (न०) पिण्डं (संहतं) अयः । अच् समा० । तीक्ष्णायस । तेज लोहा.

पिण्डार, (पु०) पिण्डं (संघातं) ऋच्छति । ऋ+अण् । विकंकत वृक्ष । क्षपणक (वुद्धोंका संन्यासी) और गोप (गूजर -ग्वाल).

पिण्डी-ण्डिका, (स्त्री०) वाणलिङ्गकी योनिके आकारवाली बैठक । आसन.

पिण्डीशूर, (पु०) पिण्ड्यां (भोजने एव) नान्यत्र शूरः । जो खानेमें ही बहादुर है और जगह नहिं । घर-हीमें कडकनेहारा । युद्ध आदिमें असमर्थ । लडाई आदिमें जिसकी ताकत नहिं.

पिण्डोदकक्रिया, (स्त्री०) पिण्डोदकयोः क्रिया । मृतक (मरेहुये) के लिये पिण्ड (चावलोंका गोला) और जलकी भेटा (दान).

पिण्याक, (पु० न०) पुण्-व्यवहार+आकन् -नि० । तिलोंका चूरा । खल हींग । और वाल्हीक । सिल्हक (पु० स्त्री०).

पितामह, (पु०) पितुः पिता । पितृ+डामह । पितुः पितरि । पिताका पिता । बाबा । दादा । उसकी स्त्री (दादी) (स्त्री० ङीप्) । ब्रह्माका नाम । बहु० व० । पितर.

पितृ, (पु०) पाति (रक्षति) पा+तृच् । नि० । जनक । जो रक्षा कर्ता है । पिता । बाप । "पितरौ" माता पिता दोनों । "पितरः" (बहु० व०) बडे लोग (बापदादा आदि).

पितृकर्मन्, (न०) पितॄणां कर्म-ष-त. । मृतक पितरोंका काम (यज्ञका अनुष्ठान).

पितृकानन, (न०) ६ त० । पितरोंका वन । श्मशान । मसान । "पितृवन" "पितृगृह".

पितृगण, (पु०) पितॄणां गणः । पितरोंका समूह । प्रजापतिके पुत्रोंका समूह-मृतक.

पितृगृहम्, (न०) पितुः+गृहम् । पिताका घर.

पितृघातक, घातिन्, (पु०) पितरं घातयति+ण्वुल्+अक+णिनि वा । पिताको मारनेवाला.

पितृतर्पणम्, (न०) पितॄणां तर्पणम् । पितरों (मरेहुए)-को दहिने हाथसें जलका देना । पितरोंको जलदानसे तृप्त करना.

पितृतिथि, (स्त्री०) पितॄणां तिथिः । पितरोंकी तिथि तारीख-वा दिन । अमावास्या.

पितृतीर्थ, (न०) ६ त० । पितरोंका तीर्थ । गया । तर्जनी और अंगूठेका बीच.

पितृपति, (पु०) ६ त० । पितरोंका पति । यमराज । "पितृराज" यही अर्थ.

पितृप्रसू, (स्त्री०) पितॄणां प्रसूः इव । मानों पितरोंकी माता है । (अन्न देनेके योग्य काल होनेसे) पिछली संध्या (सांझ) का समय । पिताकी माता । दादी.

पितृबन्धु, (पु०) ६ त० । पिताकी ओरके बंधु । "पिताके पिताकी बहिनके बेटे । पिताके माताकी बहिनके पुत्र । पिताके मामाके लडके.

पितृभोजनम्, (न०) पितॄणां भोजनम् । मरे हुए पितरोंके उद्देशसे दिया गया भोजन.

पितृयज्ञ, (पु०) ६ त० । पित्रुद्देशेन यज्ञः । पितरोंके निमित्त यज्ञ । पितृतर्पण । "पितृयज्ञस्तु तर्पणम्" मनु.

पितृयाण, (पु०) पितृभिः यायते अनेन+करणे ल्युट् णत्व । जिधरसे पितर जाते हैं । धूम आदिके निशानवाला मरेहुए कर्मिओंके जाने योग्य मार्ग (रास्ता).

पितृलोक, (पु०) ६ त० । चन्द्रमाके लोकसे ऊपरका एक लोक.

पितृव्य, (पु०) पितुः भ्राता । पितृ+व्यत् । बडा वा छोटा पिताका भाई । चाचा वा ताया.

पितृष्वस्रीय, (पु० स्त्री०) पितुः स्वसुः अपत्यं (छ) । पिताकी भगिनीका सन्तान । भूआका बेटा वा बेटी.

पितृसन्निभ, (पु०) पित्रा सन्निभः (तुल्यता) यस्य । पितृतुल्य । जो पिताके समान हो.

पित्त, (न०) अपि+दो+क्त । तका आदेश । अका लोप दीर्घ नहिं हुआ । देहस्थ धातुविशेष । गरमी । सफरा.

पित्तल, (न०) पित्तं लाति । ला+क । ताम्रादिजताधातु-विशेष । तामे आदिसे बनाहुआ एक प्रकारका धातु । पितल । गरमी स्वभावका (त्रि०).

पित्रार्जित, (त्रि०) पित्रा अर्जितः+तृ-त० । पितासे लाभ किया गया (कमाया गया) पैतृकसंपत्ति.

पित्र्य, (त्रि०) पितुः इदं, प्रियं वा, पितृत आगतं वा यत् । पितृसम्बन्धी । पिताका । पितासे आया । पितृ-तीर्थं । मधु (शहत) । और मघा नक्षत्र (तारा) । पि-तरोंका पियारा (माष-मां) (पु०) अमावास्या तिथि (स्त्री०).

पित्सन्, (पु०) पत्+सन्+शतृ । पक्षी । गिरनेकी इच्छावाला (त्रि०).

पिधान, (न०) अपि+धा ल्युट् (अका लोप) । छादन । पडदा । उदञ्चन । ढकना.

पिनद्ध, (त्रि०) अपि+नह्+क्त । अका लोप । परिहित वस्त्र आदि । पहिराहुआ कपडा आदि । बंधाहुआ.

पिनाक, (पु० न०) पाति । पा+आकन् । नि० । शिव-जीका धनुष् (कमान) । शिवजीका शूलरूपी औजार । धूलिका वर्सना.

पिनाकिन्, (पु०) पिनाक (अस्त्यर्थे)+इनि । पिनाक-वाला महादेव.

पिपासा, (स्त्री०) पातुं इच्छा । पा+सन्+अ । पानेच्छा । पीनेकी चाह.

पिपासु, (त्रि०) पातुं इच्छुः । पा+सन्+उ । पीनेकी इच्छावाला । पियासा.

पिपीलक, (पु०) अपि+पील+ण्वुल् । अका लोप । एक प्रकारका कीडा । "पिपीलिका" काला कीडा वा काली कीडी.

पिप्पल, (न०) पा+अलच् । (पु०) । जल (पानी) । और एक कपडेका टुकडा । अश्वत्थवृक्ष (पीपलका पेड) । और पक्षी (पु०).

पियाल, (पु०) पी-पान-पीना+कालन् । पेयासाल-मुरगो । एक वृक्ष.

पिल, प्रेरण-चलना । चु+उभ० सक० सेट् । पेलयति-ते. अपीपलत्-त.

पिव्, सेचन-सींचना । भ्वा० पर० सक० सेट् । पिन्वति । अपिन्वीत् । "इदित्".

पिश, अवयव (हिस्सा करना) तु० पर० सक० सेट् । पिंशति । अपेशीत्.

पिशङ्ग, (पु०) पिश्+अङ्गच् । कमलफूलकी धूलिके समान पीला रंग । उसवाला (त्रि०).

पिशाच, (पु०) पिशितं अश्नाति । अश्+अण् । पृ० । जो मांसको खाता है । देवयोनिभेद । एक प्रकारकी देवता । और प्रेत । भूत.

पिशाचभाषा, (स्त्री०) (पिशाचानां भाषा) । भूतोंकी भाषा (जबान) । बहुत निचही प्राकृत.

पिशाचसभम्, (न०) पिशाचानां सभा । पिशाचोंकी सभा (मण्डली.).

पिशाचालय, (पु०) पिशाचानां आलयः । भूतोंका घर । अत्यन्त अपवित्र स्थान.

पिशित, (न०) पिश्+क्त । मांस । जटामांसी । (स्त्री०) वा ङीप्.

पिशुन, (न०) पिश्+उनन् । कुङ्कुम (केसर) । नारद और कौआ (पु०) सूचक (चुगलखोर) । क्रूर (निर्द-य-बेरहम) (त्रि०).

पिषू, चूर्णन-पीसना । रु० पर सक० अनिट् । पिनष्टि । अपिषत्.

पिष्ट, (न०) पिष्+क्त । सीसक । पिष्टक । सीसा । पीठी । चूर्णित (चूरा किया हुआ) । दलागया (त्रि०).

पिष्टक, (पु० न०) पिष्टानां (तण्डुलचूर्णानां) विकारः+कन् । चावलोंके चूरेका बना हुआ पीठी । एक प्रका-रका खाना.

पिष्टप, (पु० न०) पिश्यते, पिष्यते वा+अन् । पिष्+टप-न् । भुवन । जगत् । सर्ग.

पिष्टात, (पु०) पिष्टं अतति । अत्+अण् । कपडोंकी सुग-न्धिके लिये रचाहुआ किसी प्रकारका गंध । केसर आदि । अल्ता.

पिस्, जाना-चमकना-सुगन्धिलगाना-जोरकरना-मारना-और देना । भ्वा० पर० सक० सेट् आदि । पेसति । पिंस-यति । पेसपयति-ते । अपीपसत्-त.

पिहित, (त्रि०) अपि+धा+क्त । अका लोप । तिरोहित । आच्छादित । बंद कियाहुआ । छिपाहुआ.

पी, पान-पीना । दि० आ० अनिट् । पीयते । अपैष्ट । "ल्युप्" निपीय.

पीठ, (पु० न०) पीयते (पिव्यते वा अत्र) । पा+ठक् । पिठ्+क वा । पृ० दीर्घः । पीडा (स्टूल) । एक प्रकारका आसन । व्रतिओंका आसन । वेदी । चौकी । वह नगर जहांपर देवीके शरीरसे कईएक खण्ड (टुकडे) गिरेहों.

पीठमर्दिका, (स्त्री०) पीठं-नायिकायाः आसवं मर्दयति+ठक्+इक+अ । नायिकाके पास रहकर उसको नायकके साथ मिला देनेमें सहायता करनेवाली एक स्त्री । सुन्दरि-ओंको नृत्यविद्या (नाच) सिखानेवाली.

पीड्, वध-मारना-विलोडन-प्रवेश करना-रिडकना । चु० उभ० सक० सेट् । पीडयति-ते.

पीडन, (न०) पीड्+ल्युट् । दूसरे राजाआदिसे अभि-भव (दबाव) । शत्रु राजा आदिसे आक्रमण (चढाई हमला) दुःखका उपजाना । तक्लीफ देना.

पीडा, (स्त्री०) पीड्+अ । व्यथा । दुःख । दरद । तक्लीफ । तरस.

पीडाकर, (त्रि०) पीडां करोति+कृ+अप् । कष्टदायक । तक्लीफ देनेवाला । दर्दनाक.

पीडित, (त्रि०) पीड+क्त । मर्दित । मलाहुआ । निचोडाहुआ । यन्त्रित । तक्लीफ पहुंचायाहुआ । दुःखित । दुःख दियागया.

पीत, (नं०) पा+क्त । पान । पीना । और हरिता० । हरिद्रावर्ण । हल्दीका रंग (पु०) । "कर्मणि क्त" (पीनेका काम) पीले रंगवाला (त्रि०).

पीतक, (न०) पीत+स्वार्थे कन् । कुङ्कुम । केसर । और हरिताल । पीतल.

पीतवासस्, (पु०) पीतं वासो यस्य । जिसका कपडा पीला है । श्रीकृष्ण.

पीताम्बर, (पु०) पीतं अम्बरं यस्य । पीले वस्त्रवाला । विष्णुका नाम । श्रीकृष्ण.

पीन, (त्रि०) प्याय्+क्त सम्प्रसारण । स्थूल । मोटा । वृद्ध । बूढाहुआ । सम्पन्न । भरपूर । घन आदिसे पूर्ण.

पीनस, (पु०) पीनं (पीनतां) स्यति । सो+क । जो मोटाईको नाश कर्ता है । नासिकाका रोग । जुकाम । खांसी.

पीनस्तनी, (स्त्री०) पीनौ स्तनौ यस्याः । मोटे स्तनों-कुचोंवाली स्त्री (औरत).

पीनोध्नी, (स्त्री०) पीनं ऊधः अस्याः+ङीप् । अन्तमें "अनङ्" का आदेश । पीवरोधस्का गौ । वहुत मोटे थनोंवाली गौ.

पीय्, प्रीणन-प्रसन्न होना । पर० सक० सेट् । पीयति । अपीयीत्.

पीयूष, (न०) पीय+ऊषन् । देवताओंके पीनेकी एक चीज । अमृत । दूध.

पील्, रोध-रोकना । भ्वा० पर० सक० सेट् । पीलति । अपीलीत्.

पीलु, (पु०) पील्+उ । परमाणु । "पीलुपाक" "पिठरपाक" (वैशेषिकोंका भेद) । हाथी । हड्डिओंका टुकडा । और फूल.

पीव्, स्थौल्य-मोटा होना । भ्वा० पर० अक० सेट् । पीवति-अपीवीत्.

पीवन्, (त्रि०) प्यै+कनिप् । स्थूल । मोटा । और बलवाला । जोरवाला । वायु (पु०).

पीवर, (त्रि०) प्यै+ष्वरच् । स्थूल । मोटा "ङीष्" अश्वगन्धा । "टाप्" शतावरी । "ङीप्" तरुणी गौ । जवान गौ । शतमूली शतपर्णी.

पुलिङ्ग, (न०) ६ त० । पुरुषका चिह्न । एक प्रकारका अङ्ग । जिसका पुरुषकी नाईं लिङ्ग हो । व० । व्याकरणमें कहाहुआ संस्कारविशेषवाला एक प्रकारका शब्द (पु०).

पुंश्चली, (स्त्री०) पुंसः (भर्तुः) सकाशात् चलति (पुरुषान्तरं) गच्छति+अच् ङीप् । जो अपने भर्ताको छोड दूसरे पुरुषके पास जाती है । असती स्त्री (व्यभिचारिणी स्त्री) । बदमाश औरत.

पुंस्, मर्द-मलना । चु० उभ० सक० सेट् । पुंसयति-ते । अपुपुंसत्-त.

पुंसवन, (न०) पुमान् सूयते अनेन सू+ल्युट् । जिस्से पुरुष उपजता है । एक प्रकारका गर्भका संस्कार । और दूध.

पुंस्त्व, (पु०) पुंसः भावः (चिह्नं वा) । पुरुषपन वा पुरुषका निशान । एक प्रकारका अंग । उसका कार्य शुक्र (वीर्य) । पुंलिङ्गपना.

पुक्कस (श), (पु०) पुक् (कुत्सितं) कसति । कस्-गति जाना । अच् । पृ० वा श । जो बुरी चीजसे मेल रखता है । चाण्डाल । अधम (नीच) (त्रि०).

पुङ्ख, (पु०) पुमांसं खनति । खन्+ड । जो पुरुषको खोदता है । बाणमूल । तीरका सिरा । चिल्लेपर जोडागया तीरका हिस्सह । पुष्कल । पूरा । काफी.

पुङ्गव, (पु०) पुमान् गौः । कर्म० षच्-समा । वृष (बैल) "उत्तरपदमें आनेसे श्रेष्ठ (अच्छे) का वाचक है । "जैसे" "नरपुङ्गव" "नरः पुङ्गव इव" यह उपमितसमासका वाक्य "मनुष्योंमें अच्छा" इस अर्थमें है.

पुच्छ्, प्रमाण (मापना) । भ्वा० पर० अक० सेट् । पुच्छति । अपुच्छीत्.

पुच्छ, (न०) पुच्छ+अच् (पश्चाद्भाग) । पीछेका हिस्सह । और पूंछ.

पुञ्ज, (पु०) (उन्नत्या) पुमांसं जयति । जि+ड । उंचाईसे पुरुषको जीत लेता है । राशि । चय । समूह । ढीग । ढेर.

पुट्, दीप्ति-चमकना । अक० चूर्णन-पीसना-सक० चुरा० उभ० सेट् । पोटयति-ते । अपूपुटत्-त.

पुट्, श्लेष-जुडना-मिलना । पुटति । अपुटीत् । पुपोट.

पुट, (न०) पुट्+क । जातिफल (जायफल) । दवाई पकानेके लिये मट्टी आदिके रचेहुए दो पात्र (पियाले) जिनको नीचे ऊपर धर बीचमें दवाई रख अग्नि लगाई जाती है । आच्छादन (ढकना) । (पु०) । पत्तों आदिका बनाहुआ दूध आदि पीनेका पात्र । दोना (डोना) (त्रि०)

पुटभेद, (पु०) पुटं (संश्लेषं) भिनत्ति+अण् । जो मेलको फाडडालताहै । नदी आदिका पहियेके स्वरूपमें जलावर्त (घुंबरघेर) । नगर । बाजा.

पुटिका, (स्त्री०) पुट्+क+स्वार्थे कन् । एला । इलाइची.

पुटित, (त्रि०) पुट्+क्त । ग्रथित (गुथाहुआ) । पाटित । फाडाहुआ । (तन्त्रमें कहाहुआ) आदि अन्तमें "प्रणव" ओंकार आदियुक्त मन्त्र.

पुट्ट, अनादर-बेइज्जत करना । चु० उभ० सक० सेट् । पुट्टयति-ते.

पुड्, मर्दन-मलना-पीसना । भ्वा० पर० सक० सेट् । इदित् । पुण्डति । अपुण्डीत्.

पुण्, धर्मकृत्यकरण । धर्मका काम करना । तु० पर० सक० सेट् । पुणति । अपोणीत्.

पुण्डरीक, (पु०) पुडि+ईक-नि । अग्निकोणका दिग्गज । और व्याघ्र (भेडिया) । सितपद्म । चिट्टा कमलका फूल । चिट्टा पत्ता । भेषज (दवाई) (न०).

पुण्डरीकाक्ष, (पु०) पुण्डरीकं इव अक्षिणी यस्य+षच् समा० । जिसकी आंखें चिट्टे कमलके समान खिलरही हैं । विष्णु । श्रीकृष्णजी.

पुण्ड्र, (पु०) पुडि+रक् । इक्षुभेद । एक प्रकारका गन्ना (पौंडा) । माधवी लता । चित्रक । तिलकवृक्ष । एक दैत्यका नाम.

पुण्य, (न०) पुनाति । पुञ्+ण्य । शुभादृष्ट । धर्म । अच्छा काम । उसवाला (त्रि०).

पुण्यकीर्ति, (त्रि०) पुण्या कीर्तिः यस्य । पवित्र यशवाला । अच्छे नामवाला । प्रसिद्ध.

पुण्यकृत्यम्, (न०) पुण्यं कृत्यं । पवित्रकाम.

पुण्यक्षेत्रम्, (न०) (पुण्यं क्षेत्रं) पवित्र स्थान । तीर्थस्थान.

पुण्यगृहम्, (न०) पुण्यं गृहम् । पवित्र घर । मन्दिर (जहां हरवक्त भिक्षा मिलसक्ती है).

पुण्यजन, (पु०) पुण्यः (विरुद्धलक्षणया) पापी जनः । कर्म० । राक्षस.

पुण्यजनेश्वर, (पु०) ६ त० । पुण्यजनोंका ईश्वर । कुबेर.

पुण्यभाज्, (त्रि०) पुण्यं भजति+भज्+ण्वि । पुण्यको भजताहै । धार्मिक । धन्यपुरुष । शुभकर्म करनेवाला । महात्मा.

पुण्यभूमि, (स्त्री०) पुण्यस्य (पुण्योत्पादनार्था) भूमिः । अच्छा काम करनेका स्थान । आर्यावर्तदेश । "विन्ध्य और हिमालयका बीच".

पुण्यलोक, (पु०) पुण्यः लोकः । पुण्य (शुभकर्म) से प्राप्त हुआ लोक । स्वर्ग.

पुण्यव्रतम्, (न०) पुण्यं व्रतम् । पवित्र व्रत । एक वर्षपर्यन्त (श्रीकृष्णका पूजन पुत्रकी इच्छासे स्त्रियोंद्वारा किया गया).

पुण्यश्लोक, (त्रि०) पुण्यः (पुण्यदायकः) श्लोकः (यशः चरित्रं) यस्य । जिसका चरित्र पुण्यके देनेहारा है । नल आदि.

पुण्याह, (न०) पुण्यं अहः+टच् समा० । पुण्य उपजानेहारा दिन.

पुण्याहवाचन, (न०) पुण्याहस्य (पुण्यजनकदिनस्य) वाचनं (ब्राह्मणद्वारा वादनं) वद+णिच्+ल्युट्) । वैदिककर्मके आरम्भमें उस दिनकी पवित्रताका ब्राह्मणद्वारा उच्चारण.

पुत्तिका, (स्त्री०) पुत् इति शब्दं तनोति । तन्+ड । स्वार्थे कन् । क्षुद्रमक्षिका । छोटी मक्खी । कीडा.

पुत्र-त्र, (पु०) पुतः त्रायते । पुत्+त्रै+क । जो पुत् (नरक)से बचाता है । तनय । पुत्र । बेटा "पू+क्त" "औरस" आदि १२ प्रकारका पुत्र । ज्योतिष्में लग्न से ५ वां स्थान (घर) (पु०) । "पुत्री" (स्त्री०) कन्या.

पुत्रक, (पु०) पुत्र+कन् । पुत्र (बेटा) । धूर्त । शरभ (एक पशु) । कृत्रिम पुत्र (मुतबन्ना बेटा) । एक पर्वत । "पुत्रिका" (स्त्री०).

पुत्रकर्मन्, (न०) पुत्रस्य कर्म । पुत्रके जन्मसमयपर कीगई रीति (रसम-उत्सव).

पुत्रकाम्या, (स्त्री०) आत्मनः पुत्रं कामयते+काम्यच् । पुत्रकी इच्छा करनेवाली.

पुत्रकृतक, (पु०) पुत्रः कृतः इव+कन् । बनावटी पुत्र (बेटा) । दत्तक पुत्र.

पुत्रदा, (स्त्री०) पुत्रं ददाति । दा+क । जिसके सेवनसे बांझको गर्भ हो जाता है । बंध्याकर्कटी । बांझक करोलवेल । लक्ष्मणकन्द.

पुत्रप्रतिनिधि, (पु०) पुत्रस्य प्रतिनिधिः-स्थानीयः । पुत्र जैसा । दत्तक पुत्र.

पुत्रवधूः, (स्त्री०) पुत्रस्य वधूः । पुत्रकी बहू (स्त्री०).

पुत्रादिनी, (स्त्री०) पुत्रं अत्ति+अद्+णिनि-ङीप् । पुत्रको खाजानेवाली । अप्राकृतिक माता । व्याघ्री.

पुत्रान्नाद, (पु०) पुत्रस्य अन्नं अत्ति-उप-स । पुत्रके अन्नको खानेवाला । पुत्रके व्यय (खर्च) पर जीनेवाला । पुत्रसे पालागया.

पुत्रार्थिन्, (त्रि०) पुत्रं अर्थयते+अर्थ+णिनि । पुत्रकी इच्छा करनेवाला.

पुत्रिकापुत्र, (पु०) पुत्रिकैव पुत्रः । पुत्रिकायाः पुत्रः वा । पुत्रस्वरूपसे स्वीकार कीगई कन्या । वा उस कन्याका पुत्र.

पुत्रिकाप्रसूः, (स्त्री०) पुत्रिकाः प्रसूते+सू+क्विप् । कन्याओंको उत्पन्न करनेवाली । अथवा कन्याओंकी माता.

पुत्रेष्टि, (स्त्री०) पुत्रस्य पुत्रार्था वा इष्टिः । यज्–क्तिन् । पुत्रका वा पुत्रके लिये यज्ञ । पुत्रनिमित्तक यागभेद.

पुथ्, हिंस-मारना । नुकसान पहुंचाना । दि० पर० सक० सेट् । पुथ्यति.

पुद्गल, (पु०) गलतीति गल्–अच् । पुत् (कुत्सितं) गलो यस्मात् । २ ब० । अच्छा खरूप । मनोहर द्रव्य । परमाणु । शरीर । आत्मा । शिवजी महाराजका एक नाम.

पुनःपुनर्, (अव्य०) मुहुः । अभीक्ष्ण । वारवार.

पुनःपुनः, (पु०) पुनः पुनाति । पू+नक् । पृ० । एक नदी.

पुनःसंस्कार, (पु०) पुनर्वारः संस्कारः । दूसरीवार संस्कार (उपनयन-जनेउ-विवाह आदि) होना । (ज्योतिष) जिसका "पुनर्वसु" में उपनयन हो "वा" जिस कन्याका एकवार विवहेहुए पतिसे विवाह होय फिर संस्कारके योग्य होते हैं.

पुनर्, (अव्य०) अवधारण (निश्चय) । भेद । फिर । अधिकार.

पुनरुक्तवदाभास, (पु०) एक अलंकार (जिसमें वार २ वही अर्थ मिले).

पुनर्नव, (पु०) छिन्नः अपि पुनः अपि नवः । काटागयासी जो फिर नया हो । नख । नखून । नौं.

पुनर्भव, (पु०) छिन्नोऽपि पुनर्भवति । भू+अच् । काटा हुआभी फिर होता है । नख । नौं । नखून.

पुनर्भू, (स्त्री०) पुनर्भवति । फिर होती है (पहले एककी स्त्री बनकर फिर दूसरेकी बनती है) । भू+क्विप् । दुवारा व्याहीहुई । द्विरूढा फिर पैदाहुआ (त्रि०).

पुनर्वसु, (पु०) पुनर्+वस्+उ । विष्णु । और शिवजी । अश्विनीसे सातवां नक्षत्र (तारा) द्विव०.

पुनर्विवाह, (पु०) पुनः विवाहः । दूसरी शादी.

पुन्नाग, (पु०) पुमान् नाग इव श्रेष्ठः (प्रधानत्वात्) स इव । श्रेष्ठ पुरुषकी नाईं । बहुत फूलोंवाला वृक्ष । चिट्टा कमल । जायफल । पीले रंगका हाथी । अच्छा आदमी.

पुन्नामनरक, (पु०) पुत् इति नाम यस्य । कर्म० । पराई स्त्रीके गमन आदि सोलह पातकोंसे भोगनेलायक एक नरक । "एतैस्तु पापैः पुरुषः पुन्नामनरके पचेत्" इति पुराणम्.

पुमस्, (पु०) पाति । पा+डुमसुन् । पुरुष और मनुष्य.

पुर्, अग्रगति-आगेजाना । तु० पर० सक० सेट् । पुरति.

पुर, (न०) पुर-आगेजाना+क । घर । शरीर । पटना नगर । नगर । नागरमोथा । चमडा और घरपर घर.

पुर्, (स्त्री०) पिपर्ति । पृ+क्विप् । नगरी.

पुरञ्जन, (पु०) पुरं (देहं) स्वादृष्टेन (स्वसान्निध्येन वा) जनयति+खच् । जो अपने पुण्यपापके निकट रहनेसे शरीर उत्पन्न कर्ता है । जीव.

पुरञ्जय, (पु०) काकुत्स्थनामी सूर्यवंशका एक राजा.

पुरतस्, (अव्य०) अग्रतः । आगेसे.

पुरन्दर, (पु०) पुरं दारयति । दृ+खच् । इन्द्र । चोर । जो पुरको फाडता है) । काली मिरच । "पुरन्दरा" गंगानदी (स्त्री०).

पुरन्ध्रि–न्ध्री, (स्त्री०) पुरं (गेहं) धारयति (पालयति) धृ+खच् । गौरा० ङी० वाह ह्रस्वः । जो घरको पालती है (पकडती है) । बहुत कुटुम्बवाली और पतिपुत्रवाली स्त्री । बहुत परिवारवाली औरत.

पुरश्चरण, (न०) पुरस्+चल्+ल्युट् । देवताकी पूजा करके किसी मन्त्रको सिद्ध करना (मन्त्रका जप, होम, तर्पण, अभिषेक और ब्राह्मणभोजनरूपा पञ्चाङ्गसाधना).

पुरस्, (अव्य०) पूर्वस्मिन् कालादौ । अग्रतः । आगे । पहिले समयमें.

पुरःसर, (त्रि०) पुरः (अग्रे) सरति । सृ+ट । आगे जानेहारा.

पुरस्कार, (पु०) पुरस्+कृ+घञ् । आगे करना । पूजन । इनाम.

पुरस्कृत, (त्रि०) पुरस्+कृ+क्त । पूजागया । और आगे कियागया । अभिशस्त (दवायाहुआ) । अरिग्रस्त । शत्रुसे पकडागया । स्वीकृत (मंजूर कियाहुआ) । और सिक्त (सींचाहुआ).

पुरस्तात्, (अव्य०) पूर्व+अस्ताति (पुरादेशः) । अग्रतः । आगेसे.

पुरा, (अव्य०) पहिले । बीतेहुए । भावी (आनेहारा) । निकट (पास) और पुरावृत्त (कहानी) । पुर+क+टाप् । पूर्वदिशा.

पुराण, (त्रि०) पुरा भवः+ट्यु नि० । पुरा नीयते । नि+ड वा । पहिलेका । व्यास आदिसे रचाहुआ एक प्रकारका शास्त्र (न०) (जिसमें सर्ग-कारणसृष्टि । प्रतिसर्ग-कार्यसृष्टि । वंश, मन्वन्तर और वंशोंके चरित हों).

पुराणपुरुष, (पु०) पुराणैः उपस्तुत्यः पुरुषः । शाक० कर्म० वा । पुराणोंसे स्तुति करनेके योग्य पुरुष । विष्णु । बुढा पुरुष.

पुरातन, (त्रि०) पुरा भवम् । पुरा+ट्यु+तुट्च । पुराभव । पुराना । पहिलेका.

पुरावृत्त, (न०) पुरा (पूर्वस्मिन् काले) गतवृत्तं भूतं लक्षणया तदाश्रितकथादि । पहिले समयकी जो कथा बी गई । इतिहास । तारीख । महाभारत आदि ग्रन्थ.

पुरिशय, (त्रि०) पुरि शेते+शी+अ । शरीररूपी पुरी (शहर) में लेटनेवाला । (पु०) जीवात्मा.

पुरी, (स्त्री०) पुर्+ङीप् । नगर । शहर.

पुरीतत्, (स्त्री०) (न०) पुरीं (देहं) तनोति । तन्+क्विप् । जो शरीरको फैलाती है । देहको आरम्भ करनेवाली नाडियें । आंदरां.

पुरीष, (न०) पॄ० दीर्घः+ईषन् । विष्ठा गूह । (वेदमें) जल (पानी).

पुरु, (पु०) पॄ+कु । ययाति राजाका छोटा पुत्र । जिसके कारण कुरुओंकी पौरव संज्ञा हुई । स्वर्ग । एक दैत्य । एक नदी । प्रचुर (बहुत) (त्रि०).

पुरुष, (पु०) पुरि=देहे+शी+ड पृषो० पुर् आगे जाना+ कुषन्+ उष । मनुष्य । देहरूपी शहरमें सोताहै वा सबसे आगे रहताहै (बुद्धिमें) । आदमी । आत्मा । रूह.

पुरुषकार, (पु०) पुरुषस्य कारः । कृष्+घञ् । पौरुष । पुरुषका यत्न । हिम्मत । मिहनत । उद्योग । पुरुषार्थ । पुरुषका काम.

पुरुषकेसरिन्, (पु०) पुरुषः केसरीव । पुरुषसिंह (शेर आदमी) विष्णुका नाम (नृसिंह) चौथे अवतारमें.

पुरुषसिंह, (पु०) पुरुषः सिंह इव । उपमि० । पुरुष मानों शेर है । पुरुषोंमें श्रेष्ठ (बहुत अच्छा) । "पुरुषनाग" यही अर्थ.

पुरुषाधम, (पु०) पुरुषेषु अधमः । पुरुषोंमें नीच । बहुत नीच आदमी.

पुरुषार्थ, (पु०) ६ त० । पुरुषका अर्थ । धर्म, अर्थ, काम और मोक्षरूप पुरुषका प्रयोजन (मतलब).

पुरुषोत्तम, (पु०) पुरुषेषु उत्तमः । कर्म० वा । पुरुषोंमें उत्तम । विष्णु । और उत्तम पुरुष.

पुरुहूत, (पु०) पुरूणि (प्रचुराणि) हूतानि (नामानि) अस्य । जिसके बहुत नाम हो । इन्द्र । देवतोंका राजा.

पुरूरवस्, (पु०) बुधसे इलामें उत्पन्न कियागया उर्वशीका कान्त (पियारा) । चन्द्रवंशी राजा.

पुरोग, (त्रि०) पुरः (अग्रे) गच्छति । गम्+ड । अग्रगामी । आगे जानेहारा । और प्रधान । बडा । "अच्" पुरोगमः । "णिनि" पुरोगामी.

पुरोडाश–स्य, (पु०) पुरो दाश्यते । दाश्+कर्मणि क्विप् घञ् वा । जो आगे दिया जाता है । हवि । घी आदि यज्ञका द्रव्य । चरु.

पुरोधस्, (पु०) पुरः (अग्रे) धीयते । धा+असि । जो आगे किया जाता है । पुरोहित.

पुरोभागिन्, (त्रि०) पुरः (पूर्वं) भजते । भज्+घिनुण् । गुणको छोडकर केवल दोषको ग्रहण करनेहारा । अग्रभागी । पहिले हिस्सेवाला (त्रि०).

पुरोहित, (पु०) पुरः (अग्रे) दृष्टादृष्टफलेषु कर्मसु धीयते असौ । धा+क्त । लौकिक वा पारलौकिक कामोंमें जिसे आगे किया जाता है । राजाओंके परलोकके कामोंमें आगे कियाहुआ जन । आगे कियाहुआ । यज्ञ आदि कर्म करानेहारा.

पुर्व, पूर्ति-भरना । पूरा करना । भ्वा० पर० सक० सेट् । पूर्वति । अपूर्वीत्.

पुल, उच्छ्रिति-ऊंचा होना । चु० उभ० पक्षे तु० अक० सेट् । पोलयति-ते । पुलति । अपूपुलत् -त । अपोलीत्.

पुल्, महत्त्व । बडा होना । भ्वा० पर० सक० सेट् । पोलति-ते । अपोलीत्.

पुलक, (पु०) पुल+क+स्वार्थे कन् वा । रोमाञ्च । रोंआंकी फूट । अंगूठा । कीडा । मणिका चिह्न । शरावका पिआला । हाथीका भोजन । राई । एक प्रकारकी पर्वतकी मट्टी । विपुल (चौडा) । पुल (सेतु).

पुलकित (त्रि०) (पुलक+इतच्+पुलकाः । जाता अस्य) जिसके रोंगटे खडे होगये हैं । बडा प्रसन्न हुआ.

पुलकोद्गम, (पु०) पुलकानां उद्गमः । शरीरके पुलकों- (लूओं वा रोंगटों) का खडा होना । लूंकंडे होना.

पुलस्ति–स्त्य, (पु०) मुनिका नाम.

पुलह, (पु०) एक मुनिका नाम । धान्य (धान) । क्षिप्र । जल्दी.

पुलाक, (पु०) पुल्+अक+अण् । संक्षेप । शस्यशून्य । अनाजके विना.

पुलिन, (न०) पुल+इनन् । तोयोत्थित तट । पानीसे निकला हुआ किनारा । चडा । जजीरा.

पुलिन्द, (पु०) पुल्+किन्दच् । एक प्रकारका चाण्डाल.

पुलोमजा, (स्त्री०) पुलोमा (असुरभेदः) तस्मात् जायते । जन्+ड । पुलोमा नाम दैत्यसे उत्पन्न हुई । इन्द्राणी । इन्द्रकी स्त्री । शची.

पुष्, पुष्टि-पालना । अक० पोषण -पालना । सक० दि० पर० अनिट् । पुष्यति । अपुषत्.

पुषित, (त्रि०) पुष्+क्त । पुष्ट । पालाहुआ । परवरिश कियाहुआ.

पुष्कर, (न०) पुष्+करन् । गजकराग्र । हाथीकी सूंडके आगेका सिरा (नोक) । एक प्रकारका वाजा । मुख । पानी । खड्गफलक (मिआन) । कमल । एक तीर्थ । एक जजीरा (द्वीप) और लडाई । एक रोग । एक हाथी । एक राजा । एक पहाड (पु०).

पुष्करशिखा, (स्त्री०) पुष्करस्य शिखा । कमलकी जड.

पुष्करस्रज्, (स्त्री०) पुष्कराणां स्रक् । कमलोंकी माला.

पुष्करिणी, (स्त्री०) पुष्कर+समूहार्थ और सन्निकृष्टदेशार्थ । इनि । पालकी । कमलिनी । कमलोंका समूह । कमलोंकी बेल । चौकोना तालाब, जो सौ धनुष्के मापका हो.

पुष्करिन्, (पु०) पुष्करं (शुण्डाग्रं) अस्ति अस्य+इनि । सूंडवाला । हाथी.

पुष्कल, (त्रि०) पुष्+कलच् । चौसठ मुट्ठीका परिमाण । चार ग्रासभर भीख । श्रेष्ठ । नेक । काफी.

पुष्टि, (स्त्री०) पुष्+क्तिन् । पोषण । पालना । बढना । १६ ह माताओंमेंसे एक.

पुष्टिकर, (त्रि०) पुष्टिं करोति+कृ+अप् । पुष्टि (वृद्धि) करनेवाला । बल देनेवाला.

पुष्टिवर्धन, (त्रि०) पुष्टिं वर्धयते । पुष्टि (सम्पदा)को बढानेवाला.

पुष्प, विकास । खिलना । दिवा० पर० अक० सेट् । पुष्पति । अपुष्पीत्.

पुष्प, (न०) पुष्प्+अच् । कुसुम । फूल । स्त्रीका रज । खिलना । कुबेरका विमान । एक प्रकारकी आंखकी बीमारी । +स्वार्थे कन् । कुबेरका विमान । नेत्रका रोगविशेष.

पुष्पकरण्डक, (न०) ६ त० । फूलोंकी टोकरी । बांस आदिका बनाहुआ फूलोंके चुननेका पात्र (वर्तन).

पुष्पचाप, (पु०) पुष्पमयं चापं अस्य । जिसका फूलोंका धनुष् हो । कामदेव.

पुष्पदन्त, (पु०) वायुकोणका दिग्गज (हाथी) । एक विद्याधरका नाम.

पुष्पदन्तक, (पु०) "महिम्न" इत्यादि स्तुति करनेहारा एक गन्धर्व (देवता).

पुष्पदामन्, (न०) पुष्पाणां दाम । फूलोंका हार.

पुष्पधनुस्–धन्वन्, (पु०) पुष्पाणि धनुः यस्य । फूलोंके धनुष् (कमान) वाला । कामदेव.

पुष्पपुर, (न०) पाटलीपुत्र नगर । कुसुमपुर । पटना.

पुष्पमास, (पु०) पुष्पप्रधानो मासः । शाक० । बहुत फूलोंवाला महीना । चैत्र (चेत) । वसन्तका समय । वनश्रीका बहार.

पुष्परस, (पु०) ६ त० । फूलोंका रस । मकरन्द । कुसुम–निर्यास । अमोद.

पुष्पलिह्, (पु०) पुष्पं लेढि । लिह्+क्विप् । फूलको चाटता है । मधुकर । भौंरा.

पुष्पवती, (स्त्री०) पुष्पं (स्त्रीरजः) अस्ति अस्य । मतुप् । मको व । फूल (रज) वाली स्त्री । ऋतुमती स्त्री । फूलोंवाला (त्रि०) चांद और सूर्य । द्वि०.

पुष्पवाटिका, (स्त्री०) पुष्पाणां वाटिका । फूलोंकी वाडी । फूलोंका उद्यान (बाग).

पुष्पवृष्टि, (स्त्री०) पुष्पाणां वृष्टिः । फूलोंकी वर्षा । फूलोंका बरसना.

पुष्पशय्या, (स्त्री०) पुष्पाणां शय्या । फूलोंकी छेज । फूलोंका विस्तरा.

पुष्पशरासन, (पु०) पुष्पमयं शरासनं (धनुः) यस्य । फूलोंके धनुषवाला । कामदेव.

पुष्पिताग्रा, (स्त्री०) अर्धसम । एक प्रकारका छन्द । जो आधा बराबर हो.

पुष्य, (पु० स्त्री०) कार्यं पुष्यति । पुष्+कर्तरि यत् । नि० । जो कार्यको पुष्ट करे । अश्विनी आदि २७ नक्षत्रों (तारों) मेंसे आठवां । स्त्रियां० टाप्.

पुस्त्, बन्ध–बांधना । अनादर-और आदर । चु० उभ० सक० सेट् । पुस्तयति-ते । अपुपुस्तत्-त.

पुस्त, (न०) पुस्त्+अच् । मट्टी, लकडी, कपडे, चमडे, लोहे वा रत्नोंसे बनाहुआ । लिखना आदि शिल्प (कारीगरी) का काम । पलस्तर+स्वार्थे कन् । लिप्याधार । जहां लिखा जाता है । ग्रन्थ.

पुष्कलक, (पु०) पुष्+इन्-पुषिः (पुष्टिः) तस्यै अलति (पर्याप्नोति) अल्+अच् । जो पुष्टिके लिये पर्याप्त (काफी-बहुत) है । गन्धप्रधान मृगभेद । एक हरिण जिसमेंसे बहुतही गंध निकलती है । कस्तूरीमृग । "सीम्नि पुष्कलको हतः".

पू, शोध-साफ करना । दिवा० आ० सक० सेट् । पूयते । अपविष्ट.

पू, शोध -साफ करना । भ्वा० आत्म० सक० सेट् । पवते । अपविष्ट.

पू, शोध -साफ करना । क्र्या० उभ० सक० सेट् । पुनाति-पुनीते । अपावीत् । अपविष्ट.

पूग, (पु०) पू+गन् । सुपारीका वृक्ष । समूह । छन्द । कांटेवाला वृक्ष.

पूज्, पूजन-इज्जत करना । चु० उभ० सक० सेट् । पूजयति-ते । अपूपुजत् -त.

पूजा, (स्त्री०) पूज+अ । अर्चन । "ल्युट्" पूजनम् । (न०) इबादत.

पूजार्ह, (त्रि०) पूजां अर्हति+अण् । पूजनयोग्य । पूजाके लायक.

पूज्य, (पु०) पूज्+यत् । श्वसुर । ससुर । सौरा । पूजाके लायक (त्रि०).

पूण्, राशीकरण । इकट्ठाकरना । चु० उभ० सक० सेट् । पूणयति-ते.

पूत, (न०) पू+क्त । अपनी तवुष । छट्टे (छठे) हुए चावल । व्रत आदिसे शुद्ध (पवित्र) (त्रि०) । सत्य (सच) । शंख । चिट्टी कुशा (पु०).

पूतक्रतायी, (स्त्री०) पूतक्रतोः (इन्द्रस्य) पत्नी+ङीप् । ऐन्द्री । इन्द्रकी स्त्री शची । इन्द्राणी.

पूतक्रतु, (पु०) क्रतुभिः पूतः । "यज्ञोंसे पवित्र" । पूताः पवित्रतासम्पादकाः क्रतवः (यज्ञाः) यस्य वा । जिसके यज्ञ पवित्रताको सम्पादन कर्ते हैं । इन्द्र । देवताओंका राजा.

पूतना, (स्त्री०) पूतं करोति । पूत+णिच्+युच् । पवित्र कर्ता है । हरीतकी । हरीड । एक राक्षसी (जो विषसे लिपटेहुए दूधको पिलाती हुई श्रीकृष्णजीसे मारीगई) । एक रोग.

पूति, (स्त्री०) पू+क्तिन् । पवित्रता । पाकीजगी । दुर्गन्ध । बदबू । रोषिषघास (न०).

पूतिक, (न०) पूत्या (दुर्गन्धेन) कायति । कै+क । जिसमें बडी बदबू चलती है । विष्ठा । गूंह । पूतिकरञ्जनामी वृक्ष । (पु०) । एक साग (स्त्री०).

पूतिगन्ध, (पु०) पूतिः (दुष्टः गन्धः) यस्य । जिसकी बुरी गंध हो गंधक । और इङ्गुदीका वृक्ष । दुर्गन्ध (बदबू).

पूप, (पु०) पू+पक् । पिष्टक । वडा । पीठीका बनाहुआ पूडा.

पूपाष्टका, (स्त्री०) अष्ट परिमाणं यस्याः+कन् । अष्टका (अष्टमी) उपचारात् तत्कर्तव्यं श्राद्धम् । पूपद्रव्यसाधनाष्टका । कर्म० । अगहनवदि अष्टमीके दिन विधान कियाहुआ श्राद्ध । पीठीके वडोंसे सिद्ध होनेहारी अष्टमी । वडों (पूप) की अष्टमी.

पूय, दुर्गन्ध-बदबू चलना । अक० । भेदन-फाडना । सक० दिवा० आत्म० सेट् । पूय्यते । अपूयिष्ट.

पूय, (न०) पूय्+अच् । व्रण (घाव-वा फोडा) आदिसे निकलाहुआ लोहूका विकार । पूंज । पीप.

पूर्, पूर्ति-भरना-खुश होना-प्रीणन । दिवा० आत्म० सक सेट् । पूर्यते । अपूरि.

पूर, (पु०) पूर+क । जलका समूह । एक प्रकारका खाना । घावकी सफाई.

पूरक, (पु०) पूर+ण्वुल् । बीजपूर । एक प्रकारका नींबू । अंकशास्त्रमें प्रसिद्ध (गुणक) गुणानेहारा । एक प्रकारका प्राणायाम । एक नासिकासे प्राणोंका ऊपर खेंचना । पूरा करनेहारा (त्रि०) प्रेतके शरीरको बनानेहारे दस पिण्ड (न०).

पूरुष, (पु०) पुर+उषन् । पुरुष । नर । आदमी.

पूर्ण, (त्रि०) पूर+क्त । नि० । पूरित । भराहुआ । सकल । सारा । ज्योतिषमें दोनों पक्षोंकी पंचमी, दशमी और पूर्णिमा तिथियें । (स्त्री०).

पूर्णपात्र, (न०) कर्म० । भराहुआ पात्र (बर्तन) । हर्षका समय । पुत्रकी उत्पत्ति आदि हर्षके समय खेंचकर वस्त्र आदिका लेना । होमके अन्तमें ब्रह्माकी दक्षिणाके स्वरूपमें चार पुष्कल अर्थात् २५६ मुट्ठी चावलोंसे भराहुआ एक पात्र.

पूर्णमास, (पु०) पूर्णमास्यां विहितः+अण् । पूर्णिमाके दिन करनेयोग्य एक प्रकारका यज्ञ । "दर्शपूर्णमासाभ्यां यजेत" श्रुतिः.

पूर्णिमा, (स्त्री०) पू+क्तिन् । नि० । पूर्णि (पूरणं) चन्द्रकलापूरणं मिमीते मा+क । चन्द्रमाकी पन्द्रहवीं कलाको भरनेहारी तिथि । पूर्णमासी.

पूर्त, (न०) पुर्+क्त । नि० । खातादिकर्म । तालाव, खूआ आदिका काम । विश्वजन (सब लोग) के उद्देशसे जलाशय (तालाव) आदि बनवाकर दान करना । "भावे क्त" पूरण भरना (न०) काल (समय) । छन्न (ढकाहुआ) । पूरित (भराहुआ) (त्रि०).

पूर्वकाय, (पु०) कायस्य पूर्वः । शरीरका अगला भाग । हिस्सा (विशेषतः पशुओंका).

पूर्व–र्व,–निवास-वसना । अत० । निमन्त्रण-बुलाना । सक० चुरा० उभ० सेट् । पक्षे । भ्वा० । पर० । पूर्व- (र्व)-यति । पूर्व(र्व)ति.

पूर्व्–र्व्, (त्रि०) । पूर्व् (र्व्) +अच् । प्रथम । पहिला । समस्त । सारा । ज्येष्ठ भ्राता । बडा भाई । (यह शब्द सर्वनाम है).

पूर्व–र्व–ज, (पु०) पूर्व (र्व) जायते । जन्+ड । ज्येष्ठ भ्राता । बडा भाई । जो पहिले उपजता है । बडी भगिनी (बहिन) (स्त्री०).

पूर्व (र्व) देव, (पु०) पूर्व (र्व) देवः (पश्चात् पापाचरणात् भ्रष्टः) । पहिला देवता पीछे पाप करनेसे गिरगया । असुर । दैत्य । अथवा पूर्वः (र्वः) श्रेष्ठो देवः । अच्छा देवता.

पूर्व (र्व) देश, (पु०) कर्म० । पूर्वका देश । पूर्वी देश । प्राच्यां अवस्थित जनपद.

पूर्व (र्व पक्ष), (पु०) कर्म० । पहिला पक्ष । अठ्ठारह प्रकारका विवाद (झगडा)रूप व्यवहार । प्रतिज्ञारूप पहिला अवयव (भाग) । पहिली तरफ । (मीमांसामें) सिद्धान्तसे विरुद्ध ओरको प्रतिपादन करनेहारा वाक्य.

पूर्व (र्व) पद, (न०) कर्म० । समास वा वाक्यका पहिला भाग । पहिला पद । जिसके अन्तमें सुप् वा तिङ् हो.

पूर्व (र्व) पर्वत, (पु०) कर्म० । पूर्वका पहाड । उदयाचल । जहां सूर्यका पहिले दर्शन होता है वहांका पर्वत । "पूर्वशैल" यही अर्थ.

पूर्व (र्व) फ (फा) ल्गुनी, (स्त्री०) अश्विनीसे ग्यारवां नक्षत्र (तारा).

पूर्व (र्व) भाद्रपद, (पु० स्त्री०) अश्विनीसे पच्चीसवां नक्षत्र (तारा).

पूर्व (र्व) राग, (पु०) रञ्ज्+ घञ् । नका लोप कर्म० । स्त्री और पुरुषके आपसमें मेलसे पहिली दशा । पहिला प्रेम (मुहब्बत).

पूर्व (र्वे) रूप, (न०) कर्म० । (वैद्यकर्म) आनेवाला रोगका निदान (आदि कारण) स्वरूप चिह्न (निशान). विशेष । पहिला रूप.

पूर्व (र्वे) वादिन्, (पु०) व्यवहारे पूर्व (र्वे) प्रथमं वदति । वद्+णिनि । पहिले अभियोग (सवाल-वा नालिश) करनेहारा । पहिले बोलनेहारा.

पूर्वमीमांसा, (स्त्री०) पूर्वा मीमांसा । पहिली परीक्षा । पहिला विचार । वेदके कर्मकांडका विचार (इसीके अगले भागको "उत्तरमीमांसा" कहते हैं).

पूर्वरङ्ग, (पु०) नाटकमें नटद्वारा पहिले करनेयोग्य संगीत गान आदि.

पूर्ववयस्, (त्रि०) पूर्वं वयः यस्य । पहिली आयु (उमर)-वाला । युवा । जवान.

पूर्ववैरिन्, (त्रि०) पूर्वः वैरी । पहिला शत्रु.

पूर्वाभ्यास, (पु०) पूर्वः अभ्यासः । पहिले (पूर्वजन्म) का अभ्यास (आदत).

पूर्वाम्बुधि, (पु०) पूर्वः अम्बुधिः । पूर्वदिशाका समुद्र । पूर्वी समुन्दर.

पूर्वार्जित, (त्रि०) पूर्व अर्जितः । पूर्व (पहिलेजन्म) के कर्मोंसे प्राप्त किया-तें-न । बापदादेकी जायदात । पैतृक-सम्पत्ति.

पूर्वार्धः-र्धं, (पु० न०) । पूर्वः अर्धः+पहिला आधा वा पहिला टुकडा.

पूर्वा(र्वा)षाढा, (स्त्री०) अश्विनीसे वीसवां नक्षत्र (तारा).

पूर्वा (र्वा) ह्ण, (पु०) पूर्व (र्वं) अहः । एकदेशि स० टच् समा० । अह्नादेशः । णत्वं । तीन प्रकारसे विभाग कियेगये दिनका पहिला हिस्सा । पहिला दिन । आधा दिन । "अश्वत्थं वन्दयेन्नित्यं) पूर्वा (र्वा) ह्णे प्रहरद्वये" पुराणम्.

पूर्वे (र्वे) द्युस्, (अव्य०) पूर्व (र्वे)+एद्युस् । प्रथम दिवस । पहिला दिन.

पूल, (संहति) इकट्ठा करना । चु० उभ० पक्षे भ्वा० पर० अक० सेट्० । पूलयति-ते । पूलति.

पूष, वृद्धि-वढना । अक० भ्वा० पर० सेट् । पूषति । अपूषीत.

पूषन्, (पु०) पूष्+कनिन् । जो पुष्ट कर्ता है । सूर्य.

पृ, व्यापार-कामकरना । तु० आत्म० अक० अनिट् । (प्रायः यह धातु व्याङ्पूर्व अर्थात् वि और आ उपसर्ग इसके पहिले रहताहै) । व्याप्रियते । व्यापृतः.

पृ, (प्रीति) प्रसन्न होना । स्वा० पर० सक० अनिट् । पृणोति । अपार्षीत्.

पृ, पालना । जुहो० पर० सक० अनिट् वा दीर्घः । पिपर्ति । पिपृतः-पिपूर्तः.

पृ, पालना । पूरा करना । क्र्या० पर० सक० सेट । पृणाति । अपारीत्.

पृक्त, (त्रि०) पृच्+क्त । मिश्रित । मिलाहुआ.

पृक्ति, (स्त्री०) पृच्+क्तिन् । मिलना.

पृक्थम्, (पृच्+थन्) । जायदात । सम्पदा (वडोंकी) । अपना विरसा.

पृच्, सम्पर्क -जोडना । मिलना । छूना । अदा० आत्म० अक० सेट् । पृक्ते । अपर्चिष्ट । "क्त" । पृक्णः.

पृच्, सम्पर्क । मिलना-जुडना । इकट्ठा होना । रु० प० अ० सेट् । पृणक्ति । अपर्चीत्.

पृच्छक, (पु०) पृच्छ्+ण्वुल्+सम्प्रसारणम् । पूछनेवाला । मालूम करनेवाला.

पृच्छा, (स्त्री०) पृच्छ+अङ् । सम्प्रसारणम् । प्रश्न । सवाल । पूछना । पूछ.

पृतना, (स्त्री०) पृ+तनन् । सेना (फौज) संख्याविशेषवाली सेना) । (रथ २४३, हाथी २४३, घोडे ७२९, पदाति -पैदल १३१५.

पृथ, प्रक्षेप (फेंकना) -फैलाना । चु० उभ० सक० सेट् । पार्थयति-ते.

पृथक्, (अव्य०) भिन्न । जुदा । नानारूप । कईरूपवाला । विना । सिवा.

पृथक्त्व, (न०) पृथक् भावः त्व । पृथक्त्व । बुद्धिसम्पादक गुणविशेष । जुदा होना । जुदाई । अलग होना.

पृथगात्मता, (स्त्री०) पृथक् आत्मा (स्वरूपं) यस्य । तस्य भावः+तल् । स्वरूपका भिन्न होना । स्वरूपकी जुदाई । भेदविशेष । फरक.

पृथग्जन, (पु०) पृथक् (भिन्नः) जनः यस्मात् । जो जनकी गिनतीमें नहिं । नीच । मूर्ख । पामर.

पृथग्विध, (त्रि०) पृथक् (भिन्ना भिन्नाः) विधा यस्य । जिसके भिन्न २ प्रकार हों । नानारूप । प्राकृत । कई रूप (शकल)वाला.

पृथा, (स्त्री०) कुन्तिभोजकी कन्या । कुन्ती.

पृथि (थ) वी, (स्त्री०) प्रथते (विस्तारं एति) । प्रथ् षिवन् (षवन्) वा नि० । जो फैल जाती है । धरा । क्षिति । जमीन.

पृथिवीपति, (पु०) ६ त० । पृथिवीका मालिक । नृपति । भूपति । पृथिवीपाल । राजा । बादशाह.

पृथिवीरुह, (पु०) पृथिव्यां रोहति । पृथिवीपर उगता है । वृक्ष । दरख़.

पृथु, (पु०) पृथ्+डु । सूर्यवंशमें वेनराजाकी दक्षिण (दहिनी) भुजाके मन्थन (विलोडना) से उपजा एक राजा । मोटा.

पृथुक, (न०) (पृथुवत् कायति) । कै+क । चिपिटक । चिडवा । बालक (पु०) "पृथुकार्तस्वरपात्रं" इति.

पृथुल, (त्रि०) पृथु+स्वार्थे लच् । स्थूल । मोटा.

पृथुश्री, (त्रि०) पृथुः श्रीः यस्य । बडी सम्पदावाला.

पृथूदर, (पु०) पृथु उदरं यस्य । जिसका बडा पेट हो । मेष (मेंढा) । बडे पेटवाला (त्रि०).

पृथ्वी, (स्त्री०) पृथुत्वगुणयुक्ता । स्त्रियां ङीप् । भूमि । जमीन । बडी इलाइची । काला जीरा.

पृदाकु, (पु०) पर्द्-गति+काकु-सम्प्रसारण । सर्प । सांप । वृश्चिक । विच्छू । व्याघ्र (भेडिया) । गज (हाथी) । चित्रक वृक्ष.

पृश्नि, (त्रि०) स्पृश्+नि । प्रच्छ+निवा पृ० । खर्व । वौना । छोटा । पतला । दुर्बल । कमजोर । और स्वल्प (थोडा) । देवकी (कृष्णजीकी माता) (स्त्री०).

पृश्निगर्भ, (पु०) ६ त० । पृश्निका गर्भ । देवकीसूनु । देवकीका बेटा । श्रीकृष्ण.

पृषु, सेक-सींचना । भ्वा० आ० सक० सेट् । पर्षते । अपर्षिष्ट.

पृषत्, (न०) पृष्+अति । बिन्दु । (दाग) बूंद (त्रि०) सींचनेहारा.

पृषत, (पु०) पृष्+अतच् । चित्ती विन्दुवाला एक प्रकारका हरिण । श्वेतबिन्दुयुक्त मृग । और बूंद.

पृषत्क, (पु०) पृषत्+ (संज्ञायां) कन् । बाण । तीर.

पृषदश्व, (पु०) पृषतो बिन्दोः अश्व इव (वाहकत्वात्) । बूंदका मानों घोडा है (उठानेसे) वायु । हवा.

पृषदाज्य, (न०) पृषद्-युक्तं (दधिबिन्दुयुक्तं) दधिसेकयुक्तं वा आज्यं । शाक० । दहीकी बूंदोंवाला वा दहीसे सींचाहुआ घृत (घी) । दहीसे मिलीहुई घी.

पृषन्ति, (पु०) पृष्+झिच् । बिन्दु । बूंद.

पृषोदर, (त्रि०) पृषत् उदरे यस्य । पृषो० नि० । जिसके पेटपर बिन्दिआं हों । बिन्दुगर्भित । बिन्दुवाला । धब्बोंवाला.

पृष्ठ, (न०) पृष्+थक् । शरीरके पीछेका भाग । पीठ । स्तोत्रविशेष.

पृष्ठतस्, (अव्य०) पृष्ठ+तसिल् । पश्चात् भाग । पीछेसे । पीछे २.

पृष्ठदृष्टि, (पु०) पृष्ठे (पश्चात्) दृष्टिः अस्य । जिसकी नजर पीछेको हो । भल्लूक । भालू । रीछ.

पृष्ठमांस, (न०) पृष्ठस्य मांसम् । पीठका मांस.

पृष्ठवंश, (पु०) ६ त० । पीठका वांस । पीठकी (डण्डेकी शकलमें) हड्डी.

पृष्ठ्य, (न०) पृष्ठानां (स्तोत्राणां) समूहः+यत् । स्तोत्रोंका समूह । एक यज्ञ । पृष्ठेन वहति+यत् । पीठपर उठाता है । घोडा बैल आदि (त्रि०).

पेचक, (पु०) पच्+वुन् इच् । उल्लूक । उल्लू । हाथीकी पूंछका सिरा । पर्यङ्क । चारपाई । जूं (यूका) । और मेघ । बादल.

पेटक, (पु० न०) पिट्+ण्वुल् । पुस्तक आदि पदार्थोंके टिकानेके लिये वेत्र (बैंत) आदिका बनाहुआ पदार्थ । और समूह । पटार । टोकरी । संदूक । थैला । ढेर.

पेय, (त्रि०) पा-पीना+कर्मणि यत् । पान करनेयोग्य । पीनेलायक । (यं-न०) जल । पानी । दूध । या (स्त्री०) चावलोंकी खिचडी.

पेलृ, कम्प । कांपना । अक० जाना० । सक० भ्वा० पर० सेट् । पेलति । अपेलीत.

पेल, (न०) पेल्+अच् । पुरुषका चिह्न (निशान) । एक अंग । अण्डकोष । पताल्लु.

पेलव, (त्रि०) पेल्+घञ् । पेलं वाति । वा+क । कोमल । कृश । विरल । नाजक । नरम । ऊंदा । सुंदर.

पेश(स)ल, (त्रि०) पिश् (स्)+अलच् । सुंदर । दक्ष । चतुर । और कोमल । नरम । नाजक.

पेशि–शी, (स्त्री०) पिश्+इन् वा । ङीप् । अण्डा । मांसपिण्ड । मांसका गोला । तलवारकी मिआन । एक नदी । पिशाची । एक राक्षसी । इन्द्रका वज्र (पु०) । जूता.

पेषृ, सेवाकरना । निश्चयकरना । भ्वा० आ० सक० सेट् । पेषते । अपेषिष्ट.

पेषण, (न०) पिष्+ल्यु । चूर्णन । पीसना । " ल्युट् " खल (नीच).

पेषणी, (स्त्री०) पिष्यते अनया । अनि वा ङीप् । पेषणशिला । पीसनेकी सिला.

पेस, जाना । भ्वा० पर० सक० सेट् । पेसति । अपेसीत्.

पैठीनसि–सी, (पु०) मुनिभेद । एक मुनिका नाम.

पैतृक, (न०) पितृतः आगतम्+ठण् । पितासे प्राप्त हुआ । दाय (जायदाद) वा विरसा.

पैतृष्वसेय–स्रीय, (पु० स्त्री०) । पितुः स्वसुः अपत्यं+ ठक् छण् वा । पिताकी बहिन (भूआ) का बेटा.

पैत्र, (न०) पितुः इदं । पिता देवता अस्य वा+अण् । पिताका वा पिता जिसका देवता है । तर्जनी और अंगूठेके बीचका स्थान । पितृतीर्थ । पितरोंका । पितृसम्बन्धी । पिताका (त्रि०).

पैशाच, (पु०) पिशाचेन निर्वृत्तः+अण् । एकप्रकारका विवाह । जिसमें बरसोती, वा मतवारी आदि दशामें कन्याके न चाहनेपर भी पकडलेता है (यह आठ प्रकारके विवाहोंमें बहुतही निन्दित है) । एकप्रकारका दैत्य.

पैशुनं-न्यम्, (न०) पिशुनस्य भावः+अण्+ष्यञ्-वा । चुगलखोरी । सूचकपन । निन्दा.

पैष्टी, (स्त्री०) पिष्टस्य विकारः+अण्+ङीप् । आटेसे निकाली हुई शराब.

पोगण्ड, (त्रि०) पवते पुनाति वा+पू विच् । पौगण्डः एकदेशो यस्य । विकलाङ्ग । न्यूनाधिकाङ्ग । बिगडे हुए अंगवाला । जिसके अंग छोटे बडे हों । पांचवें वर्षसे दस वर्षके नीचेकी अवस्थावाला बालक (पु०) " पौगण्ड " यही अर्थ.

पोटा, (स्त्री०) चु० पुट्+अच् । पुरुषलक्षणान्विता स्त्री । वह स्त्री कि जिसके लक्षण पुरुषके हों । दाढीमूछवाली स्त्री.

पोत, (पु०) पू+तन् । बालक । नौकारूप यान । जहाज (नाव) की सवारी । समुद्रकी सवारी । घरका स्थान । कपडा और दसबरिसका हाथी (पु०) ङीप्.

पोतवणिज्, (पु०) पोते वणिक् । जहाजमें व्यापारी । नावसे व्यापार करनेहारा.

पोतवाह, (पु०) पोतं (नावं) वहति । वह्+अण् । नाव चलानेहारा मल्लाह.

पोष, (पु०) पुष्+घञ् । रक्षाकरना । पालना । पखरिश-करना । आश्रयदेना.

पोषक, (पु०) पुष्+ण्वुल् । पुष्टकरनेवाला । आश्रय देनेवाला.

पोषित, (त्रि०) पुष्+णिच्+क्त । पालागया । पुष्ट किया-गया.

पोषिन्-पोष्टृ, (त्रि०) पुष्+णिनि+तृच् वा । पालनेवाला । रक्षक.

पोष्यवर्ग, (पु०) पोष्याणां (पाल्यानां) वर्गः (समु-दायः) । वे लोग कि जिनका पालन करना उचित है । अवश्य पालनेलायक समूह (माता, पिता, गुरु, स्त्री, सन्तान, अतिथि आदि).

पौण्ड्र (पु०) एक देश । उसके वासी ब० व० । +स्वार्थे कन् । इक्षुभेद । एकप्रकारका गन्ना । ईख । पोन्ना.

पौत्र, (पु०) पुत्रस्य अपत्यं+अण् । पुत्रकी सन्तान । पोता । " ङीप् " पौत्री । पोती.

पौनःपुन्य, (न०) पुनः पुनः इत्यस्य भावः+ष्यञ् । शश्व-द्भव (बार २ होना) सदा होना.

पौनर्भव, (पु०) पुनर्भुवि (द्विरूढायां) भवः+अण् । दूसरी बार विवाहीगई स्त्रीमें हुआ । बारहप्रकारके पुत्रोंमेंसे एक ।+अण् । पुनर्भूसम्बन्धीनि (पुनर्भूका) (त्रि०) । बार २ होनेवाला (पु०).

पौर, (न०) पुरे (नगरे) भवः+अण् । नगरमें हुआ । और रामकपूर । पुरभवमात्र । नगरवासी । नागरी । शहरिया (त्रि०).

पौरव, (पु०) पुरोः गोत्रापत्यं+अण् । पुरुनामी चन्द्र-वंशके राजाका बेटा.

पौरस्त्य, (त्रि०) पुरो भवः+त्यक् । पूर्वदिग्भव । पूर्वदि-शामें हुआ । पूर्वदिशाका । और अग्रभव । आगे हुआ । आगेका.

पौराण, (त्रि०)-णी (स्त्री०) पुराण+अण् । बीत गयेके साथ संबंध रखनेवाला । पुराणमें होनेवाला । पुराणसे निकला । पुराणके जाननेवाला.

पौराणिक, (पु०) पुराणं वेत्ति (अधीते वा)+ठण् । पुराणको जानता वा पढाता है । पुराणज्ञ । पुराणके जाननेहारा.

पौरुष, (न०) पुरुषस्य भावः कर्म वा+अण् । पुरुषका होना वा काम । हिम्मत । विक्रम । बहादुरी । और उद्यम । पु-रुषस्येदं+अण् । ऊपर फलेहुए भुजा और हाथोंवाले मनु-ष्यका परिमाण (माप).

पौरुषेय, (त्रि०)-यी (स्त्री०) पुरुष+ठन्+एय । पुरुषसे आया । पुरुषका सम्बन्धी । पुरुषका बनायाहुआ.

पौरोगव, (पु०) पुरः (अग्रे) प्राच्यवस्तुषु गौर्नेत्रं यस्य पुरोगुः । ततः स्वार्थे अण् । पकानेवाले पदार्थोंमें जिसकी आँख है । पाकशालाका अध्यक्ष (रसोइया).

पौरोधसम्, (न०) पुरोधसः कर्म+अण् । पुरोहितका कर्तव्य (काम).

पौरोभाग्यम्, (न०) पुरोभागस्य=दोषैकदृशः भावः+यत् । दूसरेके दोष (चूक) को देखनेका स्वभाव.

पौरोहित्यम्, (न०) पुरोहितस्य कर्म+यत् । पुरोहितपना । पुरोहितका अधिकार.

पौर्णमास, (पु०) पौर्णमास्यां विहितं+अण् । पूर्णमासीके दिन कियागया एकप्रकारका यज्ञ । " पौर्णमास्यां यजेत " इति श्रुतिः.

पौर्वापर्यम्, (न०) पूर्वापरस्य भावः+यत् । पहिले पिछ-लेका संबंध । यथाक्रम । कायदेवार । नियमानुसार.

पौलस्त्य, (पु० स्त्री०) पुलस्त्यस्य अपत्यं+यञ् । पुल-स्त्यकी सन्तान । कुबेर । रावण आदि । शूर्पणखा (सू-पनखा) (स्त्री०)

पौलोमी, (स्त्री०) पुलोम्नः अपत्यं स्त्री+अण् । पुलोम-की कन्या । इन्द्रकी स्त्री । इन्द्राणी.

पौष, (पु०) पुष्यनक्षत्रयुक्ता पौर्णमासी अस्मिन् मासे +अण् । जिस महीनेमें " पुष्य " नक्षत्रवाली पूर्णिमा हो । पूस । पोह । " पौषी " (स्त्री०) । पौष महीनेकी पूर्णिमा (पूनों).

पौष्प, (त्रि०)-ष्पी+(स्त्री०) पुष्प+अण् । फूलका । फूलसे निकला । फूलवाला । (स्त्री०) पाटलीपुत्र (पटना-नगर) का नाम । एक प्रकारका मद्य (फूलोंसे बना).

प्यान, (त्रि०) प्याय् वा प्यै+क्त । मोटा । बढा गया "पीन" भी इसी अर्थमें होता है.

प्याय्, भ्वा० आ० । प्यायते, प्यान, पीन । वृद्धि-बढना । फूलना । सूजना.

प्यै, वृद्धि वढना । भ्वा० आ० अक० अनिट् । प्यायते । अप्यास्त.

प्र, (अव्य०) आरम्भ । गति । पहिलापन । सर्वतोभव (चारों ओरसे होना) उत्पत्ति । प्रसिद्धि । और व्यवहार.

प्रकट, (त्रि०) प्र+कट्+अच् । स्पष्ट । साफ । जाहिर । प्रकाश.

प्रकटीभूत, (त्रि०) अप्रकटः प्रकटः भूतः–प्रकट+च्वि+भू+क्त । प्रकट (जाहिर) हुआ । प्रकाश हुआ.

प्रकम्पन, (पु०) प्र+कपि+णिच्+युच् । वायु । हवा । एक नरक । बहुत कांपनेवाला.

प्रकम्पिन्, (त्रि०) प्र+कम्प्+णिनि । कांपनेवाला.

प्रकर, (पु०) प्र+कृ+भावे अप् । समूह । और अधिकार " कर्मणि अप् " प्रकीर्ण (खिंडाहुआ) फूल आदि (त्रि०).

प्रकरण, (न०) प्र+कृ+ल्युट् । प्रस्ताव । प्रसंग । दृश्य काव्यविशेष । जिसमें कविका आपही कल्पना किया हुआ लौकिकवृत्तान्त होता है । ग्रन्थकी सन्धि । एक अर्थको कहनेहारा ग्रंथका हिस्सा.

प्रकर्ष, (पु०) प्र+कृष्+घञ् । उत्कर्ष । वडाई । उत्तमता.

प्रकाण्ड, (पु०) प्रकृष्टः काण्डः । प्रा० । वृक्षके मूल (जड) से लेकर शाखा (डाली) तकका भाग । प्रशस्त (अच्छा) (न०).

प्रकाम, (त्रि०) प्रगतः कामं । प्रा० स० । यथेष्ट । इच्छापूर्वक । मर्जीमाफिक । अत्यर्थ (बहुतही) । चित्तकी प्रसन्नता प्रकट करना (अव्य).

प्रकामभुज्, (त्रि०) प्रकाम+भुज्+क्विप् । इच्छापूर्वक (मर्जीमाफिक) खानेवाला.

प्रकार, (पु०) प्र+कृ+घञ् । भेद (फर्क) । सादृश्य । वरावरी.

प्रकाश, (पु०) प्र+काश+कर्तरि अच् घञ् वा । आतप । धूप । विकाश । चमक । विकाश (चमक) वाला (त्रि०).

प्रकाशक, (त्रि०) प्र+काश्+ण्वुल्+अक । प्रकाश करनेवाला । जाहिर करनेवाला.

प्रकाशकर्तृ-कर्मन्, (न०) प्रकाशं करोति । प्रकाश करनेवाला । सूर्य.

प्रकाशक्रय, (पु०) प्रकाशे क्रयः । खुला वेचना । खुली फरोख्त.

प्रकाशनारी, (स्त्रि०) प्रकाशे नारी साधारण (आंम) स्त्री । वेश्या मोलपर विकनेवाली स्त्री (औरत).

प्रकाशात्मन्, (पु०) प्रकाशः आतपः अवभासो वा आत्मा (स्वरूपं) यस्य । जिसका स्वरूप धूप वा चमक हो । सूर्य । और परमेश्वर । प्रकटरूपवाला (त्रि०).

प्रकीर्ण, (न०) प्र+कृ+भावे क्त । चामर । भिन्न २ जातिओंका मेल । "कर्मणि+क्त" विक्षिप्त । फेंकागया । फैलाहुआ । भिन्न जातिओंसे मिलाहुआ । विखराहुआ (त्रि०).

प्रकीर्तित, (त्रि०) प्र+कृत्+क्त । घोषित कियागया । पुकारागया.

प्रकृत्, चु० उ० कीर्तयति-ते । अचिकीर्तत्-त । प्रसिद्ध करना । कीर्तन करना । घोषित करना.

प्रकृत, (त्रि०) प्र+कृ+क्त । अधिकृत । जिसे किसी कामका अधिकार दियागया हो । आरब्ध । शुरू किया हुआ । अवसरका.

प्रकृति, (स्त्री०) प्रकरोति । प्र+कृ+क्तिच् । बहुत बनाती है । सांख्यमतमें जगत्को आरम्भ करनेहारा । सत्वरजस्तमोरूप तीन गुणोंवाला प्रधान । उपादानकारण (जिसे लेकर कोई चीज बनाते हैं जैसे–घडेका मट्टी उपादानकारण है) । स्वभाव । लिङ्ग (निशान) । अज्ञान । मित्र । स्वामी । राज्यका अङ्ग । प्रवासिओंकी श्रेणी (कतार) । किला (दुर्ग) । बल (सेना) । शिल्पी (कारीगरी) । शक्ति (ताकत) । स्त्री । परमात्मा । जीव । इक्कीस अक्षरके पादवाला एक प्रकारका छन्द । माता । व्याकरणमें प्रत्ययकी उत्पत्तिका निमित्त एक प्रकारका शब्द (धातु).

प्रकृतिभाव, (त्रि०) प्रकृत्या भावः प्राकृतिकः । स्वाभाविक । जैसाका तैसाही पडे रहना.

प्रकृतिलय, (पु०) प्रकृतौ लयः । प्रकृतिमें लय (धसजाना-प्रवेशकरजाना) । प्रलय.

प्रकृतिसिद्ध, (त्रि०) प्रकृत्या सिद्धः । स्वभावसिद्ध । जन्मसे वनाहुआ । कुदरती.

प्रकृतिसुभग, (त्रि०) प्रकृत्या सुभगः । स्वभावसे सुन्दर (मनोहर) । प्रिय.

प्रकृतिस्थ, (त्रि०) प्रकृतौ तिष्ठति+स्था+क । स्वभावमें रहनेवाला । प्राकृतिक.

प्रकृष्ट, (त्रि०) प्र+कृष+क्त । उत्कर्षयुक्त । प्रधान । बडाईवाला । उम्दह । अच्छा.

प्रकोष्ठ, (पु०) प्रगतः कोष्ठं । प्रा० स० । कूर्पके नीचेका भाग । मणिबंधका अन्त । हाथका हिस्सा । कोहनीसे हाथके पौंचेतक । सहन । कमरा.

प्रक्रम, (पु०) प्र+क्रम्+घञ् । क्रम । सिलसिला । अवसर । उपक्रम । शुरू.

प्रक्रान्त, (त्रि०) प्र+क्रम्+क्त । प्रारंभ (शुरू) कियागया । चलगया । विवादग्रस्त । लांघगया । पहिले कहागया.

प्रक्रिया, (स्त्री०) प्र+कृ+श । अधिकार । प्रकरण (हिस्सा विषय) । राजाओंके सामने छाता चौरी आदि झुलाना.

प्रक्(क्वा)ण, (पु०) प्र+क्वण्+अप् घञ् वा । बीनकी अवाज । वीणाका शब्द.

प्रक्ष्वेडन, (पु०) प्र+क्ष्वेड+ल्यु । नाराचास्त्र । विषलिप्त लोहेका तीर.

प्रखर, (त्रि०) प्रकृष्टः खरः । प्रा० स० । अत्यन्तोग्र । बहुत तीखा । हयसज्जा । घोडेका साज । कुक्कुट । कुत्ता । अश्वतर (खच्चर) (पु०).

प्रख्या, (स्त्री०) प्र+ख्या+अ । सादृश्य । बराबरी । उत्तरपदमें रहता है । तुल्य अर्थमें " पितृप्रख्यः " ऐसे ही " निभ " आदि होते हैं.

प्रगण्ड, (पु०) प्रकृष्टः गण्डः (अवयवः) । अच्छा गाल (कपोल) । कोहनी (कूर्पर) से ले कक्ष (बगल). तक भुजा । दुर्ग (किले) की दीवार.

प्रगल्भ, (त्रि०) प्र+गल्भ+अच् । प्रत्युत्पन्नमति । जिसकी बुद्धि समयपर झट फूर्ती है । प्रतिभावाला । हाजिर जबाव । एक प्रकारकी नायिका (स्त्री०).

प्रगाढ, (त्रि०) प्रकर्षेण गाढं । गाह्+क्त । बहुत गाढा । अत्यन्त । भृश । दृढ । मजबूत.

प्रगुण, (त्रि०) प्रकृष्टो गुणो यस्य । सीधे स्वभाववाला । दक्ष । चतुर.

प्रगृह्य, (न०) प्र+ग्रह+क्यप् । व्याकरणमें स्वरसन्धि न होनेलायक पद.

प्रगे, (अव्य०) प्रगीयते अत्र । प्र+गै+के । अतिप्रातःकाल । बहुत सवेर.

प्रगोपन, (न०) प्र+गुप्+अन । रक्षण । बचाव.

प्रग्रथन, (न०) प्र+ग्रंथ्+अन । गुथना । बुन्ना । एक दुसरेको इकट्ठा करना.

प्रग्रह-ग्राह, (पु०) प्र+ग्रह्+अप्+घञ् वा । ग्रहण । पकडना । घोडे आदिकी रस्सी । लगाम । किरण । बन्दी । भाट । भुज । बाजू.

प्रघण, (न), (न०) प्र+हन्+अप् । बाहिरके दर्वाजेका कमरा । बरांडा । लोहेका मूसल (मोला).

प्रचण्ड, (त्रि०) प्रकर्षेण चण्डः । प्रा० । दुर्धर्ष । दुर्वह । दुरन्त । तुन्द । प्रतापी.

प्रचण्डघोण, (त्रि०) प्रचण्डा घोणा यस्य । बडे नाकवाला । ऊंची नाकवाला.

प्रचण्डसूर्य, (त्रि०) प्रचण्डः सूर्यः यत्र । तीक्ष्ण (तेज) सूर्यवाला (देश-स्थान).

प्रचण्डातप, (पु०) प्रचण्डः आतपः । भीषण (डरावनी) गरमी (धूप).

प्रचय, (पु०) प्र+चि+अच् । समूह । बढना । शिथिल (ढीला) नामी संयोग.

प्रचुर, (त्रि०) प्र+चुर+क । बहुल । बहुत.

प्रचेतस्, (पु०) प्र+चित्+असि । वरुण । एकमुनि । अच्छेदिलवाला (त्रि०).

प्रच्छ, जिज्ञासा । पूछना । तु० पर द्विक० अनिट् । पृच्छति । अप्राक्षीत्.

प्रच्छन्न, (न०) प्र+छद्+क्त । गुप्तद्वार । छिपाहुआ दर्वाजह । अन्तर्द्वार (भीतरका दर्वाजह) । आच्छन्न । ढकाहुआ.

प्रच्छन्नतस्कर, (पु०) प्रच्छन्नः तस्करः । छिपाहुआ (नजानागया) चोर.

प्रच्छर्दिका, (स्त्री०) प्रच्छर्दयति । छर्द+णिच्+ण्वुल् । वमिरोग । डाकीकी बीमारी.

प्रच्छादन, (न०) प्रच्छाद्यते अनेन । छद्+णिच्+ल्युट् । जिस्से ढांपते हैं । उत्तरीय वस्त्र । ऊपरके ओढनेका कपडा.

प्रजन, (पु०) प्रजायते अनेन । प्र+जन्+अप् । स्त्रीगव्यादिषु पुंगवस्य संयोजनम् । पहिले गर्भके लिये गौआदिका बैल आदिसे मिलाना । पशुओंके गर्भ ठहरानेका समय । उत्पत्ति.

प्रजा, (स्त्री० प्र+जन्+ड । सन्तति । जन । औलाद । लोग । रइयत.

प्रजाद, (त्रि०) प्रजां ददाति+दा+क । सन्तानको देनेवाला । बंध्यापनको दूरकरनेवाला.

प्रजानन, (त्रि०) नी (स्त्री०) प्र+जन्+ल्यु+अन । उत्पन्न करनेवाला । उत्पादक.

प्रजान्तक, (पु०) प्रजां अन्तयति-वा, प्रजायाः अन्तकः । यमराज । मृत्युकी देवता जो उत्पत्तिमान्का अन्त करडालता है.

प्रजापति, (पु०) ६ त० । प्रजाका पति । चार मुखवाला ब्रह्मा । प्रजा रचनेहारा । दक्ष आदि नरोंको पालनेहारा । जामाता (जवाई) । सूर्य । अग्नि । त्वष्टा । विश्वकर्मा.

प्रजावती, (स्त्री०) प्रजा विद्यते अस्याः+मतुप्-मको व होता है । जिसकी सन्तान हो ऐसी स्त्री । भाईकी स्त्री (भाईका पुत्र भी अपना होनेसे).

प्रजेप्सु, (त्रि०) प्रजायाः ईप्सुः=आप्तुं इच्छुः आप्+सन्+उ । प्रजाकी इच्छा करनेवाला.

प्रज्ञा, (स्त्री०) प्र+ज्ञा+अ । बुद्धि । सरस्वती । पण्डित (पु०).

प्रज्ञान, (न०) प्र+ज्ञा+ल्युट् । बुद्धि । "करणे ल्युट्" चिह्न (निशान) "अच्".

प्रज्ञु, (त्रि०) प्रगते (विरले) जानुनी यस्य । ("जानु"-के स्थानमें "ज्ञु" होता है) । विरले घुटने (जानुओं) वाला.

प्रडीन, (न०) प्र+डी+क्त (तको न) । पक्षिओंकी चाल (गति).

प्रणय, (पु०) प्र+नी+अच् । प्रीति । प्रीतिसे प्रार्थना करना । उत्पत्ति । स्नेह (पियार) । विश्वास (भरोसा) । नम्रता । निर्वाण । शान्ति.

प्रणयिन्, (पु०) प्रणयः (प्रेम) अस्ति अस्य+इनि । प्रेम करनेवाला । भर्ता । नायक.

प्रणव, (पु०) प्रकर्षेण नूयते अनेन । प्र+नू+अप् । जिस्से बहुत स्तुति की जाती है । ओंकार । वेदके आदिमें पढने-योग्य शब्द.

प्रणाद, (पु०) प्र+नम्+घञ् । ऊंचाशब्द । कानका रोग.

प्रणाम, (पु०) प्र+नम्+घञ् । प्रणति । झुकना (आठ अंगोंका व्यापारविशेष).

प्रणाय्य, (त्रि०) प्र+नी+ण्यत् । असम्मत । द्वेष्य । प्रीतिशून्य । दुश्मन । प्रीतिरहित । साधु और पियारा (प्रिय).

प्रणिधान, (न०) प्रणिधीयते । प्र+नि+धा+ल्युट् । प्रयत्न । कोशिश । अभिनिवेश । एक बातपर ढुलजाना । योगशास्त्रमें "ध्यान" खयाल बांधना.

प्रणिधि, (पु०) प्रणिधीयते । प्र+नि+धा+कि । चर । दूत (गुप्त-खूफिआ) । अनुचर (नौकर-चाकर) । याचन (मांगना) और अवधान । खयाल.

प्रणिपत्, भ्वा० प० । पतति । अपातीत् । किसीके आगे झुकना । प्रणाम करना । आदरसे चरणोंपर गिरना । सलाम करना.

प्रणिपात, (पु०) प्र+नि+पत्+घञ् । झुकना । प्रणाम । "तद्विद्धि प्रणिपातेन" गीता.

प्रणिपातपुरःसर, (अव्य०) प्रणिपातः पुरः सरति यथा तथा । नमस्कारके साथ.

प्रणिपातशिक्षा, (स्त्री०) प्रणिपातस्य शिक्षा । प्रणाम करना । सिखलाना । झुकनेकी शिक्षा (इल्म).

प्रणिहित, (त्रि०) प्र+नि+धा+क्त । प्राप्त । पाया । स्थापित । रक्खाहुआ । समाधिमें लगाहुआ.

प्रणीत, (त्रि०) प्र+नी+क्त । वह पदार्थ कि जिसका रूप रस आदि पकनेसे बदल गया हो । क्षिप्र । फेंकाहुआ । रक्खा हुआ । और कियाहुआ । यज्ञ । संस्कार की गई अग्नि (पु०) । यज्ञका पात्रविशेष (स्त्री०).

प्रणेतृ, (पु०) प्र+नी+तृच् । नायक । लेजानेवाला । बनानेवाला । उत्पन्न करनेवाला । शिक्षा देनेवाला.

प्रणेय, (त्रि०) प्र+नी+यत् । वश्य । अधीन । काबूमें आयाहुआ.

प्रतति, (स्त्री०) प्र+तन्+क्तिन् । विस्तार । फैलाव । वल्ली । लता । बेल.

प्रतन, (पु०) प्र+ट्युल्-तुट्च । पुरातन पदार्थ । पुरानी चीज.

प्रतल, (न०) प्रकृष्टं तलं । पातालविशेष । "प्रकृष्टं तलं अस्य" फैलीहुई अंगुलियोंवाला हाथ । चपेड (पु०).

प्रताप, (पु०) प्र+तप्+घञ् । कोष और दण्डसे उपजा तेज । उपताप । गर्मी । आकका वृक्ष.

प्रतारण, (न०) प्र+तृ+णिच्+ल्युट् । वंचन । ठगना "युच्" प्रतारण.

प्रति, (अव्य०) व्याप्ति । फैलाना । लक्षण भाग । उलटकर देना । को । ओर । फिर.

प्रतिकर्मन्, (न०) प्रति+कृ+मनिन् । कृत्रिम भूषा । बनावटी सजावट । सजाना.

प्रति(ती)कार, (पु०) प्रति+कृ+घञ् वा दीर्घः । वैरनिर्यातन । बदला निकालना । कियेहुए अपकारका वैसाही अपकार करके शोधन करना । रोग आदिकी चिकित्सा । इलाज । हटाना.

प्रति(ती)काश (स), (त्रि०) । प्रतिरूपं काशते । काश+घञ् वा दीर्घः । तुल्यरूप । सदृश । चमक । एक जैसा.

प्रतिकूल, (त्रि०) प्रतिरूपं कूलं पक्षः अस्य । विरुद्धपक्षवाला । अननुकूल । विरुद्ध । बरक्स । विरुद्धपक्षको अवलम्बन करनेहारा.

प्रतिकृति, (स्त्री०) प्रति+कृ+क्तिन् । प्रतिमा । सादृश्य । तसबीर । मुआफिक । प्रतिनिधि । इबजी । बराबरी.

प्रतिक्षण, (अव्य०) क्षणं क्षणं व्याप्य । व्याप्तौ अव्ययी० । अभीक्ष्ण । वार वार.

प्रतिक्षिप्त, (त्रि०) प्रति+क्षिप्+क्त । प्रेषित । भेजाहुआ । अधिक्षिप्त । झिडकागया । बाधित । हटगया । तिरस्कृत । निरादर कियाहुआ.

प्रतिगृहम्, (अव्य०) गृहंगृहं-अव्य० स० । प्रतिघर । हरएक घरमें.

प्रतिग्रह, (पु०) प्रति+ग्रह+अप् । स्वीकार । कबूल । धर्मार्थ दियेगये द्रव्यका लेना । सेनाकी पीठ । दान लेना । सूर्य.

प्रतिघातन, (न०) प्रति+हन्+स्वार्थे णिच् ल्युट् । मारण । मारना.

प्रतिच्छन्दस्, (न०) छन्दः अभिप्रायः । प्रतिगतः छन्दः । अभिप्रायानुरूप । आशयके अनुसार । इरादेके मुआफिक । प्रतिरूप । तसबीर.

प्रतिच्छाया, (स्त्री०) प्रतिरूपा छाया । प्रा० । प्रतिमा । तसबीर । एकसी छाया । प्रतिरूपता । सादृश्य । एकजैसी शकलका होना.

प्रतिज्ञा, (स्त्री०) प्रति+ज्ञा+अ । कर्तव्यतयोपदेश । इकरार । साध्यत्वेन पक्षनिर्देश । साध्यस्वरूपसे पक्षको कहना । "पर्वत वह्निवाला है" (यहां वह्निमत्त्वसे पर्वतका निर्देश किया है) । व्यवहार (दावा) जैसे इसने मेरा अमुक पदार्थ लिया है देता नहीं "ल्युट्" "प्रतिज्ञानम्".

प्रतिज्ञात, (त्रि०) प्रति+ज्ञा+क्त । पहिला कहाहुआ प्रतिज्ञाका विषय । इकरार कियागया.

प्रतिदान, (न०) प्रतिरूपं (तुल्यरूपं) दानं । प्रा० स० । विनिमय । बदला । तुल्यरूप दान । एक चीज देकर दूसरी लेना । न्यस्त द्रव्यका फिर अर्पण करना । अमानत हवाले करना.

प्रतिध्वनि, (पु०) प्रतिरूपः ध्वनिः । प्रतिशब्द । एक जैसी आवाज । गूंज.

प्रतिध्वान, (पु०) प्रति+ध्वन्+घञ् । प्रतिशब्द । गूंज । उलटाहुआ शब्द.

प्रतिनप्तु, (पु०) प्रतिनिहितः नप्ता । पौत्रः । प्रा० । पोतेका पोता । पड़पोता । प्रपौत्र.

प्रतिनिधि, (पु०) प्रति+निधीयते । तुल्यरूपतया स्थाप्यते) । प्रति+नी+धा+कि । प्रतिरूप । वैसी शकलवाला । अपनी जगह वैसाही कायम करना । इवजी । प्रतिमा । तस्वीर.

प्रतिनिर्यातनम्, (न०) प्रतिकूलं निर्यातनं । लौटादेना । चुकादेना.

प्रतिनिविष्ट, (त्रि०) प्रति+नि+विश्+क्त । अभिमानी । सख्तस्वभाववाला । उलटा । कुटिल.

प्रतिपक्ष, (पु०) प्रतिकूलः पक्षो यस्य । विरुद्ध पक्षवाला । शत्रु । व्यवहार । विरुद्ध प्रतिवादी । बर्खिलाफ बोलनेहारा । प्रा० स० । समान.

प्रतिपत्ति, (स्त्री०) प्रति+पद्+क्तिन् । प्रवृत्ति । प्रागल्भ्य । धीरज । चतुराई । गौरव । प्राप्ति । पदकी प्राप्ति । कर्तव्यका ज्ञान.

प्रतिपद्, (स्त्री०) प्रतिपद्यते (उपक्रम्यते) पक्षः अनया । प्रति+पद+क्विप् । पक्षको आरम्भ करनेवाली तिथि । प्रतिपदा । पड़वा । एकम.

प्रतिपन्न, (त्रि०) प्रति+पद्+क्त । अवगत । जानाहुआ । स्वीकृत । मानाहुआ । विक्रान्त । बलवाला.

प्रतिपादन, (न०) प्रति+पद्+णिच्+ल्युट् । दान देना । समझना । कहना.

प्रतिप्रसव, (पु०) प्रति+प्र+सू+अप् । निषिद्धकी फिर प्राप्तिकी सम्भावना । फिर पैदा होना.

प्रतिबन्ध, (पु०) प्रति+बन्ध+घञ् । कार्यप्रतिघात । कामका रुकना+ण्वुल् । प्रतिरोधक । रोकनेवाला (त्रि०).

प्रतिबल, (पु०) प्रतिकूलं बलं यस्य । विरुद्ध बलवाला शत्रु । "प्रतिरूपं बलं यस्य" । समान बलवाला (त्रि०) "यो मे प्रतिबलो लोके" चण्डी.

प्रतिबिम्ब, (न०) प्रतिरूपं बिम्बं । बिम्बसादृश्य । परछाही । प्रतिच्छाया.

प्रतिभय, (त्रि०) प्रतिगतं भयं अस्मात् । भय देनेहारा । भयङ्कर । भयकारी.

प्रतिभा, (स्त्री०) प्रति+भा+अ । बुद्धि । प्रत्युत्पन्नबुद्धि । फुर्तीकी अकिल.

प्रतिभू, (पु०) प्रतिनिधिः भवति । भू+क्विप् । इवजी होता है । लग्नक । जामिन.

प्रतिमन्दिरम्, (अव्य०) मन्दिरं-मन्दिरं । प्रत्येक (हर-एक) मन्दिर (घर) में.

प्रतिमा, (स्त्री०) प्रति+मा+अ । सदृशीकरण । एक जैसा करना । मृत्तिकाशिलादिमूर्ति । मट्टी वा पत्थर आदिकी तसबीर । सदृश (समान । एक जैसा) (त्रि०) । "देवप्रतिष्ठा".

प्रतिमान, (न०) प्रतिमीयतेनेन । प्रति+मि+मा वा ल्युट् । प्रतिबिम्ब । परछाही । प्रतिमा.

प्रतिमुक्त, (त्रि०) प्रति+मुच्+क्त । परिहित । पहिरागया । और छोड़ाहुआ । बांधागया । जकड़ागया । लगायागया.

प्रतियत्न, (पु०) प्रति+यत् । नङ् । वाञ्छा । इच्छा । उपग्रह । निग्रह । रोकना । एक चीजको बहुत अच्छा बना डालना । संस्कार । लेना मेहनती । "प्रतिरूपो यत्नो यस्य" । व० । एक जैसा यत्न करनेहारा । (त्रि०).

प्रतियातना, (स्त्री०) प्रति+यात्यते अनया । चु० यत् युच् । प्रतिमा । तसबीर । प्रा० स० । तुल्यरूप यातना । एक जैसी पीडा.

प्रतियोगिन्, (त्रि०) प्रतिरूपं युज्यते । प्रति+युज्+घिनुण् । विरुद्ध जुड़ता है । प्रतिकूल सम्बन्धवाला । जैसे अभावका प्रतिकूल संबंधवाला होनेसे "घट" आदि प्रतियोगी है । विरुद्ध पक्षवाला । विरोधी.

प्रतिरूप, (न०) प्रतिगतं रूपं । प्रतिच्छाया । प्रतिबिम्ब । तसबीर । परच्छाही "प्रतिगतं रूपं अस्य" । व० सदृश (समान एक जैसा) (त्रि०).

प्रतिलोम, (त्रि०) प्रतिगतं लोम (आनुकूल्यं) अस्मात् । प्रति+लोमन्+अच् । जो अनुकूलतासे विरुद्ध हो । वाम । विपरीत । उलटा.

प्रतिलोमज, (पु०) प्रतिलोमात् जातः । जन्+ड । उत्तम वर्णकी स्त्रीमें नीच वर्णसे उत्पन्न हुआ । संकीर्ण । वर्णसंकर । दोगला.

प्रतिवचन, (न०) प्रतिरूपं वचनं । वैसाही वचन । प्रतिवाक्य । उत्तर । जबाब विरुद्ध वाक्य । बर्खिलाफ बोलना । उलटा बोलना.

प्रतिवात, (त्रि०) प्रतिगतो वातो यतः । जहांसे वायु उल्टा हुआ । जिस ओरसे वायु लौटकर आता है वह देश.

प्रतिवादिन्, (पु०) प्रतिकूलं वदति । वद+णिनि । विरुद्ध पक्षवाला व्यवहार । प्रत्यर्थी । मुद्दालय । बर्खिलाफ बोलनेवाला (त्रि०).

प्रतिवासी (वेशि) न्, (त्रि०) प्रत्यासन्नं वसति (विशति । प्रति+वस्+विश्) वा णिनि । पास रहनेहारा । पडोसी । गृहासन्नवासी । घरके निकट वास करनेहारा । हमसाया.

प्रतिविधान, (न०) प्रति+वि+धा+ल्युट् । प्रतीकार । उपाय । वदलालेना.

प्रतिविरोध, (पु०) प्रति+रुध्+भावे घञ् । वाध । रोक । प्रतिवंध । विघ्न । निरोध । तिरस्कार । और चौर्य (चोरी) । " अच् ".

प्रतिवेश, (पु०) प्रति+विश्+घञ् । प्रतिवेशी । पडोसी । हमसाया.

प्रतिवेशिन् (त्रि०)-नी (स्त्री०) प्रति+विश्+णिनि । पडोसी । हमसाया । घरके साथ निवास करनेवाला.

प्रतिशासन, (न०) प्रति+शास+ल्युट् । निकृष्ट भृत्यादिपर आज्ञा करना । हुकम करना । विरुद्ध आज्ञा । वर्खिलाफ हुकम । " अप्रतिशासनं जगत् " रघुः.

प्रतिश्या, (स्त्री०) प्रति+श्यै+अङ् । शीतकी व्याधि । नजला । "प्रतिश्यान", "प्रतिश्याय" भी इसी अर्थमें.

प्रतिश्रय, (पु०) प्रतिश्रीयते । प्रति+श्रि+अच् । यज्ञका घर । सभा । घर । आसरा.

प्रतिश्रव, (पु०) प्रति+श्रु+अप् । स्वीकार । कवूल करना । मान लेना । गुंज.

प्रतिश्रुत, (स्त्री०) प्रतिरूपं श्रूयते । श्रु+क्विप् । एक जैसा सुना जाता है । प्रतिशब्द । प्रतिध्वनि । गूंज । प्रतिज्ञा । इकरार.

प्रतिषेध, (पु०) प्रति+सिध+घञ् । निषेध । रोकना । "मत कर" ऐसा हटाना.

प्रतिष्टम्भ, (पु०) प्रति+स्तम्भ+घञ् । प्रतिबंध । रोक । रुकावट । विघ्न.

प्रतिष्ठा, (स्त्री०) प्रति+स्था+अच् । क्षिति । पृथिवी । व्रत वा यज्ञ आदिकी समाप्ति । चार अक्षरोंके पादवाला एक छन्द । कूप आदिका संस्कार । व्रत आदिकी समाप्तिमें कर्तव्य कर्म । इज्जत । आश्रय । आसरा । " ब्रह्मपुच्छं प्रतिष्ठा" इति श्रुतिः.

प्रतिष्ठापयितृ, (त्रि०) प्रति+स्था+णिच्+तृच्+पुगागमः । नियत करनेवाला । कायम करनेवाला.

प्रतिष्ठित, (त्रि०) प्रति+स्था+क्त । बनायागया । स्थिर कियागया । रक्खागया । राजतिलक दियागया । समाप्त कियागया.

प्रतिसर, (पु०) प्रति+सृ+अच् । सेनाका पिछला भाग । हाथका सूत्र (कंगन) । हस्तसूत्र.

प्रतिसर्ग, (पु०) प्रतिरूपः प्रतिकूलो वा सर्गः । ब्रह्माकी सृष्टिके पीछे दक्ष आदि प्रजापतिओंकी सृष्टि । विरुद्ध रचना । प्रलय.

प्रतिसीरा, (स्त्री०) प्रति सिनोति सियते वा । रक् दीर्घश्च । जवनिका । कनात । पडदा.

प्रतिसूर्यक, (पु०) प्रतिरूपः सूर्यः+स्वार्थे कन् । उपसूर्यकमण्डल । सूर्यकी सभा । उसके समान रंगवाला कृकलास (किरला).

प्रतिसृष्ट, (त्रि०) प्रति+सृज्+क्त । प्रत्याख्यात । तिरस्कार कियागया । भेजागया.

प्रतिसृष्ट, (त्रि०) प्रति+सृज्+क्त । भेजागया । इन्कार (निषेध) कर दियागया । दियागया । मत्त होगया.

प्रतिहत, (त्रि०) प्रति+हन्+क्त । वैर कियागया । रोकागया । उलटकर माराहुआ.

प्रति(ती)हार, (पु०) प्रति+हृ+घञ् वा दीर्घः । उलटकर चोट करना । दर्वाजा । "अण्" । द्वारपाल । दर्वान । (त्रि०) । "णिनि" प्रतीहारी "मायाकारी" छलिया.

प्रतीक, (पु०) प्रति+कन् । नि० दीर्घः । अवयव । हिस्सा । प्रतिरूप । दूसरी शकल । विलोम । वरकस । (त्रि०).

प्रतीक्षा, (स्त्री०) प्रति+ईक्ष+अ । अपेक्षा । इन्तिजारी । जरूरत । आशा.

प्रतीक्ष्य, (त्रि०) प्रति+ईक्ष+ण्यत् । पूज्य । इज्जतके लायक । प्रतीक्षा कियागया.

प्रतीचीन, (त्रि०) प्रतीच्यां भवः+ख । पश्चिमदिशामें होनेवाला । "यत्" "प्रतीच्यः" यही अर्थ.

प्रतीत, (त्रि०) प्रति+इण्+क्त । ख्यात । प्रसिद्ध । मशहूर । ज्ञात । जानाहुआ । दृष्ट । खुश होगया । आदरसहित । बीताहुआ । मानाहुआ । विश्वास कियागया.

प्रतीति, (स्त्री०) प्रति+इण्+क्तिन् । ज्ञान । जान्ना । ख्याति । महशूरी । आदर । हर्ष । विश्वास.

प्रतीप, (त्रि०) प्रति+अप्-कर्म० । अच्-नि० । प्रतिकूल । बरक्स । चन्द्रवंशका एक राजा.

प्रतीपदर्शिनी, (स्त्री०) प्रतीपं (प्रतिकूलं) दर्शयति । दृश्+णिच् । जो विरुद्ध मार्गको दिखला देती है । "णिनि" भार्या । स्त्री । औरत.

प्रतीपवचनम्, (न०) प्रतीपं वचनं । विरुद्ध वाक्य । कपटसे बोलना.

प्रतीर, (न०) प्रतीर्यते । प्र+तीर+क । तट । किनारा । जो तराजाय.

प्रतोद, (पु०) प्रतुद्यते अनेन । तुद्+घञ् । जिस्से पीडा होती है । घोडे आदिके ताडन करनेके लिये दण्ड । चाबुक.

प्रतोली, (स्त्री०) प्र+तुल्+अच् । ङीष् । रथ्या । गली-कूचा । शहरके बीचका मार्ग । दुर्ग आदिके पासका रास्ता.

प्रत्त, (त्रि०) प्र+दा+क्त । दियागया । देडालागया । मेटा कियागया । विवाहमें दियागया । विवाहागया.

प्रत्न, (त्रि०) प्र+त्न । पुरातन । पुराना.

प्रत्यक्ष, (अव्य०) प्रतिरूपं अक्ष्णः । अव्ययी० अच् । आंखके सामने । इन्द्रियोंसे उत्पन्न हुआ ज्ञान । इन्द्रियजन्य ज्ञान । "अच् उसवाला" (त्रि०).

प्रत्यक्षकृता-ऋक्, (स्त्री०) प्रत्यक्षं कृता । साक्षात् देवताको संबोधन करनेवाला सूक्त (गीत).

प्रत्यक्षज्ञानम्, (न०) प्रत्यक्षं ज्ञानं । साक्षात् अनुभवसे प्राप्त हुआ ज्ञान.

प्रत्यक्षदर्शन-दर्शिन्, (पु०) प्रत्यक्षं पश्यति+दृश्+अन+वा इन् । साक्षात् देखनेवाला । आंखोंसे देखनेवाला.

प्रत्यक्षदृष्ट, (त्रि०) प्रत्यक्षं दृष्टः । साक्षात् (आंखोंके सामने) देखागया.

प्रत्यक्षपरीक्षणम्, (न०) प्रत्यक्षं परीक्षणं । साक्षात् परीक्षा करना (परखना । इम्तिहान लेना).

प्रत्यक्षप्रमा, (स्त्री०) प्रत्यक्षं प्रमा । इन्द्रियोंसे प्रत्यक्ष हुआ कोई ज्ञान । निश्चित ज्ञान.

प्रत्यक्षप्रमाण, (न०) प्रत्यक्षं प्रमाणम् । प्रत्यक्ष होनेका प्रमाण (सबूत).

प्रत्यक्षफल, (त्रि०) प्रत्यक्षं फलं यस्य । व्यक्त (प्रकट-जाहिर) फलवाला.

प्रत्यक्षभोग, (पु०) प्रत्यक्षः भोगः । इन्द्रियोंके सामने आया हुआ भोग.

प्रत्यक्षवादिन्, (पु०) प्रत्यक्षं वदति+णिनि । नेत्र आदि इन्द्रियोंसें जानीगई बात (सबूती) को स्वीकार करनेवाला । एकप्रकारका बौद्ध जो केवल प्रत्यक्ष प्रमाणही मानताहै.

प्रत्यक्षविहित, (त्रि०) प्रत्यक्षं विहितम् । साक्षात् विधान कियागया । वेदसे साक्षात् आज्ञा दियागया.

प्रत्यग्र, (त्रि०) प्रतिगतं अग्रं (अग्रत्वम्) प्रा० । आगेहुआ । नूतन । नया । साफहुआ.

प्रत्यच्, (त्रि०) प्रति+अच्+क्विन् । पश्चिम काल । पिछला समय । पश्चिमका देश । पश्चिम दिशा "प्रतीची".

प्रत्यनीक, (पु०) प्रतिकूलं अनीकं यस्य । जिसकी सेना विरुद्ध हो । शत्रु । विघ्न । रोक.

प्रत्यन्त, (पु०) प्रतिगतः अन्तं । प्रा० । अन्ततक गया । म्लेच्छोंका देश । सन्निकृष्ट देश । पासका देश (त्रि०).

प्रत्यन्तपर्वत, (पु०) प्रत्यन्तः (सन्निकृष्टः) पर्वतः । बडे पर्वतके पासका पर्वत.

प्रत्यपकार, (पु०) प्रतिगतः अपकारः । निर्यातन । बदला । उलटकर अपकार (बुराई) करना.

प्रत्यभिज्ञा, (स्त्री०) प्रति+अभि+ज्ञा+अङ् । जाचना । पहिचानना.

प्रत्यभियोग, (पु०) प्रतिरूपोऽभियोगः । विरुद्ध (उल्टा) सवाल । अभियुक्त (मुद्दालय) ने अपने ऊपर अभियोग (सवाल) करनेवालेपर दूसरा सवाल करना । मुद्दईपर नालिश.

प्रत्यभिवाद, (पु०) प्रति+अभि+वद्+णिच्+घञ् । उलटकर वंदना करना । आशिष्का वचन । "ल्युट्" "प्रत्यभिवादन" (न०).

प्रत्यय, (पु०) प्रति+इण्+अच् । शपथ । सौं । कसम । जानना । विश्वास । अधीन । शब्द । छिद्र (छेक सुराख) । आधार । निश्चय । स्वादु । मजेदार । कारण । व्याकरणमें धातु वा नामको निमित्तकरके विधान कियागया एक प्रकारका शब्द.

प्रत्ययकारिन्-कारक, (त्रि०) प्रत्ययं करोति । णिनि+ण्वुल् वा । निश्चय करने वा करानेवाला.

प्रत्ययित, (त्रि०) प्रति+अच्+क्त । प्राप्त । यथार्थ कहनेहारा । विश्वासी । प्रतिगत । उलटकर गया । लौटा.

प्रत्यर्थिन्, (त्रि०) प्रत्यर्थयते । प्रति+अर्थ । पीडा पहुंचाना । णिनि । शत्रु । दुश्मन । "प्रतिकूलं अर्थयते" णिनि । व्यवहारमें प्रत्यर्थी । मुद्दालय.

प्रत्यर्पण, (न०) प्रति+ऋ+णिच् पुक्+ल्युट् । प्रतिदान । फिरदेना । लियेहुए धनका फिरदेना । लौटना.

प्रत्यवयवम्, (अव्य०) अवयवं अवयवं (अव्य०स०) प्रत्येक (हरएक) अंगमें । विस्तारसे.

प्रत्यवसान, (न०) प्रति+अव+सो+ल्युट् । भोजन । खाना.

प्रत्यवसित, (त्रि०) प्रति+अव+सो+क्त । भुक्त । भोगलिया । खालिया.

प्रत्यवस्कन्द, (पु०) प्रति+अव+स्कन्द्+घञ् । व्यवहार (धर्मशास्त्र-कानून) में चार प्रकारके उत्तरमेंसे एक । एक प्रकारका औषध (न०).

प्रत्यवस्थातृ, (त्रि०) प्रत्यवतिष्ठते । विरुद्ध होकर ठहरता है । प्रतिपक्षवादी । बरक्स बोलनेवाला । शत्रु । दुश्मन.

प्रत्यवाय, (पु०) प्रति+अव+इण्+घञ् । पाप । दोष । गुनाह । ऐब । विघ्न.

प्रत्यवेक्षणं-प्रत्यवेक्षा, (न० स्त्री०) प्रति+अव+ईक्ष्+अन+वाअङ् । खबरदारी रखना । ध्यान रखना । तालाश करना.

प्रत्याख्यात, (त्रि०) प्रति+आ+ख्या+क्त । निराकृत । तिरस्कार कियाहुआ । दूर कियागया । इन्कार कियागया.

प्रत्याख्यान, (न०) प्रति+आ+ख्या+ल्युट् । निराकरण । इनकार । तिरस्कार.

प्रत्यागमः-प्रत्यागमनम्, (पु० न०) प्रति-आ+गम्+अ वा अन्। लौटना। पीछे आना। पहुंचना.

प्रत्यादिष्ट, (त्रि०) प्रति+आ+दिश्+क्त+। निरस्त। निकाल दियागया। इतिला दियागया। जीतागया.

प्रत्यादेश, (पु०) प्रति+आ+दिश्+घञ्। निराकरण। निकालना। हुक्म। इतिला। इन्कार करना.

प्रत्यानयन, (न०) प्रति-आ+नी+अन। लौटाना। पीछे लाना। फिर मिलजाना.

प्रत्यालीढ, (न०) प्रति+आ+लिह्+क्त। धनुर्धरस्थिति-विशेष। बायें पांवको सिकोडकर दहिने पांवके फैलानेसे तीरंदाजका खडा होना। धनुष्धारीका पैतडा। आस्वादित। चाटाहुआ (त्रि०) "आलीढ" से उल्टा.

प्रत्यासन्न, (त्रि०) प्रति+आ+सद्+क्त। अतिनिकटस्थ। बहुत नजदीक.

प्रत्याहार, (पु०) प्रति+आ+हृ घञ्। पीछे खेंचना। योग-शास्त्रमें "इन्द्रियोंको अपने २ विषयोंसे निराकरण हटाना"। वापिस लेना। व्याकरणमें "अण्" आदि.

प्रत्युत्क्रम, (पु०) प्रति+उद्+घञ्। युद्धके लिये उद्योग (हिम्मत)। प्रधान प्रयोजनके उद्देशसे अप्रधानका आरम्भ करना। प्रत्येक कार्यमें जो पहिले पहिले करना उचित है। काम करना.

प्रत्युत्तर, (न०) प्रतिरूपं उत्तरं अस्य। जिसका ठीक उत्तर हो। उत्तरका उत्तर वचन। जवाबका जवाब.

प्रत्युत्थान, (न०) प्रति+उद्+स्था+ल्युट्। अभ्युत्थान। आये हुएके सम्मानके लिये आसनसे उठना। आगेसे उठना.

प्रत्युत्पन्नमति, (त्रि०) प्रत्युत्पन्ना (तत्कालोचिता) मतिः यस्य। उसकालमें उचित बुद्धिवाला। जिसकी अकिल समयपर फूर्ती हो.

प्रत्युद्गमनीय, (न०) प्रति+उद्+गम्+अनीयर्। आगेसे उठनेलायक। धौतवस्त्रयुग्म। धोयेहुए दो कपडे। उपस्थानके लायक। पूजाकरनेके योग्य (त्रि०).

प्रत्यूष, (पु०) प्रत्युषति (रुजति) कामुकान्। उषरोगी होना+क। प्रभात। सवेर। दिनका मुख। कामिओंको पीडा देता है। आठ वसुओंमेंसे एक.

प्रत्यूह, (पु०) प्रति+उद्+घञ्। विघ्न। रुकावट.

प्रथ्, प्रसिद्ध होना। भ्वा० आ० सक० सेट्। प्रथते। अप्रथिष्ठ। "अङ्" प्रथा.

प्रथम, (त्रि०) प्रथ्+अमच्। प्रधान। बडा। आद्य। पहिला। "जस्" में सर्वनाम.

प्रथमकल्पित, (त्रि०) प्रथमं कल्पितः। पहिले चिन्तन (खयाल) किया गया.

प्रथमगर्भ, (त्रि०) प्रथमः गर्भः। पहिला गर्भ। पहिले-पहिल गर्भवाली.

प्रथमदिवसः, (पु०) प्रथमः दिवसः। पहिला दिन.

प्रथमपुरुष, (पु०) प्रथमः पुरुषः। पहिला पुण्य (अंग्रेजी मे तीसरापुरुष).

प्रथमयौवन, (न०) प्रथमं यौवनम्। पहिली जवानी। जवानीकी हालत। युवावस्था.

प्रथमवयस्, (न०) प्रथमं वयः। पहिली उमर (आयु).

प्रथमविरह, (पु०) प्रथमः विरहः। पहिला वियोग (विछोडा).

प्रथमवृत्तान्त, (पु०) प्रथमः वृत्तान्तः। पहिली कथा (हाल)। पहिली अवस्था.

प्रथमसुकृत, (न०) प्रथमं सुकृतम्। पहिला पुण्य (नेक काम)। पहिली मिहरबानी (दया)। पहिली सेवा.

प्रथमाश्रम, (पु०) प्रथमः आश्रमः। पहिला आश्रम। ब्रह्मचर्याश्रम.

प्रथमेतर, (त्रि०) प्रथमात् इतरः। पहिलेसे दूसरा.

प्रथित, (त्रि०) प्रथ्+क्त। ख्यात। मशहूर। प्रसिद्ध। जाहिर.

प्रथिमन्, (पु०) पृथोर्भावः। बडेका होना। पृथु+इमनिच्। स्थूलत्व। मोटाई। मोटापन.

प्रदर, (पु०) प्र+दृ+अप्। विदारण। फाडना। भङ्ग। तोडना। एक प्रकारका योनिका रोग.

प्रदीप, (पु०) प्र+दीप्+क। दीप। दीवा। दीआ। लैम्प.

प्रदीपन, (पु०) प्रदीपयति जठराग्निं। प्र+दीप्+णिच्+ल्यु। जो पेटकी आगको भडकाता है। एक प्रकारका विष (जहिर)। चमकानेहारा (त्रि०).

प्रदीप्त, (त्रि०) प्र+दीप्+क्त। जगाया हुआ। रौशन कियागया.

प्रदीप्तप्रज्ञ, (त्रि०) प्रदीप्ता प्रज्ञा यस्य। जगीहुई बुद्धिवाला। तीक्ष्ण बुद्धिवाला.

प्रदुष्ट, (त्रि०) प्र+दुष्+क्त। बिगडगया। नीच। बदमाश। पापी। बुरा.

प्रदेश, (पु०) प्र+दिश+घञ्। एकदेश। एक जिलह। देश। मुल्क। भित्ति। दीवार.

प्रदेश(शि)नी, (स्त्री०) प्रदिश्यते अनया। प्र+दिश् करणे ल्युट्-ङीप्। तर्जनी (अंगूठेके साथकी अंगुली)। इसीसे वस्तुका निर्देश कियाजाता है।+णिनि "प्रदेशिनी" यही अर्थ.

प्रदोष, (त्रि०) प्र+दुष्+अ बुरा। बडे दोष (ऐब) वाला। चूक। भूल। सायंकाल। रजनीमुख। रातका प्रारंभ। प्रदोष.

प्रद्युम्न, (पु०) प्रकृष्टं द्युम्नं (वलं) यस्य । जिसका बडा वल हो । कंदर्प । कामदेव । श्रीकृष्णजीका पुत्र (वेटा).

प्रद्रव, (पु०) प्र+द्रु+अप् । पलायन । भागना । घञ् "प्रद्राव" यही अर्थ है.

प्रधन, (न०) प्र+धा+क्यु । युद्ध । लडाई । जंग.

प्रधान, (न०) प्र+धा+ल्युट् । सांख्यमतमें सिद्ध होगई सत्वरजस्तमोरूप तीन गुणोंवाली प्रकृति । उसका कार्य बुद्धितत्त्व । परमात्मा । प्रशस्त । वहुत अच्छा । और सचिव (वजीर) । सेनापतिओंका अध्यक्ष (मालिक) (पु०) । श्रेष्ठ (वहुत अच्छा) (त्रि०).

प्रधानपुरुष, (पु०) प्रधानः पुरुषः । राज्यमें बडा प्रसिद्ध वा मुख्य पुरुष । शंकरका नाम.

प्रधानमन्त्रिन्, (पु०) प्रधानः मन्त्रः । मुख्य मन्त्री (वजीर).

प्रधानामात्य, (पु०) प्रधानः अमात्यः । मुख्य मन्त्री । खास वजीर.

प्रधि, (पु०) प्रधीयन्ते काष्ठानि अत्र । प्र+धा+कि । जहां लकडियें रक्खी जाती हैं । पहियेके भागरूप लकडिओंके जुडनेका स्थान । रथकी नाभि । पहिया । धुरा.

प्रध्यान, (न०) प्रकृष्टं ध्यानं । गाढा खयाल । मनका पूरा २ एक ओर लग जाना.

प्रपञ्च, (पु०) प्र+पचि-फैलाना+घञ् । फैलाव । संसार । उलटापन । इकट्ठा । संचय । प्रतारण । ठगना.

प्रपञ्चबुद्धि, (त्रि०) प्रपञ्चे-कपटे बुद्धिः यस्य । धूर्त । वंचक । ठगनेवाला । खचरा.

प्रपञ्चित, (त्रि०) प्र+पञ्च्+क्त । विस्तृत । फैलायागया । पूरा वर्णन कियागया.

प्रपतन, (न०) प्र+पत्+अन । गिरना । मृत्यु । मौत । नाश.

प्रपतित, (त्रि०) प्र+पत्+क्त । गिरगया । नाश होगया । मरगया.

प्रपथ्या, (स्त्री०) प्रकृष्टा पथ्या । प्रा० । समा । बहुत हित-करनेहारी । हरीतकी । हरीड.

प्रपद, (न०) प्रारब्धं पदं । प्रा० स० । पांवके आगेका भाग । पादाग्रभाग.

प्रपन्न, (त्रि०) प्र+पद्+क्त । शरणागत । शरणमें आगया । "प्रपन्नार्तिहरे देवि" चण्डी.

प्रपा, (स्त्री०) प्रपीयते अस्यां । वहुत पीते हैं इसमें । पा+ड । पानीका घर । छवील.

प्रपात, (पु०) प्रपतति अस्मात् । पत्+घञ् । बहुत गिरता है इस्से । तट (किनारे) के विना । आश्रयदान । पर्वतका स्थान । झर्ना । कूल । किनारा । भावे घञ्.

प्रपितामह, (पु०) प्रजातः पितामहो यस्मात् । प्रकृष्टः पितामहो वा । जिस्से वावा (दक्षआदि) उत्पन्न हुआ अथवा अच्छा वावा प्रजाके जनक दक्ष आदि प्रजापतिओंके उत्पन्न करनेहारा चार मुखवाला ब्रह्मा । वावेका पिता । पडवावा उसकी । स्त्री । ङीप् (स्त्री).

प्रपौत्र, (पु०) प्रगतः कारणतया पौत्रं । पौत्रका पुत्र । पोतेका पुत्र । पडपोता.

प्रफुल्ल, (त्रि०) प्र+फुल्-खिलाना+अच् । विकाशयुक्त । खिलाहुआ । "प्रफुल्त" यही अर्थ । प्र+फुल्+क्त.

प्रवन्ध, (पु०) प्र+वंध+अच् । संदर्भ । ग्रन्थ आदिकी रचना.

प्रबन्धकल्पना, (स्त्री०) ६ त० । वह कथा कि जिसमें थोडासा सत्य और वहुतही मिथ्या (झूठ) हो । प्रवंधकी रचना.

प्रवाल, (न०) प्रकर्षेण वलति । अवकम्पते । ण । वहुत कांपता है । नवपल्लव । नया पत्ता । लाल रंग । एक मणि । मूंगा । वीनका डण्डा.

प्रवुद्ध, (त्रि०) प्र+बुध्+क्त । जागाहुआ । बुद्धिमान् । ज्ञानी । शिक्षित । चतुर.

प्रवोध, (पु०) प्र+बुध्+घञ् । प्रकृष्टबुद्धि । अच्छीसमझ । जागना । नींदसे रहित होना.

प्रवोधन, (न०) प्र+बुध्+णिच्+ल्युट् । काल आदि हेतुओंसे पहिली गन्धके न्यून हो जानेपर बडे यत्नसे उसका उद्दीपन करना । जागना । होशमें आना । जान्ना । भडकाना.

प्रबोधनी, (स्त्री०) प्रबुध्यते अनया । प्र+बुध्+ल्युट् । जिस्से जागता है । दुरालभा । "प्रबुध्यते हरिः अत्र" जिस समय विष्णु जागता है । कार्तिकशुक्लैकादशी । कार्तिक (कत्तक) के शुक्लपक्षकी एकादशी । "प्रबोधिनी" यही अर्थ "प्र+बुध्+णिच्+णिनि+ङीप्.

प्रभञ्जन, (न०) प्रभनक्ति तृणादीन् । प्र+भञ्ज्+युच् । जो तिनके आदिको तोडता है । वायु । हवा.

प्रभद्र, (पु०) प्रकृष्टं भद्रं अस्मात् । ५ व० । जिस्से बहुत कल्याण होता है । नीमका वृक्ष.

प्रभव, (पु०) प्रभवति अस्मात् । प्र+भू+अप् । उपजता है इस्से । पहिला प्रकाशका स्थान । उत्पादक । उपजानेहारा । ६० वर्षोंमेंसे एक । "प्र+भू+भावे+अप्" । पराक्रम । वल । जन्म.

प्रभवितृ, (पु०) प्र+भू+तृच् । समर्थवाला । शासक । आज्ञा चलानेवाला । वडा स्वामी (महाराज).

प्रभविष्णु, (त्रि०) प्रभू+इष्णुच् । वडी सामर्थ्यवाला । विशेष पुरुष । दृढ । शक्तिवाला.

प्रभा, (पु०) प्र+भा+अङ् । दीप्ति । चमक । रौशनी.

प्रभाकर, (पु०) प्रभां करोति । कृ+अच् । प्रकाश कर्ता है । सूर्य । एक मीमांसाशास्त्रके बनानेहारा.

प्रभात, (न०) प्र+भा+क्त । प्रकृष्टं भातं अत्र । जिस समय बहुत प्रकाश होता है । प्रातःकाल । सवेर । सुबह.

प्रभाव, (पु०) प्र+भू+घञ् । राजाओंका कोष (खजाना) और दण्ड (सजा) से उत्पन्न हुआ तेज । तेज । सामर्थ्य । शक्ति । ताकत.

प्रभास, (पु०) एकप्रकारका तीर्थ । "प्रभासं पुष्कराणि च" स्नानमन्त्रः.

प्रभिन्न, (पु०) प्र+भिद्+क्त । स्रवन्मदगज । वह हाथी जिसकी मस्ती चू रही हो । मद बहानेहारा हाथी । प्रभेद-वान् । फरकवाला (त्रि०).

प्रभु, (पु०) प्र+भु+डु । विष्णु । शब्द । पारद (पारा) । स्वामी (अधिपति) (त्रि०).

प्रभूत, (पु०) प्र+भू+क्त । प्रचुर । बहुत । उद्गत । (निकलाहुआ) ऊंचा.

प्रभृति, (अव्य०) तदारभ्य । तबसे लेकर । "बहुव्रीहि समासमें यह शब्द पीछे रहता है" । "इन्द्रप्रभृतयो देवाः".

प्रमत्त, (त्रि०) प्र+मद्+क्त मस्त होगया । जिसको भारी नशा चढगया है ।

प्रमथ, (पु०) प्र+मथ्+अच् । शिवजीका एक अनुचर (नौकर) । और घोडा । हरीतकी (हरीड) (स्त्री०).

प्रमथन, (न०) प्र+मथ्+ल्युट् । वध । मारना । क्लेश पहुंचाना । विलोडन.

प्रमथाधिप, (पु०) ६ त० । प्रमथोंका स्वामी । शिवजी महादेव.

प्रमाथिन्, (त्रि०) प्र+मथ्+णिनि । लाचार करदेनेवाला । क्लेश देनेहारा.

प्रमथित, (त्रि०) प्र+मथ्+क्त । लाचार कियागया । कष्ट पहुंचाया गया.

प्रमदवन, (न०) प्रमदस्य (हर्षस्य) वनं । राजाके अन्तःपुर (स्त्रीलोग) का वन । राजाके विलास करनेके लिये एक बाग.

प्रमदा, (स्त्री०) प्रमाद्यति अनया+अप् । जिस्से बहुत मस्त हो जाताहै । उत्तम योषिता । उत्तम स्त्री । बहुत सुन्दर स्त्री.

प्रमनस्, (त्रि०) प्रहृष्टं मनो यस्य (हृष्ट पदका लोप होता है) । जिसका मन बहुत खुश होता है । प्रहृष्टचित्त । खुशदिल.

प्रमा, (स्त्री०) प्र+मा+अङ् । जिस्से पदार्थका निश्चय हो । यथार्थ ज्ञान । ठीक जान्ना । भ्रमरहित ज्ञान । ऐसा जान्ना कि संदेह न रहे.

प्रमाण, (न०) प्रमीयते अनेन । जिस्से सच्चा ज्ञान हो । यथार्थ ज्ञानका साधन । इन्द्रिय आदि । मर्यादा । शास्त्र । सच बोलनेवाला । हेतु । कारण । प्रमाता । "भावे ल्युट्" । सच्चा ज्ञान.

प्रमातामह, (पु०) प्रारब्धो मातामहो येन (आरब्ध पदका लोप होता है) । जिस्से "नाना" का प्रारम्भ होता है । पडनाना । नानेका पिता । उसकी स्त्री "ङीप्" प्रमातामही (पडनानी).

प्रमाद, (पु०) प्र+मद्+घञ् । अनवधानता । बेपरवाही । कर्तव्यको अकर्तव्य समझकर न करना और अकर्तव्यको कर्तव्य समझ करना.

प्रमापण, (न०) प्र+मीञ्-हिंसा-मारना+स्वार्थे णिच्-आत्वं पुक्+ल्युट् । मारण । मारना.

प्रमिति, (स्त्री) प्र+मा+क्तिन् । प्रमा । यथार्थज्ञान । सच्चा-जान्ना । ठीक २ जान्ना.

प्रमीत, (त्रि०) प्र+मीञ्-हिंसा+क्त । मृत । मरगया । यज्ञके लिये मारागया पशु.

प्रमीला, (स्त्री०) प्र+मील्+अ । तन्द्रा । ऊंघना । आंख मूंदना.

प्रमुक्त, (त्रि०) प्र+मुच्+क्त । खोल दियागया । स्वतन्त्र कियागया.

प्रमुख, (न०) प्रकृष्टं मुखं (आरम्भः) । अच्छा आरम्भ । उस्से लेकर । बहुव्रीहि समासमें यह पीछे रहता है । उस-वाला । मान्य । पहिला और श्रेष्ठ (बहुत अच्छा) जिसका मुं सामने हो (त्रि०) समूह । सुपारी (पु०).

प्रमुदित, (त्रि०) प्र+मुद्+क्त । हृष्ट । हर्षयुक्त । खुशी । प्रसन्न । खुश हुआ.

प्रमेह, (पु०) प्र+मिह्+घञ् । एक प्रकारका रोग । रोगभेद.

प्रमोद, (पु०) प्र+मुद्+घञ् । हर्ष । खुशी.

प्रयत, (त्रि०) प्र+यम्+क्त । पवित्र । साफ । नियमयुक्त । नियमवाला । शुद्ध । जितेन्द्रिय.

प्रयत्न, (पु०) प्र+यत्+नङ् । बहुत कोशिश । दिली कोशिश । चेष्टा । न्यायमें तीन प्रकारका यत्न होता है और "वह" आत्माका गुण है । सांख्यमें वह बुद्धिका धर्म है । प्रयास । आदर । इज्जत.

प्रयत्नवत्, (त्रि०) प्रयत्न+मतुप् । प्रयत्न (कोशिश) करनेवाला । परिश्रमी । मिहनती.

प्रयाग, (पु०) प्रकृष्टः यागः यस्मात् । ५ ब० । जिस्से अच्छा यज्ञ होता है । गंगा और यमुनाके संगमका तीर्थ । इन्द्र । घोडा । कर्म० । अच्छा यज्ञ.

प्रयास, (पु० प्र+यस+घञ् । "प्रयत्न" शब्दके अर्थमें । और अज्ञान.

प्रयुत, (न०) दशलाखकी संख्या (गिनती)। "लक्षप्रयुतकोटयः" लीलावती.

प्रयुत्सु, (पु०) प्र+युध्+सन्+उ। युद्ध करनेकी इच्छावाला। योद्धा। वायु। हवा। मेढा। संन्यासी.

प्रयोक्तृ, (त्रि०) प्र+युज्+तृच्। प्रयोग करनेहारा। कर्जा देनेमें धनका प्रयोग करनेहारा। उत्तमर्ण (कर्जा देनेवाला)। लगानेहारा.

प्रयोग, (पु०) प्र+युज्+घञ्। अनुष्ठान। किसी मन्त्र आदिका पूराकरना। वशीकरण। काबू करना। निदर्शन। मसाल और घोडा। लगाना। मुकर्रर करना। इस्तिमाल करना.

प्रयोजक, (त्रि०) प्र+युज्+ण्वुल्। काममें भृत्य (नौकर) आदिको लगाता है। निकृष्ट (छोटा) भृत्य आदिका प्रेरक। हेतुनामी कर्ता। लगानेहारा। प्रेरक.

प्रयोजन, (न०) प्र+युज्+ल्युट्। मतलब। काम। उद्देश्य। हेतु। कारण। सबब.

प्रयोज्य, (त्रि०) प्रयोक्तुं शक्यते। प्र+युज्+शक्यार्थे यत्। प्रयोग किया जासक्ता है। लगानेके लायक। नियोज्य। निकृष्ट भृत्य आदि.

प्ररूढ, (त्रि०) प्र+रुह्+क्त। प्रवृद्ध। बढाहुआ। बद्धमूल। जड पकडगया। उत्पन्न हुआ। "भावे घञ्" प्ररोह। अंकुर.

प्ररूढि, (स्त्री०) प्र+रुह्+क्तिन्। वृद्धि। बढना। जड पकडना.

प्ररोह, (पु०) (प्र+रुह्+अ) अङ्कुर निकलना। अंकुर फूटना। जमना.

प्रलम्ब, (पु०) एक दैत्य। प्र+लम्ब+अच्। बहुत लटका हुआ (त्रि०).

प्रलम्बघ्न, (पु०) प्रलम्बं हन्ति। हन्+ठक्। बलदेव। "प्रलम्बको मारनेवाला".

प्रलय, (पु०) प्रलीयते अस्मिन्। प्र+ली+अच्। जिसमें सब कुछ छिपजाता है। वह समय कि जब रचे हुए पदार्थ नाश हो जाते हैं। ब्रह्माके दिनका अन्त। "भावे घञ्"। नाश। चेष्टाका क्षय। छिपना.

प्रलाप, (पु०) प्र+लप्+घञ्। अनर्थक वाक्य। प्रयोजनरहित बोलना (बकवाद)। बेफायदह पागलोंका वचन। बहुत बोलना.

प्रवचन, (न०) प्र+वच्+ल्युट्। वेदके अर्थका ज्ञान। प्रकृष्ट वाक्य। अच्छा वचन.

प्रवण, (पु०) प्र+वण्+अच्। चतुष्पथ। चौराहा। नीचेका स्थान। चौडा। नम्र। झुकाहुआ। कमजोर (त्रि०).

प्रवयस्, (त्रि०) प्रकृष्टं वयः अस्य। जिसकी बडी उमर हो। प्रवृद्ध। बहुत बूढा.

प्रवर, (पु०) प्र+वृ+अप्। सन्तान। गोत्र। गोत्रके चलानेहारे मुनिओंका समूह। श्रेष्ठ। अच्छा (त्रि०) अगुरुचंदन (न०).

प्रवर्ग, (पु०) प्र+वृज्+घञ्। एक प्रकारकी होमकी अग्नि.

प्रवर्तक, (त्रि०) प्रवर्तयति। प्र+वृत्+णिच्+ण्वुल्। चलानेहारा प्रवृत्तिजनक। काममें जोडनेहारा.

प्रवर्तना, (स्त्री०) प्र+वृत्+णिच्+युच्। प्रवृत्तिजनक व्यापार। काममें जोडना। विधि आदि। "ऐसा करो" इत्यादि.

प्रवर्ह, (त्रि०) प्र+वृह्+अच्। श्रेष्ठ। अच्छा। नेक। प्रधान। बडा सर्दार.

प्रवह, (पु०) प्र+वह्+अच्। एक प्रकारकी हवा। "भावे अप्"। नगरसे बाहिर जाना.

प्रवहण, (न०) प्र+वह्+करणे ल्युट्। मनुष्योंसे उठानेयोग्य कपडोंसे ढकीहुई स्त्रियोंके उठानेवाली सवारी। डोली। पालकी.

प्रवास, (पु०) प्र+वस्+घञ्। दूर बसना। विदेशमें वास। परदेशमें रहना.

प्रवासन, (त्रि०) प्र+वस्+णिच्+ल्युट्। विदेशमें वास करना। मारना.

प्रवासिन्, (त्रि०) प्र+वस्+णिनि। विदेशमें वास करनेवाला। परदेसी.

प्रवाद, (पु०) प्र+वद्+घञ्। परम्परागत वाक्य। लगातार चला आता वचन। अफवाह। गौगा। परस्पर कथन। आपसमें बातचीत करना। गुफ्तगू। बहुत बोलना.

प्रवाह, (पु०) प्र+वह्+घञ्। प्रवृत्ति। जलका प्रवाह। व्यवहार। अच्छा घोडा.

प्रविहारण, (न०) प्र+वि+हृ+णिच्+ल्युट्। युद्ध। लडाई। जंग। फाडना। घिराहुआ.

प्रवीण, (त्रि०) वीणया प्रगायति। प्र+वीणा+णिच्+अच्। बीनसे ऊंचे गाता है। निपुण। चतुर। समझवाला। बीनका गवैया.

प्रवृत्ति, (स्त्री०) प्र+वृत्+क्तिन्। प्रवाह। वार्ता। बात। अवन्ति आदि देश.

प्रवृद्ध, (त्रि०) प्र+वृध+क्त। वृद्धियुक्त। बढाहुआ। प्रौढ। पूरा। गाढा। बडा.

प्रवेक, (त्रि०) प्र+विच्+घञ्। प्रधान। सर्दार। बडा.

प्रवेणि-णी, (स्त्री०)। प्र+वेण्+इन् वा ङीप्। हाथीके कंधेका चित्र। कंबल.

प्रवेश, (पु०) प्र+विश्+घञ्। अन्तर्गमन। भीतर जाना.

प्रवेशन, (न०) प्रविश्यते अनेन। विश्+करणे ल्युट्। जिससे प्रवेश करते हैं। प्रधानद्वार। बडा दर्वाजा। सिंह (शेर) का दर्वाजा। "भावे ल्युट्" प्रवेश। दाखिल होना.

प्रव्रजित, (पु०) प्र+व्रज+क्त । संन्यासी । जो (गृह आदि) छोडकर दूर चला जाता है वा विशेषतः ब्राह्मण जो चौथे आश्रममें प्रविष्ट हुआ है । जैनका शिष्य । (चेला).

प्रव्रज्या, (स्त्री०) प्र+व्रज्+क्यप् । संन्यास । सब कामोंको छोडकर विधिसे दूसरे आश्रममें जाना.

प्रव्रज्यावसित, (पु०) प्रव्रज्यातः (संन्यासात्) अवसितः । च्युतः । अव+सो+क्त । संन्याससे गिराहुआ । संन्यासभ्रष्ट । यति । संन्यासी.

प्रशमन, (न०) प्र+शम्+णिच्+ल्युट् । वध । मारना । शान्त करना । शान्त । साबिरी । हटाना.

प्रशंसा, (स्त्री०) प्र+शंस्+अ । गुणोंको प्रकट करके स्तुति करना । तारीफ.

प्रशस्त, (त्रि०) प्र+शंस्+क्त । प्रशंसनीय । तारीफके लायक । वहुत अच्छा । चौडा । लायक.

प्रश्न, (पु०) प्रच्छ+नङ् । जिज्ञासा । जाननेकी इच्छासे कहनेके लिये प्रेरण करना । सवाल.

प्रश्रय, (पु०) प्र+श्रि+अच् । प्रणय । स्नेह । मुहब्बत । पियार.

प्रश्रित, (त्रि०) प्र+श्रि+क्त । विनीत । शिक्षित । सीखाहुआ । नम्र । भला । हलीम.

प्रष्ठ, (त्रि०) प्र+स्था+क्त । नि० षत्वम् । आगे जानेहारा । बहुत अच्छा । नेत्र.

प्रष्ठवाह्, (पु०) प्रष्ठं वहति+णि । युगपार्श्वस्थ वृष आदि । सिखानेके लिये दोनों ओर जोडेहुए घोडे बैल आदि । वशमें लानेके लिये गाडी वा हलसे लगायेहुए घोडा बैल आदि.

प्रसक्त, (त्रि०) प्र+सञ्ज्+क्त । प्रसंग । विषय । लगाहुआ मिलाहुआ । जुडाहुआ.

प्रसक्ति, (स्त्री०) प्र+सञ्ज्+क्तिन् । प्रसंग । लगना । आपत्ति और अनुमिति.

प्रसङ्ग, (पु०) प्र+सञ्ज्+घञ् । आपत्ति । सम्बन्धविशेष । मेल । मजमून । मैथुन । जनाह.

प्रसत्ति, (स्त्री०) प्र+सद्+क्तिन् । नैर्मल्य । सफाई । प्रसन्नता.

प्रसन्न, (त्रि०) प्र+सद्+क्त । निर्मल । साफ । सन्तुष्ट । खुश.

प्रसन्नता, (स्त्री०) प्रसन्नस्य भावः+तल् । प्रसाद । खुश होना.

प्रसभ, (न०) प्रगता सभा (सभाधिकारः) असात् । सभा दूर होगई । बलात्कार । जबरदस्ती । अकस्मात् (अचानकसे) (अव्य०).

प्रसर, (पु०) प्र+सृ+अप्-अच् वा । प्रभव । उत्पत्ति । वेग । समूह । युद्ध । नीवार (खांकके चावल) । पासजाना । सेना आदिका चारोंओर फैलाना । फैलाहुआ.

प्रसर, (पु०) प्र+सृ+अ । आगे जाना । फैलाव । बडी राशि । दवाव । नदी । तुफान.

प्रसरण, (न०) प्र+सृ+घञ्+अन । चलेचलना । भागना । बहना । फैलजाना.

प्रसर्पण, (न०) प्र+सृप्+ल्युट् । सेनाके लोगोंका चारोंओर फैलना.

प्रसव, (पु०) प्र+सू+अप् । गर्भमोचन । गर्भका छूटना । उत्पत्ति । फल.

प्रसवित्री, (स्त्री०) प्र+सू+अच् । उत्पन्न करनेवाली । जननी । माता । मां.

प्रसव्य, (त्रि०) प्रगतं सव्यं (वामत्वम्) । बाएंपनको प्राप्तहुआ । प्रतिकूल । बखिलाफ । बरक्स । विरुद्ध । विपरीत.

प्रसह्य, (अव्य०) प्र+सह्+ल्यप् । हठात् । जोरावरी । जबरदस्ती.

प्रसह्यचौर, (पु०) प्रसह्य (बलात्कारेण) चौरः । जोरसे चोरी करनेहारा । प्रकाशचौर । प्रकट चोरी करनेवाला । धाडा मारनेवाला.

प्रसाद, (पु०) प्र+सद्+घञ् । नैर्मल्य । सफाई । अनुग्रह । मिहर्बानी । काव्यका गुणविशेष । स्वास्थ्य । (आराम) लगाहुआ । देवताको निवेदन कियाहुआ । गुरुजनोंके खानेसे बचाहुआ.

प्रसादना, (स्त्री०) प्र+सद्+णिच्+युच् । सेवा.

प्रसाधक, (त्रि०) प्रसाधयति (भूषयति) । प्र+सिध+णिच्+ण्वुल् । निष्पादक । पूराकरनेवाला । सजानेहारा । अलंकर्ता । "स्त्रियां टाप्" प्रसाधिका । "प्रसाधिकालम्बितमग्रपादं" रघुः.

प्रसाधन, (न०) प्र+सिध+णिच्+ल्युट् । सजावट । कृत्रिम भूषण । वनावटी । जेवर । वेश । भेस । "करणे ल्युट्" । कङ्कतिका । कंगी । ङीप्.

प्रसाधनविधि, (पु०) प्रसाधनस्य विधिः । सजावटका प्रकार (ढंग) । सजावट.

प्रसाधनविशेष, (पु०) प्रसाधनस्य विशेषः । विशेषसंस्कार (सजावट) । भारी सजावट.

प्रसाधिका, (स्त्री०) प्र+सिध्+णिच् ण्वुल्+ङीप्-ई । सजानेवाली । संस्कार करनेवाली । किसी स्त्रीकी परिचारिका.

प्रसाधित, (त्रि०) प्र+सिध्+णिच्+क्त । अलंकृत । सजायागया । पूरा कियागया.

प्रसार, (पु०) प्र+सृ+घञ्+अ । फैलाव । मूंका खोलना । विस्तार.

प्रसारण, (न०) प्र+सृ+णिच्+ल्युट् । विस्तारकारक । फैलाना.

प्रसारण, (न०) प्र+सृ+णिच्+अन् । फैलाना । बढना । विस्तार करना । "य" "र" "व" का स्वरोंमें परिणत होना (बदलना).

प्रसारित, (त्रि०) प्र+सृ+णिच्+क्त । फैलायागया । विस्तार कियागया । वेचनेके लिये फैलाया (जाहिर) गया.

प्रसारिन्, (त्रि०) प्र+सृ+णिनि । विस्तारकरणम् । फैलानेवाला.

प्रसित, (त्रि०) प्र+सो+क्त । आसक्त । लगाहुआ । जुडाहुआ । मिलाहुआ.

प्रसिति, (स्त्री०) प्र+सो-बांधना+करणे क्तिन् । बांधनेका साधन । रस्सी आदि.

प्रसिद्ध, (त्रि०) प्र+सिध्+क्त । भूषित । सजाहुआ । ख्यात । मशहूर.

प्रसिद्धि, (स्त्री०) प्र+सिध्+क्तिन् । विख्याति । मशहुरी । यश । पूर्णता.

प्रसुप्त, (त्रि०) प्र+स्वप्+क्त । सोया हुआ । सोगया.

प्रसुप्ति, (स्त्री०) प्र+स्वप्+क्तिन् । सोना.

प्रसू, (स्त्री०) प्र+सू+क्विप् । जननी । माता । केला । लता । घोडी.

प्रसूत, (त्रि०) प्र+सू+क्त । उत्पन्न हुआ । पैदा हुआ । जन्मा । नं-न-पुष्प (ना-स्त्री०) थोडे कालसे जनी हुई स्त्री.

प्रसूति, (स्त्री०) प्र+सू+क्तिन् । प्रसव औलाद । अपत्य । उदर (पेट) और माता । मां.

प्रसूतिका, (स्त्री०) प्रसूता+इव कन् । जातसन्ताना स्त्री । वह स्त्री कि जिसकी सन्तान उपजी हो.

प्रसूतिज, (न०) प्रसूत्या जायते । जन्+ड । जन्नेसे उपजा दुःख । जन्नेका दुःख जो सब लोकमें प्रसिद्ध है.

प्रसूतिवायु, (पु०) प्रसूतिकालस्य वायुः । बच्चा जन्नेके समयकी वायु (हवा).

प्रसून, (न०) प्र+सू+क्त (त को न) । पुष्प । फूल । फल । उत्पन्न हुआ (त्रि०).

प्रसूनवर्ष, (पु०) प्रसूनानां वर्षणं । पुष्पवृष्टि । फूलोंकी वर्षा.

प्रसृत, (पु०) प्र+सृ+क्त । आधी अंजली । बढाहुआ । प्रसन्न कियाहुआ । (त्रि०) । विनीत । चलागया । नियुक्त (नियत कियाहुआ) (त्रि०) । लात (स्त्री०).

प्रसेवक, (पु०) प्र+सिव+ण्वुल् । वीणाप्रान्त बद्धकाष्ठ । वीनके सिरेपर बंधीहुई लकडी । तूंबा.

प्रस्कन्न, (पु०) एक ऋषि । स्कन्द्-क्त । (त को न) । पतित । गिराहुआ । फिसलाहुआ.

प्रस्तर, (पु०) प्र+स्तृ+अच् । पाषाण । पत्थर । मणि.

प्रस्तार, (पु०) प्र+स्तृ+घञ् । तृणवन । रक्ख । पत्तोंकी बनीहुई छेज । फैलाव । प्रक्रिया.

प्रस्ताव, (पु०) प्र+स्तु+घञ् । अवसर । मौका । प्रकरण । मजबूत । प्रसंग.

प्रस्तावना, (स्त्री०) प्र+स्तु+णिच्+युच् । प्रारम्भ (शुरू) । सूत्रधार और नटी आदिका आपसमें बातचीत करना । "नटी विदूषको वापि" सा० ६ प०.

प्रस्तावयज्ञ, (पु०) प्रस्तावस्य यज्ञः । परस्पर वार्तालाप जिसमें प्रत्येक (हरएक) को कुछ बोलना आवश्यक है.

प्रस्तावित, (त्रि०) प्र+स्तु+णिच्+क्त । प्रारब्ध । शुरू कियागया । सूचन कियागया.

प्रस्तुत, (त्रि०) प्र+स्तु+क्त । प्रकरणप्राप्त । अवसरपर आपडा । प्रासङ्गिक । उपस्थित । हाजिर हुआ । उद्यत । बहुत स्तुति कियागया.

प्रस्थ, (पु०) प्र+स्था+क । एक सेरका मांप । पर्वत । पहाडका एक टुकडा । फैलाव.

प्रस्थान, (न०) प्र+स्था+ल्युट् । जीतकी चाहवालेका जंगमें जाना । यात्रा । जाना.

प्रस्थापन, (न०) प्र+स्था+णिच्+पुक् अन् । भेजना । खारिज करना । रुखसत करना । गुप्तचर (-जासूस) का नियत करना.

प्रस्नव, (पु०) प्र+स्नु+अ । क्षरण । वहना । दूध आदिका वहना.

प्रस्नुत, (त्रि०) प्र+स्नु+क्त । वह उठा । चलपडा (दूध आदि).

प्रस्फोटन, (न०) प्र+स्फुट+करणे ल्युट् । शूर्प । छज्ज । "भावे ल्युट्" ताडन । चोट लगाना । खिलाना । विकाशन । अच्छीतरह फोडना.

प्रस्रवण, (न०) प्र+स्रु+ल्युट् । निरन्तर जलका बहना । झरना । पसीना । पहाडका झरना । सीमना । एक पर्वतका नाम । भलीभांति टपकना.

प्रस्राव, (पु०) प्र+स्रु+घञ् । मूत्र । पेशाव । बहना.

प्रहर, (पु०) प्रह्रियते यामिकढक्कादि अस्मिन् । प्र+हृ+अप् । जिस समय प्रहरका बाजा आदि बजाया जाता है । दिवसका आठवां भाग । दिनका आठवां हिस्सा । प्रहर.

प्रहरण, (न०) प्रह्रियते अनेन । हृ+ल्युट् । ताडन करना । चोट लगाना । अस्त्र । औजार । गाडीका सन्दूक । "आधारे ल्युट्" युद्ध । लडाई । "भावे ल्युट्" प्रहार । चोट । काबू करना.

प्रहर्षिणी, (स्त्री०) प्रहृष्यति अनया । हृष्+ल्युट्+ङीप् । हरिद्रा । हल्दी । बारह अक्षरोंके पादवाला एक छन्द । "प्रहर्षिणी".

प्रहसन, (न०) प्र+हस्+ल्युट् । हास्य । हसना । एक प्रकारका काव्य । सा० ६ त०.

प्रहसन्ती, (स्त्री०) प्र+हस+शतृ+ङीप् । यूथिका । लता । वासन्ती.

प्रहस्त, (पु०) प्रकृष्टो हस्तः । प्रा० । "विस्तृताङ्गुलिकपाणिः" । फैलीहुई अङ्गुलिओंवाला हाथ । रावणका एक सेनापति.

प्रहसित, (त्रि०) प्र+हस्+क्त । हंस पडा । तं-न । हंसना । खुशी.

प्रहास, (पु०) प्र+हस्+घञ्+अ । बडे जोरसे हंसना । खिडखिडाकर हंसना । नृत्य करनेवाला । नकल करनेवाला.

प्रहासक, (पु०) प्र+हस्+ण्वुल् । हंसियारा । मखौलिया । विदूषक । ठट्ठेवाज.

प्रहि, प्रह्रियते अत्र । प्र+हृ+इन् । कूप । कूआ । खू.

प्रहित, (त्रि०) प्र+हि+क्त । क्षिप्त । फेंकाहुआ । भेजागया । सूप (दाल) (न०).

प्रहेलिका, (स्त्री०) दुर्बोध (मुश्किल) अर्थके जाननेके लिये सवाल (प्रश्न) करना । पहेली । बुझारत.

प्रह्लाद, (पु०) प्र+ह्लद्+घञ् । हिरण्यकशिपु दैत्यका पुत्र । एक दैत्य.

प्रह्व, (त्रि०) प्र+ह्वे+क । नम्र । झुकाहुआ । हलीम । विनीत.

प्रांशु, (त्रि०) प्रकृष्टा अंशवः अस्य । उच्च । ऊंचा । उन्नत.

प्राकाम्य, (न०) प्रकामस्य भावः+ष्यञ् । आठ सिद्धिओंमेंसे एक । चाह । मर्जी । इच्छानमिघातरूप ऐश्वर्य.

प्राकार, (पु०) प्रकीर्यते । कृ+घञ् दीर्घः । ईंट आदिसे बनायागया । घेरकी शकलमें प्राचीर आदि । शहरपनाह । कोट.

प्राकृत, (त्रि०) प्रकृष्टं अकृतं (अपकार्यं) यस्य । जो बहुत अपकार कर्ता है । नीच । "प्रकृतेः अयं" अण् । प्रकृतिसम्बंधी । मिजाजी । प्रकृत्या (स्वभावेन निर्वृत्तः) अण् । स्वभावसे बना । स्वभावसिद्ध । "प्रकृतेः (संस्कृतशब्दात्) आगतः अण्" । संस्कृत शब्दसे निकला नाटक आदिमें प्रसिद्ध अपभ्रंश शब्द । बिगडीहुई बोली.

प्राकृतमित्र, (न०) प्राकृतं=स्वाभाविकं मित्रम् । स्वाभाविक (कुदरतन) मित्र.

प्राकृतप्रलय, (पु०) कर्म० । कार्यब्रह्मके नाश होनेपर कार्यसमूहका प्रकृतिमें लीन होना । प्रलयविशेष । महाप्रलय.

प्राकृतिक, (त्रि०) -की -(स्त्री०) प्रकृत्या निर्वृत्तः+ठञ्+इक स्वाभाविक । स्वभावसे उत्पन्न हुआ.

प्राक्तन, (त्रि०) प्राचि काले । देशे प्राच्यां दिशि वा भवः ट्युतुट् च । पहिला समय । पुराना । पूर्व दिशा । प्राग्भव । पहिलेका.

प्रागभाव, (पु०) प्राग्वर्ती अभावः । आगे होनेवाला अभाव । "इस कपालमें घट बनेगा" इत्यादिरूपसे प्रसिद्ध अभावविशेष । भविष्यत्काल.

प्रागल्भ्यम्, (न०) प्रगल्भस्य भावः+यत् । धीरपना । अभिमान । चतुराई । बडाई.

प्राग्भार, (पु०) प्रकृष्टो भारः । बडा बोझा । उत्कर्ष । परमभाग । बहुतसा । पर्वतकी चोटी.

प्राग्रहर, (त्रि०) प्रकर्षेण अग्रे ह्रियते असौ+अप् । जिसे सबसे आगे किया जाता है.

प्राग्र्य, (त्रि०) प्रकर्षेण अग्रे भवः+यत् । बहुत आगेहुआ श्रेष्ठ । अच्छा । नेक.

प्राग्वंश, (पु०) प्राक्वंशः (सपत्नीकयजमानादिसमुदायः) अत्र । हविर्गृह (होमका घर)से पूर्वभागमें यजमान आदिकी स्थितिके लिये घर.

प्राघार, (पु०) प्र+घृ+क्षरण+घञ् दीर्घः । यज्ञ आदिमें अग्निपर घीका बहाना.

प्राघुण, (पु०) प्र+आ+घुण्+क । अतिथि । अचानक आगया कोई जन.

प्राङ्गण, (न०) प्रकृष्टं अङ्गनम् । गृहभूमि । घरकी पृथिवी । उटान । हाता । अजिर । चौतडा । वेडा । एकवाजा । आंगन.

प्राच्, (त्रि०) प्र+अञ्च्+क्विन् । पहिला समय और देश । "प्राची" (स्त्री०) पूर्व दिशा । तत्रमें पूज्य और पूजकका मध्य देश.

प्राचीन, (त्रि०) प्राक्+भवार्थे ख । पूर्वदिशा वा देशका । पुराना.

प्राचीनबर्हिस्, (पु०) इन्द्र । एक राजा.

प्राचीनावीत, (न०) श्राद्ध आदिमें वायें हाथको बाहिर निकालकर दहिने कंधेपर यज्ञोपवीतका रखना.

प्राचीर, (न०) प्राचीयते । प्र+आ+चि+क्रन् दीर्घश्च । चारोंओरसे वेष्टनाकर (घेरेकी शकल) में ईंट आदिका बनाहुआ आवरण (पडदा) । दीवार । फसील । शहरपनाह । कोट.

प्राचेतस, (पु०) वाल्मीकमुनि । प्राचीनवर्हि राजाका पुत्र । वरुणका पुत्र.

प्राच्य, (पु०) प्राचिभवः । पूर्वका । शरावती नदीके पूर्व और दक्षिणका देश.

प्राच्यभाषा, (स्त्री०) प्राच्या भाषा । भारतवर्षकी पूर्व दिशामें बोली जानेवाली भाषा (जबान).

प्राजापत्य, (पु०) प्रजापतिः देवता अस्य । घञ् । जिसकी देवता प्रजापति है । आठ विवाहोंमेंसे एक विवाह । बारह दिनमें समाप्त होनेहारा एक व्रत (न०) प्रजापतिका चरु आदि (त्रि०).

प्राज्ञ, (पु०) प्रकर्षेण जानाति । प्र+ज्ञा+क+स्वार्थे अण् । बहुत जानता है । पण्डित । "प्रज्ञा अस्ति अस्य अण्" बुद्धिमान् । अकलमंद और चतुर (त्रि०) "प्रज्ञा० स्वार्थे अण्" बुद्धि । अकल.

प्राज्ञकथा, (स्त्री०) प्राज्ञस्य कथा । किसी पण्डितके विषयमें कथा (कहानी).

प्राज्ञमानिन्, (त्रि०) आत्मानं प्राज्ञं मन्यते । अपनेको पण्डित मानता है (वास्तविक पण्डित नहिं अर्थात् मूर्ख है).

प्राज्य, (न०) प्रकृष्टं आज्यम् । प्र+अज्ञ+क्यप् वा । बहुत घी । बहुत (त्रि०).

प्राञ्जलि, (त्रि०) प्रसृतौ अञ्जली येन । प्रार्थनाके समय दोनों हाथ जोडे हुए (आदर वा दीनता दिखानेके समय).

प्राड्विवाक, (पु०) अर्थिप्रत्यर्थिनौ पृच्छति । प्रच्छ+क्विप् । प्राट् । तयोर्वाक्यं विरुद्धाविरुद्धतया विवेचयति । वि+विच्+घञ् । कर्म० । मुद्दई और मुद्दालअकी वातको सुनकर भला बुरा विचारनेहारा । राजासे नियत कियाहुआ व्यवहारको देखनेहारा । “यहां कई प्राड्विवाक” ऐसा पढते हैं.

प्राण, (पु०) प्र+अन्+घञ् । हृदयमें नासाके आगे रहनेहारा वायु । काव्यका जीवन रस । वायु (हवा) और बल.

प्राणनाथ, (पु०) ६ त० । प्राणोंका स्वामी । पति । मालिक । खाविंद.

प्राणमयकोष, (पु०) राग आदि कर्मेन्द्रियके सहित पाँच प्राणोंसे भराहुआ कोष (मिआन) की तरह आच्छादक होनेसे मानो कोष है । वेदान्तमें कहाहुआ जीवके स्वरूपको ढांकनेहारा कर्मेन्द्रियसहित पाँचों प्राण. (प्राण, अपान, समान, उदान, और व्यान).

प्राणसंयम, (पु०) प्राणस्य संयमः यत्र (व्यापारे) । जिस व्यापारमें प्राणरूप वृत्तिविशेष (नासाके आगेकी वायु) का संयम (रोक) हो । प्राणायाम (प्राणको रोकना) । इस व्यापारसे प्राणरूपी वायु बाहिर नहिं जासक्ता इसीको योगशास्त्रमें “प्राणसंयम” कहा है.

प्राणायाम, (पु०) प्राणः (प्राणवायुः) आयम्यते (संयम्यते) येन । आ+यम्+घञ् । जिस्से प्राणवायु रुकजाता है । योग आदि शास्त्रमें प्रसिद्ध एक व्यापार जो प्राणवायुके रोकनेका साधन है । बाहिरकी प्राणवायुको खेंचकर पूरण करना, शरीरमें भरेहुए घडेकी भांति न हिलने देना, रुकीहुई उसी हवाको क्रमसे बाहिर निकालकर रेचन करना, इस प्रकार अपनी इच्छासे प्राणवायुको चलाना आदि “प्राणायाम” कहलाता है.

प्राणिद्यूत, (न०) प्राणिभिः पणपूर्वं द्यूतम् । दिव्+भावे क्त । मेढा वा कुक्कुड आदि प्राणिओंसे शर्तके साथ जूआ खेलना.

प्राणिन्, (पु०) प्राण+अस्त्यर्थे इनि । प्राणवाला । जीव । चेतन.

प्राणिहिंसा, (स्त्री०) प्राणिनां हिंसा । जीवोंको मारना वा हानि (नुकसान) पहुंचाना.

प्रातःकृत्य, (न०) प्रातः (प्रभाते) कृत्यं (कर्तव्यं) । प्रातःकाल करनेयोग्य शौच स्नान आदि । सवेरका काम.

प्रातःसंध्या, (स्त्री०) प्रातः उपास्या संध्या । सवेरे उपासना करनेयोग्य संध्या (ईश्वरकी प्रार्थना ध्यान आदि).

प्रातर्, (अव्य०) प्रभात । सवेर । सुबह । तीन घडी दिन चडेतक.

प्रातराश, (पु०) प्रातः अश्यते (भुज्यते) अस्+घञ् । प्रातः (प्रभाते) आशो भोज्यम् । प्रातःकालका भोजन । सवेरका खाना.

प्रातर्भोजनम्, (न०) प्रातःकालिकं भोजनम् । प्रातःकाल (दिनका पहिला समय)का भोजन (खुराक).

प्रातिदैवसिक, (त्रि०)–की-(स्त्री०) प्रतिदिवसे भवः+ठञ्+इक । प्रतिदिन (हररोज) होनेवाला.

प्रातिपदिक, (पु०) प्रतिपदि हूयते+ठक् । प्रतिपदा (एकम) में होम किया जाता है । अग्निदेवता । व्याकरणमें प्रत्यय और प्रत्ययान्त एवं धातुसे भिन्न कृदन्त तद्धित और समाससे सिद्धहुआ अर्थवाला शब्दका स्वरूप (न०) । अर्थ रखनेवाला शब्द.

प्रातिभाव्य, (न०) प्रतिभुवो भावः । जामिनका होना । जामिनी.

प्रातिभासिक, (त्रि०)–की-(स्त्री०) प्रतिभासे भवः+ठञ्+इक । देखनेमात्र (मिथ्या)में होनेवाला । प्रतीतिमात्र । जो सचा नहिं । उसकी तरह देखनेमें आनेवाला । जैसे रज्जूमें सर्प प्रातिभासिक है.

प्रातिशाख्यम् (न०) प्रतिशाखायां भवं+यत् । व्याकरणकी एक पद्धति जो स्वरविद्याका प्रकाश करती है (चार प्रातिशाख्य हैं, शाकलशाखा ऋग्वेदकी । शुक्ल और कृष्णयजुर्वेदके दो । एक अथर्ववेदका).

प्रातिस्विक, (न०) प्रतिस्वे (एकैकस्मिन्) भवः+ठक् । प्रत्येक पदार्थका अपना २ असाधारण (खास) धर्म.

प्रातिहारिक, (त्रि०) प्रतिह्रियते अनेन । प्रतिहारः (कापट्यं) माया । सः प्रयोजनं अस्य+ठक् । मायाकारक । छलिया.

प्रातीतिक, (त्रि०)–की (स्त्री०) प्रतीतौ भवः+इक । प्रतीति (मन) में होनेवाला । मानसिक । खयाली.

प्रातीपिक, (त्रि०) प्रतीपे भवः+इक । विरुद्ध हुआ । उलटा । विरोधी.

प्रात्यहिक, (त्रि०)–की (स्त्री०) प्रत्यहं भवः+ठञ्+इक । प्रतिदिन होनेवाला । नित्यका । रोजका.

प्राथमिक, (त्रि०) प्रथमे भवः+ठञ् । प्रथमकालभव । पहिले समयका.

प्रादुर्भाव, (पु०) प्रादुस्+भू+घञ् । प्रकाश । आविर्भाव । जाहिर.

प्रादुर्भूत, (त्रि०) प्रादुस्+भू+क्त । प्रकटित । प्रकट हुआ । जारिहुवा.

प्रादेश, (पु०) प्र+दिश्+घञ्-दीर्घः । तर्जनीसहित फैलाहुआ अंगूठा । देश । एक प्रकारका माप.

प्रादेशन, (न०) प्र+आ+दिश्+ल्युट् । दान देना । खैरात.

प्राध्व, (पु०) प्रगतोऽध्वानम् । अच् समा० रथ आदि । "प्रकृष्टोऽध्वा" । अच्छा रास्ता । नम्र (हलीम) । बद्ध (बंधाहुआ) (त्रि०).

प्रान्त, (पु०) प्रकृष्टोऽन्तः । शेषसीमा । पिछली हद.

प्रान्तर, (न०) प्रकृष्टं अन्तरं (अवधानं) यत्र । जहां बहुत फरक हो । दूरगम्य पथ । दूर जानेके योग्य मार्ग । छायारहित पथ । जंगल । वृक्षकी खोड.

प्रापक-पिका, (पु० स्त्री०) प्र+आप्+ण्वुल्+अक । पहुंचानेवाला । पहुंचानेवाली । लाभ करनेवाला.

प्रापित, (त्रि०) प्र+आप्+णिच्+क्त । पहुंचायागया । लाभ करायागया.

प्राप्त, (त्रि०) प्र+आप्+क्त । पाया । लाभ किया । हासिल किया । पहुंचगया.

प्राप्तकाल, (त्रि०) प्राप्तः कालः येन । जिसे समय मिल गयाहै.

प्राप्तमनोरथ, (त्रि०) प्राप्तः मनोरथः येन । जिसकी इच्छा पूरी होगईहै । मनोरथको पाया हुआ.

प्राप्तयौवन, (त्रि०) प्राप्तं यौवनं येन । यौवन (जवानी) प्राप्त किया हुआ । युवा (जवान) होगया.

प्राप्तानुज्ञ, (त्रि०) प्राप्ता अनुज्ञा येन । प्रस्थान (रुकसत)-की आज्ञा पाया हुआ.

प्राप्तावसर, (त्रि०) प्राप्तः अवसरः येन । समय (मौका) पाया हुआ । जिसे ठीक समय मिल गयाहै.

प्राप्ति, (स्त्री०) प्र+आप्+क्तिन् । वृद्धि । लाभ । पाना । दूसरी जगह पहुंचना । मेल । अणिमा आदि ऐश्वर्यों-मेंसे एक (जिस्से मनमांगी वस्तु मिलती है).

प्राप्य, (त्रि०) प्र+आप्+ण्यत् । गम्य । पहुंचनेलायक । पानेलायक.

प्राभृत, (न०) प्र+आ+भृ+क्त । उपढौकन द्रव्य । भेटा.

प्रामाणिक, (त्रि०) प्रमाणेन निर्वृत्तः (सिद्धः)+ठक् । प्रत्यक्ष आदि प्रमाणसे सिद्धहुआ । सहेतुक । बादलील । सभाके लायक.

प्रामाण्य, (पु०) प्रमाणस्य भावः । प्रमाणका होना । तद्वति तत्प्रकारकत्वरूप ज्ञान धर्म । जो वस्तु जैसी हो उसे वैसाही जानना । वह न्यायमतमें परतोग्राह्य (दूसरेसे समझनेलायक है) और मीमांसकके मतमें स्वतः ग्राह्य (आपही समझनेलायक) है । अपनी सामग्रीसे ग्रहण करनेयोग्य सबूत.

प्रामादिक, (त्रि०)-की-(स्त्री०) प्रमादेन भवः+ठञ्+इक । भूलसे हुआ । बेपरवाहीसे होगया.

प्राय, (पु०) प्र+अय+इण् वा, घञ्-अच् वा । मृत्यु । मौत । बाहुल्य । बहुतायत । बिन खाये मरना । अनशनम् । मृत्यु.

प्रायश्चित्त, (न०) प्रायस्+चित्+क्त । "प्रायस् (तपस्या) चित्त (निश्चय) है, निश्चयसंयुक्त तपस्याको प्रायश्चित्त कहते हैं" । पाप दूर होनेका साधन होनेसे विधि (वेदविधि) द्वारा बोधन कियाहुआ चान्द्रायण आदि कर्म.

प्रायश्चित्तिन्, (त्रि०) प्रायश्चित्तं कर्तव्यतया अस्ति अस्य । इनि । वह जन कि जिसे (पापका निश्चय होनेसे) प्रायश्चित्त करना उचित है.

प्रायस्, (अव्य०) बाहुल्य । बहुतायत । और तपस्या.

प्रायोपविष्ट, (त्रि०) प्राायाय (अनशनमृत्यवे) उपविष्टः । उप+विश+क्त । कुछ न खाकर मरनेके लिये बैठगया । खाने बिना मौतके लिये उद्यत हुआ.

प्रायोपवेश, (पु०) प्रायाय (अनशनमृत्यवे) उपवेशः (स्थितिः) । भोजनबिन मौतके लिये बैठना । संकल्पपूर्वक सम्पूर्ण कार्यका परित्याग कर खानेबिन मौतके लिये उद्यम.

प्रारब्ध, (न०) प्र+आ+रभ्+क्त । प्रकृष्टं आरब्धं (स्वकार्यं) जननाय कृतारंभः येन । देह आदिका आरम्भक (रचनेहारा) अदृष्ट (धर्म और अधर्म) विशेष । उसका भोगसेही क्षय होता है । कृतारम्भ (आरम्भ कियाहुआ शुरु कियागया) (त्रि०).

प्रार्थना, (स्त्री०) प्र+अर्थ+युच् । याञ्चा । मांगना । हिंसा । मारना । "ल्युट्" । हिंसन और याचन (न०).

प्रार्थित, (त्रि०) प्र+अर्थ+क्त । याचित । मांगागया । कहाहुआ । माराहुआ.

प्रालम्ब, (न०) प्रकर्षेण आलम्बते । प्र+आ+लम्ब+अच् । गलेमें माला आदिका सीधा लटकना । बहुत लटकता है.

प्रालेय, (न०) प्रकर्षेण लीयते । प्र+आ+ली+यत् । प्रलयाय हितम्+अण् । बहुत छिपजाता है । नाश होनेहारा । हिम (बर्फ).

प्रावरण, (न०) प्राव्रियते अनेन+ल्युट् । जिससे ढांका जाता है । उत्तरी वस्त्र-ऊपरका कपडा । दुपट्टा । चादर "प्रावारः" (पु०).

प्रावृष-षा, (स्त्री०) प्रकर्षेण आवर्षति अत्र । वृष्+क्विप् वा टाप् । जिस समय बहुत बर्सता है । वर्षाकाल । बर्सातका मौसम.

प्रावृषेण्य, (पु०) प्रावृषि+भावः । एण्यः । बर्सातमें हुआ कदम्बका वृक्ष । बर्सातमें होनेवाला (त्रि०).

प्राश्निक, (त्रि०) प्रश्नं करोति+ठक् । कुशलादि प्रश्नकारक । "आप अच्छे हैं" इत्यादि प्रश्न (सवाल) करनेवाला । सभ्य (सभासद्) (पु०).

प्रास, (पु०) प्रकर्षेण अस्यते । अस्+कर्मणि+घञ् । जो बहुत फेंका जाता है । कुन्तास्त्र । भाला । एक औजार.

प्रासाद, (पु०) प्रसीदति अस्मिन् । प्र+सद्+घञ् । दीर्घः पूर्वपदस्य । जिसमें बहुत प्रसन्न होता है । देवता वा राजाओंका घर । महल.

प्राह्ण, (पु०) प्रकृष्टं प्रथमं वा अहः+टच्-अह्नादेशः णत्वम् । अच्छा वा पहिला दिन । पूर्वाह्न । दिनका पहिला प्रहर.

प्राह्णेतन, (त्रि०) प्राह्णे (पूर्वाह्णे) भवः+ल्युट् तुट् च । पूर्वाह्णभव । पहिले प्रहरका.

प्राह्णेतराम्, (अव्य०) अतिशयेन प्राह्णः । तर+आमु । एवं नि० । अतिप्रत्यूष । बहुत सबेरे । बहुत सुबह । सवेरसार.

प्रिय, (पु०) प्रीणाति । प्री-तर्पण-प्रसन्न करना+क । भर्ता । पति । मालिक । एक हरिण । मनोहर (दिलपसंद) (त्रि०).

प्रियंवद, (त्रि०) प्रियं (प्रियकरं) मधुरं वदति । खच्-मुम् च । पियारा वा मीठा बोलनेहारा । एक गंधर्व (पु०).

प्रियङ्गु, (पु०) प्रि+गम्+डु । नि० । मुमूच । एक वृक्ष । एक बेल । राजिका (राई) । पिप्पली (मघ) । कङ्गु (कंगनी).

प्रियतम, (पु०) अतिशयेन प्रियः+तमप् । मयूरशिखा वृक्ष । अतिप्रिय । बहुत पियारा (त्रि०).

प्रियता, (स्त्री०) प्रियस्य भावः+तल् । स्नेह । प्रियता । पियार । प्रियत्रत.

प्रियदर्शन, (त्रि०) प्रियं दर्शनं अस्य । सुदृश्य । सुन्दर दर्शन-वाला । खूब सूरत.

प्रियव्रत, (पु०) स्वयम्भु मनुका ज्येष्ठ (बडा) पुत्र.

प्रियाल, (पु०) प्रियाय अलति-पर्याप्नोति । अल+अच् । एक वृक्ष । पीपलका वृक्ष.

प्री, तर्पण-प्रसन्न होना । सक०क्र्या०उभ० । कान्ति-चाहना । अक० । अनिट् । प्रीणाति-प्रीणीते । अप्रैषीत्-अप्रैष्ट.

प्रीणन, (न०) प्री+णिच्-नुक्-ल्युट् । तर्पण । प्रसन्न करना.

प्रीत, (त्रि०) प्री+क्त वा नत्वाभावः । हृष्ट । प्रसन्नहुआ । इसे "न" होनेसे "प्रीणः" यही अर्थ होता है.

प्रीति, (स्त्री०) प्री+भावे क्तिन् । हर्ष । खुशी । आमोद । तृप्ति.

प्रीतिपात्रम्, (न०) प्रीतेः पात्रम् । प्रीति (प्रेम)का पात्र (विषय) । कोई प्यारी वस्तु वा प्यारी व्यक्ति.

प्रीतिमनस्, (त्रि०) प्रीतियुक्तं मनः यस्य । प्रेमसे भरेहुए मनवाला । प्रसन्न हुआ । दयालु । प्रेमी.

प्रीतिमत्, (त्रि०) प्रीति+मतुप्+अस्ति अस्य । प्रीति (प्यार) से भरा हुआ । प्यार करनेवाला । मुहब्बती । प्रसन्न हुआ । सन्तुष्ट । हृष्ट । दयालु.

प्रु, सर्पण-सरकना । भ्वा० आत्म० सक० अनिट् । प्रवते । अप्रोष्ट.

प्रुट्, मर्दना-मलना । भ्वा० पर० सक० सेट् । प्रोटति । अप्रोटीत् । सेट्.

प्रुषू, भस्मीकरण । (भस्म-खा-खाक करना) भ्वा० । प्रोषति । अप्रोषीत् । "क्त्वा" में वेट्.

प्रुषू, सेक सींचना और पूर्ति-भरना । सक० । स्नेह । पियार करना । अक० क्र्या० पर० सेट् । प्रुष्णाति.

प्रुष्ट, (त्रि०) प्रुष्+क्त । दग्ध । सडाहुआ । जलाहुआ.

प्रेक्षा, (स्त्री०) प्रकर्षेण (प्रमाणादिना) ईक्षा । अच्छी तरह (सबूती बगैरह) से देखना । पर्यालोचना । सोचना.

प्रेक्षावत्, (त्रि०) प्रेक्षा (अस्त्यर्थे) मतुप् । मको व । समीक्ष्यकारी । सोचकर काम करनेहारा.

प्रेङ्खा, (स्त्री०) प्र+इखि+अ । दोला । डोला । पंघूडा । परिभ्रमण । घूमना । एक प्रकारका घर । और नृत्य (नाच).

प्रेङ्खोल, दोलन-झुलना । चुरा० उभ० सक० सेट् । प्रेङ्खोलयति-ते.

प्रेत, (पु०) प्र+इण्+क्त । नरकस्थ जीव । नरकका जीव । एक पिशाच । अतिवाहक (सूक्ष्मशरीर) देहके अनन्तर उत्पन्न हुआ एक प्रकारका देह । "सपिण्डी करनेपर नर एक वर्षके अनन्तर प्रेतदेहको छोड भोगदेहको पाता है" सपिण्डीके पहिलेकी दशा । मृत । मराहुआ.

प्रेतकर्मन्, (न०) ६ त० । प्रेतका काम । मरेहुएका दाहसे लेकर सपिण्डीकरणतक कर्म.

प्रेतगृह, (न०) ६ त० । प्रेतका घर । श्मशान । मसान । "प्रेतपुर".

प्रेतदाह, (पु०) प्रेतस्य दाहः । मुर्देका जलाना.

प्रेतनदी, (स्त्री०) प्रेतगम्या नदी । प्रेतके पहुंचनेलायक नदी । यमके दर्वाजेके पास वैतरणी नाम नदी.

प्रेतपक्ष, (पु०) प्रेतस्य पक्षः । पितरोंका पक्ष (पखवाडा) आश्विन (अस्सू) कृष्णपक्ष जिसमें पितरोंका श्राद्ध किया जाताहै । "पितृपक्ष" यही अर्थ.

प्रेताधिप, (पु०) प्रेतानां अधिपः । प्रेतोंका राजा । यमका नाम.

प्रेतावास, (पु०) प्रेतानां आवासः । मुर्दोंके जलाने वा दवानेका स्थान । श्मशान । मसान.

प्रेतोद्देश, (पु०) प्रेतस्य उद्देशः । पितरोंकी भेटा.

प्रेत्य, (अव्य०) प्र+इण्+ल्यप् । लोकान्तर । दूसरा लोक । मरकर.

प्रेमन्, (पु०) (न०) प्रियस्य भावः+इमनिच्-प्रादेशः । स्नेह । पियार और नर्म (मखौल-ठट्ठा) । इन्द्र और वायु (हवा) (पु०).

प्रेयस्, (त्रि०) अतिशयेन प्रियः+ईयसु । प्रियस्य प्रादेशः । अतिशयप्रिय । बहुत पियारा । प्रेयसी (स्त्री०) पियारी.

प्रेरण, (न०) प्र+ईर्+णिच्+ल्युट् । प्रेषण । भेजना । निकृष्ट भृत्य आदिका काममें लगाना । णिच्-युच् "प्रेरण".

प्रेषृ, गति-जाना । भ्वा० पर० सक० सेट् । प्रेषति । अप्रेषीत्.

प्रे(प्रै)ष, (पु०) प्र+इष्+घञ् वा पररूपम् । भेजना । पीडना.

प्रेष्ठ, (त्रि०) अतिशयेन प्रियः–इष्ठन् । प्रादेश । बहुतही पियारा.

प्रे(प्रै)ष्य, (पु०) प्र+इषु+ण्यत् वा पररूप । दास । नौकर । भेजनेलायक (त्रि०) जङ्घा (लात) (स्त्री०).

प्रोक्षण, (न०) प्र+उक्ष+ल्युट् । चारोंओर सींचना । वध । मारना । यज्ञके लिये पशुओंका मारना.

प्रोक्षित, (त्रि०) प्र+उक्ष+क्त । सिक्त । सींचागया । "यज्ञका संस्कार कियाहुआ मांस आदि" । "भक्षयेत् प्रोक्षितं मांसं" स्मृतिः.

प्रोञ्छन, (न०) प्र+उंछि+ल्युट् । मार्जन । पोछना । साफ करना.

प्रोत, (त्रि०) प्र+वें+क्त । गुम्फित । गुथाहुआ । स्यूत । सीआहुआ । पिरोयाहुआ । खचित कपड़ा । (न०).

प्रोत्फुल्ल, (त्रि०) प्र+उत्+फुल्ल+अ । पूरा खिला हुआ । विकसित । खुली हुई (आंख).

प्रोत्सारणम्, (न०) प्र+उत्+सृ+णिच्+अन । निकालना । निर्मुक्त होना । निकलजाना । साफ करदेना । हटा देना.

प्रोत्सारित, (त्रि०) प्र+उत्+सृ+णिच्+क्त । हटा दिया गया । छूट गया । निकाला गया.

प्रोथ्, भ्वा० उभ० । प्रोथति-ते । समान होना । बराबर होना । वश करना.

प्रोथ, (पु० न०) प्र+थन् । घोडेका नाक । अश्वनासिका । कमर । धोती । स्त्रीका गर्भ । और गर्त । गढा । घोडेका मुख (पु०) पान्थ । पथिक । रक्खाहुआ (त्रि०).

प्रोषित, (त्रि०) प्र+वस्+क्त । इट् । प्रवासगत । परदेशमें गया । परदेशी.

प्रोषितभर्तृका, (स्त्री०) प्रोषितः भर्ता यस्याः+कप् । जिस स्त्रीका पति दूसरे नगरमें गया है.

प्रो (प्रौ) ष्ठपद, (पु०) प्रो (प्रौ) ष्ठः (गौः) तस्य इव पदं यस्य । बैलकी नाईं जिसका पद है । भाद्रपद नाम एक नक्षत्र (तारा) । तेन युक्ता पौर्णमासी+अण् सा यत्र मासे पुनरण् । वा न वृद्धिः । भादोंका महीना.

प्रौढ, (त्रि०) प्र+वह्+क्त-वृद्धिः । प्रवृद्ध (बढाहुआ) । युवा (जवान) । उद्योगी (मिहनती) और निपुण (चतुर) । एक प्रकारकी नायिका "तीस वर्षकी जवान और पचमन वर्षकी प्रौढा होती है" (स्त्री०).

प्लक्ष्, भक्षण-खाना । भ्वा० उभ० सक० सेट् । प्लक्षति । अप्लाक्षीत्.

प्लक्ष, (पु०) प्लक्ष्यते कीटैः । प्लक्ष+घञ् । पाकुडनामी वृक्ष । प्लक्ष वृक्षके चिह्नवाला एक द्वीप.

प्लव, (पु०) प्लु+भावे अप् । प्लवन । उछलना । तरना । कूदना "कर्तरि अच्" । भेक (मेंडक) । मेष (मेढा) । (वानर) । श्वपच (चाण्डाल) । जलका कौआ । पाकुडका वृक्ष । कारण्डव पक्षी । शब्द । शत्रु । जलके सब पक्षी (बगला आदि) कैवर्तीमुस्तक (नागरमोथा) । और गंधतृण (खस्स) (न०).

प्लवग, (पु०) प्लवन् सन् गच्छति । गम्+ड० पृ० । वानर (बंदर) । मेंडक । सूर्यका सारथी (रथ खेंचनेवाला) । प्लव पक्षी । शिरीष.

प्लवङ्ग, (पु०) प्लवन् सन् गच्छति । गम्+ड-खच्-पृ० । उछलता हुआ जाता है । वानर । बंदर । एक हरिण प्लववृक्ष.

प्लवङ्गम, (पु०) प्लवन् सन् गच्छति । गम्+खच्-पृ० । वानर । (बंदर) । और भेक (मेंडक).

प्लविक, (त्रि०) प्लवेन तरति+ठन्+इक । छोटी किश्ती (डोंगी)-से तैरनेवाला.

प्लाव, (पु०) प्लु+घञ्+अ । उछलना । कूदना । तैरना.

प्लावन, (न०) प्लु+णिच्+ल्युट् । द्रवद्रव्यस्य समंताद्गतिः । पिघलीहुई चीजका चारोंओर जाना । स्नान करना । नहाना । बहजाना । तुफान.

प्लावित, (त्रि०) प्लु+णिच्+क्त । पानी आदिसे चारोंओर फैलना । तराया गया । बहाया गया । गीला कियाहुआ.

प्लिहृ, गति-जाना । भ्वा० पर० सक० सेट् । प्लेहति । अप्लेहीत्.

प्लि(प्ली)हन्, (पु०) प्लिह्+कनिन्-पृ० वा दीर्घः । कांखके पास एक मासका टुकडा । उसको बढानेहारा एक प्रकारका रोग । तिल्लीका रोग । "प्लीह".

प्लु, सर्पण-सरकना । उछल कर जाना । भ्वा० आत्म० अक० अनिट् । प्लवते-अप्लोष्ट.

प्लुत, (न०) प्लु+क्त । टेढा जाना । झपटकर जाना । घोडेकी चाल । कूदकर चलनेवाला (त्रि०) । ह्रस्वसे तिगुने समयमें बोला जानेवाला अक्षर (न०).

प्लुषृ, दाह-जलाना । दिवा० पर० सक० सेट् । प्लोषति । अप्लोषीत्.

प्लुष्ट, (त्रि०) प्लुष्+क्त । प्लुष्ट । जलगया । सडगया.

प्लोष, (पु०) प्लुष्+कम् । दाह । जलाना.

प्सा, भक्षण-खाना । अदा० पर० सक० अनिट् । प्साति । अप्सासीत्.

प्सात, (त्रि०) प्सा+क्त । भक्षित । खायागया.

फ.

फ, (न०) फक्क्+ड । रुक्ष कथन । रूखा बोलना । निष्फल वाक्य । बे फायदा वचन । फूत्कार । और फूंकना । झञ्झावात । जोरकी हवा । खक्खड । जृम्भाविष्कार । उबासी लेना । फलका लाभ (पु०).

फक्क, असदाचार-गल्तीसे अमल करना । मन्दगति-धीरे २ चलना । भ्वा० पर० अक० सेट् । फक्कति । अफक्कीत् । अफक्कित.

फक्किका, (स्त्री०) फक्क्+भावे ण्वुल्-टाप् । अकोड़ । असद्व्यवहार । गल्त अमल । (फांकी) तत्त्वका निर्णय करनेके लिये पूर्वपक्ष (पहिली दलीलका उठाना). साबित करनेलायक दलील । "फणिभाषितभाष्यफक्किका" इति नैषधम्.

फट, (पु०) (स्त्री०) स्फुट-खिलना+अच् पृ० । सांपका फण । "फटा" (स्त्री०) दांत और कितव (धूर्त).

फट्, (अव्य०) योग । तन्त्रमें कहाहुआ अस्त्र नामी एक मन्त्र.

फण्, अनायासोत्पत्ति । विना यत्नके उपजना । भ्वा० पर० सक० सेट् । फणति । अफाणीत्-अफणीत् । फेणतुः पफणतुः.

फण्, गति-जाना । भ्वा० पर० सक० सेट् । फणति । अफाणीत् । अफणीत्.

फण, (पु०) (स्त्री०) फण्+अच् । दर्वी (कडछी)के स्वरूपमें संकोचविकाशवाला सांपका मस्तक । सांपका फण.

फण(णा)धर, (पु०) फणं (णां) धरति । धृ+अच् । फणवाला । सांप "फण (णा) भृत्" यही अर्थ है.

फणिन्, (पु०) फणः अस्ति अस्य+इनि । जिसकी फणा हो । सांप "फणवत्".

फणीश्वर, (पु०) ६ त० । सापोंका मालिक । अनन्त.

फल्, भेदन-फाडना-तोडना । भ्वा० पर० सक० सेट् । अफालीत्-फेलतुः । आरम्भ करना । क्त । फल्तः । दूसरे अर्थमें "फलितः".

फल्, निष्पत्ति । फलका उपजना । भ्वा० पर० अक० सेट् । फलति । अफालीत् । क्त-फलित.

फल, (न०) फल्+अच् । वृक्ष आदिका फल । लाभ (फायदा-हासिल) । फलक (ढाल) । कार्य । उद्देश्य (मतलब) । प्रयोजन । जातिफल (जायफल) । त्रिफला । बाणका अग्र । दान.

फलद, (पु०) फलं ददाति । दा+क । वृक्षमात्र । फलका दाता (त्रि०).

फलश्रेष्ठ, (पु०) फलेन श्रेष्ठः (प्रशस्यतरः) । अच्छे फलवाला । आमका वृक्ष.

फलानुमेय, (त्रि०) फलेन अनुमेयः । फल (नतीजे=परिणाम) से अनुमान करनेलायक.

फलागम, (पु०) फलस्य आगमः । फलका आना । फलका उत्पन्न होना । नतीजा निकलना.

फलाहार, (पु०) फलानां आहारः । फलोंका भोजन (खाना).

फलिन्, (त्रि०) फल+अस्त्यर्थे इनि । फलवाला । फलवाला वृक्ष (पु०).

फलिन्, (त्रि०) फल+इनच् । फलवाला.

फलेग्रहि, (पु०) फले+ग्रह्+इन् । योग्य काल । ठीक समय । फलवाला वृक्ष । "फलग्रहिः" यही अर्थ.

फलोदय, (पु०) ६ त० । फलका उदय । फलकी उत्पत्ति । लाभ । स्वर्ग । हर्ष (खुशी).

फलोदय, (पु०) फलस्य उदयः । फल (परिणाम) का निकलना । फलकी उत्पत्ति । लाभकी प्राप्ति.

फल्गु, (त्रि०) फल्+ड शुक्च । रम्य । मनोहर । सुन्दर । निरर्थक । बेफायदा । गयाके तीर्थकी नदी (स्त्री०).

फल्गूत्सव, (पु०) फल्गुनिमित्तकः उत्सवः । फागनकी पूर्णिमाके करनेलायक एक उत्सव (मेला) । फल्गुकरणक उत्सव । अंबीर.

फल्य, (न०) फलाय हितं+यत् । फल लानेवाला । पुष्प । फूल.

फाणि, (पु०) स्फाय्-नि० पृ० । गुडविकार । गुडसे बनाहुआ (सीरा) । करम्भ (खिचडी-लप्सी) । दधिमिश्रित सक्तु (दही और सत्तू).

फाणित, (न०) फण्+णिच्-क्त । गुडविकारभेद । फेणी । कच्ची खांड.

फाण्ट, (न०) फण्+क्त । नि० । अनायासकृत । आरामसे बनगया.

फाल, (न०) फलाय (शस्याय) हितं+अण् । फलके लिये हितकारी । खेती उपजानेहारा । "फल्यते (विदार्यते) भूमिः अनेन" । जो पृथिवीको फाडता है । वा घञ् । लाङ्गलस्थित लौहविशेष । हलमें लगाहुआ लोहा । "फालं अस्ति अस्य" "अच्" हलवाला (बलदेव)बलभद्र और महादेव । "फलस्य विकारः अण्" । कार्पासवस्त्र । कपासका बनाहुआ कपडा । हलके द्वारा की जानेवाली एक प्रकारकी दिव्य परीक्षा (न०) "फलेषु भवः"+अण् । जम्बीरका बीज आदि (पु०).

फाल्गुन, (पु०) फल्+उनन्-गुक्च+स्वार्थे अण् । अर्जुन । मध्यम पाण्डव । पाण्डुका मझला बेटा । अश्विनीसे ग्यारवां और बारवां नक्षत्र (तारा) (स्त्री०) "फाल्गुनीभिर्युक्ता पौर्णमासी अण्" "चन्द्रमासम्बन्धी फागुन महीनेकी पूर्णिमा । सा अत्र मासे अण्" । चैत्रसे लेकर बारवां महीना (पु०) वर्ष चैत्रसे प्रारम्भ होता है.

फु, (पु०) फल्+डु । मन्त्र उच्चार करके फूंकना । तुच्छवचन.

फुट, (त्रि०) स्फुट्+क-पृ० । फटगया । फूटगया । विदीर्ण । प्रस्फुटित.

फुल्ल्, विकास-खिलना । भ्वा० पर० अक० सेट् । फुल्लति । अफुल्लीत्.

फुल्ल, (त्रि०) फुल्ल्+अच् । विकसित । खिलाहुआ । पुष्प । फूल.

फेण, (न०), (पु०) स्फाय्+न पृ० । दूध वा पानीके ऊपरका बुलबुलेके स्वरूपमें पदार्थ । फेना । झाग । बर्फ । और हिम । गुडविकारभेद । गुडका बनाहुआ (स्त्री०) ङीप् । फेणी.

फेणि(नि)ल, (त्रि०) फेन+अस्त्यर्थे इलच् । फेननविशिष्ट । झागवाला । झागदार । मदनवृक्ष (मयनका द्रख्त) बेरका वृक्ष (पु०).

फेरव, (पु०) "फे" इत्यव्यक्तः रवः अस्य । "फे" ऐसा धीमा शब्द करनेवाला । शृगाल । सियार । गीदड और राक्षस । उसके गुणवाला होनेसे धूर्त (ठग-चोर) और हिंस्र (हिंसा-कतल करनेवाला) (त्रि०).

फेरु, (पु०) "फे" इति अव्यक्तं रौति । रु+डु । शृगाल । गीदड.

फेल-ला, (न० स्त्री०) फेल्+अच् वा टाप् । भुक्तसमुज्झित । खाकर छोडदिया । उच्छिष्ट । जूठा.

फेल्, गति-जाना । भ्वा० पर० सक० सेट् । फेलति । अफेलीत्.

ब

ब, (पु०) बल+ड । सूचन । इशारह । तन्तुसन्तान । बुना । वपन । बोना । वरुण । घट । घडा । समुद्र । योनि । जल । गमन (जाना) (स्त्री०).

बंहिष्ठ, (त्रि०) अतिशयेन बहुः+ईयसु । बंहादेशः । अतिशय । बहुत । बहुतही.

बंहीयस्, (त्रि०) अतिशयेन बहुः+ईयसु । बंहादेशः । बहुतही । अतिशय । बहुल.

बडवा, (स्त्री०) बालं वाति । वा+क "ल" को "ड" । घोटकी । घोडी । उसकी देवता अश्विनीनक्षत्र (तारा) । दासी । गोली । नौकरानी.

बडवाग्नि, (पु०) बडवायाः (शिवसृष्टाश्वायाः) मुखस्थः अग्निः । शिवजीसे रचीहुई घोडीके मुंखकी आग । समुद्रमें घोडीके मुखमें रहनेहारी कालाग्नि (भडकीली आग) "बडवानल".

बडवासुत, (पु०) द्वि० व० ६ त० । बडवा (घोडी) के बेटे अश्विनीकुमार.

बण्, शब्द । आवाज करना । भ्वा० पर० सक० सेट् । बणति । अबाणीत्-अबणीत्.

बणिक्पथ, (पु०) ६ त० । अच् समा० । हट्ट । बाजार । बनिओंका रास्तह.

बणिग्भाव, (पु०) ६ त० । वाणिज्य । व्यापार । बनियाँपन । आजीवन (जीने) के लिये क्रय विक्रय (खरीद फरोख्त) करना.

बणिज्-ज, (पु०) पणायते (व्यवहरति) पण्-इजि-इजो वा पको न । आजीवनके लिये क्रयविक्रयका व्यवहार करनेहारा.

बद, भाषण । बोलना । भ्वा० पर० सक० सेट् । बदति । अवादीत्.

ब(व)दर, (पु०) ब(व)द्+अरच् । बेरका वृक्ष । कपासका वृक्ष (न०).

बदरिकाश्रम, (पु० न०) बदरी+स्वार्थे कन् । तस्याः समीपे-तच्चिह्नितो वा आश्रमः । बेरके पास वा उसके चिह्नवाला एक आश्रम । तीर्थविशेष । यह तीर्थ श्रीनगरनामी देशमें अलकनन्दा नदीके पश्चिमी किनारेपर है । इसे "(व) बदरीशैल" भी कहते हैं.

बदरी-रि, (स्त्री०) ब(व)द्+अरी वा ङीप् । बेरका वृक्ष । कपास.

बद्ध, (त्रि०) बन्ध-कर्मणि क्त । बांधागया । रोकागया । संकल डालागया । पकडागया । जेल (कारागार) में डालागया । रचागया । बनायागया । मिलायागया.

बद्धमुष्टि, (त्रि०) बद्धः (अमुक्तः) दानाय अप्रसारितः मुष्टिः यस्य । जो अपनी मुट्ठीको दानके लिये नहिं फैलाता । कृपण । सूम । जो तुच्छ सुखके लिये बडे सुखको परित्याग कर्ता है.

बद्धशिख, (पु०) बद्धा शिखा यस्य । जिसकी चोटी बंधी है । शिशु । बच्चा । शिखा बन्धनयुक्त । बंधी चोटीवाला (त्रि०).

बध, (पु०) हन्+घञ् । वधादेशः । हनन । मारना । कतल करना । प्राणवियोगफलक व्यापार । किसीके प्राण लेना । ठार करना.

बन्धू, निन्दा करना । बंधन-बांधना । भ्वा० आत्म० सक० सेट् । बीभत्सते । अबीभत्सिष्ट.

बधिर, (त्रि०) बन्ध-किरन् । श्रुतिशक्तिशून्य । सुनेकी ताकतसे रहित । श्रवणेन्द्रियरहित । "कान" की इन्द्रियसे बिना । डोरा । बहिरा.

ब(व)धू, (स्त्री०) बध्नाति (अविद्यया) । बन्ध+ऊ । नका लोप । जो अज्ञानद्वारा बांधती है । "उह्यते" वह+ऊ । अन्तमें "ध" होता है । नारी (स्त्री०) । स्नुषा । बहू । नूं । नई । विवाहीगई स्त्री । भार्या । औरत.

ब(व)धू(टि)टी, (स्त्री०) अल्पा ब(व)धूः । अल्पार्थे टि वा ङीप् । अल्पवयस्का नारी । छोटी उमरवाली औरत । "गोपवधूटीदुकूलचौराय" भा० परि०.

बध्य, (त्रि०) वधं अर्हति । वध+यत् । जो मारनेके लायक.

बध्यभूमि, (स्त्री०) हन्+भावे यत्-बधादेशः । बध्यस्य भूमिः । मारनेलायक जगह (स्थान) । श्मशान । मसान । वधका स्थान । "बध्यस्थान".

बध्र, (न०) बन्ध+ष्ट्रन् । " न " का लोप । सीसक । सीसा । चमडेकी रस्सी (तसमा) (स्त्री०).

बन्, याचन । मांगना । तना० आत्म० द्विक० सेट् । वनुते । अवनिष्ट । क्त्वा वेट्.

बन्ध्, बन्धन । बांधना । क्र्या० पर० सक० अनिट् । बध्नाति । अभान्त्सीत्.

बन्ध, (पु०) बन्ध्+घञ् । संयमन । रोकना । निगड (संकली) आदिसे किसीकी गति (चाल) को रोकना । बांधना । "कर्मणि घञ्" देह । शरीर । ऋण (कर्ज) शोधन (चुकाना) के विश्वासके लिये रक्खा गया द्रव्य (कोई चीज) । आधि.

बन्धक, (पु०) बन्ध्+ण्वुल् । विनिमय । बदला । तुल्यरूप द्रव्य (एक जैसी चीज) देकर किसी दूसरे द्रव्यको बदलना (परिवर्त आधि । (न०) गिरवी रक्खी हुई चीज । पुंश्चली । असती स्त्री । व्यभिचारिणी । छिनार औरत । स्त्रियां ङीप्.

बन्धन, (न०) बन्ध्+भावे ल्युट् । निगड आदिसे संयमन (रोकना) बांधना । और वध (मारना) । " करणे ल्युट् " रज्जु । रस्सी.

बन्धनस्तम्भ, (पु०) ६ त० । बांधनेका थंभा (खंभा) हस्तिसंयमनकाष्ठ । हाथीके बांधनेकी लकडी । आलान । गजबंधन । किल्ला.

बन्धनवेश्मन्, (न०) ६ त० । बांधनेका घर । जेलखाना । कैदखाना । "कारागार" "बंधनागार" आदि इसी अर्थमे हैं.

बन्धित्र, (पु०) बंध्+इत्र । प्यारका देवता । कामदेव । चमडेका पंखा । चर्मव्यजन । दाग । निशान.

बन्धु, (पु०) बध्नाति मनः (स्नेहादिना) । बंध+उ । जो पियार आदिसे मनको बांध लेता है । ज्ञाति । जात । मातुलपुत्रादि । मामेके बेटा आदि । बांधव । मित्र । पिता । माता । भाई । एक वृक्ष.

बन्धुता, (स्त्री०) बंधु+भावे तल् । वा समूहे । बंधुपन । बंधुओंका समूह.

बन्धुर, (न०) बंध्+उरच् । मुकुट । स्त्रीका चिह्न । तिलोंका चूरा । बधिर । बहिरा । डोरा । हंस । बगला । और पक्षी । मनोहर । नम्र । हलीम । उन्नतानत (ऊंचानीचा) (त्रि०) वेश्या । कंजरी । सक्तु । सतू (स्त्री०).

बन्धुल, (त्रि०) बन्ध्+उलच् । अवनत । झुका हुआ । प्रसन्न करनेवाला । हर्षप्रद । सुन्दर । वेश्यागृहका एक सेवक । एकवृक्ष.

बन्ध्य, (पु०) (त्रि०) बन्ध्+यत् । समय पहुंचनेपर भी फलसे शून्य वृक्ष । निष्फल । फलरहित । बेफल । बंधनीय (रुकनेलायक) (त्रि०) । पुत्ररहित स्त्रीजाति । (जिसे पुत्र नहीं होता) स्त्रियां टाप्.

बन्ध्याकर्कोटी, (स्त्री०) बंध्याया उपकारिणी (पुत्रदत्वात्) कर्कोटी । पुत्र देनेसे बांझ औरतका उपकार करनेवाली कर्कोटी (बांझ करोड) बूटी । " स्वार्थे कन् । अत इत्वम् " । वही अर्थ.

बभ्र, गति । जाना । भ्वा० पर० सक० सेट् । बभ्रति । अबभ्रीत्.

बभ्रु, (पु०) भृ+कु (द्वित्वं) । बभ्र्+उ वा । शिवजी । विष्णु । नकुल । नेवला । वह्नि । आग । एक मुनि । एक देश । उस देशके वासी । ब० व० । पिङ्गलवर्ण । पीला रंग । (पु०) । पीलेरंगवाला (त्रि०).

बभ्रुधातु, (पु०) कर्म० स्वर्ण । सोना । धुस्तर । धतूरा और गेरी (लालचाक).

बभ्रुवाहन, (पु०) अर्जुनका बेटा (चित्राङ्गदासे हुआ).

वर, (न०) वृ+अप् । । कुङ्कुम केसर । वृ+अच् । आर्द्रक । अदरक । "कर्मणि अप्" । जामाता (जवाई-दामाद) । देवता आदिसे आशा करनेलायक । धूर्त और यार (पु०) । "भावे अप्" वरण । कबूल करना । स्वीकरण । गुडूची । त्रिफला । मेदा । ब्राह्मी । हरिद्रा (स्त्री).

बर्ब्, गति । जाना । भ्वा० पर० सक० सेट् । बर्बति । अबर्बीत्.

बर्ह्, देना । मारना । स्तुति करना । और बोलना । भ्वा० आत्म० सक० सेट् । बर्हते । अबर्हिष्ट.

बर्ह, (न०) बर्ह्+अच् । मयूरपिच्छ । मोरका पंख । (पर) पत्र । परीवार.

बल्, जीना । मारना । निरूपण-बयान । करना देखना । भ्वा० उभ० सक० सेट् । बलति-ते । अबालीत् । अबलिष्ट.

बल, (न०) बल्+अच् । सैन्य । सेनाके लोग । शरीरकी सामर्थ्य (ताकत) । स्थौल्य । मोटाई । गंध । रस । रूप । वीर्य । देह । शरीर । पल्लव । पत्र । और रक्त (लाल) । बलवाला (त्रि०) । कौआ । बलदेव । वरुणवृक्ष । एक दैत्य (पु०).

बलक्ष, (पु०) बलं क्षायति अस्मात् । क्षै+क । जिससें बल (जोर) घटता है । शुक्लवर्ण । चिट्टारंग । चिट्टरंगवाला (त्रि०).

बलद, (पु०) बलं ददाति । दा+क । शरीरकी पुष्टिको करनेवाला काम । एक प्रकारकी आग । बलदाता । जोर देनेहारा (त्रि०).

बलदेव, (पु०) बलेन दीव्यति । दिव्+अच् । बलसे चमकता है । बलोद्रिक्तो देवो वा । शाक० । बलमें अधिक एक देवता । बलराम । श्रीकृष्णदेवका बडा भाई.

बलभद्र, (पु०) वल्+अच् । वलो वलवानपि भद्रः (सौम्यः) । वलवाला होकर भी भला है । वलदेव और गवय (गोयँद).

बलराम, (पु०) वलेन रमते । रम्+कर्तरि घञ् । कृष्णका वडा भाई । रोहिणीका नन्दन (प्रियपुत्र) । "संकर्षण" "राम".

बलवत्, (अव्य०) वल+अतिशये मतुप् "म" को "-व" होता है । अतिशय । बहुतही बलविशिष्ट । (बलवाला) (त्रि०).

बलवर्धन, (त्रि०) वलं वर्धयति । वलको वढानेवाला । पौष्टिक कर्मका अग्नि । "पौष्टिके बलवर्धनः"

बलविन्यास, (पु०) वलानां (सैन्यानां) विशेषेण न्यासः (स्थापनम्) । व्यूह । एक प्रकारका सेनाको खडा करना । सेनाकी रचना.

बलशालिन्, (त्रि०) वलेन शालते । शल्+णिनि । वलसे शोभता है । वलविशिष्ट । वलवाला । जोरावर.

बलसूदन, (पु०) वलं (तन्नामकं असुरं) सूद्+ल्यु । वल नामी दैत्यको नाश कर्ता है । इन्द्र । "वलनिषूदनः".

बला, (स्त्री०) वलं अस्ति अस्याः । वलवाली । विश्वामित्र मुनिसे रामचन्द्रको दीगई एक प्रकारकी अस्त्रविद्या.

बलाका, (स्त्री०) वलं (कम्पनं) अकति (गच्छति) । अक्+अच् । जो कांप जाता है । वकभेद । एक प्रकारका वगला । वकश्रेणि । वगलोंकी कतार । पियारी स्त्री । प्रणयिनी.

बलाट, (पु०) वलं अटति (ददाति) अट्+अच् । जो वल (जोर) देती है । मुद्ग । मूंगी.

बलात्, (अव्य०) वल+अत्+क्विप् । हठात् । जोरसे । जोरावरी । अचानक । (पञ्चम्यन्त "बल" शब्दके साथ इसकी गतार्थता नहीं क्योंकि "बलात्कार" इत्यादिकी सिद्धिके लिये इसे अवश्य स्वीकार करनाही पडेगा).

बलात्कार, (पु०) वलात्+कृ+घञ् । बलपूर्वक करण । जोरसे करना (हठात्करण).

बलानुज, (पु०) अनु जायते । अनु+जन्+ड । ६ त० । बलभद्रका छोटा भाई । श्रीकृष्णजी.

बलाय, (पु०) वलस्य अयः (स्थानं) । अय+घञ् । बलकी जगह । वरुणनामी वृक्ष.

बलाराति, (पु०) वलस्य (तन्नामासुरस्य) अरातिः । बलनामी दैत्यका शत्रु । इन्द्र । "वलशत्रु" यही अर्थ.

बलाहक, (पु०) वलं (कम्पनं) आजहाति । आ+हा कुन् । जो नहीं कांपता है । मेघ (वादल) । मुस्तक । मुस्था । मोथा । पर्वत (पहाड) । और नागभेद । प्रलयकालके सात मेघोंमेंसे एक । विष्णुके चार घोडोंमेंसे एक.

बलि, (पु०) वल-इन् । पूजोपहार । पूजाकी भेट । राजाके लेने योग्य भाग (कर-खिराज) । उपप्लव । उपद्रव । चामरदण्ड । चौंरी । गृहस्थसे करनेलायक पांचयज्ञोंमेंसे "भूतयज्ञ" । "बलिकर्म ततः कुर्यात्" इति स्मृतिः । एक दैत्य । विरोचनका पुत्र । जरा (बुढापा) से चर्मका शिथिल होना (स्त्री०) वा ङीप् । झिल्लडि । "गृहस्थस्तु यदा पश्येत् वलीपलितमात्मनः" इति स्मृतिः । उदरावयव । पेटका अंग । "वलित्रयं चारु बभार बाला" इति कुमारः । गुदामें अंकुरके स्वरूपका मांसका पिण्ड.

बलिध्वंसिन्, (पु०) बलिं ध्वंसयति । स्वस्थानात् पातयति । ध्वन्स्+णिच् णिनि । जो बलि दैत्यको अपने स्थानसे गिराता है । विष्णु (वामनस्वरूपमें उसका ऐसा नाम हुआ).

बलिन्-(भ), (त्रि०) । बलि+अस्त्यर्थे इन् भ वा । बलिवाला । जरा (बुढेपा) से ढीले चमडेवाला.

बलिन्, (त्रि०) बलं अस्ति अस्य इति । बलवाला । जोरवाला । ऊंट । भैंसा । बैल । शूकर (सूअर) । बलराम.

बलिनन्दन, पुत्रः=सुत, (पु०) (बलेः नन्दनः) बलिका पुत्र । बाण नामा दैत्य.

बलिपुष्ट, (पु०) बलिना (पूजोपहारद्रव्येण) पुष्टः । पुष+क्त । पूजाकी भेटाके द्रव्यसे पलगया । काक । कौआ । कां.

बलिभुज्, (पु०) बलिं (पूजोपहारद्रव्यं) गृहस्थदत्त-बलिं वा भुङ्क्ते । क्विप् । पूजाके साधनरूप पदार्थ वा गृहस्थसे दीगई बलिको खाता है । काक । वायस । कौआ । कां.

बलि(ली)मुख, (पु०) बलि (ली) युक्तं मुखं अस्य । शाक० । जिसका मुख बलि (झिल्लडि) वाला है । वानर । बन्दर.

बलिष्ठ, (त्रि०) अतिशयेन बली । बलिन्+इष्ठन् । बहुत बलवाला । अत्यन्तबलवान् । उष्ट्र । ऊंठ (पु०).

बलिसद्मन्, (न०) ६ त० । बलिका घर । पाताल । "बलिपुर".

बलिहन्, (पु०) । बलिं हन्ति । बलिको मारनेवाला । विष्णु.

बलीयस्, (त्रि०) अतिशयेन बली । बलिन्+ईयसु । बहुत जोरवाला.

बलीवर्द, (पु०) वृ+क्विप्-वर् । ई (लक्ष्मीश्च) बश्च=ईबरौ तौ ददाति । दा+क ईबर्दः । बली चासौ ईबर्दश्चेति । वृष । बैल.

बल्य, (न०) बलाय हितं । बल+यत् । प्रधान धातु । बडी धाँत । शुक्र । वीर्य । तुतफह । और बलका साधन । अतिबला (बेल)(स्त्री०).

ब(व)ह, बुद्धि-बढना । भ्वा० आत्म० अक० सेट् । इदित् । बं(बं)हते.

ब(व)हु, (त्रि०) बं(वं)हि+कु-न लोपः। तीन आदि अनेक संख्यावाला। विपुल। बहुत। "स्त्रियां वा ङीप्"। बह्वी (वह्वी)। बहु.

ब(व)हुकर, (त्रि०) ब(व)हूनि किरति। कृ+अच्। बहुतोंको फेंकती है। (फरास) मार्जनकर। साफ करनेहारा। झाड़ूदेनेहारा। संमार्जनी (स्त्री०) बुहारी। कृ+अच्। ६ त०.

बहुक्षम, (त्रि०) बहु क्षमा यस्य। बडी क्षमा करनेवाला। सहारनेवाला.

बहुतिथ, (त्रि०) ब(व)हूनां पुराणः। ब(व)हु डट् तिथुक्च। अनेक संख्यात। बहुत संख्या (गिन्ती-वाला)। "काले गते बहुतिथे" इत्युद्भटः.

बहुत्र, (अव्य०) ब(व)हुषु त्रल्। बहुतोंमें। बहुतसे समय आदिमें.

बहुत्वच्, (पु०) ६ ब०। बहुतसी त्वचावाला। भूर्ज-भोजपत्तेका पेड.

बहुदर्शक-दर्शिन्, (त्रि०)। बहु पश्यति। बहुत देखनेवाला। चतुर.

बहुदायिन्, (त्रि०) बहु ददाति। बहुत देनेवाला। उदार। फिआज.

बहुधन, (त्रि०) बहु धनं यस्य। बडे धनवाला। धनी। दौलतमंद.

बहुधा, (अव्य०) ब(व)हु+प्रकारे धाच्। अनेक प्रकार। कई तरहसे.

बहुपुत्र, (पु०) ब(व)हवः पुत्रा इव पर्णानि अस्य। बहुतसे पुत्रोंकी नाई जिसके पत्ते हों। सप्तच्छद। सतौनेका वृक्ष.

बहुपत्नीक, (पु०) बह्व्यः पत्न्यः यस्य। बहुत स्त्रियोंवाला.

बहुप्रज, (त्रि०) ६ ब०। जिसकी बहुत सन्तान हो। शूकर (सूअर) (पु०)। प्रजाके समान बहुत तृणवाला होनेसे मुंजका तृण.

बहुमञ्जरी, (स्त्री०) ६ ब०। संज्ञा होनेसे कप् न हुआ। बहुत मिञ्जरोंवाला। तुलसीका वृक्ष.

बहुमल, (पु०) ६ ब०। बहुत मलवाला। सीसक। सीसा.

बहुरूप, (पु०) ६ ब०। सर्जरस (धुना)। शिव। विष्णु। हिरण्यगर्भ। कामदेव और केश (वाल)। नानारूपवान्। बहुत रूपवाला (त्रि०).

बहुल, (त्रि०) ब(व)हि+कुलच्। नि०। "न" का लोप। अनेक संख्यावाला। प्रचुर। बहुत। बहूनि लाति। ला+क। अग्नि। आग। और काला रंग (पु०) उसवाला (त्रि०) कृष्णपक्ष (पु०).

बहुविक्रम, (त्रि०)। बहु विक्रमः यस्य। बडे पराक्रमवाला। बडाबहादर। बडी शक्तिवाला। बडा योधा.

बहुव्ययिन्, (त्रि०)। बहु व्ययः यस्य। बडे व्यय (खर्च) वाला। वाफर खर्च करनेवाला.

बहुव्रीहि, (त्रि०) ६ ब०। अनेक धान्यादियुक्त। बहुतसे धानवाला। व्याकरणमें कहाहुआ एक प्रकारका समास (जिसमें प्रायः अन्यही पद प्रधान होता है) (पु०).

बहुशस्, (अव्य०)। ब(व)हु+शस्। अनेकवार। बहुतवार। कईवार.

बहुशल्य, (पु०) ६ ब०। रक्तखदिर। लाल खैरका वृक्ष। अनेक कीलोंवाला (त्रि०).

बहुसूति, (स्त्री०) ६ ब०। अनेक प्रसववाली गौ। बहुत संतानवाला (त्रि०).

बहुस्वामिक, (त्रि०) बहवः स्वामिनः यस्य। बहुत स्वामिओं (मालिकों) वाला.

बहूदक, (पु०) (बहूनि उदकानि यस्य)। एक प्रकारका संन्यासी जो एक स्थानपर न रहकर अनेक जगहका जल पीताहै.

बह्वर्थ, (त्रि०) बहवः अर्थाः यस्य। बहुत अर्थवाला। बहुत पदार्थवाला। असाधारण। आवश्यक। मुख्य.

बह्वाशिन्, (त्रि०) बहु अश्नाति। बहुत खानेवाला। खाइड.

ब(व)ह्वृच, (पु०) ६ ब०। अच्-समा०। बहुत ऋचावाला। ऋग्वेद। सूक्त (गीत) (न०) उसे जानेहारा (त्रि०)। उसकी स्त्री (स्त्री०).

बाडव, (न०) बडवानां समूहः+अण्। घोडोंका समुदाय। बहुत घोडे। ब्राह्मण (पु०)। बडवायां जातः+अण्। घोडीमें उपजा। और्व। समुद्रकी आग (पु०) "बाडवाग्निः" यही अर्थ.

बाडवेय, (पु०) (द्विव०) बडवायाः अपत्यं+ढक्। अश्विनीकुमार (दोनों).

बाडव्य, (न०) बाडव+संघे यत्। विप्रसमुदाय। ब्राह्मणोंका समूह.

बा(वा)ण, (पु०) बण्-शब्द करना। वा-वण्-जाना। संज्ञायां कर्तरि घञ्। शर। तीर। गौका स्तन (थन)। विरोचनका पुत्र। एक दैत्य। एक कवि और केवल। शरपुङ्ख (बाणका पर) (स्त्री०).

बाणिज्य, (न०) बणिजो भावः कर्म। बा+ष्यञ्। बनिआँपन वा बनियेका काम। क्रयविक्रयादि। खरीद फ़रोख्त वगैरह (मोल लेना और बेचना आदि) व्यापार.

बाणि-णी, (स्त्री०)। वण्+इ-णिच्। वस्त्रादिवपनक्रिया। कपडा आदि बुननेका काम। वाक्य। बोलना। सरस्वती। बचनकी देवी.

बादरायण, (पु०) व(व)दर्य्यां भवः । फक् । वद-रीमें हुआ । वेदव्यास.

बाध, (पु०) बाध+घञ् । प्रतिरोध । रोक । न्यायमतमें "स्वाभाववत्पदार्थ" । अपने अभाववाला पदार्थ । जिस पक्षमें साध्यका अभाव हो (साध्याभाववत्पक्षो बाधः) । पांच हेत्वाभासोंमेंसे एक-जैसे "वह्निकी बुद्धि होनेपर हद (तालाव) में वह्निका अभाव है अथवा" आग ठण्डी है यहां बाध है क्योंकि "आग गरम होती है" नियमका टूटना । "बाध+कर्तरि अच्" प्रतिवंधक (रोकनेवाला) (त्रि०) "भावे घञ्" बोधका प्रतिबंध (रुकना) । पीडन । दर्द । और उपद्रव.

बाध, विहति-रोकना-तक्लीफ उठाना । भ्वा० आत्म० सक० सेट् । बाधते । अबाधिष्ट.

बाधक, (त्रि०) बाध+ण्वुल् । प्रतिवंधक । रोकनेवाला । स्त्रियोंके ऋतुसमयमें सन्तान उत्पन्न करनेकी शक्तिको रोकनेहारा एक प्रकारका रोग (पु०).

बाधन, (त्रि०) बाधृ+ल्यु+अन । रोकनेवाला । विरुद्ध चलनेवाला । (भावे ल्युट्) रोकना । विरोध करना.

बाधित, (त्रि०) बाधृ+क्त । रोका गया । कष्ट पहुंचाया गया.

बाधिर्य, (न०) बधिरस्य भावः+ष्यञ् । बहिरा (डोरा)-मन । श्रवणशक्तिराहित्य । सुननेकी सामर्थ्यसे रहित होना । एक प्रकारका रोग.

बान्धकिनेय, (पु० स्त्री०) बन्धक्याः अपत्यं+ढक् इनङ्च । कुलटा स्त्रीकी सन्तान । छिनार औरतकी औलाद.

बान्धव, (पु०) बन्धु+स्वार्थे वा अण् । सम्बन्धी । रिश्तह-दार । पिता और माताके सम्बन्धवाला । मातुल (मामा) आदि.

बाल, (पु० न०) वाला नामी एक प्रकारका गंधवाला पदार्थ । मूर्ख । और शिशु (बच्चा) (त्रि०) केश (बाल) (पु०) " अस्त्यर्थे अच् " घोडेका बच्चा । घोडेकी पूंछ । हाथीकी पूंछ । नारिकेल (नारियेल-नरेल) । पशुकी पूंछ (पु०).

बालक, (पु० न०) गन्धवाला द्रव्य । बाल+स्वार्थे कन् । शिशु (बच्चा) । घोडे और हाथीकी पूंछ । और वलय (कडा) (पु०).

बाल(लि)खिल्य, (पु०) अंगुष्ठपर्वमित । अंगुठेकी गांठके मापवाले षष्टिसहस्र संख्या (साठ हजार गिन्तीमें) पुलस्त्यकी कन्यामें क्रतुके पुत्र । एक प्रकारके मुनि.

बालग्रह, (पु०) ६ त० । बालकोंको पीडा पहुंचानेहारा एक प्रकारका उपग्रह (छोटा ग्रह) । बच्चोंको तक्लिफ देनेहारा ग्रह.

बालधि, (पु०) बाला धीयन्ते अत्र । धा+कि । केशयुक्त लाङ्गल । बालोंवाली पूंछ.

बालभोज्य, (पु०) ६ त० । बच्चोंका खाना । चणक (छोले । बालकोंके खानेलायक (त्रि०).

बालविधवा, (स्त्री०) बाला चासौ विधवा । बाल-विधवा । बालपनकी रण्डी.

बालव्यजन, (न०) बाला एव व्यजनं । बालोंका पंखा । चामर । चौरी.

बालहस्त, (पु०) बालानां (केशानां) समूहः । बाल+हस्त । बालोंका समूह । "बाला हस्त इव यत्र" । जहां बाल मानो हाथके समान है । पशुओंकी पूंछ (लाङ्गल).

बाला, (स्त्री०) बालाः (केशाकाराः पदार्थाः) सन्ति अस्य-जिसके बालोंके समान पदार्थ हों । नारिकेल । नरेल । हरिद्रा (हल्दी) । घृतकुमारी । बालानामी गंधवाला पदार्थ । सोलह वर्षकी स्त्री । "षोडशवार्षिका" सोलह वर्षकी कन्या (लडकी).

बालि, (पु०) बल्+इन्-णिच । इन्द्रका पुत्र बानरोंका राजा.

बालिश, (त्रि०) बाड+इन् बाडिं (वृद्धिं) श्यति । शो+क "ड" को "ल" होता है । मूर्ख बेवकूफ । और बच्चा । " बालाः सन्ति अस्य " इनि-बाली (मूर्धा) शेते अत्र । शी+ड । उपधान (तकिया-सिर्हाना) (न०).

बालिहन्, (पु०) बालिं बालिनं वा हन्ति । हन्+क्विप् । रामचन्द्र.

बालेय, (पु०) बलेरपत्यं । बलये हितं वा । ढक् । बलिकी सन्तान । वा बलिके लिये हितकारी । रासभ । गधा । और एक दैत्य । कोमल (नरम) । बलिका हित चाहने-हारा (त्रि०).

बालेष्ट, (पु०) बालानां इष्टः । इष्+क्त । ब(व)दर । बेर । बालकोंका पियारा (त्रि०).

बाल्य, (न०) बालस्य भावः कर्म वा+ष्यञ् । बचपन । या उसका काम । सोलह वर्षतक अवस्था (उमर) । १६ वरिसकी उमर.

बाष्प-स्प, (पु०) बाधृ-पृ० षत्वं-सत्वं वा । नेत्रजल । आंखका पानी । आंसु । और ऊष्मा । भाफ.

बाष्पाकुल-आप्लुत, (त्रि०) । बाष्पैः आकुलः । अश्रुओं (अंसुओं) से व्याकुल हुआ (घबरायाहुआ).

बाष्पकण्ठ, (त्रि०) बाष्पाः कण्ठे यस्य । जिसका गला अंसुओंसे भर आयाहै । अश्रुपूर्ण.

बाष्पपूर, (पु०) बाष्पाणां पूरः । आंसुओंका समूह । अश्रुप्रवाह.

बाष्पबिन्दु, (पु०) बाष्पस्य बिन्दुः । आंसुकी बूंद । अश्रुबिंदु.

बाहु, (पु०) बाध+कु । "ध" को "ह" होता है । भुजा । बां । कांखसे ले अंगुलिओंतक भाग.

बाहुज, (पु०) बाहुभ्यां (ब्रह्मबाहुभ्यां) जायते । जन्+ड । ब्रह्माकी भुजाओंसे उपजा । क्षत्रिय । खत्री "बाहू राजन्यः" इति श्रुतिः.

बाहुत्र, (पु० न०) बाहुं त्रायते । त्रै+क । अस्त्र (औजार) की चोटसे बचनेके लिये हाथमें बंधाहुआ लोहा वा चमडा आदि.

बाहुमूल, (न०) ६ त० । भुजाकी जड । कक्ष । कांख । कच्छ.

बाहुयुद्ध, (न०) ६ त० । भुजाओंसे लडना । मल्लयुद्ध । पहलवानोंकी कुश्ती.

बाहुल, (पु०) बहुलानां (कृत्तिकानां) अयं (स्वामी)+अण् । जो कृत्तिकाओं (कई एक तारे) का मालिक है । वह्नि । आग । "बहुलाभिर्युक्ता पौर्णमासी+अण्" कार्तिक (कत्तक) की पूर्णिमा तिथि (स्त्री०) "सा अत्र मासे पुनरण्" । कार्तिकका महीना (पु०).

बाहुलेय, (पु०) बहुलानां अपत्यं+ढक् । कृत्तिकाओंकी सन्तान । कार्तिकेय । महादेवका बडा पुत्र.

बाहूत्क्षेपम्, (अव्य०) । बाह्वोः उत्क्षेपः यथा तथा । भुजाओंको उठाकर.

बाहुशिखरम्, (न०) बाहोः शिखरम् । भुजा (बांह) का ऊपरला भाग (चोटी) । कंधा.

बि(वि)ट्, आक्रोश । जिल्लाना । कसम खाना । शाप देना । भ्वा० पर० सक० सेट् । बेटति । अबेटीत्.

बिद्, अवयव-जुदा २ करना । भ्वा० पर० सक० सेट् । इदित् । बिन्दति । अबिन्दीत्.

बिन्दु, (पु०) बिदि+उ । बिद्+उ-नि वा । अल्पांश । थोडा हिस्सह.

बिल, भेदना । वा चुरा० उभ० पक्षे तु० पर० सक्० सेट् । बेलयति-ते । बेलति । अबिलत्-त । अबलीत्.

बिस्–क्षेप, फेंकना । दि० पर० सक० सेट् । बिस्यति । अबिसत्-अबेसत्.

बीभत्स, (त्रि०) बध् निन्दाकरना+स्वार्थे सन्-कर्मणि घञ् । पापी गुनाहगार । जुगुप्सित । निन्दा कियाहुआ । और घृणाका विषय (घिनके लायक) । अर्जुन (पु०) । एक रस.

बुक्, कुक्कुरादि शब्द । कुत्ते आदिकी आवाज करना । और कहना । चु० उभ० पक्षे भ्वा० पर० सक० सेट् । बुक्कयति-ते । बुकति.

बुक्क, (न०) बुक्क्+अच् । हृदयस्थमांसपिण्ड । हृदयमें एक मांसका गोला (टुकडा) । और हृदय.

बुद्ध, (पु०) बुध्+क्त । भगवदवतारभेद । भगवान्का नवम (९ वां) अवतार (जिस्में दैत्योंको मोहनेके लिये वेद और उसमें कहेगये कर्मोंकी निन्दा की है) । जागाहुआ (जानाहुआ) (त्रि०).

बुद्धि, (स्त्री०) बुध्+क्तिन् । ज्ञान । जान्ना । इल्म । अकल । सांख्यमें कहागया सुख दुःख आदि आठ धर्मोंवाला प्रकृतिका परिणामविशेष । अन्तःकरण । वेदान्तमें निश्चयस्वरूप वृत्तिवाला अन्तःकरण.

बुद्धिपूर्व, (त्रि०) बुद्धिः पूर्वं यस्य । इच्छापूर्वक । बुद्धिके साथ । इरादातन.

बुद्धिशालिन्–सम्पन्न, (त्रि०) बुद्ध्या शालते=शोभते । बुद्धिसे शोभायमान । बुद्धिमान् । अकिलमंद.

बुद्धिहीन, (त्रि०) बुद्ध्या हीनः । बुद्धिसे रहित । निर्बुद्धि । बेअकिल । मूढ । बेवकूफ.

बुद्धिमत्, (त्रि०) बुद्धि+मतुप् । बुद्धिवाला.

बुद्धीन्द्रिय, (न०) ६ त० । बुद्धिकी इन्द्रिय । ज्ञानेन्द्रिय मन, कान, नेत्र (आंख), रसना (जीभ), त्वचा, नासिका (नाक), ये सब ज्ञानकी इन्द्रियें हैं.

बुद्बुद, (न०) बुद्+क० पृ० । पानीका गोल आकारवाला विकार । बुलबुला.

बुध्, ज्ञान-जान्ना भ्वा० उभ० सक० सेट् । बोधति- ते । अबोधीत्-अबोधि । अबोधिष्ट । बोधः । बुधः.

बुध्, जान्ना । दिवा० आत्म० सक० अनिट् । बुध्यते.

बुध, (पु०) पण्डित । समझनेवाला । दाना । बृहस्पतिकी स्त्री तारामें चन्द्रमासे उत्पन्न हुआ पुत्र । " एकग्रह ".

बुधजनः, (पु०) बुधः जनः । दान्त वा सीखेहुए लोग । पण्डित वा शिक्षितलोग.

बुधरत्न, (न०) बुधप्रियं रत्नं । शाक० । बुधका पियारा रत्न । मरकतमणि । पन्ना.

बुधाष्टमी, (स्त्री०) बुधवारयुता अष्टमी । शाक० । बुधवारसहित अष्टमी । शुक्लपक्षकी अष्टमी । और उसमें करनेलायक एक व्रत.

बुधित, (त्रि०) भ्वा० उभ० बुध्+क्त इट् । ज्ञात । जानागया.

बुध्न, (न०) बंध+नक्- "न" का लोप । "बुध" का आदेश । वृक्षका मूल (जड) । और मूलमात्र (जड) । शिवजी (पु०).

बुभुक्षा, (स्त्री०) भुज+सन्+अ । भोजनकी इच्छा । क्षुधा । भूख.

बुभुक्षित, (त्रि०) बुभुक्षा+तार० इतच् । क्षुधायुक्त । जिसे भूख लग आई । "बुभुक्षितः किं द्विकरेण भुङ्क्ते".

बुभुत्सा, (स्त्री०) बोद्धुं इच्छा-बुध+सन्+अङ् । जानेकी इच्छा (खाहिश).

बुभूषा, (स्त्री०) भवितुं इच्छा+भू-सन्+अङ् । होनेकी इच्छा.

बुष–(स), (न०) बुस्यते (उत्सृज्यते) । बुस्-उत्सर्ग (छोडना)+क पृ० वा षत्वम् । तुच्छ धान्य । निकम्मा धान । फलसे विना धान । "भुस" छिलका चावलोंका.

बृह्, तु० प० बर्हति- बृहति । बढना । फैलना । शब्द करना.

बृहत्, (त्रि०)-ती (स्त्री०) बृह्+अति । बडा । चौडा । फैलाहुआ । ताकतवाला.

बृहदारण्यकम्, (न०) बृहत् आरण्यकम् । बडा वनमें पढनेलायक । प्रसिद्ध उपनिषद्का नाम । शतपथ ब्राह्मणके अन्तिम छ अध्याय.

बैल्व, (त्रि०)-ल्वी (स्त्री०) बिल्वस्य इदं+अण् । बिल्व (बिल्ल) बृक्षका बना हुआ । बिल्व बृक्षसे ढका हुआ.

बोध, (पु०) बुध्+घञ् । ज्ञान । जान्ना । और जागरण (जागना)। "बुध+ण" ज्ञानवाला (त्रि०)। "ण्वुल्" बोधक । जान्नेहारा (त्रि०).

बोधकर, (पु०) बोधं (निशान्ते जागरणं) करोति । कृ+अच् । जो रात बीत जानेपर जगाता है। रात्रीके अन्तमें जगानेहारा वैतालिक भाट । जतानेहारी (स्त्री०).

बोधन, (न०) बुध्+णिच+ल्युट् । विज्ञापन । जताना। इश्तिहार । नोटिस । जागरण । जागना.

बोधनी, (स्त्री०) बोध्यते अनया । बुध्+णिच्+ल्युट्+ङीप् । पिप्पली । मध । (इससे मूर्छित हुआ जगाया जाता है)। कार्तिककी एकादशी.

बोधि, (पु०) बुध्+इन् । अश्वत्थवृक्ष । पीपलका दरख्त । समाधिविशेष । जान्नेहारा (ज्ञाता) (त्रि०).

बौधः, बुध+अण्+बुधस्य अपत्यं । बुद्धदेवका पुत्र । पुरूरवाका नाम.

बौद्ध, (न०) बुद्धेन प्रोक्तं+अण् । बुद्धसे रचागया निरीश्वरवाद (जिसमें ईश्वरको नहिं माना जाता) शास्त्र । बौद्ध शास्त्रके पढनेहारा (त्रि०).

ब्युष्, उत्सर्ग-छोडना और विभाग-जुदा करना । चु० उभ० सक० सेट् । ब्योषयति-ते । अबुब्युषत्-त.

ब्रण्, शब्द करना । भ्वा० पर० सक० सेट् । ब्रणति । अब्रणीत्-अब्राणीत्.

ब्रतति, (स्त्री०) प्रतनोति । प्र+तन्+क्तिच् । पृ० । "प" को "ब" होता है । लता । बेल । बहु विस्तार । बहुत फैलाव । "ब्रतती" भी.

ब्रध्न, (पु०) बंध+नक्- "ब्रध" का आदेश होता है। सूर्य । आकका वृक्ष । शिव । वृक्षका मूल । ब्रध्न "भी" होता है.

ब्र(ब्र)ह्मकूर्च, (न०) एक प्रकारका व्रत (जिसमें पौर्णमासीको दिन रात उपवास करके दूसरे दिन प्रातः-काल दूध, दही, घी, गोमूत्र और गोबर मिलाकर पीते हैं).

ब्र(ब्र)ह्मचर्य, (न०) ब्रह्मणे (वेदलाभाय) चर्यते चर्+यत । वेद पढनेके लिये आचरण कर्ता है । वेद जान्नेके लिये यज्ञोपवीत डालनेके अनंतरका आश्रम । स्त्रीसंभोगसे रहित होना । मैथुनराहित्य । लिङ्गेन्द्रियका संयम (रोकना).

ब्रह्मचारिन्, (पु०) ब्र(ब्र)ह्मणे (वेदाय तद् ग्रहणाय) चरति चर्+णिनि । वेद पढनेके लिये कर्ता है । यज्ञोपवीत (जनेउ) के अनन्तर पहिले आश्रमवाले ब्राह्मण आदि तीन वर्ण । स्त्रीका संग न करनेहारा । ब्रह्मचारीके व्रतको करनेहारी स्त्री (स्त्री०) ङीप्.

ब्र(ब्र)ह्मज्ञ, (त्रि०) ब्र(ब्र)ह्म (वेदं), तुरीयं शुद्धचैतन्यं वा जानाति वेत्ति । ज्ञा+क । वेद वा शुद्ध चैतन्यको जान्नेहारा.

ब्र(ब्र)ह्मज्ञान, (न०) ६ त० । त्रिगुणावच्छिन्नातीततुरीयशुद्धचैतन्यविषयज्ञान । तीन गुणोंवालेसे परे चौथे शुद्ध चैतन्यका जान्ना.

ब्र(ब्र)ह्मण्य, (न०) ब्र(ब्र)ह्मणे (वेदाय) प्रभवति । शुद्ध चैतन्यज्ञानाय वा साधुः । ब्र(ब्र)ह्मणे हितो वा यत् । ब्राह्मण और वेदोंकी रक्षा करनेहारा । विष्णु । ब्राह्मणका धर्म.

ब्र(ब्र)ह्मतीर्थ, (न०) ६ त० । ब्रह्माका तीर्थ । पुष्करतीर्थ । पुष्करराज । कमलकी जड.

ब्र(ब्र)ह्मत्व, (न०) ब्र(ब्र)ह्मणो भावः । त्व । ब्रह्मपन । ऋत्विग्विशेष । ब्रह्माका धर्म । शुद्धतुरीय ब्रह्मभाव । निर्विकार ब्रह्मकी प्राप्ति.

ब्रह्मदण्ड, (पु०) ६ त० । ब्रह्मका दण्ड । ब्राह्मणसे किया गया अभिशापरूप दण्डन (सजा) । ब्राह्मणकी बददुआ । ब्राह्मणकी यष्टि (लाठी).

ब्र(ब्र)ह्मदाय, (पु०) ब्र(ब्र)ह्मणि (णे) वा वेदाध्ययनसमाप्त विप्राय वा राज्ञा दीयते । दा+कर्मणि घञ् । गुरुके घरसे विद्या पढके आयेहुए ब्राह्मणको जो धन दिया जाता है । समावृतविप्राय देये धने । लौटे हुए ब्राह्मणको देनेलायक धन.

ब्र(ब्र)ह्मन्, (न०) बृह्+मनिन् । वेद । तपस्या । सत्य । सच्च । तत्त्व । असली । यथार्थ । ठीक २ । तुरीय (चौथी दशाका) सर्वगुणातीत (सब गुणोंसे परे विशुद्ध) बिल्कुल साफ और चित्स्वरूप (ज्ञानस्वरूप) । हिरण्यगर्भ । विप्र । ब्राह्मण । ऋत्विग्विशेष (एक प्रकारका पुरोहित) (पु०).

ब्र(ब्र)ह्मनाल, (न०) काशीमें मणिकर्णिकाके पास तीर्थविशेष.

ब्र(ब्र)ह्मनिर्वाण, (न०) ब्र(ब्र)ह्मणि निर्वाणं (निर्वृतिः) । ब्रह्ममें विश्राम (आराम) । ब्रह्मस्वरूपका पाना । सम्पूर्ण अनर्थोंका निवृत्त (दूर)होना । परमानन्द (बहुत खुशी).

ब्र(ब्र)ह्मपुत्र, (पु०) ब्रह्मणः पुत्र इव (कपिलवर्णत्वात्) । पीला रंग होनेसे मानो ब्रह्माका पुत्र है । विष (जहर) । उत्तर देशमें प्रसिद्ध एक नद (बडा दर्या) । एक क्षेत्र (खास जगह) । सरस्वती नदी (स्त्री०) । वह ब्रह्मार्जासे उत्पन्न हुई है ऐसा प्रसिद्ध है.

ब्र(ब्र)ह्मपुरी, (स्त्री०) ६ त० । ब्रह्मकी पुरी । ब्रह्मकी उपासनाका स्थान । हृदय । दिल । उसके आधारका स्थान । सत्यलोक । काशी.

ब्र(ब्र)ह्मबन्धु, (पु०) ब्र(ब्र)ह्मा । विप्रो बन्धुः उत्पादको यस्य । जिसके उत्पन्न करनेहारा । ब्राह्मण है । विप्राचाररहित । ब्राह्मणके आचारसे रहित । निन्दाके लायक । काम करनेहारा । जातिसे ब्राह्मण (कामसे नहि) । विप्रतुल्य भट्टादि । ब्राह्मणके समान भाट आदि.

ब्र(ब्र)ह्मभूय, (न०) ब्रह्मणो भावः । भू+क्यप् । ब्रह्मभाव । ब्रह्मपन । तत्सायुज्य । ब्रह्मके साथ मिल्ना.

ब्र(ब्र)ह्मयज्ञ, (पु०) ब्रह्मनिमित्तको यज्ञः । ब्रह्मके लिये यज्ञ । वेदका पढना और पढाना.

ब्र(ब्र)ह्मरन्ध्र, (न०) ६ त० । ब्रह्मका रन्ध्र (सुराखछेक) । उत्तमाङ्ग (सिर) में स्थित ब्रह्मकी प्राप्तिका कारण छेककी जगह । उस छिद्र (सुराख)से निकलनेपर जीवका ब्रह्म होजाना सुनाजाता है । सिरकी खोपरीमें एक छेक है जहां समाधिके समय ब्रह्मकी प्राप्तिके लिये योगिजन ध्यान लगालेते हैं.

ब्र(ब्र)ह्मराक्षस, (पु०) ब्र(ब्र)ह्मा (विप्रोपि) कुकर्मभिः राक्षसः । ब्राह्मण होकर भी बुरे काम करनेसे राक्षस है । राक्षसके स्वरूपको प्राप्तहुआ एक प्रकारका भूत । "अपहृत्य च विप्रस्वं भवति ब्रह्मराक्षसः" इति मनुः.

ब्र(ब्र)ह्मर्षि, (पु०) ब्र(ब्र)ह्मा (विप्रः) चतुर्मुखतुल्यो वा ऋषिः (वेदस्य) स्मर्ता । ब्राह्मण वा चारमुखवाले (ब्रह्मा) के समान ऋषि (वेदका स्मरण करनेहारा) । वेदका स्मरण करनेहारे वशिष्ठ आदि ऋषि.

ब्र(ब्र)ह्मर्षिदेश, (पु०) ६ त० । ब्रह्मर्षिओंका देश । कुरुक्षेत्र आदि चारो देश । कुरुक्षेत्र, मत्स्य, पाञ्चाल और शूरसेन । जहां ब्राह्मण वा ऋषि रहते हैं.

ब्र(ब्र)ह्मलोक, (पु०) ६ त० । ब्रह्मका लोक । ब्रह्माधिष्ठानभुवन । वह लोक जहां ब्रह्मा निवास कर्ता है । सत्यलोक । तुरीय (तीनों अवस्थासे परे) ब्रह्मका स्वरूप.

ब्र(ब्र)ह्मवर्चस, (न०) ब्रह्मणा (वेदाध्ययनेन) कृतं वर्चः (तेजः) अच् समा० । वेदके पढनेसे उत्पन्न हुआ तेज । "ब्रह्मवर्चसकामस्य कुर्याद्विप्रस्य पञ्चमे" इति मनुः.

ब्र(ब्र)ह्मवादिन्, (पु०) ब्र(ब्र)ह्म (वेदं) वदति (पठति) णिनि । वेदपाठक । वेद पढनेहारा । "ब्र(ब्र)ह्म (शुद्धं चैतन्यं) सर्वात्मकतया । वदति-वेत्ति वा" । जो "शुद्ध चैतन्यही सबका स्वरूप है" ऐसा बोलता वा जानता है । वेदान्तमें कहेगये "सब स्वरूप" ब्रह्मको जान्नेवाला । "शुद्धचैतन्यं वदति-बोधयति" जो शुद्ध चैतन्यको जानता वा समझाता है । ब्रह्मको बोधन करनेहारा शास्त्र.

ब्र(ब्र)ह्मविद्या, (स्त्री०) ६ त० । शुद्धचैतन्यात्मकब्रह्मणोऽभेदेन ज्ञाने । शुद्धचैतन्यस्वरूप ब्रह्मका अभेदज्ञान । वह विद्या जो जीव और ब्रह्मको एक कर दिखाती है । वेदान्तविद्या । ब्रह्मकी विद्या.

ब्र(ब्र)ह्मवि (वि)न्दु, (पु०) ब्र(ब्र)ह्मणि वेदपाठकाले । बि (वि) न्दुः । वेदाध्ययनकाले निःसृतजलवि (बि) न्दुः । वेद पढनेके समय मुखसे निकलीहुई जलकी बूंद.

ब्र(ब्र)ह्मवैवर्त, (न०) अठारह पुराणोंमेंसे एक (जिसका १८००० श्लोक है).

ब्र(ब्र)ह्मसंहिता, (स्त्री०) वैष्णवोंके आचारका निश्चय करनेहारा एक सौ अध्यायका एक ग्रन्थ.

ब्र(ब्र)ह्मसायुज्य, (न०) सह युनक्ति । युज्+क्विप् । सयुक्-तस्य भावः सायुज्यं । ६ त० । ब्र(ब्र)ह्मभाव । ब्रह्मपन । ब्रह्मके साथ मिलना.

ब्र(ब्र)ह्मसू, (पु०) ब्र(ब्र)ह्माणं सूतवान् । सू+क्विप् । ब्रह्माको उत्पन्न किया । चार स्वरूपवाले विष्णुका स्वरूपविशेष । अनिरुद्ध । उसका अवतारविशेष । उषापति । उषाका पति.

ब्र(ब्र)ह्मसूत्र, (न०) ब्र(ब्र)ह्मणि (वेदग्रहणकाले) उचितं सूत्रम् । वेद पढनेके समय धारण करनेलायक सूत्र । जनेऊ । यज्ञोपवीत । ब्रह्मको प्रतिपादन करनेहारा शारीक सूत्र । वेदान्तके सूत्र.

ब्रह्महत्या, (स्त्री०) हन्+क्यप् । ६ त० । ब्रह्मका मारना । विप्रहनन । ब्राह्मणको मारना.

ब्रह्महन्, (त्रि०) ब्र(ब्र)ह्माणं हतवान् । हन्+क्विप् । ब्राह्मणको मारनेवाला । विप्रहत्याकारी । वृषलीका पति.

ब्र(ब्र)ह्महुत, (न०) ब्र(ब्र)ह्मणे (विप्राय-अतिथये) हुतं (दत्तम्) । ब्राह्मण वा अतिथिके लिये दियागया । नित्य गृहस्थके करनेलायक पाँच यज्ञोंमेंसे अतिथिका पूजन करनारूप यज्ञविशेष.

ब्र(ब्र)ह्माञ्जलि, (पु०) ब्र(ब्र)ह्मणो (वेदपाठाय) अञ्जलिः । वेद पढनेके समय गुरुके सामने हात जोडना वा स्वर जान्नेके लिये हातोंका सिकोडना.

ब्रह्माणी, (स्त्री०) ब्र (ब्र) ह्माणं (आनयति) जीवयति । अन्+णिच् । ब्रह्मशक्ति । ब्रह्माकी शक्ति । "ब्रह्माणी ब्रह्मजननात्" इति पुराणम्.

ब्रह्माण्ड, (न०) ६ (त०) । ब्रह्माका अण्डा । ब्रह्माके उपजनेहारा अंडेके स्वरूपमें भुवनकोष (सकल संसार).

ब्र(ब्र)ह्मावर्त, (पु०) देशभेद । सरस्वती और दृषद्वती नदियोंके बीचका देश (मुल्क).

ब्र(ब्र)ह्मासनं, (न०) ब्र(ब्र)ह्मणो ध्यानार्थं आसनं । ईश्वरका ध्यान करनेके लिये आसन (एक प्रकारका बैठना) । स्वस्तिक-पद्मासन आदि.

ब्रा(ब्रा)ह्म, (न॰) ब्रह्मण इदम् । ब्रह्मका । ब्रह्मसे कहागया । वा अण् टीका लोप । अंगुठेका मूल (एक-तीर्थ) । इस तीर्थसे ब्राह्मणोंको आचमन करनेका विधान है । पुराण । विवाहभेद । पारा (पु॰) । राजाका धर्म (पुं॰).

ब्रह्मिष्ठ, (त्रि॰) अतिशयेन ब्रह्म=वेदं जानाति+इष्ठन् । वेद-शास्त्रका पूर्णज्ञानी । वडा पण्डित । पवित्र.

ब्राह्म, (त्रि॰)-ह्मी-स्त्री॰ ब्रह्मण इदं-तेन प्रोक्तं वा+अण् । ब्रह्मा (कर्ता)का अथवा परमात्माका । ब्राह्मणोंका । ज्ञान-का । वैदिक । दिव्य । पवित्र । -ह्मः (पु॰) आठ प्रकारके विवाहोंमें एक जिसमें कन्या अलंकृत करके वरको दीजाती और कोई भेटा वरसे नहीं लीजाती सर्वोत्तम.

ब्रा(ब्रा)ह्मण, (पु॰) ब्र-(ब्र)ह्म (वेदं) शुद्धं परचैतन्यं वा वेत्ति अधीते वा अण् । जो वेद वा शुद्ध परम् चैत-न्यको जानता वा पढता है । "ब्रह्मणः अपत्यं+अण्" ब्रह्माकी सन्तान (मुखसे उपजा है) । विप्र । ब्राह्मण जाति । "ब्र(ब्र)ह्म जानाति ब्रा(ब्रा)ह्मणः । परब्र(ब्र) ह्मको जाननेहारा (त्रि॰).

ब्रा(ब्रा)ह्मणब्रुव, (पु॰) ब्रा(ब्रा)ह्मणं (जातिमात्रेण आत्मानं) ब्रूते । जो केवल जातिसे अपनेको ब्राह्मण कहता है । कदाचारवान् विप्र । बुरे आचारवाला ब्राह्मण.

ब्राह्मणसात्, (अव्य॰) ब्राह्मण+सातिच्-आधीनार्थे । ब्राह्मणके आधीन (काबूमें).

ब्रा(ब्रा)ह्मण्य, (न॰) ब्रा(ब्रा) ह्मणानां समूहः भावो वा+ष्यञ् । ब्राह्मणोंका समूह वा होना । विप्रसमूह । ब्राह्म-णोंका धर्म । विप्रत्व । ब्राह्मणपन.

ब्रा(ब्रा)ह्ममुहूर्त, (पु॰) ब्रह्मा देवता अस्य+अण् । कर्म॰ । अरुणके उदय होनेसे पहिली दो घडियें । रातके पिछले पहिरकी बाकी दो घडियां.

ब्रू, कथन । कहना । अदा॰ उभ॰ द्विक॰ सेट् । ब्रवीति-आह । ब्रूते । अवोचत्-अवोचत.

भ

भ, (न॰) भा+क । नक्षत्र (तारा) । मेष आदि राशि और ग्रह । शुक्राचार्य (पु॰) भण्+ड । भ्रमर (भौंरा) । भ्रान्ति । भरम भूल । आदि गुरुवाला "भगण."

भक्त, (पु॰ न॰) भज्+क्त । अन्न । खाना । और ओदन (भात) । भक्तियुक्त । भक्ति करनेवाला । विभक्त (बाँटागया) (त्रि॰).

भक्तकंस, (पु॰) भक्तस्य कंसः । अन्नकी थाली (रकाबी).

भक्तदास, (पु॰) भक्तेन (अन्नमात्रलाभेन) दासः (अंगीकृतदासभावः) । केवलभोजनपरही जो दास होना स्वीकार कर्ता है । पन्द्रह प्रकारके दासोंमेंसे एक.

भक्तमण्ड, (पु॰ न॰) ६ त॰ । चावलोंकी मांड । चाव-लोंकी पीछ.

भक्तरुचि, (स्त्री॰) भक्तस्य रुचिः । अन्न (भोजन) की इच्छा । भूख.

भक्तवत्सल, (त्रि॰) भक्तस्य वत्सलः । भक्त (भजनकरने-वाला-पूजक) का पियारा । भक्तोंपर दया करनेवाला.

भक्तशाला, (स्त्री॰) भक्तस्य शाला भोजनगृह । खानेका वडा कमरा.

भक्ताभिलाष, (पु॰) भक्तस्य=अन्नस्य अभिलाषः । अन्न (खुराक)की इच्छा । क्षुधा.

भक्ति, (स्त्री॰) भज्+क्तिन् । भजन । सेवा । आराधना । चित्तको आराधनामें लगाना । विभाग (बांट) । गौणी वृत्ति । उपचार । अवयव । भंगी । रचना । श्रद्धा (विश्वास) । "भवति विरलभक्तिः" रघुः.

भक्तिभाज्, (त्रि॰) भक्तिं भजति-भज्+ण्वि । भक्ति करनेवाला.

भक्तियोग, (पु॰) भक्तिरेव योगः (एकाग्रचित्तवृत्तिभेदः) । प्रेमसे चित्तका एकही ओर लगजाना । भक्तिरूपी योग.

भक्तृ, (त्रि॰) भज्+तृच् । भक्ति करनेवाला । स्तुति करने-वाला । पूजा करनेवाला.

भक्ष्, अदन । खाना । चु॰ उभ॰ सक॰ सेट् । भक्षयति-ते । "भक्षति."

भक्षक, (त्रि॰) क्षिका (स्त्री॰) भक्ष्+ण्वुल् । खानेवाला । खाद्ड.

भक्षण, (त्रि॰)-णी (स्त्री॰) भक्ष्+अन् । खानेवाला । -णं-(न॰) (भावे ल्युट्) खाना.

भक्षशेष, (पु॰) भक्षस्य शेषः । खानेसे वचा हुआ.

भक्षित, (त्रि॰) भक्ष्+क्त । खाया गया । -तं-(न॰) खाना.

भक्ष्य, (त्रि॰) भज्+कर्मणि यत् । खानेलायक । भोजनके योग्य । -क्ष्यं (न॰) कोई चीज खानेलायक । खानेका पदार्थ । खाना । भोजन.

भग, (पु॰ न॰) भज्+ग । सूर्य । अणिमा आदि आठ प्रकारका ऐश्वर्य । वीर्य । और यश । लक्ष्मी । ज्ञान । वैराग्य । योनि । इच्छा । माहात्म्य । यत्न । धर्म । मोक्ष । सौभाग्य । कान्ति । और चन्द्रमा । गुह्य और मुष्कके बीचका स्थान (कुस).

भगदत्त, (पु॰) महाभारतमें प्रसिद्ध कामरूप देशका राजा.

भगन्दर, (पु॰) भगं (गुह्यमुष्कमध्यस्थानं) दारय-ति । "दृ+खश् मुम्च" । एक प्रकारका रोग (जो भगको फाडता है).

भगवत्, (त्रि॰) भगं (ऐश्वर्यादि) अस्ति अस्य । म-तुप् । "म" को "व" होता है । ऐश्वर्य आदिवाला परमे-श्वर । दुर्गा (स्त्री॰) ङीप्.

भगाङ्कुर, (पु०) भगे (गुह्यस्थाने) अंकुर इव । गुदापर मानो अंकुर है । अर्शरोग । ववासीरकी बीमारी.

भगिनी, (स्त्री०) भगं (यत्नः) पित्रादितो द्रव्यादाने अस्ति अस्याः+इनि । पिता आदिसे द्रव्य लेनेमें जिसे यत्न करना पडता है । सोदरा । स्वसा । वहिन । भैन.

भगीरथ, (पु०) सूर्यवंशमें दिलीपराजाका पुत्र एक राजा (जिसने गंगाको पृथिवीपर उतारा है).

भग्न, (त्रि०) भञ्ज्+क्त । पराजित । हारगया । और खण्डित (टूटगया) । "भग्नं शम्भुधनुर्गुणैरुपहतं" इति नाटकम्.

भग्नप्रक्रम, (पु०) भग्नः प्रक्रमो यत्र । जहां प्रारम्भ टूटगया है । अलंकारमें कहाहुआ एक काव्यका दोष.

भग्नप्रतिज्ञ, (त्रि०) भग्ना प्रतिज्ञा येन । प्रतिज्ञा (इकरार)-को तोडनेवाला.

भग्नमनोरथ, (त्रि०) भग्नः मनोरथः यस्य । जिसका मनोरथ (मुराद) पूरा नहीं हुआ (टूट गया) । निरुत्साह.

भग्नव्रत, (त्रि०) भग्नं व्रतं येन । अपने व्रत (नियम) को तोडनेवाला.

भग्नसंकल्प, (त्रि०) भग्नः–संकल्पः यस्य । जिसका संकल्प (इरादा) टूट गया.

भङ्ग, (पु०) भञ्ज्+घञ् । पराजय । हार । शिकस्त । खण्ड । टुकडा । भेद । फरक । तरङ्ग (लहर) । कौटिल्य । तिरच्छापन । भय । डर । पत्ररचनाभेद । एक प्रकारकी पत्तोंकी बनावट । गमन । जाना और जलनिर्गम (पानीका निकलना) । सण । तेउडी (त्रिवृता) और भांग (स्त्री०).

भङ्गा, (स्त्री०) एक प्रकारकी मद देनेवाली वूटी.

भङ्गि–ङ्गी, (स्त्री०) भञ्ज्+इन् । पृ० वा ङीप् । विच्छेद । जुदाई । कौटिल्य । तिरछापन । फरेव । विन्यास । रचना । बनावट । कल्लोल (नहर) । भेद । फरक । व्याज । रीत । बहाना.

भङ्गुर, (त्रि०) भञ्ज्+घुरच् । कुटिल । तिरच्छा । आपही टूटनेवाला । नदियोंकी टेढ.

भङ्ग्य, (न०) भङ्गानां भवनं (क्षेत्रम्) यत् । भांग होनेलायक खेत । भांगका खेत.

भज्, भाग वांटना । सेवा करना । भ्वा० उभ० सक० अनिट् । भजति-ते । अभाक्षीत् । अभक्त । भेजतुः । भेजे.

भज्, पाक । पकाना और देना । चु० उभ० सक० सेट् । भाजयति-ते.

भजक, (पु०) भज्+ण्वुल् । विभाग करनेवाला । वांटनेवाला । पूजक । भजन करनेवाला । पूजा करनेवाला । भक्त.

भजन, (न०) भज्+ल्युट्+अन । बांटना । सेवा करना । पूजा.

भजमान, (त्रि०) भज् शानच् । न्यायसे आयाहुआ द्रव्य आदि । विभाजक । वाँटनेवाला । और सेवक । नौकर.

भट्, पोषण पालना । भ्वा० पर० सक० सेट् । भटति । अभाटीत् अभटीत् । "बोलना" णिचि भटयति.

भटित्र, (न०) भट्+इत्र । शूलपक्व मांसादि । सीखोंपर पकाहुआ मांस आदि । कवाब.

भट्ट, (पु०) भट्+तन् । स्तुतिपाठवृत्तिमति । दूसरोंकी स्तुति (तारीफ) का पाठ करके जीनेवाला । भाट एक जाति । स्वामित्व । मालिकपन । वेदको जाननेहारा । और पण्डित (चतुर शास्त्रवेत्ता).

भट्टार, (पु०) भट्टं (स्वामित्वं) ऋच्छति । ऋ+अण् । पूज्य । पूजाके लायक । "संज्ञामें कन्" । सूर्य । सूरज.

भट्टारक, (पु०) भट् भाषण वोलना । क्विप् । ऋ+णिच्+ण्वुल् । कर्म० । नाट्योक्तिमें राजा । पूजाके लायक । वहुत पढाहुआ.

भट्टिनी, (स्त्री०) भट्टं (स्वामित्वं) अस्य अस्ति । इनि । ङीष् । ब्राह्मणकी स्त्री । ब्राह्मणी । नाटकमें वह रानी जिसे अभिषेक नहीं मिला । अकृताभिषेका राजस्त्री.

भड्, परिभाषण, वहुत वोलना । भ्वा० आत्म० सक० सेट् । भण्डते.

भण्, कथन कहना । भ्वा० पर० सक सेट् । भणति । अभाणीत् । अभणीत् । अवीभणत्-त । अवभाणत्-त.

भणिति, (स्त्री०) भण्+क्तिन् । कथन । कहना.

भण्ड, (पु०) भडि+अच् । अश्लीलवाक्यभाषक । गंदे वचन वोलनेवाला । भांड । "त्रयो वेदस्य कर्तारो भण्डधूर्तपिशाचकाः" इति चार्वाकमतम्.

भद्, हर्ष खुश होना । शुभ कथन । अच्छा कहना । प्रीति । प्रसन्न होना । भ्वा० आ० अक० सेट् इदित् । भन्दते-अभन्दिष्ट.

भद्, कल्याण करना । चु० उभ० सक० सेट् । इदित् । भन्दयति-ते.

भदन्त, (पु०) भदि+झच् "न" का लोप । बौद्धका भेद । पूजागया (त्रि०).

भद्र, (न०) भदि+रक् नि० "न" का लोप । मंगल । मोथा और सुवर्ण (सोना) । ज्योतिषमें ववादिसे सातवा करण (स्त्री० न०) । महादेव । वृष । बैल । एक प्रकारका हाथी । वलदेव । रामचन्द्र । सुमेरु पर्वत (पु०) । ज्योतिषमें द्वितीया सप्तमी और द्वादशी तिथि (स्त्री०) । साधु (भला) । और श्रेष्ठ । वहुत अच्छा (त्रि०).

भद्राकार-कृति, (त्रि०) भद्रः आकारः । अच्छी आकृतिवाला । अच्छीशकलवाला.

भद्रकुम्भ, (पु०) भद्रः कुम्भः । गंगाके जलसे भरा हुआ सुवर्णका घडा.

भद्रज, (पु०) भद्राय जायते । जन्+ड । कल्याणके लिये होता है । इन्द्रयव । इन्द्रजौं.

भद्रतुरग, (न०) भद्राः तुरगा यत्र । जहां अच्छे घोडे होते हैं । जम्बुद्वीपके ९ वर्षोंमेंसे एक । "भद्राश्व".

भद्रपदा, (स्त्री०) व० व० । भद्रस्य (वृषस्य) इव पदं यासां । जिनके पाँव बैलकी नाईं हैं । पूर्व, और उत्तर भाद्रपदा (नक्षत्र तारे).

भद्रपीठम्, (पु०) भद्रं पीठम् । दीप्तिमान् आसन । पादशाही कुरसी । सिंहासन.

भद्रश्रय, (न०) भद्राय श्रीयते । श्री+अच् । कल्याणके लिये सेवन किया जाता है । चंदनरस । संदलका पेड.

भद्रासन, (न०) भद्राय (लोकक्षेमाय) आस्यते अत्र । लोकोंके कल्याणके लिये जिसपर बैठते हैं । आस् "आधारे ल्युट्" नृपासन । राजाका आसन.

भय, (न०) बिभेति अस्मात् । भी+अच् । जिस्से डरते हैं । भयका । "भावे अच्" डरना । डर.

भयङ्कर, (त्रि०) भयं करोति । कृ+अच्+मुमुच । जो भय देता है । भयका कारण । डरावना । एक रस (पु०).

भयदर्शिन्, (त्रि०) भयं दर्शयति । भय दिखानेवाला । डरावना.

भयप्रद, (त्रि०) भयं प्रददाति । भय देनेवाला । डरावना.

भयहेतु, (पु०) भयस्य हेतुः । डरका कारण (सबब).

भयानक, (पु०) बिभेति अस्मात् । भी+आनक् । जिस्से डरता है । व्याघ्र । भेडिया । राहु । और रसविशेष । डरवना (त्रि०).

भर, (पु०) भृ+अप् । अतिशय । बहुत । जियादा । "कर्तरि अच्" भरण कर्ता । पालन करनेहारा (त्रि०).

भरण, (न०) भृ ल्युट् । वेतन । मजदूरी । पोषण । पालन (परवरिश) और धारण (पकडना) । दूसरा नक्षत्र (तारा) । और घोषलता (स्त्री०) ङीप्.

भरण्यभुज्, (त्रि०) भरण्यं (वेतनं) भुङ्क्ते । भुज्+क्विप् । जो मजदूरी खाता है । वैतनिक कर्मकर । मजदूरीपर काम कहनेहारा.

भरत, (पु०) भरं तनोति । तन्+ड । जडभरत नामसे प्रसिद्ध एक मुनि । नाट्यशास्त्र और अलंकारशास्त्रके बनानेहारा । शबर (भील) । तन्तुवाय (ताती जुलाहा) । क्षेत्र (खेत) । केकयीका पुत्र और रामानुज । "भरतेन प्रोक्तं भारतं (नाट्यशास्त्रं) अधीयते+अण् उसका लोप" नट (तमाशा करनेवाला) । दुष्यंत राजासे शकुन्तलामें उत्पन्न कियागया एक राजा (पु०) । "तस्यापत्यानि इञ् तस्य बहुषु लुक्" भरतवंशका राजा । (पु० ब० व०).

भरतखण्ड, (न०) भरतस्य नृपस्य चिह्नितं खण्डं । भरत राजाके चिह्नवाला पृथिवीका विभाग । भारतवर्षके भीतर कुमारिकाखण्ड । हिन्दुस्तानका एक भाग.

भरतवर्ष, (न०) ६ त० । भरतका वर्ष । भारतवर्ष । हिन्दुस्तान.

भरताग्रज, (पु०) ६ त० । दशरथका वडा पुत्र । श्रीरामचन्द्र.

भरद्वाज, (पु०) वडे भाई । उतथ्यकी स्त्री ममतामें बृहस्पतिसे उत्पन्न कियागया मुनिविशेष । एक पक्षी.

भर्ग, (पु०) भ्रस्ज्+घञ् । भर्जादेश होनेपर कुत्व होता है । शिवजी । ज्योतिःपदार्थ (चमकनेवाला तेज) । आदित्यान्तर्गत ऐश्वर्य तेज । सूर्यके भीतर ईश्वरका तेज । रोशनी.

भर्तृ, (पु०) भृ+तृच् । स्वामी । मालिक । अधिपति । पादशाह । राजा । पालन करनेहारा । और धाता (रचनेहारा) (त्रि०).

भर्तृदारक, (पु०) भर्तुः (अधिपस्य) राज्ञः दारकः । राजाका पुत्र । नाटकमें राजकुमर (राजाका बेटा) । उसकी लडकी (स्त्री०) कन् । "भर्तृदारिका".

भर्तृहरि, (पु०) भर्ता हरिरिव । स्वामी मानो विष्णु है । इस नामसे प्रसिद्ध वाक्यपदीय आदि ग्रन्थके बनानेवाला । विक्रमादित्यका वडा भाई । एक राजा.

भर्त्स, अधिक्षेप । तिरस्कार करना । झिडकना । चुरा० उभ० सक० सेट् । भर्त्सयति-ते । अभर्त्सत्-त.

भर्त्सन, (न०) भर्त्स्+ल्युट् । झिडकना । अपकारवचन । भर्त्सना (स्त्री०).

भर्म्, हिंसा० मारना । भ्वा० पर० सक० सेट् । भर्मति । अभर्मीत्.

भर्म-न्, (न०) भृ+मन् । मनिन् वा । स्वर्ण (सोना) । भृति । मजदूरी । नाभि (धुन्नी) । भार । बोझा । गृह.

भर्व्, हिंसा० मारना । भ्वा० पर० सक० सेट् । भर्वति । अभर्वीत्.

भल्, वध मारना । दान देना । और निरूपण वर्णन करना । देखना । भ्वा० आत्म० सक० सेट् । भलते । अभलिष्ट । "भालयते".

भल्ल, दान देना । वध मारना निरूपण बयान करना । भल्लति.

भल्ल, (अस्त्र) (पु० न०) "स्वार्थे कन्" भल्लूक (पु०) । भालू । रीछ.

भव, (पु०) भू+भावे अप् । जन्म । उत्पत्ति । सत्ता (होना) और प्राप्ति (हासील) । "भवति अस्मात्-अपादाने अप्" जलकी मूर्तिको धारण करनेहारा महादेव । पानी पृथिवीसे उपजा है इसलिये पृथिवीस्वरूप महादेवसे होता है । "आधारे अप्" संसार (दुनिआँ).

भवत्, (त्रि०) भा+डवतु । युष्मत् । (आप) के अर्थमें यह सर्वनाम होता है । भवान् (आप) । भवत्याः पुत्रः भवत्पुत्रः (आपका पुत्र) । भू+शतृ । वर्तमान कालके अर्थमें भवनकर्ता (होनेवाला).

भवादृश(क्ष), (त्रि०) भवतः तव इव दर्शनं अस्य। भवत्+दृश्+क्विप्-ढक्। कस् वा। तुमारी नाई दीखता है। भवत्तुल्यजन। आपके समान जन.

भवानी, (स्त्री०) भवस्य पत्नी। भव+ङीष्-आनुक्‌च। शिवभार्या। शिवजीकी स्त्री। पार्वती। दुर्गा.

भवितव्य, (न०) भू+भविष्यति कर्तरि च। नि० तव्यत्। अवश्य भव्य। जरूर होनेलायक। जरूर होगा.

भवितव्यता, (स्त्री०) भवितव्यस्य भावः+तल्। अवश्यम्भाव। जरूर होना। और भाग्य। किस्मत.

भविष्णु, (त्रि०) भू+इष्णुच्। भवनशील। होनेवाला। होनहार.

भविष्य-त्, (पु०) भू+लृटः सद्वेति शतृ-स्य-ट्-च् पृ० वा तलोपः। भाविकाल। होनेहारा समय। आनेवाला वक्त। उस कालमें होनेहारा पदार्थ (त्रि०)। स्त्रियां ङीप्-नुमुच.

भव्य, (त्रि०) भू+कर्तरि नि० यत्। भावि। होनेहारा। होगा। और मंगल (कल्याण) (न०) शुभ। सत्य। और योग्य (न०) उसवाला (त्रि०).

भष्, कुक्कुरशब्द। कुत्तेकी आवाज करना। भौंकना। भ्वा० पर० सक० सेट्। भषति। अभषीत्। अभाषीत्.

भषक, (पु०) भष्+कुन्। कुक्कुर। कुत्ता.

भस्, चमकना-दीप्ति। अक०। झिडकना। सक० जुहो० पर० सेट्। बभस्ति। अभासीत्-अभसीत्.

भस्त्रा, (स्त्री०) भस्+त्रन्। अग्निप्रज्वालक चर्मरचित यन्त्रविशेष। आग सुलगानेहारी चमडेकी कला। धौंकनी। फूंकनी। सरनाई। मशक। चमडेका थैला। थैली। "भस्त्रका" भस्ति "भस्त्रिका" (छोटा थैला).

भस्मक, (न०) भस्म करोति। कृ+ड। भस्मकीट नामी रोगविशेष। एक बीमारी जिस्में बहुतसा खाजानेपरभी भूख वैसीही बनी रहे। "भस्म इव" इवार्थे कन्। विडङ्ग (सुहागा)। और कलधौत (सोना).

भस्मन्, (न०) भस्+मनिन्। (खाक-क्षार)। सडे गोयेका विकार। शिवजीकी विभूती। खा.

भस्मशायिन्, (पु०) भस्मनि शेते। भस्म (खाक) पर सोने (लेटने) वाला। शिवजीका नाम.

भस्मसात्, (अव्य०) भस्म कार्त्स्न्येन सम्पन्नं करोति। भस्मन्+साति। पूरा २ खाक कर डालना। खारूप करना.

भस्मावशेष, (त्रि०) भस्म एव अवशेषः यस्य। जिसका शेष (बाकी) भस्म (खाक) रहगया.

भा, दीप्ति। चमकना। अदा० पर० अक० अनिट्। भाति। अभासीत्.

भा, (स्त्री०) दीप्ति। चमकना। प्रकाश। भा+अङ्+टाप्.

भाग, (पु०) भज्+भावे घञ्। भजन। बांटना। "कर्मणि घञ्" अंश। टुकडा। इष्ट (चाही गई) वस्तुका आधा (हिस्सा)। एकदेश। एक टुकडा। हिस्सह। भाग्य। किस्मत। एक राशिका तीसवां भाग (हिस्सह).

भागधेय, (न०) भाग+(स्वार्थे) धेय। भाग्य (किस्मत "भागेन धीयते असौ। धा+यत्। राजदेय कर। राजाको देनेलायक कर (खिराज)। "भागो धीयते अस्मै"। धा+सम्प्रदाने यत्। जिसे अंश दिया जाता है। दायाद। सपिण्ड। शरीक.

भागवत, (त्रि०) भगवतः भगवत्या वा इदं सोऽस्य देवता वा अण्। भगवान् वा भगवतीका भक्त। भगवत्सम्बन्धी। भगवान्‌की बाबत। उनके गुणोंके वर्णन करनेहारा पुराण और उपपुराण (न०).

भागशस्, (अव्य०) भागं भागं ददाति। शसि। एक २ भागका देना.

भागहर, (त्रि०) भागं (अंशं) हरति (अधिकारित्वेन गृह्णाति) हृ+अच्। जो अधिकारी होनेसे हिस्सह लेता है। अंशग्राही। अंश लेनेहारा। हिस्सह बांटनेवाला। वारिस.

भागहार, (पु०) भज्यते इति भागो विभाज्यस्तस्य हारो हरणम्। विभाग करनेलायकका लेना। हृ+घञ्। अंकशास्त्र (हिसाबका इल्म) में कहाहुआ भाज्य (बांटनेलायक)-का विभाग करना (बाँटना).

भागिन्, (त्रि०) भज्+घिनुण्। अंशविशिष्ट। हिस्सेवाला। हिस्सेदार.

भागिनेय, (पु०) भगिन्या अपत्यं+ढक्। (भगिनी बहिन)का बेटा। स्वसृपुत्र। भनेवाँ। उसकी कन्या (स्त्री०) भनेवी+ङीप्.

भागीरथी, (स्त्री०) भगीरथेन आनीता तत्सम्बन्धिनी वा+अण्। भगीरथसे लाई गई गंगा। "भागीरथीनिर्झरशीकराणां" कुमारः.

भागुरि, (पु०) धर्मशास्त्र और व्याकरणके बनानेहारा एक मुनि.

भाग्य, (न०) भज्+ण्यत्-कुत्वम्। शुभाशुभसूचक कर्म। भले और बुरेको बतानेहारा काम। "भागः प्रयोजनं अस्य यत्" भागवान्। हिस्सेदार (त्रि०).

भाग्योदय, (पु०) भाग्यस्य उदयः। भाग्यका उदय (वृद्धि)। किस्मतका खुलना.

भाङ्गीन, (न०) भङ्गाया विजयाया भवनं क्षेत्रं+खञ्। भाङ (भांग) उपजनेका खेत। यञ्। "भाङ्ग्यं" यही अर्थ है.

भाज्, पृथक् करण। जुदा करना। चुरा० उभ० सक० सेट्। भाजयति-ते। अवभाजत्-त.

भाजक, भाज्+ण्वुल्। भागदेनेवाला। बांटनेवाला.

भाजन, (न०) भाज्यते अनेन। भाज्+ल्युट्। पात्र। आधार। आसरा। योग्य। लायक.

भाज्य, (त्रि०) भाज्यते विभज्यते । भाज्+कर्मणि यत् । विभजनीय । बांटनेलायक.

भाटक, (न०) भट्-पोषण-पालना+ण्वुल् । दूसरेके घर वा सवारी आदिको भोगनेके लिये उसके स्वामीको देनेलायक धन । भाडा । किराया.

भाट्ट, (पु०) भट्टस्य अनुयायी+अण् । भट्ट (कुमारिल भट्ट–मीमांसादर्शनका कर्ताका अनुसरण करनेवाला.

भाण, (पु०) भण्+घञ् । दृश्य (देखनेलायक) काव्यका भेद.

भाण्ड, (न०) भा+अण्डच् भण्+ड स्वार्थे अण् वा । पात्र । भांडा । वर्तन । तेल रखनेका पात्र । एक प्रकारका घर । भांडार । वणिओंका मूलधन । पूंजी । नदीके दोनों किनारोंके वीचका । भण्डस्य भावः+अण् । भांडका चरित्र (न०).

भाण्डशाला, (स्त्री०) भाण्डानां शाला । भांडो (वर्तनो और तरह=खान पानके पदार्थ) का घर.

भाण्डारिन्, (पु०) भाण्डं ऋच्छति । ऋ+णिनि । भण्डारी । जिसे अन्न आदि द्रव्यवाले घरोंका अधिकार दियागया है.

भाण्डिवाह्, (पु०) भाण्डिं (क्षुराद्याधारं) वहति+अण् । जो गुच्छी रखताहै । नापित । नाई । नौआ । भाण्डि+अ-स्त्यर्थे लच् । "भाण्डिल" यही अर्थ.

भाति, (स्त्री०) भा+क्तिन् । शोभा । चमक । मनोहरता.

भाद्र, (पु०) भद्राभिर्युक्ता पौर्णमासी भाद्री सा यस्मिन् मासे+अण् । चैतसे छठा महीना (भादों) । उस महीनेकी पूर्णिमा (स्त्री०) ङीप् । "भद्रैव स्वार्थे अण्" पूर्व और उत्तर भाद्रपदतारे (न०).

भाद्रमातुर, (पु०) भद्रायाः सत्याः मातुः अपत्यं+अण् उरच् । सतीका पुत्र.

भानु, (पु०) भा+नु । सूर्य । आकका वृक्ष । किरण । स्वामी । राजा.

भानुमत्, (पु०) भानुः किरणः अस्ति अस्य । मतुप् । किरणवाला । सूर्य । "भानुमाली" इसी अर्थमें.

भानुमती, (स्त्री०) विक्रमादित्य राजाकी पत्नी (स्त्री०).

भाम्, क्रोध । गुस्सा करना । खफा होना । भ्वा० आ० अक० सेट् । भामते.

भाम, (पु०) भाम्+घञ् । क्रोध (गुस्सा) और दीप्ति (चमक) । "कर्तरि अच्" सूर्य । कोपवाली औरत भामिनी (स्त्री०).

भामिनी, (स्त्री०) भाम्+णिनि । कोपशीला स्त्री । क्रोध करनेवाली स्त्री । स्त्रीमात्र । हरएक औरत.

भार, (पु०) भृ+घञ् । गुरुत्वपरिमाण । बोझेवाला माप । बोझेवाला द्रव्य । वीस तुलाका माप । आठ हजार तोलेका परिमाण । बोझा.

भारक, (पु०) भारं वहति । भार+ठक् । भारवाहक । बोझा उठानेहारा.

भारत, भरतान् (भरतवंश्यान्) अधिकृत्य कृतो ग्रन्थः+अण् । भारः (वेदादि शास्त्रेभ्योऽपि सारांशः अस्ति अस्य वा) । वह ग्रन्थ कि जिसमें भरतवंशके लोकोंका वर्णन है । अथवा जिससें वेदादि शास्त्रोंसे भी सारभाग लियागया है । वेदव्यासका बनाया हुआ लाख श्लोकका ग्रन्थ । "भरतेन चिह्नितं तस्येदं वा+अण्" । भरतसे निशान लगागया वा भरतका । जम्बुद्वीपके भीतरका एक वर्ष (भारतवर्ष) । "भरतस्य गोत्रापत्यं+अण्" भरत राजाके वंशमें हुआ । "भरतेन मुनिना प्रोक्तं अण्" भरत मुनिसे बनायागया नाटकशास्त्र आदि (न०) "तदधीयते+पुनरण्" उसे पढतेहैं । नट । और आग.

भारती, (स्त्री०) भृ+अतच् । स्वार्थे अण् । वाक्य (वचन) । वचनकी अधिदेवता (जिसके आश्रय वचन रहता है) । सरस्वती । पक्षिविशेष । अलंकारमें एक प्रकारकी वृत्ति । संस्कृत भाषा.

भारद्वाज, (पु०) भरद्वाजस्य गोत्रापत्यं+अण् । भरद्वाजके गोत्रमें हुआ । गोत्रको चलानेहारा एक मुनि । द्रोणाचार्य । अगस्त्यमुनि । व्याघ्राट पक्षी । और वृहस्पतिका पुत्र । वनकी कपास (स्त्री०) ङीप्.

भारयष्टि, (स्त्री०) भारस्य वहनार्था यष्टिः । शाक० । बोझा उठानेके लिये लाठी । भारवहनदण्ड । भार उठानेका डण्डा.

भारवाह–ह्, (पु०) भारं वहति । अण्+ण्विः वा । भार उठानेवाला । भारवाही । ण्वुल् । "भारवाहकः" इसी अर्थमें है.

भारवि, (पु०) किरातार्जुनीय काव्यके बनानेवाला । एक कवि.

भाराक्रान्त, (त्रि०) भारेण आक्रान्तः । भार (बोझ) दबाहुआ (लदा हुआ).

भारोपजीविन्, (त्रि०) भारेण उपजीवति । बोझा ढोकर जीविका (रोजी) कमानेवाला.

भार्गव, (पु०) भृगोरपत्यं तद्गोत्रापत्यं वा+अण् । भृगुकी संतान वा उसके गोत्रमें हुआ । शुक्राचार्य । परशुराम । धन्वी । तीर चलानेवाला । और हाथी । "तेन प्रोक्ता, तेनाधीता, ज्ञाता वा अण्" । उस्से कहीगई, पढीगई वा जानीगई । वेदमें प्रसिद्ध एक प्रकारकी विद्या । पार्वती । लक्ष्मी । और दूर्वा (दूब) । स्त्रियां ङीप्.

भार्या, (स्त्री०) भृ+ण्यत् । विधिसे विवाहीगई स्त्री । पालन करनेके लायक (त्रि०).

भार्याट, (त्रि०) भार्यया अटति । अपनी स्त्रीको वेश्या-बनाकर जीनेवाला.

भाल, (न०) भा+लच् । ललाट । मस्तक । माथा । भवोंका ऊपरका हिस्सह.

भालचन्द्र, (पु०) भाले चन्द्रः यस्य । जिसके मस्तक- (माथे) पै चन्द्रमा है । शिवजीका नाम.

भालदर्शन, (न०) भाले दृश्यते+कर्मणि ल्युट् । माथे- पर दिखाई देता है । सिन्दूर । सिंधूर.

भालनेत्र, (पु०) भाले नेत्रं अस्य । जिसके माथेपर आँख है । शिवजी । "भाललोचन" आदि इसी अर्थमें.

भालाङ्क, (पु०) भालस्य इव अङ्को यस्य, भाले अङ्को यस्य वा । माथेकी नाईं निशानवाला, वा जिसके माथेपर निशान है । शाकभेद । एक प्रकारका साग । करपत्रनामी अस्त्र (औजार) । संडासी । रोहितनामी मच्छ । महापु- रुषके चिह्नवाला । शिव । और कछुआ । माथेका निशान । किसतवाला आदमी.

भालु(लू)क, (पु०) भाल्लूक०+स्वार्थे अण् । वा पृ० ह्रस्वः । एक जीव । भल्लक । ऋक्ष । रीछ । "भाल्लुक" यही अर्थ.

भाव, (पु०) भावयति (चिन्तयति) पदार्थान् । चु० भू० अच् । नाटकमें नाना पदार्थचिन्तक (कई तरहके पदोंके अर्थोंको सोचनेहारा) पण्डित । "भावयति (ज्ञाप- यति) हृदयगतं-भू+णिच्+अच्" हृदयकी अवस्था (दशा) को जतलानेहारा मानस विकार (मनके बद- लनेसे हुआ) स्वेद (पसीना) और कंप (कांपना) आदि व्यभिचारिभाव । भू+घञ् । साध्य, सिद्ध, वा क्रि- यारूप धातुका अर्थ । राग (मुहव्बत) और आशय । मतलब.

भावक, (पु०) भाव+स्वार्थे कन् । मनका विकार । पदा- र्थको सोचनेवाला । और उत्पादक (उपजानेहारा) (त्रि०).

भावगम्य, (त्रि०) भावेन गम्यः । भावसे जानेलायक । मनसे जानेयोग्य.

भावग्राहिन्, (त्रि०) भावं गृह्णाति । तात्पर्य (मतलब) को समझनेहारा.

भावत्क, (पु०) भवतोऽयं+ठक् । भवत्सम्बन्धी । आप- का । आपवाला । हजूरका.

भावना, (न०) भू+णिच्+ल्यु । चालता नामी एक फल । "भावे ल्युट्" होना-युच् । चिन्ता । फिकर । ध्यान । खयाल । पर्यालोचना । सोचना । वैद्यकमें औषधका संस्कारविशेष (स्त्री०).

भावबोधक, (पु०) भावस्य (रत्यादेः) बोधकः । अनु- मापकः । रति (मुहव्वत) आदिको जतानेहारा । भवोंका चढाना आदि । शरीरकी चेष्टा (हर्कत) । मुखका लाल होना आदि.

भावशुद्धि, (स्त्री०) भावस्य=मनसः शुद्धिः । मनकी स- फाई । सरलता । दियानतदारी.

भावस्थिर, (त्रि०) भावे स्थिरः । मनमें दृढ (पक्का) जड पकड गया (जम गया).

भावाद्वैतम्, (न०) भावे अद्वैतं । स्वभाविक कारण । उपादान कारण । (जैसे सूत्र कपडेका).

भावानुगा, (स्त्री०) भावं (पदार्थ) आशयं वा अनुग- च्छति । गम्+ड । पदके अर्थ वा आशयका पीछा कर्ती है । छाया । टीका अभिप्रायानुगता । आशयके पीछे रहनेहारा (त्रि०).

भावान्तरम्, (न०) अन्यो भावः । दूसरी अवस्था । दूसरा खयाल । दुसरा भाव.

भावाभास, (पु०) भावस्य आभासः । भावकी प्रतीति । झूठा मतलव.

भावार्थ, (पु०) भावस्य अर्थः । असली आशय (मतलब) किसी शब्द वा वाक्यका सष्टार्थ । वस्तुनिर्देश.

भावित, (त्रि०) भू+णिच् । वासित (खुशबूदार) । प्राप्त (पाया) । शुद्ध । साफ । चिंतित । सोचागया । और मिलाहुआ । पैदाकिया । वाहिर हुआ । कबूल किया.

भावित्रम्, (न०) भू+णि+त्रन् । तीनो लोक (स्वर्ग, मर्त्य, पाताल).

भाविनी, (स्त्री०) भावः (हृदयचेष्टाभेदः) सः अस्ति अस्या+इनिः । एक प्रकारकी स्त्री । जिसके हृदयमें किसीप्र- कारकी चेष्टा होरही है । और हरएक औरत । भू+णिनि । भविष्यत्कालवर्ती (आगेके समयमें होनेहारा) (त्रि०).

भावुक, (न०) भू+उकञ् । मङ्गल । खुशी । मङ्गलवाला (त्रि०) । (जिसे काव्य पढनेका रस हो) "मुहुरहो रसिका भुवि भावुकाः" इति भागवतम् । रसीली वाणी.

भाव्य, (त्रि०) भू+यत् । होनेवाला.

भाष्, वचन-वोलना । भ्वा० आ० द्विक० सेट् । भाषते । अभाषिष्ट.

भाषक, (त्रि०) भाष्+ण्वुल् । समासमें पीछे आता है । वोलनेवाला.

भाषण, (न०) भाष्+भावे ल्युट् । वोलना । कहना । वोली । शब्द.

भाषा, (स्त्री०) भाष्+अ । वाक्य । वचन । वोलना । सं- स्कृत आदि वचन । वोली । व्यवहार । प्रतिज्ञासूचक वाक्य । इकरारको जतलानेहारा वचन.

भाषान्तर, (न०) अन्या भाषा । दूसरी भाषा (जबान) अनुवाद.

भाषापाद, (पु०) कर्म० । चार पादवाले व्यवहारमें प्रतिज्ञाको सूचन करनेहारा वचन.

भाषित, (न०) भाष्-भावे क्त । कथन । कहना । "कर्मणि क्त" कथित । कहाहुआ (त्रि०) । "भाषितपुंस्का- दि" ति पा० सूत्रम्.

भाषित, (त्रि०) भाष्+णिनि (समासके अन्तमें) बोलनेवाला। वक्ता.

भाष्य, (न०) सूत्रोंकी व्याख्या करनेहारा ग्रन्थविशेष। कथनीय (कहनेलायक) (त्रि०).

भास्, दीप्ति-चमकना। भ्वा० आ० अक० सेट्। भासते। अभासिष्ट.

भास्, (स्त्री०) भास्+क्विप्। दीप्ति। रौशनी। मयूख। किरण। इच्छा.

भास, (पु०) भास्+घञ्-अच् वा। दीप्ति। चमक। गोष्ठ। गोवाडा। कुक्कुर। कुत्ता। और शुक्र.

भासक, (त्रि०) भास्+ण्वुल्+अक। प्रकाश करनेवाला। चमकानेवाला.

भासुर, (त्रि०) भास्+घुरच्। दीप्तिशील। चमकनेवाला। और स्फटिक (वलौर)। वीर (बहादुर) (पु०)। कुष्ठौषध। (न०).

भास्कर, (पु०) भासं करोति। भास्+कृ-टच्। जो प्रकाशको कर्ता है। सूर्य। अग्नि (आग)। वीर (बहादुर)। आकका वृक्ष। सिद्धान्तशिरोमणि नाम ग्रन्थके बनानेहारा पण्डित.

भास्करप्रिय, (पु०) ६ त०। सूर्यका पियारा। पद्मरागमणि (चूनि).

भास्वर, (त्रि०) भास्+वरच्। दीप्तियुक्त। चमकनेवाला। सूर्य। दिन। आकका वृक्ष। अग्नि (आग) (पु०).

भास्वत्, (पु०) भास्+अस्ति अर्थे मतुप् "म" को "व" होता है। सूर्य। आकका वृक्ष। और वीर (बहादुर)। चमकनेवाला (त्रि०).

भिक्ष्, लोभ। लालचकरना। सक० मांगना-द्विक०। क्लेश। तक्लिफ देना। अक० भ्वा० आत्म० सेट्। भिक्षते। अभिक्षिष्ट.

भिक्षा, (स्त्री०) भिक्ष्+अ। याञ्चा। मांगना। प्रार्थना करना। भीख.

भिक्षाक, (त्रि०) भिक्ष्+षाकन्। भिक्षाकारक। भीख मांगनेहारा। संन्यासी। स्त्रियां ङीप्। "भिक्षाकी".

भिक्षाटन, (न०) भिक्षायै अटनम्। भिक्षा (भीक) के लिये घूमना.

भिक्षाशिन्, (त्रि०) भिक्षालब्धं अश्नाति। अश्+णिनि। जो भीख पाकर जीता है। मांगनेवाला फकीर। संन्यासी.

भिक्षु, (पु०) भिक्ष्+उ। फकीर। संन्यासी। चौथे आश्रमवाला.

भिक्षुक, (पु० स्त्री०) भिक्ष्+उकञ्। भिक्षोपजीवी। भीखपर जीनेहारा। फकीर। संन्यासी। "भिक्षुकी" (स्त्री०).

भित्त, (न०) भिद्+क्त० नि०। खण्ड। टुकडा। हिस्सह। दीवार.

भित्त, (न०) भिद्+क्त+नि तस्य न नः। भाग। टुकडा। दीवार.

भित्ति, (स्त्री०) भिद्+क्तिन्। तोडना। भिन्न-करना। दीवार.

भित्ति, (स्त्री०) भिद्+क्तिन्। घर आदिकी दीवार। तोडना। विभाग करना। मौका। अवसर.

भिद्, द्विधाकरण। दो टुकडे करना। विशेष करण-जियादा करना। रुधा० उभ० सक० अनिट्। भिनत्ति। भिन्ते। अभिदत्-अभैत्सीत्-अभित्त.

भिदा, (स्त्री०) भिद्+अङ्। विदारण। फाडना द्वैधीकरण। दो टुकडे करना। विशेषकरण। जियादा करना.

भिदुर, (न०) भिद्+कुरच्। वज्र। "इरच्" भिदिरं (यही अर्थ)। प्लक्षवृक्ष। पाकडका दरख्त। तोडनेवाला (त्रि०).

भिन्दिपाल, (पु०) भिदि-फाडना+इन्=भिन्दि-भेदनं पालयति। पाल्+अण्। हाथसे फेंकनेलायक नालीके स्वरूपका अस्त्र (औजार)। हस्तप्रमाण। एक औजार। जो हाथके मापका हो। हाथसे चलानेका तीर.

भिन्न, (पु०) भिद्+क्त। विदारित। फाडदिया गया। मिश्रित। मिलाया गया। सङ्गत। मिलाहुआ। अन्य। और प्रस्फुटित। फूटगया। तोड दिया। जुदा किया.

भिन्नभिन्नात्मन्, (पु०) भिन्नः प्रकारः। प्रकारे द्वित्वम्। तादृश आत्मा यस्य। जिसका स्वरूप जुदा २ हो। चणक। छोले.

भिन्नोदर, (पु०) भिन्नं उदरं यस्य। दूसरी (भिन्न) द्वितीयासे उत्पन्न हुआ। सौतेला भाई.

भिन्नक्रम, (त्रि०) भिन्नः क्रमः येन। नियमसे बाहिर हुआ.

भिन्नगति, (त्रि०) भिन्ना गतिः यस्य। टूटीहुई चालवाला.

भिन्नदर्शिन्, (त्रि०) भिन्नं पश्यति। भेद देखनेवाला। पक्षपाती.

भिन्नदेश, (त्रि०) भिन्नः देशः यस्य। भिन्न २ देशमें रहनेवाला.

भिन्नमर्याद, (त्रि०) भिन्ना मर्यादा येन। उचित नियम (कायदा) को तोडनेवाला.

भिन्नरुचि, (त्रि०) भिन्ना रुचिः यस्य। भिन्न (जुदा) रुचि (स्वाद) वाला.

भिन्नवर्मन्, (त्रि०) भिन्नं मर्म यस्य। मर्म (जोडोंवा स्थान) पर घाव लगाया गया.

भिन्नस्वर, (त्रि०) भिन्नः स्वरः यस्य। भिन्न (जुदा) स्वरवाला। बदली हूई आवाजवाला.

भिल्, भेदन (फाडना) चु० । पक्षे तु० पर० सक० सेट् । भेलयति-ते । भिलति । अबीभिलत्-त । अभेलीत्.

भिल्ल, (पु०) भिल्+लक् । म्लेच्छजातिभेद । एक जंगली कौम । भील । लोधका दरख्त.

भिष्, रोगप्रतीकार-रोगका उपाय करना । पर० सक० सेट् । भेषति । अभेषीत्.

भिषज्, (पु०) भिषति (चिकित्सते) । भिष्+अजिक् । जो रोगका इलाज कर्ता है । वैद्य । हकीम । रोगप्रतीकार । इलाज.

भिस्सटा, (स्त्री०) भिस्सां (अन्नं) टीकते । टीक्+ड-पृ० । दग्धान्न । सडाहुआ अन्न । "भिष्मिटा" "भिस्सिटा" "भिष्मिष्टा" भिष्मिका".

भी, भय-डरना । अक० । भरण-पालना-सक० क्र्यादि० पर० अनिट् । भीनाति-भिनाति । अभैषीत्.

भी, (स्त्री०) भी+क्विप् । भय । डरना । खौफ.

भीति, (स्त्री०) भी+क्तिन् । भय (डर) । कम्प । काँपना । "क्त" भीतः । भययुक्त । डराहुआ.

भीम, (त्रि०) बिभेति अस्मात् । भी+मक् । जिस्से डरता है । भयहेतु । भयका कारण । डरावना । भयानक रस । महादेव । भीमसेन । अम्लवेतस (अंवलतास) (पु०) । दुर्गा (देवी) (स्त्री०) । "भीमा देवीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति" इति चण्डी.

भीमपराक्रम, (त्रि०) भीमः पराक्रमः यस्य । डरावनी शक्तिवाला ।-मः-विष्णु.

भीमसेन, (पु०) युधिष्ठिरका अनुज (छोटा भाई) । मध्यम पाण्डव । एक प्रकारका कर्पूर (कापूर) । कुन्तीके गर्भमें वायुद्वारा उत्पन्न हुआ दूसरा पाण्डव.

भीमैकादशी, (स्त्री०) भीमेनोपास्या एकादशी । शाक० ज्येष्ठके शुक्लपक्षकी एकादशी (जिसे भीमने उपासा).

भीरु, (त्रि०) भी+क्रु । भयशील । डरदेनेवाला डरावना । शतावरी.

भीरुक, (पु०) भी+क्रु-कन् । शृगाल । सियार । गीदड । व्याघ्र । भेडिया । एक प्रकारका इक्षु (गन्ना) । डरावना (त्रि०).

भीषण, (पु०) भीषयते । भी+णिच्+ल्यु-भीषादेशः । डराता है । भयानक रस । खौफनाक (त्रि०).

भीष्म, (पु०) भी+मक्-सुक्च । भयानक रस । भयका कारण (डरावना) (त्रि०) । गंगाके गर्भसे उपजा शन्तनुका पुत्र । अपने नामसे प्रसिद्ध कुरुके वंशमें एक क्षत्रिय (पु०).

भीष्मपञ्चक, (न०) भीष्मेन उपदिष्टं पञ्चकम् । भीष्मसे उपदेश कीहुई पांच तिथियें । कार्तिक (कतक) के शुक्लपक्षकी एकादशीसे ले पांच तिथियें । उन तिथिओंमें करनेलायक एक व्रत.

भीष्माष्टमी, (स्त्री०) ६ त० । भीष्मकी अष्टमी । भीष्मके शरीर छोडनेका दिन माघके शुक्लपक्षकी अष्टमी । (इसलिये इस दिन सब वर्णोंको उसका तर्पण करना चाहिये).

भुक्त, (त्रि०) भुज्+कर्मणि क्त । भक्षित । खायागया । "भावे क्त" भक्षण । खाना (न०) । "भुक्ति" भोजन । भोग । एक कब्जा.

भुक्तसमुज्झित, (त्रि०) पूर्वं भुक्तं पश्चात् समुज्झितं (त्यक्तं) । भोजनोत्तर त्यक्त अन्नादि । भोजन करके छोडा गया अन्न आदि.

भुक्तिप्रद, (पु०) भुक्तिं (भोगं) भोजनं वा प्रददाति (स्वल्पायासभक्ष्यत्वात्) । जो भोग वा भोजनको देता है (थोडे यत्नसे खायाजाता है) । मुद्ग (मूंग).

भुग्न, (त्रि०) भुज्-मोटन-झुकना । क्त । रोगआदिसे कुटिल कियागया । झुकगया । कुवडा होगया । कुवडा.

भुज्, भक्षण-खाना । आ० । पालना । पर० । सक० रुधा० । अनिट् । भुक्तं अन्नं । अभैक्षीत् । भूमिं भुनक्ति (पालयति) । "दिवं मरुत्वानिव भोक्ष्यते महीं" इति रघुः । भुक्तः.

भुज, (पु० स्त्री०) भुज्यतेऽनेन । भुज्+घञर्थे क । बाहु । भुजा । कर । हाथ । लीलावतीमें प्रसिद्ध तीन वा चार कोनवाला क्षेत्रका रेखाविशेष । बाजू । हाथीकी सूंड । वृक्षकी शाखा.

भुजग, (पु०) भुज्-वक्रण-टेढा होना । क । भुजः । कुटिलीभवन् सन् गच्छति । गम्+ड । तिरछा होताहुआ चलता है । सर्प । सांप । और आश्लेषा नक्षत्र.

भुजगान्तक, (पु०) ६ त० । साँपका नाश करनेहारा । गरुड.

भुजगाशन, (पु०) भुजगान् अश्नाति । अश+ल्यु । साँपोंको खाता है । गरुड । "भुजगभक्षक".

भुजङ्ग, (पु०) भुजः सन् गच्छति । गम्+खच्-डिच्च । कुटिल होताहुआ जाताहै । सर्प । साँप । जार । आश्लेषानक्षत्र.

भुजङ्गप्रयात, (न०) बारह अक्षरोंके पादवाला एक छन्द.

भुजङ्गम, (पु०) भुजः (कुटलीभवन् सन्) गच्छति । गम्+खच् मुम् । जो तिरच्छा चलता है । सर्प । सांप । आश्लेषा नक्षत्र (तारा) । सीसक (सीसा) (न०).

भुजदण्ड, (पु०) भुजः दण्ड इव दण्डः । डण्डेके समान भुजा (बां).

भुजबन्धनम्, (न०) भुजयोः बंधनं । भुजओंका बांधना । गले मिलना । भुजोंमें आलिंगन करना.

भुजबल-वीर्य, (न०) भुजयोः बलं । भुजाओंका बल (जोर) । बाहुबल.

भुजशिरस्, (पु०) ६ त० । बाजूका सिरा । स्कन्धदेश । कंधा.

भुजान्तर, (न०) भुजयोरन्तरं (मध्यं) । बाजुओंका बीच । क्रोड । कुच्छड़ । गोद.

भुजिष्य, (पु०) भुज्+किष्यन् । दास । रोग । स्वतन्त्र । खुला । हस्तसूत्र । हाथका सूत (डोरा) । दासी (गोली) और वेश्या (कंचनी) (स्त्री).

भुवन, (न०) भवति अत्र । भू+क्युन् । होता है इसमें जगत् । दुनिआँ । लोग । आकाश । आस्मान । १४ की संख्या.

भुवनकोष, (पु०) भुवनस्य कोष इव । मानों संसारका खजाना है । भूगोल । पृथिवीका गोला । ज्योतिष्का एक ग्रन्थ.

भुवनेश–ईश्वरः, (पु०) भुवनस्य ईशः । पृथिवीका स्वामी । राजा.

भुवनत्रय, (न०) भुवनानां त्रयं । तीनों भुवन (स्वर्ग, मर्त्य, पाताल).

भुवनपावनी, (स्त्री०) भुवनं पावयति । संसारको पवित्र करनेवाली । श्रीगंगाजीका नाम.

भुवनभर्तृ, (पु०) भुवनं बिभर्ति । पृथिवीको पालनेवाला (आश्रय).

भुवनशासिन्, (त्रि०) भुवनं शास्ति । पृथिवीपर आज्ञा चलानेवाला.

भुवर्, (अव्य०) आकाशस्वरूप दूसरा लोक.

भू, प्राप्ति । पाना । चु० आ० सक० सेट् । भावयते । अबीभवत्.

भू, पाना । भ्वा० उभ० सक० सेट् । भवति-ते । अभूत्-अभविष्ट.

भू, शुद्धि साफ करना । अक० । सोचना और मिलाना । सक० चुरा० उभ० सेट् । भावयति-ते । अबीभवत्-त.

भू, सत्ता होना । भ्वा० पर० अक० सेट् । भवति । अभूत्.

भू, (स्त्री०) भू+क्विप् । पृथिवी । जमीन । एककी संख्या । स्थानमात्र । और यज्ञकी अग्नि (आग).

भूकम्प, (पु०) भुवः कम्पः । पृथिवीका कांपना । भूचाल.

भूकेश, (पु०) भुवः (पृथिव्याः) केश इव । पृथिवीका मानो बाल है । वट । बड और शैवल । सेवाल.

भूगोल, (पु०) भूर्गोल इव । गोलस्वरूपवाला पृथिवीका मण्डल (दायरा) । "मध्ये समन्तादण्डस्य भूगोलो व्योम्नि तिष्ठति । बिभ्राणः परमां शक्तिं ब्रह्मणो धारणात्मिकां" इति सूर्यसिद्धान्तः.

भूच्छाया, (स्त्री०) भुवश्छाया । सूर्यकिरणसम्पर्कवशात् पृथिवीकी छाया (सूर्यकी किरणोंके सम्बन्धसे उत्पन्न हुआ राहुग्रह नामी अंधकार) । तमस्.

भूजम्बू, (स्त्री०) भुवो जम्बूरिव (स्वादुत्वात्) । मानों पृथिवीका जामन है । गोधूम । गेहूं । विकङ्कतफल.

भूत, (न०) भू+क्त । न्याय । मुनासिब । उचित । पृथिवी, जल, तेज, वायु, और आकाश रूप, गंध आदि विशेष गुणवाले द्रव्य । यथार्थ । ठीक । वास्तविक । असली । और तत्त्वका अनुसन्धान । पिशाच आदि । कुमार । योगिओंका राजा । कृष्णपक्ष (पु०) । अतीत (बीतगया) । सदृश । सत्य (त्रि०) । कृष्णपक्षकी चतुर्दशी । स्त्रियां टाप्.

भूतघ्न, (पु०) भूतं हन्ति । हन्+ठक् । भूर्जपत्र (भोजपत्र) । इसके धारण करनेसे बालकोंके ग्रह भूत आदि भागजाते हैं । "भूतं (प्राकृतं गन्धं) हन्ति (अधः करोति)" जो असली गंधका तिरस्कार कर्ता है । लशुन-लसुन । और उष्ट्र (ऊंठ) । भूतनाशक (भूतोंके नाश करनेहारा) (त्रि०) । तुलसी (स्त्री०) ङीप्.

भूतचतुर्दशी, (स्त्री०) भूतप्रिया चतुर्दशी (तदुद्देशेन तस्यां दीपदानात्) । यमकी पियारी चतुर्दशी । उसके उद्देशसे उसमें दीपक दिया जाता है । आश्विन (अस्सु) के कृष्णक्षकी चतुर्दशी । यमचतुर्दशी । कार्तिकशुदि चौदस । कार्तिककृष्णचतुर्दशी.

भूतधात्री, (स्त्री०) भूतानि (जन्तून्) धारयति । धा+तृच् ङीप् । जो जीवोंको धारण कर्ती है । पृथिवी । जमीन.

भूतनाथ, (पु०) ६ त० । भूतोंका नाथ । शिवजी । और बटुकभैरव । "भैरवो भूतनाथश्च" इति बटुकस्तोत्रम्.

भूतनाशन, (न०) भूतानि नाशयति । नश्+णिच्+ल्यु० । जो भूतोंको नाश कर्ता है । रुद्राक्ष । सर्षप । (भूतोंको नाश करनेहारा रुद्राक्ष) । सरसों । भल्लातक (पु०).

भूतपक्ष, (पु०) भूतप्रियः पक्षः (अंधकारवत्त्वात्) । अंधेरा होनेसे पक्ष भूतोंका पियारा है । कृष्णपक्ष.

भूतभावन, (पु०) भूतानि (पृथिव्यादीनि भावयति (जनयति) भू+णिच्+ल्यु । जो पृथिवी आदिको उपजाता है । "भूता (सत्या यथार्था) भावना यस्य" । जिसकी भावना सची वा ठीक है (विष्णु). और बटुकभैरव । उनका स्तोत्र.

भूतयज्ञ, (पु०) भूतानि (प्राणिनो वायसादीन् उद्दिश्य) यज्ञः (बलिः) । कौवा आदि जीवोंके लिये बलि देना । प्रतिदिन गृहस्थके करनेयोग्य पाँच यज्ञोंमेंसे बलि (वैश्वदेवका कर्म) । "भूतेभ्यो बलिहरणं भूतयज्ञः" इति स्मृतिः.

भूतल, (न०) भूरेव तलं । पृथिवी । ६ त० । पाताल । पृथिवीका तल.

भूतशुद्धि, (स्त्री०) भूतानां (देहारम्भकपृथिव्यादीनां शुद्धिर्भावना (विशेषात् शोधनम्) । तन्त्रआदिमें प्रसिद्ध देहके आरम्भ करनेहारे चौवीस तत्त्वोंका भावनाविशेष संस्कारसे देवरूप बनाना । पूजा आदिमें बीज मन्त्रसे शरीरका शोधन करना । शरीरकी सफाई.

भूतहर, (पु०) भूतानि हरति (अपसारयति) ह्र+अच् । भूतोंको भगा देता है । गुग्गुल । गुग्गल.

भूतात्मन्, (पु०) भूतानि (पृथिव्यादीनि पंचद्रव्याणि) स्वरूप है । परब्रह्म । "सर्वं खल्विदं ब्रह्म तज्जलान्" इति श्रुतिः । सब भूतोंका स्वरूप हिरण्यगर्भ । विष्णु । बटुक-भैरव । और उनका स्तोत्र.

भूतारि, (पु०) ६ त० । भूतोंका शत्रु । हींग । इसके गंधसे भूत भाग जाते हैं.

भूतावास, (पु०) भूतानां (प्राणिनां) आवासः (अधिष्ठानत्वात्) । (आधार-आसरा होनेसे) प्राणिओंकी निवासकी जगह) । विष्णु । और विभीतक वृक्ष । बहेडेका दरख्त.

भूति, (स्त्री०) भू+क्तिन् । भवन । होना । अणिमा आदि आठ प्रकारका ऐश्वर्य (सम्पदा) । शिवजीके अङ्गोंका भस्म । भूतृण । सम्पत्ति । जाति । जन्म । और वृद्धिनाम औषध.

भूदार, (पु०) भुवं दृणाति (खनति) मुस्तार्थं । दृ+अण् । मोथे आदिके लिये जो पृथिवीको खोदता है । शूकर (सूअर).

भूदेव, (पु०) भुवि देव इव । पृथिवीपर मानो देवता है । विप्र (ब्राह्मण).

भूधर, (पु०) भुवं धरति । धृ+अच् । पृथिवीको धारण कर्ता है । पर्वत । पहाड.

भूप, (पु०) भुवं पाति । पा+क । भूमिपाल । पृथिवीको पालन करनेहारा । "भूमिप" आदि । राजा.

भूपाल, (पु०) भुवं पालयति । पाल्+अण् । भूपति । पृथिवीको पालता है । राजा । बादशाह.

भूभुज, (पु०) भुवं भुङ्क्ते भुनक्ति (पालयति वा) भुज्+क्विप् । पृथिवीको खाता वा पालता है । भूपाल । राजा.

भूभृत्, (पु०) भुवं बिभर्ति (धारयति, पालयति वा) भृ+क्विप् । पृथिवीको धारण कर्ता वा पालता है । पर्वत । पहाड । और भूपाल । राजा.

भूमन्, (पु०) बहोर्भावः । इमनिच् । नि० । "बहु" को "भू" का आदेश होता है । बहुत्व । बहुतायत । बहुतपन.

भूमि-मी, (स्त्री०) भवन्ति अस्मिन् भूतानि । भू+मिक् वा ङीप् । पृथिवी (जहां जीव होते हैं) । स्थानमात्र । जिह्वा । जीभ । योगशास्त्रमें योगिओंकी चित्तकी एक अवस्था । एकही संख्या.

भूमिका, (स्त्री०) भूमिरिव कायति । कै+क । रचना पृथिवी । जमीन । कथाका सार । अन्यरूपसे अन्यका प्रवेश । छलनेका भेस । दिल (मन) की अवस्था बीवाचह । सीढी । घरकी फरश । कक्षा । दर्जा.

भूमिज, (पु०) भूमेर्जायते । जन्+ड । पृथिवीसे उपजता है । मङ्गल नामी ग्रह । नरक नामी दैत्य । भूमिकदम्ब । जो पृथिवीमें उपजता है (त्रि०).

भूमिजीविन्, (त्रि०) भूम्या जीवति । पृथिवीकी आय (आमदन) पर जीनेवाला.

भूमिदेव, (पु०) भूमौ देवः । पृथिवीपर देवता । ब्राह्मण.

भूमिपुत्र, (पु०) भूमेः पुत्रः । भूमीका पुत्र (बेटा) । मंगलग्रह.

भूमि(मी)रुह, (पु०) भूम्यां भूमौ वा रोहति । रुह् क । जो पृथिवीपर उगता है । वृक्ष । दरख्त.

भूमिष्ठ, (पु०) भूमौ तिष्ठति । स्था+क पृथिवीमें ठहरता है । भूपृष्ठस्थ । पृथिवीपर रक्खाहुआ । झुकाहुआ.

भूमिस्पृश्, (पु०) भूमिं स्पृशति । स्पृश्+क्विप् । वैश्य । बनिआँ । मनुष्य । एक प्रकारका चोर । लंगडा । और अंधा.

भूमीन्द्र, (पु०) भूमौ इन्द्र इव । पृथिवीपर मानो इन्द्र है । नृप । राजा.

भूयस्, (अव्य०) पुनः । फिर । बहुतही (बहुतर) । ईयस् (त्रि०).

भूयिष्ठ, (त्रि०) अतिशयेन बहुः+इष्ठन् । नि० । भ्वादेश । बहुतही.

भूयोभूयस्, (अव्य०) पुनः पुनः । बार बार.

भूयोविद्य, (त्रि०) भूयः विद्या यस्य । बहुत विद्या (इल्म)-वाला । बहुशिक्षित.

भूरि, (पु०) भू+क्रिन् । विष्णु । शिव । इन्द्र । स्वर्ण । (सोना) (न०) । प्रचुर । बहुत (त्रि०).

भूरिगम, (पु०) भूरि (भारयुक्तत्वेऽपि बहु) गच्छति । गम्+अच् । बोझा होनेपर भी बहुत जाता है । गर्दभ । गधा.

भूरिमाय, (पु०) भूरयः माया यस्य । बहुत छलवाला । शृगाल । सियार । गीदड.

भूरिशस्, (अव्य०) भूरि+शस् । बहुशः । बहुतवार.

भूरिश्रवस्, (पु०) चन्द्रवंशमें सोमदत्तका पुत्र । एक राजा.

भूर्ज, (पु०) भूर्ज+अच् । ७ त० । अपने नामसे प्रसिद्ध वल्क प्रधान (बहुत छिलकेवाला) वृक्ष.

भूर्जपत्र, (पु०) भुवि ऊर्जं पत्रं यस्य । पृथिवीपर जिसका पत्ता बलवाला है । अपने नामक वृक्ष.

भूर्, (पु०) भू+रुक् । आकाशलोकसे नीचेका वह स्थान । जहां पाँवसे चल सक्ते हैं.

भूवल्लभ, (पु०) भुवः वल्लभः । पृथिवीका पिआरा । राजा । पातशाह । सम्राट्.

भूष्, मण्डन सजाना । चु० उभ० पक्षे भ्वा+पर० सक० सेट् । भूषयति-ते । भूषति.

भूषण, (न०) भूष्यतेऽनेन । भूष्+करणे ल्युट् । जिस्से सजाया जाता है । अलंकार । जेवर । गहना । मुकुट । ताज.

भूषा, (स्त्री०) भूष्+अ । मण्डनक्रिया । सजावट.

भूषित, (त्रि०) भूष्+क्त । अलंकृत । सजाया गया । सजाहुआ.

भूष्णु, (त्रि०) भू+ग्स्नु । भवनशील । होनेवाला । होनहार.

भूस्वर्ग, (पु०) भुवः स्वर्गः । पृथिवीका स्वर्ग (बहिश्त) । सुमेरुपर्वत.

भृ, भरण-पालना । भ्वा० उभ० सक० अनिट् । भरति-ते । अभार्षीत्.

भृ, धारण करना । पोषण पालना । जु० उभ० सक० अनिट् । बिभर्ति । बिभृते । अभार्षीत् । अभृत.

भृकुंस-श, (पु०) । भ्रुवा कुंसा (शा) इङ्गितज्ञापनं यस्य । पृ० । "भ्रु" को सम्प्रसारण होता है । जो भौंसे अपने हृदयकी चेष्टाको प्रकट कर्ता है । स्त्रीका वेश धारण करनेहारा नट.

भृकुटि-टी, (स्त्री०) भ्रुवः कुटिः (भङ्गि) सम्प्रसारणम् वा ङीप् । भौंका तिर्च्छा करना । भ्रूभङ्ग । भौंका चढाना.

भृगु, (पु०) भ्रस्ज्+कु-पृ । एक मुनि । शिव । शुक्रग्रह । पर्वतसानु । पहाडकी चोटी । जमदग्नि । और ऊंची जगह । भृगोर्गोत्रापत्यं+अण् (बहुवचनमें लोप हो जाता है) । भृगुके वंशका (ब० व०).

भृगु, (पु०)एक ऋषिका नाम । भृगुवंशके चलानेवाला । अग्निकी लाटके साथ उत्पन्न होनेसे इसका नाम भृगु हुआ.

भृगुतनय-नन्दन, (पु०) भृगोः तनयः । भृगुका पुत्र । शुक्राचार्य । परशुराम.

भृगुपति, भृगूणां (भार्गववंशस्य) पतिः । भृगुके वंशका पति । परशुराम । उनकी इसने हैहयपति (कार्तवीर्य)-से रक्षा की थी.

भृगुसुत, (पु०) ६ त० । परशुराम । और शुक्राचार्य.

भृङ्ग, (पु०) भृ+गन् तुट्च । भ्रमर । भौंरा । कलिङ्गपक्षी । भृङ्गराज । जार । यार । भृङ्गार (सोने आदिका पात्र) और भृङ्गरोल । अवरक (न०).

भृङ्ग, (पु०) भृ+गन् कित्+तुट्च । बडी काली मक्खी । एक प्रकारका कीडा । बडा काला भौंरा.

भृङ्गरिट-टि, (पु०) भृङ्ग इव रटति+अच् । इन् वा पृ० । अत इत्वम् । शिवपार्श्वचरभेद । शिवजीके पास रहनेवालोंमेंसे एक शिवजीका द्वारपाल । शिवजीका दरबान । "रीट".

भृङ्गाभीष्ट, (पु०) अभि+इष्+क्त । ६ त० । भौंरेका पियारा । आमका वृक्ष.

भृङ्गि, (पु०) भृ+गिक्-तुटच् । शिवजीके पास रहनेवालोंमेंसे एक.

भृज्, भर्जन-भूजना । भ्वा० आ० सक० सेट् । भर्जते । अभर्जिष्ट । भृक्तः.

भृतक, (त्रि०) भृ+क्त । स्वार्थे कन् । वेतनद्वारा कर्मकर । मजदूरी लेकर काम करनेहारा । मजदूर । "भृतकाध्यापको यश्च" इति मनुः.

भृति, (स्त्री०) भृ+क्तिन् । भरण । पोषण । पालना । "करणे क्तिन्" वेतन । मजदूरी । और मूल्य । मोल.

भृतिभुज्, (त्रि०) भृतिं (वेतनं) भुङ्क्ते । भुज्+क्विप् । वेतनोपजीवी कर्मकर । मजदूरी लेकर काम करनेहारा मजदूर.

भृत्य, (पु०) भृ+क्यप्-तुक्च । दास । गुलाम । भरणीय (पालन करने लायक) (त्रि०) । "भावे क्यप्" पालना (स्त्री०) टाप् "भृत्या".

भृत्याध्यापन, (न०) भृत्येन अध्यापनम् । नौकर बनके पढाना । फीस लेकर वेद पढाना.

भृत्यवर्ग, (पु०). भृत्यानां वर्गः । बहुतसे भृत्य । बहुत नौकर । नौकरोंकी जमात.

भृ(भ्र)मि, (पु०) भ्रम्+इन् । पृ० वा सम्प्रसारणम् । घूर्णा । वायुभेद । बावरोला । पानी आदिका घूमना । घूंवर.

भृश्, अधःपतन । नीचे गिरना । दिवा० पर० अक० सेट् । भृश्यति । अभृशत्-अभर्शीत् । क्त्वा वेट्.

भृश, (न०) भृश्+क । अतिशय । जियादा । बहुत । उस-वाला (त्रि०).

भृष्ट, (त्रि०) भ्रस्ज+क्त । जलोपसेक (पानी सींचने)के विना रेत और आगके संयोगसे पकाहुआ । भुनाहुआ.

भॄ, भर्जन-भूंजना-भर्त्सन-झिडकना-भरण-पालना । क्र्या० पर० सक० सेट् । भृणाति । अभारीत्.

भेक, (पु०) भी+कन् । मेंडक । डड्डु । और मेघ(बादल).

भेड, (पु०) भी+ड । मेष । मेंढा । मेडा । एक ऋषिका नाम.

भेत्तृ, (त्रि०) भिद्+तृच् । फाडनेवाला । तोडनेवाला.

भेद, (पु०) भिद्+घञ् । पृथक्करण । जुदा करना । फरक । शत्रु वश करनेके चार उपायोंमेंसे तीसरा । मेलको तोड डालना । फाडना । न्यायमतमें अन्योन्याभाव (एकका दूसरेमें न होना) । जैसे घटसे पटका भेद है अर्थात् घटमें पट नहीं रहता.

भेदक, (त्रि०) भिद्+ण्वुल् । खाली करनेवाला । विदारक । फाडनेहारा । भेद करनेहारा । जुदा करनेहारा । मैत्र्यनाशक.

भेददर्शिन्, दृष्टि–बुद्धि, (त्रि०) भेदं पश्यति, भेदस्य दृष्टिः यस्य वा । भेदको देखनेवाला । भेदकी नजरवाला । भेदकी बुद्धिवाला । संसारको परमात्मासे भिन्न चिन्तन करनेवाला.

भेदन, (त्रि०) भेदयति । भिद्+णिच्+ल्यु । फाडनेवाला । काटनेवाला । "ल्युट्" विरेचन । दस्तलेना । जुलाव और फर्क । हींग । और अंबलतास (पु० न०) "भिद्+भावे ल्युट् । विदारण । फाडना.

भेदवादिन्, (पु०) भेदं वदति । द्वैततत्त्वको माने (स्वीकार)-हारा.

भेदित, (त्रि०) भिद्+णिच्+क्त । विदारित । फाडागया और भिन्न (जुदाहुआ).

भेद्य, (त्रि०) भिद्+ण्यत् । विदार्य । फाडनेलायक । विशेष्य (जुदा करनेलायक) । "त्रिष्वेषां भेद्यगामि यत्" इत्यमरः.

भेरि–री, (स्त्री०) भी+क्रिं । नि० वा ङीप् । बडा नगारा । ढोल.

भेल, (पु०) भी+रन् । "र" को "ल" होता है । नदी-आदि तरनेके लिये प्लव (भेला) । पूला । "स्वार्थे कन्" यही अर्थ.

भेष्, भय-डरना । भ्वा० उभ० अक० सेट् । भेषति-ते.

भेषज, (न०) भेष्+घञ् । भेषं (रोगभयं) जयति । जि+ड । जो रोगके डरको जीतलेताहै । औषध । दवाई.

भेषजाङ्ग, (न०) ६ त० । दवाईका अंग । दवाईके पीछे पीनेलायक वस्तु (चीज) । अनुपान.

भैक्ष, (न०) भिक्षैव-तत्समूहो वा+अण् । भिक्षा । भीख । और भीखका समूह.

भैक्षचर्या, (स्त्री०) चर्+भावे क्यप् । ६ त० । भीख मांगना । भिक्षाक्रियाकरण.

भैक्ष्य, (न०) भिक्षाणां समूहः+ष्यञ् । भीखका समूह.

भैमी, (स्त्री०) भीमेन उपासिता । तस्येदं वा अण्-ङीप् । ज्येष्ठके शुक्लपक्षकी एकादशी । भीमराजाकी लडकी । दमयन्ती.

भैरव, (न०) भीरोरिदं+अण् । भय । डर । उसवाला । (त्रि०) । नाटकमें भयानक रस । भयका साधन (त्रि०) । शंकर । उसका अवतारविशेष । रागभेद (पु०).

भैषज्य, (न०) भेषज एव भिषजः कर्म वा+ष्यञ् । औषध । दवाई.

भो, (अव्य०) सम्बोधन । हे.

भोग, (पु०) भुज+कर्मादौ घञ् । सुख दुःख आदिका अनुभव (पहिचानना) । सांपका फण । उसका शरीर । धन । पालन । और आहार (खाना) । "अच्" सर्प । साँप । "आधारे घञ्" शरीर । और मान.

भोगकर, (त्रि०) भोगं करोति । भोग (खुशी) देनेवाला । भुगानेवाला.

भोगगुच्छ, (न०) भोगाय गुच्छं । वेश्याको दीगई मजूरी (फीस).

भोगगृह, (न०) भोगस्य गृहं । भोगका घर । स्त्रियोंका कमरा । जनानखाना । अंतःपुर । जनाना.

भोगतृष्णा, (स्त्री०) भोगस्य तृष्णा । सांसारिक भोगकी लालसा (इच्छा) (भाप) । ज्योतिष्में ग्रहोंका उस २ राशिमें ठहरना । यथेष्ट विनियोग । ठीक लगाव (धनका बाँटना).

भोगदेह, (पु०) भुज्यते सुखदुःखादिकं अत्र । भुज्+घञ् । कर्म० । जिसमें सुख दुःख भोगा जाता है । पुण्य और पापका फल भोगनेके लिये शरीर । "प्रेतदेहं परित्यज्य भोगदेहं प्रपद्यते" इति स्मृतिः.

भोगभूमि, (स्त्री०) भोगस्यैव भूमिः (स्थानम्) । भोगकी जगह । भारतवर्ष (हिन्दुस्थान) से भिन्न वर्ष । वहां केवल भोग होता है । कर्म नहिं.

भोगभृतक, (पु०) भोगाय भृतकः । जीविकाके लिये काम करनेवाला सेवक.

भोगवती, (स्त्री०) भोगः (सर्पशरीरं) भूम्ना अस्ति अस्यां । मतुप् "म" को "व" होता है । जहां बहुतसे सांपके शरीर हैं । पातालकी गंगा । "भोगवती च पाताले" इति पुराणम्.

भोगस्थान, (न०) भोगस्य स्थानम् । भोगका स्थान (जगह) शरीर । स्त्रियोंका कमरा.

भोगिन्, (पु०) भोग+अस्ति अर्थे इनि । सर्प । सांप । राजा । ग्रामाध्यक्ष (गाँवका मालिक) । और नापित । नाई । भोगवाला (त्रि०) । "भोगवत्" (सर्प) । भोगनेवाला (त्रि०).

भोगिवल्लभ, (पु०) ६ त० । चन्दन.

भोगीन्द्र, (पु०) भोगिनां इन्द्रः (स्वामित्वात्) भोगी इन्द्र इव वा । अनन्तदेव । और वासुकी । भोगिओंका राजा.

भोग्य, (न०) भुज्+ण्यत् । कुत्वम् । धन । और धान्य । भोगनेलायक औरत (स्त्री).

भोज, (पु०) भुज्+अच् । अपने नामसे प्रसिद्ध देश । धारापुरका राजा । भोजराज । मालवाका बादशाह.

भोजक, (त्रि०) भुज्+णिच्+ण्वुल्+अक । खुलानेवाला । पालनेवाला.

भोजन, (न०) भुज्+ल्युट् । कठिन (सख्त) द्रव्यका गलेकी बिलके नीचे लगाना । खाना । विष्णुका नाम (पु०).

भोजनकाल, (पु०) भोजनस्य कालः । भोजनका समय । खाना । खानेकी वेला.

भोजनत्याग, (पु०) भोजनस्य त्यागः । भोजनका छोडना । व्रत रखना । रोजा रखना.

भोजनभूमि, (स्त्री०) भोजनस्य भूमिः । भोजनस्थान । भोजनशाला । खानेका कमरा.

भोजनव्यग्र, (त्रि०) भोजने व्यग्रः । भोजन (खाने) में लगा हुआ.

भोजनव्यय, (पु०) भोजनस्य व्ययः । भोजनका व्यय (अखराजात खर्च).

भोजनीय, (त्रि०) भुज्+अनीयर् । खानेयोग्य । भक्षणीय । खानेलायक.

भोजयितृ, (त्रि०) भुज्+णिच्+तृच् । खुलानेवाला । पालनेवाला.

भोजिन्, (त्रि०) भुज्+णिनि+इन् (समासके अन्तमें आताहै) खानेवाला । पालनेवाला.

भोज्य, (त्रि०) भुज्+ण्यत् । भक्षणीय द्रव्यमात्र । खानेकी कोई चीज.

भोटाङ्ग, (पु०) भोटान । एक देशका नाम.

भौतिक, (त्रि०) भूतानि (पृथिव्यादीनि-पिशाचान् वा अधिकृत्य जातानि) । भूत+ठक् । पृथिवी आदि वा पिशाचोंसे आयेहुए उपद्रव । व्याधि (बीमारी) आदि.

भौम, (त्रि०)-मी (स्त्री०) भूमेरपत्यं तस्या इदं वा+अण् । पृथिवीसम्बन्धी । पृथिवीका । जो पृथिवीपर हो । पृथिवीका बनाहुआ ।-मः । मंगलग्रह । तारकनामी दैत्य । पानी । रौशनी । आकाश । अत्रिऋषिका नाम (पु०) -मी । जनककी कन्या । सीता (स्त्री०).

भौमरत्न, (न०) भौमप्रियं रत्नं । शाक० । मंगलका पियारा रत्न । प्रवाल । मूंगा.

भौमिक, (त्रि०) भूमौ अधिकृतः+ठक् । भूमिपर अधिकार दियागया । पृथिवीपर जीनेहारा । जिमीदार । भूम्यधिकारी.

भौरिक, (त्रि०) भूरिणि (स्वर्णे) अधिकृतः+ठन् । स्वगर्णाध्यक्ष । राजाके खजानेमें सोनेपर अधिकार रखनेहारा । खजानेका अधिकारी । कोशाध्यक्ष । खजानची.

भ्यस्, भय-डरना । भ्वा० आ० अक० सेट् । भ्यसते । अभ्यसिष्ट.

भ्रण्, शब्द करना । भ्वा० पर० सक० सेट् । भ्रणति । अभ्राणीत्-अभ्रणीत्.

भ्रकुंश-स, (पु०) भ्रुवा कुं(शा)सा यस्य । पृ० नि० । स्त्रीका वेष (भेस) धारण करके नाचनेहारा नट.

भ्रकुटि-टी, (स्त्री०) । भ्रुवः कुटिः (भंगः) पृ० वा ङीप् । भ्रूभङ्ग । भौंका चढाना.

भ्रम्, चलना । भ्वा० पर० सक० सेट् । भ्रमति । अभ्रमत्-अभ्रमीत्.

भ्रम्, चलना-घूमना । दिवा० पर० सक० सेट् । भ्राम्यति-अभ्रमीत्.

भ्रम, (पु०) भ्रम्+घञ् । मिथ्याज्ञान । झूठी समज । और स्वरूपसे स्थित पदार्थका किसी औरही स्वरूपसे जानना । जलनिर्गमस्थान । पानीके निकलनेकी जगह । पानीका झरना । कुन्द (फूल) । भ्रमण (घूमना).

भ्रमण, (न०) भ्रम्+ल्युट्+अन । घूमना । चक्कर लगाना । इधर उधर टहलना.

भ्रमर, (पु०) भ्रम्+करन् । मधुकर । भौंरा.

भ्रमरक, (पु०) भ्रमर इव कायति । कै+क । माथेपर लटक रही भौंरेके समान चूर्णकुन्तल (जुल्फें).

भ्रमराभिलीन, (त्रि०) भ्रमरैः अभिलीनः । भौरोंसे घिरहुआ (व्याप्त) । भ्रमरोंसे आक्रान्त.

भ्रमरकरण्डक, (पु०) भ्रमराणां करण्डकः । भौंरोंका संदूक । भौंरोंकी भरीहुई छोटीसी संदूकडी (चारोंके पास होती है प्रकाश (रोशनी) को बुझानेके लिये भौंरों (मक्खिओं) को छोड देते हैं.

भ्रमरबाधा, (स्त्री०) भ्रमराणां बाधा । भ्रमरोंकी बाधा (तकलीफ).

भ्रमरविलसित, (न०) भ्रमराणां विलसितम् । भ्रमरों-भौंरोंकी खेल । एक प्रकारका छन्द.

भ्रश्, अधःपतन । नीचे गिरना । दिवा० पर० सक० सेट् । भ्रश्यति । अभ्राशीत्-अभ्रशीत् । क्त्वा वेट्.

भ्रष्ट, (त्रि०) भ्रश्+क्त । च्युत । गिरपडा । अधःपतित । दुष्ट । लुच्चा.

भ्रस्ज्, पाक (पकाना) । तु० उ० सक० अनिट् । भृज्जति । अभ्राक्षीत्.

भ्राज्, दीप्ति-चमकना । भ्वा० आ० अक० सेट् । भ्राजते । अभ्राजिष्ट.

भ्राजिष्णु, (त्रि०) भ्राज्+इष्णुच् । दीप्तिशील । चमकनेवाला.

भ्रातृ, (पु०) भ्राज्+तृच् । पृ० । एक पितासे हुआ । भाई । सगाभाई.

भ्रातृगन्धि-गन्धिक, (त्रि०) भ्रातुः गन्धः यत्र ब० स । भाईकी गंधवाला । नाम मात्र भाईवाला (वास्तविक भाईका धर्म छोडनेवाला भाई).

भ्रातृज, (पु०) भ्रातुर्जायते । जन्+ड । भ्रातुष्पुत्रः । भाईका लडका । भतीजा । उसकी लडकी (भतीजी) (स्त्री०).

भ्रातृजाया, (स्त्री०) भ्रातुः जाया । भाईकी स्त्री । भरजाई.

भ्रातृद्वितीया, (स्त्री०) कार्तिकके शुक्लपक्षकी द्वितीया । भाईदूज । इसे यमद्वितीया भी कहते हैं.

भ्रातृव्य, (पु०) भ्रातुः पुत्रः । भ्रातृ+व्यत् । भाईका लडका । और शत्रु (दुश्मन).

भ्रातृत्व, (न०) भ्रातृ+त्व । भ्रातुर्भावः । भाईपन । भाईचारा.

भ्रातृश्वशुर, (पु०) भ्रातापि (पत्युर्ज्येष्ठभ्रातापि) श्वशुरस्थानीयः । पितृतुल्यत्वात् । स्वामीका बडा भाई (पिताके समान होनेसे वह भी ससुर माना जाता है).

भ्रात्रीय, (पु०) भ्रातुः अपत्यं, इदं वा छ । भ्रातुष्पुत्रः । भाईका लडका । भाईका (भ्रातृसम्बन्धी) (त्रि०).

भ्रान्त, (न०) भ्रम्+भावे क्त । भ्रमण । घूमना । "कर्तरि क्त" (भूलाहुआ) मिथ्या ज्ञानवाला । घूमनेवाला (त्रि०).

भ्रान्ति, (स्त्री०) भ्रम्+क्तिन् । भ्रमण । घूमना । अयथार्थज्ञान । झूठी समझ.

भ्रान्तिमत्, (भ्रान्तिवाला) अलंकारमें अर्थालंकारभेद.

भ्राम, (पु०) भ्रम्+अण् । इधर उधर घूमना । मोह । भ्रम (गल्ती) भूल । चूक.

भ्रामक, (पु०) भ्रामयति । भ्रम्+ण्वुल् । श्रृगाल । गीदड । सियार । घुमानेहारा (त्रि०) । (भुलानेवाला).

भ्रामर, (न०) भ्रमरेण सम्पादितं, अस्येदं वा+अण् । भौंरेने बनाया । मधु । शहत । भ्रमरसम्बन्धि (भौंरेका) (त्रि०) । अयस्कान्त (चुम्बक पत्थर) (पु०).

भ्राष्ट्र, (न०) भ्रष्टुः इदं+अण् । धास्थान (आकाश) । भर्जनपात्र (भुनेका पात्र-कढाही) (पु० न०).

भ्रु(भ्रू)कुंस, (पु०) भ्रुवः कुंसा यस्य । पृ० वा ह्रस्वः । स्त्रीका वेष बनाके नाचने-वाला पुरुष.

भ्रु(भ्रू)कुटि(टी), (स्त्री०) ६ त० । पृ० वा ह्रस्वः । क्रोधसे भौं चढाना.

भ्रू, (स्त्री०) भ्रम्+डू । नयनोर्ध्वरोमराजी । आँखोंके ऊपर रोम (बालों) की कतार । भौं । भवें.

भ्रूक्षेप, (पु०) ६ त० । भौंका चढाना । संकेत (इशारह)-को जतानेके लिये भवोंका टेढा चलाना । भौंका फेंकना.

भ्रूण्, आशा-उम्मीद करना । निश्चय करना । चाहना और डरना । चु० आत्म० सक० सेट् । भ्रूणयते.

भ्रूण, (पु०) भ्रूण्+घञ् । स्त्रियोंका गर्भ । और बालक.

भ्रूणघ्न, (त्रि०) भ्रूणं (गर्भं) हन्ति । हन्+क । गर्भकी हत्या करनेवाला । "क्विप्" "भ्रूणहा" यही अर्थ.

भ्रेज्, चमकना । भ्वा० आ० अक० सेट् । भ्रेजते । अभ्रेजिष्ट.

भ्रे(भ्ले)षृ, पीना-चलना । अक० भ्वा० उभ० सेट् । भ्रे (भ्ले) षति-ते.

भ्रेष, (पु०) भ्रेषृ+घञ् । उचित स्थानसे गिरना.

भ्लाक्षृ, खाना । भ्वा० उभ० सक० सेट् । भ्लक्षति-ते.

भ्लाशृ, चमकना । दि० पक्षे भ्वा० आ० अक० सेट् । भ्लाश्यते । भ्लाशते.

म

म, (पु०) मा+क । चन्द्र । चांद । शिव । ब्रह्मा । यमराज । समय । मधुसूदन । विष.

मकि, भूष-सजाना-गति-जाना । भ्वा० आ० सक० सेट् । इदित् । मङ्कते.

मकर, (पु०) मनुष्यं कृणाति (हिनस्ति) कृ+अच् । पृ० । जलजन्तुभेद । मगरमच्छ । कामदेवके झंडेका निशान । बारह राशिओंमेंसे दसवीं । द्वादशराश्यन्तर्गत दशम राशि । "मं (विषं) किरति".

मकरकुण्डल, (पु०) मकराकृति कुण्डलं (कर्णभूषणं) । एक कानका गहना । जिसका स्वरूप मगर मच्छका है.

मकरकेतन, (पु०) मकरः (मकरचिह्नितः) केतनो (ध्वजो) यस्य । जिसका झंडा मच्छके निशानका है । कामदेव । "कन्दर्प" "मकरकेतुः" यही अर्थ है.

मकरध्वज, (पु०) मकरः ध्वजः यस्य । मच्छीके झुण्डेवाला । कामदेव.

मकरन्द, (पु०) मकरं अपि द्यति (कामजनकत्वात्) । दो-अवखण्डने । तोडना+क पृ० मुम् । पुष्पमधु । फूलका शहत । फूलका रस । कुंदवृक्ष । किञ्जल्क (तरी) (न०).

मकरसंक्रमण, (न०) मकरे संक्रमणं । सूर्यका मकर राशिमें परिणाम (जाना).

मकरिन्, (पु०) मकराः सन्त्यत्र+इनि । मच्छोंवाला । समुद्र.

मकुट, (न०) मकि-सजाना-भूषण+उट पृ० । शिरोभूषण । मुकुट । ताज.

मकुर, (पु०) मकि+उरच् । पृ० । दर्पण । शीशा-बकुलका वृक्ष । कुलालदण्ड । घुमारकी लकडी । फूलकी कली.

मक्क्, गति-जाना । भ्वा० आ० सक० सेट् । मक्कते । अमक्किष्ट.

मक्ष्, रोष-गुस्सा करना-खफा होना-इकट्ठाकरना । भ्वा० पर० अक० सेट् । मक्षति । अमक्षीत्.

मक्षवीर्य, (पु०) मक्षं (संहतं) वीर्यं यस्मात् ५ ब० जिससे वीर्य इकट्ठा हो जाता है । प्रियालका वृक्ष. ।

मक्षि(क्षी)का, (स्त्री०) मक्ष्+कुन् । टाप् । अत इत्वम् । पृ० वा दीर्घः । एक प्रकारका कीडा । मक्खी.

मख्, सर्पण-सर्कना-रींगना-जाना । भ्वा० पर० सक० सेट् । मखति । अमाखीत्, अमखीत्.

मख, (पु०) मख+घ । यज्ञ । याग । (वेदमें) पूजाके लायक । बलिआदिसे पूजाके लायक । सुन्दर और चालाक (त्रि०).

मगि, सर्कना । भ्वा० पर० सक० सेट् । इदित् । मङ्गति । अमङ्गीत्.

मगध, (पु०) मङ्ग्यते (अधो गम्यते) अनेन । मगि+अच् । पृ० । जिस्से नीचे जाता है । मगं (दोषं) पापं वा दधाति । धा+क । जो दोष वा पापको धारण कर्ता है । एक देश । उस देशके लोग (ब० व०).

मगधेश्वर, (पु०) मगधका राजा । जरासन्धराजा । वेहारका सूबह.

मगधोद्भवा, (स्त्री०) मगधदेशे बाहुल्येन उद्भवति । अच् । पिप्पली । मघ इस देशमें बहुत होती है.

मघ्, कैतव-छल करना । जूएकी खेल आदि करना । अक० । गति-जाना । निन्दा करना । और आरम्भ (शुरू करना) । सक० भ्वा० आत्म० सेट् । इदित् । मङ्घते । अमङ्घिष्ट.

मघ्, भूषण । सजाना । भ्वा० पर० सक० सेट् । इदित् । मङ्घति-अमङ्घीत.

मघवत्, (पु०) मह्+कं । "ह" को "घ" होता है । मघः (पूजा) । अस्त्यर्थे मतुप् । "म" को "व" होता है । इन्द्र । मघवन्तौ । मघवतः । उसकी स्त्री । ङीप "मघवती".

मघवन्, (पु०) मह्+कनिन् । नि० । इन्द्र । मघवा । मघवानौ । मघोनः । उदार (खुलादिल) (त्रि०) । उसकी स्त्री "मघोनी" ङीप्.

मघा, (स्त्री०) मह्+घ । "ह" को "घ" होता है । अश्विनीसे दसवां नक्षत्र (तारां) । ये पाँच तारोंके स्वरूपमें होनेसे बहुवचन भी होता है । "पितरः स्पृहयन्त्यन्नमष्टकासु मघासु च" स्मृतिः.

मङ्कुर, (पु०) मकि+उरच् । दर्पण । शीशा । आईना.

मङ्क्षु, (अव्य०) मखि+उन् । शीघ्रता । जल्दी । भृश । बहुत । पृ० । "ख" "क्ष" भी होता है.

मङ्गल, (पु०) मगि+अलच् । भूमिसुत । पृथिवीका पुत्र । एक ग्रह । प्रशस्त । अच्छा । चाहेहुए अर्थकी सिद्धि । उसवाला (त्रि०) दुर्गा । कुशा (स्त्री०).

मङ्गलकाल, (पु०) मङ्गलस्य कालः । मंगलका समय । खुशीका वक्त.

मङ्गलच्छाय, (पु०) मंगला छाया यस्य । जिसकी अच्छी छाया हो । वटवृक्ष । बडका द्रख्त.

मङ्गलपाठक, (पु०) मङ्गलार्थं स्तुतिं पठति । पठ्+ण्वुल् । भलाईके लिये प्रशंसाओंको पढता है । स्तुतिपाठक.

मङ्गलप्रदा, (स्त्री०) मङ्गलं प्रददाति । प्र+दा+क । मङ्गल देती है । हरिद्रा । हल्दी.

मङ्गलवाद्य, (न०) मंगलकरं वाद्यम् । मंगलके समयका वाजा । तुरी–तूतिये ढोल.

मङ्गलसूत्र, (न०) मङ्गलकरं सूत्रम् । पतिके जीवनपर्यन्त विवाहिता स्त्रीसे धारण किया गया मंगल (खुशी) का सूत (कंगन).

मङ्गल्य, (न०) मंगलाय हितं यत् । चंदन । सोना । सिंदूर । और दही । रुचिर (सुंदर) । और मंगल करनेवाला (त्रि०) । बोड । विल्व.

मच्, उच्चताकरण-ऊंचाकरना । ठगाना । अभिमानी होना । पूजाकरना । पकडना । सक० । चमकना । अक० भ्वा० आत्म० सेट् । इदित् । मञ्चते । अमञ्चिष्ट.

मचर्चिका, (स्त्री०) यह शब्द संज्ञावाचक शब्दके पीछे रहता है । और अपनी जातिमें अच्छेको सिद्ध कर्ता है जैसे "गोमचर्चिका" एक बहुत ऊंदा गौ वा बैल । प्रशस्त । बहुत अच्छा.

मज्जन, (न०) मस्ज्+ल्युट् । स्नान । नहाना.

मज्जसमुद्भव, (न०) मज्ज्ञात् समुद्भवति । सम्+उद्+भू+अच् । ५ त० । मज्जासे उपजता है । शुक्र । वीर्य । रेत । मनि.

मज्जा, (स्त्री०) मस्+अच्+टाप् । अस्थिसार । हड्डिओंका सार । वृक्षका सार अंश.

मज्जाज, (न०) मज्जातो जायते । जन्+ड । जो मज्जासे उत्पन्न होता है । भूमिसे उपजा गुग्गल.

मज्जारस, (पु०) मज्जायाः रसः (परिपाकः) । मज्जाका पकना । वीर्य । मनि.

मञ्च, (पु०) मचि-उच्छ्राय । ऊंचा होना+घञ् । खट्वा । मंजा । वांसका बनाहुआ ऊंचा आसन । उच्च मण्डपविशेष.

मञ्जरि-री, (स्त्री०) मञ्जु ऋच्छति । ऋ+इन्-शक० पर० वा ङीप् । नई उत्पन्न हुई कोमल पतेके अङ्कुरस्वरूपकी वल्लरी । मिंजर । मुक्ता । मोती । तिल नामी लता (वेल) और तुलसी.

मञ्जिष्ठा, (स्त्री०) अतिशयेन मञ्जिमती+ईष्ठन् । एक बेल । मजीठ.

मञ्जीर, (न०) मञ्ज् शब्द करना+इरन् । नूपुर । झांजर । पंजेब । पांवमें पहिरनेका ज़ेवर । दधिमन्थनदण्डः । बन्ध । स्तम्भ । मथा (धा, नीकी रस्सी बांधनेका खंवा.

मञ्जु, (त्रि०) मञ्ज्+उन् । मनोहर । दिलको अच्छा लगनेवाला । खूबसूरत.

मञ्जुघोष, (पु०) तन्त्रमें एक उपासना करनेलायक देवता । अच्छे शब्दवाला (त्रि०) अप्सरा (स्त्री०).

मञ्जुभाषिन्, वाच्-वादिन्, (त्रि०) मञ्जु भाषते-वदति वक्ति वा । मधुरभाषी । मीठा बोलनेवाला.

मञ्जुल, (त्रि०) मञ्ज्+उलच् । मनोहर । खूबसूरत । जलरंक पक्षी (ममोला) (पु०) वह स्थान जो लताओंसे आच्छादित हो । निकुञ्ज (न०).

मञ्जुवक्र, (त्रि०) मञ्जु वक्रं यस्य । सुन्दर मुखवाला । सुन्दर.

मञ्जूषा, (स्त्री०) मञ्ज्+उषन् । पटारी । पेटिका । पेटी । मञ्जिष्ठा । मजीठ.

मट्ट, साद । निर्बल होना-नाश होना । भ्वा० पर० सक० सेट् । मटति.

मटची, (स्त्री०) मट्+अचि+ङीप् । पाषाणवृष्टि । पत्थर-वर्सना । गडा.

मठ्, वास-रहना । अक० । मर्दन-मलना । सक० भ्वा० पर० सेट् । मठति । अमठीत्-अमाठीत्.

मठ, (पु०) मठति अत्र । मठ्+क । छात्राद्यावास । विद्यार्थिओंके रहनेका घर । देवागार । देवमन्दिर । योगिओंके रहनेका घर । कौलिज । पाठशाला । मदरस्सह । वैलगाडी.

मड्, भूषण । सजाना । चुरा० उभ० पक्षे भ्वा० पर० सक० सेट् । इदित् । मण्डयति-ते । मण्डति । अममण्डत्-त । अमण्डीत्.

मड्डु, (पु०) मज्जन्ति अन्ये शब्दा अत्र । मज+डु । पृ० । जहां और शब्द डूब जाते हैं । वाक्यभेद । एक प्रकारका वाजा । विपुल डमरु । वडा डमरु । "स्वार्थे मन्" वही अर्थ.

मण्, अव्यक्तशब्द-न मालूम शब्द करना । भडभडाना । भ्वा० प० अक० सेट् । मणति । अमाणीत्-अमणीत्.

मणि-णी, (पु० स्त्री०) मण्+इन् । स्त्रीत्वपक्षे वा ङीप् । मुक्तादि रत्न । मोती आदि रत्न (जवाहिर) । मट्टीका एक पात्र । वडामट्ट (अलिञ्जर) कीमती पत्थर । अपनी जातिमें उत्कृष्ट कोई चीज । मणिवंध । आँकडी । (यह शब्द विशेषतः पुल्लिंगमेंही प्रसिद्ध है).

मणिकर्णिका, (स्त्री०) मणिकर्णः (मणिमयकर्णभूषणं) अस्ति अस्यां+ठन् । जहां मणिओंका वनाहुआ कानका जेवर है । काशीमें एक तीर्थ है (जहां विष्णुकी तपस्यासे आश्चर्यहुए शिवजीने मणिओंका कुण्डल फेंकाहै).

मणिकूट, (पु०) मणीनां कूट इव । मणिप्रचुरं कूटं (शृङ्गं) वा अस्य । मानो मणिओंका समूह है वा बहुत मणिओंवाली चोटीवाला । उत्तर देशमें एक पर्वत (पहाड) है.

मणित, (न०) मण्+क्त । रतिकाले स्त्रीणां अव्यक्तशब्दविशेषः । मैथुन (संभोग) समयमें स्त्रिओंका धीरे २ शब्द करना.

मणिपुर, (न०) मणिभिरिव पूर्यते (प्रचुरदीप्तिमत्त्वात्) । वहुत प्रकाशवाला होनेसे मानों मणिओंसे भर रहा है । तन्त्रमें कहाहुआ । नाभि (धुन्नी) के स्थानमें सुषुम्णा नाडीके बीच पद्म (कमल) के स्वरूपवाला एक चक्र । अपने नामसे प्रसिद्ध एक देश.

मणिबन्ध, (पु०) मणिर्बध्यते अत्र । बंध+घञ् । प्रकोष्ठ और हाथका मध्यस्थान । हाथका पौंचा । सैन्धव । लवणाकरपर्वतविशेष । सिन्धेनोनका एक पहाड.

मणिमण्डप, (पु०) मणिमयः (मणिप्रचुरः) मण्डपः । (वहुतही मणिओंवाला मण्डप) घर.

मणिबीज, (पु०) मणय इव बीजानि अस्य । जिसके बीज मणिओंके समान हैं । दाडिम । अनार.

मणिसर, (पु०) मणीन् सरति (कारणत्वेन गच्छति) । सृ+अच् । मणिखचित हार । मणिओंका पिरोयाहुआ हार.

मणीव, (अव्य०) मणि+इव । मणिसमान । मणीकी तरह.

मण्ड, (पु० न०) मन्+ड । उसे इत्व नहिं होता । सर्वान्नाग्ररस । सव अन्नोंका रस । मांड । पीछ । सार । आमलकी (आवला) और सुरा (शराव) (स्त्री०) । एरण्डका वृक्ष । एक प्रकारका साग (शाक) । मेंडक (पु०).

मण्डन, (पु०) मण्डयति । मडि+ल्यु । अलंकार । जेवर "भावे ल्युट्" भूषा । सजाना (न०).

मण्डप, (पु० न०) मडि+घञ् । मण्डं (भूषां) पाति (रक्षति) पा+क । जनविश्रामस्थान । लोगोंके आरामकी जगह (सराय) । देवादिगृह । और देवता आदिका घर । मण्डपानकर्ता (पीछ पीनेवाला) (त्रि०) । शूकशिम्बी (स्त्री०).

मण्डल, (न०) मडि+कलच् । चक्राकारवेष्टन । पहियेके स्वरूपका घेरा । जैसे सूर्यमण्डल-भूमण्डल । चारसौ योजनका एक देश । दायरह । समूह । नखुनोंका घाव । द्वादशनृपचक्र (वारह राजोंका समूह) । गोल । कृत्रिमरेखारचित पदार्थ । कईएक रेखाओंसे रचा-हुआ एक पदार्थ । जैसे ग्रहमण्डल । सर्वतोभद्रमण्डल इत्यादि । कुत्ता । और सांप (पु०).

मण्डलनृत्य, (न०) मण्डलाकारेण नृत्यं । चक्र वांधकर नाचना.

मण्डलवर्ष, (पु०) (मण्डले वर्षति) राजाके सम्पूर्णराज्यमें मेघ (बादल) का वर्सना । अंमबरसात काल । साधार वृष्टि । सब जगह वर्षाका होना.

मण्डलाधीश, (पु०) मण्डलस्य (देशविशेषस्य) अधीशः । खास देशका मालिक । मण्डलेश्वर । चारसौ योजन (१६०० सौ कोस) तक देशका अधिप (स्वामी).

मण्डलिन्, (पु०) मण्डलं (कुण्डलनं) अस्ति अस्य । इनि । कुण्डलवाला । सर्प । सांप । बिडाल । बिल्ला । बडका वृक्ष.

मण्डित, (त्रि०) मडि+क्त । भूषित । सजाहुआ । अलंकृत.

मण्डूक, (पु०) मण्डयतिं वर्षासमयम्। जो बर्सातको सजा देता है। मडि+ऊक्। मेक। मेंडक। एक मुनि.

मण्डूर, (न०) मडि+ऊरच्। लौहमल। लोहेकी मैल.

मत, (त्रि०)। मन्+क्त। सम्मत। मानागया। अभिप्रेत। चाहागया। ज्ञात। जानाहुआ। और अर्चित। पूजागया। "भावे क्त" सम्मति। माना। अभिप्राय। आशय। मतलब। ज्ञान। जानना। और अर्चा। पूजा (न०).

मतङ्ग, (पु०) माद्यति अनेन। मद्+अङ्गच्। "द" को "त" होता है। मेघ। बादल (जिस्से खुश होता है)। एक मुनि.

मतङ्गज, (पु०) मतङ्गात् ऋषेर्जातः। जन्+ड। मतंग ऋषिसे उत्पन्न हुआ। गज। हाथी.

मतल्लिका, (स्त्री०) मतं (मतिं) अलति (भूषयति) ण्वुल्। पृ०। प्रशस्त (बहुत अच्छा)। भला। उमदह.

मति, (स्त्री०) मन+भावे.क्तिन्। ज्ञान। जानना। इच्छा। चाह। औ स्मृति। याद करना.

मतिपूर्व पूर्वकं, (अव्य०) मतिपूर्वं यस्मिन् यथा तथा। बुद्धिपूर्वक। संकल्पसे। इरादातन। सावधानीसे। पूरी मर्जीसे। इच्छासे.

मतिप्रकर्ष, (पु०) मत्याः प्रकर्षः। बुद्धिकी उत्कृष्टता। बडी अकील.

मतिभ्रम, (पु०) मतेर्भ्रमः (अयथार्थविषयत्वेन भ्रमणम्)। बुद्धिका घूमना (झूठे पदार्थकी ओर जानेसे घूमना).

मतिविभ्रम, (पु०) मतिं (बुद्धिं) विभ्रमयति। वि+भ्रम्-णिच्+अण्। बुद्धिको घुमादेता है। उन्माद रोग। पागलपनेकी बीमारी.

मत्क, (पु०) मद्+क्विप् स्वार्थे कन्। मत्कुण। खटमल। मम इदम् कन्। मत्सम्बन्धी। मेरा। "नैतन्मतं मत्कं" इति भट्टिः.

मत्कुण, (पु०) मद्+क्विप्। कुणयति। कुण्+अच्। कर्म०। कीटभेद। एक कीडा। खटमल.

मत्कुणारि, (पु०) ६ त०। (विजया) भांग। इसके सम्बन्धसे खटमलका नाश हो जाता है.

मत्त, (पु०) मद्+क्त। दुर्मदगज। बदमस्त हाथी। क्षीव। मदयुक्त। मतवारा और हृष्ट (प्रसन्न) (त्रि०).

मत्तकाशि(सि)नी, (स्त्री०) मत्तेव (क्षीबेव) काशते-कसति-गच्छति वा णिनि। पृ० ह्रस्वः। जो मस्त होकर चमकती है। उत्तमयोषिता। अच्छी औरत। मस्त औरत। हरएक स्त्री.

मत्तगामिनी, (स्त्री०) मत्तं गच्छति। मत्त (मस्त) चालवाली स्त्री०

मत्तदन्तिन्, (पु०) मत्तः दन्ती। मस्तहाथी.

मत्तमयूर, (पु०) मत्तो मयूरो यस्मात्। जिस्से मोर मस्त हो जाता है। मेघ। बादल। एक प्रकारका छंद.

मत्तवारण, (पु०) कर्म०। मत्तहस्ती। मस्तहाथी। "मत्तं वारयति"। वृ+णिच्+ल्यु। प्रसादवरण्ड (महलकी चोटीका कमरा) वरांडा (न० पु०).

मत्रि, गुप्तभाषण। छिपकर बोलना। चु० आ० सक० सेट् इदित्। मन्त्रयते। अममन्त्रत.

मत्सर, (पु०) मद्+सरन्। अन्यशुभद्वेष। दूसरेकी भलाईसे वैर करना। परसम्पत्त्यसहन। दूसरेकी संपदाको न सहारना। हसद। क्रोध। गुस्सह। उसवाला। और कृपण (सूम) (त्रि०)। मक्षिका। मक्खी (स्त्री०).

मत्स्य, (पु०) मद्+स्यन्। जलजन्तुविशेष। पानीक जीव। मच्छी। स्त्रियां ङीप् "मत्सी".

मत्स्यधानी, (स्त्री०) मत्स्या धीयन्ते अस्यां। धा+ल्युट् ङीप्। जिसमें मच्छियें रक्खी जाती हैं। एक पात्र। जिस्में मच्छियें रक्खी जाती हैं.

मत्स्यण्डी, (स्त्री०) मन्दं स्यन्दते। अच्। पृ०। खण्डक विकार। मिसरी। "स्वार्थे कन्".

मत्स्यरङ्ग, (पु०) मत्स्येन रजति। रञ्ज्+कर्तरि संज्ञायां घञ्। (मछरङ्गा) एक प्रकारका पक्षी। "किंगफिशर".

मत्स्यराज, (पु०) मत्स्यानां राजा+टच्-अ। मच्छिओंका राजा। रोहित नाम मच्छ.

मत्स्यवेधन, (न०) मत्स्यो विध्यतेऽनेन। विध+ल्युट्। जिस्से मच्छीको वेधन कर्ते हैं। बडिश। कुंडी। मद्गु नामी पक्षी (पानकौडी) (पु०).

मत्स्योदरी, (स्त्री०) मत्स्यगंधयुक्तं उदरं अस्याः। जिसका पेट मच्छीके गंधवाला है। व्यासदेवकी मात (मां)। मत्स्यगंधा। काशीमें एक तीर्थ.

मथ्, विलोडन-विलोना। भ्वा० पर० सक० सेट्। मथते.

मथ्, वध-मारना। सक०। क्लेश-दुःख देना। अक० भ्वा० पर० सेट्। इदित्। मन्थति। अमन्थीत्.

मथन, (न०) मथ्+ल्युट्। वध। मारना। क्लेश। दुःख देना। विलोडन। विलोना। "क्षीरोदमथनोद्भूतं" पुराणम्.

मथित, (त्रि०) पीडित। निकालागया। हत। मारागया। मथ+क्त। निर्जलतक्र (पानीके बिना छाछ) (न०).

मथुरा, (स्त्री०) मथ्+उरच्। अपने नामसे प्रसिद्ध नगरी.

मथुरेशः-नाथः, (पु०) मथुरायाः ईशः। मथुराका स्वामी। श्रीकृष्ण.

मद्, हर्ष। खुश होना। दिवा० पर० अक० सेट्। माद्यति। अमदत्-अमादीत्। अमदीत्.

मद, गर्व-अहंकार करना। और दीन होना। भ्वा० पर० अक० सेट्। मदति। अमादीत्-अमदीत्.

मद, (पु०) मद्+अच् । हस्तिगण्डजल । हाथीकी गालका पानी (मस्ती) । आमोद । खुश । अहंकार । वीर्य । मृगमद । कस्तूरी । मत्तता वा मस्ती । कल्याण करनेहारा पदार्थ.

मदकट, (पु०) मदेन कटति । कट्+अच् । खण्ड । खांड । चीनी । "मदोत्कट".

मदकल, (पु०) मदेन कलति । कल्+अच् । मत्तहस्ती । मस्तहाथी । मदोत्कट । वहुत मस्त । और अव्यक्त (नामालूम) शब्द करनेवाला (त्रि०).

मदगन्ध, (पु०) मदस्य (हस्तिदानस्य) इव गन्धः अस्य । हाथीके मदके समान जिसका गंध है । सप्तच्छद वृक्ष । मदिरा (शराव) (स्त्री०).

मदज्वर, (पु०) मदेन जातः ज्वरः । अहंकारसे उपजा ज्वर (बुखार) । वडा अभिमान.

मदद्विप, (पु०) मदप्रधानः द्विपः । बडी मस्तीवाला हाथी । खूनी हाथी । डरावना हाथी.

मदन, (पु०) माद्यति अनेन । मद्+करणे ल्युट् । जिस्से मस्त होता वा खुश होता है । कामदेव । शठबतका देवता । वसन्त । मौसम । एक वृक्ष । सुरा (शराव) (स्त्री०).

मदनचतुर्दशी, (स्त्री०) मदनस्य (तदुपासनार्था) चतुर्दशी । कामदेवकी उपासना करनेकी चतुर्दशी (चेतकी शुक्लचतुर्दशी).

मदनमोहन, (पु०) मदनं अपि मोहयति । मुह्+णिच्+ल्यु । कामदेवको भी मोह लेता है । श्रीकृष्णदेव.

मदनलेख, (पु०) मदनस्य लेखः । कामदेवका पत्र । प्रेमपत्र.

मदनवश, (त्रि०) मदनस्य वशः वशीभूतः । कामदेवके वश (आधीन-काबू) में होगया.

मदनसदन, (न०) ६ त० । कामदेवका घर । स्त्रीका चिह्नविशेष । भग । (ज्योतिषमें) लग्नसे सातवां स्थान.

मदनान्तक, अरिः, दमनः, दहनः, नाशनः-रिपुः (पु०) मदनस्य अन्तकः । कामदेवका नाश करनेवाला । शिवजी.

मदनावस्था, (स्त्री०) मदनकृतावस्था । कामदेवसे कीगई दशा । कामिओंकी कामदेवसे कीगई उन्माद (पागल होना) आदि दशा (कामदेवकी दस दशा हैं । १० वीं मौत).

मदनोत्सव, (पु०) मदनस्य उत्सवः । कामदेवका उत्सव (खुशी-मेला) । वसन्त (बहार) का उत्सव जो कामदेवकी प्रतिष्ठाके लिये कियाजाताहै.

मदयित्नु, (पु०) मद्+णिच्+इत्नुच् । कामदेव । मेघ (वादल) । शौण्डिक (शराव वेचनेवाला-कलाल) । शराब (न०) । मादक (मस्त करनेहारा) (त्रि०).

मदलेखा, (स्त्री०) मदस्य लेखा । हाथीके मस्तकपर उठी मस्तीकी रेखा.

मदविह्वल, (त्रि०) मदेन विह्वलः । अहंकारसे विक्षिप्त (पागल-व्याकुल) होगया । मद (नशे) से मुग्ध होगया.

मदात्यय, (पु०) मदस्य अत्ययः । मदकी अधिकता (जियादती) अधिक मद्य (शराव) पीनेसे शिरःपीडा (सिरदर्द) शर्दीका होजाना.

मदान्ध, (त्रि०) मदेन अन्धः । मदसे अंधा होगया (कुछ नहीं ज्ञाता) । वडा भारी नशा पी लेना.

मदालापिन्, (पु०) मदेन आलपति । आ+लप्+णिनि । मस्तीसे वोलती है । कोकिल । कोइल.

मदिरा, (स्त्री०) मद्+किरन् । मद्यसामान्य । हरएक तरहकी शराव । (ये "माध्वीक" आदि भेदसे वारह प्रकारकी होती है) । और मत्त खञ्जन । ममोला । रक्त खदिर (लाल खैर) (पु०).

मदोत्कट, (पु०) मदेन (दानवारिणा) उत्कटः (उद्भूतः) । मस्तीसे जोरमें आयाहुआ । मत्तगज । मस्तहाथी । मदिरा (शराब) (स्त्री०) । मदोद्धत । मस्त (त्रि०).

मदोदग्र, (पु०) मदेन उदग्रः (उग्रः) । मत्त । मस्त । -ग्रा । नारी (स्त्री०).

मदोद्धत, (त्रि०) मदेन उद्धतः । मदसे जोरावर । मत्त । मस्त.

मद्गु, (पु०) मस्ज्+उ-पृ० धातुको "मद" का आदेश होता है । गुकुच । (पानकौडि) एक प्रकारका पक्षी । एक प्रकारका सांप । एक जंगली पशु । नौका । बेडी । नाव । वर्णसंकर । दोगला । वगुला । वक.

मद्गुर, (पु०) मद्+उरच्-गुकुच । (मगर) एक प्रकारका मच्छ.

मद्य, (न०) माद्यति अनेन । करणे यत् । जिस्से मस्त वा खुश होता है । मदिरा । शराब (दस प्रकारका है).

मद्र, (पु०) मद्+रक् । देशविशेष । मारवाडका मुल्क । हर्ष.

मधु, (न०) मन्+उ । "न" को "ध" होता है । मद्य (शराव) । क्षौद्र । शहत (मक्खीओंसे वनायाहुआ) । फूलका रस । जल (पानी) । और मधुर रस (मीठा पानी रस) । विष्णुके कानसे उत्पन्नहुआ एक दैत्य । कुम्भीनसी राक्षसीका भर्ता एक दैत्य । वसन्त ऋतु) चेतका महीना । एकवृक्ष । अशोकवृक्ष । और यष्टिमधु (मुलट्ठी) (पु०) । प्राणिओंका शुभाशुभ (भला और बुरा) कर्म (काम) (न०) । जीवन्ती (स्त्री० । "स्वार्थे कन्" मुलट्ठी (न०).

मधुकर, (पु०) मधु करोति (संचित्य निष्पादयति) कृ+अच् । शहत (छाता) बनाता है । भ्रमर । भौंरा.

मधुक्षीर, (पु०) मधु (मधुरं) क्षीरं अस्य । मीठे दूध-वाला । खजूरका दरख्त.

मधुज, (न०) मधुनो जायते । जन्+ड । शहतसे उपजता है । सिक्थक (मोम) । मधुदैत्य । मेदसे उपजी भूमि (स्त्री०).

मधुजित्, (पु०) मधुनामासुरं जितवान् । जि+भूते क्विप् । जिसने मधु नामी दैत्यको जीतलिया । विष्णु.

मधुत्रय, (न०) मधूनां (मधुराणां) त्रयं । तीन मीठे । शहत, घृत (घी) और मिसरी.

मधुप, (पु०) मधु पिवति । पा+क । शहत (रस) पीता है । भ्रमर (भौंरा) । शहत पीनेवाला (त्रि०).

मधुपर्क, (न०) पृच्+घञ् । मधुनः पर्को योगो यत्र । जिसमें शहतका मेल हो । कांसीके पात्रमें रक्खाहुआ दही जिसमें शहत मिलाहो और ऊपरसे कांसीके पात्रसे ढकाहो । दही, घी, पानी, शहत और मिसरी ये ५ चीजें.

मधुपुरी, (स्त्री०) मधोर्दैत्यस्य पुरी । मधु नामी दैत्यकी पुरी । मथुरा.

मधुमक्षिका, (स्त्री०) मधुसञ्चायिका मक्षिका । शहत इकट्ठा करनेवाली मक्खी । शहतकी माखी । एक प्रकारका कीडा.

मधुमत्, (त्रि०) मधुः (मधुरसः) अस्ति अस्य+मतुप् । मीठे रसवाला । माधुर्यवान् । एकनदी । योगशास्त्रमें प्रसिद्ध योगिओंकी एक प्रकारकी चित्तकी वृत्ति । वेदमें प्रसिद्ध "मधुवाता" इत्यादि तीन ऋचा । तन्त्रमें एक देवी (स्त्री०).

मधुयष्टि, (स्त्री०) मधुरा यष्टिः (काण्डं) । मीठी छडी । मुलही । गन्ना.

मधुर, (पु०) मधु (माधुर्य) राति । रा+क । अस्ति अर्थे "र" वा । गुड आदिका मीठा रस । (मीठे रस-वाला) । इक्षु (गन्ना) आदि । मनोहर (खूब सूरत) । और प्रिय (पियारा) (त्रि०) । लाल गन्ना । गुड । शालि (धान) । और जीरा (पु०).

मधुरस, (पु०) मधुन इव रसो यस्य । शहतके समान जिसका रस है । इक्षु । गन्ना । और जल (पानी) । मूर्वा । दुग्धिका । गम्भारी (स्त्री०).

मधुरस्रवा, (स्त्री०) मधुरं स्रवति । स्रु+अच् । मीठेको वहाती है । पिण्डखर्जूर । पिण्डखजूर.

मधुलिह्, (पु०) मधु लेढि (आस्वादयति) । लिह्+क्विप् । शहतको चाटता है । भ्रमर । भौंरा । "णिनि" मधुलेही.

मधुवन, (न०) मधुदैत्याधिष्ठितं वनं । वह वन जहां "मधु" दैत्य निवास कर्ता है । मथुरा क्षेत्रमें एक वन है । किष्किंधा नगरीमें बहुत मधुवाला एक वन.

मधुवीज, (पु०) मधु (मधुरं) बीजं यस्य । मीठे बीज-वाला दाडिम । अनार.

मधुवार, (पु०) मधुनो मद्यस्य वारः (क्रमः) वार २ मद्यका पीना । शराबकी वारी.

मधुशेष, (पु० न०) मधुनः शेषः (उच्छिष्टम्) । शहतका वाकी (जूठा) । सिक्थक । मोम.

मधुसख, (पु०) मधोर्वसन्तस्य सखा (सहचरः)+अच् स० । वसन्तका मित्र कामदेव । "मधुसारथि".

मधुसूदन, (पु०) मधुं (तन्नामासुरं) सूदयति । मधु (जीवानां शुभाशुभकर्म, ज्ञानदानेन) सूदयति वा । सूद्+ल्युट् । मधुनामी दैत्यको नाश कर्ता है । अथवा जीवोंके भले और बुरे कर्मको ज्ञान देकर काट देता है । श्रीकृष्ण । "मधु" माध्वीकं सूदयति भक्षयति । जो शहतके रसको पीता है । भ्रमर । भौंरा । "मधु इव सूद्यते (भक्ष्यते) ल्युट् ङीप्" मधूकी नाईं खायाजाता है । पालङ्गी शाक.

मधुस्वर, (पु०) मधुः (मधुरः) स्वरः अस्य । मीठी आवाज है जिसकी । कोकिल । कोइल । मीठी आवाज-(स्वर) वाला (त्रि०).

मधुहन्, (पु०) मधुनामासुरं-कर्मफलं वा ज्ञानद्वारा हन्ति । हन्+क्विप् । मधुनामी दैत्य वा ज्ञानसे कर्मके फलको नाश कर्ता है । विष्णु । नारायण.

मधूच्छिष्ट, (न०) मधुनः उच्छिष्टं (अवशिष्टं) । शहतका वाकी । मोम । सिक्थक । "मधूज्झित" इसी अर्थमें.

मधूपघ्न, (पु० न०) मधुदैत्यस्य उपघ्नं (आश्रयः) । मधुदैत्यका आश्रय (रहनेका स्थान) मथुरा पुरी । मथुरा नगर.

मध्य, (पु०) मन्+यक् "न" को "ध" होता है । बीच । बीचका । बीचका कद । (शरीरका) कमर । बीचका हिस्सा । शरीरका बीच (लंक) । पेट (उदर) । किसी वस्तुका बीच वा बीचका भाग । बीचकी अंगुली । नाच (नृत्य) आदि मन्दत्व और शीघ्रत्व भिन्न व्यापार । पूर्व और पश्चिमकी सीमाका बीच । परार्ध संख्यासे छोटी संख्या । ज्योतिषमें ग्रहकी गतिविशेष (स्त्री०) । उस गतिवाला ग्रह (पु०) । न्याय्य (इन्साफसे भराहुआ) । और बीचमें पडाहुआ (मुन्सिफ-अन्तर्वर्ती) (त्रि०).

मध्यगन्ध, (पु०) मध्ये (फलमध्ये) गन्धो यस्य । फलके बीचमें जिसका गंध है । आम्रवृक्ष । आमका दरख्त.

मध्यतस्, (न०) मध्य+तसिल् । प्रथमा, पञ्चमी और सप्तमीके अर्थमें वर्तमान मध्यशब्दका अर्थ । बीच, बीचसें और बीचमें.

मध्यदेश, (पु०) कर्म० । किसी चीजका बीचका भाग । कमर । हिमालय और विन्ध्य पर्वतका बीच, कुरुक्षेत्र (विनशन) से पहिले और प्रयाग (अलाहाबाद) के पश्चिमकी ओर "मध्यदेश" कहा है । एक देश.

मध्यन्दिन, (न०) मध्यं दिनस्य । अलुक् समा० । दिनका बीच । मध्याह्न (दुपहिर).

मध्यम, (त्रि०) मध्ये भवः । म । मध्यभव । बीचमें हुआ । बीचका । बिचला । सात स्वरोंमें पांचवां स्वर (सुर) (पु०)

मध्यमपदलोपिन्, (पुं०) मध्यमपदस्य लोपः अस्ति अस्य+इनि । जिसके बीचमें आये पदका लोप होता है । व्याकरणमें प्रसिद्ध "शाकपार्थिव" (शाकप्रियः पार्थिवः) आदि समास विशेष.

मध्यमपाण्डव, (पु०) कर्म० (पहिले और पिछले दोनों-के बीचमें होनेसे) अर्जुन । बिचला पाण्डुका पुत्र.

मध्यमभृतक, (पु०) कर्म० । "मध्यमस्तु कृषीवलः" खेती करनेवाला नौकर । किसान.

मध्यमलोक, (पु०) कर्म० । पृथिवी । (यह पाताल और स्वर्गलोकके बीचमें है) । "मध्यमलोकपालः" इति रघुः । बीचका लोक.

मध्यमवयस्क, (त्रि०) मध्यमवयः यस्य । मध्यम (बीचकी) आयु (उमर)वाला । मझली (जवानी) अवस्थावाला.

मध्यमसंग्रह, (पु०) कर्म । दूसरेकी स्त्रीको सुगन्धिवाली माला, भूषण और वस्त्र भेजन एवं खाने पीनेकी चीजोंसें लोभ दिखाना । मध्यम (स्त्रीका पकडनारूप) विवाद.

मध्यमसाहस, (पु०) कर्म० । बिचला साहस (दिलेरी । बिना सोचे काम करना) । दूसरेके कपडें आदिको फाडना । फेंकना आदि । जोरसे कोई काम करना । पांच पणका दण्ड (सजा) विशेष (पु०).

मध्यमा, (स्त्री०) मध्य+म । दृष्टरजस्का नारी । वह स्त्री कि जिसे महीनेका ऋतु (रज-फूल) आचुका हो । बीचकी अंगुली । कमल आदिकी कर्णिका (डण्डी) । हृदयमें उत्पन्न हुई वैखरी आदिमें एकप्रकारकी वाणी । एक प्रकारकी स्त्री (औरत) । नायिकाविशेष.

मध्यमाहरण, (न०) बीजगणितमें प्रसिद्ध अव्यक्त (नामालूम) मान (माप)को जतानेहारी गणना । (गिनती).

मध्यरात्र, (पु०) मध्यं रात्रेः । एकदेशि स० अच् समा० । रातका बीच । निशीथ । अर्धरात्र । आधीरात.

मध्यवर्तिन्, (त्रि०) मध्ये वर्तते । वृत्+णिनि । बीचमें रहता है । वादिप्रतिवादी वा और किसी दोनोंके पक्ष प्रतिपक्षके विषयको विचार कर तत्त्वका निर्णय (फैसला) करनेहारा । अपने अर्थको न बिगाड कर दूसरेके अर्थको सम्पादन करनेहारा । कामको पूरा करनेवाला (मध्यस्थ) । बीचमें पडा । मुन्सिफ.

मध्यस्थ, (पु०) मध्ये तिष्ठति । स्था+क । बीचमें रहता है । मध्यवर्ती । उदासीन । "माध्यस्थ्यमिष्टेऽप्यवलम्बतेऽर्थे" कुमारः.

मध्या, (स्त्री०) स्त्रियां टाप् । तीन अक्षरोंके पादवाला एक छन्द । नायिकाविशेष । मध्यमा अंगुली । बीचकी अंगुल.

मध्याह्न, (पुं०) मध्यं अह्नः । एक० स० टच् समा० । अह्नांदेश । तीन भागमें बाँटेगये दिनका दूसरा भाग । पांच भागमें बांटेहुए दिनका तीसरा भाग (हिस्सह) । दुपहिर । कुतुपकाल.

मध्वासव, (पु०) मधुना (पुष्परसेन) कृत आसवः । मधु (दाख) वृक्षके फूलोंके रससे बनाहुआ मद्य । (शराब).

मन्, पूजा करना । सक० । अहंकार करना-अक० भ्वा० पर० सेट् । मनति.

मन्, अहंकार करना । अक० चु० आ० सेट् । मनायते । अमीमनत.

मन्, बोध-जानना । तना० आ० सक० सेट् । मनुते । अमनिष्ट.

मन्, जानना-दिवा० आ० सक० अनिट् । मन्यते । अमंस्त.

मनःपति, (पु०) मनसः पतिः । मनका स्वामी (मालिक) । विष्णूका नाम.

मनःपूत, (त्रि०) मनसा पूतः । मनसें पवित्र किया हुआ । मनसे शुद्ध चिन्तन कियागया । हृदयसे मानागया.

मनःशिला, (स्त्री०) मनःशब्दवाच्या शिला । मंछल । लाल रंगका एक प्रकारका धातु (गेरी) । "मनःशिलाविच्छुरिता निषेदुः" इति कुमारः । (पुं०) भी.

मनस्, (न०) मन्यते अनेन । मन्+असि । मानता है इस्से । सर्वेन्द्रियप्रवर्तक अन्तरिन्द्रिय । सब इन्द्रियोंके चलानेवाला भीतरका इन्द्रिय । (वह वेदान्तमतमें संकल्पविकल्पस्वरूप वृत्तिवाला अंतःकरण-सुख और दुःखका आधार; न्यायमतमें वह ज्ञानका साधन है) । मनःशिला । मंछल.

मनसा, (स्त्री०) मननं मनं स्यति । सो+क । आस्तीकमुनिकी माता । वासुकीकी भगिनी (बहिन) । जरत्कारूकी पत्नी.

मनसिज, (पु॰) मनसि जायते । जन्+ड । सप्तमीका विकल्पसे अलुक् । मनमें उपजता है । कामदेव । "मनोज" यही अर्थ है.

मनसिशय, (पु॰) मनसि शेते । अच् वा अलुक् । मनमें सोता है । कामदेव । "मनःशय" यही अर्थ होता है.

मनःसृष्टि, (स्त्री॰) मनसः सृष्टिः । मनकी रचना (दुनिआं) । मनके पुलाव.

मनस्कार, (पु॰) कृ+घञ् । मनसः कारो व्यापारभेदः । चित्तका सुखमें तत्पर होना । दिलका सुख चाहना.

मनस्ताप, (पु॰) मनसस्तापः (अनुतापः) । मनका तपना । मनकी पीडा.

मनस्विन्, (त्रि॰) प्रशस्तं मनः अस्ति अस्य । अच्छा मन है इसका । प्रशस्तमनस्क । अच्छे मनवाला । "विनि" दाना । पण्डित । वडे दिलवाला । और पक्के चित्तवाला "संरमनामी पशु" (पु॰) । "स्त्रीलिङ्गमें ङीप् होता है" वडे दिलवाली अथवा मगरूर (अहंकार करनेवाली) औरत । दाना अथवा धर्मात्मा स्त्री । दुर्गाका नाम । चांदकी मा.

मनाक्, (अव्य॰) ईषत् (थोडा) । मन्द (धीरे) । थोडासा.

मनावी, (स्त्री॰) मनोः पत्नी । वा ङीप्-औङ् च । मनुकी स्त्री.

मनित, (त्रि॰) भ्वा॰ मन्+क्त । ज्ञात । जानाहुआ.

मनीषा, (स्त्री॰) ईष्+अङ् । मनस ईषा । शक॰ । वुद्धि । अकिल । इच्छा । चाह । समझ । खयाल । (वेदमें) सूक्त (गीत).

मनीषिन्, (पु॰) मनीषा अस्ति अस्य+इनि । मनीषावाला । पण्डित । वुद्धियुक्त । अकिलवाला (त्रि॰).

मनु, (स्त्री॰) मन्+उ । मनुकी स्त्री । एक प्रजापति । धर्मशास्त्रके वनानेवाला । और स्वयम्भु (ब्रह्मा) से उत्पन्न हुआ मुनि (पु॰).

मनुज, (पु॰) मनोः (स्वायम्भुवात्) जायते । जन्+ड । मनुसे हुआ । मनुष्य.

मनुष्य, (पु॰) मनोरपत्यं । यक्-सुक् च । मनुकी संतान । मानव । मनुष्यकी जाति । स्त्रियां जातौ ङीप्.

मनुष्यधर्मन्, (पु॰) मनुष्यस्य इव धर्मो यस्य (नरवाहनत्वात्) । अनिच् समा॰ । नरवाहन (मनुष्योंपर चढनेहारा) होनेसे मनुष्यके समान है धर्म जिसका । कुबेर । धनका राजा.

मनोगत, (त्रि॰) मनः गतं । मनमें गया हुआ । मनमें रहनेवाला । मनका । हृदयमें छिपा हुआ । भीतरका । गुप्त । छिपा हुआ.

मनोग्राहिन्, (त्रि॰) मनः गृह्णाति । मनको पकडनेवाला । आकर्षण करनेवाला.

मनोजव, (त्रि॰) जू+अच् । मनोजवं वेगवत् नमनाय यस्मिन् । पितृतुल्य । पिताके समान । "मनस इव जवो यस्य" मनके समान है वेग जिसका । बडे वेगवाला । (त्रि॰) आगकी जीभ (स्त्री॰).

मनोजवृद्धि, (पु॰) मनोजस्य (कामस्य) वृद्धिर्यस्मात् ५ ब॰ । कामदेवकी वृद्धि (वढती) होती है जिस्से । कामवृद्धिवृक्ष.

मनोज्ञ, (त्रि॰) मनो जानाति (ज्ञापयति) वोधनाय प्रवणीकरोति अन्तर्भावितण्यर्थे ज्ञा+क । मनको जताता है वा समझनेको झुकाता है । मनोहर । मनको खेंचनेवाला । सुन्दर । मनःशिला । मदिरा (स्त्री॰).

मनोभव, (पु॰) मनसि भवति । भू+अच् । मनमें होता हैं । कामदेव । "मनोज" "मनोभू" इत्यादि—यही अर्थ.

मनोरथ, (पु॰) मन एव रथः अत्र । मनसो रथ इव वा । मनही है रथ यहां । मनका मानों रथ है । इच्छा । ख्वाहिश.

मनोरम, (त्रि॰) मनो रमयति । रम्+णिच् । अच्-उप॰ मनको प्रसन्न कर्ता है । मनोहर । सुन्दर । गोरोचना । (स्त्री॰).

मनोहर, (त्रि॰) मनो हरति (स्वदर्शनाय) हृ+अच् । अपने देखनेके लिये मनको खेंचता है । रुचिर । सुन्दर । मनोहर । कुंदका वृक्ष (पु॰) । सोना (न॰).

मन्ज, मार्जन-पोंछना । सक॰ । ध्वनि-शब्द करना-अक॰ भ्वा॰ पर॰. सेट् । मज्जति । अमञ्जीत्.

मन्तु, (पु॰) मन्+कु-तुट् च । अपराध । कसूर । मनुष्य आदमी । और प्रजापति (प्रजाका मालिक).

मन्त्र, (पु॰) मन्त्रि+अच् । गुप्तभाषण । छिपाहुआ वोलना । सलाह । देवता आदिको सिद्ध करनेके लिये तन्त्र आदिमें कहाहुआ शब्दविशेष । वेदका हिस्सह.

मन्त्रकुशल, (त्रि॰) मन्त्रे कुशलः । उपदेश (सला) देनेमें चतुर (सिआना).

मन्त्रजिह्व, (पु॰) मन्त्र एव जिह्वा (आस्वादनसाधनं) यस्य । मन्त्रही है जीभ (स्वाद लेनेका साधन) जिसकी । अग्नि (आग) । (मन्त्रसे दियेहुए हविको लेता है).

मन्त्रज्ञ, (त्रि॰) मन्त्रं जानाति+ज्ञा+क-अ । मन्त्रको जाननेहारा । श्रुतिका ज्ञाता । उपदेश देनेवाला । नेक सलाहदेनेवाला.

मन्त्रणं-णा, (न॰ स्त्री॰) मन्त्र+ल्युट् । अन विचार । सला । उपदेश.

मन्त्रदर्शिन्, (त्रि॰) मन्त्रं पश्यति । वेदके सूक्तों (गीतों)-को देखनेवाला । वेदको भली भान्ति जाननेहारा ब्राह्मण.

मन्त्रदातृ, (पु०) दा+तृच् । ६ त० मन्त्रके देनेहारा । उपदेशका गुरु.

मन्त्रदेवता, (स्त्री०) मन्त्रस्य देवता । मन्त्रका देवता । मन्त्रमें बुलाया गया देवता.

मन्त्रमूर्ति, (पु०) मन्त्रः मूर्तिरस्य । मन्त्रस्वरूप मूर्तिवाला । शंकर.

मन्त्रवादिन्, (त्रि०) मन्त्रं वदति । पवित्र मन्त्रोंका पाठ करनेवाला.

मन्त्रविद्या, (स्त्री०) मन्त्राणां विद्या । मन्त्रों (जादु) की विद्या (दल्प).

मन्त्रसिद्धि, (स्त्री०) मन्त्रस्य सिद्धिः । मन्त्र (जादु) की सिद्धि (सफलता).

मन्त्रहीन, (त्रि०) मन्त्रेण हीनः । मन्त्ररहित । वेदके न जाननेहारा.

मन्त्राराधन, (न०) (मन्त्रस्य आराधनं) किसी कठिन वस्तुको पानेके लिये मन्त्रकी सेवा (जपना).

मन्त्रिन्, (पु०) मन्त्रयते+णिनि । जिसके साथ एकान्तमें कर्तव्यका विचार कियाजाता है । अमात्य । वजीर.

मन्त्रोदक, (न०) मन्त्रस्य उदकं । मन्त्रसे पवित्र किया हुआ जल । अभिमन्त्रित जल.

मन्थ्, विलोड-विलोना-रिडकना । क्र्या० पर० द्विक० सेट् । मथ्नाति । अमन्थीत् । मथित । मथ्यते.

मन्थ, (पु०) मन्थ+करणे घञ् । मन्थनदण्ड । मथानी । मथानी । पीनेकी एक विशेष वस्तु । सूर्य । आकका वृक्ष । आंखकी मैल । और किरण । "भावे घञ्" आलोडन । विलोना.

मन्थज, (न०) मन्थात् (दधिमन्थनात्) जायते । जन्+ड । दही विलोनेसे उपजता है । नवनीत । मक्खन । माखन.

मन्थन, (पु०) मथ्यते अनेन । करणे ल्युट् । मन्थानदण्ड । विलोनेका डंडा । मंथानी । "भावे ल्युट्" विलोना । रिडकना.

मन्थर, (त्रि०) मन्थ्+अरच् । धीमा । मन्द । मूर्ख । सुस्त । बेवकूफ । झुकाहुआ । टेढा । मुडाहुआ और जतलानेवाला । कोष (खजाना) । सिरका बाल । कोप (गुस्सा) । ताजा मक्खन । मथानी । विघ्न (रुकावट) । और फल । (पु०) । -रा । कैकयीकी दासी (स्त्री०).

मन्थरु, (पु०) मन्थ्+अरु । चामरवायु । चौरीकी हवा.

मन्थशैल, (पु०) ६ त० । रिडकनेका पहाड (समुद्रमन्थनाय मन्थनदण्डरूपेण कल्पितमन्दारपर्वतः) समुद्रको रिडकनेके लिये मथानीस्वरूपसे काममें लायागया मन्दारनामी पहाड । (जिसे १४ रत्न निकालेगयेथे).

मन्थान, (पु०) मन्थ्+आनच् । मन्थानी । रिडकनेका डण्डा । शिवजी.

मन्थिन्, मन्थ्+णिनि । विलोनेवाला । रिडकनेवाला । (वेदमें) सोमलताका रस । रिडकनेका पात्र (वर्तन).

मन्द, (त्रि०) मदि+अच् । मूर्ख । बेवकूफ । मृदु । कोमल । अभाग्य । वदकिस्मत । रोगी । बीमार । थोडा । स्वतन्त्र । खुला । और खल (नीच) । शनिग्रह । एक प्रकारका हाथी । यम । और प्रलय (पु०) । ज्योतिष्में एक प्रकारका सूर्यका संक्रमण अर्थात् एक राशिसे दूसरीमें जाना (स्त्री०).

मन्दग, (त्रि०) मन्दं गच्छति । गम्+ड । धीरे जाता है मृदुगामी । धीरे चलनेहारा । सुस्त । बेवकूफ । (ज्ञानी पुरुष, बैल, हाथी, हंस, ये सब स्वभावसे मन्दगति धीरे चलनेवाले होते हैं) सुन्दर स्त्रियें भी । णिनि "मन्दगामी" (त्रि०) यही अर्थ है । स्त्रियां ङीप् "मन्दगामिनी".

मन्दता, (स्त्री०) मन्दस्य भावः+तल् । मन्दपना । आलस्य । जाड्य । बेवकूफी । और मन्दहोना.

मन्दधी, प्रज्ञा, बुद्धि मति, मेधस् (त्रि०) मन्दा धीः यस्य । थोडी (मूर्ख) बुद्धिवाला । कम अकिलवाला । जडबुद्धिवाला.

मन्दभाग्य, (त्रि०) मन्दं भाग्यं यस्य । मन्द (बुरे) भाग्य (किस्मत) वाला । दुर्भग.

मन्दर, (पु०) मदि+अरन् । समुद्रको रिडकनेका साधन । एक पहाड । मन्दारवृक्ष । स्वर्ग । एक प्रकारका हार । और दर्पण (शीशा आईना) । बहुत । और मन्द (त्रि०) । "मन्दार" भी.

मन्दस्मित-हास-हास्य, (पु० न०) मन्दं स्मितं यस्य । मन्द २ (धीमे २) हसना मुस्कडाना.

मन्दाकिनी, (स्त्री०) मन्दं अकति । अक्+णिनि । स्वर्गकी गङ्गा । "स्वर्गे मन्दाकिनी तथा" इति पुराणम्.

मन्दाक्रान्ता, (स्त्री०) सप्तदशाक्षरपादकच्छन्दभेदः । १७ अक्षरके पादवाला एक छन्द.

मन्दाक्ष, (न०) मन्दं (संकुचितं) अक्षि यस्मात् । षच् समा० । जिस्से आंख सिकुडजाती है । लज्जा । शरम.

मन्दाग्नि, (पु०) मन्दः (पचने अल्पशक्तिकः) अग्निः । स यस्मात् वा । शरीरमें अन्नको न पकानेवाली आग । इसी कारणसे उत्पन्नहुआ एक रोग । बदहजमी.

मन्दानिल, (पु०) मन्दः अनिलः । धीमी २ वायु (हवा).

मन्दिर, (न०) मन्द्यतेऽत्र । मदि+किरच् । जहां हर्ष किया जाता है । घर । देवालय (देवताका घर) । पुर (शहर) । समुद्र और घुटनोंका पिच्छला हिस्सह (पु०).

मन्दुरा, (स्त्री०) मदि+उरच् । अश्वशाला । अस्तबल । तबेला । एक बाजा.

मन्दोदरी, (स्त्री०) मयदानवकन्या । मयनामी दैत्यकी लडकी । रावणमहिषी । रावणकी पटरानी । रावणकी औरत.

मन्दोष्ण, (न०) मन्दं (ईषत्) उष्णम् । थोडा गरम । शीतगरम । उसवाला (त्रि०).

मन्द्र, (पु०) मदि+रक् । एक प्रकारका बाजा । गंभीर-ध्वनि । "अच्" उसवाला (त्रि०) । गहरी आवाज-वाला.

मन्मथ, (पु०) मननं मत् । मन्+क्विप् । मथति । अच् । ६ त० । विचारका नाश करनेहारा । कंदर्प । कामदेव । कपित्थ वृक्ष.

मन्मथालय, (पु०) मन्मथस्य आलयः । कामदेवका घर । आमका वृक्ष.

मन्यु, (पु०) मन्+युच् । शोक । दीनता । कायरपना । यज्ञ । क्रोध । गुस्सह । और अहंकार.

मन्वन्तर, (न०) मनूनां अन्तरं (अवकाशः) तदुपल-क्षितकालो वा । मनुओंके राज्य करनेका समय । स्वाय-म्भुव आदि मनुओंका अधिकार और उनसे पहिचाना गया समय । सत्ययुग आदि ७१ एकहत्तर चौकडिआं । (३११४४८०००) इतने वर्षका समय.

मभ्र, गति जाना । भ्वा० पर० सक० सेट् । मभ्रति । अ-मभ्रीत्.

मम, (अव्य) अस्मद् शब्दकी षष्ठीका एकवचन । मेरा.

ममता, (स्त्री०) मम भावः+तल् । मेरापन । अपनेका ज्ञान । स्नेह । प्यार.

मय्, गति जाना । भ्वा० आ० सक० सेट् । मयते अमयिष्ट.

मय, (पु०) मय्+अच् । उष्ट्र (ऊंट) । अश्वतर (वछेरा) । एकदैत्य.

मयु, (पु०) मि+उ । किन्नर (एक प्रकारकी देवता) । और हरिण.

मयूख, (पु०) माङ् ऊख "मय" का आदेश होता है । त्विष् । चमक । किरण । शिखा । लाट । और शोभा.

मयूर, (पु०) मी+ऊरन् । अपने नामसे प्रसिद्ध एक पक्षी । मोर । एक प्रकारका फूल । एककवि (सूर्यशतकका बना-नेवाला) । समयको मापनेका एक साधन । ताऊस.

मयूरकेतु, (पु०) मयूरः केतुः यस्य । मोरके झंडे (पताका) वाला । कार्तिकेय.

मयूरव्यंसक, (पु०) मयूरः व्यंसकः । धूर्त (खचरा) मयूर (मोर).

मयूरशिखा, (स्त्री०) मयूरस्य शिखा । मोरकी चोटी (कल्गी).

मयूरारि, (पु०) ६ त० । मोरका शत्रु । कृकलास । गिरगिट.

मरक, (पु०) मृ+वुन् । दैविक और भौतिक उपद्रवोंसे उत्पन्न हुआ प्राणिओंका विना समय मरना । मारिका-भय । ववा.

मरकत, (न०) मरकं (मारिभयं) तरति अनेन । तॄ+ ड । जिस्से मारिभय (वबा) को तरजाता है । हरे रंगकी एक मणि । पन्ना.

मरण, (न०) म्रियते अनेन । मृ+करणे ल्युट् । वत्सनाभ नामी विष (जहिर) । "भावे ल्युट्" शरीर और आत्माका अलग होना । प्राणवायुके निकलजानेका व्यापार । मरना । मौत.

मरन्द, (पु०) मरं (मरणं) द्यति (भ्रमराणां जीवन-हेतुत्वात्) । भौंरोंके जीवनका कारण होनेसे मौतको काटता है । मकरन्द । फूलोंका रस । "मरंदक" भी.

मराल, (पु०) मृ+आलच् । राजहंस । कज्जल । कारण्डव । घोडा । वादल । नीच । अनारका वन । चिक्कण (नर्म) (त्रि०).

मरीचि, (पु०) मृ+ईचि । सप्तर्षि (सात ऋषि)ओंमें-से ब्रह्माका मानसिक (मनसे उपजा) सबसे बडा पुत्र । एक मुनि और कृपण (सूम) । किरण (पु० स्त्री०).

मरीचिका, (स्त्री०) मरीचौ (सूर्यकिरणे) कं (जलं) इव यत्र भ्रान्तौ । जिस भ्रममें सूर्यकी किरणोंके बीच जलकी प्रतीति हो । सूर्यकी किरणोंमें पानीका भ्रम । मृगतृष्णा । सुराव । हरिणका लालच.

मरीचिगर्भ, (त्रि०) मरीचयः गर्भे यस्य । जिसके पेटमें आकाशकी किरणें हों । दीप्तिवाला.

मरीचिमालिन्, (त्रि०) मरीचीनां माला अस्ति अस्य+ इन् । किरणोंकी मालावाला । चमकदार । पु० सूर्य.

मरु, (पु०) मृ+उ । पर्वत (पहाड) । निर्जल देश (पानी-के विना देश) । कुरुवक वृक्ष । मारवाडका देश (मुल्क).

मरुत्, (पु०)मृ+उति । वायु (हवा) । और देवता । "स्वार्थेऽण्" "मारुत" यही अर्थ है । "मरुत्" भी "वायु" के अर्थमें है.

मरुत्त, (पु०) चन्द्रवंशका एक राजा । "संज्ञायां कन्" मरुबक.

मरुत्पथ, (पु०) ६ त० । देवताओंका मार्ग । आकाश । आस्मान.

मरुत्पाल, (पु०) मरुतो (देवान्) पालयति । पाल्+ अण् । जो देवताओंको पालता है । इन्द्र । देवताओंका राजा.

मरुत्वत्, (पु०) मरुत् (पाल्यत्वेन) अस्ति अस्य । मतुप् । "म" को "व" । जिसे देवताओंका पालन करना पडता है । इन्द्र.

मरुत्सख, (पु०) मरुतः (वायोः) सखा (टच्) । वायुका मित्र । इन्द्र । अग्नि (आग)। और चित्रक नामी दवाका वृक्ष.

मरुदान्दोल, (न०) मरुतं आन्दोलयति अनेन+करणे घञ् । हवा (वायु) को हिलाता है इस्से । व्यजन । पंखा.

मरुदिष्ट, (पु०) मरुतां (देवानां) इष्टः । देवताओंका पियारा । गुग्गुल । गुग्गुळ.

मरुभू, (पु०) ७ ब० । मरुर्भूमिर्यत्र । मारवाड देश । कर्म० । निर्जलभू । जलरहित पृथिवी.

मरुस्थल-स्थली, (न० स्त्री०) मरोः स्थलं । निर्जल-प्रदेश (जंगल) का स्थान । मारवाडकी भूमि.

मर्क्, गति । जाना । पर० सक० सेट् । मर्कति । अमर्कीत्.

मर्कट, (पु०) मर्क्+अटन् । वानर । वंदर । ऊर्णनाभ । मकडी । एक पक्षी.

मर्कटीजाल, (न०) छन्दोग्रन्थमें एक प्रस्ताव जिसमें लघु और गुरुके विचारको जाननेके लिये एक चक्र.

मर्कर, (पु०) मर्क्+अरच् । भृङ्गराज वृक्ष । भांड । बांझ औरत (स्त्री०).

मर्च्, ग्रहण (पकडना) चु० उभ० सक० सेट् । मर्चयति-ते । अममर्चत्-त.

मर्त, (पु०) मृ+तन् । मनुष्य । और पृथिवीका लोक । "वहांहुआ" यत् । "मर्त्यः" मनुष्य.

मर्दन, (न०) मृद्+ल्युट् । गात्रपादादिसंवाहन । मुट्ठी चापी करना । चूर्णन । चूरा करना । पीसना । मलना.

मर्दित, (त्रि०) चु० मृद्+क्त । चूर्णित । मलागया । पीसागया । और गुथागया.

मर्व, गति । भ्वा० पर० सक० सेट् । मर्वति । अमर्वीत्.

मर्मच्छिद्-भिद्-छेदिन्-भेदिन्, (त्रि०) मर्माणि छिनत्ति जीवनस्थान (जिगर) को काटनेवाला । जोडोंकी जगहको फाडनेवाला.

मर्मज्ञ, (त्रि०) मर्म जानाति । छिपीहुई बातको जाननेवाला । दुसरेकी निर्बल बातोंको जाननेहारा.

मर्मज्ञ, (पु०) मर्म जानाति । ज्ञा+क । तत्त्वज्ञ । छिपीहुई बातको जाननेहारा । दाना । रहस्यके जाननेहारा । "मर्मवित्" यही अर्थ.

मर्मन्, (न०) मृ+मनिन् । जीवनस्थान । जीनेकी जगह । संधिस्थान । जोडोंकी जगह । और तात्पर्य । मतलव । सार । भेद.

मर्व्, पूर्ति-भरना । भ्वा० पर० सक० सेट् । मर्वति । अमर्वीत्.

मर्मर, (पु०) मृ+अरन्-मुट् च । कपडों और पत्तोंकी आवाज (खडखडाहट) । मडमड । हलदी (स्त्री०).

मर्मस्पृश्, (त्रि०) मर्म (प्राणस्थानं) स्पृशति । स्पृश्+क्विन् । जो जीवनके स्थानको छूता है । अरुन्तुद । मर्मपीडक.

मर्या, (अव्य०) म्रियते (अवशिष्यते) अत्र । मृ+यत् । सीमा । हद्द । (स्त्रीलिङ्ग भी होता है)। "कर्तरि यत्" मनुष्य (पु०).

मर्यादा, (स्त्री०) मर्यायां (सीमायां) दीयते । दा+अच् । परि आदीयते वा । परि+आ+दा+अङ् । पृ० । "प" को "म" । न्याय्यपथस्थिति । न्याययुक्त (उचित-इन्साफवाले) मार्गमें रहना । सीमा । हद्द । और कूल । तट.

मल्, धृति-पकडना-काबूकरना । भ्वा० आ० अ० सेट् । मलते । अमलिष्ट.

मल, (पु०) मृज्यते (शोध्यते) मृज+कल-टिलोपः । जो (प्रायश्चित्तद्वारा) साफ कियाजाता है । पाप (गुनाह) । पुरीष । विष्ठा (गूह)-शरीरसे साफ कियाजाता है । लोहे आदिका मल । कलंक । शरीरमें उत्पन्नहुआ पसीना और श्लेष्म (खखार) आदि । कपूर । कृपण । सूम । वात पित्त और कफ । मैल.

मलघ्न, (पु०) मलं (विष्ठां) हन्ति (रेचयति) । हन्+क । मलको खाली करनेवाला । शाल्मलीका कन्द । "मलहा" यही अर्थ.

मलद्राविन्, (पु०) मलं द्रावयति (रेचयति) । द्रु+णिच्-अण् । मलको पिघलाता है । जयपाल । जमालगोटा.

मलधारिन्, (पु०) मलं धारयति । मलको उठानेवाला । जैनमतको एक धार्मिक संन्यासी.

मलमास, (पु०) मलः (दुष्टः) मासः । मैला (खराब) महीना । सूर्यकी संक्रान्तिसे शून्य शुक्लप्रतिपदा (पडवा) से अमावास्यातक चन्द्रमासम्बन्धी महीना । अधिकमास । बढाहुआ महीना । लौंदका महीना.

मलय, (पु०) मल्+कयन् । दक्षिणमें एक पर्वत (जहां चंदन उपजता है । उस पर्वतके पासका देशविशेष । उपवन (छोटावन) । नन्दनवन । नौ द्वीपोंमेंसे एक । ऋषभदेवका एक पुत्र.

मलयज, (न०) मलये (पर्वते) जायते । जन्+ड । मलय पहाडमें उपजता है । चंदन । मलय देशका वायु (हवा) (पु०) । उस देशमें उपजा (त्रि०).

मलाकर्षिन्, (पु०) मलं आकर्षति । मलको खेंचनेवाला । चाण्डाल । चूहडा.

मलारि, (पु०) मलस्य (कलंककिट्टादेः) अरिः । मैलका शत्रु । सर्वक्षारद्रव्य । हरएक तरहकी खारी चीज.

मलावरोध, (पु०) मलस्य अवरोधः । मलका रुकजाना.

मलाशय, (पु०) मलस्य आशयः । मलके रहनेका स्थान । पेट.

मलिन, (त्रि०) मल+अस्त्यर्थे इनच् । मलयुक्त । मैलवाला । मैला । दूषित । और काला । इनि "मली" यही अर्थ । सुहागा.

मलिनमुख, (पु०) मलिनं मुखं यस्य । जिसका मैला मुखं है । वह्नि (आग) । उसका पहिले धूम-धूआं होनेसे काला मुख होता है । और वानर (बंदर) । क्रूर (बेरहम) और नीच (त्रि०).

मलिम्लुच, (पु०) मली (वैदिककर्मानर्हत्वेन दुष्टः) सन् म्लोचति (गच्छति) । म्लुच्+क । वेदमें कहेहुए कर्मोंके अयोग्य होनेसे चलाजाता है अर्थात् इसमें शुभ कार्य नहिं हो सक्ते । मलमास । वायु (हवा) । अग्नि (आग) और तस्कर (चोर).

मलीमस, (त्रि०) मल्+ईमसच् । मलिन । मैला । लोहा.

मलोपहत, (त्रि०) मलेन उपहतः । मलसे माराहुआ (विगडा हुआ).

मल्ल, धृति-पकडना । भ्वा० आ० अक० सेट् । मल्लते । अमल्लिष्ट.

मल्ल, (पु०) मल्ल्+अच् । बाहुयुद्धकारक । भुजाओंसे लडाई करनेवाला । पहिलवान । बलवान । वर्तन । (पात्र) । कपोल (गाल-गल्ल) । देशविशेष । जातिविशेष.

मल्लभू, (स्त्री०) मल्लक्रीडनस्य (बाहुयुद्धस्य) योग्या भूः (स्थानम्) । भुजाओंसे लडाई करनेके लायक जगह । अखाडा । एकदेश । पहिलवानों (पट्ठों) के लडनेकी जगह.

मल्लयुद्ध, (न०) ६ त० । पहिलवानोंकी लडाई । बाहुयुद्ध.

मल्लार, (पु०) मल्ल इव ऋच्छति । ऋ+अच् । पहिलवानकी तरह जाता है । रागविशेष । एक रागिणी । वसन्तरागकी रागिनी । मेघरागकी रागिनी.

मल्लि-ल्ली, (स्त्री०) मल्ल् इन्-वा ङीप् । मल्लिका (मालतीकी बेल) । संज्ञायां कन् । एक प्रकारका हंस (जिसका शरीर काला और चोंच एवं चरण लाल होते हैं).

मश्, ध्वनि । आवाज करना । अक० । क्रोध करना । सक० पर० सेट् । मशति । अमशीत्-अमाशीत्.

मशक, (पु०) मश्+वुन् । एक प्रकारका कीडा । मच्छर.

मशि-सी, (स्त्री०) मश् (स्)+इन् वा ङीप् । पत्र लिखनेका द्रव्य । स्याही । शाई.

मष्, वध । मारना । भ्वा० पर० सक० सेट् । मषति । अमषीत् । अमाषीत्.

मस्, परिणाम-बदलना-पकना-परिमाण-मापना । दि० प० अक० सेट् । मस्यति । अमसत् । अमसीत्-अमासीत्.

मसिधान, (न०) मसिः धीयते अत्र+आधारे ल्युट् । जहां स्याही डाली जाती है । दवात । द्वात (स्त्री०) भी होता है । ङीप्.

मसिपण्य, (पु०) मसिः (तदुपलक्षितं अक्षरं) एव पण्यं (विक्रेयं) यस्य । स्याहीसे पहिचानाहुआ अक्षरही जिसका सौदा है । लेखनोपजीविन् । लिखनेकी जीविका करनेहारा । मुनशी । बाबू.

मसूरा, (स्त्री०) मस्+अरच् । मसूर । मसूर (मसरां)-की दाल.

मसूरिका, (स्त्री०) मसूरेव+इवार्थे कन् । कुट्टनी (दूसरे पुरुषोंके साथ पराई स्त्रियोंको मिलानेवाली औरत) । चेचककी बीमारी.

मसृण, (त्रि०) मस्=ऋण । स्निग्ध । चिकना । और अकर्कश । नरम.

मस्क, गति । जाना । भ्वा० पर० अक० सेट् । मस्कति । अमस्किष्ट.

मस्कर, (पु०) मस्क्+अरच् । वंश (बांस) । छेकवाला बांस । "भावे अरच्" गति (जाना) । और ज्ञान (जान्ना).

मस्करिन्, (पु०) मस्करो (ज्ञानं) गतिर्वास्ति अस्य इनि । ज्ञान वा गतिवाला । "माकर्तुं (कर्म निषेद्धुं) शीलं अस्य । मा+कृ+इनि" । जिसका स्वभाव कर्मको निषेध करनेका है । "मस्करमस्करिणौ" इति नि० । परिव्राजक । संन्यासी । विधिसे कर्मका परित्याग करनेवाला भिक्षु (फकीर-साधु) । और चन्द्रमा । चांद.

मस्ज, स्नान (नहाना) तु० पर० अक० अनिट् । मज्जति । अमाङ्क्षीत् । मग्नः.

मस्त-क, (न०) मस्+क्त । मस्तक (माथा) । उच्च (ऊंचा) (त्रि०) । और सीर (संज्ञामें कन्).

मस्तकस्नेह, (पु०) ६ त० । माथेकी चिकनाई । शिरःस्थित मज्जा । सिरकी मज्जा (घीके स्वरूपमें चिकनाई) । मस्तिष्क (मगज).

मस्तमूलक, (न०) मस्तस्य मूलं इव (इवार्थे कन्) । माथेकी मानों जड है । शिरोधरा । सिरको उठानेहारी गर्दन । गला.

मस्तिष्क, (न०) मस+क्तिन् । मस्ति (परिणतिभेदं) मुष्कति । मुष्क् गति (जाना)+अच्-पु० । मस्तकस्थस्नेहाकार पदार्थ । माथेमें चिकने स्वरूपका एक पदार्थ । मगज.

मस्तु, (न०) मस्त+उ । दधिमण्ड । दहीका पानी । छाछ । लस्सी.

मह्, पूजा करना । भ्वा० पर० सक० सेट् । महति । अमहीत्.

मह्, दीप्ति (चमकना) चु० १० अक० सेट्-इदित्। मंहयति-ते.

मह्, बढना। भ्वा० आ० अक० सेट्-इदित्। मंहते। अमंहिष्ट.

मह, (पु०) मह्+क। उत्सव। खुशी। सदा आनंद देनेहारा व्यापार। तेज। यज्ञ। याग। महिष। भैंसा.

महत्, (त्रि०) मह्+अति। विपुल। फैलाहुआ। बडा। और बूढा। राज्य (न०) सांख्यमें कहाहुआ महत्तत्त्व (पु०) "प्रकृतेर्महान्" इति श्रुतिः.

महती, (स्त्री०) मह+अति-ङीष्। एक प्रकारकी बीन। नारदजीकी बीन.

महत्तत्त्व, (न०) कर्म०। सांख्यमें कहाहुआ प्रकृति आदि चौबीस तत्त्वोंमें प्रकृतिका कार्य अहंकारका आदिकारण निश्चयस्वरूपवृत्तिवाला एकतत्त्व। बडा तत्त्व। बुद्धि। अकिल.

महर्लोक, (पु०) कर्म०। भूआदि ऊपरके सात लोकोंमेंसे लोक। ऊपरका एक लोक.

महर्षि, (पु०) कर्म०। परमर्षि शब्दके अर्थमें (वेदव्यास आदि.

महस्, (न०) मह्+असुन्। तेज। यज्ञ और उत्सव.

महाकाय, (पु०) ६ ब०। बडे शरीरवाला। शिवजीके सेवकोंमेंसे एक (नन्दी)। और हाथी। मोटे शरीरवाला (पु०).

महाकार्तिकी, (स्त्री०) कार्तिकीं अधिकृत्य। रोहिणीनक्षत्रवाली कार्तिक (कत्तक) की पूर्णिमा.

महाकाल, (पु०) कर्म०। अनवच्छिन्न काल। लगातार समय। और शिवजी। एक बेल। भैरवविशेष.

महाकाव्य, (न०) कवेः कर्म काव्यं। कर्म०। सर्गोंमें बंधाहुआ आठसे अधिक सर्गवाला एक ग्रन्थ.

महाकुल, (न०) कर्म०। दशपुरुषावधि-वेदाध्यायी वंश। वह कुल कि जिसमें दस पीढीतक वेद पढते पढाते चले आते हैं। बडा कुल (खान्दान).

महागन्ध, (न०) महान् गन्धः अस्य। बडे गंधवाला। हरिचंदन। जलवेतस वृक्ष (पु०)। नागबला (स्त्री०).

महागुरु, (पु०) कर्म०। बडा गुरु (माता, पिता, आचार्य)। दान कीगई कन्याका पति। न दान कीगई कन्याका पिता और माता.

महाग्रीव, (पु०) महती ग्रीवा अस्य (बडी गर्दनवाला)। उष्ट्र। ऊंठ। लंबी गर्दनवाला (त्रि०).

महाङ्ग, (पु०) महत् अङ्गं अस्य। बडे अंगवाला। ऊंठ। फैलेहुए अंगवाला (त्रि०)। गोक्षुरक (पु०).

महाच्छाय, (पु०) महती छाया यस्य। बडी छायावाला। वटवृक्ष (बडका दरख्त)। विपुल छायायुक्त (त्रि०).

महाजन, (पु०) कर्म०। वेदके वाक्योंमें विश्वास करनेहारा जन (पुरुष वा स्त्री)। "महाजनो येन गतः स पन्थाः" इति भारतम्.

महाज्यैष्ठी, (स्त्री०) जेठके महीनेमें विशेष लक्षणवाली एक प्रकारकी पूर्णिमा (पूनों).

महाढ्य, (पु०) महेन (उत्सवेन) आढ्यः। उत्सवसे भराहुआ। कदंबका वृक्ष। कर्म०। बडे धनवाला (त्रि०).

महातल, (न०) कर्म०। नीचेके पातालोंमेंसे पांचवां पाताल.

महातारा, (स्त्री०) कर्म०। बडी तारनेवाली। जिनदेवी। जैनोंकी देवी.

महातीक्ष्ण, (स्त्री०) कर्म०। भल्लातकवृक्ष (भेला)। अतितीव्र (बहुततेज) (त्रि०).

महातेजस्, (पु०) महत् तेजः अस्य। जिसका बडा तेज हो। पारद (पारा)। अतितेजस्वी। बडे तेजवाला (त्रि०) कार्तिकेय (स्वामिकार्तिक)। और आग (पु०).

महात्मन्, (त्रि०) महान् आत्मा (स्वभावः) आशयो यस्य। बडे आशयवाला। महाशय-नेक.

महादान, (न०) कर्म०। "तुलापुरुष" आदि सोलह पदार्थोंका दान (देना)। बडादान.

महादेव, (पु०) कर्म०। बडी देवता। शिवजी (सब देवोंमें बडा है).

महाद्रुम, (पु०) कर्म०। अश्वत्थ वृक्ष। पीपलका दरख्त। (उसे विष्णुका रूप होनेसे बडापन है)। बडावृक्ष.

महाधन, (पु०) महत् (मूल्यरूपं) धनं अस्य। बडे मोलवाला। सुवर्ण। सोना। सिल्हक। मनोहर वस्त्र (कपडा)। खेती (पु०) धनी (त्रि०).

महाधातु, (पु०) कर्म०। बडा धातु। सुवर्ण। सोना.

महानदी, (स्त्री०) ओड्र देशमें एक नदी है। समुद्रमें जानेहारी नदी। गंगा.

महानन्द, (पु०) महान् (अतिवृहत्) आनन्दो यत्र। जहां बहुतही आनन्द है। मोक्ष (छुटकारा) कर्म०। अतिशयानन्द। बहुत आनन्द (पु०)। माघके शुक्लपक्षकी नवमी। सुरा (शराब)। और एकनदी (स्त्री०).

महानन्दि, (पु०) कलियुगमें क्षत्रिओंके अन्तकरनेवाला महापद्मनामी नृपविशेष (एक राजा) का पिता (बाप).

महानवमी, (स्त्री०) कर्म०। आश्विन (असु) के शुक्लपक्षकी नवमी.

महानस, (न०) महत् अनः+संज्ञायां अच्। पाकस्थान। रसोईखाना.

महानाटक, (न०) दृश्यं (देखनेलायक) काव्य वा नाटकविशेष। हनूमन्नाटक.

महानाद, (पु०) महन् नादः अस्य । जिसका बडा शब्द है । गज (हाथी) । गर्जन्मेघ । गाजने (गज्जने)वाला बादल । सिंह (शेर) । और ऊंठ.

महानिद्रा, (स्त्री०) कर्म० । बडी नींद । मरण । मौत । (इसमें फिर नहिं उठते).

महानिशा, (स्त्री०) बडी रात । रात्रिके बीचले दो पहिर.

महानुभाव, (पु०) महान् अनुभावः आशयो यस्य । जिसका वडा आशय (खयाल) हो । महाशय । नेक.

महापथ, (पु०) कर्म० । बडा मार्ग । राजमार्ग । राजाकी सडक । बडी सडक । हिमालयके उत्तरमें स्वर्गके चढनेका रास्ता.

महापद्म, (पु०) कर्म० । आठ नागोंमेंसे एक । एक नाग (सांप) । कुबेरका खजाना (निधि) । अयुत कोटी संख्या । एक खास बडी गिन्ती (संख्या) । उस संख्या-वाला । एक राजा.

महापातक, (न०) वडा पातक (पाप) । ब्रह्महत्या । (ब्राह्मणको मारना) सुरापान (शराबका पीना) स्तेय (चोरी करना) गुर्वङ्गनागम (गुरुकी स्त्रीके साथ संभोग करना) और इन चारोंके साथ मेल करना (तत्संसर्ग) ये पाँच "महापातक" हैं.

महापुराण, (न०) सृष्टि आदि ग्यारह लक्षणोंवाला व्यास-मुनिका रचाहुआ पुराणविशेष.

महापुरुष, (पु०) कर्म० । बडा पुरुष । पुरश्रेष्ठ । देवता-ओंमें बहुत अच्छा । और नारायण । "वंदे महापुरुष ! ते चरणारविन्दं" इति भागवतम्.

महापूजा, (स्त्री०) महती पूजा । बडी पूजा । विशेष अवस-रोंपर कीगई खास पूजा.

महापृष्ठ, (पु०) महत् पृष्ठं यस्य । बडी ऊंची पीठवाला । उष्ट्र । ऊंठ.

महाप्रतीहार, (पु०) महान् प्रतीहारः । मुख्य द्वारपाल । खास दर्वान.

महाप्रपञ्च, (पु०) महान् प्रपञ्चः । बडा विस्ता । बडी दुनियां । बडा जगत्.

महाप्रभु, (पु०) महान् प्रभुः । बडा स्वामी.

महाप्रलय, (पु०) कर्म । बडी प्रलय । "ब्रह्मणो दिनावसाने जायमानः सर्वभूतक्षयः प्रलयः" (ब्रह्माका एक दिन समाप्त होजानेपर उत्पन्नहुआ सम्पूर्ण भूतोंका नाश प्रलय है) "तस्यैव स्वमानेन शतवर्षावसाने जायमानस्तु महान् प्रलयः" (उसीके अपने मापसे एक सौ वर्ष बीत जानेपर उत्पन्नहुआ महाप्रलय होता है) । वह समय कि जब उप-जेहुए पदार्थोंका कोईभी आश्रय नहिं रहता । अथवा वह काल कि जब उपजनेलायक भावका अधिकरण (अवलम्ब आसरा) कोई नहिं । तीन लोकोंका नाश । ब्रह्माका एक सौ वरिस.

महाप्रसाद, (पु०) बडा प्रसाद । प्रसन्नता-खुशी । विष्णु आदि देवताओंको निवेदन कियाहुआ । देवनैवेद्य (देव-ताको निवेदन कर प्रसाद लेना उचित है).

महाप्राण, (पु०) महान् (बहुकालस्थायित्वात्) श्रेष्ठः प्राणः अस्य । (बहुत समयतक रहनेसे) जिसका प्राण बहुत अच्छा है । द्रोण नामी एक प्रकारका कौवा । कर्म० । अक्षरके उच्चारण (बोलना) करनेका बाह्य प्रयत्नविशेष (एक प्रकारका बाहिरसे हुआ यत्न-कोशिश).

महाफल, (पु०) महत् (पत्रापेक्षया) वृहत् फलं अस्य । पत्तेकी अपेक्षा (बनिस्बत) जिसका फल बडा हो । बिल्व-वृक्ष (बिल्वका दरख्त) । इन्द्रवारुणी (स्त्री०).

महाबल, (पु०) महत् बलं यस्य । जिसका बडा बल (जोर) है । वायु (हवा) और बुद्ध (अवतार) । बलवाला (त्रि०) "महत् बलं यस्मात्" ५ ब० । सीसक (सीसा) (न०).

महाबाहु, (त्रि०) महान् बाहुः यस्य । बडी भुजा (बांह)-वाला । शक्तिमान् । ताकतमंद.

महाब्राह्मण, (पु०) महान् ब्राह्मणः । बडा वा शिक्षित ब्राह्मण । नीच वा निन्दाके योग्य ब्राह्मण.

महाभाग, (त्रि०) महान् भागः यस्य । बडे भाग्यवाला । भाग्यशूर । धन्य । बडा दौलतमन्द.

महाभागवत, (न०) महत् भागवतम् । बडा भागवत । अट्ठारहमेंसे एक पुराण.

महाभारत, (पु० न०) "किसी समय सम्पूर्ण देवता-ओंने मिलकर साङ्ग सरहस्य चारों वेदों और भारतको तोलकर देखा तो यही सबसे अधिक (जियादा) हुआ तभीसे इसका नाम "महाभारतं (बडा भारत)" हुआ । व्यासदेवका रचाहुआ लाख श्लोकका एक ग्रन्थ.

महाभाष्य, (न०) महत् भाष्यम् । बडा भाष्य (व्याख्या) । पाणिनीके सूत्रोंपर पतञ्जलि मुनिकी बडी व्याख्या.

महाभीता, (स्त्री०) कर्म० । लज्जाकुलता (छूनेहीसे सिकुड जाती है इस्से बहुत डरनेवाली है) । बहुत डराहुआ (त्रि०).

महाभूत, (न०) कर्म० । सबी पांचका स्वरूप होनेसे मोटे हो गये बडे पृथिवी, जल, तेज, वायु और आकाश ये पांच भूत । बडा भूत (त्रि०).

महामद, (त्रि०) महान् मदः यस्य । बहुत मस्त (मतवारा) होगया । बडामस्त.

महामनस्, (त्रि०) महत् उदारं मनः (तद्व्यापरः) अस्य । जिसके मनका व्यापार बडा हो । महाशय । खुलादिल । दिलावर । फैयाज.

महा-महावारुणी, (स्त्री०) एक प्रकारका योग । शनिवार, शतभिषा नक्षत्र, शुभ योगसहित चैत्रमासके कृष्णपक्षकी त्रयोदशी.

महामहोपाध्याय, (पु०) महान् महान् उपाध्यायः । बडे=उपाध्याय (शिक्षक) बडाभारी शिक्षक । यह उपाधि भारी शिक्षित और प्रसिद्ध विद्वानोंको दीजाती है.

महामात्र, (त्रि०) मापमें बडा । बहुत बडा । बहुत उंदा । –त्रः । प्रधानामात्य । बडा वजीर । "मन्त्रे कर्मणि भूषायां वित्ते माने परिच्छदे । मात्रा च महती येषां महामात्रास्तु ते स्मृताः" । हाथी चलाने वा रखनेवाला । हाथीओंपर हुक्म चलानेवाला.

महामाया, (स्त्री०) कर्म० । अन्यस्मिन् अन्यधर्मावभासो हि माया सर्वजगन्मूलत्वात् तस्या महत्वम् । औरमें औरही धर्मकी प्रतीति होना माया है । सारे जगत्का मूलकारण होनेमें उसे बडापन है । जगत्का कारणस्वरूप अविद्या और तदधिष्ठात्री (उस अविद्याका आश्रय) दुर्गा । "महामाया हरेश्चैषा तया संमोह्यते जगत्" इति चण्डी.

महामारी, (स्त्री०) महती मारी । बडी मृत्यु (मौत) देनेवाली बीमारी । विषूचिका । हैजेकी बीमारी.

महामाष, (पु०) कर्म० । राजमाष । बडे मां (मूंगी आदिसे बडे होते हैं).

महामूल्य, (त्रि०) महत् मूल्यं यस्य । बडे मोलवाला ।

महामृग, (पु०) महान् मृगः (पशुः) बडा पशु । गज (हाथी) । शरभ.

महामृत्युंजय, (पु०) कर्म० । बडा मौतको जीतनेवाला । शिवजीका एक प्रकारका मन्त्र (ॐ जूं सः).

महामेद, (पु०) (स्त्री०) ६ व० । वैद्यकमें प्रसिद्ध एक प्रकारकी दवाई.

महामोह, (पु०) महान् मोहः (भ्रान्तिहेतुको वस्तुतोनिष्टेष्वपि रागः) बडा मोह (भ्रमसे उत्पन्न हुए वास्तविक अनिष्ट पदार्थोंमें प्रीति करना) । संसार और उसके विषयोंमें प्रीतिको उत्पन्न करानेहारा एक प्रकारका अज्ञान (बेसमझी) । "मनका विभ्रम (भूलना) तम, अविवेक और मोह है, परन्तु ग्राम्यभोगसुखैषणा (गांवमें रहनेवालोंके भोगसम्बन्धी सुखकी इच्छा)का नाम महामोह होता है" । मैथुन (स्त्रीके साथ जुडना) आदि सुखभोगकी इच्छारूप अन्तःकरणकी वृत्तिविशेष । "विषयोंका सुख वास्तविक अनिष्ट होनेसे ऐसा कहाहै".

महायज्ञ, (पु०) कर्म० । गृहस्थके नित्य करनेलायक वेदपाठ आदि पांच यज्ञ-पाठ-होम-अतिथिकी पूजा-तर्पण और ब-लिवैश्वदेव । बडा यज्ञ.

महारथ, (पु०) बडा रथ । "एकही दशसहस्रधनुर्धारिओंका सामना करे, और शस्त्र और शास्त्रमें निपुण हो" एक ऐसा भारी बहादुर कि जिस्के साथ दस हजार तीरंदाज हो । एक प्रकारका योद्धा (लडनेवाला सूरमा) । शिव.

महारस, (पु०) ६ व० । खर्जूर (खजूर) । इक्षु (गन्ना) । पारा । और काञ्जिक (कांजी).

महाराज-(जि) क, (पु०) महान् सन् राजते+वुन् पृ० इत्वं वा । दो सौ बीस संख्यावाला गणविशेष । गणदेवता.

महाराज्ञी, (स्त्री०) महती राज्ञी । बडी रानी । मुख्य (खास) रानी । राजाकी मुख्य स्त्री (औरत).

महारात्रि, (स्त्री०) "ब्रह्माके समाप्त होनेपर महाकल्प होता है उसेही महारात्रि कहते हैं" । महाकल्पस्वरूप महाप्रलय । तन्त्रमें आधीरातके पीछेकी दो घडी.

महाराष्ट्र, (पु०) कर्म० । महरटोंका देश । गजपिप्पली । और एक प्रकारकी बोली (स्त्री०) ङीष्.

महारोग, (पु०) कर्म० । महापापसे उपजे मिरगी आदि आठ रोग (बीमारिआं) । महापातकजन्योन्मादादि रोग.

महारौद्र, (त्रि०) महान् रौद्रः । बडा भयानक (डरावना) —द्री (स्त्री०) दुर्गाका नाम.

महारौरव, (पु०) रुरोः अयं+अण् । कर्म० । बडा नरकविशेष.

महार्घ, (त्रि०) महान् अर्घः (मूल्यं) अस्य । जिसका बडा मोल हो । बडे मोलवाला । महामूल्य.

महार्णव, (पु०) कर्म० । बडा समुद्र । महासमुद्र.

महालय, (पु०) महान् (आत्यन्तिकः) लयः यत्र । जहां पूरा लय है । परमात्मा (इसमें सब कुछ लीन हो जाता है) कर्म० । बडा आलय (घर) । तीर्थका स्थान । विहार (खेल) । आश्विनकृष्णपक्ष (अस्सूका काला पखवाडा) (न०).

महालक्ष्मी, (स्त्री०) कर्म० । बडी लक्ष्मी । अठारह भुजावाला दुर्गाकी शक्तिका भेद । तन्त्रमें लक्ष्मीविशेष.

महावराह, (पु०) कर्म० । बडे वराह (शूकर-सूअरके रूपको धारण करनेहारा भगवानका एक अवतार.

महावरोह, (पु०) महान् अवरोहः अस्य । जिसका बडा चढाव है । वटवृक्ष । बडका दरख्त.

महावाक्य, (न०) कर्म० । बडा वचन । परस्पर संबद्धार्थक (आपसमें बंधेहुए अर्थवाला) वाक्यसमुदायरूप (बहुतसे वाक्योंके स्वरूपमें) एक वाक्य (एक वचन-लंबा (फिकरा) । "वाक्यानामेकवाक्यत्वं पुनः संहत्य जायते" इति मीमांसकाः । वेदान्तमें ब्रह्मविद्याको प्रतिपादन करनेहारा "तत्त्वमसि" आदि उपनिषदोंका वचन । दान आदिमें अभिलाष वचन (संकल्पका पढना).

महाविद्या, (स्त्री०) कर्म० । बडी विद्या । काली आदि दस देवियें (काली, तारा, षोडशी, भुवनेश्वरी, भैरवी, छिन्नमस्ता, धूमावती, बगला, मातङ्गी और कमलात्मिका).

महाविषुव, (न०) रवेर्मेषसंक्रमणे । सूर्यका मेष राशिमें जाना.

महावीचिं, (पु०) नास्ति अवीचिः (सुखं) यत्र । कर्म० । जहां सुख नहीं । सुखसे रहित । एक नरक.

महावीर, (पु०) कर्म० । बडा बहादुर । गरुड । हनुमान् । सिंह (शेर) । यज्ञकी अग्नि (आग) । वज्र । चित्रा घोडा । कोकिल (कोइल) । धनुर्धर (तिरंदाज).

महावीर्य, (पु०) ६ व० बडे वीर्यवाला (त्रि०).

महाव्याधि, (पु०) कर्म० । बडी बीमारी । महारोग (कुष्ठआदि).

महाव्याहृति, (स्त्री०) कर्म० । वेदमें "भूः" "भुवः" "स्वः" तीन मन्त्र.

महाव्रण, (न०) कर्म० । दुष्टव्रण । वडा जखम । वडा फोडा.

महाव्रत, (न०) कर्म० । अतिशयव्रत । बडा व्रत । शरत्कालमें दुर्गापूजा आदि । बारह वर्षका एक व्रत.

महाशक्ति, (पु०) महती शक्तिः यस्य । बडी शक्तिवाला । शिव । कार्तिकेय.

महाशङ्ख, (पु०) कर्म० । तन्त्रमें एक प्रकारकी जपमाला । जो मनुष्योंकी खोपडीसे बनाई जाती है । कान और आंखके बीचकी हड्डी । वडा शंख । "पौण्ड्रं दध्मौ महाशङ्खं" इति गीता.

महाशठ, (पु०) कर्म० । राजधतूरा । वडा धूर्त (त्रि०).

महाशब्द, (त्रि०) महान् शब्दः यस्य । बडे शब्द (आवाज) वाला.

महाशय, (त्रि०) महान् (उदारः) आशयः यस्य । बडे आशयवाला । महानुभावः । दिलावर । फैयाज । साहिब.

महाशाल, (पु०) महती शाला यस्य । बडी शालावाला । बडा भारी गृहस्थ.

महाशासन, (त्रि०) महत् शासनं यस्य । बडी आज्ञा (हुक्म) वाला । बडी शक्तिवाला ।--नं (न०) सर्कारकी बडी आज्ञा (हुक्म).

महाशूद्र, (पु०) कर्म० । आभीर (अहीर) बडाशूद्र । एक जाति.

महाश्मशान, (न०) कर्म० । काशी । यहां सम्पूर्ण एक कर्मसहित सब जीवोंकी फिर उत्पत्ति न होनेके लिये नाशका आधार होनेसे ऐसा कहा है । बडा मसान.

महाश्रमण, (पु०) महान् श्रमणः । बुद्धदेवका नाम । बडा संन्यासी.

महाष्टमी, (स्त्री०) कर्म० । आश्विन (अस्सू) के शुक्लपक्षकी अष्टमी.

महासान्तपन, (न०) कर्म० । एक व्रत जो सात दिनमें समाप्त होता है.

महासेन, (पु०) महती सेना अस्य । कार्तिकेय (जिसकी बडी सेना है) । बडी सेनाका अधिपति (मालिक) (त्रि०).

महाहविस्, (न०) महत् हविः । बडा हविः । शुद्ध किया हुआ मक्खन । घी.

महि-ही, (स्त्री०) मह्+इन् वा ङीप् । पृथिवी । मालवदेशमें एक नदी (मही).

महिका, (स्त्री०) मह्यते । मह्+कन् । हिम । बर्फ.

महिन्, (पु०) महतो भावः । महत्त्व । बडापन । बडाई । ईश्वरका एक ऐश्वर्य । आठ सिद्धिओंमेंसे एक.

म(मि)हिर, (पु०) मह् (मिह) किरच् । सूर्य । सूरज.

महि(हे)ला, (स्त्री०) मह्+इलच् । योषित् । औरत । स्त्री । प्रियङ्गुलता । रेणुका नामी गंधका द्रव्य । मत्ता स्त्री । मस्त औरत । "महेला".

महिष, (पु०) मह्+टिषच् । अपने नामसे प्रसिद्ध एक पशु । भैंसा । महिषासुर (भैंसेके स्वरूपका एक दैत्य) । राजाकी कृताभिषेका (जिसका राजाके साथ अभिषेक हुआ) स्त्री । महिषजातिकी स्त्री । और एक औषध (दवाई).

महिषध्वज, (पु०) महिषः ध्वजः (चिह्नं-वाहनत्वेन) अस्य । जिसकी सवारी भैंसा है । यमराज । "महिषवाहन" यही अर्थ.

महिषमर्दिनी, (स्त्री०) महिषं (महिषासुरं) मृद्नाति । मृद्+णिनि+ङीप् । ६ त० । महिषको मल डालती है । दुर्गाभेद । एक देवी.

महिषासुर, (पु०) रम्भनामी दैत्यसे महिषीमें उत्पन्न कियागया एक दैत्य । महिषनामी गुग्गुल.

महीक्षित्, (पु०) महीं क्षयते (ईष्टे) । क्षि-ऐश्वर्यहकूमत करना । क्विप्-तुकच । पृथिवीपर हकूमत (आज्ञा) कर्ता है । नृप । राजा.

महीज, (न०) मह्या जायते । जन्+ड । पृथिवीसे उपजता है । आर्द्रक । अदरक । मङ्गलनामी ग्रह । और नरकासुर (पु०).

महीध्र, (पु०) महीं धारयति । धृ+क । पृथिवीको धारण कर्ता है । पर्वत (पहाड) अच् । "महीधर" यही अर्थ.

महीप्राचीर, (न०) मह्याः प्राचीरं इव (आवरकत्वात्) । पृथिवीका मानो प्राचीर (सफील) है (क्योंकि वह पृथिवीको ढांकेहुए है) । समुद्र । समुंदर.

महीभृत्, (पु०) महीं बिभर्ति (धारयति-पालयति वा) भृ+क्विप् । पृथिवीको धारण वा पालन कर्ता है । पर्वत (पहाड) । और राजा.

महीयस्, (त्रि०) अतिशयेन महान् । महत्+ईयसु । अति महान् । बहुत बडा । "महतो महीयान्" इति श्रुतिः.

महीयमान, (त्रि०) महीयते । मही+कण्ड्वा० यक् शानच् । पूज्य । पूजाके लायक । और बहुत अच्छा । श्रेष्ठ.

महीरुह, (पु०) मह्यां रोहति । रुह+क । पृथिवीपर उगता है । वृक्ष । दरख्त । और साग शाक.

महेच्छ, (त्रि०) महती इच्छा यस्य । जिसकी बडी इच्छा है । महाशय । साहब.

महेन्द्र, (पु०) महान् इन्द्रः (इन्द्रस्यापि नियन्तृत्वात्) । बडा इन्द्र (इन्द्रपर भी हुक्म चलानेसे) । परमेश्वर । बडे ऐश्वर्यवाला इन्द्र । जम्बुद्वीपका एक पर्वत (पहाड).

महेन्द्रपुरी, (स्त्री०) ६ त० । इन्द्रकी पुरी । अमरावती । महेन्द्रनगरी.

महेश, (पु०) कर्म० । बडा ईश (मालिक) । शिवजी "महेश्वर".

महेशबन्धु, (पु०) ६ त० । शिवजीका बंधु । बिल्ववृक्ष । बिल्वका दरख्त.

महैला, (स्त्री०) कर्म० । स्थूलैला । मोटी इलायची.

महोक्ष, (पु०) महान् उक्षा । अच् समा० । बृहद्वृष । बडा बैल.

महोत्सव, (पु०) कर्म० । सन्तत सुखसम्पादक व्यापार । निरन्तर सुख देनेहारा काम । बडी खुशी.

महोत्साह, (त्रि०) महान् उत्साहो यस्य । जिसे बडा उद्यम है । बडा हिम्मती.

महोदधि, (पु०) कर्म० । समुद्र । समुंदर.

महोदय, (पु०) महान् उदयः (वृद्धिः-आधिपत्यं वा) यत्र । बडे उदयवाला । कान्यकुब्जदेश (कन्नौज) । आनंद । प्रताप । अहंकार.

महोन्नत, (पु०) कर्म० । तालका वृक्ष । बहुत ऊंचाई-वाला (त्रि०).

महोरग, (पु०) कर्म० । एक प्रकारका बडा साँप.

महौषधि, (स्त्री०) कर्म० । दूर्वा । लज्जालुलता । दूब । लाजवंती बेल । स्नान (न्हाना)की दवाइयें-जैसे-सह-देवी-व्याघ्री-बला-अतिबला-शंखपुष्पी-सिंही-सुवर्चला.

मा, शब्दकरना । अक० । मापना (मान) सक० जु० आ० अनिट् । मिमीते । अमित.

मा, मापना (मान) अदा० पर० सक० अनिट् । माति । अमासीत्.

मा, मापना (मान) दिवा० आ० सक० अनिट् । मायते । अमास्त.

मा, (अव्य०) वारण (हठाना) यह विशेषकर लोट्के साथ लगता है । लुङ्के साथ भी आता है, तब उसके अट् (अ)का लोप हो जाता है । कभी २ अट् (अ)का लोप नहिं भी होता "मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः" इति रामायणे । पाणिनीके मतमें यहां अङित् अर्थात् "मा" शब्द है-अट् (अ)का लोप केवल ङित् अनुबंधमें होता है । कभी २ लङ्-लृट् और विधिलिङ्के साथभी आता है । "मा+क+टाप्" लक्ष्मी । और माता (स्त्री०) "मा+भावे क्विप्" मान । मापना (स्त्री०).

मांस, (न०) मन्-स-दीर्घश्च । प्राणीके शरीरमें लोहूके परिपाक (पकना)से उत्पन्न हुआ एक प्रकारका धातु । मांस । "मुझको "मां" और "स" (वह)" जिसे मैं खाताहूं वही मुझे किसी समय खायगा । मनुः.

मांसज, (न०) मांसात् जायते । जन्+ड । मांससे उत्पन्न हुई देहकी चर्वी.

मांसल, (त्रि०) मांस+बलवाला-इस अर्थमें "लच्" । बलवाला । जोरावर । स्थूल । मोटा । और पुष्ट । पलाहुआ.

मांससार, (पु०) ६ त० । मेद । चर्वी । "मांसस्नेह" यही अर्थ है.

मांसिक, (त्रि०) मांसं पण्यं अस्य+ठक् । मास जिस-का सौदा है । मांस बेचकर जीनेहारा । कसाई.

माकन्द, (पु०) माति । मा+क्विप् । माः (परिमितः) कन्दः अस्य । जिसका मूल मापाहुआ (छोटासा) है । आम्र । आम । आमलकी । पीलाचंदन । चंदन । एक नगर (स्त्री०) ङीष्.

माकरी, (स्त्री०) मकरस्य (तत्स्थरविकालस्य) इयं+अण् । मकर राशिमें आयेहुए सूर्यके समयकी । माघमासके शुक्ल-पक्षकी सप्तमी.

माक्ष्, स्पृहा-चाहना । भ्वा० पर० सक० सेट् । इदित् । मांक्षति । अमांक्षीत्.

माक्षि, (क्षी) क, (न०) माक्षिकाभिः सम्भृत्य कृतं । मक्खिओंने इकठी होकर बनाया+अण् । पृ० वा दीर्घः । एक प्रकारका उपधातु । मधु (शहत-छत्ता).

माक्षिकज, (न०) मक्षिकात् जायते । जन+ड । माखीसे उपजता है । सिक्थक । मोम.

मागध, (पु०) मगधदेशे भवः+अण् । मगधदेशमें हुआ । श्वेतजीरक (चिट्टा जीरा) । स्तुतिपाठक । भाट । भट्ट । एकप्रकारका वर्णसंकर (दोगला) । मगध देशमें उपजा (त्रि०) यूथिका । पिप्पली । छोटी इलाइची । शर्करा (खांड) एक प्रकारकी भाषा (बोली) (स्त्री०) ङीप्.

माघ, (पु०) मघानक्षत्रयुक्ता पौर्णमासी माघी । सा अत्र मासे+अण् । चेतसे ग्यारवां चन्द्रसम्बन्धी महीना । माघका महीना । उस महीनेकी पौर्णमासी माघी (स्त्री०) । शिशु-पालवधनामी काव्य । और उस काव्यका बनानेहारा कवि (पु०).

माघ्य, (न०) माघे भवं । माघमें हुआ । कुन्दपुष्प । कुन्द-का फूल.

माङ्गल्यं, (न०) मङ्गलं एव मङ्गलाय हितं वा+ष्यञ् । मङ्गल वा मङ्गलके लिये हितकारी । और मङ्गलका साधन । भलाईके लिये उपकारी.

माचिका, (स्त्री०) मच्+ण्वुल् । मक्षिका । मक्खी.

माञ्जिष्ठ, (न०) मञ्जिष्ठया रक्तं+अण् । मजीठसे रंगाहुआ लाल रंग । उसवाला (त्रि०).

माठर, (पु०) मन्+अरन् । ठान्तादेशः । ततः स्वार्थे अण् । सूर्यस्य पारिपार्श्वे मठति । अरण् वा । सूर्यका पारिपार्श्विक (आसपास रहनेवाला) एक गण.

माणव, (पु०) मनोः अपत्यं+अण् । अल्पार्थे णत्वं । अल्पवयस्क मनुष्य । छोटी उमरका आदमी । "स्वार्थे कन्" । एकहार.

माणवीन, (त्रि०) माणवस्य इदं+खञ् । बालकका । बालकसम्बन्धी.

माणव्यं, (न०) माणवानां समूहः+यत् । बालकोंका समूह.

माणिक्य, (न०) माणिरिव कायति । कै+क । स्वार्थे ष्यञ् । माणिक । लाल रंगका एक रत्न । छिपकली.

माणिबन्ध-मन्थ, (न०) मणिबन्ध (मन्थ) पर्वते भवः+अण् । मणिबन्ध (मन्थ) पहाडमें हुआ । सैंधव लवण । सेंधानोन.

मातङ्ग, (पु०) मतङ्गस्य मुनेः अयम्+अण् । गज । हाथी । एक प्रकारकी किरात (भील) की जाति । पीपलका वृक्ष । दस महाविद्याओंमेंसे एक (स्त्री०).

मातरपितृ, (स्त्री०) माता च पिता च । द्वन्द्वे मातुर्वा मातरादेशः । माता और पिता । पक्षे मातुरानङ् । उन्हींके अर्थमें.

मातरिश्वन्, (पु०) मातरि (आकाशे) श्वयति (वर्धते) । श्वि+कनिन् । अलुक् समा० । आकाशमें बढता है । वायु (हवा).

मातलि, (पु०) मतं लाति । ला+क । मतलः तस्य अपत्यं+इञ् । मतलकी संतान । इन्द्रका सारथी (रथ खेंचनेवाला).

माता, (स्त्री०) मा+अतच् । जननी-मां । "विश्वेश्वरी विश्वमाता" दुर्गास्तवः.

मातामह, (पु०) मातुः पिता । मातृ+डामह । माताका पिता । नाना.

मातुल, (पु०) मातुर्भ्राता । मातृ+डुलच् । माताका भाई । मामा.

मातुलुङ्ग, (पु०) मातुलं गच्छति । गम्+खच्-पृ० । बीजपूर । नींबू । दाडिम । अनार.

मातृ, (त्रि०) मा+तृच् । प्रमाणकर्ता । जानेवाला । सच्चे ज्ञानवाला । परिमाणकर्ता । मापनेवाला । बनानेवाला । "मा+तृ" शिवजीके साथ रहनेवाली आठ माताएँ (ब्राह्मी-माहेश्वरी-चण्डी-वाराही-वैष्णवी-कौमारी-चामुण्डा-और चर्चिका) । जननी (माँ) । पृथिवी । विभूति । लक्ष्मी । रेवती । इन्द्रवारुणी । जटामांसी । चण्डीपाठमें प्रसिद्ध देवीकी शक्तियें (स्त्री०).

मातृका, (स्त्री०) माता इव कायति । कै+क । उपमाता । दाई । ब्रह्माणी आदि चण्डीमें प्रसिद्ध देवीकी मूर्तियें । अकार आदि उञ्चास ४९ वर्ण जिनसे सम्पूर्ण शब्द बनजाते हैं । स्वर । मातृ+स्वार्थे कन् माता । मां.

मातृबन्धु, (पु०) ६ त० । माताके बन्धु ("मातुः पितृष्वसुः पुत्रा मातुर्मातृष्वसुः सुताः । मातुर्मातुलपुत्राश्च विज्ञेया मातृबन्धवः" इसी अर्थमें "मातृबान्धव" भी होता है.

मातृमण्डलम्, (न०) मातॄणां मण्डलम् । स्वर्गीय माताओं- (देवियो०) का मण्डल (समूह).

मातृवत्सल, (पु०) मातुः वत्सलः । मांका पियारा । कार्तिकेयका एक नाम.

मातृस्वसृ, (स्त्री०) ६ त० । माताकी भगिनी । मासी । "अलुक् समा०" मातृष्वसा.

मातृष्वस्रेय, (पु०) मातृष्वसुः अपत्यं+ठक् । माताकी भगिनीका पुत्र । मासीका लडका । "मातृष्वस्रीय".

मात्र, (न०) मा+त्रन् । साकल्य (सारा-कुल) । और अवधारणा (निश्चय) । लगातार (अविच्छेद) । अल्प । थोडा । परिमाण । माप । धन । लघुवर्णको उच्चारण करनेके समय वर्णका एक अवयव (भाग-हिस्सा) । "जितने समयमें हाथ जानुमण्डल (गोडेका दायरा) पर घूमकर आजाय । कवियोंने उसीको मात्रा कहा है" ह्रस्व-दीर्घ-प्लुत आदि (स्त्री०) । "मीयन्ते अनया विषयाः-वि-मा+त्रन्" । जिस्से विषय पहिचाने जाते हैं-इन्द्रियोंकी वृत्तियें । "मात्रास्पर्शास्तु कौन्तेय शीतोष्णसुखदुःखदाः" गीता.

मात्राच्युतक, (न०) एक मात्राके उठा देनेसे दूसरे अर्थको प्रकाश करनेहारा एक प्रकारका काव्य.

मात्राछन्दस्-वृत्तं, (न०) मात्रायाः छन्दः । मात्रा (ह्रस्वस्वरको बोलनेका समय) से गिना गया छन्द वा वृत्त.

मात्राभस्त्रा, (स्त्री०) मात्रायाः भस्त्रा । दौलतकी थैली । मनी बैग.

मात्रास्पर्श, (पु०) मात्रायाः स्पर्शः । संसारके पदार्थों- (विषयों) का सम्बन्ध । इन्द्रियकी वृत्तिओंसे विषयोंका स्पर्श (छूना).

मात्सर्य, (न०) मत्सरस्य भावः+ष्यञ् । परगुणद्वेष । दूसरेके गुणमें वैर करना । हसद । कीनह । "मात्सर्यमुत्सार्य विचार्यैति" साहि०.

माथ, (पु०) मथ+घञ् । पन्था । मार्ग । रास्ता । वाट । मन्थन । बिलोना । रिडकना.

माथुर, (त्रि०) मथुरायां भवः । मथुरायाः आगतः वा । मथुराका वा मथुरासे आया । मथुरानगरीभवः । तत आगतो वा.

माद, (पु०) मद+घञ् । दर्प । अहंकार । गरूर । और हर्ष । खुसी.

मादक, (त्रि०) मादयति । मद्+णिच्+ल्यु । मस्त करता है । मतवारा करनेवाला पदार्थ । "माद्यति" कर्तरि ण्वुल् । दात्यूह (पपीहा) (पु०).

मादन, (न०) मादयति । मद्+णिच्+ल्यु । लवंग । लौंग । कामदेव । और मदनवृक्ष (पु०)। विजया (भांग) (स्त्री०).

मादृक्ष-श (श्), (त्रि०) मम इव दर्शनं अस्य । दृश्+क्सट क्विप् वा । ममतुल्यदर्शन । जो मेरे समान दीखता है । मेरेसमान.

माद्री, (स्त्री०) मद्रे भवा+अण् । मद्रदेशमें हुई । पाण्डुराजाकी दूसरी स्त्री (औरत) । और अतिविषा.

माद्रीनन्दन, (पु०) माद्र्याः नन्दनः । माद्रीका प्यारा । नकुल । सहदेव.

माधव, (पु०) माया धवः । लक्ष्मीका पति । नारायण । "मधु+स्वार्थेऽण्" वसन्त । बहार । "मधुने पुष्परसाय मद्याय वा) हितः अण्" । वैशाखका महीना (इसमें बहुत फूल होते हैं-इसलिये उनका रस निकालनेको हितकारी है) मधूकवृक्ष (महुआ) । इसके फूलोंसे मद्य (शराव) निकाली जाती है । "मधु बाहुल्येन अस्ति अस्याः अण्" जिसका बहुतायतसे मधु होता है । वासन्ती लता (स्त्री०).

माधवीलता, (स्त्री०) वसन्ती बेल.

माधुकर, (त्रि०)–री (स्त्री०) मधुकर+अण् भ्रमर (भौंरों) का वा भ्रमरके समान । माधुकरी वृत्तिः । भ्रमरकी जीविका । भौंरा जैसे प्रत्येक फूलसे मधु शहतको इकट्ठा कर्ता वैसेही भिन्न २ द्वारसे प्राप्तकीगई भिक्षा.

माधुर, (न०) मधु राति (भ्रमरेभ्यो ददाति) । ण+क-स्वार्थे अण् । भौंरोंके तई बहुत फूलका रस देता है । मल्लिकाका फूल । मालती.

माध्य, (त्रि०) मध्य+अण् । मध्यम । बीचका । मध्यमें होनेवाला.

माध्यन्दिन, (न०) मध्यन्दिनं एव+अण् । मध्यमदिन । दिनका बीचला भाग । शुक्लयजुर्वेदकी एक शाखा.

माध्यम, (त्रि०)–मी (स्त्री०) मध्यम+अण् । बीचवाला । बीचका.

माध्यस्थ, (न०) मध्यस्थे भवं+अण् । मध्यस्थ (बीचमें रहना उदासीनमें) होना । पक्षपातका न होना । उदासीनता । किसकी हमरा न करना.

माध्वीकफल, (पु०) माध्वीकं इव मधुरं फलं अस्य । माध्वीक (शराब)के समान जिसका मीठा फल है । नरेल.

मान्, विचार करना । भ्वा० आ० सक० सेट् । स्वार्थ सन् । मीमांसते.

मान्, पूजाकरना । वा चुरा० उभ० पक्षे भ्वा० पर० सक० सेट् । मानयति-ते । मानति । अमीमनत् । अमानीत्.

मान, (न०) मा+ल्युट् । परीमाण । माप । हाथ । तकडी आदिसे द्रव्यको मापना । प्रमाण गीतका अंग । समयकी क्रिया । मन्+घञ् । अभिमान । अहंकार । सम्मान.

मानग्रन्थि, (पु०) मानस्य ग्रन्थिः (बन्धनं) यस्मात् । जिस्से मान (इज्जत)का वंधन (रोक) होता है । अपराध । गुनाह । भूल । चूक.

मानरन्ध्रा, (स्त्री०) मानाय (कालप्रमाणज्ञानाय) रन्ध्रं यस्याः । समयके प्रमाणको जान्नेके लिये जिसको छेद दिया है । तामेका बनाहुआ छेकवाला समयके जान्नेका कारण एक प्रकारका घटीयन्त्र (घडी).

मानव, (पु०) मनोरपत्यं+अण् । मनुष्य । आदमी । स्त्रियां ङीप्.

मानवधर्मशास्त्र, (न०) मनुना प्रोक्तं धर्मशास्त्रं । मनुसे कहागया धर्मशास्त्र.

मानवराक्षस, (पु०) मानवः राक्षसः कर्म० स० । मनुष्यके स्वरूपमें राक्षस (दैत्य).

मानस, (न०) मन एव+अण् । मन । दिल । कैलास पर्वतके पास ब्रह्माजीसे रचाहुआ एक प्रकारका सरोवर । तालाव.

मानसव्रत, (न०) मनसा कृतं मानसं । कर्म० । मनसे कियाहुआ व्रत । अहिंसा (किसी प्राणीको न मारना) । सत्य (सच्च बोलना) । अस्तेय (चोरी न करना) ब्रह्मचर्य (स्त्रीके निकट न जाना) अलुब्धता (लालची न होना).

मानसालय, (पु०) मानसः आलयः यस्य । मानसरोवर । ब्रह्माके संकल्पसे उपजा एक तालाव । जिसका निवासस्थान है । हंस.

मानसोत्क, (त्रि०) मानसं उत्कण्ठते । मानसरोवर जानेके उत्कण्ठित (चाहवाला).

मानसौकस्, (पु०) मानसं ओको यस्य । जो मानससरोवरमें निवास कर्ता है । हंस (इसका उसी सरोवरसे प्यार है).

मानित, (त्रि०) मन्+णिच्+क्त प्रतिष्ठित । आदर किया गया । इज्जत किया हुआ.

मानिन्, (त्रि०) मान्+इनि, मन्+णिनि वा । खयाल करनेवाला । ध्यान करनेवाला । मान्नेवाला । समासमें पीछे आता है.

मानिनी, (स्त्री०) मान+इनि । फलीवृक्ष । और मान करनेवाली (स्त्री).

मानुष, (पु०) मनोरयं अण्-सुकृच । मनुका । मानव । आदमी " ततो जातौ स्त्रियां ङीप् " मानुषी । नारी.

मानुष्य, (न०) मनुष्यस्य भावः+यत् । मनुष्यत्व । मानुषपन । आदमी.

मान्द्य, (न०) मन्दस्य भावः+ष्यञ् । धीमापन । मूर्खपन । जडपन । रोग । बीमारी । बुराई । सुस्ती । न्यूनता । कमी.

मान्धातृ, (पु०) मां (इन्द्रं) धयति । धे+तृच् । सूर्यवंशी राजाका नाम । युवनाश्वका पुत्र (इसके अपने पेटसे निकला) । जब यह पेटसे बाहिर आया तो ऋषिओंने कहा " कं एष धास्यति " (किसे यह प्राशन करेगा) इसी समय इन्द्रने स्वर्गसे नीचे आकर कहा कि " मां धास्यति " (मुझे पान (दूध पीना) करेगा) तभीसे इसका ऐसा नाम हुआ.

मान्मथ, (त्रि०)–थी (स्त्री०) मन्मथ+अण् । मन्मथ (कामदेव) वाला वा मन्मथका । कामदेव (प्यारा) से उत्पन्न हुआ.

मान्य, (पु०) मान्-पूजाकरना+कर्मणि ण्यत् । पूज्य । पूजाके लायक.

मामक, (त्रि०) मम इदं । अस्मद्+कन्-ममादेशः । मत्सम्बन्धी । मुझसे संबंध रखनेवाला । मेरा+खञ् । " मामकीन ".

माया, (स्त्री०) मा+य । नेत्वं । कपट । छल । इन्द्रजाल आदि । मिथ्याबुद्धि (झूठे खयाल)का कारण । एक प्रकारका अज्ञान । कृपा । दया । दंम्भ । पाखण्ड । लक्ष्मी । बुद्धकी माता (मां) । ईश्वरकी उपाधि । अघटितघटनसाधिका शक्तिः (एक ऐसी ताकत जो न बन सकनेवाली बातको भी बनादे).

मायाकृत्, (पु०) मायां (इन्द्रजालं) करोति । कृ+क्विप् । इन्द्रजाल रचनेवाला । मदारी । बाजीगर.

मायादेवीसुत, (पु०) ६ त० । मायादेवीका पुत्र । बुद्धदेव.

मायाप्रयोग, (पु०) मायायाः प्रयोगः । छलको काममें लाना । वंचकता.

मायायोधिन्, (त्रि०) मायया युध्यते । छलका युद्ध करनेवाला.

मायावचन, (न०) मायाया वचनं । छलका वाक्य । छलकी बोली । झूठी बात कहना.

मायावाद, (पु०) मायायाः वादः । माया (झूठा खयाल कपट)का सिद्धान्त (बौद्धलोग ऐसा मानते हैं).

मायाविन्, (त्रि०) माया+अस्ति अर्थे विनि । मायाकार माया रचनेवाला । ऐन्द्रजालिक । मदारी । छलिया.

मायिक, (त्रि०) माया अस्ति अस्य+ठन् । मायावाला । मदारी । कपटी.

मायु, (पु०) मा+यु । देहस्थपित्त । शरीरका पित्त । एक रोग.

मायूर, (न०) मयूराणां समूहः । तस्येदं वा+अण् । मयूरसंघ । मोरोंका समूह । मयूरसम्बन्धी । मोरवाला (त्रि०).

मार, (पु०) मृ+घञ् । मारण । मौत । "मारयति" । मृ+णिच्+अच् । मार डालता है । कामदेव । विघ्न । रोक । धत्तूरा.

मारक, (पु०) मृ+णिच्+ण्वुल् । मृ+णिच्+घञ्-स्वार्थे कन् वा । मारण । मारना । कतल करना । एक पक्षी (बाज).

मारकस्थान, (पु०) मारनेकी जगह । जन्मलग्नसे सातवां और दूसरा स्थान.

मारण, (न०) मृ+णिच्+ल्युट् । मारना.

मारि, (स्त्री०) मृ+णिच्+इन् । मारण । मारना । वा ङीप् " मारी " । मौत । ववा.

मारिष, (पु०) रिष्-हिंसा । क़तलकरना । निषेधअर्थवाले " मा " शब्दके साथ समास होता है । नाट्योक्तिमें (आर्य) हिंसाको निवारण करनेसे उसे ऐसा कहाहै.

मारीच, (पु०) ताडका राक्षसीका पुत्र । रावणका अनुचर (नौकर) । एक प्रकारका राक्षस.

मारुतात्मज, (पु०) ६ त० । वायुका पुत्र । हनुमान् । और भीमसेन । " मारुतिः " इञ्.

मारुति, (पु०) मरुतः अपत्यं+इञ् । श्रीहनुमान्जीका नाम । वायुका बेटा.

मार्कण्ड, (पु०) मृकण्डोः अपत्यं+अण् । पृ० । मृकण्डुकी सन्तान । एक मुनि । ढक् । शक० । "मार्कण्डेय" यही अर्थ.

मार्ग, (पु०) अन्वेषण-तालाश करना । खोजना । वा चु० उभ० पक्षे भ्वा० पर० सक० सेट् । मार्गयति-ते । मार्गति । अममार्गत्-त । अमार्गीत् " नृपतेरमार्गीत् " इति भट्टिः । भ्वा० आ० मार्गते । मार्गमाणः.

मार्ग, (पु०) मृज्-शुद्धि-साफकरना-मार्ग-अन्वेषण-वा घञ् । पंथा । रास्ता । बाट.

मार्गण, (न०) मार्ग+ल्युट् । अन्वेषण । तालाश । याचन । मांगना और प्रणय । मुहब्बत करना । "कर्तरि ल्युः" मांगनेवाला (त्रि०).

मार्गरक्षक, (पु०) मार्गस्य रक्षकः । मार्ग (रास्ता) का रक्षक (रखवारा).

मार्गशोधक, (पु०) मार्गस्य शोधकः । मार्गका संस्कार (सफाई) करनेवाला.

मार्गस्थ, (त्रि०) मार्गे तिष्ठति । मार्गमें रहनेवाला । पथिक मुसाफिर.

मार्गशिर } **मार्गशीर्ष** } (पु०) मृगशिरेण युक्ता पौर्णमासी+अण् । सा यत्र मासे । पुनः अण् । मृगशिर नक्षत्र-वाली पूर्णिमा । जिस महीनेमें वैसी पूर्णिमा हो । अगहन । अग्रहायण (मग्गर) । उसकी पूर्णिमा (स्त्री०).

मार्गित, (त्रि०) मार्ग+क्त । अन्वेषित । तलाश कियागया । ढूंडागया.

मार्ज्, मार्जन-साफकरना । सक० ध्वनि-शब्द करना-अक० चुरा० उभ० सेट् । मार्जयति-ते । अममार्जत्-त.

मार्जन, (न०) मार्ज+ल्युट् । पोंछकर साफ करना । सम्मार्जनी (बुहारी) (स्त्री०).

मार्जना, (स्त्री०) संस्कार । सफाई । एक प्रकारका वाद्य (वाजा) का शब्द.

मार्जार-ल, (पु०) मृज्+आरन् । वा रस्य लः । बिडाल । बिल्ला । "ततः संज्ञायां कन्" मयूर । मोर.

मार्जारी(ली)य, (पु०) । मार्जार+ (ल) स्वार्थे छः । मृज्+आरीक् । रस्य लत्वं वा । बिडाल । बिल्ला और शूद्र (चौथा वर्ण) । कायशोधन । शरीरकी सफाई (न०).

मार्जित, (पु०) मार्ज+क्त । शोधित । साफ कियाहुआ । एक प्रकारकी रसा वा चटनी (जिसमें दही, घी, मरिच, शहत आदि चीजें मिला कपूरकी सुगंधि दीजाती है).

मार्तण्ड, (पु०) मृते अण्डे भवः+अण् । शक० । मरेहुए अंडेमें हुआ । सूर्य । आकका वृक्ष । शूकर । सूअर.

मार्त्तिक, (पु०) मृत्तिकया निर्मितं+अण् । मट्टीसे वनाहुआ । शराव । कुज्ज । पियाला । मृण्मय । मट्टीका (त्रि०).

मार्दङ्गिक, (त्रि०) मृदङ्गं (तद्वादनं शिल्पं) अस्य+ठक् । जो मृदङ्ग बजानेवाला.

मार्दव, (न०) मृदोर्भावः । कोमलपन । मृदुत्व । दूसरेके दुःखको न सहारनेसे दिलका पिघल जाना.

मार्ष्टि, (स्त्री०) मृज्+क्तिन् । शोधन । सफाई.

माल, (पु०) मल्+संज्ञायां घञ् । एक प्रकारकी जाति । एकदेश.

मालक, (न०) मल्-ण्वुल् । थलका फूल (स्थलपद्म) । नारियलका बनाहुआ एक पात्र (वर्तन).

मालती, (स्त्री०) मां (लक्ष्मीं) शोभां वा लतति (वेष्टते) लत+अण्-ङीप् । जातीलता । जवान औरत । एक नदी । चांदनी । और निशा (रात).

मालतीरज, (पु०) माल्त्याः (नदीभेदस्य) तीरे जायते । जन्+ड । टङ्कण (सुहागा) । "मालतीतीरभव".

मालतीपत्री, (स्त्री०) मालत्या इव पत्रं अस्य । जिसका पत्ता मालतीके समान हो । जलवत्री । जैवत्री.

मालतीफल, (न०) मालत्याः (तन्नामकजात्याः) फलं । जायफल.

मालभारिक, (त्रि०) मालायां भारोऽस्ति अस्य+ठन् । पहिले पदको ह्रस्व हो जाता है । मालाओंके बोझेवाला.

मालव, (पु०) अवन्तिदेश (मालवा देश) । एक प्रकारका राग । भैरव रागकी स्त्री.

मालवाधीशः-इन्द्रः-नृपतिः, (पु०) मालवस्य अधीशः । मालवदेशका राजा.

मालविका, (स्त्री०) मालवे भवा+ठक् । त्रिवृति । तेओडी । त्यूडी.

माला, (स्त्री०) मल्+संज्ञायां कर्तरि घञ् । माला । हार.

मालाकार, (पु०) मालां करोति । कृ+अण् । माला वनाता है । माली । एक प्रकारका वर्णसंकर (दोगला).

मालादीपक, (न०) अलंकारमें अर्थालंकारविशेष.

मालिक, (पु०) माला (तन्निर्माणं) शिल्पं अस्य+ठन् । मालाकार । माली । एक जाति । एक पक्षी । माला बनानेवाला (त्रि०).

मालिका, (स्त्री०) माला इव कन् । अत इत्वं । नवमल्लिका । मालतीकी बेल । ग्रीवालंकरण । गलेका भूषण (जेवर) । एक नदी । सुरा (शराब) । अतसी । और फूलोंकी माला । "पाशाक्षमालिकाम्भोज" इति लक्ष्मीध्यानम्.

मालिन्, (पु०) माला (शिल्पं) अस्ति अस्य+इनि । मालाकार । माला बनानेवाला । माली । मालावाला (त्रि०) । मालीकी पत्नी (औरत) । पन्द्रह अक्षरके पादवाला एक छन्द । गौरी । चम्पानगरी । मन्दाकिनी (आकाशकी गंगा) । कण्व ऋषिके आश्रमके निकट एक नदी । अग्निशिखावृक्ष । दुरालभा (स्त्री०) ङीप्.

मालिन्य, (न०) मलिनस्य भावः+ष्यञ् । मलिनता । मैला-पन । मलाजत.

मालूर, (पु०) मां (लक्ष्मीं परेषां) लुनाति (लु+रक्) । बिल्व । कपित्थ.

मालेय, (त्रि०) मालायां साधुः+ढञ् । मालाकी रचनामें चतुर । अच्छी माला बनानेहारा.

माल्य, (न०) मालायै हितं+यत् । मालाके लिये हितकारी । पुष्प । फूल । "स्वार्थे ष्यञ्" पुष्पमाला । फूलोंकी माला (हार) । माथेपर फूलोंका हार । मूर्ध्निस्थपुष्पमाला.

माल्यवत्, (त्रि०) माल्यं अस्ति अस्य+मतुप् । "म" को "व" । मालावाला । केतुमाल और इलावृत वर्षोंका सीमापर्वत (पहाड) । सुकेशराक्षसका पुत्र । रावणका मन्त्री । एक राक्षस.

माशब्दिक, (त्रि०) मेति शब्दं निषेधाय करोति+ठक् । निषेध करनेवाला । "मत" ऐसा बोलता है.

माष, (पु०) मष्-संज्ञायां+घञ्। व्रीहिभेद (उडद)। एक परिमाण (मासा)। एक प्रकारका तोल। मूर्ख। एक प्रकारका रोग। मां.

माषवर्धक, (पु०) माषं (माषपरिमितं स्वर्णं) वर्धयति (आच्छिनत्ति-अपहरति)। वर्ध-काटना+ण्वुल्। स्वर्णकार (सुनार)। मासाभर सोना काट लेता है वा चुरा लेता है.

माषीण, (न०) माषाणां भवनं (क्षेत्रं)+खञ्। जिस खेतमें उडद उपजते हो। माषव्रीहिभवनयोग्यं क्षेत्रं+यत्। "माष्य" इसी अर्थमें होता है.

मास्, (पु०) माति (परिच्छिनत्ति) स्वगत्या कालम्। मा+असुन्। अपनी गतिसे समयको माप लेता है। चन्द्र। चांद। चन्द्रमा। तीस दिनका समय। त्रिंशद्दिनात्मक काल। महीना.

मास, (पु०) मा एव+अण्। चंद्र। चांद। त्रिंशद्दिनात्मक काल। तीस दिनका समय। वह (सौर-सावन-चान्द्र और नक्षत्रके भेदसे) चार प्रकारका होता है। चान्द्रमास। महीना। "मस्-मापना+करणे घञ्" मासाभर.

मासक, (त्रि०)-की (स्त्री०) मासे भवः+ठञ्+इक। मासके साथ संबन्ध रखनेवाला। प्रत्येक महीने होनेवाला। मासमें देनेयोग्य। भृति। तनखाह.

मासदेय, (त्रि०) मासेन देयः। एक महीनेमें देनेलायक.

मासन, (न०) मासं नयति। नी+ड। सोमराजीलता। एकवेल.

मासप्रवेश, (पु०) मासस्य प्रवेशः। महीनेका प्रवेश। मासका प्रारंभ.

मासर, (पु०) मस्-मापना+घञ्। मासं (परिमाणं) राति। रा+क। भक्तमण्ड। मांड। पीछ। चावलों (उबलेहुए)-का रस.

मासान्त, (पु०) मासस्य (सौरस्य) चान्द्रस्य वा अन्तः। सौर वा चांद्र मासका अंत। महीनेका अवसान। मसांद। संक्रान्ति (सूर्यका एक राशिसे दूसरीमें जाना).

मासाहार, (त्रि०) मासं आहरति। एक महीने केवल एक वार खानेवाला.

मासिक, (त्रि०) मासे भवः+ठञ्। मासभव। महीनेका। प्रेतके लिये महीनेकी तिथि। हरएक महीनेमें अमावास्याके दिन करनेलायक श्राद्ध (न०).

मासीन, (त्रि०) मास+खञ्+इन्। एक महीनेका पुराना। महीनेवाला.

मासोपवासिनी, (स्त्री०) मासं उपवसति। पूरे एक मासका व्रत रखनेवाली स्त्री.

मास्म, (अव्य०) निवारण। हटाना। रोकना। मस्+णिच्+मप्.

माह्, मान-मापना। भ्वा० उभ० सक० सेट्। माहति-ते अमाहीत्-अमाहिष्ट.

माहाकुल, (त्रि०) महाकुले भवः+अण्। महाकुलोद्भव। बडे कुलमें उपजा। "खञ्"। "महाकुलीन"। यही अर्थ.

माहात्म्य, (न०) महात्मनो भावः+ष्यञ्। बडापन। महिमा। महत्त्व.

माहिष, (न०) महिष्या इदम्+अण्। महिषी (भैंस) म्भैंस-का दूध आदि "महिषस्य इदम्"+अण्। उसका सींग आदि (त्रि०).

माहिष्मती, (स्त्री०) एक नगरी। हैहय राजाओंकी पैतृक राजधानी.

माहिष्य, (पु०) महिष्या भवः+ष्यञ्। क्षत्रियसे वैश्य जातिकी कन्यामें उत्पन्न कियाहुआ संकर। दोगला.

माहेन्द्र, (पु०) महेन्द्रस्य अयं+अण्। इन्द्रका। ज्योतिषमें महेन्द्रसम्बन्धी एक समय (दण्डविशेष)। पूर्व दिशा। इन्द्रकी स्त्री (शची)। और गौ (स्त्री०) ङीप्.

माहेय, (पु०) मह्या अपत्यम्। मही+ढञ्। पृथिवीकी सन्तान। मंगल ग्रह। और नरक नामी असुर (दैत्य)। गौ (स्त्री०) ङीप्.

माहेश्वर, (त्रि०) महेश्वरात् अधिगतं ततः आगतः+अण्। महेश्वर (शिवजी)से पाया-हासिल किया। यवतिक्ता (स्त्रियां ङीप्) "तस्येदं अण्" मातृभेद। एक प्रकारकी माता। प्रत्येक दुर्गा (देवी) (स्त्री०) ङीप्.

मि, क्षेप-फेंकना। स्वा० उभ० सक० अनिट्। मिनोति-मिनुते। आमासीत्। अमास्त.

मिच्छ, वध-मारना। भ्वा० पर० सक० सेट्। मिच्छति। अमिच्छीत्.

मित, (त्रि०) मि-मा-वा क्त। परिमित। मापाहुआ। शब्दित। बोलागया। अवच्छिन्न। मापाहुआ और क्षिप्त। फेंकाहुआ.

मितंगम, (पु०) मितं (परिमितं) मृदु-गच्छति। गम्-खच्-मुम्। मापाहुआ अथवा कोमल। धीरे २ चलता है। गज। हाथी। परिमितगामी। मापेहुए चलता है (त्रि०).

मितद्रु, (पु०) मितं द्राति-द्रवति वा नि०। समुद्र। समुदर.

मितम्पच, (पु०) मितं पचति। पच्+खच्-मुम्च। मापकर पकाताहै। कृपण। सूम। मापकर पकानेवाला (त्रि०).

मितभुक्त, (त्रि०) मितं भुक्तं येन। मिनाहुआ खानेवाला। नियमसे भोजन करनेवाला.

मितव्ययिन्, (त्रि०) मितः व्ययः अस्ति अस्य। मिना हुआ व्यय (खर्च) करनेवाला। योग्य व्यय करनेवाला.

मिति, (स्त्री०) मा-मि वा+क्तिन्। ज्ञान। जाचा। मान। मापना। अवच्छेद। विक्षेप। प्रमाण। सबूत। गवाही.

मित्र, (न०) मेद्यति-स्निह्यति। मिद्+त्र। स्नेह करनेवाला सुहृद् (दोस्त)। "मि+क्र"। सूर्य (पु०).

मित्रघ्न, (त्रि०) मित्रं हन्ति । मित्रको मारनेवाला । मित्रकी हत्या करनेवाला.

मित्रयु, (पु०) मित्रं याति । या+कु । मित्रवत्सल । मित्रका पियारा

मित्रलाभ, (पु०) मित्राणां लाभः । मित्रोंकी प्राप्ति (मिलाप).

मिथ्, वध-मारना । मिलना । सक० भ्वा० उभ० सेट् । मेथति-ते.

मिथस्, (अव्य०) मिथ्+असुन् । रहसि । अकेले । एकान्तमें । आपसमें.

मिथिला, (स्त्री०) मिथ्+किलच् । अपने नामसे प्रसिद्ध राजधानी तिरहुत । जनक राजाकी पुरी.

मिथुन, (न०) मिथ्+उनन् । स्त्री और पुरुष (जोडा-मर्द और औरत) । मेषसे तीसरी राशि । विषयके लिये मिलना । जोडा.

मिथ्या, (अव्य०) मिथ्+क्यप् । अयथार्थ । जो ठीक नहिं । असत्य । झूठ.

मिथ्यादृष्टि, (स्त्री०) मिथ्या-सफलस्यापि अफलत्वेन दृष्टिः । फलवाले पदार्थको भी फलरहित देखना । नास्तिकता । नास्तिकपना । फलवाले भी वेदमें कहेहुए कर्मको फलरहित जाना । भूल.

मिथ्यानिरसन, (न०) मिथ्या निरस्यतेऽनेन । निर्+अस् । फेंकना । करणे ल्युट् । शपथ । कसमसौं । कसम खाकर इन्कार करना.

मिथ्याभियोग, (पु०) मिथ्याभूतेन (असत्येन) अभियोगः (राज्ञोऽन्तिके वेदनम्) । राजाके पास झूठा सवाल देना । मिथ्यावाद । झूठी नालिश । अभि+युज्+घञ् । "इसने मेरा सौ रुपया देना है" इस प्रकार झूठ बनाकर राजाके पास सवाल करना.

मिथ्याभिशंसन, (न०) मिथ्याभूतेन (असत्येन) अभिशंसनम् (अपवादः) । झूठा कलंक । " तूने मेरा सोना चुराया " ये दोष लगाना.

मिथ्याभिशाप, (पु०) मिथ्याभूतेन (असत्येन) अभिशापः (अपवादः) । मिथ्यापवाद । झूठा कलंक (तोहमत).

मिथ्यामति, (स्त्री०) मिथ्याभूतस्य मतिः । मन्+क्तिन् । झूठा निश्चय । भ्रान्ति । भ्रम । भूल । औरमें औरका जाना.

मिद्, स्नेह-पियार करना । भ्वा० आ० लुङ्में पर० सेट् । मेदते । अमिदत्.

मिल्, मिलना । तु० उभ० सक० सेट् । मिलति । अमेलीत् । अमेलिष्ट.

मिव्, सेक-सींचना । भ्वा० पर० सक० सेट् । इदित् । मिन्वति । अमिन्वीत्.

मिश्, शब्दकरना-और कोप (गुस्सा) करना । तु० प० अक० सेट् । मिशति.

मिश्र-स्र, योजन-मिलाना । चुरा० उभ० सक० सेट् । मिश्र(स्र)यति-ते.

मिश्र, (त्रि०) मिश्र+अच् । संयुत । मिलाहुआ । उत्तर (अगला) पदमें आयाहुआ श्रेष्ठ (बहुत अच्छा) के अर्थमें होता है । जैसे "आर्यमिश्राः" । गजजातिविशेष । एक प्रकारका हाथी । ज्योतिषमें कृत्तिका विशाखा नक्षत्र (तारा) का गण (समूह) (पु०) । किताव । एक मुल्क (त्रि०).

मिश्रकावण, (न०) मिश्रकनामकं वनं । पहिलेको दीर्घ-और णत्व होता है । इन्द्रोद्यान । इन्द्रका बाग । नंदनवन.

मिश्रव्यवहार, (पु०) लीलावतीमें कहाहुआ गणनभेद (एक प्रकारकी गिनती).

मिष्, सेचन-सींचना । भ्वा० पर० सेट् । मेषति । अमेषीत् । "क्त्वा वेट्".

मिष्, पराभिभवेच्छा-दूसरेको दबानेकी इच्छा करना । तु० प० सक० सेट् । मिषति । अमेषीत्.

मिष, (न०) मिष्+क । छल । बहाना । स्पर्धन (हसद) (पु०).

मिषिका, (स्त्री०) मिषी+कन् । जटामांसी । एक प्रकार-की औषध.

मिष्ट, (त्रि०) मिष्+क्त । सिक्त । सींचागया और हसद कियाहुआ । मधुररस (मीठा रस) (पु०) । उसवाला (त्रि०).

मिह्, सेचन-सींचना । भ्वा० पर० सक० अनिट् । मेहति । अमिक्षत्.

मिहिका, (स्त्री०) मिह्+क्वन् । अत इत्वम् । नीहार । पाला । बरफ.

मिहिर, (पु०) मिह्+किरच् । सूर्य । आकका वृक्ष । बूढा । बादल (मेघ) । वायु (हवा) । चन्द्र (चांद) । विक्रमादित्यकी सभाका एक पण्डित.

मी, वध-मारना । दिवा० आ० सक० अनिट् । मीयते । अमेष्ट.

मी, मारना । क्र्या० उभ० सक० सेट् । मीनाति-मीनीते । अमासीत् । अमास्त । मीनः.

मीढ, (त्रि०) मिह्+क्त । मूत्रित । मूताहुआ.

मीढुष्टम, (पु०) मीढ्वस्+तम नि० । शिवजी । सूर्य । सूरज.

मीढ्वस्, (पु०) मिह्+क्वसु । नि० । शिवजी । महादेव.

मीन, (पु०) मी+नक् । मत्स्य । मछली (मच्छी) । मेषसे १२ वीं राशी । भगवान्‌का अवतारविशेष । "मत्स्यावतार".

मीनकेतन, (पु०) मीनः केतनो यस्य । मच्छी जिसका निशान है । कंदर्प । कामदेव । "मीनध्वज" इसी अर्थमें है.

मीनाण्डा, (स्त्री०) मीनस्य अण्डः (तदाकारा रेणुका) अस्ति अस्य । अच्-ङीप् । जिसके कतरे मच्छीके अण्डेके समान हैं । शर्करा । चीनी । मिशरी । खांड । मच्छीका अंडा.

मीम्, शब्दकरना। अक० जाना। सक० भ्वा० पर सेट्। मीमति.

मीमांसक, (पु०) मीमांसां वेत्ति-अधीते वा वुन्। मीमांसाको जानता वा पढता है। मीमांसाशास्त्रको जाननेहारा और उसको पढनेहारा। "मान्+स्वार्थे सन् ण्वुल्"। परीक्षक। सिद्धान्तकारक। फैसला करनेवाला। असल कहनेवाला.

मीमांसा, (स्त्री०) मान्+स्वार्थे सन्-अ। विचारसे तत्त्वका निर्णय (फैसला) करना। उसे प्रतिपादन करनेहारा एक प्रकारका ग्रंथ। इस ग्रन्थके दो भाग हैं (एक भाग कर्मको प्रतिपादन कर्ता है वह जैमिनिमुनिका रचाहुआ है और पूर्वमीमांसा नामसे प्रसिद्ध है। एवं दूसरा भाग ब्रह्मविषयको निरूपण कर्ता है और वेदान्त नामसे प्रसिद्ध है यह व्यासदेवने वर्णन किया है)। विचार। इन्साफ। परीक्षा.

मील्, निमेष-मीटना-बंदकरना (जैसा कि आँखका)। भ्वा० पर० अक० सेट्। मीलति। अमीलीत्.

मीलन, (न०) मील्+ल्युट्। मुद्रण। बंदकरना। मीटना। सिकोडना.

मीलित, (त्रि०) मील्+क्त। अप्रफुल्ल। न खिलाहुआ। सिकुडाहुआ.

मीव्, बंदहोना। मुद्रीभवन। भ्वा० पर० अक० सेट्। मीवति। अमीवीत्.

मुर, (पु०) मोचयति जीवान्। ण्यर्थे मुच्-ड्र। महेश। महादेव.

मुंकु, (पु०) मुच्+कु० पृ० "च" को "क"। मोक्ष। छुटकारा। उत्सर्ग। त्याग.

मुकुट, (पु०) मकि+उट-पृ०। शिरोभूषण। सिरका जेवर। ताज.

मुकुन्द, (पु०) मुकुं ददाति। दा+क। पृ०। मुम्। मोक्ष देता है। विष्णु.

मुकुम्, (अव्य०) निर्वाण मोक्ष। निर्विकल्पक समाधि.

मुकुर, (पु०) भक्ति+ उरच्। पृ०। दर्पण। शीशा। बकुल वृक्ष। कुलालदण्ड (कुह्मारका डण्डा)। मल्लिकावृक्ष। मालतीका दरख्त। कली.

मुकुल, (पु० न०) मकि+उलच्-पृ०। थोडीसी खिलीहई कली। कली। शरीर (जिस्म)। आत्मा (रूह).

मुकुलित, (त्रि०) मुकुल+इतच्। जिसमें कलिये निकला आई हों। कलिओंवाला। खिला हुआ। आधाबंद (नेत्र).

मुक्त, (त्रि०) मुच्+क्त। त्यक्त (छोडाहुआ)। प्राप्तमोक्ष। जिसका छुटकारा हो गया। और आनन्दित (खुश होगया).

मुक्तकञ्चुक, (पु०) मुक्तः कञ्चुकः येन। वह सर्प जिसने अपनी कुंज उतार डालीहो। खुले अंगरखे (कुडते) वाला (त्रि०).

मुक्तकण्ठ, (त्रि०) मुक्तः कण्ठः येन। खुले गलेवाला। ऊंची आवाज (चिल्लाहट)। ठं (अव्य०) गिडगिडाकर (रोना) कुंचे.

मुक्तकर, (त्रि०) मुक्तः करः येन। खुले हाथवाला। उदार। खुला दिल। दानी.

मुक्तकेश, (त्रि०) मुक्ताः केशाः येन। खुले बालोंवाला.

मुक्तलज्ज, (त्रि०) मुक्ता लज्जा येन। निर्लज्ज। लज्जाके त्यागनेवाला.

मुक्तसङ्ग, (त्रि०) मुक्तः सङ्गो विषयासक्तिः येन। जिसने सम्पूर्ण विषयोंका संग छोडदिया है। परिव्राजक। संन्यासी (पु०).

मुक्तहस्त, (त्रि०) मुक्तः (दानाय प्रसारितः, न बद्ध इति यावत्) हस्तो येन। जिसने देनेके लिये हाथको फैला दिया है अर्थात् रोका नहीं। बहुदानशील। बडा देनेवाला। फयाज.

मुक्ता, (स्त्री०) मुच्+क्त। सीपीमेंसे निकला एक प्रकारका रत्न। मोती.

मुक्तात्मन्, (त्रि०) मुक्त आत्मा यस्य। (दुःखजालसे) छूटे हुए आत्मावाला। मोक्षको प्राप्त हुआ.

मुक्ताप्रसू, (स्त्री०) मुक्तां प्रसूते। प्र+सू+क्विप्। ६ त०। शुक्ति (सीपी).

मुक्ताफल, (न०) मुक्ता फलं इव। मौक्तिक। मोती। लवलीफल। सीताफल। कर्पूर (काफूर)। बोपदेवका बनायाहुआ भक्तिप्रधान ग्रंथविशेष.

मुक्तावली, (स्त्री०) मुक्तायाः आवली (हारभेदः)। मोतिओंका हार, न्यायशास्त्रका मुख्य ग्रन्थ.

मुक्तास्फोट, (पु० स्त्री०) स्फुट्यते (विदीर्यते) स्फोटः। मुक्तायै स्फोटः। मोतीके लिये फूटना। शुक्ति। सीपी.

मुक्ति, (स्त्री०) मुच्+क्तिन्। मोचन। छूटना। संसारके बंधनसे रहित होना। मतके भेदसे "आत्यन्तिकदुःखनिवृत्तिः (ऐसा दुःखका छूटना कि फिर कभी न हो)"। ब्रह्मस्वरूपावाप्तिः (अपने निजस्वरूप अर्थात् ब्रह्मका पाना)। आत्माका देह और इन्द्रियोंके बंधनसे शून्य होना.

मुख, (न०) खन्+अच्। धातुके पहिले "मुट्" होता है। "प्रजासृजा यतः खातं तस्मादाहुर्मुखं बुधाः"। शरीरका अवयवविशेष (मुं)। गलआदि सात अंगोंवाला वदन (मुं)। घरसे निकलनेका मार्ग (रास्ता)। आरम्भ। उपाय। नाटकमें एक प्रकारकी सन्धि (जिसमें बीजकी उत्पत्ति होती है)। आद्य (पहिला)। प्रधान। शब्द। नाटक। और वेद.

मुखज, (पु०) ब्रह्मणो मुखात् जायते। जन्+ड। ब्रह्माके मुखसे उपजता है। विप्र। ब्राह्मण। "ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत्" श्रुतिः.

मुखनिरीक्षक, (त्रि०) मुखं (इतरवदनं) निरीक्षते+ण्वुल् । अलस । आलसी । सुस्त । वह "यदि दूसरा अपना काम करेगा तो मैं नहिं करूंगा" इस आशयसे दूसरेके मुखको देखताहुआ अपने काममें नहिं लगता.

मुखपूरण, (न०) मुखं पूरयति । पूर+ल्यु । गण्डूषमितजल । चुल्लूभर पानी । मुखको भरदेता है.

मुखभूषण, (न०) मुखं भूषयति । भूष्+ल्यु । मुखको सजादेता है । ताम्बूल । पान.

मुखर, (त्रि०) मुखं (मुखव्यापारं-कथनं) राति (आदत्ते-करोति) रा+क । जो कह डालता है । अप्रियवादी । कडवा बोलनेवाला । अग्रवादी । आगे बोलनेवाला । चंचल । कौआ । और शंख.

मुखरित, (त्रि०) मुखर इव आचरति । मुखर+क्विं+क्त । शब्दायमान । शब्द करनेवाला.

मुखलाङ्गल, (पु०) मुखं लाङ्गलं इव भूमिविदारकं यस्य । जिसका मुख हलकी नाईं पृथिवीको फाडनेवाला है । शूकर । सूअर.

मुखवल्लभ, (पु०) ६ त० । दाडिमवृक्ष । अनारका द्रख्त (इसका फल मुखको पियारा लगता है) । मुखका पियारा (त्रि०).

मुखवास, (पु०) मुखं वासयति (सुरभीकरोति)+अण् । मुखको सुगन्धिवाला कर्ता है । गंधतृण । कर्पूर । काफ़ूर.

मुखवासन, (पु०) मुखं वासयति । वासि+ल्यु । मुखको सुगंधवाला (खुशबूदार) कर्ता है । अच्छा गंध । उसवाला (त्रि०).

मुखव्यादान, (पु०) वि+आ+दा+ल्युट् । ६ त० । मुखप्रसारण । मुख खोलना-फैलाना.

मुखशोधन, (न०) मुखं शोधयति । शुध्+णिच्+ल्यु । मुखको साफ करदेता है । दालचीनी । कटुरस (कौडा रस) (पु०).

मुखस्राव, (पु०) स्रवति । स्रु-ण । ६ त० । मुखका वगना । लारनामी मुखसे वहाहुआ पानी.

मुखाग्नि, (पु०) मुखं एव अग्नितुल्यं शापदानेन दाहकत्वात् यस्य । शाप देकर जला देनेसे मुखही जिसका आग है । विप्र । ब्राह्मण । दावानल । जंगलकी आग.

मुख्य, (त्रि०) मुखे (आद्ये) भवः+यत् । आदिमें हुआ । प्रथमकल्प । असली । और श्रेष्ठ (बहुत अच्छा).

मुग्ध, (त्रि०) मुह्+क्त । मूढ । मूर्ख । बेवकूफ़ । मोहयति । अन्तर्भूतण्यर्थे । मुह्+कर्तरि क्त । सुन्दर । एक नायिका (स्त्री०).

मुच्, त्याग-छोडना । तु० उभ० सक० अनिट् । मुञ्चति-ते । अमुचत्-अमुक्त.

मुचुकुन्द, (पु०) मुच्+कुः मुचुः कुन्द इव । एक प्रकारका फूलोंवाला वृक्ष । एक राजा.

मुज्, शब्द करना-अक० । साफ करना-सक० । वा चुरा० पक्षे भ्वा० पर० सेट् । मोजयति-ते । मोजति । "इदित् भी इसी अर्थमें" मुञ्जयति-ते । मुञ्जति । अमुमुञ्जत्-त । अमुञ्जीत्.

मुञ्ज, (पु०) मुजि+अच् । मूंज । एक प्रकारका तृण । जिस्से रस्सी बनाई जाती है.

मुड्, केशादिच्छेद । वालोंका काटना और मर्दन (मलना) । भ्वा० सक० सेट्-इदित् । मुण्डति । अमुण्डीत्.

मुण्ड, (पु० न०) मुडि+कर्मणि घञ् । मस्तक । माथा । मत्था । सिर । एक दैत्य । नापित (नाई) । और स्थाणु (शाखा और पत्रविहीन) वृक्ष (पु०) । "मुण्डित" (त्रि०) (मूंडाहुआ) । महाश्रावणी । और मुण्डरीका । (स्त्री०) टाप्.

मुण्डक, (पु०) मुण्डयति । मुडि+णिच्+ण्वुल् । नापित । नाई.

मुण्डन, (न०) मुडि+भावे ल्युट् । केशों (वालों) का कटवाना । वपन । मुंडवाना । मुंडना.

मुण्डफल, (पु०) मुण्डं शिर इव फलं अस्य । जिसका फल सिरकीनाईं हो । नारियेल । नारिकेल । नरेल.

मुण्डिन्, (पु०) मुण्डयति । मुडि+णिच्+णिनि । मूंडनेवाला । नापित । नाई । नौआ.

मुद्, हर्ष (खुशी करना) । भ्वा० आ० अक० सेट् । मोदते । अमोदिष्ट.

मुद्-दा, (स्त्री०) मुद्+क्विप् वा टाप् । हर्ष (खुशी) । त्रायमाण औषध.

मुदिर, (पु०) मुद्+किरच् । मेघ (वादल) । कामुक (कामी) (त्रि०).

मुद्ग, (पु०) मुद्+गक्-नेट् । मूंग । एक पक्षी । जलकाक.

मुद्गर, (न०) मुदं गिरति । गॄ+अच् । एक प्रकारकी मालती । मोहली । मुदगर । फूलोंका वृक्ष (पु०) "स्वार्थे कन्".

मुद्गल, (न०) मुदं गिलति । गॄ+अच्-"र" को "ल" होता है । बनका तृण (घास)। और रोहिषतृण । गौओंका पियारा घास । प्रवर चलानेहारा मुनि। एक राजा (पु०).

मुद्रा, (स्त्री०) मुद्+रक् । प्रत्ययकारिणी । विश्वास जमानेवाली । मोहर (अंगूठीकी) । मोहरके निशानवाली अंगूठी । एक प्रकारका लिखना । तन्त्रमें एक प्रकारका पाँच मकारवाला द्रव्य । देवविशेषको आराधन करनेके लिये अंगुलिओंकी विशेष रचना.

मुद्रायन्त्र, (न०) मुद्राया यन्त्रम् । छापेकी कला छापाखाना.

मुद्राराक्षस, (न०) मुद्रया प्राप्तः राक्षसः यस्मिन्-तादृशं नाटकं । अभेदोपचारात्समासः । विशाखदत्तका रचाहुआ एक नाटक.

मुद्रालिपि, (स्त्री०) मुद्रया लिपिः । पांच प्रकारके लिखनेमेंसे एक । छापेके अक्षर.

मुद्रिका, (स्त्री०) मुद्रैव । क्षुद्रा वा मुद्रा वा कन् । सोने वा चांदीका बनाहुआ अंगुलिमें स्थित अंकोंके साधन करनेलायक एक पदार्थ । मोहर । रुपया.

मुद्रित, (त्रि०) मुद्रा जाता अस्य+इतच् । अप्रकाशित । छिपाहुआ । अंकित । छपाहुआ.

मुधा, (अव्य०) मिथ्या । झूठ । बेफायदा । वृथा.

मुनि, (पु०) मन्+इन्-पृ० उत्वम् । ऋषि । पवित्रपुरुष । संत । भक्त । यति । अगस्त्य । व्यास । बुद्ध । पाणिनि । "जिसका मन दुःखमें व्याकुल नहिं होता, सुखमें जिसको इच्छा नहिं, वासना, भय, और क्रोधसे रहित, स्थिरबुद्धिवाला मुनि होता है" । स्थिरचित्त और विषयकी वासनासे रहित जन (वे मनु, अत्रि, विष्णु, हारीत आदि हैं) । सप्त संख्या । सातकी गिनती.

मुनित्रयम्, (न०) मुनीनां त्रयम् । तीन मुनि (पाणिनि-कात्यायन-पतञ्जलि.

मुनिपुङ्गव, (पु०) (मुनिषु पुङ्गवः=श्रेष्ठः) मुनिओंमें श्रेष्ठ प्रसिद्ध बावडा मुनि.

मुनिभेषज, (न०) मुनीनां भेषजं इव । मुनिओंकी मानों दवाई है । हरीतकी (हरीड) । अगस्त्यं मुनि । कुछ न खाना.

मुनिवृत्ति, (त्रि०) मुनीनां वृत्तिः यस्य । मुनिओंकी जीविका । मुनिकी भान्ति जीवनका निर्वाह करनेवाला.

मुनीन्द्र, (पु०) मुनिः इन्द्र इव । मुनि मानो इन्द्र है । बुद्धदेव । ७ त० । ऋषिश्रेष्ठ । मुनिओंमें बहुत अच्छा.

मुन्था, (स्त्री०) ताज़कमें प्रसिद्ध जन्मके वर्षसे लेकर एक २ वर्ष । लग्नसे एक २ राशिका अन्तर (फ़रक) इसी अर्थमें "मुथहा".

मुन्यन्न, (न०) मुनियोग्यं अन्नम् । मुनिओंके लायक अन्न । नीवार कन्दादि । खांकके चावल । कन्द आदि.

मुमुक्षु, (त्रि०) मोक्तुं इच्छुः । मुच्+सन्+उ । मोक्षकी इच्छावाला । जो संसारसे छूटना चाहता है । यति (पु०).

मुमूचान, (पु०) मुच्+कान-पृ० दीर्घः । मेघ (बादल).

मुमूर्षु, (त्रि०) मर्तुं इच्छुः । मृ+सन्+उ । आसन्नमरण । जो मरनेकी इच्छासे कर्ता है । जिसकी मौत नजदीक है.

मुर्, वेष्टन । घेरलेना । तु० पर० सक० सेट् । मुरति । अमोरीत्.

मुर, (पु०) मुर+क । एक दैत्य । वेष्टन । घेरना । एक गन्धद्रव्य । स्त्रियां टाप्.

मुरज, (पु०) मुरात् (वेष्टनात्) जायते । जन्+ड । घेरनेसे उपजता है । मृदंग । एक प्रकारका बाजा । कुबेरकी स्त्री । (स्त्रियां टाप्).

मुररिपु, (पु०) ६ त० । मुरदैत्यका शत्रु । विष्णु । "मुरारी" "मुरमथन".

मुरला, (स्त्री०) मुरं लाति । ला+क । नर्मदा नदी । एकबाजा । मुरली । बंसरी.

मुरलीधर, (पु०) मुरलीं धरति । धृ+अच् । श्रीकृष्ण । "मुरलीवादन".

मुर्च्छ, मोहमूर्च्छित होना । बेसुधहोना । वृद्धि-बढना । मूर्च्छति । अमूर्च्छीत् । भावे क्त । मूर्त । मूर्च्छितम्.

मुर्मुर, (पु०) मुर्+क । पृ० द्वित्वम् । तुषाग्नि । तुस (तोह)की आग । कंदर्प । कामदेव । और सूर्यका घोडा.

मुश(स)ली, (स्त्री०) मुष्-मुस् वा अलुक्-पृ० "ष" को "श" ङीप् । तालामूली, मुसलीदवाई । गृहगोधिका । छिपकली (लिन्) । बलराम (पु०).

मुष्, लुण्ठन् (लूटना) । क्र्या० पर० द्विक० सेट् । मुष्णाति । अमोषीत्.

मुष-(स-श-)ल, (पु०) मुष्+कलन् । पृ० । षस्य वा सः (शः) वा । अयोग्र । जिसके आगे लोहा लगाहुआ होता है ऐसा धान आदि कूटनेका साधन । एक पदार्थ । मोहला । मुंगली.

मुषित, (त्रि०) मुष्+क्त । अपहृतद्रव्यजन । चुराया हुआ । वह जन कि जिसकी चोरी होगई.

मुष्क, (पु०) मुष्+कक् । पुरुषका चिह्नविशेष । अंडकोष । पताल्रू । घण्टापाटलनामी वृक्ष । तस्कर । चोर । मोटा.

मुष्कशून्य, (पु०) ३ त० । वृषण (पताल्रू) से रहित । राजाओंके अंतःपुर (जनानखाने)का रखवारा । खोजा । नपुंसक.

मुष्टि, (पु० स्त्री०) मुष्+क्तिच् । बद्धपाणि । बंधाहुआ हाथ । मुक्की । पल (चार तोले)का परिमाण (माप) क्तिन् । चुराना (स्त्री०).

मुष्टामुष्टि, (अव्य०) मिथो मुष्टिप्रहारकरणम् । आपसमें मुक्कीओंसे लडना.

मुष्टिक, (पु०) मुष्ट्या कायति । कै+क । कंस राजाका एक मल्ल (पहिलवान) "मुष्टिमोषणं प्रयोजनं अस्य" कन् । चुराना जिसका मतलब है । स्वर्णकार । सुनार.

मुष्टिकान्तक, (पु०) ६ त० । बलदेव (इसका मुष्टिकदैत्यको मारनेसे ऐसा नाम है).

मुष्टिन्धय, (पु०) मुष्टिं धयति । धे+खच्-मुम् च । मुक्कीको पीता है । बालक । बच्चा.

मुष्टिबन्ध, (पु०) मुष्टेर्बन्धो यत्र । जहां मुट्ठी बांधी जाती है । संग्रह । जमा करना । ६ त० । "मुष्टिबंधन" मुट्ठिका बांधना.

मुस-(ष-श)-लिन्, (पु०) मुस (ष) (श) ल+अस्त्यर्थे इनि । बलदेव । बलराम.

मुस्त, (पु०) (स्त्री०) मुस्त+अच् । स्त्रीत्वे टाप् । मुस्तक । मोथा । तृणमूलविशेष.

मुह्, मोह-वैचित्त्य । बेसुध होना । दि० उभ० अक० सेट् । मुह्यति । अमुहत् । मोहिता । मोग्धा । मोढा.

मुहिर, (पु०) मुह्+किरच् । कामदेव । मूर्ख । बेवकूफ.

मुहुस, (अव्य०) पौनःपुन्य । वारवार.

मुहूर्त, (पु० न०) हुर्च्छ+क्त-धातुको "मुट्" का आगम होता है । बारह क्षणके मापका समय । दिलका पंद्रहवां भाग । किञ्चिन्न्यूनाधिक घटिकाद्वयरूप काल । थोडासा कम वा जियादा दोघडीका समय । लहजा । थोडासा समय । अठतालीस मिनटका वक्त । ज्योतिषी (पु०).

मू, बंध-बांधना । भ्वा० आ० सक० सेट् । मवते । अमविष्ट.

मूक, (पु०) मू+कक् । मत्स्य । मच्छी । एक दैत्य । दीन। और बोलनेकी शक्तिसे रहित । गूंगा (त्रि०).

मूढ, (त्रि०) मुह्+क्त । मूर्ख । बाल । जड । बेवकूफ । बालक.

मूर्च्छना, (स्त्री०) मूर्च्छ+युच् । "स्वर (आवाज) । जहां भलीभांति मूर्च्छित हुआ रागपनको प्राप्त होता है, वह ग्रामसे उपजी मूर्च्छना कहीजाती है" । गानेका एक अंगविशेष । बेसुध होना.

मूर्च्छा, (स्त्री०) मूर्च्छ+अङ् । मोह । बेहोशी । जागनेपरमी बाहिरकी इन्द्रिओंके व्यापारसे शून्य होनेकी दशा । और वृद्धि । बढना.

मूर्च्छाल, (त्रि०) मूर्च्छा+अस्त्यर्थे लच् । मूर्छाविशिष्ट । मूर्च्छावाला । बेहोश.

मूर्च्छित, (त्रि०) मूर्च्छा जाता अस्य+इतच् । मूर्च्छावाला । बढाहुआ । ऊंचा.

मूर्त, (त्रि०) मूर्च्छ+क्त । मूर्च्छान्वित । मूर्च्छावाला । बेहोश । मूढ । और सख्त । "मूर्तिः अस्ति अस्य" मूर्तिवाला । शकलवाला । न्यायमें पृथिवी, जल, अग्नि, वायु और मन.

मूर्ति, (स्त्री०) मूर्च्छा+क्तिन् । देह । शरीर । काठिन्य (सख्ती) । आकार (शकल) । प्रतिमा । मूरत । तसवीर.

मूर्तिमत्, (पु०) मूर्तिः अस्ति अस्य+मतुप् । मूर्तिवाला । शकलवाला । देह । शरीर । आकारवाला (शकलवाला) । सख्तीवाला (त्रि०).

मूर्धज, (पु०) मूर्ध्नि जायते । जन्+ड । माथेपर उपजता है । केश । बाल । जो कुछ माथेपर हो (त्रि०).

मूर्धज्योतिस्, (न०) मूर्ध्नः ज्योतिः । मस्तकका प्रकाश । ब्रह्मरंध्र । मुद्रामार्ग । परमात्माकी ज्योति.

मूर्धन्य, (त्रि०) मूर्ध्नि भवः+यत् । सिरपर हुआ । मस्तकजात । माथेमें उपजा । "ऋ-ट, ठ, ड, ढ, ण, र, ष" वर्ण (पु०).

मूर्धन्, (पु०) मूर्ध+कनिन्-धुट् च । मस्तक । माथा । सिर.

मूर्धवेष्टन, (न०) मूर्धा वेष्ट्यते अनेन+ल्युट् च । जिसके द्वारा (सिर) लपेटा जाता है । पगडी । पग्ग.

मूर्धाभिषिक्त, (पु०) मूर्ध्नि अभिषिक्तः । मस्तकपर अभिषेक कियाहुआ । राजतिलक दियागया । क्षत्रिय । राजा । वर्णसंकर । एकजाति । मन्त्री.

मूर्वा, (स्त्री०) मूर्व+अच् । अपने नामसे प्रसिद्ध एकलता (वेल).

मूल्, प्रतिष्ठा । कायम होना । स्थित होना । पक्का होना । भ्वा० उभ० अक० सेट् । मूलति-ते । अमूलीत्-अमूलिष्ट.

मूल्, रोपण । लगाना । चुरा० उभ० सक० सेट् । मूलयति-ते.

मूल, (न०) मूल+क । शिफा (जड) । आद्य (पहिला) । निकुञ्ज (वेलोंसे ढकाहुआ स्थान) । व्यापारके उपयोगी मूलधन (पूंजी) । अन्तिक (नजदीक) । अपना । पाव । पिप्पलीमूल । टीका आदिसे व्याख्या करनेलायक ग्रन्थ । उन्नीसवां नक्षत्र (त्रि०).

मूलक, (न०) मूल+संज्ञायां कन् । एक प्रकारका कंद (जड) । मूली (इसका माघमें कभी सेवन न चाहिये).

मूलकर्मन्, (न०) मूलेन (मन्त्रौषधादिना) यत् । वशीकरणादि कर्म । मन्त्र और औषध (बूटी) आदिसे वश करलेनेका काम । पहिला काम.

मूलकृच्छ्र, (न०) मूलेन (क्वथितवृक्षमूलेन) कृच्छ्रम् । वृक्षकी जडको काढनेसे मुशकिल है । एक प्रकारका व्रत । उसवाला (त्रि०).

मूलप्रकृति, (स्त्री०) मूलीभूता (सर्वाद्या) प्रकृतिः । सबके पहिली प्रकृति । सांख्यमतमें "सबका कारण", समान दशाको प्राप्तहुआ, सत्व, रजः, तमोगुणरूप प्रधान.

मूलविभुज, (पु०) मूलानि विभुजति । जडोंको काटता है । रथ । गाडी । छकडा.

मूलस्थान, (न०) मूलं स्थान । असली स्थानम् (जगह) । जड । परमात्मा । वायु । मुलतान शहर.

मूलहर, (त्रि०) मूलं हरति । जडको काटनेवाला पूरे तौरपर.

मूलाधार, (पु०) ६ त० । जडका आश्रय । नाभि । (नाफ-धुन्नी) और लिङ्गका बीच (वह शरीरकी सम्पूर्ण नाडिओंका मूलस्थान है)। तन्त्रमें तीन कोनवाला एकचक्र.

मूलिन्, (पु०) मूलं अस्ति अस्य+इन् । जिसकी जड हो । वृक्ष । दरख्त "ठन्" मूलिक । इसी अर्थमें है.

मूलोच्छेद, (पु०) मूलस्य उच्छेदः । मूल (जड)का काटना। पूरा नाश (तबाही).

मूल्य, (न०) मूलाय (पटादिकारणतन्त्वादये) इदं+यत् । सूत लेनेके लिये दियागया धन । मोल । कीमत । मुल्ल.

मूष्, लुण्ठन । लूटना । भ्वा० पर० सक० सेट् । मूषति । अमूषीत्.

मूषक, (पु०) (स्त्री०) मूष्+ण्वुल् । स्त्रीत्वे टाप् । अत इत्वम् । मूसा । चूआ । उन्दुरु.

मूषिक, (पु०) मूष्+किकन् । उन्दुरु । मूसा । चूआ.

मूषी, (स्त्री०) मूष+ङीष् । सोने आदिके पिघलानेका पात्र । कुठाली.

मृ, मृति-मरना । तु० लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ्, लुङ्, आशीर्लिङ्में आत्मनेपद और लकारोंमें परस्मैपद होता है । अक० अनिट् । म्रियते । अमृत । ममार । मर्तासि । मृषीष्ट.

मृकण्डु, (पु०) मुनिविशेष । एक मुनिका नाम.

मृग्, अन्वेषण । तालाश करना । और मांगना । चु० आ० सक० सेट् । मृगयते । अममृगत.

मृग, (पु०) मृग+क । पशुमात्र । हरिण । एक हाथी । अश्विनीसे पाँचवां नक्षत्र (तारा) । " मृग्+भावे अच् " अन्वेषण (ढूंढना-तालाश करना) । मांगना । और एक यज्ञ । कस्तूरी । और मकर राशि (पु०).

मृगगामिनी, (स्त्री०) मृग इव गच्छति । गम्+णिनि । मृगतुल्यगमनवती । हरिणके समान जानेहारी.

मृगजीवन, (पु०) मृगैः (तन्मांसादिभिः) जीवति । जो पशुओंके मांस आदिसे जीताहै । व्याघ्र । शिकारी । जीव्+ल्यु.

मृगणा, (स्त्री०) मृग्+युच्+टाप् । नष्टहुए द्रव्यका खोजना । तालाश.

मृगतृष्णा, (स्त्री०) मृगाणां तृष्णेव (तृष्णाहेतुत्वात्) । मानो हरिणोंकी लालच है (लालचका कारण होनेसे) । सूर्यकी किरणोंमें जलभ्रान्ति (पानीका खयाल होना) । जलरहित देशमें दूरसे सूर्यकी किरणोंको देख तृष्णासे पीडितहुए मृगजलकी भ्रान्तिसे वार २ घूसते हैं परन्तु पानी नहिं मिलता । निर्जल देशमें रेतपर गिरीहुई किरणमें पानीका खयाल.

मृगदंशक, (पु०) मृगं दशति । दंश्+ण्वुल् । पशुको डसता है । कुक्कुर । कुत्ता.

मृगधूर्तक, (पु०) मृगेषु धूर्तकः । पशुओंमें धूर्त (खचरा) । शृगाल । सियार । गीदड.

मृगनाभि, (पु०) मृगस्य नाभिः (नाभिजन्यः) । हरिणकी नाभि (धुन्नीसे उत्पन्न हुआ) । कस्तूरी । एक प्रकारका हरिण.

पद्म० ५०

मृगनेत्रा, (स्त्री०) मृगः (मृगशिरोनक्षत्रं) नेत्रं इव (प्रकाशकं) यत्र (रात्रिषु) । जिन रात्रिओंमें मृगशिर तारा आंखकी तरह प्रकाश कर्ता है । मार्गशिरकी रात्रियें । हरिणके समान चपल नेत्रोंवाली स्त्री (औरत).

मृगपति, (पु०) ६ त० । मृगाणां (पशूनां) पतिः । पशुओंका मालिक । सिंह (शेर) । " मृगेन्द्र " आदि इसी अर्थमें है.

मृगबन्धनी, (स्त्री०) मृगो बध्यते अनया । बन्ध+ल्युट्-ङीप् । जिस्से पशु बांधलिया जाता है । पशुओंको बांधनेका जाल.

मृगमद, (पु०) मृगस्य मदः (गर्वः) यस्मात् । हरिणको जिस्से अभिमान होता है । कस्तूरी.

मृगया, (स्त्री०) मृगं याति अनया । या+क । जिस्से पशुपर झपटता है । शिकार । अहेर । आखेटक.

मृगयु, (पु०) मृग+अस्ति अर्थे यु । हरिणवाला । ब्रह्मा (हरिणके स्वरूपमें इसका सिर काटागया था) । शृगाल (गीदड) आदि एक प्रकारका व्यापार । सिआर । व्याध । शिकारी.

मृगराज, (पु०) मृगाणां (पशूनां) राजा । टच् । पशुओंका राजा । सिंह (शेर) " मृगेण राजते " अच् । हरिणसे शोभता है । चन्द्रमा । चांद । " मृगाङ्क " " शशाङ्क ".

मृगलक्षण, (पु०) मृगो लक्षणं यस्य । हरिण जिसका लक्षण (निशान) है । चन्द्र । चांद । " मृगाङ्क " आदि.

मृगवधाजीव, (पु०) मृगवधेन आजीवति । जीव्+अच् । पशुओंको मारनेसे जिसका जीवन होता है । व्याध । शिकारी.

मृगवाहन, (पु०) मृगो वाहनं यस्य । हरिण जिसकी सवारी है । वायु । हवा । " धावन् हरिणपृष्ठस्थ " इति ध्यानम्.

मृगव्यथ, (न०) मृगान् व्यथते अत्र । जिसमें पशुओंको पीडा पहुंचती है । मृगया । शिकार । अहेर.

मृगशाव, (पु०) मृगस्य शावः=पोतकः । मृग (हरिण)-का बच्चा.

मृगशिरस्, (न० पु०) मृगस्य इव शिरः अस्य । जिसका सिर हरिणके समान है । अश्विनीसे पांचवां तारा । " मृगशिरा " " मृगशीर्षन् " "मृगशीर्ष" एकही अर्थ.

मृगश्रेष्ठ, (पु०) मृगेषु श्रेष्ठः । मृगोंमें श्रेष्ठ । सिंह शेर.

मृगहन्, (पु०) मृगान् हन्ति । मृगोंको मारता है । व्याध शिकारी.

मृगाक्षी, (स्त्री०) मृगस्य इव अक्षि (पुष्पं) यस्याः । षच् समा० ङीष् । जिसका फूल हरिणके समान है । विशल्या । हरिणके समान नेत्रोंवाली स्त्री.

मृगाण्डजा, (स्त्री०) मृगस्य अण्डाकारात् (नाभिस्थित-मांसपिण्डात्) जायते । जन्+ड । हरिणकी नाभिमें रहनेहारे मांसके गोलेसे उपजता है । कस्तूरी.

मृगादन, (पु०) मृगान् अत्ति । अद्+ल्यु । क्षुद्रव्याघ्र । छोटामेडिया । पशुओंको खाता है । " मृगान्तक " इसी अर्थमें है.

मृगाराति, (पु०) ६ त० । पशुओंका शत्रु । कुत्ता । सिंह । शेर । मेडिया.

मृगाविध, (पु०) मृगं विध्यति । विध्+क्विप् । पहिलेको दीर्घ होता है । पशुओंको वेधता है । व्याघ्र (शिकारी).

मृगित, (त्रि०) मृग+क्त । अन्वेषित । तालाश किया-हुआ । मांगागया.

मृगेन्द्र, (पु०) मृगः इन्द्र इव । पशुका मानों राजा है । सिंह । शेर.

मृगेन्द्रचटक, (पु०) मृगेन्द्र इव हिंस्रश्चटकः (पक्षी) । शेरकी नाईं हिंसा करनेवाला पक्षी । श्येन । बाज । परिंदा.

मृज्, शोधन (साफकरना) और (भूषण) सजाना । वा चुरा० उभ० पक्षे अदा० सक० वेट् । मार्जयति-ते । मार्ष्टि । अमीमृजत्-त-अममार्जत्-त । अमार्क्षीत्-अम्राक्षीत् अमृक्षत्.

मृजा, (स्त्री०) मृज्+अङ् । मार्जन । साफकरना.

मृड्, तोषण (प्रसन्न करना) । क्र्या० और० तु० पर० सक० सेट् । मृड्णाति । मृडति । अमर्डीत्.

मृड, (पु०) मृड्+क्त । शिव । उसकी पत्नी (स्त्री०) ङीप्-आनुक्च.

मृण्, हिंसा (मारना) तु० प० स० सेट् । मृणति । अमर्णीत्.

मृणाल, (न०) मृण्+कालन् । कमलफूलकी डण्डीका सूत । और वीरणमूल । में । "मृणाली".

मृणालिन्, (पु०) मृणालं विद्यते अस्य+अच् । " मृणालं (पद्मं) ततः-समूहे-तद्युक्तदेशे वा इनि " । कमलफूलकी डण्डीके सूतवाला । मेंवाला । बिसतन्तुवाला । कमलोंका समूह । और कमलोंवाला देश । कमलोंकी बेल (स्त्री०).

मृत, (न०) मृ+भावे क्त । मरण । मरना । उसके समान दुःखको उपजानेहारा मांगनेका व्यापार (याचितक वृत्ति).

मृतक, (न०) मृतेन (मरणेन) कायति । कै+क । मरणाशौच । शव (मुर्दा) । मरनेकी अपवित्रता । पातक.

मृतकल्प, (त्रि०) ईषदसमाप्तो मृतः । मृत+कल्पप् । मृतप्राय । मरनेवाला । मरनेपर आपहुंचा.

मृतवत्सा, (स्त्री०) मृतो वत्सो यस्याः । जिसका पियारा (बेटा) मरगया । मरीहुई सन्तानवाली स्त्री (औरत) और गौ । "मृतवत्सा च या नारी" इति तन्त्रम्.

मृतसञ्जीवनी, (स्त्री०) मृतान् संजीवयति । सम्+जीव्-णिच्+ल्यु ङीप् । मरेहुओंको जिला देती है । गोरक्षदुग्धा नामी औषध (बूटी) । तन्त्रमें एक प्रकारकी विद्या.

मृतस्नात, (त्रि०) मृतं मरणं तन्निमित्तं स्नातः । स्ना+क । मरनेके निमित्तसे जिसने स्नान किया है । मरनेपर नहानेवाला.

मृत्तिका, (स्त्री०) मृद्+तिकन्-टाप् । मट्टी । मृदा । माटी.

मृत्यु, (पु०) मृ+त्युक् । यम । शरीर आदिसे प्राणोंका वियोग (अलग होना) । मरण । मरना । मौत । कंस । कामदेव.

मृत्युनाशक, (पु०) मृत्युं नाशयति । नाशि+ण्वुल् । पारद (पारा) । (रसायन कियासे शुद्धकर सेवन कियाहुआ पारा मृत्युको नाश कर्ता है) मौतको नाश करनेहारा (त्रि०).

मृत्स्ना-त्सा, (स्त्री०) । मृद्+प्रशस्तार्थे स्न, स वा । प्रशस्त मृत्तिका । बहुत साफ मट्टी । खुशबोदार मट्टी.

मृद्, क्षोद (चूराकरना) । क्र्या० प० सक० सेट् । मृद्नाति । अमर्दीत्.

मृद्-दा, (स्त्री०) मृद्यते । क्षुद्यते । मृद्+क्विप् । मृत्तिका । मट्टी । " मृदा " भी.

मृदङ्ग, (पु०) मृद्+अङ्गच् । वाद्यभेद । एक प्रकारका बाजा.

मृदु, (त्रि०) मृद्+कु । कोमल (नरम) । " स्त्रियां वा ङीप् " मृद्वी-मृदुः । चित्रा, अनुराधा, मृगशिर, और रेवती तारे.

मृदुत्वच्-च, (पु०) मृदुः त्वक् त्वचा वा यस्याः । जिसका छिलका मुलायम हो । भूर्जपत्र । भोजपत्रका वृक्ष.

मृदुभाषिन्, (त्रि०) मृदु भाषते । कोमल बोलनेवाला । मीठा (मधुर) बोलनेवाला.

मृदुल, (न०) मृद्+कुलच् । जल (पानी) । कोमल (नरम) (त्रि०).

मृदुस्पर्श, (त्रि०) मृदु स्पर्शः यस्य । कोमल (नाजक़) स्पर्शवाला.

मृदुहृदय, (त्रि०) मृदु हृदयं यस्य । कोमलहृदयवाला । दयालु । मिहर्वान.

मृद्वीका, (स्त्री०) मृदु+स्वार्थे ईकन् । द्राक्षा (दाख) । पीलीदाख.

मृध, (न०) मृध्यते अत्र । क । युद्ध । लडाई । जंग.

मृध्, आर्द्रीभाव-गीलाहोना । भ्वा० उभ० सक० सेट् । मर्धति-ते.

मृश्, स्पर्शन (छूना) । प्रणिधान-खयालकरना । तु० पर० सक० अनिट् । मृशति । अम्राक्षीत्-अमार्क्षीत् । अमृक्षत् । कइओंने इसे " मृष् " ऐसा लिखा है.

मृष्, क्षमा-सहारना। चु० उभ० अनिट्। मृषति-ते। अमृक्षत्-त.

मृषा, (अव्य०) मिथ्या (झूठ) शब्दके अर्थमें है.

मृषार्थक, (न०) मृषा (अत्यन्तासम्भूतः) अर्थः यस्य। जिसका अर्थ बिलकुल झूठ हो.

मृषावाद, (पु०) मृषा+वद्+घञ्। मिथ्या वाक्य। झूठा वचन (जैसे "ह्रद (तालाव)में आग है)" इत्यादि वचन। झूठ बोलना.

मृषोद्य, (न०) मृषा+वद्+क्यप्। मिथ्या कथन। झूठ कहना। झूठ बोलना.

मृष्ट, (न०) मृष्+क्त। मरिच (मिर्च)। शोधित साफ होगया (त्रि०).

मॄ, वध्-मारना। क्र्या० प० सक० सेट्। मृणाति। अमारीत्.

मे(क)खलकन्यका, (स्त्री०) ६ त०। मेखलनामी पहाडकी कन्या अर्थात् उस्से निकली। नर्मदा नाम नदी.

मेखला, (स्त्री०) मि+खलच्। स्त्रीकटिभूषण। औरतकी कमरका जेवर। तडागी। ब्रह्मचारीसे धारनेलायक कटिसूत्र (तडागी)। चमडेकी रस्सी आदि। पहाडका नितम्ब (गिर्द नवाई)। नर्मदा नदी। जनेऊ डालनेके समयवानकी तेहरी तडागी। होमका कुण्ड.

मेखलाबन्ध, (पु०) मेखलायाः बन्धः। तडागीका बंधन.

मेखलिन्, (पु०) मेखला+इनि। मेखला (तडागी) वाला। शिव। ब्रह्मचारी.

मेघ, (पु०) मिह्+घञ्-कुत्वम्। धूम (धूआं) ज्योति (आग-रौशनी) और सलिल (पानी)के मेलसे उत्पन्न हुआ जलधर (बादल)। मुस्तक (मोथा)। एक राक्षस। एक रोग.

मेघकाल, (पु०) मेघस्य कालः। मेघ (बादलका) समय। वर्षा ऋतु (मौस्मि).

मेघजीवन, (पु०) मेघो जीवनं यस्य। बादल जिसका जीवन है। चातक पक्षी। पपीहा (ये बादलसे जीताहै).

मेघज्योतिस्, (न०) ६ त०। बादलसे उपजी ज्योति (रौशनी) वज्राग्नि.

मेघदूत, (न०) मेघः दूतः यस्मिन् तत् काव्यम्। कालिदासका प्रसिद्ध काव्य.

मेघनन्दिन्, (पु०) मेघेन (तद्ध्वनिना) नन्दति। णिनि। बादलकी आवाजसे प्रसन्न होता है। मयूर। मोर.

मेघनाद, (पु०) मेघस्य इव नादः अस्य। बादलकी नाई जिसका शब्द है। वरुण। रावणका पुत्र। इन्द्रजित्। ६ त०। मेघशब्द। बादलकी आवाज.

मेघयोनि, (स्त्री०) ६ त०। बादलका कारण। धूम। धूआँ.

मेघवर्त्मन्, (न०) ६ त०। बादलोंका रास्ता। आकाश। आसमान.

मेघवह्नि, (पु०) मेघजन्यो वह्निः तद्घर्षणजातोऽग्निः। बादलोंकी घसडसे उत्पन्न हुई आग। वज्राग्नि.

मेघवाहन, (पु०) मेघो वाहनं इव यस्य। बादल मानो जिसकी सवारी है। "अथवा जो बादलोंको चलाता है।" वह+णिच्+ल्यु। इन्द्र। देवताओंका राजा.

मेघागम, (पु०) मेघानां-आगमो यत्र। जिसमें बादल आते हैं। वर्षाकाल। वर्षर्तु। बर्सनेका समय। बर्सात.

मेघागम, (पु०) मेघस्य आगमः। मेघका आना। वर्षा ऋतु। बर्सात.

मेघानन्दिन्, (पु०) मेघेन आनन्दति। बादलसे आनन्द कर्ता है। मयूर। मोर.

मेघान्त, (पु०) मेघानां अन्तो यत्र। जिस समय बादलका अंत हो जाता है। शरत्काल। "मेघात्यय" यही अर्थ है.

मेघालोक, (पु०) मेघस्य आलोकः प्रकाशः। मेघका दर्शन.

मेचक, (न०) मच+वुन्-पृ०। अंधकार। अंधेरा। और नीला अंजन (सुर्मा)। मयूरचन्द्रक (मोरकी पूंछका चांद)। बादल। और श्यामवर्ण (कालारंग) (पु०)। उसवाला (त्रि०).

मेढ्र, (पु०) मिह्+ष्ट्रन्। मेघ। बादल। पुरुषका असाधारण (खास) चिह्न (निशान)। लिङ्ग.

मेद, वध-मारना। सक० भ्वा० उभ० सेट्। मेदति-ते। अमेदीत्। अमेदिष्ट.

मेदज, (पु०) मेदात् (महिषासुरमेदसो) जायते। जन्+ड। महिष (भैंसेका स्वरूप) नामी दैत्यकी चर्बीसे उपजा। पृथिवीका गुग्गल (भूमिजगुग्गुल)। चर्बीसे उपजा (त्रि०).

मेदस्, (न०) मेद्+असुन्। मांससे उत्पन्न हुआ धातुविशेष (चर्बी).

मेदस्कृत्, (पु०) मेदः करोति (स्वपरिपाकेण जनयति) क्विप्। जो अपनेको पकाकर चर्बी उत्पन्न कर्ता है। मांस। मास.

मेदिनी, (स्त्री०) मेदः (मधुकैटभमेदः) अस्ति अस्याः कारणत्वेन इनि। जो मधु और कैटभ दैत्योंकी चर्बीसे उपजी। वसुंधरा। पृथिवी। जमीन.

मेदुर, (त्रि०) मिद्+घुरच्। अतिशयस्निग्ध। बहुत चिकना.

मेधस्, (पु०) मेध्+असुन्। स्वायंभुवमनुका एकपुत्र.

मेधा, (स्त्री०) मेध्-मारना-समझना-जानना+अङ्। धारणावती बुद्धिः। जिस बुद्धिसे एकवार जानाहुआ पदार्थ नहीं भूलता। शक्ति (वेदमें)। अच्। याग (पु०).

मेधाविन्, (पु०) मेधा+अस्त्यर्थे विनि । अच्छी अकलवाला । शुकखग । तोतापक्षी । मेधावाला (त्रि०) स्त्रियां ङीप् । "मेधावती".

मेधातिथि, (पु०) मनुसंहितापर टीका करनेवाला । अरुन्धतीका पिता.

मेधिर, (त्रि०) मेधा+अस्त्यर्थे इरच् । मेधावाला । अच्छी बुद्धिवाला ।

मेधिष्ठ, (त्रि०) अतिशयेन मेधावान् । इष्ठन् । मतोर्लुक् । बहुत बुद्धिवाला जन । जिसकी न भूलनेवाली बुद्धि हो.

मेध्य, (त्रि०) मेध्+ण्यत् । पवित्र (पाक) । और शुचि (साफ) । "मेधाय (यज्ञाय) हितः" जो यज्ञके लिये उपकारी हो । छाग (बकरा) । खदिर (खैरकी लकडी) और यव (जौं) (पु०) । केतकी । शङ्खपुष्पी । रोचना (स्त्री०).

मेनका, (स्त्री०) मि+नक् । (स्वर्वेश्यामेद) । एक प्रकारकी स्वर्गकी वेश्या (कंजरी) । "मेनैव" कन् । हिमालयकी स्त्री (औरत).

मेनकात्मजा, (स्त्री०) ६ त० । मेनकाकी लडकी । हिमालयकी कन्या । दुर्गा । पार्वती । "मेनासुता" यही अर्थ.

मेना, (स्त्री०) मि+न । हिमालयपत्नी । पितरोंकी मनसे उपजी कन्या (लडकी).

मेन्धी, (स्त्री०) मा (लक्ष्मीः) इव इन्धते । इन्ध्+घञ् । ङीष् । जो लक्ष्मीकी नाईं चमकती है । (मैंदी) वृक्ष । उसको मलनेसे लक्ष्मीके समान लाल हाथ हो जातेहैं.

मेय, (त्रि०) मा-मि-वा यत् । परिच्छेद्य । मापनेलायक । जान्नेलायक.

मेरु, (पु०) मि+रु । सर्ववर्षोंसे उत्तरका एक पर्वत (पहाड) । जपमालाके ऊपरका । फलका बीजविशेष । हाथरूपमालामें अंगुलिओंका पर्व (गांठ) विशेष.

मेरुपृष्ठ, (न०) मेरोः पृष्ठम् । मेरुकी पीठ । स्वर्ग । बहिश्त । प्रकाश.

मेरुसावर्णि, (पु०) चौदह मनुओंमें ग्यारवां । एकादशमनु.

मेलक, (त्रि०) मेलयति । मिल्+णिच्+ण्वुल् । मिलाता है । विवाह मेल्+घञ् । कन् । संग । मेल.

मेला, (स्त्री०) मिल्+णिच्+अच्+टाप् । नीलका वृक्ष । स्याही । अंजन । सुर्मा । और मिलाना.

मेलान्धु, (पु०) मेलायाः (मस्याः) अन्धुः इव । स्याहीका मानों खूआ है । मस्याधार (दवात).

मेव्, सेवाकरना । भ्वा०आ० सक० सेट् । मेवते । अमेविष्ट.

मेष, (पु०) मिष्+अच् । (मेढा) एक प्रकारका पशु । ज्योतिश्चक्रका बारवां अंश (हिस्सा) । अश्विनी भरणी और कृत्तिका नक्षत्रके एक पादवाला राशिविशेष । पहिली राशि.

मेषाण्ड, (पु०) मेषस्य अण्ड एव अण्डः अस्य । मेढेका अंडाही जिसका अण्ड है । इन्द्र (दक्षके यज्ञमें अंड नाश होनेपर मेषहीका अंड उसका कियागया था) (पुराणमें).

मेह, (पु०) मिह्+घञ् । प्रस्राव । पेशाव । प्रमेहका रोगविशेष । सुजाखकी बीमारी । "अच्" मेघ, बादल.

मेहघ्नी, (स्त्री०) मेहं हन्ति । हन्+ठक्-ङीप् । हरिद्रा (हलदी) । इसकी जडका गीला रससेवन करनेसे पेशावकी बीमारी दूर हो जाती है यह वैद्यकमें प्रसिद्ध है.

मेहन, (न०) मिह्यते अनेन । मिह्+करणे ल्युट् । शिश्न । लिंग । "कर्मणि ल्युट्" मूत्र (मूत) । "भावे ल्युट्" मूत्रोत्सर्ग । मूतका छोडना । पेशाव करना.

मैत्र, (न०) मित्रो देवता अस्य+अण् । मैत्रं (पायुः) तस्येदं पुनरण् । गुदाका । विष्ठोत्सर्ग । पाखाने फिरना । "मित्रो देवता अस्य" "मित्रत आगतं" "तस्येदं वा अण्" अनुराधा नक्षत्र (न०) इसका मित्र देवता है । मित्रसे पाया । सुहृत्संवन्धी (त्रि०) "मित्र एव" अण् । मित्र । और ब्राह्मण.

मैत्रावरुण, (पु०) मित्रश्च वरुणश्च । आनङ् । मित्रावरुणयोः अपत्यं+अण् । मित्र और वरुण देवताकी संतान । अगस्त्य । वसिष्ठ । इञ् । "मैत्रावरुणिः" इसी अर्थमें । कल्पभेदसे वह उनका पुत्र है (यह पुराणमें प्रसिद्ध है).

मैत्री, (स्त्री०) मित्रस्य भावः+अण् ङीप् । सौहार्द । मित्रता । दोस्ती "ष्यञ्" "मैत्र्यं" इसी अर्थमें होता है (न०).

मैत्रेय, मित्रायाः अपत्यं+ढक् । मित्राकी संतान । एक मुनि । और बुद्धदेव.

मैथिली, (स्त्री०) मिथिलायां भवा+अण् । मिथिलामें उपजी । सीता । "मिथिलाया राजा+अण्" मिथिला देशका राजा (पु०).

मैथुन, (न०) मिथुनेन (स्त्रीपुंसाभ्यां) निर्वृत्तं+अण् । स्त्री और पुरुषसे पूराहुआ । अभ्याधानादि (यज्ञ आदि) कर्म (यज्ञमें सपत्नीक-स्त्रीसहितकाही अधिकार है) । स्त्री और पुरुषके मेलवाला गांवका धर्म । भोग.

मैनाक, (पु०) मेनकायां भवः+अण् । मेनकामें हुआ । एक पहाड.

मैरेय, (पु०) मिरायां (देशभेदे-औषधिभेदे वा) भवः ढक् । मिरादेशमें उपजा वा औषधिविशेषसे बनाया-हुआ आसव (शराब).

मोक्ष्, क्षेप-फेंकना-छूटना-खोलना-खुले होजाना । वा चु० उभ० पक्षे भ्वा० पर० सक० सेट् । मोक्षयति-न्ते । मोक्षति.

मोक्ष, (पु०) मोक्ष्+घञ् । मुक्ति (छूटना) । मोचन । और मरना । आत्माका जन्म और मरणके पाशसे बिलकुल छूटना.

मोक्षकं, (त्रि०) मोक्ष्+ण्वुल्+अक । छुटकारा देनेवाला स्वतन्त्र (खुला) करनेवाला.

मोक्षणं, (न०) (मोक्ष्+ल्युट्+अन) छुटकारा । खुला छोड देना । बचाना । गांठ खोलना.

मोक्षिन्, (त्रि०) मोक्ष्+णिनि+इन् । मोक्षकी इच्छा करनेवाला । सर्वथा (बिलकुल) छूटाहुआ.

मोघ्, (त्रि०) मुहं+घ-अच्-वा कुत्वं । निरर्थक (वेफायदह) । और हीन (कम-छोटा).

मोचक, (पु०) मुच्+ण्वुल् । मोक्ष (नजात) । केलेका फल (कदली) । और शोभांजन (सुहांजना) । वैराग्यवाला (त्रि०).

मोटक, (न०) मुट्+ण्वुल् । श्राद्धमें पितरोंको देनेके लिये टेढे दो कुशाके पत्ते.

मोट्टायित, (न०) एक प्रकारकी स्त्रिओंकी अभिलाष (चाह).

मोद, (पु०) मुद्+घञ् । हर्ष । खुशी.

मोदक, (पु०) मोदयति । मुद्+णिच्+ण्वुल् । खुशीदेता है । एक प्रकारका खाना (खाद्यभेद) (लड्डु) (लडुआ) । खुश करनेवाला (त्रि०) एक प्रकारका दोगला (कहार).

मोदिनी, (स्त्री०) मोदयति । मुद्+णिच्+णिनि । अजमोदा । अजवाइन । मल्लिका (मालती) । यूथिका । कस्तूरी । और मदिरा.

मोषक, (पु०) मुष्णाति । मुष्+ण्वुल् । चुराता है । तस्कर । चौर । चोर.

मोषण, (न०) मुष्+ल्युट् । लुण्ठन । लूटना । छेदन । काटना । मारना.

मोह, (पु०) मुह्+घञ् । मूर्छा । बेहोशी । अज्ञान । बेसमझी । भ्रान्ति (भ्रम) का साधन (कारण) । वेदान्तमें अविद्याकी एक प्रकारकी वृत्ति । दुःख । शरीर आदिमें आत्माका अभिमान । (ये मेरे हैं वा मैं इनका हूं).

मोहकलिल, (न०) मोहस्य कलिलं । बडा भारी मोह (मूल-ममत्व) का जाल । मोहरूपी कीचड.

मोहन, (पु०) मोहयति । मुह्+णिच्+ल्यु । धतूरा (बेहोश करदेता है) । और कामदेवका एक प्रकारका शर (तीर) मोहके करनेहारा (त्रि०) । (स्त्रियां ङीप्).

मोहरात्रि, (स्त्री०) ब्रह्माके अपने परिमाण (माप) से पचास वर्ष व्यतीत होनेपर एक प्रकारका प्रलय । जन्माष्टमीकी रात । भादों वदि अष्टमी.

मोहित, (त्रि०) मुह्+णिच्+क्त । मोह लिया गया । भुलाया गया.

मौक्तिक, (न०) मुक्तैव+स्वार्थे ठक् । मुक्ता । मोती.

मौक्तिकप्रसवा, (स्त्री०) मौक्तिकं प्रसूते । प्रसू+अच् । शुक्तिमात्र । हरएक प्रकारकी सीपी । मुक्तास्फोट.

मौक्तिकसर, (पु०) मौक्तिकानां सरः । मोतिओंकी लडी वा हार.

मौञ्जी, (स्त्री०) मुञ्जस्य इयं+अण् । कटिसूत्र । कमरका सूत । तडागी । तिहरी मूंजकी बनीहुई मेखला (तडागी).

मौञ्जीबन्ध (न), (पु०) मौञ्ज्याः (मेखलायाः) बन्धः यत्र । जिसमें तडागी बांधते हैं । उपनयनसंस्कार । यज्ञोपवीतकी रसम । "मौञ्जीबन्धः शुभः प्रोक्तश्चैत्रे मीनगते रवौ" इति स्मृतिः । तडागीका बांधना (न०) "द्वितीयं मौञ्जीबन्धनं" स्मृतिः.

मौढ्य, (न०) मूढस्य भावः+ष्यञ् । मूढपना । मोह । बालकपन । बाल्य.

मौद्गल्य, (पु०) मुद्गलस्य मुनेः अपत्यं+यञ् । गोत्र चलानेहारा एक मुनि । मुद्गल मुनिकी संतान.

मौद्गीन, (न०) मुद्गानां भवनं क्षेत्रं । मूंग उत्पन्न करनेयोग्य खेत.

मौन, (न०) मुनेर्भावः । मुनिपना । वाणीके व्यापारसे रहित होना । "उच्चारे, मैथुने, चैव प्रस्रावे, दन्तधावने । स्नाने, भोजनकाले च षट्सु मौनं समाचरेत्" चुपचाप.

मौनिन्, (त्रि०) मौनं अस्ति अस्य+इनि । वाग्व्यापाररहित । जो बोल नहिं सक्ता । चुपरहनेहारा । मुनि (पु०).

मौरजिक, (त्रि०) मुरजवादनं शिल्पं अस्य+ठक् । मृदंगवादनशील । मृदंग बाजाके बजानेवाला.

मौर्ख्य, (न०) मूर्खस्य भावः+ष्यञ् । मूर्खपन । बेवकूफी । जडता । मूर्खता.

मौर्वी, (स्त्री०) मूर्वा (लता) तत्तन्तुना निर्वृत्ता+अण् । मूर्वे बेलकी तांतोंसे तयार हुई । धनुर्गुण । धनुष्का गुण । कमानका चिल्लह । अजश्रृङ्गी.

मौल, (त्रि०) मूलं वेत्ति । मूलादागतो वा+अण् । मूलको जानता है वा मूलसे चलाआया । भूमि आदिके आगम आदिका मूल जाननेहारा । पुराना । देरसे चला आता (रीत रसम आदि) । अच्छे वंशका । बाप दादोंसे ले राजाके यहां काम करनेवाला.

मौलि, (पु० स्त्री०) मूलस्य अदूरभवः+इञ् । मूलके न दूर होनेवाला । चूडा । चोटी । किरीट । मुकुट (ताज) । संयतकेश (बंधेहुए बाल) और जूडा । अशोकवृक्ष (पु०) । भूमि (स्त्री०) वा ङीप्.

मौसल, (न०) मुषलस्य इदं सदृशं अण् । मुसल (मोहला)-के समान निश्चेष्ट (बेहोश) । "गंगामें मौषलस्नान बडे २ पापोंको नाश कर्ता है ।" इति पुराणम् । "मुसलं अधिकृत्य कृतो ग्रन्थः" अण् । वह ग्रंथ कि जिसमें मुसलके विषयमें लिखा गयाहो । महाभारतके बीच "मुसल कुलका नाशक हुआ" इत्यादि प्रतिपादन करनेहारा षोडश पर्व (सोलवां पर्व) (इसमें श्रीकृष्ण और बलरामजीकी मृत्यु और यादवोंका ब्राह्मणके शापद्वारा नाशका वर्णन है).

मौहूर्त, (पु०) मुहूर्त (तत्प्रतिपादकं शास्त्रं) वेत्ति अधीते वा+अण् । मुहूर्तको बतानेहारे शास्त्रको जाननेहारा । ज्योतिःशास्त्रको जाननेहारा । ज्योतिषी । ठक । यही अर्थ है.

म्ना, (अभ्यास) वार २ (मनमें) कहना । मिहनतसे सीखना । भ्वा० पर० सक० सेट् । मनति । अम्नासीत्.

म्रक्ष्, संयोजन-जोडना । इकट्ठा करना । घसाना । मारना । साफ २ बोलना । चंदन आदि लगाना । चु० उ० स० सेट् । म्रक्षयति-ते.

म्रक्षण, (न०) म्रक्ष्+ल्युट् । संयोजन (जोडना) । राशीकरण (इकट्ठा करना) । तेल । और यज्ञका पात्र । (वर्तन).

म्रद्, क्षोद-चूरा करना-पीसना । भ्वा० आ० सक० । म्रदते । अम्रदिष्ट.

म्रदिमन्, (पु०) मृदोर्भावः । मृदु+इमनिच् । म्रदादेशः । मृदुत्व । कोमलपन । नाजकपना.

म्रदिष्ठ, (त्रि०) अतिशयेन मृदुः+इष्ठन्-म्रदादेशः । बहुत कोमल । बहुत मुलायम.

म्रियमाण, (त्रि०) मृ-दिवा० आ+शानच् । मृतसदृश । मराहुआसा । मरनेपर आया.

म्लान, (त्रि०) म्लै+क्त । मलिन । मैला । ग्लानियुक्त । ग्लानिवाला । जिसका वीर्य क्षय हो चुका । कुह्मलाया हुआ । हैरान । विषण्ण (थकाहुआ) । सूका.

म्लानि, (स्त्री०) म्ला+क्तिन् । कान्तिक्षय । मलिन होना । मुरझा जाना.

म्लानिः, (स्त्री०) (म्लै+क्तिन्+नि) कुह्मलाना । क्षय होना । थकना । उदासहोना.

म्लास्नु, (त्रि०) म्लै+स्नु । कुह्मलाया हुआ । पतला होगया । थक गया.

म्लिष्ट, (न०) म्लेच्छ्+क्त । नि० । अविस्पष्ट वाक्य । वह वचन जो साफ नहीं । ऐसे वचनवाला और मुरझायाहुआ (त्रि०).

म्लेच्छ्, अपशब्द (वुरा वचन बोलना-साफ न बोलना-जंगलियोंके समान बोलना) वा चु० उभ० पक्षे भ्वा० पर० अक० सेट् । म्लेच्छयति-ते । म्लेच्छति.

म्लेच्छ, (पु०) म्लेच्छ्+घञ् । अपशब्द (वुरा वचन) विगडी हुई बोली । "म्लेच्छो ह वा यदपशब्दः" इति श्रुतिः । "कर्तरि अच्" पामरजाति । नीचजाति और वुरा काम करनेवाली कौम (पु०) पापरत (गुनाहगार) (त्रि०) (किरात, शबर, पुलिंदादि) । हिङ्गुल (हींग) (न०).

म्लेच्छकन्द, (पु०) म्लेच्छप्रियः कन्दः । म्लेच्छोंका पियारा कन्द (जड़) । लशुन । लसन । पियाज.

म्लेच्छजाति, (स्त्री०) म्लेच्छाभिधा जातिः । म्लेच्छनामी कौम । गौका मांस आदि खानेहारी किरात आदि जाति.

म्लेच्छदेश, (पु०) म्लेच्छाधारो देशः । म्लेच्छोंका देश । ब्राह्मण आदि चारों वर्णोंके आचारसे रहित देश । जंगली मुल्क.

म्लेच्छमुख, (न०) म्लेच्छानां मुखं इव रक्तत्वात् । लाल होनेसे मानो म्लेच्छोंकासा मुख है । ताम्र । तामा । म्लेच्छोंका मुख । "म्लेच्छास्यम्".

म्लै, कान्तिक्षय-कान्तिका क्षय-खतम-होना । कुह्मलाना । मुरझाना, भ्वा० पर० सक० अनिट् । म्लायति । अम्लासीत् । मम्लौ.

य

य, (पु०) या+ड । वायु । हवा । यश । यज्ञ । गति (जाना) । संयम (कावू करना) । "या कर्तरि ड" । याता (जानेवाला) (त्रि०).

यकृत्, (न०) यं (संयमं) करोति । कृ+क्विप्-तुकूच । संयम कर्ता है । कुक्षि (वक्खी) । कलेजा । दक्षिणभागस्थ मांसपिण्ड । दहिनी ओर मांसका गोला । उसे वढानेहारी एकप्रकारकी बीमारी.

यक्ष्, पूजा करना । चु० आ० स० सेट् । यक्षयते । अययक्षत.

यक्ष, (पु०) यक्ष्यते (यक्ष्+कर्मणि घञ् । पूजाजाता है) । एक प्रकारका देवता । उसका ईश्वर (मालिक) कुबेर । इन्द्रका घर.

यक्षकर्दम, (पु०) यक्षप्रियः कर्दमः । यक्षोंका पियारा कर्दम । "केसर, कस्तूरी, कपूर, चंदन और अगुरु" समभाग (एक जितना) मिलाहुआ केसर आदि.

यक्षतरु, (पु०) यक्षाणां वासयोग्यः तरुः । यक्षोंके निवास करनेलायक वृक्ष । वटवृक्ष । वोडका द्रख्त.

यक्षधूप, (पु०) यक्षे (पूजने) योग्यो धूपः । वह धूप जो पूजनमें उचित है । सर्जरस । धुना । राल.

यक्षराज, (पु०) यक्षाणां राजा । टच् समा० । यक्षोंका राजा । कुबेर । "यक्षेषु राजते" राज्-क्विप् । यक्षोंमें शोभता है । "यक्षराट्".

यक्षरात्रि, (त्रि०) यक्षप्रिया रात्रिः । यक्षोंकी पियारी रात । कार्तिककी पूर्णिमारात्रि । कार्तिक (कतक) महीनेमें पूनोंकी रात.

यक्षवित्त, (पु०) यक्षेण वित्तः सदृशः । जो यक्षके समान है अर्थात् धनका केवल रक्षक (रखवारा) है परन्तु कभी काममें नहीं लाता.

यक्षामलक, (न०) यक्षाणां आमलक इव । पिण्डखजूरका फल.

यक्षिणी, (स्त्री०) (यक्षस्य पत्नी) यक्षकी स्त्री। कुवेरकी स्त्रीका नाम है। दुर्गाकी सेवामें रहनेवाली कोई स्त्री.

यक्ष्मघ्नी, (स्त्री०) यक्ष्माणं हन्ति । हन्-टक्-ङीप् । मिर्गीके रोगको नाश कर्ता है। द्राक्षा। दाख। किसमिस.

यक्ष्मन्, (पु०) यक्ष्+मनिन्। रोगभेद। एक प्रकारकी बीमारी। मिर्गी.

यज्, देवताकी पूजा करना। दान देना और आदर करना। भ्वा० उभ० अनिट्। यजति-ते। अयाक्षीत्। अयष्ट.

यजति, (पु०) यज्+अतिच्। एक प्रकारका याग (यज्ञ)। "यजतिषु ये यजामहे" इति श्रुतिः.

यजन, (पु०) यज्+ल्युट्। होता आदिसे मन्त्र पढकर अग्निमें घी आदि डालना। यज्ञ। ब्राह्मणके छह कामोंमेंसे एक। "देवयजनः" देवताका यज्ञ करनेवाला (त्रि०).

यजमान, (पु०) यज्+शानच्। होता (पुरोहित) आदिको नियोग करनेहारा। पूजा करनेवाला। यज्ञ आदिके करनेवाला.

यजुर्वेद, (पु०) यजुषां (ऋक्सामभिन्नानां मन्त्राणां) प्रतिपादको वेदः। ऋक् और सामसे भिन्न मन्त्रोंको वतानेहारा वेद। वह शुक्ल और कृष्णके भेदसे दो प्रकारका है.

यजुस्, (न०) यज्+उसि। ऋक् और सामसे भिन्न पदविभागसे रहित मन्त्रविशेष। यजुर्वेद.

यज्ञ, (पु०) यज्+भावे न। यज्ञ याग। किसी प्रकारकी भेटा.

यज्ञपशु, (पु०) यज्ञका पशु (जिसकी यज्ञमें वलि दी जाती है)। अश्व। घोडा। छाग। वकरा.

यज्ञपुरुष, (पु०) यज्ञरूपः पुरुषः। यज्ञस्वरूप पुरुष। विष्णु.

यज्ञभूषण, (पु०) यज्ञं भूषयति। भूष्+णिच्+ल्यु। श्वेतदर्भ। चिट्टीकुशा.

यज्ञयोग्य, (पु०) यज्ञे योग्यः। उदुम्बरका वृक्ष (इसकी लकडियें यज्ञमें काम आती हैं)। यज्ञके लायक.

यज्ञवल्ली, (स्त्री०) यज्ञार्था वल्ली। यज्ञके लिये वेल। सोमलता.

यज्ञवराह, (पु०) यज्ञरूपो वराहः। यज्ञस्वरूप शूकर। आदिवराह। भगवान्का अवतारविशेष.

यज्ञवाट, (पु०) ६ त०। यज्ञस्थान। यज्ञकी जगह.

यज्ञसूत्र, (न०) यज्ञार्थं योग्यं संस्कृतं वा सूत्रं। यज्ञके लायक। वा यज्ञके लिये संस्कार कियाहुआ। उपवीत। यज्ञोपवीत। जनेऊ.

यज्ञस्थाणु, (पु०) यज्ञस्य स्थाणुः। यज्ञका थंभा.

यज्ञाङ्ग, (पु०) यज्ञस्य अङ्ग (साधनत्वेन) अस्ति अस्य अच्। उदुम्बर (गूलर)। खदिर (खैरका दरख्त), सोमवेल (इनकी लकडी और पत्तोंसे यज्ञ सम्पादन कर्ते हैं).

यज्ञान्त, (पु०) ६ त०। अवभृथ। यज्ञकी समाप्तिमें स्नान (न्हाना) यज्ञका शेष.

यज्ञिक, (पु०) यज्ञः (यज्ञाङ्गं) साध्यत्वेन अस्ति अस्य (ठन्)। पलाश। पलाशका दरख्त (इसकी लकडियें यज्ञमें काम आती हैं).

यज्ञिय, (त्रि०) यज्ञाय हितः। घ। यज्ञके लिये अच्छा। यज्ञके कामके लायक। द्वापरयुग (पु०).

यज्ञियप्रदेश, (पु०) कर्म०। "यज्ञका काम करनेलायक देश। जिस देशमें स्वभावसे कृष्णसार (बिलकुल काला) हरिण विचरता है" वह देश.

यज्ञेश्वर, (पु०) यज्ञस्य प्रवर्तयिता ईश्वरः। यज्ञके चलानेहारा विष्णु.

यज्ञोपवीत, (न०) यज्ञेन संस्कृतं उपवीतम्। यज्ञसे संस्कार कियागया उपवीत। यज्ञसूत्र। उपनयनसंस्कारसे पवित्र कियाहुआ तिहरा ऊंचे कियाहुआ बायें कंधेसे दहिनी कुक्षिकी ओर लटकरहा एक प्रकारका सूत। जनेऊ.

यज्वन्, (पु०) यज्+भूते क्वनिप्। विधिसे यज्ञ करानेवाला.

यत्, यत्न-कोशिश करना। भ्वा० आ० अक० सेट्। निष्ठायां अनिट्। यतते। अयतिष्ट.

यत, (त्रि०) यम्+क्त। निरोध किया गया। रोका गया। तावमें रखा हुआ। आज्ञामें रक्खा गया। वश किया हुआ.

यतस्, (अव्य०) यद्+तसिल्। यस्मात्। जिस्से। क्योंकि.

यतम, (त्रि०) एषां मध्ये यः। यद्+डतमच्। इन्मेंसे एक.

यतमानस, (त्रि०) यतं मानसं येन। मनको वश करनेवाला.

यतव्रत, (त्रि०) यतं व्रतं येन। नियमका पालन करनेवाला व्रत पालनेवाला। इकरारपर रहनेवाला।

यतर, (त्रि०) अनयोर्मध्ये यः। डतरच्। इन दोनोंमेंसे एक.

यतात्मन्, (त्रि०) यतः आत्मा यस्य। अपनेको वश करनेवाला। इन्द्रियोंको रोकनेवाला.

यति, (पु०) यतते मोक्षाय। यत्+इन्। मोक्ष (जन्ममरणसे छूटना)के लिये यत्न कर्ता है। परिव्राजक। संन्यासी। "यम्यते जिह्वा अत्र, यम्+क्तिन्" जहां जीभ रुक जाती है। छन्दोग्रन्थमें जीभके विश्रामका स्थान। बोलनेके समयका विच्छेद (टूटना) (स्त्री०)। (पढनेका ठहिराव) "यद्+डति" यत्परिमाण। जित्ता। जितना (त्रि०).

यतिन्, (पु०) यमनं–यतं । यम्+क्त । यतं अनेन । इनि । जिसने इन्द्रियोंको दमन किया है । संन्यासी । परिव्राजक । विधवा (बेवा-रंडी) (स्त्री०).

यत्न, (पु०) यत्+नङ् । आयास । कोशिश । उद्योग । हिम्मत । वैशेषिकमें एक प्रकारका गुण (जो प्रवृत्ति, निवृत्ति और जीवनयोनिभेदसे तीन प्रकारका है) । वह "आत्माका गुण है" ऐसा नैयायिक कहते हैं । "चित्तका गुण है" सांख्य और वेदान्तिओंका मत है.

यत्र, (अव्य०) यद्+त्रल् । यस्मिन् । जिसमें । जहां.

यन्त्र, संकोचन–सिकोडना । वा० चु० उभ० पक्षे भ्वा० पर० सक० सेट् । इदित् । यन्त्रयति-ते । यन्त्रति.

यथा, (अव्य०) यद्+प्रकारे थाल् । येन प्रकारेण । जिस तरह । जिस प्रकारसे । जैसे.

यथाकाम, (अव्य०) कामं अनतिक्रम्य । अव्ययी० । इच्छाके अनुसार । स्वाच्छन्द्य । यथेष्टता । मरजीके मुआफिक । जैसा चाहें.

यथाक्रम, (अव्य०) क्रमस्य आनुरूप्यं तस्य अनतिक्रमो वा । अव्ययी० । क्रमानुसार । सिलसिलेवार.

यथाजात, (त्रि०) जातं (समयविशेषं) अनतिक्रम्य यथाजातं तद् अस्य अस्ति इति अच् । जैसा पैदा हुआ वैसाही रहा । मूर्ख और नीच । बेवकूफ.

यथातथ, (अव्य०) तथा अनतिक्रम्य । अनतिवृत्तौ अव्ययी० । यथार्थ । ठीक २। जिस वस्तुका जैसा रूप होना उचित है वैसाही होना । "यथायथम्" इसी अर्थमें.

यथार्थ, (अव्य०) अर्थं अनतिक्रम्य । अव्ययी० । अर्थके अनुसार । ठीक २। सत्यता । सचाई । अर्थका न टूटना । सत्यस्वरूप । "अच्" सत्य । सच्च (त्रि०).

यथार्ह, (अव्य०) अर्हं (योग्यतां) अनतिक्रम्य । अव्ययी० । यथायोग्य । जैसे चाहिये+अच् । सत्यभूतपदार्थ (त्रि०).

यथार्हवर्ण, (पु०) यथार्हं (यथायोग्यं) वर्णयति । वर्ण+अण् । जो ठीक २ वर्णन कर्ता है । चर । दूत । कासिद.

यथाशक्ति, (अव्य०) शक्तेः आनुरूप्यम् । आनुरूप्येऽव्ययी० । शक्तिके अनुसार । ताकतके मुताबिक.

यथाशास्त्र, (अव्य०) शास्त्रस्य अनुरूपम् । अव्ययी० । शास्त्रानुसार । शास्त्रके मुताबिक.

यथास्थित, (अव्य०) यथा (येन रूपेण) स्थातुं योग्यं तथास्थितम् । जैसे रहना चाहिये वैसा रहा । योग्यतायां अव्ययी० । सत्यता । सचाई । अच् । सत्य । सच्च (त्रि०).

यथेप्सित, (अव्य०) ईप्सितस्य अनतिक्रमः । अव्ययी० । इच्छाका न टूटना । जैसे चाहागया । स्वाच्छन्द्य । "अच्" यथाभीष्ट । इच्छाके अनुसार । "यथेष्टं" यही अर्थ.

यथोचित, (अव्य०) उचितस्य अनतिक्रमः । मुनासिबका न लांघना । औचित्य । यथायोग्य । अच् । उचित । (त्रि०).

यद्, (त्रि०) सर्वनाम जो । यस्मात् (जिससे) (अव्य०).

यदा, (अव्य०) यद्+डाच् । यस्मिन् काले । जिस समय । जब.

यदि, (अव्य०) यद्+णिच्-इन्-णिलोपः । पक्षान्तर । जो । अगर.

यदु, (पु०) ययातिराजाका वडा पुत्र (जिसके वंशमें श्रीकृष्णजीका अवतार हुआ) । "तस्य गोत्रापत्यं अण्" वहुषु तस्य लुक् । यदुके वंशमें हुआ और दशार्हदेश । (ब० व०).

यदुनाथ, (पु०) यदूनां नाथः । यदुओंका नाथ (रक्षा करनेसे) । श्रीकृष्णदेव । "यदुपति" यही अर्थ.

यदृच्छा, (स्त्री०) यत्+ऋच्छ+अ-टाप् । स्वातन्त्र्य । स्वैरता । अपनी इच्छासे अचानक । स्वाधीनता.

यदृच्छासंवाद, (पु०) यदृच्छया संवादः । आकस्मिक (अचानक) बातचीत (गुप्त).

यन्तृ, (पु०) यम्+तृच् । सारथि । गाडी चलानेवाला और हाथीको पालनेवाला । संयमयुक्त (अपनेको वशमें रखनेवाला (त्रि०).

यन्त्र, (न०) यन्त्रि+अच् । संयमन (रोकना) । देवताका आसन । ज्योतिश्चक्रको देखनेका साधन । एक प्रकारका पदार्थ कला (कल) । एक प्रकारका पात्र (वर्तन).

यन्त्रगृह, (न०) ६ त० । कलघर । तेल निकालनेकी कलाका घर । कोल्हुघर.

यन्त्रण, (न०) यन्त्रि+ल्युट् । नियमन । रोकना । रक्षण । बचाना और बन्धन (बांधना) । "युच्" पीडा (दर्द) (स्त्री०) टाप्.

यन्त्रित, (त्रि०) यन्त्र+क्त । विरुद्ध । रोकागया । वशमें किया हुआ । बांध लिया गया । सगला छाला गया । ताला लगाया गया.

यभ्, मैथुन-भोगकरना । भ्वा० पर० सक० अनिट् । यभति । अयाप्सीत्.

यम्, उपरति । हटना । भ्वा० पर० सक० अनिट् । यच्छति । अयंसीत्.

यम, (पु०) यम्+घञ् । अहिंसा, सत्यवचन, ब्रह्मचर्य, अस्तेय (चोरी न करना) आदि । और इन्द्रिय-आदिका संयमन (रोकना) "यमयति" अच् । प्राणिओंके भले और बुरे कर्मोंके अनुसार दण्ड देनेहारा ईश्वरसे नियोग कियाहुआ दक्षिण दिशामें एक प्रकारका देवता (यमराज) । और काक (कौवा) । एक गर्भमें उत्पन्नहुआ यमज (जौडा) (त्रि०) । (भाईपनसे) यमका सम्बन्धी शनि । दोकी संख्या और योग (पु०).

यमकोटि, (पु० स्त्री०) लंकासे पूर्वकी ओर देवताओंसे निर्माण कीगई पुरी.

यमज, (त्रि० द्वि० व०) यमः (एकदा, एकत्र गर्भे सहचरः) सन् जायते । जन्+ड । एकही समयमें एक-गर्भमें उत्पन्न हुए दो) (जौडे).

यमद्रुम, (पु०) यमस्य द्रुमः । यमका वृक्ष । यमके दर्वाजेके पास शाल्मली (सिंवल)का दरख्त.

यमद्वितीया, (स्त्री०) ६ त० । कार्तिक (कत्तक) के शुक्लपक्षकी द्वितीया (दूज).

यमदग्नि, (पु०) मुनिविशेष । एक प्रकारका मुनि.

यमधानी, (स्त्री०) यमः धीयते अस्याम् । यमका निवासस्थान । यमकी नगरी.

यमन, (न०) यम्+ल्युट् । बंधन । बांधना और हटना । " यमयति ल्यु " यमराज (पु०).

यमराज, (पु०) ६ त० । (चौदह) यमोंका राजा । यमोंको नियमपर चलानेहारा राजा । टच् समा० । प्रेतोंका राजा । धर्मराज । " यमोंमें शोभता है " राज्+क्विप्.

यमल, (न०) यमं (योगं) लाति । ला+क । युग्म । जोडा । वृन्दावनके पास एक वृक्ष । " यमलार्जुन ".

यमवाहन, (पु०) यमं वाहयति (स्थानात् स्थानान्तरं) नयति । वह्+स्वार्थे णिच्-ल्यु । यमको एक जगहसे दूसरी जगहपर ले जाता है । महिष । भैंसा । यमराजकी सवारी.

यमानी, (स्त्री०) यच्छति अग्निमान्द्यं अनया । यम्+करणे ल्युट्-पृ० आलम् । जो अग्निकी मन्दताको दूर कर्ता है । अजमोदा । यमानिका । अजवेन । जवैन.

यमुना, (स्त्री०) यम्+उनन् । कालिन्दी नदी । जमना नदी । यमकी वहिन । सूर्यकी कन्या । और दुर्गा.

ययाति, (पु०) यस्य (वायोः इव) याति (सर्वत्र) गतिः अस्य । जिसकी हवाके समान गति है । नहुषका पुत्र । एक राजा । (इसने शुक्रकी कन्या देवयानीको विवाही थी, सबसे छोटे पुत्र पूरुको बुढप्पा देकर एकहजार वर्षतक जवानीके भोग भोगे तौभी तृप्त नहीं हुआ, पीछे विषयोंकी निन्दाकर पूरुको राज्य दे वनमें तपस्वी हुआ).

ययु, (पु०) या+कु-द्वित्वं च । अश्वमेधयज्ञका घोडा । वेगवान् घोडा.

यव, (पु०) यु+अच् । जौं । " वसन्तमें सब शस्योंके पत्ते झडते हैं । और कणिशवाले यव मोदमान हुए रहते हैं."

यवक्य, (न०) यवानां भवनं क्षेत्रम् । यत्-कुक्च । जौं बोनेलायक खेत.

यवन, (पु०) यु+ल्यु । एकदेश । उस देशके लोग । ब० व० । वेग । जोर । बहुत जल्दी चलनेवाला घोडा । गोधूम । आट्टा । तुरुष्क जाति । तुरक लोग । वेगवाला (त्रि०).

यवनप्रिय, (न०) ६ त० । यवनोंका पियारा । मरिच । मिरच.

यवनानी, (स्त्री०) यवनानां लिपिः । ङीप्-आनुक्च । यवनोंकी लिपि । तुरकोंका हाथका लिखा.

यवनारि, (पु०) यवनस्य अरिः । यवनका दुश्मन । श्रीकृष्ण.

यवनिका, (स्त्री०) युवन्ति अस्यां । यु+ल्युट्-ङीप्-कन् । अको इ । इसमें मिलते हैं । कनात । जवनिका.

यवनी, (स्त्री०) यु+ल्युट्+ङीप् । यवानी नाम औषध । यवनकी स्त्री.

यवमध्य, (न०) यवाकृति मध्यं यस्य । जौंके स्वरूपका जिसका मध्य है । एक प्रकारका चान्द्रायण व्रत.

यवस, (न०) यु+असच् । घास । तृण.

यवागू, (स्त्री०) यूयते (मिश्रयते) यु+आगू । छगुना पानीसे पकाहुआ एक प्रकारका द्रवपदार्थ । लप्सी । खिचडी.

यविष्ठ, (त्रि०) अतिशयेन युवा । युवन्+इष्ठन् । यवादेशः । वडा जवान । कनिष्ठ भ्राता । छोटा भाई.

यव्य, (न०) यवानां भवनं क्षेत्रं+यत् । जौं बोनेयोग्य खेत । "युतः चन्द्रार्कौ अत्र" । जहां चांद और सूरज मिलते हैं । चांद्रमास (चन्द्रमासम्बन्धी महीना) (पु०).

यशःपटह, (पु०) यशःख्यापकः पटहः । यशको प्रकाश करनेहारा बाजा । ढक्का । एक प्रकारका बाजा.

यशःशेष, (त्रि०) यश एव शेषः अस्य । जिसका यशही बाकी है । मृत । मरगया । "कीर्तिशेषः" इसी अर्थमें है.

यशस्, (न०) अस्+असुन्-धातोः युच्च । शूरता आदिसे उत्पन्न हुआ "ख्याति" इस दूसरे नामवाला पदार्थ । नेकनामी । मशहूरी.

यशस्या, (स्त्री०) यशसे हिता । यशस्+यत् । जीवन्ती । ऋद्धि नाम औषध । यशका साधन (त्रि०).

यशस्वत्, (त्रि०) यशस्+मतुप्-"म" को "व" होता है । यशवाला । "विनि" "यशस्वी" इसी अर्थमें । स्त्रियां ङीप्.

यशोद, (पु०) यशो ददाति । दा+क । यश देता है । पारद । पारा । यशके देनेवाला (त्रि०) । –दा । नन्दगोपकी पत्नी (औरत).

यशोहर, (त्रि०) यशः हरति । यशको हर लेनेवाला । यशको उडानेवाला । अप्रतिष्ठित (बेइज्जत) करनेवाला.

यष्टृ, (पु०) यज्+तृच् । यागशील । यज्ञकरनेवाला.

यष्टि, (स्त्री०) यज्+क्तिन् । नि० । ध्वजा आदिका डण्डा । भुजा आदिके सहारनेके लिये डण्डा । और लकडी । "क्तिच्" तात । हारलता । मुलट्ठी । वा ङीप्.

यस्, यत्न-कोशिशकरना । दिवा० पक्षे भ्वा० पर० अक० सेट् । यस्यति । यसति । अयसत् । अयासीत्-अयसीत्.

या, गति-जाना । अदा० पर० अक० अनिट् । याति । अयासीत्.

याग, (पु०) यज्+घञ् । मन्त्रोंके साथ अग्निमें घी आदिका फेंकनारूप यज्ञ । उपासन । वैश्वदेव । स्थालीपाक । आग्रयण आदि.

याच्, याचन । मांगना । भ्वा० उभ० द्विक० सेट् । याचति-ते.

याचक, (त्रि०) याच्+ण्वुल् । याच्ञाकारक । मांगनेवाला.

याचन, (न०) याच्+ल्युट् । याच्ञा । मांगना+युच् । याचना (स्त्री०).

याचनक, (त्रि०) याच्+ल्युट्+स्वार्थे कन् । याचक । मांगनेवाला.

याचित, (न०) याच्+भावे क्त । मांगनेकी वृत्ति । मांगना । "कर्मणि क्त" प्रार्थित (मांगागया) (त्रि०).

याचितक, (न०) याचितेन अधिगतं+कन् । मांगकर धनके स्वामीसे लियागया.

याच्ञा, (स्त्री०) याच्+नङ् । प्रार्थना । मांगना । मांग.

याजक, (पु०) याजयति । यज्+णिच्+ण्वुल् । धन आदि पानेके लिये दूसरेके लिये यज्ञ करानेहारा पुरोहित आदि.

याज्ञवल्क्य, (पु०) एक मुनि । योगिओंका राजा.

याज्ञसेनी, (स्त्री०) यज्ञसेनस्य (द्रुपदराजस्य) अपत्यं स्त्री+अत इञ् ङीप् । द्रुपदराजकी पुत्री । द्रौपदी । पाण्डवोंकी भार्या (औरत).

याज्ञिक, (पु०) यज्ञाय हितः । यज्ञः प्रयोजनं अस्य वा+ठक् । यज्ञके लिये हितकारी वा यज्ञ जिसका प्रयोजन है । दर्भभेद । कुशा । खदिर (खैरकी लकडी) । पलाश । अश्वत्थ (पीपल) । याजक । यज्ञ करानेहारा । ऋत्विग् आदि । पुरोहित । और यजमान.

याज्य, (न०) इज्यते अत्र । यज्+ण्यत् । यज्ञका स्थान । देवताकी प्रतिमा (मूर्ति) । दायभाग (विसंह) । यज्ञकरानेलायक (त्रि०).

यातना, (स्त्री०) चु० यत्+युच् । तीव्रवेदना । वडीपीडा । सख्तदर्द.

यातयाम, (त्रि०) यातः (गतः) यामः (उचितसमयः) यस्य । जिसका ठीक समय जाता रहा । जीर्ण । पुराना । पर्युषित । बासी । बआ । उच्छिष्ट । झूठा । परिभुक्त । खायाहुआ.

यातव्य, (पु०) यायते असौ । या+तव्य । वह शत्रु कि जिसके सामने राजाओंको युद्धके लिये जाना चाहिये । गन्तव्य (जानेलायक) (त्रि०).

यातायात, (न०) यातं च आयातं च । या+भावे क्त । आ+या+भावे क्त समाहार द्वं० । गमनागमन । जानाआना.

यातु, (पु०) या+तु । राक्षस । गन्ता (जानेवाला) (त्रि०).

यातुघ्न, (पु०) यातुं (राक्षसं) गन्धेन हन्ति । हन्+ठक् । जो राक्षसको गंधसे मारता है । गुग्गल । राक्षसमारनेवाला (त्रि०).

यातुधान, (पु०) यातु इति धीयते (अभिधीयते) धा+ल्युट् । जिसे "यातु" कहते हैं । राक्षस.

यातृ, (स्त्री०) या+तृच् । देवरपत्नी । देवरकी औरत । दिरानी । (याता-यातरौ-यातरः) । तृन् । गन्ता । जानेवाला (त्रि०) याता-यातारौ-यातारः.

यात्रा, (स्त्री०) या+ष्ट्रन् । जीतनेकी इच्छासे राजाओंका जाना । धावा करना । जाना । देवताके उद्देशसे एक प्रकारका उत्सव । "रथयात्रा" आदि.

यात्रिक, (त्रि०) यात्रायै हितम् । यात्राके लिये हितकारी । उत्सव । उपाय । जानेके लिये हितकारी नक्षत्र.

याथातथ्य, (न०) तथा तद्रूपस्य औचित्यम् । अव्ययी० । तस्य भावः+ष्यञ् । जो वस्तु जैसी होनी चाहिये उसका वैसा होना । ठीक २ होना.

यादःपति, (पु०) यादसां पतिः । जलके जीवोंका मालिक । वरुण और समुद्र.

यादव, (पु०) यदोर्गोत्रापत्यं+अण् । यदुके वंशका । स्त्रियां ङीप् । उनमें प्रधान श्रीकृष्ण (पु०) । "यदूनां इदं अण्" । गौ, भैंस (महिष) आदि धन (न०).

यादस्, (न०) या+असुन्-दुकच । हरएक प्रकारका जलका जीव.

यादसांनाथ, (पु०) ६ त० । अलुक् समा० । जलके जीवोंका मालिक । वरुण और समुद्र । "यादसांपति" यही अर्थ.

यादृक्ष (श्) (श), (त्रि०) । यस्य इव दर्शनं अस्य । यद्+दृश्+क्स, (ट) क्विप् वा । जिसके सदृश । जिस प्रकारका जैसा.

यादृच्छिक, (त्रि०) यदृच्छया आगतः+ठक् । अपनी इच्छासे आया । अचानक आगया । अचनचेत.

यान, (न०) या+भावे ल्युट् । गमन । जाना । संधि आदि छः गुणोंमेंसे एक । आक्रमण । हमला । "करणे ल्युट्" जानेका साधन रथ (गाडी) आदि.

यापन, (न०) या+णिच्+ल्युट् । समयका गुजारना । हटाना । निरसन.

याप्ययान, (न०) याप्यं (क्षेप्यं) कुत्सितं वा पदशून्यत्वात् यानं । बुरी सवारी । पालकी । शिविका.

याम, (पु०) यम्+घञ् । समय । वक्त । और प्रहर । पहिर.

यामघोष, (पु०) यामे घोषः अस्य । जो एक पहिरके पीछे बोलता है । कुक्कुट । कुक्कुड । एक प्रकारकी घडी (स्त्री०).

यामल, (पु०) यमल+स्वार्थे अण् । युगल । जोडा । एक प्रकारका तन्त्रशास्त्र.

यामवती, (स्त्री०) यामाः (बहवः त्रित्वसंख्यायुताः) सन्ति अस्याः । भूम्नि मतुप् । "म" को "व" होता है । तीन पहिरवाली । रात्रि (रात) । हरिद्रा । हल्दी.

यामातृ, (पु०) जायां माति । तृच् । पृ० । जामातृ । जवाई । दामाद.

यामि, (स्त्री०) यम्+इन् । कुलकी स्त्री । भगिनी । बहिन.

यामिक, (पु०) याम+ठक्+इक । प्रहरिक । रातको पहरा देनेवाला.

यामित्र, (न०) ज्योतिषमें लग्नराशिसे सातवाँ स्थान.

यामित्रवेध, (पु०) यामित्रे (सप्तमस्थाने) वेधः (पापग्रहसंयोगः) । सातवें स्थानमें किसी पापी ग्रहका मेल (विवाह आदिमें वर्जनेलायक योग).

यामिनी, (स्त्री०) यामाः (त्रिसंख्याताः) सन्ति अस्य । बाहुल्ये इनि । तीन पहिरवाली । रात्रि । रात । हल्दी.

यामिनीपति, (पु०) ६ त० । रातका मालिक । चन्द्र । चांद । और कपूर (काफूर) । "रजनीश" यही अर्थ.

यामी, (स्त्री०) यमस्य इयम् । यमो देवता अस्या वा+अण् । दक्षिण दिशा । यमसम्बन्धिनी यातना । यमकी पीडा.

याम्य, (पु०) यामी दिक् निवासः अस्य+यत् । जिसका निवास यमकी दिशामें है । अगस्त्य । और चंदनवृक्ष । यमसम्बन्धी । यमका (त्रि०) दक्षिण देशमें रहनेहारा (त्रि०).

याम्यायन, (न०) याम्यायां अयनं (सूर्यस्य गतिः) । दक्षिण दिशामें सूर्यका जाना । मार्गशिर (मग्गर)की संक्रान्तिसे परले छः महीने.

याम्योद्भूत, (पु०) याम्ये (दक्षिणदेशे) उद्भूतः । दक्षिणदेशमें प्रकट हुआ । श्रीतालवृक्ष । तालका दरख्त.

यायजूक, (पु०) यज्+यङ्+ऊक । पुनः पुनर्यागशीलः । वार २ यज्ञके करनेहारा.

यायावर, (पु०) देशात् देशान्तरं याति । या+यङ्+वरच् । अश्वमेधयज्ञका घोडा । और जरत्कारु मुनि । सृशवक्रगमनशील । बहुत टेढा चलनेहारा (त्रि०).

यावत्, (त्रि०) यत् परिमाणं अस्य-मतुप् । यत्परिमाण । जितने मापवाला । जितना । सारा । फैलाहुआ । सीमा (हद्द) । जबतक (अव्य०).

यावतिथ, (त्रि०) यावतां पूरणः । यावत्+डट्-इथुक् च । जितनोंके भरनेवाला । जित्तवां । जितने मापका.

यावनाल, (पु०) यवनाल एव+स्वार्थे अण् । (जुआर) नामी धान्य । एक देशका नाम.

याष्टीक, (पु०) यष्टिः प्रहरणं अस्य+ईकक् । लाठी जिसका शस्त्र है । लाठीसे लडनेवाला.

यास (पु०) यस्+घञ्+अ । यत्न । कोशिश.

यास्क, (पु०) निरुक्तकर्ताका नाम.

यु, बांधना । क्र्या० उभ० सक० अनिट् । युनाति-युनीते । अयौत्सीत्-अयौष्ट.

युक्त, (त्रि०) युज्+क्त । मिलित । मिलाहुआ । जुडाहुआ । योगी (पु०) । उचित (मुनासिब) । और न्याय (इन्साफ)से मिलाहुआ द्रव्य (न०).

युक्तकर्मा, (त्रि०) युक्तः कर्मणि यः । अपने काममें निरत (लगाहुआ).

युक्तदण्ड, (त्रि०) युक्तः दण्डः यस्य । उचित दण्ड (सजा) देनेवाला.

युक्तमनस्, (त्रि०) युक्तं मनो यस्य । सावधान । लगे हुए मनवाला.

युक्तरूप, (त्रि०) युक्तं रूपं यस्य । ठीक स्वरूपवाला । योग्य । लायक । यथार्थ । उचित । (षष्ठीके साथ).

युक्ति, (स्त्री०) युज्+क्तिन् । न्याय । व्यवहार । अनुमान । उसे सिद्ध (साबित) करनेहारे लिङ्ग (चिह्न) का ज्ञान । "युक्तिरर्थावधारणम्" । और नाटकका अङ्गविशेष.

युग, (न०) युगि+अच् । पृ० । "न" का लोप । युग्म । जोडा । दोकी संख्या (गिनती) । सत्य, त्रेता, द्वापर, और कलिरूप एक समय । वृद्धि नाम औषध । चार हाथका परिमाण (माप) । रथ (गाडी) वा हल आदिका अंगविशेष (एक हिस्सह) । जूला.

युगपद्, (अव्य०) युगं इव पद्यते । पद्+क्विप् । एककाल । एकवारही.

युगपार्श्वग, (पु०) युगपार्श्वे गच्छति । गम्+ड । अभ्यासके लिये हलके पास बंधाहुआ वृष (बैल).

युगल, (न०) युगं (द्वित्वं) विद्यते अस्ति अस्य+लच् । युग्म । जोडा । दोकी संख्यावाला.

युगान्त, (पु०) युगानां (सत्यादीनां) अन्तः (तदुपलक्षितः कालः) । सत्य, त्रेता, द्वापर और कलिरुपसे पहिचानागया समय । युगोंका अन्त । प्रलय । और प्रलयका समय.

युग्म, (न०) युज्+मक् । पृ० । "ज" को "ग" होताहै । दोकी संख्यावाला (जोडा) । युगल । दो । तिथिविशेषरूप योग । एक जैसी राशियें.

युग्य, (न०) युगं अर्हति+यत् । जिसके साथ जूला लगाना चाहिये । वाहन । सवारी । यान । "जूलेको उठानेवाला" घोडाआदि.

युच्छ्, प्रमाद (भूलना) । बेपर्वाह होना । भ्वा० पर० सक० सेद् । युच्छति । अयुच्छीत्.

युज्, संगम-मिलना-जुडना । चु० उभ० पक्षे भ्वा० प० सक० सेद् । योजयति-ते । योजति.

युज्, युति (जुडना) रुधा० उभ० सक० अनिट् । युनक्ति-युङ्क्ते । उद्युङ्क्ते । प्रयुङ्क्ते । निर्युनक्ति । अयुजत्-अयौक्षीत्-अयुक्त.

युज्, योयु-जुडना और समाधि लगाना । दिवा० अक० अनिट् । युज्यते । अयुक्त.

युज्, (पु०) दि० युज्+क्विप् । समाधिवाला । युक्-युजौ । रु० युज्+क्विप् । संयोगवाला । मिलाहुआ (त्रि०) युङ्.

युञ्जान, (पु०) युज्+शानच् । योगविशेषवाला । भावनाके साथ सम्पूर्ण पदार्थोंको जाननेहारा । "चिन्तासहकृतोऽपरः" योगविद्यासे सब कुछ जाननेहारा योगी । रथसारथि । गाडीवान । और विप्र (ब्राह्मण).

युत्, (दीप्ति) चमकना । भ्वा० आ० अक० सेट् । योतते । अयोतिष्ट.

युत, (त्रि०) यु+क्त । संयुक्त । मिलाहुआ और न मिलाहुआ.

युतक, (पु०) यु+क्त । युत+क वा । ततः स्वार्थे कन् । संशय । शक । युग । जोडा । स्त्रीके कपडेका पल्ला (किनारा) । पाँवके आगेका भाग । यौतुकधन । दहेज (दाज) । मैत्रीकरण । दोस्ती लगाना । संयुक्त (मिलाहुआ) (त्रि०).

युतवेध, (पु०) विवाहआदिमें त्याग देनेलायक चंद्रमाके साथ पापग्रहोंका योग (जुडाना).

युद्ध, (न०) युध्+क्त । शस्त्रआदि चलानेका व्यापार (काम) । लडाई । संग्राम.

युध्, युद्ध-लडाई करना । दिवा० आ० सक० अनिट् । युध्यते । अयुद्ध.

युध्-धा, (स्त्री०) युध्+क्विप् । वा टाप् । युद्ध । जंग । लडाई.

युधान, (पु०) यु+कानच् । लडनेवाला । क्षत्रिय.

युधिष्ठिर, (पु०) युधि (युद्धे) स्थिरः "गवियुधिभ्यां स्थिरः" इति षत्वम् । लडाईमें स्थिर (कायम-पक्का) । पाण्डवोंमें श्रेष्ठ.

युमिश्रण, (मिलाना) अमिश्रण (न मिलाना) । अ० प० स० सेट् । यौति । अयावीत्.

युयुधान, (पु०) युध्+कानच् । इन्द्र । सात्यकिनामी यादव । एक क्षत्रिय । क्षत्रियमात्र.

युवखलति, (स्त्री०) युवतिः एव खलतिः । जवान औरतही सिरकी गंजी है । एक प्रकारके रोगवाली जवान औरत । "युवजरती" इसी अर्थमें है.

युवति-ती, (स्त्री०) । युवन्+ति ङीप् वा । यौवनवती स्त्री । जवान औरत । युवन्+ङीप् । "यूनी" इसी अर्थमें है.

युवन्, (त्रि०) यु+कनिन् । श्रेष्ठ । बहुत अच्छा । स्वभावसे बलवाला । जवान । सोलह वरिसतक "बाल" इसके अनन्तर तरुण अर्थात् "जवान" कहाजाता है.

युवनाश्व, (पु०) सूर्यवंशमें हुआ मांधाताका पिता । एक राजा.

युवराज, (पु०) युवैव राजा+टच् समा० । जवानही राजा । राजाके लायक कुछ काम करनेवाला राजपुत्र (राजकुमार).

युष्, भजन (सेवा करना) पर० सक० सेट् । योषति । अयोषीत्.

युष्मत्, (त्रि०) युष्+मदिक् । भवत्शब्दके अर्थमें । यह सर्वनाम है । आप । तुह्मारा । यह तीनों लिङ्गोंमें एक जैसा है.

यूक, (पु० स्त्री०) यू+क्विप्-कन् । मत्कुण । खटमल । जूं (स्त्री०) टाप्.

यूति, (स्त्री०) यु+क्तिन् । नि० । दीर्घः । मिश्रीकरण । मिलाप । मिलाना.

यूथ, (न०) यु+थक् । पृ० । दीर्घः । सजातीयसमुदाय । एकजातका समूह । समूह.

यूथनाथ, (पु०) ६ त० । वन्यगजप्रधान । जंगली हाथिओंका सर्दार । "यूथप" आदि इसी अर्थमें है.

यूप, (न०) यु+पक् । पृ० । दीर्घः । यज्ञके पशुको बांधनेकी लकडी । संस्कार कीगई एक प्रकारकी लकडी । यज्ञका खंबा । और यज्ञकी समाप्तिका चिह्न (निशान) बनानेके लिये एक स्तंभ । जयस्तम्भ । जीतका थंभा (खंभा) (पु०).

यूष, वध (मारना) भ्वा० पर० सक० सेट् । यूषति । अयूषीत्.

योक्त्र, (न०) युज्यते अनेन । युज्+ष्ट्रन् । युगबंधनार्थं दाम । जूलेके साथ हल बांधनेकी रस्सी.

योग, (पु०) युज्+भावादौ घञ् । संयोग । जोड । मिलाना । उपाय । वर्मादिधारण । जिरहआदिका पहिरना । ध्यान । "योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः" इस पातञ्जलसूत्रके अनुसार सब विषयोंसे मनकी वृत्तिओंका निरोध (हटाना) । जीवात्मा और परमात्माका एक होना । युक्ति । दलील । छल । विष्कम्भ आदि । अलभ्यलाभचिन्ता । देहकी स्थिरता । खासयोग.

योगक्षेम, (न०) योगश्च क्षेमं च-समाहारः द्वं० । अलभ्यलाभचिन्तासहित लब्धपरिरक्षण । न मिले हुए पदार्थकी चिन्ताके साथ मिलेहुए पदार्थकी रक्षा करना । न मिलीहुई चीजको पाना और पाईहुईको बचाना । "योगक्षेमं वहाम्यहम्" इति गीता.

योगज, (न०) योगात् जायते । जन्+ड । योग (मेल) से उपजता है । अगुरुचंदन । जो कुछ योगसे उत्पन्न हो (त्रि०) । न्याय आदिमें कहाहुआ प्रत्यक्षआदिका साधन । एक प्रकारका अलौकिक सन्निकर्ष (व्यापार) (पु०).

योगदान, (न०) योगेन (छलेन) उपाधिना वा दानं । छल वा उपाधिसे देना । "योगदानप्रतिग्रहम्" इति स्मृतिः.

योगनिद्रा, (स्त्री०) योगरूपा निद्रा । योगरूपी नींद । प्रलयके समय परमेश्वरका सम्पूर्ण जीवोंके संहार (खेंचना)की इच्छासे योगरूप व्यापार । "योगनिद्रामुपेयुषः" इति चण्डी । ऊंघना । दुर्गा । पार्वती.

योगपट्ट, (न०) योगाभ्यासार्थं पट्टः । योगभ्यासके लिये पट्ट । योगिओंके धारण करने (पहिरने) लायक एक प्रकारका पट्टका सूत.

योगपीठ, (पु० न०) योगयोग्यं पीठं (आसनं) । योगके लायक आसन । देवता आदिका एक प्रकारका आसन.

योगमाया, (स्त्री०) योग एव माया । योगही माया है । भगवान्‌की जगत्‌को रचनेके लिये शक्ति (ताकत) । "योगमायामुपाश्रितः" इति भागवतम् । दुर्गा । पार्वती । परमशक्ति.

योगरूढ, (पु०) योगोऽवयवशक्तिः रूढिः समुदायशक्तिः एते स्तः अस्य+अच् । जिसकी दोनों (अवयव और समुदाय) शक्तियें हों । अवयवशक्ति (धातु और प्रत्ययसे जो अर्थ होसके) और समुदायशक्ति (जो अर्थ सारे शब्दका प्रसिद्ध होगया हो)से अर्थको जतानेहारा "पङ्कज" आदि शब्द । यहां दोनों शक्तिओंसे अर्थबोध होता है (पङ्क+जन्+ड) "जो कीचडसे निकलता है" यह अवयवशक्ति है इसका अर्थ "कमलही है" यह समुदायशक्ति है.

योगाङ्ग, (न०) योगस्य अङ्गं योग (जीवात्मा और परमात्माका मिलाप) की प्राप्तिका साधन (ये सब आठ हैं).

योगानुशासन, (न०) योगस्य अनुशासनम् । योगका सिद्धान्त (जिसमें योगाभ्यासका उपदेश है).

योगाचार, (पु०) योगस्य आचारः । योगका अभ्यास । बुद्धमतका अनुसरण करनेवाला (जो केवल विज्ञान वा बुद्धिकी नित्य सत्ता मानता है).

योगाचार्य, (पु०) योगस्य आचार्यः । योगशास्त्रका उपदेश करनेवाला पतंजलि मुनि । जादुविद्याका शिक्षक.

योगारूढ, (पु०) योगं आरूढः । आ+रुह्+क्त । योगपर चढगया । एक प्रकारका योगी (जो इन्द्रियोंके विषय और कर्मोंमें आसक्त (डूबता) नहीं और सम्पूर्ण संकल्पोंका संन्यास (त्याग) किया है) । "योगारूढस्य तस्यैव शमः कारणमुच्यते" गीता.

योगासन, (न०) योगार्थं आसनम् । योगके लिये आसन । योगशास्त्रमें कहाहुआ "स्वस्तिक" आदि आसनविशेष.

योगिन्, (त्रि०) युज्+घिनुण् । योगवाला (जो सुख व दुःख सबमें समान देखता है) योगी । और संयोग (मेल)वाला (त्रि०) । स्त्रियां ङीप् । दुर्गा । नारायणी आदि उसकी शक्तियें.

योगीश्वर, (पु०) ६ त० । योगिओंका ईश्वर । याज्ञवल्क्य मुनि । और योगिओंमें श्रेष्ठ । दुर्गा (स्त्री०) ङीप्.

योगेश्वर, (पु०) ६ त० । योगका मालिक । श्रीकृष्ण । "यत्र योगेश्वरः कृष्णः" गीता । दुर्गा । स्त्रियां ङीप्.

योग्य, (त्रि०) योगं अर्हति+यत् । युज्+ण्यत् । वा । योगके लायक । उचित । मुनासिब । निपुण । चतुर । और शक्त । ताकतवाला । पुष्यनामी नक्षत्र (तारा) । (पु०) । ऋद्धि नाम औषध (न०).

योग्यता, (स्त्री०) योग्यस्य भावः+तल् । योग्यका होना । लायकपन । सामर्थ्य । ताकत । शाब्दबोधसाधन । "परस्परान्वयबाधाभावरूपार्थे" पदार्थोंके परस्पर सम्बन्धविषयमें बाधा (रुकावट)का न होना । "तत्पदार्थे तत्पदार्थवत्तारूप".

योग्यानुपलब्धि, (स्त्री०) योग्यस्य (प्रत्यक्षादिना उपलब्धुं अर्हस्य) अनुपलब्धिः (अज्ञानम्) । प्रत्यक्ष आदिसे लाभ होसकनेवालेका न जाना । न्याय आदिमें "अभाव" को जतानेका साधनविशेष । जैसा कि "घट" आदिके होनेपर "घट" का न होना (अभाव) नहिं जान पडता और उसके प्रतियोगी (विरोधी) "घट" के न होनेपर प्रत्यक्ष होनेकी सामग्रीके अभावसे "घट" के अभावका प्रत्यक्ष होता है । किन्तु "पिशाच" आदिके अभावकी प्रत्यक्षता नहिं, क्योंकि उसके प्रतियोगी "पिशाच" आदिका दर्शनही नहिं होसक्ता.

योजक, (त्रि०) युज्+ण्वुल्+अक । गाडीमें घोडे जोतनेवाला । जोडनेवाला । मिलानेवाला.

योजन, (न०) युज्+भावादौ ल्युट् । संयोग । मेल । "णिच्+ल्युट्" संयोगकरण । जोडना । चार कोस.

योजनगन्धा, (स्त्री०) योजनं व्याप्य गंधो यस्याः । जिसकी गंध चार कोसतक जाती है । कस्तूरी । सीता । व्यासदेवकी माता । सत्यवती । "स्वार्थे कन्-अत इत्वं ।" यही अर्थ है.

योत्र, (न०) यु+ष्ट्रन् । योक्त (जोत्तर).

योद्ध, (पु०) युध्+तृच् । युद्धकर्ता । लडाई करनेवाला । बहादुर.

योध, (पु०) युध्+अच् । युद्धकारक । जंग करनेहारा । "भावे घञ्" । युद्ध लडाई । जंग.

योधन, (न०) युध्+भावे ल्युट् । युद्ध । लडाई । जंग । "करणे ल्युट्" अस्त्र आदि आयुध (औजार) । "कर्तरि ल्युट्" युद्धकर्ता । लडाई करनेवाला । जंगी (पु०).

योधसंराव, (पु०) योधाय (युद्धाय) संरावः (आह्वानं) । योधाओंका युद्धके लिये आपसमें बुलाना.

योनि, (पु० स्त्री०) यु+नि । मणिआदिके उपजनेकी जगह । आकर (खान-कान) । कारण (सवब) । जल । स्त्रिओंका असाधारण (खास) चिह्न (निशान) । कुस । पूर्वफल्गुनी नाम नक्षत्र (तारा) । वा ङीप्.

योनिज, (न०) योनिस्थानात् जायते । जन्+ड । योनिकी जगहसे निकलता है । एक प्रकारका शरीर । मनुष्य आदि.

योनिमुद्रा, (स्त्री०) योन्याकारा मुद्रा । तन्त्रमें देवताकी पूजाका अंग योनिके स्वरूपमें अंगुलिओंको दिखलाना.

योषा, (स्त्री०) युष्+अच्-टाप् । स्त्री । नारी । औरत.

योषित्, (स्त्री०) युष्+इति । नारी । औरत । "योषिता" यही अर्थ.

यौक्तिक, (त्रि०) युक्तित आगतः+ठक् । युक्तिसिद्ध । दलीलके साथ । और योग्य (लायक) । "युक्तौ अधिकृतः ठक्" नर्मसचिव । हंसी मखौलके लिये वजीर.

यौगिक, (त्रि०) योगात् (प्रकृतिप्रत्ययार्थसम्बन्धात्) अधिगतः+ठक् । धातु और प्रत्ययके अर्थसम्बन्धसे मालूम हुआ । धातु और प्रत्ययसे समझ पडनेलायक अर्थको वतलानेहारा शब्द । जैसे "पाचक" यह शब्द "पकानेवाले." को बोधन कर्ता है । "योगे योग्यः+ठक्" योगके लायक.

यौतक, (न०) युतकाले (विवाहकाले) अधिगतं+कण् । विवाहके समय मिलाहुआ धन । दहेजका धन.

यौतुक, (न०) योतुः (योगकालः) तत्र लब्धं+कण् । योगकाल अर्थात् विवाहके समय मिलाहुआ धन.

यौधेय, (पु०) योध एव+ढक् । योद्धा । जंग करनेवाला । बहादुर । ढ । "योधेयः" इसी अर्थमें होता है.

यौन, (त्रि०) योनितः (योनिसम्बन्धात्) आगतं+अण् । योनिके सम्बन्धसे आया । जनाहकारीका गुनाह । पाप । "योनेः अयं+अण्" । विवाहसे उपजा सम्बन्ध (पु०).

यौवत, (न०) युवतीनां समूहः+अण् । जवान औरतोंका समूह.

यौवन, (न०) यूनो भावः+अण् । जवानका होना । तारुण्य । जवानी । एक प्रकारकी अवस्था । सोलह वर्षसे ऊपरकी.

यौवनकण्टक, (पु० न०) यौवनस्य कण्टक इव चिह्नम् । जवानीका मानों कांटेकी नाईं निशान है । एक प्रकारका फोडा.

यौवनदर्प, (पु०) यौवनस्य दर्पः । जवानीका अहंकार.

यौवनदशा, (स्त्री०) कर्म० । तारुण्य । जवानीकी हालत.

यौवनलक्षण, (न०) ६ त० । जवानीका निशान । लावण्य । और सुन्दरता (खूबसूरती) । स्तन (पिस्तान).

यौवनस्थ, (त्रि०) यौवने तिष्ठति । युवा होगया । जवान होगया । विवाह करदेनेके लायक.

यौवनाश्व, (पु०) मांधाता राजा । युवनाश्वका बेटा.

यौवराज्य, (न०) यौवराज्ये अभिषिक्तः । युवराजपनमें अभिषेक दियागया । पिताके जीतेही पुत्रको राजगद्दीका मिलना । युवराजका काम.

यौष्माक, यौष्माकीन, (त्रि०) युष्माकं इदं । युष्मद्+अण् । युष्माकादेशः । युष्मत्सम्बन्धी (आपका).

र

र, (पु०) रा+ड । वह्नि । आग । उग्र । तेज । और कामदेवकी अग्नि.

रंहस्, (न०) रहि+असुन् । वेग । तेजी । शीघ्रता । जल्दीपन.

रक्त, (न०) रञ्ज् (करणे) क्त । कुंकुम । केसर । ताम्र । तामा । सिंदूर । शरीरकी सात धातुओंमेंसे रुधिर (लोह) नामी धातु (पु०) "भावे क्त" राग (मोहब्बत) । और लालरंग (पु०) । लालरंगवाला (त्रि०) "कर्तरि क्त" अनुरक्त । क्रीडारक्त (खेलमें लगाहुआ प्रेमसे भरा) (त्रि०) । गुञ्जा (रत्ती) (स्त्री०).

रक्तकन्द, (पु०) रक्तवर्णः कन्दः अस्य । लालरंगकी जडवाला । विद्रुम । मूंगा.

रक्तचन्दन, (न०) कर्म० । इस नामसे एक प्रकारका चंदन.

रक्तचूर्ण, (न०) कर्म० । सिन्दूर.

रक्ततुण्ड, (पु०) रक्तं तुण्डं अस्य । लालमुखवाला । शुक । तोता.

रक्तदन्तिका, (स्त्री०) रक्ता दन्ता अस्याः+ङीप् । संज्ञायां कन् । अत इत्वम् । लालदाँतोंवाली । एक दुर्गाशक्तिका नाम.

रक्तदृश्, (पु०) रक्ता दृक् (नेत्रं) अस्य । जिसकी आँख लाल हैं । कपोत । कबूतर । "रक्तनेत्र".

रक्तधातु, (पु०) कर्म० । गैरिक । गेरीका । और ताम्र (तांवा-तांमा) । शरीरका रुधिर (लोहू)रूप धातु (जो रसधातुसे उपजता और मांसधातुको उपजाता है).

रक्तप, (पु०) रक्तं पिवति । पा+क । लोहू पीता है । राक्षस । लोहू पीनेवाला (त्रि०) । जलौका (जोक) । डाकिनी (स्त्री०).

रक्तपित्त, (न०) रक्ताय दुष्टं पित्तं यस्मात्। जिस्से लोहूके लिये पित्त बिगड जाता है। एक प्रकारका रोग। "रक्तपित्तात् भवेत् कासः" इति वैद्यकम्.

रक्तमोक्षण, (न०) ६ त०। लोहू (खून) का छुडाना। रुधिरस्रावण। लोहू बहाना (निकलवाना).

रक्तयष्टि, (स्त्री०), रक्तवर्णा यष्टिः अस्याः। जिसकी लता (बेल) लाल रंगकी हो। मंजिष्ठा। मजीठ। "स्वार्थे कन्" यही अर्थ.

रक्तवर्ग, (पु०) रक्तानां वर्गः (समुदायः)। लाल रंगवालाका समूह। दाडिम (अनार)। किंशुक (केसू)। लाक्षा (लाख), बंधूक, हरिद्रा (हल्दी), जवा, कुसुम्भेके फूल, मञ्जिष्ठा (मजीठ), और अलक्तकरूपसमूह.

रक्तवृष्टि, (स्त्री०) ६ त०। लोहूकी वर्षा। दैवसे कियाहुआ एक प्रकारका उपद्रव। खूनकी वारिश.

रक्तसरोरुह, (न०) कर्म०। लाल कमल। रक्तपद्म.

रक्तसर्षप, (पु०) कर्म०। लालसरिओं। राजिका। रत्ती.

रक्तसार, (न०) रक्तः सारः अस्य। लाल सारवाला। रक्तचन्दन। लाल चंदन। अम्लवेतस (पु०) अम्लवेत.

रक्तसौगन्धिक, (न०) कर्म०। रक्तवर्णकह्लार। लाल रंगवाला कमल.

रक्ताक्ष, (पु०) रक्ते अक्षिणी यस्य+षच् समा०। जिसकी लाल आँखें हों। पारावत। मीठी आवाज निकालनेवाला कबूतर। महिष (भैंसा)। चकोर। और सारज। लाल आंखवाला। क्रूर (बेरहम)। और जन (त्रि०) ङीष्.

रक्ताङ्ग, (न०) रक्तं अङ्गं यस्य-यस्माद्वा। कुङ्कुम। केसर। मंगलग्रह (पु०) प्रवाल (मूंगा) (पु० न०)। मजीठ (स्त्री०).

रक्ति, (स्त्री०) रञ्ज्+क्तिन्। प्रसन्न होना। प्यार होना। अनुराग होना। मनोहरता। आसक्ति। भक्ति। मुहब्बत.

रक्तिका, (स्त्री०) रक्तेव+कन् अत इत्वं। गुञ्जा। रत्ती। एकमाप.

रक्ष्, पालन (रक्षा करना-बचाना)। भ्वा० सक० प० सेट्०। रक्षति। अरक्षीत्.

रक्षःसभ, (न०) रक्षसां (राक्षसानां) सभा। राक्षसोंका समूह.

रक्षक, (त्रि०) रक्ष्+ण्वुल्। रक्षाकर्ता। रक्षाकरनेवाला.

रक्षस्, (न०) रक्ष्यते हविः अस्मात्। रक्ष्+अपदानेऽसुन्। जिस्से यज्ञका हविः (घी आदि) बचाया जाता है। राक्षस.

रक्षा, (स्त्री०) रक्ष्+अ-टाप्। रक्षण। बचाना। अच्-टाप्। जतु (लाख)। और भस्म (खा-खाक) (स्त्री०) रक्ष्+अच्। रक्षक। बचानेवाला (त्रि०).

रक्षाकरण्डः-करण्डकं, (पु० १ न०) रक्षायाः करण्डकः-कं रक्षाका करण्डक (गंडा-तबीत)। एक जादूकी टोकरी.

रक्षापत्र, (पु०) रक्षार्थं पत्रं अस्य। जिसका पत्ता रक्षाके लिये हो। भोजपत्रका वृक्ष। भूर्जपत्रतरु.

रक्षित, (स्त्री०) रक्ष्+क्त। रक्षा कियाहुआ। हिफाजत कियागया.

रक्षितृ, (त्रि०) रक्ष्+तृच्। रक्षा करनेवाला। बचानेवाला.

रक्षिवर्ग, (पु०) रक्षिणां वर्गः। सैन्यादिरक्षक। सेना आदिका रखवारा। रखवारोंका समूह। बहुतसे सिपाही। बहुत पहिरवाले.

रक्षोघ्न, (न०) रक्षो हन्ति। हन्+ठक्। राक्षसको मारता है। काञ्जिक। कांजी और हींग। इनका गंध सूंघनेसे राक्षस भाग जाते हैं। भल्लातकवृक्ष। और चिट्टी सरिओं (श्वेतसर्षप) (पु०)। ऋग्वेद आदिमें प्रसिद्ध "कृणुष्वपाजः" इत्यादि सूक्त (गीत) विशेष (न०) वचा (स्त्री०)। राक्षसोंको घात करनेवाला कोई द्रव्य (पदार्थ) (त्रि०).

रक्षोहन्, (पु०) रक्षो हन्ति। हन्+क्विप्। गुग्गुल (इसका गंध सूंघनेसे राक्षस भाग जाते हैं) और चिट्टी (गोरी) सरिओं। राक्षसको मारनेवाला (त्रि०)। "रक्षोहा बलगहन" श्रुतिः.

रख्, सर्पण (सर्कना)। भ्वा० प० अ० सेट्। रखति। अरखीत्-अराखीत्.

रग्, गति (जाना)। भ्वा० आ० सेट्। इदित्। रंगति। अरंगीत्.

रघ्, गति (जाना)। भ्वा० आ० सक० वेट्। इदित्। रङ्घते। अरङ्घिष्ट.

रघु, (पु०) लघ्-उ। "ल" को "र" होता है। सूर्यके वंशमें दिलीप राजाका पुत्र। "रघोः अपत्यं" अण् (बहुवचनमें प्रत्ययका लोप होता है)। रघुके वंशमें अज आदि क्षत्रिय। ब० व०। "तान् अधिकृत्य कृतो ग्रन्थः+अण्" उनके विषयमें ग्रन्थ बनायागया। आख्यायिका (अण्का लोप होता है)। कालिदाससे रचाहुआ उन्नीस सर्गका महाकाव्यविशेष (पु०).

रघुनन्दन, (पु०) रघून् नन्दयति। नन्द्+णिच्+ल्यु। रघुओंको प्रसन्न कर्ता है। दशरथका बडा पुत्र श्रीरामचन्द्र.

रघुनाथ, (पु०) रघूणां नाथः (रक्षकत्वात्-श्रेष्ठत्वात् वा)। रघुओंका स्वामी (मालिक)-रक्षा करनेसे वा उनमें बहुत अच्छा होनेसे। श्रीरामचन्द्र। "रघुपतिः".

रघुवर, (पु०) रघुषु वरः (श्रेष्ठः)। रघुओंमें बहुत अच्छा। श्रीरामचन्द्र.

रघूद्वह, (पु०) रघुषु उद्वहः (रक्षादिभारधारकः)। उद्-वह्+अच्। रघुओंमें रक्षा आदि बोझको उठानेहारा। दशरथका बडा पुत्र (बेटा)। श्रीरामचन्द्र महाराज.

रङ्कु, (त्रि०) रकि+अच्। कृपण (सूम)। और मंद (मूर्ख).

रङ्कु, (पु०) रकि+उ। मृगविशेष। एक प्रकारका हरिण.

रङ्ग, (पु०) रगि+अच् । एक प्रकारका धातु (रांगा) । "रञ्ज्+भावे घञ् । राग । "आधारे घञ्" रणभूमि (जंगकी जगह) । और नाट्यस्थान (तमाशेकी जगह) । "करणे घञ्" नृत्य (नाच) । टङ्कण (सुहागा).

रङ्गज, (न०) रङ्गात् (रङ्गधातोर्जायते) जन्+ड । राङ् धातुसे उत्पन्न होता है । सिंदूर । सिंधूर । सन्धूर.

रङ्गजीवक, (पु०) रङ्गेन (रञ्जनेन) जीवति । जीव्+ण्वुल् । रंगनेसे जीता है । रंगरेज । लिलारी । एक प्रकारका कारीगर । चित्रकर । मूरत लिखनेवाला । नाट्यजीवी । तमाशा करके जीनेवाला.

रङ्गद, (पु०) रङ्गं (रञ्जनं रावं) ददाति । दा+क । टंकण । सुहागा.

रङ्गभूमि, (स्त्री०) रज्यते अत्र रञ्ज्+घञ् । कर्म० । नाट्यभूमि । नाचनेका स्थान । और मल्लभूमि (पहिलवानोंका आखाडा).

रङ्गमातृ, (स्त्री०) रङ्गस्य (रागस्य) माता इव उत्पादिका । पियारकी मानों माता है । लाक्षा (लाख) । और कुट्टिनी (वही नायक और नायकका बात आदिसे राग प्रेम बढाती है).

रङ्गशाला, (स्त्री०) रज्यते अत्र । कर्म० । खुश होनेकी जगह । नाट्यगृह । नाचघर.

रङ्गाजीव, (पु०) रङ्गं (रञ्जनं) नाट्यस्थानं (वा) आजीवति । आ+जीव्+अण् । रंग वा नाचपर जो जीता है । रंगरेज । एक प्रकारका कारीगर । चित्र लिखनेवाला । नट.

रङ्गावतारक, (पु०) रङ्गे (नाट्यस्थाने) अवतरति (वेशान्तरपरिग्रहेण) । अव+तृ+ण्वुल् । दूसरा वेश (भेस) लेकर जो नाचकी जगहपर उतरता है । नट । नाचनेवाला । शैलूष "णिनि" यही अर्थ.

रङ्हस, (न०) रघि+असुन् । वेग । तेजी । जोर.

रचना, (स्त्री०) रच्+युच् । रचन । बनाना । फूल और पत्ते आदिका विन्यास (गांठना).

रच्, रचना (बनाना-गांठना) । चुरा० उभ० स० सेट् । रचयति.

रज, (न०) रञ्ज्+क । स्त्रीकुसुम । स्त्रीका फूल (महीनेके अनन्तर आया कर्ता है) । पराग । धूरी । फूलकी तिरी । रेणु । एकगुण (तीनोंमेंसे) (पु०).

रजक, (पु०) रजति । रञ्ज्+ण्वुल् । ("न" का लोप) । वस्त्र (कपडा) आदिपर रंग चढानेहारा । एक जाति । धोबी, वा रंगारि.

रजत, (न०) रञ्ज्+अतच् ("न" का लोप) । रूप्य । रुपया । चांदी । हाथीका दांत । रुधिर । लोहू । हार । पर्वत । सोना । और धवल (चिट्टा-सुफेद) । चिट्टेगुणवाला (त्रि०).

रजताचल, (पु०) रजतकल्पितः अचलः । दान (देने) के लिये कल्पना कियाहुआ चांदीका पहाड । "रजतं इव शुभ्रः अचलः" चांदीकी नाईं चिट्टा पहाड । कैलासका पहाड "रजतगिरिः" आदि-यही अर्थ है.

रजन, (न०) रज+ल्यु । राग । रंगना.

रजनी, (स्त्री०) रज्यते अत्र । रञ्ज्+कनि वा ङीप् । रात्रि (रात) । हरिद्रा (हल्दी).

रजनीकर, (पु०) रजनीं करोति । कृ+ट । रातको कर्ता है । चन्द्र । चांद.

रजनीचर, (पु०) रजन्यां चरति । चर्+ट । रातमें फिरता है । राक्षस । चोर । और पहिरभरका पहिरा देनेवाला.

रजनीजल, (न०) रजन्या जलं इव । रातका मानो पानी है । नीहार । बर्फ.

रजनीमुख, (न०) ६ त० । रातका मूं । प्रदोष । सूर्यअस्त होनेके पीछे चार घडी व एक घण्टाका समय.

रजस्, (न०) रञ्ज्+असुन् ("न" का लोप) । पुष्परेणु । फूलोंकी तिरी । पराग । धूली । सांख्यमें चेष्टा आदि करनेवाला प्रकृतिका गुणविशेष.

रजस्वल, (त्रि०) रजः अस्ति अस्य+वलच् । रजोयुक्त । रजोगुणवाला । महिष (भैसा) (पु०) । हैजवाली औरत । ऋतुमती (स्त्री०).

रज्जु, (स्त्री०) रज्ज्+उ । नि० । बांधनेका साधन । रस्सी । दाम । वेणी । गुत्त.

रञ्जक, (न०) रञ्जयति । रञ्ज्+णिच्+ण्वुल् । हींग । प्रीति करनेवाला (त्रि०) । काम्पिल्लवृक्ष (पु०).

रञ्जन, (न०) रज्यते अनेन । रञ्ज्+करणे ल्युट् । रक्तचंदन । मञ्जिष्ठा (मजीठ) । शेफालिका । हरिद्रा (हल्दी) (स्त्री०) ङीप् । "भावे ल्युट्" । राग (मुहब्बत-पियार) ल्यु । रागजनक (प्रेमको उपजानेहारा) । (त्रि०) मुञ्जतृण (मूंजका घास मूंज) । कट्फल (पु०).

रट्, भाषण (बोलना-बातचीतकरना) भ्वा० प० स० सेट् । रटति । अराटीत्-अरटीत् । "माघे मासि रटन्त्यापः."

रटन्ती, (स्त्री०) रट्+झश्-ङीप् । माघके कृष्णपक्षकी चतुर्दशी.

रठ्, भाषण (बोलना) । भ्वा० पर० सक० सेट् । रठति । अराठीत्-अरठीत्.

रण्, गति-जाना । भ्वा० प० स० सेट् । रणति । अराणीत्-अरणीत्.

रण्, रव (शब्दकरना) भ्वा० पर० अक० सेट् । रणति । अराणीत् । अरणीत्.

रण, (न०) रण्यते (शब्द्यते) अत्र । रण्+क । जहां शब्द कियाजाता है । युद्ध । लडाई । जंग । "भावे क्त" शब्द.

रणधुरा, (स्त्री०) (रणस्य धुरा) युद्धका जूला । युद्धका भार.

रणरणक, (पु०) रणः (शब्दः) तत्प्रकारः । द्वित्वं । ततः संज्ञायां कन् । उद्वेग । घबराहट । अतिशय । बहुत.

रणसंकुल, (न०) रणं एव संकुलम् । तुमुलयुद्ध । बडा भारी जंग.

रणाङ्ग, (न०) रणस्य अङ्गं । रण (युद्ध)का अङ्ग (साधन) । कोईभी युद्धका शस्त्र । धनुष्यबाण । तरवार.

रणाजिर, (न०) रणस्य अजिरम् । युद्धका अङ्गन (मैदान) । युद्धक्षेत्र.

रणापेत, (त्रि०) रणात् अपेतः । युद्धसे बाहिर हुआ (भागाहुआ).

रण्डाश्रमिन्, (पु०) रण्डः (विफलः) (प्रजाहीनत्वात्) आश्रमः अस्ति अस्य । सन्तान न होनेसे जिसका आश्रम निष्फल (बेफायदा) है । "चालीस वा अठतालीस वर्षकी उमरमें जो स्त्रीसे विछुड गया हो" । स्त्रीसे (४० वा ४८ वर्षकी उमरमें) विछुडाहुआ पुरुष.

रत, (न०) रम्+भावे क्त । रमण । क्रीडा करना । सोहबत । स्त्री और पुरुषका संगम (आपसमें मेल-जुडना) मैथुन । भोग । और । गुह्य (गांड) । "कर्तरि क्त" अनुरक्त (प्रीतिमें फसगया-आशक) (त्रि०).

रति, (स्त्री०) रम्+क्तिन् । राग । प्रीति । मुहब्बत । गुह्य । गांड । रमण । भोग विलास करना । कामदेवकी स्त्री.

रतिपति, (पु०) ६ त० । रतिका मालिक । कंदर्प । कामदेव । "रतिकान्त" "रतिप्रिय" "रतिरमण" एकही अर्थ है.

रतबन्ध, (पु०) रतस्य बन्धः । रत (स्त्री पुरुषकी क्रीडा)-का बंध (रचना) । भोगके समय स्त्री पुरुषका परस्पर-मिलाप.

रतिरस, (पु०) रतेः रसः । भोगका स्वाद (मजा) । भोगविलासका सुख.

रतिसर्वस्वम्, (न०) (रतेः सर्वस्वं) भोगविलासका सारा धन (सारा स्वाद).

रत्न, (न०) रमते अत्र । रम्+न (तान्तादेशः) । जहां खुश होता है । माणिक्य (मणि) आदि पत्थर । अपनी २ जातिमें श्रेष्ठ (बहुत अच्छा) । मानिक और हीरा.

रत्नकूट, (पु०) रत्नमयकूटः शृङ्गं अस्य । जिसकी चोटी रत्नोंकी हो । एक पहाड.

रत्नगर्भ, (पु०) रत्नयुक्तं गर्भं मध्यं यस्य । जिसके बीच रत्न हों । समुद्र । और कुबेर । पृथिवी (जमीन) । अच्छे पुत्रवाली औरत (स्त्री०).

रत्नद्वीप, (पु० न०) रत्नमयो द्वीपः । रत्नोंका द्वीप (जजीरा) । तन्त्रमें अमृतके समुद्रमें रहनेके कारण ध्यान करनेलायक रत्नोंका बनाहुआ अन्तरीप.

रत्नपारायण, (न०) रत्नानां पारायणं (साकल्येन स्थानं) । सम्पूर्ण रत्नोंका पूरा २ स्थान । जहां सब रत्न रहते हैं.

रत्नमुख्य, (न०) रत्नेषु मुख्यं । रत्नोंमें खास (अव्वल) । हीरक । हीरा.

रत्नवती, (स्त्री०) रत्नानि सन्ति अस्यां+मतुप् । "म" को "व" होता है । रत्नोंवाली । पृथिवी । जमीन । रत्नवाला (त्रि०).

रत्नसानु, (पु०) रत्नानि सानौ अस्य । जिसकी चोटीपर रत्न हों । सुमेरुपर्वत । सुमेरुका पहाड.

रत्नसू, (स्त्री०) रत्नानि सूते । सू+क्विप् । रत्नोंको उत्पन्न कर्ती है । पृथिवी.

रत्नाकर, (पु०) ६ त० । रत्नोंकी खान । समुद्र रत्नोंकी उत्पत्तिका स्थान । मणिओंकी खान.

रत्नाभरण, (न०) रत्नघटितं आभरणम् । शाक० । रत्नोंसे रचाहुआ भूषण (जेवर) । जडाऊ गहना.

रत्नावली, (स्त्री०) ६ त० । रत्नोंकी कतार । रत्नोंका समूह । उनका बनाहुआ हार । वत्सराजकी पत्नी "रत्नावलीं अधिकृत्य कृतः ग्रन्थः+अण्" आख्यायिका (जिसमें रत्नावलीका वर्णन है) । एक नाटिका (जिसे श्रीहर्षने बनाया है.)

रत्नि, (पु० स्त्री०) ऋ+कनिच् । बद्धमुष्टिहस्तपरिमाणम् । बंधीहुई मुट्ठीवाले हाथका माप । स्त्रीत्वे वा ङीप्.

रथ, (पु०) रम्यते अनेन । अत्र वा । रम्+कथन् । जिस्से आनंद उठाते हैं । एक प्रकारकी सवारी । गाडी । और शरीर (जिस्म) । "आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव च" इति श्रुतिः । पाद (पाँव) । बेत.

रथकड्या, (स्त्री०) रथानां समूहः । रथ+कड्यच् । रथोंका समूह.

रथकार, (पु०) रथं करोति । कृ+अच्-अण् वा । रथनिर्माणकारक वर्णसंकरविशेष । गाडी बनानेवाला (सूत्रधार) एक प्रकारका दोगला । तर्खान.

रथकूबर-रं, (पु० न०) रथस्य कूबरः । रथ (गाडी)का धुरा.

रथक्षोभ (पु०) रथस्य क्षोभः । गाडीका इधर उधर हिलना (होये लगना).

रथगुप्ति, (स्त्री०) रथस्य गुप्तिः । शस्त्रवारणार्थं रक्षा उपचारात् तत् स्थानम् । रथका वह स्थान कि जहां पडेहुए शस्त्र (तरवारआदि) को रोकलिया जासक्ता है । रथका गुप्त स्थान.

रथचर्या, (स्त्री०) रथस्य चर्या । गाडीकी यात्रा (सफर).

रथन्तर, (त्रि०) रथेन तरति । तॄ+खच् मुम् च । रथ-नेता । रथ लेजानेवाला । "असि त्वा शूर" इस ऋचामें गायागया एक सामवेदका मन्त्र.

रथयात्रा, (स्त्री०) रथस्य यात्रा । रथकी यात्रा (चलना) । आषाढ (हाड) के शुक्लपक्षकी द्वितीयाके दिन करनेलायक एक उत्सव । इसमें मूर्तिको रथमें बैठाकर मनुष्य चलाते हैं.

रथाङ्ग, (न०) अङ्ग्यते (गम्यते) अनेन । अगि+करणे घञ् । ६ त० । चक्र । पहिया । "रथाङ्गशब्दः वाचकत्वेन अस्ति अस्य+अच्" । रथाङ्गशब्द जिसका वाचक है । चक्रवाक (चकवा) (पु०).

रथाङ्गपाणि, (पु०) रथाङ्गं (चक्रं) पाणौ यस्य । जिसके हाथमें चक्र है । चक्रधर विष्णु । चक्रको धारण करनेवाला, परमेश्वर.

रथाभ्र, (पु०) रथ इव आभ्रियते असौ । आ+भृ+क । बेतसवृक्ष । बेतका दरख्त.

रथारोहिन्, (पु०) रथं आरोहति । आ+रुह्+णिनि । रथपर चढता है । रथी । रथपर चढाहुआ । और रथपर युद्ध करनेहारा.

रथिक, (पु०) रथः (युद्धसाधनाधारत्वेन) अस्ति अस्य+ठन् । रथ जिसके युद्ध करनेके लिये साधन है । रथी । रथपर चढकर लडाई करनेवाला । "इर" रथिरः "इन" रथिनः । "इनि" रथी । ये सब एकही अर्थमें.

रथोपस्थ, (न०) रथस्य उपस्थ इव । गाडीका मानो उपस्थ है । रथका मध्य (बीच).

रथ्य, (पु०) रथं वहति+यत् । रथको लेजानेवाला घोडा । "रथस्य इदं" यत् । रथसम्बन्धी (रथका) (त्रि०) । "रथस्य (तद्गमनस्य) योग्या सरणिः" । गाडी जानेके लायक सडक । प्रशस्तपथ (बहुत अच्छी सडक) । बीचका रास्ता । गली । "रथानां समूहः, यत्" । रथोंका समूह (बहुत गाडियें) (स्त्री०).

रद्, उत्खात (उखाडना) खोदना । भ्वा० प० स० सेट् । रदति । अरादीत् । अरदीत्.

रद, (पु०) रदति (उत्खनति) । रद्+अच् । खोदता है । टुकडे २ कर्ता है । दन्त । दाँत । "भावे अच्" उत्खनन । खोदना.

रदच्छद, (पु०) रदान् छादयति । छद्+णिच् वा ह्रस्वः । दांतोंको ढांकता है । ओष्ठ । ओठ । होठ । "रदनच्छद".

रदन, (पु०) रद्+ल्यु । दंत । दांत । "भावे ल्युट्" विदारण । फाडना.

रध्, हिंसन (मारना) । पाक (पकाना) । दि० प० स० वेट् । रध्यति.

रञ्ज्, राग (रंगना-दूसरा रंग डालना) सक० । आसक्त (फसजाना) अक० भ्वा० उभ० अनिट् । रजति-ते । अरङ्क्षीत् । अरक्त "णिच्" । "रञ्जयति" । (मृगोंको मारने-शिकार करनेके अर्थमें तो) "रजयति" (मृगान् व्याधः) होता है.

रन्तिदेव, (पु०) रम्+संज्ञायां तिक् । कर्म० । चंद्रवंशका एक राजा और कुत्ता । कुक्कुर.

रन्धन, (न०) रध्-पाक (पकाना) ल्युट्(नुमागमः) । पकाना । रींधना.

रन्ध्र, (न०) रम्+क्विप् । धु+क । कर्म० । छिद्र । छेक । सुराख । दूषण । दोष । ऐब । ज्योतिषमें लग्नसे आठवां स्थान.

रब्, गति (जाना) सक० प० । शब्द करना । अक० आ० भ्वा० सेट् । इदित् । रम्बति-ते । अरम्बीत् । अरम्बिष्ट.

रभ्, औत्सुक्य (किसी वस्तुके लिये बहुत चाहना) । शुरू करना । गले मिलना । भ्वा० आ० अक० अनिट् । रभते । अरब्ध । णिच् । रम्भयति.

रभ्, शब्द करना । भ्वा० आ० अक० सेट् । इदित् । रम्भते । अरम्भिष्ट.

रभस, (पु०) रभ्+असच् । वेग । तेजी । हर्ष । खुशी । औत्सुक्य । बडी चाह । पहिले और पिछलेका विचारन करना.

रम्, क्रीडा-खेलना । भोगविलास करना । भ्वा० आ० अक० अनिट् । रमते । विरमति । उपरमति । अरंस्त । उपारंसीत् "ण" रामः.

रम, (पु०) रम्+अच् । कान्त । पियारा । अशोकवृक्ष । और कामदेव.

रमण, (पु०) रमयति । रम्+णिच्+ल्यु । कामदेव । गधा । वृषण । महारिष्ट । बडी तकलीफ । नीम । पति । मालिक । जंबुद्वीपमें "रम्यक" नाम एक वर्ष (स्थान) । "रम्+भावे ल्युट्" सुरत क्रीडा । भोगविलास । "करणे ल्युट्" । पटोलमूल । नीमकी जड । "कन्" जघन । स्त्रीका अगला भाग । (न०) । "रम्यते अनया" ल्युट् ङीप् । जिस्से आनंद भोगते हैं । नारी । औरत । अच्छी औरत.

रमणीय, (त्रि०) रम्यते अत्र । रम्+आधारे ल्युट् । सुन्दर । खूब सूरत.

रमल, (न०) एक प्रकारका ज्योतिःशास्त्र.

रमा, (स्त्री०) रमयति । रम्+अच् । लक्ष्मी । आनंद देती है.

रमापति, (पु०) ६ त० । रमाका पति । नारायण । विष्णु । "रमानाथ".

रमाप्रिय, (न०) ६ त० । लक्ष्मीका पियारा । पद्म । कमल । विष्णु (पु०).

रम्भ, (पु०) रभि+अच् । रेणु । धूरी । और महिषासुरका पिता । एक दैत्य । कदली । केला । एक अप्सरा । वेश्या (कंजरी) । गौओंका शब्द (आवाज) । और गौरी (पार्वती) (स्त्री०).

रम्य, (त्रि०) रम्यते अत्र+यत् । सुंदर । और बलकर (जोर करनेवाला) । चम्पक (चंबा) । और बकवृक्ष । पटोलमूल (न०) "संज्ञायां कन्" जम्बूद्वीपके नौ वर्षोंमेंसे एक.

रम्या, (स्त्री०) रम्यते अत्र+यत् । जिसमें क्रीडा किया जाता है । रात्रि । रात.

रय्, गति-जाना । भ्वा० आ० सक० सेट् । रयते-अरयिष्ट.

रय, (पु०) रय्+अच् । वेग । तेजी । और प्रवाह.

रल्लक, (पु०) रम्+क्विप् । "म" का लोप होनेपर "तुक्" ला+क । कर्म० । एक मृग.

रव्, गति (जाना) भ्वा० आ० सक० सेट् । इदित् । रण्वते । अरण्विष्ट.

रव, (पु०) रु-ध्वनि-शब्दकरना+अप् । शब्द । आवाज.

रवण, (पु०) रु+युच् । कोकिल । कोइल । और उष्ट्र । ऊंठ । शब्द करनेवाला । और तीक्ष्ण । तेज (त्रि०).

रवि, (पु०) रु+इन् । सूर्य । सूरज । और अर्कवृक्ष । आकका वृक्ष.

रविज, (पु०) रवेर्जायते । जन्+ड । सूर्यसे उपजता है । शनि । सावर्णिमनु । वैवस्वतमनु । सुग्रीव वानर । यम यमुना (स्त्री०) । "रवितनय" आदि-इसी अर्थमें.

रविनेत्र, (पु०) रविः नेत्रं यस्य । सूर्य जिसकी आंख है । विष्णु.

रविरत्न, (न०) रवेः प्रियं रत्नं । सूर्यका पियारा रत्न । मानक । और तामा.

रविलोह, (न०) रवेः प्रियं लौहं धातुः । सूर्यका पियारा धातु । तामा.

रश्, स्वन (शब्दकरना) । भ्वा० प० अक० सेट् । रशति.

रशना, (स्त्री०) रश्+ल्यु । काञ्ची । तडागी । और जिह्वा । जीभ.

रश्मि, (पु०) अश्+मि । धातो रुट् । रश्+मि वा । किरण । घोडे आदिकी रस्सी (लगाम) । और पद्म (कमल) (न०).

रस्, आस्वाद-स्वादलेना । चु० उ० स० सेट् । रसयति-ते.

रस, (पु०) रस्यते+अच् । आस्वाद्य । स्वादलेनेलायक । रसना (जीभ) इन्द्रियसे ग्रहण करनेलायक माधुर्य (मिठास) आदि गुणविशेष । वह छह प्रकारका है). मधुर (मीठा) अम्ल (तुरंश्) लवण (सलोना) कटु (कडवा) तिक्त (तीखा) कषाय (कसैला) । शरीरमें खायेहुए अन्नआदिका पहिला परिणाम (बदलना) । एक प्रकारका धातु । मीठे आदि रसवाला गुड आदि । फूलका मधु (मीठा) । अलंकारशास्त्रमें संचारी, व्यभिचारी, सहकारीसे प्रकट होनेलायक, रति आदि स्थायिभाववाला शृङ्गार आदि । वृष (बैल) । वीर्य । राग (मुहब्बत) । द्रव (बहना) । पारद (पारा) । और जल (पानी) । गंधरस (पु० न०).

रसकर्पूर, (न०) रसेन कर्पूर इव । रससे मानों कापूर है । एक प्रकारका गंधवाला पदार्थ । कर्पूररस । पारा । रसका फूल.

रसघ्न, (पु०) रसं (पारदं) हन्ति । हन्+ ठक् । पारेको मारता है । सुहागा.

रसज, (न०) रसात् (भुक्तान्नात्) प्रथमधातोर्जायते । जन्+ड । खायेहुए अन्नके साररूप पहिली धातुसे उपजता है । रुधिर । लोहू । खून । "गन्ने आदिके द्रवसे उपजता है" गुड और मद्य कीट (शराबका कीडा) (पु०).

रसज्ञा, (स्त्री०) रसं जानाति अनया । ज्ञा+ड । जिस्से रसको जानता है । जिह्वा । जीभ । रस जान्नेका साधन । जीभके स्थानकी इन्द्रिय.

रसतेजस्, (न०) रसस्य (भुक्तान्नसारस्य) तेजः (सारः) । खायेहुए अन्नके सारका तेज । रुधिर । लोहू । खून.

रसन, (न०) रस्+ल्युट् । स्वाद । मज्जा और ध्वनि (शब्द) । "करणे ल्युट्" । जिह्वा । जीभ । "पित्तेन दूने रसने सितापीति" नैषधम्.

रसना, (स्त्री०) रस्यते अनया । रस्+करणे ल्युट् । टाप् । जिस्से रस लिया जाता है । जिह्वा । जीभ । तडागी । और रस्सी.

रसराज, (पु०) रसेषु-रसो वा राजा इव श्रेष्ठत्वात्-राजते । रसोंमें चमकता है-वा रस मानों राजा है । पारद । पारा.

रसवती, (स्त्री०) रस (आस्वाद्यद्रव्यं) अस्ति अस्यां+ मतुप् । मस्य वः । जिसमें स्वाद लेनेलायक अन्नादि पदार्थ हैं । पाकस्थान । पकानेकी जगह । रसोईखाना । महानस.

रसशोधन, (न०) रसं (पारदं-द्रवीभूतं द्रव्यं-स्वर्णादि वा) शोधयति, शुध्+णिच्+ल्यु । पारा, वहाहुआ पदार्थ, अथवा सोने आदिको जो साफ करदेता है । टंकण । सुहागा.

रसा, (स्त्री०) पाकजः रसः (माधुर्यादिरूपः) अस्ति अस्याः+अच् । पकाहुआ मीठा आदि रस जिसका है । पृथिवी । दाख.

रसातल, (न०) रसायाः तलं । एक पाताल । पृथिवीका तला । भूमिके नीचेका सातवां पडदा.

रसाभास, (पु०) रस इव आभासते । आ+भास्+अच् । रसकी नाई प्रतीत होता है, वास्तविक नहीं.

रसायन, (न०) रसस्य अयनं इव । रसका मानों घर है । तक्र । लस्सी । छ+छ । कटी (कमर) । एक विष (जहिर) । एक औषध (दवाई) । इस औषधसे बुढापा दूर होजाती है.

रसायनफला, (स्त्री०) रसायनं इव फलं यस्याः । जिसका फल रसायनकी नाई हो । हरीतकी । हरीड.

रसाल, (न०) रसं आलाति । आ+ला+क । सिह्नक । एक खुशबूदार चीज । गंधरस । शिखरिणी (एक पीनेका पदार्थ) । दूर्वा (दूब) । और द्राक्षा (दाख-किसमिस) (स्त्री०) । आम्र (आम) । इक्षु (ईख-गन्ना) । पनस । गोधूम । गेहूं । पोंडागन्ना (पु०).

रसास्वादिन्, (पु०) रसं (पुष्परसं) आस्वादते । आ+स्वद्+णिनि । फूलके रसका स्वाद लेता है । भ्रमर । भौंरा । मधुर (मीठा) वा शृङ्गार आदिका स्वादलेनेवाला (त्रि०) स्त्रियां ङीप्.

रसिक, (पु०) रसं वेत्ति (अनुभवति)+ठन् । सारसनामी पक्षी । अश्व (घोडा) । और हाथी । रसज्ञ । रसके जाननेवाला और रसवाला (त्रि०).

रसेन्द्र, (पु०) रसः (द्रवीभूतः) इन्द्र इव श्रेष्ठत्वात् । पिघलाहुआ, मानो इन्द्र है (सबमें अच्छा होनेसे) । पारद । पारा.

रसोत्तम, (पु०) रस उत्तमो यस्य । जिसका उत्तम स्वाद है । मुद्ग । मूंगी.

रस्य, (न०) रसात् (भुक्तान्नपरिणामात्) आगतः+यत् । खायेहुए अन्नके पाकसे आया । रुधिर । लोहू । "रस्यते (आस्वाद्यते) रस्+यत्" । आस्वाद्य (स्वाद लेनेलायक (त्रि०) "रस्याः स्निग्धाः स्थिरा हृद्याः" इति गीता.

रंह्, गति-जाना । चु० उ० अक० सेट् । रंहयति-ते । अररंहत्-त.

रंहस्, (न०) रंह्+असुन् । वेग । तेजी । जोर.

रह्, गति । जाना । भ्वा० पर० सक० सेट् । इदित् । रंहति । अरंसीत्.

रह्, त्याग (छोडना) । भ्वा० पर० सक० सेट् । रहति । अरहीत्.

रह्, त्याग (छोडना) । चु० उ० सक० सेट् । रहयति-ते.

रहस्, (न०) रह्+असुन् । निर्जन् । एकान्त । अकेले । गोप्य । छिपानेलायक । याथार्थ्य । ठीकपन । निर्जन । (अव्य०).

रहस्य, (त्रि०) रहसि भवः+यत् । एकान्तमें हुआ । गोप्य । छिपानेलायक । पोशीदह.

रहस्यभेद, (पु०) रहस्यस्य भेदः । गुप्त बातका खोल देना (प्रकाश करडालना) । समझमें न आसकनेवाली बात । अद्भुतमाया.

रहस्याख्यायिन्, (त्रि०) रहस्यं आख्याति । गुप्त बात (छिपी हुई बात)को कहनेवाला । रहस्यका वक्ता.

रहित, (त्रि०) रह्-त्याग । कर्मणि क्त । वर्जित । छोडदियाहुआ.

रा, दान (देना) और ग्रहण (लेना) । अदा० पर० सक० अनिट् । राति । अरासीत्.

रा, (स्त्री०) रा+क्विप् । कांचन (सोना) । रभस । तेजी । देना.

राका, (स्त्री०) रा+क । प्रतिपदा (एकम-पडवा) से युक्त पूर्णमासी । पूरे चंद्रमावाली तिथि । एक नदी । वह स्त्री जिसे पहिले पहिले रज (फूल) आई हो.

राक्षस, (पु०) रक्ष एव+स्वार्थे अण् । एक प्रकारकी जाति (जो प्राणिओंकी हिंसा कर्ता है) । नंदराजाके मन्त्रीका नाम । एक प्रकारका विवाह । जातौ ङीप् । राक्षसजातिकी स्त्री । "रक्षस इदं अण् ।" राक्षसका (त्रि०) । स्त्रियां ङीप् । दंष्ट्रा । दाढ । चण्डिका.

राक्षसेन्द्र, (पु०) राक्षस इन्द्र इव श्रेष्ठत्वात् । राक्षस मानो इन्द्र है । विश्रवाका बडा पुत्र । रावण.

राक्षा, (स्त्री०) लक्ष्यते अनया । रक्ष+कर्मणि घञ् । (पु०) वृद्धिः । लस्य रश्च । लाक्षा । लाख.

राख्, शोधन (साफ करना) । भूषण (सजाना) । निवारण (हटाना) । सक० । सामर्थ्य (ताकतवाला होना) । अक० भ्वा० पर० सेट् । राखति । अराखीत्.

राग, (पु०) रञ्ज्+भावे घञ् । नि० । रञ्जन (रंगना) । वर्णन (बयानकरना) । प्रीति (प्रसन्न होना) । अनुराग (प्रेमकरना) । राजा । और चन्द्र (चांद) । " करणे घञ् " लालरंग । उस रंगवाली लाख आदि । " तेन रक्तं रागात् " इति पाणिनिसूत्रम् । " आधारे घञ् " बसन्त आदि नामसे प्रसिद्ध स्वरविशेष (मुख्य-छह राग हैं-भैरव-कौशिक-हिंदोल-दीपक-श्रीराग-और मेघराग । प्रत्येक रागकी छह रागिनी हैं) । गुस्सा । क्रोध.

रागाङ्गी, (स्त्री०) रागयुक्तं अङ्गं यस्याः+ङीप् । जिसका अंग लाल है । मंजिष्ठा । मजीठ । ३ त० । " रागाढ्य " यही अर्थ (स्त्री०).

रागारु, (त्रि०) राग+आरुत् । जो दानकी आशाही बढाताहै परन्तु उसे पूर्ण नहिं करता.

रागिणी, (स्त्री०) रागः अस्ति अस्याः+इनि । रागवाली । गीतका अंग । एक प्रकारका स्वर । रागवाली । (मुहब्बतवाली औरत) । गुस्सेवाला । अनुरक्त (मुहब्बत करनेवाला) । कामुक (चाहनेहारा) । रतियुक्त । क्रीडायुक्त (भोगविलास करनेवाला) (त्रि०).

राघ, (शक्ति)-लायक होना-समर्थ होना । भ्वा० आ० सक० सेट् । राघते । अराघिष्ट.

राघव, (पु०) रघोः गोत्रापत्यं+अण् । रघुके वंशमें हुआ । उस कुलमें प्रधान श्रीरामचन्द्रजी महाराज.

राङ्कव, (न०) रङ्कोः अयं, विकारो वा+अण् । एक हरिणके रोम(बालों)से बनायागया एकप्रकारका वस्त्र (कपडा.)

राज्, दीप्ति (चमकना)। भ्वा० उभ० अक० सेट्। राजति-ते.

राजक, (न०) राज्ञां समूहः+कन्। राजाओंका समूह। "राजैव कन्"। राजा। (पु०)। "राज्+ण्वुल्" चमकनेहारा (त्रि०).

राजकल्प, (पु०) ईषदसमाप्तो राजा। राजन्+कल्पप्। थोडा न पूराहुआ राजा अर्थात् जिसके राजा होनेमें थोडी कसर है। नृपतुल्य। राजाके समान.

राजकीय, (त्रि०) राज्ञ इदं। छ-कुक्च। राजाका काम। राजाका.

राजकुमार, (पु०) राज्ञः कुमारः। अप्राप्तवयस्क युवराजकार्यानारूढ राजपुत्र। राजाका लडका (जो अभी जवान नहिं हुआ, और जिसने राजाके काममें प्रवेश नहिं किया).

राजगिरि, (पु०) राजाश्रयो गिरिः। मगधदेशका एक पर्वत.

राजघ (त्रि०) राजानं हन्ति। हन्+क। नि०। राजाको मारनेवाला। और तीक्ष्ण (तेज)। "ररा‍ज नीराजनया स राजघः" इति नैषधम्.

राजज, (य) क्ष्मन्, (पु०) राज्ञः (चंद्रस्य) क्षयकारको ज (य)क्ष्मा। चन्द्रमाको घटानेहारा मिर्गीका रोग। एक रोग। मिर्गी.

राजजम्बु, (स्त्री०) राज्ञः जम्बूरिव। पिण्डखर्जूर। पिण्डखजूर "राजते अच्" कर्मे०। रायजामन। राजम्मु.

राजतरु, (पु०) तरूणां राजा। नि०। कर्णिकार वृक्ष। कनेर.

राजताल, (पु०) राज्ञस्ताल इव प्रियः। गुवाकवृक्ष.

राजदन्त, (पु०) दन्तानां राजा। पर० नि०। दांतोंका राजा। ऊपरकी पंक्तिके बीचमें रहनेहारे दो दांत। सूए दांत.

राजदेशीय, (पु०) ईषदसमाप्तो राजा। राजन्+देशीयर्। राजा होनेमें थोडी कसर है। राजाके तुल्य (बराबर)। राजकल्प.

राजधर्म, (पु०) राज्ञो धर्मः। राजाका धर्म। राजाओंका अवश्यकर्तव्य (जरूर करनेलायक)। प्रजाओंको पालन करना आदि कर्म (काम).

राजधानी, (स्त्री०) राजा धीयते अस्यां। धा+आधारे ल्युट्+ङीप्। जिसमें राजा निवास कर्ता है। महानगरी.

राजन्, (पु०) राज्+कनिन्। नृप। राजा। चांद। शुचि (पवित्र)। क्षत्रिय। यक्ष। और इन्द्र। पहिले वा पिछले पदमें आयाहुआ यह शब्द श्रेष्ठका वाचक है। जैसे राजमाषः। मुनिराजः.

राजन्, (पु०) राज्+कनिन्-रंजयति रंज्+कनिन्-ति-वा। प्रजाको प्रसन्न कर्ताहै। राजा। पातशाह। (तत्पुरुष समासमें "राजः"में परिणत होजाताहै).

राजनीति, (स्त्री०) राज्ञां नीतिः। राजाओंकी नीति। राजाके जाननेलायक साम आदि उपाय। उसको वर्णन करनेहारा शास्त्र.

राजन्य, (पु०) राज्ञोऽयम्+यत्। राज्+अन्य। क्षत्री। राजाका पुत्र। अग्नि (आग)। और क्षीरिकाका दरख्त.

राजन्यक, (न०) राजन्यानां (क्षत्रियाणां) समूहः+कन्। क्षत्रियोंका समूह.

राजन्वत्, (त्रि०) सुराज्ञि देशे राजन्वान्। जिस देशका राजा धर्मी है.

राजपथ, (पु०) पथां राजा। अच्। बडा रास्ता। राजाके जानेलायक रास्तह। बडी सडक। राजमार्ग.

राजपुत्र, (पु०) राज्ञः चंद्रस्य नृपस्य वा पुत्रः। चंद्रमाका वा राजाका पुत्र। बध नामी ग्रह। राजाका बेटा। वर्णसंकर (दोगला) राजपूत। "वैश्यादम्बष्ठकन्यायां राजपुत्रस्य सम्भवः" इति पराशरः.

राजबीजिन्, (त्रि०) राजा बीजी कारणं यस्य। जिसका बीजरूप कारण राजा है। राजवंश्य। राजाके वंशमें हुआ.

राजभूय, (न०) राज्ञो भावः। राजन्+भू+क्यप्। राजाका असाधारण धर्म। राजत्व। राजापन.

राजभोग्य, (न०) राज्ञा भोक्तुं योग्यं। भुज्+ण्यत्-कुत्वं। जातिकोष। पियालवृक्ष (पु०)। राजाके भोगनेलायक कोई पदार्थ (त्रि०).

राजराज, (पु०) राज्ञामपि राजा (प्रभूतधनत्वात्) टच् समा०। (बहुत धन होनेसे) राजाओंकाभी राजा। कुबेर। सार्वभौम राजा। चक्रवर्ती राजा। और चंद्रमा.

राजर्षि, (पु०) राजा ऋषिः इव (श्रेष्ठत्वात्) (संयतत्वाच्च)। राजा मानो ऋषि है (सबमें अच्छा होनेसे और संयम रखनेसे)। राजाओंमें श्रेष्ठ। यतात्मा (जिसने अपने आपको वश किया है) और राजा.

राजवंश्य, (त्रि०) राजवंशे भवः+यत्। राजाके वंशमें उत्पन्न हुआ। एक जाति.

राजवत्, (त्रि०) राजा (राजमात्रं) विद्यते अस्य+मतुप्। मस्य वः। वह देश जहां राजा निवास कर्ता है। राज्यवाला.

राजवत्, (त्रि०) प्रशस्तो राजा अस्ति अस्य। प्राशस्त्ये मतुप्। मस्य वः। वह देश जिसका राजा सुन्दर है.

राजवर्त्मन्, (न०) राजयोग्यं वर्त्म। राजाके लायक सडक। ६ त०। राजाके करनेलायक काम.

राजशाक, (पु०) शाकानां राजा। पर० नि०। सागोंका राजा। वास्तूकशाक। बाथूका साग.

राजस, (त्रि०) रजसा निर्मितः+अण् । रजोगुणसे उत्पन्न-हुआ कर्मेन्द्रिय (वाक्-पाणि-पाद-पायु-उपस्थ) । और प्रसिद्धिके लिये कियागया कर्म (काम).

राजसभा, (न० स्त्री०) राज्ञां (नृपाणां) सभा । राजाओंकी सभा । नृपसमाज.

राजसूय, (पु०) राज्ञा सूयते कण्ड्यतेऽस्मिन् । सू+क्यप् । राजाका करनेलायक एकयज्ञ.

राजस्व, (न०) राज्ञे देयं स्वं (कररूपम्) धनम् । राजाको देनेलायक (कर-मसूल-खिराज) धन । ६ त० । राजाका धन.

राजहंस, (पु०) हंसानां राजा (श्रेष्ठत्वात्) । पर० नि० । एक हंस (जिसकी चोंच और चरण लाल हों और रंग चिट्टा हो) । कलहंस । " राजा हंस इव (सारग्रहणात्) । राजा मानों हंस है (सारग्रहण करनेसे) । अच्छा राजा.

राजादन, (न०) राज्ञा अद्यते । अद् । कर्मणि ल्युट् । (उसके फल और बीजके लड्डुबनाकर) राजासे खाया जाता है । पियालवृक्ष (जिसके फल और बीजसे लड्डुबनाकर राजासे खाये जाते हैं) । क्षीरिका । और केसु.

राजाधिकारिन्, (पु०) राजानं अधिकरोति । सर्कारी अफसर (अधिकारी) न्यायकर्ता । जज । इन्साफ करनेवाला.

राजाधिष्ठान, (न०) राज्ञः-अधिष्ठानं । राजधानी । राजाके निवासका नगर ।

राजाम्र, (पु०) आम्राणां राजा (श्रेष्ठत्वात्) नि० । आम्रविशेष.

राजाम्ल, (पु०) अम्लानां राजा (श्रेष्ठत्वात्) पर० नि० । आम्लवेतस । अंबलवेत । खट्टा बेत.

राजार्ह, (न०) राजानं अर्हति । अर्ह्+अण् । अगुरुचंदन । राजाके लायक (त्रि०) । जम्बू (जामन) (स्त्री०).

राजि-जी, (स्त्री०) राज्+इन्-वा ङीप् । श्रेणि (कतार) पंक्ति । रेखा (लकीर) । " राजते " । राज्+ण्वुल् । श्वेतसर्षप.

राजिल, (पु०) राज्+इलच् । डुण्डुभ सर्प । डोडासांप । जलका सांप.

राजीव, (न०) राजी (दलराजी) अस्ति अस्य वा । कमलफूल । एक हरिण । एक मत्स्य (मच्छ) । हाथी । और सारस (पु०).

राजेन्द्र, (पु०) राजा इन्द्र इव (श्रेष्ठत्वात्) । बहुत अच्छा होनेसे) राजा मानो इन्द्र है (जिसका चार योजन १६ कोसतक अधिकार है उसे राजा-राजासे भी सौगुण अधिकारवाला । मण्डलेश्वर-और मण्डलेश्वरसे दसगुण अधिक अधिकारवाला " राजेन्द्र " कहाजाता है) । एक प्रकारका बड़ा राजा.

राज्ञी, (स्त्री०) राज्ञः पत्नी+ङीप् । स्वयं वा राजते । राज+कनिन्-ङीप् वा । रानी । राजाकी पत्नी (औरत).

राज्य, (न०) राज्ञो भावः कर्म वा । राजन्+यत् । राजाका होना वा काम.

राज्यधुरा, (स्त्री०) ६ त० । राज्यका बोझा । अच् समा० । प्रजाका पालन आदि.

राज्याङ्ग, (न०) ६ त० । राज्यका अंग (स्वामी-अमात्य-सुहृत्-कोष-राष्ट्र-दुर्ग और बल) । राज्यके आठ उपाय.

राढ, (पु०) रद्+घञ्-पृ० ढत्वम् । एकदेश । राड । " राडा " (स्त्री०).

राढीय, (त्रि०) राढो निवासः अस्य+छ । राढ देशमें उत्पन्न हुआ.

रात्रि-त्री, (स्त्री०) रा+त्रिप् वा ङीप् । रजनी । रात । अपने २ देशमें सूर्यमण्डलके न दीखनेलायक समय । हरिद्रा । हल्दी.

रात्रिकर, (पु०) रात्रिं करोति । कृ+अच् । " रात्रौ करः किरणः अस्य वा" । रातको बनाता वा जिसकी किरण रातमें होती हैं । चन्द्र । चांद और कर्पूर । काफूर.

रात्रि(त्रं)चर, (पु०) रात्रौ चरति । चर्+अच् वा मुम् । रातमें विचरता है । राक्षस । उस जातकी औरत ङीप्.

रात्रिमणि, (पु०) रात्रौ मणिः इव । दीप्तिमत्त्वात् । रातके समय मानों मणि है (प्रकाशवाला होनेसे) । चन्द्रमा.

रात्रिवासस्, (न०) रात्रेर्वास इव आच्छादकम् । रातका (कपडेकी नाई) ढाकनेहारा । अंधकार । अंधेरा । " रातके समय पहिरनेलायक कपडा ".

रात्रिविगम, (पु०) ६ त० । रातका बीत जाना । प्रभातसमय.

रात्रिहास, (पु०) रात्रिर्हास इव (शुभ्रत्वात्) । रातका मानो हासा (चिट्टा-सफेद होनेसे) । चिट्टा कमल.

रात्र्यन्ध, (त्रि०) रात्रौ अंधः (दृष्टिक्षययुक्तः) । रातको जो देख नहिं सक्ता । कौआ आदि.

राद्ध, (त्रि०) राध्+कर्तरि-कर्मणि वा क्त । सिद्ध (तयार हुआ) । पक्व (पकाहुआ).

राद्धान्त, (पु०) राद्धः (सिद्धः) अन्तः (निर्णयः) यस्मात् । ५ ब० । जिस्से तत्त्वका निश्चय होगया है । सिद्धान्त । नतीजा । संदेह उठाकर वादीसे दिखलाये हुए पक्षका निराकरण कर यथार्थ पक्षका प्रतिपादन करनेहारा वचन । "वादिप्रतिवादिनिर्णीतार्थः".

राध्, सिद्धि-साधना । अक० । निष्पादन (पूरा करना) । और पाक (पकाना) सक० स्वा० और दिवा० पर० अनिट् । राध्नोति । राध्यति । अरात्सीत् । अराद्ध.

राधन, (न०) राध्+ल्युट्। साधन (पूरा करना)। पाना। प्रसन्न होना। "राध्+णिच्+युच्" । पूजा करना। टाप्.

राधा, (स्त्री०) राध्+अच्। पार्वती। परमात्माकी एक शक्ति। श्रीरामके शापसे वृन्दावनमें उपजी वृषभानुकी कन्या प्रधानगोपी। कर्णकी पालन करनेहारी और माता (मां).

राधाकान्त, (पु०) ६ त०। राधाका कान्त (पियारा) श्रीकृष्ण "राधावल्लभ" आदि.

राधातनय, (पु०) ६ त०। राधाका पुत्र। कर्ण। वह कुमारी अवस्थामें सूर्यसे कुन्तीके गर्भमें उपजा। कुन्तीने त्याग करदिया, सूतकी पत्नी राधाने पाला.

राधारमण, (पु०) राधायाः रमणः। राधाके साथ प्यार करनेवाला श्रीकृष्ण.

राधेय, (पु०) राधाया अपत्यम्+ढक्। राधाकी सन्तान। कर्ण.

राम, (पु०) रम्+कर्तरि घञ् ण वा। परशुराम। दशरथका बडा पुत्र श्रीरामचन्द्र। और बलराम। मनोहर। खूबसूरत। और शुभ (त्रि०).

रामगिरि, (पु०) रामाश्रितः गिरिः। चित्रकूटपर्वत (वनवासमें गयेहुए रामने इसीका पहिले आश्रय लिया).

रामचन्द्र, (पु०) रामश्चन्द्र इव (आह्लादकत्वात्)। राम मानों चन्द्रमा है (आनंद देनेसे)। दशरथका बडा पुत्र श्रीराम.

रामजननी, (स्त्री०) ६ त०। रामकी माता। वसुदेवकी पत्नी (औरत) रोहिणी। जमदग्निकी पत्नी रेणुका। दशरथकी पत्नी कौशल्या.

रामणीयक, (न०) रमणीयस्य भावः। रमणीयं एव वा। रमणीय+वुञ्। रमणीयत्व। मनोहरपन। मनोहर.

रामतरुणी, (स्त्री०) रामा (अभिरामा) तरुणीव। सेओतीफूल। ६ त०। रामकी स्त्री। सीता। और रेवती.

रामदूत, (पु०) रामस्य दूतः (वार्ताहरः)। हनूमान् (वही रामचन्द्रकी बातको लंकामें सीताके पास पहुंचाताहुआ).

रामनवमी, (स्त्री०) रामस्य जन्माधारो नवमी। रामजन्मकी नवमी। चैत्रके शुक्लपक्षकी नवमी.

रामभद्र, (पु०) राम एव भद्रः (मङ्गलदायकत्वात्)। रामही कल्याण वा पियारा है (भलाई करनेसे)। श्रीराम.

रामवल्लभ, (न०) रामस्य वल्लभं (प्रियम्)। रामका पियारा। भूर्जपत्र (भोजपत्र) वह रामने वनवासाश्रममें पियारा समझकर धारण किया.

रामसख, (पु०) ६ त०। टच्। रामका मित्र। सुग्रीव (वानरोंका राजा).

रामा, (स्त्री०) रम्+णिच्+कर्तरि घञ्। गीतआदि कलाको जाननेहारी नारी (औरत)। नारी। नदी। हींग। घरकी लडकी। अशोक। गोरोचना। बलागेरी.

रामानुज, (पु०) प्रसिद्ध धर्मप्रवर्तकका नाम। वेदान्तकी एक शाखा (विशिष्टाद्वैत) का प्रवर्तक और भी अनेक ग्रंथोंका रचनेहारा.

रामायण, (न०) रामस्य अयनं (चरितं) अधिकृत्य कृतो ग्रन्थोऽण्। रामचन्द्रके चरित्रको प्रतिपादन करनेहारा वाल्मीकिमुनिका बनायाहुआ एक प्रकारका महाकाव्य.

राव, (पु०) रु+घञ्। शब्द। आवाज। बोलना.

रावण, (पु०) रवणस्य अपत्यम्+अण्। रावयति शत्रून्। णिच्+ल्यु वा। रवणकी सन्तान वा जो शत्रुओंको रुलाता है। लंकाका मालिक राक्षस.

रावणगङ्गा, (स्त्री०) रावणनिर्मिता गङ्गा नदी। रावणसे बनाईगई गङ्गा नदी। सिंहल (लंका-सीलोन) के देशमें एक नदी.

रावणारि, (पु०) ६ त०। रावणका शत्रु। श्रीरामचंद्र। "रावणान्तक" आदि.

रावणि, (पु०) रावणस्य अपत्यम्+अत इञ्। मेघनादनामी रावणका बडा पुत्र.

राश्, शब्द-आवाज करना। भ्वा० आ० अक० सेट्। राशते। अराशिष्ट.

राशि, (पु०) अश्नुते (व्याप्नोति) अश्+इन्। धातुको रुट्का आगम होता है। धान्य आदिका पुञ्ज (समूह)। ज्योतिश्चक्रका बारहवां अंश मेष आदि। व्यक्त और अव्यक्त गण। समूह। ढेर.

राशिचक्र, (न०) राशिघटितं चक्रं (वृत्तम्)। राशिओंका बनाहुआ चक्र। मेष आदि बारह राशिवाला, गोलाकार (गोलस्वरूपवाला), वायुके कारण पूर्वसे पश्चिमकी ओर निरन्तर घूमनेवाला ज्योतिस्स्वरूप चक्र.

राशिभोग, (पु०) राशीनां स्वस्वगत्या ग्रहैर्भोगः। भुज्+घञ्-कुत्वं। सूर्य आदि ग्रहोंका अपनी २ गतिके अनुसार राशिओंमें जाना.

राशी(शि)कृत, (पु०) अराशिः राशिः कृतः। राशि+अभूततद्भावेच्विः-तदर्थे समासो वा। ढेरी। पुञ्जीकृत। इकट्ठा कियागया। एक जगह लगायागया.

राष्ट्र, (न०) राज्+ष्ट्रन्। जनपद। देश। राज्य। उपद्रव। मुसीबत.

राष्ट्रिय, (पु०) राष्ट्रे भवः। घ+नाट्योक्तिमें राजाका श्याल (साला).

रास्, शब्द-आवाज करना। भ्वा० आ० स० सेट्। रासते.

रास, (पु०) रस्+घञ्। रास्+घञ् वा। शब्द। ध्वनि। आवाज। शृंखला (संगली) बांधकर दो २ के बीचमें एक प्रकारकी क्रीडा (खेल)। श्रीकृष्णभगवान्की लीला। कोलाहल। गौगा। रौला (हौरा).

रासभ, (पु०) रास्+अभच्। गर्दभ। गधा। खोता.

रासमण्डल, (न०) रासार्थं मण्डलं मण्डलाकारेण भ्रमणं यत्र । रासके लिये (संगली बांधकर दो २ के बीचमें ठहरेहुए खेलनेसे) जहां मण्डलाकार (दायरा बांधकर) घूमते हैं । रासकी खेल करनेकी जगह । श्रीकृष्णजीके रास करनेका स्थान । एक प्रकारका मण्डप.

रासेश्वरी, (स्त्री०) ६ त० । रासकी मालिक । राधिका.

रास्ना, (स्त्री०) रस्+नण् । इस नामकी एक वेल । रासनवेल.

राहु, (पु०) रह+उण् । त्याग । छोडना । छोडनेवाला । ज्योतिश्चक्रमें सूर्यकी किरणोंके न छूनेसे उत्पन्नहुई पृथिवीकी छायाका आश्रय एक ग्रह । सिंहिकाका बेटा (एक राक्षस).

राहुदर्शन, (न०) राहोर्दर्शनं यत्र । जिसमें राहुका दर्शन होता है । चंद्रमा और सूर्यका उपरागरूप ग्रहण । चन्द्रमा और सूर्यका उपराग होनेपरही वह दीख सक्ता है । अन्यथा नहिं.

राहुमूर्धभिद्, (पु०) राहोः (सिंहिकासुतस्य) मूर्धानं भिनत्ति । भिद्+क्विप् । राहुके माथेको तोडता है । विष्णु । अमृत पीनेके समय देवताओंकी कतारमें देवरूपसे स्थित होकर अमृत पीतेहुएको देख विष्णुने उसका सिर तोडा.

राहुरत्न, (न०) राहोः प्रियं रत्नम् । एक खास रत्न । गोमेदरत्न.

राहुसूतकम्, (न०) राहोः सूतकम् । राहु (दैत्य सिरके स्वरूपमें)का जन्म । सूर्य वा चन्द्रमाका ग्रहण.

रिक्त, (त्रि०) रिच्+क्त । शून्य । खाली । सूना । वन । निरर्थक । बे फायदा.

रिक्तभाण्ड, (न०) रिक्तं भाण्डम् । तेल आदिसे शून्य भांडा (वर्तन).

रिक्तहस्त, (त्रि०) रिक्तो (धनादिशून्यो) हस्तो यस्य । जिसका हाथ धनआदिसे शून्य है । खालीहाथ । निर्धन । गरीब । बहुत दान आदिसे जिसका धन खर्च होगया.

रिक्ता, (स्त्री०) रिच्+क्त । दोनों पक्षोंकी चतुर्थी । नवमी और चतुर्दशी तिथियें.

रिक्थ, (न०) रिच्+थक् । धन । मिताक्षरामें कहाहुआ अप्रतिबंध (न रुकनेवाला) दाय (बिरसा).

रिक्थहारिन्, (त्रि०) रिक्थं (ग्राह्यत्वेन) अस्ति अस्य+इनि । दायहारी । बिरसालेनेवाला । दायाद । शरीक.

रिख्, (सर्पण) सर्कना । भ्वा० प० सक० सेट् । इदित् । रिङ्खति.

रिग्, जाना । भ्वा० पर० सक० सेट्-इदित् । रिङ्गति । अरिङ्गीत्.

रिङ्गण, (न०) रिगि+ल्युट् । स्खलन । खिसकना । रींगना.

रिच्, संपर्क (मिलना) और वियोग (अलग होना) । चुरा० उभ० पक्षे भ्वा० पर० सक० सेट् । रेचयति-ते । रेचति (अरीरिचत्-त) । अरेचीत्.

रिच्, विरेच (ऊपर छल करना) । बहुत मैला छोडना । रुधा० उभ० सक० अनिट् । रिणक्ति-रिङ्क्ते.

रिपु, (पु०) रिप्+उ-पृ० । शत्रु । दुश्मन । लग्नसे ६ ठा स्थान.

रिपुघातिनी, (स्त्री०) रिपुं हन्ति । हन्+णिनि । एक बेल । शत्रुको मारनेवाला (त्रि०).

रिपुञ्जय, (त्रि०) रिपुं जयति । जि+खच् । शत्रुको जीतनेवाला । एक राजा (पु०).

रिम्फ्, वध (मारना) । तु० प० स० सेट् । रिम्फति.

रिफ्फ, (पु०) रिफ्+अच्-पृ० । लग्नसे बारवां स्थान.

रिरंसा, (स्त्री०) रम्+सन्+अ । रमणेच्छा । क्रीडा करनेकी चाह (ख्वाहिश).

रिव्, गति-जाना । भ्वा० प० स० सेट् । इदित् । रिण्वति.

रिश्, हिंसा (कतलकरना) । तु० पर० सक० अनिट् । रिशति । अरिक्षत्.

रिश्य (ष्य), (पु०) रिश्यते । रिश्+क्यप् । एक हरिण.

रिष्ट, (न०) रिश्+क्त । मंगल । और अशुभ । भला और बुरा "भावे क्त" नाश । और पाप (गुनाह) । बुराई आदिवाला (त्रि०) । खड्ग (तरवार) (पु०).

रिष्टि, (स्त्री०) रिप्-रिष्-वा+क्तिन् । अशुभ । एक प्रकारका शस्त्र (औजार) । "क्तिच्" रन्ध्र । छेक । सुराख.

री, क्षरण-वहना । दि० आ०अ० अनिट् । रीयते । अरेष्ट.

रीठा, (स्त्री०) री+ठक् (ठस्य न इत्वम्) । रीठाकरञ्ज । रीठा.

रीढा, (स्त्री०) रिह्+क्त । अवज्ञा । अवमानना । नाफर्मानी । न मानना.

रीण, (त्रि०) री+क्त । क्षरित । स्रुत । वहगया । वहाहुआ.

रीति, (स्त्री०) री+क्तिन् । पित्तल । प्रस्राव । पेशाब । वहना । सीमा । गति । जाना । स्वभाव । चाल । गौंडी आदि रचना । तरीक.

रु, ध्वनि (शब्दकरना) अदा० प० अक० वेट् । रौति-रवीति.

रुक्प्रतिक्रिया, (स्त्री०) रुजः प्रतिक्रिया (प्रतीकारः) । प्रति+कृ+भावे श । रोग दूर होनेका उपाय । चिकित्सा.

रुक्प्रतिक्रिया, (स्त्री०) रुजः प्रतिक्रिया=उपायः । व्याधि (रोग-बीमारी)का इलाज.

रुक्म, (न०) रुच्+मन्-नि-कुत्वम् । काञ्चन । सोना । धतूरा । लोहा । नागकेशर.

रुक्मकारक, (पु०) रुक्मं (तन्निर्मितभूषणं) करोति । कृ+ण्वुल् । सोनेके जेवर बनाता है । स्वर्णकार । सुनार.

रुक्मिन्, (पु०) रुक्मं विद्यते अस्य+इनि । जिसके पास सोना है । एकराजा । सोनेका स्वामी (त्रि०).

रुक्मिणी, (स्त्री०) रुक्मिन्+ङीप् । विदर्भ देशके राजा भीष्मककी कन्या.

रुक्सद्मन्, (न०) रुजः सद्म । रोगका घर । मल । विष्ठा । गुंह.

रु(रू)क्ष, (त्रि०) रुह्-कस पृ० वा दीर्घः । अचिक्कण । जिसमें चिकनाई न हो । निःस्नेह । और कठोर । सख्त.

रुग्ण, (त्रि०) रुज्+क्त । रोगान्वित । बीमार । रोगवाला । भुग्न । टेढा.

रुच्, प्रीति (प्रसन्न होना) । प्रकाश (चमकना) । भ्वा० आ० अक० सेट् । रोचते (अरुचत्-अरोचिष्ट).

रुचक, (न०) रुच्+क्वुन् । सज्जी । सर्जिकाक्षार । अश्वाभरण (घोडेका जेवर) । माला । सुहागा । और निमक । दांत । और कबूतर (पु०).

रुचा-च्, (स्त्री०) क्विप्-वा टाप् । दीप्ति । प्रकाश । और शोभा.

रुचि-ची, (स्त्री०) रुच्+कि-वा ङीप् । अनुराग । मुहब्बत। आसङ्ग । स्पृहा (इच्छा) । अभिलाष । किरण । शोभा। बुभुक्षा । भूख । गोरोचना । एक प्रजापति (पु०).

रुचिकर, (त्रि०) रुचिं करोति+कृ+अप् । स्वाद देनेवाला । दिलपसंद.

रुचिधामन्, (पु०) रुचेः=दीप्तेः धाम=गृहम् । प्रकाशका घर । सूर्य.

रुचिर, (त्रि०) रुचिं राति (ददाति) रा+क । मनोहर । सुन्दर । और मधुर (मीठा) । रुचि (इच्छा) को देता है (पैदा कर्ता है) । केसर और लौंग (न०).

रुच्य, (त्रि०) रुचये हितः+यत् । रुचिके लिये हितकारी (अच्छा) । सुन्दर । और रुचिकर । पति । कतकवृक्ष (पु०).

रुज्, भञ्जन (तोडना) तु० पर० सक० अनिट् । रुजति । अरौजीत् । रुग्णः.

रुज् (जा), (स्त्री०) रुज्+क्विप् । वा टाप् । रुज्+अङ् वा । रोग (बीमारी) । भंग । टूटना । मेषी । मेढी । कोढ.

रुजाकर, (न०) रुजां (रोगं) करोति । कृ+अच् । रोगको कर्ता है । कर्मरंग (कामारांगा) फल । रोग करनेवाला (त्रि०).

रुट्, चौर्य (चोरी करना) भ्वा० पर० सक० सेट् । इदित्। रुण्टति.

रुट्, रोध (रोकना) । सक० दीप्ति-चमकना । अक० चुरा० उभ० सेट् । रोटयति-ते.

रुण्ड, (पु०) रुठि+अच् । पृ० । "ठ" को "ड" होता है । मस्तकसे शून्य शरीर (जिस्म) । कबंध । धड.

रुत, (न०) रु+क्त । रव । आवाज । पशु और पक्षी आदिका शब्द.

रुद्, रोदन (रोना) । अदा० पर० अक० सेट् । रोदिति । अरुदत् । अरोदीत्.

रुदित, (न०) रुद्+भावे क्त । क्रन्दन । चिल्लाना । रोना । " कर्तरि क्त " कृतरोदन । जो रोया है । रोनेवाला (त्रि०).

रुद्ध, (त्रि०) रुध्+क्त । आवरणादिवेष्टित । पडदे आदिसे घेराहुआ । रोकागया । बंदकिया । रुकाहुआ.

रुद्र, (पु०) रोदिति । रुद्+रक् । रोता है । शिवजीकी एकमूर्ति । "सोऽरोदीत् यदरोदीत्तत् रुद्रस्य रुद्रत्वम्" "अज एकपात्, " इति श्रुतिः । अहिर्बुध्न्य, विरूपाक्ष, सुरेश्वर, जयन्त, बाहुरूप, त्र्यंबक, अपराजित, वैवस्वत, सावित्र, हर, और शम्भु इस प्रकार शिवजीकी ग्यारह मूर्तियें.

रुद्रज, (पु०) रुद्रात् जायते । जन्+ड । रुद्रसे उपजता है । शिवजीके वीर्यसे उत्पन्न हुआ । पारद (पारा).

रुद्रजटा, (स्त्री०) रुद्रस्य जटेव पिङ्गत्वात् । जटिलत्वात् । मानों रुद्रकी जटा है (पीली और जटावाली होनेसे) एक प्रकारकी वेल । शंकरजटावेल.

रुद्रप्रिया, (स्त्री०) ६ त० । रुद्रकी पियारी । हरीतकी । हरीड । और दुर्गा । देवी.

रुद्रविंशति, (स्त्री०) रुद्रस्वामिका विंशतिः । वह वीसी जिसका स्वामी रुद्र है । प्रभव आदि साठ वर्षोंमेंसे अन्तकी वीसी.

रुद्रसावर्णि, (पु०) चौदह मनुओंमेंसे बारवां मनु.

रुद्राक्रीड, (न०) रुद्रस्य आक्रीडा यत्र । जहां रुद्रजी खेल कर्ते हैं । श्मशान । मसान । मरघट.

रुद्राक्ष, (पु०) रुद्रस्य अक्षीव-षच् । मानों रुद्रकी आँख है । अपने नामवाला वृक्ष.

रुद्राणी, (स्त्री०) रुद्रस्य पत्नी । रुद्र+ङीप्-आनुक् च । रुद्रकी स्त्री । शिवपत्नी । पार्वती । शिवकी औरत । ग्यारह वरिसकी लडकी.

रुद्रारि, (पु०) रुद्रः अरिर्यस्य । रुद्र जिसका शत्रु है । कामदेव.

रुद्रावास, (पु०) ६ त० । रुद्रके निवास करनेका स्थान। कैलास । काशी । श्मशान (मसान).

रुद्रिय, (त्रि०) रुद्रस्य अयं-रुद्र+घ+दय । रुद्रका वा रुद्रसे उत्पन्न हुआ । डरावना । (वेदमें) स्तुतिका उच्चारण करना । सुख पहुंचाना । यजुर्वेदका एक भाग.

रुध्, काम (चाहना-मांगना) । आ० सक० अनिट् । प्रायः इस धातुके साथ अनु उपसर्ग लगता । है । अनुरुध्यते । अन्वरुद्ध.

रुध्, आवरण (रोकना-बंदकरना) रुधा+उ० स० अनिट् । रुणद्धि-रुन्धे । अरुधत्-अरौत्सीत् । अरुद्ध । रुद्धः.

रुधिर, (न०) रुध्+किरच् । शरीरमें रसके पकनेसे उत्पन्नहुआ एक प्रकारका धातु । मंगलग्रह । और लाल रंग (पु०) । उस रंगवाला (त्रि०).

रुधिरपायिन्, (पु०) रुधिरं पिबति । रुधिर (लोहु) पीताहै । दैत्यः.

रुप्, आकुलीकरण-घबराना । बिगाड़ना । (वेद) बडी पीडा सहारना । दि० प० स० सेट् । रुप्यति । अरुपत्-अरोपीत्.

रुमा, (स्त्री०) रु+मक् । सुग्रीव वानरकी भार्य्या (औरत) । लवण राक्षसका स्थान । एक देश.

रुरु, (पु०) रु+क्रु । मृगविशेष । एक प्रकारका हरिण.

रुवु, (पु०) रु+वु । एरण्डका द्रख्त । "कन्" एरण्ड । "रुवूक".

रुश्, हिंसा (कतलकरना मारना) तु० प० स० अनिट् । रुशति । अरुक्षत्.

रुष्, (वध) मारना । भ्वा० प० सक० सेट् । रोषति । अरोषीत्.

रुष्, क्रोध (गुस्सा करना) । दि० प० अक० सेट् । रुष्यति । अरुषत् अरोषीत्.

रुष्-षा, (स्त्री०) रुष्+क्विप्-वा टाप् । क्रोध । कोप । गुस्सा.

रुषित, (त्रि०) रुष्+क्त वा इट् । क्रोधयुक्त । गुस्सेवाला । "रुष्ट".

रुह्, उद्भव-उत्पन्न होना । भ्वा० प० अ० अनिट् । रोहति । अरुक्षत्.

रुह, (त्रि०) रुह+क । जात । उपजा । उत्पन्नहुआ । दूर्वा (स्त्री०) अगले पदमें रहनेसे "उस्से निकला" अर्थ होता है । जैसे "भूरुह" (पृथिवीसे उपजा-वृक्ष) "वारिरुह" पानीसे निकला-कमल.

रूक्ष्, पारुष्य-सख्तहोना-कठोरहोना-और रूखाहोना । चुरा० आ० अक० सेट् । रूक्षयति-ते । अरुरूक्षत्-त.

रूक्ष, (त्रि०) रूक्ष्+अच् । अचिक्कण । रूखा । जो चिकना नहिं । और स्नेहसे रहित । वृक्ष (पु०) । दन्तीवृक्ष (स्त्री०).

रूक्षगन्ध, (पु०) रूक्षो गन्धो यस्य । जिसका गंध रूखा है । गुग्गुल.

रूढ, (त्रि०) रुह्+क्त । जात । उत्पन्नहुआ । निकला । और प्रसिद्ध (मशहूर) । "रूढिः अस्य अस्ति+अच्" जिसकी रूढि (प्रसिद्धि) हो । प्रकृति (धातु) और प्रत्ययके अर्थकी अपेक्षा न करके समुदायशक्ति (सारे शब्दकी ताकत)से अर्थको जतानेहारा शब्द-जैसे "घटः" "गौः".

रूढयौवन, (त्रि०) रूढं यौवनं यस्य । चढ गई है जवानी जिसको । जवान.

रूढसौहृदल्ल, (त्रि०) रूढं सौहृदल्लं यस्य । जम गई है मित्रता जिसकी । पक्की (दृढ) मित्रता (दोस्ती)वाला । गाढी मित्रतावाला । स्थिरपरमित्र.

रूढि, (स्त्री०) रुह्+क्तिन् । जन्म । पैदाहोना । प्रसिद्धि (मशहूरी) । प्रकृति और प्रत्ययके अर्थकी पर्वाह किये विन समुदाय शक्तिसे अर्थका बोधन (जताना) । "डित्थ".

रूप्, रूपान्वितकरण-शकलवाला बनाना । चुरा० उभ० सक० सेट् । रूपयति-ते । अरुरूपत्-त.

रूप, (न०) रूप्+क । भावे अच् वा । शकल । स्वभाव । सौन्दर्य (खूबसूरती) । पशु । नाम । शब्द । ग्रन्थावृत्ति (ग्रन्थको दुबारा पढना) । देखनेलायक काव्य नाटक आदि । श्लोक । शब्द और धातुओंको विभक्ति लगानेसे बनाहुआ शब्द । और चिट्टाआदि रंग । उसवाला (त्रि०) । "अगले पदमें सदृशका अर्थ" जैसे "पितृरूपस्तनयः" पिताके समान पुत्र । एकही संख्या (गिन्ती).

रूपक, (न०) रूपयति अत्र । रूप्+अच्-कन् । अभिनयप्रदर्शक दृश्यकाव्यप्रभेद । नकल (अवस्थानुकरण)को दिखानेहारा एक प्रकारका देखनेलायक काव्य । "रूपं अस्ति अस्य वुण्" रूपवाला । मूर्त (शकलवाला) (त्रि०) । "रूप+स्वार्थे कन्" शुक्लादिवर्ण (चिट्टा आदि रंग) । आकार (स्वरूप) । एक अर्थसम्बन्धी अलंकार । तीन रत्तीका माप । चांदी.

रूपधारिन्, (त्रि०) रूपं धारयति । धारि+णिनि । रूपवाला । खूबसूरत । दूसरा वेश लेनेहारा । और नट (सांग बनानेवाला).

रूपवत्, (त्रि०) रूप+मतुप्-"म" को "व" होता है । चिट्टे आदि रूपवाला । सौन्दर्ययुक्त (खूबसूरत) आकार (शकल)वाला.

रूपशालिन्, (त्रि०) रूपेण शालते । रूपसे सजताहै । सुन्दर.

रूपसंपद्-संपत्ति, (स्त्री०) रूपस्य सम्पद् । रूपकी पूर्णता । पूरी सुन्दरता । बडी भारी खूबसूरती.

रूपाजीवा, (स्त्री०) रूपं (सौन्दर्य) आजीवति । जो खूब सूरती लेकर जीती है । "आ+जीव्+अच्" वेश्या । कंजरी.

रूप्य, (न०) रूपाय आहन्यते स्वर्णादि+यत् । खूब सूरत बनानेके लिये जो सोना आदि ताडन कियाजाता है । अलंकार (जेवर) आदि बनानेको चोट लगायागया सोना और चांदी । "स्वार्थे यत्" हरएक प्रकारकी रजत चांदी । और रुपया । सुन्दर (पु०).

रूप्याध्यक्ष, (पु०) रूप्येषु अध्यक्षः । सोना-चांदीमें मालिक । कोषाध्यक्ष । खजाञ्ची.

रूष्, (धूरी आदिसे मिलादेना) । चुरा० उभ० अक० सेट् । रूषयति-ते.

रूषित, (त्रि०) रूष+क्त । धूरी आदिसे मिलाहुआ । रूखा कियाहुआ.

रे, (अव्य०) एक प्रकारका सम्बोधन । नीच आदिके बुलानेमें.

रेक, (पु०) रिच्+घञ् । विरेचन । दस्त होना । "रेक् (शङ्करना)+अच्" । शक । नीच (कमीनह) । मेक (मेंडक) । रेक्+अ । सन्देह (स्त्रियां टाप्).

रेखा, (स्त्रि०) लिख्+अच्-"ल" को "र" होता है । अल्प (थोडा) । छल । लकीर । लाइन.

रेखागणितम्, (न०) रेखानां गणितं । रेखाओंका हिसाब । इस नामका एक ग्रन्थ.

रेखान्यास, (पु०) रेखाणां न्यासः । रेखाओंका चिह्न लगाना.

रेखामात्रम्, (त्रि०) रेखा प्रमाणं अस्य । रेखा (लाइन-लकीर)के परिमाण (माप) वाला । त्रे (अव्य०) लकीरभर.

रेचक, (न०) रेचयति । रिच्+णिच्+ण्वुल् । यवक्षार । जौखार । और तिलकवृक्ष । पुरीषको निकालनेवाला (दस्तावर) (त्रि०).

रेज्, दीप्ति-चमकना । भ्वा० आ० अक० सेट् । रेजते । अरेजिष्ट.

रेटृ, याचन (मांगना) । और बोलना । द्वि० भ्वा० उभ० सेट् । रेटति-ते.

रेणु, (पु० स्त्री०) रि+नु । पराग । धूरी फूलकी । और पांशु (धूर पर्पट । पाप्पड (पु०).

रेणुका, (स्त्री०) रेणुना कायति । कै+क । मिरचकी शकलका सुगंधीवाला पदार्थ । जमदग्निकी पत्नी । और परशुरामकी माता.

रेणुकासुत, (पु०) ६ त० । परशुराम । "रेणुकात्मज" यही अर्थ.

रेणुरूषित, (पु०) रेणुभिः रूषितः । धूरिओंसे रूखा हुआ । गर्दभ । गधा । धूरसे धूसर (त्रि०).

रेतस्, (न०) री+असुन्-तुट्च । पुरुषका लोहू आदिके पाकसे उत्पन्नहुआ शरीरमें मज्जाका कारण सबसे पिछला धातु शुक्र (वीर्य) । शिवजीका वीर्य । और पारद (पारा).

रेतस्, (न०) री । असुन्+तुट् च । वीर्य । बीज.

रेतोधा, (पु०) रेतः दधाति । वीर्य रखताहै । पिता.

रेप, (त्रि०) रेप्+अच् । निन्दित । निन्दा कियाहुआ । क्रूर (बेरहम) । सूम (कृपण).

रेफ, (पु०) र+इफ । रकारस्वरूप अक्षर । " रिफ्+अच् । कुत्सित । निन्दाकियाहुआ (त्रि०) । क्रूर । अधम । दुष्ट । कृपण.

रेवत, (पु०) रेव्+अतच् । जम्बीर नींबू । बलरामका ससुर (सौरा) । एक राजा.

रेवती, (स्त्री०) रेवतस्य अपत्यं+अण् । पृ० । रेवतराजाकी कन्या । बलदेवकी स्त्री । रेव्+अतच-ङीप् । अश्विनीसे ले सत्ताइसवां नक्षत्र (तारा) । सत्ताइसकी संख्या । एक माता । एक नदी । दुर्गा.

रेवतीरमण, (पु०) रेवतीं रमयति । रम्+णिच्+ल्यु । रेवतीको रमण कराता है । बलराम । बलभद्र । ६ त० । "रेवतीश" भी.

रेवा, (स्त्री०) रेव्+अच् । नर्मदानाम नदी । रतिका एक नाम.

रेषृ, हेषा (घोडेकी आवाज करना) भ्वा० आ० अक० सेट् । रेषते.

रै, शब्दकरना । भ्वा० पर० अक० अनिट् । रायति । अरासीत्.

रै, (पु०) रा+डै । धन । दौलत । और सुवर्ण (सोना).

रैत्य, (त्रि०) रीतेः (पित्तलस्य) विकारः । रीति+ण्यत् । पीतलका वर्तन.

रैवत, (पु०) रेवत्या (नद्या) अदूरो देशः । अण् । रेवती नदीके पासका देश । द्वारिकाके पासका एक पर्वत (पहाड) स्वर्णालुवृक्ष । शिव । और एक दैत्य । "रेवतीमें हुआ" राम । एक मनु । स्वार्थे कन् । रैवतक पहाड.

रोक, (न०) रु+कन् । छिद्र । छेक । और नौका (किश्ती-बेडी) । रुच्+घञ्-नि०-कुत्वं । क्रयभेद (रोक रुपया देकर चीज खरीदना) । और दीप्ति (चमक-प्रकाश) (पु०).

रोग, (पु०) रुज्+घञ् । धातुकी विषमतासे उपजी व्याधि । बीमारी.

रोगघ्न, (न०) रोगं हन्ति । हन्+क । बीमारी दूर कर्ता है । औषध । दवाई । वैद्यकशास्त्र । चिकित्साशास्त्र । रोगनाशक (त्रि०).

रोगराज, (पु०) ६ त० । टच् समा० । राजयक्ष्मव्याधि । क्षयीरोग (इसमें प्रतिदिन शरीर घटता जाता है) कनज़म्पशन.

रोगलक्षण, (न०) रोगो लक्ष्यते (ज्ञायते) अनेन । लक्ष्+ल्युट् । बीमारी जतलानेहारा धातुकी विषमताका कारण । एक चिह्न । रोगका निशान.

रोगह, (न०) रोगं हन्ति । हन्+ड । औषध । दवाई । "हन्+क्विप्" रोगको नाश करनेवाला । वैद्य (हकीम) आदि (त्रि०).

रोगहारिन्, (पु०) रोगं हरति । हृ+णिनि । चिकित्सक । वैद्य । हकीम.

रोगिन्, (त्रि०) रोग+अस्ति अर्थे इनि । व्याधियुक्त । बीमार । स्त्रियां ङीप्.

रोचनक, (पु०) रोचनाय (रुचिजननाय) कायति । कै+क । जम्बीर । नींबू.

रोचना, (स्त्री०) रोचयति । कर्तरि संज्ञायां ल्युट् । टाप् । मनःशिला । गोरोचना, आमलकी । सुन्दर स्त्री । श्वेतत्रिवृति (चिट्टी तिरवी । एक प्रकारका गंधद्रव्य).

रोचमान, (पु०) रुच्+शानच् । अश्वग्रीवास्थरोमावर्त । घोडेकी गर्दनमें वालों (लूओं)का घेरा । रुचियुक्त । चमकनेवाला । सुन्दर (त्रि०).

रोचिष्णु, (त्रि०) रुच्+इष्णुच् । दीप्तिशील । चमकनेवाला । रौशन.

रोचिस्, (न०) रुच्+इसुन् । प्रभा । रौशनी । लाट.

रोटिका, (स्त्री०) रुट्+ण्वुल् । गोधूम (कनक) आदिके चूरे (आटे)से बनाहुआ एक प्रकारका पिष्ठक (रोटी).

रोड्, अनादर करना । भ्वा० पर० सक० सेट् । रोडति । आरोडीत्.

रोदन, (न०) रुद्+ल्युट् । क्रन्दन । चिल्लाना.

रोदस्, (न०) रुद्+असुन् । स्वर्ग । और भूमि । "ङीष्" रोदसी (इसी अर्थमें) । स्वर्ग और पृथिवी (स्त्री०) द्वि० व०.

रोध, (पु०) रुध्+घञ् । रोधन । रोकना । ठहरना । छिपना । आवरण । पडदा । बंदकरना.

रोधन, (त्रि०) रुध्+ल्यु । रोकनेवाला । "भावे+ल्युट्" रोक । प्रतिबंध (न०).

रोधस्, (न०) रुध्+असुन् । नद्यादिकूल । नदी आदिका किनारा.

रोध्र, (न०) रुध्+रन् । पाप । अपराध । और लोधका द्रख्त.

रोप, (पु०) रुह्+णिच् "ह" को "प" होता है । "कर्मणि अच्" लगाना । बीजना । धान आदिकी उत्पत्तिके लिये अंकुर आदिका लगाना । छिद्र (छेक) (न०).

रोपण, (न०) रुह्+णिच्-ह्रस्य पः । ल्युट् । जनन । बीज लगाना । अन्यथाभूत वस्तुका अन्यथा ज्ञापन । और प्रकारकी चीजको औरही प्रकारसे जताना.

रोपित, (त्रि०) रुह्+णिच्-ह्रस्य पः क्त । वृक्ष आदिकी उत्पत्तिके लिये बीज लगायागया.

रोमक, (न०) रोमेव निविडं कायति । कै+क । रूमनामी नगर.

रोमकूप, (पु०) रोम्णां कूप इव । लूओंका मानों खूआ है । रोमाधारविवर । रोमोंका सुराख.

रोमन्, (न०) रु+मनिन् । शरीरपर उत्पन्नहुए अंकुरके स्वरूपमें केशोंके समान पदार्थ रोंयां । लूं.

रोमन्थ, (पु०) रोगं मथ्नाति । मन्थ्+अण् । पृ०न लोपः । रोगको मथ डालता है । खायेहुए घास आदिका पशुओंने निकालकर चावना । जुगाली करना.

रोमभूमि, (स्त्री०) ६ त० । चर्म । चमडा । रोमोंकी जगह.

रोमराजि-जी-लता, (स्त्री०) रोम्णां राजिः । नाभि (धुन्नि)के ऊपर रुंओंकीकतार.

रोमलता, (स्त्री०) रोमाणि लतेव । रोमोंकी कतार । रोमराजि.

रोमविकार, (पु०) ६ त० । रोमोद्गम । रोमोंका निकलना.

रोमश, (त्रि०) रोमाणि सन्ति अस्य श । प्रचुररोमयुक्त । बहुतरोमवाला । मेढा । सूअर.

रोमहर्ष, (पु०) रोम्णः हर्ष इव-तद्व्यञ्जकत्वात् । मानों रोआंको खुशीहूई है (खुशीको प्रकट करनेसे) । रोआं-फूटना । रोमाञ्च । "रोमहर्षण".

रोमाञ्चित, (त्रि०) रोमाञ्चो जातोऽस्य । तार० इतच् । जातपुलक । जिसके रोंगटे खडे हो गये हैं.

रोमाली, (स्त्री०) रोमावली । रोमोंकी कतार । जवानीकी दशा.

रोमावली-लि, (स्त्री०) ६ त० । रोमश्रेणि । रोमोंकी कतार । नाभि (धुन्नी) के ऊपर रोमोंकी पंक्ति । उससे पहिचानीगई तारुण्यावस्था (जवानीकी हालत).

रोमोद्गम, (पु०) (रोम्णां उद्गमः) । उद्+गम्+घञ् । रोआँका फूटना । "रोमोद्भेद" इसी अर्थमें है.

रोरुदा, (स्त्री०) रुद्+यङ्+टाप् । अतिशय रोदन । बहुत रोना.

रोलम्ब, (पु०) रौति । रु+विच्=रौः सन् लम्बते (गच्छति) । लम्ब्+अच्-कर्म० । रोड्+अम्बच् । डस्य लो वा । भ्रमर । भौंरा.

रोष, (पु०) रुष्+घञ् । क्रोध । गुस्सा.

रोषण, (पु०) रुष्+युच् । पारद । पारा । कसौटी । और ऊषरभूमि (कल्लरकी जमीन) । क्रोधवाला (त्रि०).

रोह, (पु०) रुह्+अच् । अंकुर । चढनेहारा (त्रि०).

रोहण, (पु०) रुह्यतेऽसौ रुह्+ल्युट् । जो चढाजाता है । एक पर्वत । पहाड । चढना (न०).

रोहि, (पु०) रुह्+इन् । बीज (बी) । और वृक्ष । धार्मिक (त्रि०).

रोहिण, (न०) रुह्+इनन् । पन्द्रह भागोंमें वांटेगये दिनका नावां (नवम) भाग । बोडका द्रख्त (पु०).

रोहिणी, (स्त्री०) रुह्+इनन् ङीष् । गौ । अश्विनीसे चौथा नक्षत्र (तारा) । वसुदेवकी स्त्री । बलभद्रकी माता । विजली । काटतुम्बी लता । हरीतकी (हरीड) । मजीठ.

रोहिणीपति, (पु०) ६ त० । चन्द्रमा । और वसुदेव । "रोहिणीनाथ".

रोहिणीव्रत, (न०) रोहिणीयुक्ताष्टम्यां व्रतम्। रोहिणी नक्षत्रसे पहिचानीगई भादोंके कृष्णपक्षकी अष्टमीके दिन करनेयोग्य उपवासरूप व्रत। "जन्माष्टमी".

रोहिणीशकट, (पु०) रोहिण्याः-शकटः। शकट (गड्डे)के स्वरूपवाला रोहिणीतारा.

रोहित, (न०) रुह्+इतच्। रुधिर (लोहू)। सरल (सीधा)। इन्द्रका धनुष्। एक प्रकारका मच्छ। एक वृक्ष। लालरंग (पु०)। उसवाला (त्रि०) "स्वार्थे कन्".

रोहिताश्व, (पु०) रोहितवर्णा अश्वा यस्य। लाल रंगके घोडोंवाला। वह्नि। आग। अग्निदेवता.

रोहिन्, (पु०) रोहति (पुनः छिन्नोपि प्रादुर्भवति)। रुह्+णिनि। कटाहुआ भी फिर निकलता है। रोहितक वृक्ष। चढनेहारा (त्रि०)। स्त्रियां ङीप्.

रोहिष, (पु०) इस नामका एक द्रख्त.

रौक्म, (त्रि०) रुक्म+अण्। सोनेका। स्वर्णमय.

रौक्ष्य, (न०) रुक्षस्य भावः+ष्यञ्। पारुष्य। कठोरपना। रूखापन। अचिक्कणता.

रौट्-ड्, अनादर करना। भ्वा० पर० सक० सेट्। रौटति। अरौटीत्.

रौद्र, (न०) रुद्रो देवता अस्य+अण्। जिसका देवता रुद्र है, सूर्यताप। सूर्यकी गरमी। धूप। उग्ररस। तेजरस। शृङ्गारादि आठ रसोंमेंसे एक। भीषण (डरावना) (त्रि०) दुर्गा। और रुद्रजटावृक्ष स्त्रियां ङीप्.

रौप्य, (न०) रूप्यं एव+अण्। रजत। चांदी.

रौम, (न०) रुमायां (नद्यां) भवः+अण्। शाम्भरिलवण। साँवरनोन.

रौरव, (पु०) रोरूयतेऽत्र। रु+यङ्+क्विप्। तेन प्राप्यं तस्येदं वा अण्। जहां वार २ रोते हैं। एक प्रकारका नरक। चञ्चल। धूर्त। और घोर (डरावना) (पु०)। जंगली.

रौहिण, (पु०) रुह्+इनन्। स्वार्थे अण्। चंदनका द्रख्त.

रौहिणेय, (पु०) रोहिण्यां भवः+ढक्। रोहिणीमें हुआ। बुधग्रह। और बलराम। मरकतमणि (न०)। गौका बछडा। द्वि०.

रौहिष, (न०) रुह्+इषन्। स्वार्थेऽण्। एक प्रकारका हरिण और रोहितनामी मच्छ.

ल

ल, (पु०) ला+क। इन्द्र। छंदःशास्त्रमें एकमात्रावाला वर्ण। लकार.

लक्, आस्वाद-स्वाद लेना-प्राप्ति-पाना। चु० उभ० सक० सेट्। लाकयति-ते। अलीलकत्-त.

लकच, (पु०) लक्+अचन्। लिकुचवृक्ष। "लकुच".

लक्तक, (पु०) लक्+क्त। नि० संज्ञायां कन्। अलक्तक। अलता। लाखका रंग.

लक्ष्, दर्शन-देखना-पहिचानना। अंकन। निशान लगाना। चु० उभ० सक० सेट्। लक्षयति-ते। अललक्षत्-त.

लक्ष, (न०) लक्ष्+अच्। पद। चिह्न। निशान। बहाना। एकलाख। तीरका नशान.

लक्षक, (त्रि०) लक्षयति लक्षणया अर्थं। लक्ष्+ण्वुल्। लक्षणासे अर्थको जतानेहारा शब्द। जतानेवाला.

लक्षण, (न०) लक्ष्यतेऽनेन। लक्ष्+करणे ल्युट्। जिस्से जतलाया जाता है। "इतरभेदानुमापक चिह्न"। दूसरोंसे भेदको अनुमान करानेहारा निशान। जैसे पृथिवीका लक्षण "गंध" है वही पृथिवीको दूसरे (जलादि)से भिन्न करके जतला रहाहै। लक्षण दो प्रकारका है, स्वरूप और तटस्थ। चिह्न। नाम। लक्ष्मण। और सारस पक्षी (पु०)। "मुख्य अर्थके टूटनेपर जिस्से दूसरा अर्थ प्रतीत हो" लक्षणा (स्त्री०).

लक्षित, (त्रि०) लक्ष्+कर्मणि क्त। लक्षणसे बोधन कियाहुआ अर्थ। जानाहुआ। अनुमान कियाहुआ। लक्षणका आश्रय। निशान कियाहुआ.

लक्ष्मन्, (न०) लक्ष्+मनिन्। चिह्न। नशान। और प्रधान। स्वार्थे अण्। पृ०। सारस पक्षी। दशरथकी स्त्री सुमित्राका बडा पुत्र (पु०) चिट्टी कंडियारी। एक प्रकारकी औषध (स्त्री०).

लक्ष्मी, (स्त्री०) लक्ष्+ई-मुट्च। शोभा। कान्ति। विष्णुकी स्त्री। सम्पत्ति (दौलत)। फलिनी वृक्ष। हल्दी। मोती.

लक्ष्मीकान्त, (पु०) ६ त०। लक्ष्मीका पति। विष्णु। और राजा.

लक्ष्मीगृहम्, (न०) लक्ष्म्याः गृहम्। लक्ष्मीका घर। लाल कमलका फूल.

लक्ष्मीपति, (पु०) लक्ष्म्याः पतिः। लक्ष्मीका मालिक। विष्णु। राजा.

लक्ष्मीपुत्र, (पु०) ६ त०। कामदेव। एक गंधर्व। घोडा। और कुश.

लक्ष्मीपूजनम्, (न०) लक्ष्म्याः पूजनम्। लक्ष्मीकी पूजाका उत्सव (वधूके घर आनेपर वरसे किया जाता है) आश्विन (अस्सू) पूर्णिमाके दिन कीगई लक्ष्मीकी पूजा। यह पूजा प्रायः खजाञ्ची, सेठ, और बडे धनी लोगोंसे की जाती है जिनकी कार्यवाही वर्ष इसी दिन समाप्त होता है.

लक्ष्मीवत्, (पु०) लक्ष्मी (शोभा) अस्ति अस्य+मतुप्। मस्य वः। पनस। कटहरका वृक्ष। श्रीयुक्त (शोभावाला) (त्रि०).

लक्ष्मीवार, (पु०) लक्ष्म्याः वारः । लक्ष्मीका दिन बृहस्पतिवार.

लक्ष्मीश, (पु०) लक्ष्म्याः ईशः । लक्ष्मीका स्वामी । विष्णु । आमका वृक्ष । धनवान् वा भाग्यवान् पुरुष.

लक्ष्मीसहज, (पु०) लक्ष्म्या सह क्षीराब्धौ जायते । जन्+ड । जो लक्ष्मीके साथ क्षीरसमुद्रमें उत्पन्न होता है । चन्द्रमा । और उच्चैःश्रवस् (घोडा).

लक्ष्य, (न०) लक्ष्+यत् । वेधार्थोद्देश्यमानशरव्य । नशान लगानेके लायक । नशान । लक्षणाशक्तिसे समझनेलायक अर्थ । उद्देश्य । मतलब । जानेके लायक । अनुमान करनेलायक (त्रि०).

लक्ष्यक्रम, (पु०) लक्ष्यः क्रमः यस्य । एक प्रकारकी ध्वनि जिसका क्रम (नियम) परम्परासे प्रत्यक्ष होरहाहै.

लक्ष्यवेध, (पु०) लक्ष्यस्य वेधः=भेदः लक्ष्य (निशाना) का तोडना । निशाना लगाना.

लक्ष्यसुप्त, (त्रि०) लक्ष्यं सुप्तं यस्य । जो देखनेमें सोया हुआहै । झूठा सोना.

लग्, संग-लगना-मिलना । भ्वा० पर० सक० सेट् । लगति.

लगित, (त्रि०) लग्+क्त । संसक्त । मिलाहुआ । लगाहुआ.

लगुड, (ल) (र), (पु०) लग्+उलच् । लस्य डरौ वा । डण्डेके स्वरूपमें लकडीका बनाहुआ पदार्थ । लठ । लाठी.

लग्न, (न०) लस्ज्+क्त । तस्य नः । मेषआदि राशिओंका उदय । लज्जित (शर्मिंदाहुआ) (त्रि०) । लग्+क्त पृ० । संसक्त (लगाहुआ) (त्रि०) स्तुतिका पाठ करनेहारा । "लग्न इव" इवार्थे कन् । प्रतिभू । जामन.

लग्नवेला, कालः, मुहूर्तः, समयः (पु०) लग्नस्य वेला (स्त्री०) लग्न (ज्योतिःशास्त्रके अनुसार विवाह आदि किसीभी कृत्यमें शुभ) का समय (नियत किया हुआ समय).

लग्नशुद्धि, (स्त्री०) लग्नस्य शुद्धिः । किसी कामको करनेके लिये बारह-मेष आदि-राशिओंका शुभ अवसर देखना । लग्न (राशिओं) की शुद्धि.

लग्निका, (स्त्री०) लग्ना इव कन् । पृ० । अदृष्टरजस्का स्त्री । वह स्त्री कि जिसे अभीतक ऋतु नहिं आई.

लघ्, अभोजन (कुछ न खाना) सीमातिक्रमगति (सीमा लांघकर चलेजाना । भ्वा० आ० सक० सेट् । इदित् । लङ्घते अलङ्घिष्ट । "कल्लोलिनीवल्लभमुल्ललङ्घे" नाटकम्.

लघिमन्, (पु०) लघोर्भावः । इमनिच् । हलकापन । लघुत्व । लाघव (जिस्से ऊंचे गति होसके) । ईश्वरका एक प्रकारका ऐश्वर्य्य.

लघिष्ठ, (त्रि०) अतिशयेन लघुः+इष्ठन् । बहुतही हलका । "लघीयान्" इसी अर्थमें.

लघु, (त्रि०) लघि+कु । नि० नलोपः । शीघ्र (जल्दी) । काला अगुरु और वीरणमूल । निःसार (जिसमें सार कुछ नहिं) । हलके गुणवाला । और मनोहर (खूबसूरत) (त्रि०) । व्याकरणमें ह्रस्वनामवाला अकार आदि वर्ण (पु०).

लघुहस्त, (त्रि०) लघुः हस्तः यस्य । हलके हाथवाला । चतुर । चालाके तीर चलानेमें बडा लायक (चतुर).

लङ्का, (स्त्री०) लक्+अच्-मुमुच । इस नामकी पुरी (इसी पुरीमें रावण राक्षस रहता था).

लङ्काधिप, (पु०) ६ त० । लंकाका मालिक । रावण "लंकानाथ".

लङ्कास्थायिन्, (पु०) लंकायां तिष्ठति । स्था+णिनि । लंकासिज नामी वृक्ष । लंकावासी (लंकामें रहनेहारा) (त्रि०).

लङ्घन, (न०) लघि+ल्युट् । अभोजन । कुछ न खाना । फाका । लांघकर जाना । उछलना । कूदना । जाना । ऊपर चढना.

लछ्, चिह्नकरण-निशान लगाना । भ्वा० पर० सक० सेट् । लच्छति.

लज्, व्रीडा-शरम करना । भ्वा० आ० सक० सेट् । लजते । अलजिष्ट.

लज्, तिरस्कार-बे इज्जतकरना । भ्वा० प० स० सेट् । इदित् । लज्जति.

लज्, अन्तर्धान-छिपना । चुरा० उभ० सक० सेट् । लाजयति-ते.

लज्, भाषण (बोलना) । हिंसा (मारना) । और देना । सक० और वास (रहना) । अक० चुरा० सेट् । इदित् । लञ्जयति-ते.

लज्, भासन (चमकना) । चुरा० उभ० सक० सेट् । लजयति-ते.

लज्जा, (स्त्री०) लस्ज्+अ । मनोवृत्तिविशेष । शरम । लज्जालु वेल (लाजवंती).

लज्जालु, (स्त्री०) लस्ज+आलुच् । लताविशेष । लज्जावाला (शरम करनेवाला) (त्रि०).

लज्जाशील, (त्रि०) लज्जां शीलयति । शील्+अण् । लज्जाविशिष्ट । शरम करनेवाला.

लज्जित, (पु०) लज्जा जाता अस्य । तार० इतच् । जातलज्ज । जिसे शरम आई हो । शरमिंदाहुआ । व्रीडित । शरमिंदा.

लञ्ज, भासन (चमकना) । चुरा० उभ० अक० सेट् । लञ्जयति-ते.

लट्, बालभाव (बच्चेकी नाई काम करना) । बच्चेकी नाई बोलना । बकवास करना । चिल्लाना । भ्वा० पर० अक० सेट् । लटति.

लटपर्ण, (न०) लटं (दुष्टं) पर्णं अस्य । दारचीनी.

लटभ, (त्रि०) प्राकृतमें लडत है । मनोहर । सुन्दर । खूवसूरत आकर्षक.

लड्, विलास (खेलना, फेंकना । भ्वा० पर० अक० सेट् । लडति । अलाडीत्-अलडीत्.

लडह, (त्रि०) सुन्दर (खूव सूरत) । देखनेमें अच्छा (यह प्राकृत भाषाका शब्द है) "लटभ".

लड्डुक, (पु०) लड्+डु+स्वार्थे कन् । गोधूमचूर्ण (आटे) आदिसे वनीहूई एक प्रकारकी मिठाई । लड्डु.

लण्ड्, (पु०) लडि+रन् । लण्डननामसे प्रसिद्ध नगर.

लता, (स्त्री०) लत्+अच् । वेल । शाखा.

लतायष्टि, (स्त्री०) लतापि यष्टिरिव । मञ्जिष्ठा । मजीठ.

लतार्क, (पु०) लतया अर्क इव । हरितपलाण्डु । हराप्याज.

लप्, कथन (कहना) भ्वा० पर० द्विक० सेट् । लपति । अलापीत् । अलपीत्.

लपन, (न०) लप्यते (उच्यते) अनेन । लप्+करणे ल्युट् । जिस्से वोला जाता है । मुख । मूं । "भावे ल्युट्" कथन । कहना.

लपित, (त्रि०) लप्+कर्मणि क्त । कथित । कहागया । "भावे क्त" कहना (न०).

लबु, आलम्वन (पकडना-सहारादेना) । सक० । शब्द करना । अक० भ्वा० आ० सेट् । इदित् । लम्वते । अलम्बिष्ट.

लब्ध, (त्रि०) लभ्+कर्मणि क्त । प्राप्त । पाया । हासिल किया.

लब्धकीर्ति, (त्रि०) लब्धा कीर्तिः येन । यशको प्राप्त किया हुआ । यशस्वी.

लब्धनाश, (पु०) लब्धस्य नाशः । प्राप्त कीगई वस्तुका नष्ट होजाना.

लब्धप्रशमनम्, (न०) लब्धस्य प्रशमनम् । प्राप्त (पाया-हुआ) वस्तुका संरक्षण । मिलीहुई वस्तुको ध्यानसे वचायेरखाना.

लब्धवर्ण, (पु०) लब्धो वर्णो वर्णनं प्रशंसा ज्ञानवत्त्वेन वर्णनं येन (ज्ञानवान् होनेसे) जिसने प्रशंसालाभ की है । पण्डित.

लब्धविद्य, (त्रि०) लब्धा विद्या येन । लाभकी है विद्या जिसने । पण्डित । शिक्षित । दान्त.

लब्धसंज्ञ, (त्रि०) लब्धा संज्ञा येन-व.स. होश (चेतना) मे आया हुआ । जिसे सुध हो आई.

लब्धावकाश-अवसर, (त्रि०) लब्धः अवकाशः येन । जिसे अवकाश (मौका) मिलगया । किसीभी वस्तुको काममें लानेके लिये मौका पाया हुआ.

लब्धोदय, (त्रि०) लब्धः उदयः येन । जो निकल आया है । उत्पन्न हुआ.

लभ्, प्राप्ति (पाना) । सक० भ्वा० आ० अनिट् । लभते । अलब्ध.

लमक, (पु०) रम्+वुन् । रस्य लः । जार । यार । लम्पट । अग्याश.

लम्पट, (पु०) रम्+अटन्-पुकृच । रस्य लः । पराई स्त्रियों-में लालच करनेवाला । आसक्त । विषयमें डूवगया । (त्रि०).

लम्व, (पु०) लवि+अच् । नर्तक (नाचनेहारा) । कान्त (सुन्दर) । उत्कोच (रिश्वत-वड्डी) । अंकशास्त्रमें त्रिभुज आदि क्षेत्र । और भुजा एव काममें लटक रहा सूत । लंवा । लटकरहा (त्रि०).

लम्बकर्ण, (पु०) लम्वौ कर्णौ यस्य । जिसके कान लंवे है । छाग (वकरा) । हाथी । राक्षस । वाज पक्षी । और अंकोट वृक्ष । लंवे कानवाला (त्रि०) कर्म० । लंवाकान (पु०).

लम्बकेश, (त्रि०) लंवाः (दीर्घाः) केशाः यस्य । दीर्घ-केशाढ्य । लंवेवालोंवाला । कुशाका आसन (पु०) । कर्म० । लंवावाल.

लम्बपयोधरा, (स्त्री०) लम्वौ पयोधरौ यस्याः । वडे २ और लटक रहे स्तनों (कुचों) वाली स्त्री.

लम्बबीजा, (स्त्री०) लम्वं (दीर्घं) बीजं यस्याः । लंवेवी-जवाली । लंकामें उपजी । मच.

लम्बोदर, (पु०) लम्वं (दीर्घ) उदरं यस्य । जिसका लंवा पेट है । गणेशजी । तारानामवाली देवी (स्त्रियां ङीप्) । जिसका पेट मुशकिलसे भरता है (त्रि०).

लय, (गति) जाना । भ्वा० आ० सक० सेट् । लयते । अलयिष्ट.

लय, (पु०) ली+अच् । संश्लेष (-मिलना-मेल) । विनाश । नाच, गीत और वाजेका एक तानरूप साम्य (वरावरी) "लीयतेऽत्र" सम्पूर्ण भूतोंको क्षय करनेवाला प्रलयकाल । और ईश्वर.

लर्ब्, गति (जाना) भ्वा० पर० सक० सेट् । लर्वति.

लल्, इच्छा (चाहना) चुरा० उभ० सक० सेट् । लाल-यति-ते.

ललज्जिह्व, (पु०) ललन्ती (आस्वाद्यास्वादनाय) चरन्ती जिह्वा यस्य । स्वादलेनेके लिये हिलरही है जीभ जिसकी । कुत्ता । ऊंठ । हिंसा करनेवाला जीव । हिलरहीजीभवाला (त्रि०).

ललनाप्रिय, (पु०) ६ त० । स्त्रियोंका पियारा । कदम्बका दरख्त.

ललाट, (न०) लड्+अच् । डस्य लः । ललं अटति । अट्+अण् । जुल्फोंके नीचेका अंगविशेष । कपाल । माथा.

ललाटन्तप, (पु०) ललाटं तापयति । तप्+णिच्+खच्-ह्रस्वः । जो माथेको तपाता है । सूर्य । माथेको तपानेहारा (त्रि०).

ललाटपट्ट, (न०) ललाटं पट्टमिव विस्तीर्णं । पटडेकी नाईं फैलाहुआ माथा । प्रशस्त ललाट । अच्छा माथा । "ललाटफलक".

ललाटरे(ले)खा, (स्त्री०) ललाटस्य रेखा । माथेकी रेखा (लकीर) । वलिओं (चर्मसंकोच)वाले भौंकी रेखा । माथेपर लगाया गया चंदन आदिके तिलककी रेखा.

ललाटिका, (स्त्री०) ललाटे आवध्यते+ठन् । माथेपर बांधा जाता है । ललाटभूषण । माथेका गहना । माथेका नशान.

ललाम, (न०) लल्+अच् । तं अमति । अम्+अण् । प्रधान । सुन्दर । ध्वज (झण्डा) । सींग । पूछ । चिह्न (नशान) । और भूषा (सजावट) । घोटक (घोडा) (पु०).

ललित, (न०) लल्+क्त । शृङ्गारकी चेष्टा । एक प्रकारका स्वर (पु०) । सुन्दर । चाहागया (त्रि०).

ललितासप्तमी, (स्त्री०) भादोंके शुक्लपक्षकी सप्तमी । उस दिन करनेलायक एक प्रकारका व्रत.

लव, (पु०) लू+अप् । लेश (जरासा हिस्सा) । विनाश । छेदन (काटना) श्रीरामचन्द्रका पुत्र । एक समयका परिमाण । गौकी पूंछके रोआँ.

लवङ्ग, (न०) लू+अङ्गच् । अपनेनामका वृक्ष । लौंग.

लवण, (न०) ल्युट् । पृ० । णत्वम् । एक प्रकारका रस (सलूना) । उसकी उत्पत्तिका स्थान सिंधुदेश । समुद्र । और मधुदैत्यका पुत्र एक दैत्य (पु०) । सलूने रसवाला और बडा खूबसूरत (त्रि०).

लवणक्षार, (पु०) लवणमयः क्षारः । सलूने रसवाला । खार.

लवित्र, (न०) लूयतेऽनेन । लू+इत्र । जिस्से काटते हैं । दात्री । चक्कु.

लष्, स्पृहा (चाहना) दिवा० और भ्वा० उभ० सक० सेट् । लष्यति-ते । लषति-ते । अलषीत् । अलाषीत् । अलषिष्ट.

लस्ज्, व्रीडा (शरम करना) भ्वा० आ० अक० सेट् । लज्जते । अलज्जिष्ट । लग्नः.

लहरि, (री) (स्त्री०) लेन (इ द्रेणेव) ह्रियते ऊर्ध्वंगमनाय । हृ+कर्मणि इन्-वा ङीप् । महातरंग । बडी लहर.

ला, आदान (पकडना-लेना) । अदा० पर० सक० अनिट् । लाति । अलासीत्.

लाक्षणिक, (त्रि०) लक्षणया बोधयति+ठक् । लक्षणासे अर्थको जतानेहारा शब्द । "अस्ति अर्थे ठन्" स्वार्थे अण् । लक्षणयुक्त । लक्षणवाला । निशानवाला । दूसरे अर्थवाला जिसका "वाच्यसे" भिन्न अर्थ हो.

लाक्षण्य, (त्रि०) लक्षणं वेत्ति+ञ्य । शुभाशुभलक्षणज्ञ । भले वा बुरे लक्षणको जाननेहारा । अस्ति अर्थे ष्यञ्, यत् वा । लक्षणवाला.

लाक्षा, (स्त्री०) लक्ष्यतेऽनया । लक्ष्+अ । पृ० वृद्धिः । जिस्से पहिचाना जाय । लाखनामी पदार्थ.

लाक्षारस, (पु०) लाक्षानिःसृतो रसः (द्रवः) । लाखसे निकलाहुआ रस । अलक्तक रस । लाक्षाराग । लाखका रंग.

लाख्, शोष (सुकाना) सजाना । देना । और हटाना । सक० । सामर्थ्य (सकना-लायक होना) । अक० भ्वा० पर० सेट् । लाखति । अलाखीत्.

लाघव, (न०) लघोर्भावः+अण् । लघुत्व । हलकापन । आरोग्य । तन्दुरुस्ती.

लाङ्गल, (न०) लगि=कलच् । पृ० वृद्धिः । पृथिवीको खेंचनेवाला पदार्थ । हल.

लाङ्गलदण्ड, (पु०) ६ त० । "हल" के बीचमें लकडीका डण्डा.

लाङ्गलपद्धति, (स्त्री०) लाङ्गलखाता पद्धतिः (रेखा) "हल" से खोदीगई लकीर (डण्डी) । सीता । "हल" से खोदेगये खेतमें जमीनकी रेखा (लकीर).

लाङ्गलिन्, (पु०) लाङ्गलं (प्रहरणसाधनत्वेन) अस्ति अस्य+इनि । जिसके पास चोट करनेका साधन "हल" है । बलराम । "लाङ्गलदण्ड इव दीर्घः आकारः अस्ति अस्य इनि" । "हल"के डण्डेकी नांई जिसका स्वरूप लंबा है । नारिकेल । नरेलका दरख्त.

लाङ्गलीषा, (स्त्री०) लाङ्गल ईष । हलका यष्टि । डण्डा.

लाङ्गूल, (न०) लगि+ऊलच् । पृ० । पशुओंके पीछे रहनेवाला रोआँका गुच्छा । पूंछ.

लाङ्गूलिन्, (पु०) लाङ्गूलं अस्ति अस्य+इनि । पूंछवाला । वानर (वंदर) । उस स्वरूपके फूलवाला ऋषभ औषध.

लाछ्, अङ्कन (नशान लगाना) भ्वा० पर० स० सेट् । इदित् । लाञ्छति । अलाञ्छीत्.

लाज्, भर्त्सन (झिडकना) । भ्वा० पर० स० सेट् । लाजति । अलाजीत् । "इदित्" लाञ्जति । अलाञ्जीत्.

लाज, (पु०) लाज्+अच् । गीला धान ।-जाः (बहुवचन) भुना हुआ धान (फुलिआं) (स्त्रीलिङ्गमें भी प्रयुक्त होता है).

लाञ्छन, (न०) लाञ्छयते । लाछि+कर्मणि ल्युट् । चिह्न । नशान और नाम । "भावे ल्युट्" "अङ्कन" नशान लगाना.

लाञ्छित, (त्रि०) लाञ्छ+क्त चिन्हित । निशान लगाया गया । पहिचाना गया । नाम लिया गया । पुकारा गया । भूषित.

लाट, (पु०) लट्-संज्ञायां घञ् । एकदेश । वस्त्र (कपडा) । पुराना जेवर । और चतुरपुरुष.

लाटानुप्रास, (पु०) लाटस्य (विदग्धस्य) प्रियः । चतुरका प्यारा । अलंकारमें शब्दसम्बन्धी एक अलंकार.

लाभ, (पु०) लभ्यते । लभ्+कर्मणि घञ् । मूलधनसे अधिक मिलाहुआ धन । ब्याज । सूद । नफा । फायदा । "भावे घञ्" । पाना.

लाभलिप्सा, (स्त्री०) लाभं लब्धुं इच्छा । लाभ (नफा)-को प्राप्त करनेकी इच्छा (खाहिश).

लालन, (न०) लल्-ल्युट् । स्नेहपूर्वक पालन । प्रेमके साथ पालना (बचाना) । लाड लडाना.

लालसा, (स्त्री०) लस्-(चाहना) +यङ्+अ । अतिशयेच्छा । बहुत चाह । गर्भिणीदोहद । गर्भवाली स्त्रीकी इच्छा । गर्भका चिह्न.

लाला, (स्त्री०) लल्+अ-टाप् । मुखसे निकलेहुए पानीकी बूंद । लार.

लालाटिक, (पु०) ललाटं (प्रभोर्भाग्यं) पश्यति+ठञ् । प्रभुके भाग्यपर जीनेवाला । काम न करसकनेवाला । "ललाटात् (ललाटस्थभाग्यात्) आगतः-तस्येदं वा+ठण्" माथेकी किस्मतसे मिला । भाग्याधीन (किस्मतके आधीन हुआ) (त्रि०) । "प्रासिषु लालाटिकी" इत्युद्भटः । माथेके लेखका भरोसा रखनेवाला (त्रि०).

लालित्य, (न०) ललितस्य भावः+ष्यञ् । सौन्दर्य । खूबसूरती । मनोहरता । "नैषधे पदलालित्यं" इत्युद्भटः.

लाव, (पु०) लू+कर्तरि घञ् । एक प्रकारका पक्षी । "स्वार्थे कन्" वही अर्थ । "भावे घञ्" छेदन (काटना) । तोडना । नाशकरना.

लावण, (न०) लवणे संस्कृतं+अण् । लवण (नोन वा लून) में संस्कार (साफ) कीगई औषध आदि । निमकीन । लूनका.

लावणिक, (न०) लवणे संस्कृतं+ठण् । लवण (लून) में संस्कार कियागया औषध (दवाई) आदि । निमकीन । "लवणं पण्यं अस्य+ठण्" । एक प्रकारका बनिआं (व्यापारी) जो लून वेचकर जीता है । निमक वेचनेवाला । हरएक प्रकारका लवण । निमक.

पद्म० ५४

लावण्य, (न०) लवणस्य भावः+ष्यञ् । लवणत्व । सलोनापन । सौन्दर्यविशेष (एक प्रकारकी खूब सूरती) । शरीरका वह सौन्दर्य मानों मोतिओंके ढेरकी चंचल छाया है.

लावण्यार्जितम्, (न०) लावण्येन अर्जितम् । स्त्रीधन जो विवाहके समय उसे मातापिता वा सशुर आदिसे दहेजमें मिला है (स्त्रीका गुप्तधन).

लासिका, (स्त्री०) लस्+ण्वुल् । नर्तकी (नाचनेवाली) । "लासका".

लास्य, (न०) लस्+ण्यत् । नृत्य । नाच । बाजा, नाच और गीत । स्त्रिओंका नाच । "स्वार्थे कन्" वही अर्थ.

लिकुच, (पु०) लकुच+पृ०-इत्वं । मन्दारवृक्ष.

लिक्षा-का, (स्त्री०), लक्ष्+अ । पृ० वा इत्वं वाक्कन्च । यूकाण्ड (जूंका अंडा) । सूर्यके झरोखेमें जानेपर जो रज (धूर) नजर आताहै-उन चारोंकी एक "लिक्षा" होती है । एक प्रकारका माप.

लिख्, लेखन (लिखना) तुदा० पर० सक० सेट् । लिखति.

लिखन, (न०) लिख्+ल्युट् । लेखन । लिखना । लिपि । लेख.

लिखित, (न०) लिख्+भावे क्त । लेखन । लिखना । "आधारे क्त" । लिपि । दस्तखत । विवाद । झगडा । अर्थको सिद्ध करनेवाला पत्र आदि । लिखाहुआ इकरारनामा आदि । एक मुनिका नाम.

लिग्, जाना (गति) । भ्वा० पर० सक० सेट् । इदित् । लिङ्गति.

लिङ्ग, (पु०) लिगि+अच् । चिह्न (नशान) । पुरुषका असाधारण (खास) चिह्न । अनुमानको सिद्ध करनेवाला हेतु । सांख्यमें कहाहुआ प्रधान । शिवजीकी एक मूर्ति । शिवलिङ्ग । व्याप्य (जो थोडे देशमें रहे) । व्यक्त । प्रकट । शब्दमें रहनेहारा । पदके ठीक होनेको दिखानेहारा एक धर्म । अर्थके प्रकाश करनेकी सामर्थ्य (शक्ति).

लिङ्गपरामर्श, (पु०) लिङ्गस्य परामर्शः । न्यायशास्त्रमें लिङ्ग (साधन-चिन्ह) का विचार । जैसा कि "धूम" अग्निका लिङ्ग है.

लिङ्गवर्धिनी, (स्त्री०) लिङ्गं पुरुषचिह्नमेदं वर्धयति । वृध्+णिच्+णिनि । जो पुरुषके चिह्नको बढादे । अपामार्ग.

लिङ्गविपर्यय, (पु०) लिङ्गस्य विपर्ययः । लिङ्गका बदलना.

लिङ्गवृत्ति, (पु०) लिङ्गं (संन्यासादिवेषधारणं) एव वृत्तिः (जीविका) यस्य । जीविकाके लिये संन्यासके चिह्नको धारण करनेहारा । कपटी संन्यासी.

लिङ्गानुशासनम्, (न०) लिङ्गं अनुशास्यते अनेन । व्याकरणके लिङ्गविभागका उपदेश करनेवाला पाणिनिरचित एक पुस्तक.

लिङ्गार्चनम्, (न०) लिङ्गस्य अर्चनम् । लिङ्गके स्वरूपमें शिवकी पूजा.

लिङ्गिन्, (त्रि०) लिङ्गं अस्ति अस्य+इनि । चिह्नवाला । नशानवाला । जीविकाके लिये संन्यासआदि नशानवाला । अच्छे नशानवाला हाथी (पु०).

लिप्, लेपन (लीपना) । तुदा० उभ० सक० अनिट् । लिम्पति-ते । अलिपत् । अलिपत-अलिप्त.

लिपि-पी, (स्त्री०) लिप्+इक-वा ङीप् । लिखेहुए अक्षरोंवाला पत्र (दस्तखत) । लेखन । लिखना.

लिपिक(का)र, (पु०) लिपिं करोति । कृ+अच्-अण् वा लेखको कर्ता है । लेखक । लिखनेवाला.

लिपि फलकम्, (न०) लिपेः फलकम् । लिखनेका पटवाडा, बोर्ड वा पट्टी.

लिप्त, (त्रि०) लिप्+क्त । भुक्त । भोगागया । चंदनआदि लेप कियाहुआ । मिलाहुआ । विषसे लिपटाहुआ । एक कला (राशिका साठवां हिस्सा) । दण्डकस्वरूप काल (पु०) "स्वार्थे कन्".

लिप्तक, (पु०) कुत्सितं लिप्तं+कन् । विषसे लिपटाहुआ तीर.

लिप्सा, (स्त्री०) लभ्+सन्+अ । लाभकी इच्छा । चाह ।

लिह्, आस्वादन (चाटना) । अदा० उभ० सक० अनिट् । लेढि-लीढे । अलिक्षत्-अलिक्षत.

ली, श्लेष (मिलना-जुडना) । दिवा० आ० अक० अनिट् । लीयते । अलेष्ट । लीनः.

लीढ, (स्त्री०) लिह्+क्त । आस्वादित । स्वादलियागया । चाटागया । स्पृष्ट । छूआहुआ.

लीन, (त्रि०) ली+क्त । लागा हुआ । घसा हुआ । फसा हुआ । छिपा हुआ.

लीला, (स्त्री०) ली+क्विप् । लियं लाति+अच् । केलि । क्रीडा । विलास । शृङ्गारआदिकी चेष्टा । भोगविलास.

लीलावतार, (पु०) लीलायै अवतारः+क्रीडा (खेल) के लिये विष्णुका पृथिवीपर (अपनी मायासे) उतरना.

लीलावती, (स्त्री०) लीला+अस्त्यर्थे मतुप् मस्य वः । विलास करनेवाली स्त्री । भास्कराचार्यकी पुत्री । उसका बनायाहुआ एक अंकशास्त्र (हिसाब) का ग्रंथ । न्यायशास्त्रमें प्रसिद्ध पदार्थोंको प्रतिपादन करनेवाला एक ग्रंथ । पुराणमें प्रसिद्ध एक वेश्या (कंजरी).

लीलोद्यान, (न०) लीलार्थं उद्यानम् । भोगविलास करनेके लिये एक आराम (बाग) । देवताका वन.

लुकायित, (त्रि०) लुच्यते । लुञ्च्-अपनयन । (दूर लेजाना)+क्विप् । लुक् कायो यस्य-तादृश इव आचरति । लुक् य+क्विप्+क्त । अन्तर्हित देह । जिसने अपने शरीरको छिपा लियाहो । छिपाहुआ गुप्त देह.

लुञ्च, अपनयन (तोडना-उखाडना-पट्टना) । परेलेजाना । लुञ्चति । अलुञ्चीत्.

लुञ्चित, (त्रि०) लुञ्च्+णिच्+क्त । अपसारित । हटालियागया । दूरीकृत । दूर कियागया । तोडागया.

लुट्, दीप्ति (चमकना) अक० । चोट करना । सक० भ्वा० आ० सेट् । लोटते । अलुटत्-अलोटिष्ट.

लुठ्, लोट (पृथिवीपर लोटना) । तु० प० अ० सेट् । लुठति । अलुठीत्.

लुठ्, (चौर्य) चोरी करना । चु० । उभ० सक० सेट् । लोठयति-ते.

लुठन, (न०) लुठ्+ल्युट् । श्रम (थकेवां) दूर करनेके लिये घोडेका पृथिवीपर लोटना.

लुण्टक, (त्रि०) लुटि+कन् । लूटनेवाला । चोर.

लुण्टाक, (त्रि०) लुटि+काकन् । लूटनेवाला । चोर.

लुण्ठक, (त्रि०) लुठि+ण्वुल् । चोर.

लुप्, (छेदन) काटना । विनाशकरना । तु० उ० स० । अनिट् । लुम्पति-ते । अलुपत्-अलुप्त.

लुप्त, (न०) लुप्+क्त । अपहृतधन । जिसका धन चुराया गयाहो । नष्ट । बर्बाद होगया । छिपगया । टूटगया (त्रि०).

लुब्ध, (पु०) लुभ्+क्त । व्याध । शिकारी । "स्वार्थे कन्" वही अर्थ । लम्पट । विषयोंमें डूबगया । और लोलुप । लोभी.

लुभ्, विमोहन (घबराजाना) । तु० पर० अक० सेट् लुभति । अलोभीत्.

लुभ्, आकाङ्क्षा (चाहाना) दिवा० पर० स० सेट् । लुभ्यति.

लुलाप (य), (पु०) लुल्+क । तं आप्नोति+अण् । महिष । भैंसा.

लुलित, (त्रि०) लुल्+क्त । आन्दोलित । हिलायागया । चलायाहुआ.

लुष्, चोरीकरना । मारना । भ्वा० पर० स० सेट् । लोषति । अलोषीत्.

लू, छेदन (काटना) क्र्या० उभ० सक० सेट् । लुनाति-लुनीते । अलावीत्.

लूता, (स्त्री०) लू+तक् । एक प्रकारका कीडा । मकडी.

लून, (त्रि०) लू+क्त । तस्य नः । छिन्न । काटागया । कटाहुआ.

लूम, (न०) लू+मक् । लाङ्गूल । पूछ । पूंछ.

लेख, (पु०) लिख्यते चित्रादि पटेऽसौ । लिख्+कर्मणि घञ् । जो मूर्ति लिखनेवाले कपडे आदिपर लिखा-जाता है । देवता । "भावे घञ्" लेखन (लिखना) । "कर्मणि घञ्" लेख्य (लिखनेलायक) (त्रि०) "आधारे घञ्" । पत्र । लिपि । दस्तखत । "निर्धारितेर्थे लेखेन" माघः.

लेखक, (पु०) लिख्+ण्वुल्। लिपिकर। लिखनेवाला। लिखारु.

लेखन, (न०) लिख्+ल्युट्। पत्र आदिपर अक्षरोंका लिखना। "आधारे ल्युट्" भोजपत्र। "लिख्यतेऽनया ल्युट्" लिखनेका साधन। (स्त्रियां ङीप्) लिक्खन (लेखनी)। कलम.

लेखनिक, (पु०) लेखनं शिल्पं अस्य+ठन्। लिपिकर। लिखनेवाला। लिखारी.

लेखर्षभ, (पु०) लेख ऋषभ इव (श्रेष्ठत्वात्)। देवताओंमें श्रेष्ठ। इन्द्र। देवताओंका राजा.

लेखहार, (पु०) लेखं हरति। हृ+अण्। पत्रवाहक। चिट्ठी लेजानेवाला। "ण्वुल्" "लेखहारक".

लेख्य, (त्रि०) लिख्+ण्यत्। लेखनीय। लिखनेलायक। व्यवहारमें अपने स्वत्व (कब्जे) को जतानेहारा एक प्रकारका पत्र (न०).

लेप, (पु०) लिप्-लेप वा घञ्। भोजन। खाना। और लीपना। "कर्मणि घञ्"। सुधा। कलिचूना.

लेपक, (पु०) लिम्पति। लिप्+ण्वुल्। लेपकर। राजा। मिस्तरी। कहगल करनेवाला.

लेलिहान, (पु०) लिह्+यङ् कानच्-पृ०यलोपः। सांप। वार २ चाटनेवाला.

लेश, (पु०) लिश्-अल्पीभाव (थोडाहोना)। अल्प। थोडा। लव। टुकडा.

लेह, (पु०) लिह्+घञ्। आहार। खाना। आस्वाद। चाटना.

लेहिन, (पु०) लिह्+इनन्। टङ्कण (सुहागा).

लेह्य, (त्रि०) लिह्+ण्यत्। चाटनेलायक। अमृत (न०).

लैङ्ग, (न०) लिङ्गं अधिकृत्य कृतो ग्रन्थः+अण्। अठारह पुराणोंमेंसे तीसरा पुराण। लिङ्गनी वृक्ष। लिंगका.

लोक्, दर्शन (देखना)। भ्वा० आ० सक० सेट्। लोकते। अलोकिष्ट.

लोक, (न०) लोक्यतेऽसौ। लोक्+घञ्। भुवन। दुनियां। जन। लोग.

लोकपाल, (पु०) लोकान् पालयति। पा+णिच्-अण्। लोकपालक। नृप। लोककी रक्षा करनेवाला राजा। इन्द्र आदि दिशाओंको पालन करनेवाला। विनायक आदि पाँच। लोककी रक्षा करनेवाला (त्रि०)। "लोकनाथ".

लोकबान्धव, (पु०) लोकानां बान्धवः (सर्वकर्मप्रवर्तकत्वात्)। सम्पूर्ण लोकोंका बंधु (सब काममें प्रवृत्ति करानेसे)। सूर्य। सूरज.

लोकबाह्य, (त्रि०) बहिश्चरति। बहिस्+ष्यञ्। ५ त०। लोकसे बाहिरहुआ.

लोकमातृ, (स्त्री०) लोकानां मातेव रक्षिका। लोकोंकी माताकी नाईं रक्षाकरनेवाली लक्ष्मी.

लोकयात्रा, (स्त्री०) लोकस्य यात्रा। लोकव्यवहार। लोकसत्ता। जीवनका आश्रय। जीविका (रोजी).

लोकलोचन, (पु०) लोकैर्लोच्यतेऽनेन। लुच्+ण्वुल्। लोक देखते हैं इस्से। सूर्य। ६ त०। सूर्य (म०).

लोकविद्विष्ट, (त्रि०) लोकेन विद्विष्टः। लोकसे द्वेष किया गया। लोगोंसे न चाहा गया। दुनियांके लोगोंसे नापसंद.

लोकायत, (न०) लोकेषु आयतं (विस्तीर्णं) अनायाससाध्यत्वात्। लोकोंमें फैलगया (विना दुःखकें सिद्ध हो जानेसे)। चार्वाकमत.

लोकायतिक, (पु०) लोकायतं (तन्मतं) अस्ति अस्य+ठन्। जिसका मत लोकायत है। चार्वाक (नास्तिक).

लोकालोक, (पु०) लोक्यतेऽसौ लोकः, न लोक्यतेऽसौ। कर्म०। जो देखा और नहीं देखाजाता। इस नामका पर्वत। इसके एक ओर आतप (प्रकाश) और दूसरी ओर अनातप (अंधेरा) होता है.

लोकेश, (पु०) ६ त०। लोकका स्वामी। ब्रह्मा। राजा। और पारा.

लोच, दर्शन (देखना)। भ्वा०। आ० स० सेट्। लोचते। अलोचिष्ट.

लोचक, (न०) लोच्+ण्वुल्। मांसका गोला। आंखकी पुतली। कज्जल। स्त्रियोंके माथेका भूषण (जेवर)। नीला कपडा। केला। सांपकी केंचुली.

लोचन, (न०) लोच्यतेऽनेन। करणे ल्युट्। जिस्से देखा जाता है। नेत्र (आंख)। "भावे ल्युट्" देखना.

लोध्र, (पु०) रुध्+रन्। रस्य लः। लोध नामी दरख्त.

लोप, (पु०) लुप्+घञ्। विनाश। छिपना। काटना। घबराहट। व्याकरणमें अदर्शन (न दीखना) रूपनाश। "लोपयति स्त्रीणां रूपगर्वं अच्"। जो स्त्रियोंके रूपसम्बन्धी अभिमानको नाश कर्ता है। अगस्त्यमुनिकी पत्नी (स्त्री) (स्त्री०)। "लोपामुद्रा" (इसे अगस्त्यजीने आपही कईएक पशुओंके बहुतही सुन्दर अंगोंसे बनाया और विदर्भ राजाके महलमें जारक्खा-पीछे विवाह किया).

लोप्त्र, (न०) लुप्+ष्ट्रन्। लूट स्तेयधन (चोरीका माल) स्त्रियां ङीष्.

लोभ, (पु०) लुभ्-चाहना+घञ्। दूसरेके पदार्थमें बहुतही अभिलाष। लालच.

लोभविरह, (पु०) लोभस्य विरहः। लोभका विछोडा। लालचका न होना.

लोभिन्, (त्रि०) लुभ्+णिनि । दूसरेके द्रव्योंमें बहुत तृष्णावाला । लालची.

लोभ्य, (पु०) लुभ्+यत् । मुद्ग । मूंग । लालचके लायक पदार्थ (त्रि०).

लोम, (न०) लू+मन् । शरीरपर उत्पन्नहुआ वालोंके स्वरूपका रोआँ नाम द्रव्य । उसवाला पूंछ.

लोमकर्ण, (पु०) लोमबहुलौ कर्णौ यस्य । जिसके कान बहुतरोआँवाले हैं । शशक । सहा.

लोमकूप, (पु०) लोम्नां कूप इव । रोआंका मानो खूआ है । रोआंका आश्रय विन्दुका स्वरूप । गर्त । रोआं । सुराख.

लोमघ्न, (न०) लोमानि हन्ति । हन्+टक् । रोआँको नाश कर्ता है । एक प्रकारका रोग (टाक).

लोमपाद, (पु०) लोमयुक्तौ पादौ अस्य । जिसके पाँव रोआँवाले हैं । अंगदेशका एक राजा.

लोमश, (पु०) लोमानि वाहुल्येन सन्ति अस्य+श । जिसके शरीरपर बहुत रोम हैं । एकमुनि । रोआँवाला (त्रि०).

लोमहर्षण, (न०) लोम्नां हर्षणं हर्षजनकव्यापार इव उद्भेद इति यावत् । रोआँका खुश होना (प्रकट होना-निकलना) रोमाञ्च (रोआंका खडेहोना) । "लोमानि हर्षयति उत्तमकथया" "हृष्+णिच्+ल्यु" । जो अच्छी कथासे रोमोंको खुश कर्ता है । व्यासदेवका शिष्य (चेला) । सूतके वंशमें हुआ इस नामका पौराणिक.

लोल, (त्रि०) लोड्+अच् । डस्य लः । सतृष्ण । लालची और चञ्चल । जिह्वा (जीभ) । और लक्ष्मी (स्त्री०).

लोलजिह्व, (त्रि०) लोला जिह्वा यस्य । चञ्चल (हिलनेवाली) जीभवाला । लालची । लोभी.

लोलाक्षि, (न०) लोलं अक्षि । चञ्चल नेत्र (आंख) । हिलनेवाली आंख । अक्षिका (स्त्री०) चञ्चल नेत्रोंवाली स्त्री (औरत).

लोलुप, (त्रि०) लुभ्+यङ्+अच्-पृ० भस्य वा-पः । अतिलोभयुक्त । बहुत लालचवाला.

लोष्ट्, संहति, (इकट्ठा होना) भ्वा० आ० सक० सेट् । लोष्टते । अलोष्टिष्ट.

लोष्ट, (पु० न०) लोष्ट्+घञ् वा । मृत्पिण्ड । मट्टीका डेला । डीम । ढेला । और लोहेकी मैल । लौहमल.

लोष्टघ्न, (पु०) लोष्टं हन्ति (मर्दयति) हन्+क । ढेलेको तोडनेवाला मुद्गर आदि.

लोह, (पु० न०) लू+विच् । लौस्तं जहाति । हा+कं । एकप्रकारका धातु । लोहा । अगुरुचंदन (न०).

लोहकार, (पु०) लोहं (तन्मयं शस्त्रादि) करोति । कृ+अण् । जो लोहेके शस्त्र आदि बनाता है । लुहार.

लोहकिट्ट, (न०) ६ त० । लोहेका मैल.

लोहद्राविन्, (पु०) लोहानि (धातुद्रव्याणि) द्रावयति द्रु+णिच्+णिनि । जो धातुरूप द्रव्योंको पिघलादेता है । सोहागा.

लोहित, (न०) रुह्+इतच् । रस्य लः । केसर । लालचंदन और रुधिर (लोहू) । लाल सुहांजना । लालरंग । (पु०) । उसवाला (त्रि०).

लोहितग्रीव, (पु०) लोहिता ग्रीवा यस्य । लालगर्दन-कण्ठवाला । अग्निदेवताका नाम.

लोहिताक्ष, (पु०) लोहिते अक्षिणी यस्य । षच् समा० । जिसकी लाल आँखें हैं । विष्णु । और कोकिल (कोइल) । लाल आँखवाला (त्रि०).

लोहिताङ्ग, (पु०) लोहितं अङ्गं अस्य । लालशरीरवाला । मंगलग्रह । काम्पिल्ल वृक्ष.

लोहितायस, (पु०) लोहितं अयः+अच् समा० । लाल लोहा । ताम्र । तामा । एक प्रकारका लाल लोहा.

लोहिनी, (स्त्री०) लोहितवर्णा । स्त्रियां ङीप् । "त" को "न" होता है । लालरंगवाली स्त्री (औरत).

लोहोत्तम, (न०) लोहेषु (धातुषु) उत्तमं । धातुओंमें उत्तम । स्वर्ण । सोना.

लौकायतिक, (न०) लोकायतं (चार्वाकशास्त्रं) वेत्ति अधीते वा+ठण् । चार्वाकमतको जाननेहारा । नास्तिकमतका ज्ञाता.

लौकिक, (त्रि०) लोके विदितः (प्रसिद्धो) वा+ठण् । लोकमें जानाहुआ वा मशहूर । लोकविदित । लोकप्रसिद्ध.

लौकिकज्ञ, (त्रि०) लौकिकं जानाति+ज्ञा+क-अ । संसारके व्यवहारोंको जाननेहारा । लौकिक रीत रसमको जाननेहारा.

लौकिकाग्नि, (पु०) कर्म० । विधिसे न संस्कार कीगई आग.

लौड्, उन्माद (पागल होना) भ्वा० । पर० सक० सेट् । लौडति.

लौह, (पु०) लोहं एव । स्वार्थेऽण् । लोहा । एक धातु.

लौहज, (न०) लौहात् जायते । जन्+ड । लोहेसे उपजता है । मण्डूर.

लौहभाण्ड, (पु०) लोहस्य विकारः+अण् । कर्म० । हमाम दस्ता । चट्टू । लोहेका पात्र (वर्तन).

लौहित्य, (न०) लोहितस्य भावः+ष्यञ्+स्वार्थे ष्यञ् वा । रक्तवर्ण । लालरंग । एक नदी (स्त्री०) । "तीर्णलौहित्ये" रघुः.

ल्यी, (श्लेष) मिलना । क्र्या० पर० सक० अनिट् । ल्यनाति । अल्यैषीत्.

ल्वी, (गति) जाना । क्र्या० पर० सक० अनिट् । ल्विनाति । अल्वैषीत्.

व

व, (पु०) वा+ड । वायु (हवा) । राहु । मन्त्रण (सलाह) । सान्त्वन (तसल्ली) । कल्याण (भलाई) । बलवाला । समुद्र । व्याघ्र (भेडिया) । वसन (कपडा) । और वंदना करना । वरुण (पु० न०) । सादृश्यअर्थमें (अव्य०) "मणीवोष्ट्रस्य लम्बेते" इति.

वंश, वश्+घ । नि०नुम् । पुत्रपौत्रआदि सन्तानका समूह । एक प्रकारका तृण । वांस । पीठका अवयव (हिस्सा) । इक्षु (गन्ना) । और सालवृक्ष । एक प्रकारका बाजा (स्त्रियां डीष्) । "वंशीकलेन वडिशेन" इति वृन्दावनचम्पूः.

वंशकर, (त्रि०) वंशं करोति । वंश (खान्दान) के चलनेवाला । वंशप्रवर्तक.

वंशकर्पूररोचना, (स्त्री०) कर्पूरं इव रोचते । रुच्+ल्यु । ६ त० । वंशरोचना । वंसलोचन । कपूरकी नाई सुगंधिवाला.

वंशज, (पु०) वंशात् जायते । जन्+ड । वांसके वृक्षसे उत्पन्नहुआ जौंके स्वरूपका एक पदार्थ । अच्छे कुलमें उत्पन्नहुआ (त्रि०) । वंशरोचना (स्त्रियां टाप्).

वंशतण्डुल, (पु०) ६ त० । वांससे उपजा चावलोंके स्वरूपका पदार्थ । वांसके चावल.

वंशधर, (त्रि०) वंशं धरति । वंशको पकडता है । कुलको चलानेवाला । "वंशवर्धन" इसी अर्थमें.

वंशशर्करा, (स्त्री०) वंशस्य शर्करेव । वांसकी मानो खाँड है । वंशलोचनपदार्थ । तवाशीर.

वंशस्थविल, (न०) बारह अक्षरके पादवाला एक प्रकारका छन्द.

वंशाग्र, (न०) वंशस्य अग्रं (मूलं) । वंशकी जड । कुलमें पहिला.

वंशीधर, (पु०) वंशी (वंशजवाद्यं) धरति । धृ+अच् । वंसरीबजानेवाला । श्रीकृष्णजी.

वंश्य, (त्रि०) वंशे (सत्कुले) जातः । अच्छे कुलमें उपजा । खान्दानी.

वक्, कौटिल्य (कुटिल होना) । तिर्च्छा होना । अक० । जाना (गति) । सक० भ्वा० आ० सेट् । इदित् । वंकते । अवंकिष्ट.

वक, (पु०) वकि+अच् । पृ० "न" का लोप होता है । इस नामका पक्षी । बगला । एक फूलोंवाला द्रख्त । कुबेर । एक राक्षस (जिसे भीमसेनने मारा था) एक प्रकारकी दवाई काढनेकी कला । श्रीकृष्णसे मारागया एक दैत्य.

वकपञ्चक, (न०) कार्तिक (कत्तक) के शुक्लपक्षकी एकादशीसे लेकर पांच तिथियें.

वकवृत्ति, (पु०) वक इव स्वार्थपरा वृत्तिश्चेष्टा यस्य । जिसकी चेष्टा बगलेकी नाई अपने मतलबको सिद्ध करनेहारी है । दूसरेको ठगनेवाला जीव.

वकव्रतिन्, (क), (पु०) वकव्रत+अस्त्यर्थे इनि ठन् वा । बगलेके व्रतको धारण करनेहारा । वकव्रतधर.

वकुल, (पु०) वकि+कुलच् । नलोपः । इस नामका फूलोंवाला वृक्ष.

वक्क्, (गति) जाना । भ्वा० आ० सक० सेट् । वक्कते । अवक्किष्ट.

वक्तव्य, (न०) वच्+तव्य । कुत्सित । निन्दित । हीन । और दुष्ट । कथनीय । कहनेलायक (त्रि०) "भावे क्त" कथन (कहना) (न०).

वक्तृ, (त्रि०) उचितं बहु वक्ति । वच्+तृच् । मुनासिब । बहुत बोलनेवाला.

वक्त्र, (न०) वक्ति अनेन+ष्ट्रन् । जिस्से बोलता है । मुख । मूं । एक प्रकारका कपडा । एक प्रकारका छंद.

वक्त्रशोधिन्, (पु०) वक्त्रं शोधयति । शुध्+णिच्+णिनि । जम्बीर (नींबू) । मुखको साफ करनेवाला ताम्बूल (पान) आदि (त्रि०)

वक्त्रासव, (पु०) वक्त्रस्य आसवं इव । मुखका मानो मद्य है । अधररस । होठका रस.

वक्र, (न०) वकि+रन् । पृ० न लोपः । नदीवक्र (नदीकी टेढ) । शनैश्चर । शनीचर । मंगलग्रह । रुद्र । त्रिपुर दैत्य । और तिरछाजाना । उसवाला (टेढा) (त्रि०) । "राहुकेतू सदा वक्रौ" इति ज्योतिषम्.

वक्रतुण्ड, (पु०) टेढे मुखवाला । "वक्रं तुण्डं अस्य" गणेशजी.

वक्रभाव, (पु०) वक्रः भावः । टेढा भाव (खयाल) । टेढापन । कुटिलता । छल.

वक्राङ्ग, (पु०) वक्राणि अङ्गानि अस्य । टेढे अंगोंवाला । हंस । कुटिल अवयववाला (त्रि०) । कर्म० । कुटिल । टेढा शरीर (नन).

वक्रिम, (न०) वक्रस्य भावः+इमनिच् । कौटिल्य । टेढापन.

वक्रोक्ति, (स्त्री०) कर्म० । कुटिलोक्ति । टेढावचन (यह वाक्यका जीवन है) । काव्यका अंग । और काकुवचन । रमज । ठट्ठा.

वक्ष्, रोष (गुस्साकरना) भ्वा० पर० सक० सेट् । वक्षति । अवक्षीत्.

वक्षस्, (न०) वह्+असुन्-सुट्च । हृदय । उरस् । छाती.

वक्षः(क्ष)स्थल (न०) वक्षः स्थलं इव । वा विसर्गलोपः । अच्छी छाती.

वक्षोज, (पु०) वक्षसि जायते । जन्+ड । छातीपर निकलता है । स्तन । मम्मा । पिस्तान । "वक्षोजद्वानकृत्" इत्युद्भटः.

वक्षोरुह, (पु०) वक्षसि रोहति । रुह्+क । छातीपर उत्पन्न होता है । स्तन । मम्मा । पिस्तान.

वख्, (गति) जाना । भ्वा० पर० सक० सेट् । इदित् । वङ्खति.

वगाह, (पु०) अव+गाह्+घञ् । "अव" के अका लोप विकल्पसे होता है । "अवगाहन" । स्नान । नहाना.

वघ्, गति (जाना) । निन्दा करना । और शुरू करना । सक० । जव (जल्दी जाना) । अक० भ्वा० आ० सेट् इदित् । वंघते.

वङ्क, (पु०) वकि+घञ् । नदीवक्र । नदीकी टेढ । पल्ययन । पलाना । काठीका मोहढा.

वङ्ग, (न०) वगि+अच् । एक प्रकारका धातु । रांगा । "रत्नाकरसे ले ब्रह्मपुत्रतक वंगदेश है" । एकदेश । पु० व० व० । चन्द्रवंशी एक राजा (पु०).

वङ्गज, (न०) वंगात् जायते । जन्+ड । वंगसे उपजा । सिन्दूर । वंगदेशमें उत्पन्न हुआ (त्रि०).

वङ्गशुल्बज, (न०) वंगशुल्वाभ्यां (रंगताम्राभ्यां) जायते । जन्+ड । रांगा और तामासे मिलाहुआ एक धातु । कांसी,

वङ्गसेन, (पु०) वङ्गं इव शुभ्रा सेना (पुष्पं) अस्य । रांगेकी नाईं जिसका फूल चिट्टा है । वकवृक्ष.

वङ्गारि, (पु०) ६ त० । हरिताल । यह रांगे धातुको जलादेती है.

वच्, कहना । अदा० द्विक० पर० अनिट् । वक्ति । अवोचत् । वक्ता.

वचन, (न०) वच्+ल्युट् । कथन (कहना) । वाक्य फिकरा) । सोंठ । व्याकरणमें संख्याके अर्थवाला सुप्तिङ्रूप प्रत्यय.

वचनग्राहिन्, (त्रि०) वचनं गृह्णाति (तदनुसारेण आचरति) ग्रह्+णिनि । जो वचनके अनुसार आचरण कर्ता है । वचनमें रहनेवाला । वशीभूत । काबूमें रहनेवाला.

वचनीय, (त्रि०) वच्+अनीयर् । कथनीय । कहनेके लायक । निन्दाके लायक । और लोकापवाद । तोहमत.

वचनेस्थित, (त्रि०) वचने (वाक्ये-तदुपदिष्टाचारे) तिष्ठति । स्था+क । अलुक् समा० । वचनपर ठहरता है । वाक्यका ठीक २ पालन करनेवाला । वशमें आया हुआ.

वचस्, (न०) वच्+असुन् । वाक्य । वचन.

वचसांपति, (पु०) ६ त० । अलुक् स० । बृहस्पति । देवगुरु.

वचस्कर, (त्रि०) वचः करोति । कृ+अच् । वचनको माननेवाले वंशमें उत्पन्नहुआ । "वाक्यप्रतिपालकवंश्य."

वचा, (स्त्री०) वच्+अच् । "वच" इस नामका पदार्थ.

वज्, गति (जाना) भ्वा० पर० सक० सेट् । वजति । अवाजीत् । अवजीत्.

वज्र, (पु० न०) वज्+रन् । हीरक (हीरा) । और इन्द्रका एक अस्त्र । (यह दधीचि मुनिके अंगसे बनाया गयाथा) । बालक । एक लोहा । एक अस्त्र । और विष्कम्भ आदि सत्ताईस योगोंमेंसे एक (न०) । चिट्टीकुशा । श्रीकृष्णका पडपोता । एकराजा (पु०)

वज्रचर्मन्, (पु०) वज्रं इव कठिनं चर्म यस्य । जिसका चमडा वज्रकी नाईं सख्त हो । गण्डक । खड्गी । गेंडा.

वज्रदन्त, (पु०) वज्रं इव कठिनो दन्तो यस्य । जिसका । दांत वज्रकी नाईं सख्त हो । शूकर (सूअर) । और मूषिक (मूसा) । "वज्रदशन" यही अर्थ.

वज्रधर, (पु०) वज्रं धरति । धृ+अच् । इन्द्र । "वज्रभृत्"

वज्रनिर्घोष, (पु०) ६ त० । वज्रकी आवाज । गर्जन । "वज्रनिष्पेप".

वज्रपाणि, (पु०) वज्रं पाणौ यस्य । जिसके हाथमें वज्र है । इन्द्र । "वज्रहस्त" "वज्रकर".

वज्रपातः-पतनं, (पु० न०) वज्रस्य पातः । वज्रका टकराना । बिजलीका गिरना.

वज्रपुट, (न०) वज्र इव कठिनं पुटं अस्य । जिसका पडदा वज्रकी नाईं सख्त है । औषध (दवाई) पकानेका पात्र (वर्तन) "औषधीपाचनपात्र".

वज्रमय, (त्रि०) वज्रात्मकं । मयट् । वज्रस्वरूप । बहुत सख्त.

वज्रिन्, (पु०) वज्रं अस्ति अस्य+इनि । वज्रवाला । इन्द्र.

वञ्च्, (प्रतारण) ठगना । भ्वा० पर० सक० सेट्-क्त्वा० वेट् । वञ्चति-अवञ्चीत.

वञ्चक, (पु०) वञ्च्+णिच्-ण्वुल् । शृगाल । गीदड । खल (नीच) और प्रतारक (ठगनेवाला) । ठग (त्रि०).

वञ्चन, (न०) वञ्च्+ल्युट् । प्रतारण । ठगना । किसी चीजको औरतरहसे वर्णन करके दूसरेको मोह उत्पन्न करना (भुलाना) । "युच्" वञ्चना (स्त्री०) ठगी.

वञ्जुल, (पु०) वञ्ज्+उलच् । पृ० । चस्य जः । तिनिशवृक्ष । अशोकवृक्ष । वेतसवृक्ष (बैंतका वृक्ष) । और एक पक्षी । वक्र (टेढा) (त्रि०).

वट्, (वेष्टन) घेरना । हिस्साकरना । चुरा० उभ सक० सेट् । वटयति-ते.

वट्, (विभाजन) हिस्सा करना । चुरा० उभ० पक्षे भ्वा० पर० सक० सेट् । इदित् । वण्टयति-ते । वण्टति । अवण्टत्-त । अवण्टीत.

वट्, (कथंन) कहना । भ्वा॰ पर॰ द्विक॰ सेट् । इदित् । वटयति.

वट्, (स्तेय) चोरी करना । पर॰ सक॰ सेट् । इदित् । वण्टति.

वट, (पु॰) वट्+अच् । इस नामका एकवृक्ष । सनकी वनीहुई तांत । रस्सी.

वटक, (पु॰) वट्+क्कुन् । पिष्टकभेद । वडा.

वटी, (स्त्री॰) वट्+अच्+ङीप् । गोलस्वरूपका पदार्थ । वडी । "स्वार्थे कन् ह्रस्वः" । "वटिका" यही अर्थ.

वटु, (पु॰) वट्+उ । माणवक । बालक । और ब्रह्मचारी.

वटुक, (पु॰) वट्+उक । वालक । भैरवविशेष । एक भैरों.

वठ्, सामर्थ्य (ताकतवाला होना) । भ्वा॰ पर॰ अक॰ सेट् वठति । अवाठीत्–अवठीत्.

वठर, (पु॰) वठ्+अरन् । मूर्ख । बेवकूप । और अम्बष्ठ । एकप्रकारका वर्णसंकर । शठ । लुच्चा (त्रि॰).

वड्, (विभजन) वाँटना । चुरा॰ उभ॰ सक॰ सेट् । इदित् । वण्डयति-ते.

वड्, (वेष्टन) घेरादेना । भ्वा॰ आ॰ सक॰ सेट् । वण्डते.

वडभि–भी, (स्त्री॰) वड्यते (आरुह्यते) अत्र । वड्+अभि वा ङीप् । जहां चढते हैं । छज्जा । गृहचूडा । घरकी चोटी । प्रासादाग्रस्थगृह । महलके शिखरका घर.

वडिश, (न॰) वड्+इन् । वडिं श्यति । शोक । मच्छिओंको पकडनेके लिये टेडे लोहेके कांटेवाला पदार्थ । मच्छी पकडनेवाली कुण्डी.

वड्र, (त्रि॰) वल्+रक् । लस्य डः । वृहत् । श्रेष्ठ । अच्छा.

वण्टक, (पु॰) वण्ट+घञ् । स्वार्थे कन् । भावे ण्वुल् । विभाजक (वांटनेवाला) । हिस्सा करनेवाला.

वत्, (अव्य॰) सादृश्य (बरावरी).

वत, (अव्य॰) वन्+क्त । खेद (तक्लीफ) । अनुकम्पा (दया) । हर्ष (खुशी) । विस्मय (हैरानी) । आमन्त्रण.

वतण्ड, (पु॰) अव+तडि+अच् (एक मुनिका नाम.

वतंस, (पु॰) अव+तंस्+घञ् । "अव" के अका लोप । एक कानका भूषण (जेवर) । शेखर (चोटी) । सिरका भूषण । हरएक प्रकारका गहना । कानफूल.

वतोका, (स्त्री॰) अवगतं तोकं यस्याः । "अव" के "अ" का लोप । जिसका संतान दूर होगया । संतानरहित स्त्री.

वत्स, (न॰) वस्+स । वक्षःस्थल (छातीकी जगह) । गौ आदिका शिशु (बच्चा) । (बछडा) और वत्सर (बरिस) (पु॰).

वत्सक, (न॰) वत्स इव+इवार्थे कन् । पुष्पकासीस । हीरा-कसीस । इन्द्रयव (इन्द्रजौं) और वत्स (बछडा) (पु॰).

वत्सतर, (पु॰ स्त्री॰) क्षुद्रः वत्सः+तरप् । क्षुद्रवत्स । छोटा बछडा । दम्य । छोटा सांड.

वत्सनाभ, (पु॰) वत्सान् (पशुशिशून्) नभ्यति (हिनस्ति) नभ्+अण् । पशुओंके बच्चोंको मारता है । एक प्रकारका विष । । जहिर.

वत्सपत्तन, (न॰) वत्सस्य (वत्सराजस्य) पत्तनं । वत्सराजाका नगर । उत्तरदेशमें कौशाम्बी नाम नगरी.

वत्सपाल, (पु॰) वत्सान् पालयति । पाल्+अण् । बछडोंको पालता है । श्रीकृष्ण.

वत्सर, (पु॰) वस्+सरन् । बारह महीनेका वक्त । बरिस.

वत्सराज, (पु॰) चंद्रवंशका एक राजा.

वत्सरान्तक, (पु॰) वत्सरस्य अन्तं करोति । अन्त+णिच्+ण्वुल् । बरिसको समाप्त कर्ता है । फाल्गुन (फागन) का महीना (वर्ष चेतसे शुरू होता है).

वत्सल, (त्रि॰) वत्सं लाति ला+क । स्नेहयुक्त । प्यारवाला । पियारा । "वात्सल्यरस" (पु॰) । उसवाला (त्रि॰).

वत्सशाला, (स्त्री॰) वत्सानां शाला । बच्छोंका घर । गोवाडा.

वद्, नृत्य (नाचना) अक॰ । अभिवादन (सक॰) भ्वा॰ आ॰ सेट् । इदित् । वन्दते । अवन्दिष्ट.

वद्, (वाक्य) बोलना (संदेशा देना) । भ्वा॰ उभ॰ सक॰ सेट् । वदति-ते । अवादीत् । अवदिष्ट.

वद् (वाचि), बोलना । भ्वा॰ पर॰ सक॰ सेट् । वदति.

वद, (त्रि॰) वदति । वद्+अच् । वक्ता । बोलनेवाला.

वदन, (न॰) उद्यतेऽनेन । वद्+करणे ल्युट् । जिस्से बोलाजाता है । मुख । मूं । "भावे ल्युट्" । कथन । कहना (न॰).

वदा(द)न्य, (पु॰) वद्+अन्य । पृ॰ वा दीर्घः । भूरिद्रानशील । बहुत दान देनेवाला । वडा दाता.

वदाम, (न॰) वद्+आमन् । एक प्रकारका फल । बदाम.

वदावद, (पु॰) अत्यन्तं वदति । वद्+अच् । नि॰ । बहुत बोलनेवाला.

वधू, (स्त्री॰) उह्यते पितृगेहात् पतिगृहम् । वह्+ऊधुकच् । पिताके घरसे पतिके घरको पहुंचाई जाती है । भार्य्या । जोरू । औरत । नई विवाहीगई पुत्रकी स्त्री । बहू । नूं.

वधूजन, (पु॰) कर्म॰ । नारीजन । स्त्रीलोग । स्त्री । औरत.

वधू(धु)टी, (स्त्री॰) अल्पा वधूः टी । अल्पवयस्का नारी । छोटी उमरवाली स्त्री । जवान् औरत । स्त्रीलोग । "गोपवधूटीदुकूलचौराय" भा॰ प॰.

वधूवस्त्रम्, (न०) वध्वाः वस्त्रं । वधूका वस्त्र (कपडा).

वध्य, (त्रि०) वध्+ण्यत् । मारनेके लायक । कतलकरने लायक.

वन्, (याचन) मांगना । द्विक० तना० आ० सेट् । क्त्वावेट् । वनुते । अवनिष्ट.

वन्, (सेवा) सेवाकरना । सक० । शब्द करना । अक० भ्वा० पर० सेट् । वनति । अवानीत् । अवनीत्.

वन्, (उपकार करना)-उपताप-तक्लीफ पहुंचाना । सक० । शब्दकरना । अक० वाचु० उ० पक्षे भ्वा० पर० सेट् । वानयति-ते । वनति । अवीवनत्-त । अवनीत्-अवानीत्.

वन, (न० स्त्री०) वन्+अच् । वृक्षसमुदायात्मकारण्य । वृक्षोंका समूहरूप जंगल । स्त्रियां ङीष् "सुवनी सम्प्रवदत् पिकापिके" इति नैषधम् । जल (पानी) । निवास (रहना) । और आलय (घर).

वनकदली, (स्त्री०) ७ त० । जंगलका केला । काष्ठकदली.

वनचन्दन, (न०) वनस्थं चन्दनं । अगुरुचंदन । वनका चंदन.

वनज, (न०) वने (जले-अरण्ये वा) जायते । जन्+ड । पानी वा जंगलमें उपजा । पद्म । कमल । एक प्रकारका मोथा । जो वनमें उपजा हो (त्रि०).

वनमाला, (स्त्री०) एक प्रकारकी माला (जो घुटनोंतक लंबी, सम्पूर्ण ऋतुओंके फूलोंसे चमकरही, और जिसके बीचमें मोटा कदंबका फूल हो).

वनमालिन्, (पु०) वनमाला अस्ति अस्य+इनि । वनमालावाला (श्रीकृष्णदेव) । वाराहीलता (वेल).

वनलक्ष्मी, (स्त्री०) वनस्य लक्ष्मीरिव । वनकी मानों लक्ष्मी है । केलेका वृक्ष । (इसमेंभी लक्ष्मी रहती है).

वनवासिन्, (पु०) वनं वासयति (सुरभीकरोति) । वासि+णिनि । वनको सुगन्धवाला कर्ता है । मुष्कक वृक्ष । वाराहीकन्द । शाल्मलीकंद । "वने वसति वस्+णिनि" वनमें रहनेहारा (त्रि०).

वनशोभन, (न०) वनं (जलं) शोभयति । शुभ्+णिच्+ण्वु । पद्म । कमल.

वनस्पति, (पु०) वनस्य पतिः । नि० सुट् । अश्वत्थआदि वृक्ष (फूलके विना जिसके फल होते हैं).

वनायु, (पु०) वन्+आयुच् । अरवदेश (जिसमें अच्छे घोडे प्रकट होते हैं).

वनायुज, (पु०) वनायुदेशे जायते । जन्+ड । प्रशस्तघोटक । अच्छा घोडा । अरबी घोडा.

वनिता, (स्त्री०) वन्+क्त-नि० इट् । योषित् । पियार करनेवाली स्त्री । मुहब्बत करनेवाली औरत.

वनिन्, (पु०) वनं आश्रयतया अस्ति अस्य+इनि । जिसने वनका आश्रय लिया है । वानप्रस्थआश्रमवाला.

वनीयक, (पु०) वन्+इन् । आत्मनो वनिं (याचनं) इच्छति । क्यच्-ण्वुल् । अपने लिये मांगना चाहता है । याचक । मांगनेवाला । पृ० यलोपः । "वनीक".

वनेचर, (पु०) वने चरति । चर्+अच् । अलुक्समा० । वनमें विचरता है । जंगलमें घूमनेवाला शिकारीआदि.

वनौकस, (पु०) वनं एव ओकः स्थानं यस्य । जिसका स्थान वन है । वानर (वंदर) । वनमें रहनेवाला (त्रि०).

वन्दन, (न०) वदि+ल्युट् । स्तवन । तारीफ । और प्रणाम (सलाम) । युच् । "वन्दना" इसी अर्थमें (स्त्री०).

वन्दनीय, (त्रि०) वदि+ अनीयर् । नमनीय । नमस्कारके लायक । और स्तवनीय (तारीफके लायक).

वन्दारु, (त्रि०) वदि+आरु । वन्दनशील । नमस्कार करनेके स्वभाववाला.

वन्दि-न्दी, (स्त्री०) । वदि+इन्-वा ङीप् । कारावद्धमनुष्यादि । जेलखानामें बांधाहुआ मनुष्य आदि । कैदी । और वन्दन । नमस्कार । सलाम । स्तुतिपाठक । भाट (पु०).

वन्दिपाठ, (पु०) वन्दिं (स्तुतिं) पठति । पठ्+अण् । स्तुतिको पढताहै । स्तुतिपाठक । भाट । तारीफपढनेवाला.

वन्द्य, (त्रि०) वदि+यत् । वन्दनीय । वंदना (नमस्कार -आदाब) के लायक । गोरोचना (स्त्री०).

वन्य, (न०) वने भवः+यत् । वनमें हुआ । दारचीनी । वाराहीकन्द (पु०) । जो वनमें उत्पन्न हुआहो (त्रि०). "वनानां (जलानां) समूहः" यत् । जलका समूह (स्त्री०).

वप्, बीज बोना । बुन्ना । और मूंडना । सक० भ्वा० उभ० अनिट् । वपति-ते । अवाप्सीत् । अवप्त । उप्त्रिमः.

वपन, (न०) वप्+ल्युट् । केशमुण्डन । बाल मुंडाना । बीज बोना । बुन्ना । "वपनी" (स्त्री०) । नाईका घर.

वपा, (स्त्री०) वप्+अच् । मेदस् (चरबी) । और छिद्र । छेक.

वपुर्गुण-प्रकर्ष, (पु०) वपुषः गुणः । शरीरगुण (सौन्दर्य) । शरीरकी मूर्तिका सौन्दर्य । शारीरिक सौन्दर्य (खूबसूरती) । व्यक्तिनिष्ठ (विशेष स्थानपर रहनेवाली) सुन्दरता.

वपुस, (न०) उप्यन्ते देहान्तरभोगसाधनबीजीभूतानि कर्माणि अत्र । वप्+उसि । जिसमें दूसरे शरीर । भोगसाधन कर्म बोये जाते हैं । शरीर (जिस्म) । प्रशस्ताकार । अच्छा स्वरूप । अच्छी शकल.

वप्तृ, (पु०) वप्+तृच् । जनक । पिता । कृषीवल । खेतीकरनेवाला । बीजादिवापक । बीजआदि बोनेवाला (त्रि०).

वप्र, (पु० न०) उप्यतेऽत्र । जहां बोया जाता है । दुर्गनगरादि । किलेका नगरआदि । कच्चाकोट । सर्कल । खाईसे निकाला गया मट्टीका ढेर । खेत । धूरी । किनारा । और सीसक (सीसा) । जनक । पिता । प्राचीर (सफील) । और प्रजापति (पु०).

वभ्र्, गति (जाना) । भ्वा० पर० सक० सेट् । वभ्रति । अवभ्रीत्.

वम्, उद्गार (वमन-ऊपर छल करना) । भ्वा० पर० सक० सेट् । वमति । अवमीत् । "टु" वमथुः । "ण" वामः.

वमन, (न०) वम्+ल्युट् । मर्दन (मलना) । छर्दन (कै) । अर्दन (मांगना) । और वहुत निकालना । शण (सन) (पु०).

वमि, (स्त्री०) वम्+इन् । छर्दन । कै । अग्नि (आग) (पु०) । धूर्त (लुच्चा) (त्रि०).

वमित, (पु०) वम्+णिच्+क्त । कृतोद्गार । जिसने वमन किया । कै कीगई.

वय्, (गति) जाना । भ्वा० आ० सक० सेट् । वयते । अवयिष्ट.

वयस्, (न०) अज्+असुन्-वीभावः । विहग । परिंदह । पक्षी । वालपन आदि अवस्था । उमर । और जवानी.

वय(यः)स्थ, (पु०) वयसि तिष्ठति । मित्र (दोस्त) । (त्रि०) युवा (जवान) (स्त्री०) "वयस्था" आमला । हरीड । गिलोय । छोठी इलायची । सहेली । जवान औरत.

वयस्य, (पु०) वयसा तुल्यः+यत् । एक जैसी उमरवाला । समानवयस्क । सखी । सहेली । (स्त्रियां टाप्).

वयुन, (न०) वय्+उनन् । ज्ञान । इलम । दानाई । देवताका मंदिर (पु०) । तरीका । नियम.

वयोधस्, (पु०) वयो यौवनं धत्ते । धा+असुन् । जवानीको धारण कर्ता है । तरुण । जवान.

वर्, ईप्स (चाहना) । चु० उ० स० सेट् । वरयति-ते.

वर, (न०) व्रियते । वृ+अप् । वर्+घञ् वा । कुङ्कुम । केसर । मनागभीष्ट (थोडा प्यारा) । "वरं प्रणान् परित्यक्ष्ये" इति तन्त्रं । "भावे अप्" "वर्+घञ् वा" इच्छा (चाह) । याचन (मांगना) । आवरण (पडदा) । और वेष्टन (घेरा) । "कर्मणि अप्" अभीष्ट (प्यारा) । और श्रेष्ठ (वहुत अच्छा) (त्रि०) । यार । गुग्गल । जवाई । और पति (खाविन्द) (पु०).

वरट, (न०) वृ+अटन् । कुन्दनामी फूल । एक प्रकारका कीडा । और हंस (पु० स्त्री०).

वरण, (न०) वृ+ल्युट् । कन्यादिदानाय जामात्रादेरभ्यर्थनानुकूलव्यापारभेदः । कन्याआदि देनेके लिये जावाईको एक प्रकारकी प्रार्थना करना । लपेटना (वेष्टन) । पुरोहितआदिको क्रियाओंमें लगानेके लिये पूजना । उष्ट्र (ऊंट) । प्राकार (कोट-सफील) । और वरुणवृक्ष । वनारस (काशी)की उत्तर सीमाकी एक नदी (दर्या) (स्त्री०).

वरण्ड, (पु०) वृ+अण्डच् । एक प्रकारका मूंका रोग । हाथिओंकी लडाईका अखाडा.

वरत्रा, (स्त्री०) वृ+अत्रच् । हस्तिकक्षस्थरज्जु । हाथीकी पेटी । तसमा.

वरत्वच, (पु०) वरा त्वचा यस्य । जिसका छिलका अच्छा है । नीमका दरख्त.

वरद, (त्रि०) वरं ददाति । दा+क । अभीष्टदाता । चाहीगई वस्तुको देनेहारा । और प्रसन्न (खुश हो गया) । कन्या (लडकी) । अश्वगंधा । आदित्यभक्ता । दुर्गा (स्त्री०).

वरदाचतुर्थी, (स्त्री०) माघके शुक्लपक्षकी चतुर्थी.

वरम्, (अव्य०) वृ+अम् । ईषदभीष्ट । थोडा प्यारा । वहुत अच्छा । बेहतर.

वररुचि, (त्रि०) वरा रुचिः यस्य । अच्छी प्रीतिवाला । पाणिनिमुनिके सूत्रोंपर वार्तिक बनानेवाला कात्यायन मुनि । विक्रमादित्यकी सभाका एक पण्डित.

वरलब्ध, (पु०) वरः उत्कर्षः पुष्पेषु लब्धो येन । फूलोंमें जिसने अच्छापन लाभ किया है । परनि० । चम्पक (चंबेका फूल) । प्राप्तवर । जिसने व हासिल किया है (त्रि०).

वरवर्णिनी, (स्त्री०) वरः श्रेष्ठो वर्णः प्रसंसा अस्ति अस्याः+इनि । तारीफवाली । उत्तम स्त्री । नेक औरत । लाख । हल्दी । रोचना । पार्वतीआदि.

वरतनु, (स्त्री०) वरा तनुः यस्याः । सुन्दर स्त्री । अच्छे शरीरवाली.

वरवर्णिनी, (स्त्री०) वरः वर्णः अस्याः । अच्छे रंगवाली स्त्री (औरत) । बहुतही उत्कृष्ट मुख (चिहरे)वाली स्त्री.

वराक, (पु०) वृ+षाकन् । शिवजी । युद्ध (न०) । अवर (छोटा) । शोचनीय (बेचारा) (त्रि०).

वराङ्ग, (न०) कर्म । मस्तक (माथा) । "व्रियते" आव्रियते (अच्छाद्यते) । वृ+अप् । कर्मं० । गुह्य । गुदा । योनि । कुस । ६ व० । गज (हाथी) । विष्णु । और कामदेव (पु०) । अच्छे अंगोंवाला (त्रि०) दारचीनी (न०) हल्दी+स्त्रियां ङीष्.

वराङ्गिन्, (पु०) वराङ्गं अस्ति अस्य+इनि । अच्छे अंगवाला । अम्लवेतस । अंवलबेत । अच्छे अङ्गवाला (त्रि०).

वराट, (पु०) वरं (अल्पं) अटति। अट्+अण्। कौडी। कपर्द। क्षुद्रो वराटः+ङीप्। छोटी कौडी। "स्वार्थे कन्"। रज्जु। रस्सी.

वरारोह, (पु०) वर आरोहो मध्यं यस्य। जिसकी अच्छी कमर है। हस्ती (हाथी)। प्रशस्तनितम्बवती। अच्छे चूतडवाली औरत। (स्त्री०).

वराशि, (पु०) वरं आवरणं अश्नुते। अश्+इन्। स्थूल वस्त्र। मोटा कपडा.

वरासन, (न०) वराय (वरणीयाय) अस्यते क्षिप्यते। अस्+ल्युट्। जवापुष्प। कर्म०। उत्तम आसन (न०)। "अस्+ल्यु" खिङ्ग (अयाश)। जार (यार) (पु०)। "वरान् (श्रेष्ठान्) अपि अस्यति (दूरीकरोति)" अच्छोंकोभी दूर कर देता है। ल्यु। द्वारपाल। दरवान। दर्वाजेपर ठहरनेवाला.

वराह, (पु०) वराय (अभीष्टाय-मुस्तादिलाभाय) आहन्ति (खनति) भूमिं। आ+हन्+ड। मोथा आदि पानेकेलिये पृथिवीको खोदता है। शूकर। सूअर। यज्ञवराहनामी भगवान्का एक अवतार। एक पर्वत। मोथा। शिशुमार.

वरिवस, (न०) वृ+इव असुन्। नि० इटच्। पूजन। इज्जत करना.

वरिवस्या, (स्त्री०) वरिवस्+कृत्यर्थे क्यच् अ। पूजन। पूजा करना। शुश्रूषा। सेवा करना.

वरिष्ठ, (त्रि०) अतिशयेन उरुः+इष्ठन्-वरादेशः। बहुत बडा। उरुतम। तित्तरपक्षी (पु०)। आदित्यभक्त। (स्त्री०).

वरी, (स्त्री०) वरी-शतावरी-पूर्वपदका लोप होता है। शतावरी। सूर्यकी पत्नी। सूर्यकी स्त्री.

वरीयस्, (त्रि०) अतिशयेन उरुः श्रेष्ठः+ईयसु वरादेशः। उरुतम। बहुत उमदह। विष्कम्भआदि सत्ताईस योगोंमेंसे एक (पु०).

वरुड, (पु०) वृ+उडन्। अन्त्यजजातिभेद। एक प्रकारका म्लेच्छ.

वरुण, (पु०) वृ+उनन्। पश्चिम दिशाका पति। जलका मालिक। एक देवता। पानी। और सूर्य.

वरुणानी, (स्त्री०) वरुणस्य पत्नी। ङीप्-आनुक्च। वरुणकी स्त्री.

वरूथ, (न०) वृ+ऊथन्। तनुत्राण। वर्म। शरीरको बचानेवाला जिरह-संजोआ। रथकी रक्षाका स्थान। दूसरोंकी चोटसे बचानेके लिये ढकाहुआ स्थान (पु०)। घर (न०).

वरूथिनी, (स्त्री०) वरूथः अस्ति अस्या+इनिः। रथगुप्तिवाली। सेना। फौज.

वरेण्य, (न०) वृ+एन्य। कुङ्कुम। केसर। प्रधान। सबसे अच्छा। और प्रार्थनीय। प्रार्थनाके लायक (त्रि०).

वर्ग, (पु०) वृज्+घञ्। सजातीयसमूह। एक कौमके लोग आदि। यथा मनुष्यवर्गः। पशुवर्गः। अक्षरोंका समूह। जैसे कवर्गः चवर्ग आदि। ग्रन्थका भाग। जैसे स्वर्गवर्ग। गणितमें एक जैसे दो अंकोंका आपसमें गुणना। जैसे २ का ४, ३ का ९, चारका १६ सोलह। और त्याग। छोडना.

वर्गमूल, (न०) वर्गस्य (समद्विघातात्मकङ्कतेः) मूलम्। एक जैसे दो अंकोंका मूल अर्थात् घातका साधन। जैसे १६ का ४, ९ का ३ आदि.

वर्गोत्तम, (पु०) वर्गेषु षट्सु क्षेत्रादिषु उत्तमः नवांशः। क्षेत्र आदि छ वर्गोंमें उत्तम अर्थात् ९ वां भाग। ज्योतिषमें तीस अंशवाली राशिका नवांश (९ वां हिस्सा).

वर्च्, दीप्ति (चमकना)। भ्वा० आ० अक० सेट्। वर्चते। अवर्चिष्ट.

वर्चस्, (न०) वच्+असुन्। रूप (शकल)। शुक्र (वीर्य)। तेज। विष्ठा। मल। गूंह। "स्वार्थे कन्" गूंह.

वर्चस्विन्, (त्रि०) वर्चस्+अस्त्यर्थे विनि। तेजस्वी। तेजवाला.

वर्जन, (न०) वृज्+ल्युट्। त्याग। छोडना। मारना। हिंसा। कतलकरना.

वर्ण्, (स्तुति) तारीफकरना। फैलना। शुक्लादिवर्णकरण। चिट्टा आदि रंग करना। उद्योग (हिम्मतकरना)। दीपन (चमकना)। चुरा० उभ० सक० सेट्। वर्णापयति-ते। वर्णयति-ते.

वर्ण्, (वर्णन) बयान करना। चु० उ० स० सेट्। वर्णयति-ते.

वर्ण, (न०) वर्ण्+घञ्। कुङ्कुम (केसर)। ब्राह्मणआदि जाति। शुक्ल आदि रूप। भेद (फरक)। और अकार आदि अक्षर (पु०)। "करणादौ घञ्" यश। गुण। और अंगराग। स्वर्ण (सोना)। एक व्रत। और विलेपन द्रव्य (चंदन आदि) "भावे घञ्", विलेपन। (लेप करना)। स्तुति (तारीफ)। गानेका क्रम। और मूरत.

वर्णक, (न०) वर्णयति। वर्ण+ण्वुल्। हरिताल। लेप करनेके लायक पीसा वा घिसाहुआ चंदन आदि द्रव्य। हींग (पु० स्त्री०) मण्डन (सजाना) (न०) एक सूत्रपरही किसी दूसरे प्रकारसे व्याख्यान करनेवाला ग्रन्थविशेष (न०).

वर्णकूपिका, (स्त्री०) वर्णानां अक्षराणां लेखनाय क्षुद्रः कूपः कूपी सेव+कन्। अक्षरोंके लिखनेके लिये एक छोटीसी कूई। मस्याधार। स्याहीका आश्रय। दवात.

वर्णतूलि (ली), (स्त्री०) वर्णानां लेखनसाधनं तूलिः, अक्षरोंके लिखनेका साधनरूप तूलि । लेखनी । कलम+ स्वार्थे कन् । यही अर्थ.

वर्णधर्म, (पु० न०) ६ त० । वर्णोंका धर्म । ब्राह्मण आदि वर्णोंका असाधारण (खास) धर्म । जैसे ब्राह्मणका यज्ञ करना, पढाना, दान लेना आदि, क्षत्रियका प्रजाओंका पालन आदि.

वर्णसंकर, (पु०) संकीर्यते । सम्+कॄ+अप् । वर्णतः संकरः । वर्णका मेल दोगला । मूर्धाभिषिक्त आदि जाति । "जायते वर्णसंकरः" गीता.

वर्णाङ्का, (स्त्री०) वर्णा अक्षराणि अङ्क्यन्ते अनया । अङ्क्+ अच् । जिस्से अक्षरोंके निशान कियेजाते हैं । लेखनी । कलम.

वर्णात्मन्, (पु०) वर्णं आत्मा स्वरूपं यस्य । अक्षरोंके स्वरूपवाला । ध्वनिस्वरूपसे विलक्षण आकार आदि अक्षरवाला एक प्रकारका शब्द.

वर्णिका, (स्त्री०) वर्णा अक्षराणि लेख्यत्वेन सन्ति अस्याः+ ठन् । जिस्से अक्षर लिखे जाते हैं । लेखनी । कलम.

वर्णित, (त्रि०) वर्ण्+क्त । स्तुत (तारीफ कियागया) । वर्णन कियागया । और रूपान्तरापादित (भेस बदलाहुआ).

वर्णिन्, (पु०) वर्णः अस्ति अस्य+इनि । रंगवाला । चित्रकर । मूरत लिखनेवाला । लिखनेवाला । और ब्रह्मचारी । "अथाह वर्णी विदितो महेश्वरः" इति कुमारः । ब्राह्मण आदि जाति । "वर्णिनां हि वधो यत्र" स्मृतिः.

वर्तक, (पु०) वृत्+ण्वुल् । एक प्रकारका पक्षी । मारुई । वर्तक । "वर्तका" इसी अर्थमें । घोडेका खुर.

वर्तन, (न०) वृत्+ल्युट् । वृत्ति । जीविका । रोजी । "णिच् भावे ल्युट्" स्थापन (ठिकाना) । "णिच् करणे ल्युट्" जीवनका उपाय (न०) । "ल्यु" । जीविकावाला । रहनेवाला (त्रि०) । वायस । कौआ । (पु०).

वर्तनी, (स्त्री०) वर्त्तेते पादौ अत्र । जहां पाँव चलते हैं । पीसना । "वृत्+णिच्+आधारे ल्युट्" पथ । वाट । रास्ता.

वर्तमान, (पु०) वृत्+शानच् । आरब्धापरिसमाप्तकाल होरहा । हाल । मौजूद । शुरु कियाहुआ । जो खतम नहिं हुआ.

वर्ति–र्ती, (स्त्री०) वृत्+इन्-वा ङीप् । लेख । लिखना । नयनाञ्जन । आँखका कज्जल । शरीरपर लेप करना । दीपदशा । दीवेकी वत्ती । वट्टी.

वर्तिक, (पु०) वृत+तिकन् । वटेरनामी पक्षी । "वृत्-अच् वर्तः तत्र साधुः हितो वा ठन्" । भार (बोझा).

वर्तिन्, (त्रि०) वृत्+णिनि । वर्तनशील (प्रायः समासमें पीछे रहता है) । रहनेवाला । ठहरनेवाला । लौटनेवाला,

वर्तिष्णु, (त्रि०) वृत्+इष्णुच् । वर्तनशील । रहनेवाला । होनेवाला.

वर्तुल, (त्रि०) वृत्+उलच् । गोलस्वरूपवाला पदार्थ । गोल । गाजर (न०).

वर्त्मन्, (न०) वृत्+मनिन् । पथ । रास्ता । वाट । आचार । तरीका । आंखका पडदा.

वर्ध, छेदन (काटना)-पूरा करना । चु० उ० स० सेट् । वर्धयति-ते.

वर्धक, (पु०) वृध्+ण्वुल् । ब्राह्मणयष्टि (वामनहाटी) । पूराकरनेवाला । भरनेवाला । काटनेवाला । छेदक.

वर्धकिन्, (पु०) वर्धका वर्धः अस्ति अस्य+इनि । त्वष्टा । वढई । तर्खान.

वर्धन, (न०) वृध्+ल्युट् । काटना । और पूरण (भरना) । वृध्+णिच्+ल्यु । वृद्धिकारक । बढानेहारा (त्रि०) "वृध्+ल्यु" । वृद्धियुक्त । बढाहुआ । (त्रि०) । "नी" झाड़ू.

वर्धमान, (पु०) वृध्+शानच् । एरंडका द्रख्त । वृद्धिशील । बढाहुआ (त्रि०) । शराव (प्रकारका मट्टीका पात्र । कुज्जा) । पियाला । विष्णु । धनिओंका एक घर । एक देश । एक नगर । बढाहुआ (त्रि०).

वर्धापन, (न०) वर्धं (छेदं) करोति । वर्ध्+णिच्-आप्-च-सतो भावे ल्युट् । नाडी काटनेके कर्मका अंगस्वरूप एक प्रकारका संस्कार । नाडीछेदन.

वर्धिष्णु, (त्रि०) वृध्+इष्णुच् । वृद्धिशील । बढाहुआ.

वर्मन्, (न०) वृ+मनिन् । कवच । सन्नाह । संजोह । क्षत्रियकी उपाधि (पु०) नामके पीछे आता है.

वर्महर, (पु०) वर्म हरति । हृ+अच् । कवच धारण करनेलायक अवस्थाविशेष । तरुण । जवान.

वर्मित, (त्रि०) वर्म करोति । णिच्+क्त । जिरह पहिरेहुए । कृतसन्नाह । और हिम्मत कियेहुए (उद्युक्त).

वर्वणा, (स्त्री०) वरिति वणति शब्दायते अच् । वर २ शब्द करनेवाली एक प्रकारकी मक्खी । स्याह । मक्खी.

वर्वर, (र्ब) र, (न०) वव् (वृ)+अरच् । हींग पीला चंदन । और गंधरस । पामर (नीच) । मूर्ख (त्रि०) । "णलमिच्छन्ति वर्वराः" इत्युद्भटः । एकदेश । कालतुलसी द्रख्त (पु०).

वर्ष, (पु०) वृष्+अच् । वृष्टि (वर्सना) । जम्बुद्वीपका एक भाग । और जंबुद्वीप । "कर्तरि अच्" मेघ (बादल) । और बारह महीनेका समय (वक्त) । वरिस । "प्रभव" आदि साठ वरिस (पु०).

वर्षपर्वत, (वर्षाणां चिह्नभूतः सीमाभूतो वा पर्वतः) वह पर्वत जहां वर्षाके नशान दीखते हैं अथवा जहांतक वर्षा हो सक्ती है। वर्षनामी पहाड। एक पर्वतोंकी कतार। जो वृजगत्के विभागोंको जतलाती है वे संख्यामें सात है.—हिमालय-हेमकूट-निषध-मेरु-चैत्र-कर्णां और श्रृङ्गी.

वर्षपर्वत, (पु०) (वर्षणं पर्वतः) जगत्के भागोंको भिन्न २ करनेके लिये पर्वत श्रेणिओंमेंसे एक (हिमालय-हेमकूट-निषध-मेरु-चैत्र-कर्णां-और श्रृङ्गी-ये सात वर्षपर्वत हैं.

वर्षवर, (पु०) वर्षं (रेतोवर्षणं) वृणोति (आवृणोति)। वृ+अच्। जिसका वीर्य नहिं राजाओंके। अंतःपुर (जनानखाना) की रक्षा करनेहारा। षण्ड। खोजा। हीजडा। नपुंसक। "नष्टं वर्षवरैरिति" रत्नावली.

वर्षवृद्धि, (पु०) वर्षस्य वृद्धिः (अधिकता) यस्मिन्। जिसमें वर्ष बढता है। जन्मतिथि। बरिसगांठ। जन्म-दिनमें करनेलायक पूजा आदि। "युगाद्या वर्षवृद्धिश्च" स्मृतिः.

वर्षा, (स्त्री०) व० व०। वर्षन्ति मेघा अत्र। जिसमें बादल वर्सते हैं। सावन और भादोंके दो महीनोंका एक मौसम (ऋतु).

वर्षापगम, (पु०) वर्षाणां अपगमो यत्र। जिसमें वर्सात नहिं रहती। शरत्काल। शरद् ऋतु। ६ त०। वर्षाकी समाप्ति.

वर्षाभू, (पु०) वर्षासु भवति। भू+क्विप्। वर्सातमें होता है। मेक (मेंडक)। इन्द्रगोप (वीरवहूटी)। और महीलता। पुनर्नवा और भेकी (मेंडकी) (स्त्री०)। जो वर्षामें हो (त्रि०).

वर्षामद, (पु०) वर्षासु माद्यति। मद्+अच्। बर्सातमें मस्त होता है। मयूर। मोर.

वर्षिष्ठ, (त्रि०) अतिशयेन वृद्धः+इष्ठन्-वर्षादेशः। बहुत बूढा। अतिशय वृद्ध.

वर्षीयस्, (त्रि०) अतिशयेन वृद्धः। ईयसु-वर्षादेशः। बहुत बूढा। अतिवृद्ध। (स्त्रियां ङीप्.)

वर्षुक, (त्रि०) वृष्+उकञ्। वर्षणशील। बर्सनेवाला.

वर्षोपल, (पु०) वर्षस्य (वृष्टेः) उपलः (प्रस्तरः) इव। वर्षाका मानों पत्थर है। करक। शिल। गडा। ओला.

वर्ष्मन्, (न०) वृष्+मनिन्। देह। शरीर। जिस्म। शकल.

वर्ह्, मारना। सक०। चमकना। अक०। चु० उ० सेट्। वर्हयति.

वर्ह, (न०) वर्ह्+अच्। मयूरपिच्छ। मोरका पर। आग। चमक। और यज्ञ.

वर्हिण, (पु०) वर्ह अस्ति अस्य+इन्। मयूर। मोर। "वर्ही".

वर्हिर्मुख, (पु०) वर्हिः (वह्निः) मुखं यस्य। आग जिसका मूं है (इसीके द्वारा देविता हविको खाते हैं).

वर्हिषद्, (पु०) ब० व०। बर्हिषि (विप्रपाणिस्थेऽग्नौ) अदन्ति। वर्हिस्+अद्+क्विप्। ब्राह्मणके हाथमें रहनेहारी अग्निमें खाते हैं। पितृगणभेद। एक पितरोंकी जमात। "अग्निष्वात्ता, वर्हिषद, ऊष्मपा, आज्यपास्तथा" स्मृतिः.

वर्हिष्केश, (पु०) वर्ह्-चमकना+इसुन्। वर्हिः दीप्ति-मान् केशो यस्य। जिसका वाल चमकरहा है। वह्नि। आग.

वर्हिस्, (स्त्री०) वृहि+इसुन्। नि० नलोपश्च। वह्नि। आग। ग्रन्थिपर्ण। और चित्रक। कुशा (पु० न०)। "बर्हिर्देवसदनं दामि" इति श्रुतिः। वर्ह+असुन्। दीप्तियुक्त। चमकनेवाला (त्रि०)

वल्, संवरण (ढांकना)। भ्वा० आ० सक० सेट्। वलते अवलिष्ट.

वल, (न०) वल्यतेऽनेन। वल्+क। सैन्य। सेनाके लोग। सेना.

वलक्ष, (पु०) वल्+क्विप्। अक्ष्+अच्। कर्म०। धवल-वर्ण। चिट्टारंग। उसवाला (त्रि०).

वलभिः-भी, (स्त्री०) वल्यते=आच्छाद्यते-वल्-अभिवा ङीप् (कभी २ "वडभिः" "भी" ऐसा भी लिखा जाता है)। निम्नच्छाद। झुकी हुई छत्त। लकडीका बना हुआ छत्तका ढांचा। हुआ.

वलय, (पु० न०) वल्+अयम्। हस्तपादकटकादि। हाथपाँवके कडे आदि। उत्तरपद (पिछलापद) में होनेसे उसका घेरा-जैसे "भूवलयं" (पृथिवीका घेरा) और गोल.

वलयित, (त्रि०) वलयं इव आचरितं। वलय+क्वि+क्त। वेष्ठित। लपेटाहुआ। घिराहुआ.

वलाक, (पु०स्त्री०) वल्+आकन्। बकपक्षी। बगलापरिंदह। स्त्रियां टाप्.

वलाहक, (पु०) वारि वहति। पृ०। जलको उठाता है। मेघ। बादल। "बलाहक" शब्दके अर्थमें है.

वल्क, (न०) वल्-संवरण (ढांकना)। कच्-कस्य नेत्वम्। वृक्षोंका छिलका। वक्कल। मच्छिओंकी त्वचा-शल्क (मच्छिओंका कांटा)। षण्ड (नपुंसक)। हीजडा.

वल्कल, (न०) वल्+कलन्। त्वचा। छिलका। छाल। दारचीनी (पु०).

वल्ग्, गति (जाना) और प्लुतगति (उकल करजाना)। भ्वा० पर० सक० सेट्। वल्गति। अवल्गीत्.

वल्गा, (स्त्री०) वल्ग+अ। लगाम। घोडेके मूंकी रस्सी-विशेष.

वल्गित, (न०) वल्ग+क्त। एक घोडेकी चाल। जाना। और बहुत बोलना.

वल्गु, (पु०) वल्-संवरण (छिपाना)+उ-गुकुच । छाग । बकरा । मनोहर (खूब सूरत) (त्रि०) "संज्ञामें कन्" चंदन । वन (जंगल) और पण (पैसा) (न०).

वल्भ्, भक्षण (खाना) भ्वा० आ० स० सेट् । वल्भते । अवल्भिष्ट.

वल्मिकि, (पु०) वल्+इकि-मुट्च } कीडोंसे बनायागया
वल्मीक, (पु०) वल्+ईक-मुट्च } मट्टीका ढेर । बरमी । बामलूर.

वल्ल, (पु०) वल्ल्+घञ् । गुञ्जात्रयपरिमाण । तीन रत्तीभर.

वल्लकी, (स्त्री०) वल्ल्+क्कुन्-ङीष् । बीण । बीन । सल्लकी । दरख्त.

वल्लभ, (पु०) वल्ल्+अभच् । दयित । पियारा । अध्यक्ष । मालिक । और उत्तमाश्व । अच्छा घोडा.

वल्लरि-री, (स्त्री०) वल्ल्+अरिन् वा ङीप् । मञ्जरी । मिंजर । और मेथी.

वल्लव, (पु०) वल्ल्+अच् तं वाति । वा+क । गोप । ग्वाला । पाचक । रसोइआ और भीमसेन.

वल्लि, (स्त्री०) । वल्ल्+इन्-वा ङीप् । लता (वेल) । और पृथिबी.

वल्लुर, (न०) वल्ल्+उरन् । कुञ्ज (वेलोंसे ढकाहुआ स्थान) । मंजरी । क्षेत्र । अकेलीजगह । नये घासवाली जगह । गहन.

वल्लूर, (त्रि०) धूप आदिसे सूकाहुआ मांस । सूअरका मांस । बनका खेत । वाहन (सवारी) । ऊषरभूमि (कल्लरकी जमीन).

वल्ल्या, (स्त्री०) वल्ल+यत् । धात्रीवृक्ष । आमलेका दरखत.

वश्, स्पृहा (चाहना) अदा० पर० सक० सेट् । वष्टि । अवाशीत्-अवशीत्.

वश, (पु० न०) वश्+अच् । आयत्तत्व । आधीन होना । काबूमें होना । प्रभुत्व । मालिकपन । वडाई । आयत्त (काबूमें आयाहुआ).

वशंवद, (त्रि०) वशं (वशकरं) मधुरं । वशोऽहं इति वा वदति । वद्+अच्-मुम्च । प्रियवाक्यवादी । पीयारा वचन बोलनेवाला । मीठा बोलनेवाला । "मैं आपके आधीन हूं" ऐसा बोलनेहारा.

वशक्रिया, (स्त्री०) वशस्य क्रिया (करणं) । कृ+श । वशीकरण (काबू करना).

वशग, (त्रि०) वशं गच्छति । गम्+ड । वशीभूत । काबूमें आया.

वशवर्तिन्, (त्रि०) वशं वर्तते । वृत्+णिनि । वशमें रहता है । वशीभूत । आधीन हुआ.

वशा-सा, (स्त्री०) वश्-(वस्) अङ् । वंध्या योषा । बांझ औरत । कन्या (लडकी) । हथिनी (करिणी) । गौ.

वशित्व, (न०) वशिनो भावः त्व । स्वातन्त्र्य । खुदमुख्तारी । स्वाधीनता । ईश्वरका एक ऐश्वर्य (महिमा) । "तल्" "वशिता".

वशिन्, (त्रि०) वशः अस्ति अस्य+इनि । काबू रखनेवाला । जितेन्द्रिय (जिसने इन्द्रिय जीतली है) । स्वाधीन । स्वतन्त्र.

वशि(सि)ष्ठ, (पु०) अतिशयेन वशी+इष्ठन् । इनेर्लुक् । पृ० वा शस्य सः । पूरा २ इन्द्रिओंको जीतनेवाला एक मुनि । अतिशय जितेन्द्रियतायुक्त मुनिविशेष.

वशीकरण, (न०) अवशः वशः क्रियतेऽनेन । वश+च्वि +कृ+ल्युट् । जिस्से बेवसकोभी वश कियाजाय । तन्त्र आदिमें कहागया वश करनेवाला मणि, मन्त्र आदि । दूसरेको अपने काबूमें लेआनेका मन्त्र.

वश्य, (न०) वश्+यत् । लवंग । लौंग । आयत्त (काबूमें आयाहुआ) (त्रि०).

वषट्, (अव्य०) देवोद्देश्यकहविस्त्यागः । देवताके लिये घी आदिका देना वा छोडना.

वषट्कार, (पु०) वषट्+कृ+घञ् । देवोद्देश्यक त्यागरूप यज्ञ । वह यज्ञ कि जिसमें देवताके लिये कुछ दिया जाता है.

वषट्कृत, (त्रि०) वषट् इति कृतं । कृ+क्त । हुत । होम कियाहुआ.

वष्क्, (गति) जाना । भ्वा० आ० सक० सेट् । वष्कते । अवष्किष्ट.

वष्कय, (पु०) वष्क्+अयन् । एकहायनवत्स । एक वरिसका वछडा.

वस्, (निवास) रहना । भ्वा० पर० सक० अनिट् । वसति । अवात्सीत्.

वस्, (आच्छादन) ढांकना । अदा० आ० सक० सेट् । वस्ते । अवसिष्ट.

वसति-ती, (स्त्री०) वस्+अति वा ङीप् । वास । रहना । यामिनी (रात) । "वसतीरुषित्वा" इति रघुः । निकेतन । रहनेका स्थान.

वसन, (न०) वस्+ल्युट् । वस्त्र । पडदा । मडपा रहना । गहना । कपडा.

वसन्त, (पु०) वस्+झ । चैत्र और वैशाखके दो महीनोंका एक ऋतु । एक प्रकारका राग । सीतला रोग.

वसन्ततिलक, (न०) चौदह अक्षरोंके पादवाला एक छंद.

वसन्तदूत, (पु०) वसन्तस्य दूत इव । वसन्तका मानों दूत है । कोकिल (कोइल) । आमका वृक्ष । पाँचवाँ स्वर.

वसन्तपञ्चमी, (स्त्री०) वसन्तस्य पञ्चमी । माघमासके शुक्लपक्षकी पांचमी तिथि.

वसन्तबन्धु-सख, (पु०) वसन्तः बन्धुः यस्य । जिसका बंधु (रिश्वेदार-सहायक) वसन्त है । कामदेवका नाम.

वसन्तसख, (पु०) वसन्तस्य सखा+टच् समा० । वसन्तका मित्र । कामदेव.

वसा, (स्त्री०) वस्+अङ् । मांससे उपजा शरीरका एक प्रकारका धातु । मेद (चर्वी) । एक वेल.

वसिष्ठ, (पु०) अतिशयेन वशी । अच्छी तरह इन्द्रियोंको वश रखनेवाला । प्रसिद्ध ऋषि । सूर्यवंशी राजाओंका कुलगुरु.

वसु, (न०) वस्+उ । धन (दौलत) । रत्न (उमदा चीज) । वृद्धि औषध । श्याम । स्वर्ण । और जल । वकवृक्ष । सूर्य । अग्नि । किरण । गणदेवताविशेष । आठकी संख्या (पु०) । मीठा । और सूका (त्रि०) दीप्ति (चमक) (स्त्री०) । वसुदेवतावाला धनिष्ठा नक्षत्र (तारा) (पु०).

वसुदेव, (पु०) वसुना दीव्यति । दिव्+अच् । जो धन आदिसे क्रीडाआदि कर्ता है । श्रीकृष्णका पिता । यदुके कुलमें उत्पन्नहुआ एक क्षत्रिय.

वसुधा, (स्त्री०) वसूनि धीयन्तेऽस्यां । जिसमें धन रक्खे जाते हैं । धा+क । पृथवी । जमीन.

वसुधारा, (स्त्री०) वसोः चेदिराजस्य प्रियार्थं धारा (घृतादिस्रवसन्ततिः) । मंगलके कामोंमें चेदिराजवसु (शिशुपालके उद्देशसे दीगई घीआदिकी धारा । कुबेरकी राजधानी । "धारा".

वसुन्धरा, (स्त्री०) वसूनि धारयति । धृ+खच्-मुम्च । जिसमें धन रहते हैं । पृथिवी । जमीन.

वसुमती, (स्त्री०) वसूनि सन्ति अस्यां+मतुप् । जिसमें धन हैं । पृथिवी । जमीन.

वस्त्, वध (मारना)-गति (जाना) । सक० । मांगना । द्वि० चु० उभ० सेट् । वस्तयति-ते । अववस्तत्-त.

वस्त, (पु०) वस्यते (वध्यते) वस्त्+घञ् । मारा-जाता है (यज्ञआदिमें) छाग (बकरा).

वस्ति, (पु०) वस्ते (आवृणोति) मूत्रम् । मूत्र (पेशाब) को छिपा लेता है । वस्+तिच् । नाभि (धुन्नी) के नीचे मूत्रका आश्रयरूप स्थान । और वास (रहना) । कपडेका पल्ला (स्त्री०) ब० व०.

वस्तिमल, (न०) ६ त० । वस्तिकी मैल । मूत्र । पेशाब.

वस्तु, (न०) वस्+तुन् । द्रव्य (चीज) । पदार्थ । सच्चा पदार्थ.

वस्तुतस्, (अव्य०) असलमें । वास्तविक । ठीक ठीक.

वस्त्य, (न०) वस्तौ साधु+यत् । निवासके लिये अच्छा । घर । गृह.

वस्त्रकुट्टिम, (न०) वस्त्रनिर्मितं कुट्टिमं यत्र । जहां कपडेकी बनीहुई फर्श है । वस्त्रगृह । कपडेका घर । तंबू.

वस्त्रग्रन्थि, (पु०) ६ त० । कपडेकी गांठ । नीवी । धोतीकी गांठ.

वस्न, (न०) वस्+नन् । वेतन । मजूरी । और द्रव्य (चीज) । धन (दौलत) । त्वचा (छिलका) । और मौत (मृत्यु) । मोल (पु०).

वस्नसा, (स्त्री०) वस्नं स्यति । षो+क । स्नायु । आँतडी । नाड.

वह्, प्रापण (पहुंचाना) भ्वा० उ० द्विक० अनिट् । वहति-ते । अवाक्षीत् । उवाह.

वह्, दीप्ति (चमकना) चु० उ० अक० सेट् । इदित् । वहयति-ते । अवहिष्ट.

वह, (पु०) उह्यतेऽनेन । उठाया जाता है इस्से । वृषस्कंधदेश । बैलके कंधेकी जगह । घोडा । सवारी । पथ । रास्ता । नद । बडा दर्या.

वह-ऊढ, (त्रि०) वह्+क्त । लेगया (बोझा) । लेजाया गया । विवाहागया । –ढः (पु०) विवाहा गया पुरुष । –ढा-(स्त्री)-विवाही-गई लडकी.

वहल, (पु०) वह्+अलन् । पोत । जहाज । दृढ (मजबूत) (त्रि०).

वहित्र, (न०) वह्+इत्र । पोत (जहाज) । पानीकी सवारी । "स्वार्थे कन्".

वहिरङ्ग, (न०) वहिः (प्रकृतेर्वाह्यं) अङ्गं यस्य । प्रकृतिसे बाहिरे है अंग जिसका । व्याकरणमें कहागया प्रत्ययआदिके निमित्तसे उत्पन्नहुआ प्रकृति (धातु) के उत्तर (पिछला) अवयव आदिका कार्य । "असिद्धं वहिरङ्गमन्तरङ्गे" महाभाष्यम् । बाहिरका अंग । "धातुके पीछे प्रत्ययआदिके संबन्धसे होनेवाला कार्य".

वहिरिन्द्रिय, (न०) वहिः (देहाद् वाह्यस्य पदार्थस्य) ग्राहकं इन्द्रियम् । शरीरसे बाहिरले पदार्थको ग्रहण करनेवाला इन्द्रिय । "शब्द" आदि बाहिरके विषयोंको ग्रहण करनेहारे "श्रोत्र (कान)" आदि.

वहिर्मुख, (त्रि०) वहिः (वाह्यविषये) मुखं (प्रवणता) यस्य । जिसकी झुकावट बाहिरके विषयोंमें है । बाहिरके विषयोंमें आसक्त (फसाहुआ) हुए मनवाला जन और विमुख (औरतर्फ मुख किये).

वहिस्, (अव्य०) वह्+इसुन् । वाह्य । बाहर (पंचमीके पीछे आता है).

वह्नि, (पु०) वह्+नि । अग्नि (आग) । चित्रकवृक्ष (चित्रा) । भल्लातक (भिलावा) । नीम । तन्त्रमें रकार ("र").

वह्निकरी, (स्त्री०) वह्निं (देहस्थवह्निं) करोति (उद्दीपयति) कृ+ट-ङीप् । शरीरकी आगको उद्दीपन कर्ता है (भडकाता है) । धात्रीवृक्ष (आवला-औला-आमला) । आगको चमकानेहारा (त्रि०).

वह्निगर्भ, (पु०) वह्निः गर्भे यस्य । जिसके भीतर आग है । वंश(बांस) । शमीवृक्ष । जंडीका दृख्त.

वह्निदीपक, (पु०) वह्निं (देहस्थवह्निं) सेवनात् दीपयति । दीप्+णिच्+ण्वुल् । सेवन करनेसे शरीरकी आग चमकाती है । "वह्निरिव दीप्यति-दीप्+ण्वुल् वा" आगकी नाँई चमकती है । "दीप्+ण्वुल् वा" कुसुम्भा । आगको चमकानेहारा (त्रि०) । अजमोदा । (अजवैन-जवैन) (स्त्री०).

वह्निनी, (स्त्री०) वह्निं नयति । नी+ड-ङीष् । जटामांसी । बूटी.

वह्निभोग्य, (न०) ६ त० । आगके भोगनेलायक । घृत । घी.

वह्निमित्र, (पु०) वह्निः मित्रं यस्य । आग जिसका मित्र है । वायु । हवा । ६ त० । आगका मित्र । "वही" (न०).

वह्निरेतस्, (वह्नौ निषिक्तं रेतो येन । जिसने अग्निमें वीर्य सींचा (स्वामी कार्तिककी उत्पत्तिके समय) । शिवजी । अग्निमें डालेगये शिवजीके वीर्यसे (गंगामें) वदल (संक्रम) देनेसे कार्तिकेय उत्पन्न हुआ.

वह्निवधू, (स्त्री०) ६ त० । अग्निदेवताकी स्त्री (जिसका नाम "स्वाहा" है) । उस स्वरूपका मन्त्र । "वह्निजाया".

वह्निसख, (पु०) ६ त० । आगका मित्र । वायु (हवा) । शरीरकी आगको भडकानेहारा जीरा.

वह्य, (न०) वह्+यत् । शकट । छकडा । गड्डा । वाहनमात्र । हरएक प्रकारकी सवारी.

वा, (सुखाप्ति) सुखपाना । अक० । जाना और सेवाकरना । सक० चुरा० उभ० सेट् । वापयति-ते । अवीपपत्-त.

वा, (जाना) और हिंसाकरना । अदा० पर० सक० अनिट् । वाति । अवासीत्.

वा, (अव्य०) वा+का । विकल्प । सादृश्य । अवधारण (निश्चय) । समुच्चय (सारा) । पादको पूरा करनेके लिये । अथवा । या । और भी.

वांशिक, (पु०) वंशी (तद्वादनं) शिल्पं अस्य+ठक् । वंशीवादनशील । वंसी (बांसरी) बजानेवाला.

वाक, (पु०) वच्+घञ् । वचन । कहना । "नमोवाकं प्रशास्महे" उत्तरचरित । एक ग्रंथ । "वकस्येदं अण्" । वकसम्बन्धी । बगलेका (त्रि०).

वाक्पति, (पु०) ६ त० । वाणीका पति । वृहस्पति (देवताओंका गुरु) "वाचः पतिरिव" वाणीका मानो पति है । "निर्दोषोद्धतवचनयुक्तः" दोषरहित जोरसे वचन कहनेहारा (त्रि०).

वाक्पथ, (पु०) वाचः पन्थाः (विषयः) । अच् समा० । वाक्यका विषय । जो कहनेमें आसक्त है.

वाक्पारुष्य, (न०) वाचा पारुष्यम् । वचनसे कठोरता । कटुक्ति । खराब वचन । गाली गलौज । "देश, जाति, वा कुल आदिका नाम लेकर प्रतिकूल वचन कहना".

वाक्य, (न०) वच्+ण्यत् । चस्य कः । पूरे २ अर्थको जतानेहारा पदोंका समूह । फिकरा । "वाक्यं स्याद्योग्यताकाङ्क्षा सती युक्तः पदोच्चयः" "स्वार्थबोधसमाप्तिश्चत्पदसमूहः".

वाक्यविशारद, (त्रि०) वाक्ये विशारदः । बहुत अच्छा संभाषणकरनेवाला । वोलनेमें चतुर.

वाक्यशेष, (पु०) वाक्यस्य शेषः । वाक्यका शेष (बाकी) । न पूरा किया गया वचन । वह वाक्य जो समाप्त नहिं हुआ.

वाक्ष्, (स्पृहा) चाहना । भ्वा० पर० सक० सेट् । वाक्षति । अवांक्षीत्.

वागीश, (पु०) वाचां ईशः । वाणिओंका स्वामी । वृहस्पति । देवगुरु । "वागीशाद्याः सुमनसः" इति न्यायमाला । सरस्वती (स्त्री०) "वागीशा यस्य" हृदये श्रीधरः.

वागुरा, (स्त्री०) वा-हिंसाकरना-उर-गुनूच । शिकारके लिये पशुओंको बांधनेका पाश (फांस) । "मृगबंधनी".

वागुरावृत्ति, (पु०) वागुरा (मृगबन्धनपाशादिरेव) वृत्तिः (जीविका) यस्य । जिसकी जीविका वागुरा है । व्याध । शिकारी.

वागुरिक, (पु०) वागुरा प्रहरणं यस्य-वागुरया चरति वा+ठक् । जिसका शस्त्र वागुरा है वा जो वागुरासे विचरता है । व्याध । शिकारी.

वाग्डम्बर, (पु०) ६ त० । वाक्यस्तोम । बहुत वचन कहना । बहुलवाक्य । बहुतकथन.

वाग्दण्ड, (पु०) वाचो वागिन्द्रियस्य दण्डः (संयमनं) । वागिन्द्रिय (बोलनेवाली इन्द्रिय) का रोकना । मितभाषण (मापाहुआ बोलना) । वाक्यसंयम । वचनको काबू करना.

वाग्दत्ता, (स्त्री०) वाचा दत्ता । वाणीसे दीगई । विधिपूर्वक वचनमात्रसे देनेके लिये संकल्प कीगई कन्या । वह लडकी कि जिसकी मंगनी होगई हो.

वाग्दुष्ट, (त्रि०) वाचा (दुर्वचनेन) दुष्टः । बुरे वाचनसे दोषवालाहुआ । शुद्ध वस्तुभी अशुद्ध कहनेसे दूषित होगई । "वाग्दुष्टं भावदुष्टं च वर्जयेत्" इति स्मृतिः.

वाग्देवता, (स्त्री०) वाचां देवता । वाणिओंकी देवी । सरस्वती । "वाग्देवी".

वाग्मिन्, (त्रि०) वाच्+अस्त्यर्थे ग्मिनि-"च" स्य कः तस्य लोपः । प्रशस्तवाक्यवक्ता । अच्छा वचन बोलनेहारा । वृहस्पति (पु०).

वाग्यत, (त्रि०) वाक् यतो येन । जिसने बोलनेवाली इन्द्रियको रोका है । मौन । चुपचाप रहनेवाला । "वाग्यतस्त्रिसवनं चरेत्" इति स्मृतिः.

वाङ्मय, (त्रि०) वाक् स्वरूपं+मयट् । चस्य कः । वाक्य-स्वरूप शास्त्र । शास्त्र (जिसका स्वरूप वाक्य है) । (वाङ्मयी) सरस्वती । फसाहत.

वाङ्मती, (स्त्री०) एक नदी (जो हिमालयकी ऊंची चोटीसे निकल मिथिला देशके पास होकर वहती है) । एक दर्या.

वाचंयम, (त्रि०) वाचां यच्छति । वाचा+यम्-ख मुम् ह्रस्वश्च । वाणिओंको रोकता है । मितभाषी । थोडा बोलनेवाला । मौनावलम्बी मुनि (चुपरहनेवाला सन्त) (पु०).

वाचक, (पु०) वक्ति (अभिधावृत्त्या बोधयति) ण्वुल् "संकेत कियेहुए अर्थको जो साक्षात् कहता है" एक शब्दका असली अर्थ । कथक (कहनेहारा) (त्रि०) । "वाचयति वच्+णिच्-ण्वुल्" -पुराण आदि पढने पढाने वा वाचनेहारा (त्रि०) "वाचकः पूजितो येन" पुराणम्.

वाचन, (न०) वच्+णिच्-स्वार्थे वा णिच्-ल्युट् । पठन । पढना । वा कथन (कहना) । "युच्" पठन (पढना) (स्त्री०)

वाचनिक, (त्रि०) वचनेन निर्वृत्तं+ठक् । वचनसे हुआ । वाक्यनिष्पादित पाप आदि । वाणीसे कियाहुआ पाप.

वाचस्पति, (पु०) ६ त० । अलुक् समा० । वाणीका पति । बृहस्पति.

वाच्-चा, (स्त्री०) । वाक्य । वचन । कहना । वाणी । "उच्यतेऽसौ अनया" जिस्से वह कहाजाता है । वच्+क्विप्-नि० वा टाप् । वागिन्द्रिय । बोलनेकी इन्द्रिय.

वाचाट, (त्रि०) वाक्+कुत्सायां-बाहुल्येऽस्त्यर्थे आटच् । कुत्सित बहुभाषी । बहुत बुरा बोलनेवाला । "आलच्" "वाचाल" यही.

वाचिक, (त्रि०) वाचा कृतम् । वाच्+ठक् । वाणीसे कियाहुआ पाप । वाक्यनिष्पादित पाप.

वाचोयुक्ति, (स्त्री०) ६ त० । अलुक् समा० । वाचा दर्शितयुक्तिः । वचनसे दिखलाई गई दलील । वचनकी सफाई (निर्बलता) । अच्छा वचन.

वाच्य, (न०) वच्+भावे ण्यत्-न कः । दूषण । दोष । प्रतिपादन (वर्णन करना) । और कथन (कहना) । "कर्मणि ण्यत्" दोषके लायक । बयान करनेके लायक । अभिधाशक्तिसे जतानेलायक अर्थ । असली अर्थ.

वाञ्छ्, काम (चाहना) भ्वा० प० स० सेट् । इदित् । वाञ्छति.

वाज, (न०) वज्+घञ् । अन्न । घृत (घी) । जल । और यज्ञ । शरपक्ष (तीरका पर) । वेग (तेजी) (पु०).

वाजपेय, (पु० न०) वाजं (अन्नं-घृतं वा) पेयं अत्र । एक प्रकारका यज्ञ । जिसमें अन्न वा घीका पानकरना होता है.

वाजसनेयिन्, (पु०) वाजसनेयः अध्ययनत्वेन अस्ति अस्य +इनि । यजुर्वेदकी एक शाखाको पढनेहारा ब्राह्मण आदि । और उसमें कहीगई रीतिके अनुसार कर्म करनेहारा शूद्र । "शूद्रा वाजसनेयिनः" इति स्मृतिः.

वाजिन्, (पु०) वाजः वेगः पक्षो वा अस्ति अस्य । जिसकी तेजी वा पर हो । घोटक (घोडा) । तीर । वेगवाला (त्रि०).

वाजिन, (न०) वाजिभ्यो देयम्+अण् । घोडोंके देनेलायक । आमिक्षानिःसृतजल । आमिक्षा (उबलतेहुए दूधमें दही डालनेसे जो फुटसे बनजाते है)से निकला पानी । ताकत (शक्ति) । शूरता (बहादुरी).

वाजिभक्ष, (पु०) वाजिभिः भक्ष्यते । भक्ष्+कर्मणि घञ् । ६ त० । घोडोंका खाना । चणक । चना । छोले.

वाजीकरण, (न०) अवाजी वाजीव क्रियतेऽनेन । वाजिन् +च्वि+कृ+ल्युट् । जिसके द्वारा मानों घोडा किया जाता है । वह चीज (दवाईं आदि) की जिसके सेवनसे पुरुष घोडेकी नाईं भोग करनेके लायक हो सक्ता है । एक प्रकारकी वीर्यको वढानेहारी दवाई (औषध).

वाञ्छा, (स्त्री०) वाञ्छि+अ । इच्छा । चाह । अभिलाषा । ख्वाहिश.

वाट, (पु०) वट्+घञ् । पथ (रास्ता) । स्थान । जगह । वृत्तिस्थान । वाडा । कचहरी खुलीजमीन । घर.

वाटिका, (स्त्री०) वट्+ण्वुल् । वास्तुभूमि । निवासका स्थान । घरकी ओर । बाग । वाडी । हिङ्गुपत्री.

वाड्, आप्लाव (नहाना-डुबकी मारना) भ्वा० आ० अ० सेट् । वाडते । अवाडिष्ट.

वाडवेय, (पु०) वडवायां भवः+ढक् । समुद्रमें घोडीके मूंकी आग । अश्वीमुखीजानल.

वाढ, (न०) वह्+क्त । नि० । अतिशय । बहुतही । बहुतायतवाला (त्रि०) । पृ० मान्तं । "हां" । प्रतिज्ञा । इकरार । और स्वीकार (अव्य०).

वाण, (पु०) वण्+घञ् । शर । तीर । गौओंका मम्मा । एक दैत्य । केवल । वह्नि (आग) । कादम्बरीग्रन्थका बनानेहारा कवि । मूंज.

वाणवार, (पु०) वाणं (परमुक्तशरं) वारयति । शत्रुसे छोडेहुए तीरको हटानेवाला । चु० वृ० अण् । बहादुरोंके पहिरनेकी चोलेके स्वरूपका सन्नाह (संजोआ) । कवच । जिरह.

वाणहन्, (पु०) वाणं हतवान् । हन्-ताडन+भूते क्विप् । जिसने वाण दैत्यको मारडाला । श्रीकृष्ण । "वाणजित्".

वाणिनी, (स्त्री०) बडी चतुर औरत । नाचनेवाली लडकी । नटी । मस्त औरत । शराब पीनेवाली औरत.

वाणी, (स्त्री०) वण्+इण्-वा ङीप् । बुना । वपन । बुनेका डण्डा । "ङीप्" वाक्य । वचन । बोलना । शब्द । सरस्वती.

वात, जाना-सेवा करना । सुखीकरना । सक० चु० उ० सेट् । वातयति-ते.

वात, (पु०) वा+क्त । स्पर्श (छूना)मात्र विशेष गुणवाला एक भूत । पवन (हवा) । और शरीरका एक धातु । जानेवाला (गन्त) (त्रि०) । यार । ढीठ । नायक.

वातकिन्, (त्रि०) वातोऽस्ति अस्य+इनि कुक् च । वातरोगी । वातके रोगवाला । जिसे वायुकी बीमारी है.

वातकेतु, (पु०) ६ त० । हवाका झण्डा । धूलि । धूर । रज.

वातध्वज, (पु०) ६ त० । मेघ । बादल.

वातप्रमी, (स्त्री०) वातं प्रमिणोति । प्र+मा+ई । हवाके सामने चलाजाता है । शीघ्रग मृग । जल्दी जानेवाला हरिण.

वातरक्त, (न०) वातजं दुष्टं रक्तं रुधिरं यत्र । वायुसे उपजा है बुरा लोहू जहां । एक प्रकारका रोग । गंठिआकी बीमारी.

वातरायण, (पु०) वा+क्त । ततस्तरप् । वातरं अयनं यस्य णत्वम् । उन्मत्त (पागल) । प्रयोजनशून्य (बिनमतलब पुरुष-निकम्मा) । काण्ड । टास । करपत्र (आरा) । और सरलका वृक्ष.

वातल, (पु०) वातं (रोगभेदं) लाति । ला+क । चञ्चल । वायुकारक द्रव्य (हवाके रोगको उपजानेहारी चीज) (त्रि०).

वातव्याधि, (पु०) वातेन जनितो व्याधिः । शाक० । बाईसे उत्पन्न हुई बीमारी । वातरोग । बाईका रोग.

वाताद, (पु०) वाताय (वातनिवृत्तये) अद्यते असौ । बाईको दूर करनेके लिये जो खाया जाता है । अद्+घञ् । बादाम (बदाम) । फलवाला वृक्ष.

वातापि, (पु०) अगस्त्यसे नाश कियागया एक दैत्य.

वातापिसूदन, (पु०) वातापिं सूदयति (हिनस्ति) । सूद्+ल्यु । वातापिको मारता है । अगस्त्य नाम मुनि.

वातामोदा, (स्त्री०) वातेन आमोदो यस्याः । हवासे जिसकी सुगन्धि उडती है । कस्तूरी.

वातायन, (न०) वातस्य अयनं गतिः येन । जिस्से हवा निकलती है । झरोखा । बारी । खिडकी । गवाक्ष । "वातस्येव शीघ्रं अयनं (गतिः) अस्य" । हवाकी नांई जो बहुत चलता है । अश्व । घोडा (पु०).

वातायु, (पु०) वातं अयते । अय्+उण् । हवाकी ओर चलता है । हरिण । हिरन.

वातारि, (पु०) वातस्य (रोगभेदस्य) अरिः । बाईकी बीमारीका शत्रु । एरण्डका वृक्ष । शतमूली । शेफालिका । यवानी । भार्गी । स्नुही । विडंग । चतुका (लाख).

वाति, (पु०) वा+क्तिच् । वायु । हवा.

वातिक, (पु०) वातात् आगतः+ठक् । हवासे आया । बाईकी बीमारी.

वातीय, (न०) वाताय (वातनिवृत्तये) हितः+छ । बाईको दूर करनेके लिये भला । काञ्जिक । कांजी.

वातुल, (पु०) वातानां समूहः+उलच् । वातका समूह । झक्खड । जिसे हवाकी बीमारी होगई (बाईसे बीमार) (त्रि०).

वातूल, (त्रि०) वात+अस्त्यर्थे ऊलच् । बाईके रोगवाला । पागल (उन्मत्त) । समूहके अर्थमें ऊलच् । वातसमूह (पु०).

वात्या, (स्त्री०) वातानां समूहः+यत् । वातसमूह । बहुत हवामें झक्खड आंधी.

वात्सक, (न०) वत्सानां समूहः+वुञ् । वत्ससंघ । बछडोंका समूह । बहुत बछडे.

वात्सल्य, (न०) वत्सलस्य भावः+ष्यञ् । पुत्रआदिमें स्नेहको जतानेहारा एक प्रकारका रस । पियार । मुहब्बत । स्नेहविशेष.

वात्स्य, (पु०) वत्सस्य अपत्यं+यञ् । गोत्रको चलानेहारा मुनिविशेष । वत्सकी सन्तान.

वात्स्यायन, (पु०) वत्सस्य गोत्रापत्यं युवा । वत्स+यञ् । तब "जवान" के अर्थमें फक् । वत्सके गोत्र (वंश) में उत्पन्नहुआ न्यायसूत्रपर भाष्य रचनेहारा "पक्षिल" नाम मुनि । वत्सके वंशमें उत्पन्न हुआ एक युवा । कामसूत्र (विषयभोगसम्बन्धी शिक्षाओंके प्रकार)के रचनेवाला मुनि.

वाद, (पु०) वद्+घञ् । तत्त्वबुभुत्सया कथनम् । असली बातके जाननेकी इच्छासे (आपसमें) कहना (बातचीत करना) । "प्रमाणतर्कसाधनोपालम्भः सिद्धान्ताविरुद्धः पञ्चावयवोपपन्नः पक्षप्रतिपक्षपरिग्रहो वादः" । प्रमाण और तर्करूप साधनावाले सिद्धान्तके अविरोधी, पांच (प्रतिज्ञा आदि) अवयवोंसे पूर्ण, दोनों पक्षोंमेंसे एकको स्वीकार करना । एक प्रकारका विचारस्वरूप वाक्यविशेष (कथा).

वादन, (न०) वद्+णिच्+कर्मणि ल्युट् । जो बजाया जाता है । मृदंग आदि बाजा । "भावे ल्युट्" मृदंग आदि बाजा बजाना । बाजेका शब्द.

वादर, (न०) वदरायाः कार्पास्याः विकारः+अण् । कपासका बनाहुआ । कपासके सूतसे बनाहुआ कपडा । सूती वस्त्र (कपडा).

वादरायण, (पु०) वदरी प्रधानं स्थानं वादरं तदयनं (स्थानं) यस्य । सदा वदरिकाश्रममें वास करनेहारा वेदव्यास । "स्वार्थे इञ्" । "वादरायणिः" । "अपत्ये इञ्" । व्यासदेवका पुत्र शुकदेव.

वादविवाद, (पु०) वादे विवादः । असली वातके जानेकी कथामें विवाद (झगडा) । तर्कवितर्क । दलीलबाजी । डिबेट । शास्त्रसंघर्ष.

वादाम, (न०) वातं अमति (हिनस्ति) । अम्+अण् । पृ० तस्य "मः" । जो वात (वाई) को मारता है । इस नामका फल.

वादित्र, (न०) वद्+णिच्+इत्र । मृदंगआदि वाजा.

वादिन्, (त्रि०) वदति । वद्+णिनि । वक्ता । कहनेहारा । अर्थी । किसी मतलबसे आया । विवादकर्ता । झगडा करनेहारा । विचार करनेके स्थानमें पहिले पक्षको उठानेहारा (कहनेहारा).

वाद्य, (न०) वद्+णिच्+यत् । वादनीय मृदंग आदि । वजानेलायक हरएक प्रकारका वाजा.

वा(बा)घ्, (विघात) विगाडना । तक्लीफ पहुंचाना । खिझाना । लाचार करना । भ्वा० आ० स० सेट् । वा (बा) धते । अवा(बा)धिष्ट.

वाध, (पु०) वा(बा)ध्+घञ् । रुकना । टूटना । प्रतिरोध (रुकावट) । प्रतिबंध । विघ्न होना । न्यायमें स्वाभाविक ज्ञान । "बाधा" इसी अर्थमें । और पीडा (दर्द) । (स्त्री०) । "ल्युट्" वाधनं (इसी अर्थमें) (न०).

वान, (न०) वन्+घञ् । सूका फल । सूका (त्रि०) । "वनस्येदं समूहो वा+अण्" । वनका वा वहुत वन । वनका (त्रि०) । उसका समूह (न०).

वानप्रस्थ, (पु०) वाने (वनसमूहे) प्रतिष्ठति । स्था+क । बहुतसे वनोंमें रहता है । मधूकवृक्ष । महुयेका दरख्त । पलाशका वृक्ष । "वनप्रस्थ एव स्वार्थे अण्" । एक प्रकारका आश्रम (गृहस्थ जब देखे कि वाल सपेद और मांस ढीला होरहा है तब स्त्रीको पुत्रोंके हवालेकर आप वनमें न कोमी साथही लेजाय) । तीसराया अथवा ३ आश्रम.

वानर, (पु०) वानं (वनसम्बन्धि) फलादिकं राति (गृह्णाति) रा+क । वनके फल आदिको लेता है । इस नामका पशु । बंदर । "वानरी" (स्त्री०).

वानरेन्द्र, (पु०) वानरः इन्द्र इव । वानर मानों इन्द्र है । सुग्रीव । ६ त० । वानरोंका मालिक । "वानरनाथ" आदि.

वानस्पत्य, (पु०) वनस्पतेरयं प्रतिरूपः पुष्पाज्जातफलत्वात् । वनसपतिके समान । (फूलसे फल निकलनेके कारण) । आम्र (आम) आदि वृक्ष.

वानायु, (पु०) वनायुदेश । अरवका मुल्क.

वानायुज, (पु०) वनायुदेशे जायते । जन्+ड । अरवी घोडा । अरवमें उपजा.

वानीर, (पु०) वन्+ईरन् । स्वार्थेऽण् । वेतस । वैंत । वञ्जुल द्रख्त.

वान्त, (त्रि०) वम्+क्त । उद्गीर्ण । उगल दिया । कैकिया गया । गमन कियाहुआ । "वान्ताशीत्युच्यते बुधैः" इत्युद्भटः.

वाप, (पु०) वप्+घञ् । तन्तुआदिका वपन । बुन्ना । बीजआदिका लगाना । बोना । और मूंडना (मुण्डन).

वापि-पी, (स्त्री०) वप्+इञ् वा ङीप् । "द्रोणसे दसगुना वापी" । एक प्रकारका जलाशय (तालाव) । बावडी । बौली । हरएक सरोवर । "वापीं स्नातुमितो गतासि" इति काव्यप्रकाशः.

वापीह, (पु०) वापीं (तत्रस्थजलं) जहाति । हा+क । जो बावडी वा तालावका पानी छोड देता है । चातक । पपीहा.

वाप्य, (न०) वाप्यां भवः+यत् । कुष्ठ ओषध । बौलीका । "वप्+ण्यत्" बोनेलायक (त्रि०).

वाम, (न०) वा+मन् । धन । मनोहर (सुन्दर) । प्रतिकूल (वर्खिलाफ) । बायां और अधम (नीच) (त्रि०) । कामदेव (महादेव) । तन्त्रका वैदिक आचारसे विरुद्ध मद्यपानरूप आचार (पु०).

वामदेव, (पु०) कर्म० । महादेव । शिवजी । एक ऋषिका नाम है.

वामन, (त्रि०) वम्+णिच्+ल्युट्-ल्यु वा । बौना । जिसकी उमर बडी और कद बहुत छोटा हो । छोटा । थोडा । दक्षिणदिशाका हाथी । अंकोटका द्रख्त । बलिको ठगनेके लिये प्रकटहुआ हरीका एक अवतार । पाणिनिसूत्रोंकी काशिकावृत्तिकरनेहारा एक पण्डित । "स्त्रियां ङीप्" "वामनीं मूर्तिमाददे" इति.

वामलूर, (पु०) वामं लुनाति । लू+कक् । वल्मीक । वल्मी.

वामलोचना, (स्त्री०) वामे सुन्दरे लोचने यस्याः । जिसकी आँखें खूबसूरत हैं । एक प्रकारकी स्त्री.

वामाचार, (पु०) वामः (वेदादिविरुद्धः) आचारः । वेद आदिसे विरुद्ध (वर्खिलाफ) आचार । तन्त्रमें कहाहुआ मद्य मांस आदिके सेवनवाला आचार । उल्टीचाल.

वामावर्त, (त्रि०) वामेन आवर्तते । आ+वृत्+अच् । बाईओरसे लौटनेवाला (पदार्थ) । "भावे घञ्" । बायें रास्तेसे लौटना.

वामी, (स्त्री०) वाम+ङीप् । अश्वी । घोडी । गिदडी । गधी । ऊंटनी.

वामोरू, (स्त्री०) वामौ सुन्दरौ ऊरू यस्याः+ऊङ् । जिसके सुन्दर पट्ट हैं । अच्छे पट्ठोंवाली औरत । "प्रशस्तोरुमती नारी."

वायवी, (स्त्री०) वायोरियं+यत् । स्त्रियां ङीप् । यलोपः । वायुसम्बन्धिनी । वायुकी । उसकी शक्ति । उत्तर और पश्चिमकी बीचकी दिशा.

वायव्य, (त्रि०) वायुः देवता अस्य । वायु+ण्य । वायु देवताका पशुआदि । "वायव्यं श्वेतं (छागं) आलमेत" इति श्रुतिः.

वायस, (त्रि०) वय एव+अण् । काक । कौआ.

वायसाराति, (पु०) ६ त० । पेचक । उल्लू । कौवेका शत्रु.

वायु, (पु०) वा+उण् । स्पर्श (छून) गुणवाला पाँच भूतोंमेंसे एक । उत्तर और पश्चिमकी बीच विदिशाकापति । एक देवता । शरीरका एक धातु.

वायुपुत्र, (पु०) ६ त० । वायुका बेटा । हनुमान् । और भीमसेन । "वायुसुत".

वायुपुराणम्, (न०) वायोः पुराणम् । वायुका पुराण । वायुपुराणग्रन्थ.

वायुभक्ष, (पु०) वायुं भक्षति । भक्ष+अण् । हवाको खाता है । सर्प । साँप । "ल्यु" "वायुभक्षण" इसी अर्थमें है.

वायुवर्त्मन्, (न०) वायोर्वर्त्म संचारमार्गो यत्र । हवाके चलनेका जहां रास्ता है । आकाश । आस्मा.

वायुवाह, (पु०) वायुना उह्यते । वह्+घञ् । हवासे उठाया जाता है । धूम । धूआं.

वायुवाहिनी, (स्त्री०) वायुं (देहस्थवायुं) वाहयति (संचारयति) । शरीरकी हवाको चलाता है । वह्+णिच्+णिनि । वायुको चलानेहारी शरीरकी शिरा (नाडी).

वायुसख, (पु०) वायोः सखा (सहचरः) । अच् समा० । हवाका मित्र (साथी) । अग्नि । आग.

वाय्वास्पद, (न०) ६ त० । वायुके विचरनेकी जगह । आकाश । आस्मान.

वार्, (न०) वृ+क्विप् । जल । पानी.

वार, (पु०) वृ+घञ् । समूह । अवसर (मौका) । द्वार (दर्वाजा) । शिवजी । क्षण (लहमा) । सूर्यआदि ग्रहोंके अधिकारवाला दिन । जैसे रविवार (वह दिन कि जिसका मालिक सूर्य है) । और यज्ञका पात्र (वर्तन) । क्रम । सिलसिला.

वारक, (त्रि०) वारयति । वृ+णिच्+ण्वुल् । प्रवृत्तिनिरोधक । हटानेवाला । रोकनेहारा । एक प्रकारकी घोडेकी गति (चाल) । और घोडेका विष.

वारण, (न०) वृ+णिच् ल्युट् । प्रवृत्तिप्रतिरोध । रोकना । हटाना । निषेध । रोक । मना करना । गौर हाथ आदिसे धारण करना (पकडना) । गज (हाथी) (पु०) । वारवाण । कवच । जिरह । संजोह (पु० न०).

वारणबुशा-सा, (स्त्री०) । वारणं पुष्णाति । पुष्+क-पृ० । हाथीको पुष्ट कर्ता है । कदली । केलेका द्रख्त । केला.

वारणवल्लभा, (स्त्री०) ६ त० । हाथीका पियारा । कदली । केला । हथिनी.

वारमुख्या, (स्त्री०) वारे (वेश्यावृन्दे) मुख्या । बहुतसी कञ्चनिओंमें असल । बहुत लोगोंसे आदर कीगई वेश्या (कञ्चनी).

वारयितृ, (पु०) चु० वृ+तृच् । हटानेवाला (पति) । मालिक । हटानेहारा (त्रि०).

वारयोषा, (स्त्री०) वारस्य (जनसमूहस्य) योषा (असाधारणत्वात्) । बहुतसे लोगोंकी पियारी (आम होनेसे) । वेश्या (कञ्चनी) ६ त० "वारवधू" इसी अर्थमें.

वारवाण, (पु० न०) वार्यते । वृ+घञ् । वारो वार्यो बाणो यस्य । तीर हटाना पडता है । कवच । जिरह । संजोह । संजोआ.

वारवाणी, (स्त्री०) वेश्या । मोलकी स्त्री । कुलटा । व्यभिचारिणी स्त्री.

वारंवारम्, (अव्य०) वृ+णमुल् द्वित्वम् । पौनःपुन्य । वार वार । कईवार.

वारांनिधि, (स्त्री०) वारां (जलानां) निधिः (आधारः) नि+धा+कि अलुक्समा० । बहुतसे पानिओंका आश्रय (समुद्र) । समुंदर.

वाराणसी, (स्त्री०) वरणा च असी च सीमात्वेन अस्ति अस्याः+अण् पृ० । वरणा और असी घाट जिसकी सीमा (हद्द) हैं । काशी । बनारस । "वाराणसी".

वाराह, (पु०) वराहस्य इदं प्रियत्वात्+अण् । वराहका यह (इसे पियारा होनेसे) । वराहसम्बन्धी (सूअरका) (त्रि०).

वाराहकल्प, (पु०) वाराहः कल्पः । साम्प्रतिक कल्प (सृष्टि) का नाम.

वाराही, (स्त्री०) वराहस्य इयं+अण् ङीप् । आठ मातृका(दुर्गा)ओंमें वराहकी शक्ति । वराहसे दबाई गई । और वराहकी स्त्री । सूअरी.

वारि, (न०) वृ+इन् । जल (पानी) । और हीबेर । "वार्यते अनया" वृ+णिच्+इन् वा ङीप् । जिससे रोका जाता है । गजबंधनी (हाथीके बांधनेका संगल) । वाणी । सरस्वती (स्त्री०).

वारिचर, (पु०) वारिषु चरति । चर्+अच् । पानीमें फिरता है । मत्स्य । मच्छ । हरएक पानीका जीव (त्रि०).

वारिज, (न०) वारिणि जायते । जन्+ड । पानीमें उपजता है । पद्म । कमलका फूल । लौंग । गौर सुवर्ण । एक लून । शंख (पु०) नोन.

वारित्र, (स्त्री०) वारिणः त्रायते । पानीसे बचाता है । छत्र । छाता.

वारिद, (न०) वारि ददाति । दा+क । पानीको देता है । मेघ (बादल) । और मोथा । जलदाता (पानी देनेवाला । (त्रि०).

वारिधारा, (स्त्री०) वारेः-रां धारा । धारप्रवाह वृष्टि (वर्षाका होना).

वारिधि, (पु०) वारीणि धीयन्ते अस्मिन् । धा+कि । ६ त० । जिसमें पानी रक्खे जाते हैं । समुद्र । इसी प्रकार "वारिनिधिः" आदि.

वारिमसि, (पु०) वारि (जलं) मसिः इव (नीलतापादकं) यस्य । जिसका पानी स्याहीके समान नीले रंगका हो । मेघ । बादल.

वारिराशि, (पु०) वारीणां राशयः अत्र । जहां पानीके ढेर हों । समुद्र.

वारिरुह, (न०) वारिणि रोहति । रुह्+क । पानीमें उगता है । पद्म । कमलका फूल । जो पानीमें उत्पन्न हुआ है (त्रि०).

वारिवाह, (पु०) वारीणि वहति । वह्+अण् । पानीको उठाता है । मेघ । बादल.

वारिश, (पु०) वारिणि (समुद्रजले) शेते । शी+ड । समुंदरके पानीमें सोता है । विष्णु । नारायण.

वारीश, (पु०) ६ त० । जलका मालिक । समुद्र । और वरुण । "वारिनाथ".

वारुण, (न०) वरुणस्येदं+अण् । वरुणका यह । पानी । जलं । वरुणका (त्रि०).

वारुणि, (पु०) वरुणकी सन्तान+इञ् । अगस्त्यमुनि (घडेसे उपजने और मैत्रावरुणकी सन्तान होनेसे).

वारुणी, (स्त्री०) वरुणः देवता अस्य । वरुणस्य इदं वा+अण् वा ङीप् । जिसका देवता वरुण है वा वरुणकी पश्चिम दिशा । मदिरा (शराब) । शतभिषा नक्षत्रवाली चैत्र (चेत) मासके कृष्णपक्षकी त्रयोदशी । वरुणकी स्त्री.

वार्त, (न०) वृत्ति+अण् । आरोग्य (तन्दुरुस्ती) । निरामय (किसी रोगका न होना) । और वृत्तिशील । जीविका-रोजीवाला (त्रि०) । दुर्गा । खेतीका काम । जीविका । जनश्रुति (हौरा-अफवाह) । वृत्तान्त (हाल) । और कालसे कियाहुआ भूतोंका नाश (स्त्री०).

वार्ताक, (पु०) वार्त (आरोग्यं) आकयति (गमयति) । अक्+णिच्-अण् । जो तन्दुरुस्ती (आरोग्य)को दूर कर्ता है । वार्ताकु । बेंगन । वताऊं । स्त्रियां ङीप्-पृ० वत्वं । "वार्ताकुः" (स्त्री०) । "वार्ताकुरेषा गुणसम्प्रयुक्ता" इति वैद्यकम्.

वार्तावह, (पु०) वार्ता आवहति । आ+वह्+अण् । बातको लेजाता है । खेती वा व्यापारपर जीनेवाला । एक प्रकारका बनियां वा सेठ वा व्यापारी । वृत्तान्तवाहक । हाल पहुंचानेहारा (त्रि०) । दूत.

वार्तिक, (न०) वृत्तिरूपेण कृतो ग्रन्थः+ठक् । वृत्तिस्वरूपसे रचागया ग्रन्थ । सूत्रानुक्तार्थाविष्कारक ग्रन्थविशेष । सूत्रमें न कहेगये आदि अर्थको प्रकाश करनेहारा एक ग्रंथ । "उक्तानुक्तदुरुक्तार्थव्यक्तकारि तु वार्तिकम्".

वार्तिककार, (पु०) वार्तिकं करोति । वार्तिक (विस्तृतवर्णन) करनेवाला । कात्यायन मुनिका नाम.

वार्धक्य, (न०) वृद्धानां समूहः तस्य भावः कर्म वा+ष्यञ् । कुक् च । बुढापा । बूढेका काम । वृद्धत्व । बूढापन । "बूढोंका समूह" वार्धक (न०).

वार्धि, (पु०) वारि (जलानि) धीयन्ते अत्र । धा+कि उप० । जहां पानी रहते हैं । समुद्र । समुंदर.

वार्धुषि, (पु०) वृद्ध्या जीवति+इण् । सूदपर जीनेवाला । व्याजडिया । वृद्ध्याजीवी । "स्वार्थे कन्".

वार्धुषिन्, (त्रि०) वृद्धि+अस्त्यर्थे इनि । नि० वार्धुषि भवः । वृद्ध्याजीवी । व्याजपर जीनेवाला (व्याजडिया) । सूदखोर.

वार्धुष्य, (न०) वार्धुषेर्भावः+ष्यञ् । धान्यादिवर्धनोपाय । धान आदिके बढनेका उपाय । ऋणदान । कर्जदेना.

वार्ध्रीणस, (पु०) वारि (जलं) धयति । धा+क्विप् । वार्ध्रीणसा (नासिका) यस्य-णत्वं । पृ० जिसकी नाकमें पानी भरा रहता है । गण्डक (गैंडा) । पृ० "वार्ध्रीणसः" एक पशुविशेष.

वार्मण, (न०) वर्मणां समूहः+अण् । कवचसमूह । बहुत संजोह.

वार्मुच्, (पु०) वारि (जलानि) मुञ्चति । मुच्+क्विप् । पानीको छोडता है । मेघ । बादल.

वार्षिक, (त्रि०) वर्षे वर्षासु वा भवः+ठञ् । वत्सरभव । बरिसमें हुआ । वर्षाकालभव । बर्सातमें हुआ । बर्सातका । बरसके पीछे करनेलायक पूजा । (स्त्रियां ङीप्) । "शरत्काले महापूजा क्रियते या च वार्षिकी" इति चण्डी.

वार्हद्रथ-थि, (पु०) बृहद्रथस्य अपत्यं+अण् । इञ् वा । बृहद्रथ राजाकी सन्तान । जरासंध राजा.

वार्हस्पत्य, (न०) बृहस्पतिना प्रोक्तं अधीते+ञ्य । बृहसतिसे कहेहुएको पढता है । चार्वाक । एक प्रकारका नास्तिक । "तेन प्रोक्तं तस्येदं वा+ञ्य" उससे कहागया वा उसका । नीतिशास्त्र । बौद्धोंका शास्त्र । बृहसतिका (त्रि०).

वाल्क, (न०) वल्केन निर्वृत्तं+अण् । वक्कलका बनाहुआ कपडा.

वाल्मीकि, (पु०) वल्मीके भवः+इञ् । बांबीमें हुआ । रामायणके ग्रंथको बनानेहारा मुनिविशेष.

वाल्मीक-कि, (पु०) वल्मीके भवः+अण्-इञ् वा । वल्मीकमें हुआ । मुनिविशेष.

वावदूक, (त्रि०) वद्+यङ्+लुक् ऊकञ् । बहुत बोलनेहारा । बहुवदनशील । वक्ता । कहनेवाला.

वावृत्, संभक्ति । चुना । पियार करना । तालाशकरना । दिवा० आ० सक० सेट् । क्त्वा वेट् । वावृत्यते । अवावर्तिष्ट । "ततो वावृत्यमानासौ रामशालां न्यविक्षत" इति भट्टिः.

वाश्, तिरश्चां शब्दः (पशुपक्षिओंका शब्द) अक० । आह्वान (बुलाना) । सक० दिवा० आत्म० सेट् । वाश्यते । अवाशिष्ट । "उद्वाश्यमाना पितरम्" इति भट्टिः.

वाशित, (न०) वाश्+भावे क्त । पक्षिओंका शब्द । परिंदोंकी आवाज और आह्वान । बुलाना । पुकारना.

वाशिता, (स्त्री०) वाश्+क्त । करिणी । हथिनी । हरएक औरत (स्त्री०).

वाशि(सि)ष्ठ, (न०) वशि(सि)ष्ठस्येदं तेन प्रोक्तं वा+अण् । वशि(सि)ष्ठका वा उस्से कहाहुआ । वसिष्ठसे रचाहुआ एक उपपुराण । एकयोगविद्याका शास्त्र । वशि(सि)ष्ठका (त्रि०) । गोमती नदी (स्त्री०).

वाश्र, (न०) वाश्+रक् । गृह । घर । चतुष्पथ (चुरस्ता) चौराहा । और दिवस (दिन) (पु०).

वाष्प-स, (पु०) वा+प-षु (सु) क्व । ऊष्मा । भाफ । लोहा । और चक्षुर्जल (आंखका पानी) आंसु । "वाष्पिका".

वास्, सुरभीकरण (खुशबूदार करना) । चु० उ० सक० सेट् । वासयति-ते । अववासत्-त.

वास, (पु०) वस्+घञ् । गृह । घर । वस्त्र । कपडा । अवस्थान । रहना । "वास्+अच्" वासक । और सुगंध । खुशबू.

वासक, (पु०) वास्+ण्वुल् । इस नामका वृक्ष । बांसा द्रख्त । "येन केन प्रकारेण वासकः कासनाशकः" वैद्यकम्.

वासकसज्जा, (स्त्री०) एक प्रकारकी नायिका (स्त्री) "जो अपने सजेहुए मंदिरमें सजधजकर तयार रहती है.

वासगृह, (न०) वासयोग्यं गृहम् । रहनेलायक घर । मध्यगृह । घरके बीचका कमरा (प्रायः जहां शयन आदि कर्ते हैं).

वासतेयी, (स्त्री०) वसतये हिता+ढक् । रहनेके लिये भली । रात्रि । रात । वसतियोग्य (रहनेलायक) (त्रि०) । "वनेषु वासतेयेषु" इति भट्टिः.

वासन, (न०) वास्+ल्युट् । सुरभीकरण (खुशबूदार करना) । धूपन । धूप देना । वस्त्र । कपडा । वासस्थान । रहनेकी जगह । और ज्ञान (जाना).

वासना, (स्त्री०) वास्+युच् । प्रत्याशा । भरोसा । देहात्ममतिजन्यमिथ्यासंस्कारः । शरीरमें आत्माकी समझसे उपजा झूठा खयाल (शरीरही आत्मा है) । खुशबूदार करना.

वासन्त, (पु०) वसन्तस्य इदं, वसन्ते भवः वा+अण् । वसन्तका वा उसमें हुआ । वसन्तका पियारा । ऊट् । और कोइल । वसन्तमें हुआ । मलय पहाडकी वायु । मुद्ग (मूंग) । मदनका द्रख्त । उस समयमें हुआ (त्रि०) । इस समय पूजनेलायक दुर्गा (स्त्री०).

वासभवनं-मन्दिरं-सदनम्, (न०) (वासस्य भवनं) निवास (रहने) का घर । घर (गृह).

वासयष्टि, (स्त्री०) वासाय यष्टिः । कबूतर आदि पक्षिओंके निवासके लिये लकडी वाछतडी.

वासर, (पु० न०) वस्+अरन् । दिवस (दिन) । एकप्रकारका नाग (पु०).

वासवदत्ता, (स्त्री०) वासवदत्तां अधिकृत्य कृतो ग्रन्थः+अण् । आख्यायिकाअर्थमें उस (प्रत्यय)का लुक् (लोप होता है) । वासवदत्ताके चरित्रको प्रसिद्धकरनेहारा एक ग्रंथ । ३ त० । इन्द्रसे दीगई (त्रि०).

वासस्, (न०) वस्+असि । वस्त्र । कपडा.

वासागार, (न०) वासयोग्यं आगारम् । रहनेलायक घर । गृहमध्य । घरके बीचका कमरा.

वासि-सी, (स्त्री०) वस्+इञ्-वा ङीप् । कुठारभेद । एक प्रकारका कुहाडा । रहना.

वासित, (त्रि०) वास्+क्त । सुरभीकृत । खुशबूदार किया हुआ.

वासित, (त्रि०) वास्+क्त । सुगंधित । खुशबूदार किया गया । पौशाक पहिराया गया । प्रसिद्ध हुआ.

वासु, (पु०) वास्+उण् । विष्णु । नारायण.

वासुकि, (पु०) (वसुना) रत्नेन कायति । कै+क-स एव इञ् । जो रत्नसे शब्द कर्ता है । सर्पराज । सांपोंका राजा.

वासुदेव, (पु०) वसुदेवस्य अपत्यं+अण् । वसुदेवकी सन्तान । विष्णु.

वासुरा, (स्त्री०) वस्+उरण् पृथिवी । (जमीन) । रात्रि (रात) । स्त्री (औरत) । हथिनी.

वासू, (स्त्री०) वास्+ऊ । नाट्योक्तिमें बाला (सोलहवर्षकी लडकी).

वास्तव, (न०) वस्तु एव+अण् । चीजही । सत्यभूत पदार्थ । असली । ठीक ठीक.

वास्तविक, (त्रि०) वस्तुतो निर्वृत्तं+ठक् । वस्तुसे बना । स्वतःसिद्ध । आपही बना । सत्यभूतपदार्थ । असली चीज । ठीक ठीक.

वास्तव्य, (त्रि०) वसति । वस्+तव्य । नि० । वासकर्ता । रहनेहारा । निवास करनेलायक जगह । और वसति (रहना) (पु०).

वास्तु, (पु०) वस्+तुण् । वासयोग्यभूमि । रहनेके लायक जमीन । बात्थूका साग (शाक).

वास्तुयाग, (पु०) वास्तोः यागः । घरकी नींह (जड) रखनेके समय किया गया एक प्रकारका यज्ञ.

वास्तेय, (त्रि०) वस्तेरिदं, वस्तये हितं वा+ढक् । वस्ति-सम्बन्धी । और रहनेलायक.

वास्तोष्पति, (पु०) ६ त० । अलुक्समा० । वास्तुभूमि-पति । घरका मालिक । और इन्द्र.

वास्त्र, (पु०) वस्त्रेण आवृतो रथः+अण् । कपडेसे भली-भांति ढांकाहुआ रथ (गाडी).

वाहृ, यत्न (कोशिशकरना) । भ्वा० आ० अक० सेट् । वाहते । अवाहिष्ट.

वाह, (पु०) उह्यतेऽनेन । वह्+घञ् । जिस्से उठाया जाता है । अश्व (घोडा) । एक प्रकारका परिमाण (माप) ४ भार.

वाहन, (न०) वाहयति अनेन । वह्+णिच्+ल्युट् । जिस्से पहुंचाता है । रथआदि सवारी.

वाहिनी, (स्त्री०) वाहः अस्ति अस्या+इनि ङीप् । सेना । फौज । सवारीवाली । "वहति-वह्+णिनि" नदी । दर्या.

वाहिनीपति, (पु०) ६ त० । सेनाका मालिक । और । समुद्र.

वाहीक, (पु०) वह्+ईकण् । एकप्रकारकी जाति (कौम) । जाट । "गौर्वाहीकः" इति अलंकारः । एक देशका नाम.

वाहु, (पु०) वह्+उण् । भुज । बां । एक अवयव (अंग) बाजु । एकप्रकारकी रेखा । खत.

वाहुमूल, (न०) ६ त० । भुजाका मूल । दोनों बाजुओंकी जड । कक्ष । कांख । कच्छ.

वाह्य, (न०) वाहं (चालनं) अर्हति-यत् । वह्+ण्यत् वा । चलायाजाता है । अश्वादि यान । घोडा आदि सवारी । और वानर (बंदर) । "वहिर्भव+ष्यञ्" । वहिर्भव (वाहिरका) (त्रि०).

वाह्येन्द्रिय, (न०) वाह्यपदार्थानां (शब्दादीनां) ग्रहण-योग्यं इन्द्रियं । बाहिरशब्द आदि पदार्थोंको ग्रहण करने-लायक इन्द्रिय । शब्दआदिका प्रत्यक्ष करनेहारा श्रोत्र (कान) आदि इन्द्रिय.

वाह्लि(ह्री)क, (पु०) वह्+णिण् । स्वार्थे कन् । एक-देश । उसदेशमें उपजा । कुङ्कुम (केसर) । हिङ्गु (हींग) (न०).

वि, (अव्य०) वा+कि । नियोग । विशेष निश्चय । अस-हन । निग्रह । हेतु । अव्याप्ति । ईषत् । परिभव । शुद्धि । अवलंबन । ज्ञान । गति । आलस्य । और पालन (यह धातु और संज्ञावाचक शब्दोंके पहिले प्रायः लगता-और अनेक अर्थ बदलता है । जैसे क्री-खरीदना-विक्री-वेचना-स्मृ-विस्मृआदि) विगत (दूर होगया) वा विशिष्ट (बढगया) । विहग (पक्षी) (पु०).

विंश, (त्रि०) विंशतेः पूरणः विंशति+डट् । जिस्से वीसकी संख्या (गिनती) पूरी हो जाती है । वीसवाँ.

विंशक, (न०) विंशतेः अवयवः । इवुन् । वीसकी संख्या । वीस । "विंशतिः अधिका दीयते अस्मिन् शते आयो-लाभो वृद्धिर्वा इवुन्" । एकसौके पीछे बीसक लाभ (नफा) आदि.

विंशति, (स्त्री०) द्वे दशती । नि० । दो दसकी संख्या । वीस । उस संख्यावाला एकव० । संख्याविशेषके अर्थमें तो सव वचन होते हैं । द्वे विंशती । तिस्रः विंशतयः.

विंशतिक, (त्रि०) विंशतेर्योग्यः । विंशतियोग्य । वीसके लायक.

विंशतितम, (त्रि०) विंशतेः पूरणः+तमट् । विंश । वीसवां । स्त्रीलिङ्गमें ङीप्.

विकच, (पु०) विगताः कचा यस्य । जिसके वाल नहिं । क्षपण (नांगा) । बुद्धोंका संन्यासी । "विशिष्टाः कचा यत्र" । जहां बहुत वाल हैं । ध्वज । केतु । झंडा । "वि+कच्+अच्" विकसित । खलाहुआ । ६ ब० । केशशून्य । जिसके केश नहिं) (त्रि०) । महाश्रावणिका (स्त्री०).

विकट, (पु०) वि+कट्+अच् । विस्फोटक । फोडा । जखम । "वि+कटच् । विशाल (फैलाहुआ । विकृत । विगडाहुआ । सुन्दर (खूवसूरत) और दन्तुर (नीचे ऊपर) (त्रि०).

विकण्टक, (पु०) विगतः कण्टकः अस्य । जिसका कांटा जाता रहा । एक प्रकारका वृक्ष । शत्रुहीन (वगैर दुश्मनके (त्रि०).

विकत्थन, (न०) वि+कत्थ्+ल्युट् । आत्मश्लाघा । अपनी सराहना । खुदपसंदी+युच् । अपनी श्लाघा (बढाई) करनेवाला (त्रि०)

विकर्तन, (पु०) वि+कृत्+ल्यु । सूर्य । सूरज । अर्क-वृक्ष । आकका दरख्त.

विकर्मस्थ, (पु०) (त्रि०) । विकर्म (निन्दिताचारे) तिष्ठति । स्था+क । कुत्सिताचाररत । निन्दावाले आचार (चालचलन) में लगाहुआ । बदचलन.

विकल, (त्रि०) विरुद्धा कला यस्य । विरुद्धकलावाला, विह्वल । घवरायाहुआ । स्वभावसे हीन । और कलाहीन (व्याकुल) । विगडाहुआ.

विकलकरण, (त्रि०) विकलानि करणानि यस्य । शिथिल (ढीले) अंगोंवाला व्याकुल अंगोंवाला.

विकलाङ्ग, (त्रि०) स्वभावहीनं अङ्गं अस्य । स्वभावसे न्यूनाधिकाङ्ग (कमजियादा) अंगवाला । विगडेहुए शरीरवाला.

विकल्प, (पु०) विभिन्नः कल्पः । जुदा प्रकार । भ्रान्ति-हेतुकल्पन । संदेह । शक । विविधकल्पन । कईतरहका खयाल । पक्षतः प्राप्त । दो तरहसे होनेवाला.

विकश्व(स्व)र, (त्रि०) वि+कश् (स्)+ष्वरच् । प्रकाशशील । चमकनेवाला.

विकषा, (स्त्री०) विशेषेण कष्यते असौ । कष्-क । मञ्जिष्ठा । मजीठ.

विकसित, (त्रि०) वि+कश् (स्)+क्त । प्रकाशयुक्त । खिलाहुआ.

विकार, (पु०) वि+कृ+घञ् । प्रकृतेरन्यरूपपरिणामः । स्वभावका औरतरहसे बदलना । तवदीली । बीमारी । रोग.

विकारहेतु, (पु०) विकारस्य हेतुः । चित्तके विकृत (विगडने) होनेका कारण (साधन-सबब).

विकारिन्, (त्रि०) विकार+इनि । विकारवाला । बदलनेवाला । विगडजानेवाला.

विकाल, (पु०) विरुद्धः कालः । विगडाहुआ-बखिलाफ (देवता और पितरोंआदिका काम न करनेलायक) समय । राक्षसीनामक वेला । राक्षसोंका समय । दिनके अन्तका समय । सांझ.

विकाश, (न०) विरुद्धः काशः । रहः । अकेले । प्रकाश । चमक । आकाश । आस्मान । स्वर्ग.

विकाशिन्, (त्रि०) वि+काश्+णिनि । प्रकाशशील । चमकनेवाला । विकस्वर । खिलाहुआ.

विकिर, (पु०) वि+कृ+क । विहग । परिंदा । और कुशा । "विकीर्यते-क" । विघ्न दूर करनेकेलिये फेंकीगई श्वेतसर्षप (गोर सरिओं) आदि.

विकिरण, (न०) वि+कृ+ल्युट् । नि० । क्षेपण । फेंकना । हिंसन । मारना । और ज्ञान (जान्ना) । आकका वृक्ष (पु०) ६ व० । किरणसेरहित (वगैर) (त्रि०).

विकीर्ण, (त्रि०) वि+कृ+क्त । विक्षिप्त (फेंकाहुआ) । फेंकागया.

विकुक्षि, (पु०) सूर्यवंशमें इक्ष्वाकु राजाका पुत्र । एक राजा.

विकुर्वाण, (त्रि०) वि+कृ+शानच् । हर्षके हेतु (खुशीका सबव विवाह पुत्रकी उत्पत्ति इत्यादि) से जिसके रोयाँ खड़े होगये हैं । विकृतिप्राप्त । विगडरहा.

विकृत, (त्रि०) वि+कृ+क्त । बीभत्स । निन्दावाला होगया । मलिनीकृत । मैला होगया । और रोगयुक्त । बीमार होगया.

विकृति, (पु०) वि+कृ+क्तिच् । रोग । बीमारी.

विक्रम, (पु०) विशेषेण क्रामति । बहुत उत्साह कर्ता है । वि+क्रम्+घञ्-अच् वा । त्रिविक्रम विष्णु (वामनावतार) । विक्रमादित्य राजा । "भावे घञ्" क्रमण । पाँव रखना । "करणे घञ्" चरण (पांव) । वहुत वहादुरी (शौर्यातिशय) । और सामर्थ्य (ताकत) । ६० वर्षोंमेंसे एक वर्ष.

विक्रमादित्य, (पु०) विक्रमेण आदित्य इव । सामर्थ्यसे मानों सूर्य है । इस नामसे प्रसिद्ध एक राजा (इसके समयमें संस्कृतका बहुतही प्रचार था-इसीसे संवत् चलता है) । "विक्रमार्क" यही अर्थ.

विक्रमिन्, (पु०) वि+क्रम्+णिनि । सिंह (शेर) और विष्णु । विक्रमयुक्त (बहादुर) (त्रि०).

विक्रय, (पु०) वि+क्री+अच् । मोल लेकर दूसरेके स्वत्व- (कवजे) को प्राप्त करनेहारा व्यापार । वेचना.

विक्रयानुशय, (पु०) विक्रयस्य अनुशयः (पश्चात्तापः) । वेचकर पीछे पछतावा.

विक्रयिक, (पु०) विक्रयः अस्ति अस्य+ठन् । विक्रेता । वेचनेवाला.

विक्रयिन्, (त्रि०) वि+क्रि+णिनि । विक्रयकर्ता । वेचनेवाला.

विक्रान्त, (पु०) वि+क्रम्+क्त । सिंह (शेर) । और शूर (बहादुर) । "भावे क्त" । विक्रम । बहादुरी.

विक्रान्ति, (स्त्री०) वि+क्रम्+क्तिन् । पादविक्षेप । पांवपसारना । घसना । घोडेकी गति (उछलना) । शूरता । बहादुरी । शक्ति । प्रवेश.

विक्रिया, (स्त्री०) वि+कृ+श । विकार । बदलना । अन्यथास्थित (और शकलमें ठहिर रही) वस्तुका अन्यथा परिणाम (औरतरहसे बदलना).

विक्रेय, (त्रि०) वि+क्रि+यत् । विक्रययोग्य पदार्थ । वेचनेलायक चीज.

विक्लव, (त्रि०) वि+क्लु+क्त । व्याकुलीभाव । घवराहट । घवरायाहुआ.

विक्लिन्न, (त्रि०) वि+क्लिद्+क्त । आर्द्र (गीला) । शीर्ण (टूटाहुआ) और जीर्ण (पुराना).

विक्षेप, (पु०) वि+क्षिप्+घञ् । त्याग (छोडना) । प्रेरण (चलाना) और दूर करना । फेंकना.

विक्षेपशक्ति, (स्त्री०) विक्षेपस्य (दूरीकरणस्य) जनिका शक्तिः । दूर करनेको उत्पन्न करनेहारी शक्ति । वेदान्तमें कहीगई एक प्रकारकी अविद्याकी ताकत । वह शक्ति जो ब्रह्माण्डको रच देती है.

विख, (त्रि०) विगता नासिका यस्य । खादेशः । गतनासिक । जिसका नाक दूर होयगा । नककटा । "ख्यादेशः" । "विख्य" भी.

विख्यात, (त्रि०) विशेषेण ख्यातः (प्रसिद्धः) । बहुत मशहूर हुआ.

विगणन, (न०) विशेषेण गणनम् । गण्+ल्युट् । बहुत गिन्ना । ऋण (कर्जा) चुका देनेके लिया रकमका गिन्ना.

विगत, (त्रि०) वि+गम्+क्त । प्रमादरहित । खवर्दार । विशेषगत । बहुत गया । और अपगत (दूर गया).

विगतार्तवा, (स्त्री०) विगतं आर्तवं रजो यस्याः । गतरजस्का स्त्री । वह स्त्री कि जिसे महीनेका ऋतु नहिं होता.

विगम, (पु०) वि+गम्+घञ् । नाश । और अपाय । दूर होना.

विगर्हण, (न०) वि+गर्ह्+ल्यु । निन्दन । निन्दाकरना । मलामत.

विगर्हित, (त्रि०) वि+गर्ह्+क्त । निन्दा कियाहुआ । और रोकाहुआ । "भावे क्त" निन्दा । मलामत.

विगाढ, (त्रि०) वि+गाह्+क्त । स्नात (नहायाहुआ) । कृतावगाहन । पार उतरा हुआ.

विगान, (न०) वि+गै+ल्युट् । निन्दा । मलामत । हजो.

विगीत, (त्रि०) वि+गै+क्त । निन्दित । निन्दा कियाहुआ.

विगीति, (स्त्री०) वि+गै+क्तिन् । निन्दा । हजो.

विगुण, (त्रि०) विरुद्धो गुणोऽस्य । विरुद्धगुणवाला । गुणरहित.

विगूढ, (त्रि०) वि+गुह्+क्त । गर्हित । निन्दा कियागया । और गुप्त । छिपाहुआ.

विगृहीत, (त्रि०) वि+ग्रह्+क्त । गृहीत । पकडाहुआ । व्याकरणमें कहाहुआ विग्रहवाक्यका पद.

विग्र, (त्रि०) विगता नासिका अस्य । ग्रादेशः । विगतनासिक । जिसका नाक नहिं । नककटा.

विग्रह, (पु०) वि+ग्रह्+अच् । देह (शरीर) । विभाग (हिस्सा) । युद्ध (लडाई) । विशेषज्ञान (बहुतजाना) । समासके अर्थको जतानेहारा वाक्य । "समासार्थावबोधकं वाक्यं विग्रहः".

विघटिका, (स्त्री०) विभागः घटिकायाः । घडीका हिस्सा । घडीका साठवां हिस्सा । एक पल.

विघटित, (त्रि०) वि+घट्+क्त । वियोजित । जुदा किया हुआ । विशेषेण रचित । ज्यादातर बनायागया.

विघट्टित, (त्रि०) विघट्ट+क्त । चालित । हिलाया हुआ । चलायागया । और वियोजित । जुदा कियाहुआ.

विघस, (पु०) वि+अद्+घञ् । भोजनशेष । खानेका बाकी । आहार (खाना) । सिक्थक (मोम) (न०).

विघसाशिन्, (त्रि०) विघसं (देवतादिदत्तशेषं) अश्नाति । अश्+णिनि । देवताआदिको चढाकर बचेहुएको खाता है । देवता और पितरोंके कार्यसे अनन्तर बचेहुएको खानेहारा.

विघात, (पु०) वि+हन्+क्त । व्याघात । नाश । आघात । चोट करना (मारना) । रुकावट । विघ्न.

विघातिन्, (त्रि०) वि+हन्+घिनुण् । निवारक । हटानेवाला । नाशकरनेहारा । और नष्ट । नाशहोगया । "विघातिकः".

विघ्न, (पु०) वि+हन्+क । व्याघात । अन्तराय । रोक । एक बूटी (कृष्णपाकफला).

विघ्ननाशक, (पु०) ६ त० । विघ्नोंके दूर करनेहारा । गणेशजी ।

विघ्नराज, (पु०) विघ्ने राजते+अच् । विघ्नमें चमकता है । गणेशजी । "विघ्नेश" आदि । इसी अर्थमें.

विघ्नित, (त्रि०) विघ्नो जातोऽस्य+इतच् । जातविघ्न । जिसे रोक होगई.

विच्, (पृथक् करना) जुदा करना । रु० जु० अक० अनिट् । विनक्ति-विवेक्ति-विङ्क्ते-विविक्ते । अविचत्-अवैक्षीत्.

विचक्षण, (पु०) वि+चक्ष्+ल्यु । पण्डित । चतुर । नागदन्ती । (स्त्रियां टाप्).

विचयन, (न०) वि+चि+ल्युट् । अन्वेषण । तालाश । पुष्पादिचयन । फूलआदि चुना.

विचर्चिका, (स्त्री०) वि+चर्च्+ण्वुल् । पामा । खुजली । खुर्क । एक प्रकारका रोग.

विचार, (पु०) वि+चर्+घञ् । तत्त्वनिर्णय । असली बातका फैसला । उसके अनुसार वाक्यका समूह.

विचारज्ञ, (त्रि०) विचारं जानाति+ज्ञा+क । विचारको जाननेहारा । जज्ज । न्यायाधीश ।

विचारण, (न०) वि-चर्+णिच्+ल्युट् । मीमांसा विचार । सोच । "युच्" । "विचारणा" वही अर्थ.

विचारभू, (स्त्री०) (विचारस्यभूः) न्यायका सिंहासन । विशेषतः यमराजका न्यायसिंहासन.

विचारशील, (त्रि०) विचारे शीलं यस्य । विचार करनेके स्वभाववाला । विचारका प्यारा । विचारवान् । चतुर.

विचारस्थलम्, (न०) विचारस्य स्थलम् । विचारका स्थान । तर्कशास्त्रमें विचारणीय विषय.

विचारित, (त्रि०) वि+चर+त्र । सोचागया । विचारागया । चिन्तन किया गया । पूछागया । परीक्षा कियागया । विवाद किया गया.

विचि–ची, (पु० स्त्री०) विच्-इक् । तरंग (लहर) (स्त्री०) वा ङीप्.

विचिकित्सा, (स्त्री०) वि+कित्+स्वार्थे सन् अ । संदेह । शक.

विचित्र, (न०) विशेषेण चित्रं । बहुतही अजीब । कर्बुरवर्ण । रंगबरंगी । डब्बखडब्बा । उसवाला और आश्चर्य (त्रि०).

विचित्रवीर्य, (पु०) शान्तनुराजाका बेटा । एक राजा । अजीब पराक्रमवाला (त्रि०).

विचित्राङ्ग, (पु०) विचित्रं अङ्गं यस्य । अजीब अंगवाला । चीता । एक प्रकारका भेडिया (व्याघ्र) । आश्चर्यशरीरवाला (त्रि०).

विचेतस्, (त्रि०) विरुद्धं (दुष्टं) विशिष्टं वा चेतो यस्य। दुष्ट (बुरे) दिलवाला। विशेष (ज्यादा) दिलवाला.

विचेष्टित, (त्रि०) विगतं चेष्टितं अस्य। चेष्टाशून्य। बेहर्कत। जो हिलजुल नहिं सक्ता। वि+चेष्ट+भावे क्त। विशेषचेष्टा (ज्यादा हर्कत) (न०).

विच्छ्, दीप्ति (चमकना)। चु० उ० स० सेट्। विच्छयति। अविविच्छत्-त.

विच्छ्, (गति) जाना। तु० पर० आयपक्षे उ० सक० सेट्। विच्छायति-ते विच्छति। अविच्छायीत्-अविच्छायिष्ट-अविच्छीत्.

विच्छन्दक, (पु०) विशिष्टः छन्दो यत्र+कप्। ईश्वर। गृहविशेष। मंदिर.

विच्छाय, (न०) वीनां (पक्षिणां) छाया (नपुंसकत्वं)। पक्षिओंके समूहकी छाया। "विगता छाया यस्य" जिसकी छाया जातीरही। छायाके विना (त्रि०).

विच्छित्ति, (स्त्री०) वि+छिद्+क्तिन्। अंगराग। एक प्रकारका चंदन। एक प्रकारका हार। छेद। टूटना। विनाश। विच्छेद। स्त्रियोंकी चेष्टाविशेष.

विच्छिन्न, (त्रि०) वि+छिद्+क्त। विभक्त। बांटाहुआ। समालब्ध (पायाहुआ)। "भावे क्त" छेदन। काटना.

विच्छेद, (पु०) वि+छिद्+घञ्। वियोग। विछोडा। सन्ततिसे रहित होना। और विभाग। अलग.

विज्, (पृथक्करण) जुदा करना। जु० उ० स० अनिट्। वेवेक्ति-वेविक्ते। अविजत्-अविक्षीत्-अविक्त.

विज्, (डरना और कांपना) रु० प० अक० सेट्। विनक्ति। अविजीत्.

विजन, (त्रि०) विगतो जनो यस्मात्। निर्जन। एकान्त। अकेली जगह.

विजनन, (न०) वि+जन्+ल्युट्। गर्भमोचन। गर्भका छोडना। प्रसव। उत्पन्न होना। उद्भव। निकलना.

विजय, (पु०) वि+जि+कर्तरि अच्। अर्जुन। विमान। और यमराज। "भावे अच्" जीत (जय)। परिभवपूर्वक ग्रहण। बेइज्जती करके पकडना.

विजयकुञ्जर, (पु०) विजयाय कुञ्जरः। जीतकेलिये हाथी। राजवाहनगज। वह हाथी कि जिसपर राजा चढता है.

विजयसिद्धि, (स्त्री०) विजयस्य सिद्धिः। विजय (जीत)-की सिद्धि (कामयाबी).

विजया, (स्त्री०) अस्सु (आश्विन)के शुक्लपक्षकी दशमी। उमा (पार्वती) की एक सखी (सहेली)। दुर्गा। जयन्ती। शेफालिका। मंजिष्ठा (मजीठ)। भंगा। भांग। सिद्धि। एक द्वादशी। एक प्रकारकी सप्तमी.

पद्म० ५७

विजयादशमी, (स्त्री०) विजयकर्त्री दशमी। अश्विन (अस्सू)-के शुक्लपक्षकी दशमी। इसी दिन श्रीरामजीनें रावणका विजय कियाथा। यही दुसहरा नामसे छुट्टी (अवकाश)-का दिन मनाया जाताहै.

विजातीय, (त्रि०) विभिन्नां जातिं (धर्मं) अर्हति+छ। विभिन्नधर्मावलम्बी। जुदा धर्मको पकडनेहारा। औरजातका। जुदा किसम.

विजिगीषा, (स्त्री०) विजेतुं इच्छा। वि+जि+सन्+अ। जीतनेकी खाहिश। अपना पेट भरनेकी इच्छासे निंदाके लायक काममें लगना। वैसा काम करके उसकी बाबत निन्दाका खयाल न करना। विजयेच्छा। और जीतनेकी अभिलाषा।-उः। "विजिगीषुः"। जीतकी इच्छावाला (त्रि०).

विजिगीषु, (त्रि०) वि+जि+सन्-उ। जीतनेकी इच्छावाला.

विजित, (न०) विज्+इन्। वन। जंगल। वृक्षसमूह। बहुत दरख्त.

विजृम्भण, (न०) वि+जृभि+ल्युट्। विकाश। खिलना। उबासी.

विजृम्भित, (त्रि०) वि+जृभि+क्त। विकसित। खिलाहुआ। "भावे क्त"। प्रकाश। चमक.

विज्ञ, (पु०) विशेषेण जानाति। बहुत जानता है। ज्ञा+क। प्रवीण। पण्डित। चतुर। चालाक.

विज्ञप्ति, (स्त्री०) वि+ज्ञा+पुक्+क्तिन्। सादर प्रार्थना। विज्ञापन। नोटिस.

विज्ञात, (त्रि०) वि+ज्ञा+क्त। ख्यात। मशहूर। ज्ञात। जानाहुआ.

विज्ञान, (न०) वि+ज्ञा+ल्युट्। ज्ञान। जाना। काम। शिल्प (कारीगरी) आदिका ज्ञान। वेदान्तमें कहाहुआ अविद्याकी वृत्तिका भेद.

विज्ञानमयकोश, (पु०) विज्ञानात्मकः कोष इव आवरकत्वात्। विज्ञानस्वरूप मानों कोष (म्यान) है (ढांपनेके कारण)। ज्ञानेन्द्रियसहित बुद्धिकी वृत्तिका भेद। ज्ञानकी इन्द्रियें और अकल.

विज्ञानिक, (त्रि०) विज्ञानं अस्ति अस्य+(ठन्)। विज्ञानयुक्त। विज्ञानवाला। समझवाला.

विट्, (आक्रोश) चिल्लाना। सक०। शब्दकरना। अक० भ्वा० पर० सेट्। वेटति। अवेटीत्.

विट, (पु०) विट्+क। षिड्ग। लुच्चा। यार। जार। एक पहाड.

विटङ्क, (न०) वि+टकि+अच्। कपोतपालिका। कबूतरोंकी दडबा। महल आदिकी चोटीपर लकडीका बनाहुआ कबूतरोंके बैठनेका स्थान। छतरी.

विटप, (पु० न०) विटं (विस्तारं) पाति । पा+क । शाखा । टहनी । पल्लवविस्तार । पत्तोंका फैलाव । और पत्ता । विटपालक (त्रि०) । यारकी रक्षाकरनेहारा.

विटपिन्, (पु०) विटप+अस्ति अर्थे इनि । शाखा विस्तारवाला । वृक्ष । द्रख्त । पेड.

विटि-टी, (स्त्री०) विट्+कि-वा ङीप् । पीतचंदन । पीलाचंदन । संदल.

विट्चर, (पु०) विषि (विष्ठायां) चरति । चर+अच् । ग्राम्यशूकर । गांवका सूअर (मैलेमें विचरनेहारा) । पालतू सूअर.

विट्पति, (पु०) विश्यते । विश्+क्विप्-विशः कन्यायाः पतिः । लडकीका मालिक । जामाता । जवाई.

विड्, आक्रोश (चिल्लाना) । भ्वा० पर० सक० सेट् । वेडति-अवेडीत्.

विड, (न०) विड्+क । लवणभेद । एक प्रकारका लून (नोन).

विडङ्ग, (पु० न०) विड्+अङ्गच् । इस नामकी एक औषध । अभिज्ञ । जाननेहारा । दाना (त्रि०).

विडम्बन, (न०) वि+डबि+ल्युट् । तिरस्करण । निरादर करना बेइज्जत करना । और नकल करना (अनुकरण) । विडम्बना(युच्) (स्त्री०) । हंसी । नकल.

विडाल, (पु०) विड+कालन् । इस नामका पशु । बिल्ला । नेत्रपिण्ड । आंखका गोला । और आंखकी एक दवाई.

विडीन, (न०) वि+डी+क्त । पक्षिओंकी एक प्रकारगति.

विडो(डौ)जस, (पु०) विष्+क्विप्-विट्-व्यापकं ओजो यस्य । पृ० वा औत् । जिसका तेज फैलाहुआ है । इन्द्र । देवताओंका राजा.

विड्वराह, (पु०) विट्प्रियो वराहः । शाक० । मैलेका पियारा सूअर । ग्राम्यशूकर । गाँवका सूअर.

वितंस, (पु०) वि+तंस्+अच् । पक्षिओंके बांधनेवाली रज्जुप्रभृति (रस्सी वगैरह).

वितण्डा, (स्त्री०) वि+तडि+अ । एक प्रकारकी कथा (जिसमें अपने पक्षको व्यवस्थापन-कायम न करके केवल दूसरेके पक्षको तोडना).

वितथ, (त्रि०) वि+तन्+कथन । मिथ्याभूतपदार्थ । झूठी चीज । झूठा । "स्वार्थे यत्" । वही अर्थ.

वितस्तु, (स्त्री०) वि+तम्+रु-दुड् च । पंजाबकी एक नदी । एक दर्या.

वितरण, (न०) वि+तॄ+ल्युट् । दान देना.

वितर्क, (पु०) वि+तर्क्+घञ् । संदेश । शक । ऊह । दलील.

वितर्दि, (स्त्री०) वि+तृद्+इन् वा ङीप् । वेदिका । वेदी.

वितल, (न०) विशेषेण तलं । पातालविशेष । एक पाताल.

वितस्ति, (पु० स्त्री०) वि+तस्+क्तिच् । द्वादशाङ्गुलपरिमाण । बारह अंगुलीका पैमानह । बालिश्त.

वितान, (न०) वि+तन्+घञ् । एकप्रकारकी वृत्ति । अवसर (मौका) । यज्ञ । विस्तार (फैलाव) । चंद्रातप (सायबान) । चंदोआ (पु० न०).

वित्, (त्याग) छोडना । चु० उभ० सक० सेट् । वित्तयति-ते । अविवित्तत्-त.

वित्त, (न०) वित्यते (त्यज्यते) । वित्त+घञ् । छोडाजाता है । धन । "विद्+क्त" ख्यात (महशूर) । विचारागया । जानागया । और लब्ध (पायागया) (त्रि०).

वित्तसमागम, (पु०) वित्तस्य समागमः । धनका लाभ । आय । आमदन्.

वित्ति, (स्त्री०) विद्+क्तिन् । ज्ञान । जाना । लाभ । हासिल । और विचार.

वित्तेश, (पु०) ६ त० । धनका मालिक । कुबेर.

विथ्, (याचन) मांगना । भ्वा० आ० द्विक० सेट् । वेथते । अवेथिष्ट.

विद्, लाभ (पाना) तुदा० उभ० सक० अनिट् । विन्दति-ते.

विद्, मीमांसा (विचार करना) रुधा० आ० सक० अनिट् । विन्ते । अवित्त.

विद्, भाव (होना) दिवा० आ० अक० अनिट् । विद्यते । अवित्त.

विद्, (ज्ञान) जानना । अदा० पर० सक० सेट् । वेत्ति-वेद । अवेदीत्.

विद्, (पु०) विद्+क्विप् । पण्डित । दाना । बुधग्रह.

विदग्ध, (त्रि०) वि+दह्+क्त । नागर । शहरिया । निपुण । होशियार । और पण्डित । दाना । एक नायिका (स्त्री०) "विशेषेण दग्धः" बहुत सडाहुआ (त्रि०).

विदथ, (पु०) विद्+कथच् । योगी । कृती । कामयाब.

विदर्भ, (पु० स्त्री०) विगताः दर्भाः कुशा यतः । जिस्में कुशा नहि होती । कुण्डिननगर । नागपूर.

विदर्भजा, (स्त्री०) विदर्भात् जायते । विदर्भदेशमें उत्पन्न हुई । अगस्त्यकी स्त्री.

विदल, (न०) विशेषेण दल्यते । दल्+क । विशेषकर तोडाजाता है । द्विधाभूत दाडिम । दो फांकहुआ अनार । त्रिवृत्ति (तेओडी) (स्त्री०) । दलशून्य (पत्तेके विना (त्रि०).

विदा, (स्त्री०) विद्+अङ् । ज्ञान । जाना । बुद्धि । अकिल.

विदार, (पु०) वि+दृ+घञ् । विदारण । फाडना । जलोच्छ्वास । पानीका प्रवाह.

विदारक, (पु०) वि+दृ+ण्वुल् । पानीके बीचका वृक्ष वा सिल । पानी ठहिरनेका गढा (न०) । विदारणकर्ता (फाडनेवाला) (त्रि०).

विदारण, (न०) वि+दृ+णिच्+ल्युट् । भेदन । फाडना । मारना । लडाई (पु० स्त्री०) । कर्णिकारवृक्ष (कनेरका पेड) (पु०).

विदाहिन्, (न०) वि+दह्+णिनि । दाहजनकद्रव्य । जलानेवाली चीज.

विदित, (त्रि०) विद्+क्त । ज्ञात । जानाहुआ । और प्रार्थित । मांगागया । "भावे क्त" विख्याति । महशूरी । और जान्ना । "तदस्यास्तीति अच्" । ज्ञाता । जान्नेहारा.

विदिश्, (स्त्री०) विगता दिशं=दिशोर्मध्यं । दिशाओंका बीच । कोण (कोन).

विदुर, (त्रि०) विद्+कुरच् । नागर । शहरिया । धीरजवाला । और जान्नेवाला । कौरवोंका मन्त्री (वजीर) । दासीके गर्भमें उपजा एक प्रकारका धर्मका अवतार (पु०).

विदूर, (न०) विशिष्टं दूरम् । अतिदूर । बहुतदूर । वहांकी चीज (त्रि०) । वैदूर्य (मूंगा) मणिके उपजनेका स्थान (पु०).

विदूरथ, (पु०) सूर्यवंशका एक राजा.

विदूराद्रि, (पु०) विदूरे (देशे) अद्रिः (पर्वतः) । एक पहाड (जहां वैदूर्यमणि उत्पन्न होती हैं).

विदूषक, (पु०) विदूषयति । वि+दूष्+णिच्+ण्वुल् । एक प्रकारका श्रृङ्गाररसका सहायी । बहुत दोष लगानेवाला । दूसरेकी निन्दा करनेवाला । नट (त्रि०.)

विदेश, (पु०) विभिन्नो देशः । देशान्तर । दूसरा देश । परदेस । "भृत्याभावे भवति मरणं सज्जनानां विदेशे" उद्भटः.

विदेह, (पु०) विगतो देहः (देहसंबन्धो) यस्य । जिसका शरीरसे संबंध दूर हो गया । जनकनामी राजा । उसके वंशका । कैवल्यमुक्तिवाला और शरीरके सम्बन्धसे शून्य (त्रि०) । मिथिला (स्त्री०).

विदेहकैवल्य, (न०) कर्म० । "उसके प्राण बाहिर नहि जाते । यहीं लीन हो जाते हैं" इस प्रकार कहागया जीवन्मुक्तका शरीर छोडनेके अनन्तर निर्वाणस्वरूप मोक्ष । शरीरके विना आपही आप.

विद्ध, (त्रि०) व्यध्+क्त । छिद्रित । सुराख कियाहुआ । क्षिप्त । फेंकागया । दुर्ग । किला । बाधित । तक्लीफ पहुंचायाहुआ । ताडित । चोटकियाहुआ । वेधागया.

विद्यमान, (पु०) विद्+शानच् । वर्तमानकाल । मौजूद । वर्तमान (होरहा) कालमें होनेवाली चीज (त्रि०).

विद्या, (स्त्री०) विद्+क्यप् । ज्ञान । जान्ना । तत्त्वसाक्षात्कार (असली बातको ठीक २ पहिचान्ना) । दुर्गातन्त्रमें देवीका मन्त्र.

विद्याचन(ण), (त्रि०) विद्यासें प्रसिद्धहुआ । इल्मसे मशहूर.

विद्याचुञ्चु, (पु०) विद्यया विख्यातः विद्याचुञ्चुः । इल्मसे प्रसिद्धहुआ.

विद्यादान, (न०) ६ त० । विद्याका देना । अध्यापन । पढाना । और पुस्तक (किताब) का देना.

विद्याधन, (न०) विद्यया लब्धं धनम् । विद्यासे मिली दौलत । शास्त्रार्थ करके जो धन पायाजाता है.

विद्याधर, (पु०) विद्यां (मन्त्रादिकं) धरति । धृ+अच् । मन्त्र आदिको धारण कर्ता है । एक प्रकारका देवता.

विद्याविशिष्ट, (त्रि०) विद्यया विशिष्टः । विद्यामें विशेष । विद्यासे पहिचानागया । वडा विद्वान्.

विद्यावृद्ध, (त्रि०) विद्यायां वृद्धः । विद्यामें बूढा । विद्यामें वहुत वढा हुआ.

विद्यास्नातक, (पु०) विद्यायां स्नातकः । विद्यामें नहाया हुआ । गुरुकुलमें पूरी विद्या पढाहुआ ब्राह्मण वा ब्रह्मचारी.

विद्युत्, (स्त्री०) विद्योतते । वि+द्युत्+क्विप् । बिजली । तडित् । संध्या । सायं । सांझ.

विद्युत्प्रिय, (न०) ६ त० । बिजलीका पियारा । बिजलीको खेंचनेवाला कांसी धातु.

विद्युन्माला, (स्त्री०) आठ अक्षरोंके पादवाला छंद । बिजलीकी कतार.

विद्र(द्रा)व, (पु०) द्रु+अप्-घञ् वा । पलायनम् । भागना । क्षरण । वहना और युद्ध । लडाई.

विद्रुत, (त्रि०) वि+द्रु+क्त । प्राप्तद्रव । वहगया । और भागगया (पलायित).

विद्रुम, (पु०) विशिष्टो द्रुमः । विशेषवृक्ष । मूंगेका द्रख्त । प्रवालरत्नवृक्ष.

विद्वत्कल्प, (त्रि०) ईषदसमाप्तो विद्वान् । विद्वस्+कल्पप् । थोडा कम विद्वान् । जिसके पण्डित होनेमें थोडीसी कसर है । ईषदूनविद्वान्.

विद्वत्तम, (पु०) अतिशयेन विद्वान् विद्वस्+तमप् । बहुत विद्वान् । अकलमंद.

विद्वद्देशीय, (त्रि०) ईषदसमाप्तो विद्वान् । विद्वस्+देशीयं । विद्वत्कल्पका अर्थ देखलो.

विद्वस्, (त्रि०) विद्+क्वसु । प्राज्ञ । अच्छीतरह जान्नेवाला । पण्डित । आत्मज्ञानयुक्त । जो आत्माको जानताहै.

विद्विष्, (पु०) विशेषेण द्वेष्टि । द्विष्+क्विप् । बहुत वैर कर्ता है । शत्रु । दुश्मन । "कविद्विष्" भीः.

विद्वेष, (पु०) वि+विष्+घञ् । वैरिभाव । शत्रुता । दुस्मनी.

विद्वेषण, (न०) वि+द्विष्+णिच्+ल्युट् । तन्त्रमें एक प्रकारका अभिचार (शत्रुको मारने)का काम । वह काम कि जिस्से शत्रुओंका आपसमें वैर होजाय । "वि+द्विष्+ल्युट्" विद्वेष.

विधवा, (स्त्री०) विगतो धवो यस्याः । जिसका पति दूरहुआ (मरगया) । मृतपतिका स्त्री । रंडी.

विधातृ, (पु०) वि+धा+तृच् । प्रजापति । ब्रह्मा । कामदेव । मदिरा । भृगुमुनिका पुत्र । विधानकर्ता (रचनेवाला) (स्त्री०) मद्य.

विधान, (न०) वि+धा+ल्युट् । करना । विधि । प्रकार । हाथीके खानेलायक खुराक । गजभक्ष्यान्न.

विधानज्ञ, (पु०) विधानं जानाति । ज्ञा+क । विधिको जानता है । पण्डित । विधि जान्नेवाला (त्रि०).

विधायक, (त्रि०) वि+धा+ण्वुल् । विधानकर्ता । नियम रचनेवाला । आईन बनानेवाला.

विधि, (पु०) वि+धा+कि । जगत्को रचनेवाला ब्रह्मा । भाग्य (किस्मत) । क्रम (सिलसिला) । प्रवर्तनारूप नियोग (किसीको किसी काममें लगानेकी आज्ञा) । उसका कारण वाक्य (वचन) । विष्णु । कर्म (काम) । हाथीके खानेलायक अन्न । वैद्य । हकीम । अप्राप्तप्रापकरूप वाक्यभेद (नया हुक्म चढाना) । व्याकरणमें एक प्रकारका सूत्र । कानून.

विधिज्ञ, (त्रि०) विधिं (क्रमं) जानाति । ज्ञा+क । विधिके जान्नेहारा । रीतिके जान्नेवाला.

विधित्सा, (स्त्री०) विधातुं इच्छा । वि+धा+सन्-अ । विधानेच्छा । करनेकी चाह.

विधिदर्शक, (पु०) विधिं दर्शयति यज्ञमें । किसीप्रकार अंगहीन विधिका संस्कार करनेवाला पुरोहित.

विधिदेशक, (पु०) विधिं दिशति । दिश्+ल्युट् । विधिको दिखानेहारा । सदस्य । सभामें श्रेष्ठ । गुरु.

विधिवत्, (अव्य०) विधिं अर्हति । विधि+वति । विधिके अनुसार । मुताबिक.

विधु, (पु०) व्यध्+कु । चन्द्रमा । कपूर । विष्णु । ब्रह्मा । शंकर । और वायु (हवा).

विधुत, (त्रि०) वि+धु+क्त । कम्पित । कांपगया । और छोडागया.

विधुनन, (न०) वि+धु+णिच्-नुक् च । चालन । चलाना । कंपाना । हिलाना । फटकारना.

विधुन्तुद, (पु०) विधुं तुदति । तुद्+खश्-मुम् च । चांदको पीडा देता है । राहु.

विधुर, (त्रि०) विगता धूर्यस्य । अच् समा० । जिसका बोझा जातारहा । विश्लिष्ट (जुदाहुआ) और विकल (घबरायाहुआ) । "विगतधूः" विकलता (घबराट) । और विश्लेष । जुदाहोना (न०).

विधुवन, (न०) वि+धु+ल्युट् । कम्पन । कांपना.

विधूत, (त्रि०) वि+धू+क्त । कांपाहुआ । और छोडाहुआ.

विधेय, (त्रि०) वि+धा+यत् । विधातुं योग्यं । करनेलायक । वचनमें रहनेवाला । आयत्त काबू । विधिसे बोधित (समझायाहुआ).

विध्वंस, (पु०) वि+ध्वंस्+घञ् । नाश । तवाही.

विनत, (त्रि०) वि+नम्+क्त । प्रणत । झुकाहुआ । भुग्न । ठेढाहुआ और शिक्षित (सीखाहुआ) । गरुडकी माता । कश्यपकी एक स्त्री (स्त्री०).

विनतासूनु, (पु०) ६ त० । विनताका बेटा । अरुण । और गरुड । "विनतात्मज" आदि यही दो अर्थ हैं.

विनय, (पु०) वि+नी+अच् । शिक्षा । प्रणाम । और अनुनय (हलीमी) । "वि+नी+कर्तरि" अच् । विनययुक्त जन । निभृत (चुपचाप) । क्षिप्त । फेंकागया । और जितेन्द्रिय (जिसने इन्द्रिय वश की हैं).

विनयग्राहिन्, (त्रि०) विनयं (शिक्षां) गृह्णाति । ग्रह्+णिनि । जो शिक्षाको लेता है । वचनमें रहनेहारा । आयत्त । आधीन । काबूमें रहनेहारा.

विनयस्थ, (त्रि०) विनये तिष्ठति । स्था+क । कहना मान्नेवाला.

विनशन, (न०) वि+नश्+ल्युट् । विनाश । कुरुक्षेत्रका एक तीर्थ । कुरुक्षेत्र.

विना, (अव्य०) वि+ना वर्जन । रोकना । अन्तरेण । सिवा.

विनाकृत, (त्रि०) विना इति कृतम् । विना+कृ+क्त । छोडागया । रहित । सिवा.

विनायक, (पु०) वि+नी+ण्वुल् । गणेश । गरुड । विघ्न (रोक) । और गुरु । विनयवाला । नम्र । हलीम (त्रि०).

विनाश, (पु०) वि+नश्+घञ् । ध्वंस । नाश । न दीखना.

विनाशधर्मन्-धर्मिन्, (त्रि०) विनाशः धर्मः यस्य, अस्य वा अस्ति । विनाशधर्मवाला । नाश होजानेवाला.

विनाशोन्मुख, (त्रि०) विनाशाय उन्मुखः (उद्यतः) । नाशके लिये उद्यत । करीबन तवाह होगया । नष्टप्राय । नाशपर आया.

वि(वी)नाह, (पु०) वि+नह्+घञ् वा उपसर्गदीर्घः । कूपमुखापिधान । कूएके मूंका ढकना.

विनिद्र, (त्रि०) विगता निद्रा यस्य । जिसकी नींद गई । प्रकाशित । चमकाहुआ । खिलाहुआ । नींदरहित.

विनिमय, (पु०) वि+नि+मि+अच् । परिवर्त । बदलना । एक जैसी चीज देकर दूसरी चीज लेनी । बटाना । बंधक । अमानत । रहन.

विनियोग, (पु०) वि+नि+युज्+घञ् । काममें लगाना । "इसे ये करना उचित है" इस प्रकार अनुष्ठान (काम)-के क्रमका करना । लगाना.

विनीत, (त्रि०) वि+नी+क्त । विनययुक्त । हलीम । कृतदण्ड । जिसे सजा दीगई । फेंकागया । दूरकियाहुआ । और सिखायाहुआ । सीखाहुआ घोडा । और एक द्रख्त (पु०).

विनेतृ, (त्रि०) वि+नी+तृच् । शिक्षक । सिखानेहारा । राजा (पु०).

विनेय, (त्रि०) वि+नी+यत् । सिखानेलायक । पानेलायक.

विनोक्ति, (स्त्री०) अर्थसम्बन्धी एक अलंकार.

विनोद, (पु०) वि+नुद्+घञ् । कौतूहल । तमाशा । चाव । क्रीडा । खेल । और खण्डन (तोडना).

विन्दु, (पु०) विद्+उ-नि० । पानीका कतरा (जलकण) । भौंका मध्य । रेखागणितमें विभाग न होसकनेहारा एक चिह्न (निशान) । और अनुस्वार (बिन्दी) । जाननेहारा । देनेहारा । और वेदितव्य (जाननेलायक) (त्रि०).

विन्दुजाल, (न०) ६ त० । विन्दुओंका समूह । हाथीकी सूंडपर रहनेहारा विन्दुके समानका एक चिह्न.

विन्दुपत्र, (पु०) विन्दवः पत्रे यस्य । जिसके पत्तेपर बूंदें हैं । भूर्जपत्र । भोजपत्ता.

विन्दुसरस्, (न०) विन्दुभिः कृतं सरः । विन्दुओंसे बनाहुआ एक तालाव । सरोवरविशेष.

विन्ध्य, (न०) विध्+यत् । पृ० मुम् च । एक पर्वत । और व्याध (शिकारी) । इलायची । लवली.

विन्ध्यवासिनी, (स्त्री०) विन्ध्येऽचले वसति । वस्+णिनि+ङीप् । विन्ध्यपर्वतमें रहती है । यशोदाके गर्भमें उत्पन्नहुई दुर्गा.

विन्ध्याटवी, (स्त्री०) विन्ध्यस्था अटवी । विन्ध्यपहाडका वन.

विन्न, (त्रि०) विद्+क्त । विचाराहुआ । पायाहुआ । जानाहुआ । और ठहराहुआ.

विन्यास, (पु०) वि+नि+अस्+घञ् । स्थापन । टिकाना । रखना । रचन । बनाना । तन्त्रमें मन्त्रका उच्चारण (बोल)-कर हृदय आदिमें अंगुलिओंका लगाना.

विपक्त्रिम, (त्रि०) विपाकेन निर्वृत्तः । वि+पच्+क्त्रम-पच् । बहुत पककर तयारहुआ । विपाकाधीनजात.

विपक्ष, (त्रि०) विरुद्धः पक्षो यस्य । जिसका वखिलाफ पक्ष है । शत्रु । दुश्मन । प्रतिकूलपक्षको अवलम्बन करनेहारा । "विरुद्धः पक्षः" प्रतिकूलपक्ष.

विपञ्ची, (स्त्री०) वि+पचि+अच्-ङीष् । वीणा । वीन.

विपण, (पु०) वि+पण्+क । विक्रय । वेचना.

विपणि, (पु० स्त्री०) वि+पण्+इन्-वा ङीप् । पण्यविक्रयशाला । सौदा वेचनेका घर । दुकान । हट्टी.

विपत्काल, (पु०) विपदः कालः । विपत्ति (मुसीबत) का समय.

विपत्ति, (स्त्री०) वि+पद्+क्तिन् । आपद् (मुसीबत) । नाश । तबाही । यातना । पीडा.

विपथ, (पु०) विरुद्धः पन्था । अच् समा० । निन्दितमार्ग । बुरा रास्ता.

विपद्-दा, (स्त्री०) वि+पद्+क्विप् वा टाप् । विपत्ति । मुसीबत.

विपदुद्धरणम्-उद्धारः, (न० पु०) विपदः उद्धरणम् । विपत्तिसे (किसीको) निर्मुक्त करना (छुडाना).

विपन्न, (त्रि०) वि+पद्+क्त । मुसीबतमें पडाहुआ । विपद्युक्त । नष्ट । तबाह होगया । सांप (पु०).

विपरीत, (त्रि०) वि+परि+इण्+क्त । प्रतिकूल । उलटा.

विपर्यय, (पु०) वि+परि+इण्+अच् । उलटा । खिलाफ । व्यतिक्रम.

विपर्यस्त, (त्रि०) वि+परि+अस्+क्त । व्यतिक्रान्त और परावृत्त । बरखिलाफ । उलटाहुआ.

विपर्यास, (पु०) वि+परि+अस्+घञ् । वैपरीत्य । उलटापना । व्यतिक्रम । उत्क्षेप । खिलाफ.

विपल, (पु०) विभागः पलस्य । पलका हिस्सा (साठवां) लहजा । बहुतही थोडा समय.

विपश्चित्, (पु०) विप्रकृष्टं चेतति । बहुत समझता है । वि+प्र+चित्+क्विप् । पृ० । सीखाहुआ । दाता । पण्डित । ज्ञानवान् । ऋषि.

विपाक, (पु०) वि+पच्+भावे . घञ् । पकाना । तयार होना । पचना । और खेद (पसीना) । "कर्मणि घञ्" कर्मके फलका परिणाम (पकना) । जाति, आयु, और भोगरूप पदार्थ.

विपाश्-शा, (स्त्री०) विगतः पाशो यस्याः । जिसका पाश दूर हुआ । पंजाबकी पांच नदिओंमेंसे एक (व्यासदर्या).

विपिन, (न०) वप्+इनन् । पृ० । वन । जंगल.

विपुल, (त्रि०) वि+पुल् (फैलना)+क । विस्तीर्ण । फैलाहुआ । अगाध (अथाह-डुंगा) । बहुत । सुमेरुकी पश्चिम दिशाका एक पर्वत । मेरु । और हिमालय । आर्याछन्दका भेद (स्त्री०).

विप्र, (पु०) वप्+रन् । पृ० अत इत्वं । वि+प्रा+क-वा । ब्राह्मण । ऋषि । पीपलका द्रख्त.

विप्रकर्ष, (पु०) वि+प्र+कृष्+घञ् । दूरत्व । दूरपन । दूरहोना.

विप्रकार, (पु०) वि+प्र+कृ+घञ् । अपकार । बुराई । तिरस्कार । निरादरी.

विप्रकृत, (त्रि०) वि+प्र+कृ+क्त । उपद्रुत । मुसीबत दियाहुआ । और तिरस्कृत । बेइज्जत कियाहुआ । "तस्मिन् विप्रकृताः काले" कुमारः.

विप्रकृष्ट, (त्रि०) वि+प्र+कृष्+क्त । दूरस्थ । दूर रहनेहारा । दूरका.

विप्रचित्ति, (पु०) वि+प्र+चित्+क्तिच् । एक दैत्य । एक राक्षस.

विप्रतिपत्ति, (स्त्री०) वि+प्रति+पद्+क्तिन् । विरोध । दुश्मनी । संशय (शक्क) और विकार (बदलना).

विप्रतिपन्न, (त्रि०) वि+प्रति+पद्+क्त । संदेहयुक्त । शक्कवाला । कृतविरोध । दुश्मनी करनेवाला.

विप्रतिषेध, (पु०) विगतः प्रतिषेधः । आज्ञामें (किसीको) रखना । शासन करना । वश करना.

विप्रति(ती)सार, (पु०) वि+प्रति+सृ+घञ् वा दीर्घः । अनुताप । पछतावा । अनुशय (बखीली) और रोष (गुस्सा).

विप्रयुक्त, (त्रि०) वि+प्र+युज्+क्त । वियुक्त (विछुडाहुआ) । विरहित । अलग.

विप्रयोग, (पु०) वि+प्र+युज्+घञ् । विप्रलम्भ । ठगी वा फरेब । विरोध । दुश्मनी । विसंवाद । झगडा । और वियोग । विछोडा.

विप्रलब्ध, (त्रि०) वि+प्र+लभ्+क्त । वञ्चित । ठगाहुआ । "जिसका पियारा संकेत करके समयपर उसके पास नहीं पहुंचता" इस प्रकारकी एक नायिका (स्त्री०).

विप्रलम्भ, (पु०) वि+प्र+लभ्+घञ्-मुम् च । विसंवाद (झगडा) । वञ्चन (ठगना) । और विरह (विछोडा) । शृङ्गारकी एक अवस्था (हालत).

विप्रलाप, (पु०) वि+प्र+लप्+घञ् । विरोधोक्ति । आपसमें विरुद्ध (न मिलनेवाला) वचन कहना । झगडा । विवाद.

विप्रलुप्त, (त्रि०) वि+प्र+लुप्+क्त । लेजाया गया । खोयागया । झपाटा दिया गया । विगाडा गया । लूटा गया.

विप्रश्निका, (स्त्री०) विशेषेण प्रश्नो यस्याः । ५ ब० । कप्-अत इत्वम् । बहुतसे प्रश्न जिस्से होते हैं । (किस्मत) दैवको जाननेवाली स्त्री.

विप्रसात्, (अव्य०) विप्रस्य आधीनं करोति । विप्र+साति । ब्राह्मणके आधीन कर्ता है । ब्राह्मणके आधीन करना । ब्राह्मणको देना.

विप्रस्व, (न०) ६ त०। विप्रस्वामिक धन । ब्राह्मणका धन.

विप्रिय, (पु०) विरुद्धप्रियं । प्री+क । अपराध । कसूर । और अप्रिय । ना पियारा । दुश्मन.

विप्रुष्, (स्त्री०) वि+प्रुष्+क्विप् । विन्दु । बूंद । वेद पढनेके समय मुखसे निकलीहुई पानीकी बूंद.

विप्रोषित, (त्रि०) वि+प्र+वस्+क्त । गतप्रवास । देस निकाला दियाहुआ । परदेसमें गया.

विप्लव, (पु०) वि+प्लु+अप् । दूसरे राजाके राज आदिसे डर । घबराहट । उपद्रव । विगाड.

विप्लाव, (त्रि०) वि+प्लु+घञ् । घोडेकी एकचाल । चारों ओरसे पानीका उमडना.

विप्लुत, (त्रि०) वि+प्लु+क्त । व्यसनयुक्त । मुसीबतमें पडाहुआ । विगडाहुआ । और उपद्रुत.

विफल, (त्रि०) विगतं फलं अस्य । जिसका फल गया । निरर्थक । बेफायदह । निष्फल । केतकी (केवडा) (स्त्री०).

विबन्ध, (पु०) विबध्नाति मलम् । वि+बन्ध्+घञ् । जो मलको रोक लेता है । एक प्रकारका रोग (बीमारी).

विबुध, (पु०) वि+बुध्+क । पण्डित । देवता । "विबुधसखः" भट्टिः । दाना । सीखाहुआ आदमी.

विभक्त, (त्रि०) वि+भज्+क्त । पृथक्कृत । जुदाकियाहुआ । विभिन्न । जुदा । कृतविभाग । "अविभक्ता विभक्ता वा सपिण्डाः स्थावरे समाः" इति स्मृतिः । "भावे क्त" । विभाग (हिस्सा) (न०).

विभक्ति, (स्त्री०) वि+भज्+क्तिन् । विभाग । हिस्सा । व्याकरणमें सुप् तिङ् प्रत्यय.

विभव, (पु०) वि+भू+अच् । धन । मोक्ष । सब मूर्त (शकलवाला) द्रव्यके साथ संयोगरूप । ऐश्वर्य । एक वर्षका नाम.

विभा, (स्त्री०) वि+भा+अच् । किरण । शोभा । और प्रकाश.

विभाकर, (पु०) विभां (प्रकाशं) करोति । कृ+अच् । प्रकाश कर्ता है । सूर्य । और अर्कवृक्ष (आकका द्रख्त).

विभाग, (पु०) वि+भज्+भावे घञ् । भाग । हिस्सा । "कर्मणि घञ्" । अंश । टुकडा । न्यायके २४ गुणोंमेंसे एक । बांट.

विभाज्य, (त्रि०) विभक्तुं अर्हति । वि+भज्+अर्हार्थे ण्यत् । बांटनेके लायक । विभागयोग्य । बांटनेलायक धन आदि.

विभाण्डक, (पु०) एक मुनिका नाम । (इसका पुत्र ऋष्यशृंग था.

विभात, (न०) वि+भा+क्त । प्रभात । सवेर । प्रातःकाल.

विभाव, (पु०) वि+भू+घञ् । परिचय (वाकफीयत) । अलंकारमें रसका उद्दीपक (चमकानेहारा) आलम्बन आदि.

विभावना, (स्त्री०) एक प्रकारका अलंकार (जिसमें कारणके विना कार्यकी उत्पत्ति प्रतीत होती है).

विभावरी, (स्त्री०) वि+भा+वनिप्-ङीप्-वनोरच्। रात्रि। रात। हल्दी। कुट्टनी.

विभावसु, (पु०) विभायुक्ता वसवः अस्य। जिसकी किरणें बहुत चमकनेवाली हैं। सूर्य। आकका द्रख्त। आग। चित्रक वृक्ष। एक हार.

विभाव, (पु०) वि+भु+णिच्+घञ् अ (साहित्यशास्त्रमें) शरीर वा मनके स्वरूपको उत्पन्न करनेवाली कोई एक अवस्था (हालत) (भावके तीन मुख्य विभागमेंसे एक).

विभाषा, (स्त्री०) विरुद्धा भाषा। वि+भाष्+अ। निषेध। विकल्प। व्याकरणमें एक पक्षमें होनेवाला विकल्पविधान। "नवेति विभाषा"। दोनों तरह.

विभिन्न, (त्रि०) वि+ भिद्+क्त। प्रकाशित। चमकाहुआ। विदलित। खिलाहुआ। विभक्त। बांटाहुआ। जुदा। अलगहुआ.

विभीतक, (पु०) विशेषेण भीत इव। इवार्थे कन्। मानों बहुत डराहुआ है। वहेडेका द्रख्त.

विभीषण, (पु०) विशेषेण भीषयते शत्रून्। भी+णिच्-षुक् च ल्यु। जो शत्रुओंको बहुत डराता है। रावणका भाई। राक्षस। नलतृण.

विभीषिका, (स्त्री०) वि+भी+णिच्-षुक् च। धात्वर्थनिर्देशे ण्वुल्। भयप्रदर्शन। डर दिखाना। डर.

विभु, (पु०) वि+भू+डु। सर्वमूर्तसंयुक्त। सव शकलवालोंसे मिलाहुआ। प्रभु। मालिक। ताकतवाला। महादेव। और ब्रह्म.

विभूति, (स्त्री०) वि+भू+क्तिन्। भस्म। खा। खाक। अणिमा आदि आठ प्रकारका ऐश्वर्य.

विभूषा, (स्त्री०) वि+भूष्+अ। शोभा। और भूषण। सजाना। गहना.

विभ्रम, (पु०) वि+भ्रम्+घञ्। स्त्रिओंके शृङ्गारका अंग। एक प्रकारकी चेष्टा (हर्कत)। वहुत घूमना। शोभा। संदेह। और भ्रमण (घूमना)। स्त्रिओंका विलास.

विभ्राज्, (त्रि०) वि+भ्राज्+क्विप्। भूषण (जेवर गहना) आदिसे चमकाहुआ.

विमत, (त्रि०) वि+मन्+क्त। विरुद्धमतियुक्त। वखिलाफरायवाला। गैरमतवाला। दुस्मन.

विमनस्-स्क, (त्रि०) विक्षिप्तं मनो यस्य वा+कप्। चिन्ता (फिकर) आदिसे व्याकुलचित्त (घवरायेहुए दिलवाला).

विमर्द, (पु०) विमृद्यतेऽसौ। वि+मृद्+घञ्। कालका सुन्दिया वृक्ष। "भावे घञ्" मर्दन। मलना। वटना.

विमर्शन, (न०) वि+मृश्+ल्युट्। परामर्श। सोच विचार। वितर्क। दलील। "घञ्" वही अर्थ (पु०).

विमर्ष, (पु०) वि+मृष्+घञ्। विचार। नाटकका एक अंग.

विमल, (त्रि०) विगतो मलो यस्मात्। जिस्से मल दूर हुआ। स्वच्छ (साफ)। निर्मल। "विगतो मलो यस्याः"। जगन्नाथ क्षेत्रमें एक प्रकारकी देवी (स्त्री०).

विमातृ, (स्त्री०) विरुद्धा माता। मातृसपत्नी। मांकी सौतिन। सौतेली मां.

विमातृज, (पु०) विमातुर्जायते। जन्+ड। सौतेला भाई.

विमान, (पु० न०) वि+मन्+घञ्। वि+मा+ल्युट् वा। देवयान। देवताओंकी गाडी। रथ। चक्रवर्तीका एक घर। घोडा (पु०) हरएक सवारी और परिमाण (माप) (न०).

विमानचारिन्, (त्रि०) (विमाने चरति)। विमान (स्वर्गकी गाडी)में घूमनेवाला.

विमार्ग, (पु०) विरुद्धो मार्गः। बुरा रास्ता। कुपथ। खराव सडक। निन्दिताचार। बुरा चालचलन.

विमुख, (त्रि०) विरुद्धं (अननुकूलं) मुखं अस्य। वखिलाफ मुखवाला। दुश्मन। वहिर्मुख। और निवृत्त (हटाहुआ)। मुंमोडेहुए.

विमुद्र, (त्रि०) विगता मुद्रा (मुकुलीभावः) यस्य। जिसका वंदहोना दूरहुआ। विकसित। खिलाहुआ। मोहरविन.

विम्ब, (पु० न०) वी+वन्-मुम् ह्रस्वौ। दर्पण (शीशाआईना) में प्रतीत होरही परछाहीका आश्रय। और कमण्डलु। सूर्य आदिका मण्डल (दायरा)। और कृकलास (किरला) (पु०)। "बिम्बायाः फलं+अण् तस्य लुक्"। विम्बिकाफल.

वियत्, (न०) वि+यम्+क्विप्-मलोप तुक्। आकाश। आस्मान.

वियद्गङ्गा, (स्त्री०) वियत्स्था गंगा। आकाशकी गंगा। स्वर्गकी गंगा। मंदाकिनी.

वियात, (त्रि०) वि+या+क्त। धृष्ट। ढीठ। वेशरम। निर्लज्ज.

वियोग, (पु०) वि+युज्+घञ्। विच्छेद। विछोडा। ६ त०। पक्षिओंका मेल.

वियोगिन्, (पु०) वि+युज्+घिनुण्। चक्रवाक। चकवा पक्षी। विछोडेवाला (त्रि०).

विरक्त, (त्रि०) वि+रञ्ज्+क्त। विच्छिन्न। जुदा। और विरत। हटाहुआ। बेमुहब्बत.

विरचित, (त्रि०) वि+रच्+क्त। कृत। कियाहुआ। बनायागया। निर्मित.

विरजस्, (स्त्री०) विगतं रजो यस्याः। जिस स्त्रीसे रज दूरहुआ। गतार्तवा स्त्री। ऋतुरहित स्त्री। जिसे महीनेका ऋतु आना वंदहोगया। रजोगुणसे रहित (त्रि०).

विरजस्तमस्, (त्रि०) विगते रजस्तमसी यतः । जिस्से रजोगुण और तमोगुण दूरहुए । सत्वप्रधान (जिसमें सत्वगुण बहुत है).

विरजा, (स्त्री०) विशेषेण रज्यते । रञ्ज्+अ । दूर्वा । दूब । गोलोकमें राधिकाकी एक सहेली (सखी) । एक नदी.

विरञ्च–ञ्चि, (पु०) वि+रच्+अच्-इन् वा मुम् च । जगत्स्रष्टा । जगत्के रचनेवाला । विधाता । ब्रह्मा.

विरत, (त्रि०) वि+रम्+क्त । निवृत्त । हटगया । हटाहुआ.

विरति, (स्त्री०) वि+रम्+क्तिन् । निवृत्ति । हटना । विषयोंकी सेवा । व्यापाररहित्य । कुछ काम न करना.

विरल, (त्रि०) वि+रा+कलन् । अवकाश । खाली । खुला । विच्छिन्न । टूटाहुआ । और अनिविडना । संघना.

विरह, (पु०) वि+रह्+घञ् । विच्छेद । जुदाई । अभाव । न होना । शृङ्गाररसकी विप्रलंभ नाम एक अवस्था (हालत) । अछोडा.

विरहित, (त्रि०) वि+रह्+क्त । त्यक्त । छूटाहुआ । और हीन । अलग.

विराग, (पु०) वि+रञ्ज्+घञ् । रागाभाव । मुहब्बतका न होना । "विगतो रागो यस्य" । जो प्रीतिसे रहित है (त्रि०).

विराज्, (पु०) विशेषेण राजते+क्विप् । बहुत शोभता है । क्षत्रिय । ब्रह्माण्डस्वरूप स्थूलदेहका अभिमानी आदिपुरुष । एक छंद.

विराट, (पु०) विशेषो राटो यत्र । एक देश । उस देशका मालिक वा राजा.

विराध, (पु०) एक राक्षस (रामचन्द्रके हाथसे मारागया).

विराधन, (न०) वि+रुध्+ल्युट् । पीडा । दर्द.

विराम, (पु०) वि+रम्+घञ् । अवसान । आखिर । अंत, विरति । हटना और निवृत्ति । ठहराव.

विराव, (पु०) वि+रु+घञ् । शब्द (आवाज) । ६ व० । शब्दरहित (त्रि०).

विरिञ्च, (पु०) वि+रिच्+अच्-मुम् च । विष्णु । जगत्के रचनेहारा ब्रह्मा । और शिवजी । "इन्" वही अर्थ.

विरूढ, (त्रि०) विशेषेण रोहति । वि+रुह्+क्त । बहुत उगता है । उत्पन्नहुआ । जात । अंकुरित । फूटा । निकला.

विरूप, (त्रि०) विकृतं रूपं अस्य । बुरीशकलवाला । दुष्टरूपवाला । बदशकला और निन्दित । निन्दा कियाहुआ । पिप्पलीमूल (मघकी जड) (न०).

विरूपाक्ष, (पु०) विरूपे (विकटे) अक्षिणी यस्य । जिसकी आंखें विकट हैं । महादेव । डरावनी आंखवाला (त्रि०).

विरेक, (पु०) वि+रिच्+घञ् । मलआदिका नीचेसे निकलना । और अतिरेक । जुलाब । खालीहोना.

विरेचन, (न०) वि+रिच्+णिच्-ल्युट् । मलआदि निकालना । "ज्वरमध्ये विरेचनं" इति वैद्यकम् । फाडनेवाला (त्रि०).

विरोक, (पु० न०) वि+रुच्+घञ् । चस्य कः । छिद्र । छेक । सुराख । सूर्यकी किरण (पु०).

विरोचन, (पु०) वि+रुच्+युच् । सूर्य । आकका वृक्ष । बलिका पिता । प्रह्लादका पुत्र । एक दैत्य । और चंद्रमा । रुचिकर (दिलपसंद) (त्रि०).

विरोध, (पु०) वि+रुध्+घञ् । वैर । दुश्मनी । विरुद्धता । वर्खिलाफी । न्यायमें साध्यके साथ असामानाधिकरण्य (एक स्थानमें इकट्ठा न रहनापन) रूप हेतुका दोष, जैसे "वह्निमान् जलात्" "यहां जलरूप हेतुका वह्निके साथ सामानाधिकरण्य नहिं है".

विरोधिन्, (पु०) वि+रुध्+णिनि । रिपु । शत्रु । एक वर्षका नाम.

विरोधोक्ति, (स्त्री०) अर्थसम्वन्धी एक अलंकार । दूसरेके वचनका विरोधि वचन । वर्खिलाफ कलाम.

विल्, (ढांकना-छिपाना) । तु० प० सक० सेट् । विलति । अवेलीत्.

विल, (न०) विल्+क । छिद्र । सुराख । गुहा । गुफा । "विलं उत्पत्तिकारणत्वेन अस्ति अस्य" । विलसे उपजा । अच्छा घोडा । "वाजिनो विलयोनयः" इति कुमारः । वेतस । बैंत (पु०).

विलक्ष, (पु०) विलक्ष्+अच् । विस्मययुक्त । हैरानहुआ । वगैर चिह्नके । लज्जित । शर्मिन्दा.

विलक्षण, (त्रि०) विशिष्टं लक्षणं अस्य । विशेषलक्षणवाला । अभिन्न । जुदा । अजीब । और विशेषणवाला । प्रयोजन (मतलब) विन रहना (न०) । दानके लिये सुवर्णपुरुष (सोन्नेका आदमी)की मूर्तिसहित एक प्रकारकी शय्या (छेज) (स्त्री०) "विलक्षणा".

विलग्न, (त्रि०) विशेषेण लग्नम् । लस्ज्+क्त-तस्य नः । जस्य गः । अच्छीतरह लगाहुआ । संलग्न । मध्यभाग । कटि । कमर । लंक । उदित (निकलीहुई) मेष आदि राशि (न०).

विलम्ब, (पु०) वि+लवि+घञ् । विलम्बन । देरी करना । देर । प्रतीक्षणीयकाल । इन्तिजारी करनेकेलायक वक्त.

विलम्बित, (त्रि०) वि+लबि+क्त । अशीघ्र । नाजल्दी करनेवाला । जिसने देर लगाई है । और मन्द (धीमा) । मध्यनाच (न०).

विलय, (पु०) वि+ली+अच् । प्रलय । और नाश.

विलसित, (त्रि०) वि+लस्+क्त । चमकाहुआ । दीप्त । प्रकट हुआ । जाहिर हुआ.

विल(ले)शय, (पु०) विले शेते । शी+अच्-वा अलुक् समा० । विलमें सोता है । सर्प । साँप । मूषक । मूसा । गोधा.

विलाप, (पु०) वि+लप्+घञ् । परिदेवनोक्ति । रोकर बोलना । वैन करना.

विलास, (पु०) वि+लस्+घञ् । स्त्रियोंकी शृङ्गारचेष्टा-विशेष । खुशीकी हर्कत (अंगोंका हिलाना आदि) । खुशी । चमक.

विलासिनी, (स्त्री०) विलासः अस्ति अस्य+इनि ङीप् । विलासवाली, नारी (औरत) । और वेश्या (कंचनी) । भोगवाला (त्रि०) साँप । कृष्ण । वह्नि (आग) । कामदेव । महादेव । और चांद (पु०).

विलीन, (त्रि०) वि+ली+क्त । वहगया घी आदि । विरत (हटगया) और नाश होगया.

विलेपन, (न०) विलिप्यते अनेन+करणे ल्युट् । जिस्से लेप कियाजाता है । गात्रानुलेपनद्रव्य । शरीरलेप करनेवाली चीज । पीसा वा घिसाहुआ चंदन केसर आदि- "कर्मणि ल्युट् ङीप्" । लप्सी । खिचडी । जौंकी मांड अच्छे वेशवाली औरत (स्त्री०).

विलोचन, (न०) वि+लुच्+करणे ल्युट् । नेत्र (आँख) । "भावे ल्युट्" । दर्शन । देखना.

विलोडित, (न०) वि+लोड्+क्त । तक्र । विलोयागया (लस्सी-छाछ) । आलोडित (त्रि०).

विलोम, (त्रि०) विगतं लोम यत्र । अच् समा० । विपरीत (उल्टा) । अरघट्टक (खूएकी घिरनी वा म्माल) (न०) । सर्प (साँप) । कुत्ता । और वरुण (पु०).

विलोमजिह्व, (पु०) विलोमा जिह्वा यस्य । उल्टी जीभवाला । हाथी.

विलोल, (त्रि०) वि+लुल्+अच् । चञ्चल । बहुत लालची.

विल्व, (पु०) विल्+वन् । श्रीफलवृक्ष । नारियेलका द्रख्त । विल्लका द्रख्त । परिमाण । पैमाना (न०).

विवध, (पु०) विगतो वधो (हननं-गतिः) यस्मात् । संगृहीतधान्यतण्डुलादि । इकट्ठे कियेहुए चावल आदि । भार.

वि(वी)वध, (पु०) वि+वध्+अच् वा दीर्घः । धाना-आदिका लाना । भार कंधेपर उठानेलायक एक लकडी.

विवर, (न०) वि+वृ+अप् । छिद्र (सुराख) । और दोष (ऐब) । विल.

विवरण, (न०) वि+वृ+ल्युट् । व्याख्यान । बहुत बयान । उसे करनेवाला एक ग्रंथ.

विवरनालिका, (स्त्री०) विवरयुक्तं नालं अस्ति अस्याः+ठन् । जिसके नालमें सुराख है । वेणु । बाँस.

विवर्ण, (त्रि०) विरुद्धो वर्णोऽस्य । बुरेवर्णवाला । अधम । नीच.

विवर्त, (पु०) वि+वृत्+घञ् । नृत्य । नाच । समुदाय (समूह) । अपवर्तन (हटना-मुडना) । वेदान्तमें कारणसे दूसरे स्वरूपमें उत्पन्नहुआ कार्य (अपने स्वरूपको न छोडकर दूसरी शकलका दीखना) । जैसे सीपीसे चांदी और ब्रह्मसे जगत्.

विवश, (त्रि०) विगतो वशः यस्य । जिसकी स्वाधीनता दूर होगई । अस्वतन्त्र । पराधीन । बेवस । लाचार । व्याकुल (घबरायाहुआ) । खफा होगया.

विवस्वत्, (पु०) वि+वस्+क्विप् । अस्त्यर्थे मतुप्-मस्य वः । सूर्य । आकका वृक्ष । अरुण । और देवता.

विवाद, (पु०) विरुद्धो वादः । झगडा । बर्खिलाफ बोलना । व्यवहार । और कलह.

विवाह, (पु०) वि+वह+घञ् । दारपरिग्रह । स्त्रीको लेना । उसे उत्पन्न करनेहारा व्यापार । शादी । पाणिग्रहण.

विवाहित, (त्रि०) विवाहः जातः अस्य । तार० इतच् । जिसका विवाह होगया । विवाहाहुआ । जातविवाह.

विवाह्य, (त्रि०) वि+वह्+ण्यत् । विवाहयोग्य । विवाहनेलायक । विशेषकर उठानेलायक.

विविक्त, (त्रि०) वि+विच्+क्त । निर्जन । अकेली जगह । पवित्र (साफ) । और असंयुक्त (न मिलाहुआ) । "कर्तरि क्तः" विवेकी (विचारवाला) (त्रि०).

विविध, (त्रि०) विभिन्ना विधा यस्य । जिसका प्रकार जुदा है । नानाप्रकार । कईतरह.

विवीत, (त्रि०) विशिष्टं वीतं (गवादिप्रचारस्थानं) यत्र । बहुत अच्छी गौओंके विचरनेकी जगह । बहुत तृणघासवाला देश.

विवृत, (त्रि०) वि+वृ+क्त । विस्तृत । फैलाहुआ । व्याख्यात । बयान कियाहुआ.

विवृति, (स्त्री०) वि+वृ+क्तिन् । विस्तार । फैलावा । और व्याख्यान.

विवेक, (पु०) वि+विच्+घञ् । ठीक २ वस्तुके स्वरूपका निश्चय करना । विचार । प्रकृति और पुरुषको आपसमें जुदा २ समझना (भेदज्ञान).

विवोढृ, (पु०) वि+वह्+तृच् । जामाता । जवाई.

विव्वोक, (पु०) वि+वा+क्कु-तस्य ओकः (स्थानं) । एक प्रकार स्त्रियोंकी शृङ्गारचेष्टा । हाव भाव कटाक्ष आदि । कोमलता । नजाकत.

विश्, (प्रवेश) दाखिल होना । तु० प० स० अनिट् । विशति । अविक्षत्.

विश, (पु०) विश्+क्विप् । मनुज । मनुष्य । और वैश्य (वनिआँ).

विशङ्कट, (त्रि०) वि+शङ्कटच् । विशाल फैलाहुआ । लंबा.

विशद, (पु०) वि+शद्+अच् । शुभ्रवर्ण । सुपेदरंग । उसवाला । विमल । साफ । और व्यक्त (जाहिर) (त्रि०).

विशय, (पु०) वि+शी+अच् । संशय । शक । "विषयो विशयश्चैवेति" मीमांसा.

विशर, (पु०) वि+शृ+अच् । वध । मारना.

विशल्या, (स्त्री०) विगतं शल्यं (तत्प्रहारवेदना) यस्याः । ५ ब० । जिस्से तीरके चोटकी पीडा दूर होजाती है । अग्निशिख वृक्ष । दन्ती वृक्ष । गुडूची (गिलो) । और अजवाइन । जिसका तीर दूरहुआ (त्रि०).

विशसन, (न०) वि+शस्+ल्युट् । मारण । मारना.

विशसन, (पु०) विशस्यतेऽनेन ल्युट् । खड्ग । तलवार.

विशस्त, (त्रि०) वि+शस्+क्त । नाश कियाहुआ । और वीतगया । वा इट् । मारागया.

विशाख, (पु०) विशाखानक्षत्रे भवः+अण् । विशाखानक्षत्रमें हुआ । कार्तिकेय (शिवजीका बेटा) । एक तारा । तीरंदाजोंका एक प्रकारका खडा होना.

विशारण, (न०) वि+शृ+स्वार्थे णिच्-ल्युट् । मारण । मारना.

विशारद, (पु०) विशालं ददाति । दा+क । लस्य रः । बकुलवृक्ष । पण्डित । प्रगल्भ । हुशियार । और बहुत अच्छा (त्रि०).

विशाल, (त्रि०) वि+शालच् । विस्तीर्ण (फैलाहुआ) । लंबा और बडा । एक हरिण । और एक राजा (पु०) । इन्द्रवारुणी । माहेन्द्रवारुणी । और एक नदी (स्त्री०).

विशालता, (स्त्री०) विशालस्य भावः+तल् । पार्श्वविस्तार । फैलाव.

विशालाक्ष, (पु०) विशाले अक्षिणी यस्य । षच् समा० । चौडीआंखवाला । महादेव । गरुड । विष्णु । बडीआंखवाला (त्रि०) । पार्वती । और नागदन्ती (स्त्रियां० ङीष्).

विशिख, (पु०) विशिष्टा विगता वा शिखा यस्य । जिसकी चोटी बडी वा हैही नहिं । तीर । और शरवृक्ष । ६ ब० । शिखासे रहित (त्रि०) गली (स्त्री०).

विशिष्ट, (त्रि०) वि+शिख+क्त । युक्त । मिलाहुआ । विलक्षण । अजीब । विशेषयुक्त । विशेषणवाला.

विशिष्टाद्वैत, (न०) रामानुज आदिसे कहाहुआ प्रकृतिरूप विशेषणवाले ब्रह्मका अद्वयत्व (एकपन).

विशीर्ण, (त्रि०) वि+शृ+क्त । शुष्क । सूकगया । जरावस्थापन्न । बूढा होगया.

विशुद्ध, (त्रि०) वि+शुध्+क्त । दोषरहित । बेऐब । और विशद । निर्मल । साफ.

विशुद्धि, (स्त्री०) वि+शुध्+क्तिन् । शोधन । साफ करना । दोषराहित्य । बेऐब.

विश्रृङ्खल, (त्रि०) विगता श्रृङ्खला पद्धतिः यस्याः । जो संकल वा सडक किम्वा पगडण्डी अथवा नियमसे बाहिर हुआ । परिपाटीसे रहित.

विशेष, (पु०) वि+शिष्+घञ् । प्रभेद । फरक । प्रकार । तरह व्यक्ति । जाहिर । तिलक (टीका) । वैशेषिकमें सात पदार्थोंमेंसे एक "अन्त्यो नित्यद्रव्यवृत्तिर्विशेषः" । एक अर्थालंकार.

विशेषक, (पु० न०) विशेषयति । वि+शिष्+णिच् ण्वुल् । ललाटकृततिलक । माथेपर कियागया तिलक । विशेषकर्ता (जियादा करनेवाला) (त्रि०) । तीन श्लोकोंका एक वाक्य (फिकरा) । "त्रिभिश्लोकैर्विशेषकम्" (न०).

विशेषगुण, (पु०) कर्म० । वैशेषिकमें "बुद्धिआदि ६, रूपआदि चार, स्नेह, भावना, स्वाभाविक द्रवत्व (पिघलना) अदृष्ट (धर्माधर्म) और शब्द" कहेगये ये सब गुण । खास गुण.

विशेषण, (न०) विशिष्यते अनेन । वि+शिष्+ल्युट् । जिस्से विशेष (जियादह) कियाजाता है । भेदक धर्म । गुण, क्रियाआदि । जैसे "नीला कमल" "चलनेवाली गौ" इत्यादिमें गुण और क्रिया आदि है अर्थात् फर्क दिखानेवाला धर्म है । गुण (सिफ्त).

विशेषविधि, (पु०) खास नियम । सामान्य और विशेषके मध्यमें विशेषगोचर विधान "जैसे ब्राह्मणोंको दही दिया जाय, परन्तु शाण्डिल्य (इस गोत्रका ब्राह्मण) को छाछ देना" यहां शाण्डिल्यनामी ब्राह्मण विशेष होनेसे विश्व-(ष्व)क्सेन, उसके लिये (दधिदानापवादसे) छाछका देना विधान किया.

विशेषित, (त्रि०) वि+शिष्+णिच्+क्त । भेदित । फर्क कियाहुआ । विशेषणयुक्तीकृत । सिफ्तवाला किया गया । फाडागया.

विशेषोक्ति, (स्त्री०) विशेष वचन । अर्थसम्वन्धी अलंकार.

विशोक, (पु०) विगतः शोकः यस्मात् यस्य वा । जिस्से वा जिसका शोक दूर हुआ । अशोकवृक्ष । शोकसे रहित (अफसोस न करनेवाला) (त्रि०) । योगशास्त्रमें कहीगई एक प्रकारकी चित्तकी वृत्ति (स्त्री०).

विशोधनी, (स्त्री०) विशुध्यते अनया । जिस्से साफ कियाजाय । शुध्+ल्युट्+ङीप् । दन्तीवृक्ष । "भावे ल्युट्" शोधन । सफा वा ठीक करना । वि+शुध्+ल्युट् । शोधनकारक (साफ करनेवाला) (त्रि०).

विश्र(श्रा)णन, (न०) वि+श्रण्+णिच्+ल्युट्-वा वृद्धिः । दान । देना.

विश्रब्ध, (त्रि०) वि+श्रम्भ्+क्त । विश्वस्त । भरोसा कियाहुआ । मोहतबिर । शान्त । अनुद्धत (हलीम) । गाढ (मजबूत).

विश्र(श्रा)म, (पु०) वि+श्रम्+घञ्-वा वृद्धिः । विराम । हटना । आराम । किये जारहे कामका अवसान (अंत).

विश्रम्भ, (पु०) वि+श्रम्भ्+घञ् । विश्वास (भरोसा) । प्रत्यय । केलिकलह (क्रीडासंबंधी झगडा) । और वध (कतल).

विश्रम्भालाप, (पु०) (विश्रम्भस्य आलापः) विश्वासकी बातचीत । खुल्लमखुल्ला संभाषण । विश्वाससे भराहुआ । परस्पर संभाषण (बातचीत अथवा वार्तालाप).

विश्राव, (पु०) वि+श्रु+घञ् । प्रसिद्धि । और ख्याति (मशहूरी).

विश्रुत, (पु०) वि+श्रु+क्त । विख्यात । मशहूर । प्रसिद्ध.

विश्लिष्ट, (त्रि०) वि+श्लिष्+क्त । वियुक्त (विछडाहुआ-अलगहुआ) और शिथिल (ढीला).

विश्लेष, (पु०) वि+श्लिष्+घञ् । वियोग । विछोडा । और ढीलापन.

विश्व, (न०) विश्+व । जगत् । संसार । दुनिआं । उसका अभिमानी जीवात्मा (पु०) । श्राद्धके देवताविशेष (पु० ब० व०) । सकल (सारा) (त्रि०) (इसी अर्थमें सर्वनामसंज्ञा होती है).

विश्वकर्मन्, (पु०) विश्वेषु कर्म (व्यापारो यस्य) । जिसका काम सब स्थानमें हैं । सूर्य । देवशिल्पी । (देवताओंका कारीगर) एक मुनि । और परमेश्वर.

विश्वकृत्, (पु०) विश्वं करोति । कृ+क्विप् । विश्वको कर्ता है । विश्वकर्मा । और परमेश्वर.

विश्वकेतु, (पु०) विश्वे केतवः अस्य । सबके सब जिसका झंडा हैं । अनिरुद्ध.

विश्व(ष्व)क्सेन, (पु०) विशु (षु) ची सेना अस्य । जिसकी सेना पवित्र हो (विष्णु) प्रियंगु वृक्ष (स्त्री०).

विश्व(ष्व)च्, (अव्य०) विश्वं अञ्चति । क्विप् । सर्वतः । चारोंओर । विश्वगामी (सब ओर जानेवाला) (त्रि०).

विश्वधारिणी, (स्त्री०) विश्वं धारयति । धृ+णिनि । पृथिवी.

विश्वप्सन्, (पु०) विश्वं प्साति (भक्षति) । प्सा+कनिन् । आग । चन्द्रमा । देवता विश्वकर्मा । और पृथिवी.

विश्वम्भर, (पु०) विश्वं बिभर्ति (भृ+अच्-मुम् च) । विश्वको पालता है । इन्द्र और विष्णु । पृथिवी (स्त्री०).

विश्वरेतस्, (पु०) विश्वं रेतो यस्य । जिसे संसार उत्पन्न करना पडता है । चार मुखवाला ब्रह्मा.

विश्ववेदस्, (पु०) विश्वं वेत्ति । विद्+असुन् । संसारको जानता है । इन्द्रआदि देवता । और सब कुछ जाननेहारा.

विश्वसृज्, (पु०) विश्वं सृजति । सृज्+क्विप् । संसारको रचता है । चारमुखवाला ब्रह्मा.

विश्वस्त, (त्रि०) वि+श्वस्+क्त । जातविश्वास । मोहतबिर । जिसपर भरोसा कियागया हो । "विश्वसित" यही अर्थ । विधवा स्त्री (बेवा औरत) (स्त्री०).

विश्वाची, (स्त्री०) विश्वं अञ्चति । अचि+क्विप् । एक अप्सरा.

विश्वात्मन्, (पु०) विश्वं आत्मा यस्य । संसार जिसका आत्मा है । विष्णु । नारायण । परमात्मा.

विश्वामित्र, (पु०) विश्वं मित्रं अस्य (पहिले पदको दीर्घ होता है) । संसार जिसका मित्र है । एक ब्रह्मर्षि । गाधिका पुत्र । एक राजा.

विश्वाराज्, (पु०) विश्वेषु राजते । राज्+क्विन् । विश्वोंमें चमकता है । विश्वोंका राजा । और परमेश्वर.

विश्वावसु, (पु०) विश्वेषां वसु यस्मात् । पृ० दीर्घः । जिस्से सर्वोंका धन होता है । एक गंधर्व । रात (स्त्री०).

विश्वास, (पु०) वि+श्वस्+घञ् । "यह इसी प्रकार है" इसतरह एक चित्तकी वृत्ति । प्रत्यय । श्रद्धा । यकीन.

विश्वेदेव, (पु० ब० व०) कर्म० । अलुक् समा० । श्राद्धमें पूजेगये दस (क्रतु आदि) देवता । वह्नि (आग) (पु०).

विश्वेश, (पु०) ६ त० । विश्वका मालिक । शिव । "विश्वेश्वर".

विषू, व्याप्ति (फैलाना) जु० उभ० सक० अनिट् । वेवेष्टि-वेविष्टे । अविषत् । अविक्षत्-त.

विषू, (स्त्री०) विष्+क्विप् । विष्ठा । मैला । गूंह.

विष, (न०) विष्+क । जल । कमलकी कूमली (केशर) । मृणाल (कमलकी डण्डी) और वत्सनाभ विष । जहिर (पु० न०).

विषकण्ठ, (पु०) विषं कण्ठे यस्य । जिसके गलेमें जहिर है । शिवजी.

विषघ्न, (पु०) विषं हन्ति । (हन्+क) । शिरीष वृक्ष । (विषको मारता है) विभीतक (बहेडा) । चम्पक (चम्बेका दरख्त) । विषनाशक । विषको दूर करनेवाला (त्रि०).

विषज्वर, (पु०) विषं इव प्राणहन्ता ज्वरो यस्य । जहिरकी नाई प्राणोंको नाश करनेवाला जिसका बुखार है । महिष । भैंसा.

विषण्ड, (न०) विशेषेण षण्डम् । मृणाल । कमलकी डण्डी । में.

विषदन्तक, (पु०) विषं दन्ते यस्य+कप् । जिसके दांतमें विष है । सर्प । सांप.

विषधर, (पु०) विषं धरति । धृ+अच् । जहिरको धारण कर्ता है । सर्प । सांप । "विषधरविषमं" इत्युद्भटः.

विषम, (त्रि०) विगतो विरुद्धो वा समः । असम । जो बराबर नहिं । अयुग्म (जो जोडा नहिं) जैसे तीन-पांच आदि । ऊंचा नीचा । दारुण । सख्त । सङ्कट । एक प्रकारका पद्य (न०).

विषमच्छद, (पु०) विषमाः (अयुग्माः) छदाः यस्य । सप्तच्छद । सतौनेका द्रख्त.

विषमज्वर, (पु०) विषम उग्रो ज्वरः । सख्तबुखार.

विषमनयन, (पु०) विषमाणि (अयुग्मानि) त्रीणि नयनानि अस्य । जिसके तीन नेत्र हैं । महादेव । शिवजी.

विषमस्थ, (त्रि०) विषमे (उन्नतानते संकटे वा) तिष्ठति । स्था+क । ऊंचे नीचे वा संकटमें ठहिरता है । उपद्रवप्राप्त । मुसीबतमें पडाहुआ । संकटमें आया । और ऊंची नीची जगहपर ठहिराहुआ.

विषमशिष्ट, (न०) विषमं शिष्टं (शासनं) । अनुचित शासन । ना मुनासिब सजा.

विषमायुध, (पु०) विषमाणि (अयुग्मानि पञ्च) आयुधानि (बाणाः) यस्य । जिसके पाँच तीर हैं । कामदेव.

विषय, (पु०) विषिण्वन्ति (विषयिणं संबध्नन्ति स्वात्मकतया) वि+षि+अच् । जो अपने स्वरूपसे विषयीको बांध लेते है । इन्द्रियोंसे जानेगये शब्दादि । मजमून । और देश.

विषयिन्, (न०) विषयः अस्ति अस्य+इनि । विषयवाला । ज्ञान (जान्ना) । और इन्द्रिय । विषयासक्त (विषयोंमें फंसाहुआ) (त्रि०) । राजा । कामदेव । और शब्द (पु०).

विषलता, (स्त्री०) विषव्याप्ता इव लता । बेल मानो जहिरसे घिरी है । इन्द्रवारुणी बेल.

विषविद्या, (स्त्री०) विषाय (तन्निवृत्तये) विद्या । जहिर दूर करनेका इल्म । विष दूर करनेके मन्त्रको जान्ना.

विषवैद्य, (पु०) विषे (विषापहरे) वैद्यः (चिकित्सकः) । विष दूरकरनेमें हकीम । विषमन्त्रविद्यावाला.

विषाण, (न०) विष्+कानच् । पशुका सींग । हाथी वा सूअरका दांत । कुष्ठौषध । और क्षीरकाकोली.

विषाद, (पु०) वि+षद्+घञ् । अवसाद । जडता । दिलका टूटना.

विषान्तक, (पु०) विषस्य अन्तक इव । जहिरका मानो यमराज है । शिवाजी । विष दूर करनेवाला (त्रि०).

विषाराति, (पु०) ६ त० । विषका शत्रु । काला धतूरा । कृष्णधुस्तूर.

विषास्य, (पु०) विषं आस्ये यस्य । जिसके मुखमें जहिर है । सर्प । सांप । "विषसे लिपटेहुए मुखवाला भिलावा" । मल्लातक.

विषु, (अव्य०) विष्+कु । साम्य । बराबरी । और नानारूपवाला.

विषुव, (न०) विषु (दिनरात्र्योः साम्यं) वाति-वा=क । वह समय कि जब रात और दिन बराबर हो जाता है । "विषुवत्" यही अर्थ.

विष्क, (हिंसा) कतलकरना-मारना । चु० आ० स० सेट् । विष्कयते । दर्शन (देखना) । उभ० । विष्कयति-ते । अविविष्कत्-त.

विष्कम्भ, (पु०) वि+स्कम्भ्+अच् । सूर्य और चन्द्रमाके योग (मेल) से उत्पन्न हुआ पहिला योग । विस्तार । फैलाव । प्रतिबंध । रोक । नाटकका एक अंग (जिसमें मध्यपात्रके द्वारा पीछे और आगेका वृत्तान्त संक्षेपसे कहाजाता है) । योगिओंका एक वंध । वृक्ष । कीलक । कील.

विष्टप, (न०) विश्+कपन्+तुट् च । भुवन । लोक । जगत् । संसार.

विष्टब्ध, (त्रि०) वि+स्तम्भ्+क्त । प्रतिरुद्ध । रुकाहुआ । अवरुद्ध.

विष्टम्भिन्, (त्रि०) वि+स्तम्भ्+णिनि । प्रतिबंधक । रोकनेहारा । एक रोगको उपजानेहारा.

विष्टर, (पु०) वि+स्तृ+अप् । षत्वं । कुशाका बनाहुआ एक आसन । हरएक आसन । वृक्ष.

विष्टरश्रवस्, (पु०) विष्टरः (कुशमुष्टिरिव) श्रवसी (कर्णौ) अस्य । कुशाकी मुष्ठीके समान जिसके कान हैं । विष्णु.

विष्टि, (स्त्री०) विश्+क्तिन्-क्तिच् वा । वेतन (तनखाह)-के बिना भार आदि उठानेका दुःख । मजदूरी । काम । वर्षण (वर्सना) । प्रेषण । भेजना । सातवां करण । काम करनेहारा नौकर । मजदूर मजदूरीके विना काम करनेवाला (पु०).

विष्ठा, (स्त्री०) विविधं तिष्ठति । स्था+क-षत्वम् । पुरीष । मल । गूंह.

विष्णु, (पु०) विष् (व्यापन-फैलना) नुक् । व्यापक । फैलाहुआ-जो (सब स्थानमें है) । परमेश्वर । वह्नि (आग) । शुद्ध । साफ । धर्मशास्त्रके बनानेहारा एक मुनि । वासुदेव.

विष्णुगुप्त, (पु०) चाणक्य पण्डित । यहि वात्स्यायन पक्षिलनामसे प्रसिद्ध न्यायभाष्यका रचनेवाला है.

विष्णुतैल, (न०) वैद्यक (चिकित्सा) में प्रसिद्ध एक प्रकारका तेल.

विष्णुपद, (न०) विष्णोः पदमिव (व्यापकत्वात्) । व्यापक होनेसे मानो विष्णुका पाँव है । आकाश । आस्मान.

विष्णुपदी, (स्त्री०) विष्णुपदं कारणत्वेन अस्ति अस्याः । अच्-ङीप् । जिसका कारण विष्णुका पाँव है । गंगा । सूर्यका वृष, सिंह, वृश्चिक और कुम्भ राशिमें बदलना.

विष्णुमाया, (स्त्री०) ६ त० । विष्णोः (परमेश्वरस्य) माया । परमात्माकी अघटघटनापटीयसी (जो न बन-सके उसेभी बनादेनेमें बहुतही चतुर) अविद्याशक्ति । उसकी अधिष्ठात्री (आश्रय) दुर्गा.

विष्णुरथ, (पु०) विष्णो रथ इव । मानो विष्णुकी गाडी है । गरुड.

विष्णुरात, (पु०) विष्णुना रातः, विष्णुर्वा रायात् जीवनं अस्मै । रा+क्त । विष्णुसे दियागया । विष्णुने जिसे जीवन दिया । परीक्षित् नामी राजा (वह गर्भहीमें अश्वत्थामाके अस्त्रसे जलकर मरगया, परन्तु विष्णुने फिर जिलाया) यह कथा महाभारतमें प्रसिद्ध है.

विष्फार, (पु०) वि+स्फुर्+णिच्+अच् । धनुर्गुणाकर्षण-शब्द । कमानके चिल्ला खेंचनेका शब्द । टंकार.

विष्य, (त्रि०) विषेण वध्यः । विष्+यत् । जरूरमारनेके लायक । जहिरसे मार डालनेके लायक । विषवध्य.

विष्वक्सेन, (पु०) विषूची सेना यस्य । दिसकी अच्छी साफ सेना है । विष्णुपर चढेहुएको खानेवाला । और विष्णुके गणोंमेंसे एक । प्रियंगु (स्त्री०).

विष्वाण, (न०) वि+ष्वन्+घञ् । षत्वणत्वे । भोजन खाना । खुराक.

विस, (न०) वि+सो+क । मृणाल । कमलफूलकी डण्डी ।

विस्, उत्सर्ग (छोडना) । दिवा० पर० सक० सेट् । विस्यति । अवेसीत्.

विसंवाद, (पु०) वि+सम्+वद्+घञ् । विप्रलम्भ । वञ्चन । ठगना । किसी पदार्थके विषयमें उलटा कहना.

विसकुसुम, (न०) विसयुक्तं कुसुमं । कमलफूलकी डण्डीवाला फूल । पद्म.

विसङ्कट, (पु०) विशिष्टो संकटो यस्मात् । ५ ब० । जिस्से बडा संकट होता है । सिंह । शेर । इङ्गुदीका वृक्ष.

विसनाभि, (स्त्री०) विसं नाभौ यस्य । जिसकी नाभिमें विस है । पद्मिनी और पद्मोंका समूह.

विसर, (पु०) वि+सृ+अप् । समूह । और विस्तार । फैलाव.

विसर्ग, (पु०) वि+सृज्+घञ् । दान देना । त्याग । छोडना । जलका त्याग । मोक्ष (छुटकारा) और प्रलय.

विसर्जन, (न०) वि+सृज्+ल्युट् । दान । देना । त्याग । छोडना । वि+सृज्+णिच्+ल्युट् । प्रेरण । भेजना.

विसर्पण, (न०) वि+सृप्+ल्युट् । प्रसार । फैलाव । सर्कना । भागजाना.

विसिनी, (स्त्री०) विसानां समूहः । तद्युक्तो देशो वा+इनि । कमलोंका समूह । और पद्मलता (बेल).

विसूचिका, (स्त्री०) विशिष्टा सूचीव । इवार्थे कन् । मानो बडी सूई है । एक प्रकारका रोग । हैजा.

विसृत, (त्रि०) वि+सृ+क्त । विस्तीर्ण । फैलाहुआ.

विसृत्वर, (त्रि०) वि+सृ+क्वरप् । विसरणशील । फैलने-वाला । (स्त्रियां ङीप्).

विसृमर, (त्रि०) वि+सृ+क्मरप् । विसरणशील । फैलने-वाला.

विसृष्ट, (त्रि०) विसृज्+क्त । प्रेरित । भेजाहुआ । छोडाहुआ । क्षिप्त । फेंकागया.

विस्त, (पु० न०) विस्-उत्सर्ग (छोडना) क्त । नि० न इट् । स्वर्णकर्ष । सोनेकी मोहर । अस्सी रत्तीका परि-माण (माप).

विस्तार, (पु०) वि+स्तृ+संज्ञायां कर्तरि घञ् । विटप । वृक्ष । शाखाओंका फैलाव । "भावे घञ्" अस्तीर्णता (फैलावट) । और समासके वाक्यमें पदोंका समूह.

विस्तीर्ण, (त्रि०) वि+स्तॄ+क्त । विपुल । फैला हुआ । विशाल । लंबा.

विस्फुलिङ्ग, (पु०) विस्फुरति । वि+स्फुर्+ङु वा षः तद् लिङ्गं अस्य । चमकनेवाले निशानहारा । वह्निकण । आगका कतरा । एक प्रकारका विष.

विस्फोट, (पु०) विस्फुटति । वि+स्फुट्+अच् । बहुत फूटता है (विषफोडा) पदार्थ । "स्वार्थे कन्" एक प्रकारका फोडा.

विस्मय, (पु०) वि+स्मि+अच् । आश्चर्य । अद्भुत । अजीब । एक रस.

विस्मापन, (पु०) वि+स्मि+णिच्+अच्+आत् ल्यु । जो हैरान करदे । कुहक । इन्द्रजालका तमाशा । और कामदेव । गंधर्वोंका पुर (न०) "विस्मायनम्" यही अर्थ.

विस्मित, (त्रि०) वि+स्मि+क्त । विस्मययुक्त । हैरानहुआ.

विस्मृत, (त्रि०) वि+स्मृ+क्त । स्मरणाविषय । भूलगया.

विस्मृति, (स्त्री०) वि+स्मृ+क्तिन् । स्मरणाभाव । भूलना.

विस्र, (न०) विस्+रक् । आमगन्धि । कच्चा गंध । अधगंध.

विस्रगन्धि, (पु०) विस्रस्य इव गन्धः अस्याः । जिसका गंध कच्चे गंधके समान है । "इत समा०" हरिताल । हडताल.

विस्रम्भ, (पु०) वि+स्रम्भ+घञ् । विश्वास । प्रत्यय । परिचय.

विस्रम्भिन्, (त्रि०) वि+स्रम्भ्+णिनि । विश्वासवाला । मुहब्बती.

विस्रसा, (स्त्री०) वि+स्रन्स्+क । जरा । बुढेप्पा.

विहग, (पु०) विकिरति । वि+कृ+क-सुट् च । विहग । पक्षी । परिंदह.

विहग, (पु०) विहायसा गच्छति । गम्+ड-नि० । आकाशसे जाता है । पक्षी । परिंदह । पृ० । "विहङ्ग" यही अर्थ.

विहङ्गम, (पु०) विहायसा गच्छति । गम्+खच्-नि० । आकाशसे जाता है । पक्षी । परिन्दा.

विहङ्गराज, (पु०) ६ त० । अच् समा० । पक्षिओंका राजा । गरुड । "विहङ्गराजाङ्गरुहैः" इति माघः.

विहनन, (न०) विहन्यते । वि+हन्-ल्युट् । विघ्न । रुकावट । हिंसा । कतलकरना.

विहर, (पु०) वि+हृ+अप् । वियोग । विछोडा । "ल्युट्" यही अर्थ (न०).

विहसित, (न०) वि+हस्+क्त । मध्यमहास्य । थोडा हसना.

विहस्त, (त्रि०) विगतो हस्तो हस्तावलम्बनं यस्य । जिसका हाथसे पकडना दूरहुवा । व्याकुल । घवराया-हुआ । पण्डित । चतुर.

विहापित, (न०) वि+हा+णिच्+क्त । दान देना । छुडायागया.

विहायस, (पु० न०) वि+हय्+असुन् । नि० वृद्धिः । आकाश । आस्मान । और पक्षी । स्वार्थे अच् । विहायसं (न०).

विहार, (पु०) वि+हृ+घञ् । खेलनेके लिये पाँवोंसे जाना । भ्रमण (घूमना) । लीला । बौद्धोंका देवालय (मंदिर).

विहित, (त्रि०) वि+धा+क्त । कृत । कियाहुआ । विधिसे बोधित (जतलायागया).

विहीन, (त्रि०) वि+हा+क्त । त्यक्त । छोडाहुआ । और वर्जित.

विह्वल, (त्रि०) वि+ह्वल्+अच् । भयआदिसे घवरायाहुआ और विलीन.

वी, कान्ति (चाहना) । जननं (उत्पन्न होना) । अक० । जाना-व्याप्ति (फैलना) । क्षेप (फेंकना) और खाना । सक० अदा० उभ० अनिट् । वेति । अवैषीत्.

वी(वि)काश, (पु०) वि+काश्+वा दीर्घः । रहस् । अकेले । प्रकाश.

वीक्षण, (न०) वि+ईक्ष्+करणे ल्युट् । नेत्र । आंख । "भावे ल्युट्" देखना.

वीचि-ची, (पु० स्त्री०) वे+डीचि-वा ङीप् । तरङ्ग । लहर । अवकाश । अल्प (थोडा) । और किरण.

वीचितरङ्ग, (पु०) वीचेरिव तरङ्गो यत्र । जहां लहरपर लहर चलती हो । एक तरङ्गसे जैसे लगातार तरगें (लहरें) उत्पन्न होती हैं । इसीप्रकार स्वजन्य जन्यादिरूप (अपनी उत्पत्तिके अनन्तर उत्पन्न होना) एक प्रकारका नियम । जैसे शब्दकी उत्पत्ति नगारे आदि स्थानमें पहिले होती है उसके अनन्तर शब्दपरम्परा (एक आवाजके पीछे दूसरी) से श्रोत्र (कान) के साथ सम्बन्ध होनेहीसे श्रवण होता है (शब्द) सुनाई देता है).

वीचिमालिन्, (पु०) वीचीनां माला अस्ति अस्य+इनि । लहरोंकी मालावाला । समुद्र । समुंदर.

वीज्, व्यजन (पंखाकरना) । चुरा० उभ० सक० सेट् । वीजयति-ते । "वीज्यते स हि संसुप्तः" कुमारः.

वीज, (न०) वी+क्विप् । जन्+ड-कर्म० । कारण । शुक्र (वीर्य-मणि) । अंकुर । अव्यक्तगणित । मन्त्रविशेष । धान्यआदिका फलआदि.

वीजकोष, (पु०) वीजानां कोश इव आधारः । पद्मवीजका आधार । वराटक । कौडी.

वीजगर्भ, (पु०) वीजानि गर्भे यस्य । जिसके वीचमें वीज हैं । पटोल.

वीजन, (न०) वीज+ल्युट् । व्यजन । पंखा । "करणे ल्युट्" चामरआदि । चौरी वगैरह । वस्तु । और चक्रवाक (चकवा) जीवंजीवपक्षी (पु०).

वीजसञ्चय, (पु०) वीजानां (वपनयोग्यधान्यादीनां) सञ्चयः । बोनेलायक धानोंका इकट्ठा करना (गल्ला) बहुतसे बी.

वीजसू, (पु०) वीजं सूते । सू+क्विप् । पृथिवी । जमीन.

वीजाकृत, (त्रि०) वीजेन सह कृष्टम्+डाच् । कृ+क्त वीजके साथ खेंचागया खेत । वीजाकृष्ट क्षेत्र.

वीजिन्, (पु०) वीजं अस्ति अस्य+इनि । उत्पादक । पैदाकरनेवाला । पिता । वीजवाला (त्रि०).

वीज्य, (त्रि०) विशेषेण इज्यः । वि+यज् क्विप् । बहुत आदरके लायक । कुलीन । खान्दानी.

वीटि-टी, (स्त्री०) वि+इट्+इन्-वा ङीप् । पानका बीडा । तयार (लगायाहुआ) ताम्बूल.

वीणा, (स्त्री०) अज्+न-वीभावः । पृ० णत्वम् । अपने नामका वाजा । बीन.

वीणादण्ड, (पु०) ६ त० । बीनवाजेके ऊपरका डण्डा.

वीणावाद, (त्रि०) वीणां वादयति । वद्+णिच्+अण् । वीणावादक । बीनके बजानेवाला.

वीतशोक, (पु०) वि+इण्+क्त । वीतः शोको यस्मात् । यस्य वा । जिस्से वा जिसका शोक दूरहुआ । अशोक वृक्ष । शोकसे रहित (त्रि०).

वीति, (स्त्री०) वी+क्तिन् । गति । जाना । दीप्ति । चमकना । खाना और मांगना+क्तिच् । घोटक (घोडा) (पु०).

वीतिहोत्र, (पु०) वीतये (पुरोडाशादिभक्षणाय) हूयन्ते देवा अत्र । हु+त्रल् । चरुआदि खानेके लिये जिसमें देवताओंको बुलाया जाता है । वह्नि । आग.

वीथि-थी, (स्त्री०) विथ्+इन् । पृ० वा ङीप् । पंक्ति । श्रेणि । कतार । घरका अंग । वर्त्म । रास्ता । गली । देखनेलायक काव्य वा नाटकका एक अंग.

वीध्र, (त्रि०) वि+इन्ध्+रक् । निर्मल । साफ । आकाश और वायु (पु०).

वीनाह, (पु०) वि+नह्+घञ् । कूपआदिके मुख बंद करनेका साधन । मुखबंधन । मुंका बांधना । पाट.

वीप्सा, (स्त्री०) वि+आप्+सन्+अच्-ईत्-अ-अभ्यासका लोप होता है । व्याप्ति । फैलना । बहुत इच्छा.

वीर, (न०) अज् रक्-वीभावः वीर् अच् वा । मिरच । कमलकी जड । कांजी । उशीर वेगवाला और बहादुर (शौर्ययुक्त) (त्रि०) । कुलाचार (तन्त्रोक्त) (न०).

वीरण, (न०) वि+ईर्+ल्यु । उशीर (वेणारमूल) । एक चंदन.

वीरपत्नी, (स्त्री०) वीरः पतिः यस्याः+नुक्-ङीप् च । वीरभार्या । बहादुरकी औरत.

वीरपत्रा, (स्त्री०) वीरयति । वीर्+अच् । तथाभूतं पत्रं यस्याः । जिसका पत्ता बहादुर बनाता है । विजया । भंग । भांग.

वीरपान-ण, (न०) वीराणां पानं वा णत्वम् । लडाईके लिये वा लडाईका खेद दूर करनेको सुरापान (मदिराका पीना.)

वीरभद्र, (पु०) वीरो भद्रोऽस्य । अश्वमेधका घोडा । "वीरेषु भद्रं" । बहादुरोंमें अच्छा । वीरण (न०).

वीरसू, (स्त्री०) वीरं सूते सू+क्विप् । वीरकी माता । वीरमाता (बहादुर जनती है).

वीरसेन, (पु०) वीरा सेना यस्य । जिसकी सेना वीर है । नलराजाका पिता । एक राजा.

वीरहन्, (पु०) वीरयति (शौर्यान्वितं करोति) । वीर-णिच्+अच् । बहादुर बनाता है । वीरो यज्ञाग्निस्तं हतवान् । हन्+क्विप् । वह ब्राह्मण जिसने अग्निहोत्रकरना छोडदिया । नष्टाग्निविप्र.

वीरा, (स्त्री०) वि+ईर्+अच्-वीर्+अच् वा । मुरानाम गंधद्रव्य । क्षीरकाकोली । आमलकी । आवला । पति और पुत्रवाली स्त्री । रम्भा । महाशतावरी । घृतकुमारी । अतिविषा । द्राक्षा (दाख) । टालीका द्रख्त.

वीराशंसन, (न०) वीरैः आशंस्यते अत्र । जहां बहामार रहे हैं । भयंकर (डरावना) युद्धका स्थान.

वीरासन, (न०) वीरस्य इव आसनम् । बहादुरकी नाईं बैठना (एक पट्टपर एक पांवको और दूसरेको दूसरे पट्टपर धरना) एक आसन.

वीरुध्-धा, (स्त्री०) वी+रुध्+क्विप् । वीर्घः वा टाप् । विस्तृतलता । फैलीहुई बेल.

वीरेश्वर, (त्रि०) ६ त० वीरोंका पति । काशीमें एक शिवलिङ्ग (पु०).

वीर्य, (न०) वीर्+यत् । वीरस्य भावः-यत् वा । शरीरका सबसे पिछला धातु-शुक्र (मनि) । पराक्रम । बल । प्रभाव । तेज । और दीप्ति.

वीर्यवत्, (त्रि०) वीर्यं अस्ति अस्य+मतुप् । मस्य वः । बलवाला । वीर्यवाला । जोरवाला.

वीर्यशालिन्, (त्रि०) वीर्येण शालते । वीर्य (बहादुरी)-से शोभताहै । दृढ । पराक्रमी । बली । सत्ववान् । धीर.

वीवध, (पु०) विशेषेण वध्यते अत्र । वध्+घञ् । न वृद्धिः । तण्डुलादिसंग्रह । चावलआदिका (गल्ला)-संग्रह । मार्ग । रास्ता । भार.

वीवधिक, (पु०) वीवधः (भारवहनं) शिल्पं अस्य+ठन् । बोझा उठानेवाला भारवाहक.

वीहार, (पु०) विह्रियते अत्र । वि+हृ+घञ् दीर्घः । बुद्धका एक मंदिर । "भावे घञ्" विहार । क्रीडा । खेल । विलास.

वुवूर्षु, (त्रि०) वरितुं इच्छुः+वृ+सन्+उ । वरनेकी इच्छावाला । चुनलेनेकी इच्छावाला । पहिचान लेनेवाला.

वृ, आवरण (ढांकना) । चु० उभ० सक० सेट् । वारयति-ते.

वृ, सेवा करना । क्र्या० आ० सक० सेट् । वृणीते । "वृणते हि विमृश्यकारिण"मिति भारविः । अवरीष्ट-अवरिष्ट अवृत.

वृ, वरण (कबूलकरना-मांगना) । भ्वा० उभ० सक० सेट् वरति-ते । अवारीत्-अवरिष्ट-अवरीष्ट-अवृत.

वृ, वरण (मांगना-स्वीकारकरना) । स्वा० और क्र्या० उभ० सक० सेट् । वृणोति-वृणुते । वृणाति-वृणीते । अवारीत्.

वृ, (वरण) कबूलकरना । उभ० सक० सेट् । वृणाति-वृणीते । अवारीत् । अवरिष्ट-अवरीष्ट-अवृर्त.

वृंहित, (न०) वृहि+क्त । करिगर्जन । हाथीका गर्जना (आवाज).

वृक्, आदान । पकडना । भ्वा० आ० सक० सेट् । वर्कते.

वृक, (पु०) वृक्+क । कुत्तेके स्वरूपका हरिणके मारनेवाला एक प्रकारका भेडिया । कौआ । बकवृक्ष । बहुत द्रव्योंका धूप । पेटकी आग.

वृकदंश, (पु०) वृकं दशति । दंश्+अच् । कुक्कुर । कुत्ता.

वृकधूर्त, (पु०) वृक इव धूर्तः । जो वृककी नाईं धूर्त है । शृगाल । गीदड.

वृकोदर, (पु०) वृकनामा अग्निः उदरे यस्य । जिसके पेटमें वृकनामवाली आग है । भीमसेन.

वृक्ण, (त्रि०) व्रश्च्+क्त । छिन्न । काटाहुआ.

वृक्ष, (पु०) व्रश्च्+क्स । काटनेपरमी उत्पन्न होनेवाला वृक्ष । "हस्वार्थे कन्" कुटजवृक्ष.

वृक्षक, (पु०) अल्प वृक्ष+कन् । छोटा वृक्ष (बूटा) । वृक्ष । कुटज वृक्ष.

वृक्षचर, (पु०) वृक्षे चरति । चर्+अच् । वानर । बंदर.

वृक्षच्छाय, (न०) ६ त० । बहुतसें वृक्षोंकी छाया.

वृक्षनाथ, (पु०) ६ त० । वृक्षोंका स्वामी । बोडका द्रख्त । वटवृक्ष.

वृक्षभवन, (न०) ७ त० । वृक्षमें मंदिर । वृक्षमें कोटर (खोल).

वृक्षवाटिका, (स्त्री०) वृक्षैर्वाटीव संवृतत्वात् । इवार्थे कन् । वृक्षोंसे मानों छोटा घर है (ढकाहुआ होनेसे) । घरके पासका (उपवन । छोटा बाग जहां मन्त्री वा वेश्या आनंद कर्ते हैं).

वृज्, त्याग (छोडना) । वा चु० उभ० पक्षे भ्वा० पर० सक० सेट् । वर्जयति-ते । वर्जति । अववर्जत्-अवीवृजत् । अवर्जीत्.

वृजन, (न०) वृज्यते अत्र । वृज्+क्यु । पाप (गुनाह) और आकाश । केश (बाल) (पु०) कुटिल (तिर्छा) (त्रि०).

वृजिन, (न०) वृज्+इनच् । पाप । भुग्न (टेढा) (त्रि०) । देश (पु०).

वृण्, भक्षण-खाना । तना० उभ० सक० सेट् । वृणोति-वृणुते.

वृत्, वर्तन (होना) । भ्वा० आ० लुङ्-लुट्-लृङ्में उभ० अक० सेट् । वर्तते । अवृतत्-अवर्तिष्ट । वर्त्स्यति । वर्तिष्यते.

वृत, (त्रि०) वृ० क्त । प्रार्थित । मांगागया । किसी काम-आदिमें प्रार्थना आदिसे लगायागया । कबूल कियाहुआ.

वृति, (स्त्री०) वृ+क्तिन् । मांगना । वेष्टन । लपेटना । घेरादेना (वाडा).

वृत्त, (न०) वृत्+भावे क्त । "गुरूका आदर, दया, शौच (सफाई), सत्य, इन्द्रियोंको रोकना, हितकारी बातोंका चलाना" इस प्रकारका चरित्र । एक प्रकारका पद्य और वृत्ति (जीविका) । "वृत्+कर्तरि क्त" । अ-तीत । बीतगया । वर्तुल (गोल) । पढाहुआ । मराहुआ और जात (उत्पन्नहुआ) (त्रि०) । कूर्म । कच्छु (पु०).

वृत्तगन्धि, (न०) वृत्तस्य (पद्यभेदस्य) एव गन्धः (लेशः) अत्र इत् समा० । एक प्रकारका पद्य (श्लोक).

वृत्तफल, (न०) वृत्तं फलं अस्य । जिसका फल गोल है । मिरच, अनार (दाडिम) । और बदर । बेर । आमला । टाप्.

वृत्तस्थ, (त्रि०) वृत्ते (गुरुपूजादौ) चरित्रे तिष्ठति । स्था+क । जो गुरुकी पूजाआदिमें लगा है । अच्छे चाल-चलनवाला । वृत्तमें ठहिराहुआ.

वृत्तानुपूर्व, (त्रि०) वृत्तः पूर्वं अनुगतश्च । गौकी पूंछके समान गोल और पीछेकी ओर मुडा हुआ.

वृत्तान्त, (पु०) वृत्तः (जातः) अन्तः (निर्णयः) यस्मात् । जिस्से फैसला हो गया । संवाद । खबर । हाल । वाचिक संदेश.

वृत्ति, (स्त्री०) वृत्+क्तिन् । वर्तन । जीविका । स्थिति । और विवरण (जियादा बयान) । वेदान्तमें अंतःकरणका परिणामविशेष (खास तौरपर बदलना).

वृत्तिभङ्गः—वैकल्यम्, (पु०) वृत्तेः भङ्गः । वृत्ति-(जीविका) का टूटजाना (नष्टहोना).

वृत्त्यनुप्रास, (पु०) वृत्तेः अनुप्रासः । एक प्रकारका अनु-प्रास (खरक) विषमता होनेपरभी शब्द समताका होना.

वृत्त्युपाय, (पु०) वृत्तेः उपायः । जीविका (रोजी) का साधन.

वृत्र, (पु०) वृत्+रक् । अंधकार (अंधेरा) । रिपु दुश्मन । विश्वकर्माका पुत्र । एक दैत्य । बादल । एक पर्वत (पहाड) । मन्त्र । और शब्द (आवाज).

वृत्रहन्, (पु०) वृत्रं हतवान् । हन्+क्विप् । इन्द्र । वृत्र-को मारताहुआ.

वृथा, (अव्य०) वृ+थाल् । निरर्थक । बेफायदह.

वृथादान, (न०) कर्म० । वह दान कि जिसका फल कुछ नहिं । स्मृति (धर्मशास्त्र) में दिखलायाहुआ देवता, पितर, आदिके प्रयोजनसे भिन्न काम (एकप्रका-रका दान).

वृथामांस, (न०) वृथाभूतं मांसं । देवताआदिके उद्देशके बिना मारेहुए पशुओंका मांस । बेफायदा मांस.

वृथावादिन्, (त्रि०) वृथा वदति । मिथ्या (निष्फल-बेफायदा) बोलनेवाला.

वृध्, दीप्ति (चमकना) चु० उ० अ० सेट् । वर्धयति-ते.

वृधु, वृद्धि (बढना) । भ्वा० आ० लुङ् लृट् और लृङ्में उभ० अक० सेट् । वर्धते । अवृधत् । अवर्धिष्ट.

वृधु, तु० आ० परन्तु लट्-लुङ्-लृङ् और सन्नन्तमें परस्मै-पदभी होजाताहै । (वर्धते-ववृधे,-अवृधत्-अवर्धिष्ट, वर्धि-ष्यते-वर्त्स्यति, तिवृत्सति-विवर्धिषते,वृद्ध) बढना । बडा होना । पक्का (दृढ) होना । बदना.

वृद्ध, (न०) वृध्+क्त । शैलजनामगंधवाला द्रव्य । वृद्ध-दारक वृक्ष (पु०) । वृद्धिवाला (बढाहुआ-बूढा) और पण्डित (चतुर-लायक मनुष्य आदि) (त्रि०).

वृद्धप्रपितामह, (पु०) वृद्धः प्रपितामहात् । राज० । पडबाबेसे बूढा । प्रपितामहजनक । पडबाबेका बाप (पिता).

वृद्धश्रवस्, (पु०) वृद्धेभ्यः शृणोति । श्रु+असुन् । बूढोंसे सुनता है । "वृद्धेषु श्रवो यशो यस्य इति वा" । जिसका यश बूढोंमें है । इन्द्र । देवताओंका राजा.

वृद्धा, (स्त्री०) वृध्+क्त । वर्षयौवना स्त्री । जिसकी जवानी गई । बूढी.

वृद्धाङ्गुलि, (स्त्री०) वृद्धा अङ्गुलिः । बडी अंगुलि । अंगूठा.

वृद्धि, (स्त्री०) वृध्+क्तिन् । समृद्धि । अभ्युदय । सम्पत्ति । बढती । दौलतमंदी । और समूह । "वृध्+कर्तरि क्तिच्" । एक प्रकारका औषध । सूद (व्याज) । गंधद्रव्यशैलेय (पु०).

वृद्धिजीविका, (स्त्री०) वृद्धिरूपा जीविका । सूदरूपी रोजगार । ऋणदान (कर्जादेना) आदिमें दियेगये धनसे लाभ उठानारूप जीविका.

वृद्धिश्राद्ध, (न०) वृद्ध्यै (अभ्युदयाय) श्राद्धं । सम्पदाके लिये श्राद्ध । पुत्र आदिके संस्कारका एक अंग । पार्वणकी विधिवाला नान्दीश्राद्ध । मंगलश्राद्ध.

वृद्ध्याजीव, (त्रि०) वृद्धिं (अधमर्णतः प्रयुक्तद्रव्याधिकलाभं आजीवति) । आ+जीव्+अण् । कर्जालेनेवालेसे दियेगये द्रव्यके लाभपर जीनेवाला । व्याजपर जीनेवाला । व्याजडिया । "वार्धुषिक".

वृन्त, (न०) वृ+क्त । नि० मुम् च । फल और पत्तोंका बंधन.

वृन्ताक, (पु० स्त्री०) वृन्तं अकति । अक्+अण् । वताऊं.

वृन्द, (न०) वृन्यते-वृणुते वा+वृण् वृत् वा हन् । नि० । समूह और दस अरबकी संख्या । तुलसी और राधिका (स्त्री०).

वृन्दारक, (पु०) वृन्द+आरकन् । देवता । मुख्य । और मनोहर । खूबसूरत (त्रि).

वृन्दावन, (पु०) वृन्दाया विहारस्थानं वनम् । वृन्दाके क्रीडा करनेका स्थान । मथुराके पास वैष्णवोंका एक तीर्थ । "वृन्दावनं परित्यज्य पादमेकं न गच्छति" पुराणम्.

वृन्दिष्ठ, (त्रि०) अतिशयेन वृन्दारकः (मुख्यः) + इष्ठन् । वृन्दादेशः । बहुतही मुख्य । "ईयसुन्" "वृन्दीयान्".

वृश्चिक, (पु०) व्रश्च्+किकन् । एक प्रकारका कीडा । बिच्छु । मेषसे आठवीं राशि । औषध । गोहेका कीडा.

वृष्, सेचन (सींचना) । भ्वा० पर० सक० । प्रजननसामर्थ्य (उत्पन्न करनेकी ताकतका होना) । अक० सेट् । वर्षति । अवर्षीत् । क्त्वा वेट्.

वृष, (पु०) वृष्+क । वृषभ (बैल) । मेषसे दूसरी राशि । एक प्रकारका पुरुष । इन्द्र । धर्म । हरएक सींगवाला । मूषिक (मूसा-चूहा) । शत्रु । कामदेव । बलवाला । ऋषभनाम औषध । मोरकी पूंछ.

वृषण, (पु०) वृष्+क्यु । अण्डकोष । पताड्ड । टट्टा.

वृषदंशक, (पु०) वृषान्-(मूषिकान्) दशति । दंश्+ण्वुल् । मूसोंको डसता है । बिडाल । बिल्ला.

पद्म० ५९

वृषध्वज, (पु०) वृषो ध्वजो यस्य । जिसका झण्डा बैल है । शिवजी । "वृषकेतन" इसी अर्थमें है.

वृषन्, (पु०) वृष्+कनिन् । इन्द्र । कर्ण । बैल । घोडा । तक्लीफ.

वृषपर्वन्, (पु०) वृषे पर्व (उत्सवो) यस्य । जिसका उत्सव वृषपर है । शिवजी । एक दैत्यका नाम.

वृषभ, (पु०) वृष+अभच् । बैल । बहुत अच्छा । एक प्रकारका जिन । कानका छेक । औषध.

वृषभगति, (पु०) वृषभेण गतिः अस्य । जिसकी चाल बैलसे हो । शिवजी । "वृषभयान" यही अर्थ.

वृषभानु, (पु०) राधिकाका पिता (बाप).

वृषल, (पु०) वृष्+कलच् । शूद्र । गाजर । घोडा । जो धर्मात्मा नहिं । और चन्द्रगुप्त राजा.

वृषली, (स्त्री०) वह कन्या कि जिसने पिताहीके घरमें संस्कार (विवाह) हुए बिन रज देखा हो । "वृषल+भार्यायां-जातौ वा ङीप्" । वृषलजातिकी स्त्री । वा वृषलकी औरत.

वृषलोचन, (पु०) वृषस्य इव लोचनं यस्य । जिसकी आँख बैलकी नाईं है । मूषिक । मूसा । ६ त० । बैलकी आँख (न०) ६ ब० । बैलकी आँखवाला (त्रि०).

वृषवाहन, (पु०) वृषः वाहनं अस्य । बैलकी सवारी वाला शिवजी । "वृषभवाहन" यही अर्थ.

वृषस्यन्ती, (स्त्री०) वृषेण जम्भनं इच्छति । वृष्+जम्भार्थे क्यच्-सुक्च । कामुकी । वह स्त्री जिसे विषय करानेकी इच्छा लगरही हो.

वृषाकपायी, (स्त्री०) वृषाकपेः पत्नी । ङीप्-ऐङ् च । वृषाकपिकी औरत । लक्ष्मी । गौरी । स्वाहा । शची । जीवन्ती.

वृषाकपि, (पु०) वृषं (धर्मं) न कम्पयति । न+कपि-इन्-नलोपः । जो धर्मको नहिं हिलाता । महादेव । विष्णु । अग्नि (आग) । और इन्द्र.

वृषाकर, (पु०) वृषस्य (सामर्थ्यस्य) करः । कृ+अच् । ताकत करनेहारा । माष । म्मां.

वृषाङ्क, (पु०) वृषः अङ्कः अस्य । बैल जिसका चिह्न है । शिवजी.

वृषि-षी, (स्त्री०) वृष्+कि-वा ङीप् । व्रत करनेवालोंके लिये एक प्रकारका कुशाका आसन.

वृषोत्सर्ग, (पु०) उत्+सृज्+घञ् । ६ त० । मृतक (मराहुआ) के उद्देशसे उसके पुत्र आदिके द्वारा विधिसे कियागया बैलका त्याग । "वृषोत्सर्गश्च कर्तव्यः" इति स्मृतिः.

वृष्टि, (स्त्री०) वृष्+क्तिन् । वर्षण । वर्सना । "कर्मणि क्तिन्" । मेघ (बादल) आदिसे वर्साहुआ जल (पानी).

वृष्टिजीवन, (त्रि०) वृष्टिः जीवनं यस्य वा वृष्ट्या जीवति– जीव्+ल्यु+अन । वर्षासे पालागया वा आर्द्र (गीला) होगया (नगर)। जलसे पूर्ण होगया । जलसे पलनेवाला । जिसका जीवन जल है । चातक । पपीहा नामसे प्रसिद्ध पक्षी.

वृष्टिभू, (पु०) वृष्टौ (तदुपलक्षिते काले) भवति । वर्षासे पहिचानेहुए समय (बर्सात) में होता है । भेक । मेंडक । वर्षामें हुआ (त्रि०).

वृष्टिसंपात, (पु०) वृष्टेः संपातः । वृष्टिका गिरना । पानीका धाराप्रवाह वरसना.

वृष्णि, (पु०) वृष्+नि । यादवोंका वंश । श्रीकृष्ण । और वादल.

वृष्णिगर्भ, (पु०) वृष्णिः (यादवकुलं) गर्भे यस्य । जिसके गर्भमें यादवोंका कुल है । श्रीकृष्णमहाराज.

वृष्य, (त्रि०) वृष्+यत् । धाराप्रवाह वरसनेके योग्य । विषयेन्द्रियके शक्तिको वढानेवाला । वाजीकरण.

वृह्, दीप्ति (चमकना) चु० उभ० सक० पक्षे भ्वा० पर० इदित् । वृंहयति-ते । अववृंहत्-त । वृंहति । अवृंहीत्.

वृह्, ध्वनि (आवाजकरना) और वृद्धि (वढना) । भ्वा० पर० सक० सेट् । वर्हति । अवृहत् । अवर्हीत्.

वृहत्, (त्रि०) वृह्+अति । महत् । वडा । स्त्रियां ङीप्.

वृहती, (स्त्री०) वडी स्त्री । वाच् । आवाज । कण्टकारिका । कंडियारी । नौ अक्षरोंके पादवाला एक छन्द । ऊपरका कपडा.

वृहद्भानु, (पु०) वृहत् भानुः किरणो यस्य । वडेकिरणवाला । सूर्य । चित्रक वृक्ष.

वृहद्रथ, (पु०) वृहत् रथः अस्य । वडेरथवाला । इन्द्र । यज्ञका एक पात्र (वर्तन) । सामवेदका एक भाग.

वृहस्पति, (पु०) वृहत्याः (वाचः) पतिः । पृ० नि० । वाणीका मालिक । जीव । देवताओंका आचार्य (गुरु).

वेग, (पु०) विज्+घञ् । प्रवाह । जव । जोर । तेजी । वीर्य । मूत्र और मलके निकालनेका यन्त्र (कला) । न्यायमें एक प्रकारका संस्कार । महाकाल.

वेगिन्, (पु०) वेग+अस्त्यर्थे इनि । श्येन । वाजपक्षी । वेगवाला (तेजीवाला) (त्रि०) स्त्रियां ङीप्.

वेण् (न्), वाजेपर नाचना । जाना । जान्ना । पहिचान्ना । विचारना । लेना । देखना । स्तुति (तारीफकरना) । भ्वा० उभ० सक० सेट् । वेणति । वेणते । अवेणीत् । अवेणिष्ट.

वेण, (पु०) वेण्+अच् । वर्णसंकरजातिविशेष । एक प्रकारका दोगला । वर्णसंकर करनेवाला । पृथुराजाका पिता । एक राजा.

वेणि–णी, (स्त्री०) वेण्+इन्-वा ङीप् । एक प्रकारकी केशोंकी रचना । गुत्त । जलका समूह । जलका प्रवाह । देवदारुका द्रख्त । एक नदी । वह स्थान कि जहां गंगा, यमुना और सरस्वती मिलजाती हैं.

वेणीर, (पु०) वेण्+ईरन् । अरिष्टवृक्ष । नीमका द्रख्त.

वेणीसंहार, (पु०) (वेण्याः संहारः) गुत्तका बांधना चूडा (वालों) बांधना ।

वेणु, (पु०) वेण्+उण् । वंश (वांस) । वांसकी वनीहुई वंसी (एक प्रकारका वाजा) । वंजली.

वेणुज, (पु०) वेणुतो जायते । जन्+ड । वांसते उपजा जौंके स्वरूपका चावल.

वेणुध्म, (पु०) वेणुं (वंशीं) धमति । ध्मा+क । वेणुवादक । वंसीवजानेवाला.

वेणुवाद, (त्रि०) वेणुं वादयति । वद्+णिच्+अण् । वेणुवादक । वंसी वजानेवाला । वंसी वजाता है.

वेतन, (न०) अज्+तनन्-वीभावः । कियेहुए कामकी मजदूरी.

वेतनजीविन्, (पु०) (वेतनेन जीवति) । तनख्वाह (मजदूरी) पर जीनेवाला.

वेतनादान, (न०) ६ त० । कर्मदक्षिणा (मजदूरी) का लेना । एक प्रकारका व्यवहार.

वेतस्, (पु०) अज्+असुन्-तुकच-वीभावः । वैंत । वेतस । एक वृक्ष.

वेतस्वत्, (त्रि०) वेत्तसः अस्ति अस्य+ड्मतुप् । वहुत वैंतवाला देश.

वेताल, (पु०) अज्+विच्-वीभावः । तल+घञ् । कर्म० । एक प्रकारका पहिलवान (मल्ल) । वह मुर्दा कि जिसमें भूतने प्रवेश किया है (भूताधिष्ठित शव) । शिवजीका एक अनुचर (नौकर) । द्वारपाल । दरवान.

वेत्तृ, (त्रि०) विद्+तृच् । ज्ञाता । जानेहारा । उठानेवाला । हासिल करनेवाला.

वेत्र, (पु०) अज्+त्रल्+वीभावः । वैंत । वेतसवृक्ष.

वेत्रधर, (पु०) वेत्रं धरति । धृ+अच् । वैंत पकडता है । द्वारपाल । दरवान । वैंतकी सोटी पकडनेहारा (त्रि०).

वेत्र(त्रा)वती, (स्त्री०) वेत्रः बाहुल्येन अस्ति अस्याः + मतुप् मस्य वः । वा· दीर्घः । मालवदेशमें एक नदी । "शरावती वेत्रवती" इति पुराणम्.

वेत्रासन, (न०) वेत्रनिर्मितं आसनम् । वैंतका बनाहुआ आसन । मूढा । कुर्सी चटाई.

वेद, (पु०) विद्+अच्-घञ् वा । विष्णु । ज्ञान (जान्ना) । शास्त्रका ज्ञान । उसका साधनधर्म और ब्रह्मको प्रतिपादन करनेहारा संहिता और ब्राह्मणस्वरूप ग्रंथविशेष । शास्त्रमें कहाहुआ चरित्र.

वेदगर्भ, (पु०) वेदो गर्भे यस्य । जिसके भीतर वेद है । सम्पूर्ण वेदको स्मरण करनेहारा हिरण्यगर्भ.

वेदन, (न०) विद्+ल्युट् । ज्ञान (जान्ना) । सुख दुःख आदिका अनुभव करना । और विवाह युच् "वेदना" (स्त्री०).

वेदपारग, (पु०) वेदानां पारं (अन्तं सीमां) गच्छति गम्+ड । वेदोंकी सीमातक पहुंचगया । सारे वेदोंको जान्नेहारा । समस्तवेदाभिज्ञ.

वेदमातृ, (स्त्री०) ६ त० । वेदोंकी माता । गायत्रीमहामन्त्र (वेदोंको बचानेसे).

वेदविद्, (पु०) वेदं वेत्ति । विद्+क्विप् । वेदको जानता है । विष्णु । वेदको जान्नेहारा (त्रि०).

वेदविहित, (त्रि०) (वेदेन विहितः) । वेदसे विधान (आज्ञा) किया गया.

वेदव्यास, (पु०) वेदान् व्यस्यति (विभिन्नशाखात्वेन पृथक् करोति) वि+अस्+अण् । भिन्न भिन्न शाखारूपसे वेदोंको जुदा २ कर्ता है । पराशरका पुत्र । सत्यवतीके गर्भसे उपजा एक मुनि.

वेदस्, (पु०) विद्+असुन् । वेत्ता । जान्नेहारा.

वेदाङ्ग, (न०) वेदस्य अङ्गं इव । मानों वेदका अंग है (उसका अर्थ प्रकाश करनेके) । शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिषरूप छ अङ्ग.

वेदादि, (पु०) वेदस्य आदिरिव । मानों वेदका आदि है (उसका पाठ करनेके समय पहिले उच्चारण किया जानेसे) । प्रणव । ओंकार.

वेदान्त, (पु०) ६ त० । वेदका अन्त । वेदका शिरोभाग (सिरा) । ब्रह्मको प्रतिपादन करनेहारा उपनिषद्रूप ग्रन्थविशेष । उसका उपकार करनेहारा शारीरिक सूत्रका भाष्य आदि.

वेदाधिप, (पु०) ६ त० । वेदका मालिक । ऋग्वेदका बृहस्पति, यजुर्वेदका शुक्र, सामदेवका मंगल और अथर्ववेदका स्वामी शशिज (बुध) है । और विष्णु.

वेदान्तिन्, (त्रि०) वेदान्तो ज्ञेयत्वेन अस्ति अस्य+इनि । जिसे वेदान्तशास्त्र जान्नेलायक है । वेदान्तशास्त्रके जान्नेहारा । वेदान्तशास्त्राभिज्ञ.

वेदाभ्यास, (पु०) ६ त० । वेदका पढना, विचारना, अभ्यास करना, जप करना और दान (पढानाआदि) । वार २ वेदशास्त्रके साथही प्रीति करना.

वेदि, (स्त्री०) वा ङीप् । परिष्कृतभूमि । संस्कार (साफ) कीगई पृथिवी । पण्डित (पु०).

वेदिजा, (स्त्री०) वेद्या जायते । जन्+ड । होमकी वेदीसे उपजी । द्रौपदी.

वेदितृ, (त्रि०) विद्+तृच्-इट् च । ज्ञाता । जान्नेहारा.

वेदिन्, (पु०) विद्+णिनि । पण्डित और हिरण्यगर्भ । जान्नेवाला (त्रि०).

वेध, (पु०) विध्+घञ् । वेधन । वींधना । नक्षत्रआदिसे रचागया एकप्रकारका योग (जिसे विवाह आदिमें त्यागना उचित है).

वेधक, (न०) विध्+ण्वुल् । कर्पूर । काफूर । धनिआं । वेधकर्ता (वेधनेवाला) (त्रि०) । निशान लगानेवाला.

वेधस्, (पु०) वि+धा+असुन् गुणः । हिरण्यगर्भ । जगत्का रचनेहारा । विष्णु । सूर्य । और पण्डित । ब्रह्मा । बनानेवाला.

वेधित, (पु०) वेधः जातः अस्य । तार० इतच् । वेधागया (विद्ध) । छिद्रित (सुराख कियाहुआ).

वेधिनी, (स्त्री०) विध्+णिनि । जलौका । जोंक.

वेपृ, कांपना । भ्वा० आ० अक० सेट् । वेपते । अवेपिष्ट.

वेपथु, (पु०) वेप्+अथुच् । कम्प । कांपना । कांप.

वेपन, (न०) वेप्+ल्युट् । कम्पन । कांपना । हिलना.

वेम, (पु०) वे+मन् । वायदण्ड । बुन्नेका डण्डा.

वेलृ, चालन (हिलाना) । भ्वा० प० सक० सेट् । वेलति । अवेलीत्.

वेल, (न०) वेल्+अच् । उपवन (बाग) । काल । समय । वक्त । और समुद्रका कूल (किनारा) (स्त्री०) । "वेलामूले विभावरी" भट्टिः.

वेल्लृ, (चालन) हिलाना । भ्वा० पर० सक० सेट् । वेल्लति । अवेल्लीत्.

वेल्लज, (पु०) वेल्ल्+अच् । जन्+ड । मरिच । मिरच.

वेल्लन, (न०) वेल्ल्+ल्युट् । घोडे आदिका पृथिवीपर लोठना । काठका बनाहुआ पदार्थ (वेल्लना).

वेल्लित, (न०) वेल्ल्+भावे क्त । गमन । जाना । "कर्तरि क्त" । कम्पित । हिलायाहुआ । और कुटिल (तिर्च्छा) (त्रि०).

वेवी, (कान्ति) चाहना । जाना । फैलना । फेंकना । और खाना सक० । उत्पन्न होना । अक० अदा० आ० सेट् (यह धातु वेदहीमें आता है) वेवीते । अवेविष्ट.

वेश, (पु०) विश्+घञ् । अलंकारआदिसे दूसरी शकल बनायागया । नेपथ्यकर्म । सजावटका काम । वेश्यागृह (कंजरीका घर) । प्रवेश.

वेशधारिन्, (पु०) वेशं धरति । धृ+णिनि । छलसे दूसरा रूप बनानेवाला । कपटी तपस्वी आदि.

वेशनारी-वनिता, (स्त्री०) (वेशस्य नारी) वेश (भेस-सजावट) परजीनेवाली स्त्री० सुन्दरी । वेश्या । कंजरी.

वेशन्त, (पु०) विश्+झच् । छोटा तालाब । और आग । अग्नि.

वेशवास, (पु०) वेशस्य वासः । वेश्याओंका निवास-स्थान (रहनेकी जगह).

वेश्मन्, (न०) विश्+मनिन् । गृह । घर.

वेश्मभू, (स्त्री०) ६ त० । घर करनेलायक जगह । गृहकरणाई स्थान.

वेश्य, (न०) विश्+ण्यत् । वेशाय हितं वा+यत् । वेशके लायक । वेश्यालय (कंचनीका घर) और श्यावार-योषित् (मोलकी औरत-कंजरी) (स्त्री०).

वेष्टन, (न०) वेष्ट्+ल्युट् । कर्णशष्कुली । कानका पोलाड । उष्णीष (पगडी-साफा) । कूष्माण्ड (पेठा) और प्राचीर (सफील) । शहरपनाह । घेरा (पु०).

वेष्टित, (त्रि०) वेष्ट्+क्त । प्राचीर (शहरपानाह-सफील) आदिसे घिराहुआ । और रुद्ध । रुकाहुआ । रोकाहुआ.

वेस्, (गति) जाना । भ्वा० पर० सक० सेट् । वेसति । अवेसीत्.

वेसन, (न०) वेस्+ल्युट् । द्विदल । छोले । छोलोंका चूरा.

वेहार, (पु०) वि+हृ+घञ् । पृ० । इस नामका एक देश.

वै, (अव्य०) वा+डै । पादको पूरण कर्ता है । अनुनय । प्रार्थना । निश्चय और संबोधन (बुलाना).

वैकक्ष, (न०) विशेषेण कक्षति (व्याप्नोति)+अण् । बहुतही फैलता है । एक प्रकारका हार । जिसे टेढाकरके कांख (कच्छ) की ओर लटकाते हैं "चुन्" । छातीपर यज्ञोपवीत (जनेऊ) के स्वरूपसे धारण कियाहुआ एक प्रकारका हार.

वैकङ्कत, (पु०) विकङ्कत+स्वार्थेऽण् । एक प्रकारका द्रख्त । "विकंकतका" (त्रि०).

वैकल्पिक, (त्रि०) विकल्पेन प्राप्तः भवो वा+ठक् । पक्षसे प्राप्त । मुख्तारी । चाहे वह दूसरा । दोनोंमेंसे एक.

वैकल्य, (न०) विकलस्य भावः+ष्यञ् । विकलता । घबराहट.

वैकुण्ठ, (पु०) विकुण्ठे भवः+अण् । विविधा कुण्ठा माया यस्य । स्वार्थे अण् । "विकुण्ठमें हुआ वा जिसकी माया कई तरहसे कुण्ठा (खुंडी) है" । विष्णु । गरुड । इन्द्र.

वैकृत, (न०) विकृतस्य भावः+अण् । विकार । बदलना.

वैखरी, (स्त्री०) विशेषेण खं राति । रा+क । स्वार्थे अण् । अर्थको जतानेहारा कण्ठ (गला) आदि स्थानमें उच्चारण कियागया अक्षरोंका बनाहुआ शब्द.

वैखानस, (पु०) वि+खन्+ड । अन-असु । कर्म० । स्वार्थे अण् । वानप्रस्थ (तीसरे आश्रममें दाखिल हुआ) । एक तपस्वी.

वैगुण्य, (न०) विगतो विरुद्धो वा गुणोऽस्य । तस्य भावः+ष्यञ् । "जहां जो चाहिये" उस्से और स्वरूपमें बना देना । विगाडना । अन्यायत्व (बेइन्साफी) । असम्पन्नत्व पूरा न होना.

वैचित्र्य, (न०) विचित्रस्य भावः+ष्यञ् । नानारूपता । कई शकलपन । विलक्षणता । अजीबपना । विचित्रपन.

वैजयन्त, (पु०) विजयते । वि+जि+क्त । स्वार्थे अण् । इन्द्रका प्रासाद (महल) । और एक दैत्य । पताका (झण्डी) । जयन्तीद्रख्त (स्त्री०).

वैजिक, (न०) वीजेन निर्वृत्तं+ठक् । शिग्रु (सुहांजना)-का तेल । "बीजके लिये हितकारी" । आत्मा । "स्वार्थे ठक्" कारण । वीजका (त्रि०).

वैज्ञानिक, (पु०) विज्ञानाय साधु+ठक् । निपुण । होशिआर । "विज्ञानकी वावत बनायागया ग्रन्थ ।" बौद्धोंका शास्त्र । उसे पढनेहारा (त्रि०).

वैडालव्रत, (न०) विडालस्य इदं+अण् । तदिव व्रतम् । बिल्लेके खभाववाला व्रत । "जिसमें धर्मके झण्डेको तो इन्द्र-ध्वजाके समान सदा ऊंचे रखता है और छिपकर पापही कर्ता है" प्रकट होकर धर्मका आचरण और छिपकर पाप करना.

वैणव, (न०) वेणूनां फलम्+अण् । वांसका फल । वांसका (त्रि०).

वैणविक, (त्रि०) वेणोर्विकारः+अण् । वैणवं (वेणुवाद्यं) शिल्पं अस्ति अस्य+ठन् । वांसरी वाजेका काम करनेहारा । वंशीवादक (वांसरी बजानेवाला).

वैणिक, (त्रि०) वीणा-तद्वादनं-शिल्पं अस्य+ठक् । वीन-बजानेवाला.

वैण्य-न्य, (पु०) वेण(न)स्य अपत्यं+यञ् । वेणका पुत्र । पृथुनामी राजा.

वैतंसिक, (त्रि०) वितंसेन (मृगपक्ष्यादिबन्धनोपायेन) चरति+ठक् । जो पशुपक्षिओंको फंसाकर जीता है । मांस वेचकर जीनेवाला शिकारी (व्याध).

वैतनिक, (त्रि०) वेतनेन जीवति+ठक् । मजदूरीपर जीनेवाला । काम करनेवाला भृत्य (नौकर) आदि.

वैतरणि-णी, (स्त्री०) वितरणेन (दानेन) लंघ्यते+अण् । ङीप् वा पृ० ह्रस्वः । जिसे दानसे लांघ सक्ते हैं । यमराजके दर्वाजेके पासकी नदी (दर्या) । "यमद्वारे महाघोरे तप्ता वैतरणी नदी" इति पुराणम्.

वैतानिक, (पु०) वितानस्य अयं+ठक् । वेदकी विधिसे अग्निका स्थापन करना.

वैतालिक, (त्रि०) विविधः तालः (मङ्गलगीतादिशब्दः) तेन व्यवहरति+ठक् । मंगलको उत्पन्न करनेहारी स्तुतिओंसे राजाओंको जगानेहारा मागध (भाट) आदि.

वैतालीय, (पु०) एक प्रकारका मात्राछन्द.

वैदग्ध, (न०) (स्त्री०) विदग्धस्य (चतुरस्य) भावः+अण् । स्त्रियां ङीप् । चातुर्य । चतुराई । हुशिआरी । "वैदग्ध्यं" भी.

वैदर्भ, (पु०) विदर्भाणां (जनपदानां) राजा+अण्। विदर्भदेशका राजा। एक प्रकारकी काव्यरचना (स्त्री०)। "विदर्भे भवा"+अण्। नलराजाकी स्त्री दमयन्ती (स्त्री०).

वैदिक, (पु०) वेदं वेत्ति-अधीते वा+ठञ्। वेदको जाननेहारा ब्राह्मण। "वेदेषु विदितः"+ठक्। वेदमें कहाहुआ। (त्रि०) स्त्रियां ङीप्.

वैदुष्य, (न०) विदुषो भावः। विद्वस्+ष्यञ्। विद्वान्का होना। पाण्डित्य। लायकपन.

वैदूर्य, (न०) विदूरे भवः+ष्यञ्। एक प्रकारका मणि। जिसका रंग काला और पीला है। बिल्लीकी आंखके समान होता है। मूंगा.

वैदेह, (पु०) विशेषेण देहः (उपचयः) यस्य। स्वार्थेऽण्। जिसकी वहुत वृद्धि होती है। वणिग्जन। व्यापारी आदमी। बनिआं। शूद्रसे वैश्यजातिकी स्त्रीमें उपजी एक जाति। "ठक्" "वैदेहिकः" बनिआं। "विदेहानां राजा"+अण्। राजाजनक.

वैदेही, (स्त्री०) विदेहेषु (मिथिलादेशेषु) भवा+अण्। मिथिलामें हुई। सीता। जनककी कन्या। हल्दी। मघ। बनियानी.

वैद्य, (पु०) विद्या अस्ति अस्य+अण्। जिसे विद्या हो। पण्डित। भिषज्। हकीम। डाक्टर.

वैद्यक, (न०) वैद्यं (चिकित्सकं) अधिकृत्य कृतो ग्रन्थः+कन्। हकीमकी खातिर बनायागया ग्रंथ। आयुर्वेद। इल्महकीमी.

वैद्यनाथ, (पु०) वैद्यानां नाथः। वैद्यों (हकीमों) का नाथ (स्वामी) धन्वन्तरीका नाम.

वैद्युत, (त्रि०) ती+स्त्री विद्युत इदं-अण्। विद्युत् (बिजली)-का। बिजलीवाला। बिजलीसे उत्पन्न हुआ.

वैध, (त्रि०) विधित आगतः+अण्। विधिसे प्रतिपादन कियाहुआ। विधान कियाहुआ.

वैधात्र, (पु०) विधातुः अपत्यं+अण्। ब्रह्माकी सन्तान। सनत्कुमार आदि मुनिविशेष.

वैधृति, (पु०) विगता धृतिः यस्मात्। पू० वृद्धिः। धीरजरहित। विष्कम्भ आदिमें सबसे पिछला योग.

वैधेय, (त्रि०) विधीयते असौ। वि+धा+यत्। ततः स्वार्थे अण्। मूर्ख। बेवकूफ.

वैधर्म, (न०) विरुद्धः धर्मः यस्य। तस्य भावः+ष्यञ्। विरुद्ध (बर्खिलाफ) धर्मका होना। और लक्षण (सिफ्त).

वैधव्य, (न०) विधवायाः भावः+ष्यञ्। रंडापन। रंडापा। पतिका विरह (विछोडा).

वैनतेय, (पु०) विनतायाः अपत्यं+ढक्। विनताकी सन्तान। गरुड। और अरुण.

वैनयिक, (त्रि०) विनये रतः+ठक्। शास्त्रके ज्ञान आदिसे हलीम.

वैनाशिक, (पु०) विनाशं अधिकृत्य कृतो ग्रन्थः+ठक्। सबकी क्षणभंगुरता (छिनभरमें टूटनापन) को बतलानेहारा बौद्धशास्त्र। उसे जाननेहारा (त्रि०).

वैपरीत्य, (न०) विपरीतस्य भावः+ष्यञ्। उलटापन। विपर्यय.

वैभव, (न०) विभोर्भावः+अण्। विभुत्व। विभूति। ऐश्वर्य। जलाल.

वैभ्राज, (न०) विभ्राज इदं+अण्। देवताओंका एक बाग.

वैमुख्य, (न०) विमुखस्य भावः+ष्यञ्। विमुखता। वेमुखहोना। मुं मोडलेना.

वैमात्र, (पु०) विमातुः अपत्यं+अण्। सौतेली मांकी संतान। सापत्नभ्राता। सौतेला भाई। वैसी भगिनी (बहिन) ङीप्.

वैमात्रेय, (पु०) विमातुः अपत्यं+ढक्। सौतेला भाई। वैसी बहिन। ङीप्.

वैयाकरण, (त्रि०) व्याकरणं वेत्ति-अधीते वा+अण्। व्याकरण जाननेहारा। व्याकरणाभिज्ञ.

वैयाघ्र, (पु०) व्याघ्रचर्मणा परिवृतो रथः+अण्। भेडियेके चमडेसे ढकीहुई गाडी.

वैयाघ्रपद्य, (पु०) व्याघ्रपदस्य अपत्यं+यञ्। गोत्रके चलानेहारा एक मुनि। "वैयाघ्रपद्यगोत्राय" इति भीष्मतर्पणमन्त्रः.

वैयात्य, (न०) वियातस्य भावः+ष्यञ्। बेशर्मीका होना। निर्लज्जता। बेशर्मी.

वैयासकी, (पु०) व्यासस्य अपत्यं+इञ्। व्यासकी सन्तान। शुकदेव.

वैयासिकी, (स्त्री०) व्यासेन प्रोक्ता+ठञ्-ङीप्। व्यासदेवकी रचीहुई संहिता। व्याससे कहीगई.

वैर, (न०) वीरस्य भावः+अण्। बहादुरी। विरोध। दुश्मनी.

वैरकर, (त्रि०) वैरं करोति। कृ+ट। विरोध करनेहारा.

वैरक्त्य, (न०) विरक्तस्य भावः+ष्यञ्। विराग। किसी चीजकी इच्छा न करना.

वैरनिर्यातन, (न०) वैरस्य (वैरकृतापकारस्य) निर्यातनं। निर्+यत्+णिच्+ल्युट्। बदला निकालना। वैरकृतापकार। प्रतीकार.

वैराग्य, (न०) विरागस्य भावः+ष्यञ्। विषयोंकी वासनासे रहित होना। इस लोक परलोकके विषयोंकी प्रीतिसे रहित होना। बेपर्वाह होना.

वैरानुबन्धिन्, (त्रि०) वैरं (विद्वेषं) अनुबध्नाति। णिनि। वैर बांधनेवाला। वैरका पीछा करनेहारा। वैरानुगत.

वैरिन्, (त्रि०) वैरं अस्ति अस्य+इनि। दुश्मनी करनेहारा। शत्रु.

वैरूप्य, (न०) विरूपस्य भावः+ष्यञ्। विरूपता। शकलका बदलजाना। बेढंगी। बदशकलपना। वस्तुका विकार.

वैलक्षण्य, (न०) विलक्षणस्य भावः। अजीवपन। विलक्षणता.

वैलक्ष्य, (न०) विलक्षस्य भावः+ष्यञ्। लज्जा। शरम। स्वभावका वदलना.

वैवधिक, (त्रि०) विवधेन (धान्यादिसंग्रहेण) व्यवहरति+ठक्। वार्तावह। कासिद। नैगम। वनिआं। दुकानदार.

वैवर्ण्य, (न०) विवर्णस्य भावः+ष्यञ्। रंग बदलना। मैलापन.

वैवस्वत, (पु०) विवस्वतः अपत्यं-तस्येदं वा+अण्। सूर्यकी सन्तान। यमराजा। रुद्रविशेष। तत्सम्बन्धी (त्रि०).

वैवाहिक, (त्रि०) विवाहाय हितं-साधु वा ठक्। विवाहके लायक। विवाहसे मिलाहुआ कन्या और पुत्रका श्वशुर (सौरा) विवाहवाला (त्रि०).

वैशम्पायन, (पु०) व्यासदेवशिष्य-महाभारतका वक्ता (कहनेवाला)। एक मुनि.

वैशस, (न०) विशसस्य भावः+स्वार्थे वा अण्। मारना। मारनेवाला.

वैशाख, (पु०) विशाखा नक्षत्रयुक्ता पौर्णमासी वैशाखी सा यत्र मासे पुनः+अण्। दूसरा चन्द्रमाका महीना। उस महीनेकी पूर्णमासी। मन्थनदण्ड। मथानी। धनुर्धरों (तीरंदाजों) का एक प्रकारसे ठहरना (न०).

वैशिष्ट्य, (न०) विशिष्टस्य भावः+ष्यञ्। गुणगुणीका मेल। विशेष्य और विशेषणका सम्बन्ध। विशेष्यविशेषणरूप ज्ञानका नियम बांधनेहारा सम्बन्ध। और भेद (फर्क).

वैशेषिक, (न०) विशेषं (पदार्थभेदं) अधिकृत्य कृतो ग्रन्थः। "विशेष" पदार्थके विषयमें रचागया एक पुस्तक। कणादमुनिका रचाहुआ एक शास्त्र। "तदधीते अण्" कणादमुनिके बनायेहुए शास्त्रको जाननेहारा (त्रि०)। "तस्येदं अण्" कणादके शास्त्रवाला (त्रि०).

वैशेष्य, (न०) विशेषस्य भावः+ष्यञ्। विशेषपन। विशेष्यविशेषणवाला। और भेद। "वैशेष्यात्तद्वादः"। साङ्ख्यम्.

वैश्य, (पु०) विशति-उपभुङ्क्ते। विश्+क्विप् "स्वार्थे ष्यञ्"। एक वर्ण। ब्रह्माके ऊरु (पट्ट) से निकली एक जाति.

वैश्यवृत्ति, (स्त्री०) ६ त०। वैश्यका जीवन (कृषि-खेती और व्यापार).

वैश्रवण, (पु०) विश्रवसः अपत्यं+अण्। विश्रवणादेशः। विश्रवाका बेटा। कुबेर.

वैश्वदेव, (पु०) विश्वेभ्यः देवेभ्यः देयः वलिः+अण्। वैश्वदेवके उद्देशसे दियाजारहा वलि। सब देवताओंकी बलि.

वैश्वानर, (पु०) विश्वेषां नराणां अयम्। कुक्षिस्थत्वात्+अण्। पूर्वदीर्घः। सब मनुष्योंका (पेटमें होनेसे)। वह्नि (आग)। चित्रकवृक्ष। सामवेदकी एक-शाखा.

वैषम्य, (न०) विषमस्य भावः+ष्यञ्। वैलक्षण्य। अजीवपना। एक जैसा न होना.

वैषयिक, (त्रि०) विषयेण निर्वृत्तः+ठक्। शब्द स्पर्श आदि विषयसे उपजा सुखविशेष.

वैष्णव, (त्रि०) विष्णुः देवता अस्य। तस्येदं वा+अण्। विष्णुकी उपासना करनेहारा और विष्णुवाला (त्रि०) स्त्रियां ङीप् "वैष्णवी".

वैष्णवी, (स्त्री०) विष्णोः इयं-विष्णु अण्+ईप्। विष्णुकी शक्ति। दुर्गा.

वैसारिण, (पु०) विसरति। वि+सृ+णिनि-स्वार्थे अण्। बहुत सरकता है। मत्स्य। मच्छी.

वैहासिक, (पु०) विहायसे अभिरतः। तं करोति+ठक्। ठट्ठा मखौल करनेवाला। नाटक आदिमें प्रसिद्ध शृङ्गाररसमें भरेहुए नायकका साथी विदूषक.

वोढु, (पु०) वह्+तुन्। एक मुनि। "वोढुः पञ्चशिखस्तथा".

वोढृ, (त्रि०) वह्+तृच्। वाहक। उठानेवाला। एक स्थानसे दूसरे स्थानपर लेजानेहारा। हाथ पकडनेवाला (वर) (पु०) बोझा उठानेवाला। और मूर्ख (त्रि०)। वैल (पु०).

वौषट्, (अव्य०) वह्+डौषट्। देवताके उद्देशसे हविः (घी) आदिका त्याग (छोडना).

व्यंसक, (पु०) विगतः अंसः यस्य+कप्। जिसका कंधा दूर हुआ। धूर्त। ठग। नटखट। "मयूरव्यंसकादयश्च"ति पाणिनिसूत्रम्.

व्यंसित, (त्रि०) वि+अस्+क्त। वञ्चित। ठगाहुआ.

व्यक्त, (त्रि०) वि+अञ्ज्+क्त। स्फुट। प्रकाशित। प्रकट। जाहिर। दृश्य। देखनेलायक। प्राज्ञ। पण्डित। और स्थूल (मोटा) विष्णु (पु०).

व्यक्ति, (स्त्री०) वि+अञ्ज्+क्तिन्। प्रकाश। जाहिर। मशहूर करना+क्तिच्। जन (लोग)। एक २। पृथगात्मक.

व्यग्र, (त्रि०) विगतं अग्रं अस्य । व्याकुल । घबराया हुआ । वहुत फसाहुआ । "विशिष्टं अग्रं यस्य" विष्णु (पु०).

व्यङ्ग, (न०) विगतं विकलं वा अङ्गं । कर्म० । विकलाङ्ग । विगडेहुए शरीरवाला । अंगसे हीन (त्रि०).

व्यङ्ग्य, (त्रि०) वि+अञ्ज्+ण्यत् । व्यञ्जनावृत्तिसे जाननेलायक अर्थ । रमजसे जाननेलायक.

व्यजन, (न०) वि+अज्+ल्युट् । तालवृन्तक । पंखा । पक्खा.

व्यञ्जक, (पु०) वि+अञ्ज्+णिच्-ण्वुल् । हृदयके भाव आदिको प्रकाश करनेहारा अवस्थानुकार (बतावा)। व्यञ्जनासे अर्थको जतानेहारा शब्द । प्रकाश करनेहारा (त्रि०).

व्यञ्जन, (न०) विशेषेण अज्यते । वि+अञ्ज्+ल्युट् । ओदन । भोजनोपकरण । भात और रोटीका सलूना । सागभाजी । नाल्दा । "वि+अञ्ज्+णिच्-ल्युट्" अलंकारमें प्रसिद्ध एक प्रकारकी वृत्ति (शब्दशक्ति) (स्त्री०).

व्यञ्जनसन्धि, (पु०) व्यञ्जनानां सन्धिः व्यञ्जन (कादिहान्त) वर्णोंकी संधि (मेल).

व्यञ्जित, (त्रि०) वि+अञ्ज्+णिच्-क्त । प्रकाशित । जतलाया गया । जाहिर कियागया । व्यञ्जनावृत्ति (शब्दकी शक्ति) से जतलायागया अर्थ.

व्यतिकर, (पु०) वि+अति+कृ+अप् । सम्बन्ध । मेल । व्यसन । दुःख । मुसीबत.

व्यतिक्रम, (पु०) वि+अति+क्रम्+घञ् । विपर्यय । उलटा.

व्यतिरिक्त, (त्रि०) वि+अति+रिच्+क्त । भिन्न । जुदा । और.

व्यतिरेक, (पु०) वि+अति+रिच्+घञ् । विशेष । जियादा अतिक्रम (गुजरना) अभाव (न होना) । विना (सिवाय) । अर्थालंकारविशेष.

व्यतिषक्त, (त्रि०) वि+अति+सञ्ज्+क्त । मिलाहुआ । और गुथाहुआ.

व्यतिषङ्ग, (पु०) वि+अति+सञ्ज्+घञ् । आपसमें मिलाना । परस्परमेल.

व्यति(ती)हार, (पु०) वि+अति+हृ+घञ्-वा दीर्घः । परीवर्त । वदलना । आपसमें एक प्रकारकी क्रियाका करना.

व्यतीत, (त्रि०) वि+अति+इण्+क्त । अतीत । बीतगया । गुजर चुका । "व्यतीतकालस्त्वहमभ्युपेत" इति रघुः.

व्यतीपात, (पु०) वि+अति+पत्+घञ्-दीर्घः । महोत्पातभेद । एक प्रकारका बडा उपद्रव । विष्कम्भ आदिमें एक योग.

व्यत्यय, (पु०) वि+अति+इण्+अच् । व्यतिक्रम । और विपर्यय । उलटा । लांघना.

व्यत्यास, (पु०) वि+अति+अस्+घञ् । विपर्यय । उल्टा.

व्यथ्, भय (डरना) । चलना । दुःखका अनुभव करना । भ्वा० आ० अक सेट् । व्यथते । अव्यथिष्ट । "अङ्" व्यथा.

व्यथा, (स्त्री०) व्यथ्+अङ् । पीडा (दर्द) । और दुःख.

व्यथित, (त्रि०) व्यथ्+क्त । पीडित । पीडा (दर्द) को प्राप्त हुआ । क्षुब्ध (व्याकुल किया गया) । विपत्तिमें पड गया.

व्यध्, ताडन (चोट लगाना) दिवा० पर० सक० अनिट् । विध्यति । अव्यात्सीत्.

व्यध, (पु०) व्यध्+अच् । वेध चोट लगाना । छेक करना । फाडना.

व्यधिकरणम्, (न०) वि+अधि+कृ+अन । समान विभक्तिमें न होना । एक आश्रयमें न होना (जैसे चक्रपाणिः=चक्रं पाणौ यस्य-इस बहुव्रीहिमें पहिली विभक्ति दुसरीसे भिन्न होनेसे व्यधिकरण बहुव्रीहि समास कहलाता है.

व्यध्व, (पु०) विरुद्धः अध्वा+अच् समा० । बुरा रास्ता । कुपथ.

व्यपदेश, (पु०) वि+अप्+दिश्+घञ् । कथन (कहना) । संज्ञा (नाम) । कापट्य (छलपना) । बहाना.

व्यपरोपण, (न०) वि+अप्+रुह्+णिच्-ल्युट् । छेदन । काटना.

व्यपरोपित, (त्रि०) वि+अप+रुह्+णिच्+क्त । छिन्न । काटाहुआ.

व्यपाकृति, (स्त्री०) रि+अप+आ+कृ+क्तिन् । निराकरण । इन्कार करना । न मानना । और छिपाना.

व्यपाश्रय, (पु०) वि+अप+आ+श्रि+अच् । आश्रय । आसरा.

व्यपेक्षा, (स्त्री०) वि+अप+ईक्ष्+अ । अपेक्षा (जरूरत) । व्याकरणमें " अवयवार्थापेक्षण " (शब्दमें हरएक हिस्सेके अर्थका खयाल करना).

व्यभिचार, (पु०) वि+अभि+चर्+घञ् । निन्दिताचार । बुरा चालचलन । स्त्रीका दूसरे पुरुषके साथ संग करना । और पुरुषका पराई स्त्रीके साथ संग करना । न्यायमें "हेतु" का एक दोष.

व्यभिचारिन्, (पु०) वि+ अभि+चर्+णिनि । अलंकारमें "रस" का अंगविशेष "निर्वेद" आदि । न्यायमें व्यभिचाररूप हेतुके दोषवाला पदार्थ । दूसरे पुरुषके पास जानेवाली स्त्री (स्त्रियां ङीप्).

व्यय, (पु०) वि+इण्+अच् । विगम । जाना । धन आदिका त्याग (छोडना) । खर्च करना । लग्नसे १२ वां स्थान.

व्यर्थ, (त्रि०) विगतः अर्थः प्रयोजनं वा अस्य । जिसका कुछ मतलब नहिं । निष्प्रयोजन । विफल और अर्थसे शून्य । निरर्थक । बेफायदा.

व्यलीक, (न०) वि+अल्+ईकक् । अकार्य (बुराकाम) । कामसे उपजा अपराध । अप्रिय और (अनृत) झूठ) । झूठवाला (त्रि०)

व्यवकलन, (न०) वि+अव+कल्+क्त । वियोजन । अलग-करना । विगमन । निकालना । हीनतासम्पादन (कम करना) । घटाना.

व्यवकलित, (त्रि०) वि+अव+कल्+क्त । वियोजित । घटायागया.

व्यवच्छिन्न, (त्रि०) वि+अव+छिद्+क्त । छिन्न । वियोजित । काटाहुआ और विशेषणवाला.

व्यवच्छेद, (पु०) वि+अव+छिद्+घञ् । पृथक्करण । जुदाकरना । विशेषकरना । और मोचन (छुडाना).

व्यवधा, (स्त्री०) वि+अव+धा+ण्वुल् । व्यवधान । फरक । बीच.

व्यवधायक, (त्रि०) वि+अव+धा+ण्वुल् । व्यवधान-कर्ता । फर्क डालनेवाला । और आच्छादक (ढांकनेहारा).

व्यवधि, (पु०) वि+अव+धा+कि । व्यवधान (बीचमें) पडना.

व्यवसाय, (पु०) वि+अव+षो+घञ्+ । उद्यम । हिम्मत । उपजीविका । रोजी । अनुष्ठान । काम करना । और अव-धारण (निश्चय, यकीनकरना) । "व्यवसायात्मिका बुद्धि-रेकेह कुरुनंदन ।" इति गीता.

व्यवस्था, (स्त्री०) वि+अव+स्था+अ । शास्त्रसे विधान कियेहुएको दूसरे विषयसे अलग करके किसी खास विषय-पर स्थापन (कायम) करना । शास्त्रमर्यादा । शास्त्रसे कहाहुआ नियम.

व्यवस्थित, (त्रि०) वि+अव+स्था+क्त । दूसरे विषयको तोडकर किसी खास विषयमें कायम कियागया । शास्त्र-विधान कियाहुआ पदार्थ.

व्यवस्थितविभाषा, (स्त्री०) कर्म० । व्याकरणमें विषया-न्तरपरिहारसे विषयविशेषमें जतलागया विकल्प (दोपक्ष).

व्यवहर्तृ, (त्रि०) वि+अव+हृ+तृच् । व्यवहारकर्ता । काममें लानेहारा । व्यवहारी.

व्यवहार, (पु०) वि+अव+हृ+घञ् । ऋणादान (कर्जा-उठाना) आदि अठारह प्रकारका विवाद (झगडा) । "धर्मशास्त्र और आचार (भलमानसी)से विरुद्ध यदि कोई किसीको सतावे तो वह राजाके पास आवेदन कर्ता है" । विवादनिर्णय (झगडेका फैसला) । साथ बैठना और खाना आदि.

व्यवहारपद, (न०) ६ त० । व्यवहारका विषय । मुक-द्दमेके लायक । झगडेकी जगह.

व्यवहारमातृका, (स्त्री०) व्यवहारस्य (विवादनिर्णयस्य) मातेव पोषकत्वात् । इवार्थे कन् । झगडा फैसला करनेकी मानो मां है । विवादका निर्णय करनेके लिये प्राड्विवाक (मुख्तार-वकील) आदिका क्रियासमुदाय (कार्रवाई-पैरवी).

व्यवहारविधि, (पु०) व्यवहारस्य विधिः । व्यवहार (कानून) की विधि (नियम) । कानूनी कायदा.

व्यवहारिक, (त्रि०) व्यवहारः प्रयोजनं अस्य+ठक् । व्यव-हार (काम-कार्रवाई) के लायक लोकमें प्रसिद्ध घटपट-आदि । स्त्रियां ङीप् । इङ्गुदवृक्ष (पु०).

व्यवहारिकसत्ता, (स्त्री०) कर्म० । व्यवहारोपयिकसत्व । व्यवहारमें आनेवाली सत्ता । वेदान्तमें कल्पना कियाहुआ ब्रह्मसे भिन्न पदार्थमात्रके असत्य होनेपरभी व्यवहारके योग्य सत्व जिससे " घट " आदिका व्यवहार होता है । वह कल्पना कीगई सत्ता कि जिस द्वारा "यह घट है" "यह पट है" इस प्रकारकी सिद्धि हो जगत्को बना-नेहारी सत्ता.

व्यवहार्य, (त्रि०) वि+अव+हृ+ण्यत् । "यह इसी तरह है" इस प्रकार व्यवहारका स्थान । काममें आनेलायक । और जिसके साथ भोजनआदि कियाजाय । वर्तनेलायक.

व्यवहित, (त्रि०) वि+अव+धा+क्त । व्यवधान (फर्क)-वाला पदार्थ.

व्यवाय, (पु०) वि+अव+इण्+घञ् । ग्राम्यधर्म । मैथुन । भोग (सोहवत करना) । अन्तर्धान (छिपना) । शुद्धि (सफाई) । और तेज (न०).

व्यवायिन्, (त्रि०) व्यवाय+इन् । भोगी । सोहबत करनेवाला । मैथुनधर्मरत । कामी । छिपनेवाला.

व्यसन, (न०) वि+अस्+ल्युट् । विपत्ति (मुसीबत) । भ्रंश (गिरना) । काम और क्रोधसे उपजा दोष । स्त्रीके साथ भोग और मदिराका पीनाआदि दोष । दैवआ-दिसे किएहुए उपद्रव (जुल्म).

व्यसनार्त-अन्वित-पीडित, (त्रि०) व्यसनेन आर्तः । दुःखसे पीडित । मुसीबतमें पडा हुआ.

व्यसु, (त्रि०) विगताः असवो यस्य । जिसके प्राण निकल-गये । मृत (मगरया) । "शेषे जातो भवत्व्यसुः" इति ज्योतिषम्.

व्यस्त, (त्रि०) वि+अस्+क्त । व्याकुल । घबरायाहुवा । फैलगया । और विभक्त (बांटागया) विपरीत । उल्टा । सारे पदार्थोंमेंसे एक २ । नासारा । "भावे क्त" । व्यति-क्रम (नियम तोडना) (न०).

व्यस्तकेश, (त्रि०) व्यस्ताः केशाः यस्य । इधर उधर विकृत (विगडेहुए) केशों(वालों)वाला.

व्याकरण, (न०) व्याक्रियन्ते (व्युत्पाद्यन्ते) शब्दा येन । वि+आ+कृ+ल्युट् । जिसके द्वारा अर्थस्वरूपसे शब्दोंकी सिद्धि होती है । एक शास्त्र । वेदान्तमें नाम और रूपसे जगत्का प्रकाश करना.

व्याकीर्ण, (त्रि०) वि+आ+कृ+क्त । खिलराहुआ । इधर उधर फेंका हुआ.

व्याकुल, (त्रि०) वि+आ+कुल्+क । रोग (बीमारी) आदिसे "इसका क्या उपाय किया जाय" इस निश्चयको न कर सकनेवाला । घवरायाहुआ । हैरानहुआ २.

व्याकृत, (त्रि०) वि+आ+कृ+क्त । प्रकाशित । जाहिर कियाहुआ.

व्याकृति, (स्त्री०) वि+आ+कृ+क्तिन् । भङ्गी । खराव शकल । प्रकाशन । जाहिर करना । व्याकरण । जियादा वयान करना.

व्याकोश-ष, (त्रि०) वि+आ+कुश् (ष्)+अच् । व्यागतः कोश(षा)त् । प्रा० स० वा । खजानेसे निकलआया । प्रफुल्ल । खिलाहुआ.

व्याख्या, (स्त्री०) वि+आ+ख्या+अच् । विवरणात्मक शब्दसमूहरूप ग्रन्थविशेष । जियादा वयान । शरा । कहना.

व्याख्यात, (त्रि०) वि+आ+ख्या+क्त । कहाहुआ । वयान कियागया.

व्याख्यातृ, (पु०) वि+आ+ख्या+तृच् । व्याख्या (वर्णन-वयान) करनेवाला.

व्याख्यानम्, (न०) वि-आ+ख्या+अन । वर्णन करना । वोलना । लैक्चर.

व्याघात, (त्रि०) वि+आ+हन्+घञ् । अन्तराय । विघ्न । रुकावट । प्रहार (चोट) । अर्थसम्बन्धी एक अलंकार । रुकाहुआ कहना । एक प्रकारका योग (सत्ताईसमें).

व्याघ्र, (पु०) वि+आ+घ्रा+क । एक प्रकारका जीव । भेडिया । वाघ । लाल एरण्ड । करंजका वृक्ष.

व्याघ्रास्य, (पु०) व्याघ्रस्य इव आस्यं यस्य । जिसका मुख वाघके समान है । विडाल । विल्ला । "व्याघ्रमुख"-वाला भी.

व्याज, (पु०) वि+अज्+घञ् । कपट (छल) । वहाना । अपदेश.

व्याजनिन्दा, (स्त्री०) ३ त० । वहानेसे निंदा । कपट-निन्दा । अर्थालंकारविशेष.

व्याजस्तुति, (स्त्री०) ३ त० । वहानेसे तारीफ । अर्थालंकारविशेष.

व्याजोक्ति, (स्त्री०) ३ त० । वहानेसे कहना । अर्थालंकारविशेष.

व्याड, (पु०) वि+अड्+अच् । मांसको खानेहारा वाघ आदि पशु । सर्प (सांप) । और इन्द्र । वञ्चक (ठग) (त्रि०).

व्याडि, (पु०) व्याकरण और कोषका संग्रह करनेहारा एक मुनि.

व्याध, (पु०) व्याध्+अण् । पशुओंको मारनेहारी एक जाति । शिकारी.

व्याधभीत, (पु०) व्याधाद्भीतः । भी+क्त । शिकारीसे डराहुआ । मृग । हरिणपशु.

व्याधि, (पु०) वि+आ+धा+कि । रोग । बीमारी । और कोढका रोग.

व्याधित, (त्रि०) व्याधिः जातः अस्य । तार० इतच् । जिसे बीमारी होगई । व्याधियुक्त । बीमार.

व्याधू(धु)त, (त्रि०) वि+आ+धू-धु-वा+क्त । कम्पित । कांपगया । हिलगया.

व्यान, (पु०) वि+अन्+घञ् । सारे शरीरमें व्यापक (फैलाहुआ) । प्राणआदि पाँचमेंसे एक वायु (हवा).

व्यापक, (त्रि०) विशेषेण आप्नोति । बहुत पहुंचता है । वि+आप्+ण्वुल् । अधिक देशवृत्ति । बहुत जगहमें रहनेहारा । फैलाहुआ । तन्त्रमें सब अंगोंका न्यास.

व्यापन्न, (त्रि०) वि+आ+पद्+क्त । मरगया । मुसीबतमें पडाहुआ.

व्यापाद, (पु०) वि+आ+पद्+घञ् । द्रोहचिन्तन । किसीका बुरा चाहना । हिंसाकरण । कतल करना.

व्यापादन, (न०) वि+आ+पद्+णिच्+ल्युट् । मारना । दूसरेका बुरा चाहना.

व्यापार, (पु०) वि+आ+पृ+घञ् । कर्म० । काम । नफेदार काम । मेहनत.

व्यापारिन्, (त्रि०) व्यापारः अस्ति अस्य+इनि । व्यापारवाला । व्यौपारी । मेहनती । वणिग्जन (वनिआं) (त्रि०).

व्यापिन्, (त्रि०) वि+अप्+णिनि । व्यापक । फैलाहुआ । विष्णु (पु०).

व्यापृत, (त्रि०) वि+आ+पृ+क्त । व्यापारवाला.

व्याप्त, (त्रि०) वि+आप्+क्त । पूर्ण । पूरा । भराहुआ । व्याप्तिवाला पदार्थ, जैसे "आगका धूआं".

व्याप्ति, (स्त्री०) वि+आप्+क्तिन् । ईश्वरका एक ऐश्वर्य (महिमा-वडाई-सब स्थानमें एक जैसा फैलजाना) । न्यायमें "साहचर्यनियम" हेतु और साध्यका इकट्ठा रहना । जैसे धूममें वह्निकी व्याप्ति है-अर्थात् धूमस्थलमें वह्नि अवश्य होती है.

व्याप्य, (त्रि०) वि+आप्+ण्यत् । व्याप्त । फैलाहुआ । थोडे देशमें रहनेहारा पदार्थ । अनुमितिका साधन (न०).

व्याम, (पु०) वि+अम्+घञ् । टेढी और फैलाईगई दोनों भुजाओंके बीचका परिमाण (माप).

व्यायत, (त्रि०) वि+आ+यम्+क्त । दीर्घ (लंबा) । आयत (चौडा) । दूर । और बहुत । "भावे क्त" लंबाई । फैलाव (न०).

व्यायाम, (पु०) वि+आ+यम्+घञ् । श्रम । मेहनत । वह काम कि जिस्से श्रम हो । मल्लों (पहिलवानों) का श्रम करनेहारा व्यापार । ऊठ बैठ वगैरह । हिम्मत.

व्यायोग, (पु०) वि+आ+युज्+घञ् । एक देखनेलायक काव्य.

व्याल, (पु०) वि+अम्+घञ् । डस्य लः । सांप । मारनेवाला पशु । दुष्ट हाथी.

व्यालग्राह, (पु०) व्यालान् (सर्पान्) गृह्णाति । ग्रह्+अण् । सांपोंको पकडता है । " णिनि " । इसी अर्थमें है । सर्पादा.

व्यावहासी, (स्त्री०) वि+अव+हस्+घञ् । स्वार्थेऽण् । आपसमें हासना.

व्यावृत्त, (त्रि०) वि+आ+वृत्+क्त । वृत्त । घेरा । गोल । निवृत्त । हटगया । रुकगया । "व्यावृत्तगतिरुद्याने" कुमारः.

व्यावृत्ति, (स्त्री०) वि+आ+वृत्+क्तिन् । निवारण । हटाना.

व्यास, (पु०) व्यसति वेदान् । वि+अस्+घञ् । विशेषकर फेंकता है (पुराण आदिमें उनके अर्थको प्रकाश कर्ता है) वेदोंको । पराशरमुनिका पुत्र । विग्रहवाक्य । विस्तार । फैलाव । पुराण पढनेहारा ब्राह्मण । "य एवं वाचयेद्विप्रः स ब्रह्मन् व्यास उच्यते".

व्यासक्त, (त्रि०) वि+आ+षञ्ज्+क्त । आसक्त । लगाहुआ । तत्पर । संलग्न । अच्छीतरह लगाहुआ.

व्यासङ्ग, (पु०) वि+आ+षञ्ज्+घञ् । दूसरे कामोंको छोडकर एकही काममें लगजाना । आसक्ति.

व्यासिद्ध, (त्रि०) वि+आ+षिध्+क्त । राजाकी आज्ञा आदिसे रुकाहुआ । मनह कियाहुआ । निषिद्ध । रोकागया.

व्याहत, (त्रि०) वि+आ+हन्+क्त । रुकाहुआ । घवरायाहुआ । व्याघातयुक्त.

व्याहार, (पु०) वि+आ+हृ+घञ् । वाक्य । उक्ति । वचन । कहना.

व्याहृति, (स्त्री०) वि+आ+हृ+क्तिन् । उक्ति । कहना । "भूर्भुवःस्वः" आदि सात मन्त्रविशेष.

व्युत्क्रम, (पु०) वि+उद्+क्रम्+घञ् । क्रमवैपरीत्य । सिलसिलेसे उलटा । उल्टीतरह । क्रमविपर्यास.

व्युत्थान, (न०) वि+उद्+स्था+ल्युट् । विरोधकरण । दुश्मनी करना । स्वातन्त्र्यकरण । खुदमुख्तारी करना । प्रतिरोधन । आगेसे रोकना । एक प्रकारका नाच विशेषोत्थान । उठना " व्युत्थितिः " यही अर्थ.

व्युत्पत्ति, (स्त्री०) वि+उद्+पद्+क्तिन् । विशेषोत्पत्ति । वहुत पैदाइश । शास्त्रसे उत्पन्नहुआ शब्द और अर्थके ज्ञान आदिसे सिद्ध होनेलायक एक प्रकारका संस्कार । लियाकत । इल्मीयत । शब्दोंके अर्थ जाननेकी ताकत (शक्ति).

व्युत्पन्न, (त्रि०) वि+उद्+पद्+क्त । व्युत्पत्ति (व्याकरणकी रीति)वाला शब्द । उसके संस्कारवाला पुरुष । पण्डित । आलम । लायक.

व्युदस्त, (त्रि०) वि+उद्+अस्+क्त । निराकृत । तिरस्कार कियाहुआ.

व्युदास, (पु०) वि+उद्+घञ् । निराकरण । निरादर करना.

व्युष्, त्याग (छोडना) चुरा० उभ० सक० सेट् । व्युषयति–ते.

व्युष्ट, (त्रि०) वि+उष्+क्त । दग्ध । जलाहुआ । "वि+वस्+क्त" । पर्युषित । बासी । और प्रभात (सवेर) । फल और दिन (न०).

व्यूढ, (त्रि०) वि+वह्+क्त । खास तौरपर ठहरीहुई सेना । संहत । चौडा । पृथुल । फैलाहुआ । परिहित । पहिराहुआ । और विवाहित । विवाहागया.

व्यूत, (त्रि०) वि+वे+क्त । तांतोंसे गुथाहुआ । बुनाहुआ.

व्यूह, (पु०) वि+ऊह्+घञ् । समूह । और निर्माण (बनावट) । सम्यक्तर्क । अच्छी दलील । शरीर । सेना । लडाईके लिये सेनाका ठहिरना.

व्यो, (अव्य०) व्ये+डो । लोहा । और बीज (बी).

व्योकार, (पु०) व्यो+कृ+अण् । लौहकारक । लोहार.

व्योमकेश, (पु०) व्योम्नि केशो यस्य । जिसके बाल आकाशमें हैं । शिव । महादेव.

व्योमचारिन्, (पु०) व्योम्नि चरति । चर्+णिनि । आकाशमें विचरता है । पक्षी । परिंदा । देवता । ग्रह । नक्षत्र (तारा) आदि.

व्योमधूम, (पु०) व्योम्नः धूम इव नीलत्वात् । आकाशका मानों धूआं है (नीला होनेसे) । मेघ । वादल.

व्योमन्, (न०) व्ये+मनिन् । पृ० । आकाश । आस्मान । पानी । जल.

व्योमयान, (न०) ७ त० । आकाशमेंकी सवारी । आस्मानमें जानेलायक विमान (वैलून).

व्योष, (न०) वि+उष्+अच् । त्रिकटु । तीन कडवी चीजें । शुण्ठी (सूंठ) स्याहमिर्चें और मघ (पिप्पली).

व्रज्, गति (जाना) भ्वा० पर० सक० सेट् । व्रजति । अव्राजीत्.

व्रज, (पु०) व्रज्+क (घञ्के अर्थमें) । समूह । गोष्ठ । गोवाडा । पथ । रास्ता । मथुराके पासका एकदेश.

व्रजनाथ, (पु०) ६ त० । व्रजके स्वामी । श्रीकृष्ण । " व्रजपाल " भी.

व्रजमोहन, (पु०) व्रजान् (व्रजस्थान्) मोहयति । मुह्+णिच्+ल्यु । व्रजवासिओंको मोहता है । श्रीकृष्ण.

व्रजवल्लभ, (पु०) ६ त० । व्रजका पियारा । श्रीकृष्ण.

व्रजाङ्गना, (स्त्री०) ६ त० । व्रजकी स्त्री । गोपी.

व्रज्या, (स्त्री०) व्रज्+क्यप् । पर्यटन । घूमना । गमन । जाना । जिगीषु (जीतनेकी इच्छावाला) का लडाईके लिये यात्रा करना.

व्रण्, (शब्दकरना-व्रणति) । शरीरपर घाव लगना । अंगक्षति । चुरा० उभ० अक० सेट् । व्रणयति-ते.

व्रण, (पु० न०) चु० । व्रण्+अच् । क्षत । घाव.

व्रणविरोपण, (त्रि०) व्रणं विरोपयति=शमयति-वि+रुह्+णिच्+अन । स्फोटकप्रशमन । घावको शान्त करनेवाला । फोडेको आराम देनेवाला.

व्रत, (न०) व्रज्+घ (जको त) । एक प्रकारका खाना (भक्षण) । पुण्यका साधन उपवासआदि नियमविशेष.

व्रतचर्या, (स्त्री०) व्रतस्य चर्या=चरणम् । किसी व्रत (धार्मिक नियम) का आचरण (पालन-वा अभ्यास).

व्रतवैकल्यम्, (न०) व्रतस्य वैकल्यम् । व्रतकी विकलता । किसी व्रतका पूरा न होना । व्रतमें भंग पड जाना.

व्रतिन्, (पु०) व्रतं अस्य अस्ति+इनि । व्रतको धारण करनेहारा । और यजमान.

व्रश्च्, छेद (काटना) तु० प० स० सेट्-वेट् । वृश्चति । अव्रश्चीत्-अव्राक्षीत्.

व्रश्चन, (पु०) वृश्च्यतेऽनेन । वश्च्+ल्यु । जिस्से काटा जाय । छैनी । सोने आदिको काटनेके लिये पदार्थ । "भावे ल्युट्" काटना (न०).

व्रात, (पु०) वृ+अतच् । पृ० । समूह । बहुतसा.

व्रातीन, (त्रि०) व्रातेन जीवति । जिसका जीवन बहुतोंपर है.

व्रात्य, (न०) व्रातात् च्यवति+यत् । समूहसे गिरजाता है । अव्यवहार्य । जिसके साथ वर्तना उचित नहीं । संस्कारसे रहित । "जाति" परही जीनेवाला । "अत ऊर्ध्वं त्रयोऽप्येते यथाकालमसंस्कृताः । सावित्रीपतिता व्रात्याः" इति मनुः.

व्रात्यस्तोम, (पु०) व्रात्ययोग्यः स्तोमः । एक प्रकारका यज्ञ जो व्रात्यके करनेलायक है.

व्रीहि, (पु०) व्री+हि । हरएक प्रकारका धान्य । चावल.

व्रैहेय, (त्रि०) व्रीहीणां भवनं (क्षेत्रं)+ढक् । चावल (धान) उपजनेलायक खेत.

श

श, (न०) शी+ड । मंगल (भला) । महादेव । और शस्त्र (हथियार) (पु०).

शंयु, (त्रि०) शं अस्ति अस्य । शम्+युस् । शुभान्वित । भलाईवाला.

शंवर, (न०) शं वृणोति । शं+वृ+अच् । जल । पानी.

शंसा, (स्त्री०) शंस्+अ । वाक्य । वचन । कहना । इच्छा । प्रशंसा । तारीफ.

शंसित, (त्रि०) शंस्+क्त । निश्चित । पक्का । मारागया । कहागया । तारीफ कियाहुआ.

शंस्य, (त्रि०) शंस्+ण्यत् । मारनेके लायक+तारीफ करनेलायक । कहनेलायक.

शङ्क्, त्रास (डरना) । अक० । संशय (शककरना) । सक० भ्वा० आ० सेट्-इदित् । शंकते । अशंकिष्ट.

शक्, सामर्थ्य (लायक होना) । स्वा० प० अक० अनिट् । शक्नोति । अशकत्- अशाक्षीत्.

शक, (पु०) शक्+अच् । एक जाति । एक देश । अपना संवत् चलानेहारा एक राजा । उसका वरिस । कलियुगमें संवत् चलानेहारे युधिष्ठिर, विक्रमादित्य और शालिवाहन नामी तीनों होगये.

शकट, (पु० न०) शक्+अटन् । एक प्रकारकी सवारी । एक दैत्य । "छोटेके अर्थमें ङीप्" छोटा गड्डा (छकडा) । "अपने अर्थमें कन्" शकटिका.

शकटहन्, (पु०) शकटं (असुरभेदं) हतवान्+हन्+भूते क्विप् । जिसने शकटदैत्यको मारडाला । श्रीकृष्ण.

शकल, (पु० न०) शक्+कलच् । खण्ड । टुकडा । एक हिस्सा । छिलका । कांटा । वल्कल.

शकाब्द, (पु०) शककर्तृनृपसंबन्धी अब्द । संवत् चलानेहारे राजाके राज्यसे लेकर वरिस (वर्ष).

शकार, (पु०) राजाकी न विवाहीहुई स्त्रीका भाई । मद और मूर्खताका अभिमानी.

शकारि, (पु०) शकानां अरिः । एक प्रकारकी म्लेच्छजातिका दुश्मन । विक्रमादित्य.

शकुन, (न०) शक्+उनन् । भले और बुरेको सूचन करनेहारा निमित्त (बाहूका फडकना आदि कौवेका नेखना आदि) । हरएक प्रकारका पक्षी । एक पक्षी । गीध (पु०).

शकुनज्ञ, (त्रि०) शकुनं जानाति । ज्ञा+क । निमित्तको जाननेहारा । ज्योतिषी.

शकुनि, (पु०) शक्+उनि । पक्षी । बाज । कुकुड । सबलका पुत्र, गांधारदेशका राजा, गांधारीका भाई, (गांधारी धृतराष्ट्रकी स्त्री थी) इस प्रकार यह दुर्योधनका मामा (मातुल) था जिसने दुर्योधनको अनेक प्रकारके छलव्यापार पाण्डवोंपर प्रयोग करनेके लिये सिखलायेथे).

शकुन्त, (पु०) शक्+उन्त । हरएक प्रकारका पक्षी । एक कीडा.

शकुन्तला, (स्त्री०) शकुन्तैः लायते । ला+घञर्थे क । पक्षिओंसे पालीगई । मेनका अप्सराके गर्भसे उपजी विश्वामित्रकी कन्या । उत्पन्न होतेही मातासे छोडीगई, पक्षियोंसे पालीगई, पीछे कण्व मुनिने प्रतिपालन किया, दुष्यन्त राजाने गांधर्वविधि (दोनोंके इकरारपर विवाह होना) से विवाही.

शकृत्, (न०) शक्+ऋतन् । विष्ठा । मल (विशेषतः पशुओंका).

शक्त, (त्रि०) शक्+क्त । समर्थ । शक्तिवाला । ताकतवर । सख्त.

शक्ति, (स्त्री०) शक्+क्तिन् । सामर्थ्य । ताकत । देवी । न्यायआदिमें कहाहुआ, कारणमें रहनेहारा कार्यको उत्पन्न करनेलायक एक प्रकारका धर्म । शब्दमें रहनेहारी अर्थको जतलानेहारी एक प्रकारकी वृत्ति, वसिष्ठजीका बडा बेटा । बर्च्छी.

शक्तिग्रह, (पु०) ६ त० । अर्थको जतलानेहारी वृत्तिका समझना । शब्दकी शक्तिवाले अर्थको जाना । वृत्ति । एक अस्त्र । स्वामिकार्तिक । शिव.

शक्तिग्राहक, (पु०) शक्तिं गृह्णाति । ग्रह्+ण्वुल् । कार्तिकेय । "शक्तिं ग्राहयति (बोधयति)" । ग्रह्+णिच्+ण्वुल् । शब्दमें रहनेहारी अर्थकी शक्तिको जतलानेहारा । शक्तिको बोधन करनेहारा कारण (व्याकरण, उपमान, कोष, आप्तवाक्य, व्यवहार और वाक्यके शेषविवरणसे शक्तिग्रह होता है).

शक्तिधर, (पु०) शक्तिं धरति । धृ+अच् । कार्तिकेय । ताकत रखनेवाला (त्रि०) । "शक्तिभृत्" आदि—यही अर्थ.

शक्तिहेतिक, (पु०) शक्तिः हेतिः (प्रहरणास्त्रं) यस्य+कप् । जिसके पास चोट करनेका साधन बर्च्छी है । बर्च्छीसे लडनेहारा.

श(स)क्तु, (पु०) श(स)च्+तुन् । भुनेहुए जौका चूरा । सत्तू.

शक्नु, (त्रि०) शक्+नु । प्रियभाषी । पियारा बोलनेवाला.

शक्य, (त्रि०) शक्+यत् । शक्तिवाला । शक्ति जाननेलायक अर्थ । साबित करनेलायक । होसकनेलायक.

शक्यतावच्छेदक, (त्रि०) ६ त० । शक्यपदार्थस्य धर्मे येन धर्मेण अर्थस्य शब्दसंकेतविषयता तस्मिन् धर्मे । जो शब्द जिस अर्थवाले पदार्थको जतलाता है वह अर्थरूप धर्म उस शब्दका. शक्यतावच्छेदक (एक संकेतशब्द अपने अर्थमें पूरे तौरपर रहनेवाला) है । जैसे "घट" शब्द "घटत्व"वाले पदार्थको बोधन कर्ता है, इसलिये उसका (घटका) धर्म "घटत्व" "घट" शब्दका शक्यतावच्छेदक है.

शक्र, (पु०) शक्+रक् । इन्द्र । कुटजवृक्ष । अर्जुनवृक्ष । ज्येष्ठानक्षत्र (१८ वां).

शक्रगोप, (पु०) शक्रं (शक्रधनुः) गोपायति (समवर्णत्वात्) । इन्द्रधनुषको बचानेहारा (एक जैसा रंग होनेसे) । इन्द्रगोप । वीरबाहूटी । एक प्रकारका कीडा.

शक्रज, (पु०) शक्रात् जायते । जन्+ड । इन्द्रसे उपजता है । काक । कौआ । इन्द्रसे उपजा (त्रि०) । "शक्रजात" आदि.

शक्रजित्, (पु०) शक्रं जितवान् । जि+क्विप्-तुक् च । इन्द्रको जीतगया । रावणका बेटा । मेघनाद राक्षस । इन्द्रके जीतनेहारा (त्रि०).

शक्रधनुस्, (न०) मेघ (बादल) का चिह्न इन्द्रके धनुषकी नाईं सूर्यकी किरणोंके मेलसे बना एक पदार्थ । रामधनुष.

शक्रनन्दन, (पु०) ६ त० । इन्द्रका पियारा । अर्जुन.

शक्रसुत, (पु०) शक्रस्य सुतः । इन्द्रका पुत्र । वालिनामी वानरोंका राजा.

शक्राणी, (स्त्री०) शक्रस्य पत्नी ङीप्-आनुक् च । इन्द्रकी औरत (पुलोमजा).

शक(क्व)र, (पु०) शक्+क्विप्–कृ+अच् । कर्म० । शक्+क्वरप् वा । वृष । बैल । चौदह अक्षरोंके पादवाला एक छंद । एक नदी और मेखला (तडागी) (स्त्रियां ङीप्) । "शर्करी" यहभी छंदमें.

शङ्कर, (पु०) शंकरोति । कृ+अच् । कल्याण कर्ता है । महादेव । कल्याण करनेवाला (त्रि०).

शङ्का, (स्त्री०) शकि+अ । त्रास । डर । वितर्क । दलील । संशय (शक).

शङ्कित, (त्रि०) शङ्का जाता अस्य । तार० इतच् । डराहुआ (भीत) । संदिग्ध (शक कियाहुआ-शकदार) । जिसपर विश्वास न हो.

शङ्कु, (पु०) शकि+उण् । स्थाणु । डाली और पत्तेआदिसे रहित सूकाहुआ द्रख्त । एक प्रकारकी मच्छी । शल्यनामी अस्त्र (हथियार) । कीलक (कील) । दश करोडकी संख्या (गिन्ती) । उस संख्यावाला । महादेव । सूर्यकी छाया मापनेके लिये लकडी आदिका बनाहुआ १२ ह अंगुलका साधन.

शङ्कुकर्ण, (पु०) शङ्कुरिव कर्णौ अस्य । जिसके कान शंकुकी नाईं हैं । गर्दभ । गधा.

शङ्ख, (पु० न०) शम्+ख । इस नामका समुद्रमेंसे उपजा पदार्थ । ललाट(मत्था)की हड्डी । एक प्रकारका खजाना (निधि) । हाथीके दांतका मध्य । एक प्रकारकी संख्या । उस संख्यावाला । एक मुनि.

शङ्खध्म, (पु०) धमति । ध्मा+क । शंखबजानेहारा । "शंखध्मा" यही अर्थ.

शङ्खभृत्, (पु०) शङ्ख बिभर्ति । भृ+क्विप् तुक् च । शंखको धारण कर्ता है । विष्णु । नारायण.

शङ्खिनी, (स्त्री०) शङ्खः अस्ति अस्याः+इनिः । शंखवाली । चोरपुष्पी । यवतिक्ता । एक प्रकारकी स्त्री.

शच्, गति (जाना आदि) । भ्वा० आ० सक० सेट् । शंचते.

शच्, वाचि (बोलना) । भ्वा० आ० सक० सेट् । शचते.

शचि–ची, (स्त्री०) शच्+इन्-वा ङीप् । इन्द्रकी पत्नी (स्त्री).

शचीपति, (पु०) ६ त० । शचीका पति । इन्द्र । "शचीभर्ता" यही अर्थ.

शट्, रोग (बीमार होना) । भेद (जुदाकरना) । जाना । थकना । भ्वा० पर० सक० सेट् (रोगअर्थमें) अक० । शटति.

शट, (पु०) शटति (रुजति) । शट्+अच् । अम्ल । खट्टा शेरकी जटा (स्त्री०) फूलकी तिरी.

शठ्, मारना । आलस्यकरना । बुराकहना । ठगना । तक्लीफ उठाना । शठति । शाठयति । शठयति.

शठ, (न०) शठ्+अच् । तगर । केसर । और लोहा । धत्तूरा (पु०) । धूर्त (ठग-खचरा) (त्रि०) शरारती.

शठता, (स्त्री०) शठस्य भावः+तल् । शाठ्य । शरारत । वंचना । ठगी.

शण्, दान (देना) । भ्वा० प० स० सेट् । शणति । अशाणीत्–अशणीत्.

शण, (पु०) शण्+अच् । अपने नामका छोटा वृक्ष । भंगा । भांग । सनका पौधा.

शण्डिल, (पु०) शडि+इलच् । शाण्डिल्यका पिता । एक मुनि.

शण्ढ, (न०) शडि+अच् । कमल आदिका समूह । नपुंसक । बैल.

शण्ढ, (पु०) शण्+ढ । अन्तःपुर (जनानखाना) की रक्षा करनेहारा एक प्रकारका नपुंसक.

शत, (न०) शो+डतच् । इस नामकी संख्या । एक सौ । उस संख्यावाला । बहुतसी संख्या । "स्वार्थे कन्" (न०).

शतकुम्भ, (पु०) शतं कुम्भा यत्र । एक पहाड, जिसमेंसे सोना निकलता है.

शतकोटि, (पु०) शतं कोट्यः (अग्राणि) यस्य । सौकरोड नोकोंवाला । वज्र । हीरा । "शतगुणिता कोटिः" । सौक्रोडकी गिन्ती (स्त्री०).

शतक्रतु, (पु०) शतं क्रतवः अस्य । जिसकी सैंकडों ताकते हैं । जिसने सौ यज्ञ किये हैं । इन्द्र । देवोंका राजा.

शतघ्नी, (स्त्री०) शतं हन्ति । हन्+ठक् । एक प्रकारका हथिआर । तोफ । वृश्चिक । विच्छू । गलेकी बीमारी.

शततम, (त्रि०) शतस्य पूरणः+तमप् । सौको पूराकरनेवाला । सौवां.

शतद्रु, (पु०) शतधा द्रवति । द्रु+कु । नि० । एक नदी । सतलुज.

शतधा, (स्त्री०) शतं ग्रन्थीन् धत्ते । धा+क । दूर्वा । दूब । शत+धाच् । सौतरहसे । सौगुना.

शतधामन्, (पु०) शतं धामानि यस्य । जिसके सैंकडों घर वा तेज हैं । विष्णु.

शतधार, (पु०) शतं धारा (अग्राणि) यस्य । जिसकी सैंकडों नोक हैं । वज्र । हीरा । सौधारवाला (त्रि०) । "वसोः पवित्रमसि शतधारम्" इति श्रुतिः.

शतधृति, (पु०) शतं धृतयः अस्य । सैंकडो धीरजवाला । इन्द्र । ब्रह्मा । और स्वर्ग.

शतपत्र, (न०) शतं (बहूनि) पत्राणि अस्य । बहुत पत्तोंवाला । कमल.

शतपथ, (पु०) शतं पन्थानो यत्र । अच् समा० । जहां बहुत रास्ते हैं । यजुर्वेदका ब्राह्मणस्वरूप एक ग्रंथ.

शतपथिक, (त्रि०) शतपथं वेत्ति अधीते वा+ठन् । शतपथको जानता वा पढता है । शतपथ ब्राह्मणस्वरूप ग्रंथको पढने वा जाननेहारा । कई मतों वा रास्तोंपर चलनेहारा.

शतपद, (न०) शतं पदानि यत्र । जहां सैंकडों पद हैं । ज्योतिष्में नक्षत्रचरणके अनुसार नामकरणके उपयोगी पहिले वर्णको सूचन करनेहारा एक चक्र । "शतं पादाः यस्याः" । पाद्भावः । ङीप्में पद्भावः । कानखजूरा । कनकोल.

शतभिषज्, (स्त्री०) शतं भिषज इव ताराः यत्र । जहां सैंकडों तारा हकीमोंके समान हैं । अश्विनीसे चौवीसवां नक्षत्र (जिसकी एकसौ तारा हैं) । "शतभिषा".

शतमख, (पु०) शतं मखा यज्ञा यस्य । जिसके सैंकडों यज्ञ हैं । इन्द्र.

शतमन्यु, (पु०) शतं मन्यवो यज्ञा यस्य । शते (दैत्येषु) मन्युः (क्रोधो वा) यस्य । जिसके सैंकडों यज्ञ हैं । अथवा जो दैत्योंपर क्रोध कर्ता है । इन्द्र.

शतरुद्रीय, (न०) शतं रुद्रा (देवता) यस्य । जिसके सैंकडों देवता हैं । यजुर्वेदका रुद्राध्याय.

शतरूपा, (स्त्री०) शतं रूपाणि अस्याः । जिसके सैंकडों रूप हैं । ब्रह्मपत्नी । ब्रह्माकी स्त्री.

शतसाहस्र, (त्रि०) शतं सहस्राणि परिमाणं अस्य+अण् । जिसका सैंकडों हजार माप है । लाखकी गिन्ती-वाला.

शतह्रदा, (स्त्री०) शतं ह्रदा यस्याः । पृ० । जिसकी सैंकडों आवाजें हों । विद्युत् । बिजली.

शतानन्द, (पु०) शतं आनन्दयति+अण् । गोतमका पुत्र । अहल्याके गर्भसे उपजा एक मुनि । सैंकडोंको आनंददेनेहारा (त्रि०).

शतानीक, (पु०) शतं अनीकानि यस्य । जिसकी सैंकडों सेना हैं । व्यासदेवका चेला । एक मुनि । सैंकडों सेना-वाला (त्रि०).

शतार, (न०) शतं आराणि अस्य । सैंकडों आरावाला । वज्र.

शतायुस्, (त्रि०) शतं आयुर्वर्षकालः अस्य । सौवर्षका । एकसौ वर्षकी उमरवाला । "शतायुर्वै पुरुषः" इति श्रुतिः.

शतिक, (त्रि०) शतेन क्रीतः+ठन् । सौपर खरीदीगई चीज.

शत्य, (त्रि०) शतेन क्रीतः+यत् । सौकी गिन्तीवाले द्रव्यसे खरीदागया.

शत्रु, (पु०) शद्+त्रुन् । रिपु । दुश्मन् । लग्नसे छठा स्थान । शातक (दुःखदेनेहारा-काटनेहारा) (त्रि०).

शत्रुघ्न, (पु०) शत्रून् हन्ति । हन्+क । दशरथका बेटा । सुमित्राके गर्भसे उपजा लक्ष्मणका छोटा भाई.

शद्, शातन (गिरना-नाशकरना-काटना) और जाना । भ्वा० पर० सक० अनिट् । शीयते । आशाप्सीत्.

शनि, (पु०) शो+अनि । सूर्यका बेटा । छायाके गर्भसे उपजा एक ग्रह.

शनिवार, (पु०) शनिस्वामिको वारः । सूर्यआदि वारोंमें सातवां वार.

शनैश्चर, (पु०) शनैः चरति । चर्+अच् । शनिग्रह । वह सब ग्रहोंके उपरकी कक्षामें रहता है, बहुत काल-तक एक २ राशिको भोगनेसे इसकी मृदुगति अर्थात् बहुत धीरे चलता है.

शनैस्, (अव्य०) मन्द । धीरे धीरे.

शन्स्, हिंसा (मारना) । स्तुति (तारीफकरना) भ्वा० प० सक० सेट् । शंसति । अशंसीत्.

शप्, आक्रोश (चिल्लाना-कसमखाना । शापदेना-कसम खा-कर इकरार करना) । वा भ्वा० पक्षे दिवा उभ० सक० अनिट् । शपति-ते । शप्यति-ते । अशाप्सीत्.

शपथ, (पु०) शप्+अथन् । सच्चा करनेके लिये एक प्रकारकी कसम (सौं) खाना । जैसे "यदि यह झूठ हुआ तो मेरा अमुक अनिष्ट (बुरा) हो".

शपन, (न०) शप्+ल्युट् । शपथ । कसम । सौं.

शप्त, (त्रि०) शप्+क्त । शापदियागया । बददुआ दिया-हुआ.

शफ, (न०) शम्+अच् । पृ० "म" को "फ" । गौ आदिका खुर । और वृक्षकी जड.

शफर, (पु० स्त्री०) शफं राति । रा+क । एक प्रकारकी मच्छी.

शब्द्, आवाजकरना । चु० उभ० सक० सेट् । शब्दयति-ते.

शब्द, (पु०) शब्द्+घञ् । ध्वनि (आवाज) स्वरूप और अक्षरोंके स्वरूपका । कानकी इन्द्रियका विषय । आकाशका गुणविशेष । आवाज.

शब्दग्रह, (पु०) शब्दं गृह्णाति । ग्रह्+अच् । शब्दको ग्रहण कर्ता है । श्रोत्रेन्द्रिय (कानकी इन्द्रिय) । घञर्थे क । ६ त० । शब्दका ज्ञान (जानना).

शब्दब्रह्मन्, (न०) शब्दात्मकं ब्रह्म । शब्दस्वरूप ब्रह्म । वेदस्वरूप । सदा रहनेहारा शब्दस्वरूप ब्रह्म.

शब्दभेदिन्, (पु०) शब्दानुसारेण भिनत्ति लक्ष्यं+णिनि । शब्दके अनुसार (जहां आवाज होती हो) नशानको फाडता है । एक प्रकारका तीर (जो शब्दको वींधता है) । अर्जुन । पायु (गुदा) उपस्थ (लिंग).

शब्दशक्ति, (स्त्री०) ६ त० । शब्दोंकी (अर्थको जताने हारी) अभिधा और लक्षणा आदिमें रहनेहारी सामर्थ्य (ताकत).

शब्दानुशासन, (न०) अनुशिष्यते अनेन । अनु+शास्+ल्युट् । ६ त० । शब्दकी साधुता (ठीकहोना-शुद्ध-होना) को जतानेहारा व्याकरण.

शब्दालंकार, (पु०) शब्दमात्रकृतः अलंकारः । अलं-कारशास्त्रमें प्रसिद्ध अनुप्रासआदि अलंकार (शब्दसे कियाहुआ).

शब्दित, (त्रि०) शब्द+क्त । आहूत । बुलायाहुआ.

शम्, शान्ति-अक० । शान्तकराना । सक० दि० पर० सेट् । शाम्यति-अशमत्-अशमीत्.

शम, (पु०) शम्+घञ् । शान्ति । भीतरकी इन्द्रियोंको काबूकरना.

शमथ, (पु०) शम्+अथन् । शान्ति.

शमन, (पु०) शमयति । शम्+णिच्+ल्यु । जीवोंको पुण्यापुण्य (भलेबुरे) का फल देनेसे दण्ड देनेहारा यमराज । "भावे ल्युट्" शान्तिकरना.

शमनस्वसृ, (स्त्री०) ६ त० । यमराजकी बहिन (भगिनी) यमुना.

शमल, (न०) शम्+कलच् । विष्ठा । मल । गूंह.

शमि(मी), शम्+इन् वा ङीप् । एकप्रकारका वृक्ष । जण्डीका दरख्त.

शमिन्, (त्रि०) शाम्यति । शम्+णिनि । शान्त । धीर । साविर.

शमीक, (पु०) शम्+ईकक् । एक मुनिका नाम.

शमीगर्भ, (पु०) शमीगर्भं आधारत्वेन अस्ति अस्य+अच् । शमीके गर्भसे उपजा । वह्नि (आग) । और ब्राह्मण.

शम्पा, (स्त्री०) शं पाति । पा+क । विद्युत् । बिजली.

शम्ब्, गति (जाना) भ्वा० पर० सक० सेट् । शम्बति । अशम्बीत्.

शम्ब, (पु०) शम्ब+अच् । वज्र (इन्द्रका) । भाग्यवाला । मूसलके आगेका लोहा.

शम्बर, (न०) शम्ब्+अरन् । जल । धन (दौलत) । व्रत । और चित्र (मूरत) । एक मृग । एक दैत्य । एक मच्छ । एक पर्वत । लडाई । चित्रकवृक्ष । लोध । और अर्जुनवृक्ष । बहुत अच्छा (त्रि०).

शम्बरारि, (पु०) ६ त० । शम्बरका शत्रु । कामदेव । "शम्बररिपु".

शम्बल, (पु० न०) शम्ब्+कलच् । कूल (किनारा) । पाथेय (सफरखर्च) । मत्सर (बखीली).

शम्भल, (पु०) शम्भं (कल्याणदायकं तीर्थं) लाति । ला+क । कल्याण देनेहारे तीर्थको बनाता है । एक गाँव, जहां कल्की अवतार होगा । कुट्टनी औरत (स्त्रियां ङीष्).

शम्भु, (पु०) शम्+भू+डु । महादेव । कल्याणका स्थान.

शम्भुतनय, (पु०) ६ त० । शिवजीका पुत्र । गणेशजी । और स्वामिकार्तिक । "शम्भुसुत" आदि इसी अर्थमें.

शम्बु(म्बू)क, (पु० स्त्री०) शम्ब्+उन्+क् वा । जलशुक्ति । पानीकी सिप्पी । और हाथीके कुम्भस्थलका सिरा । रामायणमें प्रसिद्ध शूद्रतपस्वी । शंख । और दैत्य.

शम्या, (स्त्री०) शम्+यत्+टाप् । युगकीलक । जूलेकी कील.

शय, (पु०) शी+अच् । हस्त (हाथ) । सांप । नींद । शय्या (छेज) । पण (शर्त).

शयनम्, (न०) शी+ल्युट्+अन । निद्रा । सोना । लेट जाना । लेटना । विस्तरा । कौच । विषयभोगके लिये मिलाप.

शयनगृहम्, (न०) शयनस्य गृहम् । शयन (नींद) का घर । सोनेका कमरा.

शयनीय, (न०) शी+अनीयर् । शय्या । छेज+स्वार्थे कन्.

शयनैकादशी, (स्त्री०) ६ त० । आषाढ (हाड) के शुक्लपक्षकी एकादशी.

शयालु, (त्रि०) शी+आलुच् । निद्राशील । सोनेवाला । अजगर । और कुत्ता (पु०).

शयित, (त्रि०) शी+कर्तरि क्त । निद्रित । सोगया । "भावे क्त" नींद (न०).

शयु, (पु०) शी+उ । अजगर । सांप । "उनन्" शयुन (यही अर्थ).

शय्या, (स्त्री०) शी+क्यप् । खट्वा । खाट । पलंग । छेज.

शर, (न०) शॄ+अच् । जल (पानी) । तीर, सरकडा । दही और दूधका सार.

शरजन्मन्, (पु०) शरवणे जन्म यस्य । जो शरवणमें उपजा । कार्तिकेय.

शरट, (पु०) शॄ+अटन् । कृकलास । किर्लाे । कुसुम्भशाक.

शरण, (न०) शॄ+ल्युट् । गृह (घर) । रक्षक (बचानेहारा) । बचाना । वध (मारना) । घातक (मारनेवाला).

शरणागत, (त्रि०) शरणं आगतः । आ+गम्+क्त । शरणापन्न । शरणमें आपडा.

श(स)रणि(णी), (स्त्री०) शॄ (सृ) अनि-वा ङीप् । पथ । रास्ता । सडक.

शरणोन्मुख, (त्रि०) शरणस्य उन्मुखः । शरण (रक्षा)-के लिये ऊंचे मुख करके देखनेवाला । शरणार्थी.

शरण्य, (त्रि०) शरणाय साधुः+यत् । शरणपडनेसे रक्षा करनेलायक । हिफाजतके लायक । शरणपडेकी रक्षा करनेहारा.

शरद्, (स्त्री०) शॄ+अदि । वत्सर । वरिस । आश्विन (अस्सू) और कार्तिक (कत्तक) मासमें होनेवाली ऋतु (मौसिम).

शरद्घनः-मेघः, (पु०) शरदः घनः । शरत्कालीन (आश्विन, कार्तिक) मेघ । शरदृतुका बादल.

शरधि, (पु०) शरा धीयन्ते अत्र । धा+कि । जहां तीर रक्खे जाते हैं । तूण । तर्कश.

शरभ, (पु०) शॄ+अभच् । एक प्रकारका हरिण (जिसके आठ पांव होते हैं) । हाथीका बच्चा । एक बंदर । ऊंठ.

शरभू, (पु०) शरे (शरवणे) भवति । शरवणमें होता है । कार्तिकेय.

श(स)रयु(यू), (स्त्री०) शॄ (सृ) अयु-वा ऊङ् । अयोध्या नगरीके नीचे वहनेवाली नदी (दर्या).

शरव्य, (न०) शरवे (बाणशिक्षायै) हितम् । शरु+यत् । तीरकी विद्या सीखनेके लिये अच्छा । लक्ष्य । नशान । तीरसे वींधनेका स्थान.

शराभ्यास, (पु०) ६ त० । तीर चलानेकी शिक्षा.

शरारु, (त्रि०) शॄ+आरु । हिंस्र । हिंसा (कतल)-करनेवाला.

शरारोप, (पु०) शरा आरोप्यन्ते अत्र । आ+रुह्+णिच् । पुक्-च-अच् । जहां तीर चढायेंजाते हैं । धनुष् । कमान.

शराव, (पु०) शरं (दध्यादिसारं) अवति । अव्+अण् । जो दहीआदि अच्छी चीजको बचाता है । दहीका एकपात्र (बर्तन) । पिआला । कुज्जा.

शरावती, (स्त्री०) शराः सन्ति अस्यां+मतुप्-मस्य वः पूर्वदीर्घश्च । एक नदी.

शराश्रय, (पु०) ६ त० । तीरका आसरा । तूण । तर्कश.

शरीर, (न०) शॄ+ईरन् । प्रतिक्षण (छिन २) में क्षय होरहा । देह (जिस्म).

शरीरक, (पु०) शरीरं कायति (आत्मत्वेन अभिमन्यते) कै+क । जो शरीरको अपना करके मानता है । जीवात्मा.

शरीरज, (पु०) शरीरात् जायते । जन्+ड । शरीरसे उपजता है । रोग । बीमारी । जो कुछ शरीरसे उपजता है (त्रि०).

शरीरबद्ध, (त्रि०) शरीरेण बद्धः । शरीरसे बंधा हुआ । शरीरके साथ मिला हुआ । शरीरी । शरीरधारी । अवतार हुआ.

शरीरावरण, (न०) शरीरं आवृणोति । आ+वृ+युच् । शरीरको ढांकता है । शरीरपर फैलाहुआ चमडा । देहको ढांकनेहारा-(त्रि०) ल्युट् । देहका पडदा (न०).

शरीरिन्, (पु०) शरीरं (आत्माभिमानाश्रयत्वेन) अस्ति अस्य इनि । शरीरपर अपना अभिमान कर्ता है । जीव.

शरु, (पु०) शॄ+उन् । क्रोध । गुस्सा । वज्र । तीर (बाण) । शस्त्र.

शरेष्ट, (पु०) शृणाति कामम् । शॄ+अच्=शरः (कामः) तस्य इष्टः (इष्+क्त) । कामदेवका पियारा । आम्र । आम.

शर्करा, (स्त्री०) शॄ+करन् । खण्डका विकार । चीनी । खांड । शक्कर । ओलेका टुकडा । "शर्करा अस्ति अस्य" मतुप्-उसका लोप । वह देश जहां शर्करा (छोटे २ कंकर वा रोडे) है । एक रोग । टुकडा.

शर्ध, (पु०) शृध्+घञ् । अपानवायु (नीचेकी हवा-पद्द) का छोडना । "ल्युट्" (न०) यही अर्थ.

शर्व, हिंसा (कतलकरना-मारना) और गति (जाना) भ्वा० प० स० सेट् । शर्वति । अशर्वीत्.

शर्मद, (त्रि०) शर्म ददाति । दा+क । सुख देनेहारा । विष्णु (पु०).

शर्मद, (त्रि०) शर्म ददाति+दा+क+अ । आनन्द (खुशी) देनेवाला । विष्णु.

शर्मन्, (न०) शॄ+मनिन् । सुख । सुखवाला (त्रि०) । ब्राह्मणकी उपाधि (पु०).

शर्याति, (पु०) वैवस्वतमनुका एक पुत्र.

शर्व, (पु०) शर्व्+अच् । महादेव.

शर्वर, (पु०) शव्+अरन् । कामदेव । अंधेरा (न०).

शर्वरी, (स्त्री०) शॄ+वनिप्-ङीप् वनोर च । रात । हल्दी.

शर्वाणी, (स्त्री०) शर्वस्य पत्नी+ङीष् आनुक्च् । भवानी । महादेवकी स्त्री.

शल, गति (जाना) भ्वा० प० स० सेट् । शलति । अशालीत्.

शलभ, (पु०) शल्+अभच् । एक कीडा । पतंग.

शलाका, (स्त्री०) शल्+आकन् । शल्य । तीर । सलाई । सारिका (मैना) । मूर्ति लिखनेकी कलम । हड्डी.

शलाटु, (त्रि०) शल्+आटु । कच्चा फल । एक प्रकारकी जड । विल्व (विल्ल) (पु०).

शल्क, (न०) शल्+क । टुकडा । वृक्षका वल्कल (खाल) । मच्छीकांटा.

श(शा)ल्मलि, (पु०) शल्+मलच् । स्वार्थे इन् इञ् वा । सिंवलका पेड.

शल्य, (न०) ल्+यत् । बाण (तीर) । तोमर । विष (जहिर) और कील.

शल्ल, (गति) जाना । भ्वा० पर० सक० सेट् । शल्लति । अशल्लीत्.

शल्योद्धरणम्, (न०) शल्यस्य उद्धरणम् । तीरका निकालना । फोडेमेंसे लोहु पाक आदि कचरा बाहिर करना.

शल्व, (शल्+व) शाल्वनामी देश (पु०).

शव्, विकार (विगडना) और गति (जाना) भ्वा० पर० सक० सेट् । शवति । अशावीत्-अशवीत्.

शव, (पु० न०) शव्+अच् । मृतदेह । मराहुआ शरीर । मुर्दा । जल (न०).

शवकाम्य, (पु०) शवं काम्यति । शव+काम्यच् । मुर्देको चाहता है । कुत्ता.

शवयान, (न०) शववाह्यं यानम् । मुर्देको उठानेलायक सवारी । तल्प । तख्ता.

शवर, (न०) शव्+अरन् । एक प्रकारकी म्लेच्छोंकी जाति । पानी और शिवजी (पु०) उसकी स्त्री । ङीष्.

शवरथ, (पु०) शववाहनार्थं रथः । मुर्दा उठानेके लिये गाडी.

शवरालय, (पु०) ६ त० । भीलोंके रहनेकी जगह.

शवल, (पु०) शव्+कलन् । कर्बुरवर्ण । रंगवरंगी । डब्बखडब्बा । उसवाला (त्रि०) । उस रंगकी गौ (स्त्री०).

शश, प्लुतगति (उछलकर जाना) भ्वा० पर० सक० सेट् । शशति । अशाशीत्-अशशीत्.

शश, (पु०) शश्+अच् । एकप्रकारका मृग (खरगोश) । सयां । स्वार्थे कन् । (शशक) वही अर्थ.

शशधर, (पु०) शशं धरति । धृ+अच् । जिसके पास एकप्रकारका मृग रहता है । चांद (मृगाङ्क-शशाङ्क) । और काफूर (कर्पूर) । "शशभृत्" आदि-वही अर्थ.

शशविन्दु, (पु०) एक राजा । और विष्णु.

शशविषाण-शृङ्ग, (न०) शशस्य विषाणम् । शश-(सेह)का सींग.

शशाद, (पु०) शशं अत्ति । अद्+अण् । श्येन (बाज-पक्षी) "ल्यु" वही अर्थ.

शशिकला, (स्त्री०) ६ त० । चन्द्रमाका सोलवां भाग (हिस्सह).

शशिकान्त, (न०) शशी कान्तः यस्य । जिसका पियारा चन्द्रमा है । कुमुद (एकप्रकारका फूल) । चन्द्रकान्तमणि (पु०).

शशिन्, (पु०) शशः अस्ति अस्य+इनि । मृगवाला । चन्द्रमा.

शशिप्रभ, (न०) चांदकी चमकवाला । कुमुदफूल । ६ त० । चांदकी प्रभा । चांदनी (ज्योत्स्ना).

शशिभूषण, (पु०) शशी भूषणं यस्य । चन्द्रमा जिसका गहना है । महादेव । "शशिमण्डन" आदि भी.

शशिलेखा, (स्त्री०) शशिनो रेखा (रस्य लः) । चन्द्रमाकी कला । गुडूची (गिलोय).

शशिशेखर, (पु०) शशी शेखरे यस्य । जिसका सिरका भूषण चन्द्रमा है । महादेव । "शशिमूर्धा" आदि भी.

शशोर्ण, (न०) ६ त० । शशलोम । सहे (खरगोश)-का रोआँ.

शश्वत्, (अव्य०) शश्+वति । नैरन्तर्य । लगातार । सदा । हमेश । वार वार.

शष्, वध (कतलकरना) भ्वा० प० स० सेट् । शषति । अशाषीत्-अशषीत्.

शष्कुल, (पु०) शष्+कुलच् । एक द्रख्त । एक प्रकारका पूड़ा (अपूप) । कर्णरन्ध्र (कानका छेक) । एक मच्छ.

शष्प, (न०) शष्+पक् । बालतृण । छोटा २ घास । नया घास.

शस्, वध (कतलकरना) भ्वा० प० स० सेट् । शसति । अशासीत्-अशसीत्.

शस्, आशिष् (आशीर्वाद देना) भ्वा० आ० सक० सेट्-इदित् । अक्कसर । यह धातु "आङ्" उपसर्गके साथ रहता है । आशंसते । आशंसिष्ट.

शस्, स्वप्न (सोना-सुपना आना) अद० प० अक० सेट्-इदित् । शंस्ति-अशंसत्.

शसन, (न०) शस्-वध+ल्युट् । यज्ञके लिये पशुका मारना.

शस्त, (न०) शंस्+क्त । कल्याण । उसवाला । स्तुत । तारीफ कियाहुआ । और बहुत अच्छा (त्रि०).

शस्त्र, (न०) शस्+ष्ट्रन् । लोहा । तरवार आदि और जार.

शस्त्रजीविन्, (पु०) शस्त्रेण जीवति+णिनि । शस्त्रपर जीनेहारा.

शस्त्रपाणि, (पु०) शस्त्रं पाणौ यस्य । जिसके हाथमें शस्त्र है । शस्त्र पकड़नेहारा । एक प्रकारका आततायी (दूसरेके घातमें लगाहुआ).

शस्त्रपूत, (त्रि०) शस्त्रेण पूतः । युद्धमें शस्त्र (तरवार आदि) से मारा जानेसे पवित्र होगया (अपराधसे छूठ गया).

शस्त्राभ्यास, (पु०) ६ त० । शस्त्र चलानेकी शिक्षा.

शस्त्रिन्, (त्रि०) शस्त्रं अस्ति अस्य+इनि । शस्त्रवाला.

शस्त्री, (स्त्री०) स्वल्पं शस्त्रं+ङीप् । छोटा शस्त्र । छुरिका । छुरी.

शस्य, (न०) शस्+यत् । वृक्षआदिका फल । और खेतका धान आदि.

शस्यमञ्जरी, (स्त्री०) ६ त० । नये धान आदिकी मिंजर.

शस्यसम्पन्न, (त्रि०) शस्येन संपन्नः । धानसे पूर्ण हुआ । धानसे भरा हुआ.

शाक, (पु० न०) शक्+घञ् । पत्ते फूल आदि । एक प्रकारका वृक्ष (पु०) । शक्ति (ताकत) । शिरीषका वृक्ष । संवत् चलानेहारा एक राजा । उसका वरिस (पु०) । हरीतकी (हरीड) (न०) । "श्यति सामर्थ्य" शो+क । इस तरहके वृक्ष आदिके पत्ते (न०).

शाकटायन, (पु०) व्याकरणके बनानेहारा एक मुनि.

शाकटिक, (पु०) शकटेन चरति+ठञ् । छकड़ेसे जानेहारा.

शाकतरु, (पु०) शाकाख्यः तरुः । सागोनका द्रख्त.

शाकम्भरी, (स्त्री०) शाकैर्बिभर्ति । भृ+खच्+मुम् च । "भरिष्यामि सुराः शाकैरावृष्टेः प्राणधारकैः । शाकम्भरीति विख्यातिं" इति चण्डी । दुर्गा । सागोंसे पालनेवाली.

शाकराज, (पु०) शाकेषु राजते+अच् । शाकानां वा राजा टच् । सागोंमें चमकता है । वा सागोंका राजा । वास्तूकशाक । वास्थूका साग.

शाकिनी, (स्त्री०) शाकः अस्ति अस्याः+इनि । साग उपजानेवाली पृथिवी । और एक देवीकी सहचरी (साथ रहनेहारी).

शाकुन, (पु०) शकुनं (शुभाशुभसूचकं निमित्तं) अधिकृत्य कृतो ग्रन्थः+अण् । शकुन (सगन) जाननेका साधन । एक प्रकारका ग्रंथ । काकचरित.

शाकुनिक, (पु०) शकुनेन (पक्षिवधादिना) जीवति+ ठञ् । जो पक्षिओंको मारकर जीता है । पक्षिओंको मारनेहारा.

शाकुन्तलेय, (पु०) शकुन्तलाया अपत्यं+ढक् (ण्य) । दुष्यन्तराजाका बेटा, शकुन्तलाके गर्भसे उपजा । भरत राजा.

शाक्त, (त्रि०) शक्तिः देवता अस्य+अण् । तन्त्रमें कहाहुआ शक्तिदेवीकी उपासना करनेहारा.

शाक्तीक, (पु०) शक्तिः प्रहरणं अस्य+ईकक् । शक्ति(ताक्त-वर्छी) से लडनेहारा.

शाक्य, (पु०) शक्+घञ् । तत्र साधुः+यत् । बुद्धदेव.

शाक्यसिंह, (पु०) शाक्यवंशे सिंह इव । शाक्यके वंशमें मानों शेर है । बुद्धविशेष.

शाख, (व्याप्ति) फैलना । भ्वा० पर० सक० सेट् । शाखति । अशाखीत्.

शाख, (पु०) शाख्+अच् । कृत्तिकाका पुत्र । स्कन्द (स्वामिकार्तिक) का छोटा भाई । गणविशेष । ग्रंथका भाग । सर्गके स्थानमें ग्रंथका अंश । और द्रख्तका हिस्सा । डाली । राहु । बेल । अन्तिक (नजदीक) और वेदका एक भाग (स्त्री०).

शाखानगर, (न०) शाखेव नगरं । असली मुल्कके पासका छोटा शहिर । "शाखापुर" आदि भी.

शाखामृग, (पु०) शाखास्थो मृगः । डालीपर वा डालीका पशु । वानर । बंदर.

शाखारण्ड, (पु०) शाखायां (वेदशाखायां) रण्डः (तद्विहितकर्मानाचरणात्) । वेदमें कहेहुए कामको न करनेसे वेदकी शाखामें रण्ड है । अपनी शाखाको छोडकर काम करनेहारा.

शाखिन्, (पु०) शाखा अस्ति अस्य+इनि । डालीवाला । द्रख्त । वेदका एक भाग । एक राजा । म्लेच्छविशेष.

शाट, (पु०) शट्+घञ् । वस्त्र । कपडा (स्त्रियां ङीष्).

शाटक, (पु० न०) शट्+ण्वुल् । वस्त्र । कपडा (स्त्रियां टाप्).

शाट्यायन, (पु०) एक मुनि । "तेन प्रोक्तं अण्" एक प्रकारका होम, जो प्रकृत होममें किसी प्रकारके वैगुण्य (विधिका टूटना) होजानेपर कियाजाता है (न०).

शाठ्य, (न०) शठस्य भावः+ष्यञ् । शठता । ढीठपना । मूर्खता.

शाण, (न०) शणेन निर्वृत्तं+अण् । सनके सूतका बनाहुआ कपडा आदि । शण्+घञ् । कषपाषाण । कसौटी । शस्त्रआदिको तेज करनेके लिये एक प्रकारका यन्त्र (कला).

शाणित, (त्रि०) शाण्+णिच्-क्त । तीक्ष्णीकृत । तेज कियाहुआ.

शाण्डिल्य, (पु०) शण्डिलस्य अपत्यं+यञ् । गोत्रको चलानेहारा, भक्तिशास्त्रके बनानेहारा एक मुनि । बिल्व । आग.

शात, (न०) शो+क्त । सुख । उसवाला । कटाहुआ, कमजोर, और तेज (त्रि०).

शातकुम्भ, (न०) शतकुम्भे भवः+अण् । हिरण्य (सोना) । धतूरा । और करवीर (पु०).

शातन, (न०) शो+णिच्-तङ्च ल्युट् । तनूकरण । छोटाकरना । तेजकरना । और विनाशन (विगाडना) । "जायते पत्रशातनम्" इति मीमांसा । झडना.

शात्रव, (पु०) शत्रुः एव+स्वार्थेऽण् । रिपु । दुश्मन । "तस्य भावः संघो वा" अण् । वैर । दुश्मनी । शत्रुओंका समूह.

शाद, (पु०) शद्+घञ् । कर्दम (कीचड) । नयाघास । बालतृण.

शादहरित, (पु०) शादेन हरितः (तद्वर्णयुक्तः) । शाद्वलदेश । नयेघासवाली पृथिवी.

शाद्वल, (पु०) शादाः सन्ति अत्र+वलच् । बहुत घासवाली जगह.

शान्, भेदन (फाडना) भ्वा० उभ० सक० सेट् । स्वार्थे सन् । शीशांसति-ते । अशीशांसीत् । अशीशांसिष्ट.

शान, (पु०) शान्+अच् । अस्त्रों (औजारों) के तेज करनेहारा एक यन्त्र.

शान्त, (त्रि०) शम्+क्त । शमयुक्त । शान्तिवाला । आचार्य । वह रस कि जिसका स्थायिभाव निर्वेद है (पु०) । लोमपाद राजाकी कन्या । ऋष्यशृङ्गकी स्त्री । शमीवृक्ष । (स्त्री०).

शान्तनव, (पु०) शान्तनोः अपत्यं+अण् । शन्तनुकी सन्तान । भीष्म पितामह । "भीष्मः शान्तनवः" इति तर्पणम्.

शान्तनु, (पु०) द्वापर युगमें हुआ चन्द्रवंशी प्रतीपराजाका पुत्र । एक राजा.

शान्तरस, (पु०) शान्तः रसः । शान्तिको प्रकाश करनेवाला एक रस (ब्रह्मानन्दका सगाभाई).

शान्तात्मन्-चेतस्, (त्रि०) शान्तः आत्मा यस्य । शान्त स्वभाव (मन) वाला.

शान्ति, (स्त्री०) शम्+क्तिन् । काम, क्रोध आदिका जीतना । विषयोंसे मनका हटाना (निवारण) हटाना.

शान्तिक, (त्रि०) शान्तये हितं+ठक् । उपद्रवोंको दूर करनेहारी होमआदि क्रियां.

शाप, (पु०) शप्+घञ् । "तेरा बुरा हो" इस प्रकार कहना । लानत । शपथ । कसम । सौं.

शापास्त्र, (पु०) शाप एव अस्त्रं यस्य । शापही जिसका औजार है । मुनि । संत.

शाब्दबोध, (पु०) शब्देन निर्वृत्तः+अण् । शब्दसे बनाहुआ । अन्वय (संबंध) का बोध । शब्दके ज्ञानसे उत्पन्नहुआ एक प्रकारका ज्ञान । लफजकी पूरी २ समझ (अर्थज्ञानके लिहाजसे).

शाब्दिक, (पु०) शब्दं (शब्दसाधुताज्ञापकं शास्त्रं) वेत्ति अधीते वा+ठक् । शब्दकी शुद्धिको जतानेहारे शास्त्रको जान्नेहारा । व्याकरणशास्त्रके जान्नेवाला.

शामित्र, (न०) शम्+णिच्+इत्रच् । पशुके बांधनेका स्थान.

शाम्बरी, (स्त्री०) शम्बरेण निर्वृत्ता+अण्+ङीप् । शम्बरनामी दैत्यसे रचीगई । माया । इन्द्रजाल आदि.

शाम्भव, (पु०) शम्भोरयं+अण् । गुग्गल (शंभुका) । काफूर । एक विष (जहिर) । शिवजीका पुत्र । और देवदारु । शिवजीका । और उसका उपासक (त्रि०) । दुर्गा (स्त्री०).

शा(सा)यक, (पु०) शो (षो) ण्वुल् । बाण (तीर) । और तर्वार (खड्ग).

शार, (न०) शार्+अच् । शॄ+घञ् वा । कर्बुरवर्ण । रंगबरंगी । उसवाला (त्रि०).

शारङ्ग, (पु०) शारं (कर्बुरं) अङ्गं यस्य । शक० । जिसका अंग रंगबरंगी है । पपीहा (परिंदा) । हरिण । हाथी । भौंरा । और मोर.

शारद, (न०) शरदि भवं+अण् । चिट्टा कमल । कांहिं । बकुल । और हरी मूंग (पु०) । जो शरत् कालमें हो (त्रि०) । "चिट्टे कमलवाली" सरस्वती । "श्वेतपद्मं अस्ति अस्याः+अच्" (स्त्री०).

शारदिक, (न०) शरदि भवं श्राद्धं रोगो वा+ठञ् । शरत् कालका श्राद्ध । उस कालकी बीमारी (पु०).

शारदीया, (स्त्री०) शरदि भवा-छण् । शरत्कालमें करनेलायक दुर्गाकी पूजा.

शारि-री, (स्त्री०) शॄ+इञ् वा ङीप् । पाशक (पास्सा) आदिकी गोली । एक परिंदा (मैंना) । हाथीका पलाना । बांधना । छल.

शारिफल, (पु० न०) शारेः फलं (आधारः) । पास्सा खेलनेका पटडा । छक.

शारीर, (त्रि०) शरीरस्य इदं+अण् । शरीरके साथ मिलाहुआ सुख दुःख आदि । वृष (बैल) (पु०) । शरीरको अपना करके मानता है-"अण्" जीव । "शरीरके दुःख अथवा जीवके विषयमें रचाहुआ ग्रंथ"+अण् । व्यासदेवके बनायेहुए वेदान्तके सूत्र । चिकित्सा (हकीमी)-का अङ्ग । सुश्रुतग्रंथ आदिका एक हिस्सह.

शारीरिक, (त्रि०) शरीरे भवः+ठक् । शरीरमें उपजा दुःख आदि.

शारुक, (त्रि०) शॄ+उकञ् । हिंसक । मारने (कतल) करनेहारा.

शार्कर, (त्रि०) शर्करा अस्ति अस्य+अण् । शर्करा (कंकरआदि) वाली जगह (जहां ईंट, रोडे, कंकर बहुत हो).

शार्ङ्ग, (त्रि०) शृङ्गस्य विकारः+अण् । सींगका बनाहुआ पदार्थ । विष्णुका धनुष् (कमान) । और हरएक कमान (पु०) अदरक (न०).

शार्ङ्गिन्, (पु०) शार्ङ्ग अस्ति अस्य+इनि । विष्णु । हरएक धनुष् पकडनेहारा (त्रि०).

शार्दूल, (पु०) शॄ+ऊलच्-दुक् च । व्याघ्रविशेष । एक मेडिया । एक पक्षी । एक राक्षस (पिछले पदमें रहताहै श्रेष्ठ अर्थमें).

शार्दूलविक्रीडित, (न०) उन्नीस अक्षरोंके पादवाला छन्दविशेष.

शार्वर, (न०) शर्वर्या इदं+अण् । रातका अन्धार । बहुत अंधेरा.

शाल्, कथन-कहना । भ्वा० आ० स० सेट् । शालते । अशालिष्ट.

शाल, (पु०) शल्+घञ् । एक मच्छी । प्राकार (फसली) । एक द्रख्त । "रसालसालः समदृश्यतामुने"ति नैषधम्.

शालग्राम, (पु०) शालानां (वृक्षाणां) ग्रामः (समूहः) यत्र । जहां बहुत सालके द्रख्त हों । एक पहाड । "उपजा"+अण् । वहां उत्पन्नहुई एक प्रकारकी विष्णुकी मूर्ति.

शालनिर्यास, (पु०) ६ त० । सालद्रख्तकी गोयँद । सर्जरस (धुना).

शालभञ्जिका, (स्त्री०) शालेन भज्यते (निर्मीयते) भञ्ज्+ण्वुल् । काठकी बनीहुई पुतली । और वेश्या (कंजरी).

शाला, (स्त्री०) शाला+अच् । गृह । घर । जगह । द्रख्तके तनाकी डाली.

शालामृग, (पु०) शालायां मृग इव । शृगाल । गीदड । सियार.

शालावृक, (पु०) शालायां वृक इव । कुत्ता । गीदड । विल्ला । हरिन । और बंदर.

शालि, (पु०) शल्+इञ् । कलम आदि धान.

शालिवाहन, (पु०) विक्रमादित्यको मारकर शकका वरिस चलानेहारा एक राजा.

शालिहोत्र, (पु०) शालयः हूयन्ते अत्र । हु+त्रन् । जहां धानोंका होम कियाजाता है । घोटक । घोडा.

शाली, (स्त्री०) शाल्+अच् ङीष् । काला जीरा.

शालीन, (त्रि०) शालां अर्हति । ख । धृष्ट (ढीठ) । बेशरम.

शालु, (न०) शाल्+उण् । शालूक । कसैला पदार्थ । भेक (मेंडक) (पु०).

शालूर, (पु०) शाल्+ऊरच् । भेक । मेंडक । डड्डु.

शालोत्तरीय, (पु०) शालोत्तरे (ग्रामे) भवः । शालोत्तर गाँवमें उपजा । पाणिनिमुनि.

शाल्मल, (पु०) शाल्+मलच् । सिम्बलका द्रख्त । उसके निशानवाला एक द्वीप (जजीरा).

शाल्व, (पुं०) शाल्+व । एक देश.

शाव, (पु०) शव+घञ् । शिशु । बच्चा+स्वार्थे कन् । "शवका" मुर्देका.

शावर, (पु०) शावयति (विकारयति) शव+णिच्+अरन् । विगाडदेता है । पाप । अपराध । गुनाह । और लोधका द्रख्त । "शवरसे कहाहुआ+अण्" शवरसे कियाहुआ मीमांसाका भाष्य । "शवरका" (त्रि०).

शावरी, (स्त्री०) शवरस्य प्रिया+अण् । मीलनी । शूकशिम्बी । एक प्रकारकी विद्या (इल्म).

शाश्वत, (त्रि०) शश्वद् भवः+अण् । सदाहुआ । सतत । नित्य । हमेशाका.

शास, आशंसा (तारीफकरना) । भ्वा० आ० स० सेट् । क्त्वावेट् । अक्सर । इस धातुके साथ "आङ्" रहता है । आशंसते । आशंसिष्ट.

शास्, आशीर्वाद देना । अदा० आ० सक० सेट्+क्त्वावेट् । अक्सर इसके पहिले "आङ्" रहता है । आशास्ते । आशासिष्ट.

शास्, शासन (आज्ञा चलाना) सेट् अदा० पर० द्विक० क्त्वा वेट् । शास्ति । अशासत्.

शासन, (न०) शास्+ल्युट् । छोटेको हितसाधनमें लगाना । उपदेश करना । सजादेना । हुक्मदेना.

शासनहर, (पु०) शासनं हरति । हृ+अच् । आज्ञाको लेजानेहारा । दूत । कासिद.

शासितृ-शास्तृ, (त्रि०) शास्+तृच्-इट् वा । शासनकर्ता हुक्मतकरनेहारा । सजादेनेवाला.

शास्त्र, (न०) शिष्यते अनेन । शास्+ष्ट्रन् । हितका उपदेश करनेहारा ग्रंथ । पुस्तक.

शास्त्रकोविद, (त्रि०) शास्त्रे कोविदः । शास्त्रमें भली भांति शिक्षित । शास्त्रके जाननेहारा । अच्छा विद्वान्.

शास्त्रचक्षुस्, (न०) शास्त्रस्य चक्षुः । शास्त्रका नेत्र व्याकरणशास्त्र (इसीके द्वारा इतर शास्त्रमें समक्ष जासक्ते हैं).

शास्त्रदर्शिन्, (त्रि०) दृश्+णिनि । ६ त० । शास्त्रके जाननेहारा । "शास्त्रवित्" यही अर्थ.

शास्त्रव्युत्पत्ति, (स्त्री०) शास्त्रस्य व्युत्पत्तिः । शास्त्रमें चतुराई । वेदादि शास्त्रोंकी चमकदार समझ.

शास्त्रिन्, (त्रि०) शास्त्रं वेत्ति-अधीते वा+इनि । शास्त्रके जाननेहारा.

शास्त्रीय, (त्रि०) शास्त्रेण विहितः+छ । शास्त्रमें कहाहुआ धर्मआदि.

शास्य, (त्रि०) शास्+यत् । उपदेशकरनेलायक शिष्य आदि.

शि, छेदन-काटना । भ्वा० उभ० सक० अनिट् । शिनोति । शिनुते । अशैषीत् । अशेष्ट.

शिंशपा, (स्त्री०) शिवं पाति । पा+क-पृ० । टालीका द्रख्त.

शि(सि)क्थ, (न०) सिच्+थक्-कुक्च । पृ० । "स"-को "श" विकल्पसे । मोम । मधूच्छिष्ट । शहतका छूठन । "स्वार्थे कन्."

शिक्य, (न० स्त्री०) शिक+यत्, शि+यत्-कुक् च । छिक्का । रस्सीका बनाहुआ पदार्थ.

शिक्यित, (त्रि०) शिक्यं (शिक्यस्थं) करोति । शिक्य+णिच्-कर्मणि क्त । छिक्केके आसरेपर रक्खाहुआ पदार्थ । छिक्केपर रक्खाहुआ.

शिक्ष, अभ्यास करना । भ्वा० आ० स० सेट् । शिक्षते । अशिक्षिष्ट.

शिक्षा, (स्त्री०) शिक्ष+अ । पथ । रास्ता । उपदेश । सीख । अभ्यास । अक्षरोंके उच्चारणको दिखानेहारा वेदका एक अंग । ग्रंथविशेष । "शिक्षा कल्पो व्याकरणम्" इति । विद्या । इल्म.

शिक्षागुरु, (पु०) ७ त० । विद्या देनेहारा । इल्म सिखानेहारा.

शिक्षित, (त्रि०) शिक्षा जाता अस्य+इतच् । शिक्ष्+क्त वा । अभ्यासी । जिसने अभ्यास कियाहै । निपुण । होशियार । समझवाला । सीखाहुआ.

शिख(खा)ण्ड, (पु०) शिखां अमति । अम्+ड । ६ त० । मोरका पिच्छ । चूडा । कलगी । चोटी.

शिखण्डक, (पु०) शिखण्ड इव+कन् । कौवेका पर । पटे.

शिखण्डिक, (पु०) शिखण्डः अस्ति अस्य+ठन् । कुक्कुट । कुक्कड.

शिखण्डिन्, (पु०) शिखण्डः अस्ति अस्य+इनि । कल्गीवाला । मयूर । मोर । द्रुपदराजाका एक पुत्र । और विष्णु.

शिखर, (न०) शिखा अस्ति अस्य+अरच् । "आ" का लोप । पहाडकी चोटी । सिरा । अन्त.

शिखरिन्, (पु०) शिखरः अस्ति अस्य+इनि । वृक्षोंवाला । चोटीवाला । पर्वत (पहाड) । सत्तरह (सत्रह) अक्षरोंके पादवाला एक छन्द.

शिखा, (स्त्री०) शी+खक् । पृ० । आगकी ज्वाला (लाटा) । सिरके ऊपर केशों (वालों) का गुच्छ । बोदी । चोटी.

शिखाकन्द, (न०) शिखा इव कन्दः अस्य । गृञ्जन । गाजर.

शिखिध्वज, (पु०) शिखिनो वह्नेर्ध्वजं इव । मानों आगका झंडा है । धूम । धूआं.

शिखिन्, (पु०) शिखा अस्ति अस्य+इनि । चोटीवाला । मोर । आग । चित्रकवृक्ष । केतुग्रह । कुक्कुड । दरख्त । घोडा । ब्राह्मण । मेथी । चोटीवाला (त्रि०).

शिखिप्रिय, (पु०) शिखिनं प्रीणयति । प्री+क । लघुबदर । छोटाबेर.

शिखिमोदा, (स्त्री०) शिखिनं मोदयति मुद्+णिच्+अच् । अजमोदा । अजवैन.

शिखिवाहन, (पु०) शिखी (मयूरः) वाहनं यस्य । जिसकी सवारी मोर है । कार्तिकेय.

शिग्रु, (पु०) शि+रुक्-गुक्च । (सजिना) दरख्त । हरएक साग.

शिंघ, आघ्राण-सूंघना । भ्वा० प० स० सेट्-इदित् । शिंघयति.

शिंघाण, (न०) शिंघि+आनच् । पृ० णत्वम् । काचका पात्र । लोहेकी मैल । नाककी मैल । और श्लेष्म (बलगम).

शिञ्ज, अस्फुटध्वनि-आवाजका साफ सुनाई न पडना । इदित् । वा चु० उभ० पक्षे अदा० स० सेट् । शिञ्जयति-ते । शिंक्ते । (कई भ्वादिमें भी कहते हैं) शिंजति । अशिंजीत.

शिञ्जा, (स्त्री०) शिञ्जि+अ । भूषणशब्द । गहने (जेवर)-की आवाज । "शिञ्जि+अच्" धनुर्गुण । कमानका चिल्ला.

शिञ्जिनी, (स्त्री०) शिञ्जति । शिञ्जि+णिनि । कमानका चिल्ला.

शित, (त्रि०) शो+क्त । दुर्बल (कमजोर) । शाणित । तेज कियाहुआ.

शितद्रु, (पु०) शितं द्रवति । द्रु+कु० नि० । सतलज । दर्या (नदी).

शितशूक, (पु०) शितः (तीक्ष्णः) शूकः यस्य । तेजपट्टेवाला । यव । जौं.

शिति, (पु०) शि+क्तिच् । भूर्जपत्रवृक्ष (भोजपत्तेका दरख्त) । चिट्टारंग । कालारंग । उस रंगवाला (त्रि०).

शितिकण्ठ, (पु०) शितिः कण्ठः यस्य । जिसका गला काला है । महादेव । दात्यूह.

शिथिल, (त्रि०) श्लथ्+किलच् । पृ० । श्लथ । ढीला । कमजोर मेल । मन्द । मूर्ख । धीमा.

शिनि, (पु०) शि+निक् । यदुके वंशमें एक क्षत्रिय (सात्यकी इसका नप्ता (दोहता) था).

शिप्र, (पु०) शि+रक्-पुकच । एक सरोवर (तालाब) । एक नदी.

शिफाकन्द, (पु०) शिफा इव कन्दः । कमलफूलकी जड.

शिरःफल, (पु०) शिर इव फलं अस्य । जिसका फल सिरके समान हो । नारिकेल । नरेल.

शिरःशूल, (न०) शिरसः शूलं इव (तापकत्वात्) । सिरका मानो सूल है (तपानेसे) । सिरदर्द.

शिरस्, (न०) शॄ+असुन् । नि० । मस्तक । मत्था । सिर आगेसिरा.

शिरसिरुह, (पु०) शिरसि रोहति । रुह्+क । अलुक् स० । सिरपर जमता है । केश । बाल.

शिरस्क, (न०) शिरसि कायति (प्रकाशते) । कै+क । सिरपर चमकता है । शिरस्त्राण । टोप । पगडी । सिरका.

शिरस्त्र, (न०) शिरस्त्रायते । त्रै+क । सिरको बचानेहारा । उष्णीष । पगडी.

शिरस्य, (पु०) शिरसि भवः+यत् । सिरपरहुआ । साफवाल (केश) । जो सिरपर उत्पन्न होता है (त्रि०).

शिरा, (स्त्री०) शॄ+क । नाडी । नाड । नबज.

शिराल, (त्रि०) शिरा अस्ति अस्य+लच् । नाडीवाला । शिरायुक्त.

शिरीष, (पु०) शॄ+ईषन् । सिरीसका दरख्त । इस नामका वृक्ष.

शिरोगृह, (न०) शिरःस्थं (उपरिस्थं) गृहम् । ऊपरका घर । चंद्रशाला । चुबारा.

शिरोज, (पु०) शिरसि जायते । जन्+ड । सिरमें उपजता है । केश । बाल.

शिरोधरा, (स्त्री०) शिरः (मस्तकं) धरति । धृ+अच् । माथेको पकडती है । ग्रीवा । गर्दन । गला.

शिरोधि, (स्त्री०) शिरः धीयते अत्र । धा+कि । जहां सिर पडा है । ग्रीवा । गर्दन.

शिरोमणि, (पु०) शिरसि धार्यः मणिः । सिरपर धारण करनेलायक मणि । सिरकी मणि (चूडामणि) । सिरपै धारण करनेलायक रत्न.

शिरोरुह, (पु०) शिरसि रोहति । रुह्+क । सिरपर उगता है । केश । बाल.

शिरोवेष्ट, (पु०) वेष्ट्+घञ् । शिरसः वेष्टः । सिरका लपेट । पगडी.

शिल्, उञ्छ-एक २ कना चुगना । तु० प० स० सेट् । शिलति । अशेलीत्.

शिल, (न०) शिल्+क । खेतके मालिकद्वारा शस्य (धान्य) लेजानेके पीछे बाकी धान्योंका (सिला) चुगना । पत्थर । दर्वाजेके नीचे लकडीका टुकडा (स्त्री०).

शिलाकुट्टक, (पु०) शिलां कुट्टयति । कुट्+ण्वुल् । पत्थरको फाडनेहारा एक औजार (अस्त्र).

शिलाजतु, (न०) शिलाया जातं जतु । सिलाकी लाख । उपधातुविशेष.

शिलाभेद, (पु०) शिलां अपि भिनत्ति । भिद्+अण् । सिलको भी फाड डलता है । भिद्+अण् । पत्थरको फाडनेवाला दरख्त । और पत्थर फाडनेवाला औजार.

शिलासार, (न०) शिलायाः सार इव । मानों सिलका सार है । लोहा.

शिलि, (पु०) शिल्+कि । भोजपत्रका द्रख्त । दर्वाजेकी लकडी । मेकी । डड्डी.

शिलीन्ध्र, (न०) शिलीं धरति । +कध-पृ० मुम् च । कदलीपुष्प । केलेका फूल । एक प्रकारकी मच्छी । मट्टी । खुंब.

शिलीमुख, (पु०) शिली (शल्यं) मुखं अस्य । भ्रमर (भौंरा) । बाण । तीर । युद्ध । लडाई । और जड होगया.

शिलोच्चय, (पु०) शिलानां उच्चयः यत्र । जहां सिलोंका समूह हो । पर्वत । पहाड.

शिलोञ्छ, (पु०) शिलेन उञ्छः । उछि+घञ् । धान चुनेगये खेतमेंसे बाकी रहेहुओंका चुन्ना.

शिल्प, (न०) शिल्+पक् । चित्रकलादि कर्म । कलविद्या । हुनर । कारीगरी.

शिल्पकारिन्, (त्रि०) शिल्पं (चित्रादिकलां) करोति । मूर्तिआदि हुनर (कला) को कर्ता है । चित्रआदि बनानेहारा.

शिल्पशाला, (स्त्री०) ६ त० । कारीगरोंका घर वा स्कूल । मूरत लिखनेवालोंका घर.

शिल्पशास्त्र, (न०) शिल्पज्ञापनं शास्त्रम् । हुनर सिखानेहारी विद्या । वास्तुविद्याको जतानेहारा शास्त्र.

शिल्पिन्, (त्रि०) शिल्पं वेत्ति अधीते वा+इनि । मूरतआदि लिखनेके हुनरको जानता वा पढता है । चित्रादिकर्मकर.

शिव, (न०) शो+वन् । पृ० । मङ्गल । सुख । जल । सैंधानोन । और चिट्टा सुहागा । मंगलवाला (त्रि०) । माहदेव । मोक्ष । गुग्गल । वेद । पुण्डरीकका द्रख्त । काला धतूरा । पारा । देवता । लिङ्ग । और वीसवां योग (पु०).

शिवक, (पु०) शिव इव+कन् । एक कील । गोवाडे- (गोष्ठ) में गौओंके खुजलानेके लिये ठोकाहुआ किल्ला.

शिवचतुर्दशी, (स्त्री०) शिवप्रिया चतुर्दशी । फाल्गुन- (फागन) के कृष्णपक्षकी चतुर्दशी.

शिवदूती, (स्त्री०) शिवः दूतः यस्याः । शिव जिसका दूत है । दुर्गाकी एक मूर्ति.

शिवद्रुम, (पु०) शिवप्रियः द्रुमः । शिवजीका पियारा वृक्ष । बिल्ववृक्ष । बिल्लका द्रख्त.

शिवधातु, (पु०) ६ त० । पारद । पारा.

शिवपुरी, (स्त्री०) ६ त० । काशी । शिवजीकी नगरी.

शिवरात्रि, (स्त्री०) शिवप्रिया (तदुपासनार्था) रात्रिः । शिवजीकी उपासना करनेके लिये रात । उस दिनका व्रत.

शिवलिङ्ग, (न०) ६ त० । शिवजीका लिङ्गके स्वरूपवाला पत्थरका पदार्थ.

शिवलोक, (पु०) ६ त० । कैलासनामी स्थान । शिवका लोक.

शिववाहन, (न०) शिवं वाहयति । वह्+णिच्+ल्यु । शिवको उठाता है । वृषभ । बैल.

शिवा, (स्त्री०) शी+वन् । नि० । मङ्गलवाली स्त्री । दुर्गा । मुक्ति । गिदडी । हरीड । शमीका वृक्ष । आमलकी (आँवला).

शिवानी, (स्त्री०) शिवं (कल्याणं) आनयति । सुखको लाती है । आ+नी+ड-ङीष् । जयन्तीवृक्ष । शिवकी स्त्री । आनुक् । दुर्गा । पार्वती.

शिवालय, (न०) शिव आलीयते अत्र । ली+अच् । शिव जहां छिपा रहता है । श्मशान (मसान) । ६ त० । लाल तुलसी । और महादेवका घर.

शिवि, (पु०) शि+वि । नि० । (गुण न हुआ) । हिंस्रपशु । मारनेवाला पशु । भोजपत्रका वृक्ष । उशीनरराजाका बेटा । एक राजा.

शिविका, (स्त्री०) शिवं करोति । शिव+णिच्+ण्वुल् । एक प्रकारकी सवारी । डोली.

शिविर, (न०) शो+किरच्-वुकुच । कटक । सेनाके निवासका स्थान । छावनी.

शिशिर, (न०) शश्+किरच् । नि० हिम (बर्फ) । माघ और फागनके महीनोंका मौसिम (ऋतुभेद) । ठण्डा । उसवाला (त्रि०).

शिशु, (पु०) शो+कु-सन्वद्भावः द्वित्वम् । बालक (बच्चा) । स्वल्प (थोडा).

शिशुत्व, (न०) ६ त० । शिशोर्भावः+त्व । बालपनमें तल् । शिशुता । बचपन.

शिशुपाल, (पु०) चेदिदेशका एक राजा । दमघोषका बेटा । चंदेलीका राजा.

शिशुपालहन्, (पु०) शिशुपालं हतवान् । शिशुपालको मारताहुआ । हन्+भूते क्विप् । श्रीकृष्णजी महाराज.

शिशुमार, (पु०) शिशुं मारयति । मृ+णिच् । एक प्रकारका जलका जीव । आकाशमें एक तारोंका चक्र (समूह).

शिश्न, (पु०) शिश्+नक्-नि० । मेढ्र । लिङ्ग । पुरुषचिह्नविशेष.

शिश्विदान, (त्रि०) श्विद्+कानच् । द्वित्वम् । पापकरनेवाला । पापी.

शिष्, विशेषकरना । रुधा० प० सक० अनिट् । शिनष्टि । अशिषत्.

शिष्ट, (त्रि०) शास्+क्त । शान्त । वेदके वचनपर विश्वास करनेवाला । अच्छी समझवाला । और धीर.

शिष्टाचार, (पु०) शिष्टानां आचारः । सज्जनोंका आचार । भला व्यवहार.

शिष्टि, (स्त्री०) शास्+क्तिन् । आज्ञा (हुक्म) । शासन (सजा) । ताडन.

शिष्य, (त्रि०) शास्+क्यप् । शिक्षणीय । सिखानेलायक । छात्र । उपदेशके लायक । विद्यार्थी.

शी, शयन (सोना) । अदा० आ० अक० सेट् । शेते । अशयिष्ट.

शीक्, सेक (सींचना) और सर्पण (सरकना) भ्वा० आ० सक० सेट् । शीकते । अशीकिष्ट.

शीकर, (न०) शीक्+अरन् । सीधा वहना । पानीका कण (कतरा) । हवा.

शीघ्र, (न०) शिघि+रक् । विलम्बका अभाव । जल्दी । जल्दीवाला (त्रि०).

शीघ्रकारिन्, (त्रि०) शीघ्रं करोति । जल्दी करनेवाला । फुर्तीला.

शीघ्रबुद्धि, (त्रि०) शीघ्रा बुद्धिः यस्य । फुर्तीली अकिलवाला । तीक्ष्णबुद्धि । समयपर फुरनेवाली बुद्धिवाला.

शीत, (न०) श्यै+क्त । शीतल (ठण्डा) । जल (पानी) । और बर्फ । शीतस्पर्शवाला (त्रि०).

शीतक, (पु०) शीतं इव करोति । दीर्घसूत्री । ढीलाकामकरनेवाला । "शी+स्वार्थे कन्" शीतपदार्थ । शीतकाल । सर्दी । और विच्छू.

शीतकर, (पु०) शीतः करः यस्य । जिसकी ठण्डी किरण है । चन्द्र । चांद । और कर्पूर (काफूर) । शीतकरनेहारा (त्रि०).

शीतकाल, (पु०) ६ त० । शीतका समय । मार्गशिर (मग्गर) और पौष (पूंस) के दो महीने.

शीतकृच्छ्र, (पु०) एक प्रकारका व्रत (जिसमें तीन २ दिन दही, घी और दूध पीकर उपवास कियाजाता है).

शीतगु, (पु०) शीता गावः (किरणाः) यस्य । जिसकी ठण्डी किरण हों । चन्द्रमा । और कर्पूर (काफूर).

शीतभानु, (पु०) शीताः भानवः अस्य । ठण्डी किरणोंवाला । चंद्रमा । और काफूर (कर्पूर).

शीतभीरु, (स्त्री०) ६ त० । सर्दीसे डरनेवाली (मल्लिका) मालती । शीतभीत । सर्दीसे डराहुआ (त्रि०).

शीतरश्मि, (पु०) शीता रश्मयः अस्य । सर्दकिरणोंवाला । चांद । और काफूर.

शीतल, (पु०) शीतं लाति । ला+क । शीतं अस्ति अस्य+, लच् वा । ठण्डा स्पर्श (सर्द) । उसवाला (त्रि०) । मलयका चंदन । और मौक्तिक (मोती).

शीतला, (स्त्री०) एक देवी । और एक पानीका द्रख्त (ङीप् मी) । एक प्रकारका रोग । हीराकसीस । काफूर । संदल । मोती.

शीता, (स्त्री०) श्यै+क्त । लाङ्गलपद्धतिं । हलका फाला । सीता । दूर्वा.

शीतांशु, (पु०) शीताः अंशवः यस्य । जिसकी किरणें ठण्डी हों । चंद्रमा । चांद । कर्पूर । काफूर.

शीतार्त, (त्रि०) शीतेन ऋतः । शीतालु । जिसे सर्दीसे कष्ट होगया । शीतपीडित.

शीतालु, (त्रि०) शीत+अस्ति अर्थे आलुच् । जिसे सर्दी होगई । शीतबाधायुक्त.

शीत्कार, (पु०) शीत् इत्यस्य कारः । शीत्+कृ+घञ् । क्रीडाके समय स्त्रिओंकी "सी सी" आवाज । "सी सी" करना.

शी(सी)त्य, (त्रि०) शी (सी) तां अर्हति-यत् । हलसे खेंचागया सर्दीके लायक । खेतआदि । हलचलायाहुआ.

शीधु, (पु० न०) शी+धुक् । इक्षु (ईख-गन्ने) के रससे उपजी एक प्रकारकी मद्य (शराब).

शीन, (त्रि०) श्यै+क्त । घनीभूत घृत आदि । जमाहुआ घी वगैरह । मूर्ख (बेवकूफ) । और अजगर (बडा सांप) (पु०).

शीभ्, कथन (कहना) भ्वा० आ० स० सेट् । शीभते । अशीभिष्ट.

शीर, (पु०) शी+रक् । अजगर सर्प । बडा सांप.

शीर्ण, (त्रि०) शॄ+क्त । कृश (कमजोर) । पतला । सूकगया.

शीर्ष, (न०) शिरस् (विकल्पसें "शीर्ष" आदेश होता है) । सिर । मस्तक । मत्था.

शीर्षक, (न०) शीर्षे कायति । कै+क । शिरस्त्राण । टोप । पगडी । सिर । सिरकी हड्डी.

शीर्षच्छेद्य, (त्रि०) शीर्षच्छेदं अर्हति+यत् । जिसका सिर काटना चाहिये । वध्य । मारनेलायक । "शीर्षच्छेद्यमतोऽहं त्वां" इति भट्टिः.

शीर्षण्य, (पु०) शीर्षे वध्यते । शीर्ष+यत्-"शीर्षन्" आदेशः । सिरपर बांधाजाता है । शिरस्त्राण । टोप । पगडी । "शीर्षे भवः" यत् । विशदकेश (साफवाल) (पु०) । वालोंसे उपजा (त्रि०).

शील्, समा-धिलगाना । पूजाकरना । एक कामको वार २ करना । भ्वा० प० अक० सेट् । शीलति । अशीलीत् । चु० उभ० । शीलयति-ते अशिशीलत्-त.

शील, (न०) शील्+अच् । स्वभाव । अच्छा चालचलन । चरित्र । चलन । अजगर । सांप (पु०).

शीलन, (न०) शील्+ल्युट् । अभ्यास । वार २ करना । मिजाज । बहुतही.

शीलित, (त्रि०) शील्+क्त । अभ्यस्त । वार २ किया । चीर्ण । कियाहुआ.

शुक्, गति (जाना) भ्वा० पर० सक० सेट् । शोकति । अशोकीत्.

शुक, (न०) शुक्+क । एक द्रख्त । कपडा । और कपडे-का पल्ला । व्यासदेवका पुत्र । एक पक्षी (तोता) । और शोनकवृक्ष (पु०).

शुकदेव, (पु०) व्यासदेवजीका पुत्र.

शुकनास (पु०) शुकस्य नासेव पत्रं अस्य । जिसका पत्ता तोतेकी नासाके समान है । स्योनाकवृक्ष । तोतेकी नासाके समान नासवाला । तोतेनक्का (त्रि०) । कादम्बरीग्रन्थमें प्रसिद्ध तारापीड राजाका एक मन्त्री (वजीर) (पु०).

शुक्त, (न०) शुच्+क्त । मांस । काञ्जी । पिघलाहुआ । एक पदार्थ । और मीठा पदार्थ समय पाकर जो खट्टा होगया है । निर्दय । दुर्जन । और अम्ल (खट्टा) (त्रि०) शुक्तिका (सीप्पी) (स्त्री०).

शुक्तिज, (न०) शुक्तौ जायते । जन्+ड । सिप्पीमें उप-जता है । मुक्ता । मोती.

शुक्तिमत्, (पु०) शुक्तिः अस्ति अस्य+मतुप् । एक पर्वत (पहाड) । एक नदी (स्त्री०).

शुक्र, (न०)शुच्+रक् (नि०) । मिज्जसे उपजा पिछला धातु । वीर्य । विंद । और एक प्रकारका नेत्ररोग । एक ग्रह । दैत्योंका गुरु । अग्नि । आग । चित्रकवृक्ष । जेठका मास (महीना) । चौवीसवां योग (पु०).

शुक्रभुज्, (स्त्री०) शुक्रं भुंक्ते । भुज्+क्विप् । मयूरजातिकी स्त्री । एक प्रकारकी मोरनी.

शुक्रला, (स्त्री०) शुक्रं लाति । ला+क । उच्चटावृक्ष.

शुक्रशिष्य, (पु०) ६ त० । शुक्रका चेला । असुर । दैत्य.

शुक्रिय, (त्रि०) शुक्रः देवता यस्य, तस्य इदं वा+घ । शुक्रदेवतावाला वा शुक्रसवन्धी । यजुर्वेदका ३६ वां शान्तिअध्याय (न०).

शुक्ल, (न०) शुच्+लक् (कुत्वं) । रजत (चांदी) । नव-नीत (मक्खन) । एक प्रकारका आंखका रोग । चिट्टारंग (पु०) । चिट्टेरंगवाला और शुद्ध (साफ) (त्रि०).

शुक्लकर्मन्, (त्रि०) शुक्लं (शुद्धं) कर्म यस्य । अच्छा काम करनेवाला । पवित्र (पाक) । शुभचरित्र (नेकचलन) (त्रि०).

शुक्लपक्ष, (पु०) कर्म० । चिट्टा पखवाडा । चांद्रमासका चिट्टा आधा समय । चिट्टा पर । कौआ । और बगला.

शुक्लवायस, (पु०) कर्म० । बक (बगला) । चिट्टा कौआ । श्वेतकाक.

शुक्लापाङ्ग, (पु०) शुक्लः अपाङ्गः यस्य । चिट्टी नजरवाला । मयूर । मोर.

शुक्लिमन्, (पु०) शुक्लस्य भावः+इमनिच् । चिट्टापन । चिट्टारंग । चिटाई.

शुक्लोपला, (स्त्री०) कर्म० । सः अस्ति अस्याः+अच् । चिट्टे टुकडेवाली मिसरी । सफेद पत्थर । शर्करा । सक्कर । खांड.

शुङ्ग, (पु०) शुम्+ग । नि० । वटवृक्ष । वोडका द्रख्त । पाकडका दरख्त.

शुच्, (स्त्री०) शुच्+क्विप् । शोक । फिकर । "विकल्पसे टाप् होता है".

शुच्, शोक (अफ्सोस करना) । भ्वा० प० स० सेट् । शोचति । अशोचीत्.

शुचि, (पु०) शुच्+किन् । वह्नि (आग) । चित्रकवृक्ष । जेठका महीना । आषाढ (हाड) का महीना । शुद्धाचरण । नेकचाल । ग्रीष्म (गर्मीका मौसम) । अच्छा वजीर । चिट्टारंग । उसवाला (त्रि०).

शुचिद्रुम, (पु०) कर्म० । पवित्र द्रख्त । अश्वत्थवृक्ष । पीपलका द्रख्त.

शुण्ड, (पु०) शुण्+ड । मदनिर्झर । मदका झर्ना । गज-हस्त । हाथीका हाथ (सूंड) (पु०) (स्त्रियां टाप्) । मद्यपीनेका घर । कलालखाना । वेश्या (कंजरी) । सुरा (शराब) । कुट्टनी । पानीकी हथिनी (स्त्री०).

शुण्डार, (पु०) शुण्डा+अस्ति अर्थे र । शौण्डिक (कलाल) । और हाथी.

शुद्ध, (न०) शुध्+क्त । सैन्धावलवण । सैंधानोन । और मिरच । केवल । निर्दोष (बेऐब) । पवित्र । और शुभ्र (सफेद) (त्रि०).

शुद्धवल्ली, (स्त्री०) कर्म० । गुडूची । गिलोय । पवित्रलता (बेल.).

शुद्धान्त, (पु०) शुद्धः अन्तः (पर्यन्तः) यस्य । जो सारा साफ है । अन्तःपुर (जनानखाना) । राजाकी स्त्री (पु० स्त्री०) । "शुद्धान्तसम्भोगनितान्ततुष्टे" इति नैषधम्.

शुद्धापह्नुति, (स्त्री०) कर्म० । एक प्रकारका अर्थसम्बन्धी अलंकार.

शुद्धि, (स्त्री०) शुध्+क्तिन् । मार्जन । सफाई । मांजना । वेदके कामकरनेलायक एक प्रकारका संस्कार । दुर्गा । देवी.

शुद्धौदनि, (पु०) एक प्रकारका बौद्ध । "शुद्धोदन" बुद्धका पिता.

शुध्, शौच-साफ होना । शोधन-घटाना । दि० प० स० अनिट् । शुध्यति । अशुधत् । "भक्तो हरः शुध्यति यद्गुणः स्यात्" ली०.

शुन्, गति- जाना । तु० प० स० सेट् । शुनति । अशोनीत्.

शुन, (पु०) शुन्+क । कुक्कुर । कुत्ता । "शुनक" यही अर्थ । एक मुनि.

शुनःशेफ, (पु०) शुन इव शेफः अस्य । अलुक् स० । विश्वामित्रका शिष्य । एक मुनि.

शुनी, (स्त्री०) श्वन्+ङीप् । कुत्तेकी स्त्री । कुत्ती । पेठी । कूष्माण्डी.

शुन्ध्, शुद्धि-साफहोना । चु० उभ० स० सेट् । शुन्धयति-ते.

शुन्ध्, शुद्धि-अक० । साफ करना-सक० भ्वा० उभ० सेट् । शुन्धति-ते । "आपः शुन्धन्तु मैनसः" इति वेदमन्त्रः । अशुन्धिष्ट.

शुभ्, दीप्ति । चमकना । भ्वा० आ० अक० सेट् । शोभते । अशुभत्.

शुभ, (न०) शुभ्+क । मङ्गल (भलाई) । शुभवाला । (त्रि०) । तेईसवां योग (पु०).

शुभंयु, (त्रि०) शुभं+अस्ति अर्थे युस् । शुभान्वित । शुभवाला । भलाईवाला । "क्षितिपः शुभंयुः" भट्टिः.

शुभग्रह, (पु०) शुभः (शुभदायकः) ग्रहः । भलाकरनेवाला ग्रह । साधुग्रह । वृहस्पति । शुक्र । पापग्रहसे न मिलाहुआ बुध.

शुभङ्कर, (त्रि०) शुभं करोति । कृ+अच्-मुम् च । मङ्गलकारक । भला करनेहारा । दुर्गा (देवी) (स्त्री०).

शुभद, (पु०) शुभं ददाति । दा+क । पीपलका द्रख्त । मंगल देनेहारा (त्रि०).

शुभा, (स्त्री०) शुभ्+क । शोभा । कान्ति । खूब सूरति । देवताओंकी सभा.

शुभ्र, (न०) शुभ्+रक् । अभ्रक (अबरक) । और रूपा । चन्दन । और चिट्टारंग (पु०) । उसवाला (त्रि०).

शुभ्रदन्ती, (स्त्री०) शुभ्रो दन्तो यस्याः+ङीप् । चिट्टेदांतवाली । पुष्पदन्तदिग्गजकी हथिनी.

शुम्भ्, दीप्ति (चमकना) । अक० । मर्दन (मलना) । सक० तु० प० सेट् । शुम्भति । अशुम्भीत् । "प्रागप्राप्तनिशुम्भशाम्भवधनुः" इति वीरचरितम्.

शुम्भ, (पु०) शुम्भ्+अच् । एकप्रकारका दानव (दैत्य).

शुम्भमर्दिनी, (स्त्री०) शुम्भं मृद्गाति । मृद्+णिनि । शुम्भासुरमर्दिनी । दुर्गा । देवी.

शुर्, मारना-रोकना । दि० आ० सक० सेट् । शूर्यते । अशोरिष्ट.

शुल्क्, कहना । छोडना (देना) और वर्जन (रोकना) । चु० उ० स० सेट् । शुल्कयति-ते । अशुशुल्कत्-त.

शुल्क, (पु० न०) शुल्क्यते (अतिसृज्यते) कर्मणि घञ् । घाटआदिपर देनेलायक राजाका कर (मासूल) । वरपक्षीय (लडकेवालों) से कन्यापक्षीय (लडकीवालों) ने लेनेलायक धन । एकप्रकारका स्त्रीधन । लडकीका मोल । मासूल । दहेज (यौतक) । मोल । फीस.

शुल्कस्थान, (न०) ६ त० । मासूलकी जगह । चुंगीखाना । करचुकानेकी जगह.

शुल्ल, (न०) शुल्ल+अच् । पृ० । ताम्रा । ताम । और रज्जु । रस्सी.

शुल्व, (न०) शुल्व्+अच् । तामा और रस्सी । जलका निकट । आचार । यज्ञका कार्य.

शुश्रूषण, (न०) श्रु+सन्+ल्युट् । सेवा । नौकरी । "युच्" । वही अर्थ (स्त्री०).

शुश्रूषा, (स्त्री०) श्रु+सन्+अ । श्रवणेच्छा सुनेकी चाह । उपासना । सेवा.

शुष्, शोष-सूकना । दि० प० स० सकि० अनिट् । शुष्यति । अशुषत्.

शुष, (पु०) शुष्+क । गर्त । गढा । टोआ । और विल (सुराख).

शुषिर, (न०) शुष्+किरच् । छिद्र (सुराख) । और वंसीआदि वाजा । छेकवाला (सच्छिद्र) (त्रि०) । सूसा । और आग (पु०) । नदी (स्त्री०).

शुष्क, (त्रि०) शुष्+क्त । धूप आदिसे सूकगया । सूका.

शुष्कल, (न०) शुष्कं (शोषणं) लाति । ला+क । सूकाहुआ मांस.

शुष्कवैर, (न०) शुष्कं (फलशून्यं) वैरं । विना किसी फलके वैर (नाहासिल दुश्मनी) । उद्देशशून्य कलह । बिनमतलब झगडा । सूका वैर.

शुष्कव्रण, (पु०) कर्म० सूका घाव । किणरूप व्रण.

शुष्मन्, (न०) शुष्+मनिप् । तेज । और शौर्य (बहादुरी) । आग । और चित्रकवृक्ष (पु०).

शूक, (पु०)(न०) शो+ऊकक् । यव । जौं । भूक । शिखा.

शूकर, (पु०) "शू" इति अव्यक्तं शब्दं करोति । कृ+अच् । शूक+अस्ति अर्थे "र" वा । "शू २" करनेवाला । सूअर । "शूकरी".

शूद्र, (पु०) शुच्+रक्-पृ० चस्य दः दीर्घश्च । चतुर्थवर्ण । चौथा वर्ण । "शुचा द्रवति" पृ० । शोकसे भराहुआ । चलनेवाला । यदि क्षत्रिय होकर भी शोकहेतुक गतिवाला हो तो उसे शूद्रही कहना चाहिये" यह शारीरकभाष्य है । टाप् । शूद्रा (शूद्रजातिकी स्त्री) । "शूद्री" (शूद्रकी स्त्री).

शूद्रकर्मन्, (न०) शूद्रस्य शास्त्रविहितं कर्म । शूद्रके करनेयोग्य द्विज (ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य) की सेवा.

शूद्रावेदिन्, (पु०) शूद्रां विन्दति । विद्+णिनि । उप० स० । शूद्रजातिकी स्त्रीसे विवाह करनेहारा । "शूद्रावेदी पतत्यत्र" स्मृतिः.

शूना, (स्त्री०) श्वि+अधिकरणे क । प्राणिवधस्थान । जीवोंके मारनेकी जगह । कसाइओंका घर.

शून्य, (त्रि०) शूनायै हितं (रहस्यस्थानकत्वात्) यत् । अकेलीजगह (जहां प्राणिओंको सइसे मारसक्ते हैं) । आकाश । खाली । बिन्दुमात्र । नुक्ता । और अभाव (न होना) । जो पूरा नहीं । कम । और तुच्छ (त्रि०).

शून्यपदवी, (स्त्री०) शून्या पदवी । सूनी सडक । खाली पगडण्डी । आत्मा (जीव) का रास्ता.

शून्यमनस्-मनस्क, (त्रि०) शून्यं मनो यस्य । शून्य (सूने) मनवाला । खाली मनवाला.

शून्यवादिन्, (पु०) शून्यं (अभावमात्रं-सर्वकारणतया) वदति । वद्+णिनि । बौद्धविशेष । जो सबका कारण "अभाव" बोलता है (स्वीकार कर्ता है) । "पहिले कुछ न था और हो गया".

शूर, हिंस-कतलकरना-स्तम्भ-रोकना । दि० आ० सक० सेट् । शूर्यते । अशूरिष्ट.

शूर, विक्रम-बहादुरहोना । बल दिखलाना । चु० उभ० स० सेट् । शूरयति-ते.

शूर, (पु०) शूर+अच् । वीर (बहादुर) । विक्रमवाला (जोरवाला) । वसुदेवनामी यादव । सूर्य । सिंह (शेर) । सूअर । एक मच्छी.

शूरमानिन्, (पु०) आत्मानं शूरं मन्यते । अपने आपको शूर (बहादुर) मानता है । अहंकार । बलका मिथ्या अभिमान करनेवाला.

शूरसेन, (पु०) शूरा सेना यत्र, यस्य वा । जहां वा जिसकी सेना बहादुर है । एक देश । एक राजा.

शूर्प, मान-मापना । चु० उ० स० सेट । शूर्पयति-ते । अशुशूर्पत्-त.

शूर्प, (पु०) शूर्प्यते धान्यादिकं अनेन । शूर्प्+घञ् । जिस्से धानआदि मापाजाता है । चावलआदिको साफ करनेके लिये वांस आदिका वनाहुआ पात्र (वर्तन) । छाज । एकप्रकारका माप.

शूर्पकर्ण, (पु०) शूर्पं इव कर्णौ यस्य । जिसके कान छाजके समान हैं । गज । हाथी.

शूर्पणखा (खी), (स्त्री०) शूर्पं इव नखा अस्याः । णत्वं वा ङीप् । जिसके नाखून (नौं) दूसरे छाज हैं । रावणकी वहिन.

शूर्म, (पु०) सुष्ठु ऊर्मिः अस्ति यस्याः+वा शत्वम् । लोहेकी मूरत.

शूल, वीमार होना । बडी आवाज करना । पीडाहोना । भ्वा० प० अक० सेट् । शूलति । अशूलीत्.

शूल, (पु० न०) शूल्+क । एक बीमारी (रोग) । तेज लोहेका फाला । और त्रिशूल । चिह्न (निशान) । एक मुनि । और ९ वां योग (पु०).

शूलघातन, (न०) शूलं घातयति । हन्+णिच्+ल्यु । दर्द दूर कर्ता है । मण्डूर.

शूलद्विष्, (पु०) ६ त० । दर्दका वैरी । हींग.

शूलधन्वन्, (पु०) शूलं धनुः आयुधं अस्य+अनङ् समा० । त्रिशूल जिसका शस्त्र है । शिवजी.

शूलधर, (पु०) शूलं धारयति । धारि+अच् । त्रिशूलको पकडता है । शिवजी.

शूलधारिन्, (पु०) शूलं धरति । धृ+णिनि । शिवजी । दुर्गा (स्त्री०).

शूलपाणि, (पु०) शूलं पाणौ यस्य । जिसके हाथमें त्रिशूल है । शिवजी.

शूलाकृत, (त्रि०) शूलेन विद्ध्वा कृतं (पक्वम्) शूल+डाच्+कृ+क्त । लोहेआदिकी कीलसे वेधकर पकाहुआ मांस । कवाव.

शूलिक, (त्रि०) शूलं (पाकसाधनत्वेन) अस्ति अस्य+ठन् । सीखपर चढाके पकायाहुआ मांस । शूलाकृत.

शूलिन्, (पु०) शूलं अस्ति अस्य+इनि । शूलरोगवाला । त्रिशूल अस्त्र (औजार) रखनेहारा (त्रि०).

शूल्य, (त्रि०) शूले संस्कृतं+यत् । सूलपर पकायाहुआ मांस । शूलाकृत । कवाव.

शृ, हिंसन-मारना । क्र्या० प० स० सेट् । शृणाति । अशारीत् । शीर्णः.

शृ, (सृ) गाल, (पु०) असृजं लाति । ला+क-पृ० । लोहूको लेता है । सिआर । गीदड । एक दैत्य । वासुदेव । निर्दय । नीच.

शृगालिका, (स्त्री०) शृगालस्य भार्या । ङीप्-स्वार्थे कन् । शृगाल (गीदड) की औरत (गिदडी) । शृगालीव-स्वार्थे कन् । डरसे भागना.

शृङ्खल, (पु०) शृङ्गात् (प्रधानात्) स्खल्यते । जो ढिलकती जाती है । लोहेकी जंजीर । लौहमय निगड । पाँवका बंधन (जंजीर).

शृङ्ग, (न०) शृ+गन्-पृ० ह्रस्वः । पर्वतके ऊपरका हिस्सह । चोटी । प्राधान्य । वढाई । कामका उद्रेक (बढना) । पशुआदिका सींग । और एक प्रकारका वाजा.

शृङ्गमूल, (पु०) शृङ्गं इव मूलं अस्य । जिसकी जड सींगके समान है । शृङ्गाटक । सिंघाडा.

शृङ्गवत्, (पु०) शृङ्गं प्राशस्त्येन अस्ति अस्य+मतुप् । मस्य वः । अच्छी चोटीवाला । भरतवर्ष (हिन्दुस्थान) का एक सीमापर्वत.

शृङ्गवेर, (न०) शृङ्गं इव वेरं (अवयवः) यस्य । जिसका हिस्सह सींगके समान है । अदरक । सोंठ । रामचन्द्रके मित्र गुह चण्डालका पुर (शहर).

शृङ्गाट, (पु०) शृङ्गं (प्राधान्यं) अटति । अट्+अण् । उत्तरकीओर एक पर्वत । चतुष्पथ । चौराहा । शब्दालंकार.

शृङ्गार, (पु०) शृङ्गं (कामोद्रेकं) ऋच्छति अनेन । ऋ+अण् । बहुत काम बढाता है । नाटकमें एक रस । लौंग । सिंधूर । और चूरा । अदरक । जेवर.

शृङ्गारिन्, (पु०) शृङ्गारः जन्यत्वेन अस्ति अस्य+इनि । जिसके खानेसे बहुत काम बढता है । पूग । सुपारी । और हाथी (गज) । अच्छी पौशाक पहिनेहुए (सुवेश) (त्रि०).

शृङ्गिन्, (पु०) शृङ्गं अस्ति अस्य+इनि । सींगवाला । मेष (मेढा) । भारतवर्षका एक सीमापर्वत । पहाड । एक मुनि । और वृक्ष (द्रख्त) सींगवाला (त्रि०).

शृत, (त्रि०) शृ+क्त । पक्व । पकाहुआ.

शृध्, अपानशब्द-पद्द मारना । भ्वा० आ० लुङ्-लृट्-लृङ्में उभ० अक० सेट् । क्त्वा वेट् । शर्धते । अशृधत् । शर्त्स्यति । शर्धिष्यते.

शृध्, छेदन (काटना) भ्वा० उभ० अक० सेट् । क्त्वावेट् । शर्धति-ते.

शेखर, (पु०) शिखि-जाना+अरण् । पृ० । शिखा । चोटी । मुकुटके ऊपरका फूल । सुहांजनेकी जड । ताज.

शेफ, (पु० न०) शी+फन् । शिश्न । लिङ्ग । शी+असिफुक्च.

शेफालिका, (स्त्री०) शेरते इति शेफाः अलयो यत्र+कप् । जहां भौंरे सोरहे हैं । फूलदार वृक्ष । सुहांजना जूफा.

शेमुखी(षी), (स्त्री०) शी+विच् । शेः (मोहः) तं मुष्णाति मुष्+क । जो मोह (मैं- मेरा) को चुरा लेती है । बुद्धि अकल.

शेव, (पु०) शी+वन् । पुरुषका चिह्न । शिश्न । लिंग.

शेवधि, (पु०) शेः (धनादिमोहः) तस्य अवधिः । दौलतके मोहकी सीमा । पद्मआदि नौ प्रकारका निधि (खजाना).

शेवाल, (न०) शेते+विच् । वलते-घञ् । शेवाल । सेवाल । शिवाल । पानीके ऊपर सावा २ होता है.

शेष, (पु०) शिष्+अच् । अनन्त । सांपोंका राजा । एक सांप । बाकी.

शेषशायिन्, (पु०) (शेषे शेते) शेषनागपर शयन- (सोने) वाला । विष्णु.

शेषा, (स्त्री०) शिष्+घञ् । निर्माल्य माल्यआदि देवतापर चढीहुई मालाआदि । "शेषामिव भर्तुराज्ञां" इति कुमारः.

शेषान्नम्, (न०) शेषं अन्नम् । बचा हुआ अन्न.

शैक्ष, (पु०) शिक्षां (तन्नामकग्रन्थं) अधीते वेत्ति वा+अण् । शिक्षा (स्वरका विषय) ग्रन्थको पढता वा जानता है । "कन्" । शिक्षक यही अर्थ.

शैखरिक, (पु०) शिखरे भवः+ठक् । चोटीपर हुआ । सबका सिरा । अपामार्ग.

शैत्य, (न०) शीतस्य भावः+ष्यञ् । शीतलता । सर्दी । ठण्डाई । ठण्डापन.

शैथिल्य, (न०) शिथिलस्य भावः+ष्यञ् । ढीलापन । (अदृढसंयोग).

शैनेय, (पु०) शिनेर्गोत्रापत्यं+ढक् । सात्यकिनाम यादव.

शैल, (न०) शिलायां भवः+अण् । पत्थरोंमें उपजा गन्धद्रव्य । "शिलाः सन्ति अस्य+अण्" तिलोंवाला । पहाड (पु०).

शैलज, (न०) शैले (पर्वते) जायते । जन्+ड । पर्वतमें उत्पन्न होता है । एक प्रकारका गंधद्रव्य । गजपिप्पली और दुर्गा (स्त्री०).

शैलधर, (पु०) शैलं (गोवर्धनपर्वतं) धरति । धृ+अच् । गोवर्धन पहाडको उठाता है । श्रीकृष्णदेवजी.

शैलभित्ति, (पु०) शैलं भिनत्ति । भिद्+क्तिच् । पत्थरफाडनेका औजार.

शैलराज, (पु०) शैलानां राजा । टच् समा० । पहाडोंका राजा । हिमालय.

शैलशिबिर, (न०) शैलानां शिबिरं इव । पहाडोंकी मानों छावनी है । समुद्र । समुंदर.

शैलसुता, (स्त्री०) ६ त० । पहाडकी लडकी । पार्वती.

शैलाग्र, (न०) शैलस्य अग्रम् । पहाडकी चोटी.

शैलाट, (पु०) शैलं अटति । अट्+अण् । पहाडमें घूमता है । शेर । भील । सिंह । किरात.

शैलालिन, (पु०) शिलालिना मुनिना प्रोक्तं (नटसूत्रं) अधीयते+णिनि । शिलालिमुनिसे कहेहुए नटोंके नियमोंको पढते हैं । शैलूष । नट.

शैली, (स्त्री०) शीलं एव+स्वार्थे अण् ङीप् । चारित्र । नियम । रीति.

शैलूष, (पु०) शिलूषस्य अपत्यं+अण् । नट । बिल्वका द्रख्त । धूर्त । तालदेनेहारा.

शैव, (न०) शिवं अधिकृत्य कृतो ग्रन्थः+अण् । वेदव्यासका बनायाहुआ शिवजीके प्रभावको वर्णन करनेहारा महापुराणविशेष । "शिवो देवता अस्य+अण्" । शिवजीका भक्त (त्रि०) । "तस्येदं-अण्" शिवका (त्रि०).

शैवलिनी, (स्त्री०) शैवलानि सन्ति अस्याः+इनि । सेवालवाली नदी । दर्या.

शैवाल, (न०) शी+वालन्+स्वार्थे अण् । सेवाल । पानीमें उपजा पदार्थविशेष । "कृष्णदेवका एक घोडा" । घोडा.

शैव्य, (पु०) शिवेर्गोत्रापत्यं+यञ् । शिविके गोत्रमें उपजा एक राजा.

शैशव, (न०) शिशोर्भावः+अण् । वचपन । शिशुपाल । बालअवस्था.

शैशिर, (पु०) शिशिरं प्रियं यस्य+अण् । कालीचिडिआ । सर्दीमें खुश रहती है । "शिशिरे भवः"+अण् । शीतकालमें हुआ (त्रि०).

शो, तीक्ष्णीकरण (तेजकरना) । दि० प० स० अनिट् । श्यति । अशात्-अशासीत्.

शोक, (पु०) शुच्+घञ् । पियारेके विरहसे हुआ दुःखरूप एकप्रकारका चित्तका व्यापार । अफ्सोस.

शोकारि, (पु०) ६ त० । शोकका शत्रु । कदम्वका वृक्ष । कदम्वका द्रख्त.

शोकाविष्ट, उपहत । विह्वल, (त्रि०) शोकेन आविष्टः । शोकसे भराहुआ । शोकमें पडा हुआ.

शोचिष्केश, (पु०) शोचिः केश इव यस्य । जिसकी चमक (तेज) बालोंके समान है । वह्नि (आग) । चित्रकवृक्ष.

शोचिस्, (न०) शुच्+इसि । प्रभा । प्रकाश । चमक । रोचिः.

शोच्य, (त्रि०) शुच्+यत् । क्षुद्र । कमीना । छोटा । दयाके लायक । अफ्सोसके लायक । वेचारा । गरीव.

शोण्, गति (जाना) । सक० । वर्ण-रंगना । अक० भ्वा० प० सेट् । शोणति-अशोणीत्.

शोण, (न०) शोण्+अच् । सिन्दूर (सिंधूर) । और रुधिर (लोहु) । लालगन्ना । मंगलग्रह । आग (पु०).

शोणित, (न०) शोण्+इतच् । (रुधिर । लोहु).

शोणितपुर, (न०) शोणितं इव रक्तं पुरम् । लोहूकी नाई शहर । वाणासुरका नगर (मुल्क).

शोणोपल, (पु०) कर्म० । लालपत्थर । माणिक्य (माणक) मणि.

शोथ, (पु०) शु+थन् । हाथ पाँव आदिको फुलादेनेहारा सोज.

शोथघ्नी, (स्त्री०) शोथं हन्ति । हन्+क । शालपर्णी । सोज दूर करनेवाली दवाई (त्रि०).

शोधन, (न०) शुध्+णिच्+ल्युट् । शौच । सफाई । विष्ठा (गूंह) । मलआदि छोडना । दोष हटाना । और कर्जा उतारना । "शुध्यति अनया+करणे ल्युट् ङीप्" सम्मार्जनी (वुहारी) (स्त्री०).

शोधित, (त्रि०) शुध्+णिच्+क्त । मलआदि हटाकर साफ कियाहुआ । मार्जित । साफ कियागया.

शोफ, (पु०) शु+फन् । शोथ । सोज.

शोभन, (न०) शोभते । शुभ्+ल्यु । कमलका फूल । पांचवां योग (पु०) । शोभावाला (त्रि०).

शोभा, (स्त्री०) शुभ+अ । दीप्ति । चमक । प्रकाश.

शोभाञ्जन, (पु०) शोभार्थं अज्यते । अञ्जु+ल्युट् । सुहांजनेका द्रख्त.

शोष, (पु०) शुष्+घञ् । हवा आदिसे पानीको दूरकरके कठिन करना । सुकाना । "सुका देता है" । मिर्गीकी बीमारी.

शोषण, (न०) शुष्+ल्युट् । चूसकर रस पीना । और सुकाना । कामदेव । एक तीर.

शौक, (न०) शुकानां समूहः+अण् । शुकसमुदाय । बहुतसे तोते.

शौकर, (न०) शूकरस्य इदं+अण् । एक तीर्थ.

शौक्तिकेय, (न०) शुक्तिकायां भवम् । सीपीमें+ढक् । मुक्ता । मोती.

शौक्ल्य, (पु०) शुक्लस्य भावः+ष्यञ् । श्वेतता । चिटाई । चिट्टारंग.

शौच, (न०) शुचेर्भावः+अण् । शुद्धि (सफाई) । पवित्रता । पाकीजगी "न खानेलायक चीजको न खाना, निन्दितोंके साथ संग न करना और अपने धर्ममें रहना शौच कहलाता है".

शौटीर, (पु०) शौट् (अहंकारकरना)+ईरन् । त्यागी । दानी । और वहादुर । अहंकारवाला (त्रि०).

शौड्, गर्व-मगरूरहोना । भ्वा० प० सक० केट् । शौडति । अशौडीत्.

शौण्ड, (त्रि०) शुण्डायां (सुरायां) अभिरतः+अच् । शरावमें लगाहुआ । मत्त (मतवारा । और दक्ष (चतुर).

शौण्डिक, (पु०) शुण्डा (सुरा) पण्यं अस्य+ठक् । शराववेचनेहारा । कलालकी एक जाति.

शौण्डीर, (पु०) शुण्डा (गर्वः) अस्ति अस्य+ईरन् । स्वार्थेऽण् । कलाल । अहंकारवाला (त्रि०).

शौद्र, (पु०) शूद्रायां भवः+अण् । शूद्रासे उत्पन्नहुआ बेटा.

शौद्धोदनि, (पु०) शुद्धोदनस्य अपत्यं+इञ् । बौद्धमुनिविशेष । शुद्धोदनकी सन्तान.

शौनक, (पु०) शुनकस्य अपत्यं+अण् । शुनककी सन्तान । एक मुनि । "ऋषयः शौनकादयः" भा. पु०.

शौनिक, (पु०) शूना (प्राणिवधस्थानं) प्रयोजनं अस्य+ठक् । जीवोंके मारनेका कामकरनेवाला । मांस बेचनेहारा । कसाई । मृगयाशील । शिकारी.

शौभिक, (त्रि०) शोभा शिल्पं अस्य+ठक् । इन्द्रजालिआ । मदारी.

शौरि, (पु०) शूरस्य गोत्रापत्यम् । यादवविशेष । वसुदेव वा सूर्यका पुत्र । विष्णु । श्रीकृष्ण । और शनैश्चर.

शौर्य, (न०) सूरस्य भावः+ष्यञ् । बहादुरी । वीर्य । और शक्ति.

शौल्किक, (पु०) शुल्के अधिकृतः+ठक् । करलेनेका काम करनेहारा । महसूलिआ । तहसीलदार.

शौवस्तिक, (त्रि०) श्वः (परदिने) भवः । श्वस्+ठक् तुट्च । आनेवाले दिनमें रहनेहारा पदार्थ । कलका.

शौष्कल, (पु०) शुष्कलं (शुष्कमांसं) पण्यं अस्य+अण् । सूके मांसका सौदाकरनेवाला । सूके मांसको वेचनेहारा । "सूके मांसको खानेहारा" (त्रि०).

श्चुत्, क्षरण (वहना) भ्वा० पर० अक० सेट् । श्चोतति । अश्चुतत्-अश्चोतीत्.

श्च्युत्, क्षरण (वहना) भ्वा० पर० अक० सींचना-सक० सेट् । श्च्योतति । अश्च्युतत्-अश्च्योतीत्.

श्च्योत, (पु०) समन्तात् सेचन । चारोंओर सींचना । श्च्युत्+घञ्.

श्मशान, (न०) श्मानः (शवाः) शेरते अत्र । शी+आनच् । "श्मन् शब्दसे शव-शान (भी होता है)" शव (मुर्दे) के जलानेका स्थान । मसान । मुर्दा जलानेकी जगह.

श्मशानवासिन्, (पु०) श्मशाने वसति । वस्+णिनि । मसानमें रहता है । महादेव । और बटुक भैरव । मसानिआं (चाण्डाल) आदि (त्रि०).

श्मश्रु, (न०) श्म (मुंमुखं) श्रूयते (लक्ष्यते) अनेन । श्रु+डु । पुरुषका मुं जिस्से पहिचाना जाता है । दाढी.

श्मश्रुमुखी, (स्त्री०) श्मश्रु मुखे यस्याः । जिसके मुखपर दाढी है । ङीप् । पुरुषके लक्षणवाली पोटायुवती.

श्मश्रुल, (पु०) श्मश्रु विद्यते अस्य+लच् । दाढीवाला । पाडिया.

श्मश्रुवर्धक, (पु०) श्मश्रु वर्धयति (छिनत्ति) । वृध्+ण्वुल् । दाढी काटता है । नापित । क्षुरकर्मकारक । उस्तरेसे कामकरनेहारा । नाई.

श्यान, (त्रि०) श्यै+क्त । बहुत सिकुडगया । गाढा होगया । सूकगया । "पथश्चाश्यानकर्दमान्" रघुः.

श्याम, (पु०) श्यै+मक । वृद्धदारकवृक्ष । प्रयागके तीर्थका वोड (वट) । नीला । काला.

श्यामक, (पु०) श्यामेव+इवार्थे कन् । एकप्रकारका धान.

श्यामकण्ठ, (पु०) श्यामः कण्ठः अस्य । जिसका गला श्याम है । मयूर (मोर) । शिव । नीलकण्ठ । एकप्रकारका पक्षी.

श्यामकर्ण, (पु०) श्यामः कर्णः यस्य । काले कानवाला । अश्वमेध (यज्ञ)के उपयोगी (काममें आनेवाला) घोडा.

श्यामल, (पु०) श्यामवर्णं लाति । ला+क । पिप्पल । काले रंगवाला (त्रि०).

श्यामलता, (स्त्री०) कर्म० । एक वेल । कालापन । कालक । कालारंग । हरारंग.

श्यामशबलौ, (पु०) द्विवचन (श्यामौ शबलौ च) श्याम (काले) और शबल (विचित्र-डब्बखडब्बा) । यमराजके द्वारके रक्षक (रखवारे) दो कुत्ते । चार आंखवाले यमके कुत्ते.

श्यामसुन्दर, (पु०) श्यामः अपि सुन्दरः । काला होकर भी सुन्दर है । श्रीकृष्ण । "श्यामसुन्दर ! ते दासः" इति भागवतम्.

श्यामा, (स्त्री०) श्यै+मन् । एकऔषध (दवाई) । वह स्त्री जो अभी प्रसूत नहिंहूई । यमुना । रात्रि (रात) । गिलो । गुग्गल । नील । हल्दी । पिप्पल । मध । तुलसी । छाया । शिंशपा (टालीका दरख्त) । गौ । एक पक्षी । एकप्रकारकी औरत (शीतकालमें जिसके अंग गरम हो और गरमीमें स्वभावहीसे शीतल हों, रंग सोनेके समान हो).

श्यामाङ्ग, (पु०) श्यामं (हरिद्वर्णं) अङ्गं अस्य । जिसका शरीर हरेरंगका हो । बुधग्रह । कालेशरीरवाला (त्रि०) स्त्रियां ङीप्.

श्याल, (पु०) श्यै+कालन् । पत्नीभ्राता । स्त्रीका भाई । साला । "श्यालिक" भी.

श्याव, (पु०) श्यै+वन् । कालापीला रंग । उसवाला । (त्रि०).

श्यावदत्, (त्रि०) श्यावो दन्तो यस्य । दत्रादेशः । कालेरंगके दांतवाला.

श्यावदन्त, (पु०) कर्म० । स्वभावहीसे जिसके काले दांत हैं । ६ त० । कप् । कालेदांतवाला (त्रि०) । "सुरापः श्यावदन्तकः" स्मृतिः.

श्येत, (पु०) श्यै+इतच् । शुक्लवर्ण (चिट्टा-सफेद रंग) । उसवाला (त्रि०) । स्त्रियां ङीप् । "त" को "न" होता है । श्येनी.

श्येन, (पु०) श्यै+इनन् । एकप्रकारका पक्षी (बाज) । सफेद रंग । उसवाला (त्रि०).

श्यै, गति (जाना) । भ्वा० आ० सक० अनिट् । श्यायते । अश्यास्त.

श्यैनम्पाता, (स्त्री०) श्येनस्य पातो यत्र+अण् । मुम् च । जहां बाज गिराया जाता है । मृगया । शिकार । अहेर.

श्रण्, दान (देना) । भ्वा० प० स० सेट् । श्रणति । अश्राणीत्-अश्रणीत्.

श्रण्, देना । चु० उ० सक० सेट् । श्राणयति-ते । अशिश्रणत्-त.

श्रत्, (अव्य०) श्री+डति । श्रद्धा । विश्वास । इमान । गुरु और वेदान्तपर विश्वास.

श्रथ्, बांधना । छुडाना और वध (मारना) । चु० उ० पक्षे भ्वा० पर० सक० सेट् । श्राथयति-ते । श्रथति । (यत्न और दौर्बल्य).

श्रथन, (न०) श्रथ्+ल्युट् । वध (मारना) । कोशिश करना (यत्न) और प्रतिहर्ष (खुशहोना).

श्रद्धा, (स्त्री०) श्रत्+धा+अङ् । आदर । गुरु और वेदान्तके वचनोंपर विश्वास । स्पृहा (इच्छा) । सफाई (शुद्धि) । धर्मके काममें प्रत्यय (विश्वास-निश्चय) । इमान । यकीन.

श्रद्धालु, (स्त्री०) श्रद्धा+आलुच् । स्पृहावती । चाहवाली । श्रद्धावाला (त्रि०).

श्रन्थ्, ग्रन्थन (गुथना) । और वध (मारना) । चु० उ० पक्षे० भ्वा० पर० सक० सेट् । श्रन्थयति-ते । श्रन्थति । अश्रन्थीत्.

श्रन्थ्, मोचन (छुडाना) । और वार २ खुशहोना । क्र्या० प० सक० सेट् । श्रथ्नाति । अश्रन्थीत्.

श्रन्थन, (न०) श्रन्थ्+ल्युट् । ग्रन्थन रचना । गुथना.

श्रपित, (त्रि०) श्रा+क्त-णिच् । पुक्-ह्रस्वश्च । पक्व । पकाहुआ.

श्रम्, तपस्या करना-आयास (तक्लीफ उठाना) । अक० भ्वा० पर० सेट् । क्त्वावेट् । श्राम्यति । अश्रमत् । अश्रमीत् । श्रान्त्वा । श्रमित्वा.

श्रम, (पु०) श्रम्+घञ्-न वृद्धिः । तपस्या । खेद । मिहनन । आयास । तक्लीफ । शास्त्रका । अभ्यास.

श्रमण, (पु०) श्रम्+युच् । एकप्रकारका यति (संन्यासी) । भिक्षापर जीनेवाला (त्रि०) । जटामांसी । सुन्दर स्त्री (स्त्री०).

श्रमिन्, (त्रि०) श्रम्+इनि । श्रमयुक्त । मेहनती । श्रमवाला.

श्रम्भ्, प्रमाद-भूलना । भ्वा० आ० अक० सेट् । श्रम्भते.

श्रय, (पु०) श्रि+अच् । आश्रय । आसरा । सहारा । "ल्युट्" (न०) वही अर्थ.

श्रव, (पु०) श्रृणोति अनेन । श्रु+अप् । जिस्से सुनता है । कान (कर्ण) । ख्याति । मशहूरी.

श्रवण, (न०) श्रृणोति अनेन । श्रु+ल्युट् । कान (कर्ण) । शब्दको ग्रहणकरनेहारा इन्द्रिय । "भावे ल्युट्" श्रुति (सुन्ना) । बाईसवां नक्षत्र (तारा) (पु० स्त्री०) । नपुंसक भी होता है.

श्रवणेन्द्रियम्, (न०) श्रवणस्य इन्द्रियम् । सुन्नेका इन्द्रिय । कान । श्रोत्र.

श्रवणद्वादशी, (स्त्री०) श्रवणेन युक्ता द्वादशी । श्रवणनक्षत्रवाली द्वादशी । भादोंके शुक्लपक्षकी द्वादशी.

श्रवणगोचर, (त्रि०) श्रवणस्य गोचरः । श्रवणका विषय । सुन्नेमें आगया.

श्रविष्ठा, (स्त्री०) । श्रूयते । श्रु+अप् । श्रवः (प्रसिद्धिः) अस्ति अस्याः+मतुप् । अतिशयेन श्रववती+इष्ठन् मतुप्का लोप । बहुत मशहूर । धनिष्ठा तारा.

श्रवस्, (न०) श्रूयते अनेन । श्रु+असि । जिस्से सुनाजाता है । कर्ण । कान । कर्मणि असि । कीर्ति । यश.

श्रा, पाक-पकाना । अदा० प० स० अनिट् । श्राति । अश्रासीत् । श्रपयति.

श्राण, (त्रि०) श्रा+क्त । पक्व । पकाहुआ । यवागू (लप्सी-खिचडी) (स्त्री०).

श्राद्ध, (न०) श्रद्धा (हेतुत्वेन) अस्ति अस्य+अण् । श्रद्धासे उपजता है । पितापितामहादिकोंको श्रद्धासे देनेलायक द्रव्य । "अस्ति अर्थे+अण्" श्रद्धावाला (त्रि०).

श्राद्धदेव, (पु०) श्राद्धोद्देश्यानां पितॄणां देवः । शाक० । श्राद्धमें बुलायेजानेहारे पितरोंका देवता । यमराज । एक मुनि.

श्राद्धदेवता, (स्त्री०) श्राद्धे देवता (त्यक्तद्रव्यस्योद्देश्या) । श्राद्धमें दियेहुये द्रव्यकी देवता । पितर । "पितरः श्राद्धदेवताः" स्मृतिः.

श्राद्धिक, (त्रि०) श्राद्धे देयं श्राद्धं । तद्द्रव्यं भक्ष्यत्वेन अस्ति अस्य वा+ठन् । श्राद्धमें देनेलायक पदार्थको खानेहारा.

श्राद्धिक, (त्रि०) श्राद्धं भक्ष्यत्वेन अस्ति अस्य+इनि । श्राद्धमें दानकियेहुएको खानेहारा.

श्रान्त, (त्रि०) श्रम्+क्त । श्रमवाला । मेहनती । शान्त । जितेन्द्रिय । थकाहुआ.

श्रान्तसंवाहनम्, (न०) श्रान्तस्य संवाहनम् । थके हुएको आराम पहुंचाना (मुट्ठीचापी करना).

श्रावण, (पु०) श्रवणेन युक्ता पौर्णमासी श्रावणी सास्मिन् मासे+अण् । जिस महीनेमें श्रवणनक्षत्रवाली पूर्णिमा हो । सावनका महीना । "कानसे उपजा+अण्" कर्णेन्द्रियजन्य प्रत्यक्षविशेष.

श्रावन्ती, श्रु+झिच् । पृ० ङीष् । धर्मपत्तननाम एक नगरी.

श्रि, सेवा करना । भ्वा० उभ० सक० सेट् । श्रयति-ते । अशिश्रियत्-त.

श्रित, (त्रि०) श्रि+क्त । सेवाकियाहुआ । आसरादियागया । आश्रित.

श्री, पाक (पकाना) क्र्या० उ० स० अनिट् । श्रीणाति श्रीणीते । अश्रैषीत्.

श्री, (स्त्री०) श्रि+क्विप्-नि० । लक्ष्मी । लौंग । शोभा । वाणी । वेशवनाना । सरलवृक्ष । धर्म, अर्थ, काम और मोक्षरूप सम्पत्ति । बुद्धि । विभूति । प्रभा । कीर्ति । वृद्धि । सिद्धि । देवता आदिके नामके पहिले उपाधि.

श्रीऋषभदेव, (पु०) ऋष्-जाना+अभक् दिव्+अच् । सम्पूर्ण विद्याओंके पार जानेवाला एक मुनि । जैनोंका पहिला तीर्थंकर अर्थात् (अवतार).

श्रीअजितनाथ, (पु०) जि+क्त (न० त०) स चासौ नाथः । नाथ्+अच् (अ) । किसीसेसी न जीता जा सकनेहारा स्वामी (मालिक) । जैनोंका दुसरा तीर्थंकर (अवतार).

श्रीसंभवनाथ, (पु०) सम्+भू+अप् (अ) तस्य नाथः । सृष्टिमात्रपर आज्ञा चलानेवाला । जैनोंका तीसरा तीर्थंकर अर्थात् (अवतार).

श्रीअभिनन्दन, (पु०) अभि+नन्द+अन । अभिनन्दयति (समीपवर्तिनम्) । अपने भक्तोंको सर्वथा शोकरहित करनेवाला । जैनोंका चौथा तीर्थंकर (अवतार).

श्रीसुमतिनाथ, (पु०) सु+मन्+क्तिन् (ति) । सुष्ठु मतिः यस्य (ब० व्री०) तेषां नाथः । अच्छी (निर्मल) बुद्धिवालोंकी रक्षा करनेवाला । जैनोंका पांचवां तीर्थंकर अर्थात् (अवतार).

श्रीपद्मप्रभु, (पु०) पद्+मन्-प्र+भू-डु (ऊ) । सम्पूर्ण धन अथवा शरीरकी सब नाडिओंपर आज्ञा चलानेवाला योगिराज । जैनोंका छठा तीर्थंकर अर्थात् (अवतार).

श्रीसुपार्श्वनाथ, (पु०) सु+स्पृश्+श्वण-पृ० । सचासौ नाथश्च । बहुत पास रहनेहारा नाथ (स्वामी) । अन्तरात्मा । जैनोंका सातवां तीर्थंकर (अवतार).

श्रीचन्द्रप्रभु, (पु०) चदि+रक् । सचासौ नाथः । सम्पूर्ण जगत्को आनन्द उपजानेहारा स्वामी । सुन्दरनाथ । जैनोंका आठवां तीर्थंकर अर्थात् (अवतार) विशेष.

श्रीसुविधिनाथ, (पु०) सु+वि+धा+कि । तेषां नाथः । सम्पूर्ण नियमो (कानूनों) पर आज्ञा चलानेवाला । जैनोंका नवम (नावां) तीर्थंकर (अवतार).

श्रीशीतलनाथ, (पु०) श्यै+क्त=शीत+ला+क । शीतं लाति । शीतं अस्ति अस्य+लच् वा । शान्त स्वभाववालोंका एक मात्र आश्रय । जैनोंका दसवां तीर्थंकर अर्थात् (अवतार).

श्रीश्रेयांसनाथ, (पु०) अतिशयेन प्रशस्यः । ईयसुः । श्रादेशः । श्रेयान्-स चासौ नाथः । विवेक, क्षमा, दया आदि गुणोंसे पूर्ण स्वामी । जैनिओंका ग्यारवां तीर्थंकर (अवतार).

श्रीवासुपूज्य, (पु०) वस्+उण-सचासौ पूज्यः । पूज्+यत् । सबसे अधिक पूजा करनेयोग्य विष्णु । नारायण । जैनोंका बारवां तीर्थंकर (अवतार).

श्रीविमलनाथ, (पु०) विगतो मलो यस्मात् (त्रि०) (पं० ब० व्री०) । स चासौ नाथः । निर्मलनाथ । दुर्मति आदि मलसे रहित स्वामी । जिसके सम्पूर्ण स्वभाव निर्मल हैं । जैनमतमें तेरहवां तीर्थंकर अर्थात् (अवतार).

श्रीअनन्तनाथ, (पु०) नास्ति अन्तः गुणनां यस्य । (ब० व्री०) । स चासौ नाथः । जिसके गुणोंका पार नहीं । नारायण । असंख्यात अलौकिक गुणोंवाला स्वामी । जैनिओंका चौदवां (अवतार).

श्रीधर्मनाथ, (पु०) धृ+मन् (पु० न०) । जो संसाररूप नदीमें वहे जातेको पकडता है । स चासौ नाथः । विषयप्रवाहमें वहे जाते जीवोंको सदुपदेशसे उद्धार करनेवाला स्वामी । जैनमतमें पन्द्रहवां तीर्थंकर (अवतार).

श्रीशान्तिनाथ, (पु०) शम्+क्तिन् (ति) तस्याः नाथः । शान्तिपर आज्ञा चलानेवाला । पूर्ण शान्तस्वभाववाला स्वामी । जैनिओंका सोलवां तीर्थंकर (अवतार).

श्रीकुन्थुनाथ, (पु०) कुथ्+उण् । स चासौ नाथः । कुशाके आसनपर बैठनेवाला स्वामी । समाधिके लिये कंवल वा कुशाके आसनकी प्रशंसा करनेवाला । जैनिओंका सतारवां वा सत्रहवां तीर्थंकर (अवतार).

श्रीअर्हननाथ, (पु०) अर्ह-भावे ल्युट् (अन) । स चासौ नाथः । पूजाका स्वामी । बडी पूजाका पात्र । जैनिओंका अठारवां तीर्थंकर (अवतार).

श्रीमल्लीनाथ, (पु०) मल्+ईन् वा ङीप् । स चासौ नाथः । हंसके समान सारको ग्रहण करनेहारा । तीव्रवैराग्य धारण करके स्वरूपज्ञानमें मतवारा । जैनिओंका उन्नीसवां तीर्थंकर अर्थात् (अवतार) विशेष.

श्रीमुनिसुव्रत, (पु०) मन्+इन्+पृ० उत्वम् । स चासौ-सुष्ठु व्रतं यस्य । अपने नियमपर दृढ रहनेहारा सन्त । वैराग्यादि दृढव्रतको धारण करनेवाला भक्त । जैनिओंका वीसवां तीर्थंकर अर्थात् (अवतार) विशेष.

श्रीनेमीनाथ, (पु०) नी+मि । जिनदेवता तस्य नाथः । देवताओंपर आज्ञा चलानेवाला । जैनिओंका इक्कीसवां तीर्थंकर (अवतार) विशेष.

श्रीअरिष्टनेमी, (पु०) रिष्-मारना+कर्तरि क्त (त) । न० त० । सम्पूर्ण दुःखजालसे निर्मुक्त करनेवाला जिनदेवता । जैनोंका बाईसवां तीर्थंकर (अवतार).

श्रीपार्श्वनाथ, (पु०) स्पृश्+श्वन्-पृ० । तस्य (चक्रस्य) नाथः । ष० त० । संसाररूप चक्रका स्वामी । सारे संसारको वशमें रखनेवाला । जैनमतमें तेईसवां तीर्थंकर (अवतार).

श्रीमहावीरस्वामी, (पु०) महत्सु वीरः । ष० त० । विशिष्टान् ईरयति । सचासौ स्वामी । सबमें बड़ा बहादुर । विवेक वैराग्यादि सद्गुणोंमें सबसे श्रेष्ठ । जिनमतावलम्बिओंका चौवीसवां तीर्थंकर अर्थात् चौवीसवां (अवतार) । जो सर्वथा इन्द्रियोंको वश करलेनेसे स्वामी कहलाया.

श्रीकण्ठ, (पु०) श्रीः (शोभा) कण्ठे अस्य । जिसके गलेमें शोभा है । शिवजी । हस्तिनापुरके उत्तरपश्चिमकी ओर कुरुजाङ्गलदेश.

श्रीकर, (न०) श्रियं करोति । कृ+अच् । लालकमलका फूल । विष्णु । दाय (विरसा) के विषयमें ग्रंथ बनानेहारा एक पण्डित । शोभाकारक (सजानेहारा) (त्रि०).

श्रीकान्त, (पु०) ६ त० । विष्णु । "श्रीनाथ" "श्रीपति" आदि भी.

श्रीखण्ड, (न०) श्रियः खण्ड इव यत्र । जहां शोभाका टुकडा है । चंदन.

श्रीगर्भ, (पु०) श्रीः गर्भे यस्य । जिसके गर्भमें शोभा है । विष्णु । खड्ग । तरवार.

श्रीधन, (पु०) श्रिया बुद्ध्या धनः । बहुतबुद्धिवाला । एक बुद्ध । दही (न०).

श्रीचक्र, (न०) श्रियाः चक्रं (यन्त्रभेदः) । त्रिपुरासुन्दरीकी पूजाका अङ्ग । एक प्रकारका तन्त्रसम्बन्धी चक्र (यन्त्र).

श्रीज, (पु०) श्रियः जायते । जन्+ड । लक्ष्मीसे उपजता है । कामदेव.

श्रीद, (पु०) श्रियं (धनं) ददाति । धन देता है । दा+क । कुबेर । धनदेनेहारा (त्रि०).

श्रीधर, (पु०) श्रियं धरति । धृ+अच् । विष्णु । शालग्रामकी एक मूर्ति (न०).

श्रीनिकेतन, (पु०) श्रियं निकेतयति (नितरां वासयति) । नि+कित्+णिच्+ल्यु । लक्ष्मी बहुत निवास देता है । विष्णु । ६ त० । लक्ष्मीका घर (न०).

श्रीपथ, (पु०) श्रीयुक्तः पन्थाः । शोभावाला रास्ता । राजपथ । वडी सडक.

श्रीपर्ण, (न०) श्रीः पर्णे अस्य । जिसके पत्तेमें लक्ष्मी है । पद्म । कमलफूल.

श्रीपुत्र, (पु०) ६ त० । कामदेव । लक्ष्मीका पुत्र (भाई) साथही उपजनेसे । उच्चैःश्रवा घोडा.

श्रीपुष्प, (न०) श्रीयुक्तं पुष्पम् । लवङ्ग (लौंग).

श्रीफल, (पु०) श्रीयुक्तं फलं अस्य । बिल्वका वृक्ष । राजादनी.

श्रीभागवत, (न०) श्रीयुक्तं भागवतम् । अठारह पुराणोंमेंसे बारह स्कन्धवाला अठारह हजार श्लोकमें व्यासका रचाहुआ पुराण.

श्रीमत्, (पु०) श्रीः अस्ति अस्य+मतुप् । शोभावाला । तिलकवृक्ष । पीपलका द्रख्त । विष्णु । शिव । "शोभावाला" (त्रि०) । स्त्रियां ङीप् । राधिका.

श्रीमूर्ति, (स्त्री०) श्रीपूर्वककथनयोग्या मूर्तिः । श्रीके साथ कहनेलायक शकल । देवताकी प्रतिमा (मूरत).

श्रीरङ्गपत्तन, (न०) श्रिया रङ्गस्य पत्तनं इव । मानों शोभाके खेलनेका नगर है । दक्षिणमें एक देश.

श्रीराम, (पु०) श्रीशब्दयुक्तो रामः । श्रीशब्दवाला राम । दशरथका पुत्र । एक राजा । श्रीरामचन्द्रावतार.

श्रील, (त्रि०) श्री+अस्ति अर्थे लच् । शोभावाला । सम्पदावाला । दौलतमन्द.

श्रीलता, (स्त्री०) श्रीयुक्ता लता । महाज्योतिष्मती लता । एक बेल.

श्रीवत्स, (पु०) वदति महत्त्वं । वद्+स । श्रीयुक्तः वत्सः । विष्णुका कौस्तुभमणि । छातीपर सफेद रंगकी दहिनीओर मुडी लोमावली (रोआंकी कतार) । जैनोंका झण्डा । एक राजाका खास घर.

श्रीवराह, (पु०) श्रिया युक्तो वराहः । विष्णुके दस अवतारोंमेंसे एक.

श्रीवास, (पु०) श्रियै वासः (सौरभं) अस्य । जिसकी सुगन्धि लक्ष्मीके लिये है । सरलवृक्षका रस । राल.

श्रीविद्या, (स्त्री०) श्रियै (त्रिवर्गाय) विद्या । धर्म, अर्थ और कामके लिये एक विद्या । त्रिपुरसुन्दरी.

श्रीश, (पु०) ६ त० । लक्ष्मीका स्वामी । विष्णु । नारायण.

श्रु, श्रवण (सुन्ना) स्वा० पर० सक० अनिट् । शृणोति । अश्रौषीत्.

श्रुत, (न०) श्रूयते । श्रु+क्त । सुना जाता है । शास्त्र (इल्म) । उसका ज्ञान । "श्रुतान्वितः" इति भट्टिः । श्रवणद्वारा ग्रहण कियाहुआ । अवधृत (समझाहुआ) (त्रि०).

श्रुतकीर्ति, (स्त्री०) कुशध्वजकी लडकी । शत्रुघ्नकी स्त्री । "श्रुता (विख्याता) कीर्तिः अस्य" । प्रसिद्ध यशवाला (त्रि०).

श्रुतदेवी, (स्त्री०) श्रुतस्य (शास्त्रस्य) देवी । सरस्वती.

श्रुतबोध, (पु०) श्रुतमात्रं बोधयति । बुध्+णिच्+अच् । केवल सुनाहुआ समझादेता है । कालिदासका बनायाहुआ एक छन्दःशास्त्रका ग्रन्थ.

श्रुतश्रवस्, (पु०) श्रुतं श्रवः (यशः) यस्य । जिसका यश सुनागया है । शिशुपालका पिता (बाप).

श्रुताध्ययनम्, (न०) श्रुतस्य अध्ययनम् । वेदोंका अभ्यास (पठन पाठन).

श्रुति, (स्त्री०) श्रु+क्तिन् । कर्ण (कान) । श्रवणेन्द्रियजन्य ज्ञान । सुन्ना । और वेद.

श्रुतिकटु, (पु०) श्रुतौ (श्रवणे) कटुः (कठोरः) । सुन्नेमें सख्त । कठोर शब्दवाला होनेसे काव्यका यह दोष.

श्रुतिचोदना, (स्त्री०) श्रुतेः चोदना । वेदोंकी प्रेरणा । वैदिक विधि.

श्रुतिजीविका, (स्त्री०) श्रुतिं जीवयति (मूलतयाऽनुसरति) जीव्+ल्युट् । वेदको जीवन देती है (मूलभूत वेदका पीछा कर्ती है) स्मृति । धर्मशास्त्र.

श्रुतिद्वैधम्, (न०) श्रुतेः द्वैधम् । श्रुतिका द्वैधीभाव (विरोध) । वैदिक विधिका परस्पर विरोध.

श्रुतिधर, (त्रि०) श्रुत्या धरति । धृ+अच् । जो सुनेहीसे सब समझलेता (धारणकर्ता) है.

श्रुतिमूल, (न०) श्रुतिरेव मूलं (धर्मके प्रमाण होनेमें) वेदही जड है । धर्मको जतलानेहारा वेदरूप प्रमाण । ६ त० । यज्ञआदि । और वेदशास्त्रमें कहाहुआ धर्मआदि । ६ त० । कानका मूल.

श्रुतिवर्जित, (त्रि०) श्रुत्या वर्जितः । वेद वा कानसे रहित । वृज्+क्त । वेदका पाठ न करनेहारा । वधिर । वहिरा । डोरा.

श्रुतिवेध, (पु०) श्रुतेः (कर्णस्य) वेधः यत्र । जिसमें कानको वींधा जाता है । कर्णवेधनामी एकप्रकारका संस्कार.

श्रुत्यनुप्रास, (पु०) श्रूयते इति श्रुतिः (शब्दः) तस्य अनुप्रासः । शब्दका अनुप्रास (लौटकर वैसेही शब्दका आना) । शब्दालंकार.

श्रुत्युक्त, (त्रि०) श्रुतौ (वेदे) उक्तः । वेदमें विधान कियाहुआ धर्मआदि.

श्रु(स्रु)वा, (स्त्री०) श्रु(स्रु)+क । यज्ञका एक पात्र । (ब्रह्माका हाथ).

श्रेढी, (स्त्री०) श्रेण्यै (राशीकरणाय) ढौकते । ढौक्+ड-पृ० ङीप् । भिन्नजातिके द्रव्योंको मिलानेके लिये अंकशास्त्रमें कहाहुआ एकप्रकारका गिनतीका प्रकार । हिसाव.

श्रेणि(णी), (स्त्री०) श्रि+नि-वा ङीप् । छिद्ररहित पंक्ति । कतार (सुराखके विना) । जमात.

श्रेयस्, (न०) अतिशयेन प्रशस्यं+ईयसुः । श्रादेशः । बहुत सराहनेलायक । धर्म । मोक्ष । और शुभ (अच्छा) । वहुत अच्छा (त्रि०) । हरीतकी (हरीड) (स्त्री०).

श्रेयोर्थिन्, (त्रि०) श्रेयः अर्थयते । सुख (खुशी)को मांगनेवाला । खुशीको तालाश करनेवाला.

श्रेष्ठ, (पु०) अतिशयेन प्रशस्यः+इष्ठन्-श्रादेशः । वहुतही अच्छा । कुवेर । राजा । ब्राह्मण । और विष्णु । गौका दूध (न०) । वहुत अच्छा (त्रि०).

श्रेष्ठिन्, (पु०) श्रेष्ठं (धनादिकं) अस्य+इनि । जिसके पास अच्छा धन आदि है । शिल्पी (कारीगर) । व्यापारिओंमें अच्छा । सेठ । साहूकार.

श्रोण, (पु०) श्रोण्+अच् । पङ्गु । लुंजा । काञ्जिक (कांजी) (स्त्री०).

श्रोण्, संगात-इकट्ठा होना । भ्वा० स० अक० सेट् । श्रोणति.

श्रोणि(णी), (स्त्री०) श्रोण्+इन्-वा ङीप् । कटि (कमर) । पथ । रास्ता.

श्रोणिफलक, (न०) श्रोणिः फलकं इव । अच्छी कमर (प्रशस्तकटि) ६ त० । कटिपार्श्व (कमरका पास).

श्रोणिबिम्बम्, (न०) श्रोण्याः बिम्बम् । श्रोणिका बिम्ब । गोलकमर.

श्रोतव्य, (त्रि०) श्रु+तव्य । सुननेके लायक.

श्रोतस्, (न०) श्रु+असुन्-तुट् च । कर्ण (कान) । नदीका वेग (जोर) । और इन्द्रिय.

श्रोत्र, (न०) श्रूयते अनेन । श्रु+ष्ट्रन् । शब्दके सुनेका साधन कानरूप इन्द्रिय.

श्रोत्रिय, (पु०) श्रुतिं (छन्दः-वेदं) अधीते-वेत्ति वा । श्रुति+घञ् । वेद । पढनेमें लगाहुआ । धर्मके जाननेहारा । ब्राह्मण.

श्रौत, (त्रि०) श्रुतौ विहितं+अण् । वेदमें विधान कियागया । धर्मआदि । गार्हपत्य, आहवनीय और दक्षिण अग्नि (पु०).

श्रौतसूत्रम्, (न०) श्रौतं सूत्रम् । वेदसम्बन्धी सूत्रसमूह (आश्वलायन-सांख्यायन–कात्यायन आदि).

श्रौत्र, (न०) श्रोत्र+स्वार्थे अण् । कर्ण (कान) । "श्रोत्रियस्य भावः कर्म वा+अण्" वैदिकभाव । वेदजाननेहारेका होना । श्रोत्रियका काम । वेदपाठीका काम.

श्रौषट्, (अव्य०) श्रु+ डौषटि । यज्ञआदिमें हवि (घी)-आदिका देना । देवताको हवि देनेका मन्त्र.

श्लक्ष्ण, (त्रि०) श्लिष्+क्स्न । नि० । अल्प (थोडा) । मनोहर (दिलपसंद) । ढीला । चिकना । और लोहा.

श्लथ्, दौर्वल्य-कमजोर होना । चु० उभ० स० सेट् । श्लथयति-ते.

श्लथ, (पु०) श्लथ्+अच् । विरलसंयोग । शिथिल । दुर्वल । ढीला । कमजोर.

श्लाघ्, अपने गुणोंको प्रकट करना । भ्वा० आ० स० सेट् । श्लाघते.

श्लाघा, (स्त्री०) श्लाघ्+अ । प्रशंसा । तारीफ । वडाई । स्तुति । इच्छा.

श्लाघाविपर्यय, (पु०) श्लाघायाः विपर्ययः । प्रशंसाका उलटा । स्तुति न करना । तारीफका न करना.

श्लाघ्य, (त्रि०) श्लाघ्+ण्यत् । प्रशस्य । तारीफके लायक.

श्लिष्, मिलना । बगलगीर होना । सक० दिवा० अनिट् । श्लिष्यति.

श्लिष्ट, (त्रि०) श्लिष्+क्त । आलिङ्गित (बगलगीरहुआ मिलाहुआ) । श्लेषरूप शब्दालंकारयुक्त शब्द (वह शब्द कि जिसके दो अर्थ हों).

श्लील, (त्रि०) श्रीः अस्ति अस्य+लच् । पृ० रस्य लः । शोभावाला । उस्से उलटा "अश्लील".

श्लेष, (पु०) श्लिष्+घञ् । संसर्ग (मेल) । आलिङ्गन (मिलना) । शब्दालंकार.

श्लेष्मण, (पु०) श्लेष्मा अस्ति अस्य+न । कफवाला । कफविशिष्ट.

श्लेष्मन्, (पु०) श्लिष्+मनिन् । कफ । बलगम.

श्लेष्मल, (त्रि०) श्लेष्मा+अस्ति अर्थे लच् । कफवाला । बलगमी.

श्लेष्मान्तक, (पु०) श्लेष्मणः अन्तक इव (सेवन करनेसे बलगम उत्पन्न कर्ता है इसलिये मानों यमराजके समान है) (लसूडेका द्रख्त).

श्लोक्, प्रशंसा (तारीफ करना)-रचना करना । बढना । इकट्ठाहोना । भ्वा० आ० सक० सेट् । श्लोकते । अश्लोकिष्ट.

श्लोक, श्लोक्+अच् । कविका बनायाहुआ चार पादोंवाला एक वाक्य । और यश.

श्वःश्रेयस्, (न०) श्वः (परदिने भाविकाले) श्रेयः यस्मात् । अच्० समा० । मंगल । भलाई । सुख । और परमात्मा (जिस्से आनेवाले समयमें कल्याण हो) । शिव । शुभ । भद्र.

श्वदंष्ट्रक, (पु०) शुनो दंष्ट्रा इव कण्टकः अस्य+कन् । जिसका कांटा कुत्तेकी दाढके समान हो । गोक्षुर । क्षुप । गोखरु.

श्वधूर्त, (पु०) श्वेव, शुनां (वंचनार्थं) वा धूर्तः । कुत्तेके समान वा कुत्तोंके ठगनेके लिये खचरा । शृगाल । गीदड.

श्वन्, (पु०) श्वि+कनिन् । नि० । कुक्कुर (कुत्ता) । कुत्ती (शुनी) (स्त्री०).

श्वपच, (पु०) श्वानः पच्यन्ते यैः (भोजनाय) । पच+क । जो खानेके लिये कुत्ते पकाते हैं । चाण्डाल.

श्वपाक, (पु०) श्वानं पचति+कर्तरि घञ् । कुत्तेको पकाता है । चाण्डाल.

श्वफल, (पु०) शुनः प्रियं फलं अस्य । जिसका फल कुत्तेका पियारा है । अनार । नारंगी । बीजपूर.

श्वफल्क, (पु०) वृष्णिके वंशमें अक्रूरका पिता.

श्वभीरु, (पु०) श्वभ्यः भीरुः । कुत्तोंके लिये डरावना । शृगाल । गीदड.

श्वभ्र, गति-जाना । छिद्रकरण-छेककरना (टोया निकालना) । सक० चुरा० उभ० सेट् । श्वभ्रयति-न्ते । अशश्वभ्रत्-त.

श्वभ्र, (न०) श्वभ्र्+घञ् । छिद्र । छेक । सुराख । टोया । गढा.

श्वयथु, (पु०) श्वि+अथुच् । शोथ । सोज । सोजश.

श्ववृत्ति, (पु०) शुन इव (पराधीना) वृत्तिः । कुत्तेकी नाईं दूसरेके आधीन जीविकावाला । दास्य । नौकरी । "न श्ववृत्त्या कदाचन" इति स्मृतिः.

श्वशुर, (पु०) शु-(आशु) अश्नुते । आशु-अश्+उरच् पृषो० । जल्दी फैलजाता है (आदरके लायक हो जाता है) पतिका पिता । स्त्रीका पिता । सौरा । ससुर.

श्वशुर्य, (पु०) श्वशुरस्य अपत्यं+यत् । सौरेकी सन्तान । देवर (द्योर) । श्याल । साला.

श्वश्रू, (स्त्री०) श्वशुरस्य पत्नी । ऊङ् । "उ" और "अ" का लोप होता है । ससुरकी स्त्री । ससुरी । सस्स । सासु.

श्वस्, (अव्य०) आगामि अहः । पृ० नि० । आनेवाला दिन । कल्ह.

श्वस्, जीना । अदा० पर० सेट् । श्वसिति । अश्वसीत्.

श्वस्, (स्वप्न) सोना । अदा० प० अ० (यह वेदमें आता है) । श्वस्ति । अश्वसीत्.

श्वसन, (पु०) श्वसिति अनेन । जिस्से सांस लेता है । हवा.

श्वसित, (न०) श्वस्+क्त । निश्वास । सांस । मुख और नाकसे बाहिर जानेहारा हृदयका प्राणवायु.

श्वस्तन, (त्रि०) श्वो भवः । श्वस्+ट्युल्-तुट् च । कल्हका । आनेवाले दिनतक रहनेवाले चीज.

श्वस्त्य, (त्रि०) श्वो भवः । श्वस्+त्यप् । आनेवाले दिनतक रहनेवाली चीज । कल्हका.

श्वागणिक, (पु०) श्वगणेन चरति+ठक् । नि० दी० । कुत्ते आदिसे मृगया (अहेर-शिकार) करनेहारा व्याध । (बहेलिया).

श्वादन्त, (त्रि०) शुन इव दन्ताः अस्य । दी० । जिसके दांत कुत्तेके समान हैं । कुत्तेके माफिक दांतवाला.

श्वान, (पु०) श्वा इव+अण् । कुक्कुर । कुत्ता । स्त्रियां ङीप् । शुनी.

श्वापद, (पु०) शुन इव आपद् अस्मात्+अच् । कुत्तेकी नाईं जिस्से मुसीबत होती है । हिंस्रपशु (मारनेवाला हैवान) व्याघ्र । भेडिया.

श्वास, (पु०) श्वस्+घञ् । वायु (हवा) । श्वासका रोग । सांसकी बीमारी । अक्षर उच्चार करनेके लिये बाहिरका प्रयत्न.

श्वि, गति (जाना) सक० । बढना । अक० भ्वा० प० सेट् । श्वयति । अशिश्वियत्-अश्वत्-अश्वयीत्.

श्वित्, शुक्लतापादन (सफेदकरना) । भ्वा० आ० लुङि उभ० सक० सेट् । श्वेतते । अश्वितत्-अश्वेतिष्ट.

श्वित्र, (न०) श्वित्+रक् । । चिट्टा कोढ । धवल । श्वेत । कुष्ठभेद.

श्वित्रिन्, (त्रि०) श्वित्रं अस्ति अस्य+इनि । चिट्टेकोढवाला । श्वेतकुष्ठयुक्त.

श्वित, (पु०) श्वित्+अच्-घञ् वा । एक द्वीप (जजीरा) । एक पहाड । शुक्रग्रह । शंख । चिट्टा बादल । जीरा । और चिट्टारंग । उसवाला (त्रि०) । रौप्य (रुपया-रूपा) (न०) । स्वार्थे कन्.

श्वेत, (त्रि०) श्वित्+अच्+घञ् वा । शुभ्र । चिट्टा । सफेद । तः (पु०) चिट्टारंग-श्वेता–श्येनी–(स्त्री०) चिट्टी.

श्वेतद्वीप, (पु०) वैकुण्ठनाम विष्णुका धाम । एक द्वीप । जजीरा.

श्वेतधामन्, (पु०) श्वेतं धाम यस्य । जिसका चिट्टा घर है । चन्द्र (चांद) । कर्पूर (काफूर) । और समुद्रकी झाग । "श्वेतकर".

श्वेतपत्र, (पु०) श्वेतं पत्रं (पक्षः) अस्य । सफेद परवाला (हंस) । चिट्टेपरवाला (त्रि०).

श्वेतपद्म, (न०) कर्म० । सितकमल । सफेद कमलका फूल.

श्वेतपिङ्गल, (पु०) देहेन श्वेतः जटया पिङ्गलः । शरीरसे सफेद और जटासे पीला । सिंह । शेर.

श्वेतरक्त, (पु०) श्वेतः रक्तः । चिट्टा और लाल । पाटलवर्ण । गुलाबी.

श्वेतरथ, (पु०) श्वेतः रथः । चिट्टी गाडीवाला । शुक्रतारा । शुक्रग्रह.

श्वेतवाजिन्, (पु०) श्वेतो वाजी यस्य । जिसका चिट्टा घोडा है । चन्द्र (चांद) । और अर्जुन । "श्वेताश्व".

श्वेतवासस्, (पु०) श्वेतं वासः अस्य । चिट्टेकपडेवाला । एक प्रकारका संन्यासी । श्वेतवस्त्रयुक्त (त्रि०).

श्वेतवाहु, (पु०) श्वेतेन (श्वेताश्वेन) उह्यते । वह्+ण्वि । सफेद घोडेसे पहुंचायाजाता है । इन्द्र । अर्जुन । और चांद.

श्वेतवाहन, (पु०) श्वेतं वाहनं अस्य । सफेद सवारीवाला । चन्द्र । चांद । इन्द्र । और अर्जुन.

श्वेतसर्षप, (पु०) कर्म० । गौर सर्षप । गोरी सरिसों.

श्वेतहय, (पु०) कर्म० । उच्चैःश्रवा (स्वर्गका घोडा) । चिट्टेरंगका घोडा.

श्वेता, (स्त्री०) श्वित्+अच् । वराटिका (कौडी) । वंशरोचना । शर्करा (चीनी-खांड).

श्वेतोही, (स्त्री०) श्वेतोहः पत्नी+ङीप् । इन्द्राणी (इंद्रकी स्त्री) । शची.

श्वैत्य, (न०) श्वेतस्य भावः+ष्यञ् । शुक्लवर्ण । सफेद रंग । चिट्टापन.

श्वैत्र-त्र्य, (न०) श्वित्रस्य भावः । चिट्टा कोड । श्वेत कुष्ठ.

ष

ष, (पु०) षो+क-पृ० । केश (वाल) गर्भका छोडना । और मनुष्य (आदमी) । सर्व (कुल) । श्रेष्ठ (बहुत अच्छा) । विज्ञ (दाना-समझवाला) (त्रि०).

षग्, संवरण (छिपाना) । भ्वा० प० स० सेट् । सगति । असगीत्.

षच्, सेचना (सींचना) । भ्वा० आ० स० सेट् । सेचते । असेचिष्ट.

षच्, सम्बन्ध (मिलना) भ्वा० प० स० सेट् । सचति । असचीत् । असाचीत्.

षट्कर्मन्, (न०) षट् प्रकारं कर्म । छ तरहका काम । तन्त्रमें (शान्तिकरना), स्तम्भन (रोकना), विद्वेष (वैर करना), उच्चाटन (जगहसे उखाडना), वशीकरण (अपने आधीन करलेना), और मारना । ये छ प्रयोग । "यज्ञकरना, यज्ञकराना, पढना, पढाना, दान देना और दानलेना" ये छ ब्राह्मणके कर्म । " ब्राह्मण " (पु०).

षट्कोण, (न०) षट् कोणा यस्य । छकोनवाला । छकोना । लग्नसे छठा स्थान.

षट्चक्र, (न०) षण्णां चक्राणां समाहारः । छ-चक्र । तन्त्रमें शरीरकी सुषुम्ना नाडीके बीच द्विदल (दुपत्ता) चतुर्दल (चुपत्ता) आदि छ पद्म (कमलफूल) । "तत् अधिकृत्य कृतो ग्रन्थः" । अण्-तस्य लुक् । छ चक्रोंको निरूपण करनेहारा एक ग्रन्थ.

षट्चत्वारिंशत्, (स्त्री०) षट् अधिका चत्वारिंशत् । छपर चाल्लीस । छतालीस.

षट्चरण, (पु०) षट् चरणा यस्य । छ पाँववाला । भ्रमर (भौंरा).

षट्तिलिन्, (पु०) षट् तिलाः (तिलोद्वर्तनादीनि कर्माणि) अस्य । तिलोंका मलना आदि छ कामवाला तिलोंका वटना आदि करनेवाला.

षट्त्रिंशत्, (स्त्री०) षडधिका त्रिंशत् । छ ऊपर तीस । छत्तीस.

षट्पञ्चाशत्, (स्त्री०) षडधिका पञ्चाशत् । छ ऊपर पचास । छप्पन.

षट्पदी, (स्त्री०) षट् पादा अस्याः । पादस्य पद्भावः । छ पाँववाली । यूका (यूं) । भौंरी । छ चरणवाला एक छन्द.

षट्प्रज्ञ, (पु०) षट्सु प्रज्ञा यस्य । जिसकी बुद्धि छमें है । धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, लोकप्रयोजन और तत्त्वप्रयोजनरूप छ बुद्धिवाला एक प्रकारका बौद्ध । धर्म आदिको खूब समझनेहारा.

षट्ट, (निवास) रहना और वल (जोर करना) । अक० । मारना और देना । सक० चुरा० उभ० सेट् । सट्टयति-ते.

षडङ्ग, (न०) षण्णां अङ्गानां समाहारः । छ अंग दोनो जांघ, दो हाथ, सिर, कटि (कमर) । वेदके छ अंग (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष) । तन्त्रमें छ अंग जिनमें मन्त्रन्यास कियाजाता है । "जिसके छ अंग हैं" । वेद.

षडभिज्ञ, (पु०) षट् अभिज्ञा यस्य । जिसे छ जाननेलायक हैं । (दिव्यचक्षुः और श्रोत्र,) दूसरेके चित्तका ज्ञान), पूर्व निवासका स्मरण, आत्माका ज्ञान, आकाशमें जाना, दूसरेके शरीरमें प्रवेश कर जाना) । बौद्धविशेष.

षडशीति, (स्त्री०) षडधिका अशीतिः । छ ऊपर अस्सी। छियासी, सूर्यका एक प्रकारका संक्रमण.

षडशीतिमुख, (न०) षडशीतेः मुखम् । षडशीति नाम संक्रान्तिका मुख.

षडानन, (पु०) षट् आननानि यस्य । जिसके छ मुख हैं। कार्तिकेय । स्वामिकार्तिक.

षडूर्मि, (पु०) षट् ऊर्मयः (ऐश्वर्याणि) यस्य । छ ऐश्वर्योंवाला परमेश्वर.

षड्गव, (त्रि०) षड्भिः गोभिः आयुक्तः शकटः हलो वा। अच् समा० । छ बैलोंवाला छकडा वा छ बैलोंसे खेंचा-गया हल । "षण्णां गवां समाहारः" द्विगुः । छ गौएं (न०).

षड्गुण, (पु०) षड्भिः (गुणिताः) गुणाः । शाक० । राजाओंके सन्धिआदि छ गुण.

षड्ग्रन्थि, (न०) षट् ग्रन्थयः अस्य । छ गांठवाला । पिप्पलीमूल (मघ) । छ पर्व (गांठ) वाला (त्रि०).

षड्ज, (पु०) षड्भ्यो नासादिस्थानेभ्यो जायते । जन्+ड । नासाआदि छ स्थानोंसे निकलता है (नासा, गला, छाती, तालु, जीभ और दांत) एक स्वर । "षड्जसंवादिनी केका" इति रघुः.

षड्दीर्घ, (पु०) षड्भिर्गुणिता दीर्घाः । तन्त्रमें आ, ई, ऊ, ऐ, औ, अः इस प्रकार छ दीर्घ.

षड्धा, (अव्य०) षष्+प्रकारे धाच् । षट्प्रकार । छ तरहसे.

षड्रस, (पु०) षण्णां रसानां समाहारः । छ रस (मधुर-मीठा, लवण-सलूना, तिक्त-तीखा, कषाय-कसैला, अम्ल-खट्टा और कटु-कडवा).

षड्वर्ग, (पु०) ६ त० । छओंका वर्ग (समूह) । काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य (दूसरेके शुभसे वैर करना) "व्यजेष्ट षड्वर्गं" इति भट्टिः । ज्योतिषमें क्षेत्र, होरा, द्रेक्काण, नवांश, द्वादशक, त्रिंशांशक.

षण्, दान (देना) । तना० उभ० स० सेट् । सनोति । सनुते.

ष (शा)ण्ड, (पु०) षण्+ड-पृ० । वृष । (बैल) । नपुंसक (हीजडा) । पद्मआदिका समूह (पु० न०).

षण्ढ, (पु०) षण्+ढ-पृ० । नपुंसक (हीजडा).

षण्मुख, (पु०) षट् मुखानि यस्य । छमुंवाला । स्वामिकार्तिक.

षद्, विषाद (दिलका टूटना-अफसोस करना) । अक० । हिंसा-मारना और गति-जाना । स० तु० प० अनिट् । सीदति । असदत्.

षञ्ज, सङ्ग (मिलना) भ्वा० प० स० अनिट् । सजति । असाङ्क्षीत्.

षष्, (त्रि० व० व०) । षो+क्विप्-पृ० । छकी संख्या (गिनती) । षान्त शब्द.

षष्टि, (स्त्री०) षड्गुणिता दशतिः । नि० । छ गुनेहुए दसके साथ । साठकी संख्या (गिनती) । उस संख्यावाला.

षष्टितम, (त्रि०) षष्टेः पूरणः+तमट् । जिस्से साठकी संख्या पूरी होजाय । स्त्रियां ङीप् । साठवीं । साठवां.

षष्टिसंवत्सर, (पु० ब० व०) षष्टिगुणिताः संवत्सराः । ज्योतिषमें प्रसिद्ध प्रभव आदि साठ वरिस (वर्ष).

षष्ठ, (त्रि०) षण्णां पूरणः । षष्+डट्-थुक्च । जिस्से छकी संख्या पूरी हो । छठा । स्त्रियां ङीप् । छठी.

षष्ठक, (त्रि०) षष्ठो भागः+कन् । छठा हिस्सा.

षष्ठांश, (पु०) कर्म० । रक्षा करनेके वदले प्रजाओंसे लेनेलायक उत्पन्नहुए शस्य (खेती) का छठा भागरूप राजाका कर (मासूल).

षष्ठान्न, (त्रि०) षष्ठो दिवसस्य षष्ठः कालः अन्नस्य-तद्भोजनस्य वा कालो यस्य । दिनके छठे भागमें भोजन करनेहारा.

षष्ठी, (स्त्री०) षण्णां पूरणी-डट्-थुट्-ङीप् । छठ । छठी तिथि। स्वामिकार्तिककी स्त्रीरूप एक प्रकारकी मातृका (माता).

षस्, स्वप्न (सोना) । अदा० प० अक० सेट् (वेदमें आता है) सस्ति.

षस्ज्, (सर्पण) फैलना-सरकना । भ्वा० प० स० सेट् । सज्जति.

षह्, क्षमा (सहारना) । भ्वा० आ० सक० सेट् । सहते । असहीत्.

षाड्गुण्य, (न०) षट् गुणा एव+ष्यञ् । राजाओंके संधि-आदि छ उपाय.

षाण्मातुर, (पु०) षण्णां मातॄणां अपत्यं+अण्-उदादेशे रपरः । छ माताओंका बेटा । कार्तिकेय (इसकी तीन कृत्तिका, गंगा, पृथिवी, और पार्वती इस प्रकार छ माता हैं.

षाण्मासिक, (न०) षष्ठे मासे भवः+ठञ् । मरेहुएके लिये एक दिन कम छठें महीनेमें करनेलायक एक प्रकारका श्राद्ध (वैदिक श्रद्धासे कियागया कर्म).

षाधू, सिद्धि । हासिल होना । स्वा० और दिवा० पर० अक० अनिट् । साध्नोति । साध्यति । असात्सीत्.

षान्त्व्, सामयुक्त सम्पादन (दिलासादेना) । चु० उ० स० सेट् । सान्त्वयति-ते.

षि, बंध (बांधना) स्वा० क्र्या० उ० स० अनिट् । सिनोति-सिनुते । सिनाति-सिनीते । असैषीत्-असेष्ट.

षिट्, अनादर (बेइजत करना) भ्वा० प० स० सेट् । सेटति.

षिड्ग, (पु०) षिट्-गन् । पृ० । विंट । धूर्त । लुच्चा । लम्पट । कामी.

षिधू, गति-(जाना) भ्वा० प० स० सेट् । सेधति । असेधीत्.

षिव्, तन्तुविस्तार (तांत फैलाना-सीना) दि० प० स० सेट्। सीव्यति.

षु, सोमरसका निकालना और मथना। स्वा० उ० स०। नहाना। अक० अनिट्। लुङि पर० सेट्। सुनोति-सुनुते। असावीत्-असोष्ट.

षू, प्रसव-उत्पन्न होना (पैदाहोना)। अदा० आ० सक० सेट्। सूते। असविष्ट.

षू, प्रसव (पैदाहोना)। दि० आ० सक० सेट्। सूयते। असविष्ट-असोष्ट.

षू, क्षेप (फेंकना)। तु० प० सक० वेट्। सुवति। असावीत्.

षूद्, निवारण (हटाना)। भ्वा० आ० सक० सेट्। सूदते। असूदिष्ट.

षेवृ, आराधन (सेवाकरना)। उपभोग (खुशी करना)। और आसरादेना (आश्रय)। भ्वा० उ० स० सेट्। सेवति-ते.

षो, नाशहोना। अक० दि० पर० अनिट्। स्यति। असात्-असासीत्.

षोडत्, (पु०) षट् दन्ता यस्य। दन्तको दतृ आदेश होता है। नि०। छ दांतके लायक उमरवाला बैल आदि.

षोडश, (पु०) षोडशानां पूरणः+डट्। जिस्से सोलहकी संख्या भरजाय। सोलहवां। चन्द्रमाकी कला (सोलहवां भाग)। त्रिपुरसुन्दरी (स्त्री०).

षोडशक, (न०) षोडश परिमाणं अस्य+कन्। षोडश संख्यात वस्तु। सोलह चीजें। प्रेतके लिये दीगई १६ ह चीजें-जैसे पृथिवी, आसन, जल, वस्त्र, दीपक, अन्न, ताम्बूल (पान), छत्र (छाता), गंध, माला, फल, शय्या (छेज-पलंग), पादुका (पाँवरी-खडाऊं), गौ, सोना (कांचन), और चांदी। पितरोंके कृत्यमें दान करनेलायक स्वर्ण आदि सोलह.

षोडशन्, (त्रि० व० व०) षडधिका दश। नि०। छ ऊपर दस। सोलहकी संख्या। उस संख्यावाला.

षोडशमातृका, (स्त्री०) षोडश संख्या मातरः। सोलह माएं। सोलह दुर्गा-जैसे-गौरी, पद्मा, शची, मेधा, सावित्री, विजया, जया, देवसेना, स्वधा, स्वाहा, माता, लोकमाता, शान्ति, पुष्टि, धृति और तुष्टि.

षोडशाङ्ग, (पु०) षोडश द्रव्याणि अङ्गानि अस्य। गुग्गल आदि सोलह चीजोंका बनाहुआ धूप.

षोडशाङ्घ्रि, (पु०) षोडश अङ्घ्रयः (चरणाः) यस्य। सोलह पाँववाला। कर्कट (केकडा).

षोडशार, (न०) षोडश आराणि (कोणाः) अस्य। सोलह कोनवाला। सोलह पत्तोंवाला कमल। एक यंत्र.

षोडशिन्, (पु०) षोडश कला विद्यन्ते अस्य+इनि। सोलह कलावाला। चन्द्रमा। सोमरस डालनेका पात्र.

षोडशोपचार, (पु० ब० व०) षोडश संख्याता उपचाराः। पूजाकी सोलह चीजें। जैसे-आसन, स्वागत (भलेआये), पाद्य, अर्घ्य, आचमनीयक, मधुपर्क, आचमन, स्नान, वस्त्र, भूषण, गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य और वंदन.

षोढा, (अव्य०) षट् प्रकारं+धाच्। नि०। छ प्रकार। छ तरहसे.

षोढान्यास, (पु०) षोढा (षट् प्रकारः) न्यासः। तन्त्रमें छ प्रकारका न्यासविशेष.

ष्टु, स्तुति-बडाई करना-तारीफ करना। अदा० उभ० सक० अनिट्। स्तौति-स्तवीति। स्तुते.

ष्ट्यै, वेष्टन-लपेटना-घेरादेना। सक०। दीप्ति-चमकना। अक० भ्वा० पर० अनिट्। स्त्यायति.

ष्टुग्, संवरण-छिपाना। भ्वा० प० स० सेट्। स्थगति। अस्थगीत्.

ष्ठा, गति-निवृत्ति (ठहरना)। भ्वा० प० अक० अनिट्। तिष्ठति। अस्थात्.

ष्ठिवु, निरास (मुखसे श्लेष्मआदिका निकालना) थूकना। भ्वा० पर० सक० सेट्। ष्ठीवति। अष्ठेवीत्। ष्ठीवनम्। "ष्ठीव्यति" भी होता है.

ष्ठ्यूत, (त्रि०) ष्ठिव्+क्त। निरस्त (थूकागया)। और वांत (वमनकियाहुआ).

ष्णा, शोधन (साफ करना—नहाना)। स्नाति। अस्नासीत्.

ष्णिह्, प्रीति (प्यारकरना)। दि० प० स० वेट्। स्निह्यति.

ष्मिङ्, ईषद्धास्य (थोडा हसना-मुसकडाना)। भ्वा० आ० अक० अनिट्। स्मयते। अस्मेष्ट.

ष्वद्, प्यारकरना और चाटना। भ्वा० आ० सक० सेट्। स्वदते। अस्वदिष्ट.

ष्वञ्ज्, आलिङ्गन (गलेमिलना)। भ्वा० आ० स० अनिट्। स्वजते। अस्वन्त.

ष्वप्, शयन (सोना)। अदा० प० अ० अनिट्। स्वपिति। अस्वाप्सीत्.

ष्विद्, गात्रप्रक्षरण (नहाना)। दि० पर० अ० अनिट्। स्विद्यति। अस्विदत्.

स

स, (पु०) सो+ड। विष्णु। सर्प (सांप)। ईश्वर। विहग (परिंदा-पक्षी)। यह शब्दके पहिले सम्-सम-तुल्य-सह-सदृशके अर्थमें लगाया जाता है। जैसे-सपुत्र-सभार्य-सतृण-सधन आदि.

संक्षेप (पु०) सम्+क्षिप्+घञ्। बहुतसे अर्थको छोटे वाक्य आदिसे प्रकाश करना। मुख्तसिर.

संक्षोभ, (पु०) सम्+क्षुभ्+घञ्। चाञ्चल्य। चंचलता। क्षोभ। घबराहट.

संग्राहिन्, (पु०) सम्+ग्रह्+णिनि । कुटज नाम दरख्त । सञ्चयकारक (जमा करनेहारा-इकट्ठा करनेवाला) (त्रि०).

संघ, (पु०) सम्+हन्+ड नि० । समूह । बहुतसे जीव । घञ् । पक्कामेल (पु०).

संघर्ष, (पु०) सम्+घृष्+घञ् । अन्योन्यदृढसंयोग । आपसकी रगड । आपसमें पक्का मेल.

संज्ञ, (न०) सम्+ज्ञा+क । एक प्रकारका गंधवाला द्रव्य । सम्+ज्ञा+अङ् । चेतना (होश) । बुद्धि (अकल) । आख्या (नाम) । हाथ आदिके अर्थको जतलाना (इशारा) । गायत्री । और सूर्यकी स्त्री (जोरू)(स्त्री०).

संज्ञ(ज्ञा)पन, (न०) सम्+ज्ञा+णिच्-पुक् (मारनेके अर्थमें) ह्रस्व हो जाता है । ल्युट् । मारण (मारना) (दूसरे अर्थमें ह्रस्व नहीं होता) । ज्ञान (जानना) । जतलाना (इश्तिहार) क्तिन् । "संज्ञप्तिः" इसी अर्थमें है (स्त्री०).

संज्ञासुत, (पु०) संज्ञायाः (सूर्यपत्न्याः) सुतः । सूर्यकी स्त्रीका बेटा । शनैश्चर । शनि.

संज्ञु, (त्रि०) संहते जानुनी यस्य ("जानु" के स्थान "ज्ञुः" का आदेश होता है) । संहतजानुक । घुटने- (गोड्डे) टेकेहुए.

संज्वर, (पु०) सम्+ज्वर्+अप् । अग्नि (आग) से उपजा ताप । सेक.

संमर्द, (पु०) सम्+मृद्+घञ् । आपसकी रगड (एकपर एकका गिरना).

संयत्, (स्त्री०) संयम्यतेऽत्र । सम्+यम्+क्विप्-तुक् च । जहां बंध जाता है । युद्ध (लडाई-जंग).

संयत, (त्रि०) सम्+यम्+क्त । बद्ध (बंधाहुआ) । जिसने शास्त्रका नियम पालन किया है.

संयताक्ष, (त्रि०) संयते अक्षिणी यस्य । वश कीगई आंखोंवाला । बंद कीगई आंखोंवाला.

संयताञ्जलि, (त्रि०) संयतः अञ्जलिः यस्य । प्रार्थनाके समय जोडे गये दोनों हाथोंवाला.

संयतात्मन्, (त्रि०) संयतः आत्मा येन । जितेन्द्रियः । जिसने अपने मनको वश कर लिया है । जितात्मा । वशीकृतचेताः.

संयताहार, (त्रि०) संयतः आहारः यस्य । संयमपूर्वक खानेवाला । परिमित (मिनाहुआ) आहार (खाना) खानेवाला.

संयतप्राण, (त्रि०) संयताः प्राणाः येन । प्राणोंको वश किये हुए.

संयतवाच्, (त्रि०) संयता वाक् येन । जिसने अपनी वाणीको वश किया है । मितभाषी.

संयन्तृ, (त्रि०) संयच्छति । सम्+यम्+तृच् । रोकने- हारा । नियन्ता । नियमपर चलानेहारा.

सं(य)याम, (पु०) सम्+यम्+घञ् वा वृद्धिः । एक प्रकारका नियम, जो व्रतका अंग होनेसे एक दिन पहिले कियाजाता है । इन्द्रियनिग्रह (इन्द्रियोंका रोकना) । बंधन । बांधना.

संयमन, (न०) सम्+यम्-ल्युट् । बंधन (बांधना) । व्रत । चतुःशालगृह (चौखण्डीवाला घर).

संयमनी, (स्त्री०) संयम्यते अत्र । जहां बांधा जाता है । सम्+यम्+ल्युट् । यमाधिकृतपुरी । यमकी नगरी.

संयमिन्, (पु०) सम्+यम्+णिनि-न वृद्धिः। एक मुनि । इन्द्रियोंको रोकनेहारा (त्रि०).

संयाव, (पु०) सम्यक् घृतादिभिः यूयते (मिश्र्यते) गोधूमचूर्णादि अत्र । जहां आटेआदिके साथ घी- आदि भलीभांति मिलायाजाता है । सम्+यु+घञ् । घी आदिसे पकाहुआ गोधूमचूर्ण (आटाआदि) । कडा-हलवा.

संयुज्, (त्रि०) सम्यक् युनक्ति । सम्+युज्+क्विन् । अच्छीतरह जोडता है । गुणोंसे भराहुआ । जुडाहुआ । संयुक्त.

संयुक्त, (त्रि०) सम्+युज्+क्त । संयोगवाला पदार्थ । मिलाहुआ.

संयुग, (न०) संयुज्यतेऽत्र । सम्+युज्+क । पृ० । जको ग । जहां जोडाजाता है । भिडता है)। युद्ध । लडाई । जंग.

संयुत, (त्रि०) सम्+यु+क्त । संयुक्त । जुडाहुआ । मिलाहुआ.

संयोग, (पु०) सम्+युज्+घञ् । मेलन । मेलना । जोडना । क्रियासे उत्पन्नहुआ द्रव्यके आश्रयरहनेहारा एक गुण । सम्बन्धमात्र । मेल.

संयोजित, (त्रि०) सम्+युज्+णिच्+क्त । कृतमेलन । मिलायाहुआ । किसी दूसरे पदार्थसे जोडाहुआ पदार्थ.

संरम्भ (पु०) सम्+रभ्+घञ्+मुमूच । कोप (गुस्सा) । आक्रोश (निन्दा) । उत्साह (दिलेरी) वेग (जोर).

संराधन, (न०) सम्+राध्+ल्युट् । सम्यक् सेवन । भलीभांति सेवाकरना । सम्यक् चिन्तन । अच्छीतरह सोचना.

संराव, (पु०) सम्+रु+घञ् । शब्द । आवाज.

संरूढ, (त्रि०) सम्+रुह्+क्त । प्रौढ (भरपूर हुआ) । जाताङ्कुर । जिसका अंकुर निकलआया । पैदाहुआ । जमगया.

संरोध, (पु०) सम्+रुध्+घञ् । रोधन (रोकना) । और क्षेप (फेंकना) ।

संलग्न, (त्रि०) सम्+लग्+क्त । मिलित । मिलाहुआ । लगाहुआ.

संलय, (पु०) संलीयते इन्द्रियव्यापारोऽत्र । सम्+ली+अच् । जहां कोई भी इन्द्रियोंका व्यापार नहीं रहता । निन्द्रा (नींद) । और प्रलय.

संलाप, (पु०) सम्+लप्+घञ् । परस्पर कथन । आपसमें कहना । प्रेमके साथ आपसमें बातचीत करना । एकान्तमें कहना.

संवत्सर, (पु०) संवसन्ति ऋतवः अत्र । सम्+वस्+सरन् । जिसमें ऋतु (मौसम) वास कर्ती हैं । वत्सर । वरिस (वरा).

संवत्, (अव्य०) विक्रमादित्यके राज्यसे चला शाक । (सन्न).

संवर्त, (पु०) सम्यक् वर्त्तते (परावर्त्यते) अत्र । सम्+वृत्+णिच्+घञ् । जिसमें सर्मे सब कुछ वदल जाता है । प्रलयका समय । एक मुनि धर्मशास्त्रके बनानेहारा । मेघ (वहुत पानीवाला वादल) । मेघराज.

संवर्तक, (न०) सम्+वृत्+णिच्+ण्वुल् । बलदेवलाङ्गल (वलदेवका हल) । "ततः अस्ति अर्थे+अच्" वलदेव । वाडवानल (समुद्रकी आग) (पु०).

संवर्तक, (पु०) सम्+वृत्+अक् । एक प्रकारका (प्रलयका) वादल । प्रलयकी अग्नि । वडवानल (ज्वारभाटा) वलरामका नाम ।–कं (न०) वलरामका हल.

संवर्तिका, (स्त्री०) सम्+वृत्+अक् । कमलका नया पत्ता । दीपशिखा । दीवेकी लाट.

संवर्तिका, (स्त्री०) सम्+वृत्+ण्वुल्-टाप्-अको इ । दीप (दीए)आदिकी शिखा (लाट) । कमल आदिका केसरकें पासका दल (पत्ता) । नयापत्ता.

संवर्धक, (त्रि०) सम्+वृध्+णिच्+ण्वुल् । सम्माननाकारी (इज्जत करनेहारा) । बढानेहारा (वृद्धिकारक).

संवलित, (त्रि०) सम्+वल् क्त । मिलित (मिलाहुआ).

संवसथ, (पु०) संवसन्ति अस्मिन् (निवास कर्ते हैं इसमें) ग्राम (गाँव) । वहुत लोगोंके निवासका स्थान । कुटिआ.

संवह, (पु०) सम्यक् वहति । सम्+वह्+अच् । सात वायुओंमेंसे एक (अच्छीतरह वहती है).

संवार, (पु०) सम्+वृ+घञ् । शिक्षाग्रन्थमें कहाहुआ वर्णोंके उच्चारण करनेके लिये एक प्रकारका बाह्य (वाहिरका) प्रयत्न । संगोपन (छिपाना).

संवास, (पु०) संवसति अत्र । सम्+वस्+घञ् । भलीभांति रहता है इसमें । गृह (घर) । पुरवासिओंका पुरसे बाहिर रहनेलायक खुला स्थान.

संवाह, (पु०) संवाहयति । सम्+वह्+घञ् । अंगसमर्दक (अंगोंको मलनेहारा) मुट्ठीचापी करनेहारा । "ण्वुल्" वही.

संवाहन, (न०) सम्+वह्+णिच्+ल्युट् । भारआदिका उठाना । अंगसम्मर्दन । मुट्ठीचापी करना.

संविग्न, (त्रि०) सम्+विज्+क्त । उद्विग्न (घवराया-हुआ) । किसी चाहीगई वस्तुकें न मिलने वा भय आदिसे उखडेहुए दिलवाला.

संवित्ति, (स्त्री०) सम्+विद्+क्तिन् । ज्ञान (समझ) । प्रतिपत्ति । बुद्धि । और अंगीकार (मानलेना).

संविद्, (स्त्री०) सम्+विद्+क्विप् । ज्ञान । प्रतिपत्ति । बुद्धि । अंगीकार । समाधि । नाम आचार । संकेत । युद्ध (लडाई-जंग) तोष (खुशी).

संविदा, (स्त्री०) संविद्यते अनया । सम्+विद्+क्विप्+टाप् । ज्ञान होता है इससे । भंगा (भांग) । सिद्धि । "संविदासवयोर्मध्ये संविदेव गरीयसी" इति तन्त्रम्.

संविद्यतिक्रम, (पु०) संविदः (अङ्गीकारस्य) व्यतिक्रमः यत्र । इकरार करके वदलते हैं जिसमें । अंगीकार करके उल्लंघन करनेके कारणसे उपजा विवाद (एक प्रकारका झगडा).

संविदित, (त्रि०) सम्+विद्+क्त । अंगीकृत (माना-हुआ) । भलीभांति जानाहुआ.

संविधान, (न०) सम्+वि+धा+ल्युट् । उपाय । रचना.

संवीक्षण, (न०) सम्यग् वीक्ष्यते (अन्विष्यते) वा । सम्+वि+ईक्ष्+ल्युट् । इष्ट (चाहीगई) वस्तुको पानेके लिये अन्वेषण (तालाश) करना । भलीभांति देखना.

संवीत, (त्रि०) सम्+व्येञ्+क्त । आवृत (ढकाहुआ) । रुद्ध (रुकाहुआ) । "सम्+वि+इण्+क्त" मिलाहुआ.

संवृत, (त्रि०) सम्+वृ+क्त । आवृत (ढकाहुआ) । छिपायाहुआ । "तस्य संवृतमन्त्रस्य" रघुः.

संवृतमन्त्र, (त्रि०) संवृतः मन्त्रः यस्य । छिपे हुए मन्त्र (सलाह) वाला । जो अपनी बातको छिपाये रखता है ।

संवृत्त, (त्रि०) सम्+वृत्+क्त । होगया । पूरा हुआ । इकट्ठा किया गया.

संवेग, (पु०) सम्+विज्+घञ् । (डर) आदिसे त्वर (जलदी करना) । पूरा वेग (जोर) । सम्यग्वेगः.

संवेद, (पु०) सम्+विद्+घञ् । ज्ञान (जान्ना)+युच् । "संवेदना" (स्त्री०).

संवेश, (पु०) सम्यक् विशति अत्र । सम्+विश्+घञ् । भलीभांति प्रवेश करता है इसमें । निद्रा (नींद) । (सम्पूर्वक विश्धातु निद्राके अर्थमें है), जैसा कि "संविष्टः कुशशयने निशां निनाय" इति रघुः.

संवेशन, (न०) सम्+विश्+णिच्+ल्युट् । रतिक्रिया । भोग करना (भोगके पीछे निन्द्रा अधिक होनेसे यह अर्थ हुआ).

संव्यान, (न०) संवीयते । सम्+व्येञ्-कर्मणि ल्युट् । उत्तरीय वस्त्र (ऊपर ओढनेका कपडा) । हरएक कपडा.

संशप्तक, (पु०) सम्यक् शप्तं (अङ्गीकारः) यस्य+कप् । प्रतिज्ञा करके संग्रामसे न लौटनेहारा सेनाका पुरुष.

संशय, (पु०) सम्+शी+अच् । सन्देह (शक) । एक धर्ममें होना और न होना । विरुद्ध दो धर्मोंका संदेह । "जैसे पर्वत वह्निवाला है वा नहीं" "यह स्थाणु (शाखादिविहीन वृक्ष-ठोंठ) है वा पुरुष".

संशयच्छेदिन्, (त्रि०) संशयं छिनत्ति । संशय (शक)-को काटनेवाला । हर तरहके शकको दूर करनेवाला.

संशयस्थ, (त्रि०) संशये तिष्ठति । स्था+क । संशययुक्त । शकमें पडाहुआ.

संशयात्मन्, (पु०) संशय आत्मनि यस्य । जिसको "अपनेमें" संदेह है । संदिग्धान्तःकरण । "संशयात्मा विनश्यति" इति गीता । संदेह करनेहारा.

संशयालु, (त्रि०) संशय+अस्ति अर्थे आलुच् । संशयवाला । शकी । जिसे संदेह रहता है.

संशयितृ, (त्रि०) सम्+शी+तृच् । संशय करनेहारा । संदेहकर्ता.

संशरण, (न०) संशीर्यतेऽनेन । सम्+शॄ+ल्युट् । जिस्से वहुत टूटता है । रणारम्भ । युद्धका प्रारम्भ (शुरू) । हमला.

संशित, (त्रि०) सम्+शी+क्त । सम्पादित व्रतविषयक यत्न । किसी व्रतको पूरा करनेका यत्न करनेहारा । तेज किया हुआ । भलीभांति पूरा कियाहुआ । निर्णय कियाहुआ.

संशितव्रत, (त्रि०) संशितं (सम्यक् सम्पादितं) व्रतं अनेन । भलीभांति व्रतको पूरा करनेहारा । जिसने अपना नियम पूरा किया.

संशुद्धि, (स्त्री०) सम्+शुध्+क्तिन् । सम्यक् शोधन । अच्छी सफाई । देहादिमार्जन । शरीरआदिकी सफाई.

संश्यान, (त्रि०) सम्+श्यै+क्त । शीत आदिसे सिकुडाहुआ.

संश्रय, (पु०) सम्+श्रि+अच् । आश्रय । आसरा । रहनेकी जगह । निवासस्थान.

संश्रव, (पु०) सम्+श्रु+अप् । अंगीकार । इकरार । अच्छीतरह सुना । मुचल्का । "घञ्" "संश्राव" यही अर्थ.

संश्रुत, (त्रि०) सम्+श्रु+क्त । अंगीकृत । इकरार कियाहुआ.

संश्लिष्ट, (त्रि०) सम्+श्लिष्+क्त । आलिङ्गित । मिलाहुआ । अच्छीतरह बंधाहुआ.

संश्लेष, (पु०) सम्+श्लिष्+घञ् । आलिङ्गन । मिलना । मेल.

संसक्त, (त्रि०) सम्+सञ्ज्+क्त । मिलित । मिलाहुआ । बंधाहुआ । वहुत निकट (नजदीक).

संसक्तमनस्, (त्रि०) संसक्तं मनः यस्य । फसे हुए मनवाला । जिसने अपना मन किसी जगह लगा रक्खा है.

संसद्, (स्त्री०) संसीदति अस्याम् । सम्+सद्+क्विप् । जिसमें भलीभांति वैठता है । सभा । कमेटी । मजलिस.

संसरण, (न०) सम्+सृ+ल्युट् । अपने अदृष्ट (पाप और पुण्य) से बंधाहुआ देहका अंगीकार करनारूप संसार । वहना । गमन । चलना । युद्धका आरम्भ । हमला.

संसर्ग, (पु०) सम्+सृज्+ घञ् । सम्बन्ध । मेल । विभागके अनन्तर "जो तेरा धन है वह मेरा है" इस नियमसे एकही स्थानमें इकट्ठा रहनारूप सम्बन्ध (मेल).

संसर्गाभाव, (पु०) संसर्गस्य अभावः । मेलका न होना । ध्वंस, प्रागभाव और अत्यन्ताभावरूप-भेदसे भिन्न अभाव (न होना).

संसार, (पु०) संसरति अस्मात् । सम्+सृ+घञ् । चलता है इस्से । मिथ्याज्ञानसे उपजी संस्काररूप वासना । देहको आरम्भ करनेहारा अदृष्टविशेष । "आधारे घञ्" विश्व । दुनिआं । "भावे घञ्" संगति । मिलना.

संसारचक्रं(न), (संसारस्य चक्रं) संसारका चक्र । जन्ममरणका प्रवाह.

संसारमार्ग, (पु०) ६ त० । संसारका पथ (रास्ता) । योनिद्वार (योनिहीसे वाहिर निकलनेपर मायाका मोहपना है).

संसारमोक्ष, (पु०) (संसारात् मोक्षः) संसार (जन्ममरणप्रवाह) से छुटकारा । अंतिम छुटकारा । मुक्ति । नजात ।

संसारिन्, (त्रि०) संसरति (अदृष्टभेदेन देहेन सह संयुज्यते) । सम्+सृ+णिनि । किसी पुण्यपापके कारण शरीरके साथ जुडता है । शरीरका अभिमानी जीवात्मा.

संसिद्ध, (त्रि०) सम्यक् स्वभावेन वा सिद्धः । सम्+सिध्+क्त । स्वभावहीसे वनगया । भलीभांति वनाहुआ.

संसृति, (स्त्री०) सम्+सृ+क्तिन् । संसारका प्रवाह । संगति । मेल.

संसृष्ट, (पु०) सम्+सृज्+क्त । विभागके अनन्तर मित्रतासे फिर अपने २ धनोंमें संबंध रखनेहारा भाईआदि "संसृष्टस्य तु संसृष्टिः" इति स्मृतिः । वमन(कै)आदिसे साफहुआ । और मिलाहुआ । "भावे क्त" मेल.

संसृष्टिन्, (पु०) संसृष्टं अनेन+इनिः । मिलाहुआ भाईआदि.

संस्कर्तृ, (पु०) सम्+कृ+तृच्-सुट्च । संस्कारकारक । विवाहआदि संस्कार करनेहारा । साफ करनेहारा । पाचक । रसोइआ.

संस्कार, (पु०) सम्+कृ+घञ्-सुट् च । शुद्धकरना । स्मृतिका कारण अनुभवसे उपजा आत्माका एक गुण । पृथिवीआदि चारोंमें रहनेहारा "वेग" नामी गुण । शास्त्रके अभ्याससे उत्पन्नहुआ ज्ञान (लिआकत) । व्याकरणकी रीतिसे शब्दोंका साधनप्रकार (बनानेका ढव) । ब्राह्मणआदिका वेदमें कहेहुए कर्मोंकी योग्यताका साधन, गर्भाधानआदि क्रियाओंका समूह । पाक (पकना-रसोई) । विवाहादि दस प्रकारका धर्म.

संस्कारपूत, (त्रि०) (संस्कारेण पूतः) वैदिक रीतिसे पवित्र किया गया । विद्यासे शुद्ध किया हुआ.

संस्कृत, (त्रि०) सम्+कृ+क्त-सुट् च । संस्कार (साफ) कियाहुआ पदार्थ । व्याकरणआदि लक्षणके आधीन साधनवाला शब्द । पकाहुआ । सजाहुआ । और शोधित (साफ कियाहुआ).

संस्कृतोक्ति, (स्त्री०) (संस्कृता उक्तिः) संस्कार किया गया वचन । साफ कीगई वाणी (बोली).

संस्तर, (पु०) सम्+स्तॄ+अप् । यज्ञ । शय्या (छेज-पलंग) । पत्तोंकी बनीहुई शय्या (पलंग) । विस्तरा.

संस्तव, (पु०) सम्+स्तु+अप् । परिचय (वाकफीयत) अच्छीतरह प्रशंसा कियाहुआ.

संस्त्याय, (पु०) सम्+स्त्यै+घञ् । संघात । गाढ । फैलाव । घर.

संस्थ, (त्रि०) सम्+स्था+क । अवस्थित (टिकाहुआ) और मृत (मरगया).

संस्थित, (त्रि०) सम्+स्था+क्त । मृत । (मराहुआ) । अच्छीतरह ठराहुआ.

संस्फुट, (त्रि०) सम्+स्फुट्+क । विकसित । खिलाहुआ.

संस्फोट, (पु०) सम्+स्फुट्+घञ् । युद्ध । जंग । लढाई.

संहत, (त्रि०) सम्+हन्+क्त । दृढ (पक्का) । मिलाहुआ । दूसरेके साथ मिलाहुआ । "संहतपरार्थत्वात्" इति सांख्यम्.

संहतजानु, (त्रि०) (संहतौ जानू यस्य) । मिलेहुए (जुडेहुए) घुटनोंवाला.

संहतस्तनी, (स्त्री०) (संहतौ स्तनौ यस्याः) । एक दूसरेसे मिलेहुए स्तनोंवाली स्त्री । घनस्तनी.

संहति, (स्त्री०) सम्+हन्+क्तिन् । समूह (बहुतसा मेल) । सम्यग् हनन । भलीभांति चोट लगाना.

संहनन, (न०) संहन्यते (परार्थं संसृज्यते) । सम्+हन्+ल्युट् । देह । शरीर । संघात (समूह) । और वध (मारना).

संहर्ष, (पु०) सम्यक् हर्षः । सम्+हृष्+घञ् । आनन्द (खुशी) । "संहृष्यति अनेन" प्रसन्न होता है इससे । वायु (हवा).

संहार, (पु०) सम्+हृ+घञ् । प्रलय । नाश (तबाही) । एक नरक.

संहिता, (स्त्री०) सम्यक् हितं (प्रतिपाद्यं) यस्याः । जो अच्छी बातको वर्णन कर्ती है । मनु आदिसे रचाहुआ धर्मशास्त्र । पुराण । इतिहास (तारीख आदि) । कर्मकाण्डको प्रतिपादन करनेहारा वेदका भाग.

संहूति, (स्त्री०) सम्+ह्वेञ्+क्तिन् । बहुतोंसे बुलाया जाना.

संह्रादिन्, (त्रि०) सम्+ह्रद+णिनि । शब्द करनेहारा.

सकर्ण, (त्रि०) सह कर्णेन । श्रुतिशील । सुननेहारा । कानवाला.

सकर्मक, (त्रि०) सह कर्मणा+कप् । व्याकरणमें कर्मवाली क्रियाको जतलानेहारा धातु (जिसका फल दूसरेपर पडता है).

सकल, (त्रि०) सह कलया । "सह" को "स" का आदेश होता है । सम्पूर्ण (सारा) । कलासहित । हुन्नरजाननेवाला.

सकारण, (त्रि०) सह कारणेन । कारणके साथ कार्य । जैसे मट्टीका कार्य "घडा" है.

सकाश, (पु०) कश+घञ् । सह काशेन । अन्तिक । समीप । पास.

सकुल्य, (त्रि०) समाने कुले भवः+यत् । एकही कुलमें हुआ । अपनेसे ऊंचे वा नीचे आठवीं पीढीतक पुरुषोंका समूह । दायभाग (विरसा) लेनेमें अपनेसे ऊपर वा नीचेकी पांचवीं पीढीमें कोई पुरुष । जातभाई.

सकृत्, (अव्य०) एकवार.

सकृत्प्रज, (पु०) सकृत् (एकवारं) प्रजायते । प्र+जन्+ड । एकवार उत्पन्न होता है । कौआ । काक । एकवार पैदाहुए सन्तानवाला (त्रि०).

सकृत्फला(ली), (स्त्री०) सकृत् फलति । फल्+अच् । एकवार फलता है । कदलीवृक्ष (केलेला द्रख्त).

सक्त, (त्रि०) सञ्ज्+क्त । आसक्त (फंसाहुआ) । अविरत । लगाहुआ.

सक्तु, (पु०) सच्+तुन् । भृष्टयवादिचूर्ण (भुनेहुए जौं (आदिक चूरा) सत्तु.

सक्थि, (न०) सञ्ज्+क्थिन् । ऊरु (पट्ट) । शकटावयव । गाडीका जोड.

सखि, (त्रि०) सह (समानं) ख्यायते । ख्या+इन्-नि० । सौहार्दयुक्त (प्रेमसहित) । समानप्रीतिकरनेहारा.

सखी, (स्त्री०) सखि+ङीप् । सहचरी (साथन) । वयस्या । सहेली.

सख्य, (न०) सख्युर्भावः+यत् । मित्रका होना । मित्रता । दोस्ती.

सगर, (पु०) सह गरेण (विषेण) जातः । विष (जहिर)-के साथ उपजा । सूर्यवंशका एक राजा । "सगरात् सागरो जातः" इति पुराणम् । विषवाला (त्रि०).

सगर्भ, (पु०) सह (समानः) गर्भः अस्य । बराबर गर्भवाला । सहोदर भ्राता (एक पेटमें उपजा भाई)। सगा भाई । "सहगर्भ" गर्भवाला.

सगोत्र, (न०) सह (समानं) गोत्रम् । एकगोत्र । कुल । "सह (समं) गोत्रं अस्य" एकगोत्रवाला । जातभाई (त्रि०).

सग्धि, (स्त्री०) अद्+क्तिन् । नि० । सह ग्धिः । सहभोजन । साथ खाना.

सङ्कट, (त्रि०) सम्+कटच् । अल्पावकाशस्थान । छोटी जगह । संबाध (पीडा-कष्ट)। "सम्+कट्+अच्" दुःख । "टाप्" एक देवी । ज्योतिषमें एक दशा (स्त्री०).

सङ्कर, (पु०) सम्+कृ+अप् । संमार्जनी (बहारी झाडू) आदिसे फेंकाहुआ रजः (धूरी)। मेलन । मेल । एक प्रकारकी जाति (पुरुष और स्त्री) और दोगला.

सङ्कर्षण, (पु०) संकृष्यते गर्भात् गर्भान्तरं नीयतेऽसौ । सम्+कृष्+युच् । जो एक गर्भसे दूसरे गर्भमें लेजाया गयाथा । बलदेव । "भावे ल्युट्" आकर्षण (खेंचना)। और दूसरे स्थानमें लेजाना (न०).

सङ्कलन, (न०) सम्+कल्+ल्युट् । एकत्र स्थिरीकरण । एकजगहपर इकट्ठा करना । योजन । जोडना । संग्रह (जमाकरना).

सङ्कल्प, (पु०) सम्+कृप्+घञ् । अभीष्टसिद्धि (चाहीगई वस्तुके) पानेके लिये "यह इसी प्रकार करना उचित है" इस प्रकार मनका व्यापार । खयाल । कर्मके साधनके लिये अभिलाषवचन.

सङ्कल्पजन्मन्, (पु०) संकल्पात् जन्म यस्य । जिसका संकल्प (खयाल) से जन्म होता है । कामदेव । "संकल्पभव".

सङ्कल्पयोनि, (पु०) संकल्पः योनिः (उत्पत्तिकारणं) यस्य । जो संकल्पसे उपजता है । कामदेव । "संकल्पयोनेरभिमानभूतं" कुमारः.

सङ्कसुक, (त्रि०) सम्+कस्+उकन् । अस्थिर (जो एक बातपर ठहिरता नहिं)। मन्द (मूर्ख)। दुर्जन । दुष्टजन (बदमाश)। कलंकलगानेवाला.

सङ्काश, (त्रि०) सम्यक् काशते । काश्+अच् । सदृश । समान "निभ" आदिकी भांति इसे नित्य समानता है.

सङ्कीर्ण, (त्रि०) सम्+कृ+क्त । बहुत जनोंके संघर्ष (रगड)-से निरवकाश स्थान । मनुष्योंसे भराहुआ । भीड । मिलाहुआ । सिकुडाहुआ । वर्णसंकर (दोगला) (पु०).

सङ्कुचित, (त्रि०) सम्+कुच्+क्त । कृतसंकोच । सिकुडाहुआ । संक्षिप्त (थोडेमें कहाहुआ)। अप्रफुल्ल । न खिलाहुआ.

सङ्कुल, (न०) सम्+कुल्+क । परस्परपराहतवाक्य । आपसमें टूटनेहारा वचन (मैंने अपने जीवतक मौन धारण किया । मेरा पिता ब्रह्मचारी और माता वंध्या है और मेरे पितामहके यहां कोई पुत्र न हुआ)। आपसमें मारनेवाली लडाई । बहुत भीड । सिकुडाहुआ (त्रि०).

सङ्केत, (पु०) सम्+कित्+घञ् । मनके भावको प्रकाश करनेके लिये हाथ आदिके चलानेका व्यापार (इशारा)। अर्थको बोधन करनेहारी एक प्रकारकी शब्दमें रहनेहारी शक्ति । प्यारेको मिलनेके लिये गुप्त (छिपाहुआ) स्थान.

सङ्केतित, (त्रि०) संकेतः जातः अस्य+इतच् । संकेतवाला वाच्य अर्थ । संकेतकियाहुआ । इशारा किया गया.

सङ्कोच, (पु०) सम्+कुच्+घञ् । बहुत विषयवाले वाक्यको अल्प (थोडे) विषयमें लाना । संक्षेप । सिकुडना । एक मच्छी और केसर (न०).

सङ्क्रन्दन, (पु०) संक्रन्दयति असुरान् । सम्+क्रन्द्+णिच्+ल्यु । दैत्योंको अच्छीतरह रुलाता है । इन्द्र । "भावे ल्युट्" अच्छीतरह चिल्लाना (रोना) (न०).

सङ्क्रमण, (न०) सम्+क्रम्+ल्युट् । संक्रान्ति । जाना । सूर्यका एक राशिसे दूसरी राशिमें जाना । बीचमें आना । लांघजाना.

सङ्क्रान्ति, (स्त्री०) सम्+क्रम्-क्तिन् । सम्यक् क्रमण । अच्छा जाना । इकट्ठे जाना । मेल । एक जगहसे दूसरी जगह जाना । सूर्यआदिका दूसरी राशिओंमें जाना । दूसरेको देडालना.

सङ्ख्य, (न०) संख्यायते (परस्परनामोच्चारणं क्रियते) अत्र । सम्+ख्या+घञर्थे क । जहां एक दूसरेका नाम उच्चारण कर्ते हैं । युद्ध (जंग)। लडाई । "अङ्" । विचार । बुद्धि । द्रव्यके आश्रित एकत्व द्वित्व आदि गुणविशेष । (स्त्रियां टाप्).

सङ्ख्यात, (त्रि०) सम्+ख्या+क्त । कृतसंख्य । गिनाहुआ । गुनागया । बहुत प्रसिद्ध.

सङ्ख्यावत्, (पु०) संख्या (विचारणा) सा अस्ति अस्य+मतुप् । "म" को "व" होता है । विचारवाला । पंडित । गिन्तीवाला (त्रि०).

सङ्ख्येय, (त्रि०) संख्यायतेऽसौ । सम्+ख्या+यत् । गुनेके लायक । गिन्नेके लायक.

सङ्ग, (पु०) सञ्ज्+घञ् । मेल । संबंध । विषयआदिमें राग । "ध्यायतो विषयान् पुंसः संगस्तेषूपजायते" गीता । (मिलना)। "कर्तरि क्त" मिलाहुआ (त्रि०).

सङ्गत, (न०) सम्+गम्+भावे क्त । सौहार्द । मित्रता.

सङ्गति, (स्त्री०) सम्+गम्+क्तिन् । संगम । मेल । मिलना । सभा । परिचय (वाकफीयत) विषयरसका मेल । किसीबातका अचानक होजाना । ज्ञान । विशेषज्ञानके लिये पूछना.

सङ्गम, (पु॰) सम्+गम्+घञ्-न वृद्धिः। संगति (मेल)। स्त्री और पुरुषका संभोग। नदीआदिका नद (बडा दर्या) आदिके साथ मिलनेका स्थान। "गंगासागरसङ्गमः" इति पुराणम्.

सङ्गर, (पु॰) संगीर्यते। सम्+गृ+अप्। आपद् (मुसीबत)। युद्ध (जंग-लडाई)। प्रतिज्ञा (इकरार)। कामकरनेहारा। विष (जहिर) शमीका वृक्ष.

सङ्गव, (पु॰) संगता गावो दोहनाय अत्र काले नि॰। जिस समय गौएं चोनेके लिये इकट्ठी होती हैं। प्रातःकालके अनन्तरके तीन मुहूर्त (छ घडियें).

सङ्गिन्, (त्रि॰) सञ्ज्+घिनुण्। संगयुक्त। संगवाला। साथी। भोगी। शहवती। स्त्रियां ङीप्.

सङ्गीत, (न॰) सम्+गै+क्त। दर्शनके लिये नाट्य, गीत, वाद्यत्रिक। नाचना-गाना-बजाना-तीनों। उन तीनोंको प्रतिपादन (वर्णन) करनेहारा ग्रंथ। "कर्मणि क्त"। सम्यग् गीत। भलीभांति गायाहुआ (त्रि॰).

सङ्कीर्ण, (त्रि॰) सम्+गृ+क्त। स्वीकृत। मानाहुआ.

सङ्ग्रह, (पु॰) सम्+ग्रह्+अप्। संशय। इकट्ठा। संक्षेप। थोडासा। बहुत अर्थवाले वाक्योंको एक स्थानमें जोडना.

सङ्ग्रहणी, (स्त्री॰) संचिता ग्रहणी। इस नामका एक रोग। कब्जी.

सङ्ग्राम, (पु॰) संग्राम-लडाई करना+घञ्। युद्ध। जंग। लडाई.

सङ्ग्रामपटह, (पु॰) ६ त॰। युद्धका बाजा। रणवाद्यविशेष.

सङ्ग्राहिन्, (पु॰) सम्यक् गृह्णाति मलं। सम्+ग्रह्+णिनि। भलीभांति मलको लेता है। कुटजवृक्ष। मलको रोकनेवाला (मलावष्टम्भक)। संग्रह (इकट्ठा) करनेहारा (त्रि॰).

सङ्घ, (पु॰) सम्+हन्+घञ्। सजातीयसमूह। एकजातिवालोंका मेल। समूह। बहुतसे इकट्ठे रहनेवाले लोग.

सङ्घट, (पु॰) सम्+घट्+घञ्। परस्परसंघर्षण। आपसमें रगडना। भीड। गठन। गांठना। चक्र। पहिया.

सङ्घर्ष, (पु॰) सम्+घृष्+घञ्। परस्परघर्षण। आपसमें रगडना। पीसना। आपसमें टकराना। स्पर्धा। हसद.

सङ्घशस्, (अव्य॰) संघ+वीप्सार्थे शस्। भूरिशः। इकट्ठे होकर। बहुतही समूह.

सङ्घात, (पु॰) सम्+हन्+घञ्। समूह। एक नरक। सम्यग् हनन (अच्छीतरह चोट लगाना)। दृढसंयोग। पक्का मेल। और कफ.

सचि(ची), (स्त्री॰) सच्+इन्-वा ङीप्। इन्द्राणी। इन्द्रकी स्त्री.

सचिव, (पु॰) सच्+इन्। वा+क। सहाय (मदतकरनेहारा)। मंत्री। वजीर.

सचेतन, (त्रि॰) सह चेतनया। विशिष्टज्ञानयुक्त। विशेषज्ञानवाला। अच्छीसमझवाला। चेतनाके साथ। होशके साथ। होशिआर.

सचेष्ट, (पु॰) सचते-सच्+अच्। तथाभूतः सन् इष्टः। आम्र। आम (अंब)। "सह चेष्टया" चेष्टान्वित। चालाक (त्रि॰).

सच्चिदानन्द, (पु॰) सत् (नित्यः) चित् (चैतन्यं) आनन्दः (सुखस्वरूपं) त्रिपद। कर्म॰। नित्यज्ञान और सुखस्वरूप ब्रह्म। परमात्मा.

सच्छूद्र, (पु॰) कर्म॰। अच्छा शूद्र। गोप (गवाला)। गूजर। और नापित। नाई.

सजाति, (पु॰) समाना जातिः अस्य। एकजातिवाला। समान वर्णसे समान वर्णवाली कन्यामें उत्पन्न कियाहुआ पुत्र। समानजातिवाला (त्रि॰).

सजातीय, (त्रि॰) समानां जातिं अर्हति। छ (ईय)। समानधर्मवाला। अपनीजातिका.

संजु(जू)स्, (अव्य॰) सहार्थे। साथके अर्थमें.

सज्ज, (त्रि॰) सस्ज्+अच्। उद्युक्त। तयारहुआ। संनद्ध। "सज्ज" अयोजन (लगाना-जोडना)। वेश (सजाहुआ)। "सतो जायते-जन्+ड"। साधु (भले) से उपजाहुआ। अथवा सत्से हुआ (त्रि॰).

सज्जन, (त्रि॰) सस्ज्+णिच्+ल्युट्। रक्षाके लिये सेनाका स्थापन। सस्ज्+ल्युट्। आयोजन (जोडना)। सन् जनः। भला मानुष। अच्छी कुलमें उत्पन्नहुआ (पु॰)। राजाआदिके चढनेके लिये हाथीका सजाना.

सञ्चय, (पु॰) सम्+चि+अच्। समूह। और संग्रह (इकट्ठा).

सञ्चयिन्, (पु॰) सम्+चि+इनि। संग्रहकारक। जमाकरनेहारा.

सञ्चार, (पु॰) सञ्चरति अनेन्। सम्+चर्+घञ्के अर्थमें "क" वा घञ्। सेतु (पुल)। देह (शरीर)। ग्रहआदिका दूसरी राशिमें जाना। "भावे क"। भलीभांति जाता.

सञ्चारिन्, (पु॰) सम्+चर्+णिनि। वायु (हवा)। अलंकारमें शृंगाररसआदिका अनुसारी भावविशेष। चलनेहारा (त्रि॰).

सञ्चित, (त्रि॰) सम्+चि+क्त। संगृहीत। इकट्ठाकियाहुआ.

सञ्जवन, (न॰) सम्+जु+युच्। आपसमें एक दूसरेके सामने बनाहुआ चतुःशालगृह (चौखंडीवाला घर).

सज्जित, (त्रि०) सज्जा जाता अस्य+इतच् । कृतवेश । सजाहुआ । पौशाकपहिनेहुए । संनद्ध (तयारहुआ).

सञ्जीवन, (न०) सम्+जीव+ल्युट् । चतुःशाल गृह । चौखंडीवाला घर । अच्छीतरह प्राणोंको धारण करना । जीना.

सट, (न० स्त्री०) सट्+अच् । व्रतिओंका केशसमूह । जटा शिखा (चोटी) । सिंह (शेर) आदिका केशर.

सत्, (त्रि०) अस्+शतृ । सत्य (सच) । साधु (भला) । पूजागया । धीर (धीरजवाला) । प्रशस्त (वहुत अच्छा) । और विद्यमान (जो है) । "स्त्रियां ङीप्" । पतिव्रता स्त्री । दक्षकी कन्या । ब्रह्म (न०) । आदर (अव्य०).

सतत, (न०) सम्+तन्+क्त-पृ० । निरन्तर (लगातार) । जो निरन्तर हो (त्रि०).

सतत्त्व, (न०) सह (सदृशं) तत्त्वेन । तत्त्वके अनुसार । स्वभाव.

सतानन्द, (पु०) गौतमका पुत्र । अहल्याके गर्भमें उपजा । एक मुनि.

सतीर्थ्य, (पु०) समाने तीर्थे (गुरौ) वसति+यत् । "समान" को "स" का आदेश होता है । एक गुरुके पास रहता है । एकही गुरुके पास पढनेहारे विद्यार्थी । गुरुभाई.

सत्कर्तृ, (पु०) सत्+कृ+तृच् । विष्णु । अच्छा करनेहारा (त्रि०).

सत्कर्मन्, (न०) कर्म० । वेदादिमें विधान कियाहुआ यज्ञआदि कर्म.

सत्कार, (पु०) सत्+कृ+घञ् । सम्मानन । आदर । पूजन.

सत्कृत, (त्रि०) सत्+कृ+क्त । पूजाहुआ । आदर किया-हुआ.

सत्क्रिया, (स्त्री०) सत्+कृ+श । सत्कार । आदर । सम्मानन । पूजन.

सत्तम, (त्रि०) अतिशयेन सन्+तमप् । अतिशयसाधु । बहुत अच्छा.

सत्ता, (स्त्री०) सतो भावः+तल् । होनापन । द्रव्य, गुण और कर्ममें रहनेहारी जातिविशेष । विद्यमानता । वर्तमान । होना.

सत्र, (न०) सद्+त्रल् । स्थान । यज्ञ । सदादान (प्रतिस-मय देना) । आच्छादन (ढकना) । अरण्य (जंगल) । कैतव । छल । धन । गृह (घर) । सर । तालाव । दान । खैरात.

सत्रशाला, (स्त्री०) ६ त० । अन्न, जलआदि देनेके लिये बनायाहुआ घर । धर्मशाला.

सत्राजित्, (पु०) सत्रेण आजयति लोकान् । आ+जि+ क्विप् । श्रीकृष्णजीका ससुर (सौरा) । सत्यभामाका पिता । एक राजा.

सत्रिन्, (पु०) सत्रं (गृहं) यज्ञः वा विद्यते अस्य+इनि । गृहपति । गृहस्थ । जो घरमें रहता है.

सत्त्व, (न०) सतो भावः+त्व । सांख्यशास्त्रमें प्रकाश-आदिका साधन । प्रकृतिका अवयव (हिस्सा) एक पदार्थ । "तत्र सत्त्वं निर्मलत्वात् प्रकाशकमनामयम्" गीता । (ये दो तकारका शब्द है पृ०) । एक तकार हो तो इसका अर्थ "स्वभाव" "प्राण" "उद्यम" "रण" "आत्मा" "चित्त" आयु (उमर) । और धन । न्यायमें सत्तारूप जातिविशेष । जन्तु । जीव (पु० न०).

सत्पथ, (पु०) कर्म० । शोभनमार्ग । अच्छा रास्ता । वेदादिमें विधान कियागया आचार (चालचलन).

सत्प्रतिग्रह, (पु०) सद्भ्यः प्रतिग्रहः । भले पुरुषोंसे दियेहुए धनका प्रतिग्रह (लेना).

सत्प्रतिपक्ष, (पु०) कर्म० । एक जैसा विरोध करने-हारा न्याय । एकप्रकारका हेतुसम्बन्धी दोष.

सत्फल, (पु०) सन्ति शोभनानि फलानि अस्य । जिसके अच्छे फल होते हैं । दाडिम । अनारका वृक्ष । अच्छे फलवाला (त्रि०).

सत्य, (न०) सते हितं+यत् । सत्ययुग । शपथ (सौं-कस) । सिद्धान्त (फैसला) । और ठीक २ । उसवाला (त्रि०) । अश्वत्थ (पीपलका द्रख्त) । और नान्दीमुख श्राद्धका देवता (पु०).

सत्यङ्कार, (पु०) सत्य+कृ+घञ् । नि० मुम् । "मैने ये अवश्य मोल लेना है इस प्रकार सत्य करना" । सत्यापन । बयानादेना.

सत्यपुर, (न०) सत्ययुक्तं पुरम् । सत्यवाला नगर । विष्णुलोक.

सत्यभामा, (स्त्री०) सत्राजित् राजाकी कन्या । श्रीकृष्णकी स्त्री.

सत्यम्, (अव्य०) स्वीकार । मात्रा । कवूलकरना । हां.

सत्ययुग, (न०) सत्यप्रधानं युगम् । शाक० । बहुत सत्यवाला पहिला युग (समय).

सत्यलोक, (पु०) सत्यप्रचुरो लोकः । बहुत सत्यवाला लोक । ऊपरके सात लोकोंमेंसे सवसे ऊपरका.

सत्यवचस्, (पु०) सत्यं वचः अस्य । जिसका सच्च-वचन है । मुनि । सच्चे वचनवाला (त्रि०) । "सत्या वचनः" यही अर्थ.

सत्यवत्, (पु०) सत्यं विद्यते अस्य मतुप् । "म" को "व" । सत्यवाला । सावित्रीका पति । एक राजा । एक मुनि । सत्ययुक्त (त्रि०) । "स्त्रियां ङीप्" और वह व्यासदेवकी माता है । "सत्यवती".

सत्यवतीसुत, (पु०) ६ त० । मत्स्यगन्धा (धीवरी)का पुत्र व्यासमुनि.

सत्यवाच्, (पु०) सत्या वाक् यस्य । सच्ची वाणीवाला । ऋषि । और कौआ (इसके शब्दसे शुभ और अशुभका निश्चय होता है) । "सत्यवदनशीलः" सत्य कहना जिसका स्वभाव है (त्रि०).

सत्यवादिन्, (त्रि०) सत्यं वदति । वद्+णिनि । यथार्थ वाक्यका वक्ता । सच्चा वचन कहनेहारा । सत्य बोलनेहारा.

सत्यव्रत, (पु०) सत्यं व्रतं अस्य । सच्चेव्रतवाला । त्रिशङ्कुनाम राजा । सत्यतत्पर (जो सत्यको कभी न छोड़े) (त्रि०).

सत्यसङ्गर, (पु०) सत्यः सङ्गरः (प्रतिज्ञा) यस्य । जिसकी प्रतिज्ञा (इकरार) सच्ची है । कुबेर । सत्यप्रतिज्ञ । (त्रि०).

सत्यसन्ध, (त्रि०) सत्या सन्धा (सन्धानं) यस्य । सच्चा मेल करनेहारा । सच्ची प्रतिज्ञाकरनेहारा । अपने वचनपर स्थिर । दियानतदार । रामचन्द्र.

सत्यानृत, (न०) सत्यसहितं अनृतं यत्र । जहां सच्चके साथ झूठ है । वणिग्वृत्ति । बनियेका काम । व्यापार.

सत्यापन, (न०) सत्य+णिच्-पुक्‌च-ल्युट् । सत्याकृति । "यह वस्तु मैं अवश्य लूंगा" इस प्रकार सत्य करना । बयाना देना-साईदेना । "युच्" सत्यापना । यही अर्थ.

सत्योद्य, (त्रि०) सत्यं उद्यं यस्य । वद्+क्यप् । सत्यवादी । कर्म० । सच्चावचन (न०).

सत्वर, (न०) सह त्वरया । शीघ्र (जल्दी) । त्वरान्वित (जल्दी करनेवाला) (त्रि०).

सत्त्वविप्लव, (पु०) । सत्त्वस्य विप्लवः । सत्त्व (ज्ञान-होश-चेतनता) का नाश.

सत्त्वस्थ, (त्रि०) । सत्त्वे तिष्ठति । धैर्यमें रहनेवाला । स्वरूपमें स्थित । स्वभावमें रहनेवाला । धैर्यशाली ।

सत्त्वोद्रेक, (पु०) । सत्त्वस्य उद्रेकः । सत्त्व (भलाई-सच्चापन) का बढना.

सदन, (न०) सीदति अस्मिन् । सद्+ल्युट् । गृह । घर । जल । पानी.

सदय, (पु०) सन्+अयः । अच्छे शुभको देनेहारी विधि । "सह दयया" दयाके साथ । दयान्वित (त्रि०).

सदस्, (स्त्री० न०) सीदति अस्यां । सद्+असि । सभा । "जिसमें बैठता है.

सदस्य, (पु०) सदसि साधुः वा वसति+यत् । सभामें अच्छा वा वास कर्ता है । न्यून वा अधिक हुए विषयको ठीक रीतिपर लानेका उपाय दिखानेहारा । सभासद (त्रि०).

सदा, (अव्य०) सर्वस्मिन् काले+दाच् सादेशः । सर्वदा । हरवक्त । हमेश । नित्य.

सदागति, (पु०) सदा गतिः अस्य । सदा चलनेहारा । वायु (हवा) । सदागतिवाला (त्रि०).

सदाचार, (पु०) कर्म० । ६ त० वा । ब्रह्मावर्तदेशमें परम्परासे चला आ रहा नियम । साधुओंका आचरण (चलन).

सदातन, (पु०) सदाभवः । सदा+ट्युल्-तुट् च । विष्णु । नित्य (त्रि०).

सदात्मन्, (त्रि०) सन् (साधुः) आत्मा (चित्तं) यस्य । अच्छेचित्तवाला । साधुचित्त.

सदादान, (पु०) सदा दानं (मदजलं) त्यागो वा यस्य । जिसका मस्तीका पानी सदा होता है अथवा जो सदा दान कर्ता है । ऐरावत गज । इन्द्रका हाथी । सदा त्याग करनेहारा (त्रि०).

सदानन्द, (पु०) सदा आनन्दः यस्य । जिसको सदा आनन्द है । शिवजी । निरन्तर आनन्दवाला (त्रि०).

सदानर्त, (पु०) सदा नृत्यति । नृत्+अच् । सदा नाचता है । खञ्जन विहग । ममोला पक्षी । सदा नाचनेहारा (त्रि०).

सदानीरा, (स्त्री०) सदा नीरं अस्याम् । जिसमें सदा पानी है । करतोया नदी.

सदाशिव, (पु०) सदा शिवं अस्मात् । जिस्से सदा कल्याण होता है । महादेव । शंकर । शिवजी.

सदुत्तर, (न०) कर्म० । प्रतिज्ञापत्रके अनुसार उत्तर । पूछेहुएका ठीक उत्तर (जवाब) अच्छेउत्तरवाला । (त्रि०).

सदृक्ष, (त्रि०) समानं दर्शनं अस्य । दृश्+क्स् "समान" को "स" का आदेश होता है । तुल्यरूप । एक जैसा । बराबर । "सदृश्" और "सदृश" भी होता है.

सदेश, (पु०) सह देशेन । देशके साथ । निकट (नजदीक) । देशवाला (त्रि०).

सद्धेतु, (पु०) कर्म० । न्यायमें हेत्वाभासके दोषसें रहित हेतु । अच्छा हेतु (साध्यमें रहनेहारा हेतु).

सद्भाव, (पु०) सतो भावः । सन् वा भावः । होनापन । विद्यमानता । साधुभाव । अच्छा भाव.

सद्भूत, (न०) असत्-सत् भूतम् । सत्+च्वि+भू+क्त । यथार्थ । ठीक । उसवाला (त्रि०).

सद्मन्, (न०) सीदति अस्मिन् । सद्+मनिन् । जिसमें बैठता वा दुःख उठाता है । गृह (घर) । और जल । पानी.

सद्याकृत, (त्रि०) सद्यः (तत्क्षणात्) कृतः । कृ+क्त । तत्क्षणकृत । उसीक्षणमें कियाहुआ । झट कियाहुआ.

सद्यःप्राणकर, (त्रि०) सद्यः प्राणं (बलं) आयुर्वृद्धिं च करोति। कृ+अच्। झट बल वा जीवनको कर्ता है। ताजा मांस, नया अन्न, बाला स्त्री, दूधका भोजन, घी और गरम पानी, ये छ प्राणकर हैं.

सद्यःप्राणहर, (त्रि०) सद्यः प्राणं (आयुर्बलं) वा हरति। झट जीवन वा बलको दूर कर्ता है। सूका मांस, बूढी स्त्री, नया सूर्य, खट्टा दही, प्रातःकालका भोग और नींद, ये प्राणहर समझो.

सद्यःशौच, (न०) सद्यः शीघ्रं अपनेयं अशौचम्। जल्दी नाश होनेलायक अपवित्रता। जल्दी सफाहोना.

सद्योजात, (पु०) सद्यो जायते। जन्+कर्तरि क्त। वत्स। बछडा। शिवजीकी एक मूर्ति। शीघ्र उत्पन्नहुआ (त्रि०).

सद्वृत्त, (न०) वृत्+क्त। कर्म०। अच्छे स्वभाववाला। अच्छी जीविकावाला। ६ ब०। अच्छे चरित्र (चाल-चलन) वाला (त्रि०).

सद्वृत्ति, (स्त्री०) कर्म०। उत्तम चरित्र। उत्तम व्याख्यान-वाला ग्रन्थ। "सती वृत्तिः यस्य" अच्छी जीविकावाला (त्रि०).

सधर्मन्, (त्रि०) समानः धर्मः अस्य+अनिच्। "समान" को "स" एक जैसे धर्मवाला। सदृश। बराबर। स्त्रियां वा टाप्.

सधर्मचारिणी, (स्त्री०) सह धर्मं चरति। चर्+णिनि। साथ होकर धर्मका आचरण करनेहारी। भार्या (स्त्री-जोरू).

सधर्मिन्, (त्रि०) समानं धर्मं चरति। एक जैसा धर्म करनेहारा। स्त्रीलिङ्गमें "ङीप्" होनेसे पत्नी-(स्त्री) के अर्थमें भी है.

सधवा, (स्त्री०) सह धवेन। वह स्त्री कि जिसका पति जीता है.

सध्र्यंच्, (त्रि०) सह अञ्चति। अञ्च्+क्विप्। "सह" को "सध्रिः" होता है। सहचर। साथ विचरनेहारा.

सनक, (पु०) सन्+वुन्। एक मुनि। "सनकश्च सनन्द-नश्चेति" तर्पणमन्त्रः.

सनत्, (पु०) सन्+अति। चतुर्मुख ब्रह्मा। "सदा" (अव्य०).

सनन्द, (पु०) सह नन्देन। नन्दके साथ। एक मुनि। आनन्दवाला (त्रि०).

सनत्कुमार, (पु०) ६ त०। ब्रह्माका पुत्र। एक मुनि.

सनसूत्र, (न०) सनस्य सूत्रं अस्ति अस्य+अच्। पृ०। मच्छी पकडनेके लिये सनके सूतका बनाहुआ जाल.

सना, (अव्य०) सदा-नि०। "द" को "न" होता है। हमेशा.

सनातन, (त्रि०) सदा+ख्युल्-तुट्च। नि०। सदा होने-वाला। और निश्चल (न हिलनेहारा)। "स्त्रियां ङीप्" सरस्वतीके अर्थमें भी है। लक्ष्मी। शिव। ब्रह्मा। स्वर्गका मनुष्य (पु०).

सनाभि, (पु०) समानः नाभिः यस्य। ज्ञाति। जात-भाई। एक देहमें उत्पन्न होनेसे समान नाभिपन है। मध्य (बीच) वाला। और स्नेहयुक्त। पियारवाला। (त्रि०).

सनामक, (पु०) सना (सदा) अमयति। अम्+ण्वुल्। सदा रोगी कर्ता है। शोभाञ्जन (सुहांजने) का वृक्ष (इसके पत्ते आदि खानेसे रोग उपजता है)। "सह नाम्ना कप्" नामवाला (त्रि०).

सनिष्ठी-व, (न०) सह निष्ठी(ष्ठे)वेन। मुखसे गिरेहुए जलकणके साथ। मूकके साथ.

सनीड, (त्रि०) समानं नीडं, सह नीडेन वा। पास रहने-हारा। नीडवाला। विडवाला.

सन्तत, (पु०) सम्+तन्+क्त। सतत। निरन्तर। लगातार। निरन्तर (सदा) वाला। और विस्तीर्ण (फैलाहुआ) (त्रि०).

सन्तति, (स्त्री०) सन्तन्यते (फैलाया जाता है)। सम्+तन्+क्तिच्। गोत्र। नाम। पुत्र। कन्या (लडकी)। "भावे क्तिन्" विस्तार (फैलाव)। पङ्क्ति (कतार)। अविच्छिन्नधारा। न रुकनेहारी धार.

सन्तप्त, (त्रि०) सन्+तप्+क्त। मार्गके चलनेसे थका-हुआ। आगसे शुद्धहुआ। अग्निमें तपाहुआ.

सन्तमस, (न०) सन्ततं तमः+अच् समा०। गाढ (ब-हुतही) अंधेरा। और मोह.

सन्तान, (पु०) सम्+तन्+घञ्। वंश। अपत्य। खान्दान। औलाद। विस्तार। कल्पवृक्ष.

सन्तानिका, (स्त्री०) सम्+तन्+ण्वुल्-टाप्-अत इत्वम्। क्षीरसर। दूधका लच्छा। मलाई। खोआ। फेन। झाग। छुरीका फल्टा.

सन्ताप, (पु०) सम्यक् तापः। प्रा०। वह्नि (आग)-से उपजा ताप (गर्मी).

सन्तापन, (पु०) सन्तापयति। सन्+तप्+णिच्-ल्यु। कामदेवके पांचशरों (तीरों) मेंसे एक। सन्ताप करने-हारा (त्रि०).

सन्तोष, (पु०) सम्+तुष्+घञ्। धैर्य। हौंसला। खुशी। सबर। स्वास्थ्य (आराम-तन्दुरुस्ती)। "सन्तोषमूलं हि सुखं" मनुः.

सन्दंश, (पु०) सम्+दंश्+अच्। एकप्रकारका यन्त्र (सांडासी)। "ण्वुल्" "सन्दंशिका" यही अर्थ.

सन्दंशपतित, (पु०) सन्दंशे (तन्मध्ये) पतित इव । मानों सांडासीके वीच गिरगया है । मीमांसामें एक प्रकारका न्याय.

सन्दर्भ, (पु०) सम्+दृभ्+घञ् । रचना । ग्रन्थन (गुथना) । प्रवन्ध । एक प्रकारका कथन (गूढार्थ-छिपेहुए अर्थका प्रकाश सारवचन, श्रेष्ठता-अच्छापन, कई अर्थवाला होना, और वेद्यता-अर्थका समझमें आनाये सब गुण सन्दर्भमें है).

सन्दान, (न०) सन्+दो+ल्युट् । वन्धन (बांधना) । दाम (रस्सी) । और सम्यक् खण्डन (अच्छीतरह तोडना) । दा+ल्युट् । सम्यक् दान (अच्छा देना) (न०) हाथीके घुटनोंका निचला भाग (पु०).

सन्दानिनी, (स्त्री०) सन्दानं (वन्धनं) गवां अत्र+इनि ङीप् । जहां गौएं वांधी जाती हैं । गोगृह । गौओंका घर । गोशाला.

सन्दाव, (पु०) सम्+द्रु+घञ् । पलायन । भागना.

सन्दाह, (पु०) सम्+दह्+घञ् । मुखआदिका सूकना । सम्यग् दाह । पूरीजलन.

सन्दिग्ध, (त्रि०) सम्+दिह्+कर्तरि क्त । सन्देह (शक)-वाला । " कर्मणि क्त " सन्देहविषय । शकका स्थान.

सन्दित, (त्रि०) सम्+दो+क्त । बद्ध (वंधाहुआ).

सन्दिष्ट, (न०) सम्+दिश्+भावे क्त । वाचिकार्थकथन । कहेहुए अर्थको कहना । सन्देश । वार्ता (वात) । " कर्मणि क्त " उपदिष्ट (उपदेशकियाहुआ) (त्रि०).

सन्दिहान, (त्रि०) सम्+दिह्+शानच् । सन्देहवाला.

सन्दी, (स्त्री०) सम्+दो+ड-ङीष् । खट्वा । खाट । मंजा.

सन्देशहर, (पु०) सन्देशं हरति (अभीष्टस्थानं कथनाय नयति) हृ+अच् । सन्देस (सुनिआं-खवर) को चाहेहुए स्थानपर कहनेके लिये लेजाता है । " ण्वुल् " " संदेशहारक ".

सन्देह, (पु०) सम्+दिह+घञ् । " संशय " शब्दके अर्थमें है.

सन्दोह, (पु०) सम्+दुह्+घञ् । समूह । पूरा २ दोह (चोना).

सन्द्राव, (पु०) सम्+द्रु+घञ् । पलायन । भागना.

सन्धा, (स्त्री०) सम्+धा+अङ् । स्थिति (ठहरना) । प्रतिज्ञा (इकरार) । सान्धन (मेल) । सुरा (शराव) । निकलना । अनुसन्धान (ढूंढना).

सन्धान, (न०) सम्+धा+ल्युट् । सुरोत्पादनानुगुणव्यापारविशेष । शराब निकालना । अनुसंधान (तालाश) । मेल । (स्त्रियां ङीप्) । गौवांधनेकी शाला.

सन्धि, (पु०) सम्+धा+कि । राजाओंके छ गुणोंमेंसे मेलनके लिये मित्रता करनेका व्यापार । संयोग । जोड । भेंट देकर एक राजाका दूसरेके साथ मिलजाना । दो अस्थिओं (हड्डिओं) के जुडनेका स्थान । चोर-आदिसे कीगई सुरङ्गा (सुरंग-सन्ह) । नाटकका एक अङ्ग ("मुख" आदि संधिके पांच भेद हैं) । व्याकरणमें दो वर्णोंसे उत्पन्नहुआ वर्णविकार.

सन्धिचौर, (पु०) सन्धिना (कृतसुरङ्गया) चौरः । सुरंग लगाकर चोरीकरनेहारा । सन्हलगानेहारा.

सन्धित, (त्रि०) सन्ध्या जाता अस्य । तार० इतच् । कृतसन्ध । मिलाहुआ.

सन्धिनी, (स्त्री०) सन्धा (वृषभसंयोगः तज्जगर्भोऽस्ति) अस्याः । वैलके संयोगसे गर्भको धारण करनेहारी गौ.

सन्धिपूजा, (स्त्री०) संधौ (अष्टम्याः शेषे) नवम्याश्च (आद्ये दण्डे) पूजा । आश्विन (अस्सू) के शुक्लपक्षकी अष्टमी और नवमीके मेलका समय "सन्धि" है उस समयकी पूजा.

सन्धिवन्ध, (पु०) सन्धिं वध्नाति (संयुनक्ति) सम्+वन्ध्+अच् । जोडको जोडता है । भूमिचम्पक (पृथिवीका चम्बा- चमेलीका फूल) इसके सेवन करनेसे टूटीहूई सन्धिभी मिलजाती है । यह वैद्यक (हकीमी) में प्रसिद्ध है.

सन्धिविग्रहाधिकारिन्, (पु०) सन्धिविग्रहेषु अधिकरोति । अधि+कृ+णिनि । राजाओंके संधि (मेल). और विग्रह (लडाई) का अधिकारी मन्त्री.

सन्धिवेला, (स्त्री०) सन्धियुक्ता वेला (समयः) । जुडाहुआ समय (वक्त) । दिन और रातके मिलनेका समय.

सन्धिहारक, (पु०) सन्धिना (सुरङ्गया) हरति परद्रव्यम् । हृ+ण्वुल् । सुरङ्गसे दूसरेके पदार्थको लेजाता है.

सन्धुक्षित, (त्रि०) सम्+धुक्ष्+क्त । उद्दीपित । भडकायागया । प्रकाशित.

सन्धेय, (त्रि०) सन्+धा+यत् । संयोज्य । संयोगके लायक । मेलनीय । मिलानेलायक.

सन्ध्या, (स्त्री०) सम्+ध्यै+अङ्-ड वा । एकरूप कालके उत्तरमें होनेहारा पररूप कालका अवकाश । दोनोंवक्त मिलेहुए । दिन और रातके बीचका समय । पहिली और पिछली चार घडियें छोडकर रात्रिका नाम "त्रियामा" तीन पहिरवाली है । वही दोनों संध्या है । युगका सन्धिकाल । संध्याके समय उपासना करनेलायक देवता । एक नदी । ब्रह्मा । एक स्त्री०.

सन्ध्यानटिन्, (पु०) सन्ध्यायां नटति । नट्+णिनि । संध्याके समय नाचता है । शिव । शंकर.

सन्ध्याभ्र, (न०) सन्ध्याकालिकं अभ्रं इव । मानो संध्या-समयका बादल है । सुवर्ण । गेरी । सांझका बादल.

सन्ध्याराग, (न०) सन्ध्यायां इव रागः अस्य । संध्याकी नाईं जिसका रङ्ग है । सिन्दूर । सँधूर.

सन्ध्याराम, (पु०) सन्ध्यायां रमते । रम्+घञ् । जो सन्ध्यानाम स्त्रीमें रमण कर्ता है । ब्रह्मा.

सन्न, (पु०) सीदति । सद्+क्त । पियालका वृक्ष । अवसन्न (निर्बल-कमजोर-घटाहुआ-दुखीहुआ) (त्रि०) । "स्वार्थे कन्" खर्व । वामन । वौंना.

सन्नत, (त्रि०) सम्+नम्+क्त । प्रणत (झुकाहुआ) । शब्द करनेहारा.

सन्नद्ध, (त्रि०) सम्+नह्+क्त । कृतसन्नाह । संजोह पहिरेहुए । तयारहुआ । बंधाहुआ । उत्पन्नहुआ.

सन्नय, (पु०) सम्+नी+अच् । समूह । बहुतसा.

सन्नहन, (न०) सम्+नह्+ल्युट् । वर्मग्रहण । संजोह पहिरना । उद्योग । हिम्मत । पूरा बंधन.

सन्नाह, (पु०) सन्नह्यते । सम्+नह्+घञ् । संजोया । वर्म । अच्छीतरह बांधाजाता है.

सन्निकर्ष, (पु०) सम्+नि+कृष्+घञ् । सान्निध्य । निकटता । पासहोना । "सद्वृत्तसन्निकर्षो हि क्षणार्धमपि शस्यते" पुराणम् । विषय और इन्द्रियका सम्बन्ध (व्यापार । न्यायमतमें ज्ञानलक्षण सामान्य लक्षण और योगजधर्मविशेष स्वरूप अलौकिक प्रत्यक्षका साधन एक उपाय.

सन्निकर्षण, (न०) सम्+नि+कृष्+ल्युट् । सन्निधान । निकट होना । नजदीक होना.

सन्निधान, (न०) सम्+नि+धा+ल्युट् । नैकट्य । सामीप्यहोना । पासहोना.

सन्निधि, (पु०) सम्+नि+धा+कि । सामीप्य । पासहोना । " कर्मणि कि " इन्द्रियका विषय । कर्म० । अच्छा खजाना.

सन्निपतित, (त्रि०) सम्+नि+पत्+क्त । मिलाहुआ । हाजिरहुआ । मरगया.

सन्निपात, (पु०) सम्+नि+पत्+घञ् । मेलन । मिलना । नीचे गिरना । इकट्ठे होजाना । उतरना । भिडना । समूह । एक प्रकारका ज्वर (बुखार-ताप) जिसमें शरीरके तीनों धातु (वात-पित्त-कफ) मिलकर बिगड जायँ-यह बडा कफादिधातुत्रयका विजातीय वैषम्यरूप त्रिदोषज विकार है । नाश । उपस्थिति (पहुंचना) । तालविशेष । एकप्रकारका रागमें समयका परिमाण (माप).

सन्निपातनुद्, (पु०) सन्निपातं (त्रिदोषजविकारं) नुदति । नुद्+क्विप् । जो तीन दोषोंसे उत्पन्नहुए विकारको दूर कर्ता है । नेपालनिम्ब । नेपालदेशका नीम (निम्ब).

सन्निबन्धन, (न०) सम्यक् निबन्धनम् । प्रा० । अच्छी तरह बांधना । पक्का बांधना । कई स्थानोंमें स्थित होरहे वाक्योंको एक स्थानपर संकलन (इकट्ठाकरना) । और तदुपयोगी (उस कामको पूरा करनेहारा) ग्रंथविशेष । ७ व० । अच्छी जीविकावाला (त्रि०).

सन्निभ, (त्रि०) सम्+नि+भा+क । सदृश । समान । एक जैसा.

सन्निवेश, (पु०) सम्+विश्+आधारे घञ् । पुरके बाहिरका देश । भावे घञ् । सम्यक्स्थिति । भलीभांति ठहरना । खवा । अखाडा.

सन्निहित, (त्रि०) सम्+नि+धा+क्त । निकटस्थ । पास ठहिराहुआ । नजदीक । "कर्मासन्निहितं नैवेति" मीमांसा । और भलीभांति स्थापित (रक्खागया) । "भावे क्त" नैकट्य (नजदीकहोना) (न०).

सन्निहितापाय, (त्रि०) सन्निहितः अपायः नाशः यस्मिन् । निकट नाशवाला । जिसका नाश तयारही है । क्षणभङ्गुर । विनश्वर । असार.

सन्न्यस्त, (त्रि०) सम्+नि+अस्+क्त । निक्षिप्त । अच्छा रक्खागया । डालागया । अच्छीतरह त्यागागया । जुडाहुआ । अर्पित (दियागया).

सन्न्यास, (पु०) सम्+नि+अस्+घञ् । " काम्यानां कर्मणां न्यासं सन्न्यासं कवयो विदुः" इति भगवान्की अचल भक्तिरूप फलको छोड केवल सांसारिक विषयोंकी कामनासे कियेगये कर्मोंका त्यागदेनाही सन्न्यास है अर्थात् काम्यकर्मपरित्याग ही संन्यासका लक्ष्यार्थ है । वेदसे विधान कियेहुए कर्मोंका विधान (रीति). हीसे भलीभांति त्याग करना । उसके योग्य चौथा आश्रम । चेत (चैत्र) में करनेलायक पुराणमें प्रसिद्ध शिवाजीमहाराजका व्रतविशेष.

सन्न्यासिन्, (पु०) सम्+नि+अस्+णिनि । सन्न्यासवाला । चौथे आश्रमवाला । चैत्रमें कर्तव्य शिवव्रतकर्ता.

सपक्ष, (पु०) समानः पक्षः । जहां साध्य और साधन दोनों रहजायँ, जैसे आग और धूएंका एकही आश्रय पहाड है । परवाला । अपनीओरके लोगोंवाला । सम्बन्धी (त्रि०).

सपत्राकरण, (न०) सह पत्रेण (पक्षेण) सपत्रः तथा क्रियते । सपत्र+डाच्+कृ+ल्युट् । परसमेत शर(तीर) के लगनेकी बडी पीडा । "कर्मणि क्त" सपत्राकृतः । उस प्रकार पीडा पहुंचायागया (त्रि०).

सपत्न, (पु०) सह एकार्थे पतति (पतते) पत्+न "सह" को "स"। एकही अर्थमें साथ यत्न कर्ता है। एकके लाभमें अपना लाभ करना चाहता है। शत्रु-दुश्मन.

सपत्नी, (स्त्री०) समानः पतिः यस्याः "ङीप्" और "न" होता है। समान (उसी) पतिवाली। एक भर्तावाली स्त्री (जिसकी दूसरी विरोधिनी-सौतिनभी है)। सौतिन-दूसरी औरत। एकही स्वामीवाली भूमि-आदि (इस अर्थमें "सपति" भी होता है).

सपदि, (अव्य०) सह पद्यते। पद्+इन् "सह" को "स"। साथही पडता है। तत्क्षण। उसी समय। झट.

सपर, पूजा करना (इज्जत करना)-कण्ड्वादि० पर० सक० सेट्। सपर्यति। असपर्यात्.

सपर्या, (स्त्री०) सपर्+यक्+अ-टाप्। पूजा। आदर। "सोहं सपर्याविधिभाजनेन" इति रघुः.

सपाद, (स्त्री०) सह पादेन (चरणेन-चतुर्थांशेन वा)। पाद (पाँव) सहित पांववाला चतुर्थांश (चौथेहिस्से) वाला.

सपिण्ड, (त्रि०) समानः पिण्डः (स्वदेहारम्भकदेहः) यस्य। एकही देहसे आरम्भ होनेयोग्य देहवाला. ज्ञाति-विशेष। बरादरी। रिश्तहदार। जातियें साक्षात्-परम्परा-अतिपरम्परासे एकही देहारभ्य (शरीरसे उत्पन्न होने-लायक) हैं इसीलिये "सपिण्डत्व" है। एकसम्बन्धी जिसका पितरोंको प्रेतपिण्ड देनेमें किसी न किसी प्रकारसे सम्बन्ध रहे। दाय (विरसा) लेनेका अधिकारी.

सपिण्डीकरण, (न०) सह पिण्डेन-ततः अभूततद्भावे च्वि+कृ+ल्युट्। पिण्डके साथ कियागया। मिलायागया। प्रेतपन छुडानेके लिये प्रेतके उद्देशसे करनेलायक पिता-आदिके पिण्डोंका समन्वय। एकही स्थानमें मिलनेहारा श्राद्धविशेष.

सपिण्डीकृत, (त्रि०) सह पिण्डः (पित्रादिपिण्डः) सपिण्डः ततः च्वि+कृ+कर्मणि क्तः। जिसके लिये "स-पिण्डीकरण" श्राद्ध किया है वह मृतक (मराहुआ) जन (कोई हो)। "ये सपिण्डीकृताः प्रेताः" इति स्मृतिः.

सपीति, (स्त्री०) पा+क्तिन्। पीतिः (पानं)। सह एकत्र पीतिः। ज्ञाति (जात-बरादरी) के साथ मिलकर भोजन (खाना).

सप्तक, (न०) सप्तानां अवयवः-कन्। सातकी संख्या (गिन्ती)। "सप्त प्रमाणं अस्य-कन्"। सातकी संख्या-वाला (त्रि०).

सप्तकी, (स्त्री०) सप्तभिः (स्वरैः) इव कायति (शब्दा-यते) कै+क। सात सुरोंके समान शब्द कर्ती है। मेखला। तडागी.

सप्तचत्वारिंशत्, (स्त्री०) सप्ताधिका चत्वारिंशत्। शाक०। सात ऊपर चालीस। संताली। उस संख्यावाला (त्रि०).

सप्तच्छद, (पु०) सप्त सप्त छदाः (प्रतिपत्रं) यस्य। जि-सके हरएक पत्तेके साथ सात २ पत्ते हों। सतौनेका द्रख्त.

सप्तजिह्व, (पु०) सप्त जिह्वा इव (आस्वादसाधनानि) अर्चिषो यस्य। जिसकी सातलाटें जिह्वाओंके समान हैं। वह्नि। आग.

सप्तज्वाल, (पु०) सप्त "काली" इत्यादयः ज्वाला यस्य। "काली" "कराली" प्रभृति जिसकी सात लाटें हैं। अग्नि। आग.

सप्ततन्तु, (पु०) सप्तभिः "भूः" आदिभिः (महाव्या-हृतिभिः) तन्यते। तन्+तुन्। "भू" आदि सात महाव्याहृतिओंसे जिसका विस्तार कियाजाता है। यज्ञ। याग.

सप्तति, (स्त्री०) सप्तगुणिता दशतिः नि०। सत्तरकी संख्या। उस संख्यावाला.

सप्ततितम, (त्रि०) सप्ततेः पूरणः+तमप्। जिससे "सत्तर"-की संख्या भरजाती है। सत्तरवा.

सप्तदश, (त्रि०) सप्तदशानां पूरणः+डट्। सतारवां। जिससे सतारवी संख्या पूरी होती है.

सप्तद्वीपा, (स्त्री०) सप्त (जम्बूप्रभृतयः) द्वीपा यस्याः। "जम्बू" आदि सात द्वीप (जजीरे) वाली पृथिवी.

सप्तधा, (अव्य०) सप्तन्+प्रकारे धाच्। सात प्रकार। सात तरहसे.

सप्तधातु, (पु० ब० व०) सप्तगुणिता धातवः। रस, अस्र, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र (वीर्य) रूप शरीरकी सात धातुएं.

सप्तन्, (पु० त्रि०) सप्+तनिन्। सात। सातसंख्यावाला.

सप्तपदी, (स्त्री०) सप्तानां पदानां समाहारः। ङीप। विवाहके समयकी सात फेरियें। सात पाँव। सात शब्द.

सप्तपर्ण, (पु०) सप्त सप्त पर्णानि अस्य। जिसके प्रति पत्तेके साथ सात २ पत्ते हों। सतौनेका वृक्ष। छातिम.

सप्तपाताल, (न०) समाहारद्विगुः। पात्रादि। "अतल"-आदि पृथिवीके नीचे सात लोक.

सप्तप्रकृति, (स्त्री० ब० व०) सप्त संख्याताः प्रकृतयः। सांख्यमें प्रसिद्ध "महत्तत्त्व" आदि सात प्रकृतियें। सोलह पदार्थोंका हेतु होनेसे "प्रकृतिपन" और प्रकृतिका कार्य होनेसे इन्हें (सात प्रकृतिओंको) "विकृतिपन" भी है। "स्वामी" आदि राजाके सात अंग। सात स्वभाव.

सप्तम, (त्रि०) सप्तानां पूरणः+मट् । जिस्से सातकी संख्या पूर्ण होती है । सातवां । "स्त्रियां ङीप्" । सप्तमी तिथि । सातवीं तारीख.

सप्तर्षि, (पु० ब० व०) सप्त ऋषयः । कर्म० । मरीचि, अत्रि, पुलह, पुलस्त्य, क्रतु, अंगिरा और वसिष्ठ । सात ऋषि.

सप्तर्षिमण्डल, (त्रि०) ६ त० । सात ऋषिओंका मण्डल । आकाशमें नित्य ध्रुव नक्षत्रके घुमानेहारा सात तारोंके स्वरूपका एक प्रकारका नक्षत्रमण्डल "सप्तर्षिमण्डलं तस्माद्दृश्यते सर्वतोपरि" पुराणम्.

सप्तशती, (स्त्री०) सप्तानां शतानां समाहारः । सातसौ । मार्कण्डेयपुराणके अंदर सातसौ मन्त्रोंके स्वरूपमें देवीके माहात्म्य (वडाई) को जतलानेहारा ग्रन्थ.

सप्तशलाका, (पु०) सप्त शलाकाकाराः (रेखाः) यत्र । एक प्रकारका चक्र, जिसमें शलाकाके स्वरूपमें सात रेखा होतीं हैं (इस्से विवाहमें त्यागदेने योग्य दोष सूचित होते हैं).

सप्तशिरा, (स्त्री०) सप्त शिरा अस्याः । जिसकी सात नाडियें हों । ताम्बूलवल्ली । पानकी वेल.

सप्तसप्ति, (पु०) सप्त सप्तयः (अश्वाः) यस्य । सात घोडोंवाला । सूर्य । और आकका वृक्ष । "सप्ताश्व" आदि भी.

सप्तसागर, (पु० ब० वं०) सप्त संख्याताः सागराः । सात समुद्र । एकप्रकारका महादान (जिसमें घीआदिके सात समुद्र कल्पना किये जाते हैं).

सप्तांशु, (पु०) सप्त अंशवः (ज्वालाः) यस्य । सात लाटवाली आग (वह्नि).

सप्ताश्ववाहन, (पु०) सप्त अश्वाः वाहनानि अस्य । सात घोडे जिसकी सवारी हैं । सूर्य । आकका द्रख्त.

सप्ति, (पु०) सप्+ति । अश्व । घोडा.

सफर, (पु०) सप्+अरन् । पृ० "प" को "फ" । एक प्रकारकी मच्छी (पुंटी) । "सफरी" भी होता है.

सफल, (त्रि०) सह फलेन । "सह" को "स" होता है । अन्वयर्थ फलवाला.

सबल, (त्रि०) सह बलेन (सामर्थ्येन-सैन्येन) वा । सामर्थ्यवाला (ताक़तवाला) । सेनासहित.

सब्रह्मचारिन्, (पु०) समानं ब्रह्म (वेदग्रहणकालिकं व्रतं) चरति । चर्+णिनि । एक गुरुके पास वेद पढनेके समय उस (वेद) के लिये एक जैसे व्रतको करनेहारा । गुरुभाई । एकजमाती.

सभर्तृका, (स्त्री०) सह भर्त्रा (पत्या) । वह स्त्री कि जिसका पति जीता है । सुहागन.

सभा, (स्त्री०) सह भान्ति (अभीष्टनिश्चयार्थं एकत्र गृहे) यत्र । जहां किसी चाहीगई वातके निर्णय करनेके लिये इकट्ठे चमकते हैं । बहुतोंके बैठनेका स्थान । परिषत् । मजलिस.

सभाज्, सेवाकरना-और देखना । सक० । प्रसन्नहोना । अक० चु० उ० सेट् । सभाजयति-ते । अससभाजत्-त.

सभाजन, (न०) सभाज्+ल्युट् । आने वा जानेके समय कुशल आनन्दका सम्भाषण (वातचीत) । और पूजा करना.

सभापति-नायक, (पु०) सभायाः पतिः । सभाका स्वामी । प्रधान । प्रैजिडण्ट.

सभासद्, (पु०) सभायां सीदति+क्विप् । सभामें बैठता है । सामाजिक । सभ्य । मैम्बर.

सभास्तार, (पु०) सभां स्तृणाति । स्तृ+अण् । सभाको ढांकता है । सभ्य । सामाजिक । समाजी । मैम्बर.

सभिक, (पु०) सभा (द्यूतसभा) अस्ति अस्य+ठन् । जूएकी सभावाला । द्यूतकारक । जुवारिआ । "सभीक"-भी होताहै.

सभ्य, (पु०) सभायां साधुः+यत् । सभामें भला है । सामाजिक । मैम्बर । और द्यूतकार (जुवारिया) । विश्वासी (त्रि०).

सन्, (अव्य०) सम्यक् । भलीभांति । प्रकर्ष (वहुत) । मिलना.

सम, (त्रि०) सम्+अच् । समान । तुल्य (वरावर) । सर्व (सारा) । और साधु (भला) । युग्म (जोडा) । दूसरी चौथी और छटी राशियें । गाने और बजानेमें एकही समय गायक (गवैये) के हाथ आदिका हिलानारूप ताल (न०).

समक्ष, (अव्य०) अक्ष्णः समीपं । अव्ययी० अच् । चक्षुःसन्निकर्ष । आँखके नजदीक (पास) । सामने (त्रि०).

समग्र, (त्रि०) समं (सकलं) यथा स्यात्तथा गृह्यते । ग्रह्+ड । सकल । सारा । पूरा २ । कुल.

समङ्गा, (स्त्री०) समज्यते अनया । सम्+अञ्ज्+घञ् । मञ्जिष्ठा । मजीठ.

समचित्त, (त्रि०) समं (सर्वत्र समभावं) चित्तं यस्य । सब स्थानमें एकही प्रकारका देखनेहारा । तत्त्वज्ञानी.

समज, (न०) समजन्ति अत्र । सम्+अज्+अप्+ "वि" नहिं होता । वन (जंगल) । समूह । पशुओंका समूह । मूर्खोंका समूह.

समज्ञा, (स्त्री०) समस्मिन् (सर्वत्र) ज्ञायते अनया । जिसके द्वारा सब जगह जाना जाता है । कीर्ति । यश । वडाई.

समज्या, (स्त्री०) सम्+अज्+क्यप्-न वीभावः । सभा । और कीर्ति.

समञ्जस, (त्रि०) सम्यक् अञ्ज औचित्यं यत्र । उचित । मुनासिब । और युक्त (ठीक २) । उचितपन (न०).

समदर्शिन्, (त्रि०) समस्मिन् (सर्वत्र) ब्रह्मभावेन अभिन्नतया पश्यति । दृश्+णिनि । सब स्थानमें ब्रह्मस्वरूपसे एकही देखता है । सब जगह समान देखनेहारा । तत्त्वज्ञानी । "पण्डिताः समदर्शिनः" इति गीता.

समदृष्टि, (स्त्री०) कर्म० । सर्वत्र तुल्यदर्शन । सब स्थानमें एक जैसा देखना । ६ ब० । समदर्शी (त्रि०).

समधिक, (त्रि०) सम्यक् अधिकः । प्रा० । बहुत जियादा । अत्यन्ताधिक.

समन्त, (पु०) सम्यक् अन्तः स यत्र वा । अच्छा अन्त । सीमा (हद्द).

समन्ततस्, (अव्य०) समन्त+तसिल् । सब जगह फैलाहुआ । चारोंओरसे.

समन्तपञ्चक, (न०) समन्तात् पञ्चकं (नदपञ्चकं) यत्र । जहां चारोंओर पाँच दर्या हों । एक तीर्थ.

समन्तभद्र, (पु०) समन्तात् भद्रं अस्य । जिसको चारों ओरसे कल्याण हो । बुद्धदेव । बुद्धावतार.

समन्तभुज्, (पु०) समन्तात् भुंक्ते । भुज्+क्विप् । चारोंओरसे खाता है । वह्नि । आग.

समन्तात्, (अव्य०) समन्त+आति । चारोंओर.

समन्वित, (त्रि०) सम्+अनु+इण्+क्त । संगत । मिलाहुआ । युक्त.

समपद, (न०) समं पदं यस्मिन् । धनुष् पकडनेवालोंका एक प्रकारसे खडाहोना । जिसमें पाँवको एक जैसा रक्खा जाता है । अवस्थानविशेष.

समभिव्याहार, (पु०) सम्+अभि+वि+आ+हृ+घञ् । साहित्य । इकट्ठा वर्णन करना । साथ । अच्छीतरह कहना.

समभिव्याहृत, (त्रि०) सम्+अभि+वि+आ+हृ+क्त । सहित । मिलाहुआ.

समभिहार, (पु०) सम्+अभि+हृ+घञ् । पौनःपुन्य । वार वार.

समम्, (अव्य०) सम्+अमु । साहित्य । साथ । एकही वार.

समय, (पु०) सम्+अच् । काल (वक्त) । शपथ । कसम । सौं । आचार । सिद्धान्त । संकेत । अंगीकार.

समया, (अव्य०) सम्+इण्+अ । नैकट्य । पासपन । बीच.

समयाध्युषित, (पु०) समयः अध्युषितः यत्र । सूर्य और ताराओंसे रहित समय (वक्त).

समर, (पु० न०) सम्+ऋ+अप् । युद्ध । लडाई । जंग.

समरमूर्धन्, (पु०) ६ त० । समरके आगे । लडाईके मैदानमें.

समर्चन, (न०) सम्यक् अर्चनम् । अच्छी तरह आदर करना.

समर्ण, (त्रि०) सम्+अर्द+क्त । भलीभांति पीडा पहुंचायागया.

समर्थ, (त्रि०) सम्+अर्थ्+अच् । शक्त (ताकतवाला) । और हितकारी.

समर्थन, (न०) सम्+अर्थ्+ल्युट् (अन) । एकबात जैसी हो उसे युक्तिआदिसे वैसाही साबित करना । फैसला.

समर्धक, (त्रि०) समर्धयति । सम्+ऋध्+णिच्+ण्वुल् । चाहेहुए फलको देनेहारा । देवता आदि.

समर्याद, (त्रि०) सह मर्यादया । नियमके साथ । निकट (पास) । (पु०) अच्छे चालचलनवाला । सीमा । हद्द (त्रि०).

समल, (न०) सम्यक् मलं । बहुत मैल । विष्ठा (गूंह) । मैला और काला.

समवकार, (पु०) सम्+अव+कृ+घञ् । एक प्रकारका नाटक.

समवतार, (पु०) समवतीर्यते अनेन । सम्+व+तॄ+घञ् । जलावतरणसोपान । पानीमें उतरनेकी सीढी वा पौडी.

समवर्तिन्, (पु०) समं वर्तते । वृत्+णिनि । बराबर वर्तता है । यमराज.

समवाय, (पु०) सम्+अव्+इण्+अच् । समूह । मेल । न्यायमें नित्यद्रव्य आदिमें जाति आदिका सम्बन्धविशेष.

समवायसंबन्ध, (पु०) समवायः संबन्धः नित्यसम्बन्ध । कभी न भिन्नहोनेवाला (टुटनेवाला) संबन्ध । मिलाप । जैसे तंतु और वस्त्रका संबन्ध नित्य है.

समवेत, (त्रि०) सम्+अव+इण्+क्त । मिलाहुआ । समूहसे युक्त । न्यायमें समवायसम्बन्धसे ठहिराहुआ.

समष्टि, (स्त्री०) सम्+अश्+क्तिन् । सम्यग् व्याप्ति । अच्छीतरह फैलना । समस्तता । सारापन । कुल.

समसन, (न०) सम्+अस्+ल्युट् । समास । संक्षेप मिलना.

समस्त, (त्रि०) सम्+अस्+क्त । संक्षिप्त (थोडा कियाहुआ) । सकल । सारा । व्याकरणमें कृत समास (मिलायाहुआ अर्थात् बहुतसे शब्दोंका एकशब्द कियाहुआ).

समस्थ, (त्रि०) समं तिष्ठति । स्था+क । बराबर रहता है । समभावसे तुल्यरूप होकर स्थितहुआ.

समस्थली, (स्त्री०) कर्म० गङ्गा और यमुनाके मध्यमें वेदीका प्रदेश । दुआबा.

समस्या, (स्त्री०) समस्यते (संक्षिप्यते) अनया । सम्+अस्+क्यप् । एक चरण सुनकर बाकी श्लोक पूराकरना (जो पूरा नहीं).

समा, (स्त्री०) समयति (विकल्पयति) भावान् । सम्+अच्+टाप् । जो भावों (पदार्थोंको) विकल कर्ता है । वत्सर (वरिस) । (अमरने बहुवचन और पाणिनी मुनिने इस शब्दको एकवचनान्त कहा).

समाकर्षिन्, (पु०) सत्+आ+णिनि । बहुत दूर जानेहारा गन्ध । अच्छीतरह खेंचनेहारा (त्रि०).

समाख्या, (स्त्री०) समाख्यायते अनया । सम्+आ+ख्या+अङ् । जिसके द्वारा प्रसिद्ध होता है । कीर्ति । यश । नाम । संज्ञा.

समाघात, (पु०) समाहन्यते अत्र । सम्+आ+हन्+घञ् । जहां अच्छीतरह चोट कियाजाता है । युद्ध । जंग.

समाज, (पु०) सम्+अज्+घञ् । "वि" नहिं होती । पशुओंसे भिन्न समूह । सभा । हाथी.

समाधा, (स्त्री०) सम्+आ+धा+अङ् । निष्पत्ति । सिद्धि । विवादभञ्जन । झगडा मिटाना । प्रश्नका उत्तर । "समाधान" भी इसी अर्थमें होता है (न०) चित्तका एकओर लगाना । ध्येय (ब्रह्म) में मनका जोडना.

समाधि, (पु०) सम्+आ+धा+कि । समाधी । ध्येय वस्तुमें एकाग्र होकर मनका टिकाना रूप ध्यानविशेष । काव्यका एकगुण । मन लगाना । मढी.

समाधिस्थ, (त्रि०) समाधौ तिष्ठति-स्था+क+अ । समाधिमें स्थित । समाधिमें ठहरा हुआ । समाधिमें लगा हुआ । समाहित.

समाध्मात, (त्रि०) सम्+आ+ध्मा+क्त । पूरा अभिमानीहुआ । अच्छीतरह आवाज कियाहुआ । अच्छी तरह फूकागया.

समान, (त्रि०) समं आनयति । अन्+अण् । तुल्य । बराबर.

समानोदक, (पु०) समानं (एकं) तर्पणादौ देयं उदकं यस्य । तर्पण आदिमें एकही जल जिसे दियाजाय । "चौदवीं पीढीतक समानोदकभाव समाप्त हो जाता है" ग्यारवेंसे १४ वें पुरुषतक ज्ञातिविशेष (बरादरी).

समानोदर्य, (पु०) समाने उदरे भवः+यत् । एक पेटके भाईआदि । भगिनी (बहिन) (स्त्री०).

समाप, (पु०) सम्यक् आपो यत्र । अच् समा० नि० । जहां अच्छा जल होता है । देवताके पूजाकी जगह.

समापन, (न०) सम्+अप्+ल्युट् । समाप्ति । बाकी.

समापन्न, (त्रि०) सम्+आ+पद्+क्त । समाप्त (खतम हुआ) । प्राप्त (पायाहुआ) । क्लिष्ट (तक्लीफमें हुआ) । समाप्ति (न०).

समाप्त, (त्रि०) सम्+आप्+क्त । अवसानप्राप्त । खतम हुआ । सम्यक् प्राप्त । भलीभांति पहुंचा.

समायोग, (पु०) सम्+आ+युज्+घञ् । संयोगसमवाय आदि सम्बन्ध । मेल । मिलाप.

समालम्ब, (पु०) सम्+आ+लभ्+घञ्-मुम्च । केसर (कुङ्कुम) आदिसे शरीरपर लेप करना.

समालम्बिन्, (पु०) समालम्बते (लटकता है) । सम्+आ+वि+णिनि । भूचम्पक । लटकनेहारा । (त्रि०).

समावर्तन, (न०) समावर्तते गुरुकुलात् अनेन । वेद पढनेके अनन्तर गृहस्थी होनेके लिये गुरुकुलसे आनेका संस्कारविशेष.

समाविष्ट, (त्रि०) सम्+आ+विश्+क्त । युक्त । मिलाहुआ । मनके अभिनिवेश (हठ) वाला । चाहेगये करनेलायक काममें चित्तकी एकाग्रतावाला । लगाहुआ.

समावेश, (पु०) सम्+आ+विश्+घञ् । बहुतसे अर्थोंको एकवचनमें लाना । करनेलायक अभिनिवेश (हठ).

समास, (पु०) सम्+अस्+घञ् । संक्षेप (खुलासा) । समर्थन (साबित करना) । समाहार (इकट्ठाकरना) । व्याकरणमें दो आदि पदोंको एकपद बनानेहारा संस्कारविशेष.

समासक्त, (त्रि०) सम्+आ+सञ्ज्+क्त । संयुक्त । मिलाहुआ । अत्यन्तासक्त । बहुतलगाहुआ (फंसाहुआ) और अभिनिविष्ट । खूब जुडाहुआ.

समासङ्ग, (पु०) सम्+सञ्ज्+घञ् । संयोग । मेल । पूरा । अभिनिवेश.

समासादित, (त्रि०) सम्+आ+सद्+णिच्+क्त । पाया । हासिल किया । पास ठहिराहुआ.

समासार्था, (स्त्री०) संक्षेपेण अर्थः अभिहितः यस्याः । जिसका अर्थ थोडेमें कहागया । समस्या.

समासोक्ति, (स्त्री०) समासेन उक्तिः । संक्षेपसे एकही अर्थमें दूसरे भावका संकेत कर डालना । एक प्रकारका अलंकार.

समाहित, (त्रि०) सम्+आ+धा+क्त । धृतसमाधि । समाधि लगायेहुए । आहित । रक्खागया । प्रतिज्ञात । इकरार कियाहुआ । निष्पन्न । पूराहुआ । शुद्ध । साफ.

समाहृत, (त्रि०) सम्+आ+हृ+क्त । संगृहीत । इकट्ठा कियागया.

समाहृति, (स्त्री०) सम्+आ+हृ+क्तिन् । संक्षेप । संग्रह.

समाह्वय, (पु०) समाहूयते । सम्+आ+ह्वे+अच् । युद्ध । जंग । आव्हान । बुलाना । एक प्रकारका जूआ । बटेरे आदि प्राणिओंका जूआ.

समित्, (स्त्री०) समीयते अत्र । सम्+इण्+क्विप् । युद्ध । लडाई.

समिता, (स्त्री०) सम+इण्+क्त । गोधूम चूर्ण (आटा) । मिलाहुआ । (त्रि०).

समिति, (स्त्री०) सम्+इण्+क्तन् । समर । युद्ध । जंग.

समिध्, (स्त्री०) समिन्धतेऽनया । सम्+इन्ध्+क्विप् । काष्ठ । लकडी । होमके लिये काष्ठविशेष । पलाशादि.

समिध, (पु०) समिध्यते । स+इन्ध्+क । काष्ठ । लकडी । और वन्हि । आग.

समिन्धन, (न०) सम्+इन्ध्+ल्युट् । काष्ठ । अच्छी तरह । चमकना.

समीक, (न०) सम्+ईकक् । युद्ध । जंग । लडाई.

समीकरण, (न०) असमः समः क्रियते अनेन । सम्+च्वि+कृ+ल्युट् (अन)। असम (जो वरावर नहिं) को सम (वरावर) करना । बीजगणितमें न जानीहुई संख्याओंको जाननेके लिये प्रक्रियाविशेष । तुल्यरूपपनको लाना.

समीक्ष, (न०) सम्यक् ईक्षतेऽनेन । जिस्से भलीभांति देखता है । सांख्यदर्शन । "भावे घञ्" । पर्यालोचन । चारोंओरसे सोचना । ठीक समझना । अ । "समीक्षा" । बुद्धि । मीमांसाशास्त्र । यत्न । स्त्री-टाप्.

समीक्ष्यकारिन्, (त्रि०) समीक्ष्य करोति । कृ+णिनि । उपर । वस्तुके स्वरूपको भलीभांति सोचकर काम करनेहारा.

समीचीन, (त्रि०) सम्यग् भवः । सम्+अञ्च्+क्विप् । यथार्थ । ठीक २ । साधु । और सत्य (हां) । सत्यवाला (त्रि०).

समीप, (त्रि०) संगता आपः यत्र । जहां पानी मिल जाता है । निकट । पास.

समीर, (पु०) सम्यक् ईरयति । सम्+ईर्+अच् । वायु (हवा) । पृ० "समीर".

समीरण, (पु०) सम्+ईर्+ल्यु (अन) । वायु (हवा) । पथिक (राही).

समीरिता, (स्त्री०) सम्+ईर्+क्त+टाप् । कथिता (कहीहुई) । उच्चारित.

समीहित, (त्रि०) सम्+ईह्+क्त । अभीष्ट । चाहागया । अभिलषित.

समुचित, (त्रि०) सम्+अच्+क्त । सम्यक् उपयुक्त । बहुत ठीक (योग्य).

समुच्चय, (पु०) सम्+उद्+चि+अच् । दो तीन राशियें । आपसमें अपेक्षा न रखनेहारे बहुतसे शब्दोंका एकक्रियाआदिमें अन्वय । यह "च" और "तथा" आदि शब्दोंसे प्रकट होता है.

समुच्चित, (त्रि०) सम्+उद्+चि+क्त । कृतसमुच्चय । इकट्ठा कियाहुआ.

समुच्चर, (पु०) सम्+उद्+चर्+अप्-घञ् वा । अच्छीतरह उच्चारणकरना । अच्छीतरह त्यागकरना.

समुच्छेद, (पु०) सम्+उद्+छिद्+घञ् । विनाश । अच्छीतरह काटना.

समुच्छ्र(च्छ्रा)य, (पु०) सम्+उद्+श्रि+अच्-घञ् वा । अत्युन्नति । बहुत ऊंचाहोना । विरोध (दुश्मनी) । ऊंचाई । उत्सेध.

समुच्छ्रित, (त्रि०) सम्+उद्+श्रि+क्त । अत्युन्नत । बहुत ऊंचाहुआ.

समुच्छलित, (पु०) सम्यक् उच्छलितं । सम्+उद्+श्वल्+क्त । चारों ओर फैलाहुआ । चारों ओर उछलाहुआ । समन्तात् विस्तीर्ण.

समुच्छ्वसित, (त्रि०) सम्+उद्+श्वस्+क्त । सम्यक् उच्छ्वासयुक्त । भलीभांति सांसवाला । प्रत्युज्जीवित । फिरजी उठा.

समुच्छ्वास, (पु०) सम्+उद्+श्वस्+घञ् । मुख और नासिकासे प्राणरूप वायु (हवा) का व्यापार (चलना) । सांस.

समुज्झित, (त्रि०) सम्+उज्झ+क्त । त्यक्त । छोडाहुआ.

समुत्क्रम, (पु०) सम्+उद्+क्रम्+घञ्-न वृद्धिः । ऊर्ध्वगमन । ऊपरजाना । भलीभांति ऊपर जाना.

समुत्क्रोश, (पु०) सम्यक् उत्क्रोशति-उच्चैः शब्दायते । सम्+उद्+क्रुश्+अच् । ऊंचे चिल्लाता है । कुररीविहग । कूंज नामी पक्षी । "भावे घञ्" ऊंचाशब्द.

समुत्थ, (त्रि०) सम्यगुत्तिष्ठति । सम्+उद्+स्था+क्त. "स" को "थ" । सम्यगुत्पन्न । अच्छी तरह उपजा । उठा.

समुत्थान, (न०) सम्+उद्+स्था+करणे ल्युट् "स" को "थ" । समुद्योग । पूरी हिम्मत उत्तोलन । उठाना.

समुत्पन्न, (त्रि०) सम्+उद्+पद्+क्त । समुद्भूत । पैदा हुआ । उपजा.

समुत्पाट, (पु०) सम्+उद्+पद्+घञ् । उन्मूलीकरण । जडसे उखाडना । अच्छीतरह पटना.

समुत्पिञ्ज, (त्रि०) सम्+उद्+पिञ्ज्+अच् । अत्याकुल । बहुत घबरायाहुआ । घबराई सेना (पु०).

समुत्सर्ग, (पु०) सम्यक् उत्सर्गः । सम्+उद्+सृज्+घञ् । सम्यक् त्याग । पूरा २ छोडना । त्यागदेना.

समुत्सारणम्, (न०) सम्+उत्+सृ+णिच्+अन । निष्कासन । निकाल देना । शिकार करना.

समुत्सुक, (त्रि०) सम्यक् उत्सुकः । प्रा० । अत्यन्तोत्सुक । बहुत शौकवाला । चाहीगई वस्तुको पानेकेलिये त्वरान्वित (जल्दी करनेवाला).

समुत्सृष्ट, (त्रि०) सम्+उद्+सृज्+क्त । सम्यक् त्यक्त । दिया गया । भलीभांति छोडदिया.

समुत्सेध, (पु०) सम्+उद्+सिध्+घञ् । बहुत ऊंचाई । बहुत बढना.

समुदय, (पु०) सम्+उद्+इण्+अच् । समूह । युद्ध (जंग) । बढना । और दिन । ज्योतिषमें लग्न (न०).

समुदीरण, (न०) सम्+उद्+ईर्+ल्युट् । अच्छीतरह कहना.

समुद्ग, (पु०) सम्+उद्+गम्+ड । सम्पुटक । सम्पुटके आकारमें संश्लेष करनेहारा पदार्थ । सन्दूक । पच्छी । "कः".

समुद्गम, (पु०) सम्+उद्+गम्+घञ् । ऊपर जाना । उत्पत्ति.

समुद्गीत, (त्रि०) सम्+उद्+गै+क्त । ऊंचे गायागया । उच्चैर्गीत.

समुद्गीर्ण, (त्रि०) सम्+उद्+गॄ+क्त । वमित । ऊपर छल कियाहुआ । उगलाहुआ । उठायाहुआ । और कहाहुआ.

समुद्दिष्ट, (त्रि०) सम्यक् उद्दिष्टं । उद्+दिश्+क्त । अच्छे-उद्देश (प्रयोजन) वाला पदार्थ । भलीभांति बतलायाहुआ.

समुद्धत, (त्रि०) सम्+उद्+हन्+क्त । अत्यन्त पगला । वहुत चतुर । अत्यन्ताविनीत । बहुत मूर्ख (जो नम्र वा शिक्षित नहिं) । अभिमानी.

समुद्धरण, (न०) सम्+उद्+हृ+ल्युट् । उत्तोलन । उठाना । खुएआदिसे जल निकालना (खेंचना) । खायेहुए अन्नका वमन (उगलना) और उखाडना । "कर्मणि ल्युट्" । वमन कियाहुआ अन्नआदि । और उखाडाहुआ.

समुद्भव, (पु०) सम्+उद्+भू+अप् । समुत्पत्ति । पैदाइश । उत्पन्नहोना.

समुद्भूत, (त्रि०) सम्+उद्+भू+क्त । समुत्पन्न । पैदाहुआ.

समुद्यत, (त्रि०) सम्+उद्+यम्+क्त । पूरे उद्यमवाला.

समुद्यम, (पु०) सम्+उद्+यम्+घञ् । पूरा प्रयत्न (कोशिश).

समुद्र, (पु०) सम्+उन्द्+र । गीलाकरना । सम्+उद्+राक वा । इस नामसे बहुतजलवाला पदार्थ । "सह मुद्रया" मुद्रासहित (धनी) (त्रि०).

समुद्रकफ, (पु०) समुद्रस्य कफ इव । मानों समुद्रकी कफ है । समुद्रकी झाग । समुंदरझाग.

समुद्रगा, (स्त्री०) समुद्रं गच्छति । गम्+ड । समुद्रको जाती है । नदी । " सर्वा नद्यः समुद्रगाः " पुराणम्.

समुद्रचुलुक, (पु०) समुद्रः चुलुकः गण्डूषमितजलं इव अनायासेन पीतत्वादस्य । सारे समुद्रको जिसने एक चुलीकर लिया । अगस्त्यमुनि.

समुद्रनवनीतम्, (न०) समुद्रस्य नवनीतम् । समुद्रका मक्खन । चन्द्रमा । चांद.

समुद्रमेखला, (स्त्री०) समुद्रः मेखला इव वेष्टनाकारत्वात् यस्याः । घेर लेनेके कारण समुद्र जिसकी तडागी है । पृथिवी.

समुद्रयान, (न०) यायतेऽनेन । या+ल्युट् । ६ त० । पोत । जहाज । समुद्रके तरनेका साधनविशेष.

समु(द्रि)द्रीय, (त्रि०) समुद्र+भवार्थे घ-छ वा । समुद्रमें होनेवाला पदार्थ । जो चीज समुद्रमें हो.

समुद्वह, (त्रि०) सम्+उद्+वह्+अच् । श्रेष्ठ । सबसे अच्छा । अच्छीतरह उठानेहारा.

समुन्दन, (न०) सम्+उन्द्+ल्युट् । सम्यक् आर्द्रीभाव । वडा गीलापन । भीगना.

समुन्न, (न०) सम्+उन्द्+क्त । क्लिन्न । आर्द्र । गीला । भीगाहुआ.

समुन्नत, (त्रि०) सम्+उद्+नम्+क्त । एक प्रकारका शस्त्र (औजार) (पु०).

समुन्नति, (स्त्री०) सम्+उद्+नम्+क्तिन् । उच्चता । उंचाई । "प्रायः पयोधरसमुन्नतिरत्र हेतुः" इत्युद्भटः.

समुन्नद्ध, (त्रि०) सम्+उद्+नह्+क्त । गर्वित । अभिमानी । पण्डितम्मन्य । अपने आपको पण्डित माननेहारा । प्रभु । और समुद्भूत । उत्पन्नहुआ । "कर्मणि क्त" उठाकर बांडाहुआ.

समुन्नय, (पु०) सम्+उद्+नी+अच् । ऊर्ध्वनयन । ऊंचे लेजाना । अच्छीतरह लेजाया गया । ऊपर फेंकना । प्रकाश करना,

समुपचित, (त्रि०) सम्यक् उपचितम् । उप+चि+क्त । वहुत कियाहुआ । वढायाहुआ.

समुपेयिवस्, (त्रि०) सम्+उप+इण्+क्वसु । समीपगत । पासगया । पहुंचगया.

समुपोढ, (त्रि०) सम्+उप+वह्+क्त । संगत मिलगया संजात । पैदाहुआ.

समुल्लेख, (पु०) सम्+उद्+लिख्+घञ् । पांव आदिसे पृथिवी आदिका खोदना.

समूढ, (त्रि०) सम्+उद्-वा वह्+क्त । राशीकृत । इकट्ठा कियाहुआ । झुकाहुआ । "समूढमस्य पांसुरे" इति ऋग्वेदः । भुग्न । टेढा काबू कियाहुआ । जिसका विवाह होगया । शोधित । साफ कियागया । "सह मूढेन" मूर्खके साथ (त्रि०).

समूल, (त्रि०) सह मूलेन । जडसमेत । " समूलघातं न्यवधीत् " इति भट्टिः.

समूह, (पु०) सम्+ऊह्+घञ् । समुदय । साराका सारा । बहुत.

समूहनी, (स्त्री०) समूह्यतेऽनया । जो इकट्ठा करलेती है । झाड़ू । बुहारी । "भावे ल्युट्" सम्मार्जन । पोंछना (न०).

समूह्य, (पु०) सम्+ऊह्+ण्यत् । यज्ञियाग्नि । यज्ञकी आग.

समृद्ध, (त्रि०) सम्यक् ऋद्धः । ऋध्+क्त । बहुत सम्पदावाला । अतिवृद्ध । बहुत बूढा.

समृद्धि, (स्त्री०) सम्यक् ऋद्धिः । सम्+ऋध्+क्तिन् । बहुत-सम्पदा । दौलत.

समेत, (त्रि०) सम्+आ+इण्+क्त । समागत । आयाहुआ । और संगत । मिलाहुआ.

समेधित, (त्रि०) सम्+एध्+णिच्+क्त । संवर्धित.

समोदक, (न०) समं (अर्धभागेन) तुल्यं उदकं यत्र । आधापानी मिलाकर मथे (रिडके) हुए दहीसे उत्पन्न हुआ तक्रविशेष (छाछ-लस्सी) । "सह मोदकेन" जिसके पास लड्डू है (मोदकसहित) (त्रि०).

सम्पत्ति, (स्त्री०) सम्+पद्+क्तिन् । अतिविभव । बहुत ऐश्वर्य । बडी दौलत । जिसे जैसा चाहिये उसका वैसाही होना । धन.

सम्पद, (स्त्री०) सम्+पद्+क्विप् । विभव । सम्पत्ति । दौलत । हशमत.

सम्पन्न, (त्रि०) सम्+पद्+क्त । साधित । साधित किया हुआ । सम्पदावाला.

सम्पराय, (पु०) सम्+परा+इण्+अच् । युद्ध । जंग । लडाई । आपदा.

सम्परायिक, (न०) सम्परायाय (आपदे) हितम् । ठन् (इक) । आपत्तिके लिये हितकारी । युद्ध । जंग । लडाई । "साम्परायिकं" भी.

सम्पर्क, (पु०) सम्+पृच्+घञ् । सम्बन्ध । मेल.

सम्पर्किन्, (त्रि०) सम्+पृच्+घिणुन् । सम्बन्धवाला । मेलवाला.

सम्पा, (स्त्री०) सम्यक् (अतर्कितं) पतति । पत्+ड । अचानकही गिरती है । विद्युत् । बिजली.

सम्पाक, (पु०) सम्यक् पाको यस्मात् । जिस्से भलीभांति पाक होता है । आरग्वध वृक्ष । इसके खानेसे खायाहुआ अन्न आदि भलीभांति पच सक्ता है.

सम्पात, (पु०) सम्+पत्+घञ् । एक प्रकारका पक्षी (परिंदा) की गति (चाल) । अच्छी तरह गिरना.

सम्पाति, (पु०) सम्+पत्+णिच्-इन् । जटायु (जटौरपक्षी) का बडा भाई । "स्वार्थे कन्" वही अर्थ.

सम्पुट, (पु०) सम्+पुट्+क । कुरुवक वृक्ष । जो दोनों ओरसे भलीभांति पुट (पडदा होनेकी शकल) के समान हो । मिलाहुआ । एकजातिका पदार्थ भिन्नजातिवालेके साथ दोनोंओरसे व्याप्त होकर स्थित होरहा (त्रि०) "सकामैः सम्पुटो जाप्यः" इति तन्त्रम्.

सम्पुटक, (पु०) सम्पुटयति । सम्+पुट्+अच्+स्वार्थे वुन् (अक) । समुद्गक । संदूक । मञ्जूषा । पिटारी । जुडाहुआ.

सम्पूर्ण, (त्रि०) सम्+पूर्+क्त । परिपूर्ण । चारोंओरसे भराहुआ । पूरा २ । समग्र । सारा । एक प्रकारकी एकादशी (स्त्री०) टाप्.

सम्पृक्त, (त्रि०) सम्+पृच्+क्त । मिश्रित । मिलाहुआ । बंधाहुआ.

सम्प्रति, (अव्य०) सम्+प्रति । समाहारद्वन्द्वः । इदानीम् । अधुना अब.

सम्प्रतिपत्ति, (स्त्री०) समं प्रतिपद्यते+क्तिन् । वादीसे कहेहुए अर्थको स्वीकार करना (मान्ना) । एक प्रकारका उत्तर.

सम्प्रदातृ, (त्रि०) सम्+प्र+दा+तृच् । दान कर्ता । देनेवाला.

सम्प्रदान, (न०) सम्+प्र+दा+भावे ल्युट् । सम्यक् । प्रदान । भलीभांति देना । "सम्प्रदीयते अस्मै ल्युट्" जिसे दियाजाय । "कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानं" इति पाणिनिः । दानकर्मोद्देश्य.

सम्प्रधारणा, (स्त्री०) सम्+प्र+धृ+णिच्+युच् (अन) । योग्य वा अयोग्यका विचार करके अर्थका निश्चय करना । निश्चय.

सम्प्रयोग, (पु०) सम्+प्र+युज्+घञ् । वृद्धिआदि लाभकी इच्छासे धनआदिका विनियोग (लगाना) । मेल । सम्बन्ध । विषयसुखके लिये मेल । इकट्ठाहोना । भलीभांति जोडना.

सम्प्रसाद, (पु०) सम्+प्र+सद्+घञ् । योगआदि शास्त्रमें चित्तकी निर्मलता (सफाई) को पूरा करनेहारा एकप्रकारका यत्न । "भावे घञ्" अच्छी प्रसन्नता (खुशी).

सम्प्रसाधन, (न०) सम्+प्र+साध्+णिच्+करणे ल्युट् । कटक (कडा-चूडी) आदि भूषण (जेवर) । "भावे घञ्" भूषणक्रिया (सजाना).

सम्प्रसारण, (न०) सम्+प्र+सृ+णिच्+ल्युट् । सम्यग् विस्तारना । अच्छी तरह फैलाना । व्याकरणमें "यण्"-के स्थानमें जायमान "इक्" संज्ञावाला वर्ण.

सम्प्रहार, (पु०) सम्प्रह्रियते अत्र । सम्+प्र+हृ+घञ् । युद्ध । जंग । "भावे घञ्" अच्छीतरह चोट लगाना । जाना.

सम्प्राप्ति, (स्त्री०) सम्+प्र+आप्+क्तिन् । अच्छीतरह पाना । वैद्यकशास्त्रमें रोगकी एक अवस्था (दशा).

सम्प्रैष, (पु०) सम्+प्र+ईष्+घञ् वा वृद्धिः । नियोग । हुक्म.

सम्प्रोक्षण, (न०) सम्+प्र+उक्ष्+ल्युट् । जलआदि सींचकर एक प्रकारका संस्कार । छिडकना.

सम्फुल, (त्रि०) सम्+फुल्ल्+अच् । विकसित । खिलाहुआ । " सम्=फुल्ल्+क्त-अत इत्वम् " " सम्फुल्ल " यह भी इसी अर्थमें है.

सम्बद्ध, (पु०) सम्+बन्ध्+क्त । संबन्धवाला । "भावे क्त" सम्यग् बंधन । अच्छा बंधाहुआ (न०).

सम्बन्ध, (पु०) सम्+बंध्+घञ् । संसर्ग । मेल । संयोग । न्याय । समृद्ध । अच्छा बंधन । "सम्यग् बन्धो यस्मात्" जिस्से पूरा बंधन होता है । समर्थ । हितकारी (त्रि०).

सम्बर, (न०) सम्ब्+अरन् । जल । बौद्धोंका एकव्रत । पुल (सेतु) । एक दैत्य । एक मृग । एक मच्छी । और एक पहाड.

सम्बाध, (न०) सम्यक् बाधा यत्र । जहां बहुत पीडा है । नरकका मार्ग । "सम्+बाध्+भावे घञ्" । अन्योन्यसंघर्ष (आपसकी रगड) (पु०).

सम्बोधन, (न०) सम्+बुध्+ल्युट् । सम्यक्ज्ञान । अच्छी समझ । " बुध्+णिच्+ल्युट् " अच्छीतरह ज्ञापन (समझाना) । व्याकरणमें किसी दूसरी बातमें लगेहुएको अपनी ओर करनेके लिये जतलाना । आठवीं विभक्ति " हे राम ".

सम्भली, (स्त्री०) सम्यक् भलते । सम्+भल्+अच् । ङीष् । कुट्टिनी । दूसरे पुरुषके साथ किसी स्त्रीको मिला देनेहारी । दल्ली । व्यभिचारिणी.

सम्भव, (पु०) सम्+भू+अप् । उत्पत्ति (पैदाइश) । बडा संदेह (शक) । जो होसक्ता है (मुमकिन) । " अपादाने अप् " । हेतु । " कर्तरि अच् " मेलक (मिलानेहारा) (त्रि०).

सम्भावन, (न०) सम्+भू+णिच्+ल्युट् । अर्थसम्बन्धी एक अलंकार । व्याकरणमें विधिलिङ्का अर्थविशेष । और उत्कटकोटिक (दोनों ओर झुकनेहारा) संशयरूप ज्ञान । "सम्भावना" यही अर्थ है । हो सकना.

सम्भावित, (त्रि०) सम्+भू+णिच्+क्त । सम्भवयुक्त पदार्थ । हो सकनेहारी बात आदि.

सम्भाषण, (न०) सम्+भाष्+ल्युट् । अच्छीतरह कहना ।

सम्भिन्न, (त्रि०) सम्+भिद्+क्त । विदलित । टूटाहुआ । कटाहुआ । अच्छीतरह खिलाहुआ (विकसित).

सम्भूति, (स्त्री०) सम्+भू+क्तिन् । विभव । ऐश्वर्य । ईश्वरका ऐश्वर्यविशेष । उत्पत्ति । मूल । मेल । ताकत.

सम्भूयसमुत्थान, (न०) सम्भूय (मिलित्वा) सम्यक् उत्तिष्ठन्ति अनेन । मिलकर उठते हैं (उन्नत होते हैं) इस्से । मिलकर व्यापारियोंका व्यापार करना । एक प्रकारका विवाद.

सम्भृति, (स्त्री०) सम्+भृ+क्तिन् । सम्यक् पोषण । अच्छीतरह पालन.

सम्भोग, (पु०) सम्+भुज् । सम्यक् भोग । अच्छा भोग । अच्छी क्रीडा । हर्ष (खुशी) । शृङ्गाररसकी एक अवस्था.

सम्भ्रम, (पु०) सम्+भ्रम्+घञ् । भय (डर) आदिसे उपजा वेग । त्वरा (काली-जल्दी) । उसके कारण भय । हडबडी । आदर । बहुतभ्रम । अतिशयभ्रम.

सम्मति, (स्त्री०) सम्+मन्+क्तिन् । अनुमति (राय) । अपनी पियारी अभिलाषा (चाह).

सम्भ्रमोज्वलित, (त्रि०) संभ्रमेण उज्ज्वलितः । संभ्रम (वेग-तेजी-काहली) से भडका हुआ । क्षोभसे चमकाहुआ.

सम्मद, (पु०) सम्+मद्+क । हर्ष (कुशी) । अच् । हर्षवाला (त्रि०).

सम्मर्द, (पु०) संमृद्यते अत्र । सम्+मृद्+घञ् । युद्ध । जंग । "भावे घञ्" । अन्योन्यसंघर्ष । आपसकी रगड.

सम्मान, (पु०) सम्+मन्+घञ् । आदर (इज्जत).

सम्मार्जन, (न०) सम्+मृज्+ल्यु । संशोधन । साफ करना.

सम्मार्जनी, (स्त्री०) संमृज्यते अनया । सम्+मृज्+करणे ल्युट्-ङीप् । साफ कियाजाता है इस्से । धूली (धूर) आदिको निकालनेके लिये एक पदार्थ (बुहारी झाडु).

सम्मित, (त्रि०) सम्+मा+क्त । सदृश । तुल्य (बराबर) परिमाण । बराबर मापवाला.

सम्मुख, (त्रि०) संगतः मुखं । प्रा० । अभिमुखागत । सामने आया । जो सामने है.

सम्मुखीन, (त्रि०) सम्मुखं पतति । ख (ईन) । सामने आनेहारा । सामनेहुआ.

सम्मूर्च्छन, (न०) सम्+मूर्च्छ+ल्युट् । सम्यग् विस्तार । अच्छी तरह फैलाना । ऊंचाई । मोह । बेहोशहोना.

सम्मृष्ट, (त्रि०) सम्+मृज्+क्त । मार्जनयुक्त । पोंछा हुआ । मक्खी आदिको निकालकर शोधन कियाहुआ अन्न आदि.

सम्मोद, (पु०) सम्+मुद्+घञ् । हर्ष (खुशी) । और प्रीति (प्रसन्नता).

सम्यच्, (अव्य०) सम्+अञ्च्+क्विप् । सम्यादेशः । शोभन (ऊंदा) । संगत । मिलाहुआ । मनोज्ञ (मनोहर) । त्रि० । सचावचन । न० । उसवाला (त्रि०).

सम्राज्, (पु०) सम्यक् राजते । राज्+क्विप् । अनुस्वार नहिं होता । सारी पृथिवीका ईश्वर । राजा । जिसने " राजसूय " यज्ञ करलिया.

सर, (न०) सरति । सृ+अच् । चलता है । सरोवर (तालाब) । और जल (पानी) । लवण (नोंन-लून) । दहीका मठा । उस्से निकला नवनीत (मक्खन) । और बाण (तीर) । झरना । (स्त्री०) " भावे अप् " भेदन (फाडना) । और गमन (जाना) । एकशराब.

सरघा, (स्त्री०) सरं (मद्यभेदं) हन्ति । हन्+ड-नि० । एक प्रकारकी शरावको नाशकर्त्ती है । मधुमक्षिका । शहतकी मक्खी.

सरज, (न०) सरात् जायते । जन्+ड नवनीत । मक्खन.

सरजस्, (स्त्री०) सह रजसा । ऋतुमती स्त्री । अव्ययी० । रजोगुणवाला (त्रि०) । अच् समा० । रजोगुणके साथ.

सरट, (पु०) सृ+अटन् । कृकलास । काकलास । किरला.

सरण, (न०) सृ+ल्युट् । गमन (जाना) । और लोहकी मैल.

सरणि–णी, (स्त्री०) सृ+अनि । पथ (रास्ता) । सडक । पंक्ति । कतार.

सरमा, (स्त्री०) सह रमते । कुत्ती । देवताओंकी कुत्ती । दक्षकी कन्याका नाम । विभीषणकी स्त्रीका नाम.

सरयु, (पु०) सृ+अयु । वायु (हवा) । ऊङ् । अयोध्याके पास वहनेहारी एक नदी (स्त्री०).

सरल, (पु०) सृ+अलच् । पीतदारु (पीली लकडी) । उदार (खुलेदिलवाला) । और ऋजु (सीधा) (त्रि०) । त्रिपुटा (स्त्री०).

सरस्, (न०) सृ+असि । जल । और सरोवर (तालाव) । "सरसी" इसी अर्थमें है । "सरसी परिशीलितुमि" ति नैषधं.

सरस, (न०) सह रसेन (जलेन-आस्वादेन च) । पानी वा स्वादके साथ । सरोवर (तालाव) । रसवाला । सार्द्र (गीला) (त्रि०) । "सरसां सरसां परिमुच्ये" ति भट्टिः.

सरसिज, (न०) सरसि जायते । जन्+ड-अलुक् समा० । तालावमें उपजता है । पद्म । कमल । "सरसिजमनुविद्धं" शाकुन्तल.

सरसीरुह, (न०) सरस्यां (सरोवरे) रोहति । रुह्+क । तालावमें उत्पन्न होता है । पद्म । कमलका फूल.

सरस्वत्, (पु०) सरांसि (जलानि) सन्ति अस्य+मतुप् । "म" को "व" । पानीवाला । सरोवर (तालाव) । सागर । समुद्र । और नदी (दर्या) । एकनदी । वाणी देवी । शक्ति । और सोमलता (स्त्री).

सराव, (पु०) सरं (जलं) अवति । अव्+अण् । पानीको बचता है । जलका आधार । मट्टीका एक पात्र (वर्तन) । पियाला । "सह रावेण" शब्दके साथ । शब्दवाला (त्रि०).

सरित्, (स्त्री०) सृ+इनि । नदी (दर्या) । और सूत्र । (सूत-धागा).

सरित्पति, (पु०) ६ त० । नदिओंका मालिक । समुद्र । समुंदर.

सरित्वत्, (पु०) सरित् स्वामित्वेन अस्ति अस्य+मतुप् । "म" को "व" । समुद्र.

सरित्सुत, (पु०) ६ त० नदी (गंगा) का पुत्र । भीष्म पितामह.

सरिताम्पति, (पु०) ६ त० अलुक् समासः । नदीओंका स्वामी । समुद्र । "सरितां नाथः".

सरिद्वरा, (स्त्री०) सरित्सु वरा (श्रेष्ठा) । नदिओंमें बहुत अच्छी । गंगा.

सरीसृप, (पु०) वक्रं सर्पति । सृप्+यङ् (उसका लोप) +अच् । टेढा चलता है । सर्प (सांप) । वृश्चिक (बिच्छू) आदि । वृश्चिक आदि राशि.

सरु, (पु०) सृ+उन् । खड्ग (तलवार) आदिकी मुट्ठी.

सरूप, (त्रि०) समानं रूपं अस्य ("समान" को "स" आदेश होता है) । एक जैसी शकलवाला । तुल्यरूपवाला । सदृश । बराबर.

सरोज, (न०) सरसि जायते । जन्+ड । तालावमें उपजता है । पद्म । कमल । जो तालावमें उत्पन्न हो (त्रि०).

सरोजिनी, (स्त्री०) सरोजानां समूहः, सन्निकृष्टदेशो वा+इनि । कमलफूलोंका समूह वा उनके पासकी जगह । कमलोंकी बेल । कमलफूलोंवाली वावली.

सरोरुह, (ह), सरसि रोहति । रुह्+क्विप्-क वा । तालावमें उपजता है । कमलफूल.

सरोवर, (पु०) सरोभिः जलैः व्रियते असौ । वृ+अप् । जो जलोंसे ढकाजाता है । तडाग । छोटातालाव । तालाव.

सर्ग, (पु०) सृज्+घञ् । स्वभाव । रचना (बनावट) । निर्मोक्ष (छुटकारा) । काव्य आदिका परिच्छेद (विभाग-हिस्सा) । निश्चय । मोह । उत्साह (दिलेरी) । अनुमति+(ण्य).

सर्गबन्ध, (पु०) सर्गैः वध्यते असौ । जो सर्गोंसे बांधा जाता है । महाकाव्य.

सर्ज्, अर्जन (जमा-इकठा करना-कमाना) । भ्वा० पर० सक० सेट् । सर्जति । असर्जीत्.

सर्ज, (पु०) सृज्+अच् । शालवृक्ष । उसका रस (धुनाराल) । पीतसाल.

सर्जन, (न०) सृज्+ल्युट् । सेनाका पिछला भाग । और सृष्टि (रचना).

सर्जि–र्जी, (स्त्री०) सृज्+इन्-वा ङीप् । एक नदी । "सज्जी" रूप मट्टी.

सर्प, (पु०) सृप्+अच् । नागकेशर । और सांप । "सर्पी" (स्त्री०) । "भावे घञ्" गमन (जाना).

सर्पतृण, (पु०) सर्पः तृणं इव (अनायासच्छेद्यो) यस्य । जो सांपको तिनकेकी नाई सहजहीसे नाश+कर सक्ता है । नकुल (नेवला).

सर्पभुज्, (पु०) सर्पं भुङ्क्ते । भुज्+क्विप् । सांपको खाता है । मयूर । मोर.

सर्पराज, (पु०) सर्पाणां राजा (टच् समा०)। सांपोंका राजा। वासुकी। एक सांप.

सर्पसत्रिन्, (पु०) सर्पाणां सत्रं अस्ति अस्य। सांपोंका यज्ञकरनेवाला। राजा जनमेजयका नाम (इसी राजाने "सर्पेष्टि" नाम यज्ञ कियाथा).

सर्पाशन, (पु०) सर्पं अश्नाति। अश्+ल्युट्। साँपको खाता है। मयूर। मोर। और गरुड.

सर्पिणी, (स्त्री०) सृज्+णिनि। साँपकी स्त्री। सप्पनी। जानेवाला (त्रि०).

सर्पिस्, (न०) सृप्+इसि। साफ किया हुआ मक्खन। एक प्रकारका घी.

सर्पेष्ट, (न०) सर्पाणां इष्टः। सांपोंका पियारा। चंदनका वृक्ष.

सर्व्, सर्पण (जाना-फैलना)। भ्वा० प० स० सेट्। सर्वति। असर्वीत्.

सर्व, (पु०) सर्व+अच्। शिव। और विष्णु। सम्पूर्ण (सारा-सब)। सकल (त्रि०).

सर्वसहा, (स्त्री०) सर्वं सहते। खच्-मुम् च। सबको सहारती है। पृथिवी। भूमि। जमीन। सबकुछ सहारनेवाली (त्रि०).

सर्वकर्तृ, (पु०) सर्वं करोति। कृ+तृच्। सबको बनाता है। चारमुखवाला ब्रह्मा। और परमेश्वर.

सर्वकर्मीण, (त्रि०) सर्वकर्मभ्यः अलं। ख-(ईन)। सबकाम करनेहारा। जो सबकुछ करसक्ता है.

सर्वक्षार, (पु०) सर्वः क्षारमयः। सारा खारा। सावन नामसे प्रसिद्ध पदार्थ.

सर्वग, (न०) सर्वं गच्छति। गम्+ड। जल (पानी)। शिवजी, परमेश्वर, वायु (हवा) और आत्मा (पु०)। सबजगह जानेहारा (त्रि०).

सर्वङ्कष, (पु०) सर्वं कषति। कष्+खच्-मुम् च। सबको कसता है। पाप। सबसे बढजानेहारा (त्रि०).

सर्वजनीन, (त्रि०) सर्वजनेषु विदितः। ख (ईन)। सबजगह प्रसिद्ध। सर्वत्र विख्यात। सबकाहिती.

सर्वज्ञ, (पु०) सर्वं जानाति। ज्ञा+क। सबको जानता है। शिवजी। बुद्धदेव। और परमेश्वर। सब कुछ जान्नेहारा। (त्रि०)। दुर्गा (स्त्री०).

सर्वतस्, (अव्य०) सर्व+तसिल्। समन्ततः। चारोंओर। सबतरफ.

सर्वतोभद्र, (पु० न०) सर्वतो भद्राणि (मुखानि) यस्य। चारों ओर अच्छे मुखोंवाला। चार दर्वाजोंमें युद्धवाला एकघर। प्रतिष्ठाआदिमें पूजा करनेलायक देवताओंका एक मण्डल। ज्योतिषमें शुभ और अशुभको जान्नेके लिये एक-चक्र। "सर्वतः भद्रं अस्य" जो सबतरहसे सुखी कर्ता है। नीम (निम्ब) का वृक्ष (पु०).

सर्वतोमुख, (न०) सर्वतः मुखं अस्य। चारोंओर मुखवाला। जल। आकाश। शिवजी। ब्रह्मा। परमेश्वर। आत्मा। ब्राह्मण। और अग्नि (पु०).

सर्वत्र, (अव्य०) सर्व+त्रल्। सर्वस्मिन् काले। सब समयमें। हरवक्त। हरदेशमें। सब दिशाओंमें। सबजगह.

सर्वत्रगामिन्, (पु०) सर्वत्र गच्छति। गम्+ड। सब जगहमें जाता है। वायु (हवा)। सब स्थानमें जानेहारा। (त्रि०).

सर्वथा, (अव्य०) सर्वप्रकार-थाच्। सबतरह। हरएक तरहसे.

सर्वदमन, (पु०) सर्वान् दमयति। दम्+णिच्+ल्युट्। सबको दमन (वश-काबूमें) कर्ता है। दुष्यन्तका पुत्र भरतराजा। सर्वं दमन कर्ता (सबको काबू करनेहारा) (त्रि०).

सर्वदर्शिन्, (पु०) सर्वं समभावेन पश्यति। दृश्+णिनि। सबको एकही भावसे देखता है। बुद्ध। और परमेश्वर। सर्वद्रष्टा (सबको देखनेहारा) (त्रि०).

सर्वदा, (अव्य०) सर्व+दाच्। सब समय, देश, और दिशामें। सदा। हमेश.

सर्वधुरीण, (त्रि०) सर्वां धुरं वहति। ख (ईन)। सारा बोझा (भार) उठानेहारा। वृषादि (बैलआदि)। सबके आगेहुआ.

सर्वनाम, (पु०) सर्वेषां नाम (सबका नाम)। व्याकरणमें कार्यविशेषके लिये कीगई (इस) संज्ञावाला "सर्व" आदि शब्दभेद.

सर्वभक्ष, (स्त्री०) भक्ष+अण्। उप०। अजा। बकरी। सब कुछ खानेहारा (त्रि०).

सर्वमङ्गला, (स्त्री०) सर्वाणि मङ्गलानि अस्याः। सारे मंगल (सुख) होते हैं इस्से। ५ ब०। दुर्गा। भगवती.

सर्वमय, (त्रि०) सर्वात्मकः। मयट्। सबका स्वरूप। परमेश्वर (पु०).

सर्वरसोत्तम, (पु०) सर्वेषु रसेषु उत्तमः। सर्व रसोंमें अच्छा। लवण रस। नोंनका रस.

सर्वरात्र, (पु०) सर्वा रात्रिः। अच् समा०। सारीरात। सकल रात्रि.

सर्वरी, (स्त्री०) सृ+वनिप्-ङीप् "र" च रात्रि। रात.

सर्वलिङ्गिन्, (पु०) सर्वेषां लिङ्गानि सन्ति अस्य+इनि। सब चिन्होंवाला। वेदके विरुद्ध आचारवाले बौद्धआदि। सब लिङ्गवाला। पाषण्डी.

सर्वविद्, (पु०) सर्वं वेत्ति। विद्+क्विप्। सबको जानता है। परमेश्वर। सब जान्नेहारा (त्रि०).

सर्ववेद, (पु०) सर्वे वेदा अधीतत्वेन सन्ति अस्य+अच्। सबवेदोंको पढनेहारा। विद्+अण्। उप०। सर्वज्ञ। सब-कुछ जान्नेहारा (त्रि०).

सर्ववेदस्, (पु०) सर्वाणि (धनानि) वेदयते (लाभयते) पात्राय ददाति । विद्+लाभकरना+णिच्+असि । सब धनोंको पात्रके तईं देता है । सर्वस्वदक्षिणक (सारे धनकी दक्षिणावाला) यज्ञ । "विश्वजित्" नामक यज्ञ करनेहारा.

सर्ववेशिन्, (पु०) सर्वेषां वेशः (धार्यत्वेन) अस्ति अस्य । जो सब भेस बनाता है । नट (नकल करनेहारा).

सर्वसन्नहन, (न०) सर्वेषां सन्नहनं (युद्धार्थं सज्जीकरणं) यत्र । जहां लडाईके लिये सबको तयार किया जाता है । सारी सेनाको तयार करके युद्धकी यात्रा करना.

सर्वसह, (पु०) सर्वं सहते+अच् । गुग्गुल । सबकुछ सहारनेहारा (त्रि०).

सर्वसिद्धि, (पु०) सर्वेषां सिद्धिः अस्मात् । सबकी सिद्धि इस्से होती है । श्रीफल बिल्वका वृक्ष.

सर्वस्व, (न०) कर्म० सकलधन । साराधन.

सर्वहित, (न०) सर्वेषां हितं । मरिच । ५ व० । जिस्से हित (उपकार) होता है (त्रि०).

सर्वाङ्गीण, (त्रि०) सर्वाङ्गाणि व्याप्नोति । ख (ईन) । सब अङ्गोंमें फैलजानेहारा (सर्वाङ्गव्यापक) । "सर्वाङ्गीणे तरुत्वचे" भट्टिः.

सर्वान्नीन, (त्रि०) सर्वेषां अन्नं (सर्वं अन्नं) वा भुंक्ते+ख (ईन) । सबके अन्न वा सब अन्नको खाता है । सर्वान्नभक्षक.

सर्वार्थसिद्ध, (पु०) सर्वेषु अर्थेषु सिद्धः । सब अर्थोंमें सिद्ध (कामयाब) । बुद्धदेव । सम्पूर्ण चाहीगई सिद्धिवाला (त्रि०).

सर्वाह्ण, (पु०) सर्वं अहः । टच् समा० ह्लादेशः । णत्वं । सारादिन.

सर्षप, (पु०) सृ+अप्+सुकच् । सरिओं । सरसों । सस्यभेद.

ससिल, (न०) सल्+इलच् । जल । पानी.

सव, (पु०) सूयते । सू+अप् । यज्ञ । और सन्तान । "अच्" सूर्य । और अर्कवृक्ष (आकका वृक्ष).

सवन, (न०) सु+ल्युट् । यज्ञका अङ्गरूप स्नान । सोम निकालनेका व्यापार । सोमका पीना । यज्ञ । और प्रसव.

सवयस्, (त्रि०) समानं वयो यस्य । समानको "स" का आदेश । एक जैसी उमरवाला । वयस्य । सखा । मित्र.

सवर्ण, (पु०) समानो वर्णो यस्य । बराबर रंगवाला । एकजातिका आश्रय । स्थान और प्रयत्नसे बराबर अक्षर । जैसे "क" का स्थानसे तुल्य "गकारादि" प्रयत्न साम्यसे "च" का "क" आदि । वर्णसहित (त्रि०) सह वर्णेन.

सवासस्, (त्रि०) सह वाससा । कपडेके साथ । जो सदा कपडेके साथ रहता है । वेगवान् । वेगवाला.

सविकल्पक, (न०) सह-विकल्पेन+कप् । विकल्पके साथ । वेदान्तमें "ज्ञाता, ज्ञान, ज्ञेयकी भेदादि कल्पना सहित एक प्रकारका ध्यान है ।" न्यायमें "एक धर्ममें दूसरेके सम्बन्धको अवगाहन करनेहारा ज्ञानविशेष" । वह ध्यान आदि कि जिसमें त्रिपुटी बनीरहे.

सविकाश, (त्रि०) सह विकाशेन । प्रकाशके साथ । प्रफुल्ल । अच्छीतरह फूलाहुआ । विकसित । खिलाहुआ.

सवितर्क–सविमर्श, (त्रि०) वितर्केण सहवर्तमानः । वितर्कके साथ । सोचनेवाला । खयालवाला । समझदार । विचारवाला.

सवितृ, (पु०) सू+तृच् । जगत्स्रष्टा परमेश्वर । संसारके बनानेहारा परमात्मा । "तत्सवितुर्वरेण्यं" इति श्रुतिः । और सूर्य.

सविध, (त्रि०) सह विध्यति । विध्+क । "सह" को "स" । साथ बींधता है । निकट (पास).

सविस्मय, (त्रि०) सहविस्मयेन । विस्मयके साथ । विस्मयापन्न । आश्चर्यहुआ.

सवेश, (त्रि०) सह विशति अत्र । "वेश"का आदेश । सहवेशेन । निकट । नजदीक (पास) । वेश (भेस) सहित.

सव्य, (त्रि०) सू-प्रेरण+यत् । वाम (बायाँ) । दक्षिण और (दहिना) । प्रतिकूल (विरुद्ध) । और विष्णु (पु०).

सव्यसाचिन्, (पु०) सव्येन (वामेन) सचति । सच्+णिनि । बांयेसे संग कर्ता है । अर्जुन.

सव्येष्ठ, (पु०) सव्ये तिष्ठति । स्था+क । अलुक्-षत्व । बाईं ओर ठहरता है । सारथी । रथ चलानेहारा.

ससत्त्वा, (स्त्री०) सह सत्त्वेन । प्राणीसहित । गर्भवाली स्त्री । प्राणीवाला (त्रि०).

ससन, (न०) सस्-हिंसाकरना+ल्युट् । यज्ञके लिये पशुका मारना.

सस्य, (न०) सस्+यत् । वृक्ष आदिका फल । और खेतका धान.

सह, (अव्य०) साहित्य (साथ) । साकल्य (सारा) । सादृश्य (बराबर) । यौगपद्य (एक बारही) । सामर्थ्य (ताकत).

सह, (पु०) सहित । सह्+अच् । अगहन (मग्गर)का महीना । भार आदिके सहारनेहारा (त्रि०).

सहकार, (पु०) सह (युगपत्) किरति (सौरभं) । एकबारही दूरतक सुगन्धिको फेंकता हैं । कृ+अण् । जिसकी सुगन्धि दूरतक जाती है ऐसा आम्र (आम-अंब) । भावे घञ् । सह करण । साथ करना (न०).

सहकारिन्, (त्रि०) सह (सम्भूय) करोति (कार्यं) कृ+णिनि । इकट्ठा होकर काम कर्ता है । साथी । एक प्रकारका हेतु । अपने कार्यको करनेहारा कारण.

सहगमन, (न०) सह+गम्+ल्युट् । साथजाना । साथ-मरना।

सहचर, (त्रि०) सह चरति । चर+ट । साथ चलता है । वयस्य । सखा । मित्र । प्रतिबंधक (रोकनेहारा) । सहाय (मददगार) । और अनुचर (सेवक-नौकर).

सहज, (पु०) सह जायते । जन्+ड । साथ उत्पन्न होता है । सहोदर । भाई । और निसर्ग (स्वभाव) । साथ उठाहुआ । (त्रि०) । ज्योतिष्में जन्मलग्नसे तीसरा स्थान (न०).

सहजमित्र, (न०) सहजं (स्वभावसिद्धं) मित्रं । स्वाभाविक मित्र । बहिनका लडका आदि.

सहजारि, (पु०) सहजः अरिः । स्वाभाविक शत्रु । सापत्नभ्राता (सौतेला भाई) । पितृव्यपुत्र । चाचेका बेटा.

सहदेव, (पु०) सह दीव्यति । दिव्+अच् । माद्रीका पुत्र । पाण्डवविशेष । साथ खेलता है । सांपकी आँख । (स्त्री०).

सहधर्मिणी, (स्त्री०) सह (समानः) धर्मः अस्ति अस्याः+इनि । एक जैसे धर्मवाली । पत्नी । स्त्री । औरत.

सहन, (न०) सह्+ल्युट् । क्षमा (सहारना) । शीत, उष्ण, आदि जोडोंको सहारना सह्+युच् । सहारनेहारा । क्षमाशील (त्रि०).

सहपान, (न०) सह पानम् । साथपीना । इकट्ठेहोकर मद्यपीना.

सहभोजन, (न०) सह (एकत्र) भोजनम् । एकजगह खानापीना.

सहमरण, (न०) सह (मृतेन पत्या) एक चितारोहणेन मरणम् । मरेहुए पतिके साथ एकचितापर चढके मरना.

सहवसति-वास, (स्त्री०) सह=एकत्र वासः । साथ रहना । इकट्ठा रहना । एकठी स्थानपर दोनोंका निवास करना.

सहस्, (न०) सह्+असि । बल (जोर) । ज्योतिषमें मार्गशीर्ष (अगहन) का महिना (पु०).

सहसा, (अव्य०) हठात् । जोरावरी । अकस्मात् । अचानक.

सहस्य, (पु०) सहसे (बलाय) हितः । बलके लिये हितकारी । पौष (पूस) का महीना.

सहस्र, (न०) समानं हसति । हस्+र । दस सौकी संख्या । हजार । बहुतकी संख्या । उस संख्यावाला.

सहस्रकर, (पु०) सहस्रं कराः (किरणाः) अस्य । बहुत किरणवाला । सूर्य । "सहस्रकिरण" आदिभी.

सहस्रधा, (अव्य०) सहस्रेण प्रकारैः । हजार तरहसे । हजार भागोंमें.

सहस्रधारा, (स्त्री०) सहस्रगुणिता धारा । हजार गुनाधार । देवताको स्नान करनेकेलिये बहुत छिद्रों (छेकों)-वाले यन्त्र (कला) से निकले हुए बहुतसे जलकी धार.

सहस्रनयन, (पु०) सहस्रं नयनानि अस्य । हजार आँखवाला इन्द्र । "सहस्रनेत्र" आदि भी इसी अर्थमें है.

सहस्रपत्र, (न०) सहस्रं पत्राणि अस्य । हजारपत्तोंवाला । पद्म । कमलका फूल । "सहस्रपर्ण".

सहस्रपाद्, (पु०) सहस्रं (बहवः) पादा अस्य । "पाद्" का आदेश होता है । बहुतसे पाँववाला । विष्णु । परमेश्वर । "सहस्राक्षः सहस्रपात्" इति पुरुषसूक्तम् । "सहस्रपाद्" भी होता है.

सहस्रभुज, (पु०) सहस्रं भुजा अस्य । बहुतसी भुजावाला । विष्णु । कार्तवीर्यार्जुन । बाणासुर । "सहस्रबाहु".

सहस्रशिखर, (पु०) सहस्रं शिखराणि अस्य । बहुतसी चोटिओंवाला । विंध्य पर्वत.

सहस्रांशु, (पु०) सहस्रं अंशवो यस्य । बहुत किरणवाला । सूर्य । और आकका दरख्त.

सहस्राक्ष, (पु०) सहस्रं अक्षीणि यस्य+षच् समास । हजारनेत्रवाला । इन्द्र । विष्णु । और ईश्वर.

सहस्रार, (न०) सहस्रं आराः (कोणाः) अस्य । हजारों कोनोंवाला । सिरमें सुषुम्ना नाडीके नीचे हजार पत्तोंवाला कमलफूल.

सहस्रिन्, (त्रि०) सहस्रं अस्ति अस्य । एक हजारवाला.

सहाय, (पु०) सह एति+इण्+अच् । साथ जाता है । सहचर । साथी । मद्दतगार । अनुकूल । "असावनुक्तोऽपि सहाय एव" इति कुमारः.

सहायता, (स्त्री०) सहायानां समूहः+भावे तल् । मदद । साथिओंका समूह.

सहासन, (न०) सह आस्यते अत्र । आस्+ल्युट् । साथ बैठना । एकआसन.

सहित, (त्रि०) सम्यक् हितः । पु० । अच्छा हितकारी । सह्+क्त वा इट् । समभिव्याहृत । साथहुआ । मिलाहुआ.

सहितृ, (त्रि०) सह्+तृच्-वा इट् । सहारनेहारा (सहनशील) । "सोढा".

सहिष्णु, (त्रि०) सह्+इष्णुच् । सहनशील । सहारनेवाला.

सहिष्णुता, (स्त्री०) सहिष्णोर्भावः+तल् । क्षमा । सहारना.

सहृदय, (त्रि०) सह हृदयेन । प्रशस्तचित्त । अच्छे मनवाला । काव्यके अर्थकी भावनासे भलीभांति पकीहुई बुद्धिवाला । बहुत चतुर.

सहृल्लेख, (पु०) हृदयस्य लेखः (कालुष्यकरणं) हृद्भावः । जिस अन्नको देखकर हृदयमें संदेह उत्पन्न हो । दूषितान्न । बिगडाहुआ अन्न.

सहोक्ति, (स्त्री०) सह उक्तिः । साथ कहना । जहां "सह" शब्दकी उक्ति हो । एक अर्थसंबंधी अलंकार.

सहोटज, (पु० न०) सहते आतपादि अत्र । सह्+अच्-कर्म० । जहां धूप आदि सहारता है । मुनिओंकी पर्णशाला । पत्तोंकी कुटिआ.

सहोढ, (पु०) सह ऊढा येन । साथ विवाही है जिसने । गर्भवाली स्त्रीके साथ विवाह करनेके अनन्तर उसके जो पुत्र उत्पन्न होता है "सहोढज" भी.

सहोदर, (पु०) सह (समानं) उदरं यस्य । एक पेटवाला । एकही गर्भमें उपजा भाई । सगा भाई । बहिन । (स्त्री०).

सह्य, (न०) सहायस्य भावः+यत् । नि० । साहाय्य । सहायपन । सहारनेलायक । (त्रि०) । पहाड (पु०).

सा, (स्त्री०) सो+ड । गौरी । लक्ष्मी । वह.

सांकर्य, (न०) संकरस्य भावः+ष्यञ् । न्यायमें जातिका बाधक (रोकनेहारा) एक दोष । एकमें दूसरेका मिलजाना.

सांख्य, (न०) संख्यायते अत्र । संख्या (सम्यग् ज्ञानम्) सा अस्ति अत्र+अण् । जिसमें गिनाजाता है । जिसमें ठीक ज्ञान होता है । "एषा तेऽभिहिता सांख्ये" गीता । मूलप्रकृति आदि पदार्थोंकी गिनती होती है इसमें । अण् । कपिलका रचाहुआ दर्शनशास्त्र । (जिसमें प्रकृति पुरुष और तत्त्वोंका वर्णन है) । सांख्यका योग (पु०).

साङ्ग, (त्रि०) सह अङ्गेन । अंगयुक्त । अंगसहित । पूरा २.

सांग्रामिक, (त्रि०) संग्रामाय प्रभवति+ठण् । युद्धके लिये समर्थ होता है । सेनापति । सेनाका मालिक । कप्तान । युद्धके उपयोगी रथ आदि.

सांघातिक, (त्रि०) संघाताय हितं+ठण् । संघातकारक । इकट्ठा करनेहारा । ज्योतिष्में जन्मनक्षत्रतक सोलवां नक्षत्र.

सांयात्रिक, (पु०) सम्यक् यात्रायै अलं+ठण् । जहाज (पोत) से व्यापार करनेहारा । व्यापारी.

सांयुगीन, (त्रि०) संयुगे साधुः+ख (ईन) । रण (जंग) में कुशल (चालाक).

सांवत्सर, (पु०) संवत्सरं वेत्ति अधीते वा+अण् । वर्षसंबंधी ज्ञानको प्रकाश करनेहारे शास्त्रको जाने वा पढनेहारा । ज्योतिःशास्त्रको जानेहारा । गणक । ज्योतिषी.

सांवादिक, (पु०) सम्यक् वादाय अलं+ठण् । जो भलीभांति शास्त्रार्थ करसक्ता है । नैयायिक । न्यायशास्त्रके जानेहारा.

सांशयिक, (त्रि०) संशयं आपन्नः+ठण् । सन्दिहान । सन्देहमें पडाहुआ । शक्की । संशयवाला.

सांसारिक, (त्रि०) संसाराय हितं-तत्र भवो वा+ठण् । संसारका हितकारी पदार्थ अथवा संसारमें उत्पन्न हुआ । संसारी.

सांसिद्धिक, (त्रि०) संसिद्धिः (स्वभावसिद्धिः) तया निर्वृत्तः+ठण् । स्वभावसिद्ध । स्वाभाविक । जो आपसे आपही बना हो । कुदरतन.

साकम्, (अव्य०) सह अकति । साहित्य । साथ (तृतीया विभक्तिके साथ होता है).

साकल्य, (न०) सकलस्य भावः+ष्यञ् । समुदाय । साराही । "स्वार्थे ष्यञ्" । सारा । होमके लिये मिलेहुए तिल आदि द्रव्य.

साकाङ्क्ष, (त्रि०) सह आकाङ्क्षया । साभिलाष । इच्छासहित । चाहके साथ । शाब्दबोधके उपयोगी आकांक्षावाला पदविशेष.

साकार, (त्रि०) सह आकारेण (मूर्त्या) मूर्तिविशिष्ट । मूर्तिवाला । शकलवाला । अंगोंवाला । सावयव.

साकेत, (न०) आकित्यते आकेतः । सह आकेतेन । अयोध्यापुर । "जनस्य साकेतनिवासिनः" इति रघुः । अयोध्यानगरी.

साक्षात्, (अव्य०) सह अक्षति । अक्ष्+आति-सादेशः । प्रत्यक्ष । आँखोंके सामने । और उसका विषय (जो सामने दीख सक्ता है) । "यत् साक्षात् अपरोक्षाद् ब्रह्म" इति श्रुतिः.

साक्षात्कार, (पु०) साक्षात्+कृ+घञ् । प्रत्यक्ष । सामने.

साक्षिन्, (त्रि०) सह अक्षि+इनि । साक्षात् द्रष्टा इति वा नि० । सामने देखनेहारा । "स्त्रियां ङीप्" परमेश्वर (पु०) । "साक्षी चेता केवलो निर्गुणश्च" इति श्रुतिः । (यही साक्षी चैतन्यस्वरूपसे वेदान्तपरिभाषामें माना है).

साक्ष्य, (न०) साक्षिणो भावः कर्म वा+ष्यञ् । गवाहका काम । गवाही । "यः साक्ष्यमनृतं वदेत्" इति स्मृतिः.

सागर, (पु०) सगरेण निर्वृत्तः+अण् । सागरसे बना । समुद्र । एकसंख्या.

सागरगामिनी, (स्त्री०) सागरं गच्छति । गम्+णिनि । न णत्वम् । समुद्रको जाती है । गम्+णि-न णत्वम् । नदी । दर्या । छोटी इलाइची.

सागरमेखला, (स्त्री०) सागरो मेखलेव यस्याः । समुद्र मानों जिसकी तडागी है । पृथिवी । जमीन.

सागरालय, (पु०) सागरः आलयः यस्य । समुद्र जिसका घर है । वरुणदेवता । पानीकी देवता.

सागराम्बरा, (स्त्री०) सागरः अम्बरं यस्याः । समुद्र जिसका वस्त्र है । पृथिवी.

साग्निक, (पु०) सह अग्निना-अग्निहोत्रेण वा+कप् । श्रौत (वेदकी) और स्मार्त (धर्मशास्त्रकी) आगवाला । अग्निहोत्र (अग्निका होम) करनेवाला ब्राह्मण.

साचीकृत, (त्रि०) असाचि साचि क्रियते स+च्विनि० दीर्घः । वक्रीकृत । टेढा कियाहुआ । तिर्च्छा किया गया.

सात्यकि, (पु०) सत्यकस्य (वृष्णिवंशनृपस्य) अपत्यं+अण् । वृष्णिवंशके राजा सत्यकका पुत्र । कृष्णका सारथि.

सात्वत्, (पु०) सत्व+अत्+क्विप् । शक० । यादवोंके अधिकारमें एकदेश.

सात्वत, (पु०) सत्वं एव सात्वं अस्ति अस्य । त । सत्वगुणकी उपाधिवाला विष्णु । सात्वतदेशका राजा । अण् । विष्णु । "भगवान् सात्वतां पतिः" पुराणम् । सत्वगुणवाले विष्णुका भक्त । वैष्णव । यदुवंशीअंशुका पुत्र । एकराजा.

सात्विक, (पु०) सत्वात् (सत्वगुणप्रधानात्) विष्णोः भवति+ठण् (इक) । विष्णुसे उपजता है । चारमुखवाला ब्रह्मा (यह विष्णुकी नाभिकमलसे उत्पन्न हुआ था) । विष्णु । और सत्वगुणसे उपजा । सतोगुणी जन (त्रि०) "आहाराः सात्विकप्रियाः" इति गीता । दुर्गा (स्त्री०).

सादिन्, (पु०) सद्+णिनि । घोडेपर चढनेहारा । हाथीपर चढाहुआ । गाडीपर चढाहुआ । सवार.

सादृश्य, (न०) सदृशस्य भावः+ष्यञ् । समानधर्म । (एक वस्तुसे भिन्न होकर उसके बहुतसे धर्म रखनेहारा) । वरावरी । समानता.

साधक, (त्रि०) साध्+ण्वुल् (अक०) । साधन करनेहारा । सावित करनेहारा । तन्त्रमें मन्त्रआदि सिद्धिको करनेहारा शिष्य (चेला).

साधन, (न०) साध्यतेऽनेन । सिध्+णिच्-ल्युट्-साधादेशः । जिस्से कोई चीज सिद्ध कीजाय । करण । क्रियाको उत्पन्न करनेहारा हेतुविशेष । क्रियासाधक व्यापारवाला करण । सैन्य । युद्धका सामान । प्रमाण । और अनुमान करानेहारा हेतु । "भावे ल्युट्" मारना । मरेहुएका संस्कार । अग्निदान । आग लगाना । जाना । सावितकरना । और सिद्धि.

साधर्म्य, (न०) सधर्मस्य (समानधर्मस्य) भावः+ष्यञ् । अपना विशेषधर्मरूप लक्षण । " यदुक्तं यस्य साधर्म्यम् " इति भाषापरिच्छेदः । समानधर्मपन । बरावरी । "जैसे कमलकी नाई सुन्दर मुख " इत्यादिमें सुन्दरता "समानो धर्मो यस्य तस्य भावः" ष्यञ्.

साधारण, (त्रि०) सह धारणया+स्वार्थे अण् । सदृश । समान । वरावर । वह धन कि जिसपर वहुतोंका अधिकार है । आम । स्त्री-ङीप्-कुञ्चिका (चावी-कुंजी) । वेश्या आदि नायिका (जिसे सब भोग सक्ते हैं) । न्यायमें एक प्रकारका हेत्वाभास (वह हेतु जो सपक्ष और विपक्षमें एक जैसा रहजाय) । (पु०) । जैसे "पर्वत वह्निवाला है द्रव्यपन होनेसे" इत्यादिमें द्रव्यत्व हेतु सपक्ष पर्वत और विपक्ष ह्रदादिमें भी रहता है.

साधारणधर्म, (पु०) कर्म० सव वर्ण और आश्रमोंके समान धर्म । जैसे अहिंसा-सत्य-अस्तेय (चोरी न करना) शौच-इन्द्रियोंको रोकना-क्रोध न करना-कोमलता- दान इत्यादि । न्यायमें संशयका कारण और समान धर्म.

साधित, (त्रि०) सिध्+णिच्+क्त । दापित । दिलायागया । प्रमाण आदिसे सावित कियाहुआ । पूरा कियाहुआ.

साधिदैव, (त्रि०) सह अधिदेवेन+स्वार्थे अण् । दोनों पदोंको वृद्धि । अधिदेवतासहित । परमेश्वर.

साधिष्ठ, (त्रि०) अतिशयेन साधुः वाढो वा+इष्ठन् साधादेशः । अत्यन्त दृढ । वहुत मजवूत (पक्का) । वहुत साधु । वहुत अच्छा.

साधिष्ठान, (त्रि०) सह अधिष्ठानेन । आश्रयके साथ । सन्निहित । निकट । पास । तन्त्रमें छ चक्रोंके मध्यमें सुषुम्ना नाडीके बीच चक्रविशेष (न०).

साधीयस्, (त्रि०) अतिशयेन साधुः । वा साधादेशः । अत्यन्त दृढ । वहुत पक्का । न्याय्य । जो न्याय (इन्साफ) के विरुद्ध न हो । और वहुत अच्छा (स्त्री०) ङीप्.

साधु, (त्रि०) साध्+उन् । उत्तमकुलमें उत्पन्नहुआ । सुन्दर । मनोहर । और उचित । स्त्रियां वा ङीप् । मुनि और जिनदेव । "सन्मान पाकर प्रसन्न नहिं होता, निरादर होनेपर क्रोध नहिं कर्ता, और क्रोधमें होकर कदापि कठिन वचन नहिं कहता" इस प्रकारके धर्मवाला जन । और व्यापारी (पु०).

साध्य, (पु०) सिध्+णिच्+यत् । द्वादशसंख्याक (वारह) गणदेवता । विष्कम्भ आदि योगोंमें इक्कीसवां योग । साधनीय (सावित करनेलायक) (त्रि०) । अठारह प्रकारके विवादों (झगडों) में प्रमाण (सवूती) आदिसे सावित करनेलायक पदार्थ । अनुमितिसे साधन करनेलायक वह्निआदि-जैसे "वह्निवाला है धूम होनेसे" इत्यादिमें सिषाधयिषित (सिद्ध करनेकी इच्छा किया गया), वह्नि "साध्य" है । संस्कारके लायक । मन्त्र.

साध्यतावच्छेदक, (पु०) साध्यतां अवच्छिनत्ति (विशेषयति) । अव+छिद्+ण्वुल् । येन रूपेण यस्य साध्यतारूपा विषयता तस्मिन् धर्मे । जिस रूपसे जिसकी साध्यता निश्चित हो-जैसे "वह्निमान् धूमात्" यहां "वह्नि" साध्य है जो कि उसकी साध्यता "वह्नित्व" को निश्चय कराता है.

साध्यसिद्धि, (स्त्री०) साध्यस्य सिद्धिः (विनिर्णयः) । सिध्+क्तिन् । सिद्ध करनेलायक पदार्थकी सिद्धि । (सावित होना) । साध्य (वह्नि आदि) की सिद्धि (साधनके आधीन निर्णय) । निष्पत्ति (एक कामका पूरा होना) । "जिसमें प्रतिज्ञाकरनेलायक अर्थका निर्णय हो" । व्यवहार.

साध्वस, (न०) साधु+अस्यति+अस्+अच् । भय (डर) । पूरा फेंकता है (आनंदको).

साध्वी, (स्त्री०) साधु ङीप् । पतिव्रता स्त्री (जो पतिके साथ छायाके समान रहती है) । भली.

सानन्द, (त्रि०) सह आनन्देन । आनन्दसहित । खुश.

सानु, (पु० न०) सन्+उण् । पर्वतकी चोटी (प्रस्थ) । वन । पथ । आगे.

सानुज, (न०) सानौ जायते । जन्+ड । प्रपौण्डरीक । तुम्बुरवृक्ष (पु०) । सहानुजेन । अनुजसहित (भाईके साथ) (त्रि०).

सानुमत्, (पु०) सानुः अस्ति अस्य+मतुप् । चोटीवाला । पर्वत । पहाड.

सान्तपन, (न०) सन्तापयति । सम्+तप्+णिच्+ल्युट्-स्वार्थेऽण् । अच्छीतरह तपाता है । दो दिनोंमें सिद्ध होनेहारा व्रतविशेष.

सान्तर, (न०) सह अन्तरेण । सादेशः । विरला । फरक (व्यवधान) के साथ.

सान्तानिक, (त्रि०) सन्तानः प्रयोजनं अस्य+ठक् । सन्तानका साधन विधानविशेष । जिस्से सन्तान होती है इस प्रकारका विधान.

सान्त्वन, (न०) सान्त्व्+ल्युट् । आनुकूल्यकरण । अच्छी २ बातें सुनाकर क्रोधको दूर करना । ठण्डा करना । कान और मनको प्रसन्नता देनेहारा वचन । प्यार.

सान्दीपनि, (पु०) सन्दीपनस्य अपत्यं+इञ् । सन्दीपनकी सन्तान । वलराम और कृष्णजीका आचार्य । अवन्तिपुरमें निवासकरनेहारा एक मुनि.

सान्द्र, (त्रि०) आदि+रक् । सह अन्द्रेण । निविड । गाढा । मृदु । कोमल । नरम । स्निग्ध । चिकना । और (मनोहर) । वन (जंगल) (न०).

सान्ध्य, (त्रि०) सन्ध्यायां भवः+अण् । संध्याकालिक । सांझके समयका.

सान्निध्य, (न०) सन्निधिरेव+ष्यञ् । नैकट्य । समीपता । पासपन । पासहोना । पास.

सान्निपातिक, (त्रि०) सन्निपातात् (त्रिदोषविकारात्) आगतः । तेन निर्वृत्तो वा+ठक् । तीन दोषोंके बिगडनेसे आया वा हुआ । सन्निपातसे उपजा रोग । "विकारे सान्निपातिके" कुमारः.

सापत्न्य, (पु०) सपत्न एव+स्वार्थे ष्यञ् । शत्रु (दुष्मन) "सपत्न्या भवः । तस्या अपत्यं वा+यञ् ।" सपत्नी (सौतिन) का पुत्र । "सापत्न".

सापिण्ड्य, (न०) सापिण्डस्य भावः+ष्यञ् । सपिण्डता (एकजातपना) । दाय (विरसा) और अशौच (अपवित्रता) स्वीकार करनेके उपयोगी जातिका धर्म । "सापिण्ड्यं साप्तपौरुषं" इति स्मृतिः.

साप्तपदीन, (न०) सप्तभिः पदैः (उच्चरितैः) निर्वृत्त+ष्यञ् (ईन) । सात पदोंके बोलनेसे बनी । सख्य । मित्रता । सौहार्द । प्रेम.

साप्तपौरुष, (त्रि०) सप्त पुरुषान् व्याप्नोति+अण् । सात पुरुषोंतक फैलता है । सप्तपुरुषव्यापक.

साफल्य, (न०) सफलस्य भावः+ष्यञ् । पूरा होना । सार्थक्य । अर्थके सिद्ध करनेवाला होना । सम्पूर्णता । सफलता.

साम्, सान्त्वन (शान्त करना) चु० उ० स० सेट् । सामयति-ते । अससामत्-त.

सामग, (पु०) साम (तद् वेदं) गायति । सामवेदके गाने वा पढनेहारा.

सामग्री, (स्त्री० न०) समग्रस्य भावः (पूरा होना) । +ष्यञ् । समस्तता (सारापन) (स्त्री०) । कारणसमूह । और द्रव्य (स्त्री).

सामञ्जस्य, (न०) समञ्जसस्य भावः+ष्यञ् । औचित्य । अच्छापन । मुनासिव होना.

सामन्, (न०) सो+मनिन् । "अग्निं दूतं वृणीमहे" इत्यादि वेदविशेष । राजाओंके लिये शत्रुको वश करनेका उपायविशेष । और प्यारे वचन आदिसे शान्त करना । पशुको बांधनेकी रस्सी । स्त्री० ङीप्.

सामन्त, (पु०) संश्लिष्टः अन्तः (एकदेशः) यस्य समन्तः । तस्य ईश्वरः+अण् । अपने देशके पास रहनेहारे देशका स्वामी राजा । वह राजा कि जो बडे राजाको कर (खिराज) देता है । करदराजा । टका भरनेहारा राजा.

सामयिक, (त्रि०) सामये भवः उचितो वा+ठञ् (इक) समय (वक्त) पर हुआ । और समयके उचित (योग्य).

सामयोनि, (पु०) साम योनिः (उत्पत्तिस्थानं) यस्य । सामसे उत्पन्नहुआ । हस्ती ("एक वार ब्रह्माने सूर्यके दोनों अण्डकपालोंको हाथमें लेकर सात सामों (गीतों) को गाया-तव हाथी गिरे") । ब्रह्मा । चतुर्मुख.

सामर्थ्य, (न०) समर्थस्य भावः+ष्यञ् । ताकत । शरीरका वल (जोर) । शक्ति । योग्यता । संगतार्थता । अर्थका ठीक जुडना.

सामवेदिन्, (पु०) साम वेत्ति+विद्+णिनि । सामवेदको जानेवाला ब्राह्मण.

सामाजिक, (पु०) समाजः प्रयोजनं अस्य । सभास्थापनकरना जिसका मतलव है । सभ्य । सभाका मैम्बर । सभासद्.

सामानाधिकरण्यम्, (न०) समानं अधिकरणं यस्य तस्य भावः । एकही पद पर दोनोंका होना । एकही आश्रयका होना । समान (बरावर) अधिकार । किसी कारक समान संबंध होना जिसे धूम और वह्निका पर्वतमें सामानाधिकरण्य है.

सामान्य, (न०) समानस्य भावः+ष्यञ् । सादृश्य प्रयोजक धर्म । बराबरीको जतलानेहारा धर्म-जैसे "मुख कमलफूलके समान सुन्दर है" इत्यादिमें सुन्दरता आदि+स्वार्थे ष्यञ्-"समानं एव" द्रव्य, गुण और कर्ममें तुल्य स्वरूपसे रहनेहारी जाति.

सामान्यलक्षणा, (स्त्री०) सामान्यं (साधारणधर्मः) लक्षणं यस्याः । एक जैसे धर्मको जतलानेहारी । न्यायमें "अलौकिक प्रत्यक्षका एक उपाय-जैसे एक "घट" के जाननेमें "घटत्वरूप सामान्यधर्मज्ञान" से सम्पूर्ण घटत्ववालेका ज्ञान होता है । अलौकिक सन्निकर्षविशेष.

सामान्यप्रतिपत्तिपूर्वकम्, (अव्य०) सामान्या प्रतिपत्तिः पूर्वं यथा तथा । समान प्रतिष्ठाके साथ । बराबर आदर (इज्जत)के साथ.

सामान्या, (स्त्री०) समानैव+स्वार्थे ष्यञ्-टाप् । साधारण (आम) स्त्री । वेश्या । कंजरी.

सामि, (अव्य०) साम+इन् । अर्ध । आधा । "सामिघटितेति" नैषधम्.

सामीप्य, (न०) समीपस्य भावः+स्वार्थे वा ष्यञ् । नैकट्य । पासहोना । निकट । पास । नजदीक.

सामुद्रक, (न०) समुद्रेण प्रोक्तं वुण् (अक) । हाथ आदिकी रेखा आदिसे स्त्री और पुरुषके शुभ और अशुभ लक्षणको जतलानेहारा ग्रन्थविशेष (स्त्रियोंका बायाँ और पुरुषोंका दहिना हाथ आदि देखा जाता है) "सामुद्रिक" भी होता है.

साम्परायिक, (न०) सम्परायाय (आपदे) परलोकाय वा हितम्+ठण् (इक) । दुःख वा परलोकके लिये हितकारी । युद्ध (जंग) । परलोकका साधन (त्रि०).

साम्प्रतम्, (अव्य०) सम्+प्र+तन-अनुयुक्त । उचित । योग्य । मुनासिब । अब । ठीक २.

साम्प्रदायिक, (त्रि०) सम्प्रदायेन भवः सम्प्रदाय (एकके पीछे दूसरा पीढीदरपीढी)से चला आया (हुआ).

साम्य, (न०) समस्य भावः+ष्यञ् । तुल्यत्वप्रयोजकसाधारण धर्म । बराबरीको जतलानेहारा एक जैसा धर्म.

साम्राज्य, (न०) सम्राजस्य भावः+ष्यञ् । सार्वभौमत्व । सम्पूर्णभूमिका राजा होना । बादशाहत । दसलाख योजन (एक योजन चारकोसका) पर हकूमतकरना.

सायंसन्ध्या, (स्त्री०) सायं (दिनान्ते) संध्या । तत्र सम्ध्यायते । सम्+ध्यै+क । दिनके अन्तकी संध्या (दोनों वक्त मिलेहुए) । दिनके अन्त (सांझ)में उपासना करनेलायक देवताविशेष.

सायक, (पु०) सो+ण्वुल् । बाण (तीर) । खड्ग । तरवार.

सायन्तन, (त्रि०) सायं भवः । ट्युल्-तुट् च । दिनके अन्तमें हुआ.

सायम्, (अव्य०) दिनान्त । सांझ । "सायं सम्प्रति वर्तते" उद्भटः.

सायाह्न, (पु०) सायोऽन्हः । त० टच् । अन्हादेशः । दिनका अन्त । सांझ । दिनका शेष पाँचवाँ भाग जो तीन मुहूर्त होता है.

सायुज्य, (न०) सह युनक्ति । युज्+क्विप् । सादेशः । "सयुङ्" तस्य भावः+ष्यञ् । साथ जुडना । पाँच प्रकारकी मुक्तिमेंसे एकही स्थानमें इष्टदेवताके साथ इकट्ठाहोनारूप मुक्ति.

सार, (न०) सृ+घञ् । सार्+अच् वा । जल । धन । न्यायानुसार । नवनीत (मक्खन) । लोहा । और वन (जंगल) । बल (जोर) । स्थिर अंश (पक्काहिस्सा) । वायु (हवा) । अच्छा (त्रि०).

सारगन्ध, (पु०) सारः गन्धो यस्य । अच्छे गन्धवाला । चन्दन.

सारघ, (पु०) सरघाभिः निर्वृत्तम् । मक्खिओंसे बना । मधु । शहत । क्षौद्र.

सारङ्ग, (पु०) सृ+अङ्गच् । चातक खग (पपीहा) । हरिण । हाथी । भौंरा । छत्रा । राजहंस । एकबाजा । कपडा । कईरंग । मोर । कामदेव । कमानं । बाल । भूषण (गहना) । कमलफूल । शंख । चंदन । कपूर । फूल । कोइल । बादल । शेर । रात । भूमि । और दीप्ति.

सारङ्गिक, (पु०) सारङ्गं (मृगं) हन्ति+ठक् (इक) । पशुको मारता है । व्याध । शकार.

सारज, (न०) सारात् (दध्यग्रात्) जायते । जन्+ड । मट्ठेसे उपजता है । नवनीत । मक्खन.

सारणि-णी, (स्त्री०) सृ+णिच्+अनि-वा ङीप् । छोटी नदी । छोटा दर्या । संक्षेपसे ग्रहोंकी गति आदिको जतलानेहारा ज्योतिष्का ग्रंथविशेष.

सारथि, (पु०) सृ+अथिण् । सह रथेन सरथः (घोटकः) तत्र नियुक्तः+इञ् वा । रथ (गाडी) आदि वाहन (सवारी)को चलानेहारा । नियन्ता । गाडीवान.

सारदा, (स्त्री०) सारं ददाति । दा+क । सरस्वती । सारका दाता (त्रि०).

सारमेय, (पु०) सरमायाः (कश्यपपत्न्याः) अपत्यं+ढक् (एय) । कश्यपकी स्त्री सरमाका पुत्र । कुक्कुर (कुत्ता) । कुत्ती (स्त्री०).

सारव, (त्रि०) सरय्वां भवः+अण् । नि० । सरयूनदीमें हुआ.

सारस, (न०) सरः (अभिजनःनियतवसतिः) अस्य+अण् । जो नियमसे तालावमें रहता है । कमलका फूल । पद्म । और कटी (कमर) का भूषण । "सह रसेन"+स्वार्थेऽण् । जो रस (जल-वा अमृत) के साथ है । चन्द्रमा । हंस । और इसी नामका एकपक्षी । तालावका (त्रि०).

सारस्वत, (पु०) सरस्वती देवता अस्य । सरस्वत्या इदं वा+अण् । जिसकी देवी सरस्वती है वा सरस्वतीका यह । बिल्वका डण्डा । एकदेश । पाँच गौडोंमेंसे एकप्रकारका ब्राह्मण । सरस्वतीसे पालन कियाहुआ एकमुनि । ब्रह्माका दिनरूप कल्पविशेष । सरस्वतीवाला (त्रि०).

सारस्वतकल्प, (पु०) कर्म० । तन्त्रमें सरस्वतीकी उपासनाके लिये एक प्रकार । इस नामका ब्रह्माका दिन.

सारि-री, (पु० स्त्री०) सृ+इन् । वा ङीप् । पाशक । पास्सा.

सारिका, (स्त्री०) सरति (गच्छति) सृ+ण्वुल् । एक पक्षी (मैंना).

सार्थ, (पु०) सृ+थम्+स्वार्थेऽण् । समूह । जीवोंका समूह । "सह अर्थेन" धनसहित । वनिओंका समूह । धनी (दौलतमंदी) (त्रि०)+कन् । "सार्थकः" शब्द.

सार्थवाह, (पु०) सार्थं वहति । वह्+अण् । व्यापारी । वणिग्जन.

सार्द्र, (त्रि०) सह आर्द्रेण । आर्द्रतायुक्त । गीलेपनके साथ । गीला.

सार्धं, (अव्य०) साहित्य । साथ । "सह अर्धेन" सार्धः । आधेके साथ (त्रि०).

सार्प, (न०) सर्पो देवता अस्य+अण् । जिसका देवता सांप है । आश्लेषा नक्षत्र (तारा).

सार्पिष्क, (त्रि०) सर्पिषा संस्कृतं+ठण् (इक) । घीमें संस्कार कियागया व्यञ्जन (नाल्दा) आदि.

सार्वजनीन, (त्रि०) सर्वेषु जनेषु विदितः+खञ् (ईन) द्विपदवृद्धिः । सबजनोंमें जानाहुआ । सर्वलोकप्रसिद्ध.

सार्वत्रिक, (त्रि०) सर्वत्र भवं+ठक् (इक) । सब समयमें हुआ.

सार्वधातुक, (न०) सर्वधातून् व्याप्नोति+ठक् । व्याकरणमें लट् । लोट् । लङ् । विधिलिङ् । इन चारोंके प्रत्यय.

सार्वभौतिक, (त्रि०) सर्वाणि भूतानि व्याप्नोति+ठञ् । "दोनों पदोंको वृद्धि होती है" । सब जीवोंमें फैलनेहारा । सर्वभूतव्यापक.

सार्वभौम, (पु०) सर्वस्या भूमेः ईश्वरः । सर्वासु भूमिषु विदितो वा+अण् । सारी पृथिवीका मालिक । वा सब पृथिवी (नगरों)में जानाहुआ । चक्रवर्ती राजा । शाहनशाह । उत्तर दिशाका हाथी.

सार्वलौकिक, (त्रि०) सर्वेषु लोकेषु विदितः+ठञ् । द्विपदवृद्धिः । सब लोकोंमें जानाहुआ । "स रामः सार्वलौकिकः" इति भट्टिः.

सार्वविभक्तिक, (त्रि०) सर्वासु विभक्तिषु । तदर्थे भवः+ठञ् (इक) । सब विभक्तिओंके अर्थमें विधान कियागया "तसिल्" आदि प्रत्यय.

सार्षप, (त्रि०) सर्षपस्य विकारः+अण् । सरसोंका वनाहुआ तेलआदि । "अदुष्टं सार्षपं तैलं" इति स्मृतिः.

साल, (पु०) सल्+घञ् । हरएक वृक्ष । इस नामका वृक्ष । प्राकार । शहरपनाह.

सालनिर्यास, (पु०) ६ त० । सर्जरस । धुना । राल.

सालभञ्जिका, (स्त्री०) सालं भनक्ति । भञ्ज्+ण्वुल् । लकडी आदिका वनाहुआ वनावटी खेलका साधन । पुत्तलिका । पुतली । गुड्डी । वेश्या । कंजरी.

सालूर, (पु०) सल्+ऊरच्+णिच् । भेक । मण्डूक । मेंडक । डड्डू.

सालोक्य, (न०) समानः लोकः अस्य । तस्य भावः+ष्यञ् । पाँच प्रकारकी मुक्तिमेंसे अपने उपास्य देवताके साथ एकही लोकमें वासकरनारूप मुक्तिविशेष.

साल्व, (पु०) ब० व० सौभदेश । उस देशका राजा । अण्.

सावधान, (त्रि०) सह अवधानेन । जो चित्तको एक कर्ता है । सचेतन होशियार । मनोऽभिनिवेशयुक्त । खबरदार.

सावन, (न०) सवनं (सोमयागाङ्गं स्नानं) तस्येदं+अण् । वह दिन कि जब सोमयागका अंग स्नान कियाजाता है । यज्ञका अन्त । पूरे तीस दिनका मास (महीना) । वरुण.

सा(शा)वर, (पु०) सरवरेण निर्वृत्तः+अण् । पाप (गुनाह) अपवाद । कलंक.

सावर्ण, (पु०) सवर्णायां भवः+अण् । सूर्यकी स्त्री संज्ञादेवीके गर्भसे उपजा आठवां मनु+इञ् । "सावर्णि".

सावित्र, (पु०) सविता देवता अस्य+अण् । जिसका देवता सूर्य है । विप्र । ब्राह्मण । ऋग्विशेष (एकमन्त्र) । स्त्री० ङीप् । गायत्री । सत्यवान्की स्त्री० । सूर्य देवताका "चरु" आदि (त्रि०) । यज्ञोपवीत (न०) । स्वार्थादौ अण् । सूर्य । तस्येदं+अण् । महादेव । वसु (पु०).

सावित्रीपतितः-परिभ्रष्ट,(पु०) सावित्र्याः पतितः । गायत्रीसे गिरा हुवा । शूद्र भिन्न ब्राह्मणादि तीन वर्णोंमेंसे जिसका यथाकाल यज्ञोपवीत नहिं हुआ । ऐसे मनुष्यको "व्रात्य" भी कहते हैं.

सावित्रीव्रत, (न०) सावित्रीपूजनमुद्दिश्य कर्तव्यं व्रतम् । सावित्रीको पूजनेकेलिये करनेलायक व्रतविशेष । ज्येष्ठ (जेठ) के कृष्णपक्षकी चतुर्दशी.

सास्ना, (स्त्री०) सस्+न-णिच । गौके गलेका लोमसमूहरूप कम्बल । गवगव.

सास्र, (त्रि०) सह अस्रेण । चक्षुर्जलान्वित । आँसुओंके साथ । जिसकी आंखसे पानी चल रहा हो.

साहचर्य, (न०) सहचरस्य भावः+ष्यञ् । साथ रहना । समभिव्याहार । साथ । सामानाधिकरण्य । एकही आश्रयहोना.

साहस, (न०) सहसा (बलेन) निर्वृत्तं+अण् । जोरसे कियागया चोरी (चौर्य) स्त्रीसंग्रह (किसीकी स्त्रीको उसकी इच्छाके विना पकडलेना) आदि दुष्टकाम । "सहसा (अविवेचनेन) कृतं कर्म" । बिना विचारे कियागया काम । (त्रि०) । "साहसं अनुसरति" साहसकरनेवालेको मिलता है । दण्डविशेष (सजा) । और अग्नि । आग (पु०).

साहसाध्यवसायिन्, (त्रि०) साहसं अध्यवस्यति । साहससे काम करनेवाला । दिलेरीसे चलता हैं । जिस विचारके विना किसी कामको काहली (शीघ्रता) से करनेवाला.

साहसिक, (त्रि०) साहसे प्रसृतः+ठन् । "मनुष्यको मार डालना" आदि दिलेरीमें लगगया । चोर । पारदारिक । मिथ्यावादी । पुरुषआदि (सख्त बोलनेहारा).

साहस्र, (न०) सहस्राणां समूहः+अण् । कई हजार । "स्वार्थे अण् ।" हजारकी संख्या । (न०) हजारकी संख्यावाला (त्रि०).

साहाय्य, (न०) सहायस्य भावः+ष्यञ् । सहायता । मद्दत.

साहित्य, (न०) सहितस्य भावः+ष्यञ् । मेलन । मिलाना । इकट्ठाहोना । आपसमें अपेक्षा रखनेहारे समानरूपोंका एकही क्रियामें अन्वय होना । एक प्रकारका काव्य वा शास्त्र.

साह्वय, (पु०) सह आह्वयेन (अभिधानेन) । नामके साथ । "जगाम गजसाह्वयम्" भारतम्.

सिंह, (पु०) हिन्स्+अच् । पृ० वर्णविपर्यय (इसमें अक्षर बदल जाते हैं) । इस नामका पशु । शेर । लाल सुहांजना । मेषसे पाँचवी राशि । "यह अन्तमें आनेसे "श्रेष्ठ" के अर्थको प्रकाश कर्ता है" । "पुरुषसिंहः".

सिंहध्वनि, (पु०) सिंहस्य इव ध्वनिः । शेरके समान आवाज । "सिंहनाद" आदि भी । ६ त० सिंहका शब्द.

सिंहल, (पु०) सिंहः अस्ति अत्र+लच् । जहां शेर है । एकदेश । सिलोन टापू । रांगा । पीतल.

सिंहवाहिनी, (स्त्री०) सिंहरूपो वाहो विद्यते अस्याः । इनि । जिसकी सवारी शेर है । दुर्गा देवी.

सिंहविक्रान्त, (स्त्री०) सिंह इव विक्रान्तः (शेरकी नाईं बली) अश्व (घोडा) । शेरके समान बलवाला (त्रि०).

सिंहसंहनन, (न०) (त्रि०) सिंहस्य इव संहननं (अङ्गं) अस्य । जिसका अंग शेरके समान है । अच्छेअंगवाला । सिंहके समान दृढ (पक्के) अंगवाला । "सिंहसंहननो युवा" रघुः.

सिंहावलोकनम्, (न०) सिंहस्य अवलोकनं सिंह (शेर) का देखना (पीछेकी ओर) । एकप्रकारका न्याय जिसमें पिछली और अगली वस्तुका सम्बन्ध जतलाया जाता है.

सिंहासन, (न०) सिंहचिह्नितं आसनम् । सिंहके चिन्ह (नशान) वाला आसन । राजाका आसन । तख्त.

सिंहिका, (स्त्री०) काश्यपकी स्त्री । राहुकी माता.

सिंहिकासुत, (पु०) ६ त० । राहु । सिंहिकाका पुत्र.

सिंही, (स्त्री०) हिनस्ति रोगान् । हिन्स्+अच् । पृ० । वार्ताकी । कण्टकारिका । वासक । बृहती । और राहुकी मां । "सिंह+जातौ ङीप्" । सिंहकी स्त्री । शेरनी.

सिक्, सेचन । सींचना । भ्वा० पर० सक० सेट् । सेकति । असेकीत्.

सिकता, (स्त्री०) ब० व० । सिक्+अतच् । वालुका । रेत । "सिकताः सन्ति अत्र-अण्" (उसका लोप) । सिकतायुक्तदेश (रेतवाला स्थान) । वालूवाली जगह.

सिकतिल, (त्रि०) सिकताः सन्ति अत्र+इलच् । वालुकायुक्तदेश । वह स्थान जहां रेत हो । रेतीली जगह.

सिक्थ, (न०) सिच्+थक् । मधूच्छिष्ट (शहदकी मक्खीकी जूठ) । मोम । शाल । नीलका पौधा । भात (पु०).

सिङ्घा(घा)न, (न०) शिघ्+आनच् । पृ० । नाककी मैल.

सिचय, (पु०) सिच्+अयच् । वस्त्र । कपडा.

सित, (न०) सो+क्त । रूपा । और चंदन । शुक्रग्रह । और शुक्ल (चिट्टा) वर्ण (रंग) (पु०).

सितकर, (पु०) सितः करः (किरणः) यस्य । जिसकी किरण चिट्टी है । चन्द्रमा । और कपूर (काफूर) । "सितमयूख".

सितपक्ष, (पु०) सितः पक्षः अस्य । चिट्टे परवाला । हंस । कर्म० शुक्लपक्ष (जिसमें चन्द्रमाकी किरणें बढती हैं).

सिता, (स्त्री०) सो+क्त । शर्करा । शक्कर । खांड । चीनी । मिशरी.

सितापाङ्ग, (पु०) सितं अपाङ्गं यस्य । जिसकी आँखका कोना चिट्टा है । मयूर । मोर.

सितिवासस्, (पु०) सिति (कृष्णं) वासः अस्य । काले कपडेवाला । बलदेव । बलभद्र । कृष्णका बडाभाई.

सितेतर, (पु०) सितात् इतरः (चिट्टेसे दूसरा) । काला रंग.

सितोपल, (पु०) कर्म० । चिट्टा पत्थर । स्फटिक । बिल्लौर । कठिनी (खडिया) (न०) शर्करा । मिसरी । (स्त्री०).

सिद्ध, (न०) सिध्+क्त । सैन्धवलवण । सेंधानिमक । पक्व (पकाहुआ) । निष्पन्न (पूराहुआ) । और नित्य (सदा) (त्रि०) । "सिद्धिः अस्ति अस्य" अच् । सिद्धिवाला । व्यासआदि मुनि । और देवयोनिविशेष (पु०) । निश्चित । (जिसका निश्चय हो गया) (त्रि०) । विष्कम्भआदिमें बाईसवां योग । गुड । और काला धतूरा । योगिनीदशामें सातवीं दशा । (स्त्री०) टाप् । मन्त्रविशेष (पु०).

सिद्धदेव, (पु०) सिद्धानां देवः । सिद्धोंका देवता । महादेव.

सिद्धधातु, (पु०) सिद्धः (प्रसिद्धः) धातुः । पारद । पारा.

सिद्धपीठ, (पु० न०) कर्म० । सिद्धोंका स्थान (जहां लाखवार वलिदान कियागया है, क्रोडवार होम और महाविद्याका मन्त्र जपागया हो).

सिद्धपुर, (न०) कर्म० लंकाके नीचे एक पुर है.

सिद्धविद्या, (स्त्री०) सिद्धा विद्या (मन्त्रः) यस्याः । जिसका मन्त्र सिद्ध है । "काली" आदि दस महाविद्या.

सिद्धसाधन, (न०) सिद्धस्य (निश्चितस्य) साधनं (अनुमानम्) । न्यायमें एकप्रकारका दोष जिसमें उस वस्तुका अनुमान कियाजाता है जिसका पहिलेसे निश्चय होरहा है.

सिद्धान्त, (पु०) सिद्धः (निश्चितः) अन्तः यस्मात् । जिस्से अन्त (असली वात) का निश्चय होता है । प्रमाण आदि देकर पूर्वपक्ष (पहिले कीगई दलील) को तोडकर असली पक्षको स्थापन करनेहारा वाक्यसमूह । वादी और प्रतिवादीसे निश्चय कियाहुआ अर्थ । ज्योतिःशास्त्रविशेष.

सिद्धार्थ-क, (पु०) सिद्धः अर्थः यस्मात् । जिस्से प्रयोजन सिद्ध होता है । ५ व० वा कप् । श्वेतसर्षप (चिट्टी सरसों) । वटीवृक्ष । ६ व० । प्रसिद्ध अर्थ (त्रि०) । जिनविशेष.

सिद्धि, (स्त्री०) सिध्+क्तिन् । ऋद्धिनाम औषध । योगविशेष । अन्तर्धान (छिपना) । निष्पत्ति (एक कामका पूराहोना) । पाक (पकना-रसोई) । पादुका (खडाव) । मोक्ष । सम्पदा । "अणिमा" आदि आठ प्रकारका ऐश्वर्य । बुद्धि । "प्रभाव" आदि तीन शक्तियें.

सिद्धिद, (पु०) सिद्धिं ददाति । दा+क । बटुकभैरव । सिद्धिके देनेहारा (त्रि०).

सिद्धियोग, (पु०) सिद्धिहेतुर्योगः । सिद्धिकारण योग । ज्योतिष्में शुक्रआदि वारसहित "नन्दा" आदि.

सिध्मल, (त्रि०) सिध्मन्+अस्त्यर्थे लच् । किलास रोगवाला । कोहडी.

सिनीवाली, (स्त्री०) सिनीं (श्वेतां) चन्द्रकलां वलति (धारयति) अण्-ङीप् । चतुर्दशीवाली अमावास्या.

सिन्दु(न्धु)वार, (पु०) सिन्धुं (गजमदं) वारयति । वृ+अण् । निसिन्दावृक्ष । "मुक्ताकलापीकृतसिन्धुवारम्" इति कुमारः (इसमें वहुत गंध होता है । फूल चिट्टे हैं.)

सिन्दूर, (न०) स्यन्द्+ऊरन् । सम्प्रसारणम् । लाल रंगका चूर्णविशेष । सिंधूर । संधूर । वृक्षविशेष (पु०).

सिन्धु, (पु०) स्यन्द्+उ । सम्प्रसारण । "द" को "ध" होता है । समुद्र । एक नद (दर्या) । वृक्ष । एक राग । एक देश । और मदका जल (हाथीकी मस्ती) । उस देशका वासी । (पु० ब० व०.)

सिन्धुर, (पु०) सिंधुः (मदजलं अस्य अस्ति । र । मस्तीके पानीवाला । हस्ती । हाथी.

सिन्धुराज, (पु०) सिन्धूनां राजा+टच् । नदिओंका राजा । समुद्र.

सिन्धुवार, (पु०) अच्छी जातका घोडा । सिन्धु वा पर्शिआका घोडा । फारसी घोडा.

सिन्धुसंगम, (पु०) सिंध्वोः (नद्योः) नदीसमुद्रयोः वा संगमः । दो नदिओं वा नदी और समुद्रका मेल । "सः यत्र" वह जहां हो (त्रि०).

सिप्र, (पु०) सप्+रक् । पृ० । एक तालाव (सरोवर) । चन्द्रमा । गर्मीका पानी । और घर्म (पसीना) । उज्जयिनी नगरीके पास एक नदी (दर्या) (स्त्री०) "सिप्रातरङ्गानिलकम्पितासु" इति रघुः.

सिम, (पु०) सि+मन् । सर्व । सब । इस अर्थमें सर्वनाम है,

सीक्, सेचन-सींचना । भ्वा० आ० सक० सेट् । सीकते । असेकिष्ट.

सीकर, (पु०) सीक्यते (सिच्यते) अनेन । सीक्+अरण् । जलकण । पानीकी कणी (कतरा).

सीता, (स्त्री०) सि+त । पृ० दीर्घः । लाङ्गलपद्धति । हलका फाला । हलचलानेकी डण्डी । जनकराजाकी कन्या.

सीतापति, (पु०) ६ त० श्रीराम । सीताका पति.

सीतायाः पति, (पु०) ६ त० । अलुक् समास । श्रीरामचन्द्र.

सीत्कार, (पृ०) "सीत्" इति अव्यक्तस्य कारः । सीत्+कृ+घञ् । अनुराग (प्रेम-मुहब्बत) से उत्पन्न हुआ शब्द । सी २ करना.

सीधु, (पु०) सिध्+उ । पृ० । मद्य । शराव (गन्नेके पकेहुए रससे तयार हुआ मद्यविशेष).

सीधुरस, (पु०) सीधोरिव रसः आस्वादः अस्य । जिसका स्वाद (मजा) शरावकी भांति हो । आम्रका वृक्ष । आमका दृख्त.

सीमन्त, (पु०) सीम्नः अन्तः । शक० । केशोंके भीतर मार्गके समान बनाहुआ । सीवनी । गर्भसे छठे वा आठवें महीनेमें करनेलायक एक संस्कार.

सीमन्तिनी, (स्त्री०) सीमन्त+अस्ति अर्थे इनि । सीमन्तवाली । योषित् । नारी । स्त्री । औरत.

सीमन्तोन्नयन, (न०) सीमन्तस्य (गर्भसंस्कारस्य) उन्नयनं (उद्भावनं) अत्र । जिसमें सीमन्त (मोंडेबडीरीत) नामी गर्भके संस्कार प्रकाश होता है । गर्भसंस्कारवाला कर्मविशेष.

सीमन्, (स्त्री०) सि+इमनि । मर्यादा । हद्द । अण्डकोष (पताडु) । "सीम्नि पुष्कलको हतः" इति. सि. कौ.

सीमा, (स्त्री०) सीमन्+टाप् । मर्यादा (तरीका-नियम) । गाँव आदिका अन्त भाग (हद्द).

सीमाधिप, (पु०) सीमायाः अधिपः । सीमाके पासका राजा । पडोसी राजा.

सीमान्त, (पु०) सीमायाः अन्तः । सीमाका अवसान (हद) । सीमाका कोन.

सीमाविवाद, (पु०) सीमायां विवादः । अठारह प्रकारके विवादोंमेंसे "सीमा" के विषयमें झगडा.

सीमासन्धि, (पु०) सीमायाः संधिः । दो सीमाओं(हदों)-का मेल.

सीर, (पु०) सि+रक् । पृ० । सूर्य । आकका वृक्ष । और हल.

सीरध्वज (पु०) सीरः (हलः-तच्चिह्नितः) ध्वजः यस्य । जिसके झंडेपर हलका चिन्ह (नशान) है । जनकराजा.

सीरपाणि, (पु०) सीरः (हलः) पाणौ यस्य । जिसके हाथमें हल है । बलदेव । बलराम.

सीरिन्, (पु०) सीरः (हलः) अस्ति अस्य आयुधत्वेन । जिसका शस्त्र हल है । बलराम । बलभद्र.

सी(से)वन, (न०) सिव्+ल्युट् । नि० वा दीर्घः । सीवन । तन्तुसन्तान । तांतफैलाना । सीना.

सु, (अव्य०) पूजा । अच्छा । अतिशय (बहुत).

सुकरा, (स्त्री०) सुखेन क्रियते दुह्यते वा । सु+कृ+खल् । सुशीला गौ (जिसे सहजहीसे चो लेते हैं) । जो सुखसे हो (त्रि०).

सुकल, (पु०) सुष्ठु कल्यते (ख्यायते) असौ । सु+कल् +घञ् । वह जन जो "दाता" "भोक्ता" आदि गुणोंसे प्रसिद्ध है । वह शब्द जो सुकर, मधुर, और व्यक्त हो.

सुकर्मन्, (पु०) सुष्ठु कर्म० यस्मात् । जिस्से अच्छा काम होता है । विष्कम्भ आदिमें सातवां योग । अच्छे कामवाला (त्रि०) । अच्छा काम (न०).

सुकाण्ड, (पु०) सुष्ठु काण्डः अस्य । अच्छी शाखावाला वृक्ष.

सुकामा, (स्त्री०) सुष्ठु काम्यते असौ । सु+कम्+घञ् । त्रायमाणा लता । अच्छी कामनावाला (त्रि०).

सुकुमारा, (स्त्री०) सु+कुमार+अच्-घञ् वा । जातिवृक्ष । नवमालिका । कदली (केला) । और मालती । बहुत कोमल (नाजक) । सुन्दर कुमारअवस्थावाला (त्रि०) (स्त्री०) ङीप्.

सुकृत, (त्रि०) सु+कृ+क्विप् । पुण्य करनेहारा । धार्मिक जन.

सुकृत, (न०) सु+कृ+क्त । पुण्य । धर्म । और । शुभ । अच्छा काम (न०).

सुकृति, (स्त्री०) सु+कृ+क्तिन् । पुण्य । मंगल । अच्छा काम.

सुकृतिन्, (त्रि०) सुकृतं अनेन । इनिः । पुण्यवाला । भलाईवाला । अच्छे कामसे भराहुआ.

सुख, (न०) सुख+घञ् । पुण्यसे उत्पन्नहुआ गुणविशेष आनंद । "नैयायिक आदि" इसे आत्माका धर्म मानते हैं । सांख्य आदि "चित्त" का । "सुखं अस्य अस्ति+अच् वा" सुखी (त्रि०).

सुखजात, (त्रि०) जातं सुखं अस्य । परनिपातः । जातानन्द (जिसे आनन्द प्राप्त हुआ है) । "सुखजातः सुरापीतः" इति भट्टिः.

सुखभाज्, (त्रि०) सुखं भजते । भज्+ण्वि । सुखवाला.

सुखरात्रिका, (स्त्री०) सुखा रात्रिः यस्याः । ५ व० कप् । जिस्से सुखकी रात होती है । आश्विनमास (अस्सू) की दीपान्विता (जिस रात्रिमें दीपकोंका प्रकाश कियाजाता है-दीवाली) अमावास्या (इसमें लक्ष्मीका पूजन कर्ते हैं).

सुखश्रव-श्रुति, (त्रि०) सुष्ठु श्रवः=श्रवणं यस्य । सुन्नेमें मधुर (मीठा).

सुखाधार, (पु०) सुखानां आधारः । सुखोंका आश्रय । स्वर्ग । कर्म० सुखदेनेवाला निवासस्थान.

सुखावह, (त्रि०) सुखं आवहति (जनयति) । आ+वह्+ अच् । सुखजनक । सुखको उपजानेहारा.

सुखोत्सव, (पु०) सुखकर उत्सवो यस्मात् । २ व० जिस्से सुखदेनेहारा उत्सव होता है । पति (मालिक) । कर्म० आनंद करनेहारा उत्सव (पु०).

सुगत, सुष्ठु गच्छति (जानाति) । गम्+कर्तरि क्त । बहुत अच्छा जानता है । बुद्धदेव (यह "निर्वाण" को शान्ति मानता है).

सुगन्ध, (न०) सुष्ठु गन्धः अस्य । इत् नहीं होता । गन्धतैल । छोटाजीरा । कमल । चन्दन । सुगन्धपदार्थवाली दुकान (त्रि०).

सुगन्धि, (पु०) सुष्ठु गन्धः । इत्समास । इष्टगन्ध । चाही गई खुशबू । सुरभि । "सुष्ठु गन्धः अस्य" । सुगन्धवाला (त्रि०) । खुशबूदार.

सुगृहीतनामन्, (पु०) सुगृहीतं (प्रातः स्मरणीयं) नाम यस्य । जिसका नाम प्रातःकाल स्मरणकरना चाहिये । पवित्रयशवाला जन.

सुग्रन्थि, (पु०) सुष्ठु ग्रन्थिः यस्य । अच्छी गांठवाला । चोरकनामी वृक्ष (त्रि०).

सुग्रीव, (पु०) सुष्ठु ग्रीवा अस्य । अच्छे कण्ठ (गर्दन) वाला । श्रीकृष्णका घोडा । सूर्यका पुत्र । और बानरोंका राजा । सुन्दर ग्रीवावाला (त्रि०).

सुचक्षुस्, (पु०) सुष्ठु चक्षुः इव फलं अस्य । आँखकी नाई जिसका अच्छा फल है । उदुम्बर । सुन्दर नेत्रवाला (त्रि०) । प्रा० । अच्छी आंख (न०).

सुचरित्रा, (स्त्री०) सुष्ठु चरित्रं यस्याः । अच्छे चरित्रवाली पतिव्रता स्त्री । अच्छी चालवाला (त्रि०) । प्रा० । सच्चरित्र । अच्छा चरित्र (न०).

सुचिर, (अव्य०) प्रा० बहुत चिरका समय । बहुत कालका (त्रि०).

सुचिरायुस्, (पु०) सुचिरं (बहुकालिकं आयुः) यस्य । जिसकी बहुत देरतक उमर हो । देवता । बहुत समयतक जीनेहारा (त्रि०).

सुचेलक, (पु०) प्रा० । सूक्ष्मवस्त्र (महीन कपडा) । "सुष्ठु चेलः अस्य" महीन कपडे धारण कियाहुआ (त्रि०).

सुजल, (न०) शोभनं जलं यस्मात् । जिस्से अच्छा पानी है । ५ ब० । कमलका फूल । प्रा० सुन्दरजल (न०).

सुत, (पु०) सु+क्त । पुत्र । कन्या (स्त्री० टाप्) । निष्पीडित । निचोडागया (त्रि०).

सु(सू)तक, (न०) सु (सू) भावे क्तः । सु (सू) तं (जननं) तस्मात् आगतम् । उत्पत्ति (बालक आदिके उत्पन्न) होनेसे आया+कन् । जननका अशौच (अपवित्रता) । हरएक प्रकारका अशौच । "सूतके मृतके तथा" "मातुश्च सूतकं तस्मात्" इति स्मृतिः.

सुतनु-नू, (पु० स्त्री०) सुष्ठु तनुः यस्याः वा ऊङ् । अच्छे शरीरवाली । नारी । औरत.

सुतपस्, (पु०) सुष्ठु तपति । सु+तप्+असि । बहुत तपता है । सूर्य (सूरज) । "सुष्ठु तपः अस्य" । अच्छी तपस्यावाला । मुनि (पु०) सुन्दर तपवाला (त्रि०) । प्रा० सुन्दर तपस्या (न०).

सुतराम्, (अव्य०) सु+"अतिशय" के अर्थमें आमु तरप् । निश्चय कियेहुए अर्थका बहुत उचित होना (बहुतही) । "धेन्वा तदध्यासितकातराक्ष्या निरीक्ष्यमाणः सुतरां दयालुः" रघुः । यहां धेनुने राजाको जब कातराक्षी (घबरायेहुए नेत्रवाली) देखा तो बहुत दयालुपन राजाके लिये उचितहुआ.

सुतल, (पु० न०) सुष्ठु तलं यत्र । अच्छे तलवाला । पातालविशेष.

सुतिक्त, (पु०) प्रा० पर्पट (पापड) । बहुत तीखा (त्रि०) नीम (पु०).

सुतार्थिन्, (त्रि०) सुतस्य अर्थः अस्ति अस्य । पुत्र (सन्तान)की इच्छा करनेवाला.

सुतात्मज, (पु०) सुतस्य आत्मजः । पुत्रका पुत्र । पोता. (त्रि०) नीम (पु०).

सुतिनी, (स्त्री०) सुत+इनि+ङीप् । पुत्रवती । पुत्रवाली.

सुतीक्ष्ण, (पु०) प्रा० सुहाजनेका द्रख्त । मुनिविशेष । बहुत तेज (त्रि०).

सुतुङ्ग, (पु०) प्रा० नारिकेलवृक्ष । नरेला द्रख्त । बहुत ऊंचा (त्रि०).

सु(सू)त्रामन्, (पु०) सुष्ठु त्रायते । सु+त्रै+मनिन् । (पु०) । भलीभांति बचाता है । इन्द्र । देवताओंका राजा.

सुत्वन्, (पु०) सु+क्वनिप् । यज्ञके अङ्गका स्नान करनेहारा । सोमरसके पीनेवाला । सोमरस निकालनेहारा.

सुदण्ड, (पु०) सुष्ठु दण्डः यस्मात् । ५ ब० । जिस्से अच्छा डण्डा (छडी वा सोटी) बनता है । बैंत । बेत.

सुदत्, (पु०) सुष्ठु दन्तः अस्य ("वयस्-अवस्था-उमर" इस अर्थमें "दतृ" आदेश होता है) । अच्छे दांतवाली उमरके साथ मनुष्य आदि । युवती स्त्री (जवान औरत) ङीप् । "अवस्थासे भिन्न अर्थमें" "सुदन्त" यही होता है (अच्छा दांत).

सुदर्शन, (न०) पु० सुष्ठु दृश्यते+युच् (अन) । अच्छा दिखाई देता है । विष्णुका चक्र । और इन्द्रकी पुरी । (स्त्री०).

सुदामन्, (पु०) सुष्ठु ददाति । दा+मनिन् । अच्छा देता है । मेघ (बादल) । एकपर्वत । एक गोप (ग्वाल्) । समुद्र । ऐरावत हाथी । और । श्रीकृष्णका मित्र एक ब्राह्मण । और अच्छा देनेहारा । (त्रि०) । एक नदी । (स्त्री० ङीप्).

सुदि, (अव्य०) सुष्ठु दीव्यति । सु+दिव्+डि । शुक्लपक्ष । चांदना पखवाडा.

सुदिन, (न०) प्रादि० प्रशस्त दिवस । अच्छा दिन । अच्छा । (त्रि०).

सुदिनाह, (न०) सुदिनं (प्रशस्तं अहः) टच् समा० । प्रशस्त दिवस । बहुत अच्छा दिन.

सुदूर, (त्रि०) प्रा० अतिदूर । बहुत दूर.

सुद्युम्न, (पु०) वैवस्वत मनुका पुत्र । अच्छे धनवाला (त्रि०).

सुधन्वन्, (त्रि०) सुष्ठु धनुः यस्य । अनङ् । सुन्दर धनुष्को धारण करनेहारा । जिसे धनुष् (कमान) पकडनेकी रीति अच्छी आती है । एक राजा । अनन्त नाग । और विश्वकर्मा (पु०).

सुधर्मन्, (स्त्री०) सु+धृ+मनिन् । देवताओंकी सभा । कुटुम्बवाला (पु०) । "सुधर्मा" भी.

सुधा, (स्त्री०) सुष्ठु धीयते (पीयते) अर्प्यते वा । दे-धा वा क । अच्छी रीति पीया वा अर्पण कियाजाता है । अमृत । लेप करनेका पदार्थ (कलीचूना) । गंगा । बिजली । रस । जल । आंवला (धात्री) । हरीतकी (हरीड) । मधु (शहद).

सुधांशु, (पु०) सुधा इव आह्लादकाः अंशवः अस्य । जिसकी किरणें अमृतके समान आनंद देती हैं । चन्द्रमा । और कर्पूर (काफूर).

सुधाजीविन्, (पु०) सुधां (लेपनद्रव्यं) आजीवति । जो कली चूने आदिका काम करके जीता है । पलगण्ड । राज । कारीगर.

सुधानिधि, (पु०) सुधा निधीयते अत्र । नि+धा+कि । अमृत रक्खाजाता है यहां । चन्द्रमा । और काफूर (कर्पूर).

सुधाहर, (पु०) सुधां हरति । हृ+अच् । अमृतको हरण-कर्ता है । गरुड । "सुधाहारक".

सुधी, (पु०) सुष्ठु धीः यस्य । जिसकी अच्छी (अकिल) है । पण्डित । "सुष्ठु धीः" । अच्छी अकिल (स्त्री०) "सुष्ठु ध्यायति" सु+ध्यै+क्विप् । नि० । अच्छी बुद्धि-वाला (त्रि०).

सुधोद्भव, (पु०) सुधया सह उद्भवति । उद्+भू+अच् । अमृतके साथ निकलता है । धन्वंतरी नामा वैद्योंका (बडा हकीम) । ५ त० । हरीड (स्त्री).

सुनन्द, (न०) सुष्ठु नन्दयति । सु+नन्द्+अच् । अच्छी तरह आनन्द कर्ता है । बलरामका मुसल (मोहला) । श्रीकृष्णके पास रहनेहारा (सखा वा सेवक) । एक प्रकारका राजाका घर । आनन्द उपजानेहारा (त्रि०).

सुनयन, (पु०) सुष्ठु नयने यस्य । जिसकी आँखें (नेत्र) अच्छे हों । मृग । हरिण । नारी (स्त्री०) । अच्छी आँखवाला (त्रि०).

सुना(सी)शीर, (पु०) सुष्ठु नासीरः (अग्रसैन्यं) यस्य । जिसकी आगे जानेहारी सेना बहुत अच्छी है । इन्द्र । देवताओंका राजा.

सुनिष्टप्त, (त्रि०) सु+निस्+तप्+क्त-षत्वम् । अत्यन्तोद्दीप्त । बहुत चमकाहुआ । बहुत तपाहुआ.

सुनीति, (स्त्री०) सुष्ठु नीतिः यस्याः । जिसकी अच्छी नीति है । ध्रुव (भक्त) की माता । सुन्दरनीति (स्त्री०).

सुनील, (न०) प्रा० । एक मणि (नीलम) । दाडिम (अनार) । और सुन्दर नीला रंग । (पु०) अतसी । अपराजिता (स्त्री०).

सुन्द, (पु०) एकदैत्य । और एकवानर (बंदर).

सुन्दर, (त्रि०) सु+उन्द्+अरन् । शक० । मनोहर । खूबसूरत । "स्त्रीमें ङीप्" । उत्तम स्त्री । और त्रिपुर-सुन्दरी देवी । कामदेव (पु०).

सुपक्व, (पु०) सुन्दरं पच्यते स्म । पच्+क्त (उसको "व") । अच्छा आँम (शोभनाम्र) । भली भांति पकाहुआ (त्रि०).

सुपथ, (पु०) सुष्ठु पन्थाः । प्रा० अच् समा० । अच्छा मार्ग (रास्ता) । और सदाचार (अच्छा चालचलन) । "सुष्ठु पन्था यत्र ।" अच् समा० । सुन्दरपथवाला (त्रि०).

सुपर्ण, (पु०) सुष्ठु पर्णं (पत्र-पक्षः वा) यस्य । जिसका पत्ता वा पर अच्छा है । गरुड । सुन्दर पत्तेवाला । (त्रि०) । नागकेशर (पु०).

सुपर्णकेतु, (पु०) सुपर्णः (गरुडः) केतुः यस्य । जिसके झण्डेपर गरुडका चिन्ह है । विष्णु.

सुपर्वन्, (पु०) सुष्ठुः पर्व यस्य । अच्छे पर्ववाला । देवता । बाण । वांस । और धूआं । प्रा० सुन्दर पर्व (न०).

सुपीत, (न०) प्रा० गर्जर (गाजर) । सुन्दर पीलारंग । (पु०) । उसवाला (त्रि०).

सुपुष्प, (न०) प्रा० लौंगका फूल । तूल (रूई) और स्त्रीओंका रज (जो महीनेके पीछे होताहै).

सुप्, (स्त्री०) व्याकरणमें "सु" "औ" "जस्" प्रभृति प्रत्यय.

सुप्त, (न०) स्वप्+भावे क्त-सम्प्रसारणम् । निद्रा (नींद) । और शयन (सोना) । "कर्तरि क्त" सोयाहुआ (त्रि०).

सुप्ति, (स्त्री०) स्वप्+क्तिन् । शयन (सोना) । निद्रा (नींद) । और सुपना.

सुप्रतिभा, (स्त्री०) सुष्ठु प्रतिभा यस्याः । ५ व० । जिस्से कोई प्रकारकी चमकीली बुद्धि उत्पन्न होती है । सुरा । (शराब) । उज्वल (चमकीली) बुद्धि । ६ व० । उसवाला (त्रि०).

सुप्रभा, (स्त्री०) सुष्ठु प्रभा यस्याः । जिस्से अच्छी चमक होती है । अग्निजिह्वावृक्ष । सुन्दर दीप्ति (अच्छीचमक) वाला (त्रि०) प्रा० अच्छी दीप्ति (स्त्री०).

सुप्रभात, (न०) प्रा० । शुभ (भलाई) को सूचन (जतलाना) करनेहारा प्रातः (सवेर) का समय । और उससमय पढनेलायक मंगलवचन.

सुप्रयुक्तशर, (पु०) सुप्रयुक्तः शरो येन । शीघ्रहस्त । जिसका हाथ खूब चलता है (तीर चलानेमें) । बाण चलानेके अभ्यासकी चतुराईवाला.

सुप्रलाप, (पु०) सु+प्र+लप्+घञ् । सुवचन । अच्छा वचन.

सुप्रसन्न, (पु०) सु+प्र+सद्+क्त । कुबेर । बहुतप्रसन्न हुआ.

सुप्रसरा, (स्त्री०) सु+प्र+लप्+घञ् । सुवचन । अच्छा वचन.

सुप्रसरा, (स्त्री०) सृ+प्र+सृ+घञ् । प्रसारिणी (फैलीहुई) लता । फैलाहुआ (त्रि०).

सुप्रसाद, (पु०) सुखेन (अनायासेन) प्रसादः यस्य । जो सहजहीसे प्रसन्न हो जाता है । शिवजी । प्रा० सुन्दर प्रसन्नता । अच्छी खुशी.

सुफल, (पु०) सुष्ठु फलं अस्य । जिसका अच्छा फल है । दाडिम (अनार) । बेर । मूंग । कनेर । और कपित्थ । सुन्दर फलवाला (त्रि०).

सुभग, (पु०) सुष्ठु भगः (माहात्म्यादि) यस्य । जिसकी बडाई आदि अच्छी है । चम्पक (चंबा) । अशोक । और टङ्कण (सुहागा) । देखनेमें अच्छा । सुन्दर पियारा । और अच्छे ऐश्वर्यवाला (त्रि०).

सुभगासुत, (पु०) सुभगायाः सुतः। सुभगा (पतिकी पियारी) का पुत्र। सौभागिनेय.

सुभङ्ग, (पु०) सुखेन भज्यते। जो सहजसे टूटजाता है। भञ्ज्+घञ्। नारिकेलवृक्ष। नरेलका दरख्त.

सुभट, (पु०) प्रा०। सुन्दर योद्धा। अच्छा शूरवीर (बहादुर).

सुभद्र, (पु०) सुष्ठु भद्रं यस्मात्। जिस्से अच्छा कल्याण होता है। विष्णु। ६ ब०। अच्छे मंगलवाला (त्रि०)। श्यामलता। श्रीकृष्णकी भगिनी (बहिन) (स्त्री).

सुभद्रेश, (पु०) ६ त०। अर्जुन। "सुभद्रापति" आदि भी.

सुभिक्ष, (त्रि०) सुखेन लभ्या भिक्षा यत्र। बहुत अन्नवाला समय (जब भीख सहजसे मिलसक्ती है)। सुकाल.

सुभूति, (पु०) सुष्ठु भवति। सु+भू+क्तिच्। एक पण्डित। प्रा०। सुन्दर ऐश्वर्य। (स्त्री०)। ६ ब। उसवाला। (त्रि०)। विल्वका वृक्ष (पु०).

सुभृश, (न०) सुष्ठु भृशम्। बहुतही दृढ (पक्का) उसवाला (त्रि०).

सुभ्रु(भ्रू), (स्त्री०) सुष्ठु भ्रूः यस्याः+वा ऊङ्। अच्छे भौंवाली। नारी। औरत। अच्छे भौंवाला (त्रि).

सुमदन, (पु०) सुष्ठु मदयति कोकिलान्। मद्+णिच्+ल्यु। जो कोइलोंको भलीभांति मस्त कर्ता है। आँम। आम्र.

सुमधुर, (न०) प्रा०। बहुत पियारा वचन। और सान्त्वन वाक्य (शान्तिकरानेका वचन)। बडे मीठे रसवाला (त्रि०).

सुमनस्, (न०) सुष्ठु मनो यस्मात्। जिस्से अच्छा मन होता है। पुष्प। फूल। "कई इसे बहुवचन मानते हैं"। अच्छे चित्तवाला (त्रि०)। प्रा० अच्छा मन (न०).

सुमित्रा, (स्त्री०) लक्ष्मणकी माता। दशरथकी एक स्त्री.

सुमुख, (पु०) सुष्ठु सुखं अस्मात्-अस्य वा। जिसका सेवन करनेसे अच्छा सुख होता है वा जिसका अच्छा मुख है। गणेशजी। पण्डित। अच्छे मुखवाला (त्रि०).

सुमेखल, (पु०) सुष्ठु मेखला यस्मात्। २ ब०। जिस्से अच्छी तडागी बनती है। मुञ्जका वृक्ष। ६ ब०। सुन्दर तडागीवाला (त्रि०).

सुमेधस्, (स्त्री०) सुष्ठु मेधा अस्याः। ५ ब०। असिच्। जिस्से अच्छी बुद्धि हो जाती है। ज्योतिष्मती लता। ६ ब०। सुन्दर मेधायुक्त (अच्छी बुद्धिवाला) (त्रि०).

सुमेरु, (पु०) प्रा० एक पर्वत (पहाड)। जपमालाके सिरका मोटा दाना.

सुम्ह-(ह्म), (पु०) एकदेशका नाम। उसके वासी (पु०) ब० व०

सुयामुन, (पु०) यमुनाया इदम्। सुष्ठु यामुनं प्रियत्वेन अस्ति अस्य+अच्। यमुनाका स्थान जिसे पियारा है। विष्णु। वत्सराज। एक महल। एक पहाड। और बादल.

सुयोधन, (पु०) सुखेन युध्यते असौ। सु+युध्+युच्। धृतराष्ट्र राजाका पुत्र दुर्योधन.

सुर, (पु०) सुष्ठु राति (ददाति अभीष्टम्)। सु+रा+क। अच्छी तरह अभिलाषा पूरी कर्ता है। देवता। सूर्य। और पंडित.

सुरगुरु, (पु०) ६ त०। बृहस्पति। देवताओंका गुरु.

सुरङ्ग, (न०) सुष्ठु रङ्गो यस्मात्। ५ ब०। हींग। प्रा०। सुरँग। एक प्रकारका गद्य.

सुरज्येष्ठ, (पु०) ७ त०। देवताओंमें बडा। चार मुखवाला ब्रह्मा.

सुरत, (न०) सु+रम्+भावे क्त। स्त्रीपुरुषका संगमरूप (आपसमें इकट्ठाहोना) एक प्रकारकी खेल। "कर्तरि क्त" बहुत रत (पियारमें आया) (त्रि०).

सुरथ, (पु०) सुष्ठु रथः अस्य। चंद्रवंशी एक राजा। "सुरथो नाम राजाभूत्" इति चण्डी। सुन्दर रथवाला (त्रि०).

सुरदारु, (न०) सुरप्रियं (सुरलोकपर्यन्तं उच्छ्रितं वा) दारु। देवताओंका पियारा वा स्वर्गतक ऊंचा वृक्ष। देवदारुवृक्ष.

सुरदीर्घिका, (स्त्री०) सुराणां दीर्घिकेव। मानों देवताओंकी बावली है। गंगा। "सुरवापी".

सुरद्विष्, (पु०) सुरान् द्वेष्टि। द्विष्० क्विप्। देवताओंके साथ विरोध कर्ता है। असुर। दैत्य। देवद्वेष्टा। दानव (त्रि०).

सुरधनुस्, (न०) ६ त०। देवताओंकी कमान। इन्द्रधनुः.

सुरपति, (पु०) ६ त०। इन्द्र। देवताओंका मालिक.

सुरपथ, (पु०) सुराणां पन्था यत्र। अच् समा०। जहां देवताओंका मार्ग है। आकाश। आस्मान.

सुरपादप, (पु०) ६ त०। देवताओंका वृक्ष। कल्पवृक्ष.

सुरपुरी, (स्त्री०) ६ त०। देवताओंकी पुरी। अमरावती.

सुरभि, (न०) सु+रभ्+इन्। स्वर्ण (सोना)। और सुन्दर। चम्पक (चम्बा)। जायफलवृक्ष। वसन्त ऋतु। सुगंध। चेतका महीना। और पण्डित (पु०)। रुद्रजटा। एक देवी। गौ। सुरा। तुलसी। और पृथिवी। (स्त्री०) धीर। अच्छे गंधवाला। मनोहर। और प्रसिद्ध (त्रि०).

सुरर्षि, (पु०) सुरप्रियः ऋषिः। देवताओंका पियारा ऋषि। नारदआदि ऋषि.

सुरलोक, (पु०) सुराणां लोकः। देवताओंका लोक (निवास करनेका स्थान)। स्वर्ग। "सुरभुवन" भी.

सुरवर्त्मन्, (न०) सुराणां वर्त्म यत्र। जहां देविताओंका मार्ग है। आकाश.

सुरवल्ली, (स्त्री०) सुरप्रिया वल्ली। देवताओंकी पियारी बेल। तुलसी.

सुरवैरिन्, (स्त्री०) ६ त०। असुर (दैत्य)। देवताओंका विरोधी (त्रि०).

सुरसद्मन्, (न०) (सुराणां सद्म) देवताओंका घर । स्वर्ग । वहिश्त.

सुरसरित्, (स्त्री०) सुराणां सरित् । देवताओंकी नदी । गङ्गा.

सुरस्थानम्, (न०) सुराणां स्थानम् । देवताओंका स्थान । देवमंदिर.

सुरसुन्दरी, (स्त्री०) सुरप्रिया सुन्दरी । देवताओंकी पियारी सुन्दरी । मेनका आदि अप्सरा । एक योगिनी.

सुरा, (स्त्री०) सुर+क+सु+रक् वा । मद्य । शराव.

सुराजन्, (पु०) सुष्ठु (पूजितः) राजा (टच् नहीं होता)। सुन्दर राजा (अच्छा राजा) । ६ व० । वह देश कि जिसका स्वामी सुन्दर राजा है (त्रि०).

सुराजीविन्, (पु०) सुरां आजीवति । आ+जीव+णिनि । जिसकी जीविका शरावपर है । शौण्डिक । कलाल.

सुराप, (त्रि०) सुरां पिवति । पा+क । मद्यपान करनेहारा.

सुरापगा, (स्त्री०) ६ त० । देवताओंकी नदी । गंगा.

सुरापान, (न०) सुरा पीयते अनेन । "पा+करणे ल्युट्" जिस साधनसे शराव पी जाती है । अवदंश । चटनी । "भावे ल्युट्" शरावका पीना । सुरायाः पानं येषां णत्वं । जो शराव पीते हैं । पूर्व देशके लोग (पु०).

सुरार्ह, (न०) सुरान् (देवान्) अर्हति । अर्ह+अण् । जो देवताओंके लायक है । हरिचंदन.

सुराष्ट्र, (पु०) ६ व० । एकदेश (सुरट).

सुरूप, (न०) सुन्दरं रूपं अस्य । सुन्दर रूप है जिसका । तूल (रूई) । सुन्दर रूपवाला । (त्रि०) । पण्डित । (पु०) । प्रा० । सुन्दर रूप (न०).

सुरेज्य, (पु०) सुरैः इज्यते (पूज्यते) । यज्+क्यप्-६ त० । जो देवताओंसे पूजा जाता है । वृहस्पति । तुलसी (स्त्री०).

सुरेन्द्र, (पु०) सुराणां इन्द्रः (श्रेष्ठः राजा वा) । देवोंमें अच्छा वा राजा । इन्द्र । "सुरराज" भी.

सुरेश्वर, (पु०) (सुराणां ईश्वरः) । देवताओंका ईश्वर । रुद्र (महादेव) । और इन्द्र । स्वर्गकी गंगा (स्त्री०).

सुरोत्तम, (पु०) सुरेषु उत्तमः । देवताओंमें उत्तम । सूर्य.

सुरोद, (पु०) सुरा इव उदकं अस्य (उदकआदेश) । जिसका जल सुरा (शराव) के समान है । सुरासमुद्र.

सुलभ, (त्रि०) सुखेन लभ्यते । सु+लभ्+खल् । सहजसे मिलसक्ता है । अनायासलभ्य । सुखाला.

सुलोचन, (पु०) सुष्ठु लोचनं अस्य । अच्छी आंखवाला । हरिण । सुन्दर नेत्रवाला (त्रि०).

सुलोमशा, (स्त्री०) सुष्ठु लोमानि सन्ति अस्याः+श । अच्छे रोयेंवाली । पाकजङ्घा वृक्ष । सुलोमयुक्त । अच्छे रोयेंवाला (त्रि०).

सुवचस्, (त्रि०) सुष्ठु वचः अस्य । जिसका वचन अच्छा है । वाग्मी । जो अच्छी तरह बोलता है.

सुवर्ण, (न०) सुष्ठु वर्णः अस्य । अच्छेरंगवाला । इस नामका धातु (सोना) । "सुष्ठु वर्णः (रूपं-अक्षरं वा) अस्य" । सुन्दररूप (शकल) वाला और सुन्दर अक्षर वाला (त्रि०) । "न सुवर्णमयी तनुः परं ननु सा वागपि तावकी तथा" नैषधम्.

सुवर्णकार, (पु०) सुवर्णं (सुवर्णमयभूषणादि) करोति । कृ+अच् । सोनेका भूषण (गहना) आदि वनानेहारा । सुनार । सुनिआरा । सुनिआरा । स्वर्णकार जातिभेद.

सुवर्णपृष्ठ, (त्रि०) सुवर्णं पृष्ठे यस्य । जिसकी पीठपर सोना है । कोट किया हुआ । सोनेके गिल्टवाला.

सुवर्णरेतस्, (पु०) सुवर्णं रेतः यस्य । सोनेके वीर्यवाला. शिवजी.

सुवयस्, (स्त्री०) सुष्ठु वयः अस्याः । अच्छी उमरवाली । प्रौढा (भरजोवन) (स्त्री०).

सुवास, (पु०) सुष्ठु वासः । अच्छी गन्ध (खुशवू) । और सुखका निवास । अच्छी गंधवाला । और अच्छे निवासवाला (सन्निवासान्वित) (त्रि०).

सुवासिनी, (स्त्री०) सुखेन वसति । सु+वस्+णिनि । सुखसे वसतीहै । चिरकालतक पिताके कुलमें वास करनेहारी (स्त्री०).

सुविद्, (पु०) सुष्ठु वेत्ति । विद्+क्विप् । अच्छी तरह जानता है । पण्डित । "सुष्ठु विद्यते (लभ्यते) । विद्-लाभ+क्विप्" । अच्छी मिलती है । गुणोंसे भरीहुई स्त्री (गुणाढ्या स्त्री०).

सुविदत्, (पु०) सुविदं (गुणाढ्यां स्त्रियं) अतति । गुणोंवाली स्त्रीको पाता है । अत्+क्विप् । नृप । राजा.

सुविनीता, (स्त्री०) सु+वि+नी+क्त । सुशीला गौ । असील गौ । अच्छी नम्रतावाला (हलीम) (त्रि०).

सुवीज, (पु०) सुष्ठु वीज्यते असौ । वीज्+क । (खसखस) एक वृक्ष । ६ व० सुन्दर वीजवाला (त्रि०) (प्रा०) । सुन्दर वीज (डी) (न०).

सुवीर्य, (न०) सुष्ठु वीर्यं यस्मात् । अच्छा वीर्य होता है जिस्से, वदरीफल (वेर).

सुवृत्त, (पु०) सुष्ठु वृत्तं यस्य । अच्छे वृत्तान्त-(हाल) वाला (त्रि०) ६ व०.

सुवेल, (पु०) सुगता वेला (समुद्रकूलं) येन । समुद्रका किनारा बहुत अच्छा बनरहा है जिस्से । त्रिकूट पर्वत । "सुष्ठु वेला (मर्यादा-स्थितिः) यस्य" । अच्छे नियमवाला । शान्त । और प्रणत (झुकाहुआ) (त्रि).

सुवेश, (पु०) सुखेन विश्यते (उपभुज्यते) । सु+विश्+घञ् । सुखसे भोगा जाता है (चूपाजाता है) । श्वेतेक्षु (चिट्टा गन्ना) सुन्दर वेशवाला (त्रि०).

सुव्रती, (स्त्री०) सुष्ठु व्रतं (नियमः) यस्याः । जिसका नियम अच्छा है । सुशीला गौ । सुन्दर व्रतवाला । (त्रि०).

सुशर्मन्, (पु०) शॄ+मनिन् । सुष्ठु शर्म (सुखं) यस्य । एक राजा । सुन्दरसुखवाला (त्रि०).

सुशिख, (पु०) सुन्दरी शिखा यस्य । अच्छी लाटवाला । वन्हि । आग । और चित्रकवृक्ष । अच्छी शिखा (चोटी) वाला । (त्रि०) । मयूरशिखा (मोरकी चोट-कल्गी) (स्त्री०).

सुशीत, (न०) प्रा० पीला चंदन । बहुत शीतल (ठण्डे) स्पर्शवाला (त्रि०).

सुशील, (पु०) सुन्दरं शीलं अस्य । अच्छे स्वभाववाला । विष्णुके पास विचरनेहारा । अच्छे चरित्रवाला (त्रि०).

सुश्रीक, (स्त्री०) सुन्दरी श्रीः अस्य । अच्छी शोभा है जिसकी । सल्लकीवृक्ष (इसे हाथी खाते हैं) । सुन्दर शोभावाला (त्रि०).

सुश्रुत, (पु०) सु श्रूयते । सु+श्रु+क्त । अच्छी तरह सुनाजाता है । विश्वामित्र मुनिका पुत्र । चिकित्साशास्त्रके रचनेहारा एक मुनि । और उसका बनायाहुआ एक ग्रन्थ । सुन्दर सुनागया । (त्रि०) । "देवाकर्णय सुश्रुतेन चरकस्योक्तेन" इति नैषधम्.

सुश्लिष्ट, (त्रि०) सु+श्लिष्+क्त । सुसंयुक्त (अच्छी तरह मिलाहुआ) । पक्का मिलाहुआ.

सुषम, (पु०) सुन्दरः समः । प्रा० षत्वम् । शोभन (अच्छा) । और सम (बराबर) । बडी शोभा (स्त्री०).

सुषिर, (न०) शुष्+किरच् । पृ० । "श" "स" होता है । छिद्र । छेक । सुराख.

सुषीम, (पु०) सुष्ठु सीमा यस्य । अच्छी सीमावाला । शीतल स्पर्श । उसवाला । और मनोज्ञ (मनोहर) (त्रि०).

सुषुप्त, (न०) सु+स्वप्+भावेक्त । "वह अवस्था (हालत-दशा) कि जिसमें सोयाहुआ न कोई अभिलाषा कर्ता है और न कोई स्वप्न (सुपना) देखता है" ज्ञानशून्य दशा । "कर्तरि क्त" उस अवस्थावाला (त्रि०).

सुषुप्ति, (स्त्री०) सु+स्वप्+क्तिन् । पुरीतत् नाडीमें मनका संयोग होना (मिलना) । सब ज्ञानसे शून्य होना । वेदान्तमें सब पदार्थोंसे शून्यहोना । अवस्थाविशेष । "सुषुप्तिकाले सकले प्रलीने" श्रुतिः.

सुषुम्ना, (स्त्री०) "सुषु" इति अव्यक्तं शब्दं म्नायति यत्र । म्ना+क । जहां प्राणवायु "सुषु" इस अव्यक्त शब्द (बाहिरकी इन्द्रियसे न पहिचानेलायक आवाज) का अभ्यास कर्ता है । तन्त्रमें मेरुदण्ड (पीठकी लंबी हड्डी-ब्रह्मदण्ड) के बाहिर इडा और पिङ्गला नाडियोंके मध्यमें एक सूक्ष्म (महीन) नाडी.

सुषेण, (पु०) सुष्ठु सेनयति । सेनां करोति । अच्-षत्वम् । वेतस (बेत) । चिकित्सक (लंकानिवासी हकीम) । और एक वानर (बंदर).

सुष्ठु, (अव्य०) सु+स्था+कु । अतिशय (बहुतही) । प्रशस्त (बहुत अच्छा) । और सत्य (ठीक).

सुसंस्कृत, (त्रि०) सु+सम्+कृ+क्त-सुम् च । बडे यत्न (कोशिस)से घीआदि द्रव्यके साथ पकाहुआ व्यञ्जन (नाल्दा) आदि.

सुसम्पद, (स्त्री०) प्रा० । अच्छी सम्पदा । सौभाग्य । अच्छी सम्पदावाला । ६ ब० सुसमृद्ध (अच्छा दौलतमंद) (त्रि०).

सुसाध्य, (त्रि०) सुखेन साध्यः । सुख (आराम)से पूरा होनेलायक । आरामसे इलाज करनेलायक सुखसे वश होनेयोग्य.

सुस्थ, (त्रि०) सुखेन तिष्ठति । स्था+क । सुखसे रहता है । नीरोग । सुख.

सुस्नात, (त्रि०) सुष्ठु स्नातः । सु+स्ना+क्त । जिसने मंगल द्रव्योंसे स्नान किया है । अच्छी तरह नहायाहुआ.

सुस्पर्श, (त्रि०) सुष्ठु स्पर्शः यस्य । अच्छे स्पर्शवाला । छूनेमें अच्छा । आनन्ददायक.

सुहित, (त्रि०) सु+धा+क्त । तृप्त (रजाहुआ) । और विहित (कियाहुआ) । प्रा० । सुन्दरहित (अच्छी भलाई) । (न०) । ५ ब० आगकी जीभ । एक प्रकारकी (स्त्री०).

सुहृद्, (पु०) सुष्ठु हृदयं यस्य ("मित्र" के अर्थमें "हृद्" का आदेश होता है) । जिसका अच्छा हृदय है । मित्र (दोस्त-यार) । ज्योतिषमें लग्नसे चौथा स्थान (घर).

सुहृदय, (त्रि०) सुष्ठु हृदयं यस्य । जिसका अच्छा हृदय है । प्रशस्त मनस्क (अच्छे मनवाला) । प्रा० । अच्छा चित्त (न०).

सुहृद्बल, (न०) सुहृदेव बलम् । मित्ररूप सेना (मित्रही जोर है).

सू, (स्त्री०) सू+क्विप् । सूति (सन्तति-औलाद) । प्रसव (सन्तान) । क्षेप (फेंकना) और भेजना.

सूकर, (पु०) "सू" इति अव्यक्तं शब्दं करोति । कृ+अच् । जो "सू" यह धीरेसे शब्द कर्ता है । वराह (सूअर) । कुम्भकार (कुह्मार) । एक प्रकारका पशु (मृग).

सूक्त, (न०) सु+वच्+क्त । सुन्दरकथन (अच्छा-उंदा कहना) । एकही अर्थको प्रतिपादन (वर्णन) करनेहारा (जिसमें एकही देवताको संबोधन कियागया है) मन्त्रोंका समूह । जैसे "श्रीसूक्त" "पुरुषसूक्त" इत्यादि । ये सब वेदमें बहुत हैं.

सूक्ष्म, (न०) सूच्–स्मन् । कैतव (छल) । फरेब आत्माके साथ संबंध रखनेहारा पदार्थ । और एक अलंकार । कतक (इमली) वृक्ष । (पु०) । बहुत छोटे परिमाण (माप) वाला । महीन । और अल्प (छोटा) (त्रि०).

सूक्ष्मदर्शिन्, (त्रि०) सूक्ष्मं पश्यति । दृश्+णिनि सूक्ष्म (महीन आत्मसंबंधीविषय) को देखता है । अत्यन्त सुबुद्धि । बहुतही अच्छी बुद्धि (अकिल) वाला । जिसकी बुद्धि कुशाके अग्रभाग (नोक) के समान तेज है.

सूक्ष्मबुद्धि, (स्त्री०) सूक्ष्मा बुद्धिः । सूक्ष्म (महीन) बुद्धि (अकिल) । अत्यन्त कठिन अर्थको समझलेनेवाली बुद्धि.

सूक्ष्मभूत, (न०) कर्म० । वेदान्तमें प्रसिद्ध अपञ्चीकृत (जो अबी पाँचोंसे पच्चीस नहिं कियेगये) पृथिवी आदि पांच भूतोंके सूक्ष्म (महीन) अंशविशेष (भाग).

सूक्ष्मैला, (स्त्री०) कर्म० । क्षुद्रैला (छोटी इलाइची) गुजराती इलाइची.

सूच्, पैशुन्य-भीतरसे वैरकरना-चुगलखोरीकरना । चुरा० उभ० सक० सेट् । सूचयति-ते । असुसूचत्-त.

सूचक, (त्रि०) सूचयति (अन्तर्दुह्यति) । सूच्+ण्वुल् (अक) । अन्दर (दिल-चित्त) से वैर कर्ता है । पिशुन (चुगलखोर) और बोधक (सूचना देनेहारा) । जतलानेहारा । काक । कौवा । कुत्ता । बिल्ला । पिशाच । बूढा । नाटकमें प्रसिद्ध सूत्रधारनामी प्रधान (मुख्य) नट.

सूचन, (न०) सूच्+ल्युट् । हिंसन (मारना) । और ज्ञापन (जतलाना).

सूचि-ची, (स्त्री०) सूच्+इन्-वा ङीप् । शिखा (नोक) । सीवनसाधन । सीनेका साधन । अपने नामसे प्रसिद्ध लोहेका पदार्थ । सूई.

सूचिक, (त्रि०) सूचिः (तया सीवनं) शिल्पं अस्ति अस्य+ठन् (अक) । जो सूईसे सीनेका व्यापार (कारीगरी) कर्ता है । दरजी । "सूचिका" (स्त्री०) । हाथीकी सूंड । सूच्याजीवी । सूईपर जीनेवाला.

सूचित, (त्रि०) सूच्+क्त । कथित (कहाहुआ) । बोधित (जतलायाहुआ) । और हिंसित (माराहुआ).

सूचीमुख, (न०) सूचीव मुखं अस्य । सूईके (उसकी नोकके) समान जिसका मुख है । हीरक (हीरा) । ऐसे लक्षणवाला (त्रि०).

सूत, (पु०) सू-उत्पन्नहोना-चलाना-ऐश्वर्यवाला होना । क्त । सूर्य (सूरज) । ब्राह्मणीके गर्भमें क्षत्रियसे उत्पन्नहुआ वर्णसंकर (दोगला) । विश्वकर्मा । सारथि (गाडीवान) । वन्दी (स्तुति पढनेहारा) । और लोमहर्षण नामक पुराणका वक्ता । पारद (पारा) (पु० न०) प्रसूत (उत्पन्नहुआ) । और भेजाहुआ (त्रि०).

सूततनय, (पु०) सूतस्य तनयः । सूतका पुत्र । भारतमें प्रसिद्ध राधासुत कर्ण (इसे सूतने पालन कियाथा).

सूति, (स्त्री०) सू+क्तिन् । प्रसव । उत्पत्ति (पैदाहोना) । "सूयते (कण्ड्यते) सोमः अत्र । सू+आधारे क्तिन्" सोमरस निकालनेका स्थान.

सूतिका, (स्त्री०) सू+क्त-कन् ("अ" को "इ") । नवप्रसूता स्त्री । नई सूई हुई औरत.

सूतिकागार, (न०) सूतिकाया निवासयोग्यं आगारं । नई सूईहुई स्त्रीके निवासयोग्य घर । प्रसूत होनेका स्थान.

सूत्थान, (त्रि०) सुष्ठु उत्थानं (उद्योगः) यस्य । अच्छे उद्योग (हिम्मत) वाला । चतुर । काम करनेमें कुशल.

सूत्या, (स्त्री०) सू+क्यप्-नि० । यज्ञके अंगका स्नान-विशेष (नहाना) । और सोमरसका पीना.

सूत्याशौच, (न०) सूतिनिमित्तकं आशौचम् । जन्मके निमित्तसे प्राप्तहुई अपवित्रता । सूतक । जननाशौच.

सूत्र, ग्रन्थन (गांठना)-वेष्टन (लपेटना) । चु० उभ० सक० सेट् । सूत्रयति-ते । असुसूत्रत्-त.

सूत्र, (न०) सूत्र्+अच् । वस्त्रसाधन । कपडा बुनेका साधन । तांत (तन्तु) । धागा । सूत । व्यवस्था । नियम । प्रस्ताव । प्रसंग । शास्त्रके तत्त्व (मर्म) को संक्षेपमें दिखलानेका नियम.

सूत्रकण्ठ, (पु०) सूत्रं कण्ठे यस्य । जिसके गलेमें सूत है । ब्राह्मण (विप्र) । कपोत (कबूतर) । और ममोला.

सूत्रधार, (पु०) सूत्रं (नाट्यसाधनं) धारयति । नाट्य (तमाशा) के साधनको धारण कर्ता है । धृ+णिच्+अण् । नाटकका प्रसंग (समय २ पर) दिखलानेहारा मुख्य नट । इन्द्र । शिल्पिविशेष । एक प्रकारका कारीगर (तर्खान).

सूत्रभिद्, (पु०) सूत्रं भिनत्ति (सूच्या) । भिद्+क्विप् । सूईसे सूतको फाडता है । सूईपर जीनेवाला । सूच्याजीवी । दरजी.

सूत्रयन्त्र, (न०) सूत्रवापनं यन्त्रं । सूतबुनेकी कला । खड्डी । चरखा.

सूद, (पु०) सूदयति । सूद्+अच् । रसोई बनानेहारा । सूपकारक (बावर्ची) । व्यञ्जनविशेष । नाल्दा । भाजी । तर्कारी । अपराध (कसूर) । पाप.

सूदन, (न०) सूद्+ल्युट् । हिंसन (मारना) । निःक्षेप (फेंकना) । अंगीकार । मान्ना.

सूदशाला, (स्त्री०) ६ त० । पाकशाला । रसोईका घर । बावर्चीखाना.

सून, (न०) सू+क्त (उसको "न" होता है) । पुष्प (फूल) । और प्रसव (उत्पन्नहोना) । "कर्तामें क्त" विकसित (खिलाहुआ) । और जात (उत्पन्न हुआ) (त्रि०).

सूना, (स्त्री०) सू+क्त (उसे "न" होता है)। प्राणी-वधस्थान। जीवोंके मारनेकी जगह। "पञ्चसूना गृहस्थस्य" इति मनुः। तनया (लडकी)। हाथीकी सूंड। मांसका बेचना.

सूनु, (पु०) सू+नु। पुत्र। अनुज (छोटाभाई)। सूर्य। आकका वृक्ष। लडकी (कन्या) स्त्री० वा ऊङ्.

सूनृत, (न०) सुनृत्यति अनेन। सु+नृत्+क। अच्छीतरह नाचता है इससे। सच्चा और पियारा वचन। और मंगल। उसवाला (त्रि).

सूप, (पु०) सुखेन पीयते। सु+पा+क। पृ०। सुखसे पीयाजाता है। व्यञ्जनविशेष। एक प्रकारका नाल्दा। दाल। रसोई.

सूपकार, (पु०) सूपं करोति। कृ+अण्। पाचक। रसोइया.

सूपाङ्ग, (न०) सूपस्य (तत्संस्कारकं) अङ्गं। उपकरण। दाल आदि नाल्देको साफ करनेहारा साधन। हींग। हिङ्गु.

सूर, (पु०) सवति (प्रेरयति) कर्मणि लोकान्। सू+क्रन्। लोकोंको काममें लगाता है। सूर्य। और अर्क (आक) का वृक्ष। सूर+क। पण्डित। दाना.

सूरत, (त्रि०) सू+रम्+क्त। पृ० दयालु। मिहर्बान। कृपालु.

सूरसूत, (पु०) ६ त०। सूर्यका सारथि। अरुण। गरुडका बडाभाई.

सूरि, (पु०) सू+क्तिन्। सूर्य। आकका वृक्ष। एक यादव। और पण्डित। "सदा पश्यन्ति सूरयः" इति श्रुतिः.

सूरिन्, (पु०) सूर+णि। पण्डित। चतुर। दाना.

सूर्पणखा, (स्त्री०) शूर्प इव नखा अस्याः। पृ०। छाजकी तरह जिसके नख (नखून- नऊं) हैं। रावणकी बहिन (भगिनी).

सूर्य, (पु०) सृ+क्यप्। नि० दीर्घः। दिवाकर। सूरज। आकका वृक्ष। एक दैत्य.

सूर्यकान्त, (पु०) सूर्यस्य कान्तः (प्रियः)। सूर्यका पियारा। स्फटिक मणि। बिल्लौरी मणि। बिल्लौर। वह मणि कि जो सूर्यकी किरणोंका सम्बन्ध पाकर जलता है। आतसी शीशा.

सूर्यग्रहण, (न०) सूर्यस्य (राहुणा तदाक्रान्तभूच्छायया) ग्रहणम् (आक्रमणम्)। सूरजका राहुसे (राहुमें आईहूई पृथिवीकी छायासे) पकडाजाना। ज्योतिषमें राहुमें प्रविष्ट (आगई) हूई पृथिवीकी छायासे सूर्यमण्डलका आक्रमणरूप (दबायाजाना) ग्रास। सूर्यका ग्रहण.

सूर्यज, (पु०) सूर्यात् जायते। जन्+ड। सूर्यसे उत्पन्न होता है। शनिग्रह। यमराज। वैवस्वत मनु। और सुग्रीव वानर। "सूर्यपुत्र" आदि भी। यमुना नदी (स्त्री०).

सूर्या, (स्त्री०) सूर्यस्य भार्या। टाप्। संज्ञानामवाली सूर्यकी स्त्री (अमानुषी)। (मानुषी) कुन्ती (ङीप्)। सूरी.

सूर्याचन्द्रौ-सूर्याचन्द्रमसौ, (पु०) द्विवचन (सूर्यः चन्द्रश्च-चन्द्रमाश्च) सूर्य और चन्द्रमा.

सूर्यालोक, (पु०) ६ त०। सूर्यका प्रकाश। आतप। धूप। रौद्र। तेज.

सूर्याश्मन्, (पु०) सूर्यप्रियः अश्मा। सूर्यका पियारा पत्थर। सूर्यकान्तमणि.

सूर्योढ, (पु०) सूर्येण (सूर्यास्तकालेन) ऊढः (प्रापितः)। वह्+क्त। सूर्य छिपनेके समय पहुंचा हुआ अतिथि.

सृक्क(न्), (न०) सृज्+कन्-कनिन् वा। ओष्ठप्रान्तभाग। होठोंके पासका हिस्सा। पखवाडा। "सृक्कणी परिलेढि च" स्मृतिः.

सृगाल, (पु०) सृ+गालन्। जम्बूक (गीदड)। एक दैत्य.

सृणि, (पु०) सृ+निक्। शत्रु। अंकुश (आंकुस) अस्त्र। (स्त्री०) वा ङीप्। "सृणी" यहभी.

सृति, (स्त्री०) सृ+भावे क्तिन्। गमन (जाना)। "करणमें" पथ (रास्ता).

सृत्वर, (त्रि०) सृ+क्वरप्। गमनकर्ता। जानेवाला। स्त्रीमें ङीप् होता है (तब इसका अर्थ "माता" है).

सृप्, गति (जाना) भ्वा० प० स० अनिट्। सर्पति। असृपत्.

सृमर, (पु०) सृ+क्मरच्। मृगविशेष। जानेवाला (त्रि०).

सृष्ट, (त्रि०) सृज्+क्त। निर्मित (रचाहुआ)। बनायाहुआ। जुडाहुआ। निश्चय कियाहुआ। सजाहुआ। और छोडाहुआ.

सृष्टि, (स्त्री०) सृज्+क्तिन्। निर्माण (रचना-बनावट)। संसारकी रचना। और स्वभाव। "कर्ममें क्तिन्" सृज्यमान (रचाहुआ)। "या सृष्टिः स्रष्टुराद्या" शकुन्तला.

सेक, (पु०) सिच्+घञ्। सेचन (सींचना)। जल आदिसे गीला करना.

सेकपात्र, (न०) सिच्यते अनेन। "सिच्+करणे घञ्"कर्म०। जिससे सींचते हैं। पात्रविशेष। डोल। मशक। बोका.

सेक्तृ, (पुं०) सिञ्चति रेतः। सिच्+तृच्। वीर्यको सींचता है। पति (स्वामी-खाविंद)। सेचक (सींचनेहारा) (त्रि०).

सेचन, (न०) सिच्+भावे ल्युट्। जल आदिसे गीला करना। सींचना "करणे ल्युट्" सेचनी। छोटासा सींचनेका वर्तन। बाल्टी। स्त्री-ङीप्.

सेटु, (पु०) सिट्+उन्। एक प्रकारका वृक्ष (तरबूज).

सेतु, (पु०) सि+तुन्। खेत आदिके जलको पकडनेके लिये जंगला। पुल। वरुणवृक्ष। तन्त्रमें प्रणव-(ओंकार) स्वरूप मन्त्र.

सेतुबन्ध, (पु०) ६ त०। लंकामें जानेके लिये श्रीरामचन्द्रसे विश्वकर्माके पुत्र नलवानरद्वारा बनवायागया एक-पुल। खेत आदिका आलवाल.

सेतुभेदिन्, (त्रि०) सेतुं भिनत्ति । पुलको तोडनेवाला । दंती वृक्ष (पु०).

सेत्र, (न०) सि+ष्ट्रन् । बेडी । निगड । हथकडी.

सेना, (स्त्री०) सि+न । सह इनेन (प्रभुणा वा) । स्वामी वा प्रभुके साथ । सैन्य । चमू । फौज.

सेनाङ्ग, (न०) ६ त० । हाथी, घोडा, रथ और पैदलका समूह । और सेनाका उपकरण (साधन).

सेनाचर, (पु०) सेनायां चरति । चर+ट । सेनागामी । सेनामें जानेवाला । "सैनाचरीभवदिभान" इति नैषधम्.

सेनानी, (पु०) सेनां (देवसेनां वा) नयति । नी० क्विप् । सेना वा देवताओंकी सेनाको लेजाता है । कार्तिकेय (सेनापति) । महादेवका वडा पुत्र.

सेनापति, (पु०) ६ त० । कार्तिकेय सेनाका पति । कप्तान्.

सेनामुख, (न०) ६ त० सैन्याग्र । सेनाका मुख (आगा) । हाथी घोडा आदिकी विशेषसंख्या.

सेनारक्ष, (पु०) सेनां रक्षति । रक्ष्+अण् । सेनाकी रक्षा करनेहारा । पहरुआ.

सेफ, (पु०) सि+फ । शेफ । पुरुषका विशेष चिन्ह । लिंग.

सेवक, (पु०) सिव+ण्वुल् । सीवनकर्ता । सीनेहारा । दरजी । "सेव्+ण्वुल्" । भृत्य (नौकर) । दास (गुलाम) । और अनुचर (त्रि०).

सेवधि, (पु०) सेवं दधाति । धा+कि । जिसकी सेवा करनी पडती है । शंख आदि निधि । खजानां.

सेवन, (न०) सिव्-सेव् वा ल्युट् । सूई आदिसे कपडे आदिका जोडना । सीना । आसरालेना । भोगना । बांधना । पूजना । "सीव्यते अनया"+ल्युट् । सूची (सूई) (स्त्री०) ङीप्.

सेवा, (स्त्री०) सेव्+अ । भजन आराधन । भोगना । आसरालेना । नौकरी.

सेवित, (त्रि०) सेव्+क्त । पूजागया । सेवाकियाहुआ । आसरालियागया । और भोगागया.

सेव्य, (न०) सेव+ण्यत् । अश्वत्थ (पीपल) । सेवाके लायक (त्रि०).

सैंहिकेय, (पु०) सिंहिकायां भवः+ठक् । सिंहिका (राक्षसी) में हुआ । राहु । "उसका अपत्य (सन्तान) ढक् (एय)" "सैंहिकेय" यही अर्थ है.

सैकत, (न०) सिकताः सन्ति अत्र+अण् । जहां रेत है । बहुत वालुका (रेत) वाला नदी आदिका तट (किनारा) । बहुत रेतीली जगह (त्रि०).

सैद्धान्तिक, (न०) सिद्धान्तं वेत्ति+ठक् (इक) । सिद्धान्त (असलीबात) के जानेहारा । सिद्धान्ताभिज्ञ.

सैनापत्य, (न०) सेनापतेः भावः । कर्म० वा यञ् । सेनापति । फौजका मालिक (कप्तान) का धर्म (काम) "सैनापत्यमुपेत्य वः" कुमारः.

सैनिक, (पु०) सेनायां समवैति+ठक् । सेनामें मिलाहुआ हाथी घोडा आदि । फौजी.

सैन्धव, (न०) सिन्धुनदीसमीपे देशे भवं+अण् । सिन्धु नदीके निकट देशमें उपजा । एक प्रकारका लवण (लून-नोन) । सैंधानोन । "सिंधुके निकटहुआ" अण् । घोटक । घोडा (वह सिंधुदेश (समुद्र) के निकट अरव देशमें उपजा है).

सैन्धवघन, (पु०) सैन्धवमिव घनः । सैन्धवशिला (सैंधानोनकी सिल) के समान चारों ओरसे एकरस खरूप । चिदानन्द (चैतन्य और आनन्द) खरूप परमेश्वर.

सैन्य, (पु०) सेनायां समवैति । ञ्य । सेनामें मिलता है । मिलाहुआ हाथी घोडा आदि । "सेनाका समूह" ष्यञ् (न०).

सैरन्ध्री, (स्त्री०) सीरं (हलं) धरति । धृ+क-मुम्च । सीरन्ध्रः (कृषकः) तस्येदं शिल्पकर्म । अण् । तन् अस्य अस्ति+अच् । ङीष् । हलजोतनेवाले (किसान) के कामवाली । दूसरेके घरमें रहनेहारी खाधीना (अपनी इच्छापर चलनेवाली) शिल्पकारिणी (कारीगर) स्त्री (औरत) । "(सैरन्ध्री)" भी होताहै.

सैरिभ, (पु०) सीरे (हले-तद्वहने) इभ इव शूरः । +खार्थे अण् । हलके उठानेमें हाथीकी नाई वहादुर है । महिष । भैंसा । "सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मी"मिति महालक्ष्मीध्यानम्.

सैवाल, (न०) सेवायै (मीनादीनां उपभोगाय) अलति (पर्याप्रोति)+अच् । सेवालः । ततः+खार्थे अण् । जो मच्छी आदिके भोगनेके लिये बहुत है । शैवाल । (पानीका जंगाल) । खार्थे कन् । यही अर्थ है.

सोढ, (त्रि०) सह्+तृच्-वा इट् अभाव । क्षान्त । सहागया । क्षमाशील । कर्तरि क्त (त्रि०).

सोढ, (त्रि०) सह्+तृच् (विकल्पसे इट् नहिं होता) । सहनकर्ता । सहारनेहारा । क्षमाशील.

सोत्कण्ठ, (त्रि०) सह उत्कण्ठया । बहुतसी इच्छाके साथ । प्यारी वस्तुके मिलनेकी इच्छासे विलम्ब (देरी) को न सहारनेहारा.

सोत्प्रास, (न०) उद्+प्र+अस्+घञ् । सह उत्प्रासेन । पियारे वचनके साथ । दूसरे अर्थवाले शब्दको किसी औरही अर्थमें कल्पना करके बोलना । पियारा वचन । सोल्लुण्ठन । सशब्दहास्य (बहुतऊंचे हसना) (पु०).

सोदय, (त्रि०) सह उदयेन (प्रादुर्भावेण-वृद्ध्या वा) । प्रकटहुआ । जाहिरहुआ । बढाहुआ । लाभवाला । उदयके साथ रहा.

सोदर, (पु०) सह (समानं) उदरं यस्य । एक पेटवाला । एक ही पेटमें हुआ । भाई (सगाभाई)। भगिनी (वहिन) (स्त्री०).

सोदर्य, (पु०) सह (समाने) उदरे जातः+यत् । सादेश । एक पेटमें सोनेवाला । भ्राता । (सगाभाई) । भगिनी (वहिन) (स्त्री०).

सोन्माद, (पु०) सह उन्मादेन । पागलपनके साथ । उन्मत्त (पागल) । उन्मदिष्णु । नशेमें चूर रहनेहारा.

सोपप्लव, (पु०) सह उपप्लवेन । वडी विपत्तिसे दवाया गया । राहु वा चंद्रमाकी छायासे पकडा हुआ । शत्रुओंसे दवाया हुआ.

सोपाधि(क), (न०) सह उपाधिना । वा कप् । उपाधिके साथ । प्रतिलाभ (उलटकरपाना) की आशासे किया गया दानआदि । किसीविशेष गुणको धारण करनेहारा । आवश्यक (जरूरी) (त्रि०).

सोपान, (न०) उप+अन+भावे घञ् । सह विद्यमानः उपानः (उपरिगतिः) अनेन । जिस्से ऊपर जासक्ते हैं । चढनेका साधन लक्डी आदिका वनाहुआ पदार्थ । पौड सांग । पौडी.

सोम, (पु०) षु+मन् । चन्द्रमा । काफूर (कर्पूर) । कुवेर । यमराज । वायु (हवा) । वसु (एक प्रकारका देवता) । देवता । जल (पानी) । सोमलता (वेल) औषध । उसका रस । अमृत । और किरण । "सह उमया" पार्वतीके साथ । शिवजी । वानरोंका स्वामी सुग्रीव.

सोमगर्भ, (पु०) सोमस्य गर्भः (स्थानम्) । चान्द्रात्मक अमृतस्वरूप मोक्षका स्थान । विष्णु । नारायण.

सोमज, (न०) सोमात् जायते । जन्+ड । सोमरसके पीनेसे उपजता है । दुग्ध (दूध) । चन्द्रमासे उपजा (त्रि०) । बुध (पु०).

सोमतीर्थ, (न०) सोमेन तपः तप्त्वा कृतं तीर्थम् । चन्द्रमाने तपस्या करके जिसे तीर्थ बनाया । प्रभासतीर्थ.

सोमप, (पु०) सोमं (तद्रसं) पिबति । पा+क । यज्ञमें सोमरसके पीनेहारा । "पा+क्विप्" । "सोमपा" । यही अर्थ.

सोमपीति(थि)न्, (पु०) पीतं अनेन+इनि । सोमपीतः । पृ० । वा "त" को "थ" होता है । यज्ञमें सोमरसके पीनेहारा । "पा+क्वनिप्" सोमपी । यही अर्थ.

सोमवन्धु, (पु०) सोमस्य वन्धुः । सोमः वन्धुः अस्य वा । चन्द्रमाका बंधु वा चन्द्रमा जिसका वन्धु है । सूर्य । चन्द्रमाका बेटा बुध । पु० । कुमुद (फूल) (न०).

सोमभू, (पु०) सोम एव भूः (उत्पत्तिस्थानं) यस्य । चन्द्रमाही जिसके उपजनेकी जगह है । बुधग्रह । चन्द्रवंशी क्षत्रिय.

सोमयाग, (पु०) सोमो यागः । तीन वर्षोंमें समाप्त होनेहारा सोमरस पानाङ्गक (जिसमें सोमरस पीया जाता है) यागविशेष.

सोमयाजिन्, (पु०) सोमेन यजते । यज्+णिनि । सोमरससे यज्ञ करनेहारा । सोमयागकर्ता.

सोमलता, (स्त्री०) सू+मन् । कर्म० । इस नामकी लता (वेल).

सोमवंश, (पु०) सोमस्य वंशः । चन्द्रमाका वंश । इस वंशमें उपजा क्षत्रिय.

सोमवार, (पु०) सोमस्वामिकः वारः । वह दिन कि जिसका स्वामी चन्द्रमा है । चन्द्रवार । सोमवार । सौंवार.

सोमविक्रयिन्, (पु०) सोमं विक्रीणाति । वि+क्री+णिनि । सोमलता वा उसके रसको वेचनेहारा.

सोमसिद्धान्त, (पु०) सोमकृतः सिद्धान्तः । चन्द्रमासे कियाहुआ सिद्धान्त (निर्णय फैसला) । एक ज्योतिष्का ग्रन्थ.

सोमसुत्, (पु०) सोमं सुतवान् । भूते+क्विप् । यज्ञके लिये सोमलताका रस निकाल चुका है.

सोमसुता, (स्त्री०) ६ त० । नर्मदा नदी (चन्द्रमाकी कन्या) । बुध (पु०) । "सोमोद्भवा" भी यही अर्थ है.

सोमसूत्र, (न०) सोमस्य (जलस्य) सूत्रं इव प्राणाली । पानी निकलनेकी प्राणाली (नलका-मोरी) । शिवजीके लिंगमें पार्वतीके सिंहासनसे जल निकलनेका स्थान । "सोमसूत्रं न लङ्घयेत्" इति तन्त्रम्.

सोल्लुण्ठ, (त्रि०) सह उल्लुण्ठेन । पृथिवीपर पार्श्वपरिवर्त (पलसेटा मारना) आदिसे युक्त घोडा आदि । और अर्थवाला वाक्य किसी और अर्थमें लगाकर कहना । वोली मारना । आक्षेपसहित वचन हुआ.

सोल्लुण्ठन, (न०) सह उल्लुण्ठनेन । आक्षेपके साथ और अर्थवाले वचनको किसी दूसरे अर्थमें पलटना (यदि वह वचन स्तुतिको प्रकाशकर्ता है तो निन्दामें जोडना और यदि निन्दा हो तो स्तुतिमें लगाकर कहना).

सौकर्य, (न०) सुकरस्य भावः+ष्यञ् । अनायास (सुख-आसानी) से साध्यत्व (तयार करना).

सौखसुप्तिक, (त्रि०) सुखसुप्तिं (सुखेन शयनं) पृच्छति+ठञ् । सुखसे सोनेको पूछता है (क्या आप रात्रिको आनन्दसे सोये ?) । प्रातःकाल (सवेर) । सुखका सोना पूछनेहारा वैतालिक (स्तुतिका पाठ करनेहारा).

सौख्य, (न०) सुखं एव+ष्यञ् । सुख । आराम.

सौगत, (पु०) सुगत एव+अण् । सुगत बुद्धविशेष । "उसका यह-अण्" सुगतसम्बन्धी (सुगतका) (त्रि०).

सौगन्धिक, (न०) सुष्ठु गन्धः+तस्येदं+ठण् । कल्हार । एक प्रकारका कमलफूल (इसमें हुच्छी गंध होती है).

सौचिक, (पु०) सूचीं (तत्कर्म. सीवनं) उपजीवति+ठन्। सूईका काम करके जीता है। सीनेवाला । दरजी.

सौजन्य, (न०) सुजनस्य भावः+ष्यञ्। भलेमानुषका होना। सुजनता। भलमानसी। और अच्छा व्यवहार। "सौजन्यं यश" इत्युद्भटः.

सौत्र, पाणिन्यादिभिः सूत्रेण (कर्मविशेषाय) पठितः+अण्। पाणिनीआदि मुनिओंसे किसीविशेष कामके लिये सूत्रद्वारा पढाहुआ। भ्वादिविगेरह दशगणोंमें होनेवालोंसे भिन्न केवल सूत्रमें पढे हुए धातु.

सौत्रामणी, (स्त्री०) सुत्रामा (इन्द्रः) देवता अस्य+अण्। जिसका देवता इन्द्र है। एक प्रकारका यज्ञ इसीमें ब्राह्मणोंकोभी सुरापान-शराबका पीना विहित (वेदमें कहा हुआ) है। "सौत्रामण्यां सुरां पिबेत्" इति श्रुतिः.

सौदामनी, (स्त्री०) सुदामा (पर्वतभेदः) तत्प्रान्तभवत्वात्+अण्। विद्युत् (विजली)। यह बिल्लौरके सुदामा नाम पर्वतके एक देशमें उत्पन्न हुई। और एक अप्सरा। ऐरावतहाथीकी स्त्री। "सौदाम्नी" (त्रि०)

सौदायिक, (न०) सुदायात् (बन्धुकुलात्) आगतः+ठण्। बन्धुकुल (माता-पिता-भाई+पति) से आया । एकप्रकारका स्त्रीधन (जो पति आदिसे पाया है).

सौदास, (पु०) चन्द्रवंशी कल्माषपाद नामक राजा.

सौध, (पु० न०) सुधया (लेपनद्रव्येण) रक्तम्+अण्। राजसदनभेद । एक प्रकारका राजाका महल। सुधासम्बन्धी (अमृतका) (त्रि०).

सौनिक, (पु०) सूना (वध्यस्थानं)-तदुपलक्षितमांसादि पण्यं अस्य+ठण् । घातकरनेकी जगह (उस्से पहिचाना गया मांसआदि) है सौदा-व्यापार जिसका । मांस (मास) को क्रयविक्रय (मोल लेना और वेचना खरीद फरोख्त) करके जीनेहारा। व्याध (शकारी)। कसाई.

सौन्दर्य, (न०) सुन्दरस्य भावः+ष्यञ् । चारुता । मनोहरता। सुन्दरता। खूब सूरती। अंगोंकी ठीक रचना.

सौपर्ण, (न०) सुष्ठु पर्णानि-तद्रूपं अर्हति+अण्। अच्छे पत्तोंके रंगवाली। मरकतमणि। पन्ना.

सौपर्णेय, (पु०) सुपर्ण्याः (विनतायाः) अपत्यम्+ढक्। विनताकी सन्तान गरुड.

सौप्तिक, (त्रि०) सुप्तिकाले (रात्रौ) भवं+ठञ्। रातमें हुआ। रातकी लडाई। सोयेहुओंके विषयमें कियाहुआ ग्रन्थ। महाभारतका एकपर्व (हिस्सा).

सौभ, (न०) सुष्ठु सर्वत्र लोके भाति। भा+क। स्वार्थे अण् । भलीभांति सब लोकमें प्रकाशित है। राजा हरिश्चन्द्रका नगर। कामचारि नगर.

सौभद्र, (पु०) सुभद्रायां भवः+अण्। सुभद्राका पुत्र। अभिमन्यु.

सौभरि, (पु०) एक मुनि (जिसे मच्छिओंकी क्रीडापर मोह होगया था)

सौभागिनेय, (सुभगाया अपत्यं+ढक्-इनादेशः । दोनों पदोंको वृद्धि होती है । सुभगा (पतिकी पियारी स्त्री)-का पुत्र। उसकी कन्या। (स्त्री०) ङीप्.

सौभाग्य, (न०) सुभगस्य भावः+ष्यञ्। द्विपदवृद्धिः। प्रियत्वे+स्वार्थे ष्यञ् । सिन्धूर । टङ्कण (सुहागा)। विष्कम्भादिमें चौथा योग। पु०। अच्छी किस्मत (न०).

सौभिक, (पु०) सौभं कामचारिपुरं-तन्निर्माणं) शिल्पं अस्य+ठण्। कामचारिपुर (अपनी इच्छासे विचरनेहारा नगर) को रचना करनेके व्यापारको जाननेहारा। ऐन्द्रजालिक। मदारी.

सौमनस्य, (न०) सुमनसो भावः+ष्यञ् । अच्छे मनका होना । प्रशस्तचित्तता। श्राद्धका पिण्ड देनेके पीछे ब्राह्मणके हाथमें फूल देनेका मन्त्र.

सौमित्र, (त्रि०) पु० सुमित्रायां भवः+अण्+इञ् वा। सुमित्रामें हुआ। लक्ष्मण.

सौम्य, (त्रि०) सोमो देवता अस्य+ष्यण्। सोम (चन्द्रमा) देवतावाला (जिसका देवता चन्द्रमा है)। "सोम-इव-यः। स्वार्थे अण्। चन्द्रमाके समान। मनोहर । सुन्दर। (त्रि०)। बुध। (पु०)। शुभग्रह। वृष आदि समराशि। सोमरस पीनेवाला ब्राह्मण (पु०).

सौम्यग्रह, (पु०) कर्म० ज्योतिषमें चन्द्र-बुध-गुरु-शुक्र-रूप शुभग्रह.

सौम्यनामन्, (त्रि०) सौम्यं नाम यस्य । सुखदायक वा प्यारे नामवाला.

सौर, (पु०) सूरस्य इदम्। सूरो देवता अस्य+अण् वा। सूर्यका पुत्र । शनैश्चर । यमराज । सूर्यदेवतावाला। (त्रि०)। स्त्रियां ङीप्। "सौरी".

सौरभ, (न०) सुरभेर्भावः। अच्छागन्ध । सुगन्धीवाला। अच्। अण् वा। केसर (न०).

सौरभेय, (पु०) सुरभेरपत्यं+ढक् (एय)। गौ । स्त्रीमें ङीप् । "तस्या इदं ढक्" "सुरभिसम्बन्धी" (गौका) (त्रि०).

सौरलोक, (पु०) सौरः लोकः । सूर्यका लोक (सूरजकी दुनिआं).

सौराष्ट्र, (पु०) सुष्ठु राष्ट्रं अस्य अस्ति+अण्। जिसका अच्छा राज है । एकदेश (सूरत)। "सुराष्ट्रे भवः" अण्। सुराष्ट्रदेशमें हुआ। (त्रि०)। एकविष (न०).

सौल्विक, (त्रि०) सुल्वं (ताम्रपात्रादि निर्माणं) शिल्पं अस्य+ठक्। जिसका काम ताम्बेके वर्तन बनाना है। ताम्रमय पात्र निर्माण कर्ता। कसेरा.

सौवस्तिक, (पु०) स्वस्तिकरणे कुशलः+ठक् । भलाई करनेमें चतुर। पुरोहित (सदा भलाई चाहता है).

सौविदल्ल, (पु०) सुष्ठु विदन्तं (विद्वांसं) अपि लाति। ला+क+स्वार्थे अण्। अच्छी तरह जानते हुएको भी जो पकडता है। अन्तःपुर (जनानखाना) का रखवारा (रक्षक).

सौष्ठव, (न०) सुष्ठु (भद्रं) तस्य भावः+अण्। अच्छापन। आतिशय (वहुतहोना)। सुन्दरहोना। खूवसूरती.

सौहार्द, (न०) सुहृदो भावः+अण्। अच्छे हृदयका होना। स्नेह। पियार। और मित्रता। दोस्ती.

सौहित्य, (न०) सुहितस्य (तृप्तस्य) भावः। तृप्त होना। रजना। प्रसन्नहोना। तृप्ति.

सौहृद, (न०) सुहृदो भावः+अण्। मित्रता। बंधुता.

स्कद्, (उत्प्लुत्यगति) उछलकर जाना। अक० भ्वा० आ० सेट्। स्कन्दते। अस्कन्दिष्ट.

स्कन्द्, (पु०) स्कन्दते (उत्प्लुत्य गच्छति)+अच्। उछल करजाता है। कार्तिकेय (महादेवका वडा पुत्र).

स्कन्दन, (न०) स्कन्द्+ल्युट्। रेचन। वहना। सूकना। और जाना.

स्कन्ध, (पु०) स्कद्यते (आरुह्यते)+कर्मणि घञ्। पृ०। जिसपर कुछ चढाया जाता है। अंस। कन्धा। मोड्डा। वृक्षका दण्ड (तना)। रचना। लडाई। समूह। शरीर। एक छन्द। सौगत सिद्धोंमें विज्ञान आदि पाँच। रास्ता। और ग्रन्थका भाग (हिस्सा)। "स्कन्धैर्द्वादशभिर्युक्तं" इति भागवतम्.

स्कन्धावार, (पु०) स्कन्धार्थं आवारः। आ+वृ+घञ्। युद्धके लिये उद्यतहुई सेनाओंका स्थापन (टिकाना)। छावनी.

स्कन्न, (त्रि०) स्कन्द्+क्त। च्युत (गिरगया)। गलित। क्षरित। वहाहुआ। सूकाहुआ और चलागया। "भावे क्त" वहना (न०).

स्कम्भ्, चोटकरना (प्रतिघात) क्र्या० उभ० सक० सेट्। स्कभ्नाति-स्कभ्नते। अस्कम्भीत्-अस्कम्भिष्ट.

स्खद्, विदार (फाडना) दि० आ० सक० सेट्। स्खद्यते। अस्खदिष्ट.

स्खल्, चलना। भ्वा० प० सक० सेट्। स्खलति। अस्खालीत्.

स्खलन, (न०) स्खल्+भावे ल्युट्। चलन (चलना)। गिरना.

स्खलित, (न०) भावे क्त। छलेयुद्ध (कूटयुद्ध) आदिमें प्रवृत्त होकर वीरों (वहादुरों) की मर्यादासे गिरना। और गिरना। "कर्तरि क्त"। चलाहुआ (त्रि०).

स्तन्, मेघशब्द (बादलकी आवाजकरना)। चु० उभ० सक० सेट्। स्तनयति-ते। अतस्तनत्-त.

स्तनं, (पु०) स्तन्+अच्। स्त्रिओंका एक अंग। मम्मा। पिस्तान.

स्तनन, (न०) स्तन्+ल्युट्। शब्द (आवाज) वादल (मेघ) की आवाज.

स्तनन्धय, (पु०) स्तनं धयति। स्तनको पीता है। धे-खश्-मुम् च। अतिशिशु (वहुत छोटावच्चा)। स्त्रीमें ङीप्। "स्तनन्धयी".

स्तनप, (पु०) स्तनं पिवति। पा+क। स्तनको पीता है) वहुत छोटावच्चा। वालक। स्त्रीमें टाप्.

स्तनभर, (पु०) ६ त०। स्तनोंका वोझा। मोटे स्तनोंका भार.

स्तनमुखम्-वृन्तं-शिख, (न०) स्तनस्य मुखम्। स्तन (कुच) का मुख (चूची).

स्तनयित्नु, (पु०) स्तन्+इत्नु। मेघ। वादल। मोथा। बिजली। मौत। और रोग.

स्तनाङ्गराग, (पु०) स्तनयोः अङ्गरागः। स्त्रीके स्तनोंपर लगाया चन्दन आदि। स्तनोंका लेप.

स्तनान्तर, (न०) स्तनयोः अन्तरं। स्तनोंका मध्य (वीच)। हृदय। छाती.

स्तनाभोग, (पु०) ६ त०। स्तन (मम्मा) की परिपूर्णता। फैलावट.

स्तनांशुकम्, (न०) स्तनयोः अंशुकम्। स्तनोंको ढांकनेवाला वस्त्र (दुवट्टा).

स्तनित, (न०) स्तन्+भावे क्त। मेघ (बादल)का शब्द। और क्रीडा आदिका शब्द। "कर्तामें क्त" शब्दवाला (त्रि०)

स्तन्य, (न०) स्तने भवं+यत्। स्तनमें हुआ। दूध.

स्तब्धरोमन्, (पु०) स्तब्धानि रोमाणि यस्य। पक्के रोआँवाला। शूकर। सूअर.

स्तब्धलोचन, (त्रि०) स्तब्धे लोचने यस्य। न हिलनेवाली आंखोंवाला। निमिष। न फडकनेवाले नेत्रोंवाला (देवताओंका नेत्र ऐसाही होता है).

स्तभ्, स्तम्भन (रोकना)-जडहोना-अक० जडकरना क्रियाको रोकना। सक० भ्वा० आ० सेट्। इदित्। स्तम्भते। अस्तम्भिष्ट.

स्तम्ब, (पु०) स्था+अम्बच्। पृ०। झाडी। तृण (घास)। गुच्छा। काना। खंबा.

स्तम्बेरम, (पु०) स्तम्बे रमते। अलुक् समा०। वृक्ष आदि शाखा-गुच्छा वा झाडीमें रमण कर्ता है (खेलता है)। गज। हाथी.

स्तम्भ्, रोधन (रोकना)। क्र्या० स्वा० प० स० सेट्। क्त्वावेट्। स्तभ्नाति। स्तभ्नोति। अस्तभत्। अस्तम्भीत्.

स्तम्भ, (पु०) स्तम्भ+अच् । स्थूणा (थाम-खंवा-थम्ब)। "भावे घञ्" जड होना । रुकना.

स्तम्भन, (न०) स्तम्भ् (जडकरना)+"भावे ल्युट्" जडीकरण । चेष्टारहित करना । रोकदेना । "करणे ल्युट्" तन्त्रमें जड बनानेका साधन एक प्रयोग (अमल)। "स्तम्भ्+णिच्+ल्यु" कामदेवके पाँच बाणोंमेंसे एक.

स्तव, (पु०) स्तु+अप् । प्रशंसा । और स्तुति (तारीफ, वडाई).

स्तवक, (पु०) स्तु+वुन् । स्था+अवक । पृ० वा । गुच्छा.

स्तावक, (त्रि०) स्तु+ण्वुल् । स्तुतिकारक । वडाई करनेहारा । तारीफ करनेहारा.

स्तिमित, (न०) स्तिम्+भावे क्त । आर्द्रता । गीलापन । गिलावट । और अचाञ्चल्य (न हिलना)। (निश्चल) ठहरना । "कर्तरि क्त" अचञ्चल (जो हिलता नहिं) और आर्द्र (गीला) (त्रि०).

स्तुत, (पु०) स्तु+क्त । कृतस्तव । स्तुति किया हुआ । तारीफ किया गया.

स्तुति, (स्त्री०) स्तु+क्तिन् । स्तव । तारीफ । प्रशंसा । वडाई.

स्तुतिपाठक, (पु०) स्तुतिं पठति । पठ+ण्वुल् । राजा आदिकी वडाई करनेवाला.

स्तुम्भ, रोधन (रोकना) स्वा० पर० सक० सेट् । स्तुभ्नोति । अस्तुम्भीत्.

स्तूप, (पु०) स्तू+पक् । तूह्प्+अच् वा । राशीकृतमृत्तिकादि । इकट्ठीकीहुई (ढेर) मट्टीआदि । संघात । समूह । बल (जोर) । और निष्प्रयोजन । बिनमतलब । निकम्मा.

स्तृ, विस्तार (फैलना) । स्वा० उभ० सक० अनिट् । स्तृणोति । स्तृणुते । अस्तार्षीत् । अस्तृत-अस्तरिष्ट.

स्तृ, प्रीति (प्रसन्न होना) अक० रक्षा करना (बचाना)। सक० स्वा० पर० अनिट् । स्तृणोति । अस्तार्षीत्.

स्तॄ, आच्छादन (ढाँपना) । क्र्या० स्वा० उभ० सक० सेट् । स्तृणाति-स्तृणीते । अस्तारीत् अस्तरिष्ट । अस्तरीष्ट-अस्तीर्ष्ट.

स्तेन्, चौर्य (चोरी करना)। चुरा० उभ० सक० सेट् । स्तेनयति-ते । अतिस्तेनत्-त.

स्तेन, (पु०) स्तेन्+घञ् । चौर्य (चोरी करना)+अच् । चोर (त्रि०).

स्तेम, (पु०) स्तिम्+घञ् । आर्द्रीभाव । गीला होना । और चिकना.

स्तेय, (न०) स्तेनस्य भावः+यत् । नि० । चौर्य (चोरी करना)। चोरी । सामने वा पीछे रात वा दिनमें दूसरेका द्रव्य चुराना)। परद्रव्यापहार । दूसरेकी चीज चुराना.

स्तेयिन्, (त्रि०) स्तेनं अस्ति अस्य+इनि । परद्रव्यापहारक । दूसरेका पदार्थ चुरानेहारा । "स्त्री० में ङीप्".

स्तोक, (पु०) स्तुच्+घञ् । चातक (पपीहा)। और जलबिन्दु (पानीकी बूंद)। अल्प (थोडा) (त्रि०).

स्तोत्र, (न०) स्तु+ष्ट्रन् । स्तव । तारीफ । वडाई । गुण कर्म और स्वभाव आदिसे स्तुति करना.

स्तोभ, (पु०) स्तुभ्+घञ् । गान (गीत) आदिकी स्वरको पूरा करनेके लिये शब्दविशेष (जिसका अर्थ कुछ नहीं) जैसे सामवेदमें "इडा" "होई" प्रभृति । रोकना । स्तम्भन.

स्तोम्, आत्मगुणाविष्करण (अपने गुणोंका प्रकाश करना) चु० उभ० सक० सेट् स्तोमयति-ते । अतुस्तोमत्-त.

स्तोम, (पु०) स्तोम्+घञ् । स्तु+मन्-वा । समूह । यज्ञ । और स्तत्र (वडाई-तारीफ)। मस्तक (माथा)। घन । गाढा । शस्य (खेती)। और लोहेका डण्डा (न०)। वक्र (टेढा) (त्रि०).

स्त्यान, (न०) स्त्यै+भावे क्त ("त" को "न" होता है)। स्नेह (चिकना)। घनता (गाढापन)। संहति (मिलाहुआ) । आलस्य । और प्रतिशब्द (गूंज)। "कर्तरि क्त" संहनिकारक (इकट्ठा करनेहारा) । और शब्द करनेवाला (त्रि०).

स्त्यै, संहति (इकट्ठा होना) और ध्वनि (आवाज करना)। भ्वा० अक० अनिट् । स्त्यायति । अस्त्यासीत्.

स्त्री, (स्त्री० स्तु+ड्रट् । योषित् । नारी । औरत । जनानी.

स्त्रीचिह्न, (न०) स्त्रिया असाधारणं चिन्हं । स्त्रीका खास नशान । योनि । कुस । भग.

स्त्रीचोर, (पु०) स्त्रियाः चोर इव । स्त्रीका मानो चोर है । कामी.

स्त्रीजित, (पु०) स्त्रिया जितः । जि+क्त । स्त्रीने जीत लिया । स्त्रीवश्य (जिसको स्त्रीने आधीन किया है).

स्त्रीधन, (न०) ६ त० वह धनकी जिसपर स्त्रीका स्वत्व (कवजा) है (वह ६ प्रकारका होता है).

स्त्रीधर्म, (पु०) ६ त० प्रायः एकमासके अनन्तर (ऋतुके समय) स्त्रीके फूलका खिलना । रजस्.

स्त्रीधर्मिणी, (स्त्री०) धर्मः अस्ति अस्याः+इनि । जिसे स्त्रीधर्म हो रहा है । ऋतुवाली स्त्री (औरत).

स्त्रीपुंस, (पु०) द्विव० । स्त्री च पुमांश्च । अच् समा० । मिलेहुए स्त्री और पुरुष.

स्त्रीपुंसलक्षणा, (स्त्री०) स्त्रीपुंसयोः लक्षणं अस्याम् । जिसमें स्त्री और पुरुषके दोनों लक्षण (स्तन-सम्मे-श्मश्रु-दाढी प्रभृति) पाये जायँ । एक स्त्री.

स्त्रीलिङ्ग, (पु०) स्त्रिया इव लिङ्गं (तत्कार्यं) यस्य। स्त्रीलिंगमें विधान कियागया व्याकरणमें कहेहुए संस्कारवाला शब्दविशेष। ६ त०। स्त्रीका चिन्ह (नशान) (न०).

स्त्रीवश, (पु०) ६ त०। स्त्रीवशीभूत। स्त्रीके आधीन हुआ.

स्त्रीविधेय, (पु०) ६ त०। स्त्रीके वशमें रहनेहारा.

स्त्रीसंग्रहण, (न०) स्त्रियाः संग्रहणं यत्र। एक प्रकारका विवाद (झगडा), जिसमें दूसरेकी स्त्रीको हरण किया जाता है। स्त्रीका पकडना.

स्त्रीसभ, (न०) स्त्रीणां सभा स्त्रिसभं (नपुंसक होता है)। स्त्रिओंका समाज.

स्त्रीसेवा, (स्त्री०) ६ त०। स्त्रीका संभोग। भोगके द्वारा नारीकी सेवा.

स्त्रैण, (न०) स्त्रिया इदं+अण्। नञ्। स्त्रीका स्वभाव। और स्त्रियोंका समूह (झुंड)। स्त्रीकी आज्ञामें रहनेहारा। और स्त्रीका (त्रि०).

स्थ, (त्रि०) स्था+क। स्थितिशील। ठहरनेवाला। (प्रायः यह किसी पदके पीछेंही लगता है) जैसे-पदस्थ। मार्गस्थ। निकटस्थ। गृहस्थ.

स्थग्, संवरण (ढाँपना) भ्वा० पर० सक० सेट्। स्थगति। अस्थगीत्.

स्थगन, (न०) स्थग्+ल्युट्। आच्छादन। ढांपना.

स्थगित, (त्रि०) स्थग्+क्त। आवृत। तिरोहित। ढांपा हुआ। छिपाहुआ.

स्थगी, (स्त्री०) स्थग्यते अनया। "घञ्" के अर्थमें "क" ङीष्। ढांपाजाता है इस्से। ताम्बूल (पान)का पात्र। पानका डब्बा.

स्थण्डिल, (न०) स्थल+इलच्-नुक्। "ल" को "ड" होता है। चत्वर। चौतडा अंगन। थडा (जो चारोंओरसे समान हो)। "निषेदुषी स्थण्डिल एव केवले" इति कुमारः। यज्ञके लिये संस्कार किया हुआ स्थान। और होमके लिये कुण्डके प्रतिनिधि (उसकी जगह) स्वरूपसे वालुका (रेत) आदिसे करनेलायक मण्डलविशेष। "नित्य और नैमित्तिक कर्म स्थण्डिलपरही करना चाहिये, वह एक हाथभर रेतका बनावे" यह तन्त्रका सिद्धान्त है.

स्थण्डिलशायिन्, (पु०) स्थण्डिले (चत्वरे) शेते (व्रतवशात्)+णिनि। व्रतके लिये चत्वर (चौतडाआंगन चारोंओरसे खुली जगह)पर सोनेवाला। थडेपर सोनेवाला.

स्थण्डिलेशय, (पु०) स्थण्डिले शेते। अच्-अलुक् समा०। व्रतके लिये चत्वरपर सोनेवाला.

स्थपति, (पु०) स्था+क। उसका पति। कञ्चुकी (अन्तः-पुरमें रहनेहारा बूढा ब्राह्मण)। शिल्पिभेद। एकप्रकार-का कारीगर। राजा। कुबेर। अधीश (मालिक)। "बृह-स्पतिसव" नामक यज्ञके करनेहारा। बहुत अच्छा। (त्रि०).

स्थपुट, (त्रि०) तिष्ठति। स्था+क। स्थं पुटं यत्र। विषमो-न्नतप्रदेश। टेढी और उंची जगह। "स्थपुटगतमपि कव्य-मव्यमप्रमत्ति" इति मालतीमाधवम्। कठिन स्थानमें विचर-नेहारा जीव (पु०).

स्थल्, स्थान (ठहरना) भ्वा० प० अक० सेट्। स्थलति। अस्थालीत्.

स्थल, (न० स्त्री०) स्थल्+अच्। जलसे रहित अकृत्रिम (जो बनावटी नहिं-स्वाभाविक) पृथिवीका भाग। स्त्रील-पक्षमें ङीप्। "वनस्थली मर्मरपत्रमोक्षा" इति कुमारः। थल। बनावटी भूभाग (न०).

स्थलवर्त्मन्, (न०) स्थलस्य वर्त्म। थल (पृथिवी-जमीन)-का मार्ग (रास्ता).

स्थलारविन्दम्-कमलं-कमलिनी, (न०) स्थलस्य अरवि-न्दम्। थल (पृथिवीपर उत्पन्न हुआ)का कमलफूल.

स्थलेशय, (पु०) स्थले शेते। शी+अच्। अलुक् समा०। वराह (सूअर) और रुरु (एक) प्रकारका हरिण) आदि पशु। थलपर सोनेवाला (त्रि०).

स्थविर, (न०) स्था+किरच्। "स्थव" का आदेश। शैलेय-नामी गन्धद्रव्य। चार मुखवाला ब्रह्मा (पु०)। अचल। स्थिर। न हिलनेवाला और बूढा (त्रि०)। महाश्रावणी (स्त्री०).

स्थविष्ठ, (त्रि०) अतिशयेन स्थूलः+इष्ठन्। "ल" का लोप होनेपर गुण हुआ। अतिवृद्ध। बहुत बूढा। "ईयसु" होनेपर "स्थवीयान्" भी इसी अर्थमें है (स्त्री०) ङीप्.

स्थाणु, (पु०) स्था+नु। पृ० णत्वम्। शिवजी। और शाखा (डाली) से रहितवृक्ष (ठोंठ)। बूढा (त्रि०).

स्थान, (पु०) स्था+ल्युट्। स्थिति (ठहरना)। समानता। अवकाश (जगह)। वसति (रहना)। ग्रन्थकी सन्धि। भाजन (वर्त्तन)। निकट (पास)। व्याकरणमें प्रसंग (आदिश्यमान "यण्" आदिका कारण स्वरूप "इक्" आदि)। जगह.

स्थानाध्यक्ष, (पु०) स्थानस्य अध्यक्षः। स्थानका स्वामी (मालिक)। निरीक्षक। पुलिसका अधिकारी.

स्थानिक, (त्रि०) स्थाने अधिकृतः+ठक्। स्थानाध्यक्ष। स्थानाधिपति। स्थानका मालिक.

स्थानिन्, (त्रि०) स्थानं अस्य अस्ति रक्ष्यत्वेन। स्थान-रक्षक। स्थान (जगह) की रक्षा करनेहारा। स्थानं (प्रसंगः)। अस्ति अर्थे इनि। व्याकरणमें आदिश्यमान "यग्" आदिका कारण "इक्" आदि। "स्थानिवदादेशोऽ-नल्विधौ" इति पाणिनिः.

स्थानीय, (न०) स्थीयते अस्मिन्। स्था+आधारे अनीयर्। जहां रहते हैं। नगर (मुल्क)। "स्थानं (वासः) अ-र्हति-स्थानस्य इदं वा छ"। निवास करनेलायक देश। स्थानवाला (त्रि०).

स्थाने, (अव्य०) स्था+न । योग्यता । और औचित्य (मुनासिबपन) । ठीक है । सत्य । बराबरी.

स्थापन, (नं०) स्था+णिच्+ल्युट् । टिकाना । आरोपण । चढाना (कायमकरना) । और "पुंसवन" नाम गर्भका संस्कार-युच् । "स्थापना" यही अर्थ । रखना.

स्थापित, (त्रि०) स्था+णिच्+क्त । निश्चित पक्का । निवेशित (टीकायाहुआ-रक्खागया) । और न्यस्त.

स्थामन्, (न०) स्था+मनिन् । शक्ति । ताकत । स्थिरता । पकिआई.

स्थायिन्, (त्रि०) स्था+तिनि । स्थितिशील । रहनेवाला । अलंकारमें रसके अनुकूल "रति" आदिभाव (पु०).

स्थायुक, (त्रि०) स्था+उकञ् । स्थितिशील (ठहरनेवाला) । एक ग्रामाधिपकृत (एक गांवका मालिक) (पु०).

स्थाल, (न०) स्थलति (तिष्ठति) अन्नादि अत्र । जिसमें अन्न आदि रक्खा जाता है । थाल (अन्नपात्र) । पाकपात्र (देचका-हांडी) । थाली । ङीष्.

स्थालीपुलाक, (पु०) स्थालीस्थाः पुलाकाः (तण्डुलाः) सन्ति अत्र+अच् । थालीके चावल जिसमें हैं । एक प्रकारका न्याय जैसे देचके-हांडीमें एकचावलका पाक देखकर सारे चावलोंके पाकका अनुमान होजाता है । यदि बटलोहिमें एकदाना गलगया तो सारेही गलेहुए समझने, क्योंकि सबको आगका संयोग एकही समयपर हुआ है.

स्थावर, (त्रि०) स्था+वरच् । अचञ्चल (जो हिलता नहि) । स्थिर (एक जगह कायम) । वृक्ष (द्रख्त) आदि । पृथिवीआदि पर्वत (पु०) । धनुष्का चिल्ला (न०).

स्थाविर, (न०) स्थविरस्य भावः+अण् । बूढापन । बुढाप्पा । वृद्धत्व । वह सप्तति । (सत्तर) वरिस बीतनेपर होता है.

स्थासक, (पु०) स्था+स । स्वार्थे कन् । अलंकार (गहना-जेवर) । पानीकी बूंद.

स्थास्नु, (त्रि०) स्था+स्नु । स्थितिशील । ठहिराहुआ । ठहेरनेवाला.

स्थित, (त्रि०) स्था+क्त । स्थित । ठहिराहुआ । खडाहुआ । निश्चल । न हिलाहुआ । प्रतिज्ञावाला.

स्थितप्रज्ञ, (त्रि०) स्थिता प्रज्ञा यस्य । ठहरी हुई अकिलवाला । स्थिर (अचल) बुद्धिवाला.

स्थिति, (स्त्री०) स्था+क्तिन् । मर्यादा (नियम) । न्याय्य-पथ (इन्साफवाला रास्ता)पर स्थिर होना । और स्थान (ठहिरना).

स्थिर, (पु०) स्था+किरच् । पर्वत (पहाड) । देवता । वृक्ष । पक्का । स्वामिकार्तिक । शनि । मोक्ष । ज्योतिषमें वृष, सिंह, वृश्चिक और कुम्भ राशियें । कठिन । (सख्त) । और न हिलनेवाला (त्रि०) । शाल्मली (सिंबल) । पृथिवी.

स्थिरतर, (त्रि०) अतिशयेन स्थिरः+तरप् । अत्यन्त-स्थिर । बहुत पक्का । ईश्वर (पु०).

स्थिरधी, (त्रि०) स्थिरा धीः यस्य । अचल (न हिलनेवाली–पक्के निश्चयवाली)बुद्धिवाला.

स्थिरमति, (स्त्री०) स्थिरा मतिः । पक्की अकिल । ६ ब० । स्थिरचित्त । पक्के दिलवाला । स्थिरबुद्धिवाला (त्रि०) । "अनिकेतः स्थिरमतिः" इति गीता.

स्थिरयौवन, (न०) स्थिरं यौवनं (पक्की जवानी) । बहुत देरतक रहनेवाला जीवन । "स्थिरं यौवनं अस्य" पक्की जवानीवाला । विद्याधर आदि (एक प्रकारकी देवता) । देरतक रहनेवाले यौवन (जोबन)वाला (त्रि०).

स्थिरायुस्, (पु०) स्थिरं आयुः यस्य । देरतक स्थायी (कायम) रहनेसे पक्की उमरवाला । शाल्मली (सिंबल)-का द्रख्त.

स्थूल, बृंहण (वढना) चु० उभ० सक० सेट् । स्थूलयति-ते.

स्थूल, (त्रि०) स्थूल्+अच् । पीवर । मोट्टा और समूह.

स्थेय, (पु०) स्थीयते (विवादनिर्णायकतया) असौ । स्था+यत् । जिसे किसी विवाद (झगडे) को मिटानेके लिये स्थिर (कायम) किया जाता है । विवादमें संशयका निर्णय करनेहारा । जूरी । और पुरोहित । स्थिरा (त्रि०).

स्थेयस्, (त्रि०) अतिशयेन स्थिरः । ईयसु । स्थादेशः । बहुत पक्का.

स्थैर्य, (न०) स्थिरस्य भावः+ष्यञ् । स्थिरता । पकियाई । मजबूती.

स्थौल्य, (स०) स्थूलस्य भावः+ष्यञ् । पीवरता । मोटाई । मोटापन.

स्नपन, (न०) स्ना+णिच्-पुक्+ल्युट् । जल आदिसे अभिषेक करना । न्हाना । स्नान.

स्नव, (पु०) स्नु+अप् । स्रवण । दारण । वहना चूना.

स्नातक, (पु०) स्ना+भावे क्त । स्नानं अस्य अस्ति+कन् । वेद पढनेके अनन्तर गृहस्थाश्रममें लौटनेके लिये अंगभूत स्नान (न्हाना) करनेहारा । गुरुके पास विद्या समाप्त करके घरमें आनेके लिये स्नान करनेवाला.

स्नातकव्रत, (न०) ६ त० । स्नातकके करनेलायक एक प्रकारका व्रत । "अलाभे चैव कन्यायाः स्नातकव्रतमाचरेत्" स्मृतिः.

स्नान, (न०) स्ना+ल्युट् । शोधन (सफाई) । अवगाहन । नहाना.

स्नानीय, (त्रि०) स्नानाय हितम्+छ । स्नानके लिये हित-कारी (साधन) तेल । उद्वर्तन (बटना) आदि.

स्नायु, (स्त्री०) स्नाति (शुध्यति) दोषः अनया । स्ना+उण् । जिस्से दोष साफ होजाता है । शरीरमें वायु (हवा)को उठानेहारी एक नाडी । रग.

स्निग्ध, (त्रि०) स्निह्+क्त । स्नेहवाला (पियारवाला-वा चिकना) । वयस्य (सखया-मित्र) । सरलवृक्ष (पु०) । मेदा । चरबी (स्त्री).

स्निग्धता, (स्त्री०) स्निग्धस्य भावः । स्नेह । चिकनाई । प्रियता.

स्नुत, (पु०) स्नु+क्त । क्षरित । वहा हुआ जलआदि.

स्नुषा, (स्त्री) स्नु+सक् । पुत्रवधू । पुत्रकी स्त्री । वहू । नूं.

स्नेह, (पु०) स्निह्+घञ् । प्रेम (पियार) । तेलआदि रसविशेष । न्यायमें गुणविशेष (जिस्से एक पदार्थ जल्दी जालता है).

स्नेहन्, (न०) स्निह्+णिच्+ल्युट् । तेल आदिका मलना.

स्नेहभू, (स्त्री०) ६ त० श्लेष्म (वलागम) नामी शरीरका धातुविशेष । स्नेहका पात्र । प्रेमका स्थान.

स्नेहिन्, (पु०) स्निह्+णिनि । वयस्य (मित्र) । बंधु । स्नेह-वाला (त्रि०).

स्पद्, ईषत्कम्प (थोडासा कांपना) । भ्वा० आ० अक० सेट् । इदित् (स्पन्दते) । अस्पन्दिष्ट.

स्पन्द, (पु०) स्पदि+घञ् । ईषच्चलन । थोडासा हिलना । थोडासा कांपना । एक प्रकारकी क्रिया । आंखका फडक-नाआदि.

स्पर्ध, (संहर्ष, बहुत प्रसन्न होना) । (पराभिभवेच्छा । दूसरेको दवानेकी इच्छा करना) । भ्वा० आ० सक० सेट् । स्पर्धते । अस्पर्धिष्ट.

स्पर्धा, (स्त्री०) स्पर्ध+अ । संहर्ष । खुशी । दूसरेको दवानेकी इच्छा । साम्य । वरावरी । उन्नति । तरक्की.

स्पर्श, ग्रहण (पकडना) । और स्तेय (चुराना) । चु० उ० स० सेट् । स्पर्शयति-ते । अपस्पर्शत्-त.

स्पर्श, (पु०) स्पृश्-स्पृश् अच् घञ् वा । न्यायमें त्वगिन्द्रिय-ग्राह्य (त्वचा चमडा इन्द्रियसे जिसका प्रत्यक्ष होता है) गुणविशेष । पकडना रोग । युद्ध (जंग) । गुप्तचर छिपा हुआ दूत) । और उपपातक (छोटा पातक)वायु (हवा) (पु०) छूनेवाला (त्रि०) "क" से ले "म"तकवर्ण (पु०).

स्पश्, ग्रन्थ (गांठना) और बांधना भ्वा० उभ० सक० सेट् । स्पशति-ते.

स्पश, (पु०) स्पश्+अच् । चर । दूत । युद्ध (जंग) । गुप्तचर (जासूद).

स्पष्ट, (त्रि०) स्पश्+क्त । नि० । व्यक्त । प्रकट । स्फुट । साफ.

स्पष्ट, (त्रि०) स्पृश्+क्त । कृतस्पर्श । छूआहुआ "भावे क्त" छूना (न०).

स्पृष्टास्पृष्टि, (न०) स्पृश्+भावे क्त । नञ्+स्पृश्+क्तिन् । स्पृष्टिश्च अस्पृष्टिश्च द्वयोः समाहारः । स्पर्शास्पर्श । छूना और न छूना.

स्पृह्, इच्छा (चाहना) । चु० उ० सक० सेट् । स्पृहति-ते । अपस्पृहत्-त.

स्पृहणीय, (त्रि०) स्पृह्+अनीयर् । वाञ्छनीय (चाहने-लायक) और श्लाघ्य (सराहनेलायक) । " अहो बतासि स्पृहणीयवीर्यः " इति कुमारः.

स्पृहयालु, (त्रि०) स्पृह्+आलुच् । स्पृहाशील । चाहनेवाला.

स्पृहा, (स्त्री) स्पृह्+अङ् । इच्छा (चाह) । "मिथुने स्पृहा-वती" कुमारः.

स्पृह्य, (त्रि०) स्पृह्+यत् । वाञ्छनीय । चाहनेलायक.

स्फट्, विशीर्णता (फटना) अक० भ्वा० पर० सेट् । स्फ-टति । अस्फटीत् । अस्फाटीत्.

स्फटि (टी) क, (पु०) स्फटिरि (टी) व । इवार्थे कन् । इसनामकी मणि सूर्यकान्तमणि (आतशीशीशा) । बिल्लौर । स्वार्थे अण् । "स्फटिकं" यही अर्थ (न).

स्फाटिकाचल, (पु०) स्फटिक इव शुभ्रः अचलः । बिल्लोरके समान चिट्टा पर्वत । कैलासपर्वत (पहाड) । बिल्लोरका पहाड.

स्फाय्, वृद्धि (वढना) भ्वा० आ० अक० सेट् । स्फायति । अस्फायि । अस्फायिष्ट । स्फीतः.

स्फाति (स्त्री०) स्फाय्+क्तिन् । वृद्धि (वढना).

स्फार, (पु०) स्फाय्+रक् । स्वर्णबुद्बुद । सोनेका बुलबुला । और विपुल (चौडा) । चमकाहुआ । और बहुत (त्रि०).

स्फारण, (न०) स्फुर+णिच् (स्फारादेश) ल्युट् । विका-शन-खिलाना.

स्फिच्, (स्त्रि०) स्फाय्+डिच् । कटिदेश । नितम्ब । चूतड.

स्फिर, (त्रि०) स्फय्+किरच् । प्रचुर (बहुत) । और विस्तृत । बढाहुआ.

स्फुट्, विकाश (खिलना) । तुदा० अक० सेट् । स्फुटति । अस्फुटीत् । पुस्फोट.

स्फुट, (त्रि०) स्फुट+क । विकसित । खिलाहुआ । व्यक्त (जाहिर) । भिन्न (टूटगया) । और चिट्टा । ज्योतिषमें मेषआदि राशिओंके अंशविशेषोंमें स्थित हो रहे सूर्यादि-ग्रह (पु०) सांपका फन (स्त्री०).

स्फुटन, (न०) स्फुट्+ल्युट् । विकफन (खिलना) । फूट-ना । विदलीभाव । फटकर निकलना.

स्फुर्, स्फूर्ति (फुरना) । तु० प० अ० सेट् । स्फुरति । अस्फुरीत् । पुस्फोर.

स्फुरण, (न०) स्फुर्+ल्युट् । ईषत् स्पन्दन । थोडासा कां-पना+युच् । (स्त्री०) वही अर्थ.

स्फुर्ज्, वज्रशब्द (बादलके गाजनेकी आवाज करना) । भ्वा० प० अक० सेट् । स्फूर्जति । अस्फूर्जीत्.

स्फुल, (न०) स्फुल् । हिलना-कांपना+क । कपडेका घर । तम्बू.

स्फुलिङ्ग, (पु० स्त्री०) स्फुल्+इङ्गच् । " स्फुट " यह धीमी आवाज निकलती है जिस्से । लिगि+घञ् । पृ० वा । आग-की कनी.

स्फूर्जथु, (पु०) स्फूर्ज+अथु । वज्रपातशब्द । वज्र गिरने-की आवाज.

स्फूर्ति, (स्त्री०) स्फुरच्छ्+स्फुर् वा क्तिन् । फुरना । खिल-ना । चमकनेवाली अकिल प्रतिभा.

स्फूर्तिमत्, (पु०) स्फूर्तिः अस्ति अस्य+मतुप् । पाशुपत नामी एक प्रकारका शिवभक्त प्रतिभावाला । फुर्तिवाला । और खिलाहुआ (त्रि०)

स्फेयस्, (त्रि०) अतिशयेन स्फिरः । ईयसु । स्फादेशः । अतिप्रचुर । बहुतही । स्त्री०में ङीप् । ईष्ठन् । "स्फेष्ठः" यही अर्थ.

स्फोट, (पु०) स्फुटति अर्थः यस्मात् । स्फुट्+घञ् । जिस्से अर्थ फूटता (निकलता) है । अर्थको जतलानेहारा अक्षरोंसे पहिचानागया पूरा शब्दविशेष । ब्राह्मणविशेष । फोडा.

स्फोटक, (पु०) स्फुट्+ण्वुल् । व्रणविशेष (फोडा) । और विदारक (फाडनेहारा) फोडनेवाला.

स्फोटन, (न०) स्फुट्+ल्यु । विदारण (फाडना) । और विकाशन (खिलाना) । मणिको वेधनकरनेका एक प्रकारका यन्त्र (स्त्री०).

स्फोटायन, (पु०) स्फोट एव अयनं यस्य । व्याकरणके जाननेहारा एक मुनि (जो शब्दके अर्थकी प्रणीतिमें "स्फोट" हीको स्वीकार कर्ता है) । "अवङ् स्फोटायनस्य" इति पाणिनिः.

स्फ्य, (न०) स्फा+यत् । नि० । खड्ग (तर्वारके स्वरूपमें एक प्रकारका यज्ञके लिये काष्ठ (लकडी).

स्म, (अव्य०) स्मि+ड । अतीत (बीतगया) । पादका पूरा करना.

स्मय, (पु०) स्मि+अच् । गर्व । अहंकार (मगरूरी) । और अद्भुत (आश्चर्य).

स्मर, (पु०) स्मरति प्रियं अनेन । स्मृ+अच् । स्मरणकर्ता है पियारेको इस्से । कामदेव । "भावे अप्" याद करना.

स्मरगृह, (न०) स्मरस्य गृहं इव । कामदेवका मानों घर है । स्त्रीका एक प्रकारका विशेष चिन्ह । स्मरमन्दिर । योनि । कुस । भग.

स्मरण, (न०) स्मृ+ल्युट् । एक प्रकारका ज्ञान जो जानीहुई वस्तुके अनुभवाधीन संस्कारसे उत्पन्न होता है अर्थात् उद्बोधक सहकारसे उपजा) । याद करना । सोचना.

स्मरदशा, (स्त्री०) स्मरकृता दशा । कामिओंकी कामदेवसे कीगई " नयनप्रीति " (आखका पियार आदि दसदशा (हालत).

स्मरवल्लभ, (पु०) स्मरस्य वल्लभः । कामदेवका प्यारा । वसन्त ऋतु.

स्मरहर, स्मरं हरति (नाशयति) । हृ+अच् । कामदेवको नाश कर्ता है । महादेव "स्मरमर्दन" भी.

स्मराकुल, आतुर-अति-उत्सुक, (त्रि०) स्मरेण आकुलः । कामदेवसे आकुल (घबराया) हुआ.

स्मराङ्कुश, (पु०) स्मरस्य अङ्कुश इव । कामदेवका मानों अंकुश है (उत्तेजक होनेसे) । नख (नाखून-नहूं) । जानों) नखोंके आघात (चोट) से स्त्रिओंका काम भडकता है.

स्मरासव, (पु०) स्मरोद्दीपक आसवः । कामको भडकानेहारा मद्य) एक प्रकारका जो आगपर (नहिं चढाया गया) । लाला (मुखकी लार) । कामिओंका उसके पीनेसे काम बडा चमता है.

स्मार्त, (त्रि०) स्मृतौ विहितः । स्मृतिं वेत्ति-अधीते वा +अण् । धर्मशास्त्रमें विधान किया हुआ स्नानआदि । स्मृतिशास्त्रके जाने वा पढनेहारा.

स्मि अनादर-और विस्मय (हैरान होना) (चु० आ० स० सेट्) । स्माययते । असिस्मयत । दूसरेसे विस्मय होनेपर "स्मापयति" ऐसाही होता है । यह भ्वादिमेंभी होता है और अनिट् है । स्मयते । अस्मेष्ट.

स्मित, (न०) स्मि+क्त । ईषद्धास्य । थोडासा हसना । विकसित । खिलाहुआ । और हैरान हुआ (विस्मित) (त्रि०).

स्मृ-स्मरण, (याद करना) । भ्वा० प० सक० अनिट्.

स्मृत, (त्रि०) स्मृ+क्त । कृतस्मरण । याद किया हुआ । स्मृतिविषय.

स्मृति, (स्त्री०) स्मृ+क्तिन् । अनुभव कीहुई वस्तुका उद्बोधसहकार (उस चीजको जागादेनेहारा कारण) से संस्कारके आधीन ज्ञानविशेष । यादसारी । याददास्त । " स्मर्यते वेदधर्मः अनेन " करणे क्तिन् । स्मरण कियाजाता है वेदका धर्म जिस्से । धर्मका उपदेश करनेहारा शास्त्र । वेदसम्बन्धी अर्थके अनुभवसे उत्पन्न हुआ । वेदके अर्थको अनुवाद (कहेहुए अर्थको फिर कहना किसी दूसरी आदि भाषामें) करनेहारा मुनिओंसे रचाहुआ वाक्यरूप शास्त्र । "वेदोऽखिलो धर्ममूलं स्मृतिशीले च तद्विदाम्" मनुः.

स्मृतिहेतु, (पु०) स्मृतिका कारण । संस्कार । वासनारूप गुणविशेष.

स्मेर, (त्रि०) स्मि+रन् । विकसित । खिलाहुआ । थोडासा हसरहा । "महाजनः स्मेरमुखो भविष्यति" कुमारः.

स्यद, (पु०) स्यन्द+क । वेग । जोर.

स्यन्द्, स्रवण (वहना) । भ्वा० आ० लुङ् लृट्-लृङ् में उभ० अक० वेट् । स्यन्दते । अस्यदत्+अस्यन्दिष्ट-अस्यन्त.

स्यन्द, (पु०) स्यन्द्+घञ् । क्षरण । वहाना । चूना । वगना.

स्यन्दन, (न०) स्यन्द+भावे ल्युट् । क्षरण । वहना । "कर्तरि ल्यु" । जल (पानी) न० । रथ । और तिनिसवृक्ष (पु०).

स्यन्दनारोह, (पु०) स्यन्दनं आरोहति (युद्धार्थं) । आ+रुह्+अण् । रथपर चढकर लडाई करनेहारा.

स्यन्दिन्, (त्रि०) स्यन्द्+णिनि प्रस्रवी । वहनेवाला । लाला (लार) ङीप्.

स्यन्न, (त्रि०) स्यन्द्+क्त । स्रुत । वहाहुआ (पानी आदि).

स्यम्, शब्दकरना । भ्वा० पर० अक० सेट् । स्यमति । अस्यमीत्.

स्यमन्तक, (पु०) स्यम् ज्ञच्-कत् । श्रीकृष्णजीके हाथकी एक मणि (उसके बहुतही गुण थे).

स्यूत, (त्रि०) सिव्+क्त । सूई आदिसे सीआगया । कपडा आदि । सूतका बनाहुआ पात्र (पु०) । "स्योत" यही अर्थ.

स्यूति, (स्त्री०) सिव्+क्तिन् । सूईआदिसे कपडेका सीवन (सीना).

स्रंसन, (न०) स्रंस्+णिच्+ल्युट् । ऊपर गयेहुएका नीचे गिराना । नीचे गिराना.

स्रंसिन्, (त्रि०) स्रंस्+णिनि । अधःपतनशील । नीचे गिरनेवाला.

स्रग्वत्, (त्रि०) स्रक् (माल्यं) अस्ति अस्य+मतुप् । "म" को "व" । कुत्वम् । मालावाला । मालापहिरेहुए । "स्रग्वी".

स्रज्, (स्त्री०) सृज्यते । सृज्+क्विन् । नि० । माला । माल्य.

स्रन्स्, पतन (गिरना) । भ्वा० आ० लुङ्में उभ० अक० सेट् । स्रंसते । अस्रसत्-अस्रंसिष्ट.

स्रम्भ्, विश्वास करना । भ्वा० आ० लुङ्में उभ० सक० सेट् । स्रम्भते । अस्रभत्-अस्रम्भिष्ट.

स्र(स्रा)व, (पु०) स्रु+अप्-घञ् वा । क्षरण । वहना । "कर्तरि अच्" । निर्झर । झरना.

स्रवण, (न०) स्रु+ल्यु । मूत्रजल । मूतका पानी (पेशाव) । और घर्म (पसीना) । "भावे ल्युट्" क्षरण । वहना.

स्रवन्त, (स्त्री०) स्रु+झिच्-ङीप् । नदी (दर्या) । एक औषधी । शतृ (वहनेवाला) (त्रि०) । स्त्रियां ङीप्.

स्रष्टृ, (पु०) सृज्+तृच् । जगत्के बनानेहारा चारमुख-वाला ब्रह्मा । और शिवजी । सृष्टिकर्ता (त्रि०).

स्रस्त, (त्रि०) स्रन्स्+क्त । च्युत । पतित । गिराहुआ.

स्रस्तर, (पु०) स्रन्स्+तरच् । आसन.

स्राक्, (अव्य०) स्रु+डाक । त्वरित । द्राक् । झट । जल्दी.

स्रु, गति (जाना) सक० । क्षरण (वहना) अक० भ्वा० प० अनिट् । स्रवति । असुस्रुवत्.

स्रुघ्न, (पु०) एक देश (पटना).

स्रुच्, (स्त्री०) स्रु+क्विप्-विच्+चिट्च । वटपत्राकृति (बड-बोडके पत्तेके स्वरूपवाला विकङ्कत लकडीका बनाहुआ भुजाके माप जितना यज्ञका एक पात्र । स्रुवा.

स्रुत, (त्रि०) स्रु+क्त । क्षरितजलादि (वहाहुआ पानी-आदि) । और गत (गया) । हींगकी पत्ती (स्त्री०).

स्रुव, (पु०) (स्त्री०) स्रु+क । खदिर (खैर) की लकडीका बनाहुआ हाथभर यज्ञका एक पात्र । सल्लकी (स्त्री).

स्रोत, (न०) स्रु+तच् । स्रोतस् । सोता । प्रवाह । जोरसे आपही पानीका निकलना.

स्रोतस्, (न०) स्रु+तसि । वेगसे आपही पानीका निक-लना । और रेतस् (वीर्य).

स्रोतस्वत्, (त्रि०) स्रोतः अस्ति अस्य+मतुप् । "म" को "व" । सोतेवाला । नदी (दर्या) । (स्त्रियां ङीप्).

स्रोतस्विनी, (स्त्री०) स्रोतस्+अस्त्यर्थे विनि ङीप् । सोते-वाली । नदी (दर्या) । प्रवाहवाला (त्रि०).

स्रोतोञ्जन, (न०) स्रोतसि भवं । यमुनानदीके प्रवाहके निकट सौवीरदेशमें हुआ अञ्जन । सौवीरदेशका काजल । सुरमा.

स्रोतोवहा, (स्त्री०) स्रोतसा वहति (सरति) । वह्+अच् । प्रवाहरूपसे वहती है । नदी (दर्या).

स्व, (न०) स्वन्+ड । धन (दौलत) । आत्मा (आप) और ज्ञाति (विरादरीका) (पु०) । आत्मीय (अपना) (त्रि०) । "आत्मा" और "आत्मीय" अर्थमें इसकी सर्वनामसंज्ञा हो जाती है.

स्वकर्मन्, (न०) स्वस्य कर्म । अपने वर्णके उचित कर्म । "स्वकर्मनिरतः सदा" इति गीता । अपना काम.

स्वकीय, (त्रि०) स्वस्य इदम् । छ-कुक्च । आत्मीय । अपना.

स्वगत, (त्रि०) स्वस्मिन् मनसि आत्मनि वा गतं (गम्+क) । अपने मन वा आत्मामें गया । मनोगत, मनकी बात । और मनीमनमें । नाटकमें केवल सामाजिक जनोंके सुनेलायक वचन अर्थात् जिसकी बाबत वचन-कहाजाय वह न सुने (न०).

स्वच्छ, (त्रि०) सुष्ठु अच्छा । प्रा० । बहुत अच्छा । बहुत निर्मल (साफ) । मुक्ता (मोती) । और स्फटिक (पु०) । श्वेतदूर्वा (चिट्टीदूब) (स्त्री०).

स्वच्छन्द, (त्रि०) स्वस्य छन्दः (अभिप्रायः) यस्य । अपनी इच्छापर रहनेहारा । स्वाधीन । आजाद । स्वतन्त्र (खुदमुख्तार).

स्वच्छमणि, (पु०) कर्म० । साफमणि । स्फटिक । विलौर.

स्वज, (न०) स्वस्मात् (देहात्-आत्मनो वा) जायते । अपने शरीर वा आत्मासे उत्पन्न होता है । रुधिर (लोहु) । पुत्र (लडका) (पु०) । कन्या (लडकी) (स्त्री०) । अपनेसे उत्पन्न हुआ (त्रि०).

स्वजन, (पु०) स्वस्य इव जनः (जननं) एककुले यस्य । अपने समान जिसका एकही कुलमें जन्म है । ज्ञाति । जात । अपने लोक.

स्वतन्त्र, (त्रि०) स्वस्य तन्त्रं (वशीकारः) यस्य । जो अपने आधीन है । स्वाधीन । जो दूसरेके आधीन नहीं.

स्वतस्, (अव्य०) स्व+तसिल् । आत्मनः । अपने आप । आपही.

स्वता, (स्त्री०) स्वस्य (स्वकीयस्य) भावः+तल् । अपना-पन । स्वकीयता । कब्जा.

स्वत्व, (न०) स्वस्य भावः+त्व । स्वामित्व । मालिकपना । किसी पदार्थ वा अपनेपर । कब्जा.

स्वधर्म, (पु०) स्वस्य वेदादिविहितो धर्मः । अपना वेद और शास्त्रमें विधान कियाहुआ धर्म । अपने योग्य वेदशादिमें कहाहुआ आचारआदि धर्म.

स्वधा, (अव्य०) स्वद्+आ-पृ० । "द" को "ध" होता है । पितर-देवताओंके उद्देश (प्रयोजन) से हवि (घी-आदि) का देना । स्वेन धयति । धे+क आप् । एक दुर्गा (स्त्री०) "नमः स्वाहायै स्वधायै" इति पितृगाथा.

स्वधाप्रिय, (पु०) स्वधाशिनां प्रियः । शाक० । स्वधाको खानेवालोंका पियारा । कृष्णतिल (कालेतिल) । "स्वधा" इस शब्दसे उपलक्षित (पहिचानेहुए) श्राद्धआदिका पियारा पिताआदि.

स्वधाभुज्, (पु०) स्वधा इत्यनेन त्यक्तद्रव्यं भुङ्क्ते भुज्+क्विप् । "स्वधा" इस शब्दसे छोडेहुए पदार्थको खाताहै । पितृगण । पितरोंका समूह । और देवता.

स्वधिति(ती), (स्त्री०) । स्वेन धीयते । धा+क्तिच् वा ङीप् । कुठार । कुहाडा । कुहाडा । परश्वध "स्वधितिः".

स्वन्, शब्द (आवाजकरना) । भ्वा० उ० स० सेट् । स्वनति अस्वनीत् अस्वानीत्.

स्वन, (त्रि०) स्वन्+अप् । शब्द (आवाज).

स्वनित, (त्रि०) स्वन्+कर्तरि क्त । शब्दित । आवाज-कियाहुआ । "भावे क्त" । शब्द । आवाज । और बाद-लका गर्जन (गर्जना) (न०).

स्वपन, (न०) स्वप्+ल्युट् । शयन । सोना । नींद । निद्रा.

स्वप्न, (पु०) स्वप्+नन् । नींद । सोना । सोयेहुएका मनका ज्ञानविशेष । सुपना.

स्वभाव, (पु०) स्वस्य भावः । निसर्ग । अपना धर्म । मिजाज । शील.

स्वभावोक्ति, (स्त्री०) स्वभावस्य उक्तिः अत्र । स्वभावका कथन है इसमें । अर्थसम्बन्धी अलंकारविशेष । ६ त० । स्वभावका कथन (कहना).

स्वभू, (पु०) स्वेनैव भवति । भू+क्विप् । आपहीसे होता-है । ब्रह्मा । विष्णु । शिवजी । और कामदेव.

स्वयंवर, (पु०) स्वयं (आत्मना) वरः (वरणम्) । आपही वरना । सभामें कन्याका आपही अपने पतिको वरलेना । "स्वयं वृणुते पतिम्" वृ+अच् । आपही पतिको वरनेवाली लडकी (स्त्री०).

स्वयंकृत, (पु०) स्वयं (आत्मना) कृतः । आप बनाया । कृत्रिमपुत्र । बनावटी लडका । आप किया (त्रि०).

स्वयंदत्त, (पु०) स्वयं (आत्मनैव) नतु पितृमातृभ्यां दत्तः । वह लडका कि जिसने अपनेको आपही दियाहै (पिता वा मातासे नहिं दियागया) । "दत्तात्मा तु स्वयं दत्तः" इति स्मृतिः.

स्वयम्, (अव्य०) सु+अय्+अमु । आत्मना । आपही । आप.

स्वयम्भु, (पु०) स्वयम्+भू+डु । आपहुआ । ब्रह्मा.

स्वर्, (अव्य०) स्वृ+विच् । स्वर्ग । वह स्थान कि जहां दुःख नहीं । परलोक । देवताओंका निवासस्थान । और अच्छा.

स्वर, (पु०) स्वर्+अच् । स्वृ+अप् वा । उदात्त (ऊंचा) । अनुदात्त (नीचा) और स्वरित (मिलाहुआ) रूप । अक्षरके उच्चारण करनेका यत्नविशेष । तन्त्रमें प्राणआदि वायुका व्यापारविशेष । गानेकी आवाज.

स्वरभङ्ग, (पु०) स्वरस्य भङ्गः यस्मात् । जिस्से आवाज रुकजाती है । एकप्रकारका रोग । ६ त० । स्वरका टूटना.

स्वरस, (पु०) स्वस्य रसः (रागः) । अपना अभिप्राय (आशय) । अपना मतलब । वाक्यमें एकप्रकारकी रचना.

स्वराज्, (पु०) स्वेनैव राजते । राज्+क्विप् । आपहीसे प्रकाशित होताहै (चमकता है) । ईश्वर । "अर्थेष्वभिज्ञः स्वराट्" इति भागवतम् । वेदका एक छन्द.

स्वरापगा, (स्त्री०) स्वः (स्वर्गस्य) आपगा । स्वर्गकी नदी । गंगा.

स्वरित, (पु०) स्वरः जातः अस्य+इतच् । एक स्वर । जो उदात्त और अनुदात्तके मेलसे उत्पन्न होता है स्वरवाला (त्रि०).

स्वरु, (पु०) स्वृ+उ । वज्र । यूप (यज्ञका खंभा) का टुकडा । तीर । सूर्यकी किरण । एकप्रकारका बिच्छु.

स्वरुचि, (त्रि०) स्वस्यैव रुचिः (प्रवर्तिका) स्वकृत्ये यस्य । अपने काममें जिसकी अपनीही इच्छा है । स्वातन्त्र्य । आजाद । ६ त० । अपनी अभिलाषा (इच्छा) (स्त्री०).

स्वरूप, (न०) स्वस्य रूपम् । अपना रूप । स्वभाव "स्वमेव रूपम्" । अपना पदार्थ । "स्वं" यथास्वं रूप-यति । रूप्+अण् । यथास्वरूप (जिसका जिसका जैसा स्वरूप है) जानेहारा । पण्डित (पु०) । "स्वेन (स्वभावेनैव) रूपं अस्य" । जो स्वभावहीसे रूपवाला है । मनोज्ञ (मनोहर) (त्रि०),

स्वरूपसम्बन्ध, (पु०) स्वरूपं सम्बन्धः । स्वरूपयोर्वा संबन्धः । न्यायमें अपना सम्बन्ध (जिसका संबंध अप-नेही साथ है) । ६ पदार्थोंसे भिन्नपदार्थविशेष । जैसे विषयत्व और प्रतियोगित्व । अपने रूपका सम्बन्ध.

स्वरोदय, (पु०) स्वराणां उदयः यत्र । जहां स्वरों (श्वास-विशेषों) से शुभ वा अशुभका ज्ञान होता है । तन्त्र-शास्त्रविशेष.

स्वर्ग, (पु०) स्वरिति (गीयते) । गै+क । सु+ऋज्+घञ् वा । दुःखसे न मिलाहुआ सुखसमूह । देवताओंका निवासस्थान । बडे सुखकी जगह.

स्वर्गनाथ, (पु०) ६ त० । स्वर्गका स्वामी । इन्द्र । "स्वर्गपति" भी.

स्वर्गवधू, (स्त्री०) ६ त० । स्वर्गकी स्त्री । अप्सरा.

स्वर्गाचल, (पु०) स्वर्गलोकस्थः अचलः । स्वर्गलोकका पहाड । सुमेरुपर्वत.

स्वर्गिन्, (पु०) स्वर्गः अस्ति अस्य भोगत्वेन+इनिः । स्वर्ग जिसका भोगनेलायक है । देवता । स्वर्गवासी (त्रि०).

स्वर्गौकस्, (पु०) स्वर्ग ओको यस्य । स्वर्ग है स्थान जिसका । देवता.

स्वर्ण, (न०) सुष्ठु अर्णः (वर्णः) यस्य । जिसका अच्छा रंग है । कांचन । सोना । धतूरा । नागकेसर । चिट्टेरंगका साग.

स्वर्णकाय, (पु०) स्वर्णं इव (पीतः) कायः अस्य । सोनेकी नाई जिसका पीला शरीर है । गरुड.

स्वर्णकार, (पु०) स्वर्णं (स्वर्णमयं अलंकारादि) करोति । कृ+अण् । सोनेका भूषण-जेवर-गहना आदि बनाता है । सुनार । एक जाति.

स्वर्णदी, (स्त्री०) ६ त० । स्वर्गकी नदी । गंगा.

स्वर्भानु, (पु०) स्वः (स्वर्गे) भानुः (दीप्तिः) अस्य । स्वर्गमें है चमक इसकी । राहु.

स्वर्लोक, (पु०) स्वः एव लोकः (भुवनम्) । स्वर्गलोक । स्वर्ग । वहिश्त । ६ त० । स्वर्गका लोक.

स्वर्वापी, (स्त्री०) स्वः (स्वर्गस्य) वापीव । स्वर्गकी मानों बावली है । गंगा.

स्वर्वेश्या, (स्त्री०) स्वः (स्वर्गस्य) वेश्या । स्वर्गकी कंजरी । मेनका आदि अप्सरा.

स्वल्प, (त्रि०) सुष्ठु अल्पम् । प्रा० । वहुत थोडा । क्षुद्र । छोटा.

स्ववासिनी, (स्त्री०) स्वस्मिन् (पित्रालये) वसति । वस्+णिनि । पिताके घरमें रहती है । चिरकालतक पिताके घरमें रहनेहारी स्त्री (चाहें विवाहीहुई हो अथवा कुमारी हो).

स्वसृ, (स्त्री०) सु+अस्+ऋन् । भगिनी । बहिन.

स्वस्ति, (अव्य०) सु+अस्+क्तिच् । क्षेम । आशिष् । कल्याण । और पुण्यआदि स्वीकारसूचन (अंगीकारवचन).

स्वस्तिक, (पु० न०) स्वस्ति (शुभाय) हितं+ठन् । कल्याणदेनेहारा । एकप्रकारका घर । एकप्रकारका आसन (बैठना) । एकप्रकारका द्रव्य.

स्वस्तिवाचन, (न०) स्वस्ति (शुभस्य) विप्रद्वारा वाचनम् । ब्राह्मणके द्वारा मंगलपाठ कराना । कामके प्रारम्भमें विघ्न (रुकावट) की शान्तिके लिये ब्राह्मणद्वारा करनेलायक कामोंका कल्याण कहाना । मंगलपाठ करना.

स्वस्तिवाचनिक, (त्रि०) स्वस्तिवाचनाय हितं (तत आगतं तत्र भवं वा+ठन् । मंगलपाठका साधन । मंगलपाठ करनेसे प्राप्तहुआ कुछ पदार्थ (लड्डु पेडा आदि) उसका.

स्वस्त्ययन, (न०) स्वस्ति (शुभस्य) अयनं (लाभः) यस्मात् । शुभ (भलाई) का लाभ होता है जिस्से । शुभके लिये कियागया वेदादिमें कहाहुआ ग्रहयाग आदि.

स्वस्थ, (त्रि०) स्वः (परलोके) तिष्ठति, स्वेन (स्वभावेन-सुखेन वा तिष्ठति) । स्वर्गमें रहनेहारा । स्वभावमें रहाहुआ । सुख (तक्लीफ्के विना) से स्थितहुआ । "स्वस्था भवन्तु मयि जीवति धार्तराष्ट्राः" वे०सं० नाटकम्.

स्वस्रीय, (पु०) स्वसुः अपत्यं (ईय) । वहिनका बेटा । भागिनेय । भगिनीसुत । बहिनकी लडकी (स्त्री०).

स्वागत, (न०) सुखेन आगतम् । सु+आ+गम्+क्त । सुखसे आना । भलेआना । "तत् अस्य अस्ति-अच्" कुशल.

स्वाति-ती, (पु० स्त्री०) स्वेनैव अनति । अश्विनीसे पन्द्रवां तारा । सूर्यकी एक स्त्री.

स्वाद्,-प्रीति (प्रसन्नहोना) । स्वादलेना । और चाटना । स्वादते । अस्वादिष्ट.

स्वाद, (पु०) स्वद्-स्वाद् वा+घञ् । रसका अनुभव । स्वादलेना । प्रसन्नहोना । और चाटना.

स्वादु, (पु०) स्वद्+उण् । मीठा रस । और गुड । इष्ट (चाहा-गया) । मीठा । और मनोहर (त्रि०) । स्त्रियां वा ङीप्.

स्वाधीन, (त्रि०) स्वस्य आधीनः । स्वायत्त । स्वतन्त्र । आजाद । अपने आधीन.

स्वाधीनपतिका, (स्त्री०) स्वाधीनः पतिः यस्याः+कप् । जिसका पति स्वाधीन है । एकप्रकारकी नायिका (स्त्री) । "स्वाधीनभर्तृका" (जिसका पति वशमें है).

स्वान्त, (न०) स्वन्+क्त । मन (दिल) । सहाय (मद्त).

स्वाप, (पु०) स्वप्+घञ् । सोना । निद्रा । नींद । और अज्ञान.

स्वापतेय, (न०) स्वस्य (धनस्य) पतिः । तस्येदं ढञ् । धनके स्वामीका यह । धन । दौलत.

स्वाभाविक, (त्रि०) स्वभावात् आगतः+ठञ् (इक) । स्वभावसे आया । स्वभावसिद्ध । स्वभावहीसे बनाहुआ । "स्त्रियां ङीप्" स्वाभाविकी.

स्वामिन्, (त्रि०) स्व+अस्ति अर्थे मिनिः दीर्घश्च । धनवाला । अपने आधीन । अधिपति । मालिक । और ईश्वर । स्त्रीमें ङीप् । महादेव । राजा । कार्तिकेय । भर्ता । वात्स्यायनमुनि । गरुड । परमहंस (पु०).

स्वायम्भुव, (पु०) स्वयम्भुवः अपत्यम् । तस्येदं वा+अण् । उवङ् । स्वयम्भुका पुत्र । पहिला मनु । स्वयम्भु (ब्रह्मा)-की सन्तान । स्वयम्भुसम्बन्धी (स्वयम्भुका) (त्रि०) । "धाम स्वायम्भुवं ययुः" कुमारः.

स्वाराज्, (पु०) स्वः (स्वर्गे) राजते । राज्+क्विप् । स्वर्गमें प्रकाशता है (चमकता है) । इन्द्र (देवतोंका राजा).

स्वाराज्य, (न०) स्वराजः-स्वाराजो वा भवः+ष्यञ् । ब्रह्मपन । इन्द्रपन । इन्द्रत्व.

स्वारोचिष, (पु०) द्वितीय मनु । दूसरा मनु । "स्वारोचिषेऽन्तरे पूर्वे" इति चण्डी.

स्वार्थ, (पु०) स्वस्य अर्थः (प्रयोजनं-अभिधेयो वा) । स्वप्रयोजन । अपना मतलब । और अपना अभिधेय (असली अर्थ) । "सार्थकः स्वार्थबोधकृत्" शब्दशक्ति प्र०.

स्वार्थिक, (त्रि०) स्वार्थे विहितः+ठण् (इक)। व्याकरणमें कहाहुआ स्वार्थ (अपना अर्थ) में विधान किया-हुआ प्रत्यय.

स्वास्थ्य, (न०) स्वस्थस्य भावः+ष्यञ् । आरोग्य । आराम । सन्तोष (प्रसन्नता)। और सुख.

स्वाहा, (अव्य०) सु+आ+ह्वे+डा-ति । देवताके उद्देश (प्रयोजन) से हवि (घीआदि) का त्यागना (छोडना)। अग्निदेवताकी स्त्री "स्वाहयेव हविर्भुजम्" इति रघुः। और एक दुर्गा (स्त्री०) । "नमः स्वाहायै स्वधायै" इति पितृगाथा.

स्वाहाप्रिय, (पु०) ६ त० । स्वाहाका पियारा । अग्नि । आग.

स्वाहाभुज्, (पु०) "स्वाहा" इति मन्त्रेण त्यक्तद्रव्यं भुङ्क्ते । भुज्+क्विप्। "स्वाहा" इस मन्त्रसे छोडेगये पदार्थको खाता है । देव । देवता.

स्विद्, (अव्य०) स्विद्+क्विप्। प्रश्न (सवाल)। पादपूरण.

स्विन्न, (त्रि०) स्विद्+क्त । घर्मयुक्त । पसीनेवाला.

स्वीकार, (पु०) अस्वस्य स्वस्यकारः (करणं)। स्व+च्वि+कृ+घञ्। ना अपनेको अपना करना । अंगीकार । मान्ना । कवूलकरना.

स्वीय, (त्रि०) स्वस्य इदं (ईय)। ६ त० । स्वसम्बन्धी । अपना । एकप्रकारकी नायिका (स्त्री०).

स्वृ, शब्द (आवाज करना)। अक० भ्वा० प० वेट्। स्वरति । अस्वारीत्-अस्वार्षीत.

स्वेच्छा, (स्त्री०) स्वस्य इच्छा । अपनी अभिलाषा (चाह).

स्वेच्छामृत्यु, (पु०) स्वेच्छया मृत्युः यस्य । अपनी इच्छासे जिसकी मौत है । भीष्म । अपनी इच्छासे मरनेवाला (त्रि०).

स्वेद, (पु०) स्वेद्-स्विद् वा घञ् । घर्म । पसीना । गर्मी.

स्वेदज, (पु०) स्वेदाज्जायते । पसीनेसे उपजता है । वनकी मक्खीआदि । पसीनेसे हुआ (त्रि०).

स्वेदनी, (स्त्री०) स्विद्यते (पच्यते) अनया । स्विद्+ल्युट्। लोहेका पात्र । तवा । कडाही । भूनेका पात्र (तन्दूर-भट्टी).

स्वैर, (न०) स्वस्य ईरं । ईर्+अच्-वृद्धिः । अपनी इच्छा । उसवाला (त्रि०).

स्वैरिन्, (त्रि०) स्वेनैव ईरयितुं शीलं अस्य । ईर्+णिनि वृद्धिः । स्वेच्छाचारी । अपनी इच्छासे विचरनेहारा । स्व-तन्त्र । आजाद । व्यभिचारिणी (वदमाश) औरत। (स्त्री०).

स्वोपार्जित, (त्रि०) स्वेन उपार्जितं । आप अर्जन किया । आप कमायाहुआ धन आदि.

स्वोवसीय, (न०) श्वः भावि । नि० । प्रसन्नता (खुशी)। सम्पदा । (वह सम्पदा जो आगे होनेवाली है).

ह

ह, (अव्य०) हा+ड । पादको पूरा करनेके लिये । सम्बोधन (बुलाना)। और प्रसिद्ध (मशहूर)। शिवजी । जल । शून्य । मंगल (पु०).

हंस, (पु०) हृ +अच् । पृ० । इस नामका एक पक्षी (परिंदा)। वह राजा जिसके शरीरपर कोईभी रोग नहिं । विष्णु । सूर्य । परमात्मा "हंसं तनौ सन्निहितं चरन्तम्" नैषधम्। मत्सर (दूसरेका शुभ देख न सकना)। एकप्रकारका यति (संन्यासी) । एकप्रकारका मन्त्र । एकप्रकारकी शरीरमें वायुकी चेष्टा (हर्कतकिया) । एकप्रकारका घोडा । सुमेरु पर्वत (पहाड)। शिवजी । श्रेष्ठ । वहुतशुद्ध । अजपामन्त्रके अक्षर । "हंकार" से बाहिर जाता और "सकार" से फिर प्रवेश करता है । "हंस" यह मन्त्र जीव निरन्तर जपता रहता है.

हंसक, (पु०) हंस इव कायति (शब्दायते)। कै+क । हंसकी नाई शब्द कर्ता है । पादकटक (पाँवका कडा पजेव)। नूपुर (झाञ्जर)। कडिआँ.

हंसगामिनी, (स्त्री०) हंस इव (मृदु) गच्छति । गम्+णिनि । हंसकी नाईं कोमल जाती है । धीरे २ चलनेवाली स्त्री । "हंसेन गच्छति" हंसके साथ (उसपर चढकर) जाती है+णिनि । ङीप् । ब्रह्माणी । एक शक्ति.

हंसनादिनी, (स्त्री०) हंसके समान शब्द कर्ती है । हाथीकी गति (चाल) । तन्वी (सूक्ष्मअंगवाली), कोइलकी भांति आलाप (वोलना), और नितम्ब (चूतड) भारी (गुर्विणी) इस प्रकारसे लक्षणोंवाली (स्त्री०).

हंसमाला, (स्त्री०) ६ त० । पंक्ति (कतार) के स्वरूपमें स्थित होरहा हंसोंका समूह । हंसोंकी कतार.

हंसयुवन्, (पु०) हंसः युवा । जवान हंस । छोटा हंस.

हंसरथ, (पु०) हंसः रथः (वाहनं यस्य ।) हंस जिसका रथ (गाडी) है । चतुर्मुख (चारमुखवाला) ब्रह्मा । "हंसवाहन" आदिभी.

हंसराज, (पु०) हंसानां राजा+टच् । हंसोंका राजा.

हंसारूढ, (पु०) हंसं आरूढः । आ+रुह्+क्त । हंसपर चढाहुआ । ब्रह्मा । उसकी शक्ति । ब्रह्माणी (स्त्री०).

हंसी, (स्त्री०) हंसस्य भार्या । ङीप् । हंसकी स्त्री । बाईस अक्षरोंके पादवाला छन्दोभेद.

हंहो, (अव्य०) हं+हा+डो । सम्बोधन (बुलाना)। अरेरे । प्रश्न (सवाल).

हञ्जे-ञ्जा, (अव्य०) जप्+डे-डा वा । नाटकमें चेटी-(चेडीका सम्बोधन).

हट्,-दीप्ति (चमकना) भ्वा० प० अक० सेट्। हटति । अहटीत्-अहाटीत.

हट्ट, (पु०) हट्+ट । क्रयविक्रयस्थान (मोललेने और वेचनेकी जगह)। "प्रतिहट्टपथे घरट्टजात्" इति नैषधम्.

हट्टचौरक, (पु०) हट्टे (प्रकाशिते स्थाने) एव चौरः । स्वार्थे कन् । खुली जगहपर चोरीकरनेवाला । हट्टका चोर.

हठ, (पु०) हठ्+अच् । बलात्कार । जोरकरना । जोरावरी.

हठयोग, (पु०) हठात्कारेण योगः । हठकरके परमात्माके साथ जुडना । प्राणायाम (प्राणोंका रोकना) आदि क्रियाके अभ्याससे उत्पन्न हुआ राजयोगके विनाही परमात्माका साक्षात्काररूप चित्तकी वृत्तिका रोकना.

हड्डु, (न०) हड्+ड । पृ० । अस्थि । हड्डी (हाड-हड्ड)। कन् । एक जाति.

हण्डा, (स्त्री०) हन्+डा । बडा मट्टीका पात्र (वर्तन)। हांडी । "हण्डे" नाटकमें नीचका सम्बोधन (नीचको बुलाना).

हत, (त्रि०) हन्+क्त । नाशित । नाशहुआ । प्रतिहत । मारागया । बांधाहुआ । आशासे रहित । और गुणाहुआ । "भावे क्त" । मारना । और गुणना (न०).

हतक, (त्रि०) हत इव (नष्टप्रायत्वात्)+कन् । मानों मराहुआ है । रुढाहुआ । गयागुजरा.

हतसाध्वस, (त्रि०) हतः साध्वसः यस्य । दूर होगया है भय जिसका । निर्भय । भयसे रहित । निडर.

हताश, (त्रि०) हता आशा यस्य । जिसकी आशा जातीरही । आशाशून्य । दयारहित । और पिशुन (चुगलखोर).

हति, (स्त्री०) हन्+क्तिन् । हनन (मारना)। और गुणना.

हत्या, (स्त्री०) हन्+क्यप् । मारना (वध)। प्राणवियोगानुकूलव्यापार (प्राणोंसे विछोडनेका काम)। किसीको प्राणोंसे जुदाकरना । "ब्रह्महत्या सुरापनं" स्मृतिः.

हद्, (विष्ठोत्सर्गे) मलछोडना (हगना)। भ्वा० आ० । हदते । अहदिष्ट.

हन्, वध (मारना) । गति (जाना) अदा० पर० स० अनिट् । हन्ति । अवधीत् । "कुञ्जं हन्ति कृशोदरी" इत्यादिमें अलंकारशास्त्रके जानेहारे । "गति" अर्थमें मानते हैं (इसीको निहतार्थता-असली अर्थका टूटना कहते हैं).

हनु(नू)मत्, (पु०) हनु (नू)+अस्ति अर्थे मतुप् । ठोड्डीवाला । रामचन्द्रजीका अनुचर (सेवक)। अञ्जनाके गर्भसे उत्पन्नहुआ वायु (हवा) का पुत्र । एक विशेष वानर.

हन्त, (अव्य०) हन्+त । हर्ष (खुशी)। दया । विषाद (मनका टूटना) । आर्ति (पीडा)। किसी वाक्यका आरम्भ । खेद.

हन्तकार, (पु०) हन्त (हर्षस्य) कारः (करणम्)। "हन्त" इत्यस्य कारः (उच्चारणम्) वा । कृ+घञ् । खुशीका करना । वा "हन्त" (खुशीहो) इस शब्दका उच्चारण करना । अतिथिको देनेलायक अन्न । (हंहो)। और हन्तशब्दका प्रयोग.

हन्तृ, (त्रि०) हन्+तृच् । हननकर्ता । मारनेवाला । जिसका स्वभाव दूसरेको मारनेका पडगया है । स्त्रीमें ङीप् । हन्त्री.

हन्न, (त्रि०) हद्+क्त । जिसने मलत्याग किया है । कृतपुरीषोत्सर्ग.

हम्भा(म्मा), (स्त्री०) हम्+भा । हम्म्+अङ् वा । गौओंकी ध्वनि (आवाज)। पृ० । "हम्वा" भी.

हय्, गति (जाना)। पृ० अक० भ्वा० प० सेट् । हयति । अहयीत्.

हय, (पु०) हय्-दिवा अच् । घोटक । घोडा.

हयग्रीव, (पु०) हयस्य इव दीर्घा ग्रीवा अस्य । घोडेकी नाईं जिसकी लंबी गर्दन है । विष्णुका एक अवतार । और एक दैत्य । "हयग्रीववधोपेतं तद्वै भागवतं विदुः" इति पुराणम् । दुर्गा (स्त्री०).

हर, (पु०) हृ+अच् । रुद्र । अग्नि (आग)। गर्धभ (गधा) । और विभाजक (बांटनेहारा)। हृ+भावे अप् । हरण (लेजाना)। और विभांजन (बांटना).

हरण, (न०) हृ+भावे ल्युट् । स्थानान्तरकरण । दूसरी जगहपर लेजाना । और विभाजन (बांटना)। "कर्मणि ल्युट्" यौतकादि (दाज-दहेज) में देनेलायक धन.

हरगौरी, (स्त्री०) हरदेहार्धहरा गौरी । महादेवके आधे देहको लेनेहारी पार्वती । अर्धनारीश्वररूप शिवजी और पार्वतीका मूर्तिविशेष । द्वन्द्व० । शिवपार्वती । द्वि० व०.

हरतेजस्, (न०) ६ त० । महादेवका तेज । पारद (पारा) और शिवजीका वीर्य । "हरबीज" आदिभी इसी अर्थमें.

हरशेखरा, (स्त्री०) हरस्य शेखरं आवासत्वेन अस्ति अस्याः+अच् । महादेवका सिर जिसका निवासस्थान है । गंगा.

हरि, (पु०) हृ+इन् । विष्णु । सिंह (शेर) । सर्प (सांप)। वानर (बंदर)। भेक (मेंडक-डडू)। चन्द्र (चांद)। सूर्य । वायु (हवा)। अश्व (घोडा)। यमराज । महादेव । ब्रह्मा । ब्रह्म । किरण । नौ वर्षोंमेंसे एक । मयूर (मोर)। कोकिल (कोइल)। हंस । शुक (तोता) । भर्तृहरिनामक वाक्यपदीयआदि ग्रन्थका बनानेहारा पण्डित । इन्द्र । पीत (पीला) । और हरा रंग । उसवाला (त्रि०) । "हरिं विदित्वा हरिभिश्च वाजिभिः" इति रघुः.

हरिकेश, (पु०) हरयः (पिंगलाः) केशा अस्य । पीले केशोंवाला । शिव । शिवका भक्त एक यक्ष (एकप्रकारका देवता).

हरिचन्दन, (न०) हरेः (इन्द्रस्य) प्रियं चन्दनम् । इन्द्रका पियारा चन्दन । देवताओंका एक वृक्ष । विष्णुका पियारा चंदन । गोशीर्षनामक मलयके एकदेशमें उत्पन्न हुआ चंदनविशेष । केसर.

हरिण, (पु०) हृ+इनन् । इस नामका पशु । हिरन । शिव । विष्णु । हंस । चित्रा रंग । उसवाला (त्रि०).

हरिणहृदय, (पु०) हरिणस्य इव भीतं हृदयं अस्य । जिसका हृदय हिरनकी नाईं डरता है । भीरु । डरपोक । डरनेवाला.

हरिणाक्षी, (स्त्री०) हरिणस्य इव अक्षिणी यस्याः+षच् समा०ङीप् । जिसके नेत्र हिरनके समान हैं ऐसी स्त्री । हरिणके समान नेत्रोंवाली (त्रि०) । हट्टविलासिनी नाम गंधवाला द्रव्य.

हरिणाङ्क, (पु०) हरिणः (शशनामकः मृगः) अंकः (चिहं) अङ्के (कोडे) वा यस्य । शशनामी हरिणके चिह्नवाला । वा जिसकी गोदमें हरिण है । चन्द्र (चांद) । चन्द्रमा.

हरित, (पु०) हृ+इति । नीला और पीला रंग मिलाहुआ । और पत्तोंका रंग उसवाला (त्रि०) सूर्यका घोडा । मूंग । शेर (सिंह) सूर्य । और विष्णु (पु०).

हरिताल, (न०) हरिवर्णस्य (पीतवर्णस्य) तालः (प्रतिष्ठा) यत्र । जहां हरेरंगकी प्रतिष्ठा है । पीले रंगका एक प्रकारका उपधातु । हरिताल.

हरितालिका, (स्त्री०) हरेः तालः (हस्ततालः) यस्यां+कप् । भादोंके शुक्लपक्षकी तृतीया.

हरिद्वार, (न०) हरेः (तत्प्राप्तेः) द्वारं (सेवनात्) । हरिके मिलनेका दर्वाजा (सेवा करनेसे) इस नामका तीर्थ.

हरिनामन्, (न०) हरेर्नाम तदाख्याने वा । हरिका नाम । वा उसकी प्रसिद्धि । "हरिकी नाईं जिसका नाम है" मूंग (पु०).

हरिनेत्र, (न०) हरेः नेत्रं इव । मानों हरिकी आंख है । श्वेतपद्म । चिट्टा कमलफूल । ६ त० । विष्णुकी आंख । शेरकी नाईं जिसका नेत्र है (लंबा होनेसे) । पेचक (उल्लु) (पु०).

हरिन्मणि, (पु०) हरिद्वर्णः मणिः । हरे रंगकी मणि । मरकतमणि.

हरिभक्त, (त्रि०) हरौ (विष्णौ) भक्तः । विष्णुमें भक्त (पूजाके योग्य समझकर प्रेमकरनेहारा) । विष्णुकी भक्ति करनेहारा । " सब जीवोंमें एकही भाव समझकर विष्णुकी भावना करके निरन्तर हरिकी भक्तिमें लगा रहनेवाला " । सब स्थानमें समदृष्टिसे हरिकी सेवा करनेहारा (पु०).

हरिभुज, (पु०) हरिं (भेकं) भुंक्ते । भुज्+क्विप् । मेंडकको खाता है । सर्प (सांप).

हरिवंश, (पु०) ६ त० । विष्णुका वंश (खान्दान) । महाभारतके अन्तमें खिलरूप एक ग्रन्थका नाम.

हरिवर्ष, (न०) हरिनामकं वर्षं । जम्बुद्वीपके नौ वर्षोंमेंसे एक.

हरिवासर, (न०) हरिप्रियं वासरं । हरिका पियारा दिन । एकादशीका दिन । और द्वादशीका पहिला पाद (हिस्सा).

हरिवाहन, (न०) हरिं वाहयति (स्थानान्तरं नयति) । वह्+णिच्+ल्यु । हरिको दूसरे स्थानपर ले जाताहै । हरिकी सवारी । गरुड । ६ त०.

हरिबीज, (न०) हरेः बीजं (उत्पत्तिकारणत्वेन) अस्ति अस्य+अच् । हरिके बीजसे उत्पन्नहुआ । हरिताल । हडताल । "हरितालं हरेर्बीजं लक्ष्म्या बीजं मनःशिला" इति वैद्यकम्.

हरिशयन, (न०) हरेः शयनं (निद्रा) । विष्णुकी नींद । हरेः शयनं यत्र तदुपलक्षितः कालः । वह समय कि जब हरि योगनिद्रामें सोते हैं । आषाढकी शुक्लद्वादशीसे लेकर कार्तिकशुक्ल द्वादशीतक चार महिनोंका समय.

हरिश्चन्द्र, (पु०) हरिः चन्द्र इव (ऋषिअर्थमें सुट् होता है) । हरि मानों चन्द्रमा है । सूर्यवंशमें त्रिशंकुका पुत्र । एक राजा (ऋषिसे भिन्न अर्थमें सुट् नहीं होता) । हरिचन्द्र.

हरिसंकीर्तन, (न०) हरेः (हरिनाम्नः) संकीर्तनं (कथनम्) । श्रीविष्णुका नाम उच्चारण करना । हरिनाम लेना " सकलं निष्फलं राजन् हरिसंकीर्तनं विना " पुराणम्.

हरिहय, (पु०) हरिवर्णः हयः यस्य । जिसका घोडा हरे रंगका है । इन्द्र । "हरिं विदित्वा हरिभिश्च वाजिभिः" रघुः.

हरिहर, (पु०) हरियुक्तो हरः । एकप्रकारकी मूर्ति । जिसका एक आधा हरि और दूसरा आधा हर है । द्विव० । शिवनारायण.

हरिहरक्षेत्र, (न०) हरिहरयोः प्रियं क्षेत्रम् । हरि और हरका पियारा स्थान । वह स्थान कि जहां गंगा और गण्डकीका संगम होता है । पाटलिपुत्र (पटना)के उत्तरकी ओर एक तीर्थ.

हरीतकी, (स्त्री०) हरिं (पीतवर्णं फलद्वारा इता (प्राप्ता) इण्+क्त । संज्ञायां कन्+ङीप् । इस नामका एक वृक्ष (जिसका फल पीला होता है) । हरीडका फल "कदाचित् कुपिता माता नोदरस्था हरीतकी" वैद्यकम्.

हर्तृ, (त्रि०) हृ+तृच् । चुरानेहारा चोर । और सूर्य (पु०).

हर्म्य, (न०) हृ+यत्-मुट्च । धनिओंका गृहविशेष (एकप्रकारका घर) । महल.

हर्यक्ष, (पु०) हरि (पिङ्गलं) अक्षि अस्य+षच् समा० । पीली आंखवाला । सिंह (शेर) । और कुबेर.

हर्यश्व, (पु०) हरिवर्णः अश्वः अस्य । जिसका घोडा हरेरंगका है । इन्द्र.

हर्ष, (पु०) हृष्+घञ् । सुख । चाही गई वस्तुके पानेसे उपजा आनन्द.

हर्षण, (पु०) हर्षयति (अभीष्टदानात्)। हृष्+णिच्+ल्यु। खुशी देता है (चाहीगई वस्तुके देनेसे)। विष्कम्भआदिमें चौदवां योग। हर्षकरानेहारा (त्रि०)। "हृष्+ल्युट्" हर्ष (न०).

हर्षमाण, (पु०) हृष्+ताच्छील्ये चानश्। एक श्राद्धका देवता। हृष्टचित्त (जिसका चित्त प्रसन्न है) (त्रि०).

हर्षिणी, (स्त्री०) हृष्+णिच्+णिनि-ङीप्। विजया (खुशीदेनेहारी)। भांग। हर्षकारक (खुशीदेनेहारा) (त्रि०).

हर्षित, (त्रि०) हर्षः जातः अस्य+इतच्। जातानन्द। खुश हुआ.

हल्, विलेख (खेंचना) भ्वा० प० सक० सेट्। हलति। अहालीत्.

हल, (न०) हल्यते (कृष्यते) अनेन। हल्+घञ्के अर्थमें क। लाङ्गल। हल.

हलधर, (पु०) हलं धरति (आयुधत्वेन) धृ+अच्। हलको शस्त्रस्वरूपसे धारण कर्ता है। बलराम। कृषक (खेतीकरनेहारा)। किसान (त्रि०).

हलभूति, (स्त्री०) हलेन (हलसाध्या) भूतिः। हल चलाकर सिद्धहुई जीविका.

हला, (स्त्री०) हेति लीयते। नाट्योक्तिमें सखीका संबोधन। सखी (सहेली)। पृथिवी। और जल (पानी).

हलायुध, (पु०) हलेन आयुध्यति। आ+युध्+क। हलसे लडाई करता है। बलदेव.

हलाहल, (पु०) हलेन इव आहलति (विलिखति)। हलके समान खेंचता है। आ+हल्+अच्। एकप्रकारका विष (जहिर).

हलिन्, (पु०) हलः अस्ति अस्य आयुधत्वेन+इनि। जिसका हल शस्त्र है। बलराम। कृषक (किसान) (त्रि०).

हल्य, (त्रि०) हलं (हलकर्षणं) अर्हति। तस्य इदं वा यत्। हलसे खेंचाहुआ खेतआदि। और हलका। "हलोंका समूह" यत् (स्त्री०).

हव, (पु०) हु+अप्। ह्वे+अप्। पृ० वा। यज्ञ। आज्ञा (हुक्म)। होम। और आह्वान (बुलाना).

हवन, (न०) हु+ल्युट्। होम। देवता आदिके उद्देशसे मन्त्रपढकर वह्नि (आग) में घी आदिका फेंकना.

हवनी, (स्त्री०) हूयते अस्यां। हु+ल्युट्। होम कियाजाता है इसमें। यज्ञका कुण्ड.

हवनीय, (त्रि०) हु+कर्मणि अनीयर्। होमका पदार्थ.

हविष्यान्न, (न०) कर्म०। व्रतआदिमें खानेलायक द्रव्यविशेष.

हविस्, (न०) हूयते। हु+कर्मणि असुन्। होम कियाजाता है (घी)। होमकरनेलायक प्रत्येक पदार्थ.

हव्य, (न०) हु+कर्मणि यत्। देवताके लायक अन्न। होम करनेलायक द्रव्य (त्रि०)। "भावे यत्" होम (न०).

हव्यवाह, (पु०) हव्यं वहति देवान्। वह्+अण्। देवताओंके पास होमके पदार्थको पहुंचाता है। अग्नि.

हस्-हास, (हसना) भ्वा० प० अ० सेट्। हसति। अहसीत्। (दोष देखकर हसनाअर्थमें सकर्मक होता है).

ह (हा)स, (पु०) हस्+अप्-घञ् वा। हसना। एकप्रकारसे मुखका खिलाना (विकाशन).

हसन, (न०) हस्+ल्युट्। प्रीतिसे मुख और कपोल (गल्ल)-आदिका विकाशन (खिलाना)। हास्य। हसना.

हसन्ती, (स्त्री०) हस्+झ-ङीप्। अंगारधानिका। अंगीठी। हसनेवाला (त्रि०)। स्त्रियां ङीप्.

हसित, (न०) हस्+भावे क्त। हास्य। हंसना। कर्तामें क्त। जो हंसा है। खिलाहुआ.

हस्त, (पु०) हस्+तन्। शरीरका अंग। हाथ। और हाथीकी सूंड। अश्विनीसे तेरहवां नक्षत्र (तारा) (पु० स्त्री०).

हस्तामलक, (न०) हस्तस्थितं आमलकं। हाथपर लियाहुआ आँवलेका फल। सहजहीसे देखनेलायक पदार्थ। वेदान्तप्रसिद्ध ग्रन्थविशेष। "करामलक".

हस्तिक, (न०) हस्तिनां समूहः+कन्। हाथिओंका समूह.

हस्तिदन्त, (पु०) ६ त०। हाथीका दांत। घरकी दीवारमें गाडीगई किल्ली.

हस्तिन्, (पु०) हस्तः (शुण्डादण्डः) अस्ति अस्य। सूंडरूपी डण्डेवाला। गज (हाथी)। चन्द्रवंशी एक राजा.

हस्तिनापुर, (न०) हस्तिना (तदाख्यनृपेण चिह्नितं तत्कृतत्वात्) पुरं। अलुक् समा०। हस्तिनामक राजासे बनाया गृह। नगर। दिल्ली नगर.

हस्तिनी, (स्त्री०) हस्तिनः योषा+ङीप्। हाथीकी स्त्री। हथिनी। करिणी। एकप्रकारकी स्त्री.

हस्तिप, (पु०) हस्तिनं पाति। पा+क। हाथीपर चढनेहारा। हस्त्यारोह। हाथीवान्+स्वार्थे कन्.

हस्तिमद, (पु०) ६ त०। हाथीकी सूंडसे निकलाहुआ मस्तीका पानी। एक प्रकारका गंधवाला द्रव्य.

हस्त्यारोह, (पु०) हस्तिनं आरोहति। आ+रुह्+अण्। हाथीपर चढता है। हाथीवान्। हस्तिपक.

हा, त्याग (छोडना)। जु० प० स० अनिट्। जहाति। अहासीत्.

हा, गति (जाना) जु० आ० स० अनिट्। जिहीते। अहासीत्। अहासिष्ट.

हा, (अव्य०) हा+का। विषाद। शोक। पीडा। निन्दा.

हाटक, (न०) हट्+ल्युट्। एक देश। उस देशमें उत्पन्न हुआ सोना। धतूरा। सोनेका बनाहुआ (त्रि०).

हान, (न०) हा+भावे क्त। परित्याग। छोडना.

हानि, (स्त्री०) हा+क्तिन्। नि० निः। क्षति। अपचय। नुकसान.

हायन, (पु०) जहाति (अम्बु)। हा+ल्यु-नि०। व्रीहि। धान। (-भावे) जहाति। वत्सर (वरिस)। आगकी लाट (स्त्री०).

हार, (पु०) हृ+कर्मणि घञ्। एकप्रकारकी मोतिओंकी माला। माला। "कर्तरि+घञ्"। वाँटनेहारा। भाजक.

हारक, (पु०) हृ+ण्वुल्। चोर- धूर्त। खचरा। भाजक अंक। चुरानेहारा (त्रि०).

हारावली, (स्त्री०) हार इव आवली। हारकी नाई कतार। मुक्तावली (मोतिओंका हार)। "शृङ्गारहारावली" इति गंगास्तवः। पुरुषोत्तमका बनायाहुआ एक कोष.

हारिद्र, (पु०) हरिद्रया रक्ता+अण्। कदम्ब (कदम) का द्रख्त, (इसका फूल वहुत पीला होता है)। हल्दीसे रंगाहुआ (त्रि०).

हारिन्, (त्रि०) हारः अस्ति अस्य+इनि। हृ+णिनि वा। हारक (चुरानेहारा)। हारवाला और मनोहारी (सुन्दर).

हारीत, (पु०) हृ+णिच्-इतच्। एक मुनि धर्मशास्त्र बनानेहारा। एक पक्षी (मैंना)। और कितव (धूर्तखचरा).

हार्द, (न०) हृदयस्य कर्म अण्। "हृद्" का आदेश होता है। स्नेह (पियार)। प्रेम। "हृदि भवः विहितो वा अण्"। हृदयसे हुआ वा जानागया। हृदयका वा हृदयमें जानाहुआ (त्रि०).

हार्य, (पु०) ह्रियतेऽसौ। हृ+ण्यत्। विभीतक वृक्ष (बहेडा) हरणीय (लेजानेलायक) (त्रि०).

हाल, (पु०) हलः अस्ति अस्य+अण्। हल एव वा+अण्। हलवाला। बलराम। और हल.

हाला, (स्त्री०) हल्+घञ्। मद (नशा)। तालरसकी शराब.

हालाहल, (पु० न०) हालेव हलति। हल्+अच्। एकप्रकारका विष (जहिर)। एक कीडा। मद्य (स्त्री०) ङीप्.

हालिक, (त्रि०) हलेन खनति (हलसे खोदता है)। हलकर्षक (हलखेंचनेहारा)। किसान। "हलः प्रहरणं अस्य" हल जिसका शस्त्र है। हलसे युद्धकरनेहारा। "हलस्य इदं वा ठक्-ठञ्" हलका.

हाव, (पु०) ह्वे+घञ्। नि०। आह्वान (बुलाना)। स्त्रियोंकी शृङ्गारभावसे उपजी चेष्टा.

हास्तिक, (न०) हस्तिनां समूहः+ठण्। हाथिओंका समूह.

हास्तिन, (न०) हस्तिना (नृपेण) निर्वृत्तं नगरं (अण्)। हस्तिराजासे वनायागया। (हस्तिनापुर) दिल्ली.

हास्य, (न०) हस्+ण्यत्। हसना। अलंकारका रसविशेष.

हाहाकार, (पु०) हा हा इत्यस्य कारः। कृ+घञ्। हाहाकरना। युद्ध(लडाई)का शब्द। शोककी आवाज.

हि, बढना और जाना। स्वा० प० सक० अनिट्। हिनोति। अहैषीत्.

हि, (अव्य०) हा-हिं वा+डि। हेतु (सवव)। अवधारण- (निश्चय)विशेष। प्रश्न (सवाल) हेतुका उपदेश (क्योंकि)। शोक। श्लोकका पूराकरना.

हिंसक, (पु०) हिंस्+ण्वुल्। व्याघ्र (भेडिया)आदि हिंसक (मारनेवाला) पशु। और शत्रु (दुश्मन)। हिंसाकरनेहारा (त्रि०).

हिंसा, (स्त्री०) हिंस्+अ। वध (मारना)। घातन (कतलकरना)। किसीको प्राणोंसे अलग करना और जोरआदिका काम.

हिंस्र, (त्रि०) हिंस्+र। हिंसाशील। मारनेवाला। घोर (डरावना).

हिक्क्, शब्दकरना। कूकना। भ्वा० उ० अ० सेट्। हिक्कति-ते.

हिक्क्, हिंसा (मारना)। चु० आ० स० सेट्। हिक्कयते। अजिहिक्कत.

हिक्का, (स्त्री०)। हिक्क+अ। एकप्रकारका रोग(हिचकी).

हिङ्गु, (न०) हिमं गच्छति। गम्+डु। नि। हीङ्। रामठदेशका वृक्ष (जिसका रस हिङ्ग होताहै).

हिड, गति (जाना)। घूमना। भ्वा० आ० स० सेट्। इदित्। हिण्डते.

हिडिम्ब, (पु०) एक राक्षस (वह भीमसेनसे मारागया)। म्बा। उस राक्षसकी भगिनी (वहिन) (स्त्रियां टाप्).

हित, (त्रि०) धा+क्त। हि+क्त वा। गत (बीतगया)। पथ्य (हितकारी)। और मंगल (भलाई).

हितकारिन्, (त्रि०) हितं करोति। कृ+णिनि। शुभकारक। भलाईकरनेहारा। हितकरनेहारा.

हितैषिन्, (त्रि०) हितं इच्छति। इष्+णिनि। हितकी इच्छा (चाह)करनेहारा। हितेच्छाकारी.

हितोपदेश, (पु०) हितस्य उपदेशः। भलाईका उपदेश। हितके लिये उपदेश। विष्णुशर्माका रचाहुआ नीतिविषयको प्रतिपादनकरनेहारा ग्रंथ.

हिन्दोल, (पु०) हिन्दोल्+घञ्। पृ०। दोलन। झूलना। श्रावण(सावनमहीना)के शुक्लपक्षमें विधान कियाहुआ झूलनेसे भगवान्का झुलानारूप एकप्रकारका उत्सव। एक रागका नाम.

हिम, (न०) हि+मक्। आकाशसे गिराहुआ पानीका कण (कतरा)। शीतलस्पर्श (ठण्डा छूना)। उसवाला (त्रि०)। छोटी इलाइची। नागरमोथा (स्त्री०)। अग्रहायण (मग्गर) और पौष (पोह) स्वरूपऋतु (मौसिम)। चंदनका द्रख्त। चन्द्र (चांद) और काफूर (पु०).

हिमकर, (पु०) हिमः करः (किरणः) यस्य। जिसकी किरण बर्फ है। कृ+अच्। चन्द्र (चांद)। और काफूर.

हिमगिरि, (पु०) हिममयो गिरिः। हिमप्रधानो वा गिरिः। वर्फका पहाड । वा जहां बहुत वर्फ है । हिमालयका पहाड.

हिमप्रस्थ, (पु०) हिमः प्रस्थः यस्य। शीतल चोटीवाला। हिमालयका पर्वत (पहाड).

हिमवत्, (पु०) हिमानी (प्राचुर्येण) अस्ति अत्र+मतुप्। "म" को "व" होता है। जहां बहुत वर्फ होती है। हिमालय पर्वत.

हिमसंहति, (स्त्री०) ६ त०। हिमसमूह। वरफका ढेर.

हिमांशु, (पु०) हिमाः अंशवः अस्य । शीतलकिरणोंवाला। चंद्रमा। चांद। और कर्पूर। काफूर.

हिमागम, (पु०) हिमस्य आगमः यत्र । जिसमें वरफ आती है । अग्रहायणी (मग्गर) और पौष (पूस) स्वरूप दो महीनोंका ऋतु (मौसिम).

हिमाद्रिजा, (स्त्री०) हिमाद्रौ जायते। जन्+ड। हिमालयमें उत्पन्न होती है। क्षीरिणी। पार्वती। और गंगा.

हिमाद्रितनया, (स्त्री०) ६ त०। हिमालयकी पुत्री। दुर्गा। पार्वती.

हिमानी, (स्त्री०) हिमानां संहतिः। हिम+ङीप्-आनुक्च। हिमसमूह। वरफका ढेर। "आगता बत जरेव हिमानी" रघुवंशः.

हिमाराति, (पु०) ६ त०। बरफका शत्रु। सूर्य। आकका वृक्ष। आग.

हिमालय, (पु०) हिमानां आलयः। वरफोंका घर। एक पहाड.

हिमाब्ज, (न०) हिमकाले जायते जन्+ड। शीतके समय उपजता है। उत्पल। कमलफूल.

हिरण्मय, (त्रि०) हिरण्यात्मकं+मयट्। नि०। सोनेका बनाहुआ। स्त्रियां ङीप्। "हिरण्मयी सीताप्रतिकृतिः" उत्तररामचरितम्। नौं वर्षोंमेंसे एक (न०)। सूर्यमण्डलमें रहनेहारा परम ब्रह्म। "य एष हिरण्मयः पुरुषो दृश्यते हिरण्याक्षः" छान्दोग्यम्.

हिरण्य, (न०) हिरणमेव (स्वार्थे) यत्। सुवर्ण। सोना। धतूरा। धन.

हिरण्यकशिपु, (पु०) एक दैत्य (वह कश्यपसे दितिमें हुआ).

हिरण्यकशिपुहन्, (पु०) हन्+क्विप्। ६ त०। हिरण्यकशिपुको मारनेहारा। विष्णु.

हिरण्यगर्भ, (पु०) हिरण्यं (स्वर्णभाण्डं) गर्भः (उत्पत्तिस्थानं) अस्य। सोनेके अंडेसे निकला। चारमुखवाला ब्रह्मा (वह सोनेके अंडेसे निकला था)। शालग्राममूर्तिविशेष.

हिरण्यरेतस, (पु०) हिरण्यं रेतः यस्य। जिसका वीर्य सोना है। वह्नि (आग)। और चित्रकवृक्ष.

हिरण्यवाह(हु), (पु०) हिरण्यं वाहयति (प्रापयति) भक्तान्। भक्तोंको सोना पहुंचाता है। "हिरण्यवर्णाः वाहुरिव तरंगा यस्य"। सोनेकी भुजाके समान जिसके तरंगें (लहरें) हैं। महादेव। शोणनामी एक नद (वडादर्या).

हिरण्याक्ष, (पु०) कश्यपका पुत्र। एक दैत्य.

हिरुक्, (अव्य०) हि+उकिक्-रुट् च। वर्जन (रोकना)। त्याग.

हिल्लोल्, दोलन (झुलाना) चु० उ० स० सेट्। हिल्लोलयति-ते.

हिल्लोल, (पु०) हिल्लोल्+अच्। तरंग (लहर)+घञ्। झुलाना.

हिव्, प्रीणन (प्रसन्नकरना) भ्वा० प० स० सेट्। इदित्। हिन्वति। अहिन्वीत्.

हिवुक, (न०) हिवि+उकक्। नि०। ज्योतिषमें लग्नसे चौथा स्थान.

हिंस्, वध (मारना) वा चु० उ० रुधा० प० सक० सेट्। इदित्। हिनस्ति। हिंसयति-ते। अहिंसीत्। अजिहिंसत्-त.

ही, (अव्य०) हि+डी। विस्मय (हैरानी)। दुःख। विषाद (मनका टूटना)। और शोक.

हीन, (त्रि०) ही+क्त। "त" को "न" होता है। ऊन (कम)। निन्दाके लायक। और अधम (नीच).

हीनवादिन्, (पु०) कर्म०। पूर्ववाद (पहिला झगडा)-को छोडकर जो किसी औरका अवलम्बन कर्ता है। असली विषयको छोड कर किसी दूसरे विषयमें धसनेहारा। एकप्रकारका वादी (मुद्दई) धर्मशास्त्रमें.

हीनाङ्ग, (त्रि०) हीनं अङ्गं यस्य। स्वभावसे न्यून (कम)-अंगवाला। अंधा। लंगडा। लूलाआदि। स्त्रियां वा ङीप्.

हीर, (न०) हृ+क। नि०। वज्र। और हीरा। शिव। सांप। हार। और सिंह (शेर) (पु०)। स्वार्थे कन्। हीरारूप एक मणि.

हु, होमकरना (आगमें घीआदिका डालना)। जुहो० प० सक० अनिट्। जुहोति। अहौषीत्.

हुङ्कार, (पु०) "हुं" इत्यव्यक्तस्य कारः। कृ+घञ्। उप०। "हुं" इस प्रतिषेधसूचक (रोकको जतानेहारा) शब्दका उच्चारणकरना। "मौनव्रतं महाकष्टं हुङ्कारेणापि नश्यति" पुराणम्.

हुड्, राशीकरण (इकट्ठाकरना) भ्वा० आ० स० सेट्। इदित्। हुण्डते.

हुड, (पु०) हुड्+क। मेघ (बादल)। चोरको रोकनेके लिये पृथिवीमें गाडाहुआ लोहेका कील (मेख).

हुत, (त्रि०) हु+क्त। देवताके उद्देशसे मन्त्रपढकर आगमें डालागया घीआदि। होमकियाहुआ "भावे क्त" होम (न०).

हुतभुज्, (पु०) हुतं (मन्त्रेण प्रक्षिप्तं) घृतादि भुंक्ते । भुज्+क्विप् । मन्त्रपूर्वक फेंकेहुए घीआदिको खाता है । अग्नि । आग.

हुतवह, (पु०) हुतं (घृतादिकं) वहति (प्रापयति) देवान् प्रीत्यर्थं । वह्+अच् । होमकियेहुए घीआदिको देवताओंके पास पहुंचाता है (उनकी प्रसन्नताके लिये) । अग्नि । आग । और चित्रकवृक्ष.

हुताश, (पु०) हुतं अश्नाति । अश्+अण् । होमकियेहुएको खाता है । वह्नि (आग) और चित्रकवृक्ष.

हुति, (स्त्री०) हु+क्तिन् । होम.

हुम्, (अव्य०) हु+डुमि । स्मरण (यादकरना) । प्रश्न (सवाल) । अनुज्ञा (हुक्म) । निवारण (हटाना).

हुहु(हू), (पु०) ह्वे+डु । नि० । एक गंधर्व (देवताओंमें गवैया).

हुङ्कार, (पु०) हू+कृ+घञ् । अवज्ञा (निरादरी) को जतलानेहारा एकप्रकारका शब्द "हुंकारेणैव तं भस्म सा चकाराम्बिका ततः" चण्डी.

हूत, (त्रि०) ह्वे+क्त । सम्प्रसारण । आहूत (बुलायाहुआ.

हूति, (स्त्री०) ह्वे+क्तिन्-सम्प्रसारण । आह्वान । बुलाना.

हून(ण), (पु०) ह्वे+नक्-संप्रसारण । एक म्लेच्छोंकी जाति । उनके रहनेका देशविशेष.

हूर्च्छन, (न०) हूर्च्छ्+ल्युट् । कुटिलता । तिर्छापन.

हृ, हरण (चोरीकरना) । लेजाना । भ्वा० उभ० द्विक० अनिट् । हरति-न्ते । अहार्षीत्-अहृत.

हृ, बलात्कारहरण (हठ-जोरावरी लेजाना) । जु० प० स० अनिट् (वेदमें आता है) । जहर्ति । अहार्षीत्.

हृच्छय, (पु०) हृदि शेते । शी+अच् । हृदयमें सोता है । कामदेव । हृदयशायी (त्रि०).

हृच्छूल, (न०) ६ त० । शूलरोगभेद । एकप्रकारका पेटकी पीडाका रोग.

हृणी, निन्दाकरना । कण्ड्वा० आ० अ० सेट् । हृणीयते । अहृणीयत.

हृणीया, (स्त्री०) हृणीय+अ । निन्दा.

हृत्, (त्रि०) हृ+क्विप्-तुक् च । लेजाने वा चुरानेवाला । "त" को "द" होता है । "हृदय" को "हृत्" का आदेश विकल्पसे होता है । हृदय (दिल) और मन (न०).

हृत, (त्रि०) हृ+क्त । अपहृत (चुरायागया) । और दूसरे स्थानपर लेजाया गया.

हृत्कम्प, (पु०) ६ त० । हृदयका कांपना । दिल धडकना । किसी प्रकारके भय (डर) आदिसें दिलका थरथराना.

हृदय, (न०) हृ+कयन्-दुक् च । मन । और वक्षः (छाती) । हृत् एति (हृयदमें आता है) । इण्+अच् । परब्रह्म । "हृयं तस्माद्धृदयमिति" श्रुतिः.

हृदयग्रन्थि, (पु०) हृदयस्य ग्रन्थिः । हृदयकी गांठ । अविद्या (मूल) के साथ सम्बन्धरूप संसारका बंधन । "भिद्यते हृदयग्रन्थि" रिति भागवतम्.

हृदयङ्गम, (न०) हृदयं गच्छति । गम्+खश्-मुम् च । हृदयमें जानेवाला । युक्तियुक्तवाक्य । युक्तिसहितवचन । मनोहर (त्रि०).

हृदयस्थान, (न०) हृदयस्य (मनसः) स्थानं-हृदयरूपं वा स्थानं । मनकी जगह वा मनोरूप जगह । वक्षस्थल । छातीका स्थान.

हृदयिक, (त्रि०) हृदयं (प्रशस्तमनः) अस्ति अस्य+ठन् । प्रशस्तचित्त । अच्छेचित्तवाला । "इनि" वही अर्थ.

हृदयेश, (पु०) ६ त० । हृदयका स्वामी । भर्ता । मालिक.

हृदावर्त, (पु०) हृदिस्थ आवर्तः । छातीपरका घेरा । घोडेकी छातीपर आवर्त (गोल) स्वरूपवाला रोयेंका समूह.

हृदिका, (स्त्री०) द्रोणके श्यालक (सावे) कृपाचार्यकी मा.

हृदिस्पृश्, (त्रि०) हृदि (हृदये) स्पृश्यते असौ । कर्मणि क्विन् । अलुक् समा० । जो हृदयमें छूता है । हृद्य । मनोहर । खूबसूरत । "कर्तरि क्विन्" । मर्मको छूनेहारा । दुःखके देनेहारा.

हृद्य, (न०) हृदि स्पृश्यते (मनोज्ञत्वात्) हृद्+यत् । हृदयमें छूता है (मनोहर होनेसे) । गुडत्वच् (दारचीनी) । मनोहर (त्रि०).

हृद्रोग, (पु०) ६ त० । हृदयका एकप्रकारका रोग (बीमारी) और काम.

हृद्वण्टक, (पु०) ६ त० । हृदयके बांटनेहारा । जठर (पेट).

हृल्लास, (पु०) हृदयस्य लासो यत्र (हृदादेशः) । हृदयका फडकना । हिक्का (हिचकी) का रोग (इस्से हृदय फडकता हुआ प्रतीत होता है).

हृल्लेख, (पु०) हृदयं लिखति (स्पृशति) । लिख्+अ । हृदादेशः । हृदयको छूता है । ज्ञान (जान्ना) । तर्क । दलील । और तन्त्रमें मन्त्रविशेष । औत्सुक्य (शौक) (स्त्री०).

हृष्, हर्ष (खुशहोना) । और चित्तोत्साह (दिलका दिलेर होना) । दि० प० अ० सेट् । हृष्यति । अहृषत् । अहार्षीत्.

हृषित, (त्रि०) हृष्+क्त । खुशहुआ (प्रीत) । विस्मित (हैरानहुआ) । जातरोमाञ्च (जिसके रोयें खडे हो गये हों.).

हृषीक, (न०) हृष्+ईकक् । विषयको ग्रहण करनेहारा । चक्षुरादि (नेत्रआदि) इन्द्रिय (ज्ञानका साधन).

हृषीकेश, (पु०) ६ त० । इन्द्रियोंका स्वामी । विष्णु

हृष्ट, (त्रि०) हृष्+क्त । प्रीत (प्रसन्नहुआ) । जातमात्र (जिसके रोयें खडे हो गये हैं) । हैरानहुआ.

हृष्टमानस, (त्रि०) हृष्टं मानसं अस्य । हृष्टचित्त । प्रसन्न-मनवाला । जिसका दिल खुश है.

हृष्टरोमन्, (त्रि०) हृष्टं इव जाताङ्कुरं रोम यस्य । जेराके रोयें खडेहोगये, मानों प्रसन्नहुए हैं.

हृष्टि, (स्त्री०) हृष्+क्तिन् । आनन्द । हर्ष (खुशी) । ज्ञान.

हे, (अव्य०) हा+डे । संबोधन । बुलाना.

हेड्, अनादर करना । भ्वा० आ० सक० सेट् । हेडते.

हेति, (स्त्री०) हन्+करणे क्तिन् । नि० । जि॰ राती हैं । अस्त्र । वाण (तीर) । आगकी शिखा (लट) । सूर्यकी किरण । हरएक प्रकारका तेज । साधन...

हेतु, (पु०) हि+तुन् । कारण (सबब) । ...तिका साधन व्याप्य (थोडे देशमें रहनेहारा) । और...

हेतुता, (स्त्री०) हेतोर्भावः+तल् । हेतुपन । ...पना । संगतिविशेष.

हेतुमत्, (त्रि०) हेतुः अस्ति अस्य+मतुप् । ...वाला । सबबवाला कार्य । स्त्रियां ङीप्.

हेत्वाभास, (पु०) हेतुः इव आभासते ...भास्+अच् । हेतोः वा आभासः । आ+भास्+घञ् । ...की नाँई प्रतीत होता है । अथवा हेतुका आभास (दो...) । दुष्ट-हेतु । वह दोष पाँच प्रकारका है । व्यभि...विरुद्धता-असिद्धि-सत्प्रतिपक्षता और बाध । इनमेंसे ...भी दोष होनेपर अनुमिति नहीं होती.

हेम, (न०) हि+मन् । स्वर्ण (सोना) । ध...। और एक-मासेका परिमाण (माप-तोल) । कालेरंग...डा । और बुध (पु०).

हेमकार, (पु०) हेम-तन्मयं भूषणं करोति कृ+अण् । सोनेका गहना बनाता है । सुवर्णकार । सुनार

हेमकूट, (पु०) हेममयः कूटो यस्य । जिसकी चोटी सोने-की है । किंपुरुषवर्षका एक पहाड.

हेमन्, (न०) हि+मनिन् । स्वर्ण (सोना) ...। धतूरा । नागकेशर । और हिम । बरफ.

हेमन्त, (पु० न०) हि+झ-मुट् च । अग्रहाण (मार्गशिर-मग्गर) और पौष (पोह)के महीने । ऋतु (मौसिम).

हेममालिन्, (पु०) हेमेव किरणानां मालअस्ति अस्य । सोनेकी नाईं किरणोंकी मालावाला । सूर्य । नि.

हेमसूत्रम्-सूत्रकम्, (न०) हेम्नः सूत्रम् । सोने (सुवर्ण)-का हार । एक प्रकारका हार.

हेमाङ्ग, (पु०) हेमेव पीतं अङ्गं यस्य । सोनेकी नाईं जिसका पीला अंगहै । गरुड । सिंह (शेर) । सुमेरु । ब्रह्म । चम्बेका दरख्त । और विष्णु । सोने रंगवाले अंगों-वाला (त्रि०) । सोनेके समान अंग (न०).

हेमाद्रि, (पु०) हेममयः अद्रिः । सोनेका पहाड । सुमेरुपर्वत.

हेय, (त्रि०) हा+यत् । त्याज्य । छोडनेके लायक.

हेरम्ब, (पु०) हे (शिवे) रम्बति । शिवजीमें आनन्द कर्ता है । रवि+अच्-अलुक् समा० । गणेशजी.

हेरम्बजननी, (स्त्री०) ६ त० । गणेशजीकी माता । दुर्गा । पार्वती । शिवकी स्त्री.

हेलन, (न०) हिल्+ल्युट् । अवज्ञा । निरादर करना.

हेला, (स्त्री०) हेड-अनादर (बेइज्जती करना) । भावे अ । "ड" को "ल" होता है । स्त्रिओंके शृंगारभावसे उपजी एकप्रकारकी चेष्टा (व्यापार) । "जवान स्त्रिओंकी क्रीडाके उत्सवमें बहुत इच्छा" निरादरी.

हेष्, अश्वशब्द (घोडेका शब्दकरना-हिनकना) । भ्वा० आ० अ० सेट् । हेषते । अहेषिष्ट.

हेषा, (स्त्री०) हेष्+अ । घोडोंका शब्द । हिनकारना.

हैहै, (अव्य०) संबोधन । बुलाना.

हैतुक, (त्रि०) हेतौ प्रसृतः+ठण् । हेतुवादरत । कारणके झगडेमें फंसाहुआ । सयुक्तिक (युक्ति-दलीलसहित)वचन-बोलनेवाला.

हैम, (त्रि०) हिमे भवं+अण् । बरफमें हुआ । "हेम्नः विकार" अण् । सोनेका विकार । सोनेका बनाहुआ पदार्थ.

हैमन, (पु०) हेमन्त एव । हेमन्ते भवो वा+अण् । ("त" का लोप होता है) । हेमन्तकाल (बरफका समय) । उसमें हुआ (त्रि०).

हैमवत, (न०) हिमवतोऽदूरभवो देशः । तस्येदं वा+अण् । हिमालयके निकटका देश । वा हिमालयका भारतवर्ष । हिन्दुस्तान-हिमालयका (त्रि०) । एकप्रकारका विष (जहर) । "उसकी सन्तान वा उसमें हुआ+अण्" पार्वती । हरीतकी । हरीड (स्त्री०).

हैयङ्गवी, (न०) ह्योगोदोहोद्भवं । ह्यस्+गो+ख (ईन) । नि० । कलके चोएहुए गौके दूधसे हुआ । नवनीत । माक्खन । मक्खन । ताजा उत्पन्नहुआ घी । सद्योजातघृत.

हैहय, (पु०) एक देश । "उनका राजा+अण्" कार्तवीर्य.

होड, (पु०) होड् (जाना)+अच् । हुड्+अच् वा । समुद्र-में जानेहारी एक प्रकारकी नाव (बेडी-किश्ती).

होतृ, (पु०) हु+तृच् । ऋग्वेदके जाननेहारा । होमकरनेहारा (त्रि०) । स्त्रीमें ङीप् । "या हविर्या च होत्री" शाकुन्तल.

होत्र, (न०) हु+ष्ट्रन् । होम । हविः (घीआदि होमकी सामग्री) । स्तुति (तारीफ) स्त्रियां टाप्.

होत्रिन्, (पु०) होत्रं (होम) अस्ति अस्य+इनि । होम-करनेहारा.

होत्रीय, (न०) होत्राय हितं । होतुरिदं वा । छ (ईय) । होमकेलिये हितकारी । हविर्गृह । होमका घर । होतृ-सम्बन्धी (त्रि०).

होम, (पु०) हु+मन्। देवताके उद्देशसे वह्नि (आग)-में घीआदिका डालनारूप हवन। गृहस्थके प्रतिदिन करनेलायक पाँच यज्ञोंमें देवयज्ञ। श्राद्धके लायक ब्राह्मणका हाथ। श्राद्धसम्बन्धी मुख्यभागका मन्त्र पढकर दानकरना.

होमकुण्ड, (न०) होमार्थं कुण्डं। होमके लिये कुण्ड.

होमधान्य, (न०) होमोपयुक्तं धान्यम्। होमके लायक धान। तिल और यव (जौं).

होमिन्, (पु०) होमः अस्ति अस्य। होमकरनेहारा.

होम्य, (त्रि०) होमाय हितं यत्। होमके उपयोगी घी। घीआदि.

होरा, (स्त्री०) हु+रन्। ज्योतिषमें कहाहुआ। लग्न। राशिका आधाभाग। लग्नको जतानेहारा शास्त्र। रेखा (लकीर).

होलका, (स्त्री०) हु+वि। लकति। लक्+अच्। कर्म। तृणआदिसे आधेपकेहुए-शमीके धान.

होलाका, (स्त्री०) हु+विच्। लक्+घञ्। वसन्त(वहार)में एकप्रकारका उत्सव। "होलाका कर्तव्येति कल्पश्रुति"रिति दायभागः.

ह्नु, चौर्य (चोरीकरना)। अदा० आ० स० अनिट्। ह्नुते। अह्नोष्ट.

ह्मल्, चलना। भ्वा० प० अ० सेट्। ह्मलति। अह्मालीत्। प्रह्मलयति.

ह्यस्, (अव्य०) बीतगये दिनके अर्थमें। नि०। गतदिवस। पिछला दिन। पिछला कल्ह.

ह्यस्तन, (त्रि०) ह्यस्+भवार्थे ट्युल्-तुट् च। गतदिवसभव। कल्हके दिनमें हुआ। त्यप्। कल्हका। "ह्यस्त्यः" यही अर्थ.

ह्रद, (पु०) ह्राद्+अच्। नि०। अगाधजलाशय। गहिरा तालाव। अतलस्पर्श जलाशय (वह तालाव कि जिसका तला बहुत दूर है)। झील.

ह्रदिनी, (स्त्री०) ह्रदोऽस्ति अस्यां+इनि। जिसमें गहिरा तालाव हो। नदी। दर्या.

ह्रस्, रव (शब्दकरना) भ्वा० प० स० सेट्। ह्रसति। अह्रसीत्-अह्रासीत्.

ह्रसिमन्, (पु०) ह्रस्वस्य भावः। इमनिच्-ह्रसादेशः। छोटापन.

ह्रसिष्ठ, (त्रि०) अतिशयेन ह्रस्वः। इष्ठन्-ह्रसादेशः। बहुत छोटा। अतिह्रस्व.

ह्रसीयस्, (त्रि०) अतिशयेन ह्रस्वः। ईयसु। ह्रसादेशः। अतिह्रस्व। बहुत छोटा। स्त्रीमें ङीप् होताहै.

ह्रस्व, (न०) ह्रस्+वन्। एकप्रकारका परिमाण (माप)। उसवाला और खर्व (बौना-मदरा) (त्रि०)। एक मात्राके समयमें उच्चारण करनेलायक लघुवर्ण (पु०).

ह्रस्वाङ्ग, (पु०) ह्रस्वं अङ्गं अस्मात्। ५ ब०। जिस्से छोटा अंग हो जाता है। जीवक औषध। ६ ब०। वामन-बौना खर्व (मदरा) (त्रि०)। ह्रस्व अंग (छोटा अंग) (न०).

ह्राद्, [illegible]न (शब्दकरना) भ्वा० आ० अ० सेट्। ह्रादते। अह्रादिष्ट.

ह्राद, (पु०) ह्राद्+घञ्। शब्द (आवाज)। अच्। हिरण्यकशिपुका एक पुत्र (पु०)। शब्दकरनेहारा (त्रि०).

ह्रादिनी, (स्त्री०) ह्राद्+णिनि-ङीप्। विद्युत्। बिजली। वज्र। नदी। शल्लकी। ह्राद(शब्द)वाला (त्रि०).

ह्रास, ([illegible]०) ह्रस्+घञ्। शब्द (आवाज)। अपचय। घटना.

ह्री, [illegible] (शरमकरना) कण्ड्वा० आ० अ० सेट्। [illegible]

ह्रीणीया, (स्त्री०) ह्रिणी+यक्+अ। लज्जा। शरम.

ह्री, [illegible] शरमकरना) जु० प० अ० अनिट्। जिह्रेति। अह्रैषीत्.

ह्री, ([illegible]) ह्री+क्विप्। लज्जा। शरम.

ह्रीजित, (त्रि०) ६ त०। लज्जासे जीताहुआ। लज्जाशील। शरमनेहारा.

ह्रीण— (त्रि०)। ह्री+क्त-वा "त" को "न" होता है। लज्जित। शर्मिंदा हो गया। जिसे लज्जा आगई हो.

ह्रेष्, [illegible] ([illegible]करना) भ्वा० आ० सक० सेट्। ह्रेषते.

ह्रेषा, ([illegible]) ह्रेष्+अ। घोडेका एकप्रकारका शब्द। घोडेका [illegible].

ह्लाद, शब्द ([illegible]करना) भ्वा० आ० अक०। मोदन (प्रसन्न हो[illegible]) [illegible] सक० सेट्। क्त और क्तवतुमें अनिट्। ह्लादते.

ह्लाद, (पु०) ह्लाद्+घञ्। आह्लाद। आनन्द। खुशी। सन्तोष.

ह्लादिनी, (स्त्री०) ह्लाद+णिनि+ङीप्। विद्युत् (बिजली)। [illegible]। ईश्वरकी शक्ति (सामर्थ्य-ताकत)। [illegible] ([illegible]प्रसन्न) (त्रि०).

ह्वल्, चलन[illegible] भ्वा० प० अक० सेट्। ह्वलति। अह्वालीत

ह्वान, (न०) ह्वे+ल्युट्। आह्वान। बुलाना.

ह्वान, (न०) ह्वे+ल्युट् (अन)। पुकारना। पुकार। शब्द.

ह्वे, स्पर्धा ह्ठकरना और शब्दकरना। अक०। बुलानेके अर्थमें। स० भ्वा० उभ० अनिट्। ह्वायति। अह्वत्। अह्वत। आस्त। जुहाव-जुहुवे। ह्वायति-ह्वास्यते। ह्वातः हूतः। हूय। ह्वायति-ते। जुहूषति-ते। "नाम लेकर बुलाना"। "तां पार्वतीत्याभिजनेन नाम्ना बंधुप्रियां बंधुजनो जुहाव" कुमारसंभवः.

इति श्रीगणेशदत्तशास्त्रिसङ्कलितः शब्दार्थगणेशः समाप्तः।

ओं सच्चिदेकं ब्रह्म।